





# ગુજરાતી હિન્દી શબ્દકોષ

(૨૭૦૦૦ શબ્દ)

સંસ્કૃત-હિન્દી-ગુજરાતી

સંકલન કર્તા

વિશ્વવાચસ્પતિ,

પં. ગણેશદાસ શર્મા (ગોડ)



પ્રકાશક

જયદેવવ્રદસ બટોદા



પ્રથમવાર

૧૯૨૪

મૂલ્ય ૬ અપે.

Pages 1-325 printed at the L. V. Press, Baroda and the rest  
printed by Mr. C. I. Patel at the Laxmi Electro Printing  
Press, Bhaukalai Lane, Baroda and published by  
Anand Priya B. A. L. B. for Jaiyev Bros. Baroda.

10-5-24



ओ३म  
**समर्पण**

श्रीयुत नन्दनाथ केदारनाथजी दीक्षित,  
बी. ए. एम. सी. पी.  
विद्याधिकारी बड़ौदा राज्य

मान्यवर,

जो अखंड परिश्रम आप गतवर्षोंसे बड़ौदा राज्य तथा  
गुजराती प्रजा में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार के  
निमित्त कर रह हैं समको ईश्वर यह  
मन्थ आपकी सेवामें सागर समर्पित  
किया जाता है.

गणेशदासशर्मा.

# गुजराती हिंदी शब्दकोष



विद्यावाचस्पति

पं. गणेशदास शर्मा ( गौड )

## ओ३म् प्रकाशकीय वक्तव्य

हिन्दी प्रचार के लिए इस समय भारत में जो आन्दोलन हो रहा है वह प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को सुविधित ही है। वह भी प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी जानता है कि कोई भी देश अपना राष्ट्र जिस की बहुतसी भाषाएँ हो वह उन्नति के सिद्धार पर नहीं पहुँच सकता। एक भाषाका प्रचार होने से देशमें सौप्र उन्नति होता है इसी लिए अब हम भारत में एक भाषा के प्रचार का ध्यान करते हैं तब हम प्रतीत होता है कि 'हिन्दी' ही एक ऐसी भाषा है जो भारत वष का राष्ट्र भाषा हो सकती है। इसी उद्देश को ध्यानमें रखकर हमने 'गुजराती हिन्दी शिक्षक' नामा पुस्तक सन् १९१८ में प्रकाशित की थी और हम प्रसन्नता होती है अब हम देख रहे हैं की हमारा इस प्रयत्न स बहुत कुछ हिन्दी प्रचार में हुआ।

गुजराती साहित्य में दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है एवम् हिन्दी जानने वाले भी इस भाषाक सगहृत्थ रत्ना का अध्ययन करने क लिए सम्मनित हो रहे व इसी उद्देशको रखकर हमने विचार किया कि यदि एक कोष गुजराती में हिन्दी में हो तो जनता का कितना लाभ पहुँचे खासकर उस देश में जब कि गुजराती साहित्य के बहुतसे ग्रन्थ हिन्दी में अनुवादित हो रहे हैं। हम इसी न्यूनताको पूर्ण करने की धनमेंही थे कि हमें पाँचवर्ष पूर्व श्रीयुक्त विद्याबाबुस्यसि पं० गणेशदासजी शर्मा ने पत्र लिखा कि उन्होंने एक कोष तय्यार किया है जो कि यदि हम प्रकाशित करना चाहें तो वह दे सकते हैं। हमें अतीव हर्ष हुआ जब हमने देखा कि हमारा एक मित्रने इस कार्य को पूर्ण कर दिया है। तब हमने नये कोष बनाने के विचार को स्वमित कर दिया और पण्डितजी से जो पत्र व्यवहार हुआ किन्ना जिसका फल स्वरूप यह गुजराती हिन्दी शब्द कोष आपके सम्मुख है।

हमें कदापि यह आशा न थी कि हम इतने महत्वपूर्ण कार्य को संचालक का से संपादन कर सकेंगे परन्तु ईश्वरकी कृपासे कई अवघटनों के होते हुए भी हम इस कार्य का पूर्ण कर सके हैं।

हिन्दी प्रचार के लिए अनेक वर्ष हुए कि काशी की हिन्दी प्रचारिणी सभा ने एक वैज्ञानिक कोषको प्रकाशित कर जनता का भारी उपकार किया था और उसके पश्चात् हिन्दी साहित्य संमेलन के परिश्रम से हिन्दी भाषा के लिए एक सच्चा और भारी अनुराग इस समय सर्व देशसेवकों के हृदय में उत्पन्न हो गया है। यह देश के सौभाग्य का शुभ तथा महान् चिन्ह है। इसके अतिरिक्त महर्षि स्वामी दयानंदजी सरस्वती, कर्मवीर श्रीयुक्त माहात्मा गांधी विद्यामूर्ति देशद्वितीय श्रीमंत सयाजीराव महाराज और आर्य संस्कृति के उपासक आर्य जाति को एक सूत्र में संगठित करने वाले देशभक्त श्री पंडित मदनमोहन मालवीयजी आदि के पुरुषार्थका फल है कि सर्वत्र हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिये सज्जन जन उत्साहित हो रहे हैं। इन सब उत्साहा सज्जनों के हाथ में हमारा यह गुजराती हिन्दी शब्दकोष एक उपयोगी साधन सिद्ध होगा ऐसा हम आशा है। देशमें हिन्दी प्रचार के लिए जितने भी वाचनालय, पुस्तकालय, राष्ट्रीय विशालय, पाठशाळाएं गुरुकुल तथा अन्य जो भी हिन्दी प्रचार के निमित्त संस्थाएं हैं वह इस कोषको अपनाएंगी ऐसा हमारा हम विश्वास है। ईश्वर हम सबको राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार के लिए तत्पर बनावे यही प्रार्थना है।

हमें पूर्ण आशा है कि जनता इस पुस्तक की आवश्यकता को अनुभव करती हुई हमारे इस महान् कार्य में हाथ बटाएगी।

हम श्रीयुक्त शांतिप्रियजी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस कोष के प्रकाशित करने तथा प्रकाशित करने में पूर्ण सहायता प्रदान की है।

श्रीयुक्त छोटाखाल लालभाई पटेल मैनेजर कभी इलेक्ट्रिक प्रेस बड़ोदा धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कोष को अपने प्रेसमें छापकर हिन्दी भाषा प्रचार में भारी योग दिया।

विनीत,

बड़ोदा.

बालंद प्रिय  
बी. ए. एल. एल. बी.  
प्रकाशक.

## प्रस्तावना

**वि**ना काश के साहित्य का अंग अपूर्ण माना जाता है। जिस भाषाका कोष सर्वांग पूर्ण होता है वही भाषा पृथ्वीपर सर्वोच्च मानी जा सकती है। जब से हिन्दी भाषा को 'राष्ट्र की भाषा' होनेवा पद प्राप्त हुआ है तबसे इस बातकी बड़ी भारी आवश्यकता उत्पन्न हो गई कि लोगोंको एक दूसरे प्रांतकी भाषा का ज्ञान होना बड़ा जरूरी है। यदि बंगाल का रहनेवाला हिन्दी भाषाको सीखना चाहे और इसी तरह हिन्दी भाषा भाषी बंगाल भाषाका ज्ञान प्राप्त कर उस साहित्य से लाभ उठाना चाहे अथवा बंगाल में हिन्दी प्रचार करना चाहे तो उसे दोनों भाषाओंका ज्ञान करना जरूरी हो जावेगा। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये सबसे पहिले अक्षर ज्ञान होना चाहिए और उसके बाद फौरनही कोषकी बड़ी भारी आवश्यकता आपड़ती है। अक्षर ज्ञानके लिये प्रायः सब भारतीय भाषाओंकी हिन्दी में पुस्तकें तैय्यार हो चुकी हैं किन्तु कोषोंका अभी तक बड़ा भारी अभाव है। यह कोई साधारण अभाव नहीं कहा जा सकता बल्कि एक ऐसा भारी अभाव है जिसके बिना साहित्य पंगु (लंगड़ा) कहा जा सकता है।

भारतीय भाषाओं में से हिन्दी भाषाही राष्ट्र भाषा हो सकती है— यह अब निर्विवाद सिद्ध हो चुका है। आर्य धर्म के पुनरुद्धारक महर्षि श्री दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपने श्री मुखसे आजसे कईवर्ष पूर्व एक गुजराती होते हुये भी अपने सत्यार्थप्रकाश में यह बात कह चुके हैं जिसे कि आज प्रत्येक भारतीय मान रहा है। उन्होंने लिखा है

कि “ हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषाका पद दिये बिना भारतकी उन्नति असंभव है । ” इसी लक्ष्यको आगे रखकर उस महारामाने अपनी सारी पुस्तकें अपनी प्यारी मातृभाषामें न लिखकर राष्ट्र-भाषामें ही लिखीं । पहिले पहिले उनकी लिखी हुई पुस्तकें बहुतही अशुद्ध रहीं किन्तु उन्होंने लिखी हिन्दी मेंही—कारण इसका यह था कि वे इसबात को अपने तपोबल द्वारा देख चुके थे कि आग चलकर एक न एक दिन आर्य भाषा (हिन्दी) ही राष्ट्र-भाषा होनेका अत्युच्च पद पावेगी । यही हुआ भी । जबसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई तबसे उसका लक्ष्य हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनानेका था । अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन जोकि प्रातःस्मरणीय महात्मा मोहनदास कर्पचन्दजी गान्धी महाराजके सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ मध्य भारत के प्रसिद्ध नगर इन्दौर में हुआथा उस समय हिन्दी भाषा ही राष्ट्र भाषा होने योग्य है इस बातका शंख, बड़े जोरसे फूंक दिया गया । उन्होंने अपने भाषणमें अपने श्रीमुखसे कहा था कि “ आज हिन्दी से स्पर्धा करनेवाली दूसरी कोई भाषा नहीं है । ” “ अन्त में उन्होंने कहाथा कि ” हिन्दी साहित्य सम्मेलन शीघ्रतासे एक दूसरे प्रान्त की भाषाका ज्ञान कराने वाली पुस्तकें बनवावे इत्यादि ।

भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध साहित्य सेवितां तथा नेताओं ने जैसे श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विदुषी एनिबिसेण्ट, लोकमान्य बाळगंगाधर तिलक आदि महापुरुषोंने भी हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर बिठाने के लिये अपनी अपनी सम्मतियां दीं । क्षारांश यहकि विविध प्रान्तवासी पुरुषोंने भी हिन्दीकोही राष्ट्रभाषाके पद पर बिठाना योग्य समझा । उसके बाद सम्मेलन ने पुस्तकें बगैर तो जैसी प्रकाशित कों वा लिखाईं वे सब जोगोंको मालूमही है किन्तु अश्वस प्रीतमें हिन्दी भाषाका बहुत कुछ प्रचार हिन्दी साहित्य सम्मेलनने महारामा गांधीकी सहायता से किया और अच्छी सफलता रही । महारामजीने शायिदमें हिन्दी भाषाका प्रचार होने के लिये अपने श्रीमुख से कहाथा कि “ सबसे कष्टदाई मामला

शाब्दिक भाषाओं के लिये है । ” अर्थात् महाभाषाओं में अन्ध सब भाषाओंको सरल माना है । सब भारतीय भाषाओंमें गुजराती ही एक ऐसी भाषा है जो अत्यन्त सरल और थोड़ेसे परिश्रम से ही ससप्त में आ जाने वाली है । सबसे बड़ी विशेषता यह है कि गुजराती लिपि बिल्कुल हिन्दी लिपि ( देवनागरी ) से मिलनी जुळती है । यदि थोड़ा बहुत फर्क है तो क, ई, फ, ख, ग, ज, झ, ण, ब, भ, इन अक्षरों में है । यह भेद ऐसा थोड़ा है कि एक बार के देखलेनेपर ही सब समझ में आजाता है । बंगला लिपि में यह बात नहीं है और न द्रविड़ देशीय भाषाओं में ही है । ही एक लिपि और भी है वह लिपि पंजाबी ( गुरुमुखी ) है । उसके अक्षरभ, अधिकांश हिन्दी लिपिसे मिलते जुळते हैं । वह भी गुजराती भाषाकी भाँति बहुत ही सहज है । किन्तु उसभाषा में इतने उत्तमोत्तम ग्रंथ नहीं है जिनको देखने के लिये उसे सीखना जरूरी है । सिवाय धर्म ग्रंथों के ऐसे और ग्रंथ नहीं हैं जो साहित्यमें अपना पद उच्च रखते हों । पंजाबी भाषाका ज्ञान कर लेना जरूरी है और मुझे जहातक स्मरण है “ पंजाबी हिन्दी शिक्षक ” नामसे एक पुस्तक भी प्रकाशित हो गई है । अस्तु ।

गुजराती भाषा बड़ी मनेहर और मधुर है । इसके माधुर्य की प्रशंसा प्रायः लोग किया करते हैं । भारतवर्षमें गुजराती ऐसीही है इनका साहित्य भी हराभरा वह जासकता है । गुजराती किसी प्रकार हिन्दी भाषामें कम नहीं कही जा सकती । इसके ग्रन्थों और पत्रों के पढ़ने से मनुष्य के ज्ञानकी वृद्धि होसकती है । गुजराती जान लेने के बाद लेखों तथा ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद और इसीप्रकार गुजराती भाषा भाषियों को हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद करने से दोनों भाषाओं के साहित्य की वृद्धि हो सकती है और अपना भी काम हो सकता है । लेकिन दूसरी भाषाको सीखलेना बच्चोंका केळ नहीं है हरकोई नहीं सीख सकता । बल्कि गुजराती और हिन्दी भाषा में अधिक भेद नहीं है तथापि उसे सीख

सेना सहज भी नहीं है। ऐसे स्थानों में जहाँ गुजराती या हिन्दी भाषा के जाननेवाले नहीं हैं और यदि हैं तो वे एक दूसरेको लिखना पढ़ना बोलना बगैर नहीं सिखा सकते। ऐसे स्थानमें पुस्तक ही एक ऐसा साधन है जो दोनों को एक दूसरे की भाषाका ज्ञान करा सकती है। इसी लिये “जयदेव ब्रदर्थ बदीदा” ने “गुजराती हिन्दी शिक्षक” पुस्तक प्रकाशित करके हिन्दी भाषाके जानने वालों के लिये गुजराती और गुजराती भाषा के जाननेवालों के लिये हिन्दी भाषा का सीखना सुगम कर दिया है। अक्षर ज्ञान होनेके बाद शब्द ज्ञान होना आवश्यक है और उसका एक मात्र साधन शब्दकोष है।

गुजराती भाषासे मतलब अर्जर देशीय भाषासे है। इस देश में समय के हेर फेर से नये नये राज्य हुए और नाश भी हुए। इस उलट फेर और घटा बढीका भाषा पर भी प्रभाव हुए बिना नहीं रहा। बहुत से प्रांतों के मनुष्यों तथा धर्मोपदेशकों के यहां आने से उनकी भाषा के शब्द भी गुजराती भाषा में आगये, इस प्रकार गुजराती के शब्दों में मलही बृद्धि हुई और यही मुख्य कारण है कि अरबी, फार्सी, संस्कृत, लैटिन, अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं के शब्द भी बिगड़े रूप में इस भाषा की वृद्धि कर रहे हैं।

गुजराती के ऐसे बहुत से शब्दकोष हैं जो गुजरातीसे गुजराती या गुजराती से अंग्रेजी हैं, किंतु उनमें हिन्दी भाषाके प्रेमियों को कोई लाभ नहीं। अभी तक हिन्दी भाषा में कोई गुजराती कोष नहीं है, हिन्दी साहित्य में यह एक बड़ा भारी अभाव था। यों से यह अभाव मेरे दिलमें खटक रहा था और इन्हीं ताकमें बैठा रहता था कि शीघ्र ही किसी गुजराती हिन्दी शब्दकोष के प्रकाशित होने की बात सुनाई पड़ेगी। किन्तु मुझे निराशा पूर्णक दिन बाटने पड़े। दिन प्रतिदिन व्यग्रता ने प्रबलता धारण की। मेने कई गुजराती हिन्दी प्रेमियोंको ऐसी पुस्तक के लिखने को कहा



परंतु किन्हीनेभी स्वीकार नहीं किया। मैं यह चाहता था कि कोई अनुभवी विद्वान ऐसी पुस्तक को लिखता तो साहित्यका बहुत कुछ उपकार होता किन्तु दिनोंतक मैं अपने विचारों को दबान सका। बसनी व्यक्ति के ब्यसन की तरह मेरी व्यग्रता बढ़ती ही गई। तब बही इरादा किया कि खुदही इस कार्य को करूं। प्रस्तुत पुस्तक उसी विचारका फल है। उस परम पिता परमात्मा की कृपासे मैं अपने इस कार्य में आज सफल हो सका हूं।

मेरी मातृ-भाषा हिन्दी है, ऐसी दशा में इस कोष में अनेक त्रुटियों का रहमाना संभव है तथापि मेरे इस अनधिकार परिश्रम के लिये मैं अपने को क्षम्य समझता हूं। मैं अपने गुजराती हिन्दी जानने वाले पाठकों से नम्रता पूर्वक प्रार्थना करता हूं कि इस उपरिक्त कोषकी त्रुटियों से मुझे या प्रकाशकों को अवश्य सूचित करते रहें ताकि इस के दूसरे संस्करण में वे शोषनी दूर कर दिये जायें। ऐसा करनेसे मुझपर तो कृपा होगी ही किन्तु साथही हिन्दी भाषाकी सर्वांकुष्टता का भी साधन होगा। मुझे पूर्ण जगोसा है कि भाषा प्रेमी महाशय मेरी इस प्रार्थना को सदा ध्यान में रखने की कृपा करेंगे।

एक बात यहां और कहनेकी है कि गुजराती शब्दोंमें ह्रस्व वर्ण के प्रयोगों में कुछ विधिलता है इस लिये कोष देखने वाले सज्जन इस बातका ध्यान रखें कि यदि शब्द ह्रस्व में न मिले तो दीर्घ में और दीर्घ में न मिले तो ह्रस्व में देख लेना चाहिये। इसी तरह श, ष, स का हाल है—जरा इस बातका स्याल रखना चाहिये। साथही यहभी कह देना ठीक समझता हूं कि कोषोंके लेखक "ह्र" को "क" में "ह्र" को "ज" में और "अ" को "त" में लिखवाते हैं क्योंकि ये तीनों अक्षर संयुक्ताक्षर माने गये हैं। किन्तु मेरी यह इच्छा थी कि जिस प्रकार ये अक्षर वर्णमाळा के अंत में हैं उसी प्रकार मैं भी रखूंगा। परंतु

खेदकि हम और जू तक तो खयाल रहा और जू के बिबे भूल गया अतएव वह त अक्षर में आगया । मैं अपनी इस भूल के लिये पाठकों से क्षमा चाहताहूँ । आशा है आप क्ष जू के बिबे इस प्रार्थनाको नहीं भूलेंगे ।

इस कोष के लिखने में भेने वैसे तो कई कोंबोंकी मदद ली है बिबु " नर्मकोष " गुजराती अंग्रेजी कोष और " गुजराती शब्दकोष " से विशेष सहायता प्राप्त की है अतएव मैं उक्त कोषोंके लेखकों का आभार मानताहूँ । अब अन्तमें मैं अपनी भूलबूकों के लिये अपने सहृदय पाठकों से क्षमा चाहताहुआ हूँ " प्रस्तावना " को यहाँ समाप्त करताहूँ " बधिरःकोष विवर्जितः "

सांतेकुटी,  
आगर माळवा  
रामनबमी सं. १९८१ विक्रमीच. }

प्रार्थी  
गणेशदत्तशर्मा गौड़.

## शब्दोंके लिये व्याकरणशास्त्र विषयक संकेत..

( सं० )	=	संज्ञा
( क्रि० )	=	क्रिया
( स० )	=	सर्वनाम
( कि.वि. )	=	क्रियाविशेषण
( उ० )	=	उपसर्ग
( विस्म. )	=	विस्मयार्थ बोधक
( वि० )	=	विशेषण
( अ० )	=	अव्यय
( — )	= }	कहावत वगैरःकेलिये ।
( — )	= }	

## कोष पर सम्मतिएं.

सुप्रसिद्ध राजोपदेशक श्री स्वामी विष्णेश्वरानन्दजी सरस्वती (सिमला) " इस कोष की वास्तव में बड़ी आवश्यकता थी जिसको पूर्ण कर आपने देश, जाति और राष्ट्र की भारी सेवा की है। प्रत्येक हिन्दी प्रचारक संस्था तथा महानुभाव सज्जनको इसके प्रचारमें योग देना अपना पवित्र कर्तव्य समझना चाहिए। "

• देशभक्त कुंवर खाँदकरजी शारदा अजमेर " इस समय मुझे बंबई प्रान्तमें घूमने का जो अवसर मिला उसमें मैंने अनेक स्थलों पर गुजराती भाषा भाषी सज्जनों के लिए इस जहरत को अनुभव किया जिसे आपने गुजराती हिन्दी कोष द्वारा पूर्ण किया है। इस सफलता के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आपने देश राष्ट्र और हिन्दी भाषा की ऐसी सेवा की है जिसका वर्णन हो नहीं सकता। आपका यह कोष प्रत्येक देश हितैषी सज्जन के पास होना चाहिए। इसकी विशेषता एक यह है कि इतना उपयोगी होने पर बहुत सस्ता है। "

राजवरुण पं० आत्मारामजी एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा ' यह कोष मैंने विचारपूर्वक पढ़ा। मैं इसको न केवल गुजराती बंधुओं के लिए ही एक परम उपयोगी वस्तु समझता हूँ किन्तु हिन्दीवानों के लिए भी यह एक बड़े कामकी चीज है। जिस देशों, सम्प्रदायोंका अभाव है वहाँ कभी कोई सभा, विद्यालय, पाठशाला अपना पूर्ण काम नहीं कर सकती, सब तो यह कि एक सम्प्रदाय सौ मास्टरों से भी बढ़ कर भाषा प्रचारका साधन है और मैं कह सकता हूँ कि आपका उत्तम तथा उपयोगी कोष राष्ट्रीय भाषा हिन्दी प्रचार में एक प्रबल और अपूर्व साधन सिद्ध होगा। प्रत्येक हिन्दी प्रचारक देशहितैषी सज्जनको इसके प्रचार के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए। "

અમરેલી શાંતિવાસવાસના રા. હોદાલાલ ર. મદુ કિંહરવાસેન સ્પેશિયાલિસ્ટ બને છે, “ આ ગુજરાતી હિન્દી કમ્પોઝનું કપાયેલું પહેલું પુસ્તક અને મધારાના બીજા ખામનાં છાપેલાં કાર્ય હું બોલું વધો હું અને અસાધારણ પ્રયત્નથી શાક્ષીય રીતે તૈયાર થયેલા આ અતિચત્વરેથી પ્રંયત્ની ગુજરાતી પ્રજા પૂર્ણ કરી કરે દમ હસું હું જ્યારે હિન્દી માત્રાને રાષ્ટ્રભાષા તરીકે સ્વીકારવાનું હોવાના હરેક કુલ માવકોને અવશ્યક લાગ્યું છે ત્યારે આવા એક કોષની અગત્ય અનિવાર્ય છે એ મોં દેખાતું જ છે. ગુજરાત વિદ્યાપીઠ જેથી પ્રજાક્ષીય સંસ્થાઓમાં અને મહેદર રાજ્ય જેથી રેલવે-ચિત્ત રાજ્યમાં આ પુસ્તક ટેકસ્ટબુક બાજુ તોજ ખોલા કરવામાં લેવાની થઈ. જનતાને એક માધ્યમ દ્વારા એકઠી થવાનો સુવોગ પ્રાપ્ત થાય. એવો એક પ્રયત્ન માત્ર સેવા દૃષ્ટિથી જ આશરીને તેને સફળ થાર લતારવા માટે શ્રી જયદેવ ત્રવર્સ મહેદરાને અનેક શ્રમવાદ થટે છે. ”

## ભારતીય પત્ર સૂચી

ભારતવર્ષ મરમે પ્રકાશિત હિન્દી, ગુજરાતી, મરાઠી, ઉર્દુ, સિન્ધી, તામીલ, તૈલગુ, બંગાલી, અંગ્રેજી, માધ્યમો કે પત્રોં કી સૂચી તથા યતા મદત ઉપયોગી સંગ્રહ હૈ. જનવરી ૧૯૨૪ મેં છપી હ પાંચ બાનેકી પોષ્ટલો ટિકટોં મેં જનેવર મેં જી જાતી હૈ ।

જયદેવ ત્રવર્સ મહેદરા

# गुजराती-हिन्दी-कोष

अ

अ-गुजराती वर्णमालाका प्रथम अक्षर  
निषेधार्थ उपसर्ग, ( जिस शब्द के  
आगे आता है, उसका अर्थ विप-  
रीत हो जाता है )

अ३२ ( सं. ) बनावट, दिखावट.

अ३३५५ ( सं. ) छेला, ( गु. सं. )  
चटकीला, भड़कीला.

अ३३५ अ३३५ ( सं. ) न्यदां, रीस,

अ३३५३ ( सं. ) भड़कीलापन, गर्व,

दिखाना, अकट [ ठनना

अ३३५५ ( कि. ) शेखी करना, बनना

अ३३५५५ ( गु. सं. ) अकथनीय,

अ३३५५५ ( सं. ) अकबर के

समय का एक स्वर्णका सिक्का

अ३३५ ( सं. ) बुराकाम

अ३३५३ ( गु. सं. ) अकर्मक (क्रिया)

अ३३५५ ( ,, ) कम्बल, अमागा,

अ३३५५५-५५ ( गु. सं. ) मुखमरा,

आँखें खानेवाला

अ३३५ ( गु. सं. ) उकड़, एक प्रकार  
का बैठक-पंजा के बल बंठा हुआ।

अ३३५५५ ( सं. ) रीठ, कीद,   
अकरका। [ बुद्धि-चानुर्ब.

अ३३५५ ( गु. सं. ) बुद्धिमान, अ३३५५-

अ३३५५५ ( गु. सं. ) अकल्पित, सत्य,

अ३३५५५ ( सं. ) कम्बल, दुर्भाग्य।

अ३३५ ( सं. ) काना, बुज लाग

रखना [ करनेवाला।

अ३३५५५५ ( गु. सं. ) कानावर द्वेष्ट

अ३३५५५ ( सं. ) अचानक घटना

अ३३५५५ ( कि. वि. ) प्रायः, अगर,

शायद

अ३३५५५ ( गु. सं. ) अकसीर

अ३३५५ ( गु. सं. ) बुद्धिसे परे, समझ

से बाहर, जो समझा न जा सके।

अ३३५५५५ ( गु. सं. ) चबराया

हुवा, परेशान [ मेचैनी

अ३३५५५५ ( सं. ) व्याकुलता,

अक्षणावधुं (क्रि.) घबरा देना, थका देना, या दिक करना.

अक्षणावधुं (क्रि.) थक जाना, घबरा जाना, दिक हो जाना ।

अक्षणावधुं (गु. सं.) गूढ, गुप्त

अक्षणावधुं (सं.) बड़ा आदमी, भला मानस

अक्षणावधुं (गु. सं.) अकारण व्यर्थ,

अक्षणावधुं (गु. सं.) बे फायदा, नाहक, फलहीन ।

अक्षणावधुं (वि.) अरोचक, नापसंदोदा।

अक्षणावधुं (वि.) असामयिक, कुसमय । [ काल ।

अक्षणावधुं (वि.) असमय, अप्राप्त-

अक्षणावधुं (सं.) बेमौत, असा-  
मयिक मृत्यु ।

अक्षणावधुं (सं.) संगे सुलेमानी, एक प्रकार का मूल्यवान पत्थर

अक्षणावधुं (सं.) निन्दा,

अक्षणावधुं (सं.) स्वर्ण अक्षणावधुं (सं.) समुद्र [ कुलका ।

अक्षणावधुं (वि.) अकुलान, नांच

अक्षणावधुं (सं.) अवकृपा, नाराजी ।

अक्षणावधुं (क्रि. वि.) एक के बाद एक ।

अक्षणावधुं (सं.) कान की बाला ।

अक्षणावधुं (वि.) दीन, गरीब ।

अक्षणावधुं (सं.) बुद्धि, समझ, जिहन, बोध, ज्ञान [ बांका

अक्षणावधुं (वि.) अलबेला, रंगीला

अक्षणावधुं (वि.) अक्षमन्द, बुद्धिमान,

अक्षणावधुं (सं.) कुशल बुद्धि, राजी खुशी से ।

अक्षणावधुं (सं.) पांसा,

अक्षणावधुं (सं.) छिलके सहित चावल, धान,

अक्षणावधुं (वि.) बेहद, अनन्त

अक्षणावधुं (सं.) हर्फ, अक्षर, ब्रह्म,

अक्षणावधुं (सं.) बीजगणित, एलजबरा ।

अक्षणावधुं (क्रि. वि.) हर्फ व हर्फ, अक्षर, अक्षर, शब्द ।

अक्षणावधुं (सं.) अक्षोष ।

अक्षणावधुं (सं.) नेत्र, आंख, नयन.

अक्षणावधुं-उत्त (वि.) सम्पूर्ण, परा. अविभाजित ।

अक्षणावधुं (वि.) सम्पूर्ण, अखण्डनाय ।

अक्षणावधुं (सं.) सदानुहास,

अक्षणावधुं (वि.) अकाव्य, जो खंडन न किया जा सके । [खबर, सन्देश ।

अक्षणावधुं (सं.) सम्वाद, समाचार

अक्षणावधुं (सं.) अधिकार, जौर

अभ्यारनवीस-नीस (सं.) सम्वाद  
दाता [ प्रसिद्ध फल  
अभ्यारोट (सं.) अखरोट नामक  
अभ्याश्लेष (किं.) अवहेलना।  
अभ्याश्लेष (सं.) अखाडा, मेदान,  
हंगल [ गड्ढा।  
अभ्यात (सं.) खाड़ी, खर्लाज,  
अभ्यक्ष (वि.) समस्त, तमाम,  
आखिल। [ पार न हो।  
अभ्युत् (वि.) अनन्त, जिसका  
अभ्योत् (वि.) अखरोट, निदांष  
अभ्योत्तन (सं.) एक स्त्री-न विधवा  
और न जिसका बच्चा मरा हो।  
अभ्युत्तरे (सं.) परीक्षा, परख,  
जांच।  
अभ्युत्तरे (सं.) एक प्रकारकी  
दक्षिणा, जो अन्न या फल रूपमें  
पुरोहित को त्याहारपर दी जाता है।  
अभ्य (सं.) सर्प, मृग, पर्वत,  
एक वृक्ष।  
अभ्युत्तरे (सं.) मोटा, स्थूल।  
अभ्युत्तरे (वि.) अमरुद, बेछु-  
मार, अनन्त, बेहद, अगणित।  
अभ्युत्तरे (सं.) आवश्यकता, इच्छा,  
चाह, जरूरत,  
अभ्युत्तरे (वि.) आवश्यक, जरूरी,  
ध्यान देने योग्य, उपयोगी, प्रधान।

अभ्युत्तरे (सं.) एक प्रकारका पुष्प  
अभ्युत्तरे (सं.) ताप, आग, दुर्द,  
अभ्युत्तरे (सं.) भारी घटना, भारी  
वृत्त।  
अभ्युत्तरे (सं.) भूत भविष्य  
अभ्युत्तरे (सं.) दूरदर्शी, अग्र-  
दृष्टि, पूर्व ज्ञानी, पूर्व विधानी,  
भविष्यवक्ता।  
अभ्युत्तरे (सं.) दूर अदृष्टी,  
अगम पूर्व विचार।  
अभ्युत्तरे (वि.) दूर दर्शी  
अभ्युत्तरे (वि.) गंभीर, कठिन, गूढ़,  
पटु सं वाहिर।  
अभ्युत्तरे (सं.) नमक के कड़ाह  
समुद्रके निकटस्थ गड्ढा जो नमक  
बनानेके काम में आता है। अगर  
यदि, कदाचित  
अभ्युत्तरे (अ.) कदाचित  
अभ्युत्तरे (अ.) यदि नहीं, अन्यथा  
अभ्युत्तरे (सं.) अगरवत्ती, कद-  
वत्ती, मुंगेधित पदार्थों द्वारा तैयार  
कौ हुई एक लम्बी सलाई, गन्ध-  
शलाका।  
अभ्युत्तरे (सं.) कठिनता, मुश्किल,  
दुख, पीड़ा, बाधा। [ रहनुमा  
अभ्युत्तरे (सं.) अगुवा, पदप्रदर्शक,

- अभा३-यी, अभाडी-यी-(कि. वि.) पहिलेसे, पेशतरसे । [ पाठ ।  
 अभाडी ५०डी, ( कि. वि. ) आगे  
 अभात ( कि. वि. ) पूर्वकालमें,  
 पुराने वक्तोमें ।  
 अभाध ( वि. ) बहुत गहिरा,  
 अधिक आँड़ा, अगाध ।  
 अभा२ ( सं. ) भवन, मकान, घर  
 अभा-सी ( सं. ) चढ़तरा, छत,  
 कोठा ।  
 अभा३आ२ अथुवा ( कि. ) भाग-  
 जाना, लेनागना, रफूचकर होना ।  
 अभा३आरी ( सं. ) सिघड़ी, अंगीठा,  
 बरोसा, आग रखने का स्थान ।  
 अथुथी ( वि. ) कृतघ्न, अधन्यवादा  
 अभा३अ२ ( वि. ) बेसमझ, अहंश्च,  
 न मालूम पड़नेवाला, अगोचर ।  
 अभा३- ( सं. ) आग, अग्निदेव ।  
 अभा३कुं६ ( सं. ) हवन की वेदा ।  
 अभा३कुं६ ।  
 अभा३कुं६ ( सं. ) पूर्व और दक्षि-  
 ण के बीचकी दिशा, आग्नेयकोण ।  
 अभा३कुं६ ( सं. ) वह आग्रण जो  
 नित्य अग्निहोत्र करता हो, उस  
 अग्नि को सदा सावधानी से सुर-  
 क्षित रखनेवाला ।  
 अभा ( सं. ) सिरा, पहिला, अग्र ।  
 अभा३भा३ ( वि. ) आगे चलनेवाला ।  
 अभा३भा ( वि. ) पहिले पैदा हुआ,  
 बड़ा । [ मोक ।  
 अभा३भा ( सं. ) आगेका हिस्सा,  
 अभा३भा३ ( सं. ) मुद्दई, वादी ।  
 अभा३भा ( वि. ) अलीन, नापसन्द,  
 नागवार, [ मनुष्य, अन्वत ।  
 अभा३भा३ ( वि. ) अगुवा, एक खास  
 अभा ( सं. ) अपराध, पाप, अधर्म ।  
 अभा३भा ( वि. ) अनुचित, बेजा ।  
 अभा३भा३ ( सं. ) प्रथम गर्भ, सगर्भ ।  
 अभा३भा ( वि. ) कठिन, सख्त ।  
 अभा३भा३ ( सं. ) अनिवार, सं-  
 ग्रहणी । [ पक्षियों का विद्या ।  
 अभा३भा ( सं. ) चिड़ियों की भीठ ।  
 अभा३भा ( वि. ) खतरनाक, अर्धक-  
 रता, हानिकारक, दुष्ट, [ आलसी ।  
 अभा३भा३ ( सं. ) निर्द्वेष, हानिकर,  
 अभा३भा ( सं. ) अक, सेलिया, अद्व,  
 अक ( नाटक )  
 अभा३भा३ ( सं. ) अंकगणित,  
 हिसाब किताब । [ खींचा हुआ ।  
 अभा३भा३ ( कि. वि. ) चित्रित, रेखा  
 अभा३भा३ ( कि. वि. ) एक  
 पंक्ति में एक सतर में ।  
 अभा३भा३ ( सं. ) अंकुश, आंकुश, हुक,  
 अभा३भा३ ( सं. ) एक प्रकार का  
 छोटा वृक्ष,



अंग ( सं. ) शरीर, जिसका भाग,  
खंड, टुकड़ा, अंग ।

अंगविधारे ( वि. ) उचार लिखा  
हुवा, कर्ज लिखा हुआ ।

अंगग्रीही ( सं. ) शरीर पञ्जर,

अंग शक्ति ( सं. ) कुर्त, तेजी,  
चपलता ।

अंगम ( सं. ) बेंटी, पुर्जा, न-  
जवा, मुता । [ जिस्मानी-ताकत ।

अंगमण ( सं. ) शारीरिकगति,

अंगरथु ( सं. ) अंगरक्षा, कांठ ।

अंगरेम ( सं. ) देहरोम, शरीररोग  
अंगरोग । [ देहका भाव ।

अंग - क्षय ( सं. ) शरीरके क्षय ।

अंगवर्धु ( सं. ) रूप-रंग,

अंगवर्ध ( सं. ) पोशाक, दुपट्टा,  
कमाल । साधक । [ अंग स्थिति ।

अंग स्थिति ( सं. ) ठग भाव,

अंगारे-रा ( सं. ) आग का अगारा  
जलता हुआ कोयला वा अन्यवस्तु

अंगीकार ( सं. ) स्वीकार अंगीकार

अंगीकार करण ( सं. ) स्वीकार  
करना, मंजूर करना ।

अंगीकृत ( वि. ) अंगिकृत । स्वी-  
कार किया हुआ । [ अंगीकृत ।

अंगुलि ( सं. ) कमाक, तौकिया,

अंगुली ( सं. ) अंगुली, मुद्रिका ।

अंगुली-द्व ( सं. ) अंगुली, अंगुली ।

अंगूर ( सं. ) अंगूर नामक फल ।

अंगिणी ( सं. ) चूल्हा, माँ, माँ,

अंगीठी [ के निवासो इंग्रेज,

अंग्रेज ( सं. ) यूरोपियन, यूरोप

अंग्रेज ( सं. ) आन, मुँह हाथ  
धोना [ नहाना ।

अंग्रेजगुं ( कि. ) आन करना,

अंग्रेज ( कि. वि. ) प्रत्येक अंगमें ।

अंगु ( कि. ) ठहरना, अटकना,

ठकलाना, डगमगाना, रुकजाना,

तिव किचाना, भागा पाछा करना

सन्दर्भ करना सुतलाना, हटाना

अंगुली ( कि. ) अकम्मान ठह-  
राना, अचानक रुकना, रोकना,

अटकाना, अलग करना ।

अंग १ मयके ( सं. ) एक प्रकारका

गल जो लड़किया खेल करती हैं ।

अंगुली ( सं. ) मुस्त, मूद, मन्त्र,

स्थिर हक, अचंचल ।

अंगुली ( वि. वि. ) अकम्मान,

अचानक एकएक,

अचाने ( कि. वि. ) अचाने,

अचाना, चबराहट ।

अंगरे ( वि. ) स्थिर, स्थावर, अवर

अंगरे ( सं. ) आचाने, अचाना,

विस्मय

अभ्युदय (सं.) अचंभा, घबराहट ।  
 अभ्युदय (वि.) अचल, दृढ, मजबूत ।  
 अभ्युदय (सं.) अवार, अघाना,  
 अभ्युदय (कि वि.) अकस्मात्  
 एकाएक [ से बाहर, अचिंत्य ।  
 अभ्युदय (वि.) अशोच्य, समज  
 अभ्युदय (वि.) ठीक, सही, उचित,  
 अभ्युदय (वि.) बेहोश, विजाव,  
 अज्ञानी, अनाडी, अनजान ।  
 अभ्युदय (वि.) देखो अचैत  
 अभ्युदय (वि.) उत्तम, उम्दा,  
 अच्छा, भेष्ट, ठीक, बहुत ठीक ।  
 अभ्युदय (वि.) जो काट न जा सके  
 अभ्युदय (सं.) आधासेर, दो पाव  
 आठ छठोंक  
 अभ्युदय (सं.) अविनाशी, ईश्वर,  
 अभ्युदय । [ दुष्प्राप्त,  
 अभ्युदय (सं.) खाली, कमी, रहित,  
 अभ्युदय (सं.) एक प्रकारकी चेक  
 अभ्युदय (सं.) नाथ (बैलका),  
 फजीर ।  
 अभ्युदय (कि.) श्लेष  
 करना, खातिर करना, मन रखना,  
 पुचकारना, प्यार करना ।  
 अभ्युदय (सं.) बड़ा, ईश्वर, बकरा,  
 अजन्मा, जो पैदा न हुआ हो ।  
 अभ्युदय (सं.) बड़ा सौंप, अजन्म

अभ्युदय (कि.) अव्युत्त, अजीब,  
 विस्मयकारक ।  
 अभ्युदय (कि.) अजमाका,  
 प्रयत्न करना, परिश्रम करना,  
 परीक्षा करना, जाँच करना, परख  
 करना ।  
 अभ्युदय (सं.) प्रयत्न, परीक्षा,  
 जाँच, परख । [ मोदा ।  
 अभ्युदय (सं.) अजवायन, अज-  
 अभ्युदय (सं.) अजमोद ।  
 अभ्युदय (सं.) कुरासानी  
 अजवायन ।  
 अभ्युदय (वि.) अमर्त्य तथा  
 अजर जो न मरे न बूझा हो  
 ईश्वर । [ चटना ।  
 अभ्युदय (सं.) मृत्यु, अदम्य,  
 अभ्युदय (कि.) उजालना,  
 बोना । [ नी से प्रकाशित ।  
 अभ्युदय (वि.) चौदनी, चौद-  
 अभ्युदय (सं.) प्रकाश, उजाला,  
 रोशनी, जगमगाहट ।  
 अभ्युदय (सं.) बकरी, अजा ।  
 अभ्युदय (वि.) अनजान,  
 अज्ञान, मूर्ख, असिद्धित ।  
 अभ्युदय (सं.) अव्युत्त, विदेशी,  
 अनजाना ।

अनुपासक ( सं. ) गहरिया,  
मेढ़करी पालने वाला ।

अनु ( वि. ) ऊँ, उच्छिष्ट ।

अनुत ( वि. ) अजेय, जो न जीता  
या हो, अजीत ।

अनुत्तु ( सं. ) बद्धुप्पी, अजीर्ण,  
कुपव । ताजा, नया ।

अनुतु ( सं. ) मात्रा " २ "

अनुत ( सं. ) अंत आखिर,

अनुत ( सं. ) नेत्रा में लगाने का  
अजन, सुरमा, काजल ।

अनुत नु ( कि ) चौधिया  
बाना, ठगे जाना, थोका खाना ।

अनुत ( सं. ) अंजोर नामक प्र-  
सिद्ध फल । [ बचाव, दामा ।

अनुत ( सं. ) बहाना, झुटकारा,

अनुत ( सं. ) हण्डस नामी अटक  
नदी, कल नाम, पद ।

अनुतानु ( वि. ) हानिकारक,  
दुष्ट, हरा, रसिक, ठठेबाज ।

अनुतु ( सं. ) हंन, आभय,

अनुतु ( कि. ) ठहरना, इन्तजार,  
करना, प्रतिष्ठा करना, रोकना  
अटकना । [ अटकल, अनुमान ।

अनुतु ( सं. ) अन्धाज, कवास,

अनुतु अनुतु ( कि. ) अनुमान  
करना, अंदाज बांधना, कवास  
करना ।

अनुतु ( सं. ) जाड़, रोडकेक,  
सासिक—बर्ष, खरखका, खो-  
दर्शन ।

अनुतु अनुतु ( सं. ) नाव नहरा,  
चटक मटक । [ भ्रमण ।

अनुतु ( सं. ) प्रवास, यात्रा,

अनुतु ( वि. ) अटपटा, कठिन,  
घबरानेवाला, पेचदार, उलझा  
हुआ, [ विचरना ।

अनुतु ( कि. ) घूमना, अटकरना

अनुतु ( सं. ) पल्लोचन, बाँक-  
लो का आटा जो गेहूँ की रोटीको  
को कठोर बनाने के लिये प्रयोग  
किया जाता है ।

अनुतु ( सं. ) ऊपरका मकान,

दूसरी मंजिल, अटारी, अटलिक,

अनुतु ( सं. ) सप्ताह, हप्ता,  
सात दिनों की अवधि ।

अनुतु ( कि. ) विधाम करना,  
आराम लेना, झुकटना, संमालना  
निदरना, टेकलगाना सहारा लेना ।

अनुतु ( सं. ) पैरों पहिने  
का एक प्रकार का आभूषण ।

अनुतु ( सं. ) बाधा, रोक टोक,  
अटकाव । हड़ता, मुन, हठ, बिह,  
सरकणी

अनुतु—अनुतु ( कि. ) निदरना,  
उसकाना, बिगड़ना, पहुँचना ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) रजखला की ।

अक्षरान्वेदी ( कि. ) बंद करना, ठहराना ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) ठहरानेवाली, अड़-गड़ी जो द्वार पर लकड़की दरवाजा बन्द करने को लगाई जाती है, आगल । [ बाधा ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) अड़ंगा, रुकावट,

अक्षरान्वेदी ( सं. ) कठिनता दुख, पीडा, बाधा, तकलीफ ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) रक्षा, शरण, बचाव, पनाह, आश्रय, पनाह, मनाह, महारा, सम्भा ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) निकट, नमोप, पास,

अक्षरान्वेदी ( वि. ) मजबूत, दृढ़, यत्न, बलवान, साहसी, मोटा ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) एक बड़ी रोक ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) उड़दकी टाल, उड़द ।

अक्षरान्वेदी अक्षरान्वेदी ( कि. ) बुरा तरह से पाटना, काठण दण्ड देना ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) आधा,  $\frac{1}{2}$ ,

अक्षरान्वेदी ( सं. ) अठना

अक्षरान्वेदी ( वि. ) दुष्ट, ठठुबाज, व्यर्थ दखल देनेवाला, अनाधिकार चर्चा-शील, हस्तक्षेप करनेवाला ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) घुँसा, मुक्का, मोड़, पंच ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) मूख, बेवकूफ, जिद्दी ।

अक्षरान्वेदी ( कि. ) छूना, स्पर्श करना, वि. ) सीधा सादा । सादा ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) उपानह, नंगे पैर ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) कृत, जान, आंक अटकल से कृत ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) कंठा, छाना, उपला ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) बरांडा बरामदा, उसारा । [ आइयल ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) हठी, जिद्दी, मूख,

अक्षरान्वेदी ( कि. वि. ) आवश्यकता क समय, जरूरत के वक्त, कठिन समय

अक्षरान्वेदी ( वि. ) उथला पुथल ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) निकट, पास, नमोप बगबर ।

अक्षरान्वेदी पड़ोसी ( सं. ) पड़ोसी, पास रहनेवाला, हमसाया ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) निकम्मा, बेकार । [ कड़ा, मजबूत ।

अक्षरान्वेदी ( वि. ) दृढ़, पक्का, ठोस,

अक्षरान्वेदी ( वि. ) ठाढ़, अठाढ़,  $2\frac{1}{2}$ ,

अक्षरान्वेदी ( कि. ) विभ्राम करना, आराम करना । टिकना, ठुक्ना ।

अक्षरान्वेदी-अक्षरान्वेदी ( वि. ) बेहतर, अजान, अनाड़ी ।

अक्षरान्वेदी ( सं. ) अक्षरान्वेदी

अधुभत ( सं. ) पक्षपात, ईर्ष्या,  
चाह, धृणा, अरुचि, [ नास्तुत ।

अधुगभतुं ( वि. ) अप्रसन्न,

अधुपठतुं ( वि. ) अधित्त, अनु-  
नित, वेजा, अयोम्य.

अधुमिर्तुं ( वि. ) आकस्मिक, एका-  
एक अचानक ।

अधुछतुं ( वि. ) गत, खानगी, घर ।

अधुटीर्तुं ( वि. ) अनदेखा, अदृष्ट,  
अकस्म ।

अधुपनाव ( वि. ) झगड़ा, अन-  
वन, नागजी, रुष्टता ।

अधुभानीतुं ( वि. ) अमान्य, कृ-  
पाम वाचत, अप्रिय ।

अधुपट ( स. ) एक प्रकार का  
चाद का आभूषण ।

अधुवर ( न. ) दण्डा या दुलहिन  
का साथ । विनायक ( विन्दायक )

अधुसम्यु ( वि. ) मूर्खता,  
बेसमझ,

अधुसारे ( सं. ) इसारा करना,  
सूना करना, नजारा मारना । ओखें  
झपकाना या मटकाना ।

अधुह ( वि. ) असाम, बेहद ।

अधिभा ( सं. ) अधिसिद्धियों से  
एक ।

अधु ( सं. ) नाक, नेत्र, छोर,  
लिखनेकी पत्ती, बाजूक समय । पैना ।

अधु १६वीं ( कि. ) धार करना,  
पैना करना, तेज करना ।

अधुआइ-हाइ ( वि. ) पैना, तेज,  
निशित ।

अधुआइ-हाइ ( सं. ) खंटी, कील ।

अधुशुद्ध ( वि. ) सारा, पूर्ण,  
बिल्कुल,

अधु ( स. ) अणु, परिमाण, ।

अधु ( सं. ) छुछी, तार्ताल ।

अधुवाधु ( कि. ) घबड़ाना, कै-  
साना, उलझाना ।

अधुस ( सं. ) दुश्मनी, फर्क, अ-  
न्तर, विराध, वैर, शत्रुता ।

अधु ( स. ) अडा, अडकोष वरुण ।

अधु ( वि. ) अंडा देनवाले ।  
अउज । [ एकल, अडाकृति ।

अधु ( वि. ) अडे की

अतडे-डु ( वि. ) चुपचाप, दूर,  
चालाक, अलाहदा । [ विदेशी

अतडी ( म. ) अदभुत, विचित्र,

अतरे ( कि. वि. ) यहाँ, इसजगह ।

अतरे ( सं. ) एक शैलीन मरीखों  
कपड़ा । [ गवेया ।

अतरे ( सं. ) सुरागी, अच्छा

अति-दी ( वि. ) अधिक, अति,  
अत्यंत, बियादः, बहुत ।

अतिशय ( सं. ) दीर्घकाल, काळा-  
न्तर, देर । [ जियादः ।

अतिशय ( वि. ) अत्यधिक, बहुत

अति ( सं. ) जोगी, फकीर, भि-  
क्षुक, संन्यासी, योगी, अर्थात् ।

अतिवादी ( सं. ) शूर, वीर,  
बहादुर,

अतिशय ( वि. ) अतिशय,

अतिशयोक्ति ( सं. ) अतिशयोक्ति,  
बढ़कर बोल, अन्युक्ति वाक्य-  
विस्तार ।

अतिसार ( सं. ) एक प्रकार का  
रोग, अतिसार, दस्त लगना ।

अतुल्य ( वि. ) अनोखा, अनूप,  
' बेमिसाल, अनूठा, अद्वितीय ।

अतुल्य ( वि. ) अनुल, जो ताला न  
जा सके ।

अतुर ( सं. ) इत्र, अत्तर, मुगन्धा

अतुरधडी ( क्रि. वि. ) अभा हाल,  
एकदम, इमी क्षण, शर्मा अभी ।

अतारी ( सं. ) अत्तार, इत्र का  
घन्धा करने वाला, गन्धी ।

अत्यंत ( वि. ) अत्यंत, बहुत ।

अतार पछी ( क्रि. वि. ) इसके  
आगे, इसके बाद ।

अतार लगी ( क्रि. वि. ) अयावधि,  
अभी तक, इस समय तक ।

अतार ( क्रि. वि. ) अभी, इसी  
वक्त । [ जगह ।

अत्रे ( क्रि. वि. ) यहाँ, इसी

अथ ( क्रि. वि. ) अथ, आरंभ,  
शुरू ।

अथ प्रति ( क्रि. वि. ) आद्यंत,  
आरंभ से अंत तक । अथ इति ।

अथर्व ( क्रि. ) टकराना, मटार  
गस्त करना । [ वेद ।

अथर्व ( सं. ) अथर्व वेद । चौथा

अथवा ( अ. ) या, यदि, अगर,  
कोई प्रत्येक, एक न एक, अथवा ।

अथाग ( वि. ) अथाह, अगम्य,  
बहुत-गहिरा ।

अथाग भांडो ( सं. ) गहिरा गहड़ा

अथाथुं ( सं. ) अचार, मुरब्बा,  
अथाना ।

अथोटी ( सं. ) हथोटी, हथकड़ा,  
चतुराई, चालाकी, अनुभव ।

अथोडी-डो ( सं. ) हथोड़ा, धन ।

अधक ( वि. ) अधिक, जियादः ।

अधोलुं ( वि. ) अधखुला, अधवि  
कसित ।

अधुध ( वि. ) वेदगा, बेजला,  
अदग्ध । [ गराब, नम्र, अदना ।

अधना ( सं. ) नीच, कमना,  
अधुन ( सं. ) अदब, मान, इज्जत ।

अइभूत ( वि. ) विचित्र, अवभूत ।  
 अइल ( वि. ) उचित, वाजिब,  
 निष्पक्ष, न्यायी, सत्य, शुद्ध ।  
 अइलअइल करुणुं ( क्रि. ) हेरफेर  
 करना, अदलबदल करना ।  
 अइल अइली ( सं. ) हेरफेर, परि-  
 वर्तन, अदल बदल ।  
 अइसरुं ( वि. ) अधमरा ।  
 अइ ( सं. ) भाव, चेष्टा, अदा,  
 वैर, विरोध, दृष्टा, नफरत, द्वेष ।  
 अइ करुं ( क्रि. ) कृण चुकाना ।  
 अइअत ( सं. ) अदालत, न्याया-  
 लय । [ दुस्मनी, शत्रुता ।  
 अइवत ( सं. ) वैर, विरोध,  
 अहीन ( सं. ) धनवान, दौलतमंद ।  
 अहीरे ( सं. ) भेट, उपहार ।  
 अहेभाध ( सं. ) ईर्ष्या, डाह, कुहन,  
 जल्मन । [ बाला ।  
 अहेभुं ( वि. ) ईर्ष्या, डाह करने  
 अइरु ( सं. ) अहंरु, अलोप ।  
 अइरु ( वि. ) जो न पिघले  
 ( टिघले ) अद्व ।  
 अइपि ( क्रि. वि. ) अभी तक,  
 इस समय तक, अद्यावधि ।  
 अइर ( सं. ) अदरख ।  
 अइ ( सं. ) एक पहाड़ ।  
 अध ( वि. ) अर्द्ध, आधा, १/२ ।

अधकर ( वि. ) अधकचरा, मर  
 बेपका, अधपका, अधसीजा ।  
 अधधुयातुं ( वि. ) बे मालिक,  
 स्वामिहीन, अनाथ ।  
 अधधध ! ( विस्मय. ) ओफ !  
 हा !—अदाहा !  
 अधभ ( सं. ) नीच, जघन्य, निम्न,  
 कमीना, खल, निकम्मा, अधम ।  
 अधभा ( सं. ) नीच स्त्री, दुष्ट  
 भार्या । [ बायल, क्षत ।  
 अधभुओ-वे ( वि. ) अधमरा,  
 अधर ( वि. ) लटकता हुवा, झुलता  
 हुवा । बे सहारा । असहाय ।  
 ( सं. ) नीचे का ओष्ट, अधर ।  
 अधरधु ( सं. ) वह पानी जो  
 चावल, दाल आदि वस्तु उबालने  
 के लिये चूल्हे पर पहिले से चढ़ा  
 दिया जाता है । [ सब शक्तिमान ।  
 अधर धरनहर ( सं. ) परमात्मा,  
 अधर्भ ( सं. ) पाप, दोष, अन्याय,  
 अधर्म ।  
 अधर्भिक ( वि. ) अधर्मी, पापी,  
 बेदीन, भ्रष्ट । [ अधर्मी, धर्मच्युत ।  
 अधर्मी ( वि. ) बे दीन, विधर्मी,  
 अधभुपुं ( वि. ) अधमरा, अदम्य,  
 अधिकभास ( सं. ) लोंबका महीना,  
 पुरुषोत्तम मास, अधिक मास ।  
 अधिकार ( सं. ) अधिकार, स्वत्व ।

अधिकारी ( सं. ) अधिकारी ।  
 अधिप ( सं. ) स्वामी, मालिक,  
 प्रभु, अधिष्ठाता अधिपति ।  
 अधिपति ( सं. ) संपादक, मुखिया,  
 साशक, अधिपति, अधिष्ठाता ।  
 अधिर्-रो ( सं. ) बेसत्र, उतावळा  
 अधार ।  
 अधिरार्ध ( सं. ) अर्धर्यता, येसत्री ।  
 अधिष्ठान ( सं. ) अधिकार प्रधा-  
 नता, श्रेष्ठता, घर, मकान स्थान ।  
 अधुर ( वि. ) अधूरा, अममाप्त ।  
 अधुरे न्यु ( क्रि. ) वथा होना,  
 उलट जाना, गर्भ गिरना ।  
 अधोण ( वि. )  $\frac{1}{2}$  शेर,  $2\frac{1}{2}$  तोला ।  
 अधर ( वि. ) बेमहार, आश्रयहीन,  
 छटकरना हुआ, अधर । [अध्यक्ष ।  
 अध्यक्ष ( सं. ) आधिपति, सरदार,  
 अध्ययन ( सं. ) विद्याभ्यास, पठन,  
 ध्यान, अध्ययन । [अध्याय ।  
 अध्याय ( सं. ) खण्ड, परिच्छेद,  
 अध्यास ( सं. ) पारसी महत्त्वका  
 पुजारा ।  
 अध्याहार ( सं. ) रिक्तस्थान जो  
 भरने के लिये खाली छोड़ दिया  
 गया हो । [अज्ञ, अनाज ।  
 अन ( क्रि. वि. ) बिना, वगैर ( सं. )  
 अनर्थ ( सं. ) कामदेव, प्रेम, प्यार  
 ( वि. ) देहहीन, अनंग ।

अनंत ( वि. ) अपार, अनंत, जिस  
 का अंत न नहो, ईश्वर ।  
 अनंतशक्ति ( सं. ) परमेश्वर, सर्व  
 -शक्तिमान् । [अनन्तश्रेणा ।  
 अनंतश्रेणी ( सं. ) अनंतमाला,  
 अनर्गल ( वि. ) बहुत, बेहद, खूब,  
 अपार ।  
 अनर्थ ( सं. ) निकम्मापन, अनर्थ,  
 नाश, भंग, क्षय, विध्वंस, विपद,  
 दुभाग्य, विपत्ति ।  
 अनर्थक ( सं. ) व्यर्थ, फिजूल, बेमानी  
 अनर्थास ( सं. ) अज्ञात नामक  
 एक फल । [क्रोध ।  
 अनस ( सं. ) आग्न, आग, अनल,  
 अनशन ( सं. ) व्रत, उपवास, अन्न  
 न खाना । [हज, अनर्गत ।  
 अनर्ह ( सं. ) हानि, नुकसान,  
 अनागत ( सं. ) अविष्यकाल, भावां,  
 आनेवाला समय ।  
 अनाथारी ( वि. ) दुराचारी, विधर्मी  
 अधमा, लंपट, अध्याश, पापा, दुष्ट ।  
 अनाज ( सं. ) अन्न, अनाज, धान्य ।  
 अनाडी ( वि. ) मूर्ख, शठ, बे अह,  
 भरा, बेहोश,  
 अनाथानो दोडो ( सं. ) अन्नका बाल ।  
 अनाथ ( सं. ) दीन, कंगाल गरीब,  
 त्याग्य, अनाथ ।



अनादर ( सं. ) अपमान, तोहीन,  
बेहजती, अवज्ञा, तिरस्कार,  
निरादर, अनादर ।

अनादि ( वि. ) सनातन, नित्य,  
आदि रहित, स्वयंभू, अनादि ।

अनामत ( वि. ) धरोहर, याती,  
बन्धक, अनामत, गिरबी, जमानत ।

अनार ( सं. ) अनार नाम से  
प्रसिद्ध फल ।

अनाष्टि ( सं. ) सूखा. दुर्मिक्ष,  
कालवृष्टि का अभाव, अनावृष्टि ।

अनाश्रय ( वि. ) आश्रयहीन, असहाय,  
बेमदद, अनाश्र, लाचार, अशरण,  
अनाश्रय ।

अनारथ ( सं. ) अपक्षपात, बेतर-  
फदारी, बेपरवाही, उदासनिता ।

अनित्य ( वि. ) कभी कभी, थोड़े  
दिन का, नाशमान, अनित्य ।

अनियमित ( सं. ) बे कायदा,  
गड़बड़, अनियमित ।

अनिल ( सं. ) पवन, वायु, हवा ।

अनिवार ( सं. ) विशेष, अधिक,  
हठी, अड़ियल, माननीय, अत्याज्य,  
अवश्य, अनिवार्य ।

अनिष्ट ( सं. ) हानि, बुरा, अनिष्ट,  
( क्रि. वि. ) अवांछित वे चाहा !

अनिश्चित ( सं. ) संदिग्ध, निश्चय-  
रहित, अनिर्णीत, अनिश्चित ।

अनीक ( सं. ) सेना, बल, फौज,  
दल, रिसाला ।

अनीति ( सं. ) दुर्नीति, अत्याचार,  
अन्याय, दुराचार, अनीति ।

अनीश्वरवादी ( सं. ) नास्तिक, जो  
ईश्वरपर विश्वास नहीं कर सकता ।

अनुकरोथु ( सं. ) नकल, उतार,  
मेल अनुकरण ।

अनुक्रम ( सं. ) ढंग, तर्ज, तौर,  
तरीका, विधि, तरतीब,

अनुक्रमिका ( सं. ) किहिरिस्त,  
सूची, भूमिका, विषयसूची,  
अनुक्रमणिका ।

अनुकूल ( वि. ) सुआफिक, ठीक,  
योग्य, अनुकूल, उचित, फबता  
हुवा ।

अनुग्रह ( सं. ) कृपा, दया, अनुग्रह ।

अनुचर ( सं. ) सेवक, भृत्य, नौकर,  
अनुचर, परतंत्र,

अनुचित ( वि. ) अयोग्य, गैर  
मुनासिब, अशुद्ध, अनुचित ।

अनुज ( सं. ) छोटा भाई, अनुज ।

अनुताप ( सं. ) पश्चात्ताप, पछ-  
तापा, प्रायश्चित्त, तोबा, शोक,  
रंज, गम ।

- अनुनासिक** (वि.) नासिका सम्बन्धी, नाक का, अनुनासिक ।
- अनुपकारी** (वि.) कृतघ्न, अधन्य-वादी, उपकार न करनेवाला ।
- अनुपम** (वि.) बेजोड़, बेमिसाल, उपमारहित, अनुपम ।
- अनुपवेग** (सं.) एक के बाद दूसरे का प्रवेश । एक के बाद एक आने वाला । [सुधारक ।
- अनुपान** (सं.) विवनाशक दवाई, अनुप्रास (सं.) यमक शब्द, अनुप्रास, वह शब्दालङ्कार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार २ आकर उस पद की शोभा को बढ़ावे ।
- अनुभव** (सं.) तजुर्बा, भोगविलास सफलता, अनुभव । अनुभूति, परीक्षा, जाँच ।
- अनुभाव** (सं.) अन्तर, भेद, श्रेष्ठता, बड़प्पन, मर्यादा, पदवी, शक्ति ।
- अनुमत** (सं.) प्रसन्नता, मान, सहमत, सम्मत, अनुमत ।
- अनुमान** (सं.) अन्दाज, अनुमान । (कि.) अन्दाज करना ।
- अनुमेय** (वि.) जो अनुमान किया गया हो, अनुमेय ।

- अनुराग** (सं.) प्रेम, जेह, प्रीति, प्यार, अनुराग । [अनुवाद ।
- अनुवाद** (सं.) मुवाफिक, मेल, अनुशासन (सं.) नियम, कायदा, अनुशासन । [मुवाफिक ।
- अनुसरण** (कि. वि.) अनुसार, अनुसरण करना, पीछा करना, प्रसन्न होना ।
- अनुसंगी-सार्थी** (सं.) दोस्त, साथी, संगी ।
- अनुसंधान** (सं.) ध्यान, चाँकसी, अन्वेषण, तहकीकात, अनुसंधान ।
- अनुष्ठान** (सं.) पूजा, कर्मोत्तर ।
- अने** (अ.) और,
- अनेक** (वि.) बहुत, कई, अनेक ।
- अनेकपयन** (सं.) बहुवचन ।
- अन्तःकरण** (सं.) मन, अन्तःकरण, दिल, अन्तःकरण ।
- अन्तःपुर** (सं.) जनानखाना, हरम, घर में स्त्रियों के रहने का स्थान ।
- अन्तर्गत** (सं.) अन्तर्गत समय, मृत्यु समय, मृत्यु शय्या ।
- अन्तर** (सं.) फर्क, फासला, अन्तर ।
- अन्तर्गण** (सं.) कोषवृद्धि, अन्तःवृद्धि, फोते में एक प्रकार का रोष ।

अतरेलभी ( सं. ) ईश्वर, वह जो दूसरों के मन की जान के, ( वि. ) सर्व ज्ञानी, अनन्त ज्ञानी, अंतर्दामी ।

अतरेपट ( सं. ) पर्दा, वस्त्र की आद, अंतरपट ।

अतरेधान ( सं. ) दिखलाई न देना, दृष्टि से बाहिर, गायब, अन्तर्धान ।

अंते ( कि. ) अन्त में, आखिर में, सब के बाद, निदान ।

अंदर ( उ. ) भीतर, मे, अन्दर ।

अंध ( सं. ) नेत्रहीन, अंधा, सूरदास ।

अंधाई ( सं. ) अन्धेरा, तिमिर, ( वि. ) धुंधला, उदास, गड़बड़ घबराहट ।

अंधर ( सं. ) गड़बड़, कुप्रबन्ध ।

अन्न ( सं. ) अनाज, दाना, भोजन, अन्न ।

अन्नेति ( सं. ) स्वामी, ईश्वर, मालिक, अन्न अथवा अन्य इच्छित वस्तुओंका देनेवाला अन्नदाना ।

अन्नेति ( सं. ) नाजपानी, अन्नजल ।

अन्य ( वि. ) दूसरा, अन्य ( सं. ) विविध ।

अन्यथा ( कि. वि. ) नहीं तो, नोचेत, अन्यथा, दूसरे, इसके अतिरिक्त ।

अन्याय ( सं. ) गैर इन्साफ, अन्याय अनीति, जुल्म ।

अन्याधी ( वि. ) दोषी, अपराधी, कुसूरवार, अपराधी, अन्यायी ।

अन्याअन्य ( वि. ) परस्पर, उतर्था ।

अन्यधी ( वि. ) मिलानेवाला, सम्बन्ध करानेवाला, अनुगामी संबंधी ।

अप ( वि. ) जिस शब्द के आगे लगाया जावे उसका अर्थ बुरा हो जाता है ।

अपक्षर ( सं. ) अनुपकार, अधव्यवाद, नमकहराम, बेवफा ।

अपक्षरि ( सं. ) अपयश, बदनामी निन्दा, अपकीर्ति ।

अपक्षरि ( सं. ) पक्षपातरहित, निष्पक्ष, न्याय, इन्साफ, उचित ।

अपय ( वि. ) लंगड़ा, लुला, जल्मी ।

अपय ( सं. ) कुपय, अपय, अजायब, बदहजमी ।

अपयय ( सं. ) अपयश, बदनामी, कम इज्जती ।

अपतिव्रता ( सं. ) अशुद्ध, व्यामिश्रित, असाधु, कुलटा, बेव्या, पतिव्रतहीन ।

अपती ( सं. ) अविश्वास, बेयक्रीन सन्देह, श्रुभा के ऐतबार ।

अप० १३ ( सं. ) पीछेका द्वार, चुरा मार्ग ।

अप० १४ ( सं. ) बिगाड़ अपभ्रंश ।

अप० १५ ( वि. ) मानरहित, कमइज्जती, तौहीन, बे आबरू, अपमान ।

अप० १६ ( वि. ) अगणित, बे गिनती अनन्त, अन्तहीन, अपरिमित ।

अप० १७ ( वि. ) अजेय, न जीता हुआ

अप० १८ ( सं. ) कसूर, अपराध, गुन्हा,

अप० १९ ( सं. ) दोष, कमी, त्रुटी, अपलक्षण ।

अप० २० ( सं. ) निन्दा, कलङ्क, झूठ, अविश्वास, अपवाद ।

अप० २१ ( सं. ) व्रत, उपवास ।

अप० २२ ( वि. ) अशुद्ध, मैला, गन्दा, अपवित्र ।

अप० २३ ( सं. ) बुरे बचन, गाली गलौज, निन्द्य शब्द ।

अप० २४ ( सं. ) बुरे छकुन ।

अप० २५ ( कि. ) ले भागना, निकाल ले जाना, चुराना [चुराई,

अप० २६ ( सं. ) बदी, नुकसान,

अप० २७ ( वि. ) जिसका पार न हो

अप० २८ ( वि. ) अस्वच्छ, धुँवला ।

अप० २९ ( सं. ) जैन साधुओं के ठहरने का स्थान

अप० ३० ( वि. ) पुत्रहीन, निपुत्र, अतुत्र । [ अचूरा ।

अप० ३१ ( वि. ) जो पूरा न हो

अप० ३२ ( वि. ) बिनापुत्रा । बे-पुत्रा ।

अप० ३३ ( सं. ) अचूरा समय ।

अप० ३४ ( सं. ) दुकड़ा, भिन्न, कसर

अप० ३५ ( सं. ) इच्छा, चाह, आव-इयकता, जरूरत । [ अपमान ।

अप० ३६ ( सं. ) बदनामी, बे इज्जती

अप० ३७ ( वि. ) असीम, प्रमाणहीन जो प्रमाण न हो ।

अप० ३८ ( वि. ) मिथ्या, बे सबूत कपटी, घटिया ।

अप० ३९ ( वि. ) कुंभला, गूढ़, अचूरा, अज्ञात, जो मशहूर न हो ।

अप० ४० ( सं. ) गड़बड़, घबराहट ।

अप० ४१ ( वि. ) घमण्डी, अहंकारी अगलूर, अफलातून, [ अफवाह ।

अप० ४२ ( सं. ) समाचार, चर्चा,

अप० ४३ ( सं. ) रंज, गम, शोक, दुःख, अफसोस ।

अप० ४४ ( वि. ) व्यर्थ, फलहीन फल-रहित, निष्फला ।

अप० ४५ ( कि. ) पटकना, देमारना

अक्षीयु ( सं. ) अक्षीय धूरी ( सं. )  
अक्षीय खानेवाक्य, अक्षीयबी ।  
अक्षय ( वि. ) १० अर्बुद, दस अरब,  
संख्या विशेष ।  
अक्षधूत ( सं. ) धूमनेवाला तपस्वी,  
तपस्वा, फकीर, अवधूत । [ मोडल ।  
अक्षरभू ( सं. ) अक्षर, अक्षर,  
अक्षर ( सं. ) निर्बल, कमजोर,  
क्षतिहीन ।  
अक्षर ( सं. ) स्त्री, औरत, अक्षर ।  
अक्षीय ( सं. ) अक्षर, सुगन्धित  
चूर्ण, सुगन्धित बुरादा ।  
अक्षीय ( सं. ) चाँका देना ।  
अक्षीय ( सं. ) रेशमी वस्त्र,  
अक्षीय ( वि. ) मौन, बेबोला रूप  
अक्षय ( वि. ) सब, पूर्ण, कुल ।  
अक्षय ( सं. ) रजस्वला स्त्री,  
कपटो हुई औरत । ( वि. ) विगडा  
हुवा, कलुषित ।  
अक्षय ( वि. ) विगडना, गंदा  
करना, अपवित्र करना ।  
अक्षय ( वि. ) मूल्य, बे पडा,  
अक्ष, अक्षित ।  
अक्षय ( वि. ) निर्भय, निरुद्ध, प्राव-  
रहित, अभय ।

अक्षय ( सं. ) रक्षा करनेका  
विश्वास, अमानसका बीमा, रक्षकका  
बादा ।  
अक्षय ( सं. ) ताव, आलमारी,  
समुद्रका रेतोला किनारा ।  
अक्षय ( सं. ) दीनबन्धु,  
निर्बलका रक्षक, परमात्मा ।  
अक्षय ( सं. ) त्याग,  
मुक्त, रिहाई, छुटकारा, उद्धार, वेष्ट-  
क, रक्षक,  
अक्षय ( वि. ) बद्धिस्मृत फूटी  
तकदीरका, अभागा ।  
अक्षय ( सं. ) अक्षय, भूगा,  
अनिच्छा, कुस्वादु, शत्रुता ।  
अक्षय ( वि. ) निपुण, प्रवीण,  
जानकार, परिचित ।  
अक्षय ( सं. ) प्रत्येक बातको  
जान लेनेकी शक्ति । [ सम्मति ।  
अक्षय ( सं. ) विचार, समझ, राय  
अक्षय ( सं. ) नाम ।  
अक्षय ( सं. ) गर्व, गुमावे,  
अहंकार घमंड ।  
अक्षय ( सं. ) आनन्द, हर्ष,  
सुखी, इच्छा । [ उदय ।  
अक्षय ( सं. ) स्नाहिष्ठ बाह,  
अक्षय ( वि. ) जान करके  
छिड़कना, राखपद पर गिरावना

अभ्यास ( सं. ) मुहाविरा, पठन,  
अभ्यास ।

अभ्र ( सं. ) आकाश, स्वर्ग ।

अभ्यु ( वि. ) व्यर्थ, वृथा, निष्फल ।

अभन अभन ( सं. ) आनन्द मंगल,  
चैनचान, चहलपहल ।

अभर ( वि. ) मृत्युरहित, अमर,  
जो न मरे, देवता ।

अभृत ( सं. ) पराग, खुशगवार-  
शरबत । कोई बहुत मीठी आनन्द  
राशिनी वस्तु, पुराण कथित  
देवताओंके पीनेका पेय पदार्थ ।  
अमृत ।

अभर्थाह ( वि. ) अपमान, हतक,  
आचरण शून्य, मर्यादाहीन ।

अभक्ष ( सं. ) अधिकार, राज्य,  
हुकुमत, शक्ति, दबाव ।

अभक्षहार ( सं. ) हाकिम, आधि-  
कारी ओहदेदार । [ निरर्थक ।

अभस्तु ( वि. ) फलहीन, अकारण,

अभथापवुं ( क्रि. ) पकड़ना, मरोड़ना  
कष्ट देना,

अभथाप ( सं. ) मरोड़, पकड़, ऐंठ ।

अभाप ( वि. ) जोनापा न पान ।

अभाई ( सं. ) हंसरा,

अभास ( सं. ) अभावस्या, चन्द्र  
मास का अंतिम दिन, ३०,

अभी ( सं. ) अमृत, दया, कृपा,  
अनुकम्पा, नम्रता, रस चष्ट ।

अभीन ( सं. ) पंच, न्यायकर्ता ।

अभीर ( सं. ) कुलीन, बड़ा आदमी  
बड़ा, भला । अमीर ।

अभुक्त ( वि. ) कोई, किसी, विशेष,  
फलों, अमुक ।

अभुञ्जु ( सं. ) घबराहट, झंझट,  
परेशानी, चिंता, सौच, दमा,  
स्वास ।

अभूत्स्य ( वि. ) कीमती, बहुमूल्य,  
बेशकीमती, अनमोल, अमूल्य ।

अभे ( सं. ) हम, मैं का बहुवचन ।

अंभट ( वि. ) तेजाब, लुहा, तुश ।

अंभर ( सं. ) बैकुंठ, एक उत्तम  
अमूल्य जनानी पौशाक ।

अंभाडी ( सं. ) हीदा, हाथीपर  
बैठनेकी अंबारी ।

अंभार ( सं. ) डेर, हफ्ता ।

अंभुज ( सं. ) कमल पुष्प ।

अंभेडी-डी ( सं. ) चोटी, बुटिया ।

अभनरत ( सं. ) कांतिहत, सूर्य  
कां भाव ।

अव्याज ( सं. ) अयाज, पशु के  
वर्दन पर के बाल ।

अव्याज्य ( वि. ) नालायक, अनु-  
चित, निकम्मा, अयोग्य ।

अव्यक्त-अव्यक्त ( सं. ) अर्क, मन ।

अव्यक्त ( सं. ) देवता या सूर्य को  
जलदान । अव्यक्त । [ पत्र, अर्जी ।

अव्यक्त-७ ( सं. ) प्रार्थना, प्रार्थना-

अव्यक्त ( सं. ) रेगाला मैदान,  
जंगल, वन ।

अव्यक्त ( सं. ) समुद्र, जलनिधि ।

अव्यक्त-अव्यक्त ( सं. ) अरबका,  
आलू । [ के जहाज ।

अव्यक्त ( सं. ) जहाजी बेड़ा, युद्ध

अव्यक्त ( सं. ) आलमारी, बरतन  
रखने की आलमारी ।

अव्यक्त ( सं. ) कमल का फूल ।

अव्यक्त ( वि. ) परस्पर, एक  
दूसरा, दुतर्फा, आपसका ।

अव्यक्त ( सं. ) बैरी, शत्रु, दुस्मन ।

अव्यक्त ( सं. ) रीझ, अरीठा नाम  
से प्रसिद्ध कच्चादि धोने के काम में  
जानेवाला फल ।

अव्यक्त ( सं. ) दुर्नाम, विपत्ति,  
आपत्ति, वरकिसमती, अरिष्ट ।

अव्यक्त ( सं. ) अनमिलाप, कुत्सापु,  
पृष्ठा, अरुचि । [ प्रातःकाल, भोर ।

अव्यक्त ( सं. ) सूर्य, सूर्योदय,

अव्यक्त ( सं. ) सूर्योदय के पूर्व  
का लालमा का उदय [ ओफ ।

अव्यक्त ( विस्म० ) अरे ! ओहो !

अव्यक्त ( विस्म० ) ओ हो, अरे,  
ऊफ !

अव्यक्त ( सं. ) पूजा, अर्घन ।

अव्यक्त ( सं. ) माने, मतलब, इपारा,  
अभिप्राय ।

अव्यक्त ( सं. ) सम्पत्तिशास्त्र,  
पोलिटिकल एकानमी ।

अव्यक्त ( सं. ) कामयाबी, हचिछत  
कार्य का पूर्ति ।

अव्यक्त ( किं. वि. ) हम वास्तं,  
अतएव, तस्मान्, हम कारण से,  
अतः । ( अव्यय ) याने अर्थात् ।

अव्यक्त ( सं. ) शब्दालङ्कार  
के विरुद्ध अलङ्कार, जिसमें अर्थ  
का चमत्कार दिखाया गया हो ।

अव्यक्त ( सं. ) मतलबी, कुदवर्गी ।

अव्यक्त ( किं. वि. ) वास्तं, लिये ।

अव्यक्त ( वि. ) जाबा, है ।

- अभ्रंश ( सं. ) अर्द्धवृत्त, निष्क,  
दायरा । [ सरीखा ।
- अभ्रंशिक ( वि. ) दोज के चान्द
- अभ्रंशत्रि ( सं. ) आधी रात ।
- अभ्रंशना ( सं. ) हिस्सेदार, सा-  
झीदार, पत्नी ।
- अभ्रंशवायु ( सं. ) लकवे की बी-  
मारी, वह वात जिस से आधा  
अंग शून्य हो ।
- अभ्रंश ( सं. ) बालक, बच्चा ।
- अभ्रंशीन ( वि. ) पक्षाज्जात, नवीन,  
हालका, इदानीन्तन ।
- अर्ध ( सं. ) बवासीर की बीमारी ।
- अधभत ( सं. ) जायदाद, धन ।
- अधभ ( वि. ) दूर, फासलेपर,  
जुदा, निराला, अलग ।
- अधभर ( सं. ) आभूषण, जेवर,  
अर्थ और शब्द का वह युक्ति जिस  
से बोलने में या काव्य में शोभा  
हो, अलंकार ।
- अधभरि ( वि. ) निष्कल, बेफायदा,  
व्यर्थ, बेकाम ।
- अधभत ( क्रि. वि. ) बेराक, अवश्य,  
दर इच्छीकत, वास्तव में ।
- अधभेध ( वि. ) सुन्दर, सुवस्त्र,  
चटकीला ।
- अधभन ( वि. ) प्राप्ति के असौम्य,  
जो न मिले, अप्राप्त ।
- अधभस्त ( वि. ) दृढ़, मजबूत,  
वीर, बहादुर, निष्ठर । [ सम्बन्ध ।
- अधको ( सं. ) दावा, अधिकार,  
अधायका ( सं. ) खतरा, भय,  
जोखम, कठिनाई, अलायबलाय ।
- अधी ( सं. ) सखी, पत्नी ।
- अधीभक्षा ( वि. ) अति प्रतापी,  
आडम्बरी, बड़ा, बहुत बड़ा ।
- अधेक्ष्यु ( सं. ) अंदाजी, कयासी,  
अटकली ।
- अधेक्ष ( सं. ) गायब, अदृश्य ।
- अधेक्षिक ( वि. ) लोकातीत, अमा-  
नुषिक, असाधारण, अलौकिक ।
- अधेक्ष ( वि. ) थोड़ा, कम, छोटा ।
- अधेक्ष ( वि. ) थोड़ा जानकार,  
कम जानने वाला ।
- अधेक्ष ( वि. ) मूर्ख, उल्लू, शठ ।
- अधेक्ष ( सं. ) अवसर, मौका,  
फुर्सत, छुट्टी, आराम, मौ,  
अवसर ।
- अधेक्षना ( सं. ) शोषारोपण, कम  
इज्जती, अपमान ।
- अधभति ( सं. ) आफत, विपत्ति,  
कम्बकती, अमा की बाढ़ ।



अवधु ( सं. ) बुद्धि, सोच, ऐश ।

अवधु ( सं. ) कठिनाई सुरिकल,  
दुःख, पीडा, वाधा ।

अवधु ( सं. ) अपमान, हतक,  
ना करमाबरदारी ।

अवधु ( वि. ) अव्यवहारिक, जो  
काम मे न लवा था हो,  
अव्यवस्त ।

अवतरेण ( सं. ) उद्धत भाग,  
उतार, प्रमाण, इवाक्य, अर्थ,  
टीका । [ प्रसिद्ध होना ।

अवतरणुं ( क्रि. ) उत्पन्न होना,

अवतार ( सं. ) जन्म, पैदायण,  
किसी देवता का पृथ्वीपर जन्म ।

अवस्था ( सं. ) दुर्दशा, कंबख्ती ।

अवध-धी ( सं. ) अंत, आखिर,  
सीमा, हद । [ इच्छा, ध्यान ।

अवधान ( सं. ) झुकाव, रुख ।

अवनपुं ( वि. ) नवीन, नया,  
अवमृत, अजब, अनोखा ।

अवनि ( सं. ) पृथ्वीतल, पृथ्वी ।

अवनिमूक ( सं. ) जन्म मृत्युका  
चक्र, आवागमन ।

अवद ( वि. ) और, दूसरा, अन्य,  
( वि. ) बंट ( सर्व. ) हमारा ।

अवस्था ( वि. ) अवस्था, स्थिति,  
विफल,

अवरोध ( सं. ) अटकाव, बाधा,  
रोक, रोकटोक ।

अवध ( वि. ) पहिल, उत्तम,  
उम्दा, अच्छा, अव्वल ।

अवधेह-भ ( सं. ) चटनी, पतली  
औषाध ।

अवधेह-भ ( सं. ) देखरेख देखभाक  
जीव, पड़ताक, छिद्रान्वेषक-  
दोषानु सम्भान, परख, निगाह ।

अवश्य ( क्रि. वि. ) जरूर, निस्स-  
न्देह, बेशक, अवश्य ।

अवसर ( सं. ) मौका, समय,  
माजरा, मृतके लिये एक जाताक  
कार्य, उत्सव, अवसर ।

अवसान ( सं. ) मौका, औसान,  
अन्त, खत्म ।

अवस्था ( सं. ) हालत, दसा ।

अवधु ( वि. ) हठी, जिद्दी, टिक  
करनेवाला, चिढ़चिढ़ा ।

अवधु ( वि. ) जिद्दी, हठी, उलझ  
बिरुद, विपरीत, विपक्ष, औषा ।

अवधि ( वि. ) गुंथा, बे बोझ,  
बे समय ।

अवाज् (सं.) ध्वनि, आवाज,  
उच्चारण, स्वर ।

अवाज् ३२वे (क्रि.) शोरमचाना,  
फूटना, हल्लाकरना ।

अवादनवार (क्रि. वि.) बारी-  
बारीसे, बदलबदलकर, अनुक्रम,  
एकके बाद एक ।

अवास (सं.) निवास, रहन, घर  
मकान, डेरा, स्थान । [ भाग ।

अवाण् (सं.) दांतों के नीचे का

अविश्रु (वि.) अवल, स्थिर,  
कायम, दृढ़, अविचल । [ अज्ञान ।

अविश्रु (सं.) अविचाररहित,

अविनाशी (वि.) नाशरहित,  
समर, ईश्वर, सर्वशक्तिमान ।

अवेज् (सं.) हेरफेर, एवज ।

अवेज् (वि.) बदली, एवजी ।

अव्यय (सं.) एकसा रहनेवाला ।  
व्याकरणमें वह शब्द जिसके रूपमें  
कभी विकार नहीं होता ।

अव्ययस्व (सं.) कुप्रबन्ध, बद-  
इन्तजामी, गड़बड़ ।

अव्यय (वि.) ध्वनितयाहुवा, व्याकुल,

अव्यय (वि.) कमजोर, शक्तिहीन  
निर्बल, दुर्बल ।

अव्यय (वि.) असंभव, गैरसुम-  
किन, जो न हो सके, अशक्य ।

अव्यय (सं.) मोहर, अशरफी,  
प्राचीन कालका सोनेका सिक्का ।

अव्यय (वि.) दयालु, महरवान,  
बड़ा, गरीफ, कुलीन, सुशील ।

अव्यय (सं.) अभाग्य, दुर्भाग्य,  
तकलीफ, कष्ट, क्लेश, बेचैनी,  
व्याकुलता । [ खराब, अशुद्ध ।

अव्यय (वि.) अपवित्र, गलत मैला,

अव्यय (वि.) अमंगल, अमंगल-  
कर, अशुभ ।

अव्यय (सं.) एक प्रकारका वृक्ष ।

अव्यय (सं.) औंस, अशु ।

अव्यय (सं.) घोड़ा, तुरंग, अश्व ।

अव्यय (पीपण) (सं.) पीपण  
का पेड़ ।

अव्यय (सं.) शोणाचार्य के  
पुत्र महाभारत युद्ध के महारथी,  
अश्वत्थामा ।

अव्यय (सं.) घोड़ेका बलिवान एक  
प्रकारका यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक  
में जयपत्र बांधकर उसे भूमण्ड-  
लमें घूमने के लिये छोड़ा जाता है,  
और उसके पीछे २ सेना सहित  
रक्षक रहते हैं । सेना के विजयी

होकर लौटने पर चोबेका स्वामी बड़ा भारी यत्न करता है, जो चक्रवर्तित्वका सूचक है।

अभ्यविधा ( सं. ) अश्वपालन, अश्व सम्बन्धी विद्याएं।

अभट ( वि. ) आठ, ८, अष्ट।

अभटावधानी ( वि. ) कपट,

अभटापुं ( क्रि. ) कमजोर होना, बुजला-होना, मुर्झाना, सुस्त होना।

असंख्य ( वि. ) अगणित, जो गिने न जा सकें, असंख्य।

असत्य ( वि. ) मिथ्या, झूठ।

अस्तर ( सं. ) अस्तर, बुहरी पोशाकके नीचेका कपड़ा, ढकन।

अस्तरी द्वयी ( क्रि. ) कपड़ों पर इत्नी करना। [ उस्तरा।

अस्तरे। ( सं. ) छुरा, छुर, अस्तुरा,

अस्तद्वयी ( वि. ) विषयी, नियधर्मका उपासक, बेदीन।

अस्तम्य ( वि. ) गैवार, जंगली, अशिष्ट, बदचलन, बेढंगा, बेहूदा असभ्य।

अस्तभर्ष ( वि. ) कमजोर, शक्तिहीन।

अस्तमान ( सं. ) आकाश, आत्मान, ( वि. ) ऊंचानीचा, असमान।

असमान्नी सुलतानी ( सं. ) दुर्भाग्य विपत्ति, आपद।

असंभव ( सं. ) गैर मुमकिन, जो संभव नहीं, असंभव। [ असर।

असर ( सं. ) प्रभाव, फल, दबाव,

असल ( वि. ) मुख्य, खास, प्राचीन उत्तम। [ चढाहुवा।

अस्वार ( सं. ) आरोही, असवार,

अस्वारी ( सं. ) सवारी, आरोहण, निकासी, जुलूस, ठाठ।

असार ( वि. ) सारहीन, निस्सार, निकम्मा, अयोग्य। [ खड्ग।

असि ( सं. ) कृपाण, तलवार,

असील ( वि. ) कुलीन, सुशील, दयालु, कृपालु, ( सं. ) मुवाकिल यजमान। [ प्रकार।

असुं ( वि. ) ऐसा, इसभांति, इस

असु ( सं. ) सांस, दम, स्वास्थ, जीवन, ज़िन्दगी, आत्मा, जीव।

असुभ्य ( सं. ) दुःख, कष्ट, तकलाफ, बीमारी, रोग।

असुर ( सं. ) राक्षस, निशाचर, पिशाच, दुरात्मा, मृत।

असुई ( वि. ) देर, अवेरकरके, उभित समयके बाद।

अस्त ( सं. ) अस्त, गायत्र, तारेका  
अस्त, ग्रहका अस्त ।

अस्तित्व ( सं. ) स्थिति, जीवन,  
हस्तो, वजूद ।

अस्तु ( विसय. ) आमीन, ऐसा-  
होखो, एवमस्तु ।

अस्त्र ( सं. ) मंत्रित हथियार,  
कैककर बलायेजानेवाले हथियार,  
बाण, तीर ।

अस्थि ( सं. ) हाड, हड्डी ।

अक्षर ( सं. ) गर्व, घमंड,  
स्वायंता, अहंमन्यता । [ स्वार्थी ।

अक्षरी ( वि. ) घमण्डी, गर्वी

अक्षरार्थ ( कि. वि. ) रातदिन,  
श्रांत-दिन, रोजाना, दैनिक ।

अक्षरार्थ ( कि. वि. ) बहा, इधर ।

अक्षरार्थ ( कि. वि. ) इधरउधर  
बहा-बहा ।

अक्षराक्षर ( कि. वि. ) सारादिन  
और सारीरात । अक्षराक्षर २४  
घंटे । [ ज्योतिष ।

अक्षराक्षर ( वि. ) अग्रिम,

अक्षर ( वि. ) पूर, अलग, जुदा ।

अक्षरी ( सं. ) एक बूटीका नाम ।

अक्षरी ( सं. ) अक्षरी प्राकृत अक्षर

अक्षरी ( सं. ) जमीनका कीड़ा ।

अक्षरी ( सं. ) छोटीछोटी फुल-  
सिवां ओ प्रीक्षमें होजातीहैं ।  
अक्षर ।

अक्षरी ( सं. ) हानहीन, हानशून्य  
मूर्ख, बेबकूफ ।

## अक्ष

अक्ष—गुजराती वर्णमालाका द्वितीय  
अक्षर । ( सर्व. ) यह, ये

अक्ष ( सं. ) गणना, मुख्य, कसौटी  
जांच, परख, पहिचकापुरा ।

अक्षरी ( सं. ) आंकड़ा, हुक, टेटा  
मरोड़ ।

अक्षरी ( सं. ) खोक, दोहा, छन्द  
शासक, हाकिम, अधिष्ठाता ।

अक्षर ( कि. ) लक्ष्मी करना, अं-  
कित करना, परख करना, कीमन  
करना, मूल्य करना ।

अक्षर ( सं. ) चिन्ह, निशान, कूत,  
हद, सीमा, किनारा ।

अक्षरार्थ ( सं. ) नसे, पसविना ।

अक्षर ( सं. ) नेत्र, नवन, बख्त,  
रुष्टिबोध । [ की पुस्तकी ।

अक्षरी ( सं. ) पुस्तकी, अक्षर

- आँभ आँध्र शब्द ( कि. )  
आन्ध्रकान्ति, कर्तव्य, भगवान्, भगवान्  
होना । [ नेत्र दृष्ट होना ।
- आँभ आवणी ( कि. ) आँख दुखना
- आँभ शब्दी ( कि. ) डाटना, घुस  
असा कहना, घुसकना, तेवरी  
बदलना, भमकाना, गुस्से हो  
जाना ।
- आँभ शोशवणी ( कि. ) निगाह  
बचाना, भोका दे कर निकल  
जाना, दृष्टि बचाकर भाग जाना,  
सटक जाना, चुपचाप चले जाना,  
घुरा ले जाना ।
- आँभ शब्दी शब्दी ( कि. )  
इशारा करना, सैन करना, आँख  
मरना । [ बंदोशी ।
- आँभिश ( सं. ) मूर्च्छा, अचेतनता,
- आँभिशि ( सं. ) दुजड़ा, कीमती  
सामान का रखनेवाला या ले जाने  
वाला ।
- आँभिश ( सं. ) आंगन, घर के  
सामने का चौक । [ एक शब्द ।
- आँभिश ( सं. ) एक अंगुल का माप,
- आँभिश ( सं. ) अंगुली ।
- आँभिश शब्दी ( कि. ) अंगुली से  
छेद करना, छेड़ना, बिड़ाना,  
छिड़ाना ।
- आँभ ( सं. ) हक, चुकसाव, हक,  
( कि. ) लौकटना, भदकना,  
प्रणयित होना ।
- आँभ ( सं. ) स्तन, भूषा, धन ।
- आँभ ( कि. ) आँखों में अन्ध  
लगाना, आँजना, भोका देना,  
छल करना, अंधेरा करना ।
- आँभ ( सं. ) आँखों के पलक  
पर की फुन्सी, छेद ।
- आँभ ( सं. ) घाँट, उधार, दुस्मनी  
इंषा, इसर, डाह, नामधरी, बहा,  
गुहरत, लाग, भाट । [ आँभ ।
- आँभ ( सं. ) आँटन, जालपर
- आँभ ( सं. ) घाँट, धागोका गुच्छी,  
इंषा, बैर, डाह ।
- आँभ ( सं. ) धुमाव, चक्र ।
- आँभ ( सं. ) धुप, अंधकोष,  
फोते ।
- आँभ ( सं. ) दिल, आते ।
- आँभ ( कि. ) बाँटना, हिस्सा  
करना, बाँटा लगाना, अपेक्षित  
करना ।
- आँभ ( कि. वि. ) बारीबारीसे,  
अन्तरपर, फासलेपर ।
- आँभ ( सं. ) जल, हिस्सा ।

आदिशब्द ( सं. ) आंदोलन, लंगर, लटकन, हलचल । [ कीड़ा ।  
 आधि ( सं. ) अंधा, छिद्र, एक  
 आधि ( सं. ) आधि, तेज हवा, उड़-वायु, कुहरा ।  
 आदिशब्द ( सं. ) घबराया हुआ, भूला हुआ, मिला हुआ ।  
 आधि ( सं. ) सद्यः । [ हमला ।  
 आधिली ( सं. ) हमलीका वृक्ष, फल,  
 आधि ( सं. ) आमका पेड़, आम, रसाल, आम ।  
 आधिभोर ( सं. ) आमपुष्प, आमका बौर, एक प्रकारका चोंचल ।  
 आधिवादी ( सं. ) आमकुंज, आमोका बाग ।  
 आधि उल्लेख ( सं. ) आमी हल्ला,  
 आधि ( सं. ) जैनियोंका एक धार्मिक प्रण जिसमें कि दिनमें एक बार भात खाया जाता है ।  
 आधिधि ( सं. ) नाल, नामसे लगी हुई नस, जो बालक के जन्म के समय उसके लिपटा होता है ।  
 आधिधि ( सं. ) ओंखले ।  
 आधि ( सं. ) भाव, अंश, छिप्री ।  
 आधि ( सं. ) अध, औस ।

आधि ( विस्म. ) अह, वाहवा ।  
 आधि ( सं. ) माता, मा, दादी ।  
 आधि ( सं. ) कानून, रीति चाल, नियम, कायदा । [ महंगा ।  
 आधि ( वि. ) सख्त, कठिन, कठोर,  
 आधि ( सं. ) खींचनेका कार्य ।  
 आधिधि ( सं. ) खिचाव, लुभाव, फुसलाव, लालच ।  
 आधिधि ( सं. ) खींचा,  
 आधिधिधि ( वि. ) व्याकुल, घबराया हुआ । आकुल व्याकुल ।  
 आधिधि ( सं. ) इच्छा, चाह ।  
 आधिधि ( सं. ) सूरत, शर, बनावट, चिन्ह ।  
 आधिधि ( सं. ) आस्मान, आकाश स्वर्ग, ऊर्ध्वलोक ।  
 आधिधिधि ( सं. ) देवनी, वह चिन्हजो निर्मल आकाश में धुंधला और स्वेत एक सीधमें लकीर सा होता है । देवमार्ग, कान्तिवृत्त । अयापय ।  
 आधिधिधिधि ( वि. ) वहजो गु-  
 आधिधिधिधि ( वि. ) न्नारेमें बैठा है, पक्षी वायुयान । [ तरहका खेक ।  
 आधिधिधिधि ( सं. ) बाजीगरका एक

आकाश दीवे ( सं. ) आकाशका  
प्रकाश, आकाशमे लटकाईहुई  
लालटेन । [ अति उंचा मार्ग ।

आकाश मार्ग ( सं. ) हवाईरास्ता,  
आकाश भुमी ( सं. ) ऊँट, उब्दू ।

आकाशक्षेत्र ( सं. ) स्वर्ग, ऊर्ध्व  
लोक । [ आकाशके समान रंग ।

आकाशवर्ष ( सं. ) नालबर्ग,

आकाशवाणी ( सं. ) देववाणी,  
अंतरिक्षकाण्वद, ईश्वरोक्ति ।

आकाशवासी ( सं. ) आस्मानमे  
रहनेवाले ।

आकाशवृत्ति ( सं. ) अवायास प्राप्ति-  
आसामायिक लाभ [ भरोसा.

आकीन ( सं. ) विश्वास, यकीन,

आकुटी ( सं. ) एक प्रकारसे अधिक  
नशेदार बनाईहुई भाँग ।

आकुण ( वि. ) दुःखी, बेसब्र ।

आकुणव्याकुण ( सं. ) बेचैन, घब-  
रायाहुवा, अघोर । [ आकृति

आकृति ( सं. ) सूरत, शक्क,

आक्षेप ( सं. ) अभ्यास, खेद,  
अजी, प्रार्थना ।

आकि ( सं. ) दुःख, रंज, मिलाप ।

आपडपुं ( कि. ) घुमना, भट-  
कना । [ शपथ, सौगन्द, कसम ।

आपडी ( सं. ) एक प्रकारकी

आपर ( सं. ) अंत, सिरा, परि-  
णाम । [ मृत्यु दिवस ।

आपरसाध ( सं. ) अंतिमदिन,

आपरे ( कि. वि. ) अंतमें, आ-

खेर-कार । [ जो अधिया न हुवाहो

आपसे ( सं. ) साँठ, वह बैल

आप्यापडि ( सं. ) वह मनुष्य जो  
एकदम बहुत लाभ चाहताहो,  
लुटेरा ।

आप्याडी ( सं. ) मठ, मन्दिर,  
अखाड़ा, दंगल ।

आपु ( वि. ) सारा, समस्त,  
सब तमाम ।

आपेट ( सं. ) शिकार, मृगया ।

आपेरे ( सं. ) अंत, आखेर, स-  
माप्ति, परिणाम ।

आप्यान ( सं. ) किस्सा, कहानी,  
कथा, वर्णन, बयान ।

आग ( सं. ) अग्नि, अग्न, यमी,  
ज्वाला, पावक ।

आम सलगावडी ( कि. ) आम  
सुलगाना, आम कयाना भटकावा  
लटकाई करना ।

आभे शैलवरी (कि.) जाग बुझाना  
 आभे शैलवरी (कि.) जाग लगाना,  
 आभे मुकरी (कि.) मृतकको  
 जलाना, अग्निसेस्कार करना।  
 आभेभाडी (सं.) रेलगाडी धूम्रवाना  
 आभेतास्वाभता (सं.) अतिवि-  
 सेवा, मेहमानदारी, आदर, सत्कार  
 आभेभेड (सं.) जहाज, धूम्रपोत  
 स्टीमर।  
 आभेभ (सं.) धार्मिक कृत्य,  
 प्रारंभ, आदि।  
 आभेभ्य (कि. वि.) आगे, पूर्व  
 समयमें, पूर्व पेश्तर, पहिलेही।  
 आभेभन (सं.) पहुँच, आगमन।  
 आभेभनपत्र (सं.) बुलावा, बुला-  
 नेकी चिट्ठी, सम्मन।  
 आभेभ (सं.) उद्योग, धुन, हठ,  
 विह, अग्रह। [सकी बीमारी।  
 आभेभ (सं.) एक मुखरोग, मु-  
 आभेभु (वि.) अगला, पहिले,  
 सामनेका। [विशेष।  
 आभेभे (वि.) निवारक, अगोखा,  
 आभेभ (कि. वि.) पहिलेसे, आ-  
 गेसे, पूर्वसे, पेश्तरसे। [पुराना।  
 आभेभु (वि.) पहिला, आभेभ,

आभेभपाठ्य (कि. वि.) चारों-  
 ओर, आगेपीछे, इर्दगिर्द।  
 आभेभणी (सं.) चटखनी, साँकली,  
 प्रलस्तर, अस्तर।  
 आभेभे (सं.) एक लकड़ीकी  
 चटखनी जो किवाड़ बन्द करनेके  
 लिये होतीहै। हुरानेवाळा।  
 आभेभे (सं.) एक चमकदार  
 काँडा, जुगनू, लथोत।  
 आभेभेन (सं.) अगुवा, प्रदर्शक,  
 मुख्य मनुष्य। [मन, अनुशासन।  
 आभेभेनी (सं.) अगवानी, हकू-  
 आभात (सं.) प्रहार, चोट।  
 आभेभु (वि.) दूर, अलग, म्यारा,  
 असमीप। [छुपना, गुप्तहोना।  
 आभेभुपाभु भध भधु (वि.)  
 आभे (कि.) दूरीपर, दूर।  
 आभेभे (सं.) बका, धूमी, खों-  
 चतान। बका, टकर।  
 आभेभन (सं.) बोझासा जल  
 पीना, आचमन।  
 आभेभुभेभ (सं.) मिला हुआ  
 सामान, बे पका भोजन। [आवरण।  
 आभेभेभु (सं.) चालचलन, बर्ताव,  
 आभेभेभु (वि.) अनुसार कार्य  
 करना, चाल चलना, बर्तना,  
 व्यवहार करना।



आचार ( सं. ) चाल, ढंग, रीति,  
व्यवहार, वर्तन ।

आचार विचार ( सं. ) दस्तुर,  
चलन, व्यवहार, अभ्यास, रीति,  
चाल ।

आचार्य ( सं. ) गुरु, उस्ताद आचार्य ।

आच्छादन ( सं. ) ढकन, ओढ़न ।

आछा ( वि. ) कम, छोड़ा, अप्राप्त,  
हुलंम, पुतला । [धुंधला, मन्द ।

आछु ( सं. ) पतला, अपूर्ण, थोड़ा,

आज ( क्रि. वि. ) अभी, आज,  
इस दिन ।

आजकल ( क्रि. वि. ) आजकल,  
इन दिनों, वर्तमानमें ।

आजन्म ( क्रि. वि. ) जन्मसे,  
आजन्म, मृत्युतक, आमरण ।

आजपछी ( क्रि. वि. ) इसके बाद,  
आजके बाद, भविष्यमें ।

आजम भड़ेमान ( वि. ) बड़े  
हवाबन्त, अत्यन्त कृपाकु ।

आजसजी ( क्रि. वि. ) आजतक,  
इस समय तक ।

आजह ( वि. ) स्वतंत्र, निरंकुश,  
आजाद ।

आजरी ( सं. ) बीमारी, मर्क, रोग ।

आजरी ( वि. ) बीमारी, अस्वस्थता,

आजरी ( सं. ) बिमती, बिचर ।

आजरी ( सं. ) रोबमार, रोमी,  
रोटी कपड़ा, निर्वाह ।

आजुआजु ( क्रि. वि. ) चारों ओर,  
सब तरफ, चतुर्दिक्

आजने ( सं. ) जाना, [ हासन ।

आजा ( सं. ) हुक्म, आज्ञा, अनु-

आजा मानवी-पाजवी ( क्रि. )  
आज्ञा मानना, हुक्म मानना ।

आजाकित ( वि. ) आज्ञाकारी, कर्त-  
व्यनिष्ठ, बफादार ।

आजापत्र ( सं. ) परवाना, वारंट,  
आज्ञापत्र । गज़ट, सरकारी अज्ञापार

आजु ( वि. ) इतना अधिक,  
ऐसा अधिक ।

आजुषु ( क्रि. ) पूर्ण करना, खत्म  
करना, तमाम करना ।

आजो ( सं. ) आज्ञा, कुचलन, मंष,  
हाथ, विषय ।

आजो ( सं. ) बदमाश, दुष्ट,  
नाच, पाजी, दुर्जन, पापिणी ।

आजो पदो ( क्रि. वि. ) अहर्निश,  
एत दिन, सदैव ।

आजो ( वि. ) देखदार, देखी-  
सिद्धि, बोलदार, मूक मुकेश ।

आइक्या (सं.) मूल, भटक, चूक ।

आइभीरी (सं.) दूसरी दस्तावेज,

आइधुली (सं.) चकला, काठका वह  
तब्बता जिसपर रोटी बेली जाती है ।

आइत (सं.) आदत, एजेन्सी  
दलाली । [ एजेन्ट ।

आइतीओ (सं.) आदतिया, दलाल,

आइध (सं.) हट, जिह, सरकशी ।

आडी (सं.) आड़ा, बेंडा ।

आडीतर (सं.) लडोका बेड़ा, डोगी,  
घाटकी नाव ।

आडुं (वि.) टेडा, बेडौल, बेडब ।

आडुं अवणुं भूकणुं (कि.) इधर  
उधर रखना, यथास्थान न रखना ।

आडुं अवणुं सभणवणुं (कि.)  
बहकाना । कुछका कुछ समझा  
देना ।

आडे रस्ते धर्भणुं (कि.) भट-  
काना, कुमार्ग पर लेजाना ।

आडे आइ (सं.) अत्यंत कैलसब,  
बड़ा अभियोग ।

आडेभी पाडेभी (सं.) हुनसावा  
पड़ोसी, निकटवासी ।

आडुं (सं.) अड्डा, कण्ड, डीमन्ड,  
आका आधिकार ।

आभुपुं (कि.) लाना, लेजाना ।

आभुडिअ (वि.) इस ओर, दूसरी,  
बाजू, इसके अलावा, इसके  
अतिरिक्त ।

आभुं (सं.) पत्नीको उसके पितांक  
घर से बुलावा । गौना, बिदा,  
दिरागमन । [ बार, एतबार ।

आतवार (सं.) आदित्यवार, रवि-

आतस (सं.) आग, अग्नि, गर्मी,  
ताप, जलन ।

आतरअ आंतें, अंतर्दा, दिल ।

आतिथ्य (सं.) सत्कार, आतिथ्य  
मेहमानी ।

आतुर (वि.) उत्साही, लवलीन,  
इच्छुक, किम्बन्ध, चिंतित ।

आतुरता (वि.) उत्साह, प्रोत्सा,  
चिंता, सोच, उत्सुकता ।

आभमात (सं.) खुदकसी, आत्म-  
हत्या, आत्मघात ।

आभदेदी (वि.) आत्मरोदी ।

आभभुदि (सं.) स्वार्थ परता,  
आत्मभुदि । [ आत्मशक्ति ।

आभभक्ति (सं.) मानसिक बल,

आभा (सं.) जीव, सांस, प्राण,  
आत्मा, बल ।

आभारा (सं.) महात्मा परमात्मा ।

आधुनिक (कि.) घूमना, मटकना, रमना ।

आधुनिक (वि.) पश्चिमी, पश्चात्य ।

आधुनिक (कि.) छुपना, अस्त होना, गिरना, बैठना, अंत होना ।

आधुनिक (कि.) खारा करना, आचार डालना, खमीर उठाना ।

आधुनिक (सं.) स्वभाव, मुद्राविरा, आवृत्ति ।

आधुनिक (सं.) आदम, मनुष्य ।

आधुनिक मत (सं.) मनुष्यजाति मनुष्य । [आदम के वंशज ।

आधुनिक (सं.) मनुष्य, मानव,

आदर (सं.) सत्कार, मान, इज्जत, आदर, सन्मान, आदर ।

आदरणीय (सं.) सगाई ।

आदरभाव (सं.) देखो आदर

आदरमान (सं.) मान, इज्जत, स्वागत, सत्कार, स्वस्तिवाचन ।

आदरपूर्ण (कि.,) मान करना, सत्कार करना ।

आदर्श (सं.) दर्पण, टीका, दिप्यन्ती, मंदूषा, आदर्श ।

आदर्श (सं.) रोम के बहिष्कारके का ईश, आशय-मन्त्र, रसिक ।

आदर्श (सं.) अदरकद्वारा बना हुआ पदार्थ । [ बीमारी ।

आदर्शशीली (सं.) अर्द्धकपाली, आभागीशीली, आधा सिर दुखनेका

आदि (वि.) प्रथम, मुख्य, आत्म, अमला, आदि ।

आदिमंत (कि.) प्रारंभ से अंत तक शुरू से आखिर तक ।

आदि (वि.) इत्यादि, प्रभृति, वगैरे, आदिक, [अस्ती सबब ।

आदिकार (सं.) मुख्य कारण,

आदि (सं.) सय, मृज, वार, रविवार, एतवार ।

आदि (सं.) अदरक ।

आदेश (सं.) हुक्म, आज्ञा, आदेश ।

आधार (सं.) आशय, आशय, अधिकार । [मिक दुख ।

आधि (सं.) मनकी पीड़ा मान-

आधिव्याधि (सं.) शारीरिक, और मानसिक कष्ट ।

आधीन (वि.) बन्ध, आज्ञाकारी नस्ल ।

आधीनता (सं.) आज्ञाप्रणयन कृत, अतः, कर्मोपरकारी, कर्मता,

बन्धन, आधीनता, आधीनता ।

आधुनिक (वि.) नवीन, नया,  
टक्का, ताजा, साम्प्रतिक ।

आधे (वि.) अर्ध, आधी उम्रका ।

आनन (सं.) मुख, मुह ।

आनंद (सं.) हर्ष, सुख, आह्लाद ।

आनंद कंद (सं.) ईश्वर, परमा-  
त्मा, ब्रह्मा । [ सुखकारक, हर्षप्रद ।

आनंदकारी (वि.) आह्लादकारक,

आनंदभय (वि.) प्रसन्न क्षुश ।

आनंदधु (सं.) प्रेमाधु ।

आनंदी (वि.) मगन, हंसमुख,  
क्षुश विल ।

आनाकानी (सं.) टालटूल सन्देह ।

आनी आनी (सं.) एक आना  
इकनी, चारपैसे,  $\frac{1}{16}$  रुपया ।

आप (सर्व.) खुद, स्वयं, आप ।

आप आप्यार (वि.) स्वतंत्र,

खुद मुखत्यार । [ अपने में ।

आप आपभां (क्रि. वि.) हममें,

आपभां (वि.) स्वावलम्बी ।

आपधुडी (सं.) स्वयं प्रबल ।

आपधुडी (सं.) आत्मचात, साबध ।

आपधुडी (सर्व.) हमारे, हम, हमारे  
विषे । [ विपत्तिका समझ ।

आपधुडी (सं.) दुष्टपक्ष दुस्समय,

आपधि (सं.) विपत्ति दुःख हेतु ।

आपधि (सं.) दुर्भाग्य, कर्मवृत्ती,  
आफत, विपत्ति, विपद ।

आपधुडी (सं.) देनेवाला, दाता, दानी ।

आप धतधुडी (सं.) खुदगर्ज स्वाधीन ।

आपधुधु (सं.) आत्माभिमावी  
स्वेच्छावादी । [ खुदमुखत्यार ।

आपधुधुधु (वि.) स्वतंत्र स्वाधीन,

आपधु (क्रि.) बदलना, परिवर्तन,  
करना, गृहण देना और लेना ।

आपधु (क्रि.) देना ।

आपधु देधु (क्रि.) छोड़ देना, देदेना ।

आपधुमान (वि.) खुद सरीका,  
स्वतुल्य, अपने समान ।

आपधुआप (क्रि. वि.) अपने आप,  
खुद, स्वयं, स्वेच्छापूर्वक ।

आपधु (सं.) विपत्ति, दुर्भाग्य,  
आपधु । [ भाम, सूर्य प्रकाश ।

आपधु (सं.) सूर्य, सूरज धूप,

आपधु (विस्म.) आश्चर्य ।  
आपधु । [ अफरा ।

आपधु (सं.) पेठ फूटनेका रोग,

आपधु (सं.) कानी, बल, शक्ति,  
प्रकाश, खूबरत, आश्चर्य ।

आभयगिरी ( सं. ) जल अथवा नहर विभाग, एकसाइड डिपार्टमेंट, आवकारी । [ बर्तन ।

आभयगिरी ( सं. ) पानीका छोटा

- आभयगिरी ( सं. ) राजकीय छत्र ।

आभयगिरी ( सं. ) आभयनूस केन्द्र, तिदुक । [ नामवरी, नेकनामी ।

आभय ( स. ) इज्जत, मान, यश,

आभय भोवी ( कि. ) इज्जत खोना, मान गंवाना ।

आभयगिरी इरिगेशन ( सं. ) अपवाद पत्र, बदनामीका लेख ।

आभयपत्र ( सं. ) मानपत्र, सखी-पत्र, प्रमाणपत्र ।

आभय सेवी ( कि. ) कम इज्जत करना, अपमान करना ।

आभय सेनाई ( सं. ) निंदक ।

आभयगिरी ( सं. ) विजय, कामयाबी सफलता, बसासत ।

आभयगिरी ( वि. ) उपजाऊ, फलदायक, जरखेज, सफल, भरापूर ।

आभयगिरी ( वि. ) ठीक, चटक, भटकदार ।

आभ ( सं. ) आकाश, बादल ।

आभयगिरी ( सं. ) अपवित्रता, नापाकी, अछता, रजोदूषण, भासिक धर्म ।

आभयगिरी अर्थ ( वि. ) मृतक के साथ जाना, मातम में जाना ।

आभयगिरी ( सं. ) सजावट, शृंगार, आभूषण, अलंकार, गहना ।

आभय ( सं. ) बादल, मेघ, आकाश ।

आभय ( सं. ) कृतज्ञता, एहसास-मन्दी ।

आभयगिरी ( वि. ) एहसानमंद, कृतज्ञ,

आभय ( सं. ) सादृश्यता, समी-नता, पुंष, पुंषलापन, कल्पना ।

आभयगिरी ( सं. ) गोप, अहीर, ग्वाल ।

आभयगिरी ( सं. ) अलंकार, भूषण, गहना ।

आभयगिरी ( वि. ) अन्दरूनी, अन्दरका, भीतर ।

आभ ( कि. वि. ) इसतरह, ऐसे, आंतों का मरोड़ा, संग्रहणी, पैट बलना, ओव ।

आभयगिरी सभा ( सं. ) साधारण सभा, सार्वजनिक भवन ।

आभय ( कि. वि. ) इसीतरह, ठीक इसीप्रकार, ऐसेही ।

आभय ( सं. ) आँते, अंतर्विद्यो

आभयसामर्थ्य ( कि. वि. ) आम्ने सामने, पारस्परिक ।

- आभयसारी ( सं. ) औष-  
सासार गंधक ।
- आभयानी ( सं. ) आय, सात्व-  
जारी, प्राप्ति, लाभ, अर्थागम,  
हासिल । [ बुलावा ]
- आभयंशु ( सं. ) निर्मंत्रण,  
आभय ( सं. ) इमलीका वृक्ष  
और फल
- आभययु ( सं. ) अतिसारद्वारा  
पुरानी गठियावातका रोग ।
- आभयार्ण ( सं. ) ओंवले ।
- आभयणीयु ( सं. ) बच्चोंका आभू-  
षण, कढ़ा ।
- आभयन ( सं. ) ऐसाही हो, एवमस्तु,  
आभेऽह ( सं. ) सुगन्ध, आनन्द,  
हर्ष, कौतुक । [ अर्थागम ।
- आभय ( सं. ) आमद, लाभ, प्राप्ति,  
आभये ( सं. ) दर्पण, शीशा, मुकुर ।
- आभे'दे ( कि. ) इसके बाद, इसके  
आगे, आइन्वा ।
- आभयत ( सं. ) आमद, प्राप्ति,  
लाभ, पूँजी, मूलधन ।
- आभे ( सं. ) दाई, बाय, दाही,  
आया । [ पहुँच ।
- आभयान ( सं. ) आगमन, आमद,
- आभयस ( सं. ) परिभ्रम, मिहन्त,  
उद्योग ।
- आभयु ( सं. ) हथियार, शस्त्रास्त्र ।
- आभयभू ( सं. ) उन्न, आयु, जीवन-  
काल । [ आर ।
- आभ ( सं. ) नुकीली लोहेकी कील,  
आभय ( सं. ) जैन तपस्विनी ।
- आभये ( सं. ) दर्द, दुःख, कष्ट, ।
- आभे'दु' ( कि. ) चिल्लाना, डका-  
रना, जोर से शब्द करना ।
- आभे'दु' ( सं. ) कपट, बहाना,  
छल, शक, सन्देह, दुविधा ।
- आभे'त ( सं. ) इच्छा, चाह, आव-  
श्यकता ।
- आभे'ती ( सं. ) दीपक जो मूर्ति-  
योंके आगे घुसाया जाता है ।  
छन्दों के टुकड़े जो सायंकालको  
पढ़े जातेहैं ।
- आभे'त ( कि. वि. ) इधर से उधर ।
- आभे'त'प'द' ( सं. ) संगमरमर,  
एक प्रकारका खसूरत मूल्यवान  
पत्थर ।
- आभे'सी ( सं. ) दर्पण, शीशा, काच ।
- आभे'न ( सं. ) प्रारंभ, उपक्रम, शुरु ।

आरम्भिका ( सं. ) उपासना, सेवा,  
परिचर्या, कुशला ।

आरम्भिकु ( कि. ) पूजाकरना, सेवा  
करना, नमस्कार करना ।

आराम ( सं. ) चैन, सुख, वि-  
धाम, उपशम ।

आराम करेयो ( कि. ) सुख करना,  
चैन करना, मौज करना ।

आराम धरेयो ( कि. ) सुख होना,  
विधाम होना, आराम होना ।

आरी ( सं. ) करवत, दुरपण ।

आरीधु ( सं. ) छोटी ककड़ी, छोटा  
खीरा, आरिया । [ नक्षत्र ।

आरुद्रा ( सं. ) आर्द्रानामक छठा

आरुद्र ( वि. ) सवार, चढा, आरो-  
हित । [ हथी, जिरा ।

आरुद्र ( वि. ) हानिप्रद, बुरा, दुष्ट,

आरु ( सं. ) किनारा, सिरा, हद्द ।

आरोग्य ( कि. ) भोजन करना,  
भक्षण करना ।

आरोग्य ( सं. ) रोगहीनता, आराम,  
स्वास्थ्य, रोगभाव ।

आरोग्य ( सं. ) दोष, बनावट, मिथ्या  
रचना, कल्पना ।

आरोग्य ( सं. ) सारल्य, सरलता,  
कोमल, विनय ।

आर्य ( वि. ) कुलीन, श्रेष्ठ, मान्य,  
पूज्य ( सं. ) हिन्दु ।

आर्या ( सं. ) श्लोक, दोहा, छंद,  
एक प्रकारका छन्द ।

आर्य ( सं. ) संसार, विश्व, जगत्  
मनुष्यजाति । [ मकान, घर ।

आर्य ( सं. ) गृह, वासस्थान, गेह,

आर्या ( सं. ) एक प्रकार का  
वस्त्र अलङ्कार ।

आर्या ( सं. ) कथोपकथन, संभा-  
षण, बातचीत, कुशल ।

आर्या ( सं. ) अंगमिलन, हृदयसे  
लगाना, लिपट, गोदी ।

आर्या ( सं. ) सहायता, मदद ।

आर्या ( सं. ) बड़ा, चौड़ा,  
दीर्घ, विस्तृत ।

आर्य ( सं. ) बेर, एक चायमूल ।  
कन्द विशेष, एक प्रकार की  
तरकारी ।

आर्य ( सं. ) आदर, आगमन,

आर्य ( सं. ) आवागमन,  
आमद रक़्क़ खेजनामना, भेजे हुए  
कागज़ । [ आदर ।

आर्य ( सं. ) ग्रहण, स्वीकार,

आवागम ( सं. ) बारबार आनेजाने-  
का काम । [ विहान, गुण ।  
आवाग ( सं. ) विद्या, इत्थ, हुषार,  
आवाग ( सं. ) देखो, आवड ।  
आवाग ( कि. ) जानना, समझना ।  
आवाग ( वि. ) इतनाबड़ा, इतना  
अधिक, इतना ।  
आवाग ( वि. ) भविष्य, आनेवाला ।  
आवाग ( सं. ) नियुक्तस्थान,  
मृत्यु, अंत, सिरा । [ सत्कारभाव ।  
आवाग ( सं. ) मान, आदर,  
आवाग ( सं. ) लपेटन, आच्छा-  
दन, ढकनेकी वस्तु, ढकना, ढाढ ।  
आवाग ( सं. ) उम्र, आयु, जीवन ।  
आवाग ( सं. ) हिसाबकीकिताब,  
बही, रजिस्टर, रोजनामचा,  
बहीखाता । [ आथोपान्त पढना ।  
आवाग ( सं. ) पढाई, बँचाई,  
आवाग ( सं. ) सतर, पंक्ति, पॉति,  
श्रेणी, कतार, लाइन । [ आना ।  
आवाग ( कि. ) आना, समीप-  
आवाग ( सं. ) आवश्यकता, जरू-  
रत, चाह । [ जीवनमरण ।  
आवागमन ( सं. ) आनाजाना,

आवाग ( सं. ) वासस्थान, रहनेका  
घर ।  
आवाग ( सं. ) देवताओंकेलिये  
बुलावा, आदरपूर्वक बुलावा, पूजाका  
अर्थ ।  
आवाग ५३५ ( कि. ) आगिरना,  
होजाना, बाकैहोना ।  
आवाग ५३५ ( कि. ) आजाना,  
आपहुँचना, पहुँचजाना ।  
आवाग ५३५ ( कि. ) आकसना  
जालमेंफँसजाना ।  
आवाग ५३५ ( कि. ) होना, बाकै  
होना, अन्ततक पहुँचना ।  
आवाग ५३५ ( कि. ) आरहना,  
थकजाना, आबसना ।  
आवाग ( वि. ) एसा, इसतरहका ।  
आवाग ( सं. ) छापा, छपाई,  
संस्करण,  
आवाग ( सं. ) जोष, बल, पौरुष,  
डुःख, चबराहट, बिता ।  
आवाग ( सं. ) अहंकार, इठ,  
दुराग्रह, क्रोध, भूतबडना प्रवेश ।  
आवाग-आ ( सं. ) आरोसा, आसरा,  
प्रत्याशा, उम्मीद ।



आशु ( सं. ) प्रेमी, छेला, चाहने वाला, रसिक, आसिक ।

आशुः श्रुं ( कि. ) प्रेमोन्मत्त होना, प्रेमी होना, आसिक होना ।

आशुः आशुः ( सं. ) प्रेमपात्र और प्रेमी, आसिक माणिक ।

आशुः श्रु ( सं. ) सन्देह, शक, डर, भय, संशय ।

आशुमान ( सं. ) आकाश, ल,

आशुमानी ( वि. ) नीले रंगका, नीला,

आशुमन्ध ( वि. ) आशायुक्त उन्मी-  
दवार । [ रहित ।

आशुमन्ध ( वि. ) निराशा, आशा

आशीर्वाद ( सं. ) आशीष, मंगल-  
वनन, शुभकामना । शुभेच्छा ।

आशुर्ध ( सं. ) अर्चना, तआजुब  
हैरत, अद्भुत ।

आशुभ ( सं. ) श्लोपडी, मठ, वि-  
चारिणों का वासस्थान, मंदिर,  
असाढ़ा । [ आधार ।

आशुभ ( सं. ) आसरा, सहारा,

आशुभित ( सं. ) शरणार्थ, आश्रय  
प्राप्त, आशुभ, अवलंबित ।

आशुभित ( वि. ) लयलीन देवा,  
कुलकुल ।

आशुभ ( सं. ) बैठक, एक प्रकार-  
की औषधि, डंग, दशा, स्थान ।

आशुनावासना ( सं. ) वीरज,  
दादस, मेहमानदारी, आतिथ्य ।

आशुनास ( कि. वि. ) चारोंओर,  
इवंगिर्द ।

आशुव ( सं. ) मद्यमात्र, शराब,  
सिरका, मादक औषधि ।

आशुव ( सं. ) सहारा, अवलम्ब,  
सहायता, कृत, ऑक, ऑच ।

आशुव ( सं. ) सुख, चैन,  
आराम, विश्राम, दिलगी, प्रसन्नता ।

आशुव ( सं. ) एहसान, कृतकृता ।

आशुभी ( सं. ) पुरुष, जन्म,  
धनाढ्य पुरुष । [अलग २, जुदा२।

आशुभीवार ( कि. वि. ) भिन्न २,

आशुरी ( वि. ) असुर सम्बन्धनी,

आशु ( सं. ) आश्विनमास, कुँवा-  
रका महीना ।

आशुवासव ( सं. ) आसापाकाका  
वृक्ष, एक प्रकारका वृक्ष ।

आशुव ( सं. ) ईश्वरभक्त, वेदा-  
नुयायी, छात्राचार्य । [मन्द ।

आशुव ( कि. वि. ) धीरे, आशुव,

आस्था ( सं. ) भक्ति, विश्वास  
ध्यान ।

आशा ( कि. वि. ) इधर, यहाँ ।

आहार ( सं. ) भोजन, खाना,  
अभ्यपदार्थ । [ खाना ।

आहारी ( सं. ) खानेवाला, पेद्रू,

आहीर ( सं. ) अहीर, गड़रिया ।

आहुति ( सं. ) यज्ञकेसमय पी  
और सामग्रीका अंश बार बार  
मंत्र पढ़कर देवताओंके निमित्त  
अग्निमें डालना, बलि, होम ।

आहूटी ( सं. ) शिकारी, मृगयाथी ।

आण ( सं. ) दोष, अपवाद ।

आणप'भाण ( वि. ) व्यर्थ, निरर्थक ।

आणस ( सं. ) सुस्ती, डाल,  
आफस, तन्ना ।

आणसी'पु' ( कि. ) सुस्तहोजाना,  
अलसाजाना, मुरसाजाना ।

आणसु ( सं. ) बीला, सुस्त,  
बेफिक्र, आलसी ।

आण्णी'माणु' ( वि. ) दुष्ट, बुरा,  
नुकसान पहुँचानेवाला, नाइक  
दखल देनेवाला, इस्तसैप करने  
वाला ।

आणु ( वि. ) शब्दके अंतमें यह  
शब्द लगाया जाताहै तब उसका  
अर्थ " कापूरा " होताहै, जैसे  
" ह्याणु "

आण्णी'पु' ( कि. ) लुडकाना,  
लपेटना, मथना, बिलोना ।

## ध-ध

ध-ध=वर्णमाला का तृतीय और  
चतुर्थ अक्षर ।

ध'ध्यास ( सं. ) भाव्य, किस्मत,  
होनहार, प्रारब्ध, यग, सफलता,  
प्रताप ।

ध'क'र ( सं. ) कौल, करार, वचन ।

ध'क्षु ( सं. ) सांठा, गन्ना, ईख ।

ध'ध'ध'स ( सं. ) मुहब्बत, प्रेम,  
स्नेह, प्यार । [ अंगरेज ।

ध'ध'ध' ( सं. ) योरोपियन, गौरांग,

ध'य ( सं. ) इंच ।  $\frac{1}{32}$  फुट

ध'ध'पु ( कि. ) गलेतकमरना, नाक  
तकमरना, एकदम बहुत खालेना ।

ध'ध'पु' ( कि. ) इच्छाकरना,  
चाहना । [ बाप्छा, कामना ।

ध'ध' ( सं. ) चाह, स्वाहिस,

४७३३७ ( सं. ) वाञ्छित बात ।  
 त्रैशिक का उत्तर ।  
 ४७३३८ ( वि. ) मनोमिलित,  
 मनवांछित, इच्छानुसार ।  
 ४७३३९ ( सं. ) मान, आदर  
 प्रतीक्षा ।  
 ४७३४० ( सं. ) निमंत्रण, बुलावा ।  
 ४७३४१ ( सं. ) हानि, नुकसान, हर्ज ।  
 ४७३४२ ( सं. ) पारितोषक, इनाम ।  
 ४७३४३ ( सं. ) पायजामा, खुसना ।  
 ४७३४४ ( सं. ) ठेकेदार, किसान ।  
 ४७३४५ ( सं. ) ठेका, विक्रयका  
 अधिकार ।  
 ४७३४६ ( कि. ) झुरना, लटजाना,  
 रंजीदा होना ।  
 ४७३४७ ( सं. ) ईंट  
 ४७३४८ ( सं. ) ईंटे बनानेका सौंजा ।  
 ४७३४९ ( सं. ) मिट्टी, भोजन, खाना  
 कला, गुण ।  
 ४७३५० ( सं. ) अंदा,  
 ४७३५१ ( सं. ) विश्वास, यकीन ।  
 ४७३५२ ( सं. ) सवारी, ठाठबाठ,  
 संस्थापन ।  
 ४७३५३ ( वि. ) बगैरः, प्रकृति ।

४७३५४ ( सं. ) अविमान, घमण्ड,  
 आत्मस्तुति, आत्म-छाया ।  
 ४७३५५ ( सं. ) अप्रसन्नता अव-  
 कृपा, अरुचि ।  
 ४७३५६ ( कि. ) शेखी मारना, गर्व  
 करना, बड़ी २ बातें मारना ।  
 ४७३५७ ( सं. ) अंत, सिरा, समाप्ति ।  
 ४७३५८ ( सं. ) तवारीख, वर्णन ।  
 ४७३५९ ( सं. ) चितित, उद्विग्न,  
 चिंताशील । [ बांका १५ ]  
 ४७३६० ( वि. ) अहंकारी, छेला,  
 ४७३६१ ( सं. ) मुसलमानों का पर्व दिन ।  
 ४७३६२ ( सं. ) नकार, अस्वीकार ।  
 ४७३६३ ( वि. ) थोड़ेसे, चन्द,  
 कम, इने गिने ।  
 ४७३६४ ( वि. ) हरिश्चन्द्र,  
 इन्द्रेच्छा । [ मनुष्यजाति ।  
 ४७३६५ ( सं. ) आदमी, मनुष्य,  
 ४७३६६ ( सं. ) मनुष्यता, तर्क-  
 शक्ति, स्वाकत, उपयुक्तता ।  
 ४७३६७ ( सं. ) न्याय,  
 ४७३६८ ( वि. ) बषार्थ, ठीक,  
 उचित, न्यायानुमोदित । [ भेद १५ ]  
 ४७३६९ ( सं. ) पुरस्कार, उपहार,  
 ४७३७० ( कि. ) पुरस्कार  
 देना, भेद करना ।

धन्व ( सं. ) राक्षसपति, देवताओं का राजा, इन्द्र, शक्र ।

धन्वि ( सं. ) इन्द्रिय, अंग, लिंग, उपस्थेन्द्रिय ।

धन्विनी ( सं. ) लक्ष्मी, कमला, मन की अधिष्ठात्री देवी ।

धन्व ( सं. ) चन्द्रमा, चाँद, सोम ।

धन्व ( सं. ) औषधी विशेष, इंद्रजी ।

धन्व ( सं. ) मावाकर्म, छल, कपट, बाजीगरी ।

धन्व ( सं. ) शक्रधनु, मर्यादी किरण, वर्षाक्षतु में दिखनेवाला धनुष ।

धन्व ( सं. ) औषधी विशेष एक प्रकारका फल, इन्द्रावण ।

धन्व ( सं. ) नीलमणौ, नीलम,

धन्व ( वि. ) ज्ञानगम्य, प्रत्यक्ष, दिखाऊ ।

धन्व ( वि. ) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथवर्ती ।

धन्व ( सं. ) अपनी इन्द्रियों को समन करनेवाला ।

धन्व ( सं. ) मूर्ख, मन्द ।

धन्व ( सं. ) ईषन, बलीता-री ( सं. ) एक प्रकारका भोजन ।

धन्व ( कि. वि. ) इस तरफ, इस ओर, इधर ।

धन्व ( सं. ) शब्द रचना, बनावट ।

धन्व ( सं. ) हाथी, गज,

धन्व ( सं. ) निश्चय, विश्वास, यकीन, धर्म, सच्चाई, मत ।

धन्व ( सं. ) सच्चा, विश्वासी, वक्तादार । [ शिकता ।

धन्व ( सं. ) सच्चाई, प्रामा-

धन्व ( वि. ) विश्वास योग्य ।

धन्व ( सं. ) मुसलमानों का पुरोहित ।

धन्व ( सं. ) गृह, धाम, हवेली, कोठी, बनावट ।

धन्व ( सं. ) एक प्रकारका कीड़ा ।

धन्व ( सं. ) बाह, मोह, द्वेष,

धन्व ( सं. ) अभिप्राय, इच्छा, फल, प्रयोजन, आशय, आकांक्षा ।

धन्व ( सं. ) पक्षी, उपपद ।

धन्व ( सं. ) विद्या, हुनर, आवू, टोना, इन्द्रजाऊ । [ पद, गुणी,

धन्व ( सं. ) चतुर, होसियार,

धन्व ( सं. ) विश्व, पृथ्वी ।

धियाडे ( सं. ) अधिकार, स्वत्व, अवलदारी, अधिकार, प्रान्त, जिला ।

धियाळ ( सं. ) उपाय, औषधोपचार, हिकमत, तदबीर, बल ।

धियाळी ( सं. ) इलाची, एला, इलाचची ।

धियाळत ( सं. ) जम्बूद्वीप के नव वर्षान्तर्गत एक वर्ष विशेष ।

धिया ( सं. ) सासक, प्रभू, पति, ईश्वर, स्वामी (विस्म.) हिंस, हुस ।

धिया ( सं. ) प्रेम, चाह ।

धियाळ्याळ ( सं. ) मतवाला प्रेमी, लंपट, अय्याश, कामी, रतामिलपी ।

धियाडी ( वि. ) डेला, अलबेला, रसिया, रंगीला, कामी ।

धियाडत-रे ( वि. ) आँखोंका संकेत, सैन, संकेत, सूचना ।

धिया ( सं. ) प्रभु, सर्वशक्तिमान ।

धियास्तुनि ( सं. ) भजन, प्रार्थना गीत ।

धियाडुपा ( सं. ) प्रभुकी दया ।

धियाडी ( सं. ) देवी, पवित्र, धियाडी निधम ( सं. ) प्रकृति के नियम, विधि विधान ।

धियाडी पुत्र ( सं. ) पवित्र मनुष्य, बुद्धिमान ।

धियाड्या ( सं. ) परमात्माकी इच्छा ।

धिया ( वि. ) काम्पित, पूजित, मानित । [ उपास्य देव ।

धियादेव ( सं. ) कुलदेव पूजनीय, धियाडित ( सं. ) प्यारा मित्र, सच्चा मित्र । [ स्थान, लभ ।

धियाडि ( सं. ) ( गणितमें )

धिया ( सं. ) याग, यज्ञ, अभिलाष इच्छा । [ के सीरापाटी ।

धिया ( सं. ) चार पाई के बाजू, छाट

धियाडतरी ( सं. ) लिखनेका टेबल, छोटी सन्दूक ।

धियाडि ( सं. ) रोकनेवाली, ठहरानेवाली । [ ईसबगोल ।

धियाडि ( सं. ) औषधि विशेष

धियाड ( सं. ) लोबान, एक सुवन्धित गौड़ । [ जाहिरखबर ।

धियाडि ( सं. ) विज्ञापन, सूचना, धियाडी ( वि. ) मसाही, ईसाई ।

धियाडी सन ( सं. ) ईसाई सम्मत, सद ईस्वी । [ की इस्तारी ।

धिया ( सं. ) कपड़ों की तरह करने

धियाड ( सं. ) सहृदयी, इलायक ।

## ७-३

७-३ वर्णमाला का पौनर्वी  
और छठा अक्षर ।

७३२३। ( सं. ) कपलों का डेर,  
कंदो का डेर, कंकट का डेर, कच-  
रेका डेर

७३धपुं ( कि. ) पढ़ने योग्य होना  
( लिखा हुआ )

७३णपुं-३णपुं ( कि. ) उबालना,  
गर्म होना । गर्म करना ।

७३ण।४ ( सं. ) ताप, गर्मी, घबरा-  
हट, हैरानी ।

७३ण। ( सं. ) कावा, उबाल, गर्मी ।

७३क्ष ( सं. ) चालाकी, निपुणता,  
चतुरता, सुलभावट, मुक्त ।

७३क्षपुं ( कि. ) पढ़ना, पढ़ने योग्य  
बनाना, निर्णय करना, उधेड़ना,  
खोलना, समझाना ।

७३धपुं-३धपुं ( कि. ) तोड़  
डालना, बरबाद कर डालना,  
अलग करना, खोलना, उखाड़ना ।

७३ध ( वि. ) बिना उपजाऊ,  
ऊसर, अनुपजाऊ ।

७३ध३ध ( सं. ) नई आबादी, उप-  
विशेष, नई बस्ती ।

७३ध ( सं. ) खरल, ऊखल, उलूखल ।

७३धधुं ( सं. ) पहेली, प्राबाल्हिका,  
गोरखधन्वा, बुझौवल, गूढ प्रश्न ।

७३ध ( सं. ) विकास, उन्नय, उदय ।

७३धधु-धु ( सं. ) पूर्व, प्राची दिशा,

७३धधु ( वि. ) पूर्वी, पूर्व दिशाका ।

७३धपुं ( कि. ) भागना, बचना,  
खोलना ।

७३धपुं ( कि. ) उदय होना, उगना,  
निकलना, फूटना, प्रकट होना,

७३धधपुं ( कि. ) उठाना, हिल  
बढाना, [ मुनाफा ।

७३ध३ ( सं. ) लाम, बचत, फावदा,

७३ध३पुं ( कि. ) बचाना, रक्षा  
करना, छुड़ाना ।

७३ध नीक्षणपु ( कि. ) निकल आना,  
प्रकट होजाना, [ कदु, क्खेपी ।

७३ध ( वि. ) उत्कट, रौद्र, तीक्ष्ण,

७३ध ( सं. ) उंचाई, नौद, निदास,  
नौदका प्रथम रूप,

७३धपुं ( सं. ) सपकीमें होना, नौद  
आना, आराम करना, सेटना,  
सोना । [ निदाह ।

७३धधधुं ( वि. ) झुस्त काहिल,

७३धधुसी ( वि. ) मिश्राका, नौदमें  
भरा हुआ, उंचाका, आकषी ।

७५८ ( वि. ) आलसी, ढीला,  
धीमा, दीर्घसूत्री, मन्द गति ।

७५८७ ( कि. ) खोलना, साफ  
होना, ( किस्मत ) खुलना, बादल  
हटना ।

७५८८ ( सं. ) आवश्यक मांग ।

७५८९ ( सं. ) चन्दा, दान ।

७५९० ( सं. ) मालगुजारी का  
संग्रह, महसूल संग्रह ।

७५९१ ( सं. ) भोजन अथवा  
तरल पदार्थ परसनेका बड़ा चमचा ।

७५९२ ( कि. ) एकत्र करना,  
सकय पाना । [ आकाश ।

७५९३ ( सं. ) स्वच्छ ऋतु, निर्मल

७५९४ ( कि. ) खोलना, ताला  
खोलना, प्रकाश करना प्रत्यक्ष  
करना ।

७५९५ रीति ( कि. वि. ) खुलमखुला,  
प्रकट रीतिसे, दिन बहाड़े ।

७५९६ ( वि. ) प्रत्यक्ष, खुला, साफ,  
नंगा, भंगारहीन ।

७५९७ ३२७ ( कि. ) खोलना, प्रकट  
करना, प्रत्यक्ष करना । [ धरीक

७५९८ ( वि. ) बड़ा कुर्चीन, ऊँचा,

७५९९ ( कि. ) लेजाना, उठ लेना ।

७५९० ( सं. ) ठीका, सपाई, मंयनी ।

७५९१ ( सं. ) भार लेनालेकी  
मजूदारी ।

७५९२ ( कि. ) उठवा देना ।

७५९३ ( सं. ) दुष्ट, नीच, पापी,  
जेबकट ।

७५९४ ( वि. ) छोटा बड़ा, ऊँचा  
नीचा, विषम, असमान ।

७५९५ ( कि. ) कहना, बोलना

७५९६ ( सं. ) उच्चता, ऊँचाई,  
बढ़प्पन ।

७५९७ ( सं. ) व्यग्रता, बेसम्री ।

७५९८ ( सं. ) ऊँचाई,

७५९९ ( सं. ) अपहरण, अनुचित  
कार्य, दुरुपयोग ।

७६०० ( सं. ) बरछा काठका  
सामान, परकी सामग्री । [ योग्य ।

७६०१ ( वि. ) ठीक, मुनासिब,

७६०२ ( सं. ) ऊँचा, ज्येष्ठ, महान ।

७६०३ ३२७ ( कि. ) उठाना, पकड़ना ।

७६०४ ३२७ ( कि. ) ठीक  
ठीक करना ।

७६०५ ( कि. वि. ) कपूर, [ ब्रह्मवि ।

७६०६ ( सं. ) व्यग्रता, उग्रता,

उत्पादन ( सं. ) उत्पादना, जगहसे उत्पादन, किसी मनुष्यपर मंत्र द्वारा अपाति लाना ।

उच्चार ( सं. ) उच्चारण, कथन ।

उत्थिष्ठ ( वि. ) जूझ, खानेसे बचना हुआ पदार्थ ।

उत्थे ( सं. ) छेदन, काटना, विनाश ।

उत्थेष्ठ ( सं. ) नाशक, विध्वंसक ।

उत्थुंभण ( वि. ) अनियंत्रित, अनर्गल, विध्वंसक, नटखट, बेरोक ।

उत्थुंभ ( सं. ) गोबी, छाती, हृदय ।

उत्थुंभ ( सं. ) परमानन्द, अत्यानन्द । [ ऊपर आना ।

उत्थुंभुं-उत्थुंभुं ( कि. ) उठना, उगना, उठना, उगना ।

उत्थुंभुं ( कि. ) कूदना, उछलना ।

उत्थुंभुं ( वि. ) नटखट, उच्छृंखल, अविचारी । [ कर्ज ।

उत्थुंभुं-भुं ( वि. ) ऋण, उधार, उधार ।

उत्थुंभुं ( कि. ) उत्पन्न करना, पालन करना, उठाना, उत्थाना, ऊपरलाना । [ ऊपर, मनुष्यज ।

उत्थुंभ ( वि. ) सूनसान, निर्जन, निर्जन ।

उत्थुंभ-उत्थुंभुं ( कि. ) उठावना, सूखा करना, निर्जन करना ।

उत्थुंभुं ( कि. ) देहालना, एक धार्मिक संकल्पको बस्तुर पूर्ण करना ।

उत्थुंभुं ( कि. ) तेल छगाना चर्बी, लगाना, ओगटना, मंत्र शक्ति से अच्छा करनेकी हम भरना ।

उत्थुंभुं ( सं. ) सफेद, स्वेत, शुद्ध चमकीला, खूबसूरत ।

उत्थुंभुं-उत्थुंभुं ( वि. ) १६१-सोने के समान कान्तिवान, दूध समान सफेद ।

उत्थुंभुं ( वि. ) चमकीलापन, स्वच्छता, सफाई ।

उत्थुंभुं ( सं. ) सावधानी, सज्जता, चौकस, जाग ।

उत्थुंभुं ( सं. ) सावत, जेबनार, त्यौहार, भोजन ।

उत्थुंभुं ( सं. ) प्रकाश, चमक उजाला ।

उत्थुंभुं ( सं. ) हठ, जिह, सरकशी, हुज्जत ।

उत्थुंभुं ( कि. ) कुदेरना, काटना ।

उत्थुंभुं ( सं. ) खरबन, चीरफाड़ ।

उत्थुंभुं ( सं. ) उच्छृंखल ।

उत्थुंभुं-उत्थुंभुं ( कि. ) निर्मलकरना, शिक्ककरना, चमकाता ।

उत्थुंभुं ( सं. ) शिष्टा शिक्षता ।



७४३ ( सं. ) गणप, कटानी, चर्चा,  
अटकल, कवास । [ चौक ।

७४३ ( सं. ) ऊंटकटारी के

७४३ ( वि. ) प्राय, अक्कर,  
जबतब, हमेशा, सदैव ।

७४३ ( सं. ) बेचैनी, बेआरामी,  
ऊठक बैठककी सजा जो पाठशा-  
लामें विद्यार्थियों को प्रायः ही  
जानी है ।

७४३ ( सं. ) मातम, अथवा  
शोक माननेका अंतिम दिन ।

७४३ ( कि. ) उठना, खड़ा होना,  
जागना, उदय होना । [ भड़काना ।

७४३ ( कि. ) उठाना, जगाना,

७४३ ( कि. ) विकल देना,  
दूर भेज देना, बाहिर करना ।

७४३ ( कि. ) खींच लेना,  
उठा लेना, बुला लेना ।

७४३ ( सं. ) कुच, प्रस्थान, रवानगी ।

७४३ ( सं. ) चाह, पूछ, ऊंचाई ।

७४३ ( कि. ) आक्रमण  
करना, भावा करना, चढ़ाई करना ।

७४३ ( कि. ) उठा लेना प्रकट  
करना ।

७४३ ( कि. ) निकल जाना,  
पुत्ररना, चला जाना, विदा होना ।

७४३ ( वि. ) बेसबब, गाहक  
निर्मूलक, उड़ना, फैलनेवाला, छूत  
से लगनेवाला, उड़नेवाला ।

७४३ ( सं. ) मूर्ख, हठी, जिद्दी

७४३ ( कि. ) उड़ना, फैलना,  
छूत से लगना ।

७४३ ( सं. ) गोद, आलिंगन ।

७४३ ( कि. वि. ) गढ़बड़ीसे,  
घबराहटसे, बेपरवाहीसे, असा-  
वधानीसे ।

७४३ ( वि. ) गहराई

७४३ ( वि. ) अतिव्ययी, छटाक,  
दानी, अपव्ययी, खराच, फुजुक  
खर्चा,

७४३ ( कि. ) उड़ाना, मगाना,  
अलग करना ।

७४३ ( वि. ) खर्च, अपव्यय,  
चंचल, अधीर, बेठिकाना, ( सं. )  
छुट्टा, संपट । [ अगाध

७४३ ( वि. ) गहरा, ओढ़ा, गंधीर

७४३ ( सं. ) मार लेजाने के लिये  
सिर पर कपड़े की गोली चढ़ी करके  
रखी हुई ईंट, चूमळी, ईंटुरी ।

७४३ ( सं. ) तारे, नक्षत्र,

७४३ ( सं. ) नव विवाहिता

७४३ ( वि. ) ऊंचा,

४६ ( वि. ) न्यून, कम, बोझ,  
अपघात, अपूर्ण, ऊर्ध्व ।

४७ ( सं. ) बार बार चढ़ाव  
और उतार ।

४८ ( सं. ) बर्तनोंकी श्रेणी जो  
एक के ऊपर एक रखा हो ।

४९ नाभु ( वि. ) उधेड़  
ढालना, झील ढालना ।

५० ( सं. ) ढाल, उतार,

५१ ( सं. ) घटती, उतार,

५२ आन्यु ( सं. ) कमजोर,  
न्यूनता । [ छोटा, नीच ।

५३ ( वि. ) अप्रधान, मातहत,

५४ ( कि. ) उतरना, सवारीसे  
उतरना, नीचे आना, घटना, कम  
करना, आगे चलाना, रास्ता  
दिखाना, पार करना, टिकना,  
बसना, धरना, नीचे होना,  
बैठना, धीमा होना, मुरझाना,  
कुहलाना, नकल करना, उतारना ।

५५ ( सं. ) सूर्यका उत्तर  
दिशामें गमन, उत्तरायण ।

५६ ( कि. ) नकल करना,  
नीचा करना, नीचे आना, उतारना ।

५७ ( कि. ) विगड़ जाना,  
नष्ट होजाना, झुकना, डलना,  
उतर जाना । [ चना,

५८ ( कि. ) सिरे पर पहुँ-

५९ ( कि. ) उतारना, नीचे  
करना, नकल करना ।

६० ( कि. ) धीरे से बात  
काटना, नम्रता पूर्वक बात काटना ।

६१ ( सं. ) यात्री, मुसाफर,

६२ ( सं. ) जल्दी, त्वरा, शीघ्रता

६३ ( सं. ) बेसम, जल्दबाज,

६४ ( सं. ) अभिलाषा, खेद,  
व्याकुलता ।

६५ ( सं. ) उत्तमता, श्रेष्ठता,  
प्रधानत्व, बल, प्रताप, विजय ।

६६ ( सं. ) उत्तम, उम्दा,  
श्रेष्ठ, प्रकृष्ट ।

६७ ( सं. ) उलटा कम, अनिक्रमण ।

६८ ( सं. ) सबसे अच्छा, नफीस,  
अच्छ, बढ़िया ।

६९ ( सं. ) जबाब, नतीजा, अदा-  
लतके विफैल नतीज, उत्तर दिशा,

७० ( सं. ) दाह कर्म, अन्त्येष्टी

७१ ( सं. ) उत्तरीय सिरा,  
प्रथम नामक तारा जो उत्तर दिशामें  
स्थिर है ।

उत्तरीपद ( कि. ) अधिकाधिक,  
धीरे धीरे, कमसः ।

उत्तरेक ( वि. ) मङ्गलानेवाला, प्रेरक,

उत्तरेन ( सं. ) भर्त्सना, प्रेरणा,  
व्याकुलकरण, तेजी ।

उत्तरेपन ( सं. ) उठाना, मङ्गलाना,  
जगाना । [ आविर्भाव ।

उत्पत्ति ( सं. ) पैदायश, जन्म,

उत्पन्न भवतुं ( कि. ) जन्मदेना,  
पेदा करना, रचना, बनाना, का-  
रण होना ।

उत्पत्ति ( सं. ) उपग्रह, अशुभ घटना  
आपद, दुर्गति, अपशाकुन ।

उत्प्रेक्षा ( सं. ) उपमा, अर्थात्कार,  
मिथिल दुलना ।

उत्सर्ग ( सं. ) त्याग, छोड़ ।

उत्सव ( सं. ) त्योहार, खुशीका  
अवसर । [ साहस दुलस ।

उत्साह ( सं. ) हिम्मत शक्ति,

उत्साह भंग ( सं. ) हतोत्साह,  
साहसहीन, टूटादिल ।

उत्सुक ( वि. ) इच्छुक, शीक्रीन ।

उत्सृष्ट ( सं. ) मङ्गल, चक-  
राहट, उलट पलट, झोट पोट,

उत्सृष्ट ( कि. ) औधवाना,  
उलट जाना । [ पलटाव ।

उत्सृष्ट ( सं. ) जवान, उत्तर, झोटफेर

उत्सृष्ट ( कि. ) आशा भंग करना,  
अपमान करना ।

उत्सृष्ट ( सं. ) पानी, जल ।

उत्सृष्ट ( सं. ) समुद्र, बारिधि, सागर

उत्सृष्ट ( सं. ) गर्व, दुःख, बही,  
नुकसान नुराई ।

उत्सृष्ट ( सं. ) प्रकाश, यशप्राप्ति,  
ज्योतिर्वाप्ति उरवान ।

उत्सृष्ट ( सं. ) पेट, जठर, पेहू,  
( कि. वि. ) वहाँ, उधर ।

उत्सृष्ट ( सं. ) जीविका, सत्त,  
भोजन, रोजी ।

उत्सृष्ट ( सं. ) जीविका, रोजी,

उत्सृष्ट ( सं. ) चिंता, सोच, फिक्र ।

उत्सृष्ट ( सं. ) मूषक, चूहा, गणेशवाहन ।

उत्सृष्ट ( सं. ) चूहे पकड़ने का  
फंदा । [ गंजा सिर ।

उत्सृष्ट ( सं. ) मेलयुक्त सिर,

उत्सृष्ट ( वि. ) फट्फट, ईशानदार,  
दयालु, दाता, चतुर, सुसादिक ।

उत्सृष्ट ( सं. ) उदारपन, फैवाजी,  
वेकी, मकार्द ।

उद्धारतापी (क्रि. वि.) उद्धारतापूर्वक,  
उद्धारसी (सं.) रंजित, खेद, शोक।

उद्धारस्थ (सं.) दृष्टात, मिसाल।  
उद्दिष्ट (वि.) प्रकाशित, आविर्भूत,  
जगाहुवा।

उद्देश (सं.) अनुसंधान, अभि-  
प्राय, इच्छा, निधान, उद्देश्य।

उद्देश (सं.) हलका नीला रंग,  
ऊदा रंग। [उज्ज्वल, नटखट।

उद्देश (सं.) गैवार, भड़काहुवा,

उद्देशी (सं.) गैवारपना, उज्जु-  
पना, बेभदबी।

उद्देश (सं.) बचाव, रिहाई छुट-  
कारा, मुक्ति, अभ्युदय।

उद्देश्य (क्रि.) बचाना, छोड़ना,  
मुक्त करना। [पैदायश।

उद्भव (सं.) उत्पत्ति, जन्म,

उद्भिन्न (सं.) पृथ्वी फाटकर  
उत्पन्न हुवा, वृक्ष, वनस्पति आदि।

उद्भव (सं.) उद्योग, कोशिश,  
परिश्रम, साहस।

उद्धान (सं.) बाग, वाटिका, उपबना।

उद्धान (सं.) समाप्ति, पूर्ति,  
अंततः अंत। [उद्यम।

उद्देश (सं.) बल, चेष्टा, उत्साह,

उद्देश (सं.) उद्योग पाठ-  
शाला। जवान वा कमसिन अपरा-  
धियोंके सुधारनेकी पाठशाला।

उद्देश (सं.) प्रकाश, चमक,  
आलोक, उजियाली।

उद्देश (सं.) व्याकुलता, चिंता,  
विरहजन्य दुःख।

उद्देश्य-उ (सं.) शोकविक्री,

उद्देश्य (क्रि.) शृणी होना,

उद्देश (सं.) खासी, धौंस, फेंकने  
की सूजन।

उद्देश्य (वि.) उधार बेचाहुवा,

उद्देश्य (सं.) सफेद चिन्टो, पतिंगा।

उद्धान (सं.) ज्वारभाटा, समुद्र के  
पानी का चढ़ाव जो शुक्लपक्ष में  
द्वितीया और पूर्णमासीपर होता है  
(वि.) तीन।

उद्धान पाया (वि.) विपथगामी,  
अव्यवस्थित।

उद्धार (सं.) उधार, ऋण, कर्ज।

उद्धार पाया (सं.) हिसाब की  
किताब में नाम लिखने की धोर।

उद्धार लेवुं (क्रि.) कर्जपर खरीदना,  
नामे लिखाकर मोललेना।

उद्धार (सं.) देरी, विराम वादा,  
नियम, वचन, शर्त।

७६६ ( सं. ) बेवकूफ, मूर्ख,  
बाधिर.

७६७ ( कि. वि. ) ऊपर, ऊँचा,  
अधिक, ( वि. ) ऊपरवाला,  
ऊपरका ।

७६८ ( वि. ) मिथीके पात्रमें पकी  
हुई भाजी तरकारी ।

७६९ पुतण्ड ( वि. ) हीन दृष्टिका  
कम नज़र । [ भाग, नीचे ।

७७० ( वि. ) औषा, ऊपरका

७७१ भास्वु ( कि. ) औग करना  
छोटदेना ।

अधि भडोडे ( वि. ) मुहंभल

७७२ ( सं. ) मेघलोम, मेड़केवाल,  
रोम, ऊन ।

७७३ ( वि. ) विशिष्ट, बौराह,  
मतवाला, पागल । [ शरीफ ।

७७४ ( वि. ) उच्च, ऊँचा, ऊर्ध्व,

७७५ ( सं. ) जबलताहुवापानी,  
एक प्रकारका रोग । [ वर्तन ।

७७६ भञ्जो ( सं. ) पानी गर्म करनेका

७७७ ( कि. ) झुकना, मुड़ना ।

७७८ ( सं. ) ग्रीष्म, गर्मीका  
मौसम ।

७७९ ( सं. ) चितविभ्रम, पागल-  
पन, अचेतता, गर्व, झुझी ।

७८० ( सं. ) हाथियार, औजार  
वासन, सामग्री । [ भलाई ।

७८१ ( सं. ) कृपा, सहायता,

७८२ ( कि. ) ब्याकरण,  
कृपाकरना, भलाईकरना ।

७८३ भानवो ( कि. ) बुद्धिमान  
अदाकरना, धन्यवाद देना ।

७८४ ( सं. ) आरंभ, शुरु शरि-  
श्रम, यत्न, उपयोग ।

७८५ ( सं. ) छोटा अभ्यासक,  
अभ्यासगुरु, नायक सुदर्शन ।

७८६ ( सं. ) तारे, राह, केतु,  
उपग्रह । [ वर्तन ।

७८७ ( सं. ) सेवा, टहल, इलाज

७८८ ( सं. ) पैदा, जन्म, उत्पत्ति  
आमद, आय ।

७८९ ( सं. ) उत्पत्ति और  
उन्नति, जन्म और वृद्धि ।

७९० ( सं. ) वैवाहिक रीति,  
पहराबनो, बहेज ।

७९१ ( कि. ) रवानाहोना, कूच  
करना, अटस्यहोना, तेज होना,  
जहाज चलाना, निकट पहुँचना,  
बिना तुतलाहटके बोलना ।

७९२ ( कि. ) फटकना, पछोरवा  
छानना । [ बखेद, विद्रोह ।

७९३ ( सं. ) उत्पात, अन्धाध,

७९४ ( सं. ) शिक्षक, उपदेष्टा,  
उपदेष्टकर्ता । [ मंत्रदान, दाया ।

७९५ ( सं. ) शिक्षा, हितकथन,

उपधातु ( सं. ) कच्छी धातु,  
निम्न सात उपधातु कहाती हैं—  
सोनामाखी, नीलायाथा, हरताल,  
अन्नक, खपदिया, सुर्मा, और  
मेनसिल ।

उपधातु ( सं. ) छोटाअन्न ।

उपधातु ( सं. ) वंशपरंपरा गतनाम,  
कुलनाम, पदवी ।

उपधेय ( सं. ) विलास सामग्री ।

उपधा ( सं. ) मिसाल, उदाहरण,  
सादृश्य । [ दृष्टान्त ।

उपधान ( सं. ) बयान, वर्णन,

उपधुक्त ( सं. ) ठीक, योग्य,  
उचित, मौजू ।

उपधेय ( सं. ) हस्तैमाल, प्रयोग  
औचित्य, लाभ । [ मन्द, अनुकूल ।

उपधेय ( वि. ) उचित, फायदे-

उपधे ( उप० ) पर, ऊपर ।

उपधे उपधेयी ( कि. वि. ) थोड़ा  
थोड़ा, ऊपरी, हलकेपनसे ।

उपधेय ( वि. ) डोंबाडोल,  
अस्थिर ।

उपधेय ( सं. ) छोटासा कपड़ा  
जो कंधेपर डालाजाताहै, दुपट्टा ।

उपधेय ( सं. ) मृत्यु, उदासीनता,

उपधेय ( सं. ) एककृषक उस-  
गाँवका न रहेनेवाला जिस गाँवमें  
बह खेती करता हो ।

उपधेय ( सं. ) भूमिपर न रहेने-  
वाला दुमंजिलेमें रहेनेवाला, ऊप-  
रका चढ़ाव,

उपधेय ( कि. वि. ) प्रायः  
अव-सर, शीघ्र, तेज, बेगवान

उपधेय ( कि. वि. ) लगातार,  
परंपरागत, अनुक्रमिक, क्रमानुसार

उपधेय ( सं. ) स्थापन, पुष्ट, रक्षा

उपधेय ( उप० ) अलावा, पछि,  
बाद, अतिरिक्त

उपधेय ( सं. ) प्रबन्धकर्ता, अध्यक्ष  
ऊँचा, बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उपधेय ( सं. ) हुक्मन, अनु-  
शासन

उपधेय ( सं. ) अधिकता, शेष,  
बचत, बढती, आवश्यकतासे अधिक

हिमाबने नहीं लिया हुआ ।

उपधेय ( सं. ) वह शब्द शक्ति-  
जिससे निर्दिष्ट वस्तुसे भिन्न तत्त्व  
इस वस्तुका ज्ञान होताहै, उपलक्षण ।

उपधेय ( वि. ) पूर्वका, ऊँचा लि-  
खित, उपरोक्त, कावित ।

उपधेय ( सं. ) बाग, उद्यान,  
बाटिका ।

उपधेय ( सं. ) व्रत, अनाहार,  
लंघन, दिनरात भोजनाभाव ।

उपधेय ( सं. ) कमी, घटी,  
धीरज, शान्ति, तसल्ली, स्वास्थ्य ।

उपसर्ग ( सं. ) आयेल्गाना ।  
 उपश्लेषुं ( कि. ) बटना, फैलना,  
 अकड़ना ।  
 उपसागर ( सं. ) खाड़ी ।  
 उपस्थान ( सं. ) उपासना, अप्रकट-  
 पूजा, मानसिकपूजा ।  
 उपस्थित ( वि. ) जानाहुवा, जोता-  
 हुवा, सुधराहुवा, बोयाहुवा ।  
 उपहार ( सं. ) इनाम, भेंट, नज़र ।  
 उपहास ( सं. ) ठट्ठा, मजाक,  
 हँसी । [ लेना  
 उपाडु ( कि. ) उखाड़ना, खींच-  
 उपाडान ( सं. ) ग्रामि, ग्रहण, बचान,  
 कथन, हेतु ।  
 उपाधि ( सं. ) झगड़ा, छठ, झूठ ।  
 उपाध्याय-ध्या ( सं. ) पुरोहित,  
 शिक्षक ।  
 उपान ( सं. ) जूतियाँ, पदत्राण ।  
 उपाय ( सं. ) इलाज, तदबीर ।  
 उपायन ( सं. ) सम्मानित भेंट ।  
 उपार्जन ( सं. ) प्राप्ति, हासिल ।  
 उपार्जित ( वि. ) अर्जन, धनादि  
 संबन्ध, संबन्धित, एकत्रित ।  
 उपासक ( सं. ) पूजा करनेवाला,  
 अनुगामी ।  
 उपासना ( सं. ) सेवा, टहल,  
 पूजन, देवपूजा, मूर्तिपूजा,  
 स्तुति ।

उपेक्षा ( सं. ) अनादर, त्याग,  
 उदासीनता । [ प्रस्तावना ।  
 उपेक्षात ( सं. ) आरंभ, भूमिका  
 विह ( सं. ) गर्मी, हुरारत, जोश,  
 रक्षा, पोषण, सहायता ।  
 उपेक्षुं ( वि. ) गर्म, गुनगुना, कम  
 गर्म । [ द्वार ।  
 उभरे-रे ( सं. ) देहली, बली,  
 उभ ( सं. ) कै, बमन, छाई,  
 उलटी, उछोट ।  
 उपाधि ( सं. ) बारबार आगला  
 भट्ठना और शांत होना । आग-  
 बबूला ।  
 उभाणे ( सं. ) इंधन ।  
 उभी ( सं. ) नाजके मुड़े, सिरे,  
 गेट्टे अथवा चौकीनाल ।  
 उभय ( उप. ) दोनों, दो ।  
 उभयधर ( सं. ) जलधर और  
 धरधर, जल और पृथ्वीपर रह-  
 नेवाले । [ दोतरफ ।  
 उभयपक्ष ( सं. ) दोनों दोनोंपक्ष,  
 उभयलो ( सं. ) दोनोंलोक, इह-  
 लोक और परलोक ।  
 उभयान्वयी ( वि. ) मेल, सङ्गम ।  
 उभयार्थ ( वि. ) गोरुभोल, दो  
 आशयवाली बात, सन्देहपूर्ण,  
 संदिग्ध । [ स्पष्टज्ञान, बोध ।  
 उभरे ( सं. ) उदय, और फैलना

उभयपुं ( कि. ) ऊपरसे बहुचलना  
 झुंड, झुंडाहोना, भीड़ ।  
 उभयपुं ( सं. ) कमरेकी उंचाई ।  
 उभयपुं ( कि. ) पलटाव, पूर्वदशा  
 में आजाना, उधड़ाहुवा, उबलाहुवा  
 उभुं ( वि. ) बहुतढाढ़, सड़ा.  
 सिरकेवल, सीधा ।  
 उभुंशुपुं ( कि. ) खड़ाहोना ।  
 उभुंशुपुं ( कि. ) ठहराना.  
 खड़ाखना, रोकना ।  
 उभेणपुं ( कि. ) बलनिकालन,  
 उवेड़ना, औटखोलाना ।  
 उभां उभां ( कि. वि. ) तत्क्षण.  
 उसीदम, तुरत, झड़ेझड़े ।  
 उभोभार्भ ( सं. ) जैच' रास्ता.  
 मुख्य सड़क । [ प्रसन्नता ।  
 उभंभ ( सं. ) आनन्द, खुशी, हर्ष  
 उभे ( सं. ) बड़ा, उम्दा, भेष्ठ  
 प्रसिद्ध ।  
 उभर ( सं. ) आयु, अवस्था, उम्र ।  
 उभराव ( सं. ) कुलीन मनुष्य,  
 शरीफ आदमी, नवाब ।  
 उभरावभरी ( सं. ) नवाबका  
 लड़की ।  
 उभरावभरी ( सं. ) नवाबका लड़का ।  
 उभयके ( सं. ) गौरव, अत्यंत-  
 प्रेम । [ शिवा, गौरी ।  
 उभा ( सं. ) पार्वती, गिजा,

उभे ( सं. ) आशा, इच्छा, लालसा  
 आकांक्षा । [ भिलाषी, प्राणी,  
 उभेवार ( सं. ) अभिलाषी, पदा-  
 उभेपुं ( सं. ) जोड़, संकलन,  
 बढ़ती ।  
 उभेपुं ( कि. ) बढ़ाना, जोड़ना ।  
 उभेरे ( सं. ) जोड़, वृद्धि, बढ़त ।  
 उर ( सं. ) बसस्थल, छाती, दिल,  
 हृदय, गोदी ।  
 उरभ ( सं. ) सौंप, सर्प, पक्षय  
 उरभपुं ( कि. ) लटकना, झूलना,  
 टोंगना । [ उर्फ ।  
 उई ( वि. ) या, अथवा उपनाम,  
 उभि ( सं. ) लहर, प्रकाश, तरंग,  
 खुशी, आनन्द ।  
 उरभपुं ( कि. ) फेकना, उड़ाना,  
 दावा रर करना ।  
 उभंभपुं ( कि. ) लौंचना, तोड़ना,  
 उल्लंघन करना, भंग करना ।  
 उभट ( सं. ) उत्साह, जोश, उमंग,  
 आनंद, प्रसन्नता, हर्ष खुशी ।  
 उभट भाव-पुलट ( वि. ) अभ्यव-  
 स्थित, स्थानच्युत, उलट पुलट ।  
 उभटभेरे ( कि. वि. ) आनन्द से  
 प्रसन्नतासे, उत्सुकतासे ।  
 उभटपुं ( कि. ) औषाना, औट  
 देना, उँकेल देना ।



उत्पत्ति ( सं. ) वसन, कपड़, कप ।  
 उत्पत्ति करणी ( कि. ) कैकरना, छादना,  
 बसन करना ।  
 उत्पत्ति ( कि. वि. ) विपरीत, विरुद्ध  
 विपक्ष, ( वि. ) औषा, नरुटा ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) एक प्रकारको काष्ठ  
 की चटखनी, ठंढी सौंस, उबकाई ।  
 उत्पत्ति अर्थ ( सं. ) अष्टुद्ध अर्थ ।  
 उत्पत्ति अर्थ करुणु ( कि. ) बात  
 फेरना, विपरीत अर्थ करना ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) विजली पतन,  
 बज्रपात, अचानक आपद् ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) अतिक्रमण, पार  
 पहुँचना, आशामंग, ऊपरसेजाना ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) आल्हाद, आनन्द,  
 खुशी, हर्ष,  
 उत्पत्ति ( वि. ) मूखं मूख, शठ ।  
 उत्पत्ति ( कि. ) झूठा कलंक लगाना,  
 अपयश देना । [ उँडलना ।  
 उत्पत्ति ( कि. ) खाली करना,  
 उत्पत्ति ( कि. ) उत्तेजिक करना,  
 भयभीत देना, उभाड़ना, उस्काना ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) गर्म, ताता  
 उत्पत्ति उत्पत्ति ( सं. ) गर्म घेरा,  
 उष्ण भूकटिबंध ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) यमी, ताप,  
 उत्पत्ति उत्पत्ति ( सं. ) यमीमी-  
 दर, तापमापक यंत्र ।

उत्पत्ति ( सं. ) गर्मजल, तापजल ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) कार्बोनेट सोडा, गप्पा,  
 सौंठा, ऊख । [ मखमूस, हट्ट ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) वीर, बहादुर,  
 उत्पत्ति ( सं. ) शक्ति, बल, पौरुष ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) शिक्षक, अध्यापक,  
 उपदेसक ।  
 उत्पत्ति ( वि. ) मझारी, चालाकी,  
 होशियारी, चातुरी, हुनरमन्दी ।  
 उत्पत्ति ( सं. ) तकिया [ करना ।  
 उत्पत्ति ( कि. ) फेंकना, निर्मल  
 उत्पत्ति नानु ( कि. ) फेंक देना ।  
 उत्पत्ति ( वि. ) नहीं, मत ।

## २४

२४=गुजराती वर्णमाला का सातवाँ  
 अक्षर ।  
 २४ ( सं. ) कर्जा, उधार,  
 २४ ( सं. ) कर्जेका तमस्तुक ।  
 २४ ( सं. ) वसन्त आदि छः प्रका-  
 रका काळ, झीकुसुम, रजोदर्शन ।  
 २४ ( सं. ) प्रथम रजोदर्शन ।  
 २४ ( सं. ) बहार आना,  
 मौसिमका आरंभ । [ मदन ।  
 २४ ( सं. ) वसंतऋतु, कामदेव,  
 २४ ( सं. ) ऋतुकीता,  
 ऋतुमती ।

ॐ३५५ ( सं. ) बैल, वृषभ, सौंड ।  
 ॐ३५६ ( सं. ) मुनि, योगी, तपस्वी ।  
 ॐ३५७ ( सं. ) विष्णु, [ पंचमी ।  
 ॐ३५८ ( सं. ) मादों सुदी  
 ॐ३५९ ( सं. ) मुनिभार्गा,  
 तपस्विनी ।

ॐ

ॐ=गुजराती वर्णमाला का आठवें  
 अक्षर । [ ओ । ए ।  
 ॐ ( सर्व० ) यह, वह ( विस्म० )  
 ॐ३ ( सर्व० ) वे, ये,  
 ॐ३ ( सं. ) एकाई, एक ।  
 ॐ३ॐ३ ( वि. ) प्रत्येक, नम्बरसे,  
 क्रमशः, एक एक करके ।  
 ॐ३ ॐ३३-ली ( वि. ) समवयस्क,  
 तुल्यवयस का, हमउमर, सम-  
 कालीन । [ एक बाजू ।  
 ॐ३ ॐ३३ ( कि. वि. ) एक तरफ,  
 ॐ३ ॐ३३ ( वि. ) बड़ा, आला,  
 सर्व श्रेष्ठ, प्रधान, महान, परम,  
 पूरा, बिलकुल ।  
 ॐ३३३ ( सं. ) एक मन, एकान्ती,  
 अनन्वमनाः । [ बड़ा ।  
 ॐ३ ॐ३३ ( वि. ) सर्व श्रेष्ठ, महान,  
 ॐ३३३ ( वि. ) एक मात्र, एकही,

एक सौ, उसी तरह, समान,  
 सदृश । [ मनुष्य ।  
 ॐ३ ॐ३३ ( सं. ) एक आदमी, एक  
 ॐ३ ॐ३३ ( कि. वि. ) एकत्र, एक  
 ढेरम ।  
 ॐ३ ॐ३३ ( वि. ) सच्चाति, एकसा,  
 एकरंग, एक समान, उसी तरह का ।  
 ॐ३३३ ( वि. ) एकठा, एकत्रित ।  
 ॐ३३३ ॐ३३३ ( कि. ) एकठा करना,  
 संग्रह करना, ढेर करना, मिलाना,  
 जोड़ना । [ मिलना ।  
 ॐ३३३ ॐ३३३ ( कि. ) सभा करना,  
 ॐ३३३ ॐ३३ ( सं. ) गणित का नियम  
 जो संख्या लिखना सिखाता है ।  
 ॐ३३३३ ( सं. ) एक का अंक,  
 हस्ताक्षर, चिन्ह, निशानी ।  
 ॐ३३३३ ॐ३३३३ ( कि. ) हस्ताक्षर  
 करना, चिन्ह करना ।  
 ॐ३ ॐ३३३३३ ( वि. ) ढलाव की  
 छत, ढलान् छत ।  
 ॐ३ त३३३ ( कि. वि. ) लगातार,  
 बराबर, एकमत से, सर्व सम्मति से ।  
 ॐ३ त३३३ ( कि. वि. ) एक ओर,  
 एक बाजू । [ बारी ।  
 ॐ३ त३३३३ ( सं. ) पक्षपाती, तरफ-  
 ॐ३ त३३३ ( वि. ) एक बराबर,  
 एक तारा, एक तार का वाद्ययंत्र,  
 तम्बूरा ।

ओ३ ता३ ( सं. ) ए३ का माप  
तोल, समताल, एक स्वर ।  
ओ३न ( वि. ) इकठ्ठा, मिला हुआ ।  
ओ३न ( सं. ) ऐक्य, एका, निज-  
भाव ।  
ओ३ ढं३ ( सं. ) अंतिम स्वांस ।  
ओ३भ ( क्रि. वि. ) फौरन, तुरंत ।  
ओ३ द३ ( सं. ) मेल, एकलव्य,  
मत्तक्य, एकमता । [ दृष्टि ।  
ओ३ द३ ( सं. ) इकट्ठा, इकट्क,  
ओ३ देशी ( वि. ) एक देश का,  
स्वदेशी, एक नगर का । [ बाला ।  
ओ३धारी ( वि. ) एक ओर धार  
ओ३ नि३ ( सं. ) दृढ विचार,  
दृढ संकल्प, पक्का इरादा ।  
ओ३नि३ ( सं. ) बफादारी, एकही  
विषय पर आसक्ति, ईमानदारी ।  
ओ३नु ओ३ ( वि. ) सिर्फ, केवल,  
वही, एक समान ।  
ओ३द३ ( सं. ) इकठ्ठा जाँद, कुल,  
सब, तमाम, इकठ्ठा । [ विचार ।  
ओ३मत ( वि. ) एवराय, एक  
ओ३भा३ ( वि. ) एक पथ पर  
चलने वाला ।  
ओ३ओ३ ( वि. ) मिला हुआ, परस्पर  
दुतर्फा, आपसका । [ बाला ।  
ओ३र३ ( वि. ) एकसा, न बदलने

ओ३र३ ( सं. ) बच, बचित्र बचन,  
धार्मिक बचन, इकरार ।  
ओ३र३ना३ ( सं. ) शपथ लेना,  
शपथ पत्र, हलफनामा । [ गर्जी ।  
ओ३र३ ( सं. ) स्वार्थी, खुद  
ओ३नु ( वि. ) अकेला, केवल,  
एक मात्र ।  
ओ३व३ ( सं. ) व्याकरण में एक  
वचन, एक का शीतक शब्द ।  
ओ३ व३ ( सं. ) इकरार, बफा-  
दार, भक्त, सच्चा, खरा ।  
ओ३व३ ( सं. ) मुका हुआ, दुबला  
मासहीन, अकेला ।  
ओ३व३ ( सं. ) एक जाति, जातीब,  
स्वजाति, सजाति ।  
ओ३वार ( क्रि. ) एक समय, एकदा,  
एक दिन, एक काल ।  
ओ३ वि३ ( सं. ) समान विचार,  
मिले हुए विचार, एकराय ।  
ओ३सं३ ( सं. ) मेल, एका, नाता,  
ऐक्य, संघ ।  
ओ३ स३ ( वि. ) एक मोताबिक,  
एकसा, एक समान ।  
ओ३ द३ ( वि. ) एक मनुष्यद्वारा  
प्रबन्ध किया हुआ ।

**अक्षर** ( वि. ) बारी बारी से, अक्षर बदल, पारी पारी आने वाला, अन्तरेका, एक दिन बाद आने वाला ज्वर । [ अचानक ।  
**अक्षर** ( क्रि. वि. ) अकस्मात्,  
**अक्षर** ( सं. ) मेलजोल, खिचड़ी  
**अक्षर-ता** ( वि. ) स्थिरचित्त,  
 एक चित्त, एकाग्र चित्तता ।  
**अक्षर** ( सं. ) एकाकार, एक  
 समान आचरण ।  
**अक्षर-द्वय** ( वि. ) कोईएक, एकाधा,  
 कोई, किसी, कुछ, थोड़ा ।  
**अक्षर** ( सं. ) ग्यारस, ग्यारहवां  
 तिथि सौर मास की ।  
**अक्षर** ( वि. ) एकयादो, कोईएक ।  
**अक्षर** ( सं. ) निराल, अलग, निर्जन  
 भिक्ष, खानगी कमरा ।  
**अक्षर** ( सं. ) इकोतरा ज्वर ।  
**अक्षर** ( सं. ) एकाकी रहना  
 अलग रहना ।  
**अक्षर** ( सं. ) विषम संख्या, पाठ-  
 शाला के विद्यार्थियों द्वारा किया  
 तुल्य पेगाव के लिये संकेत ।  
**अक्षर** ( सं. ) विश्वास, यकीन ।  
**अक्षर** ( सं. ) एक प्रकार का  
 सम विषम का खेल ।

**अक्षर-अक्षर-अक्षर** ( क्रि. वि. ) सब  
 समस्त, सब अलग अलग कर के  
 लिये गये, प्रत्येक, हरेक ।  
**अक्षर** ( सं. ) इका, बैलकी गाड़ी,  
 एका, ऐक्य ( वि. ) दुर्लभ्य, अनूठा ।  
**अक्षर** ( सं. ) एक प्रकार का  
 औपध, इन्कार, अस्वीकार ।  
**अक्षर** ( सं. ) प्रेम, प्रीति,  
 मुहब्बत ।  
**अक्षर** ( वि. ) यही । [ बलावा ।  
**अक्षर** ( क्रि. वि. ) यही, निमंत्रण,  
**अक्षर** प्रभाषे-सुनो ( क्रि. वि. )  
 ऐसा, इसी भाँति, इसी प्रकार ।  
**अक्षर** ( क्रि. वि. ) इसीथीक,  
 इतनेमें ।  
**अक्षर** भाटे ( अव्य. ) इमलिये,  
 अतएव, इसकारण, तस्मात्, अतः  
**अक्षर** ( वि. ) इतना अधिक, ऐसा  
 जियादः ।  
**अक्षर** ( क्रि. वि. ) अर्थात्, यानी,  
 दूसरे शब्दों में, अतएव ।  
**अक्षर** ने ( क्रि. वि. ) अर्थात् यानी,  
**अक्षर** लगी-सुधी ( क्रि. वि. )  
 अबतक, इस समय तक ।  
**अक्षर** ( सं. ) उच्छिष्ट, जूठन,  
**अक्षर** ( सं. ) जूठा बचाहुवा भोजन  
 में का शेष । [ अश्वतोदन ।  
**अक्षर** ( सं. ) एव, एहीमारना

अक्ष ( सं. ) भेड़ा, भेड़ी ।

अक्षुडिह-रे-भय ( कि. वि. ) इस तरफ, यहाँ, वहाँ ।

अक्षु ( सर्व. ) बह ।

अक्षी ( सं. ) सुस्त, काहिल मूर्ख मन्द निकम्मा, अधम, खल ।

अक्षायु-धु ( सं. ) विन्हा, निशान, पता ।

अक्ष ( सं. ) सूक्ष्मसमय, थोड़ा समय, ( वि. ) ठीक, उत्तम, उम्दा, श्रेष्ठ,

अक्षरे-प्रभाक्षे ( कि. वि. ) इस भाँति, इस तरह ऐसे । [ पता ।

अक्ष ( सं. ) अवगुण, दोष, कुर-

अक्ष ( सं. ) अकस्मात् भय,

अक्ष ( कि. वि. ) ऐसे, ऐसा, इस तरह ।

अक्ष कर्ता-क्षतां ( अव्य. ) ऐसा करनेपर, ताहम, फिर भी, तौ भी तथापि ।

अक्षुअक्ष ( कि. वि. ) जैसा का तैसा, ऐसा ।

अक्षु ( सं. ) निहाई ।

अक्षु ( सं. ) भरंडी का तेल, कास्टर ऑइल ।

अक्षु-डी ( सं. ) एरण्ड का पेड़, एरण्डी, एरण्ड ।

अक्षी ( सं. ) यमनायमन, आना-जाना, पानी का बर्तन ।

अक्षी ( सं. ) राजदूत, दलाल, हलालबी । [ हच्छा, द्वाहिश ।

अक्षेभास ( सं. ) प्रार्थना, अर्ज,

अक्षेक्ष ( वि. ) निंदा यात्री, गलौज, गुस्ताखी बेअदबी ( सं. ) उछल कूद, खेल कुलेल ।

अक्षिडु ( सं. ) अलग, जुदा, निराला, मुस्ताफि ।

अक्षु ( कि. वि. ) इतना बड़ा, इतना अधिक ।

अक्षान ( सं. ) बड़ाकमरा, सजित कमरा, दालान । [ इसी वक्ता ।

अक्षामां ( कि. वि. ) इसीबीच, तब,

अक्षु ( वि. ) ऐसा, यह,

अक्ष ( सं. ) आनन्द, भोग, विलास, ऐश इशरत । [ ऐश इशरत ।

अक्ष आशाम ( सं. ) आनन्दभोग,

अक्षेक्षणा ( सं. ) अगवान्नी, मेहमान के स्वागत के लिये घर से बाहर गमन । [ पागल ।

अक्षमक्ष ( वि. ) मूर्ख, बेवकूफ,

अक्षवाध ( सं. ) हाल, दशा, बखान, वर्णन ।

अक्षान ( सं. ) कृपा दया,

अक्ष ( सं. ) साँस, कीड़ा, [ अक्षर ।

अक्षि ( सं. ) सुसम्बर, भीकभार

ओ ( कि. वि. ) व्यर्थ, फुञ्जल,  
अकारण । [ विश्वास, मरोसा ।  
ओंठ ( सं. ) हठ, जिह्वा, सरकसी,

## औ

औ=गुजराती वर्णमाला का ९ वाँ  
अक्षर [ मौसिम ऋतु ।  
औआम—आम ( सं. ) समय,  
औक्य ( सं. ) एका, संघ, मेल ।  
औतिहासिक ( वि. ) इतिहास  
सम्बन्धी । [ बाहन  
औरावत ( सं. ) हाथी, इन्द्र का  
औंछिक ( वि. ) पृथ्वी का, यहाँ का ।

## ओ

ओ=गुजराती वर्णमाला का दसवाँ  
अक्षर ।  
ओ ( विस्म० ) ओह ! अरे ! अफ-  
सोस बुलावे का उत्तर ।  
ओछ्छां छरवां ( कि. ) निगलना  
हड़प करना, खाना ।  
ओछ ( सं. ) कय, बमन उलटी, छर्दि ।  
ओछपुं ( कि. ) बमन करना, कय  
करना, उलटी करना ।  
ओछारी ( सं. ) काय, बमन, उलटी  
ओछा-६ ( सं. ) दवा, औषधि,

ओछर ( सं. ) पद, उपनाम,  
ओछरुं ( कि. ) गोबरखाना,  
छीदखाना ।  
ओछां ( सं. ) पहली सुझौवल,  
ओछ ( सं. ) पशु का शेष चारा,  
पशु का बाकी दाना या भोजन ।  
ओछराणे ( सं. ) बड़ा चमचा,  
बड़ा करछुल ।  
ओछणुं ( कि. ) पिचलना, टिच-  
लना, गलना, दबीभूत होना ।  
ओछ ( सं. ) माफ़, चलता हुवा,  
चढाव, धार बहुतायत ।  
ओछी ( सं. ) घास का गंज, अन्न  
का खजाना, ऊनी ब्रस जाँ जैनि-  
योंके काम में आती है ।  
ओछी आणवे ( कि. ) थोकासे  
पकड़ा देना, घासके ढेर जलाना,  
गुप्त बात प्रकट करना ।  
ओछर-ओछरीयां ( सं. ) लेख,  
प्रमाण, दस्तावेज, सनद, रसीद,  
ओछरुं ( कि. ) बोलना, कहना,  
उच्चारण करना ।  
ओछीतुं ( वि. ) अवानक, अक-  
स्मान्, यकायक । [ दिन ।  
ओछव ( सं. ) उत्सव, हर्ष, छुट्टीका  
ओछंभ ( सं. ) छाती, हृदय, गोद,  
ओछां ( सं. ) ढक्कन

ओ३ ( वि. ) कम, थोड़ा इच्छा ।  
 ओ३ पात्र ( वि. ) नीचकुलका,  
 धर्मही, अहंकारी । [ न्यूनाधिक ।  
 ओ३ पुं ( कि. ) कम जियावः,  
 ओ३ ( सं. ) इधियार, औजार ।  
 ओ३ ( सं. ) जलाशय, कुंड, ताल,  
 सोते हुए मनुष्य के मुँहसे लार  
 टपकना ।  
 ओ३ ( सं. ) साया, छाया, परछाई,  
 भूत प्रेत का असर ।  
 ओ३ पुं ( कि. ) क्षेपना, गर्मिन्दा  
 होना, लज्जित होना ।  
 ओ३ ( सं. ) घूँघट, ओट, पर्दा,  
 जनानखाना, स्त्रीगृह ।  
 ओ३ ५३६ ( सं. ) पर्दा जं  
 क्रिया के लिये किया जाता है ।  
 ओ३ ( सं. ) भार, बोझा, वजन,  
 कुम्हार, वर्तनवाला ।  
 ओ३ ( सं. ) भाटा, उतार, घटती ।  
 ओ३ ३१२-३३२ ( सं. ) उकार ।  
 ओ३ ३३-३३ ( सं. ) बरामदा, बरंदा,  
 झोंडा, उसारा ।  
 ओ३ पुं ( कि. ) पौधाक को गोठ  
 लगाना, कपड़े को मगजी लगाना ।  
 ओ३ ( सं. ) पजामे का काबेल ।  
 ओ३ पुं ( वि. ) दूर निकल जाना,  
 कपट प्रबन्ध करना, अवस प्रेम  
 करना ।

ओ३ ३ पुं ( कि. ) सहारा लेना,  
 तकिया लगाना, आराम करना ।  
 ओ३ ( सं. ) क्षमा, नमूना, आदर्श,  
 छाया, प्रतिबिम्ब ।  
 ओ३ ( सं. ) छाया या छादन  
 ( बैलों के लिये । )  
 ओ३ पुं ( कि. ) पहिनना, ओढ़ना ।  
 ओ३ ३-३ ( सं. ) क्रियों के ओढ़ने  
 का उपपन्न, ओढ़ना, फरिया,  
 लपट ।  
 ओ३ पुं ( कि. ) देखो ओ३ पुं । [ शूल ।  
 ओ३ ( सं. ) बैलों को उड़ाने की  
 ओ३ पुं ( कि. ) उँढेलना, सौचा-  
 बनाना, डालना ।  
 ओ३-यो ( सं. ) मदद, सहारा,  
 सहायता, शरण, आश्रय ।  
 ओ३ ३ ३ ३ ३ ३ ( कि. ) घात  
 के स्थान में लेट रहना ।  
 ओ३ ( सं. ) उबले हुये चावल,  
 भात, भोजन, भक्ष्य ।  
 ओ३ ३ पुं ( कि. ) अमा करना,  
 छोड़ना, मुक्त करना ।  
 ओ३ ३ ( सं. ) गर्भ, आधान, हमल,  
 ओ३ ३ ( सं. ) नजात, मुक्ति, मोक्ष,  
 उदार, पापोंसे छुटकारा ।  
 ओ३ ३ ३ ३ ( कि. ) अधिकार पाना,  
 वारिस होना । [ सहारा लेना ।  
 ओ३ ३ ३ पुं ( कि. ) आश्रय लेना,

ओ३३३२ (सं.) ओहदेदार, अफसर,

ओ३३३ (सं.) पद, दर्जा, श्रेणी, मान ।

ओ३३४ (सं.) चमक, मुलम्मा ।

ओ३३५ (सं.) मुलम्मा करनेका  
औजार, चमक करनेवाला ।

ओ३३५ (फि.) चमक करना  
मुलम्मा करना । [ आश्चर्य ।

ओ३३५ (विस्म.) अफसोस । खेद,

ओ३३५ (फि. वि.) मा, स्वाहा, भी,

अलवा (सं.) नाल जो बालक  
की नाभिसे लगा होता है ( जन्म  
के समय ) पाँति, पंक्ति ।

ओ३३५ (सं.) कोठरी, छोटा कमरा ।

ओ३३५ (सं.) कोठा बड़ा कमरा ।

ओ३३५ (फि.) पति पत्नी को  
उनकी तरुणा वस्था में एक अलग  
कमरा देना ।

ओ३३५ (सं.) अन्न बोलने की बाँस  
की मलिका । ओरना ।

ओ३३५ (सं.) बनीका वक्त, अब  
वपन का समय, ओरना ।

ओ३३५ (सं.) ली, लुगाई, पत्नी ।

ओ३३५ (सं.) इच्छा, चाह, स्नाहिता,  
लालसा, अभिलाषा ।

ओ३३५ (वि.) सीधी, सीधीली मा,  
गितावही किंदु दूसरी माता ।

ओ३३५ (सं.) एक प्रकारका तरल  
भोजन जो घी आदे प्रभृतिसे  
बनता है । [ गलतेक भरना ।

ओ३३५ (फि.) बोना बखेरना फेंकना,

ओ३३५ (सं.) ओरसा, उरसा,  
पत्थर जो चन्दनादि घिसने के  
काम में आता है । [ पहिराना ।

ओ३३५ (फि.) उठाना, बख

ओ३३५ (सं.) देखो ओरतो ।

ओ३३५ (सं.) हलकी चेचक एक  
बीमारी, शीतलामाता का रोग ।

ओ३३५ (सं.) निकट, पाम, इधर ।

ओ३३५ (सं.) शरीरबन्धक, जमानत,  
पाँति, पंक्ति, जीभ छीलने का,  
जिह्वा मल दूर करने का ।

ओ३३५ (सं.) उपल, आले,

ओ३३५ (सं.) चमड़ा, चर्म, खाल ।

ओ३३५ (सं.) संतान, वंशज,

ओ३३५ (सं.) सादा, भोला,  
साफ, बड़ा, मला ।

ओ३३५ (वि.) उदार, दानशील

ओ३३५ (सं.) नदीकानीर, तट ।

ओ३३५ (फि.) शर्माजाना लज्जित  
होना, शर्मिन्दाहोना ।

ओ३३५ (वि.) एहसानमंद,  
शुक्रगुजार, कुतह, ऋणी ।

ओ३३५ (सं.) शबनम, ओस ।



ओ३५३ ( सं. ) औषधि, मेवाज, दवा । [ उस्ताव ।

ओ३५४ ( सं. ) शिक्षक, गुरु,

ओ३५५ ( कि. ) घटना, कमहोना पीछेहटना, पीठवेना ।

ओ३५६ ( सं. ) बरामदा, मकान के सामनेका भाग, उसारा ।

ओ३५७ ( कि. ) कमकरना, घटाना ।

ओ३५८ ( कि. ) चावल आदि उबालकर पानी या मादुनिकालना पमाना ।

ओ३५९ ( वि. ) आधीन, अवलाम्बित, गरीब, कंगाल, दरिद्र । [ कृतज्ञता ।

ओ३६० ( सं. ) एसानमन्दी,

ओ३६१-शीकुं ( सं. ) तकिया, सहारा । [ कतार, ।

ओ३६२ ( सं. ) पंक्ति, लकीर, सतर,

ओ३६३ ( सं. ) पहिचान, परिचय उपनाम, वंशनाम, चिन्ह ।

ओ३६४ ( कि. ) जानना, पहिचानना । [ हेल्मेक, परिचय ।

ओ३६५ ( सं. ) पहिचान,

ओ३६६ ( कि. ) परिचय कराना, मुलाकात कराना ।

ओ३६७ ( कि. ) जानना, पहिचानना ।

ओ३६८ ( वि. ) जाना, पहिचाना ।

ओ३६९ ( सं. ) आशिर्वाद, भोजन करतुकनेपर आशिर्वाद ।

ओ३७० ( कि. ) लांघना, कूदना, उलांघना ।

ओ३७१-ओ ( सं. ) शिकायत, ताना, तानेबाजी, दोष ।

ओ३७२ ( कि. ) बेजा काम में लाना, खा जाना, निकाल देना ।

ओ३७३ ( सं. ) हरे चने, होला ।

ओ३७४ ( सं. ) आशिर्वाद लेने का दस्तूर । [ कागज ।

ओ३७५ ( सं. ) हिसाब का कच्चा साला ।

ओ३७६ ( सं. ) छाया, पनाह, आद ।

ओ३

ओ३ = गुजराती भाषा की वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर ।

ओ३६७ ( सं. ) उदारता, फैयाजी, बड़प्पन । [ उदासी ।

ओ३६८ ( सं. ) रंज, गम, फिक्र,

ओ३६९ ( सं. ) आत्मज, विवाहित पत्नी से उत्पन्न पुत्र ।

औषध ( सं. ) दवाई, भेषज, रोग  
नाशक द्रव्य ।

औषधी ( सं. ) जड़ी, बूटी,

औस ( सं. )  $\frac{1}{16}$  पौंड, पाउण्ड  
का १६ वां भाग ।

क

क = गुजराती वर्णमाला का बारहवां  
अक्षर, व्यंजनों का प्रथम अक्षर,  
धुरापन आदि अर्थों का बोधक ।

कंभक-अंक ( वि. ) कोई वस्तु,  
किंचित्, कुछ, थोड़ा ।

कंभ नहिं ( क्रि. वि. ) कुछ नहीं,  
कुछ बिना नहीं । [ चित, विरुद्ध ।

कंभपुं कंभ ( सं. ) अयोग्य, अनु-

कंभपथु-मी ( क्रि. वि. ) कुछभी,  
किंचित् भी ।

कंसारी ( सं. ) झगुर ।

कंभ ( सर्व ) क्या ? कौन ?

कंभक ( वि. ) कई, बहुतसे, कुछ ।

कंभकत ( सं. ) शक्ति, बल, ताकत,  
पौरुष, सत्व ।

कंभपु ( सं. ) ऋतुविपर्यय, असा-  
मायिक ऋतु ।

कंभकपुं ( वि. ) उबलता हुआ गर्म,  
ध्वस्त, अधिक ।

कंभकपुं ( क्रि. ) धरना ( ठंडसे ),  
धरयराना, बहुत गर्म करना ।

कंभक कंभक ( क्रि. ) दुकड़े २ करना,

कंभकपुं ( क्रि. ) गर्म करना, उबा-  
लना, दौत पीसना, किचकिचाना ।

कंभक-कंभक ( वि. ) छोटा दुकड़ा,

कंभक ( क्रि. वि. ) गंभीरतासे,  
कठिनतासे, प्रबलतासे । [ भाग।

कंभक ( सं. ) दुकड़ा, खण्ड, कतल,

कंभक-कंभक ( वि. ) छोटा दुकड़ा ।

कंभक-कंभक ( सं. ) घृणा, असुवि,  
नकरत, । [ असमान ।

कंभक ( वि. ) खरदरा, नाहमवार,

कंभकपुं-पुं ( क्रि. ) बड़बड़ाना,  
गुरगुराना, कुड़कुड़ाना ।

कंभक ( सं. ) बड़े जोरकी गुराहट,  
उच्च स्वर से बड़बड़ाहट ।

कंभकपु ( सं. ) विलाप, शोक ।

कंभक ( सं. ) कोख, पेटकी बाजू ।

कंभक ( सं. ) ग्रहपथ, जहाजका  
रस्ता, कक्षा ।

कंभक ( सं. ) सारसपक्षी, बगुला,

कंभकपु ( सं. ) चूड़ी, कंगन ।

कंभक ( सं. ) कंकड़, साधारण पत्थर ।

कंभक ( सं. ) कलह, लड़ाई,

झगड़ा, रार, बसेड़ा ।

कंभकपुं ( वि. ) झगड़ालू, लड़ाकू,  
बसेड़ी ।

कंभक ( सं. ) रोली, कुमकुम, तिलक  
लपाने का एक पाठकर ।

४३३ (सं.) कागजकी पतल, पंग  
 ४३३ (सं.) एक प्रकारका चूर्ण  
 जो हिन्दुओं के ज्ञान समय काम  
 जाता है । [ पत्र ।  
 ४३३ (सं.) विवाहका निमंत्रण  
 ४३३ (सं.) औषधि विशेष ।  
 ४३३ (सं.) देखो ४३३ ।  
 ४३३ (सं.) रीन, गरीब अन्न  
 निर्धन, दरिद्र । [ दीन्ता ।  
 ४३३ (सं.) गरीबी, दरिद्रता  
 ४३३ (सं.) मीनार शिखर ।  
 ४३३ (सं.) तंग रास्ता, संकीर्ण  
 मार्ग ।  
 ४३३ (सं.) बकबक, बकलक  
 बडबडाहट, बकवाद ।  
 ४३३ (सं.) पूर्ववत् ।  
 ४३३ (कि.) जोर से बांधना,  
 दांत पीसना । [ से, दडता पूर्वक ।  
 ४३३ (कि. वि.) मजबूती  
 ४३३ (वि.) हठी, मुहँजोर,  
 गुस्ताख, हला करनेवाला शोर  
 मचानेवाला ।  
 ४३३ (सं.) कछुए की ढाल,  
 कछुए की पीठ । [ करना मसलना ।  
 ४३३ (कि.) कुचलना, पददलित  
 ४३३ (सं.) मनुष्यों के  
 एकत्र होने के कारण भीड़, भीड़,  
 सूक्ष्मसमय ।

४३३ (कि.) कुचलाना,  
 ४३३ (सं.) मूर्खतापूर्ण बात  
 बकबक ।  
 ४३३ (कि.) टुकड़े  
 टुकड़े हो जाना, कुचलकर मर जाना ।  
 ४३३ (सं.) भंगी,  
 मेहतर । [ दलित होना ।  
 ४३३ (कि.) कुचलाना, पद  
 ४३३ (सं.) कच्चे सामग्री  
 आचार, रायता ।  
 ४३३ (सं.) मिला, गन्दा, कूड़ा,  
 बे काम, अवशिष्ट, निकम्मा ।  
 ४३३ (कि.) झाड़ना,  
 उड़ारना, साफ करना ।  
 ४३३ (सं.) बकराहट असुविधा,  
 असम्मत ।  
 ४३३ (कि.) हिचकिचाता,  
 आगापीछा करना ।  
 ४३३ (सं.) देखो, ४३३ ।  
 ४३३ (वि.) मुहँजोरी, उलझा  
 हुआ पेचदार ।  
 ४३३ (सं.) कच्चा अचार,  
 छोटे छोटे टुकड़े । [ दफ्तर ।  
 ४३३ (सं.) अदालत, बड़ा कमरा  
 ४३३ (सं.) एक छोटा टुकड़ा,  
 कुचलन ।

अन्तर्यामि ( सं. ) अत्यंत कुचका  
हुवा, विचरवा, सय, नाश ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) बालक ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) अपकृता,  
बेपका, नातजुबेकारी, अनाड़ी पना ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) लंगोटा, कछनी  
कछुआ, कच्छप ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) लंगोटी, लंगोट ।  
अन्तर्यामि ( कि. ) राख सेढकजाना,  
कजलजाना ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) होनी, भावी, भाग्य,  
बदकिस्मती, दुर्भाग्य, मृत्यु, मौत ।  
अन्तर्यामि ( वि. ) बुरा, पापी, दुष्ट,  
नीच, नीच वंशका ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) देखो अन्तर्यामि  
अन्तर्यामि ( वि. ) सगडाळू, लडाकू ।  
अन्तर्यामि ( वि. ) बड़ जो लडाई  
या सघडा छिडाता है ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) सगडा, विवाद, नाराजी,  
मुकदमा, अभियोग ।  
अन्तर्यामि ( कि. ) लडाई  
मिटाना, सगडा साफ करना ।  
अन्तर्यामि ( कि. ) सगडा  
आपस में मिटा लेना । [ उठाना ।  
अन्तर्यामि ( कि. ) सगडा

अन्तर्यामि ( वि. ) असमान, अचरस,  
मिच बे मेठ ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) स्वर्ण, सोना, धन ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) छिनाल, बेर्या, रंडी,  
नाचनेवाली ।  
अन्तर्यामि-युधि ( वि. ) अंगिया, चोखी ।  
अन्तर्यामि ( वि. ) कृपण, सूम, ला-  
लची । [ १ मीलका १ माप ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) कमर, कटकट शब्द,  
अन्तर्यामि ( सं. ) सेना, फौज, कलाई,  
पाहुंची ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) लडाई, जगडा, तक-  
रार, एक प्रकार का शब्द ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) टुकड़ा, खण्ड ।  
अन्तर्यामि-टी ( सं. ) प्राणघातिनी,  
शत्रुता, हत्या, बध, कतल ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) तिरछी निगाह, दृष्टि  
इशारा, नज़र ।  
अन्तर्यामि ( वि. ) घृणा, अहवि,  
मुर्चा लया हुवा, पुराना ।  
अन्तर्यामि-री ( सं. ) संजर, छुरी ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) कमर, कोख ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) कमरबन्धा, पटका,  
करबनी, कटिसूत्र, तागडी ।  
अन्तर्यामि ( सं. ) पैरसे छती के  
नीचे तक का वहाना ।

४६ ( सं. ) कड़वा, तीक्ष्ण,  
 ४६रे। ( सं. ) कटघरा लोहेके  
 छड़ोंकीआइ, कटहरा।  
 ४६री-रे। ( सं. ) बेला, बेली प्याला।  
 ४६ ( वि. ) बदलालेनेवाला, प्रत्य-  
 पकारेछुकर, कड़वा, घातक,  
 फ़ानी।  
 ४६ ( सं. ) बोरा जोकि नारियल  
 अथवा ताड़की चटाईका बनता है।  
 ४६थ ( सं. ) कठिन, मुश्किल, सख्त,  
 पैना, तेज, कटा,  
 ४६थु ( क्रि. ) नोचना, तज्ञकरना,  
 ४६रे। ( सं. ) पसीना, परिश्रम।  
 ४६थु-थुथ ( वि. ) कठोरता,  
 मुश्किल, निष्ठुरता, ( सं. ) सख्ती,  
 कड़ाई, उग्रता, बदकिस्मती।  
 ४६थरे-आरे। ( सं. ) लकड़-  
 कटा, लकड़द्वारा, काष्ठविकेता।  
 ४६रे-रे। ( सं. ) देखो, ४६रे।  
 ४६थुं- ( सं. ) बोलत रखनेकी  
 तिपाई।  
 ४६रे ( सं. ) जलन्वररोग।  
 ४६रे ( वि. ) निर्दय, सख्तादिल,  
 कर्ता, सख्त। [ दाल।  
 ४६थ ( सं. ) दाल, हरप्रकारकी  
 ४६-४६ ( सं. ) कमर, जोरसे दूद-  
 नेकासाधन, काटना।

४६ ( वि. ) बेपैसा, दीन, गरीब,  
 कच्चा, ब्रत, उपवास, कोबी,  
 तेजतरार, जोरदार, गर्भमिजाबका  
 ४६६ ( सं. ) कड़कड़ाहटका शब्द,  
 ४६६थुं ( वि. ) कड़कताहुआ,  
 उबलताहुवा।  
 ४६६६६ ( सं. ) गड़गड़ाहटका भयं-  
 करशब्द, ( क्रि. वि. ) धड़ाकेसे।  
 ४६६६ने ( क्रि. वि. ) प्रबलतासे,  
 गंभीरतासे, सख्तीसे।  
 ४६६थु-थुं ( सं. ) काटखानेवाला,  
 दाँतोंसे काटखानेवाला। [ कंगाल।  
 ४६६थ गाली ( वि. ) भड़कीला,  
 ४६६-थी ( सं. ) टुकड़ा, सण्ड,  
 ४६६-थो ( सं. ) छोटाचम्मक।  
 ४६६ ( सं. ) लगातार विजलीकी  
 गर्जना, वृक्षके गिरनेकाशब्द।  
 ४६६ ( सं. ) परिणाम, फल, कमी,  
 घटा, घटाव।  
 ४६६ ( सं. ) भय, डर, रोह,  
 अनिकार, आदर, हज्जत, सन्मान  
 ४६६-थ ( सं. ) चारा, कड़वी।  
 ४६६स ( सं. ) कड़वापन।  
 ४६थुं ( सं. ) कड़वा, चरपरा,  
 अग्रिय, अयोम्य, गीतका वह भाग  
 जिसे सब मिलकरगावें, आकृतिक  
 पद्य अथवा गानका सांग, छंद।

कठिनी ( सं. ) कठ, तक्रलीक,  
कठिनाई, व्याकुलता ।

कठिनी ( वि. ) कठप्रद ।

कठिनी ( सं. ) कठोरप्रत, कठिन  
उपवास, जोरसे गढ़गड़ाहटका  
शब्द । [ पूर्वक, बेरोकटोकसे ।

कठिनी ( कि. वि. ) निर्विघ्नता-

कठिनी ( सं. ) एक औटीबड़ी कढ़ाई  
कढ़ाव ।

कठिनी ( सं. ) अंगरखा ।

कठिनी ( सं. ) कुम्हार, राज,

कठिनी ( सं. ) ओंकाडा, हुक, छल्ला,  
गीत की हुक ।

कठिनी ( सं. ) ईटोका काम ।

कठिनी ( वि. ) सही, दुरुस्त,  
यथार्थ, कमपूर्वक, कठिन, सख्त ।

कठिनी ( सं. ) स्वर्ण या अन्य धातुका  
बना कड़ा, बाजबन्द ।

कठिनी ( सं. ) कड़वा ।

कठिनी ( सं. ) बेहंगा, गेंवार, बद-  
सूरत, भद्दा, बेहूदा ।

कठिनी ( सं. ) पहाड़का निकलाहुवा  
हिस्सा, चट्टानकी निकलीहुई नोक,  
घाटी, दर्रा । दो पहाड़ों के बीचकी  
तंग जगह । [ का पात्र, कढ़ाव ।

कठिनी ( सं. ) उबालनेके लिये छोटे

कठिनी ( सं. ) कढ़ाही,

कठिनी ( सं. ) उष्णता, गर्मी,  
रंज, शोक ।

कठिनी ( सं. ) बेसन और खटाईसे  
बनायाहुवा साग । कढ़ी ।

कठिनी ( वि. ) उबलाहुवा, मोटा ।

कठिनी ( सं. ) भक्षक दाना, रेखा,  
बहुत छोटासा जरा, परिमाण ।

कठिनी ( सं. ) सानाहुवा आटा,  
गूंधाहुवा आटा ।

कठिनी ( सं. ) एकप्रकारका शब्द

कठिनी ( सं. ) घृणा, अरुचि  
ज्वरकी हुरारत ।

कठिनी ( सं. ) चोंचलोके टुकड़े, टूटे  
हुए चावल ।

कठिनी ( सं. ) एक प्रकारका बीज ।

कठिनी ( सं. ) अन्नका बाज़ार ।  
गठेकी मंडी ।

कठिनी ( सं. ) कृषक, किसान ।

कठिनी ( कि. ) कराहना दाबसारना  
आहेभरना, कोंखना ।

कठिनी ( सं. ) अन्नकाल,  
धिया, युद्ध । [ पतिगा ।

कठिनी ( सं. ) सफेद बिउंटा,

कठिनी ( सं. ) अन्न विक्रेता,  
गठेका व्यापारी ।

कठिनी ( सं. ) एक छोटा परिमाण  
मणि या हीरेका टुकड़ा ।

कथुं ( सं. ) परिमाण, जट, अणु-  
 कणिक ।  
 कथुं ( सं. ) देखो कथुं  
 कथुं-धुं ( सं. ) अन्न के  
 रूपमें मासिक वेतनदेना ।  
 कथुं ( सं. ) बालकसौप, छोटासर्प ।  
 कंठ ( सं. ) कोंटा, रोक, आड़,  
 घातक बीमारी, मरी, कंठक  
 कंठ ( सं. ) बंबूलवृक्ष ।  
 कंठाणुं ( कि. ) थकना, घबड़ाना,  
 बीमारहोना, नचाहना, घृणाकरना  
 कंठाणुं ( सं. ) अरुचि, घृणा,  
 सुरती, थकावट, श्रान्ति ।  
 कंठेवाणुं ( सं. ) पकानेके बर्तनपर  
 चूल्हेपर या अग्निपर रखने के  
 पूर्व राख या मिट्टी लगाना [ स्वर ।  
 कंठ ( सं. ) गला, हलक, आवाज,  
 कंठी ( सं. ) कंठमें पहिनेकी  
 किनारी मोटा, अंगरखके गलेपर  
 कसीदा [ बेंतों के बुने हुए ।  
 कंठि ( सं. ) संदुक बॉस या  
 कंठ ( सं. ) कलमका सिरा, लेख-  
 नीका अग्र भाग  
 कंठ ( सं. ) वध, संहार, हत्या ।  
 कंठ कंठुं ( कि. ) वध करना,  
 काटबालना, मारबालना

कंठनीशानि ( सं. ) ताशियोंकी  
 कतल की रात । मुसलमानों मुहर्रम  
 महिनेकी तारीख ९ की रात्रि ।  
 कंठेवाणुं ( सं. ) सर्व संहारी  
 नाश ।  
 कंठाणुं ( सं. ) किरमिच, विलायती  
 टाट [ उतारनेवाला  
 कंठारी ( सं. ) खरादी, खरादपर  
 कंथ ( सं. ) पति, स्वामी, मालिक,  
 खसम, कंत ।  
 कंथक-न ( सं. ) बयान, कहानी,  
 बखान, वर्णन [ बर्तन  
 कंथरेट ( सं. ) एक बड़ा गोल  
 कंथुं ( कि. ) कहाना, वर्णन  
 करना । [ घाटाहोना, हानि होना  
 कंथणुं-धुं ( कि. ) बर्बादहोना,  
 कंथा ( सं. ) कहानी, किस्सा,  
 अपूर्व कहाना, झूठा किस्सा ।  
 कंथानक ( सं. ) कहानीका एक  
 भाग, इत्तिफाकी, आकस्मिक ।  
 कंथित ( वि. ) कियाहुवा, वर्णन  
 कियाहुवा ।  
 कंथीर-ध ( सं. ) टीन, जस्ता  
 कंथेधुं ( सं. ) कठिन, मुश्किल  
 कंठ ( सं. ) माप, परिणाम, डील,  
 रूप, वजन, [ नाश  
 कंठ ( सं. ) धन, वध, हिंसा

३६५ ( सं. ) २  $\frac{1}{2}$  कानाफ, कदम,  
 ३६५ओसी ( सं. ) पैर चूमनेकी  
 रीति, राजा या पिताको प्रणाम  
 ३६५ ( सं. ) प्राचीन, पुराना,  
 पारसी जाति ।  
 ३६२ ( सं. ) मूल्य, कीमत, गुणा-  
 गुण, बोधविचार, दया, रहम ।  
 ३६२०४-री ( सं. ) कमलचर्च, कंजुस  
 कृपण, किरायातसार, सुम ।  
 ३६२६११ ( सं. ) चाहनेवाला, कीमत  
 जाननेवाला, सहानुभूत प्रदर्शक ।  
 ३६२५ ( सं. ) बदसूरत, बेडोल ।  
 ३६५५ ( सं. ) केलेका पेड़ ।  
 ३६५ ( कि. वि. ) कुछदिन, व,  
 कभी, किससमय ।  
 ३६५५-३६५५-३६५५ ( कि. वि. )  
 यदि, अगर, शायद, किंचित ।  
 ३६५२ ( सं. ) डील डौलमें ऊंचा  
 पूरा, अंतिम, लम्बा ।  
 ३६५-६५ ( कि. वि. ) हरकभी,  
 किसीभी समय ।  
 ३६५ नहीं ( कि. वि. ) कभी नहीं,  
 किसी भी समय नहीं ।  
 ३६५ ( सं. ) जड़ मूल, जड़ वृक्ष जो  
 खड़ा जा सकती है । [ खोह ।  
 ३६२५ ( सं. ) गुफा, गार, मौद  
 ३६५ ( सं. ) मदन, काम, अतनु,  
 मार ।

३६५ ( सं. ) काच का दीपक,  
 ३६५ ( सं. ) रोशनी घर, वह  
 घर जिसमें जहाजवालों को रातमें  
 रास्ता दिखानेके लिये ऊंचे पर  
 रोशनी होती है ।  
 ३६५ ( सं. ) खेलने की गेंद ।  
 ३६५ ( सं. ) हलवाई, मिठिया ।  
 ३६५ ( सं. ) कमर में बांधनेकी  
 सूत्र, चाँदी अथवा सोनेकी तागड़ी ।  
 ३६५ ( सं. ) पशुओंको खेत जोतन  
 आदि के लिये किराये पर लेना ।  
 ३६५ ( सं. ) धन, स्वर्ण, धतूरा ।  
 ३६५-३६५ ( सं. ) घबड़ाहट,  
 बसेड़ा, तंगी ।  
 ३६५ ( सं. ) अपराधों की खोज,  
 सम्बन्ध, चिन्ता ।  
 ३६५ ( सं. ) तम्बू की दीवार,  
 कपड़े की बनी हुई आड़, कनात ।  
 ३६५ ( वि. ) छोटा, निम्न, नाचा ।  
 ३६५ ( सं. ) आखीर की अंगुली,  
 पाँचवीं अंगुली ।  
 ३६५ ( सर्व. ) पास, निकट, समीप,  
 ३६५ ( सं. ) लपसी, मौल, कगूरा,  
 कगनी, सीका । [ वधू ।  
 ३६५ ( सं. ) कुआरी, बुलहिन, बहू,  
 ३६५ ( सं. ) कुवारापन, कुमा-  
 रित्व । दत्त वर्ष की अवस्था ।



कन्यादान ( सं. ) विवाह, अपनी लड़की को विवाह में उसके पतिके सिगुर्द कर देना । [ कोई ऐव ।  
 कन्यादेव-कथं ( सं. ) कुंवारी में  
 कन्याराशि ( सं. ) ६ ठी राशि,  
 कन्या राशि ।  
 क२ ( सं. ) आग लगानेवाली वस्तु,  
 शीघ्र दाह्य वस्तु, रुई, कपास, प्याला  
 क२ ( सं. ) थरौहट, कपकपी ( कि. )  
 थराना, काँपना ।  
 क२पी ( सं. ) सड़क के लिये धातु ।  
 क२ ( सं. ) छल, धोका ।  
 क२पी ( वि. ) धोकेबाज, छली,  
 कपटकारी, छद्मवेशी ।  
 क२६२ ( सं. ) एक लंबा और मोटा  
 टुकड़ा जो जलाने के लिये काटा हो ।  
 क२७७७ ( सं. ) कपड़े में छानना ।  
 क२७७७ ( सं. ) पौशाक, कपड़े  
 इत्यादि ।  
 क२७७ ( सं. ) पौशाक, वस्त्र,  
 क२७७ ( सं. ) वह खाई जो दूसरी  
 खाई को आरपार करती हो ।  
 क२७७ ( सं. ) लू, धूपकी लपट ।  
 क२७७ ( सं. ) नीच, कमीना,  
 निकम्मा ।  
 क२७७ ( सं. ) जोपड़ी, मस्तक,  
 ललाट, भास,

क२७७ ( सं. ) महादेव, शंकर, शिव ।  
 क२७७ ( सं. ) कच्ची रुई, रुई का  
 पेड़, कपास ।  
 क२७७ ( सं. ) रुई के बीज,  
 बिनीले, काकड़ा । [ नहीं ।  
 क२७७ ( सं. ) मस्तक, भाग्य, कुछ  
 क२७७ ( सं. ) मिहनत, काम,  
 मजदूरी, सुस्ती, यकावट, श्रांति ।  
 क२७ ( सं. ) बन्दर, वानर, शाखा-  
 मृग, मर्कट । [ तित्तिर पक्षी ।  
 क२७७ ( सं. ) जातक पक्षी,  
 क२७७ ( सं. ) कष्टप्रद, दुःखदायक  
 बुरा, दुष्ट ।  
 क२७७ ( सं. ) भूरी गाय, गज ।  
 क२७ ( सं. ) भीड़, झुंड, टोली, संगत  
 साथ । [ बेटा ।  
 क२७ ( सं. ) निन्दित पुत्र, बुरा  
 क२७ ( सं. ) कपूर, काफूर ।  
 क२७७ ( सं. ) ऊपर की सिस्ली ।  
 क२७७ ( सं. ) कबूतर, परेवा  
 पारावत ।  
 क२७७ ( सं. ) गाल, गण्ड स्थल ।  
 क२७७ क२७७ ( वि. ) घड़ंत, बनाई  
 हुई बात, रचना, गप्प ।  
 क२७७-७७७ ( सं. ) धिरन, गरारी,  
 बैला जो चट्टाई का बना हुआ हो ।

- ४६ ( सं. ) छेप्पा, सखार, धूक, बलगम, शरीरस्थ धातु विशेष ।
- ४६१ ( सं. ) मृतक पर डालनेका वस्त्र, अंतिम वस्त्र ।
- ४६१ी ( सं. ) फकीरोंके पहिनेका एक प्रकारकी पौशाक, फकीरोंका संग ।
- ४६६र ( सं. ) पलस्तर, अस्तर ।
- ४६६र ( सं. ) कफ सम्बन्धी पेट का रोग ।
- ४७२ ( सं. ) जप्ती, रोक, कोष्ठ बद्धता, कब्जित, अपचनत्व ।
- ४७७ ४२पुं ( कि. ) अधिकार करना, पकड़ना ।
- ४७७-४७७-अत ( सं. ) कोठ बद्धता, कुपच, बद्धज्जी । [ रक्षा ]
- ४७७ ( सं. ) अधिकार, हवालात, ४७२ ( सं. ) मृतक के गाढ़ने का गठ्ठा, समाधि, चित्त, कब्र ।
- ४७२स्तान ( सं. ) मुर्दे गाढ़ने की जगह ।
- ४७७-७७ ( सं. ) आलमारी, वस्त्र रखने की आलमारी ।
- ४७७७७नी ( सं. ) औषधि विशेष, कबाचनीनी ।
- ४७७७ ( सं. ) बिक्री की दस्तावेज, अधिकारपत्र । बैनामा ।
- ४७७७ ( सं. ) कुनबा, कुटुम्ब, घरगृहस्थी । [ जन्म ।
- ४७७-७७ ( कि. वि. ) कमी, बाज ४७७२ ( सं. ) कवि, भाट, एक कवि का नाम ।
- ४७७७-७७ ( सं. ) मूर्ख, बेहूदा, ऊधमी, बदमाश । [ पछी ।
- ४७७२ ( सं. ) फाखता, कबूतर ४७७२७७ ( सं. ) कबूतरों के रहने का स्थान ।
- ४७७ ( वि. ) स्वीकार, मञ्जूर ।
- ४७७७-७७ ( सं. ) लिखित या जवानी राजीनामा, वचन, वादा ।
- ४७७७ ( कि. ) वचन देना, प्रसन्न होना ।
- ४७७ ( सं. ) एक बड़ी लम्बी बिल्ली हुई पौशाक, चोगा, जामा ।
- ४७ ( वि. ) न्यून, थोड़ा, हीन, ४७७७७ ( वि. ) मूर्ख, न्यून बुद्धि बुद्धिहीन ( सं. ) कम समझी, नासमझी ।
- ४७ ४७७ ( कि. ) कॉपना, धराना सिझकना, सिकुड़ना ।
- ४७७७ ( सं. ) कंपन, अरुचि, घृणा, कपकपी, घर बराहट ।
- ४७ ४२पुं ( कि. ) षटाना, थोड़ा करना ।

क०भे० ( सं. ) अंगिया, चोली ।  
 क०भे० ( सं. ) कोड़ा, छड़ी, बेत,  
 क०भे० ( सं. ) नीचवर्ण, कमीना  
 नीच, तुच्छ, निकम्मा ।  
 क०भे० ( वि. ) निर्वल, कमलाकृत,  
 शक्तिहीन ।  
 क०भे० ( सं. ) कैंकड़ा, कछुवा, कच्छप ।  
 क०भे० ( सं. ) एक मिट्टि या लकड़  
 का जलपात्र जो साधुओं के पास  
 होता है, कमंडलु ।  
 क०भे० ( सं. ) कमी, घटी, न्यूनता,  
 क०भे० ( वि. ) अभागा, बद्-  
 किस्मत, भाग्यहीन ।  
 क०भे०-भे० ( वि. दुर्भाग्य, सं. )  
 अवारा, दुष्ट, लुच्चा, शुहदा ।  
 क०भे०-भे० ( सं. ) कमर, कटि,  
 कून्हा, पुठ्ठा ।  
 क०भे० ( सं. ) एक फलका नाम ।  
 क०भे०-भे० ( सं. ) कमर पेटी ।  
 कटिबंध । [ कमल के बीज ।  
 क०भे० क०डि ( सं. ) कमल गट्टे ।  
 क०भे०-भे० ( सं. ) देवी लक्ष्मी,  
 क०भे० ( सं. ) पांडुरोग, कंवलरोग  
 पीलाज्वर, डाह, ईर्ष्या ।  
 क०भे०-भे० ( सं. ) प्राप्ति, लाभ,  
 नफा, आमदनी, आय ।

क०भे० ( सं. ) कमलने वाला, आमद  
 करनेवाला । [ किंवाड ।  
 क०भे० ( सं. ) द्वार, दरवाजा, कपाट  
 क०भे० ( सं. ) घनुष, इन्द्र घनुष,  
 महाराव, वृत्तखण्ड, चप ।  
 क०भे०-भे० ( वि. ) महारावदार, आभ  
 गोल, झुका हुआ, टेढ़ा ।  
 क०भे० ( वि. ) सुन्दर, खूबसूरत  
 उत्तम श्रेष्ठ, ठीक, उचित ।  
 क०भे० ( कि. ) प्राप्त करना, पैदा  
 करना, कमाना ।  
 क०भे० ( वि. ) न्यूनता, घटी ।  
 क०भे०-भे० ( वि. ) जोड़ा या बहुत ।  
 क०भे० ( सं. ) नीच, निम्न, शूद्र,  
 पतित ।  
 क०भे० ( सं. ) बे माँत, असामयिक  
 मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु ।  
 क०भे० ( सं. ) एक प्रकारके चावल,  
 -आपरी ( कि. ) लाठामारवा  
 पीटना ।  
 क०भे० ( कि. ) हिलना ।  
 क०भे० ( सं. ) समाज, टोली ।  
 क०भे० ( सं. ) दिशानिरूपण यंत्र,  
 कुतुबनुसा । [ ताहुवा । ]  
 क०भे० ( वि. ) कोपताहुवा, धरौ-  
 क०भे० ( सं. ) डेरा, पक्का, फौज ।

४०५६ ( सं. ) कामरि, लोई, ऊनी  
 चादर । [ देनेका दिन ।  
 ४०५७ ( सं. ) न्यायकादिन, दंड-  
 ४०५८ ( सं. ) अनुमान, अटकल ।  
 कच्चीकृत ।  
 ४०५९ ( सर्व. ) कौन, क्या ।  
 ४०६० ( सं. ) हाथ, टेक्स, महसूल,  
 हाथ, ऊँचा, मालगुजारी ।  
 ४०६१ ( सं. ) अर्धी, मुदों के छे-  
 जानेकी गाड़ी, कांठेकी ठाटिया ।  
 ४०६२ ( कि. वि. ) साफ साफ,  
 स्पष्ट स्पष्ट, [ तीखा ।  
 ४०६३ ( वि. ) खुरदरा, तेज,  
 ४०६४ ( सं. ) किरायत, वारा  
 मितव्ययता ।  
 ४०६५ ( सं. ) मांसहोन, केवल  
 आस्थिपंजरमात्र, जिसकी हड्डियां  
 दिखती हों ।  
 ४०६६ ( सं. ) कृषक, किसान ।  
 ४०६७ ( कि. ) बिनती करना,  
 मॉगना, विधियाना ।  
 ४०६८ ( कि. वि. ) चाहमें,  
 अनुरागसे, रंजसे,  
 ४०६९ ( सं. ) टुकड़ा, खंड, हिस्सा ।  
 ४०७० ( सं. ) सालर, झुरी, चुनन  
 पत, तह ।  
 ४०७१ ( सं. ) केकड़ा ।

४२५ ( सं. ) ऋण, जवाबदेही,  
 -दार ऋणी  
 ४२५२ ( सं. ) सरना, फव्वारा  
 ४२५३ ( कि. ) काटना, कुतरना,  
 नोचना ।  
 ४२५४ ( सं. ) क्रोधपूर्ण  
 दृष्टि, रूखीनिगाह, कठोर दृष्टि ।  
 ४२५५ ( वि. ) कठोर, कड़ा, रूखा,  
 कर्कश, निर्दय ( सं. ) पांवके  
 अंगूठेमें पहिनेका छल्ला ।  
 ४२५६ ( सं. ) युद्धका एक हथियार ।  
 कान, सूर्यरश्मि, कारण, सञ्च,  
 ४२५७ ( सं. ) कर्म, व्यवसाय, कार्य  
 गुण, योग्य, उजाड़, मरुस्थल ।  
 ४२५८ ( सं. ) हाथकी हथेली ।  
 ४२५९ ( कि. वि. ) बनिस्वत, अपेक्षा,  
 करतेहुए, तोभी । [ कठनाल ।  
 ४२६० ( सं. ) ब्राह्म, मजोरा,  
 ४२६१ ( सं. ) बुराकाम, यर्नाइ,  
 वाचरण । [ एजेण्ट, दलाल ।  
 ४२६२ ( वि. ) कर्ता, करनेवाला,  
 ४२६३ ( सं. ) ठाठ, धूमधाम, शान-  
 शोक्त, भय, डर । [ बातचीत ।  
 ४२६४ ( सं. ) अंगुलियोंसे  
 ४२६५ ( वि. ) लालची, मक्खी-  
 चूस, रूपण, कमीना ।  
 ४२६६ ( सं. ) काम, कर्म, कार्य,  
 माम्य, बुराकाम, कृमि, कीड़ा ।

४२४३६१५ ( सं. ) भाग्यका-  
वृत्तान्त ।

४२४६ ( सं. ) करौदे वृत्तकाफल ।

४२४६२३ ( कि. वि. ) धर्मोपनी ।

४२४३ ( कि. ) कुम्हलाना,  
मुरसाना ।

४२४७१ ( सं. ) अंगुलियों पर माला  
का काम । स्मरणी, माला ।

४२४ ( सं. ) भाग्यवान, खुश-  
। हस्तत । [ पञ्च रोग ।

४२४३५१ ( सं. ) एक प्रकारका

४२५१ ( सं. ) आरी, लकड़ी चीर-  
नेका औज़ार ।

४२५१ ( सं. ) छोटीआरी, गाड़ी ।

४२५ ( कि. ) करना, बनाना,  
नेयार करना, पूरा करना, रचना ।

४२५१ ( सं. ) कृषक, किसान ।

४२ ( सं. ) ओला, चूड़ियाँ,  
पहुँची ।

४२४५१-४५ ( कि. ) आतोंका  
पेटना, अंतर्द्वियोंका यरोदना ।

४२४ ( सं. ) आराकश, लकड़ी  
चीरनेवाला । [ करार

४२४ ( सं. ) ढाल, ढालू, भूमि

४२४१ ( सं. ) जहाजका तहवी-  
लदार ।

४२४४४ ( सं. ) यज्ञ, उपास, चतु-  
रता, चालाकी, हुनर, अङ्गमंड़ी ।

४२४२ ( सं. ) वचन, वादा, कौल,  
करार, अवक, दर्द'में आराम ।

४२४३४६ ( सं. ) वचन वादा,  
राजीनामा ।

४२४२४५ ( सं. ) वस्तावेज, तमस्सुक,  
लिखित वचन पत्र ।

४२४७ ( वि. ) मयंकर, टेढा, भयानक ।

४२४५१ ( सं. ) पसरहृष्ट, किराना  
आंशधिया, बीजे ।

४२४५१ ( सं. ) चिरायता ।

४२४ ( सं. ) हाथी, पथ्य, परहेज ।

४२४१ ( कि. वि. ) द्वारा, से, अनएव,

४२४१ ( वि. ) उदारतायुक्त, दयालु,  
मिहरबान, दाना ।

४२४१ ( कि. ) गोद लेना (पुत्र)

४२४५१ ( सं. ) दवा, कृपा, अनुग्रह,  
अनुकम्पा ।

४२४५१२ ( सं. ) दयानिधि, कृपा-  
निधान ईश्वर ।

४२४५१४ ( वि. ) दयालु, मिहरबान ।

४२४५१२३ ( सं. ) नवरसों में से एक  
रस, शोकजनक वृत्तान्त, करुणा  
पूर्ण गाथा ।

४२४ ( वि. ) बद्धसूरत, महा कुरूप,  
 ४२५ ( सं. ) स्वेत रेती, सफेदबाद।  
 ४२६ ( सं. ) बच्चा जनने के बाद  
 शीघ्रही निकाला हुआ गो दुग्ध।  
 ४२७-२८ ( सं. ) कनेर वृक्ष,  
 कनेर का पुष्प। [ बीवार।  
 ४२९ ( सं. ) मकान के बगल की  
 ४३० ( सं. ) व्यवहार, रीति, चाल।  
 ४३१ ( सं. ) रीढ़, कौंटा, ( वि. )  
 दश लाख, कोटि। [ अगणित।  
 ४३२ ( वि. ) अनेक कोटि,  
 ४३३ ( सं. ) मकड़ी, जाला,  
 ४३४ ( सं. ) कैंड़ा, कर्क राशि।  
 ४३५ ( वि. ) कठोर, कड़ा।  
 ४३६ ( सं. ) झगड़ा, ली, मुँह  
 जोर औरत, लड़ाकी ली।  
 ४३७ ( सं. ) कान, श्रोत्रेन्द्रिय, कर्ण।  
 ४३८ ( सं. ) वह वाक्य  
 जिसमें उसके विषय से क्रिया  
 मिलती हो।  
 ४३९ ( वि. ) करणीय, करने योग्य  
 ( सं. ) काम, कार्य।  
 ४४० ( सं. ) करनेवाला, बनानेवाला,  
 पुस्तक का लेखक, प्रबंधक।  
 ४४१ ( सं. ) कपूर, कपूर का  
 तेल। [ नाश करनेवाला।  
 ४४२ ( सं. ) रचनेवाला और

४४३ ( सं. ) कार्य, काम, आचरण,  
 वरतावा, भाग्य, किस्मत, तकदीर,  
 ४४४ ( सं. ) वेदोंका वह भाग  
 जिसमें शास्त्रोक्त कर्म वर्णित हैं।  
 ४४५ ( वि. ) ढीला, उदात्त,  
 नर्म, आचार सम्बन्धी कर्तव्य  
 कर्मों को भूला हुआ।  
 ४४६ ( सं. ) प्रारब्ध शक्ति,  
 भाग्य, किस्मत।  
 ४४७ ( सं. ) हाथ, पाँव, मुख,  
 गुदा, और लिंग ये ५ कर्मेन्द्रिय।  
 ४४८ ( सं. ) मुकुट, चोटी, फूल  
 का गुच्छा, गुलदस्ता।  
 ४४९ ( सं. ) अपवाद, अपयज्ञ,  
 दोष, दुष्कीर्ति, दाग  
 ४५० ( सं. ) चौथा युग, वर्त-  
 मान युग, [ कलियुग।  
 ४५१ ( सं. ) दलदल, पैमाव,  
 ४५२ ( सं. ) उपाय, मनोमार्ग  
 लयाल, विचार, खयाली पुलाव।  
 ४५३ ( क्रि. ) विचार करना,  
 मन के लङ्घन बनाना  
 ४५४ ( सं. ) दुःख, शोक, कष्ट,  
 रुदन, कष्टकंदन, महा प्रलय।  
 ४५५ ( सं. ) सिजाव,  
 ४५६ ( सं. ) हुल्लड़, कोला-  
 हल, धूमधाम, शोरगुन

अक्षर (सं.) लेखनी, प्रकरण हस्त-  
लिपि, भाषा, देश भाषा, चित्रकार  
की मुद्रा, खंड, भाग, पौधोंपर कलम  
लगाना, वाक्य खंड, मजमून।

अक्षर करी (कि.) वृक्षों को काटना,  
कलम बनाना।

अक्षर क्षपरी (कि.) बरखास्त कर  
देना, पदच्युत, कर देना, निकाल  
देना।

अक्षरमहान (सं.) दावात कलम  
रखने का पेटी, दावात।

अक्षरमंडी (सं.) रोक, कलमबंदी।

अक्षरी (सं.) कुरानकी आज्ञा।

अक्षरशु (सं.) शुभ, आशिर्वाद।

अक्षरी-देवे (सं.) विवाह के  
समय का कलेवा, कुंवर कलेवा।

अक्षर (म.) झगड़ा, लड़ाई,  
विरोध, द्वन्द्व।

अक्षर (सं.) एक घंटा, ६०  
मिनट, बड़ी घड़ी,

अक्षरपुं (सं.) रेशमी धागा जिस  
पर सोना चौदी का काम हो,  
कलाबत्त।

अक्षर (सं.) सुनार, स्वर्णकार।

अक्षरपी (सं.) मोर, मयूर, कोयल,  
कोकिल। [खन।

अक्षरपिट (सं.) हुल्लड़, शोक, रंज,

अक्षर (सं.) शराब बेचनेवाला,  
कलार, कलवार।

अक्षरभातुं (सं.) शराब की  
दुकान, मद्यगृह, शराबखाना।

अक्षर (सं.) संसारका चौथापन,  
चौथा युग, वर्तमान युग।

अक्षरभुं-अक्षरभुं (सं.) हिन-  
वाना, कलीदा, तरबूज।

अक्षरभुं (सं.) दिल, हृदय।

अक्षर-भुं (सं.) कदाही, तम्बूर  
रोटी पकाने का मिट्टीका गोल पात्र

अक्षरभर (सं.) लोभ, निर्जीव देह,  
देह।

अक्षर-अक्षर (सं.) टीन

अक्षर करनी (कि.) कलई करना,  
मुळम्स करना भर (सं.) दिन  
साज। [बिनोद, तेज आभाज।

अक्षर-अक्षर (सं.) खेलकूद,

अक्षरी (सं.) विष्णु का दसवाँ  
अवतार, भावी अवतार।

अक्षर (सं.) ब्रह्मा का एक रात एक  
दिन, हमारे ४,३२,००,००,०००  
वर्ष,

अक्षरभुं-अक्षरभुं-अक्षरभुं (सं.)  
देवदत्त, अमलवित फल देने  
वाला वृक्ष।

कश्चित ( वि. ) बनाया, कृत्रिम,  
रचित, मिथ्या प्रकाशित ।

कश्चा ( सं. ) गलमुच्छे ।

कश्ची-क्षु ( सं. ) चाँदी या सोने  
का बाजूबन्द ।

कश्चे ( सं. ) शब्द, शोरगुल, धाम  
के अंकुर ।

कश्च ( सं. ) बिच्छू का पेड़, बम्ब,  
शिलम, बाजू, सजाह, बखतर ।

कश्च ( सं. ) काव्य रचना, कविता,

कश्चायत ( सं. ) कवायद, सैनिक  
युद्ध शिक्षा, कपट यत्न, कपट  
उपाय ।

कवि ( सं. ) काव्यकार, भाट ।

कविता ( सं. ) पद्य, श्लोक, छन्द ।

कवेण ( वि. ) असमय, ऋतु-  
विरुद्ध ।

कश्चीदे ( सं. ) दस्तकारी, मृंगार  
सजावट, बेलबूटे काढनेका कार्य ।

कश्चु ( वि. ) कोई, जोकुछ, जितना ।

कश्च ( सं. ) शारीरिक छेद, दुःख  
दर्द ।

कश्चापु ( कि. ) प्रसवकी पीरमें  
होना, बालक उत्पन्न होते समयकी  
प्रसव पीड़ा होना । [ दुखित

कश्चित-ष्टि ( वि. ) प्रसव कष्ट,

कसे ( सं. ) कसौटीपर सोने या  
चाँदी की परख, सत, गूदा, तत्व,  
शक्ति, गांठ, बन्धन ।

कसकसतु ( कि. वि. ) तंग,

कसकसावपु ( कि. ) कसकर बांधना ।

कसटिथे ( सं. ) गिरो रखनेवाला  
बंधक ग्राहक, व्याजपर रुपया  
देनेवाला ।

कसद ( सं. ) परिश्रम, उद्योग,  
इच्छा, लालसा ।

कसदर ( वि. ) पुष्ट, मजबूत,  
बलवान, रसीला, सरस ।

कसथ ( सं. ) सोने या चाँदी के  
तार जो कसीदे के काममें आते  
हैं । हुजर, होशियारी, शिल्पविद्या

कसथक्षु-भातक्षु ( सं. ) बेइया,  
कुकर्म करनेवाली, रंछी, छिनाल ।

कसभाती ( सं. ) कस्बेका निवासी,

कसथी ( सं. ) हुजरमंद, गुणी,  
चतुर, होशियार, सोने या  
चाँदीके तारका बनाहुवा ।

कसथे ( सं. ) गौब, कस्बा,

कसथ ( सं. ) शपथ, सौगन्द ।

कसथ आपवा-भवाडवा ( कि. )  
शपथ दिलाना, हलफ दिलाना ।

कसभभावा ( कि. ) सौगन्दखाना  
शपथ केना ।



असंभो-सुंभो ( सं. ) कसूमका रंग, एक प्रकारका लाल वस्त्र; अफीमको पानीमें पतला करके बनाहुवा पेय द्रव्य ।  
 असंभ ( सं. ) कमी, घटी, न्यूनता, कमआदम, मितव्ययता, रोग के कुछकुछ चिन्ह अवशिष्ट जो लग-भग आराम होचुकाहो, अश्वि, नाराजी ।  
 असंभत ( सं. ) अभ्यास, मुहाबिरा, व्यायाम ।  
 असंभतशाला ( सं. ) व्यायामशाला ।  
 असंभितुं ( वि. ) किरायती, कम-खर्च मितव्ययी ।  
 असंभली ( सं. ) छोटा लोटा या कटोरा ।  
 असंभुं ( कि. ) कसकर बांधना, प्रयत्न करना, शोधना, जाँचना, सोने को परखना ।  
 असंभ ( सं. ) घातक, अधिक, निर्दय, मांस बेचनेवाला । [ मोहला ।  
 असंभवाडे ( सं. ) कसाइजों का  
 असंभरी ( सं. ) शीशुर ।  
 असंभली, केसंभली ( वि. ) लाल केशर, द्वारा रंगा हुवा । [ गलती ।  
 असंभर ( सं. ) अपराध, दोष, पाप,  
 असंभवाडे ( सं. ) गर्भपात, गर्भलाप ।

असंभली ( सं. ) घात परीसक पत्थर, सोबक, पहचान जांच । [ कचरा ।  
 असंभर ( सं. ) कूड़ा, कर्कट, मैला  
 असंभरी भृग—रिभृग ( सं. ) वह हरिण जिसमें कस्तूरी होती है ।  
 असंभरी ( सं. ) भृगमद, औषधि विशेष, मुस्क । [ निकालना ।  
 असंभपुं ( कि. ) निकाल देना, खींच  
 असंभली नंभपुं ( कि. ) निकाल देना काट देना, मिटा देना ।  
 असंभली भेक्षपुं ( कि. ) बरखास्त करना, पदच्युत करना, निकाल बाहिर करना । [ वर्णन ।  
 असंभली ( सं. ) किस्ता, बयान,  
 असंभर ( सं. ) पालखी उठानेवाला ।  
 असंभपुं ( कि. ) कहना, कथन करना, ( सं. ) शब्द, वर्णन व्याख्या ।  
 असंभ ( सं. ) उपाय, यत्न, तदबीर, हिकमत, उपाय, ताला, चीरफाड़ का दर्द, अभ्यास, मुहाबिरा, उपाय, सहायता, सुख चैन ।  
 असंभर ( सं. ) जोड़ों में दर्द, चीर-फाड़ का अधिक दर्द ।  
 असंभपुं ( कि. ) समझना, सोचना, विचारना ।  
 असंभ-सं ( सं. ) गुम्बज, गृह, मीनार, मंदिर का मुकुट, घट, चक्र ।

अक्षरिणे ( सं. ) छोटा जलपात्र,  
जगरी, लोटा, कटोरा,

अक्षरी ( सं. ) १६ मन का वजन ।

अक्षी ( सं. ) सोलहवां अंश, शिल्प  
आदि विद्या, हुजर, चतुरता, बाला  
की, मुख की कांति, मोर की उठाई  
हुई पूँछ ।

अक्षी ( सं. ) कला और  
विज्ञान, कल्प कौशल्य ।

अक्षरि ( सं. ) चन्द्रमा, चाँद, मोर

अक्षरिन्ती ( सं. ) नाचनेवाली,  
रंजी, बेइया ।

अक्षी ( सं. ) कलिका, चने के आटे  
का बना हुआ सूत्र सामान साथ  
पदार्थ, मिठाई की किस्म, अंगर-  
खेमें लगनेवाली तिकोनी कली ।

अक्षी भुने। ( सं. ) बेवुसा चूना,  
आहक ।

अक्षी ( सं. ) प्रहपथ, प्रहमार्ग ।

अक्षी ( कि. वि. ) क्यों, काहेको,  
किस लिये ।

अक्षी ( कि. वि. ) कुछ थोड़ा

अक्षरी ( सं. ) छोटे छोटे पत्थर,  
रेत, बालू, कंकड़ी पथरी ।

अक्षरी ( सं. ) पत्थर, कंकर । शक  
शुभा, सन्देह ।

अक्षरी ( सं. ) गिरगट ।

अक्षी ( कि. वि. ) क्यों कि, कारण  
कि, इसवास्ते, से, जैसा,

अक्षी ( वि. ) स्वादिष्ट, कोमल,  
निर्बल, कमजोर, अशक्त ।

अक्षी ( कि. ) बहकाना, फुसलाना,  
धोका देना, छल करना, जुड़ना  
संभोग करना, मैथुन करना

अक्षी ( सं. ) छाती ठाँकने का  
कपड़ा, अंगिया । [ लेई, सरेस ।

अक्षी ( सं. ) कंजी, मौँड, लपसी,  
अक्षी ( सं. ) तोते के गले में नये  
रंग की कंठी, डरकी, नारी ।

अक्षी ( सं. ) कंटक शूल, तराजू,  
बड़ी के काटे, पैनी नौक, रोक,  
आड़ रीढ़, पीठकी हड्डी, मछली  
पकड़ने का काटा, बालों का खड़ा  
होना, नाक पहिनने का भूषण,  
जुकाली पैनी मछली की हड्डी,  
गुणाकार को सही या गलत जानने  
की तरकीब, शक ।

अक्षी ( सं. ) किनारा, तीर कुएकी  
परिधि, सीमा, सीरा ।

अक्षी ( सं. ) कलाई, पहुँचा ।

अक्षी ( सं. ) छेद, छिद्र, द्वार,  
काणा, एक औंसका ।

अक्षी ( कि. ) कातना धागाखी-  
चना, घटाना, कम करना ।

४६० ( सं. ) प्याज, काँदा, लाम,  
 फायदा । [ किस्त ।  
 ४६१-धुं ( सं. ) संभव, कंषा ( सं. )  
 ४६२ ( सं. ) कौक, दुकड़ा, केम्प,  
 काली जमीन खाद के योग्य ।  
 ४६३ ( कि. ) काटना, घरीना,  
 धूजना । [ कामरि ।  
 ४६४-धौ ( सं. ) कम्बल, लोई  
 ४६५ ( सं. ) एक प्रकार का चोरी  
 का भूषण [ लिये ।  
 ४६६-४ ( कि. नि. ) क्यों, किस  
 ४६७ ( सं. ) आबपाशी के लिये  
 पतले टुई नाकी ।  
 ४६८-४ ( सं. ) कंषा, कंषी  
 ४६९-सिया ( सं. ) बड़ी झोला,  
 नदी करताड़ । [ धातु ।  
 ४७० ( सं. ) कांश्च धातु, काँसी  
 ४७१-धुं ( कि. ) घबराजाना, थक  
 जाना, ऊँदराजाना, उकताजाना ।  
 ४७२-४३- ( सं. ) कौंय कौंय शब्द,  
 ४७४, सं. ) कौवा, कागा, कपटी  
 ४७५ ( सं. ) मोटा पत्तीता, बड़ी  
 मशाल, मानसिक, दिली, एक  
 मोटी बत्ती, लटकन, लहर ।  
 ४७६-४७ ( सं. ) मूल का चिन्ह,  
 निशान, यह बतलानेवाला चिन्ह  
 कि इस स्थान पर यह होना चाहिये ।

४७८ ( सं. ) करवत के सौते, खरे  
 के सौते । [ बिरोस ।  
 ४७९-४८ ( सं. ) प्रार्थना, विन्ती,  
 ४८० ( सं. ) रान, छोट, गुड़ ।  
 ४८१-४८ ( सं. ) सगा चाचा, दाप  
 का सहोदर बंधु, बाप का छोटा  
 भाई, कौंय कौंय । [ कोकिल ।  
 ४८२-४८ ( सं. ) काकतुवा, कोयल,  
 ४८३-४८ ( वि. ) निकम्मा, व्यर्थ,  
 वर्णशंकर, नीच ।  
 ४८४-४८ ( सं. ) छोटी बेचक ।  
 ४८५ ( सं. ) काकी, चाचा की पत्नी ।  
 ४८६ ( सं. ) कौब, बगल,  
 ४८७-४८ ( सं. ) एक  
 प्रकार की कौब की बीमारी ।  
 ४८८ ( सं. ) कौवा, बायस, ( वि. )  
 नटखट, धूर्त ।  
 ४८९ ( सं. ) कागज कलम आदि  
 लिखनेकी सामग्री बेचनेवाला ।  
 कागज का कारीगर या दस्तकार,  
 पतली कोमल वृक्ष छाल या चमड़ा  
 ४९०-४९ ( सं. ) काकवालि, कौ-  
 कौंके निमित्तका पदार्थ ।  
 ४९१-४९ ( सं. ) अविष्यत् कथन,  
 अविष्यदात्म्य, आगम ।  
 ४९२ ( सं. ) कागज, पत्र, किछी

- ६६५ (सं.) पत्रम्वनहार,  
 पत्रालाप ।  
 ६६६ (सं.) विलाप, सदन,  
 आपद, दुर्गति ।  
 ६६७ (सं.) इच्छा, चाह, स्वादिष्ट,  
 ६६८ (सं.) दर्पण, शिशा, मुकुर,  
 बिछौर, कच्चा हीरा ।  
 ६६९ (सं.) एक प्रकार का  
 ज्ञानघर, विरगट ।  
 ६७० (सं.) छोटा डुकड़ा ।  
 ६७१ (सं.) नारियल के ऊपर  
 का छिलका, नरेठा ।  
 ६७२ (सं.) न्याय होने  
 के पूर्व रोक, रोक । [ नोट ।  
 ६७३ (सं.) कच्ची बही, कच्चे  
 ६७४ (वि.) मौला, मूर्ख  
 पागल (सं.) अनभ्यस्त, अना-  
 ज्ञापन, न तज्जबेकारी ।  
 ६७५ (सं.) निश्चित समय  
 से पूर्व, अनिश्चित समय ।  
 ६७६ (वि.) अपक्व, कच्चा, अधूरा ।  
 ६७७ (सं.) कमर, कलुआ, कच्छप,  
 ६७८ (सं.) लोंग, घोती की लोंग  
 ६७९ (वि.) लंपट, अप्याश,  
 गंडा, झुला, बिखरा, भ्रष्ट, पातित ।  
 ६८० (सं.) साड़ी का पत्ता,  
 साड़ी की लोंग ।  
 ६८१ (सं.) काली जाति, शक  
 भाजी बेचनेवाला ।  
 ६८२ (सं.) काम, धन्धा, कार्य,  
 कारबार, व्यवहार,  
 ६८३-३१ (वि.) महंगा, कीमती,  
 मूल्यवान, कोमल, स्वादिष्ट, फला,  
 खिला, कली, बौर ।  
 ६८४ साःपुं (क्रि.) पूरा करना,  
 अन्त तक सम्पूर्ण करना ।  
 ६८५ (सं.) कज्जल, अंजन,  
 दीपककी कारिख, मल्हम, लेप ।  
 ६८६ (सं.) न्यायाधीश (सुसल-  
 मानों के लिये) [ फल ।  
 ६८७ (सं.) काजू, एक प्रसिद्ध  
 ६८८ (क्रि. वि.) लिखे, वारन,  
 अतः एतदर्थ । [ शहतीर, मैला ।  
 ६८९ (सं.) सुर्चा, जंग, रोक,  
 ६९० ६९१ (क्रि.) रोक तोड़ना,  
 मारना, बध करना, तैकरना, नि-  
 र्णय करना, ठीक करना ।  
 ६९२ (सं.) मकान बनाने की  
 दूटी फूटी सामग्री, कतरन, कांट  
 छांट [ कड़क  
 ६९३ (सं.) गर्ज, बिजली की  
 ६९४-पुष्पा (सं.) समकोण ।

अ०पी०पी० ( सं. ) लकड़ी बेचने-  
वाला, लठ्ठे बेचनेवाला ।

अ०धुं-आ ( सं. ) बज्ज, बाट,  
परिणाम, कमी ।

अ०पी-डुं-डे ( सं. ) लकड़की  
काठी, बैठक ( लकड़की )

अ०पी ( सं. ) छड़ी, जलानेकी लकड़ी  
( एक जगह बेची हुई ) मौली,  
नाप १६- फीटका, काठियावाड़के  
लोग, डंडा । [ शरीरकी बनावट ।

अ०हुं ( सं. ) शरीरका ढाँचा, या

अ०धाल ( सं. ) बारबार निकालना  
और रखना । [ लेना, लेआना ।

अ०धुं ( कि. ) निकाल लेना, खींच

अ०डे ( सं. ) क्वाथ ( औषधियोंका )

अ०धु ( सं. ) दूसरो के शोकमें शोक  
प्रदर्शित करने को मिलना ।

अ०धुं ( वि. ) छेदवाला, छेदवार  
एक ओख का ( सं. ) छिद्र, छेद ।

अ०त ( सं. ) पेट, सुनार का जम्बूर,  
सुनार का एक औज़ार ।

अ०तर ( सं. ) कैची, कतरनी ,

अ०तरधुं ( कि. ) काटना, कतरना,  
छोटना, कम करना, घटाना ।

अ०तर ( सं. ) लकड़कन की दरार  
या फौक ।

अ०तरिधुं ( सं. ) अटारी, लकड़ीका  
सब विवेक, मकान की अटारी  
मंजिल ।

अ०तरी-णी ( सं. ) पतली फौक ।

अ०ती ( सं. ) लोहा, छल, कपड़,  
करीत, आरी, चाकू ।

अ०तुं ( सं. ) चाकू, छुरी,

अ०तु ( सं. ) शक्ति, ताकत, कपड़ा,  
साहस, उत्साह ।

अ०थे ( सं. ) रस्सियों का बंडल,

अ०ध-धालुं ( सं. ) कीचड़, पंक,  
कचरा, मैला,

अ०न ( सं. ) कर्ण, धोत्रेन्द्रिय, तोप  
या बन्दूक की आख या बत्ती  
लगाने की जगह ।

अ०नअ०तरधु ( सं. ) कान का मैल  
निकालने की सलाई ।

अ०नअ०धवा ( कि. ) मात करना,  
हरा देना, बड जाना, सबकृत ले  
जाना ।

अ०न अ०धुरे ( सं. ) गोखर, खन,  
खजूरा, कनसळा, कई टोंगों का  
कीड़ा । [ २ कानों की चमगीदड़ ।

अ०नअ०धे ( सं. ) चमगीदड़, लम्बे

अ०न देवा-अ०धवा ( किं. ) कान  
देना, ध्यान देना ।

कान पकड़ना ( कि. ) कान पकड़ना,  
अपराध स्वीकार करना, खेद  
करना ।  
कान आसना ( कि. ) पूर्ववत् ।  
कानपर हाथ देना-शुभवा-कानेथी  
हाथी नांभु ( कि. ) अस्वीकार  
करना, न मानना, अंगीकार न  
करना, तुच्छ जानना, घृणा करना  
कान देना ( कि. ) ध्यान देना ।  
कानगी नट ( सं. ) कान का सिरा  
कानपुं-ना कानुं ( वि. ) विशेष  
करके बहिरा, भोज्य, साधारण ।  
कानने पकड़ना ( सं. ) कान का पर्दा,  
कानके भीतर की शिथी ।  
कान कुंठना ( सं. ) बहकाना, उत्ते-  
जना देना, सावधान करना दिखी  
पक्षपात करना ।  
कान घूटी नपना ( कि. ) बहरा हो  
जाना, या सुन्न होजाना [करना ।  
कानमां कड़ेपुं ( कि. ) काना फूसी  
कानस ( सं. ) पंक्ति, कतार,  
कानमुण-सा ( सं. ) कर्ण झूल,  
कान का दर्द । [चाळ, चळन ।  
कानुन ( सं. ) कानदा, नियम, रीति,  
काने ( सं. ) काना, जो अक्षर के  
यास । इस रूपमें लगाया जाता  
है, जिसके अपनेसे व्यंजन का

उच्चारण “ आ ” युक्त होता है ।  
आ स्वर की मात्रा ।  
कानोमान ( सं. ) काना और मात्रा  
“ ० ” जो स्वर की मात्रा ।  
कान्त ( सं. ) पति, प्रेमी, स्वसम ।  
कान्ता ( सं. ) पत्नि, प्रिया, पृथ्वा ।  
कान्ति ( सं. ) चमक, शोभा, दीप्ति  
सौन्दर्य, काव ।  
कान-कान ( सं. ) चोट, घाव,  
जख्म, व्रण, कान का भूषण ।  
कान-कान ( सं. ) बख, दुफड़ें  
माल, कपड़े का बाजार कपड़े का  
व्यवसाय । [ विक्रेता ।  
कानि ( सं. ) बजाज, बन्ध  
कानुं ( सं. ) अंगिया, चाली ।  
कानथी ( सं. ) फसल पकने का  
समय, फसल काटने का वक्त ।  
कानपुं ( कि. ) काटना, गिरना, कम  
होना, घटना । [ बर्ण ।  
कानसी ( सं. ) कपास का पौदा ।  
कानकानि- ( सं. ) मारकाट, हत्या-  
काण्ड, काटाकूटी,  
कानि नांभुं ( कि. ) काट डालना,  
छांट डालना ।  
कानुस ( सं. ) रुई, कपास, कपास ।  
काने ( सं. ) चिन्ह, लकीर, सतर  
काट, घारी, लहर ।

- ४६२ ( सं. ) अचमी, बेदीन, बुद्ध, नीच, दुर्जन, काफिर ।  
 ४६३ ( वि. ) बुद्धता, दुर्जनता, काला आवमी, हवशी, नारकी ।  
 ४६४ ( सं. ) पवित्रात्मा का शरीर, यात्रियों का झुंड, यात्री जहाजों का बेड़ा ।  
 ४६५ ( सं. ) काफी चाह की तरह पी जाती है, राग काफी ।  
 ४६६ अंतर्-४६७ ( सं. ) चित कदरा, भूरा, रंगविरंगा ।  
 ४६८ ( सं. ) चावल के छोटे फूल ।  
 ४६९ ( सं. ) भारतीय दक्षिण समुद्र के डाकू ।  
 ४७० ( सं. ) अधिकार, हक, शक्ति पौरव, वजन, प्रभाव, दबाव ।  
 ४७१ ( वि. ) शक्तिवान, प्रभावोत्पादक ।  
 ४७२ ( सं. ) होशियार, पट्ट, चतुर, लायक, निपुण, गुणी ।  
 ४७३ ( वि. ) चतुरता, लायकी, प्रवीणता, होशियारी । [ कर्कशा ।  
 ४७४ ( सं. ) बुरे स्वभाव की औरत, ४७५ ( सं. ) कार्य, धन्धा, प्रयोग, आनन्द, क्लेश, पेशा, ओहदा, कारबार, मामला, पदवी, गौरव, योग्यता, कामेच्छा, कामदेव ।  
 ४७६ ( सं. ) चालाका, चतुराई, रति, कामदेव की भायाँ ।  
 ४७७ ( सं. ) कार्य, बर्ताव, कारबार, व्यापार । [ काजी ।  
 ४७८ ( वि. ) परिश्रमी, काम, ४७९ ( वि. ) गमनीय, काम चलाने योग्य, काम धकाऊ, एवजी योग्य ।  
 ४८० ( कि. ) काम चलाना, किसी प्रकार काम निकालना ।  
 ४८१ ( वि. ) कामसे जी चुरानेवाला, काम से मुहँ छुपानेवाला ।  
 ४८२ ( सं. ) प्रेम ज्वर, कामदेव से पीड़ित होकर बुझार हो जाना ।  
 ४८३ ( वि. ) काम के लायक, उपकारी, उपयोगी ।  
 ४८४ ( सं. ) बाँस की चपट, बाँस की खपची, कमान, धनुष ।  
 ४८५ ( सं. ) जादू, दोना इन्द्रजाल, दृष्टका ।  
 ४८६ ( सं. ) जादूगर, दोने करनेवाला, जादू मंत्री ।  
 ४८७ ( सं. ) जादू, जादूगरी, इन्द्रजाल, दोना ।  
 ४८८ ( सं. ) सर्कारी सरिस्ते वा इफ्तर सम्बन्धी, मंत्री, व्यवस्थापक, सरबराहकार, शासक ।

अभ्युप-भा ( सं. ) अभ्युपेय,  
इच्छित पदार्थ देनेवाली गऊ ।  
अभ्युप ( सं. ) मदन, अतव, मार,  
प्रेम के अभिघाता देव ।  
अभ्युप ( सं. ) काम काज,  
व्यापार, कार्य, काम ।  
अभ्युप ( सं. ) इच्छा, चाह,  
अभिधावि, वासना ।  
अभ्युप ( सं. ) कामयुक्ता स्त्री,  
कोमल हृदयवाली, प्रेमिणी, ( सं. )  
उपादेय, उपयोगी,  
अभ्युप ( वि. ) सुफाद, काम में  
आनेवाला, उपयोगी काम का ।  
अभ्युप-पी ( वि. ) इच्छानुसार  
रूप धारण करनेवाला, प्रेमा,  
मोहनी, [ रताभिलाषा, कामेच्छा ।  
अभ्युप-वासना ( सं. ) विषय वासना,  
अभ्युप-विकार ( सं. ) प्रेम की बी-  
मारी, हरी बीमारी । [ शास्त्र ।  
अभ्युप-रति ( सं. ) रतिशास्त्र, कोक  
अभ्युप-ग्री ( सं. ) कम्बल, छोई  
अभ्युप ( सं. ) प्रिया, विराम का  
चिन्ह ( , ) [ पीदित, कामुक ।  
अभ्युप ( सं. ) कामात, काम  
अभ्युप ( सं. ) रूपवान स्त्री ।  
अभ्युप ( सं. ) कामातुर, रसिया ।

अभ्युप ( सं. ) कमेटी, सभा, पंजा-  
मत, परीक्षा, जाँच । [ सेसन,  
अभ्युप ( सं. ) आरंभिक प्रेम, कामो-  
अभ्युप ( वि. ) प्रेम के योग्य स्वाधी,  
सुख मतलब ।  
अभ्युप-देस ( कि. वि. ) न्याय  
युक्त, उचित, ठीक, सही ।  
अभ्युप ( सं. ) कानून, नियम,  
आज्ञा हुक्म,  
अभ्युप ( सं. ) एक औषधि विशेष,  
कायफल ।  
अभ्युप ( सं. ) सुकरर, निमत, हड,  
मजबूत । [ बका, सुस्त ।  
अभ्युप-ई ( सं. ) डरपोक, बुजदिल,  
अभ्युप ( वि. ) बिमारी, अस्वस्थता ।  
अभ्युप-ई ( कि. ) थकाना, घृणा  
करना, क्रोध देना, खिन्नाना, बिड़ाना ।  
अभ्युप ( सं. ) शरीर, देह, जिस्म,  
बनावट ।  
अभ्युप-अभ्युप ( सं. ) शारीरिक दुःख ।  
अभ्युप ( सं. ) प्रत्यय ( कर्ता )  
अभ्युप-ई ( सं. ) शासन की अवधि  
कामकावक, कार्य काल ।  
अभ्युप ( सं. ) कर्क, मुन्शी, लेखक ।  
अभ्युप ( सं. ) कार्यालय, बर्क-  
शॉप । [ कसीदा ।  
अभ्युप-ग्री ( सं. ) दस्तकारी



अरुण ( सं. ) कौन, कौन, कौन,  
उत्सव सम्बन्धी अवसर । [ शय ।  
अरुणे ( सं. ) फव्वारा, कुंड जल-  
अरुण ( सं. ) सब, भर, जहरत,  
लिये ( अव्य. ) क्योंकि ( उप. )  
अतएव, इस लिये ।  
अरुणेश्वर ( कि. वि. ) इस करण,  
कामसे, अतएव ।  
अरुणस ( सं. ) कारतुस ( बन्दकके )  
अरुणार ( सं. ) प्रबन्ध, कामकाज,  
शासन । [ एक, शासक ।  
अरुणारी ( सं. ) मेनेजर, व्यवस्था-  
अरुणु ( वि. ) अद्भुत, अजीब,  
विविध ।  
अरुणान ( सं. ) बोक, छल, चाला-  
की, हिस्सा, [ कपट, तद्वत् ।  
अरुणानी ( वि. ) उपाय, यत्न,  
अरुणु ( सं. ) जेलखाना, जेल,  
बन्दीगृह ।  
अरी ( वि. ) गहिरा, दिल की दृढ़  
शब्द के अंतमें कारण बतलानेवाला  
अक्षर, विकास, प्रभाव, अधिकार,  
आवश्यक ।  
अरीगर ( सं. ) शिल्पी, शिल्पकार,  
कामकरनेवाला, दस्तकार ।  
अरीरु-भीरी ( सं. ) विद्या, गुण,  
प्रवीणता, क्षुब्धता, हुनर ।

अरुणु ( सं. ) करेला, एक प्रकार-  
रकी कड़ी भोजी । [ काम चन्द ।  
अरुणार ( सं. ) प्रबन्ध कामकाज,  
अरुणारी भूत ( सं. ) प्रबंध  
कारिणी समा, व्यवस्थापिका समा ।  
अरुणु ( सं. ) वज्र, पाप ।  
अरुण ( सं. ) काम, घन्टा ।  
अरुण प्रयोग ( सं. ) उत्सव,  
कारण वजह, अभिप्राय, प्रयोग ।  
अरुणारु ( सं. ) दकाल, काम  
बनानेवाला, [ कार्यता ।  
अरुणसिद्धि ( सं. ) सफलता, फल  
अरुणारु ( कि. वि. ) आवश्यक-  
कता के लिये पर्याप्त ।  
अरु ( सं. ) अनेवाला दिन, कल,  
अरुणुत ( सं. ) प्रथम कारण,  
आदि विकास, कालवृत्ता ( लकड़ी  
का नमूना जूते बनानेको )  
अरुणु ( कि. ) मिलाना,  
अरुण ( सं. ) कपास का टेंटा ।  
अरुणारु ( सं. ) प्रार्थना, विनती,  
अरुणु ( सं. ) तरबूज ।  
अरु ( सं. ) तुतलाहट मालकी  
घोषा, सीप ।  
अरु ( सं. ) कौवर, बहंगी । [ बाल ।  
अरुणारु ( सं. ) कौवरवाला, बैंगी-  
अरुणारु-अरुण-अरुणारु ( सं. )  
चालाक, कुशलबाज ।

अक्षरार्थ-धुं (सं.) घोका, चालाकी।  
 अक्षर-अ (वि.) पीड़ित, दुःखित,  
 उभरा, उकसा।  
 अक्षर-धुं (वि.) स्वारिष्ट, कोमल,  
 झुबकील, भुरभुरा। [केतली।  
 अक्षरानी (सं.) काफ़ी या चा के लिये  
 अक्षर (सं.) घोड़े को गोल चक्रमें  
 घुमानेका कार्य, उबाल, काटा,  
 काफ़ी।  
 अक्षरक्षर (सं.) मकार, चालाक,  
 अक्षर (सं.) कविता, पद्य, छन्द,  
 रसयुक्त वाक्य।  
 अक्षर (सं.) लकड़, लकड़ी,  
 अक्षर धं-टा (सं.) एक लकड़  
 जो भायनेवाली मवेशी के गले में  
 बांधा जाता है।  
 अक्षर (सं.) बाहक, लेजानेवाला,  
 हलकारा, संवाद लेजानेवाला दूत।  
 अक्षर (सं.) रोक, माई, नाश,  
 विध्वंस। [वाला, कहार,  
 अक्षर (सं.) पालकी ले चलने  
 अक्षर (वि.) बीमारी, सुस्ती आ-  
 लस्य, बेफ़िकी।  
 अक्षर (सं.) समय, उम्र, आयु,  
 मृत्यु, यम, दुर्मिह।  
 अक्षर (सं.) समय का फेर, भाग्य  
 का फेर, आयु परिवर्तन, चक्र, युग।  
 अक्षरार्थार्थ (सं.) बुरावण।

अक्षरानी (वि.) प्रिय, प्यारा,  
 प्राणाधिक प्रिय, दिली दोस्त।  
 अक्षरार्थ-अक्षर (वि.) अव्यव-  
 स्थित, केन्द्रसे हटाहुवा, पागल,  
 विषम। [परवाह।  
 अक्षर (सं.) चिता, सोच, फ़िक्र,  
 अक्षर (सं.) दिल, हृदय, कलेजा,  
 ज़िगर। [किस्मत।  
 अक्षर (सं.) भाग्य, तर्कदार  
 अक्षर (सं.) समय का परि-  
 माण, एक यंत्र समय देखने का।  
 अक्षरार्थ यंत्र (सं.) समय दे-  
 खने का यंत्र, एक प्रकार की घड़ी।  
 अक्षरार्थ (क्रि. वि.) देरमें, विलंब  
 से, समयान्तर से।  
 अक्षर (सं.) कालापन, अँधेरा,  
 श्यामता, तिमिर। [आभूषण।  
 अक्षरार्थ (सं.) गलेमें पहिने का  
 अक्षरार्थ (सं.) कालाजीरी, एक  
 औषधि विशेष। [दोष, कलंक।  
 अक्षरार्थ (सं.) बदनामी, दाग,  
 अक्षरार्थ (सं.) काळी किशमिश।  
 अक्षर (सं.) काला, श्याम अँधेरा,  
 बुरा, दुष्ट, शरमिदा, लजित।  
 अक्षरार्थ (क्रि.) धर्मसे या अ-  
 प्रतिष्ठा के कारण मुँहें छुपाना।

अणो डोप ( सं. ) दुर्भाग्य, विपत्ति,  
आपद् । [ काम, निष्काम ।

अणुं धोणुं ( सं. ) दुष्ट, पापी, डुरे-  
अणुं पाणुं ( सं. ) वेष निर्वासन,  
काळापानी ।

अंवा ( अ. ) या, अथवा,

अंकिपारी ( सं. ) चिक्कार, चिक्काड़,  
बीख की आवाज ।

अंकर ( सं. ) सेवक, भूत्व, दास,  
पत्थर, पाषाण ।

अंकरि ( सं. ) दासी, नौकरनी,  
अंकिअ ( सं. ) बकबक, शिख  
शिख । [ दल दल, मैला, कचरा ।

अंकिअ-अंकि ( सं. ) पंक, कीच,  
अंकिअभा ( वि. ) थोड़ासा, कुछ,  
अंकिअं ( सं. ) काच के गुरिये,  
काच के दाने ।

अंकिअं ( सं. ) चिड़ियों का बिल,

अंकिव ( सं. ) जुआरी, लुब्धा,

अंकिअ ( सं. ) पुस्तक, पोथी ।

अंकिअभा ( सं. ) लायब्रेरी,  
पुस्तकालय ।

अंकि ( सं. ) हस्ताक्षर दुरुस्त करने  
की कापी बुक, भूमि का हिस्सा  
या बौंटा ।

अंकिअ-अ ( सं. ) बूटेवाली पट्ट,  
बादला, कमखान, बस की एक  
किस्म । [ बाध विशेष ।

अंकिरी ( सं. ) सारंगी, चिकारा, बेला,

अंकिअर ( वि. ) देवी, शोही,  
लागी, कीबावर ।

अंकिअ ( सं. ) तम्बूकी दीवार,  
कपड़े की परिधि, कनात ।

अंकिरी-री ( सं. ) सिरा, गोटा, रीखा ।

अंकिरी ( सं. ) तट, तीर, कूळ,  
हाथिया, किनारा ।

अंकि ( सं. ) ब्रेष, शोह, काह, शत्रुता ।

अंकिअ ( सं. ) फायदा लाभ,  
मुनाफा ।

अंकिअ ५५ ( सं. ) सस्ता, लाभ-  
प्रद, फायदा देनेवाला । [ भईगा ।

अंकिती-तवान ( सं. ) मूल्यवान,

अंकिअगर ( सं. ) रसायन बनाने-  
वाला, कीमिया बनानेवाला, बाजी-  
गर, जादूगर ।

अंकिअ ( सं. ) मूल्य, दाम, लागत ।

अंकिअवार ( वि. ) सूचीपत्र,  
वस्तुओं की कीमत प्रदर्शित करने  
वाला सूचीपत्र ।

अंकि ( सर्व. ) कौन ? क्या ?

अंकिअ-अ ( वि. ) पृथक् पृथक्  
फुटकर, कई एक, मुतफरिकात,  
पचमेल ।

अंकिअ ( सं. ) रश्मि, प्रकाश,

अंकिअ ( सं. ) कर्ता, ईश्वर,

अंकिअ ( सं. ) कौन-कौन से एक  
प्रकारका रंग बनता है ।

क्रियल ( सं. ) सेंदूरवा रंग,  
काल रंग ।

क्रियादार ( सं. ) भावेदार, भेदित ।

क्रियु ( सं. ) भाड़ा, किराया,  
कगान, महसूल ।

क्रियु ( सं. ) मुकुट, चोटी, - टी  
( सं. ) अर्जुन ( पांडव )

क्रियु ( सं. ) विदियों की  
मुहचहाना, चहपहाट ।

क्रियावे ( सं. ) रस्सी जो हाथों  
के गलेमें उतरनेवाले को पायड़ का  
काम देती है ।

क्रियाहार ( सं. ) कजानची । को-  
बाध्यल, बनाध्यल । [ कीड़ा, चुन,

क्रियु ( सं. ) एक प्रकारका छोटा

क्रियेदार ( सं. ) किले का अध्यक्ष,  
:दुर्यपति । [ कोट ।

क्रिये ( सं. ) किला, दुर्ग, गढ़,

क्रिये ( सं. ) अवस्था विशेष,

बालक, नौजवान, छोकरा, नावा-  
लिंग २१ वर्ष से कम उम्र का  
( कानून में )

क्रिय ( सं. ) भाँति, प्रकार, जाति,

क्रियान ( सं. ) कृषक सेतिहार,  
गँवार ।

क्रिय ( सं. ) कृण, : भाग, माल,  
गुजारी समय समय पर चुकाना,  
( वि. ) हार, पराजय ।

क्रिय ( सं. ) भाग्य, कर्म, तकदीर,

क्रिये ( सं. ) कहानी, वर्णन ।

क्रिय ( सं. ) लड़की, बालिका,  
बाँस की पुत्ली,

क्रिय ( सं. ) लड़का, बालक ।

क्रिय ( सं. ) कीड़ा मकोड़ा, दह,  
प्रवीण, निपुण । [ मेल ।

क्रिय ( सं. ) कपास का धूला, कीट,

क्रिय ( सं. ) चिउंटी ।

क्रिय ( सं. ) कृमि, कीड़ा, गुनझीला,

क्रिय ( सं. ) सोता, बुवा, सुग्गा,

क्रिय ( सं. ) गायक के स्वर ताल  
के साथ ईश्वर स्मरण, भजन ।

क्रिय ( सं. ) साँझ, करताल,  
भजन । गायक ।

क्रिय ( सं. ) नामवरी, वश, सु-  
ख्याति, बढ़ाई, स्तुति ।

क्रिय ( सं. ) यशस्वी,  
प्रसिद्धित, मानी, नामी, कीर्ति,  
विशिष्ट । [ चाबी, खजाना ।

क्रिय ( सं. ) लड़की, बालिका,

क्रिय ( सं. ) लड़का, बालक,

क्रिय ( सं. ) चाबी, कुंजी, ताली,  
सूत का गोला, पता ।

क्रिय ( सं. ) शाकभाजी बेचने-  
वाला, बागवान ।

कुंभ (सं.) एक छोटा गोल कला,  
जन्मपत्री में आसुका हाक बताने-  
वाली गड़कुंडली ।

कुंभशुं (सं.) खोल, चक्कर,

कुंडी (सं.) मिट्टी या पत्थरकी  
कूदी । खरल, चमड़ेकी सुराही,  
छोटी तलवार, पोखरा, कुंड, जल-  
शय, गमला, फुलवारी बाने के  
मिट्टी के पात्र ।

कुंभार (सं.) कुम्हार, मिट्टी के  
पात्र बनाने वाला ।

कुंभु (सं.) भूमि का नापजो लग-  
भग १ एकड़ होता है ।

कुंभर (सं.) लड़का, बालक,  
राजपुत्र, राजकुमार ।

कुंभरी (सं.) लड़की, बालिका,  
राजपुत्री, राजसुता ।

कुंभार (सं.) बीकुमारका पेड़ ।

कुंभार (सं.) बेव्याह, अविवाहित ।

कुं (सं.) जिस शब्द के आंग लगा-  
दिवाजाय उसका अर्थ विपरीत  
या बुराहोजाता है ।

कुंभ (सं.) छोटाकुवा, कुहवा,

कुंभी (सं.) मुर्गी ।

कुंभेकुंभ (सं.) मुर्गे की आवाज़,  
मुर्ग की बाँग । [ सिखा ।

कुंभे (सं.) मुर्ग; मुर्गा, अकम-

कुंभ (सं.) दुरिधाम, निष्कार्य;  
नीचकर्म । [ अम्बावी ।

कुंभी (सं.) कुष्ट, बुरा, नीच,

कुंभे (कि.) मृतक के साथ रोते  
हुएजाना, मृतककेलियेरोना ।

कुंभ (सं.) पसली के नीचे का  
भाग, कोख, कुक्ष, कोक ।

कुंभ (सं.) छाती, स्तन, बप्पड़,  
कूद, प्रस्थान, पमान, कूब ।

कुंभ ४२वीं (कि.) प्रस्थान करता,  
गमन करना । [ कूबी, ब्रश ।

कुंभडे (सं.) बड़ा, मटकी, सुराही,

कुंभार (सं.) कुरीति, बुराचलन,  
बुरा व्यवहार, कुटेव ।

कुंभे (सं.) बुरी इच्छा, बुरे  
इरादे, बालाकी ।

कुंभे (सं.) ब्रश, बुरा, इनकार,  
तलछट, याद, मैल ।

कुंभ (कि. वि.) बोका, कम, कुछ ।

कुंभ (सं.) बशीभूत, दोष, बाँक,

कुंभे (सं.) बुराई, मिट्टीकी बनी  
हुई क्षारी । [ कुंज ।

कुंभ (सं.) गुफा, मँडरा, मंडप,

कुंभर (सं.) हाथी, हस्ती,

नी (सं.) हथिनी, हस्तिनी ।

कुंभ (सं.) पेच, कपेट, उलझाव,  
(कि.) तोड़ना,

- ३४५ ( सं. ) बुरी, नीच, सड़ाका, झगड़ालू, कुटनी, दूती, नायका ।  
 ३४६ ( सं. ) अधिक रंज के कारण छाती कूटना । [ कूटना ।  
 ३४७ ( सं. ) मड़वा, मदवा  
 ३४८-४९ ( सं. ) कुनवा, गृहस्थ, स्त्री, परिवार ।  
 ३५० ( कि. ) छाती पीटना, मारना, कूटना, पीटना, भारी चीज से कूटना चूर चूर करना ।  
 ३५१ नाँयपुं ( कि. ) पीसना, बुकनी करना, घमाघम्म कूटना, पीटकर दाने को भूसे से अलग करना, धुनना । [ हठौला ।  
 ३५२ ( सं. ) झुका, टेढ़ा, जिद्दी, कुटी ( सं. ) झोंपड़ी, मड़ी, छोटा घर, पर्णशाला, मढ़ैया ।  
 ३५३ ४५४ ( वि. ) गृह कलह, आपसी झगड़े, घर फूट ।  
 ३५४ परिवार ( सं. ) स्त्री पुत्र, बालबच्चे ।  
 ३५५ ( सं. ) रिश्तेदार सम्बंधी, घरवारी, आत्मीयजन, घरके लोग ।  
 ३५६ ( सं. ) कुदृष्टा, कुरता, कुंड ( सं. ) गड्ढा, कूप, जलाशय, यज्ञ कुंड, हवन कुंड ।  
 ३५७ ( सं. ) कर्ण भूषण विशेष, बाला, बाली ।  
 ३५८ ( सं. ) सोटा, लाठी, हण्डा, गदा, [ छत्रक, कुतरनी टोपी ( सं. ) कुकरमुत्ता ।  
 ३५९ ( सं. ) कुतिगा, कूकरी, कुत्ती, रो, ( सं. ) कुत्ता, कूकर खान ।  
 ३६० ( सं. ) अद्भूत, अपूर्व, कौतुक, खेल, तमाशा ।  
 ३६१ ( वि. ) निन्दित, मळीन, नीच कुथलो-धी-धो-धी ( सं. ) पेचदार विषय, गहन विषय, व्यर्थका किस्सा ।  
 ३६२-३६३ ( सं. ) उछल, कूद ।  
 ३६४ ( सं. ) प्रकृति, प्रकृति का सौन्दर्य, स्वभाव, शक्ति ।  
 ३६५ ( सं. ) स्वाभाविक, प्राकृतिक, असली । [ फौंदना ।  
 ३६६ ( कि. ) उछलना, कूदना, कुटी ५६७ ( कि. ) कूद पड़ना, कुंडल ( सं. ) शुद्धस्वर्ण, असली सोना, खरा सोना ।  
 ३६८ ( सं. ) बखौपर कलफ या हलारी करने का कार्य ।  
 ३६९ ( सं. ) पिटाई, कुटाई, कुंडी ( सं. ) बन्दक का कुंदा, लाठी सौटा, हण्डा । [ दुराचरण ।  
 ३७० ( सं. ) बुरामार्ग, कुपध,

कुपथ्य ( सं. ) अपथ्य, अनुचित भोजन । [ अपात्र ।

कुपात्र ( वि. ) अयोग्य, अनुपयुक्त,

कुप्यो ( सं. ) चमड़े का कुप्पा ।

कुप्यन ( सं. ) बदसूरत स्त्री जाइन, जादूगरनी ।

कुपुंड्र ( सं. ) जिसकी पीठपर कूबड़ हो, बदशक्ल, कुरूप । [ मति भ्रम ।

कुपुद्भि ( सं. ) दुर्बुद्धि, गलत खयाल,

कुभेरे ( सं. ) देवताओंको कोषा प्यक्ष, [ राहुवा ।

कुभो ( सं. ) चूना, कलई, ( विष

कुंभ ( सं. ) कुंभराशि, पानी का बड़ा, मटकी, घट ।

कुभ्यं ( सं. ) पेचीदा तदबीर, बलदार हिंमत, दुरपवाद, मिथ्या-कलङ्क, सन्देह ।

कुभाऱ्ग ( सं. ) कर्कशा, दुष्टा, नीच औरत ।

कुभठ ( सं. ) सहायता, मदद, योग ।

कुभति ( सं. ) दुर्मति, दुर्बुद्धि, अल्पबुद्धि । [ करुणा, दया

कुभणस ( सं. ) कोमलता, नाजुकी,

कुभणुं ( सं. ) कोमल, सुकुमार, नाजुक । [ राजपुत्र ।

कुभाऱ ( सं. ) लड़का, छोकरा,

कुभाऱऱ ( सं. ) लड़की, कन्या, अविवाहिता । [ रास्ता ।

कुभार्भ ( सं. ) कुपय, पापमय

कुभास ( सं. ) बनावट, सौन्दर्य, उत्कृष्टता । [ का, सर्वोत्कृष्ट ।

कुभासऱऱ ( सं. ) अच्छी बनावट

कुभुऱ ( सं. ) सफेद कमल, कुम्भो-दिनी, कोई ।

कुंभऱर्धु ( सं. ) रावण का बड़ा भाई राक्षस, खूब सोने वाला, निंदासा, आलसी ।

कुंभी ( सं. ) मीनारे की नेद, संभे की जड़, स्तंभ मूठ ।

कुऱकुऱिऱु ( सं. ) पिछा, भेडिये का बच्चा, कुतिया का बच्चा ।

कुऱंभ ( सं. ) हरिण, मृग,

कुऱ्गान ( सं. ) बलिदान, भेट, होम, यज्ञ ( वि. ) अतिप्रसन्न ।

कुऱान ( सं. ) मुसलमानों की धर्म पुस्तक, कुरान ।

कुक्ष ( सं. ) मुवाकिल, यजमान ( वि. ) सब, सम्पूर्ण टोटल ।

कुक्षक्षु ( सं. ) बदचलनी, कुचाक

कुक्षऱ ( सं. ) छिनाल. व्यभिचारिणी, रंडी, कसबी, बेइया ।

कुक्षी ( सं. ) एक मिट्टी का पात्र, कुहैया, कुलवा, सारा, पुरवा ।

कुलीन ( सं. ) माननीय, सम्म,  
भला, कुलवान, अच्छे घराने का  
कुलीनता-पथु ( सं. ) सम्मता,  
भलमसाहत, श्रेष्ठता ।

कुलीन ३२५ ( सं. ) भला आदमी,  
सज्जन पुरुष, कुलीन व्यक्ति ।

कुल ( सं. ) घृतद, हंगि, कूल्हा,

कुली ( सं. ) चमड़े का बर्तन ।

कुवाडी ( सं. ) कुल्हाड़ी, बसूला ।

कुवाड ( सं. ) दोष, बुराई अपवाद,

कुवाड ( सं. ) काड़ा, क्वाव,

कुवेतर ( सं. ) सींची हुई भूमि, कुए  
से साँचाजानेवाली जमीन ।

कुवे ( सं. ) कूप, कुआ ।

कुंवारी ( सं. ) कन्या, अविवाहिता,  
वे ब्याही । [ ब्याहा ।

कुंवारी ( सं. ) अविवाहित, बे

कुवास्तिना ( सं. ) दुर्गन्ध, बदबू,  
दोष, कलङ्क । [ पवित्र वास ।

कुश ( सं. ) दर्भ, शम, कुशलाग्नी

कुश ( सं. ) कल्याण, मंगल,  
भलाई, पुण्य, योग्य लायक ।

कुशगता-णी ( सं. ) कुशल, श्रेष्ठ,  
कल्याण, निपुणता, योग्यता ।

कुश ( बुद्धि-शक्ति-बुद्धि ( सं. )

तेजी, शीघ्र समझने की बुद्धि,  
तीव्र बुद्धि, बुद्धिमान, अकर्मण्य ।

कुशी ( सं. ) चौबलोंकी भूखी,  
चौकर भूखी, चाबलों का छिलका ।

कुशी ( सं. ) पैना, नुकीला,  
नोकदार,

कुशी ( सं. ) चौड़ा, विस्तीर्ण,  
लंबा चौड़ा, कुशादा, कँचा, घमंडी,

कुशी ( सं. ) बदमिजाज, बुरी  
प्रकृति का ।

कुशी ( सं. ) कोठ की बीमारी

कुस-ति, -त ( सं. ) बुरी सं-  
गति, बद् सोहबत, दुर्जन सहवास,

बुरासाध । [ युद्ध, व्यायाम,

कुशी-गाल ( सं. ) कुश्ती, मल-

कुशी-गाल ( सं. ) पहलवान, मल ।

कुशी ( सं. ) असम्मत, अयोग्य ।

कुशी-पु ( सं. ) बुरा सपना,

कुशी-पु ( सं. ) बुरी आदत, दुष्ट  
प्रकृति ।

कुशी ( सं. ) पुण्य, फल,

कुशी-डो ( सं. ) कुल्हाड़ा, परसा,

कुशी ( सं. ) वंश, कुल, खान्दान,  
पीढ़ी, गोत्र, वर्ण, जाति ।

कुशी-पु ( सं. ) गाँवका सुनीम,  
वह जो लेखा खच समझता हो ।

कुशी-पु ( सं. ) सुपुत्र,  
वंशमें दीपक के तुल्य, नरघोष्ठ,



कुण्डली ( सं. ) कुलमें पूजी जाने वाली देवी ।  
 कुण्डलीपथ ( सं. ) वंशरज, कुलमें वंश के समान, कुलरज, कुलभेद ।  
 कुण्डल-वान ( सं. ) कुलीन, खान्दानी, भेद कुलोत्पन्न । [ रीति ।  
 कुण्डली ( सं. ) वंश रीति, कुल  
 कुण्डलीमान ( सं. ) आत्माभिमान, वंश गर्व । [ सभ्य, खान्दानी ।  
 कुलीन ( वि. ) उच्च वंशोद्भव, भक्त,  
 कुक्ष ( सं. ) कोख, पेट,  
 कुक्ष-भे ( सं. ) भ्रू, बुरसा, कूची ।  
 कुक्ष ( सं. ) प्रस्थान, पयान, प्याला, कटोरा, गुप्त, पोशीदा ।  
 कुक्ष ( सं. ) दुष्ट, बुरा, नीच, बद-  
 माश, भूत, अवि-आसी ।  
 कुक्ष ( सं. ) उबले हुए चावल, भात । [ 'किया हुआ' होता है ।  
 कुक्ष ( सं. ) प्रत्यय, जिसका अर्थ  
 कुक्ष-नी ( वि. ) उपकार न माननेवाला, अधन्यवादी, किने हुए काम का एहसान न माननेवाला ।  
 कुक्ष-नी ( सं. ) उपकार मानने-  
 वाला, एहसानमन्द, मुक्त गुज़ार ।  
 कुक्ष ( सं. ) सतयुग, प्रथम युग, देवयुग । स्वर्ण समय ।  
 कुक्ष ( सं. ) मृत्यु, मौत, यम, यम-  
 वृत्त, काळ । [ हाल, सिद्ध मनोरथ ।  
 कुक्ष-नी ( वि. ) कृतकार्य, नि

कुक्ष ( सं. ) काम, काज, कार्यकर्मी ।  
 कुक्ष ( सं. ) कर्तव्य, ब्यूटी, कार्य ।  
 कुक्ष ( सं. ) बनावटी, बकली, झूठ, सुतवद्या ।  
 कुक्ष ( सं. ) पूर्ववत्  
 कुक्ष ( सं. ) वह शब्द जो गुण-  
 वाचक और क्रिया के लक्षण रखता हो ।  
 कुक्ष ( सं. ) कंजूस, मक्खीकूस, सूत । [ अनुकम्पा ।  
 कुक्ष ( सं. ) ब्या, मिहिरकनी,  
 कुक्ष-नी-नी-नी ( सं. ) दयालु, दयासागर, ईश्वर, परमात्मा ।  
 कुक्ष-नी ( सं. ) दयालु, मिहिरकनी ।  
 कुक्ष ( सं. ) कीड़ा, कीट, आँतके कीड़े पेट के कृमि ।  
 कुक्ष-नी ( सं. ) कीड़ों को नाश करनेवाला, कीट नाशक ।  
 कुक्ष ( सं. ) दुबला, पतला, कमजोर, दुर्बल ।  
 कुक्ष ( सं. ) आग, अग्नि, पावक ।  
 कुक्ष ( सं. ) खेती, काश्त, किसान ।  
 कुक्ष ( सं. ) श्रीकृष्णचन्द्र, देवकी के लड़के ( वि. ) काला, इमान ।  
 कुक्ष-नी ( सं. ) काल पञ्चवादा, अंधेरा पञ्चवादा, बिदी, अंधेरा अर्थ मास ।  
 कुक्ष-नी ( सं. ) निष्काम कर्म, भेट, त्यागपूर्वक भेट करना, हरि अर्पण ।

डेस ( सं. ) गाँठ, बन्धन, बटन  
 होता है ।  
 डे ( अ. ) वह, या, ऐसे, जैसे ।  
 डेआभात ( सं. ) न्याय का दिन,  
 अंतिम दिन, वह दिन जिस दिन  
 मुसलमानों का न्याय ईश्वर करेगा ।  
 डेई ( सं. ) कौन ? क्या ?  
 डेईआमेई-ई ( वि. ) कई, बहुत  
 से, बहुतेरे, चन्द, कुछ, थोड़े ।  
 डेटुं ( क्रि. वि. ) कितना ?  
 डेटुईवाइ ( क्रि. वि. ) कब, किस  
 समय ? कितनी बेर ?  
 डेई ( सं. ) कटि, कमर,  
 डेई ( सं. ) पगड़ण्डी ।  
 डेई ( उप. ) पीछे, बाद ( क्रि. वि. )  
 इस के बाद, तब, कमरपर ।  
 डेई लागुं-पडुं-देवी ( क्रि. )  
 पीछे पड़ना, पीछे लग जाना,  
 पीछा न छोड़ना ।  
 डेई सेपुं ( क्रि. ) उठाना, पाखाना,  
 बच्चेको कमर पर लेना, गोदी लेना ।  
 डेई ( सं. ) पीछा, सड़क, सिरा,  
 डेईआभा-तई, भई ( क्रि. वि. )  
 किधर, कहाँ, किस ओर, किस  
 दिशामें । [ प्रसिद्ध वृक्ष ।  
 डेतडी ( सं. ) केतकी नामक  
 डेतु ( सं. ) नवमसह, झंडा, ध्वजा,  
 धूमकेतु, पुच्छलतारा ।

डेई ( सं. ) रुकाव, बंधन, कैद,  
 बंधुआई, काराबन्धन ।  
 डेई डेरुं-डेईआं राभुं ( क्रि. )  
 बन्दी करना, बंधनमें रखना,  
 जेलमें रखना । [ गृह, जेल ।  
 डेईआभुं ( सं. ) कारावास, बन्दी  
 डेई ( सं. ) बन्दी, बंधुआ, कैदी ।  
 डेई ( सं. ) मर्कज, दरम्यानी,  
 नुकता । मध्य । [ लापन ।  
 डेई ( सं. ) नशा, मस्ती, मतवा-  
 डेईपत ( सं. ) व्यौरा, तपसील,  
 कारण सबब ।  
 डेई ( सं. ) नशेका अथवा मादक  
 वस्तु का व्यवसयी, नशेबाज, नशा ।  
 डेई ( क्रि. वि. ) कैसे, किस प्रकार क्यों ?  
 डेई डेरता-मे डेईने ( क्रि. वि. )  
 किसीभी मौति, कैसेभी, किस मौति ?  
 डेईडे-गे ( अ. ) वास्ते, लिये, अनः  
 क्यों कि, कारण कि, इस लिये ।  
 डेईरे ( क्रि. वि. ) क्यों ? किस वास्ते ?  
 डेई ( सं. ) दबाव, सख्ती, जुल्म,  
 अन्याय, कठोरता, उपद्रव, स्वतंत्र  
 राज्य ।  
 डेईने ( सं. ) एक प्रकारका नाच,  
 गुजराती नाच कहरवा, गुलाब  
 जल रखनेका गुण्डाकार काच का  
 पात्र । [ बेर, एक प्रकारका फल ।  
 डेई ( सं. ) कैर, टेंट, एक प्रकारके खेटे

डेरी ( सं. ) आम, आम्र, नूत ।  
 डेवहुं ( कि. वि. ) कितना, कितना,  
 ( अधिक ) कितना ( बड़ा ) ।  
 डेवडे ( सं. ) केवड़ा वृक्ष, ( कि. वि. )  
 कितना ( पुराना ) कितना ( बड़ा )  
 डेवण ( वि. ) शुद्ध, केवल, सिर्फ  
 ( कि. वि. ) सब, सब प्रकार, ठीक ।  
 डेवण प्रयोगी अभ्यय ( सं. )  
 ( व्याकरण में ) अभ्यय ।  
 डेवारे ( कि. वि. ) कब ? किस समय ?  
 डेवुं ( वि. ) कैसा, किसभौतिका,  
 डेश-स ( सं. ) बाल, कच पाश्च  
 ( सं. ) बालों की गांठ ।  
 डेशर-सर ( सं. ) जाफरानी रंग ।  
 केशरिया रंग । जाफरान ।  
 डेखवाणी ( सं. ) सिंह या घोड़े की  
 गर्दन के बाल, अयाल ।  
 डेखाधुं ( सं. ) बालों का खिंचाव  
 केशकर्षण, बालों की खींच,  
 डेसरियां डेश्यां ( कि. ) युद्धमेंजी  
 तोड़ परिश्रम करना ।  
 डेसरी ( सं. ) शेर, सिंह, केहरि,  
 डेसुं ( सं. ) पलाय, वृक्षके पुष्प  
 डेखु ( सं. ) संदेशा, खबर, उ-  
 कावा, निमन्त्रण ।

डेहेशी-टी-बत ( सं. ) कहावत,  
 कहतूत, मसला, निदा दोष, कलंक,  
 अपवश । [ कथन करना ।  
 डेहेपुं ( कि. ) कहना, बोलना,  
 डेण ( सं. ) केले का वृक्ष, रंभा  
 वृक्ष, कदली वृक्ष ।  
 डेणपडी ( सं. ) ग्यारहवीं संख्या,  
 डेणवधुी ( सं. ) शिक्षा, हल्म विद्या  
 उपदेश ।  
 डेणवधुं ( कि. ) सिखाना, शिक्षा  
 देना, पालना, तालीम देना ।  
 डेणुं ( सं. ) केला, रंभा फल,  
 कदली फल ।  
 डेठ ( वि. ) बहुतेक, बहुतेरे, कई,  
 डेलास ( सं. ) कैलास पर्वत, शि-  
 वजी के रहने का पहाड़ ।  
 डेलासवासी ( वि. ) शिव नाम के  
 रहनेवाले, मृत, मेराहुवा ।  
 डेवधु ( सं. ) सुक्ति, मोक्ष, निर्वाण,  
 परित्राण, परधाम की प्राप्ति, लय,  
 डेधुं ( वि. ) कोठ, कोई एक,  
 डेधुंकी ( कि. वि. ) किसी समय  
 कभी कभी, बिरले ।  
 डेधुं ( सं. ) बसूला, कुल्हाड़ी ।  
 डेधुंवाधु ( सं. ) काम बाण, मदद  
 धार, कामदेव के तीर ।

के३६५ ( सं. ) आम की गुठली,  
 अमचूर । [ कुछ गरम, गुनगुना ।  
 के३६२वायुं ( वि. ) कुनकुना, कुछ  
 के३६२वुं ( सं. ) कान की बाली ।  
 के३६३वायु ( सं. ) रतिशास्त्र, कामशास्त्र  
 वह शास्त्र जिसमें गर्भ विषयक  
 वर्णन हो । प्रेमशास्त्र ।  
 के३६३वा-वा ( सं. ) कोयल, पिक  
 के३६३वायुं ( सं. ) हैजा, विसूचिका  
 के३६३वा ठरेवे ( कि. ) कुल्ला करना,  
 गंदूष के३६३वा ( सं. ) कुल्ला, कुली,  
 गण्डूष । [ सेज, शय्या ।  
 के३६३ ( सं. ) पलंग, खाट, पर्यंक,  
 के३६३-धुं ( सं. ) कठिन छिलका,  
 नरेठी, नरियल का सख्त छिलका ।  
 के३६३धुं ( कि. ) वेधना, छेदना,  
 सूरखकरना, गढ़ोना, चुभोना ।  
 के३६३ ( सं. ) गर्दन, गला, शहर  
 पनाह, नगर प्राचीर, कोट, किला,  
 दुर्ग, कोट ( वस्त्र ) [ कोठा ।  
 के३६३डी ( सं. ) कमरा, कोठरी,  
 के३६३ध ( सं. ) जाड़, टोना, मंत्र  
 द्रुतका । [ पोलिस मजिस्ट्रेट ।  
 के३६३वाय ( सं. ) मुन्सरिम, थानेदार,  
 के३६३वाधी ( सं. ) पुलिस कचहरी,  
 पुलिस स्टेशन, थाना ।

के३६३-टी ( सं. ) करोड़, दस लाख।  
 आलिंगन, गोद । [ डोंगी ।  
 के३६३धुं ( सं. ) डोंगा, छोटीयाव  
 के३६३वा ( सं. ) कातने का औजार,  
 ताकू, तकला ।  
 के३६३ ठरेवी ( कि. ) लिपटाना, आ-  
 लिंगन करना, छातीसे लगाना ।  
 के३६३ ( वि. ) साँसा, धोखा, कपट  
 प्रबन्ध, अचम प्रेम, फँसा, फाँसी,  
 बन्दोबस्त, प्रबंध ।  
 के३६३वाय के३६३ ( वि. ) करोड़  
 संख्यक, कोटि कोटि, करोड़ों,  
 अगणित । [ एक प्रकार का फल।  
 के३६३ ( सं. ) एक प्रकार का सोंप,  
 के३६३र ( सं. ) खत्ती, बखारी,  
 भण्डार गृह । [ व्यापारी ।  
 के३६३री ( सं. ) भण्डारी, अन्न का  
 के३६३ ( सं. ) अन्न भरने की मिट्टी  
 की बनी कोठी, आडत, गोदाम,  
 सरकारी आफिसर के रहने का  
 स्थान । निवास स्थान ।  
 के३६३ ( सं. ) सूरत, शक, रूप,  
 दिखावट, मुखलक्षण, निरूपण  
 बिद्या, हल्मक्याफा । फल ।  
 के३६३ ( सं. ) पेट, उदर, जठर,  
 संक्षेप, सारसंग्रह, भोजन, खाना,  
 अंगरखे का ऊपरी भाग ।

डे३ ( सं. ) आम्ना, अभिलाषा,  
चाह, बिता, सोच ।

डे३धुं ( सं. ) कवगहिरा मिथी का  
प्याला, कोरी, कुडी ।

डे३धुं ( वि. ) उरमुक, अनुरागी,  
अभिलाषी, ललायित, इच्छुक ।

डे३ी ( सं. ) कौडी, सरून छिलका,  
निकम्मा, अनुपयोगी, २० नग ।

डे३ु ( सं. ) चोंचा, मोहरा, [बल्हा।

डे३ ( सं. ) कुछ रोग, मछी, माद,

डे३ु ( सर्व. ) कौन? क्या? ( सं. )  
कोना, खंड, दौरेलाओं का मेक ।

डे३ु ग३ु ( कि. वि. ) क्या जाने ।  
सायद, समभवत ।

डे३ुी ( सं. ) कुहनी

डे३ु ( सं. ) अ३ुत, अजीब, अ-  
चंभा, आश्चर्य,

डे३र ( सं. ) गुफा, कन्दरा, गार  
मोंद, छिद्र, तलधर ।

डे३रधुी ( सं. ) खुदाई, नकाशी,  
खुदाई करने का औज़ार ।

डे३रधुं ( कि. ) खोदना, काटना,  
पत्थरपर नकाशी करना, बिल  
खोदना ।

डे३र ( वि. ) फालतू, अतरव्ययी।

डे३रधुं ( सं. ) कमी, घटी, न्यूनता।

डे३रधुं ( सं. ) धमिये का पौधा ।

डे३रधुं ( सं. ) बैली, एक प्रकार  
की संख्या, ( बोल चाल की  
भाषा में )

डे३रधुं ( सं. ) बैला, बोर, [कोई।

डे३र ( सं. ) एक प्रकार का अन्न,

डे३रधुं ( सं. ) कुयली, फाकड़,  
खुरी ।

डे३रधुं ( सं. ) ईतान कोष का  
वायव्य कोण का अक्ष लम्बाकन

डे३रधुं ( वि. ) चुकीला, कोणचुक्,

डे३र ( सं. ) कोष, राग, तामछ,  
रिस, [तल का मिश्रण ।

डे३रधुं ( सं. ) तौबे और पी-

डे३रधुं ( सं. ) एक प्रकार की  
मिठाई जो खोपरे आर शहर के  
योग से बनती है । मार ।

डे३रधुं ( सं. ) कुहनी [ खोपरा ।

डे३र ( सं. ) नारियल की मरी,

डे३रधुं ( सं. ) खोपरेका तेल, न-  
रियल का तेल ।

डे३रधुं ( कि. ) कुछ होना, नाराज  
होना, कीमत करना । [ कुपित ।

डे३रधुं ( वि. ) कुछ, नाराज,

डे३रधुं ( सं. ) लेंगोटी ।

डे३र ( सं. ) लड़, दरा, चाटी, खो  
पड़ाहो के बीच की जगह ।

डे३रधुं ( सं. ) गोभी, करम आ ।

कोश ४२५ ( कि. ) चूने का कर्ष  
पीटकर बनाना, कर्ष पर चूना  
कटना । [ कौम ।

कोश ( सं. ) लोग, वर्ण, जाति,

कोश ( सं. ) सुलभ, नरम,  
मृदु । [ मृदुता, सुकुमारता ।

कोश ( वि. ) नरमी, सुलभमी

कोश ( सं. ) पहेली, बुझावक,  
प्रवाल्हिका । [ कोकिला, पिक ।

कोश ( सं. ) भारतीय कोकिल,

कोश ( सं. ) कोला, बुझाहुवा  
भंगारा । [ प्रान्त भाग । गोट ।

कोश ( सं. ) किनारा, छोर, कगर,

कोश ( सं. ) कोर्ट, न्यायालय,  
अदालत ।

कोश-शु ( वि. ) सूखा, सील  
नमी, तरी, आदि से रहित ।

कोश ( सं. ) चाबुक, कोड़ा,  
शक्ति, अधिकार ।

कोश ( सं. ) देखो कोश

कोश ( सं. ) देखो कोश

कोश ( सं. ) धीमी धीमी आग से  
पकाई, उबली, हुई, दली हुई दाल ।

कोश ( सं. ) चौंदा का एक छोटा  
सिक्का जो लगभग चार आने के  
होता है ।

कोश ( सं. ) कोरा, बया, सूखा,  
छूट, बे बर्ती बस्तु, सादा, खीरसा

कोश ( कि. वि. ) एक तरफ अलग  
( उप. ) के पास, समीप, दोनों में ।

कोश ( कि. ) अलग रखना,  
एक तरफ डाल देना ।

कोश ( कि. ) एक तरफ डाल  
रखना, एक ओर बिठा रखना ।

कोश ( सं. ) शब्द, वचन, जहाज  
का बन्दरगाह में प्रवेश, खरक,  
बादा, गिरो, जमानत, बन्धक,  
रहन । [ रार, बादा, संधि, मेळ ।

कोश ४२२ ( सं. ) नियमपत्र, हक-

कोश ( सं. ) देखो कोश

कोश ( सं. ) रौला, कलकल,  
शोर गुल । [ परिश्रम द्वारा पुष्ट ।

कोश ( सं. ) पुष्ट, शारीरिक

कोश ( सं. ) गीदड़, लड़ैया, स्वार,  
लोमड़ी ।

कोश ( सं. ) कबरापन, भूरापन ।

कोश ( सं. ) पढ़ा लिखा आदमी,  
विद्वान, पंडित, डाक्टर, हकीम ।

कोश ( सं. ) खजाना, भंडार, अभि-  
धान, डिक्शनरी, लुगत । म्यान,  
कली, कलिका, घन, खोदने का  
औजार, [ प्रबल ।

कोश-शे ( सं. ) यत्न, उद्योग

अक्षर ( सं. ) रेशम का कीड़ा,  
कच्चे रेशम का कोया ।

अक्षर ( सं. ) लेखा या गिन्ती का  
नक्शा । कोष्टक । ब्रेकेट ।

अक्षर ( सं. ) री मील, कोस, चयदे  
का डोल या डोलनी, खोदने का  
लोहे का औजार, सनित्र ।

अक्षर ( सं. ) पसलियों के नीचे  
की बाजू, कोल । [ करना ।

अक्षर ( कि. ) मिलाना, मिश्रित

अक्षर ( स ) लाल, मुर्ख ।

अक्षर ( सं. ) अफीम के पानी  
में घोलकर शरबत बनाना ।

अक्षर ( सं. ) हठ में लगाया जाने  
वाला लोह का औजार ।

अक्षर ( कि. ) पिछारना, कोसना  
थाप देना, बातोंद्वारा दुखी करते  
रहना । [ डोलनी पर महमूल ।

अक्षर ( सं. ) पानी की डोल या

अक्षर ( सं. ) वह जो डोल या  
बालटी से पानी खींचता है ।

अक्षर-सक्षर ( वि. ) कुछ कुछ गर्म  
गुनगुना । [ दोषी ।

अक्षर ( वि. ) सड़ा, गला, कपटी,

अक्षर ( सं. ) चोंद, कुष्ट, दुकान,  
कारखाना, कलम, लेखनी ।

अक्षर ( सं. ) गीदर, स्याह,  
चम्पुक, लोमड़ी, कोल्हू, गधे  
का रस निकालने का यंत्र ।

अक्षर ( सं. ) सड़ा, गला, कपट

अक्षर ( कि. ) सड़ना, गलना,

अक्षर ( सं. ) एक प्रकार का  
काला कद्दू ।

अक्षर ( वि. ) कड़ी जवान  
बोलनेवाला, कड़ी तुम्बी, लौकी ।

अक्षर ( वि. ) उदासी, बिड़बिड़ा  
रुखा ।

अक्षर ( सं. ) घुँस, बड़ा चूहा ।

अक्षर ( सं. ) चूहों के पकड़ने  
का फन्दा ।

अक्षर ( सं. ) प्राप्त, लुकना,  
डुकड़ा, छोटा, कौर । [ कोरी ।

अक्षर ( सं. ) शत्रों में एक जाति

अक्षर ( सं. ) शत्रु, शत्रों की  
सब जातियाँ ।

अक्षर ( सं. ) लौकी, तुम्बी, कद्दू

अक्षर-गुष्ठ ( सं. ) अद्भुत, विचित्र,  
कद्दू ।

अक्षर ( स ) चोंदनी, चन्द्रप्रभा,

अक्षर ( स. ) बिच्छू का पेड़,  
कौच वृक्ष, कौच की फली की  
खुजली । [ बल ।

अक्षर ( सं. ) शक्ति, ताकात, आत्मा,

३१६५ ( सं. ) कुशल, निपुणता,  
दक्षता, होशियारी, हुनरमंदी ।  
३१६६ ( सं. ) विश्वामित्र, कुशिक  
वंशीय । [ ( ) कोष्टक, ब्रेकेट ।  
३१६७ ( सं. ) अनन्वित वाक्य, उपवाक्य,  
३१६८ ( सं. ) समुद्र मयन के वक्त  
निकली हुई १४ वस्तुओं में से  
एक । रत्न,  
३१६९ ( सं. ) न्याय का दिन,  
वह दिन जिस दिन मुसलमानों का  
न्याय ईश्वर करेगा । अंतिम दिन ।  
३१७०-२१ ( सं. ) क्यारा, क्यारी ।  
३१७१ ( कि. वि. ) कब ? किस वक्त ।  
३१७२ ( सं. ) अटकल, अन्दाज ।  
मोल, मुलाई ।  
३१७३ ( सं. ) परिपाटी, रीति, भाँति,  
अनुक्रम । [ क्रम, अतिक्रमण ।  
३१७४ ( सं. ) चलना, आगे बढ़ना  
३१७५ ( सं. ) वेच खोच, बेचना  
आर खरादना । वाणिज्य,  
३१७६ ( सं. ) बदल, परिवर्तन,  
आक्रमण, गमन, । [ चक्र ।  
३१७७ ( सं. ) आन्तिमंडल, राशि-  
३१७८ ( सं. ) व्यवहार, काम, कृत्य,  
उत्पन्न, रीति । [ किया शब्द ।  
३१७९ ( सं. ) व्याकरण में क्रिया,

क्रियाविशेष ( सं. ), वह शब्द  
जिस से क्रिया में कुछ विशेषता  
पाई जावे [ मजाक ।  
३१८० ( सं. ) खेल, दिलबहालन,  
३१८१ ( सं. ) सख्त, कठोर, निर्दय  
बेरहम, भयानक ।  
३१८२ ( सं. ) कोटि, करोड़ ।  
३१८३ ( सं. ) गुस्ता, कोप,  
३१८४ ( वि. ) कुपित, क्रोध-  
युक्त, कोपाविष्ट, [ प्रकृतिका ।  
३१८५-४६ ( सं. ) गुस्सैल, क्रोधी  
३१८७ ( सं. ) दुखी, क्लेशित, कठिन,  
यका हुआ ।  
३१८८ ( सं. ) नपुंसक, हिजड़ा,  
३१८९ ( सं. ) दुख, तकलीफ,  
झगड़ा बत्तेदा, लड़ाई ।  
३१९० ( कि. वि. ) कुछ, थोड़ा,  
कदाचित् ।  
३१९१ ( सं. ) कादा,

५५

५५- गुजराती वर्णमाला का १२ वॉ  
अक्षर, ( सं. ) स्वर्ण, आकाश,  
शून्य । [ रोग ।  
५६ ( सं. ) खड़ी, तपेदिक क्षय-  
५७ ( सं. ) अत्यंत बूढ़ा, सदा, यका



अभ्यास (वि.) विद्विषा, चटखने  
चाका, खदखदने वाला, चकमापी।

अभ्यास (कि.) खद खदना, चक-  
माद करना [ खदखद शब्द।

अभ्यास (सं.) खदखदाहट,

अभ्यास (कि.) खदखदना,  
खदखदना, सिद्धना, खनखनाना,  
बक बक करना, डाटना,

अभ्यास (कि. वि.) खदना,  
और तितर बितर हो, तितर बितर।

अभ्यास (कि.) अखरना, दुख  
होना। [ बैठे हुए गले का स्वर।

अभ्यास (सं.) कंठारोष, सूखा स्वर,

अभ्यास (सं.) दूसरे के दुख में  
शोक, समवेदना, पछतावा, प्राव-  
क्षित, तोषा।

अभ्यास (सं.) पक्षी, स्वर्ग,

अभ्यास (सं.) गिद्ध, पक्षिराज,

अभ्यास (सं.) ईश्वर, विष्णु

अभ्यास (सं.) स्वर्ग, तारकायुक्त  
आकाश, आकाश का गोला।

अभ्यास (सं.) नक्षत्र विद्या,  
ज्योतिष।

अभ्यास (सं.) आकाश विषयक  
ज्ञान रखनेवाला, ज्योतिषी।

अभ्यास (सं.) संपूर्ण ग्रहण, पूर्ण  
ग्रहण।

अभ्यास (सं.) हिमहिताहट

अभ्यास (कि.) हिमहिताहा

मगजी छपाना, मोटलमाना, बाज  
से सिकार करना।

अभ्यास (कि.) कबरा सादना,  
पुढ़ना, धमकाना, डाटना।

अभ्यास (सं.) ईर्ष्या, डाह, बैर बढना,  
अन्याय, विरोध, द्वेष, शोध, प्रतिकार,

अभ्यास (कि.) ठहराना, पीछे  
हटना, सिकुड़ना, सिझना।

अभ्यास (वि.) पुराना, प्राचीन, कूड़ा,  
करकट, मरियल चोड़ा।

अभ्यास (सं.) पशु विशेष, लच्छर,  
गोखर, बनेला गधा।

अभ्यास-अभ्यास (सं.) कुल  
कुली, कुमाल, खान।

अभ्यास-अभ्यास (सं.) कोषाध्यक्ष,  
धनाध्यक्ष, रोकड़िया।

अभ्यास-अभ्यास (सं.) धनभंडार,  
कोष, राज्यधनागार।

अभ्यास (सं.) खर्जर, कुहारा  
(खजूर वृक्ष) [ तादृश।

अभ्यास-अभ्यास (सं.) कुहारेका वृक्ष,

अभ्यास (कि.) संदेह करना,  
हिचकिचाना, आगापीछा करना,  
संशय होना और ठहरना।

अभ्यास (सं.) पक्षी विशेष, खंजन  
नामक पक्षी।

५०२ ( सं. ) छुरी, कटार, छुरा ।

५०२री ( सं. ) डफली, खम्बरी ।

चंग । [ दुष्ट, ( वि. ) ६, छः ]

५२ ( सं. ) स्तर, तान, अवारा,

५२२३-४ ( सं. ) धार्मिक कृत्य  
पूजा । [ छेदना, बेघना ।

५२३ ( कि. ) खटकना, भड़कना,

५२३ ( सं. ) रोक टोक, अटकाव,  
बाधा, रोक, सन्देह, शक ।

५२५२ ( सं. ) टिकटिक, सन्द,  
झगड़ा, विवाद, लड़ाई, व्याकुल,  
बे मेल ।

५२५२ ( सं. ) उल्लास, पेच, दुख,  
कष्ट, तकलीफ, चिंता, कष्ट, प्र-  
बन्ध, फूट, विरोध, भेद, राजदूत,  
व्यवहार ।

५२५२थि ( सं. ) उद्यमी पुरुष,  
बौद्ध धूपकरनेवाला, मामला सम-  
झानेवाला, दखल देनेवाला ।

५२५२२-३ ( सं. ) खड़ा मीठा,  
खट मिठा, [ स्वेदज जीव ।

५२५४ ( सं. ) खटमल, एक

५२२२ ( सं. ) छः रस, छः स्वाद,  
बेमेल [ बेमेल, कठनाइयाँ फिक ।

५२२३ ( सं. ) रागके छः प्रकार ।

५२२४ ( सं. ) कामकोष, लोभ  
मोह मद मत्सर ये छः शत्रु ।

५२३ ( सं. ) तीता, बेनी, साध,  
नौकर चाकर, सचारी, ठाठबाट,  
कुटुम्ब, विवाद, झगडा, पेटी,  
अभिवोग ।

५२३३ ( सं. ) हिन्दुओं के प्रसिद्ध  
छः शास्त्र, १ सांख्य, योग वेदान्त,  
मीमांसा, न्याय, वैशेषिक ।

५२३४ ( सं. ) खड़ा अर्क, खड़ापन,  
तुर्ही, मिठास,

५२३५ ( सं. ) लू गाड़ी, गाड़ा, पुराने  
तंगकी भाड़ागाड़ी । [ लाभ पाना

५२३५ ( कि. ) मल्लाई करना,

५२३६ ( सं. ) खड़ापन, तुर्ही,

५२३७ ( सं. ) विशेषतः खड़ा,  
खड़ा और मीठा । [ मरहम, इल्ज,

५३ ( सं. ) घास, भूसा, तिनका

५३३ ( सं. ) बहान, बपक ।

५३३५ ( कि. ) प्रबन्ध करना,  
ठीक करना, लादना, बटोरना,  
पास पास रखना ।

५३३५-६ ( सं. ) परिधि, अहाता,  
सकान का बराब्दा, गल्ली ।

५३५३ ( सं. ) झन झन, अंगीठी,  
रोक, आड़ ! ( वि. ) साफ तौरसे ।

५३५३५ ( कि. ) खड़ाखदाना,  
बकवाद करना, खड़ाखदाना, रग-  
ड़ना, घिसना, झिक करना ।

अ० अ० ( सं. ) एक प्रकार की सूखी टिकलियों, सूखी चपाती ।

अ० अ० ( सं. ) कोई भी वह वस्तु जो खड़खड़ शब्द करती हो, भाड़ की गाड़ी, गरिय, विदार, पदच्युति ।

अ० अ० ( सं. ) तलवार, कृपाण, अग्नि, गेंडा का सींग ।

अ० ११-११ ( वि. ) योग्य, बचान, मजदूर, दुष्ट, पापी, अरम, खल ।

अ० ११-११-११ ( सं. ) दुलरी, लात फटकारना ।

अ० अ० ( सं. ) पृथक् पृथक् जातिका अन्न । [ खरद करना ।

अ० अ० ( कि. ) झीलना, अप्रिय

अ० ११ ( म. ) करारा, टीका, ऊँची जार का इवमन, अप्रिय शब्द करनाका । [ अगमान ।

अ० अ० ( वि. ) सुरहरा, विषम,

अ० अ० ( कि. ) गड़गड़ाना ।

अ० अ० ( सं. ) शोरगुल, कोल-हल, हुलहुल, रौल, हड़बड़ी,

अ० अ० ( सं. ) तरल पदार्थ की ठंड से जमी हुई परत ।

अ० अ० ( सं. ) खरबूजा,

अ० अ० ( सं. ) जोरकी खड़खड़-हट, झगड़ा, विवाद ।

अ० अ० ( कि. ) खड़खड़ाना, खड़े-बढ़ाना, बकनाह करना, सम्पन्नी ।

अ० अ० ( कि. ) कूटना, नष्ट करना, फैसाना, पेच में डालना, गंदा करना, मूर्च्छित होना, हटाना, उखाड़ना छिड़कना, लीपना, दोष लगाना ।

अ० अ० ( सं. ) पादुका, खड़ाई, खड़ा ऊभा । [ अदा, बिल, हुंसी ।

अ० ११-११ ( वि. ) देव, बाबिशुल

अ० अ० ( सं. ) सूखी चास का डेर, चास का गड

अ० अ० ( कि. वि. ) कबकड़ाहट, के साथ, चंचलता से ।

अ० अ० ( सं. ) अकाल, दुभिक्ष, जगला बल तेंदुआ, चीना ।

अ० अ० ( सं. ) दावान, मसिरात्र,

अ० अ० अ० ( सं. ) सुहागा ।

अ० ( सं. ) एक प्रकार की सफेद मिट्टी चाँद, खरिया मिट्टी पर-रा

अ० अ० ( सं. ) मिश्री, कन्द, खेदार शकर । [ बल

अ० अ० ( वि. ) सफेद किना हुआ

अ० अ० ( सं. ) सरे मैदान, मैदान-नमे, खुल्लमखुल्ला, सबों के सामने ।

अ० ( सं. ) जूतीका पिछला हिस्सा, जो एड़ी के ऊपर होता है ।

अक्षरभण्ड (सं.) सनसव का शब्द,

अक्षरभण्ड-६ (सं.) अपराध बैठ  
निकालने का काम, देव,

अक्षरभण्ड ६२वीं (कि.) जुगली  
करना, दोष बैठना।

अक्षरभण्ड (कि.) सोदना, कुरेदना,

अक्षरभण्ड (सं.) भाग, हिस्सा, टुकड़ा,  
बिमान, जाका भेगिया चोली के  
सिने एक कपड़े का टुकड़ा, जण,  
महाद्वीप, अलग, { जुमाना।

अक्षरभण्ड (सं.) कर, भेंट, दण्ड,

अक्षरभण्ड (सं.) तोड़, नाश, तरबाद,  
काट।

अक्षरभण्ड-डी ११अक्षरभण्ड-६ (कि.)  
डेरका डेर सस्ते दामों पर खरी-  
दना, मिलाना, आपस में मिलकर  
निपटना, हिस्सेदारी से बांटना।

अक्षरभण्ड (कि.) अक्षरभण्ड का  
कारण बतानावाला।

अक्षरभण्ड (वि.) अक्षरभण्ड, दूटा,  
बिलारा, अक्षरभण्ड ११अक्षरभण्ड, अपमा-  
नित, झूठा किया हुआ।

अक्षरभण्ड, अक्षरभण्ड, अक्षरभण्ड (सं.)  
दूटाफूटा रह, बरबाद भूमि।

अक्षरभण्ड (सं.) सहायक, मददगार,  
आधीन, छोटा। करद।

अक्षरभण्ड-आक्षरभण्ड (कि.)

साक का डेर सस्ते भाव बेच  
काटना, कम कीमतको हिस्से रसी  
से आपस में बांट लेना।

अक्षरभण्ड (सं.) तमस्तुक, मुचलका,  
कजें की रसीद, पेसाक्षरभण्ड बिक्री  
का कार्य धरेक्षरभण्ड गिरबा या  
रहन रखने का धन्वा, लेख प्रमाण।

अक्षरभण्ड (सं.) लेख प्रमाण, मुच-  
लका, तमस्तुक, चिट्ठी पत्री।

अक्षरभण्ड (सं.) समाप्ति, अंत, आखिर,  
पूर्ण, परिणाम।

अक्षरभण्ड ३२वुं (सं.) समाप्त करना,  
पूर्ण करना, अंत करना।

अक्षरभण्ड (सं.) शक, सन्देह, डर, भय,

अक्षरभण्ड (सं.) रोजनामचे आग  
रोकड़ से खाताबही में रकम  
लिखना खाताबही में हिसाब  
लिखना।

अक्षरभण्ड (कि.) रोजनामचे में में  
बहीभाते में हिसाब लिखना।

अक्षरभण्ड (सं.) भूल, गलती, अप-  
राध, हानि, घाटा, पछतावा।

अक्षरभण्ड (कि.) उबळना, धीरे  
धीरे खौळना, सनसनाना।

अक्षरभण्ड-६१वुं (कि.) जल्दी निकाल  
देना, जाने डकेलना, बकाना,  
बबराना।

अक्षुं ( सं. ) खड़, मोटा,  
 अक्षुं ( कि. ) जल्दी जाना, सीघ्र  
 जाना । [ ग्रह, सूर्य ।  
 अक्षत ( सं. ) तितली, छगनू, तारा,  
 अक्ष-अक्ष ( सं. ) लिप्त, सावधानी,  
 पूर्वक जीवन ।  
 अक्षि ( सं. ) क्षानिक, बाहु,  
 ज्ञान से उत्पन्न वस्तु ।  
 अक्ष ( सं. ) अक्षि, घृणा, पुन,  
 उद्योग विज्ञा ।  
 अक्षि ( वि. ) विवित, उद्योगी,  
 अक्षि-अक्षि ( सं. ) चालाकी,  
 मक्कारी, छल, पाखण्ड, दुष्टता ।  
 अक्षुं ( वि. ) हटो, बिही, छकी,  
 चालाक, पाखण्ड । [ खं ।  
 अक्ष ( सं. ) चाह, पूछ, खर्च, व्यय,  
 अक्षुं ( वि. ) योग्य, उचित, ठीक ।  
 अक्ष ( सं. ) चाह, पूछ,  
 अक्ष ( वि. ) खपरे नारिया  
 आद मे छाया हुयी मकान की  
 छत, खपरा ।  
 अक्षुं ( कि. ) बिक्री होना, खर्च होना  
 व्यय होना, खर्च होना, चाह  
 होना, खपती होना ।  
 अक्षुं ( सं. ) बांसकी किमती,  
 बांसकी खपती ।

अपेरी ( सं. ) एक प्रकार का कीड़ा  
 जो खेती को हानि करता है,  
 खपरा नामक कीड़ा ।  
 अपेरी ( सं. ) बांसकी खपतियों  
 की बनी चटाई ।  
 अपेरी ( सं. ) खोपड़ी, पात्र विशेष,  
 साधुआ का पात्र, देवी का प्याला ।  
 अपेरी-अपेरी ( कि. ) मेट में  
 जाना, बलि में जाना ।  
 अपेरी ( नि. ) कुपित, क्रोधित,  
 नाराज, नाखुश, अप्रसन्न ।  
 अपेरी-अपेरी ( कि. ) नाराज होना,  
 अप्रसन्न होना ।  
 अपेरी ( सं. ) सम्वाद, समाचार,  
 इतिहास, सन्देश, सूचना, गप्प,  
 अफवाह, फिक, झान, इल्म, ध्याना  
 अपेरी-अपेरी ( कि. ) खबर  
 देना, सूचित करना ।  
 अपेरी-अपेरी ( कि. ) फिकर र-  
 खना, चौकसी रखना, ध्यान र-  
 खना, क्या होता है इसका खयाल  
 रखना । [ चिन्ता करना, बदला लेना ]  
 अपेरी-अपेरी ( कि. ) ख्याल करना,  
 अपेरी-अपेरी ( सं. ) देखो अपेरी ।  
 अपेरी-अपेरी ( वि. ) सावधान, होशियार  
 चतुर, युष्मी, समझदार, प्रवीण

अभक्ष्यारी (सं.) सावधानी, होखि-  
वादी, प्रवीणता, वादुरी ।

अभक्ष्य (सं.) कबूतर, कपोत,  
काकता । [ का स्थान ।

अभक्ष्यभक्ष्य (सं.) कबूतरोंके रहने  
अभक्ष्य (कि.) बरषराहट, हिलो-  
रना, हलचल मचाना । [आन्दोलन।

अभक्ष्य (सं.) बरषराहट, हलचल

अभक्ष्य (सं.) स्क्व, कंधा, कौंधा,

अभक्ष्य (सं.) नरियल की खरेटी  
को खराद पर चढ़ाने का काम ।

अभक्ष्य (कि.) नरियल की खरेटी  
को खराद पर चढ़ाना । [खरादी ।

अभक्ष्य (सं.) खुरचनेवाला करछा,

अभक्ष्य आसाभी-भर (सं.) वह जो  
भार और हानि सह सके ।

अभक्ष्य (कि.) सहन करना, सहना,  
भुगतना ।

अभक्ष्य (सं.) धैर्य, सत्र, नम्रता,  
सुआफी. सहन शीलता, क्षमा ।

अभक्ष्य (सं.) खमीर, पाचक शक्ति,  
रुचि, स्वाभाव, रोष ।

अभक्ष्य (सं.) कमीज, शर्ट, इंग्रेजी  
काट छोट का कुरता ।

अभक्ष्य (सं.) स्तंभ, धंभा, टेका ।

अभक्ष्य (सं.) गर्दम, गदहा, गधा  
( वि. ) चपटा, पैना, तेज ।

अभक्ष्य-भक्ष्य ( कि. ) दूसरों के  
साथ मिलाप करना, दुब में होना।

अभक्ष्य-भक्ष्य ( कि. ) दुब में  
जाना, दुबमें सहायभूति दिखाने

को जाना । [अवाकत का व्यय।

अभक्ष्य (सं.) व्यय, खर्च, खपत,

अभक्ष्य-भक्ष्य ( कि. ) व्यय करना,

अभक्ष्य-भक्ष्य-भक्ष्य ( वि. ) ख-

र्चिला, खर्च करने में उदार, अप-

व्ययी, व्ययी ।

अभक्ष्य ( स. ) खर्च करने को रुपया,

जेब खर्च, ( वि. ) दैनिक प्रयोग के

लिये, साधारण, छुटाव, उड़ाव ।

अभक्ष्यभक्ष्य ( सं. ) व्यय करने को

रुपया पैसा । खर्च बर्च ।

अभक्ष्य ( सं. ) साज, सज्जी, जुळ,

एक स्वर, बड़ड़ । [ नीच ।

अभक्ष्य ( सं. ) खूनकी बीमारी,

अभक्ष्य ( सं. ) मराहम, इलाज, पास,

कच्चा सीसा, कच्ची मणि ।

अभक्ष्य ( कि. ) लीपना, खुपड़ना

गंदा करना, छटना, बिगाड़ना ।

मान हानि करना, फँसाना ।

अभक्ष्य ( कि. ) नष्ट होना, दागी

होना, कलंकित होना । [ मजमून ।

अभक्ष्य ( सं. ) कच्ची नकल, मसौदा,

अभक्ष्य ( वि. ) मजबूत, दृढ़,

अथ भस्म-प्रश्न ( कि. ) छंद  
देना, त्याग देना, सकल ।

भस्म श्वं ( कि. ) विद्या होना ।  
गमन करना । [ नक्षत्र ।

અરવો તારી ( સં. ) ગિરતા હુવા

भक्ष्य ( कि. ) खोदना, खुरचना,  
हटाना, कुदाजी से खोदना ।

भरपी ( सं. ) एक प्रकार की कु-  
वाली, छुपी ।

अरपे। ( सं. ) कृपा, [ असमान ।

अथर्ववेद ( वि ) कुरदरा, विषम,

अ२३ ( सं. ) बेसो अ० । लिना ।

‘भरव’ (क्रि.) गिरजाना, कुम्ह-

अरमली ( सं. ) बास की पत्ती ।

अरसाक्षी (सं.) एक वनस्पति  
विशेष, एक प्रकार का पौधा ।

अराअर (क्रि. वि.) वेशक, दर-  
हकीकत, वस्तुतः सचमुच.

अराभरी (सं.) सच्चाई, सत्यता,  
गुण दोष परीक्षा सम्बन्धी समय.

वृक्षम समय, आफत, विपत्ति,

५२१६ ( सं. ) खराद. चक्र मंत्र.

५२१५३ ( सं. ) सचाई, सत्यता,  
चोखापन,

अशय ( वि. ) दुष्ट, दुष्ट,

भरणं कर्तुं ( क्रि. ) हानि करना.

पल्लव करना, नष्ट, करना, बर्बाद

करना, बिगाड़ना ।

ਪੰਜਾਬ ( ਈ. ) ਦੂਰ, ਬਹੁਲ-  
ਦੂਰ, ਰਾਜਕੀ, ਨਵ,

अश्वी ( सं. ) दुरासन, वरनासी,  
हानि, चाटा, श्यामत, व्यापक ।

ખરી ( સં. ) કુર, ઠીક, સત્ય,  
ન્યાય, ઠક્તિ,

अरी६ ( वि. ) कज, कीमना,

भरीद्वार ( सं. ) केता, कयकर्ता,  
ग्राहक, [ करीदना ।

अरीष्ट-१३५ ( कि. ) मोललेना

ਅਦਰੀਸ਼ਭਾਵ ( ਸ. ) ਅਸਲੀ ਮੂਲ  
ਲਾਗਤਮਲ, ਉਚਿਤਮਲ ।

अरीही ( स. ) बरीद, सौदा.

भरी ( सं ) वह फसल जो शीतकाल में काटी जाती है, खरीफ ।

५३ ( स. ) सत्य, ठाँक, उचित,  
मुनासिब, ( कि. वि. ) अच्छा,  
ठाँक, ( सं ) कौलाद ।

अ३'ओ३' ( स. ) बुराभळा, सच्च  
झठा, सत्य असत्यका मिश्रण ।

भरे-भरेभर, भरेभर-भरेभर  
(क्रि. वि.) सचमुच, वास्तवमें,  
हकीकतमें, ठीकठीक ।

५३६। (सं.) वर्तनपरलेपन, वासन  
पर पोतना । वर्तनपर खरोच ।

अक्षर ( सं. ) गाय अथवा मैसका  
बचना उत्पन्न होने के बाद प्रथम  
गुण । बीका ।  
अक्षरी ( सं. ) चिरन, गरारी ।  
अक्षरी-रेरी ( सं. ) लुरां, खरा ।  
अक्ष ( सं. ) १०,००,००,००,०००  
अक्ष ( सं. ) सरल, पत्थरकी सरल  
दुष्ट, नीच, अधम ।  
अक्ष ( सं. ) संसार, छद्म ।  
अक्षतो ( सं. ) पानसुपारी, इत्यादि  
रखनेकी बेली ।  
अक्षस ( वि. ) समाप्त, पूर्ण, खत्म,  
व्यतीत, स्वतंत्र, छोड़ा ।  
अक्षसी ( सं. ) महाह, खेवट,  
केवट, समुद्री अनुष्य, जहाजी  
खपरे फेरनेवाला । [ खल ]  
अक्षी ( सं. ) गिलहरी, एकप्रकारका  
अक्षी ( सं. ) खल, फा ।  
अक्षेयी ( सं. ) बेली, बोरी ।  
अक्षेय ( सं. ) खलल, विघ्न, बाधा,  
हानि, बखेड़ा ।  
अक्षयवपुं-वापुं ( कि. ) रिश्वत-  
देना खिलाना, चराना, उठाना,  
उस्काना, भोजनमें बिषदेना  
पूँसदेना ।  
अक्षस ( सं. ) आदत, प्रकृति,  
स्वभाव, पृष्ट, उहलुका, सेवक ।

अक्षीस ( सं. ) दुष्टात्मा, दुष्टात्मा,  
खाल, चटोरा, हम्ह, बिना  
चिरका रासस ।  
अक्ष ( सं. ) खाल, कुजली,  
घोड़ों के लिये एक भौतिकी घास,  
खस । [ अक्षीम के बीज ।  
अक्षअक्ष ( सं. ) पोस्त के शाने  
अक्षअ ( सं. ) स्वामी, पति, कान्त,  
अक्षर ( सं. ) सतर, पंक्ति, चांद,  
जरब ।  
अक्षरत ( सं. ) स्वभाव, आदत,  
प्रकृति, मिजाज ।  
अक्षपुं ( कि. ) हिलना सरकना  
दूरजाना, सरकना ।  
अक्षिमाक्षुं ( वि. ) लज्जित, व्यापित,  
व्याकुल, दुखी ।  
अक्षी ( सं. ) बधिया, औंड़ू ।  
अक्षीअपुं ( कि. ) चलेजाना,  
सरकजाना, खसकजाना ।  
अक्षस-न ( कि. वि. ) यकीनन,  
मुख्यतया, खासकर, विशेष करके ।  
अक्षेपुं ( कि. ) हटाना, एक  
तरफ करना ।  
अक्ष ( सं. ) नीच, दुष्ट,  
अक्षे ( सं. ) कुली, कुरखी एक  
त्रितयोग । [ का खलखल शब्द ।  
अक्षअक्ष-अक्ष ( सं. ) एक प्रकार



- अभ्युपगम ( कि. ) उचलना, उठाना, उचलना, उचलना ।  
 अभ्युपगम ( कि. ) मनमें चढ़ाना, मामूली बलबे में होना, उचलना ।  
 अभ्युपगम ( सं. ) चबराहट, हैरानी, हलचल । [ राना अटकना ।  
 अभ्युपगम ( कि. ) रोकना, ठहराना ।  
 अभ्युपगम ( सं. ) खलिहान, बखार, खली, खलिहान का सीमा या चौक । [ बखारी, फूटने का फर्क ।  
 अभ्युपगम ( सं. ) खलिहान, खली, भा ( सं. ) स्वामी, राजकुमार, अभ्युपगम ( सं. ) रोग नाशक औषधि रोग हारी जड़ीबूटी ।  
 अभ्युपगम ( सं. ) ध्यान, पूजा, दोष हटाने की प्रकृति, सिद्धान्त ।  
 अभ्युपगम ( सं. ) इधर उधर हटाना, भाग्य-दो ( सं. ) बोधे की बात ।  
 भाग्य ( सं. ) भेदिया, गुप्त, दूत, जासूस ।  
 भाग्य-भाग्य ( सं. ) पेच, उलझाव, ऊच, नीच, निर्बल, तुच्छ हिसाब में भूल ।  
 भाग्य भुक्त ( वि. ) उच्चनीचा पेचीमा, उलझनदार, असमान ।  
 भाग्य ( कि. ) पीछा, बीचना,

- भाग्य भुक्ती ( सं. ) गमिनी, कोमें, हैट ।  
 भाग्य ( सं. ) बली, कोना, टेका, हिस्सा, सक, सम्बेद, रोच, अटकना ।  
 भाग्य ( सं. ) भूमि जो किनारे के पास पड़ी हो, नमक की दल दल गोदों के चरने का स्थान, चरागाह । [ के रहने का घर, भाग्य ( सं. ) बेस्वाकब, रीतिनी भाग्य ( सं. ) शकर, चीनी, साक इत्यादि की दूदी धार ।  
 भाग्य-पे ( सं. ) लकड़ का पत्थर का मूल । [ ऊखली ।  
 भाग्य ( सं. ) ऊखल, उलझल भाग्य ( कि. ) लोदना, नष्ट करना, बुकनी करना, चूर चूर करना फूटना, भाग्य ( सं. ) बीस मण का बज्र, कन्धी ।  
 भाग्य ( सं. ) चौड़ी मुड़ी हुई तलवार, खाड़ा ( वि. ) दूटा, खिराहुवा ।  
 भाग्य ( सं. ) उत्सुक, अभिलाषी, ध्यान, उत्सुकता पूर्वक सोच या पीछा । [ गर्दन, सहायता, मदद ।  
 भाग्य ( सं. ) कंधा, स्कंध, बैल की भाग्य ( कि. ) सुतक पुरुष को लेखाना । सहायता देना, मिलकर काम करना ।

**अभिज्ञे** ( सं. ) वह जो अर्थों को या मृतक को ठे जाता है, श्वाभ-मदी, मिलकर काम करनेवालों का सहायक ।  
**अभिधुं** ( सं. ) किस्त ऋण, भाग । सामयिक रूपों की किस्त ।  
**अभिपथु** ( सं. ) कमी, दोष, ऐष, घन्वार, दरार, कफन, सब परिधान बन्न, मुँहपर लपेटने की चादर ।  
**अभिपथुं** ( क्रि. ) खुरचना, छीलना ।  
**अभिप-भ** ( सं. ) स्तंभ, गंधा,  
**अभिपी** ( सं. ) कास, श्वास खांसी,  
**अभिपि** ( सं. ) खात, गर्त, नाला गहवा, भोजन, खन्दक ।  
**अभिपि** ( सं. ) अंतमें लगाया जाता है ( प्रत्यय ) जिसका पेटू, भकोसु अर्थ होता है । [ मरा सर्वभक्षी ।  
**अभिपि** ( सं. ) पेटू, खाऊ, मुख-  
**अभिपि** ( सं. ) स्वादिष्ट, इच्छा, चाह, आवश्यकता, जरूरत ।  
**अभिपि-भ** ( सं. ) भस्म, राख, कोयला, सर्वनाश । [ आज्ञाकारी ।  
**अभिपि** ( सं. ) नम्र, नीच, छोटा,  
**अभिपि** ( सं. ) पलाश वृक्ष, एक जंगली पेड़ ।  
**अभिपि-पि** ( सं. ) सिकी हुई रोटी ।  
**अभिपिपी** ( वि. ) नष्ट, बरबाद,

**अभिपी** ( सं. ) तपस्वी, दीन, गरीब, देहाती, गंधार ।  
**अभिपि** ( वि. ) भोजन, खाना, खाद्य  
**अभिपि-पि** ( सं. ) पापद, खाजा ।  
**अभिपि** ( सं. ) चारपाई, साटिया, लटकन, झूलन, पळना, लाभ, मुनाफा, फायदा । [ निर्दय पुरुष ।  
**अभिपि** ( सं. ) नूचड़, कसाई,  
**अभिपि** ( सं. ) नूचड़खाना, वह स्थान जहाँ पशु मारे जाते हैं ।  
**अभिपि** ( सं. ) खाट, पलंग, पलना ।  
**अभिपि** ( सं. ) खाट में पड़जाना, रोगी होना, अस्वस्थ होना । [ उठाना ।  
**अभिपि** ( क्रि. ) लाभ उठाना, फायदा  
**अभिपि-पि** ( वि. ) अत्यंत खट्टा,  
**अभिपि** ( सं. ) खट्टा, तुर्षा, नाखुश, रंजीदा । [ पोल ।  
**अभिपि** ( सं. ) गहवा, खाई, खोखला,  
**अभिपि** ( सं. ) खाई, संग समुद्र, नाळा, कोळ ।  
**अभिपि** ( सं. ) भैसोंका मुण्ड ।  
**अभिपि** ( सं. ) गहवा, हानि, टोटा ।  
**अभिपि** ( सं. ) सुरंग, खानि, खान, तल घर, खदान, बैठक, बोरो के लिये मुना हुवा अन्न ।  
**अभिपि** ( सं. ) भोजन आहार, दाबत,

आतर ( सं. ) खाद, वाँछ, मेहमा-  
नकारी, अतिथि सेवा, पसपात,  
तरफदारी, संधकमाना, घर फोड़।

आतर भभा ( सं. ) विश्वास, तो-  
षण, तसली, रजामन्दी, संतोष  
भरोसा।

आतरदारी ( सं. ) मेहमानी, खातिर,  
लिहाज, आदर। [ भभा।

आतरनीसा ( सं. ) देखो आतर-

आतर पाइना ( सं. ) संध कमाने  
वाला, घर फोड़नेवाला।

आतरु ( कि. ) बुरी रीति से का-  
ममें लाना, दुर्वाक्य कहना, नाम  
पुकारना, खाद देना, खाद डालना।

आतरी ( सं. ) देखो आतरभभा।

आताथी ( सं. ) कर या लगान  
की राशि।

आताथी ( सं. ) हिसाब की  
किताब में शेष रकम।

आताथी ( सं. ) बही खाता, मा-  
रतीय ढंग की हिसाब लिखने की  
किताब। [ भाग, मुहकमा।

आतु ( सं. ) हिसाब, विषय, वि-

आतो पीतो ( वि. ) खा पी कर  
खुश रहनेवाला, अच्छी दशामें,

आदी ( सं. ) खर बर खादी  
कपड़ा। [ रसद, दोष, ऐव।

आध ( सं. ) रागि, टोटा, भोजन,

आन ( सं. ) खानी, माकिफ, राज-  
कुमार, खान सामी पदवी।

आनगी ( वि. ) घर, गुप्त, छिपा,

आनपान ( सं. ) खाना पीना,

आनाअशमी ( सं. ) दुर्दशा, ब-  
बादी, विपत्ति।

आतु ( सं. ) भोजन, आहार, खन,  
स्थान बावक प्रत्यय। खराक।

आतु अराअशमी ( वि. ) तेरा  
नासहो।

आनेआना ( वि. ) तेरा भला हो,

आप ( सं. ) दीक्षा, दर्पण, ऐना।

आपथु ( स. ) शबपरिधान वस्त्र,  
कफन, [ हीराकसीस ]

आपरिथु ( सं. ) कलमीशोर, वा

आपु ( कि. ) खुरचना खुदरना।

आपु-आलोअिथु ( सं. ) एक  
कम पोला जमीन में छेद, बिल,  
आवश्यक, मुख्य, खास।

आप ( स. ) कंचा, स्कंध, स्तन,  
खंभा।

आभथु ( सं. ) कमगहिराबिल,

आभी ( सं. ) कमी, न्यूनता,

असम्पूर्णता, नादानी, अज्ञानता,  
चाह, आवश्यकता, यकती।

आभुआ ( कि. वि. ) यूँही, ठीक ठीक  
सचमुच, वास्तविक। [ धैर्य।

आभोअ-थी ( स. ) सत्र, मौन

**आ३** ( सं. ) नमक, छार, बैर, छाय, छाह, बैर, कीना ।  
**आ३-२६** ( सं. ) सूखे छुहारे, छुहारे । [ नमक की खान ।  
**आ३५१२** ( सं. ) नमक का गड़ा  
**आ३५१** ( सं. ) मल्लाह, खलासी, समुद्री मनुष्य, आगे। खपरेल जानेवाला ।  
**आ३३** ( वि. ) शोही, बुरावाहने वाला, ब्रेषी डाह करने वाला कुठनेवाला, देखकर जलने वाला ।  
**आ३** ( वि. ) नमकीन, खारा,  
**आ३३** ( वि. ) बेहद खारा, अति नमकीन ।  
**आ३५१३** ( सं. ) नमकीनपानी, खारापानी, समुद्रीजल,  
**आ३१** ( सं. ) कार्बोनेट ऑफ सोडा  
**आ३३** ( वि. ) नमकसे चिरा हुआ,  
**आ३** ( सं. ) चर्म, चमड़ा, खलि-हान, बखारी, खत्ती, गडा, खदक,  
**आ३३३** ( कि. ) खाली करना, रिक्त करना ।  
**आ३३** ( कि. ) ठहराना, रोकना ।  
**आ३३** ( सं. ) चमार, खटिक,

**आ३३** ( सं. ) सरकार से कीजुई नवी भूमि । खालसा भूमि । जमीन का कर न देनेवाली रियासत ।  
**आ३३** ( सं. ) ध्वनि का बोध । ( वि. ) खाली, व्यर्थ, बे पैसा, दान, ( कि. वि. ) केवल, एक सिर्फ ।  
**आ३३ ५३३** ( कि. ) बे प्रयोग या शून्य पड़ा रहना । खाली, निर्बल होना ।  
**आ३३३३** ( कि. वि. ) अकारण, बेकाम, व्यर्थ, नाहक, निर्मूल, बे सबब, निष्काम ।  
**आ३३** ( सं. ) वस्त्र बिनने का एक औजार, ढरकी, नारी, बेत या नरकट का खाली, टुकड़ा ।  
**आ३३३** ( सं. ) शुद्ध, पवित्र, सीधा सादा, निरपराध ।  
**आ३३-३३** ( सं. ) पति, ससम स्वामी, मातृक ।  
**आ३३** ( कि. ) खाना, अक्षय्य करना निगलना, उड़ा जाना, सिक्कना, ( सं. ) खाने योग्य, मिठाई ।  
**आ३३-३३-३३** ( सं. ) अनोखा विशेष, निजका, अपना, आती, जल बुझ भूमि, तटैया ।

भास भाषा (सं.) सख सम्भाष, सुख सम्भाष ।

भासभाषा-भूषा-भूषा ( सं. )  
जुतिवों से पिछने का, जुतिवों  
कानेवाला, आचरणहीन बर्तन ।

भासु ( सं. ) जूती, जूता, पन्हेवा  
पदत्राण, निरुद्धा मनुष्य ।

भासु ( सं. ) उहलना, सेवक,  
चाकर, साईस ।

भासित ( सं. ) जाय दाद, आदत,  
स्वभाव, गुण । [ सुन्दर, मनोहर

भासु ( वि. ) उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा

भाण ( सं. ) परनाला, मोरी, पे-  
शाब जाने की नाली ।

भाणकुंड़ी ( सं. ) वह बच्चा, नाक-  
दान । [ औडानाबदान ।

भाणकुने ( सं. ) यहिराचह बच्चा,

भाणपु ( कि. ) रोकना, ठहराना  
जबरोव । [ टकाव ।

भाण ( सं. ) आह, रोहोह, अ-  
भि भि ( सं. ) कह कहा देकर  
हंसता, खूब जोर की हँसी ।

भिन्नी ( सं. ) चावल और दाल,  
का सेल, छपर, मिश्रित ।

भिन्नी ( सं. ) मङ्गुली, गोलमाक,  
मिश्रण, चिकड़ी,

भिन्नी भिन्नी ( सं. ) खूब खीर,  
कच्चा खूब, पसंदास । [ खेचरा

भिन्नी ( सं. ) एक प्रकार का खूब  
भिन्नी-भिन्नी ( सं. ) सेवा, दहाक,

चाकरी, दफ्तर, दरबार ।

भिन्नी-भिन्नी-भा ( सं. ) सेवक,  
उहलना गुलाम, नौकर ।

भिन्नीपु ( कि. ) बिदना, ठोकेली,  
करना, ताना देना,

भिन्नीपु ( सं. ) बिदना, कुन्ना,  
सफा होना, नाकसा होना ।

भिन्नी ( सं. ) दाल, दालू भूमि, खड्ड,  
दर, घाटी, दो पहाड़ों के बीच की  
जगह । [ मान, इज्जत ।

भिन्नी ( सं. ) पद, पदवी, उपाधि,

भिन्नी ( वि. ) खेदित, दुखित, बकित,  
उदास, मलिन, [ निराशा ।

भिन्नी ( सं. ) उदासी, मलिनता,

भिन्नी ( सं. ) मानवक, मानपूर्वक  
दिया हुआ जामा या सनावक ।

भिन्नी भाडी ( सं. ) चूक और  
कीला, चक्को में का कीला और  
झानी ।

भिन्नी ( सं. ) कानगी बाँटनीत,  
गुप्तविचार, कोठरी, दफ्तर्-  
तनहार ।

भिक्षु ( कि. ) फूलना, खिलना,  
विकसित होना, गोट लगाना, मगजी  
लगाना ।

भिक्षाडी-भेक्षाडी ( सं. ) खेलने  
वाला, चञ्चल, नट ( वि. ) गुणी,  
चतुर, होशियार । [ रोक, टोक ।

भिक्षी भटके-भट ( सं. ) आद  
भिक्षेधु ( सं. ) खिलौना, हल्का  
गहना, खेलने की वस्तु ।

भिक्षेक्षी ( सं. ) गिलहरी ।

भिसनिस ( सं. ) एक भौंति की  
किशमिस, दाख विशेष ।

भीष् ( सं. ) क्रोध, रास, गुस्सा  
कोप, ताव ।

भीटी ( सं. ) एक छोटी लकड़ी की  
बनी चटखनी या रोक । खूटी ।

भीमे ( सं. ) कतरा हुआ मांस,  
एक प्रकार की चाँवलों की बनी  
मिठाई । [ से बना पदार्थ, खीर ।

भीम ( सं. ) दूध शकर, और चावल

भीम ( सं. ) खमीर ।

भीम ( सं. ) फोड़ा, फुन्सी कठोर  
और नरम आँखों का बलगम, गीद ।

भीषी ( सं. ) पित्त, चटखनी, मेख,  
कील, एक प्रकार का रोग ।

भीषी भूँडी ( सं. ) देखो भीष-  
भूँडी ।

भीषी ( सं. ) कीला मेख, खूँटा,  
भीसा भाई ( सं. ) जेब कट, थिरक  
कट । [ हाथ खर्च ।

भीसा भर्ष ( सं. ) जेब खर्च,  
भीसा भावी ( सं. ) गरीब, दरिद्र  
निर्धन जिसके पास १ पैसा भी  
नहो । [ हिन हिनाहट ।

भीषु ( सं. ) जेब, पार्केट कुँसारी  
भुंभु ( कि. ) बेचना, छेदना,  
दर्द करना ।

भुंभावुं, भुंभावी भेवुं भुंभी भेवुं  
( कि. ) सपट लेना, छीन लेना,  
खींच लेना, पकड़ लेना ।

भुंटी ( सं. ) कीला, कीला, दीनार  
में लगाने की खूँटी ।

भुंथि ( सं. ) सौंठ,  
भुंटी ( सं. ) मेख, खूँटा, कंजर  
डालन की फीस, जंगली चक्की को  
पकड़ कर घुमाने का डंडा ।

भुंटी धाखवे ( कि. ) जड़ जमाना,  
भुंथु ( कि. ) कुचलना, रौंदना,  
पैर से दबाना ।

भुंभरी ( सं. ) टूँठ, कांटा,  
भुंभरी-भी ( सं. ) बाज, सुबाज ।

भुंभे ( सं. ) कमी, चटी, म्यून्ता,  
भुंभु ( कि. ) स्थिर होजाना, कतम  
होना । ब रहना ।

पु० ( सं. ) विवाहिता, हरि, मुकलिव, छडी, कपटी विवास-  
वार्ता ।

पु० ( सं. ) चौदी या तौम्बे का  
सिके, रेखगारी, बिलर, बेंज ।

पु० ३२५ ( कि. ) बेचरेना,  
बेचडालना । [दिरेखाओंका मेल ।

पु० ( सं. ) कोना, नोक, सिरा,

पु० ( सं. ) स्वयम्, आप, जाती,  
निज । [ शक्तिमान् ।

पु० ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा, सर्व

पु० ( वि. ) स्वर्गीय, पवित्र,  
देवी । [ रवादी, ईश्वरभक्त ।

पु० ५२२ ( सं. ) आस्तिक, ईश्व-

पु० ५२३ ( सं. ) धीमान्, स्वामी,  
सर्वशक्तिमान् ।

पु० ( सं. ) रक्त, शोणित, बध,  
हत्या, रक्तपात, कल ।

पु० ३२५ ( कि. ) बध करना,  
मारवाटना, कतल करना ।

पु० ३२७ ( सं. ) बध, कतल, संहार,  
हत्या ।

पु० ३२८ ( सं. ) काग, कोना,  
देव, मोह, विरोध, बैर, [ अधिक ।

पु० ( सं. ) कासिक, हत्यारा,

पु० ( सं. ) बहल, अधिक,  
उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

पु० ३२९ ( सं. ) रूपवान्, सुन्दर,  
अच्छी शकलका, चमकदार ।

पु० ३३० ( सं. ) शान, सौन्दर्य  
सुख, सुदौली, सुन्दरता, चमक,  
उत्तमता ।

पु० ( सं. ) विशेष लक्ष्य, निवे-  
षता, उत्तमता, गुण, योग्यता,

पु० ३३२ ( वि. ) उत्तम, सुन्दर,  
विशेषतायुक्त, शानदार ।

पु० ३३३ ( सं. ) एक छोटा बाज,  
परात, फलोंकी बाली ।

पु० ३३४ ( सं. ) नशा, मतवाला-  
पन, मस्ती, अधिक नशेकी  
ऊँच, झपकी ।

पु० ३३५ ( सं. ) दूध की अवस्था  
रबड़ी या मोरे की सुरचन । कोई  
सूखा या कच्चा फल ।

पु० ३३६ ( वि. ) मोहित, प्रीति  
केवलीभूत, इच्छुक, ( सं. ) कृपा ।

पु० ३३७ ( सं. ) सूर्य, रात्रि ।

पु० ३३८ ( सं. ) कुर्वा, चौकी,  
आद्यसब । [ लकड़ ।

पु० ३३९ ( सं. ) एरण गाढ़ने का  
पु० ३४० ( कि. ) सुकना, प्रकट होना  
सामने आना, चोढ़े आना, फववा,  
झकड़ना ।

पुष्पाभित्ति ( सं. ) अर्ध, टीका, व्याख्या, व्यान, अनुवाद, निर्मलता, अभिप्राय, आशय, निर्णय, निचार संक्षेप, सारांश, फैसला, स्पष्ट साफ,  
 पुष्प-शु ( वि. ) सुलाहवा, प्रकट, साफ, स्पष्ट, नम्र, मैदान ।  
 पुष्पार ( वि. ) दुखित, व्यथित, संकटमय ।  
 पुष्पारी ( सं. ) दुख, संकट, व्यथा नाश, बर्बादी । [ प्रमुदित  
 पुष्प ( वि. ) प्रसन्न, मुदित, हर्षित  
 पुष्पकी ( सं. ) पैदल रास्ता, सूक्ष्म-भूमि । सड़क रास्ता ।  
 पुष्पभार ( सं. ) सुखद संवाद, श्रेष्ठ सन्देश, शुभसमाचार ।  
 पुष्पभूषा ( वि. ) सुहावना, रुचिर, मनोहर, दिलपसन्द, सुंदर, खूब सूरत । [ आनन्द ।  
 पुष्पभृती ( सं. ) हर्ष, प्रसन्नता,  
 पुष्पभोक्त ( सं. ) गंध, बास, बू ।  
 पुष्पभोक्ष ( सं. ) सुगन्धयुक्त ।  
 पुष्पभिन्न ( वि. ) आनंदी, हंस-सुख, सुशदिल, खिलाडी, लहरी ।  
 पुष्पाभत ( सं. ) चापलसी, कुम्ह-मंद, चाटुवाद, लज्जो-पत्तो ।

पुष्पाभित्ति ( सं. ) चापलस, कुशामदी । कतरा । [ कुपा  
 पुष्पाण ( सं. ) प्रसन्नता, सौभाग्य  
 पुष्पाधी ( वि. ) प्रसन्नता, और स्वस्थता ।  
 पुष्पी ( सं. ) हर्ष, प्रसन्नता, इच्छा, चाह । [ वि. ] ठीक, पूर्ण ।  
 पुष्प ( सं. ) भूमि-विन्द, ( कि. )  
 पुष्प ( सं. ) कुबड़, सुकीहुई, पीठ, मुड़ी हुई कमर । [ पीठ का  
 पुष्प ( सं. ) ( वि. ) कुबड़ी  
 पुष्प ( सं. ) कमी, चटो, न्यूनता, तंगी । [ कतल ।  
 पुष्प ( सं. ) रक्त, शोणित, बध, भेदो ( सं. ) कंकड़ा, कर्क ।  
 पुष्प ( सं. ) तकाजा, पुन उद्योग, गीच । [ प्रार्थना, विन्ती ।  
 पुष्पतापु-यातापु ( सं. ) कीचतानी  
 पुष्पपु ( कि. ) कीचना, कसना ।  
 पुष्पापुष्प-यी ( सं. ) ऐंचातानी, व्याकुलता, चबराहट ।  
 पुष्प ( सं. ) पक्षी, देव, आकाश गामी, विद्याधर । [ की एक किष्प ।  
 पुष्परी ( सं. ) पतंग, योग विद्या  
 पुष्प ( सं. ) जुताई, जोत ।  
 पुष्प ( कि. ) जोतना, इल चलांना केती करना, दरियाई यात्रा करना ।





भेदा ( सं. ) रंगीली, सुन्दरी,  
बट । नटी  
भे ( सं. ) व्यव, हव, चर्न, खपत ।  
भे ( सं. ) आदत, स्वभाव, कंदर,  
गुफा, मोद, गद्दा, छिद्र, चाल,  
भे ( सं. ) झलनी खाट, पालना,  
झोला, बैली ।  
भेभरा ( सं. ) कठ का बेट  
जाना, गले में सरसराहट,  
भेभई ( वि. ) सुनास्वर, सुरसुरा ।  
भेभरी ( सं. ) गीदरी, लंगड़ी,  
भेभरी ( सं. ) दमा, श्वास, रुद्ध  
मनुष्य, बूढ़ा ।  
भेभु ( सं. ) एक हिस्सा या  
मजमून प्राप्त करना और रुपये  
देना, सागर के महसूल का काम ।  
लकड़ी का खोसा, पजर, ठठरी ।  
भेभीर ( सं. ) काठी, ज्ञान, गद्दा,  
तकिया ।  
भेभ ( सं. ) तलाशी, दूढ़,  
भेभे ( सं. ) ढहड़ा, नपुंसक,  
जनाना, [ कमी, न्यूनता ।  
भेभ ( सं. ) गलती, भूल, हानि,  
भेभ ( सं. ) हानि लाभ, टोटा  
बफा । [ आक्स, डीलापन ।  
भेभ-३ ( वि. ) असत्यता, स्तुस्ती,

भेभ ( सं. ) बेरी, विकल्प, टाक  
मदोल । [ डुरीयाक ।  
भेभ ( सं. ) बदचलनी,  
भेभ ( वि. ) झूठ, असत्य, अनु-  
चित, अधर्मी, झुल्ला, जाली, बनावटी, कल्पित ।  
भेभ ( सं. ) ऐब, डुरी आदत, दोष,  
बाग, कलंक, शॉक ।  
भेभ ( वि. ) दोष दूढ़  
निकालना, परछिद्रान्वेषण ।  
भेभ ( सं. ) देखो भेभ  
असम्पूर्णता, गलतियों,  
भेभ ( वि. ) ऐब हटाना,  
डुरी आदत मुलाना ।  
भेभ ( वि. ) लंग, लंगड़ा,  
भेभ ( वि. ) लंगड़ाना,  
भेभ ( सं. ) साजीमें का कुल  
हुवा भाग ।  
भेभ ( वि. ) कुरूप, ऐबी, लंगड़ा,  
रंगनेवाला, रोषी, अचूरा ।  
भेभ ( सं. ) बालों का मैल, सि-  
रके बालोंका धुसा, ( वि. )  
लंगड़ा । [ खोदना ।  
भेभ ( वि. ) खुरचना, कुदेना,  
भेभ ( वि. ) खोदना, खनना,  
नकाशी करना, काटना, बिछ-  
खोदना । [ बना हुआ गवड़ा ।  
भेभ ( सं. ) पानी द्वारा कटकर

भोक्षभक्षी ( सं. ) कुद्वार्ध की म-  
जद्वरी ।  
भोक्षभक्षुं ( सं. ) कुद्वाना  
भोक्षुं ( सं. ) झोपड़ा, कुटी, कु-  
टिया, छप्पर ।  
भोक्षरी ( सं. ) सिरकी हड्डी, कपाल ।  
भोक्षो-भक्षो-भो-भो ( सं. )  
अंजली,  
भोक्ष-भोक्ष ( सं. ) गुफा क-  
न्दरा, गार माद, खन्दक ।  
भोक्षु ( सं. ) कुद्वारिया, छाटा  
मकान ।  
भोक्षुं ( कि. ) कुजाना, कुजाना,  
द्विजाना, कुद्वाना । [ हार ।  
भोक्षि ( सं. ) भोजन, मक्षर, अ-  
भोक्षि ( सं. ) जीविका, रसद,  
भोजन बज, [ व'ह, जाविका ।  
भोक्षी पोक्षी ( सं. ) रोमी, न-  
भोक्षि ( सं. ) गंदारन, दुग्निव,  
भोक्ष दुग्निव, तेजवू,  
भोक्ष ( सं. ) झोलापन, पोलापन,  
ठकन, गुफा, खोह ।  
भोक्षी ( सं. ) गधे का बन्ना ।  
भोक्षुं ( कि. ) झोठना बनावत  
करना, उधाड़ना । [ कना, कमरा  
भोक्षी ( सं. ) धातु का बना ड-

भोक्षुं ( कि. ) खोदेना, गैवादेना,  
बरबाद करना, उधाड़ना ।  
भोक्षुं-सी-भोक्षुं ( कि. ) कु-  
सेदना, डकेलना, छेदना, मोंकना  
चकेलना, ठेलना ।  
भोक्ष ( सं. ) गुफा, कन्दरा ।  
भोक्ष ( सं. ) दूँड, अन्वेषण, त-  
लाशी, लेल की टिकिया, छादन,  
ढाकन । [ करना ।  
भोक्षुं ( कि. ) दूँडना, तलाश  
भोक्ष भोक्ष ( सं. ) अन्वेषण,  
दूँड, ध्यानपूर्वक तलाश । [ तिभू ।  
भोक्षि सं. ) जमानतदार, प्र-  
भोक्षि ( सं. ) तोराक, गहा, र-  
जाई, गुदड़ी, भोळ, शरीर ।  
भोक्ष ( सं. ) गोद, अक, [ भरना ।  
भोक्षेभु ( कि. ) गादी लेना, अंक  
भोक्षिभु ( कि. ) मागन,  
प्रार्थना करना, इच्छा करना ।  
भोक्ष भोक्षुं ( कि. ) गोदभरना,  
प्रथम सम्मान उतरण होने के समय  
की एक रीति । [ प्रसिद्धि,  
भोक्षि ( सं. ) प्रतिष्ठा, बक्ष, कीर्ति  
भोक्ष ( सं. ) ध्यान, विचार, कु-  
वाल, अनुमाद, अटकल, अनुस-  
रण, पीछा, एक प्रकार का पीछा,  
छंद, पद, हँसी, गाना और खेल ।

अमोघी ( वि. ) उमंग पूर्ण, लहरी,  
 अमोघ कमानेवाला । [ आनन्द,  
 अमोघी ( सं. ) नृत्य गाय, कुशी,  
 अमोघी ( वि. ) ईसाई, क्रिश्चियन,  
 अमोघ ( सं. ) स्वप्न, सपना, छाया ।

## अ

अभ्युज्ज्वलीत वर्णमाला का चौदहवा  
 अक्षर । [ कल (भूतकाल)  
 अक्ष टांके ( क्रि. वि. ) गत दिवस  
 अक्ष अक्षरी ( वि. ) गत, बीती,  
 अक्षतम, गई बीती ।  
 अक्ष परम दिने ( क्रि. वि. ) गत  
 परसों, गत दिवस के पहिले का  
 दिन । [ रात्रि, बीती हुई रात ।  
 अक्ष शते-तरे-रे ( क्रि. वि. ) गत  
 अक्ष ( सं. ) धेनु, गौ, गाव,  
 अक्षर ( सं. ) गोचर भूमि ।  
 अक्षिप्त ( सं. ) मायदान, गाय  
 पुष्प कर देना । [ गोवध ।  
 अक्षिप्त ( सं. ) गोवध का पाप,  
 अक्षिप्त ( क्रि. ) गर्जना, घूमना,  
 अक्षिप्त ( सं. ) गर्जन, भयंकर  
 गर्जन शब्द । [ करना ।  
 अक्षिप्त ( क्रि. ) जोर की गर्जना  
 अक्षिप्त ( सं. ) आकाश, आस्मान,  
 स्वर्ग ।

अक्ष ( सं. ) मोटा मोटा पिसा हुआ,  
 बला हुआ । [ पीछा पड़ना ।  
 अक्षिप्त ( क्रि. ) कमजोर होना,  
 अक्षि ( सं. ) लड़की, पुत्री, कन्या  
 अक्षि ( सं. ) लड़का, पुत्र ।  
 अक्ष-अक्षि ( सं. ) गंगा नाम्नी नदी,  
 सुरसरि, जाह्नवी ।

अक्षिप्त ( सं. ) नदी गंगा का,  
 पानी पवित्र जल, निर्मल जल ।  
 अक्षिप्त-अक्षि ( वि. ) बहवस्तु जिस  
 की गोठ अनुरूप की हो, दो व-  
 स्तुओं का मेल ।

अक्षिप्त-अक्षि ( सं. ) हिलते हुए  
 उठना और नीचे होना । झूलते  
 समय की दशा, उकार । बमन  
 कय, छर्छि, उलटी ।

अक्ष ( सं. ) गारा, चूना

अक्षिप्त ( सं. ) चूने या गारे के  
 साथ बजरी या हट्टे का मिश्रण ।

अक्ष ( सं. ) इर्जा, श्रेणी, क्रिया  
 रीति । गणित का अंक जिसका  
 अर्थ (तरतीब) है ।

अक्ष ( सं. ) हाथी, कुंजर, ३६  
 इंच का माप, लोहे का ३ फुट का  
 छद् जो कपड़े मापने को प्रायः  
 काम आता है ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) हाथी के काम ।  
गणेशजी, शम्भु, शङ्ख ।

मन्त्रभाषणी-भिणी ( सं. ) हाथी  
की गौति चलने वाली स्त्री ।

मन्त्रशर ( सं. ) बरई खाती, प्रातः  
काल, पौकटे भूका दांत, गणेशजी ।

मन्त्रशत ( सं. ) हाथी दांत, हाथी

मन्त्रम ( सं. ) जुल्य, सस्ती, उप-  
द्रव, ज्यादाती, अचंसा, शोक,  
दुर्भाग्य, विपत्ति, आफत ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) एक प्रकार का  
फूल ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) बड़ा हाथी,

मन्त्रशे-शे ( सं. ) फूलों का हार,  
फूलों का हाव पर पहिने का हार ।

मन्त्रशे ( सं. ) गीत, एक फारसी  
गीत । [ मरजना ।

मन्त्रशेखर ( कि. ) जोर से बोलना,

मन्त्रशे शतशे ( सं. ) जेब कट,  
गिरह कट ।

मन्त्रशे ( सं. ) जेब, पाकेट ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) कौलाद । [ स्वान ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) हाथी बाचने का

मन्त्रशेखर ( सं. ) गणेशजी, गणपति ।

मन्त्रशेखर ( कि. ) हिकाना, मरजना,

मन्त्रशेखर ( सं. ) स्त्रियों के पहिने  
का एक रेशमी वस्त्र ।

मन्त्र ( सं. ) खादी, मोटा वस्त्र, एक  
प्रकार का सूती या रेशमी मोटा  
वस्त्र । एक गज चौड़ा कपड़ा

मन्त्रशेखर ( सं. ) छद्म, झूठने के  
लिये लम्बी जंजीरे । [ साक्षि, वस्त्र

मन्त्र ( सं. ) योग्यता, सामर्थ्य,

मन्त्र ( सं. ) एक प्रकार का हाथी,

मन्त्र ( सं. ) डेर, लजाना,

मन्त्र ( सं. ) बास की गंजी । सूखी  
बास का डेर ।

मन्त्रशे-शे ( सं. ) गंजीका से-  
लने के पत्ते । तास ।

मन्त्रशेखर ( कि. ) निमल जाना,  
हृष्य कर जाना बट करना,

मन्त्रशे ( कि. वि. ) गटकने खाने  
या पीने का शब्द, लगातार, बिना  
ठहरे । [ बाल ।

मन्त्रशे ( सं. ) मेलजोल, बरु बोल

मन्त्रशे ( सं. ) मोरी वाली, घटर

मन्त्रशेखर ( सं. ) बरु बोल बाल,  
अगदबगद, कूड़ाकरकट, पक्षपात,

तरफदारी । [ मोटा, बसा ।

मन्त्र ( वि. ) ठिगना, छोटा धीर

मन्त्रशे ( सं. ) ठग, चोकेबाज ।

मन्त्र ( सं. ) डेर, बड़ी, पांड, मट्टा ।

मन्त्रशेखर ( सं. ) मोड़ डेर ।

अक्षर ( सं. ) गरज, खूब जोर की ध्वनि, गर्जन । [ घूसाघूँसी ।  
 अक्षर ( सं. ) भीड़, विपत्ति,  
 अक्षर-मुक्ति ( सं. ) घूँसे,  
 घूँसों की मार, मुष्टिक प्रहार ।  
 अक्षर ( सं. ) भीड़,  
 अक्षर ( सं. ) घूँसा, मुष्टिक, प्रहार,  
 अक्षर-क्षर ( सं. ) चबराहट,  
 जल्दी, हलचल, गोलमाल, कोला-  
 हल, शोरगुल, हड़बड़ी, ध्वनि,  
 भयानक गर्जन ।  
 अक्षर-रोग ( सं. ) गड़बड़, रोग ।  
 अक्षर ( कि. ) बकबक करते  
 हुए घूमना, जड़बड़ करते फिरना  
 अक्षर-विधि ( सं. ) अनाड़ी, ( वि. )  
 चंचल, काममें लगा हुआ, कुतूहल,  
 अक्षर ( कि. ) खूब दबाना, उग्र-  
 तापूर्वक पीटना ।  
 अक्षर ( सं. ) गड़ाख, गुड़ मिला  
 कर बनाई हुई तम्बाकू ।  
 अक्षर ( सं. ) पत्तादार, एक साधारण  
 मजदूर ।  
 अक्षर ( सं. ) बण्डल, पार्सल ।  
 अक्षर ( सं. ) पहाड़ी किला, पहाड़ी  
 पर्वत ।  
 अक्षर ( सं. ) कवि, भाट, प्रशंशक ।

अक्षर ( सं. ) जोर-शोर, पछ-  
 जोके चरनेकी धूमि,  
 अक्षर ( सं. ) भीड़, झुंड, परवाशि,  
 दर्जा, श्रेणी, शिवदत्त, तीन अक्षर-  
 रोंका बना शब्द ( पिंगल ग्रंथोंमें  
 कथित आठ गण ) संख्या, कृपा,  
 दया, ( कि. ) गिनना, गणना  
 करना । [ आज्ञा मानना ।  
 अक्षर-रूप ( कि. ) ध्यान देना,  
 अक्षर-विधि ( वि. ) अनिच्छुक,  
 विमुख, मनमनाहट, मनक ।  
 अक्षर-विधि ( कि. ) भिन्नभिन्नाना, नाक  
 के द्वारा गुनगुनाना, विमुख होना ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) लेखा, गिनती,  
 गणना, विधि, मूल्य, कीमत ।  
 अक्षर-विधि ( कि. वि. ) भिन्नभिन्नाना,  
 गुनगुनाहट । [ मान ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) गिनती, कुत, इज्जत  
 अक्षर-विधि ( सं. ) गिनना, गिनती  
 करना, शुमार करना, आदर  
 करना, मूल्य करना ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) वेदपा, रंटी, बारनारी ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) गणित विद्या,  
 ( कि. ) गिना हुआ ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) यथित  
 विद्याविषयक, अनुकूल करना  
 ( गणितमें ) [ अनुक्रम या बढ़ावा ।  
 अक्षर-विधि ( सं. ) गणितविषयक

मधुपदी ( सं. ) मणित करनेवाला  
मणितज्ञ । [ अधिष्ठाता देव ।

मधुपदी ( सं. ) मणपति, बुद्धिके  
मधुपद्विधे । ( सं. ) मकान कोढ़नेका  
एक औजार विशेष ।

मधुपदी ( सं. ) भद्वेती, किरानेदार ।  
ठीकेदार । [ पट्टा या सरसत ।

मधुपदीनाथुं-पदे । ( सं. ) जमीनका  
मधुपतिथे । ( सं. ) असामी, भद्वेत,  
ठीकेदार,

मधुपि । ( सं. ) ठग, चोकेबाज,  
जब कतरनेवाला, गिरहकट ।

मधुपि । ( सं. ) गलेमें पहिनेका आ-  
भूषण, कठला, आठफाँट का माप ।

मधुपि । ( सं. ) कंठमाक, रोग विशेष,

मधुपे । ( सं. ) पागल, बेअकल,  
बुद्धिहीन, ( सं. ) कुटना, भडुवा,  
दलाल । [ या मकान ।

मधुपे । ( सं. ) हाथी का स्थान

मधुपे, मधु-पे, ( वि. ) मूर्ख,  
बुद्धिरहित । [ श्री विंगोरी ।

मधुपेरी ( सं. ) गधे की गनेरी, ईक  
मधु ( वि. ) गधा, गुजरा, बीता,  
( सं. ) हालत, दशा, गुण, कला,  
शक्ति योग्यता, स्वर, माप ।

मधे धाधु ( कि. ) बाते में ले  
लेना, हिसाब में ले लेना ।

मधे धुं ( कि. ) मुक्ति पाना,  
नजात पाना, मोक्ष प्राप्ति ।

मधे धुं ( कि. ) नष्ट होना, मरना,  
गुजरना । [ नमन बारबारकी हरकत ।

मधेधु ( वि. ) आया गया, आवा-  
मति ( सं. ) दशा, हालत, भावी,  
होनी, शक्ति, योग्यता, चाक,  
वेग, भावी दशा ।

मधेधु ( सं. ) अटक, रोच,  
रोक, प्रतिरोच, काली, सूना ।

मधेधु ( वि. ) हकलाता हुवा,  
सितकताहुवा । [ अवपका ।

मधेधु ( वि. ) गधर, भद्वेपक्व,

मधेधु ( कि. ) कुचलना, रोंदना ।

मधेधु ( सं. ) विपुलधन,  
विपुल धन्य ।

मधेधु-पेधु ( सं. ) गन्दा, मैला,  
गद्गा, गुदड़ी, तोशक रजाई ।

मधेधु ( वि. ) मैलापन, गद्गापन ।

मधे ( सं. ) सोंटा, काठा, बज,  
अलविशेष ।

मधेधु ( सं. ) तौल बजन  
लगभग आधातोला ५० प्रेड,  
ट्राय, [ प्रबन्ध, इबारत

मधे ( सं. ) छन्द रहित वाक्य,

मधेडी ( सं. ) गधी,

मधेडी ( सं. ) गधा, गर्दभ, मूर्ख  
बेनकूर, बुद्धिरहित । [ कनेवाला

मधेवान-बीवान ( सं. ) गधाही-

अभि-हो ( सं. ) गहवा, गवा,  
गहम, रासम, खर ।  
अभिमत ( सं. ) सीमाय, कुछ  
किस्मत, आशिर्वाद ।  
अभिभ ( सं. ) शत्रु, दुस्मन,  
जनताकाशत्रु, जरि ।  
अंभी ( सं. ) दुर्गन्ध, कुबास,  
दुर्गन्धपात्र, मैला, गन्दा ।  
अंभी ( सं. ) कवरा, दुर्गन्ध,  
मैल, कूड़ा । [ निकेज्ज ।  
अंभु ( वि. ) मैला, जड़, अपवित्र,  
अंभ ( सं. ) बास, बू ।  
अंभ ( सं. ) गन्धक,  
अंभभाधु ( सं. ) अति दुर्गन्ध,  
सकल बदबू ।  
अंभपु ( सं. ) चन्दन और  
फूल, चन्दन के बुरादे और फूलों  
से तयार किया हुआ श्रव्य ।  
अंभर ( सं. ) गंधर्व, गवैया,  
गवैया, गायक ।  
अंभर ( सं. ) अच्छा गवैया,  
देवताओंका गायक ।  
अंभरपिवा ( सं. ) प्रेमपाणिज,  
शाठ प्रकार के विवाहों में से एक  
जिसमें कुमार और कुमारी की  
इच्छा ही अपेक्षित होती है और  
किसी प्रकारका सार्वजनिक कृत्य  
नहीं किया जाता ।

अंभरपि ( सं. ) सामवेद का  
उपवेद जिसमें गानविद्या का  
वर्णन है ।  
अंभसार ( सं. ) चन्दन, संदल,  
इत्र या सुगन्धित पदार्थोंका सत्व ।  
अंभधु ( वि. ) सदा, गळा,  
बदबूदार । बासदार ।  
अंभधु ( कि. ) बदबूकरना, अस-  
ह्यबदबू निकालना, पादना,  
सदा ।  
अंभधु ( सं. ) मामूली बातचीत,  
बातचीत, बकबक, झूठी सच्ची  
बात ।  
अंभस ( सं. ) अशुद्धि सम्बाध,  
गड़बड़ाहट, बकबक, अफवाह,  
किम्बदन्ती, उड़ती खबर ।  
अंभस ( सं. ) घूसा घूँसी,  
( कि. वि. ) पोशीदगीसे, गुप्तता  
पूर्वक ।  
अंभस ( सं. ) झूठीबात, अफ-  
वाह, किम्बदन्ती, बकबाद, टेंटे ।  
अंभस ( सं. ) गप्पी, समाचार  
पत्रों या अखबारोंका बेचने वाला,  
कहानी कहने वाला, बकबक करने  
वाला । [ गलती, अपराध ।  
अंभस ( सं. ) लपेटवाही, भूल,  
गलत ३२५-३५५ ( सं. )  
नेपरवाही दिखाना, मलती करना  
रुककर ।



अक्षती ( वि. ) बेपरवाह, स्वपर-  
वाह, ऐकिक । [ वादा ।

अक्षुब्ध ( सं. ) मोक्ष, क्षीया,

अक्षुब्ध ( कि. ) पकड़ना, मरोड़ना  
बुझाना ।

अक्षुब्ध ( कि. ) साथ साथ  
बुझवाना, सीघ्रता करना, पास पास  
बुझाना । [ दोड़ ।

अक्षुब्ध ( सं. ) कबूती, तेज

अक्षुब्ध ( वि. ) मोटे डीलडौल का ।

अक्षुब्ध ( सं. ) एक पहाड़ का नाम,  
हृद, मजबूत ।

अक्षुब्ध ( वि. ) सुन्दर, रूपवान,  
गूबसूरत, पूर्ण और रसयुक्त ।

अक्षुब्ध ( सं. ) महत्ता ।

अक्षुब्ध ( कि. ) जल्दी से,  
चतुरता से ।

अक्षुब्ध ( वि. ) घनवान, दाल  
रोटी से खुश, धनी, वनाढ्य ।

अक्षुब्ध ( सं. ) बेचैनी, बबराहट,  
खोफ, दर्द, दुःख, सकट ।

अक्षुब्ध ( कि. ) खराब जाना,  
चौक जात्रा ।

अक्षुब्ध ( सं. ) कफ, सकार, बलगमा

अक्षुब्ध ( सं. ) घोरो का बाड़ा,  
पशुओं के खरने की भूमि ।

अक्षुब्ध ( सं. ) मंदिर का वह जी-  
तरी कमरा जिस में मूर्तियाँ रखी  
होती हैं । मित्र मंदिर ।

अक्षुब्ध ( सं. ) तर्क, वाद, जोर,  
झुकाव, रुख, हथका, परका, पूरा  
ज्ञान, वैद, सत्य, नम्रता, रंज,  
( उप. ) जोर, के पास, सखीप  
को ।

अक्षुब्ध ( वि. ) विवित, विता-  
तुर, रंजीरा, शोकमुक्त ।

अक्षुब्ध ( सं. ) रंज, वेद, शोक ।

अक्षुब्ध ( सं. ) अकवि, घृणा,  
अनिच्छा ।

अक्षुब्ध ( सं. ) खेल, तमाशा, विनोद,  
विलास, मनोरञ्जन ।

अक्षुब्ध ( कि. ) खेल व्यवसाय  
विनोद करना ।

अक्षुब्ध ( वि. ) विलासिता विनोद ।

अक्षुब्ध ( सं. ) चलन, चाल, हरकत,  
हूच, रत्नानगा । [ आवागमन ।

अक्षुब्ध ( सं. ) जाना और जाना,

अक्षुब्ध ( कि. ) पसन्द करना, स्वी-  
कार करना, मानना, सुख भैर  
करना । [ वीरता, विद्वान् ।

अक्षुब्ध ( सं. ) कफि, बल, सौख्य,

अक्षुब्ध ( सं. ) वेदका, मूर्क, कठ  
गंवार ।

अभाष्य ( कि. ) खो देना, बैसा देना, बचाव कर देना, उड़ा देना, ब्याव ब्याव करना, छुटाना ।

अभी ( सं. ) शोक, रंज, ( कि. वि. ) ओर, के पास, को, समीप ।

अभे ते ( कि. वि. ) वैसा बाहा, हाँकलत । [ प्रकार, कैसे भी ।

अभे तेभ ( कि. वि. ) किसी भी

अंभीर ( वि. ) गहन, गहिरा, अथाह, संजीवा, गुप्त, धीर, सज्ज ।

अंभीरता-रक्ष-पक्ष ( सं. ) विचार शीलता, सहन शीलता, धैर्य आरोपन ।

अभ्य ( वि. ) शक्य, गमन योग्य, संभाव्य, जाने योग्य ।

अभ्य ( सं. ) स्वर्ग, आकाश, आस्मान ।

अभ्यवर् ( सं. ) बड़ा हाथी ।

अभ्यु ( कि. ) गया, गुजरा, ( वि. ) भूत, गुजरा ।

अर् ( सं. ) गुहा, बीज, गण, तत्व, पवित्र विचार, गुप्त विचार, मंत्री । कर्ता की योतक प्रत्यय ।

अर् ( वि. ) दूबा हुआ, प्रसिद्ध, बोरा हुआ, दबा हुआ ।

अर्-अर्-अर् ( कि. ) गहिरा, वस्त्रावकाश, दूबा, दबा ।

अर् ( सं. ) छोटा आदमी, ठिगना ।

अर् ( सं. ) छोटी चरन, छोटी गायरी, गरी ।

अर् ( सं. ) पुनर्विवाह ।

अर् ( कि. ) मकोसना, ठुंसना, गले तक भरना, नाक तक भरकर खा लेना ।

अर् ( सं. ) आवश्यकता, जम्बरत स्वाभिमता, स्वाभ परवाह, ध्यान, म्नाल ।

अर् ( कि. ) आवश्यकता पूर्ण करना, गरज रफा करना ।

अर् ( सं. ) भयानक ध्वनि, मेघनाद, भयानक मद्गङ्गाहट ।

अर् ( कि. ) विषय होना, गरज पड़ना या होना ।

अर् ( वि. ) सन्चार, विषय, स्वार्थ, ऐसा व्यक्ति जिसे गरज हो, गुरु ।

अर् ( कि. ) गरजना, खँड की तरह डकारना ।

अर् ( सं. ) जुकीला हथिरा, कौठा, कच्छक ।

अर् ( सं. ) जैनतपस्विनी,

अर् ( सं. ) साक्षी, छात्रा ।

अर् ( सं. ) हवा, धन, आम-दनी, इन्ध ।

अ२६ ( वि. ) ओटा, भीड़, बाढ़ा  
हुवा, ओया हुवा । पकड़ा हुवा,  
( स. ) धूल ।

अ२६न ( स. ) गला, कंठ ।

अ२६ आ२वुं ( कि. ) सिरकाटना,  
नष्ट करना, बरबाद करना ।

अ२टी ( स. ) भीड़,

अ२न१णु ( स. ) पटी हुई, मोरी,  
जमीन के अन्दर ही अन्दर वाली  
अ२भी-ओ ( स. ) एक गीत, वह  
जिसे स्त्रियों चक्कर में नाचते समय  
गाती है ।

अ२भ ( सं. ) हमल, गर्म,

अ२भ ( वि. ) गर्म, उष्ण, क्रुद्ध,  
नाराज, उस्का हुवा, मड़का हुवा,

अ२भन२भ ( वि. ) न अति उष्ण,  
न अति ठंडा, धीतोष्ण,

अ२भ२ ( स. ) एक औषधि या जड़ी  
विशेष, अचार में डाली जानेवाली  
एक वस्तु ।

अ२भ भ२ाबो ( सं. ) गरम मसाला  
जो साक तरकारियों में डाला  
जाता है ।

अ२भ१अ२भ-भी ( वि. ) अत्यंत गरम,

अ२भाओ ( सं. ) नासूर, एक प्रकार  
का प्रण जो मुंह से बन्द होकर  
दूसरी ओर से बहने लगे ।

अ२भी ( सं. ) बर्मी, ताप, उष्णता,  
गुस्सा, रोग विशेष उपदंश रोग,

अ२भुं ( सं. ) एक प्रकारका वर्तन,

अ२ध ( सं. ) सर्प इत्यादिका विष,  
जहर, हलाहल ।

अ२धुं ( वि. ) बड़ा, गहरी अर्ध-  
कारी, दमण्डी, ( कि. ) टपकना,  
झरना, चूना प्रवेश करना ।

अ२ा ( स. ) खाई, बड़ा,  
( वि. ) बड़ा । [ कतिया

अ२ाडी ( वि. ) लिप्त, बधोमूत,

अ२ाडे ( सं. ) गढ़वा, खाई,

अ२ास ( सं. ) निर्बाहके लिये दी हुई  
भूमि । [ राजपूत ।

अ२ासिओ ( सं. ) जमीनवाला

अ२ाओ ( सं. ) सिरा, चोटी,

अरीय ( वि. ) दान, गरीब, निर्धन  
दरिद्र, सुसील, सन्ध, सीधा,  
कोमल, नम्र, मुदु ।

अरीय अ२भा-अ२भा ( सं. ) दान,  
( दण्डे ) भिक्षुक ।

अरीयन२ा ( वि. ) दाता, उदार  
पुण्यात्मा ।

अरीय अ२व२ ( वि. ) दीनकम्बु,  
दीनरत्नक, अजी में लिखतवाले  
वाला एक मानसूचक शब्द ।

भक्षिणी ( सं. ) दरिद्रता,  
दीनता, ममता, आश्रित्य नर्मी ।

भक्ष ( सं. ) गहक पक्षी, पक्षिराज,  
विष्णुवाहन । [ विष्णु भगवान् ।

भक्षणी—भक्षणी, ६१६ ( सं. )

भक्ष ( वि. ) गर्भ, अक्षरी घमण्ड,

भक्षणी ( सं. ) गुरुवार, बुधस्पतिवार,

भक्षणी ( वि. ) गर्भवती, गर्मिणी

भक्षणी ( सं. ) छिपकली, विस्तुह्या,

पक्षी ।

भक्षणी ( सं. ) मेघनाथ, गर्जन,

भक्षणी—भक्षणी ( सं. ) गधा, गदहा,

खर ।

भक्ष ( सं. ) हमल, गूदा, जरायू ।

भक्षणी ( सं. ) गर्भ का द्वार गर्भस्थान ।

भक्षणी ( सं. ) नाल, नामी से

लगी हुई एक नस जो बालक के

साथ बाहर आती है ।

भक्षणी ( सं. ) गर्भ नाथ, गर्भ

क्षय, गर्भश्राव, गर्भ का गिर जाना

भक्षणी ( सं. ) सगर्भ, हमल

रहना ।

भक्षणी—भक्षणी ( कि. वि. ) सग-

र्भाक्षी, पेटवाली औरत ।

भक्षणी ( सं. ) गर्भमें विघात,

पेट में बाध । [ क्लृप्त की सिद्धि ।

भक्षणी ( सं. )—भक्ष, गर्भ के

भक्षणी ( सं. ) गर्भ का कण्ड,  
गर्भ कण्ड के पूर्व का दर्द, प्र-

सूति पीड़ा ।

भक्षणी ( सं. ) छाँके पेट में वह

स्थान जहाँ पर रजोवीर्य के योग

से गर्भ ठहर कर बढ़ता रहता है ।

भक्षणी—भक्षणी ( सं. ) देखो

भक्षणी

भक्षणी ( सं. ) १६ संस्कारों में

प्रथम संस्कार, सन्तानोत्पत्ति के

लिने की समागम, गर्भस्थान ।

भक्षणी ( वि. ) ( सं. ) धनी,

द्रव्य पात्र ।

भक्षणी ( सं. ) देखो भक्षणी

भक्षणी ( सं. ) गर्भ युक्त, गर्भवती ।

भक्षणी ( सं. ) घमण्ड, दर्प,

भक्षणी ( सं. ) पूर्ववत्

भक्षणी ( सं. ) मछली पकड़ने का

औकडा, आकडा, बलिया,

गडहा, जहरीलापसीना,

भक्षणी ( सं. ) तरकारी विशेष,

भक्षणी ( सं. ) गेंदा, गेंदा वृक्ष

या उसके पुष्प, हज़ारा ।

भक्षणी ( सं. ) तरकारी विशेष ।

भक्षणी ( वि. ) झूठ, असत्य,

भक्षणी ( सं. ) गुलबन्द, हमाल,

हुपडा, गलेका बल,

अक्षर ( सं. ) पद्यका, हजा,  
होहला ।

अक्षर ( सं. ) बाबा, चढाई, आ-  
आक्रमण, कोलाहल, शोर ।

अक्षर ( सं. ) गुलाल [अष्ट,

अक्षर ( वि. ) गिरा, टपका, पतित

अक्षर ( सं. ) कूचा, सकरापथ, दा  
पडाइ के बीच की तंग जगह ।

अक्षर ( सं. ) तंग और तिरछी  
आइ गली, कूचा, गली कूचा ।

अक्षर ( वि. ) मैला, म्लेच्छ, गन्दा  
अक्षर ( सं. ) कड़ा, मैल, गन्दा,

अक्षर ( सं. ) गलीचा, ऊन से  
बना हुआ चूँचर और नयना

मिराम बिछीना । [ करना, हंसना  
अक्षर ( सं. ) इकना, खोल, खोली

अक्षर ( सं. ) इकना, खोल, खोली  
अक्षर ( सं. ) गुच्छन्व,

अक्षर ( सं. ) छजा, रंगमहल  
अक्षर ( सं. ) गलका भी-

तरी भाग, गलका, [ नेका धनुष ।  
अक्षर ( सं. ) गुलेक, कंकरी कंक-

अक्षर ( सं. ) वष्यों की सन्धक,  
खसाजा, तिजोरी, सन्धक, पिठारा

अक्षर ( सं. ) बहाना, टाल  
मटोल,

अक्षर ( कि. ) गीत गायना,

अक्षर ( सं. ) एक प्रकार का वस्त्र  
जिसे किराँ ऊपर से पहिनी है ।

अक्षर ( कि. ) बाँस कराना, गाना  
गाना । [ प्रभाव ।

अक्षर ( सं. ) साखी, साकिल,

अक्षर ( सं. ) बण्डल, चमड़े की  
थैली या सन्धक, कपड़ों की गश्-

बड़ । कपड़ों का बण्डल  
अक्षर ( सं. ) हवाबाने का छेद,

गोल छिड़का,

अक्षर ( सं. ) गायक, गानेवाला,  
अक्षर ( वि. ) गहिरा, घना, जिन में

प्रवेश न किया जा सके । गुप्त, छुपा ।  
अक्षर ( सं. ) गेहूँ, गोधूम ।

अक्षर ( वि. ) गेहूँ का रंग, भूरा,  
अक्षर ( कि. ) दयालु हृदय

से विनती करना, हाहा करवाना,  
निश्चिन्ता ।

अक्षर ( वि. ) श्वेत,  
पिचळ, नर, आचीन, ( सं. ) नि-

कल पढ़ना, फूट निकलना,  
अक्षर ( वि. ) बटोरा,

अक्षर ( सं. ) गले का खोने का  
बना खेवर । स्वर्ण आभूषण जो

गले में पहिना जाता है ।

अण्वि ( सं. ) कंठ, गिरगटी, हल्क, वायुद्वार, स्वांस लेने का छेद, गला, नरेदी ।

अण्वी ( सं. ) चलनी, झरना  
अण्विडोडोड ( सं. ) गलित कुष्ठ, एक प्रकार का कोंद रोग ।

अण्वथ ( सं. ) मिठास, मिष्टता, मधुरता,

अण्वे ( सं. ) कफ, बल गम,  
अण्वु ( कि. ) हड़पना, निगलना, पतलाहोना, पिघलना, चूना, टपकना । [ जड़ का गूदा ।

अण्वुड ( सं. ) मसूदा, दातों की  
अण्वुड ( वि. ) विश्वासघाती, बेईमान, कपटी, गला काटनेवाला ।

अण्वी ( सं. ) उच्चारण, शब्द, नील ।

अण्वीवुं ( कि. ) निगल जाना,  
अण्वीयावे ( सं. ) नीलगर, नीलसे रंगनेवाला ।

अण्वीरे ( सं. ) नील से रंगा हुआ,  
अण्वीये ( सं. ) हठी-जिद्दी बैल, गरिया बैल ।

अण्वुं ( सं. ) गला, कंठ,  
अण्वुं अण्वुं ( कि. ) धोका देना, कपट करना, छलना, ठगना, गला काटना ।

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) गले में खर खरी होना या भावाज बैठना ।

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) गला घोटना, फाँसी लटकाना । [ पहिना ।

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) माथे मढ़ना,  
अण्वुं अण्वुं ( कि. ) दबाव डालना, मंजूर करने को मजबूर करना ।

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) झूठा दोष लगाना, झूठा दावा करना, पाँछे पड़ना । [ बाला ।

अण्वुं अण्वुं ( सं. ) झूठा दोष लगाने-

अण्वुं अण्वुं ( सं. ) एक प्रकार का शपथ, दाढ़ी को हाथ से छूकर सौगन्द खानेवाला ।

अण्वुं ( सं. ) मीठा, मिष्ट,

अण्वुं ( वि. ) बागीचे का कुआ ।  
कोष, कोश

अण्वुं अण्वुं ( सं. ) एक छोटा टुकड़ा

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) शिड़कना, फटकारना, रँभाना ।

अण्वुं ( सं. ) जबड़ा,

अण्वुं अण्वुं ( सं. ) पक्षोपेक्ष, दुविधा, दुष्वा ।

अण्वुं ( सं. ) घूमता फिरता तेल बेचनेवाला, चलता फिरता तेली ।

अण्वुं अण्वुं ( कि. ) धोका देना कौतन,

अण्वुं अण्वुं ( सं. ) गाँजा पाने वाला ।

भांजे (सं.) भांजा, भांग, सन ।

भांजे (सं.) प्रंथि, गठान, बंधन, संयोग, जोड़, मेल,

भांजपुं (वि.) निजी, खानगी बैली का ।

भांजडी (सं.) गांठ, बन्धल, पुलन्दा, द्रव्य, जायदाद ।

भांज भांधवी (क्रि.) प्रंथि लगाना, हसरण करना, द्रोही होना, अंतस रखना ।

भांज वाणवी (क्रि.) बांधना, अनुकूल होना, वाद करना । गांठ लगाना ।

भांजपुं (क्रि.) गांठ लगाना, आज्ञा मानना, ध्यान देना ।

भांजिये ताव (सं.) गठियाज्वर, प्रंथिज्वर । [ जड़ की गांठ ।

भांजिये (सं.) एक टुकड़ा, जड़,

भांज (सं.) पेंदा, पिछल, गुदा ।

भांज भांजणी करवी (क्रि.) चिढ़ाना, खिजाना, दुख देना, पीड़ा देना ।

भांजगुलाभी (सं.) नीच सेवा, कमीना गुलामी, नीच झुशामद ।

भांज आलवी (क्रि.) नलोंका हट जाना, नामि सरकना, दस्त लगाना ।

भांजपर डाव मुडी मुर्छ रहेवुं (क्रि.)

कुछ परवाह न करना, बेफिक्र होकर रहना । [ खुद मतलब ।

भांजभांज (सं.) स्वाधी, खुदगर्बी,

भांजभांजरापुं (क्रि.) खुशामद करना, चापलूसी करना, लठ्ठो पत्तो करना [ मन्दबुद्धि, पागल ।

भांज (सं.) मूर्ख, बेवकूफ, सठ,

भांजध (सं.) पागल बन, मूर्खता, सठता, बेवकूफी ।

भांजपुं (वि.) मूर्ख,

भांज गुलरात भांजे धात पीछे

धात=बुरे कुत्ते के चिये मारी बोझ ।

नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा ।

भांजिव (सं.) अर्जुन का प्रसिद्ध गाडीव वज्र ।

भांजुं (वि.) देखो भांज ।

भांजे (वि.) मूर्ख, निपथगामी,

भांजे (सं.) गोचर भूमि, गाँव की वह सीमा जहाँ मवेशी खड़े होते हैं ।

भांधर्व (सं.) देखो गंधर्व [ विवाह ।

भांधर्वलज्ज (सं.) देखो गंधर्व

भांधी (सं.) पंसार, औषधि विक्रेता, महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी ।

भांधोवटुं (सं.) व्यापारियों का बुलावा, निरर्थक बात करना ।

भांगर (सं.) गबरा, घड़ा, कलश, घट

भांग (सं.) एक प्रकार का कपड़ा

भा०२ (सं.) एक प्रकार की  
भाजी, गाजर,  
भा०को०१२१ (सं.) कूकरमुत्ता,  
भा०रि० (सं.) एक बड़ा चिन्ह  
जो मस्तक पर रहता है। "U"  
भा०पी० (सं.) विजली की  
बमक और मेघनाद। [हाना।  
भा०पुं (क्रि.) गर्जना, गड़ ग-  
भा०भ०२६ (सं.) सैनिक, बहादुर,  
योद्धा, वीर सिपाही,  
भा० (वि.) पराजित, यका हुआ।  
भा०डी (सं.) सिपाही, गार्ड, रक्षक।  
भा०क (सं.) भेड़ भेड़ी [धसान।  
भा०रि० प्रवाह (सं.) भेड़िया  
भा०पुं (क्रि.) दफनाना, गाढ़  
देना, अनुमान करना।  
भा०डीवा० (सं.) गाड़ीवान, गाड़ी  
हांकनेवाला।  
भा०कुं (सं.) भारवाही गाड़ी, किराये  
पर चलने वाली गाड़ी।  
भा०कुं (सं.) मोटा  
भा०कुं (सं.) गायन,  
भा० (सं.) अन्न  
भा० भ०भ (सं.) अंग भंग,  
भा० (सं.) कविता, गीत, गायन  
भा०कुं (सं.) गढ़ा, गदेला, रुई  
का गदेला।

भा०डी (सं.) गाड़ी, गायन।  
भा०डीनी दोह (सं.) राज्य खजाना  
राज्य कोष।  
भा० (सं.) गायन, गीत  
भा०१२ (सं.) गवैया, गानेवाला।  
भा०ई (सं.) गाकिल, बेहोश, बे-  
फिक, असावधान। [छेद।  
भा०डी (सं.) छोटाछिद्र, सूराह,  
भा०डी (मुकनी) (सं.) भाग दीहा  
भा०पुं (सं.) छिद्र, हानि, टोटा,  
छोटा छेद।  
भा० (सं.) देखो अर्थ  
भा०भ० (सं.) देखो अर्थ  
भा०ई (वि.) घबराया हुआ,  
व्याकुल। [घबराजाना  
भा०ई प०कुं (क्रि.) व्याकुल होना  
भा० (सं.) गूदा, तावे या पी-  
तल का सीकना, कपड़ा जो पगड़ी  
में काम आता है, निक्कमावल  
भा० (सं.) ग्राम, गांव, कस्बा,  
भा० त्वां दे०वा० = गुलाब में कांटे,  
कांटों में फूल।  
भा०भ०१२ (सं.) जाय दाद गैर  
मनकूला यानी मकान वा जमीन  
बगैरह।  
भा० भो१२ (सं.) गांव का पुरोहित।  
भा०डी (सं.) देवी, स्वदेवी।



आभक्षि ( सं. ) ग्रामीण, ग्राम-  
वासी, गांव का रहने वाला, गँवार।  
आभक्षि ( वि. ) जंगली, गंवार।  
बेहूदा।  
आभक्षुं ( सं. ) छोटा गाँव, पुरवा।  
आभदेवी ( सं. ) ग्राम देवी।  
आभभां पेसवाना सांसा ने पटे-  
धने धेर उनापाथी=भीख और  
पिछोर पिछोर।  
आभोह ( सं. ) गांव के पुरोहित  
आभोतर ( सं. ) गांव के नियम से  
विरुद्ध।  
आभभीयं ( सं. ) गंभीरता,  
आभ ( सं. ) गऊ, कोमल, नम्र,  
सीधा सादा, [ निष्पाप, निर्दोष,  
आभ जेपुं ( वि. ) सीधा, कोमल,  
आभत्री ( सं. ) वेदमाता, वेदका  
पवित्र मंत्र, गुरु मंत्र।  
आभन ( सं. ) गान, गाना, गीत,  
आर ( सं. ) कीचड़, कीच,  
आर ( सं. ) ठंडा, [प्रत्यय  
आर ( सं. ) कर्ता बतलानेवाली  
आरही ( सं. ) सिपाही, सैनिक,  
पहिरेवाला। [ लानेवाला, सपेरा।  
आरही ( सं. ) बाजीगर, संप सि-  
आरे ( सं. ) स्त्रियों के पहिने का  
वस्त्र विशेष। गीला गोबर का डेरा  
कीचड़, कीच।

आध ( सं. ) कपोल, गंड स्थल,  
आध ( सं. ) भोजन करने को बैठे  
हुए मनुष्यों की पंक्ति।  
आधी ( सं. ) गली, कुंवा, कुवचन,  
गली गलीज़।  
आधीये ( सं. ) देखो अधीया  
आक्षी ( सं. ) देखो आधुं, ३० मण  
का तौल। [ गाही।  
आधुं ( सं. ) देखो आधुं भारकस  
आवडी ( सं. ) देखो अडि, प्यारी  
गाय।  
आवडोख ( सं. ) सबसे ऊपर का,  
आवडी ( सं. ) गवडैल, मैल,  
गन्दा, मूर्ख।  
आपुं ( कि. ) गाना, चरचा करना,  
आण ( सं. ) गाली, दुर्वाक्य, बाकी,  
तलछट, मैल। [ नाम करना।  
आण देवी ( कि. ) गाली देना, बद-  
आणपुं ( कि. ) गलाना, टपकाना,  
छानना, व्यय करना। [ गलीज़।  
आणाआणी ( सं. ) पारस्परिक गाली  
अधिपुं ( सं. ) कामचोर, काम से  
जी चुरानेवाला, पशु के गले के  
लिए छोटा फन्दा।  
आणी नाभपुं ( कि. ) गला देना,  
पिचाल देना, बेफायदा खर्च कर  
डालना

भाषा ( सं. ) फन्दा, कमरा,  
 भीतरी, अन्तर, एक प्रकारकी  
 औरतों की पोशाक। साफ रुई।  
 भिगला-धातुं ( कि. ) धबरा जाना।  
 गिरथ ( वि. ) पास, घना, मोटा,  
 भीड़, भिच्चड़।  
 गिर्योभिर्गिर्य ( कि. वि. ) दबाकर,  
 ठूसकर, खूब भीड़, गचापच,  
 खचापच भीड़।  
 गिरु ( सं. ) सुस्त, काहिल, भारी।  
 गिरा ( सं. ) घूसा  
 गिरात ( वि. ) दोष, अपवाद,  
 कलंक, निंदा, अपयश।  
 गिरात करी ( कि. ) निंदा करना,  
 दोष देना, कलंक लगाना।  
 गिरातभार ( सं. ) निन्दक, दोष  
 लगानेवाला,  
 गिरातुं ( कि. ) घूसे से मारना,  
 मुट्ठी बांध कर पीटना।  
 गिरागिरा ( कि. वि. ) घूसों से  
 घमाघम्म पीटना।  
 गिरह ( सं. ) धूल, कचरा,  
 गिरहस्तार ( वि. ) कैद, बंधक, लीन,  
 निमग्न। [ लीनता, निमग्नता।  
 गिरहस्तारी ( सं. ) पकड़ाधकड़ी,  
 गिरवी ( वि. ) गिरो, बन्धक, रहन,  
 गहने।

गिरवी युक्तुं ( कि. ) गिरो रखना,  
 बन्धक रखना, गहने धरना।  
 गिरा ( सं. ) बाणी। [ पहाड़ी।  
 गिरी ( सं. ) पर्वत, भूधर, पहाड़,  
 गिरिधर ( सं. ) पहाड़ को  
 धारण करनेवाला, श्रीकृष्णचन्द्र।  
 गिरीश ( सं. ) शिव, महादेव।  
 गिरिणा ( सं. ) एक प्रकारका  
 कबूतर जिसके सिरपर कलगी  
 होती है। [ काम।  
 गिरिभूत ( सं. ) गिरबी आदि का  
 गिरिणी ( सं. ) गली, कूचा, गुद-  
 गुदी, गुठ गुली, गिल्ली (खेलनेकी)  
 गिरिणी ( सं. ) लड़की का एक  
 खेल गिल्ली दण्डा।  
 गिरिणी ( सं. ) अपवाद पत्र, निंदा,  
 कलंक, गाली, धिक्कार।  
 गिरिणी ( सं. ) एक प्रकारकी तरकारी।  
 गीत ( सं. ) गान, भजन।  
 गीत भातुं ( कि. ) भजन गाना,  
 गीत गाना।  
 गीध ( सं. ) गिद्ध, गृध।  
 गीरी ( वि. ) बन्धक, गिरबी, रहन,  
 गीरीतु ( सं. ) निजी, खुदका,  
 गीर्वाणु ( वि. ) स्वर्गीय, पवित्र,  
 ( सं. ) संस्कृत भाषा,

शुंभ ( सं. ) नाकसे बोलना,  
 शुंभलाभ भस्वुं ( कि. ) गला  
 बोटकर मरना । घबरकर मरना ।  
 शुंभलापुं ( कि. ) बबराना, सांस  
 रोककर मरना । [ गूँगा ।  
 शुंभु-गो ( सं. ) मूक, बाणी रहित,  
 शुंभ ( सं. ) पेच, लपेट, उलझ,  
 झंझट, परेशानी, गोरखधन्वा ।  
 शुंभवधु ( सं. ) पेच, लपेटन उलझाव,  
 शुंभवधुभां आपी ५६वुं ( कि. )  
 झंझट में पड़ना, उलझनमें पड़ना ।  
 शुंभुं ( सं. ) धागों की लच्छों,  
 धागोंका गुच्छा ।  
 शुंभ ( वि. ) गुप्त, खानगी, घर,  
 ( सं. ) प्रांतध्वनि, प्राति शब्द ।  
 शुंभ ( सं. ) रस्सी में घास की  
 प्रांथि, घूँघची, परिमाण विशेष ।  
 शुंभश्च ( सं. ) लियाकत, सामर्थ्य,  
 शक्ति योग्यता पहुँच ।  
 शुंभुं ( कि. ) गूँघना, बटना,  
 जोड़ना, बिनना ।  
 शुंभपुं ( कि. ) अधिकार प्राप्त  
 होना, रोक रखना, उलझा रखना,  
 फँसा रखना ।  
 शुंभर ( सं. ) गौद, गाद,  
 शुंभरपाक ( सं. ) गौद द्वारा तयार  
 किया हुआ भोज्य पदार्थ ।

शुंभुं ( कि. ) पीटना, मारना, गूँघना,  
 माड़ना, जोसलना ।  
 शुंभुं ( सं. ) फल विशेष ।  
 शु ( सं. ) मल, गोबर, विद्या, गू ।  
 शुभ ( सं. ) एक छोटा छेद जो  
 खेलने के काम में आता है, गुब्बी ।  
 शुभ ( सं. ) गुग्गल, सुगन्धित गोंद ।  
 शुभली ( सं. ) ब्राह्मणों की एक जाति,  
 पुजारी, पुरोहित, कृपण, कँजूस ।  
 शुभपुत्र ( कि. वि. ) घुसफुस,  
 कानाफूसी, गुप्त रीति से । ( सं. )  
 फुस फुसाहट ।  
 शुभपावुं ( कि. ) फँसना, उलझना,  
 पकड़ में आ जाना ।  
 शुभ ( सं. ) लट, जुल्फें, गल गुच्छा ।  
 शुभ ( सं. ) समूह, गुच्छा, गांठ फूल ।  
 शुभ ( वि. ) गुप्त, घर, खानगी  
 ( सं. ) कील, नाखून ।  
 शुभरपुं ( कि. ) मरना, निकल जाना,  
 बीतना । [ जीविका, रोजी ।  
 शुभरान ( सं. ) बसर, निर्बाह,  
 शुभरान करपुं ( कि. ) बसर करना,  
 निर्बाह करना, गुजारा करना ।  
 शुभरी ( सं. ) एक प्रकार की चूड़ी  
 जिसे स्त्रियां पहिनती हैं । बाजार,  
 हाट, मेला, पैठ, झी,

शुभरी नपुं ( कि. ) सरजाना,  
निकलजाना, गुजरजाना ।

शुभरी ( कि. ) खर्च होना, नष्ट  
करना, दिखलाना ।

शुभरी ( सं. ) देखो शुभरी ।

शुभरी ( सं. ) छोटी किताब, ईश्वर  
की प्रतिमा का पीतल की डिब्बी में  
रखा हुआ चित्र ।

शुभरी ( सं. ) गोली, बटिका,

शुभरी ( कि. ) काटना

शुभरी ( सं. ) चैत्र मास का प्रथम दिन,  
सीधा खड़ा किया जानेवाला दंड ।

शुभरी ( सं. ) चैत्र मास का  
प्रथम दिन ।

शुभरी ( सं. ) मातम शोक प्रदर्शन  
( मृत्यु समय में ) पतली हुई गेंद,

शुभरी ( सं. ) लक्षण, सिफत, तारीफ,  
खर्चा, विशेषता, लाभ, असर, प्रभाव  
घनुष की डोरी, ज्या, बाजे का  
तार, रस्सी, नस, टाट ।

शुभरी ( सं. ) गुणा करनेवाला ।

शुभरी ( सं. ) वेदया, रण्डी, सहेली

शुभरी ( सं. ) गुणक,

शुभरी ( वि. ) लाभप्रद, फायदेमन्द ।

शुभरी ( सं. ) भिन भिन, नाक में  
गुन गुन ।

शुभरी ( सं. ) टाट, तप्यड़ ।

शुभरी ( सं. ) छुपा, दया, अनुकम्पा ।

शुभरी-वा ( सं. ) गुणी, प्रवीण,  
निपुण, विद्वान, तेजस्वी प्रसिद्ध ।

शुभरी-विशेष ( सं. ) वह  
विशेषण जो गुण का द्योतक हो  
( व्याकरण में )

शुभरी ( कि. ) गुणा करना ।

शुभरी ( सं. ) लाभ, फल, गुणा-  
कार जरब । [ जरब ।

शुभरी ( सं. ) गुण न फल, हासिल,

शुभरी ( सं. ) गुणयुक्त, धार्मिक,  
और प्रतिष्ठित ।

शुभरी ( सं. ) धर्मात्मा, उपकार  
माननेवाला गुणी । [ घड़ा, मदक ।

शुभरी ( सं. ) नकल करनेवाला,

शुभरी ( सं. ) गुणक, मजरब ।

शुभरी ( वि. ) गुजरा हुआ, गया बांता ।

शुभरी ( सं. ) गौड़, गुदा ।

शुभरी ( वि. ) अपराधी, दोषी,

शुभरी ( सं. ) सजा, दंड जुर्माना ।

शुभरी ( कि. वि. ) गुप्त रीति से  
चुपचाप ।

शुभरी ( सं. ) छुपा, अप्रकट, ठका  
हुवा, छका, वैश्य जाति का अल्ल ।

शुभरी ( सं. ) अप्रकट, पुण्य,  
ऐसा दान जो छुपा हुआ हो ।

शुभ ५५ ( सं. ) छुपा हुआ खजाना  
अप्रकट इव्य । [ गुप्त बात ।  
शुभ ५६ ( सं. ) गुह्यत्व, एकांतता  
शुभ ५७ ( सं. ) अल विशेष, लकड़ी  
जिसमें छुपे रूप से तलवार होती है ।  
शुभ ५८ ( सं. ) कन्दरा, मोंद, खोखली  
जगह । [ लुटाना, गँवाना ।  
शुभ ५९ ( कि. ) खोना छुपा देना,  
शुभ ६० ( सं. ) गुम्बज,  
शुभ ६१ ( सं. ) फोड़ा फुन्सी, छाला  
गिलटी, सँजन । [ शक सन्देह,  
शुभान ( सं. ) गर्व, घमण्ड, दर्प,  
शुभानी ( सं. ) घमण्ड, बर्षयुक्त,  
अहंकारी ।  
शुभान ( सं. ) मूर्ख, जंगली, गँवार ।  
शुभावपुं ( कि. ) खोना, नष्ट क-  
रना, बरबाद करना, गँवाना ।  
शुभास्ती ( सं. ) नौकरी, गुलामी,  
सेवा । [ नौकर, सेवक ।  
शुभास्ते ( सं. ) मुहरिर्, कर्क,  
शुभशुभ ( कि. ) गुराँना, घुर घुराना ।  
शुभ ( सं. ) गदा, लाठी, लुहांगी,  
लड़ाई का सज्ज विशेष ।  
शुभ ( सं. ) छोटा कुत्ता, लेनि-  
यल डँग । [ गदा । लुहांगी ।  
शुभ ( सं. ) गुर्वा, लोह की मेंढी  
शुभ ( कि. ) गुराँना, बुढ़कना,

शुभ ( सं. ) मंत्र गुरु, शिक्षक, आ-  
चार्य, कुल गुरु, पुरोहित, बृहस्पति ।  
शुभ ( सं. ) लम्बा, बड़ा, दीर्घ,  
भारी, मान्य ।  
शुभ ( सं. ) भारीपन, गंभीरता,  
शुभ मध्य भिक्षु ( सं. ) आक-  
र्षण शक्ति का मध्य । मध्य रेखा  
का बिन्दु,  
शुभ मध्य भिक्षु ( सं. ) आकर्षण  
शक्ति का खिचाव । गुरुत्वाकर्षण ।  
शुभ रेखा ( सं. ) लक्ष्य की रेखा ।  
मुख्य रेखा ।  
शुभ भिक्षु-भाष ( सं. ) एक गुरु के  
पास शिक्षा प्राप्त ।  
शुभान ( सं. ) बृहस्पतिवार,  
शुभ ( सं. ) फूल, पुष्प, दीपक या  
प्रकाश का अंत, बुझ [ करना ।  
शुभ ६२ ( कि. ) बुझाना, नष्ट  
शुभ ६३ ( सं. ) गुलाब पुष्प और  
मिश्री आदि पदार्थों से बना मिष्ट  
पदार्थ । गुलकन्द ।  
शुभान ( सं. ) लाल, सेदुरी,  
शुभान ( सं. ) गेदाका फूल  
शुभान ( सं. ) पुष्पयुक्त छड़ी ।  
शुभान ( वि. ) ब्रह्मसूत, उम्मा,  
शुभान ( सं. ) पुष्पवाटिका ।

शुद्धतान ( वि. ) आनंद, हँसमुख,  
खुश ।

शुद्धतान ( सं. ) फूलोंका पात्र,

शुद्धभास ( सं. ) गुलबोंसका वृक्ष  
और पुष्प ।

शुद्धर ( सं. ) औदुम्बर वृक्षके फल,  
गूलर, कानकी बाली । [ बागीचा ।

शुद्धस्तान ( सं. ) गुलाब के वृक्षोंका

शुद्धाट ( सं. ) गुलौंच, उबी,

शुद्धाभ ( सं. ) गुलाबका फूल या पेड़

शुद्धाभरण ( सं. ) गुलाब के फूलों  
द्वारा तय्यार किया हुआ सुगन्धित  
जल ।

शुद्धाभदान—नी ( सं. ) जिस पात्र  
में छिड़कने के लिये गुलाबजल  
भरा जाता है । [ के रंगका ।

शुद्धाभी ( सं. ) सुर्ख, लाल, गुलाब

शुद्धाभीर्ध ( सं. ) प्रातःकालीन  
निद्रा, अल्प निद्रा ।

शुद्धाभी भास ( सं. ) गुलाब पुष्प  
के रंग के समान गाल, लाल गाल,  
खूबसूरत गाल, सुन्दर कपोल ।

शुद्धाभी ठंड ( सं. ) हलकी सर्दी,  
कम ठंड । [ अतिहर ।

शुद्धाभ ( सं. ) दास, नौकर, मृत्य,

शुद्धाभगिरी ( सं. ) नौकरी, दासता,  
सेवा ।

शुद्धाक्ष ( सं. ) गुलाब

शुद्धी ( सं. ) नील, क्रीड़ों मकोड़ों  
द्वारा बनाया गया छेद ।

शुद्धार ( सं. ) एक प्रकारकी भाजी  
गुवारफली । ( गुस्सा ।

शुद्धे ( सं. ) क्रोध, नाराजी

शुद्धा ( सं. ) कन्दरा, माँद, गार,  
गुफा, खोखला [ अप्रकट ।

शुद्ध ( वि. ) गुप्त, खानगी, छुपा,

शुद्धार्थ ( सं. ) गुप्त अर्थ, छुपे  
माने गूढार्थ । [ अगम्य ।

शुद्ध ( सं. ) गुप्त, कठिन, गहिरा,

शुद्ध ( सं. ) मकान, निवासस्थान ।

शुद्ध प्रवेश द्वारे ( कि. ) घर में  
प्रवेश ।

शुद्धस्थ ( सं. ) गृह में रहनेवाला,  
मकानवाला, भला, सज्जन ।

शुद्धस्थाप ( वि. ) सभ्यता, सज्ज-  
नता नम्रता ।

शुद्धस्थाश्रम ( सं. ) दूसरा आश्रम,  
घर में रहकर करने का कर्तव्य कार्य

शुद्धस्थी ( सं. ) कुटुम्बी, घर में  
रहनेवाला । [ स्वामिनी ।

शुद्धिष्णी ( सं. ) पत्नी, भायाँ.

शुद्धी ( सं. ) गेंडा, गेंडी

शुद्धा ( सं. ) छोटे बैल [ बेंद

शुद्धी ( सं. ) खेलनेकी छड़ी बाला,

शुद्ध ( सं. ) हाथियों का समूह ।

जे० ( सं. ) अदृश्य, अलोप, खोया हुआ, अगोचर

जे० वृ० ( कि. ) गुप्त होना, अदृश्य होना लोप होना ।

जे० ( वि. ) जो नदिखे, छुपा हुआ, अदृष्ट ।

जे० आवा० ( सं. ) आकाश वाणी, अंतरिक्ष ध्वनि ।

जे० गी० ( सं. ) लोक वाद, जाजारी खबर, गप्प ।

जे० भार ( सं. ) दैवी मार, अजात । [ घेवर ।

जे० ( सं. ) एक प्रकार की मिठाई, जे० ( सं. ) अभाव सूचक प्रत्यय ।

जे० आ० ( सं. ) अपमान, कम-इज्जत,

जे० भु० ( सं. ) अवकृपा, नाराजी

जे० ( सं. ) शर्म, लज्जा, लाज, सुशीलता ।

जे० क्ष० ( सं. ) हानि, नुकसान

जे० अ० ( सं. ) अन्यवस्था, गैर इन्तजाम ।

जे० भा० ( सं. ) अज्ञानता, ना-बाकिफी, अनुभव शून्य ।

जे० र० ( कि. वि. ) अनुचित, नामुनासिब । [ अप्रसन्नता ।

जे० रा० ( वि. ) नाखुशी, नाराजी,

जे० रीति ( सं. ) गलत, अन्याय अनुचित,

जे० ला० ( सं. ) अव्योम्य, नालायक ।

जे० व० ( कि. ) गलत रास्ते पर जाना । थोका दिया जाना ।

जे० व० ( कि. ) गलत रास्ते पर होना ।

जे० आ० ( वि. ) अनुचित, अन्याय, अन्धेर,

जे० वे० ( सं. ) गेहूँ के खेत की बी-मारी । रोली नामक गेहूँ का रोग

जे० शि० ( कि. वि. ) अन्याय-पूर्वक, अनुचित रीति से, बुरी तरह से ।

जे० स० ( सं. ) गलती, नास-मसी, कुछ का कुछ समझना ।

जे० आ० ( सं. ) अनुपस्थित,

जे० आ० ( सं. ) अनुपस्थिति ।

जे० ( सं. ) लाल मिट्टी, गेरू, हिर-मिची,

जे० ( सं. ) दुलार प्यार पुचकारी, खेल तमाशा ।

जे० क० ( कि. ) प्यार करना, दुलारना, खेलना ।

जे० ( सं. ) मकान, घर, मकान ।

जे० गा० ( सं. ) गौगा, पुकार, हड़-बड़ी, गर्जना,

शैथिल्य (सं.) गांव की गोबर भूमि  
शैथिल्य (क्रि.) रोकना, बन्द क-  
रना सीमा, लगाना ।

शैथिल्य (सं.) नार्ह, नायिक, खवास

शै (सं.) गाय, गऊ, घेनु,

शैक्षण आश (सं.) घोषा, काहिल,  
आलसी मनुष्य ।

शैभ (सं.) ज्योही, बारजा ।

शैभक्षे (सं.) आला, ताखा, ताका

शैभई (सं.) गोखरू नामक प्र-

सिद्ध कंटकयुक्त बूटी, एक प्रकार  
का कंटाला गोटा या बूटी,

शैभयु (क्रि.) ध्यान में आना,  
लक्ष्य में आना ।

शैभे (सं.) पक्षियों का घोंसला,

शैभ्रास (सं.) गो के लिये निकाला  
हुवा अन्नप्रास ।

शैभर (सं.) चरागाह, पशुओं के  
चरने की भूमि ।

शैभरी (सं.) वह जो थोड़े से  
घरों से थोड़ासा भोजन मांगता है।

शैभरी-अरी (सं.) दुष्ट स्त्री,  
बुरी औरत

शैभई-अर (वि.) नष्ट, बर-  
बाद किया हुआ । [ लंज ]

शैभु (वि.) मैला, गन्दा, नि-

शैभ (सं.) घंट, चक्र, दारपुंजां,

शैभरी-री (सं.) गुठली, बीजा, फल  
के भीतर का बीज ।

शैभे (सं.) मांस का ढेर गुठली,

शैभे (सं.) गढ़बढ़, चबराहट,

शैभे (सं.) ढरकी, नारी, कपास  
साफ करने का ।

शैभे (सं.) बौंदी का ढेर, बच्चों की  
उपयोगी औषधि विशेष, दर्जी के  
अँगुली में पहिनी जानेवाली  
अँगुस्तान ।

शैभे (क्रि. वि.) धँसा का  
खूब भरजाना, धुँवाँ का छुटजाना ।

शैभे (सं.) गुलदस्ता, फूलों का  
गुच्छ, गेंदा का फूल, नारेल की गरी,  
चटख, भारी भूल ।

शैभे (सं.) शुभ, आनन्दभोज ।

शैभे (वि.) ठीक, उचित, फिट,

शैभे (सं.) प्रबन्ध, बन्दोबस्त,  
तरतीब, हिकमत, उपाय ।

शैभे (सं.) गुलोट, उड़ी,

शैभे आधु (क्रि.) उड़ी  
लगाना, गुलोट खाना ।

शैभे (सं.) साथी, दोस्त, मित्र,  
सहयोगी ।

शैभे करवे (क्रि.) मिश्रता  
करना जान पहिचान करना ।

शैभे (सं.) जैन धर्म के पूजक ।

शैभे (सं.) फोड़ा, सूजन, छाला,  
गिल्ली,



गोड शुभक ( सं. ) फोड़े कुन्सी,  
गोडपुं ( कि. ) गोदना, वृक्ष के  
आसपास की भूमि गोदना ।  
गोडाडिन ( सं. ) गोदाम, माक,  
घर कोठी । [ मिठास, मधुरता ।  
गोडी ( सं. ) एक प्रकार का गीत,  
गोडीड ( सं. ) मरोड़, ऐंठ, लच्छी ।  
गोडी पडवे ( सं. ) चैत्र मास का  
प्रथम दिन । [ इसी भोंति ।  
गोडे ( कि. वि. ) समान, मानिंद,  
गोडपुं ( सं. ) सौभाग्यवती स्त्री जो  
भोजन के लिये बुलाई जावे,  
सवासण ।  
गोतडी ( सं. ) गला, कंठ, हलक,  
गोतर ( सं. ) कुनबा, कुटुम्ब, कुल,  
घराना, वंश, खानदान । पशु के  
लिये एक प्रकार का चारा ।  
गोतपुं ( कि. ) ढूँढना, तलाशना,  
दरिधास्त करना ।  
गोतुं ( सं. ) खाद, चारा,  
गोत्र ( सं. ) देखो गोत्र  
गोत्रव ( वि. ) एक कुटुम्ब के,  
एक वंशीय, नातेदार,  
गोत्रव अंधु ( सं. ) एक गोत के,  
गोती भाई ।  
गोत्री ( सं. ) एक वंश के, रिस्तेदार,  
गोथ ( कि. ) ४ के लिये गुप्त इशारा

गोथपडी ( सं. ) १४ के लिये गुप्त  
इशारा ।  
गोथुं ( सं. ) बंचक, छली, ठग,  
गोथुं भापुं ( कि. ) चोका खाना,  
गुल्लोच खाना, उड़ी खाना ।  
गोड ( सं. ) गोद, हृदय अंक  
गोडडी ( सं. ) गीता, तोहक, गुदड़ी ।  
गोडभा सेपुं ( कि. ) गोद में केना,  
अंकभर हृदय लगाना ।  
गोदावरी ( सं. ) गोदावरी, नाम्नी  
नदी । १२ के लिये गुप्त इशारा ।  
गोदी ( सं. ) जहाज बनाने का  
सामान रखने का स्थान ।  
गोदी धावरी ( कि. ) जहाज बनाने  
का सामान रखने का स्थान बनाना ।  
गोदे ( सं. ) धक्का, आकुस, दौड़ ।  
गोदे भावे ( कि. ) धक्का मारना,  
आकुस मारना दौड़  
गोधि धावरी ( कि. ) मारना ।  
गोधि ( सं. ) बैल, वृषभ, सांड,  
गोधु ( सं. ) पशुओं का हुंघ,  
गायो का संग्रह ।  
गोधु ( सं. ) गेहूं  
गोप ( सं. ) सर्प का आभूषण जो  
कंठ में पहिना जाता है ।  
गोपाड ( सं. ) गाव का पैर,  
गोपात ( सं. ) घरण स्थान, आ-  
भय स्थान, रक्षा, दिक्कावत ।

गोपान ( सं. ) भगवान् कृष्ण,  
बैलो बायों का मुंड ।

गोपी ( सं. ) गोपि का, गोप स्त्री,  
केवल गायों का मुंड ।

गोपी अंदन ( सं. ) गोपी तनैया  
की पीली मिट्टी ।

गोपी अंदन ठरुं ( कि. ) अपना  
दूसरों के लिये खरन कर डालना  
बरबाद करना, उजाड़ना ।

गोशब्द ( सं. ) अक्ष विशेष, गोफन,  
पत्थर फेंकने का पथ, गुफना,  
भिन्दिपाल

गोशब्दी ( सं. ) बालों में पहिना  
जानेवाला एक डेवर ।

गोशब्द ( सं. ) गाय का मल, मैला,  
कूदा, गोविष्ठा [ अंदुं ]

गोशब्द ( वि. ) मैला, गंदा देखो

गोशब्द ( सं. ) श्वेतक, शीतला,  
हुलाही । [ होना ।

गोशब्द ( कि. ) मनमें उदास

गोशब्द ( सं. ) उदासी, घुंसा,

गोशब्द पाउने ( कि. ) देखो गोशब्द

गोशब्द ( सं. ) देखो गोशब्द

गोशब्द ( सं. ) गाय का मांस,  
गोशब्द ( सं. ) गाय का मुँह  
गोशब्दी ( सं. ) गाय के मुँह के  
समान बनी पवित्र वस्त्र की बैली

विश में हाथ छुपा, कर माला  
आदि द्राघ हरि चितन करते हैं ।  
जप बैली ।

गोशब्द ( सं. ) गायका पेशाब,

गोशब्द ( सं. ) पुखराज, एक प्रका-  
रका बहुमूल्य रत्न ।

गोशब्द ( सं. ) गाय की बलि, वह  
यज्ञ जिसमें गाय की बलि दी जावे ।

इन्द्रिय दमन पूर्वक यज्ञ ।

गोशब्द ( सं. ) कुल पुरोहित, एक  
प्रकारका ध्यान

गोशब्द ( सं. ) गायों के चलने से  
उड़ी हुई धूल, गोशब्दी प्रतिष्ठा,

गोशब्द ( सं. ) जैन पुरोहित, जैन  
पुजारी ।

गोशब्द ( कि. ) देखो गोशब्द

गोशब्द ( सं. ) देखो गोशब्द

गोशब्द ( सं. ) पौरोहित्य, पुजारी  
का पद । [ पांसी मिट्टी ।

गोशब्दी ( सं. ) एक प्रकार की

गोशब्दी ( सं. ) गद्बद् होह्ला,

गोशब्द ( सं. ) मट्ठा, छाछ, तक,  
दही, छाछ दही रखनेका बर्तन,

गोशब्द-कुं ( सं. ) हलकी पीली मिट्टी  
( वि. ) हल्का, आराकल [इना  
गोशब्दी ( सं. ) पुजारन, पुरोहिता-

शोध ( सं. ) स्वच्छता, सफेदी,  
गोरापन । ( श्री, श्री ।  
शोरी ( सं. ) सुन्दर श्री, रूपवान  
शोरी ( वि. ) खूबसूरत, सुंदर,  
सफेद, गोरा रंग ।  
शोः ( वि. ) सफेद, स्वच्छ, पवित्र  
साफ खूबसूरत, [ नाम ।  
शोः २०६१ ( सं. ) एक औषधिका  
शोः २०६२ ( सं. ) रुपयों का सन्दूक,  
रुपये रखने की पेटी ।  
शोः २०६३ ( सं. ) तोप दागनेवाला,  
तोप में गोला भरकर चलानेवाला,  
शोः २०६४ ( सं. ) चावल कूटनेवाला,  
देखो भवास, पागल मनुष्य,  
शोः २०६५ ( सं. ) गौनास,  
शोः २०६६ ( सं. ) पशुओं के लिए जेल,  
कांजी हौद, पशुओं के लिये रोक ।  
शोः २०६७ ( सं. ) पशु समूह,  
शोः २०६८ ( सं. ) ग्वालिन, ग्वाल की  
श्री । [ ग्वाला, पशु चरानेवाला ।  
शोः २०६९ ( सं. ) ग्वाल,  
शोः २०७० ( सं. ) चरवाहे का अहाता,  
गडरिये के लिये चौक ।  
शोः २०७१ ( सं. ) किस्सा, कहानी,  
मिश्रता, वार्तालाप, बातचीत ।  
शोः २०७२ ( सं. ) मिश्रता  
करना दोस्ती करना ।

शोः ( सं. ) मांस, मिट्टी, गोस्त,  
( कि. ) दाहिनी ओर ।  
शोः २०७३ ( सं. ) स्वामी संन्यासी,  
जितेन्द्रिय, गुसाई, संन्यासियों की  
अन्न, महन्त, [ साधु बनना ।  
शोः २०७४ ( सं. ) मिश्रता होना,  
शोः २०७५ ( सं. ) खोह, कंदरा, तलघर  
शोः २०७६ ( सं. ) गहिरा विचार, उत्तम  
विचार, गंभीर विचार ।  
शोः ( सं. ) गोल, वृत्त, गुड़ राब ।  
शोः ( वि. ) गोल, गोळासा, गोळा-  
कार, बर्तुलाकार ।  
शोः २०७८ ( सं. ) गुड़ और आमों  
को उबालकर बनाया हुआ पदार्थ,  
गुड़म्ब ।  
शोः २०७९ ( वि. ) असमाप्त,  
असम्पूर्ण, कोमल किया हुआ,  
( सं. ) मिष्ट भाषण सेलालच ।  
शोः २०८० ( सं. ) गोल, गोळा  
शब्दों से उसकाना ।  
शोः २०८१ ( सं. ) वृत्ताकार, गोल  
वर्तुलाकार, मण्डलाकार ।  
शोः २०८२ ( सं. ) गोल शब्द,  
गोल सूरत । वर्तुलकृति,  
शोः २०८३ ( सं. ) आधा गोल, गोल का  
आधा, वर्तुलार्ध, मंडलार्ध ।

अणु (सं.) पानी भरने का वासन,  
बटिका, बन्दूक की गोली, जंढकोष,  
वृषण, हानि, घाटा, गोली ।

अणु करी (क्रि.) बटिका ब-  
नाना, खबर करना ।

अणु भारी (क्रि.) बन्दूक में  
गोली भरकर मारना ।

अणु बाणरी (क्रि.) गोली बनाना,  
बटिका बनाना ।

अणु (सं.) एक बड़ा मिष्टी का  
पात्र, गोला, खबर, सम्वाद, अफ-  
बाह, गप्प, लोहपिंड,

अणु अणु (क्रि.) अफवाह  
उड़ाना, किम्बदन्ती फैलाना ।

अणु (सं.) गऊ, गाय, धेनु गैया,

अणु (सं.) गाँव के निकट गावों  
के खरने का स्थान । [ जाति

अणु (सं.) बंगाली, ब्राह्मणों की एक

अणु (वि.) अप्रधान, नीचा, छोटा

अणु (सं.) गोदान ।

अणु (सं.) देखो अणु

अणु (सं.) भेद के रूप में

या नमड़े में कृपा भेदिया

अणु (सं.) देखो अणु

अणु (वि.) गोरा रंग

अणु (सं.) अविवाहिता आठ वर्ष

की कन्या, पार्वती, उमा,

अणु (सं.) गावों के रहने का  
घर । गो गृह । [ गोहिंसा,

अणु (सं.) गोबध का पाप,

अणु (सं.) पुस्तक, जित्वा, पोथी,

अणु (सं.) पुस्तक लेखक,

पुस्तकों का बनानेवाला, शास्त्रकार ।

अणु (सं.) गाँठ गठान, गिरह,

अणु (सं.) एक प्रकार का रोग

अणु (वि.) युक्त, आच्छादित,

आक्रान्त, एहीत, खायाहुवा ।

अणु (सं.) सूर्यादि नव ग्रह, भवन,

मकान, घर ।

अणु (सं.) पकड़, सूर्य चन्द्र आदि

पर पृथ्वी की छाया ।

अणु करण (क्रि.) पकड़ना, लेना,

प्राप्त करना, बामना,

अणु (सं.) दस्तों की बीमारी,

संग्रहणी । अतिसार रोग ।

अणु (सं.) मनुष्यों पर ग्रहों

का प्रभाव ।

अणु (सं.) ग्रहण, ग्रहों द्वारा

दुःख ।

अणु (सं.) ग्रहों के घूमने

का मंडल, + ग्रह बाह ।

अणु (क्रि.) देखो अणु करण ।

अणु (सं.) भक्त मानस, सभ्य,

गृहस्थ

आ३ ( सं. ) गांव, कस्बा, बस्ती ।  
 आ३३ ( सं. ) ग्राम पातक, गरी  
 की बीमारी ।  
 आ३५ ( वि. ) गांव का, बस्ती का,  
 आ३६ ( सं. ) कबल, कौर, ग्रहण  
 के समय प्रसित भाग । [ कूर ।  
 आ३६ ( सं. ) कुत्ता, खान,  
 आ३६ ( सं. ) मगर, मकर, घड़ियाल,  
 सूँस, जल हाथी, नक  
 आ३६ ( सं. ) गाहक, ग्रहण करनेवाला ।  
 आ३७ ( सं. ) ग्रहण करने योग्य,  
 स्वीकार करने लायक, मनोर्तित,  
 आ३८ ( सं. ) गर्दन, गला, कंठ,  
 गले का पृष्ठ भाग ।  
 आ३९ ( सं. ) उष्ण, गर्मी, चौथी,  
 ऋतु. निदाघ ।  
 आ४० ( सं. ) भ्रान्ति, निन्दा, मान  
 सी व्यथा, मन की थकावट, घृणा ।  
 आ४० ( सं. ) विपत्ती ( कि. ) घृणा होना,  
 खेद होना, दुःख होना ।  
 आ४१ ( सं. ) अहीर, गोपाल, गोप,  
 आ४२ ( सं. ) साक्षी ।

ध

ध=गुजराती वर्णमाला का १५ वां  
 अक्षर चौथा व्यञ्जन ।

ध० ( सं. ) गेहूं, गोधूम

१०

ध०१२३ ( वि. ) गेहूं रस के  
 भूरा । [ विवाह ।

ध०१३ ( सं. ) पुनर्विवाह, द्वितीय  
 ध०१४ ( सं. ) कचूर,  
 ध०१५ ( सं. ) गहबड़, हड़बड़ी  
 के साथ ।

ध० ( सं. ) घाटा, हानि, टोखा,  
 घड़ा, पानी का बर्तन, सूरत, शक,  
 दिल, [ बनघट १

ध० ( वि. ) मोटा, घना, गाढ़ा,  
 ध०१६ ( कि. ) हानि होना, घाटा  
 होना, नुकसान पड़ना । [ मुनासिब

ध०१७ ( सं. ) ठीक, उचित, समान,  
 ध०१८ ( कि. ) ठोस होना, नि-  
 कट होना कम होना । [ राई

ध०१९ ( सं. ) वाक्का, हुनर, बहु-  
 ध०२० ( कि. ) न्यून होना, कम  
 होना, घटना ।

ध०२१ ( सं. ) मेघों का समूह, मेघा-  
 च्छादन, पेड़ों का सघन कुंज ।

ध०२२ ( कि. ) घटाना, कम  
 करना [ नटा, घटी ।

ध०२३ ( सं. ) कमी, घाटा, न्यू-  
 ध०२४ ( वि. ) उचित, ठीक, योग्य

ध०२५ ( सं. ) घड़ी, ६० पल, २४  
 मिनिट का प्रमाण ।

ध०२६ ( वि. ) ठीक, योग्य, उचित,

धृति होना ( कि. ) उचित होना,  
योग्य होना ।

धृति ( सं. ) बनानेवाला, रखने-  
वाला, सांचा बनानेवाला ।

धृष्ट ( सं. ) बूढ़, बूढ़ा,

धृष्टी ( सं. ) कवि, भाट,

धृष्ट ( कि. ) बनाना, तय्यार क-  
रना, सींचना, शकल बनाना ।

धृष्टि ( सं. ) लोहार सोनार  
आदि धड़नेवालों की धड़ाई की  
मजदूरी । बनानेवाले का मजदूरी ।

धृष्टि ( वि. ) अनुभूत, परीक्षित

धृष्ट ( कि. ) बनवाना, तय्यार  
करना, सींचना, परीक्षा करना  
ठीक होना ।

धृष्ट ( सं. ) तह; परत, २४ मि-  
निट या परिमाण, समय जानने  
का यंत्र, घड़ी [ घंटे के ।

धृष्टि ( कि. वि. ) लगभग एक

धृष्टि ( कि. वि. ) प्रायः अक-  
सर, बारबार, लगातार [ प्रायः ।

धृष्टि ( कि. वि. ) बहुधा,

धृष्टि ( कि. वि. ) तह किया  
हुवा, बिना खुला हुआ ।

धृष्टि ( सं. ) जरा, कुछ समय  
के लिये, चन्द मिनटों के लिये,  
कुछ क्षण ।

धृष्टि ( सं. ) जेब घड़ी, आफिस  
क्लॉक, समय जानने का यंत्र ।

धृष्टि ( सं. ) घड़ी साज, घड़ी  
सुधारनेवाला ।

धृष्टि ( सं. ) मटका, घट, धुंधला  
( सं. ) घेला, मटकी, छोटा घड़ा ।

धृष्टि ( सं. ) करवा, घड़ा, घट

धृष्टि ( सं. ) धुंधला करने ( कि. ) किसी  
खराब कारण से कोई काम करना,  
किसी भाँति मनाना, संतुष्ट करना ।

धृष्टि ( सं. ) अभी का बना,  
ताजा ।

धृष्टि ( सं. ) बड़ा हर्षादा ।

धृष्टि ( वि. ) बहुतसे, कई,  
अनेकों, बहुतेरे ।

धृष्टि ( कि. वि. ) मुख्यतया,  
विशेषतः

धृष्टि ( सं. ) घनिष्ठ मैत्री, घ-  
रोपा, गाढ मित्रता । [ अधिकतर ।

धृष्टि ( सं. ) अक्सर प्रायः,

धृष्टि ( सं. ) बहुत, ज्यादा, अधिक,  
गहिरा, समीप, मोटा, गाढ़ ।

धृष्टि ( कि. वि. ) प्रायः,  
अक्सर, अधिकांश, विशेषतः

धृष्टि ( कि. वि. ) कई अवसरों  
पर, प्रायः संभवतः ।

धनुं ( कि. वि. ) अत्यधिक, बहुत, बहुतही, ज्यादा, अत्यंत ।

धनुं ( वि. ) पूर्ववत् [ घंटी धंठ ( सं. ) घंटा, घंटही ( सं. )

धंठाइव ( सं. ) घंटे की आवाज, घंट धनि । [ की हाथ चक्की ।

धंटी ( सं. ) चक्की, अन्न पीसने

धन ( सं. ) धन, कड़ा, ठोस, मेघ, बादल ।

धनधैर ( वि. ) मोटा, गाढ़ा, अत्यंत अंधेरा । [ पायल ।

धनयककर ( सं. ) मूख, बेहूदा, कमअङ्ग

धनयण ( सं. ) धनफल ।

धनभुण ( सं. ) धनमूल,

धनस्वामि ( वि. ) काले रंग का, ( सं. ) श्रीकृष्णचन्द्र ।

धनशठ ( सं. ) धनराहत, व्याकुलता, बेचैनी ।

धनसाधु ( सं. ) नाश, बरबादी, समूह नाश ।

धर ( सं. ) मकान, कुटुम्ब, छिद्र, तखीर का चौखटा । [वाह करना।

धरहरण ( कि. ) घर बनाना, वि-धरकःभ ( सं. ) घर का धन्वा,

धरभटकी ( सं. ) कुटुम्ब, कुनवा, पत्नी, घरेलू फर्न ।

धर धरव ( सं. ) खर्चा जो घर के लिये हो ।

धरभतु-धुं ( वि. ) गृह सम्बन्धी, घर सम्बन्धी, घर, खानगी ।

धरधरशठ ( वि. ) पड़ोसी या नाते रिश्तेदारों से पाना हुआ या लाया हुआ, [ अवर्मा, कपटी, छला ।

धरधाधु ( वि. ) मूल्यवान, महंगा, धरधो ( सं. ) एक वस्त्र जो स्त्रियां पहिनती हैं ।

धरभभाध ( सं. ) वह मनुष्य जो सपत्नीक अपनी ससुराल में रहता हो । [ कलह, घर लड़ाई ।

धरठठा ( सं. ) आपसी झगड़ा, गृह धरठ ( सं. ) लीक, पहिये की ल-

कीर, गडार । [ पुराना, धरधुं ( वि. ) बूढ़ा, बूढ़, प्राचीन,

धरधधुआधु ( सं. ) बत्नी, भार्या, गृहिणी, गृहस्वामिनी ।

धरधधे ( सं. ) देखो धरधभ

धरने ( वि. ) घरका, अपना, पैदा, उत्पन्न । [ करना, घर फोड़ना ।

धरदेधुं ( कि. ) घरमें फूट उत्पन्न धरधार ( सं. ) कुटुम्ब, कुनवा,

घर की जीव वस्तु ।

धरमारी ( सं. ) कुटुम्बी,

अभेद (क्रि. वि.) बिना कुछ किये,  
घर बैठे । [ ठाले बैठना ।  
अभेदपुं (क्रि.) नौकरी छूटना,  
अभेदपुं (क्रि.) अपने को व-  
नाश करना, खुद को धनवान  
बनाना । [ घरभाड़ा ।  
अभेदपुं (सं.) मकान किराया,  
अभेदपुं (क्रि.) कुटुम्ब का नाश  
करना, वंश नाश करना ।  
अभेद (सं.) घर का जासूस,  
घर की सब बातें जाननेवाला ।  
अभेदपुं (क्रि.) घर छूटना,  
अभेद (क्रि. वि.) खानगी तरीके,  
मिश्रवत्, दोस्ताने ढंग से ।  
अभेद भांडी वाणपुं (क्रि.) आ-  
पस में झगड़ा तय कर लेना,  
आपसी निपटारा कर लेना ।  
अभेद (सं.) मिश्रता का संसर्ग,  
घरोपा, निकट का प्रेम ।  
अभेदपुं (सं.) घर का सामान,  
घर का लकड़ी का सामान ।  
अभेदपुं (सं.) पति, चाविद, गृ-  
हपति, मालिक ।  
अभेद (सं.) घर का टेक्स ।  
अभेदसाह (सं.) घराने का कारबार  
अभेदसारी (वि.) वह जो दु-  
निया के कारबार का प्रबन्ध क-  
रता है ।

अभेद-ग (सं.) ग्राहक, खरीददार  
अभेद (सं.) बिक्री, व्यापार,  
वैद्य इच्छा ।  
अभेदपुं (वि.) गहने रखा हुआ,  
गिरवी रखा हुआ ।  
अभेद (सं.) छोटी गिरि,  
अभेद (सं.) अंतिम सौंस ।  
अभेदपुं (सं.) गिरवी रखने  
का काम ।  
अभेद (सं.) जेवर, आभूषण,  
अभेदपुं (क्रि.) गिरवी रखना,  
रहन रखना ।  
अभेद (सं.) अनिष्ट प्रेम, घरोपा ।  
अभेदपुं (सं.) छिपकली, पत्नी,  
अभेद (सं.) रगड़, घिसना ।  
अभेदपुं (क्रि.) कर्जदार क  
दिवाला निकलने पर रुपये का  
चला जाना ।  
अभेदपुं (क्रि.) खुरचना, कुरेदना,  
खुजालना, चुलचलना ।  
अभेदपुं (क्रि.) खींचना, दबाना ।  
अभेदपुं-उ (सं.) खरोंच, हानि,  
टोटा ।  
अभेदपुं (क्रि.) रगड़ना, घिसना,  
तेज करना, धार करना, नोक  
करना ।



धसाङ्ग ७४ ( कि. ) डुबला हो जाना, पतला हो जाना, घिस जाना,  
 धसारे ( सं. ) सरोंब, चौर,  
 धसारे भभवे ( कि. ) हानि, उ-  
 ठाना, टोटा सहना ।  
 धसावुं ( कि. ) घिसजाना, घामना,  
 उठाना, सहना ।  
 धा ( सं. ) जग, जलम, घाव, चोट ।  
 धाञ्जेध धपुं ( कि. ) जलमी होना,  
 चोट खाना, आहत होना ।  
 धाञ्जेध धपुं ( कि. ) जलमी, घायल,  
 चोट खाया हुआ, अधमरा ।  
 धाधरे ( सं. ) लहंगा, घाघरा, खियों  
 के पहिने का वस्त्र विशेष ।  
 धांथी ( सं. ) तेल निकालने वाला,  
 सेली ।  
 धांथे ( सं. ) चटाई बनाने वाला ।  
 धांठी ( सं. ) हलक, कंठ, रोक, आड ।  
 धां ( सं. ) शकल, सूरत, प्रबन्ध,  
 हिकमत, एक प्रकार का सांजा,  
 रेशमी कपड़ा ।  
 धांठ करे ( कि. ) सांजा बनाना,  
 तदनोर करना ।  
 धांठ धांवे ( कि. ) सांजा बनाना  
 सूरत बनाना, लपवा खोजना, हानि  
 करना, बर करना, पीटना ।

धांठडी ( वि. ) सफेद छींट का एक  
 प्रकार का रेशमी वस्त्र । [ वस्त्र ।  
 धांठ पोत ( सं. ) एक प्रकार का रेशमी  
 धांठुं ( वि. ) सुन्दर, खूबसूरत,  
 अच्छी शक्ल का ।  
 धांठुं ( वि. ) गाढ़ा, मोटा, घना,  
 पाषाण इदय ।  
 धांथु ( सं. ) नाल, बड़ा हथौड़ा,  
 किसी वस्तु का एकदम डालाजाना ।  
 धांथु कडावे ( कि. ) बरबाद करना,  
 नष्ट करना, बिगाड़ना ।  
 धांथुी ( सं. ) तेल निकालने का यंत्र,  
 गत्तों का रस निकालने का यंत्र ।  
 धांत ( सं. ) चोट, मार, बध, हिंसा,  
 खून, बुरा समय । [ दुष्ट बुरा ।  
 धांतडी ( सं. ) खूनी, हिंसक, निर्दय,  
 धांभ ( सं. ) धूप, गर्मी, स्वेद, पसीना ।  
 धांभे ( सं. ) देखो धांभे,  
 धांभु ( सं. ) घुरं घुरं करती हुई  
 निद्रा, निद्रामें चरोंटा,  
 धांरी ( सं. ) एक प्रकार की मिठाई,  
 घेरा, परिधि ।  
 धांरं ( सं. ) गहिरी चोट, बड़ी विपत्ति,  
 जोर का धूँसा, छेव, सूरसा ।  
 धांथ ( सं. ) हानि, नुकसान,  
 धांथभेध ( सं. ) अव्यवस्था, अप्रबन्ध,  
 बर हुन्तजामी, जल्दी, लरा ।

धाक्षमेक्ष ( वि. ) तरकीब और तदबीर से पूर्ण ।  
 धालवुं ( कि. ) मीतर डालना, धकेलना, घुसेड़ना, प्रवेश कराना, मरना, छेदना । [ कर्जान चुकाना ।  
 धाली पड़वुं ( कि. ) कण न देना,  
 धास ( सं. ) तृण, घास, भूसा, चारा, हानि ।  
 धास धाये ( सं. ) घास और दाना, खोराक, पेट खर्ची ।  
 धाभुं ( कि. ) रगड़ना, घिसना, साफ करना ।  
 धासिये ( सं. ) घोंदें की काठी पर का ऊनी वस्त्र ।  
 धियाण ( वि. ) जिसमें घी हो, अधिक घृत युक्त दुग्ध, अधिक दूध देनेवाली ।  
 धी ( सं. ) घृत, आप्य । [ जिह्वस ।  
 धीस ( सं. ) चौकीदार, होली का धीसे ( सं. ) झूठ वादा, असत्य, वचन ।  
 धुधर ( सं. ) घूँघट, ओट, परदा ।  
 धुंधवाट ( सं. ) ऊँची उड़ान, शोर-गुल, धुब्ध ( सं. ) उल्लू, घुग्घू ।  
 धुंठो ( सं. ) घूँट,  
 धुंठथु ( सं. ) घुटना, जानु,

धुंठथिया भरवां ( कि. ) घुटनो बल सरकना । [ मसकना, घोटना ।  
 धुंठवुं ( कि. ) मलना, रगड़ना,  
 धुंटी ( सं. ) लपेट, उलझाव, कठिनता, टखनों का जोड़ ।  
 धुधरभाण ( सं. ) छोटी छोटी घंटियों की बनी हुई माळा । धुंधरों की माळा ।  
 धुधरी ( सं. ) एक प्रकार का जेवर, खन खनाइट ।  
 धुधरी ( सं. ) घूघरा  
 धुभट-डी ( सं. ) गुम्बज, घूँघट, आड़, ओट । [ लोरी,  
 धुभथी ( सं. ) पल्लवे का संचालन,  
 धुभरडी ( सं. ) लौट, दौड़, नाच, चक्कर मक्कर ।  
 धुभरधुं ( कि. ) गुरांना, घुबफना, उदास होना, अंधेरा, होना, तेवरी, चढ़ाना । [ घुसजाना,  
 धुभवुं ( कि. ) घुसना, गहिरा-  
 धुरधुर ( सं. ) आँतों का गुर गुर का शब्द, गुराइट ।  
 धुवड ( सं. ) उल्लू, घुग्घू,  
 धुसवुं ( कि. ) बलपूर्वक प्रवेश करना, घुसजाना ।  
 धुसीधुं ( सं. ) चूहों का जाक ।  
 चूहे पकड़ने का फन्दा ।

धूम ( वि. ) बेहोश, मस्त,  
 धूस ( सं. ) बड़ा चूहा, रूस ।  
 धृतपात्र ( सं. ) धो का बर्तन ।  
 धे'धट ( वि. ) बेहोश, उन्मत्त,  
 स्तुस्त, आलसी ।  
 धेटी ( सं. ) मेढ़ा । [ बच्चा  
 धेडु ( सं. ) मेमना, भेड़ का  
 धेड़ा ( सं. ) मेढ़ा,  
 धेन ( सं. ) बेहोशी, मोहोवस्था,  
 अवतपन, मूर्च्छा, सुस्ती ।  
 धेर ( सं. ) गिर्द, घेरा, परिधि,  
 गोलचक्कर, परिमितरेखा,  
 धेरदार ( वि. ) कोर युक्त, पारिधि  
 युक्त, [ करना, रोकना ।  
 धेरुं ( कि. ) घेरना, अपेक्षित  
 धेरावे ( सं. ) घेरा, परिधि,  
 धेरी ( सं. ) घृत, घेरा, पारिधि,  
 धेरी धेडु ( कि. ) रोकलेना, ठहरा  
 रखना,  
 धेड़ ( वि. ) गाहिरा, ओंठा,  
 धेरधेर ( कि. वि. ) प्रतिगृह,  
 धेरा ( सं. ) घेरा, नगर परिवेष्टन,  
 परिधि  
 धेरधेरावे ( कि. ) घेरा डालना,  
 चारों ओर से घेर डालना ।  
 धेधडा ( सं. ) पागलपन, मूर्खता,  
 नाबानी, अज्ञानता,

धेधस ( वि. ) पागल मूर्ख, छठ,  
 धेधस ( सं. ) पागलपन, मूर्खता,  
 धेधु ( वि. ) देखो, धेधस  
 धेधस ( सं. ) पाने, शब्द, गर्जन,  
 कोलाहल, चिन्ताहट, बखेड़ा ।  
 धेधुं ( कि. ) घुसेड़ना, छेड़ना,  
 खुरसना, खोंसना ।  
 धेधुं ( कि. ) घुर घुर करते हुए  
 सोना । खराटे की नाँव लेना ।  
 धेधेध ( सं. ) धोड़ों की भाग,  
 घुड़दौड़ ।  
 धेधेध ( सं. ) सिपाही, सवार,  
 धेधेधाला, अश्वारोही,  
 धेधेध धुं ( कि. ) चढ़ना,  
 अश्वारोहण, धेधेध चढ़ना ।  
 धेधेध ( सं. ) बड़ गाड़ी जिसे  
 धेधे खींचते हों ।  
 धेधे ( सं. ) अश्वशाला, अस्त  
 बल, धोड़ों के रहने की जगह ।  
 धेधेध ( सं. ) एक प्रकार की  
 बूटी, सुगन्धितजड़ी ( औषधि )  
 धेधेधे ( सं. ) साईंस, धेधे-  
 वाला ।  
 धेधेध ( सं. ) झूलना, पलना,  
 धेधे ( सं. ) धातुरंज के खेलमें एक  
 पदवी, धोड़ी, डोंना, चौखट ।

**वैश्वदेव** ( सं. ) वैश्व मास का प्रथम दिन । [ चोटक ।

**वैश्व** ( सं. ) बख, बाजी, तुरंग,

**वैश्वदेव** ( सं. ) बैल, साँढ,

**वैश्व** ( सं. ) गंभीर, संजीवा सप्ताधि । कज । [ भयानक

**वैश्व** ( वि. ) निर्दय, धुंघला, अंधेरा,

**वैश्वदेव** ( वि. ) भयानक, खौफनाक, डरावना ।

**वैश्वदेव** ( सं. ) नीच कृत्य, दुष्टकर्म, निर्दयकर्म ।

**वैश्वदेव** ( कि. ) खरीटा लेना, सोते समय नाक से शब्द करना ।

**वैश्व** ( सं. ) शब्द, आवाज, गूँज, प्रति ध्वनि । [ छिड़कना, सोचना।

**वैश्व** ( कि. ) मिलाना, चालना,

**वैश्वदेव** ( सं. ) संदेह, अनिश्चित ।

**वैश्वदेव** ( कि. ) किसी विषय पर गौर करना । [ होने दो ।

**वैश्व** ( कि. ) कुछ परबाह नहीं,

**वैश्व** ( सं. ) मारनेवाले की अर्थ द्योतक प्रत्यय, नाशक । [ ग्रहण, आघ्राण ।

**वैश्व** ( सं. ) नाक, नासिका गन्ध

**वैश्वदेव** ( सं. ) सूँघने वाली शक्ति, नाक, नासिका ।

३

४—गुजराती वर्णमाला का १६ वाँ अक्षर, पाँचवाँ व्यंजन ।

२

२—गुजराती वर्णमाला का १७ वाँ अक्षर, छठा व्यंजन । [ मास ।

**वैश्व** ( सं. ) वैश्व, मधुमास, प्रथम

**वैश्व** ( सं. ) अत्यंत गर्मी,

**वैश्व** ( सं. ) बाजार, हाट,

**वैश्व** ( सं. ) चतुर्दशी, हिन्दू चांद्र मास का १४ वाँ तारीख ।

**वैश्व** ( सं. ) नास की खपियों द्वारा बना हुआ परदा, पर्दा, चिक ।

**वैश्व** ( सं. ) बकबक, चमक, दमक, चूँचूँ, चीची ।

**वैश्व** ( वि. ) दमकता हुआ, चमकदार, शानदार ।

**वैश्व** ( कि. ) चमकना, दमकना प्रज्वलित होना, प्रकाशित होना,

**वैश्व** ( सं. ) चमक, झिलमिलहट ।

**वैश्व** ( वि. ) स्वच्छ, साफ, निर्मल, उज्ज्वल, खूबसूरत ।

**वैश्व** ( सं. ) अन्वेषण, तलाश, ढूँढ, खोज, रखवाली ।

**वैश्व** ( वि. ) प्रसित, मस्त मत-वाला, मदोन्मत्त ।

**वैश्व** ( सं. ) कुमरी, चकरो, एक प्रकार का मूला ।

अक्षरुं ( सं. ) टुकड़ा, चीक,  
 अक्षभ ( सं. ) चकमक पत्थर पथरी,  
 अक्षभक्ष ( कि. ) खनदना, वाह  
 खुद करना ।

अक्षभे ( सं. ) कम्मल, कामरी ।

अक्षभभर ( सं. ) चक्कर, चकरी,  
 चारोंओर चक्कर ।

अक्षरडी ( सं. ) चक्कर, चकरी,  
 टूटा से चलनेवाली चक्की, पवन  
 चक्की । [ घूमना ।

अक्षरी क्षरपी ( कि. ) चारोंओर

अक्षरकुं ( सं. ) सफर, सून्व,  
 पगड़ी, चक्कर,

अक्षर भास्वुं ( कि. ) चक्कर  
 लगाना, घूमना, चकर दंड  
 लगाना ।

अक्षरवे ( सं. ) सेना का चक्रव्यूह,  
 परिधि, घेरा, लंबा चक्कर ।

अक्षरी ( सं. ) चकरी, एक प्रकार  
 का रोग ।

अक्षरीभावपी ( कि. ) चक्कर  
 आना, चारोंओर घूमना ।

अक्षक्षेक्षर ( सं. ) गल्ली या महोत्ते  
 का आफिसर ।

अक्षे ( सं. ) गली, छोटी बाजार,  
 सीमा, गैरेबा ( पक्षी ) [ चक्की ।

अक्षी ( सं. ) हाथ चक्की, छोटी

अक्षीत ( वि. ) आश्चर्यमयित,  
 विस्मित, अश्चर्यमित, आश्चर्य ।

अक्षीतवसुं ( कि. ) विस्मित होना  
 व्याकुल होना ।

अक्षेक्षर ( सं. ) तीतर का एक भेद,  
 पक्षी विशेष, चक्कल सेब,

अक्षेक्षर ( सं. ) चक्र, घेरा, परिधि  
 पहिया, एक प्रकार की बीमारी ।

अक्ष ( सं. ) चाक, चक्र, पहिया,  
 चक्कर, बादाबुबाद, छला ।

अक्षमति ( सं. ) गोलचाल, पहिये  
 की गति, चारोंओर का चक्कर ।

अक्षक्षेक्षर ( सं. ) एक प्रकार की  
 कसरत । [ विष्णुभगवान् ।

अक्षक्षेत्री ( सं. ) सुदर्शनधारी,

अक्षक्षेत्री ( वि. ) सार्वभौम, समुद्र  
 पार्यन्त प्रजापालन करनेवाला,  
 सम्राट् ।

अक्षक्षेत्री ( सं. ) मिश्र व्याज ।  
 कटवों मीठी का व्याज ।

अक्षक्षेत्री ( सं. ) युद्धार्थ सेना का  
 मंडलाकार व्यूह ।

अक्षक्षेत्री ( सं. ) गोलकार, घेरा ।

अक्षक्षेत्री ( कि. ) कुचलना, आक्रान्त  
 करना, रौंदना, मसलना ।

अक्षक्षेत्री ( कि. ) कुचलना ।

अभाष्युं ( कि. ) (पतंग) उड़ाना  
छुमाना, फुससाना, उससाना,  
हटाना ।

अंअ ( वि. ) दृढ, शुद्ध, स्वस्थ,  
तन्दुरुस्त ( सं. ) पंटी, ताश का  
खेल विशेष ।

अंगारी ( सं. ) चिनगारी ।

अंभी ( सं. ) दुष्ट, गौजा भौंज  
को सेवन करनेवाला । [ तेज ।

अंथु ( वि. ) नटखट, चालाक,  
अथथुं ( कि. ) दाह मालूम होना,  
जलना ।

अथथुं ( कि. ) चिलक मारना,  
टीस मारना, दुखाना, देखो  
अथथुं । [ दर्द ।

अथथुं ( सं. ) तोखा दर्द, अति  
अंथु ( सं. ) चपल, अस्थिर,  
उतावल, लम्पट । [ घन ।

अंथु ( सं. ) विजली, लक्ष्मी

अंथु ( सं. ) चपलता, अस्थि-  
रता, खुशदिली, सजीवत्व, चालाकी ।

अथ ( सं. ) तुरंत, शीघ्र, त्वरित,  
झट, हठ, चिंता ।

अथ ( वि. ) लाल, सुख, रफ, ( सं. )  
गैरैया पक्षी, [ जल्दीसे, तेजीसे ।

अथथुं-अथथुं ( कि. वि. )

अथथुं आथथुं ( कि. ) ठंकारना  
उछाना, काटना ।

अथथुं आथथुं ( कि. ) खिन्नना,  
चिड़ना, रगड़ना, दर्द होना ।

अथथुं ( सं. ) स्वादिष्ट, मजेदार,  
चटनी, चाटने की वस्तु ।

अथथुं ( सं. ) लालसा, अभिलाषा,  
रंज, चबड़ाहट, क्रोध, चिंता ।

अथथुं ( सं. ) बेचैनी व्याकुलता,  
कष्ट, क्लेश, तकलीफ ।

अथथुं ( सं. ) साधारण, आस्तरण  
विशेष, फर्श । [ घूस देना ।

अथथुं ( कि. ) चटाना, दिग्बतदेन ।

अथथुं ( सं. ) धारी, लकीरें, रेखा,  
घन्ना, दाग ।

अथथुं ( सं. ) उत्तरचढ़, उत्थान  
और पतन, उन्नति अवनति ।

अथथुं ( सं. ) चढाव, चढाई,  
फुर्ती, तेजी [ जल्दी, सत्वर ।

अथथुं ( कि. वि. ) तुरंत, शीघ्र

अथथुं ( कि. वि. ) झगड़ा करना,  
विवाद करना ।

अथथुं ( सं. ) निकल पड़ना,  
बदलुवाद, झगड़ा, टंटो ।

अथथुं-अथथुं ( कि. ) सेकेहुए, उब-  
लना, बुझिपाना, बढना, चढना,  
आरोहणकरना, उठना, आदेश

करना, पूर्ण करना, छूटा बढाव देना  
फूँकना, हौफना, अतिशय प्रशंसा  
करना, मस्तकरना, बेहोश करना,  
धावा करना, आक्रमण करना  
चढाई करना, योग्य होना, उचित  
होना, देवमूर्तिको बलिके रूपमें भेट  
होना, छेद रहना, पड़ रहना ।

२३५६ ( सं. ) मिथुनिका प्याला, मि-  
थुनिका बना कटोरा ।

२३५७ ( वि. ) स्पर्धालु, बराबरी  
करने में तेज, प्रतिद्वन्द्वी । [ क्रुद्ध

२३५८ ( वि. ) गर्म, उष्ण, कुपित,

२३५९ ( सं. ) दुष्ट, नीच, कमीना,  
घातक, वर्णशंकर,

२३६० ( सं. ) दुष्ट मंडली,

२३६१ ( सं. ) दुष्ट स्त्री, नीच  
स्त्री, पातित स्त्री ।

२३६२ ( सं. ) देवी दुर्गा, उमा,  
गौरी कात्यायिनी, शिवा, भवानी ।

२३६३ ( सं. ) कुमरी, लवा, च-  
ण्डूल पक्षी विशेष,

२३६४ ( सं. ) देखो २३६५

२३६६ ( सं. ) देखो २३६७

२३६८ ( सं. ) उदय, उत्थान,  
कृतकार्यता, सफलता, उन्नति, ब-  
ढोतरी, वृद्धि, उँचाई, उत्कृष्टता,  
उन्नतदशा, अच्छे तरकीबों के दिन,

अर्थ वृद्धि, उन्नत पद, उदयमें  
सफलता । [ उदय विकास ।

२३६९ ( वि. ) उत्कृष्ट, उत्तम, उत्थान

२३७० ( सं. ) सूदरसूद,  
मिश्र व्याज ।

२३७१ ( कि. ) चढ़ना, आरोहण,  
वृद्धि पाना, उठना, उदय होना,  
प्रसार पाना, समाप्त होना, देखो

२३७२ [ आक्रमण, जलयात्रा ।

२३७३ ( सं. ) धावा, हमला,

२३७४ ( सं. ) अहंकारी, घमंडी ।

२३७५ ( वि. ) ईर्ष्यापूर्ण वादवि-

वाद, डाहयुक्त झगडा ।

२३७६ ( कि. ) उभाड़ना, भड़-  
काना, बढकाना, फुसलाना, भपकी  
देना, चढाना, प्यार करना, क्षमा-

करना ।

२३७७ ( सं. ) उत्थान. बढती,

२३७८ ( कि. ) उठ आना,  
क्रोधयुक्त हो आना, चढाई करना,  
दबा लेना ।

२३७९ ( वि. ) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ,

२३८० ( सं. ) छोटी चिनगारी ।

२३८१ ( सं. ) फोड़े में चीरफाड़

का दर्द । ज्वर में चरमराहट ।

अक्षर ( सं. ) राज का कान,  
मकान चुननेका काम, अठारी,  
अष्टालिका,

अक्षु ( कि. ) चुनना, अवन  
निर्माण करना, सड़ा करना, बनाना,  
रचना । [ सं. ) खेकी ढाल ।

अक्षु ( सं. ) अक्ष विशेष, चणक इण

अक्षिभा ( सं. ) चूल, चूलिया,  
लकड़ में खोदा हुआ वह छिद्र  
जिसमें किड़ा घूमा करता है ।

अक्षिये ( सं. ) अियों के पहिने  
का चापरा, जूँगा ।

अक्षु ( सं. ) दाना, बीजा, २॥  
प्रेम का एक तौल ।

अक्षु ( सं. ) २॥ प्रेम के  
लयभग वजन ।

अक्षु ( कि. ) अित, पीठ के बल  
लेटा हुआ, मान्य, अनुकूल, दयालु ।

अक्षु ( वि. ) कार्यक्षम, आत्मस्व-  
रहित, पटु, निपुण, धूर्त ।

अक्षु ( सं. ) चार प्रका-  
रकी सेना । वह सेना जिस में  
हाथी घोड़े और पैदल हों ।

अक्षु ( सं. ) अत्यंत पटु,  
बुद्धिमान, अक्रमन्द, पटु, निष्णात,

अक्षु ( सं. ) सीमाकी रेखाएँ  
हद, सीमा ।

अक्षु ( वि. ) जड़ीय, चतुर,  
तीक्ष्ण बुद्धिका, सम्यक्, सुशिक्षित,  
अक्षु ( सं. ) चतुर महिला, होशि-  
वार, जी ।

अक्षु ( सं. ) प्रवीणता, दक्षता,  
होशियारी, बुद्धिमान्, गुण,

अक्षु ( सं. ) जिसके चार मुख  
हों, ब्रह्मा, विघाता, विधि ।

अक्षु ( वि. ) चौथा हिस्सा,  
चौथा भाग,  $\frac{1}{4}$ ,

अक्षु ( वि. ) तिथि विशेष, चौथा

अक्षु ( वि. ) चौदह, चौदहवाँ,  
१४, चार अधिक दश ।

अक्षु ( सं. ) तिथि विशेष, चौदस ।

अक्षु ( वि. ) चतुष्कोण, चौकोना ।

अक्षु ( सं. ) चारों ओर, सब  
दिशा, चार दिशा, पूर्व पश्चिम  
उत्तर और दक्षिण ।

अक्षु ( सं. ) चार भुजावाला,  
विष्णु, रेखागणित का एक स्वरूप  
जो चारों ओरसे घिरा रहता है ।

अक्षु ( सं. ) चार मास, वर्षा-  
ऋतु, बरसात, प्रवृष्ट ऋतु, पावस ।

अक्षु ( सं. ) चार मुहँवाला,  
ब्रह्मा, विधि, विरंची, सृष्टिनिर्माता ।

अक्षु ( सं. ) पुनरावर्त चतुष्टय  
वर्मे अर्थ काम और मोक्ष ।



- अनुविध ( वि. ) चार प्रकार, चार तरह, चौकड़ा, चौहरता ।
- अनुविध ( सं. ) चौरस, चौकोना चौकोन ।
- अनुविध ( सं. ) चार का समूह, इकट्ठे चार, चार का ढेर ।
- अनुविध-पाद ( सं. ) चार पैर का ढोर, पशु, चौपाया ।
- अनुविध ( सं. ) एकलाई, ओढ़ने का एक प्रकार का वस्त्र, बिछौने या पलंग पर बिछाने का वस्त्र, टेबल क्लॉथ । [ विशेष, सन्दल ।
- अनुविध ( सं. ) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष
- अनुविध ( सं. ) गोय, गोहरे की एक जाति विशेष, पाटागो ।
- अनुविध ( सं. ) चंदन की बनी हुई चूड़ी जिसे प्रायः स्त्रियां पहिनती हैं ।
- अनुविध ( सं. ) एक प्रकार का गले में पहिनने का उज्ज्वल आभूषण ।
- अनुविध ( सं. ) चोंद, विष्णु, शशि, मयंक, निशानाथ, रोहणी पति ।
- अनुविध ( सं. ) ज्योत्स्ना, चंद्रिका, कौमुदी, चन्द्रप्रभा, चोंदनी । कपड़े की छत, छोटी सोने की अँगूठी
- अनुविध ( सं. ) पाक, चन्दवा ।
- अनुविध ( सं. ) एक प्रकार का चोंद, एक प्रकार का गोंद ।
- अनुविध ( कि. वि. ) कुछ काममें अल्पकाल में, शीघ्र, जल्दी ।
- अनुविध ( सं. ) पशुओं के लिये अन्न विशेष, बाँठ, दाना, खोरक ।
- अनुविध ( सं. ) बड़ी का चेंहरा, डायल ।
- अनुविध ( सं. ) चिन्ह विशेष जो कपाल पर बनाया जाता है ।
- अनुविध ( सं. ) चन्द्रमा का सोलह कलाओं मेंसे एक, एक प्रकार का स्त्रियों का वस्त्र विशेष ।
- अनुविध ( सं. ) मणि विशेष, वह मणि जो चन्द्रमा को देखकर प्रदीप्त हो जाती है ।
- अनुविध ( सं. ) राहुद्वारा चन्द्रमा का प्रसाजाना । चन्द्र प्रास ।
- अनुविध ( सं. ) चोंदनी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा का प्रकाश ।
- अनुविध ( वि. ) चन्द्रमा का । चोंद ।
- अनुविध ( सं. ) चन्द्रमा की अनुकुलता, चन्द्रमा की शक्ति ।
- अनुविध ( सं. ) चन्द्रमा की परछाही ।
- अनुविध ( सं. ) चन्द्रमा का गोलाकार स्वरूप, चन्द्रपरिधि, तारे और चोंद ।
- अनुविध ( सं. ) चन्द्रमा की चाल के अनुसार गणना किया जाने वाला महीना, चान्द्रमास ।

अंशुभी-वहनी ( सं. ) चन्द्रमा के समान मुहँवाली, सुमुखी, वरषर्णिनी सुमुखी ।

अंश्वंश ( सं. ) चन्द्रमा के बंज, चन्द्रमा का कुल, यदुवंश, यादव ।

अंश्वार ( सं. ) सोमवार, दूसरावार

अंशोभर ( सं. ) शिव, महादेव ।

अंशुवणी ( सं. ) एक प्रकार का गीत । गान विशेष ।

अंशिका ( सं. ) चँदनी, ज्योत्स्ना ।

अंशुस ( सं. ) देखो अंशुस

अंशुदय ( सं. ) चन्द्रमा का उदय, रात्रिका प्रथम प्रहर ।

अप ( विस्म. ) खामोश, चुप ।

अपक्षपुं ( वि. ) डाम देना, गर्म लोहे से दग्ध करना, जलाना, झुलसना ।

अपक्षे ( सं. ) तमाचा, सख्त चोट,

डंक, डंस, जुमन, जली हुई लकड़ी,

अपथप ( क्रि. वि. ) शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से, [ पट्ट, बराबर

अपट-अपट ( वि. ) चपटा, पाल्थी,

अपट भेसपुं ( क्रि. ) पाल्थी मार कर बैठना, पद्यासन बैठना ।

अपटपुं ( क्रि. ) टोटा झेलना हानि उठाना, दुश्चित होना, चपटा करना ।

अपटी ( सं. ) चुटकी, तफलीफ,

क्षण, पल, ( वि. ) चपटा

अपटीभां ( क्रि. वि. ) एक पलमें, क्षणभरमें, अभी । [ ठिगना, छोटा ।

अपटुं ( वि. ) चपटा, बैठा हुवा,

अपक्षपुं ( क्रि. ) चुराना, खिसक जाना, सटका जाना, उड़ा लेना, हथलपकी करना ।

अपथु ( सं. ) मिट्टी का प्याला ।

अपरास ( सं. ) चपरास, पेटी, एक प्रकारका चिन्ह जो स्वामी मृत्य और मृत्यके पदका सूचक होता है ।

अपरासी ( सं. ) नौकर, दूत, हरकारा ।

अपण ( वि. ) चंचल, अस्थिर, निकल, उद्भिन्न तेज ।

अपणता ( सं. ) चंचलता, अस्थिरता, तेजी, व्याकुलता ।

अपण्य ( सं. ) विद्युत, तड़ित, सीसा-मिनी, विजली, चंचल स्त्री, तेज और ब ।

अपण्य ( सं. ) आँखों की मटक, आँखों के इशारे, सैन,

अपण्य ( सं. ) तेजी, चपलता,

अपटपुं-टी अपुं ( क्रि. ) खोजाना, मकोसना, निगलजाना, हड़प-करजाना ।

अपाटी ( सं. ) छोटी दिक्किया,  
छोटी रोटी, चपाती ।

अपेहीभां आवपुं ( कि. ) उलट-  
जाना, फन्दे में फँसजाना,  
घबराजाना ।

अपु ( सं. ) चाकू, चक्कू, क्षुर ।

अभरक्ष ( वि. ) तेज, चपल,  
चंचल ।

अभुतर ( सं. ) थाना, पुलिस के  
रहून की जगह, कोतवाली, टेक्स  
घर, महसूल घर ।

अभक ( सं. ) चलक, भड़क, चटक  
उज्ज्वलता, प्रभा, दीप्ति, दमक,  
शोभा, अकस्मात् भय से चमक-  
जाना । [ अयस्कान्त ]

अभक पधर ( सं. ) चुम्बक पत्थर,

अभक भांरी ( कि. ) किरण डालना,  
चौधियामारना, चमकना,

अभकपुं ( कि. ) चौंकना, दमकना ।

अभकट ( सं. ) चमक, दमक,  
चटक चौंक, प्रकाश का चौंधा ।

अभकवपुं ( कि. ) डराना, चौंकाना,  
धमकाना, डौटना, घुड़कना ।

अभक्री उडपुं ( कि. ) चौंक उठना,  
चौंकनाना । [ विशेष ।

अभयभ ( सं. ) अत्यंत दर्द, खनि

अभयभपु ( कि. ) बर्बर मारना,  
चपतमारना पीटना ।

अभयी ( सं. ) छोटा चम्मच, कुरछी,

अभये ( सं. ) कुरछा, चम्मच,  
चमचा

अभटी ( सं. ) चुटकी, नोच, चिमटी

अभठारी ( सं. ) विस्मय, अचंभा  
आश्चर्य, विस्मयजनक ।

अभठारी ( वि. ) विस्मयजनक,  
आश्चर्यकारक,

अभट्टति ( सं. ) देखो अभठार

अभन ( सं. ) आनन्द, खुशी, हर्ष,  
चरागाह, गुरुओं के चरने का  
स्थान ।

अभर ( सं. ) चँवर, चामर, व्याल  
व्यंजन, मोर की पंखोंद्वारा बना  
पंखा, माला, हार, गजरा ।

अभार ( सं. ) चमड़ा कमानेवाला,  
चमड़े का धन्धा करनेवाला, चर्म-  
कार, मोची ।

अपक्ष ( सं. ) वृक्ष विशेष, पुष्प  
विशेष, [ जाना बे पते होजाना ।

अपन धपुं ( कि. ) छू बोलना, माग

अपध ( सं. ) पादुका, खड़ाऊँ,  
स्लीपर, चपकन जूते ।

अपधपुं धुध ( सं. ) चम्पा वृक्ष  
का पुष्प ।

अपधरक्ष ( वि. ) चम्पाके रंगका ।

अक्षरवृत् ( कि. ) दक्षणा, अंत  
दक्षणा । [ अंगों की दक्षणा ]

अक्षी ( सं. ) हाथ पाँव का चम्पन  
अक्षी-अक्षी ( सं. ) चमेली, लता  
विशेष ।

अक्षु ( सं. ) प्याला, पेय द्रव्य  
पीने का पात्र ।

अक्षू ( सं. ) सेना, दल, कटक,  
सेना विशेष ।

अक्ष ( वि. ) उगने योग्य अस्थिर,  
अस्थायी, चलनशील, ( सं. ) साई,  
खड्ग ।

अक्षो-अक्षी ( सं. ) बाव, चोट, लाभ  
चरखा सूत कातने का रईदा,

अक्ष ( कि. वि. ) तेजी से शीघ्रता  
पूर्वक, चपलता युक्त, चंचलता  
पूर्ण ।

अक्ष ( सं. ) लकीर मारना,  
सपाटे से लिखना ।

अक्ष ( कि. ) किसी के लिये अति  
दुखी होना ।

अक्षी ( सं. ) जिक्र, आन्दोलन, तर्क,  
वक्तव्य, विचार ।

अक्षपत्र ( सं. ) लिखापट्टी, पत्री  
( सं. ) लिखापट्टी करने वाला  
आवृत्तिवा ।

अक्ष ( सं. ) पाँव, पैर, पद, अंग्रि,  
( सं. ) चरने का काम ।

अक्षुभ ( सं. ) अनुयायी, अवलंबी  
आश्रित, परवश, शरणागत, ।

अक्षुभ ( सं. ) चरणोदक, पादोदक  
मान्यों के पैरों को धोया हुआ जल ।

अक्षुभ ( सं. ) चरणकमल, पाद-  
पद्म, कमल सहस्र पैर ।

अक्षुभ ( सं. ) चरणामृत, पादोदक ।

अक्षुभ ( सं. ) पशु, चरनेवाला जीव,  
चरिन्दा । [ चर्बा, गर्व ।

अक्षुभ ( सं. ) मोटा, पुष्ट, बसा भेद,

अक्षुभ ( वि. ) भेदमुक्त,  
बसापूर्ण, मोटा, भरा हुआ ।

अक्ष ( सं. ) चमड़ा, छाल, त्वक  
छाल ।

अक्ष ( सं. ) लिखने के लिये  
कमाया हुआ चमड़ा, चमड़े का  
कागज ।

अक्ष ( सं. ) शब्द विशेष, चर्राटे  
का शब्द, चरचर का शब्द ।

अक्ष ( सं. ) साईस

अक्ष ( सं. ) प्याला, कटोरा, एक  
प्रकार की कड़ाही ।

अक्ष ( कि. ) शरणा, घासखाना ।

अक्ष ( सं. ) प्यार, चाह, स्पर्धा,  
मादक द्रव्य विशेष, बेहोशी पैदा  
करनेवाली औषधि, मादक द्रव्य

अक्षरवर्ण ( सं. ) बराबरी, स्पर्धा  
 अक्षर-भक्ष ( सं. ) पशु के चराने  
 को मजदूर, वनके रूपमें, चराई के  
 दाम । [ प्रकाश, रोशनी ।  
 अक्षर ( सं. ) दीपक, दीप, दीवा,  
 अक्षरवृत्त ( कि. ) चराना, पशु,  
 चराना ।  
 अक्षर ( सं. ) कार्य, आचरण,  
 बीरता का काम, बड़ा भारी काम,  
 उपाख्यान, तजक़िरा, बीरता का  
 वर्णन । [ जाना, हृदय करजाना ।  
 अक्षर-वृत्त ( कि. ) साजाना निगल-  
 यक्ष ( सं. ) एक बड़ा ताम्र पात्र,  
 यज्ञाक्ष, यज्ञ का शेष अक्ष ।  
 अक्ष अक्ष ( विस्म० ) जा, निकल,  
 दूर हो, चलना, हटना ।  
 अक्षय ( सं. ) शक्ति, आचरण,  
 चालचलन, चाल । [ मौजूद ।  
 अक्षय ( वि. ) चलता हुआ, वर्तमान,  
 अक्षय ( सं. ) विलम्ब, मिथी काष्ठ,  
 या धातु का बना हुआ पात्र जिसमें  
 तमाखू रखकर पाक की जाती है ।  
 अक्षय ( वि. ) अक्षय, ग्रहण  
 योग्य, धकाक ।  
 अक्षय ( सं. ) अक्षय अथवा मुक्ति-  
 काका बना हुआ प्याला ।

अक्षयवृत्त ( कि. ) सरकाना, हटाना,  
 हिलाना, चाल देना, चक्कना,  
 हँकना, आगे बढ़ाना, दूसरे के  
 लिये व्यवस्था करना, चक्कना,  
 ठीक करना, नेव डालना, आग  
 लवाना, चालु रखना, जारी रखना ।  
 अक्षित ( वि. ) कंपित, चपल,  
 हिलता हुआ, अस्थिर ।  
 अक्षय-धी ( सं. ) गैरैया ( पक्षी )  
 अक्ष ( सं. ) मोतियों का माप,  
 वजन, योग्यता, शक्ति, अनुभव,  
 इत्थ, ज्ञान, स्वाद, लज्जत, डंग ।  
 अक्षय ( सं. ) एक संग भोजन,  
 आचार, मुरब्बा ( वि. ) सिचड़ी,  
 मिला हुआ, सिभित ।  
 अक्षयवृत्त ( कि. ) खाना या चवाना ।  
 अक्ष ( सं. ) सख्त, कठिन, कठोर,  
 चिमड़ा, कड़ा । [ बार स्वादिष्ट ।  
 अक्षय ( वि. ) स्वादयुक्त, जायके  
 अक्षय ( सं. ) दुअसी, दो आने का  
 सिक्का । [ चंचलता, बेकली ।  
 अक्षय ( सं. ) न्याकुलता, बेचैनी,  
 अक्षय ( सं. ) मज़ाक, दिहवायी,  
 हँसी, नकल, हँसी उठना ।  
 अक्षय ( कि. ) जनता के समक्ष बोधी  
 होना, कलंकित होना ।

अक्षर-वेष्ट (सं.) बचाने योग्य,  
बचाना, गुण्य वाच वस्तु ।

अक्षर-रम-रम (सं.) नेत्र, आँख,  
नयन । [सूरदास, फूटी आँखों का ।

अक्षरभेद (सं.) अंधा, नेत्र हीन,  
अक्षर (सं.) ऐवक, उपनेत्र, आँखों  
के आगे लगाये जाने वाले काच ।

अक्षर (सं.) चीसगुण्य दर्द, ऐसा  
दर्द जिसमें काँटे से चुभते हों ।

अक्षरपुं (कि.) हिलना, सरकना  
पागल होना ।

अक्षर (सं.) कान में दर्द, ऐसा  
कर्णमूल जिसमें चीस उठती हो,  
चीर फाड़ सरीखा दर्द, चोंचल,  
इच्छा, चाह, बीग, शेखी,

अक्षर-अक्षर (कि. वि.) लड़ाई की  
हालत में । [ होना, नाग होना,

अक्षरपुं (कि.) मरना, दूबना, पतन

अक्षर (वि.) अस्थिर, चल, अनित्य  
बोढ़े दिन का, नाशमान, कुल,  
लत, विसका, खाज ।

अक्षर-अक्षर (कि. वि.) उज्ज्वल,  
दमक दमक, देदीप्यमान ।

अक्षरपुं (वि.) चमकदार, उज्ज्वल,  
प्रकाशमान, दमकता हुआ, प्रमा-  
द्विबत, मड़कदार, घोषित ।

अक्षरपुं (कि.) चमकता, दमकता,  
प्रकाशित होना ।

अक्षर (सं.) चमक, प्रकाश,  
सुहरत, नानबरी, तेजज्योति,  
रोशनी ।

अक्षरवण (सं.) व्याकुलता, बेचैनी,  
विता, सोच, कठिनाता ।

अक्षर-अक्षर (कि.) खपरे फिरवाना,  
'घर छबाना, कबेकू फेरना, भुलाना,  
मटकाना, बहकाना ।

अक्षर (वि.) हिलता हुआ, कंपित

अक्षर-अक्षर (कि.) पागल होना,  
मूर्ख होना, बेअकल बनना, भूलना ।

अक्षर-अक्षर (कि.) भोजन के बाद  
पानी पीकर हाथ मुँह धोना, चुलू  
करना । [ कूफ, अस्थिर, उगमग ।

अक्षर-अक्षर (वि.) पागल, मूर्ख, बेव-

अक्षर (सं.) नेत्र, आँख, नयन ।

अक्षर (सं.) चाय, चाय वृक्ष की  
पत्तियाँ जिसे लोग उबाल कर पीते  
हैं । एक मसक वस्तु विशेष ।

अक्षर (सं.) सूवेदार ।

अक्षर (सं.) चूँचिया मिठी, चाक  
मिठी, पहिवा, चक्की का पाट ।

अक्षर (सं.) शैवक, चौकर, मृत्य ।

अक्षर (सं.) दाखी, बीदी, भूया ।

आकर नकर ( सं. ) चेला, नौकर,  
साथी, घरका नौकर, बरू,  
आकरी ( सं. ) सेवा, भृत्यता,  
नौकरी, दासता, गुलामी ।

आकरी करवी ( कि. ) सेवा करना,  
नौकरी करना, गुलामी करना,  
राह देखना ।

आकण ( सं. ) छोटासा सौंप, सपलक

आकणो ( सं. ) पानी खींचने का  
चाक, पानी निकालने का पहिया ।

आकी ( सं. ) चमड़े का बनी गोल  
बैठक ।

आकु ( सं. ) चक्कू, छुरा, छुर ।

आकडी ( सं. ) लकड़ी के जूते,  
पातुका, खड़ाक ।

आकवुं ( कि. ) स्वादलेना, चखना,  
जायकालेना, परीक्षा करना ।

आकथुं ( कि. ) चाटना, अवलेह,  
औषधिका एक रूप ( चटनी )

आकथुं ( सं. ) दर्पण, शीशा, सूरत  
शक, रूप, चेहरा ।

आकवो ( सं. ) लकड़ी का चम्मच,  
चादू, काठ का बना चमचा ।

आकुरी-डो ( सं. ) बखी, बातली,  
गप्पी, हरेक काममें अपनेको  
हुक्मिमान बनाने की इन मरने  
वाली ।

आकु-आभकुं ( सं. ) बकता, दाम,  
चिन्ह, चह्ना, फोड़ा, धाव, बाधूर,  
ददोरा ।

आकुर ( सं. ) हल ।

आकुरी ( सं. ) जुगलबोर, निंदक ।

आडी ( सं. ) निंदा, कंठक, दोष,  
जुगली ।

आडीभापी ( कि. ) जुगली खाना,  
अपवाद करना, अपयशदेना, दोष  
लगाना, झूठा कलंक लगाना ।

आकुं ( सं. ) दीबट, दीपक रखने  
की ( दीबट ) मुहं, चेहरा ।

आक ( सं. ) पपीहा, पक्षी विशेष,  
एक पक्षी जो स्वाति नक्षत्र के  
वर्षा जल को ही पान करता है ।

आकुरवुं ( कि. ) हिलना, सरकना,  
पीछे हटना, पीठदेना, बाज रहना,  
फिसलना, खिसकना ।

आकुरी ( सं. ) चरखे के पहिये की  
धुरा, घूमनेवाला, चकर खानेवाला ।

आकुर ( सं. ) चतुर, चालाक धूर्,  
प्रवीण, कुशल ।

आकुरभास ( सं. ) चार महीनों की  
जवाब, चार महीने, बर्षा ऋतु ।

आकुरी ( सं. ) दस्त, नेपथ्य,  
कीसड़, चतुरता, होंठों मारी ।

२१५ ( सं. ) चतुरार्ह, चतुरता, धूर्तता । [ बड़ा उपवचन ।

२१६ ( सं. ) चर, पलंगपोश, एक २१६१ ( सं. ) केतली, चाय भरने का बर्तन ।

२१७ ( सं. ) नसीहत, डोंट, रक्षा । चिता, चितावनी, पूर्वबोधन, सूचना ।

२१८ ( सं. ) छोटी सिंकी हुई रोटी, छोटी टिकिया । मीठी रोटी ( छोटी )

२१९ ( सं. ) व्रत विशेष, चन्द्र व्रत, वह व्रत जिसमें शुक्ल प्रतिपदा से नित्य एक प्रास पूर्णिमा तक बढ़ाकर उसी भाँति कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि तक फिर एक प्रास भोजन पर आ ठहरे ।

२२० ( सं. ) धनुष, कोदण्ड, शरा सन, दाप, चानुक, हंटर, कोड़ा, प्रतोद ।

२२१ ( सं. ) उत्तम प्रबंध, थकान, धीमापन, डीलापन ।

२२२ ( सं. ) एक प्रकार की चपाती आलूजन, गलबहियाँ । आँकड़ा ।

२२३ ( सं. ) आँकड़ा, हुक, ( लोहे या पीतलका ) [ पत्तो, २२४ ( सं. ) शुचामद, लक्ष-

२२५ ( सं. ) बोडेका हंटर, कोड़ा, प्रतोद ।

२२६ ( सं. ) उपदेश प्रद पद्य, शिक्षाप्रद छंद, नसीहत की नज़्म ।

२२७ ( सं. ) चबैया, असवार, बुद्धदौड़ का सवार, अश्व शिक्षक । [ निशान, ददोरा फोड़ा ।

२२८ ( सं. ) चकत्ता, दाग, २२९ ( सं. ) खाल, चमड़ा, चर्म ।

२३० ( सं. ) चमार, चर्मकार, चमड़ा रंगनेवाला, चमड़ेवाला ।

२३१ ( सं. ) चमड़ा, चर्म, सूखा चमड़ा, पका हुआ चमड़ा, खाल, चामड़ा ।

२३२ ( सं. ) चवर, चबैरी, पंखा, बालों की बनी चंवरी, मक्खी उड़ाने का ।

२३३ ( सं. ) शारीरिक प्रसन्नता, विषय सम्बन्धी हर्ष ।

२३४ ( सं. ) चमगादड़, चमचड़ी ।

२३५ ( सं. ) पूर्ववत् [ कंचन ।

२३६ ( सं. ) सोना, स्वर्ण, हेम, २३७ ( सं. ) गर्व, घमण्ड, दर्प ।

२३८ ( सं. ) हरी घास, जामूस, भेदिया, गुप्तवृत्त, चार, ४, संख्या विशेष ।

२३९ ( सं. ) पृथ्वी के चारोकोने, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान ।



आरम्भ ( सं. ) चतुर्थ, सतत,  
द्वार, प्रेता, कलि ।

आरम्भ-आरम्भ ( सं. ) रथ, गाड़ी ।

आरम्भ ( सं. ) स्तुति कर्ता, प्रसन्नक,  
भाट, बन्दी, जाति विशेष ।

आरम्भ ( सं. ) चलनी, (छानने की)

आरम्भ ( सं. ) चार दाने, अन्न  
के चार दाने । [ चराना ।

आरम्भ ( कि. ) पञ्चचराना, ढोर

आरम्भ ( सं. ) गोचर भूमि, ढोरों  
के चरने की जगह, चरागाह ।

आरम्भ ( वि. ) सुन्दर, सुहावना, मनो-  
हर, रमणीय, सब सूरत ।

आरम्भ ( कि. वि. ) चटुंधा, चारों  
ओर, चतुर्दिक् ।

आरम्भ ( सं. ) चारा, घास, भूसा ।

आरम्भ ( सं. ) चालचलन, आचरण,  
वर्ताव, लक्षण, गमन, चाल, गति,  
हरकत, वर्तमान, आधुनिक, रीति,  
उद्ग । [ उच्च, आचरण, रीति ।

आरम्भ-आरम्भ ( सं. ) वर्ताव,

आरम्भ ( वि. ) गमनीय, आज्ञा  
योग, कामधकाज ।

आरम्भ-आरम्भ ( सं. ) मादा गायत्री,  
चलती रहनेवाली गाड़ी ।

आरम्भ-आरम्भ ( कि. वि. ) यथा-  
योग्य, यथासंभव, यथासाध्य ।

आरम्भ-आरम्भ ( कि. ) बलेजाना,  
आरम्भ ( वि. ) वर्तमान, साम्प्रतिक,  
आधुनिक, चालू ।

आरम्भ ( कि. ) चलना, हिलना,  
सरकना, आरी रखना, चालू रखना,  
करना, काम आना, काफी होना,  
बरबाद होना, ताकत में होना ।

आरम्भ ( वि. ) धूर्त, निपुण, दक्ष,  
कुशल । [ धूर्तता ।

आरम्भ ( सं. ) दक्षता, कुशलता,

आरम्भ ( सं. ) धरों की पांखी, म-  
कानों की कतार, बाजार, चाल ।

आरम्भ ( सं. ) वर्तमान, आधुनिक  
चलता हुआ, गति युक्त ।

आरम्भ ( विस्म० ) कुछ परवाह नहीं,  
कोई चिंता की बात नहीं, कोई  
बात नहीं ।

आरम्भ ( वि. ) टिकाऊ, चलाऊ,  
गमनीय, धकाऊ ।

आरम्भ ( सं. ) पुलिस स्टेशन,  
धाना, दवान आम ।

आरम्भ ( सं. ) पीसने वाले, दाढ़  
जबड़े, दाँत । [ काटना ।

आरम्भ ( कि. ) चवाना, कुचलना,

अक्षरी (सं.) कुँची, कुंजी, ताली, कुँटी,  
अक्षरीपुं (क्रि.) बबाजाना ।

अक्षर-स (सं.) हलकी लकीर, हल  
द्वारा खोदी गई लकीर, सीता, हानि,  
नीलकण्ठ, एक प्रकार का पक्षी ।

अक्षरिणी (सं.) चाशनी, उबाला  
हुआ इ.करका रस, स्वाद, मज़ा,  
जायका, अनुभव, जांच, परीक्षा ।

अक्षरिणी बनी (सं.) अच्छी प्रकार  
उबलजाना, सीजजाना ।

अक्षर पाउवे (क्रि.) हलकें द्वारा  
रेखा खींचना, लकीर करना ।

अक्षरपुं (क्रि.) गहिरा जोतना,  
ओंढा हल चलाना ।

अक्षर (सं.) इच्छा, प्रेम, स्वाहिष  
मुहब्बत, चुनाव, सेह, चाय ।

अक्षर (वि.) प्रकट, खुलाहुवा,  
सामान्य, साधारण, प्रत्यक्ष ।

अक्षरपुं (क्रि.) चाहना, इच्छा-  
रना, प्रेमकरना, स्वाहिष करना,  
सेहकरना ।

अक्षर (सं.) चाय, चा, पेय द्रव्य जो  
चाय वृक्ष की पत्तियों को उबालकर  
बनसा जाता है । [ छद्म ।

अक्षरिणी (सं.) चालनी, छाननी ।

अक्षरपुं (क्रि.) छानना, छारना,  
परखना, निर्णय करना, कबेछ  
अथवा खपरे छाना ।

अक्षर (सं.) वेष्टाएँ, उछलकूद,  
खेल, कलोल, चालाकी, चोचला ।

अक्षरिणी (वि.) चंचल, खिलड़ी,  
बुरा, दुष्ट ।

अक्षर (सं.) चिकनाहट, गोंद ।

अक्षर (वि.) चपेदार, चिपचिपा,  
लेसदार, छुआव, छेड़, कंजूस ।

अक्षरपुं (क्रि.) तेलसे या तेलकी  
किसी वस्तुसे दाग हो जाना, चीक-  
टजाना ।

अक्षरिणी (सं.) चिकनाहट ।

अक्षर (वि.) तेलका, चिपचिपा,  
लेसदार, चिकना, चिमड़ा, लसलसा,  
लोभी, कृपण, सूय, कंजूस ।

अक्षर (सं.) दस्तकारी, बेलबूटा  
बनाना, ककड़ी, खीरा ।

अक्षरिणी (सं.) दस्तकार, बेलबूटे  
काटनेवाला । [ पूरा ।

अक्षर (वि.) भरपूर, पूर्ण, भरा,

अक्षर भरपु (क्रि.) ठोसकर भरना,  
किनारे तक भरना, होंठ तक भरना ।

विश्वारी (सं.) विश्वार, वायु विशेष,  
स्वर यंत्र विशेष, एक प्रकारकी  
सारंगी ।

विश्वार (सं.) चिकनापन, चिकनाहट,  
चिपचिपापन, बनावट जाली,

विश्वार (सं.) इलाज, रोगोपचार  
औषध प्रयोग, व्याधिका अपनय ।

विश्वार (वि.) दोषान्नाह  
व्याधि, दोष निहारनेवाला पुरुष,  
छिद्रान्वेषी । [ चहला ।

विश्व (सं.) कीच, कीचड़ पंक,  
विश्व (वि.) मझार, चालाक, धोके  
बाज ।

विश्वरथ (सं.) जमीन की तंग गलों,  
जमीन की सकरी धज्जी या पट्टी ।

विश्वरथ (सं.) डर, भय अन्धेसा,  
विश्वरथ (सं.) एक प्रकार का झूला,  
विश्वरथ (सं.) तरसाना,  
ललवाना । [ शब्द ।

विश्वरथ (सं.) चींची, गैरैया पक्षी को  
विश्वरथारी पाठवी-भारवी (क्रि.)  
चिक्कार मारना, चिंघाड़ना ।

विश्वरथारी (सं.) चिक्कार, चिंघाड़ ।  
विश्वरथ (सं.) चीची, हमली का बीज,  
विश्वरथ (क्रि.) चुभाना, कोचना,  
चिपकाना, छड़ी मारना ।

विश्वरथ (सं.) मंत्री, खिरस्तेदार पद  
विशेष ।

विश्वरथ (सं.) पत्र, खत, निमंत्रण-  
पत्र, आज्ञा, हुक्म, टीप, समस्तुक्त,  
मुचलका, परचा, टिकट, चिन्ह,  
पत्र, शोकपत्र, पाती ।

विश्वरथ (क्रि.) चिंघाड़ निकट  
लवाना, टिकट लेना ।

विश्वरथ (क्रि.) चिंघाना, खिस्ताना,  
केशदेना, कुढ़ाना ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।  
विश्वरथ (वि.) चिंघाड़ना, कुपित ।

विश्वकोश ( सं. ) विश्व ज्ञान, विश्व  
विशेष, मन की मूल ।  
विश्वनेत्र ( वि. ) दिलपर बसर करने  
वाला, प्रभावोत्पादक, कल्याणकर ।  
विश्वेश्वर ( कि. ) पता लगाना, खोजना,  
नकशा खींचना, चित्र बनाना ।  
विश्वेश-विश्वेश ( सं. ) चीता, व्याघ्र,  
तेंदुवा । [ दिल की हालत ।  
विश्व स्थिति ( सं. ) चित की दशा,  
विश्वणी ( सं. ) कंपकंपी, धरधरा-  
हट, डर, खौफ, अदृष्टि, घृणा ।  
विश्व ( सं. ) मुर्दा जलाने का  
मन्त्रान, मृतक दाह के लिये संचित  
काष्ठ समूह ।  
विश्व ( सं. ) फिक, सोच, परवाह ।  
विश्व कर्षी ( कि. ) फिकर करना,  
सोचना, चिन्ता करना ।  
विश्वतुल्य-युक्त ( सं. ) उद्दिष्ट,  
चितित, चिन्ताकुल, व्याकुल,  
आकुल । [ चिन्ता युक्त, फिकर से ।  
विश्वतुल्य ( कि. वि. ) सचित,  
विश्वतुल्य ( सं. ) गणेशजी, माणि  
विशेष, कल्पित माणि, पारस पथ,   
एक कल्पित माणि, कहते हैं जिसके  
संसार से लोहा सोना बन जाता है ।  
विश्वतुल्य ( सं. ) मृतक दाह की  
राख, चिता की राख, मृतक मस्ति ।

विश्वतुल्य ( सं. ) मरघट, मृतक  
दाह करने का स्थान, स्नान,  
मसान,  
विश्व ( सं. ) एसन्दगी, कथन,  
क्यान, कहानी, चित्र, छवि, तस्वीर ।  
विश्वतुल्य ( कि. ) रंगना, तस्वीर  
उतारना, नक्शा बनाना, चित्र  
बनाना । [ नक्शा खींचनेवाला ।  
विश्वतुल्य ( सं. ) चित्रकार, नक्शा,  
चितित ( वि. ) सोची, चिन्तायुत,  
लोकान्वित, [ मूर्ति रूप, नक्शा ।  
विश्व ( सं. ) तस्वीर, छवि, पट,  
विश्वतुल्य ( सं. ) देखो विश्वतुल्य ।  
विश्वतुल्य ( सं. ) चित्र बिद्या, तस्वी  
बनाने की बिद्या, नक्शा उतारने  
का हल ।  
विश्व ( सं. ) नक्षत्र विशेष, बौद्ध  
जों नक्षत्र, श्रीकृष्ण की एक सखी  
का नाम, एक नदी का नाम ।  
विश्वतुल्य ( सं. ) देखो विश्व  
विश्वतुल्य-री-रू ( सं. ) फटा बख,  
गूदद, कबरा ।  
विश्वतुल्य ( वि. ) गूददिया गूदद-  
वाला, फटे टूटे बखोंवाला ।  
विश्वतुल्य ( सं. ) खीन, गरीब,  
गूददिया ।



भीरु ( सं. ) घृणा, द्वेष,  
 भीरु—भीरु ( सं. ) कुपित होना,  
 बोरज होना, क्रोधित होना, गुस्से  
 होना । [ मिजाज, चटकनेवाला ।  
 भीरु ( सं. ) चिदचिदा, दुनुक-  
 भीरु ( कि. ) दिखलाना,  
 भीरुआला ( सं. ) कबाबचीनी,  
 औषधि विशेष, चीन देश की जड़ी ।  
 भीरुआला ( सं. ) चीनी मिट्टी के  
 बर्तन, चीनी के पात्र, चीनी मिट्टी  
 का काम ।  
 भीरु ( सं. ) बॉसकी फॉस, कीमती  
 बांस की, खपची, बज्जी, चिन्दी ।  
 भारी, कतरन, पट्टी  
 भीरु ( कि. ) ताश के पत्ते उलट  
 पुलट करना, ताश पीसना ।  
 भीरुसेतु ( सं. ) शुद्ध सोना, उ-  
 त्तम स्वर्ण, खालिस सोना, बढिया  
 स्वर्ण । [ छिलोरपन ।  
 भीरुआलापु ( सं. ) बचपन,  
 भीरु ( सं. ) तरबूज, खरबूजा ।  
 भीरुआला ( कि. ) कुम्हलाना, मुर  
 झाना, सूखना, [ सिकोड़ना ।  
 भीरु भीरु ( कि. ) समेटना,  
 भीरु ( सं. ) फौक, काट, रेझमी वक  
 टुकड़ा, खण्ड ।

भीरु ( सं. ) सक्क, पगदंडी ।  
 भीरु ( कि. ) काटना, तराशना,  
 फाड़ना बज्जी उतारना ।  
 भीरु—भरु ( सं. ) चीरने का  
 मेहनताना । तराशने का मूल्य ।  
 भीरु ( सं. ) छोटा टुकड़ा ।  
 भीरु ( सं. ) दरार, चीर, फाड़,  
 काट, पगदंडी, घाट, बाँध ।  
 भीरु ( सं. ) एक पक्षी विशेष ।  
 भीरु ( सं. ) लीक, गाढ़ी के पहिये  
 चलने का मार्ग, गडवार, चक्र  
 मार्ग ।  
 भीरु ( सं. ) चिता, सोच, फिकर,  
 भीरु ( सं. ) किलकारी, चाल,  
 कूक, विहाइट, चिटकार, चिचि-  
 बाइट ।  
 भीरु भीरु—भीरु ( कि. ) वि-  
 ज्ञाना चिचिया, चीखमारना, कूकना ।  
 भीरु ( वि. ) देखो भीरु ।  
 भीरु ( वि. ) कंजूस, कृपण, ला-  
 लची ।  
 भीरु ( सं. ) एक राक या गम्भार  
 विरोधा समान वस्तु विशेष ।  
 भीरु ( सं. ) मलफदा, खिलाड़िन ।  
 भीरु ( सं. ) बाबु गोला, बाबु ब्रह्म,  
 ऐडन, मरोक्, कंटिया, छोटा कौंस ।

मुं० भाषा-भाषी ( कि. ) स-  
रोह आना, छल उठना, जोड़ना,  
बांधना, टाँकना । [ कुसूर, चूक ।

मुं० ( सं. ) गलती, भूल, अपराध,  
मुं०ते हिसाबे ( कि. वि. ) पूर्ण,  
पूरा, आखिरमे, पूरीतारसे, अन्त  
को चूकता खाना ।

मुं०धी ( कि. वि. ) बेपरवाही से,  
असावधानीसे, गफलतसे, भूलसे।

मुं०वपुं ( कि. ) चुकाना, निपटाना  
ऋण चुकाना, फैसला करना, तय  
करना, भगना, अलग होना  
बचना ।

मुं०पुं ( कि. ) गलती करना,  
भूलकरना, चूकना, भूलना ।

मुं०दो ( सं. ) फैसला, निर्णय,  
विचार, बन्दोबस्त ।

मुं०वपुं ( कि. ) चुकाना, तयकरना  
फैसला करना, हिसाब चुकाना ।

मुं० ( वि. ) आड़ा, तिरछा ।

मुं०धुं ( कि. वि. ) भूलमें, गलत-  
समझाहुवा, मूल्य, लागत ।

मुं०धुं ( वि. ) म्यून दृष्टि,  
तिरछी आँखोंका, भेड़ दृष्टिवाला,  
कैरा ।

मुं०धी ( सं. ) निंदा, पीठपीठे  
निंदाकरना, कलह । [ खानेवाला ।

मुं०धीभोर ( सं. ) निन्दक, चुंगली

मुं०आध ( सं. ) पौरुष, शक्ति, बल,  
रखवाली, रक्षा, हवालात, पंगा,  
गख, बंगुल ।

मुं०भी ( सं. ) अन्नकाकर, अना-  
जका महसूल, तामाख पीनेकी  
नली । [ छाती ।

मुं०भी ( सं. ) धन, स्तन, स्तनमुख

मुं०मुं ( सं. ) चींचों का शब्द, चींची

मुं०मे ( सं. ) टेढी आँखोंवाला, डेरा

मुं०पुं ( कि. ) उठा लेना, चुनना,  
संग्रह करना, पसन्द करना,  
छानना ।

मुं०टावपुं ( कि. ) चुनना, चाहना ।

मुं०टी ( सं. ) चुटकी

मुं०टी देवी ( कि. ) नौचना, सताना।

मुं०टी ३६ डेधुं ( वि. ) छाना हुवा,  
पसंद किया हुवा, चुना हुवा, छँटा  
हुवा ।

मुं० ( सं. ) ताना, रस्ती, सोने या  
चाँदी की बुदिया जिन्हें निर्वस-  
की पहिनती हैं । [ लखेडा ।

मुं०भर ( सं. ) बुदियों बनावेवाला,

सुभाष-डी अर्थ ( सं. ) पति की  
 मृत्यु पश्चात् वृद्धियों का संघन,  
 संस्कार विशेष. मुंडन, । [फुहड़]  
 सुडे ( सं. ) प्रेतिनी, डाकिनी,  
 सुडे ( सं. ) चूड़ा, चूड़ियाँ, हाथों  
 पर पहिने की बगड़ी ।  
 सुधु-डधधपाधध अरुं ( कि. )  
 नोचना, ऊषपुधल करना, नष्ट  
 करना, बरबाद करना, बिगाड़ना ।  
 लूटना, खोजना । [खसोट ।  
 सुधसुध ( सं. ) नष्ट अष्ट, लूट  
 सुधधुं ( कि. ) व्याकुल होना, बेचैन  
 होना, दुखी होना, घबरा जाना ।  
 सुधे ( सं. ) गूढ़ा, गूदा, चिधदा  
 लता । [ का वक्क; ओडनी ।  
 सुंडी ( सं. ) चूँदड़ी, जियों के ओडने  
 सुनधुं ( कि. ) चुनना, उठाना,  
 बीनना, बटोरना ।  
 सुनानी भट्टी ( सं. ) चूनेकी भट्टी,  
 वह भट्टी जिसमें कंकर जलाकर  
 चूनाबनाया जाता है ।  
 सुनारी ( सं. ) चूनाबलानेवाला,  
 कुंभार, चूनाबनानेवाला, ।  
 सुनध-धवे ( सं. ) चूनेका पात्र,  
 चूना रखनेका बर्तन ।  
 सुनेध ( वि. ) चूनेका ।

सुनी ( सं. ) छोटी मणि, मणि विशेष ।  
 सुने ( सं. ) चूना, चूर्णको कंकर  
 पत्थर या सोपको जलाकर बनाते  
 हैं, जो मकान बनाने या पोतने के  
 काम में आता है ।  
 सुप ( विस्म. ) खामोशहो, चुपरहो ।  
 सुपडीधी ( सं. ) चुप्पी, शांति,  
 मौनता ।  
 सुपधप ( वि. ) खामोश, चुप ।  
 सुधक ( सं. ) अयस्कान्त, लोहा  
 खींचने वाली एक धातु ।  
 सुधन ( सं. ) मुख संयोग, चूमा,  
 चुम्बा, प्यार ।  
 सुधधुं ( कि. ) चूमना, प्यारलेना,  
 मुखसे चूसने का शब्द करना ।  
 सुभाणे ( सं. ) मोटा कम्मल, भद्दा  
 कम्मल ।  
 सुधीने ( कि. वि. ) आवश्यक्ता से,  
 ङग मिड़कर, जरूरत ।  
 सुध ( सं. ) मस्त, उन्मत्त ।  
 सुधध ( सं. ) चूरा, चूर्ण, पाचक  
 औषधि । [ चूरमा ।  
 सुधध ( सं. ) एक प्रकारनी मिठाई,  
 सुधधुं ( कि. ) कुचलना, चूर्ण करना,  
 चूरकरना, डुकनी बनाना ।  
 सुधे ( सं. ) चूरा, चूर्ण, संदसंद,  
 डुकनी, टुकड़ा ।



भुरे ४२वे। ( कि. ) चूरचूर करना,  
टुकड़े टुकड़े करना, पीसना।

भुस-भो। ( सं. ) चूहा, भट्टी, मिट्टी  
से बनाहुवा गड्ढा जिसमें आग रख  
कर भोजन बनाते हैं।

भुवुं ( कि. ) टपकना, चूना, रसना,  
छनना, गिरना, झरना, चुवना।

भुवे। ( सं. ) चूहा, मूसा, छेद, दरार।

भुशुं ( कि. ) पीलेना, चूसलेना,  
मोखलेना, खींचलेना। [ सरगर्म,

भुस्त ( वि. ) उत्साही, छौलीन,

भुसुं ( कि. ) देखो भुशुं,

भुशुभधि ( सं. ) अलङ्कार, विशेष,  
शिरोरत्न, शिरोभूषण, मुकुटमणि।

भे ( सं. ) डेर,

भे भे ( सं. ) घमण्ड, गर्व, दर्प, शेखी।

भे'भे' ( सं. ) पक्षियोंका कलरव,  
चाँची, बकबक, बकवाद।

भे'भे' ( सं. ) जादू, चालकी, मकारी  
देना इद्रजाल, दगाबाजा।

भे'भे' ( सं. ) एक प्रकारका गेंदका खेल।

भे'भे' ( सं. ) चंदूल, पक्षी विशेष।

भे'भे' ( सं. ) तिल, मस्ता,

भेतन-नी ( सं. ) आत्मा, प्राणी, जीव,  
बुद्धि, समझ, अनुभव, बोध,  
ज्ञानवाय।

भेतवल्ली ( सं. ) भेतावनी, खबर,  
सूचना, पूर्व बोधन।

भेतवुं ( कि. ) सावधान करना आग  
लगाना, सुलगाना, सूचित करना

भेतवुं ( कि. ) सावधान होना, होशी-  
यार होना, सँभलना, खबरदार  
होना, स्मरण रखना।

भेन ( सं. ) चैन, सुख, आनंद, हर्ष,  
अल्हाद, प्रसन्नता।

भेप ( सं. ) छूने से लगनेवाला,  
बीमारी की छूत, खराब करने  
वाला, बिज्जी, खरहा, सत, मवाद,  
पीव, कुसंगति, दुष्ट सम्मिलन,  
हानिकारक वस्तु, कंटक।

भेपुं ( कि. ) दबाना, चाँपना,  
मलना, निचोड़ना।

भेपी ( सं. ) स्पर्श से लगजाने वाला,  
उड़ के लगनेवाला रोग, छूत की  
बीमारी। [ प्रकाश।

भेशभ ( सं. ) दीप, दीपक, चिरान्,

भेशभेश ( सं. ) भेट, इनाम, पुरस्कार,  
रिश्तत, घूम, चेरीमेरी।

भेश ( सं. ) खरोचन, ( वि. ) नटखट,  
दुष्ट, बुरा।

भेधी ( सं. ) शिष्या, चेत्ती।

भेधे। ( सं. ) चेला, शिष्य।

शे०५१ ( सं. ) कविक व्यापार,  
मजाक, हँसी ठहा, बुरी बाल्याकियाँ,  
शे०५१२ ( वि. ) दुष्ट, बुरा, निंदक ।  
शे०५२ ( सं. ) चिता, मृतक के अग्नि  
संस्कार के लिये संगृहीत काष्ठ ।  
शे०५३ ( कि. ) कुरचना, छीलना,  
मिटाना, कुदेना ।  
शे०५३१-२१५१४ ( सं. ) सुबसूरत,  
सुन्दर, रूपवान ।  
शे०५३२ ( सं. ) सूरत, शर, सुख,  
बेहरा, रूप, आकार ।  
शे०५३३ ५५१५० ( कि. ) हजामत बन-  
वाना, खीर कराना, बाल बनवाना ।  
शे०५४ ( सं. ) साज, सुजली, चुल ।  
शे०५४१ ५५१५१ ( कि. ) सुजली होना,  
चुल चलना, सुजाल उठना ।  
शे०५४२ ( सं. ) जीवात्मा, बतन,  
विचार, चेत, चेतना, जीव, आत्मा ।  
शे०५४३ ५५१५२ ( वि. ) जिन्दा, जीता,  
सजीव, जीवित ।  
शे०५४४ ( सं. ) बुद्धि, ज्ञान; ब्रह्म,  
जीवात्मा, परमात्मा ।  
शे०५४५-२५४५२ ( सं. ) हिन्दू महीनों  
का प्रथम मास, मधुमास, वसन्त  
ऋतु का प्रथम मास ।  
शे०५४६ ( सं. ) चौक, अकस्मात्  
क्षिप्तक ठिठक ।

शे०५४७ ( सं. ) आंगन, अँगना, चौहल,  
चौराहा, बाजार, जुने का फर्श,  
चौकुँटा, हाट, पैठ, गूदड़ी ।  
शे०५४८ ( सं. ) चौखट, फ्रेम,  
शृंगार, आभूषण ।  
शे०५४९ ५५१५३ ( कि. ) फ्रेम  
बिठाना, बिठाना, ठीक करना चौकठ  
जड़ना ।  
शे०५५० ( सं. ) पोशक सम्बंधी, तारा  
का चिन्ह, जोड़ का चिन्ह, +,  
गुणा का चिन्ह, x,  
शे०५५१ ५५१५४ ( कि. ) सिफर लगाना,  
चौकड़ा का चिन्ह लगाना ।  
शे०५५२ ( कि. ) हिनकना, चौंकना,  
शे०५५३ ( वि. ) ठीक, उचित गुना-  
सिब, सावधान, चौकन्ना, सतर्क ।  
शे०५५४-२५१५५ ( सं. ) सावधानी,  
सतर्कता, रक्षा, कर्तव्यज्ञान ।  
शे०५५५ ( वि. ) स्वर्ण और चाँदीकी  
परीक्षा, जाँच ।  
शे०५५६ ( सं. ) रक्षक, पाहरू,  
चौकीदार, रक्षकाल ।  
शे०५५७ ( सं. ) पहिरा, रक्षा, पोकि-  
स का दरवाजा ।  
शे०५५८ ५५१५६ ( सं. ) रक्षकरी,  
पहरा, खबरदारी, रक्षा ।

श्री३३ ( सं. ) धोवर मुसिका, ये  
कीपा, हुवा स्थान, वह स्थान  
जहाँ रसोई बनाई जाती है,  
चौकोना स्थान, चौखुंटा स्थान,  
पवित्र स्थान । [ ईमाबदारी ।

श्री३४ ( सं. ) निर्मलता, शुद्धता,

श्री३५ ( सं. ) चावल, तंबुल, घान,  
शालि । [ चौकोना, चतुष्कोण ।

श्री३६ ( वि. ) चौखना, चौखटा,

श्री३७ ( सं. ) निर्मलता,  
पवित्रता, शुद्धता, सफाई ।

श्री३८ ( सं. ) चौगुणा, चौहरता,  
चौलड़ा, चतुर्गुण ।

श्री३९ ( कि. वि. ) सबओर,  
चारोंओर, चहुँधा ।

श्री४० ( सं. ) क्षेत्र, मैदान, खेत,  
खुलीजगह, बागीचा, उद्यान ।

श्री४१ ( सं. ) ब्रण, घाव, चपेट,  
घुस्सा, पटकन, आघात, पछाड़,  
मुका, धका ।

श्री४२ ( सं. ) गुथे हुए बाल,  
चोटी, गुथीचोटी, कियों की  
चोटी ।

श्री४३ ( कि. ) माया  
गुथना, सिर गुथना, बादगुथना ।

श्री४४ ( कि. ) विपकना, विपटना,  
स्वप्नना ।

श्री४५ ( कि. ) विपकना, चकाना,  
गैद लगाना, केई लगाना ।

श्री४६ ( सं. ) चोरी, बटपारी,  
बेजाकाम ।

श्री४७ ( सं. ) चोर, तस्कर, स्तेन,  
बदमाश, दुष्ट, अज्ञान ।

श्री४८ ( सं. ) डेर, राशि, समूह ।

श्री४९ ( कि. ) पकाना, रसोई  
बनाना ।

श्री५० ( सं. ) लगाना, रखना,  
पलस्तर या अस्तर करना ।

श्री५१ ( सं. ) चौड़ाई, फैलाव,  
विस्तार, पाठ, चकलाई, विस्तृति ।

श्री५२ ( कि. ) फैलाना,  
चौड़ा करना, प्रकट करना,  
फोड़ना ।

श्री५३ ( कि. वि. ) चारोंओर,  
सबतरफ, चहुँधा, चतुर्दिक् ।

श्री५४ ( वि. ) चतुर्थांश,  
चौथाई, चौथा हिस्सा, ३,

श्री५५ ( सं. ) चकूतरा, चौतरा,  
पुलिस चौकी, थाना ।

श्री५६ ( सं. ) वस्त्र विच्छेद, एक  
प्रकार का कपड़ा ।

शेखरी ( सं. ) समाज का भगुवा,  
नेता, प्रधान, सरपंच, बाजार का  
मुखिया, अड़े का मुखिया ।

शेख ( सं. ) चौप, रोक, थाम ।

शेखनी ( सं. ) चौबचीन,  
आवधि बिदे ।

शेखनुं ( क्रि. ) चुपड़ना, चिकना  
करना, लगाना, चिकनी वस्तु का  
लेपन । [ डबना ।

शेखवपुं ( क्रि. ) लगवाना, चुप-

शेखडी ( सं. ) पुस्तक, किताब, पोथी  
ग्रंथ, बुक ।

शेखदी वेखनार ( सं. ) बुकसेलर,  
पुस्तक विक्रेता, कुतुबफरोश ।

शेखदी आखनार ( सं. ) जिल्दसाज  
दफ्तरी, पुस्तक सीनेवाला ।

शेखुं ( वि. ) चिकना, तेलिया,  
चबीयुक, ( सं. ) रोटी,

शेखडी ( सं. ) हिसाबकी किताब ।

शेखदार ( सं. ) चौपदार, छड़ीदार,  
हरकारा, दूता ।

शेखट ( सं. ) चौपड़, चाँसर, पाँसों-  
का छेठ, दूत, शतरंज, चतुरंग,  
छेठ विशेष ।

शेखानियु ( सं. ) पेम्फलेट, छोटी,  
पुस्तक, रिसाल, बहुतसे विषयों,  
के ग्रंथोंका पत्र ।

शेख ( सं. ) छड़ी, दंड, डंडा ।

शेखर ( सं. ) तस्कर, स्तेन, चोरी,  
करने वाला ।

शेखरुं ( सं. ) वर्षाकाल, वर्षाऋतु  
के चारमहीने ।

शेखेर ( क्रि. वि. ) चारो ओर, सब,  
दिशाओंमें, चतुर्दिक्, चटुंधा ।

शेखरुडी ( सं. ) चोरगड्ढा, वह गड्ढा  
जिसपर जानवरोंको फँसाने के लिये  
कुछ भिजा दिया जावे ।

शेखरु ( सं. ) गुप्तखन, गुप्त घर,  
गुप्त, पेटी ।

शेखरु ( सं. ) पायजामे की  
जोड़, खूसे की जोड़ ।

शेखरुत-नखर ( सं. ) दुष्ट  
आकांक्षा, बदनियत, नीच आशय ।

शेखरुं ( क्रि. ) चुराना, हरणकरना,  
अपहरण करना, आँख बचाकर  
उठलेना ।

शेखरी ( सं. ) चौकोना पत्थर ।

शेखरी ( सं. ) समुद्री डाकू,  
लुटेरा, एक प्रकार का दर्द ।

शेखरी ( सं. ) लुट, अपहरण, हरण,

शेखरी ( सं. ) एक प्रकार की सेम,  
शाक भाजी विशेष ।

येपुं ( कि. ) छेदना, बेचना,  
बंक मारना ।

येसु ( सं. ) संख्या विशेष, साठ  
और चार, ९४, चौसठ ।

येसर ( सं. ) एक प्रकार का  
खेल, देखो-ये।५८।

येसु ( कि. ) बसलना, रगड़ना,  
दबाना, मलना, कुचलना, चौपना ।

ये।। ( सं. ) एक प्रकार की दाल ।

ये।। ये।। ( सं. ) चित्त की  
बेचैनी, व्याकुलता, तकल्लेफ,  
कष्ट ।

ये।। ( सं. ) चतुर्दशी, चौदहवीं  
तिथि, चान्द्रमास की चौदहवीं  
तिथि ।

येरी ( सं. ) चैरी, चवैरी, छोटा  
चबैर, तिब्बत देश की गाय के  
बालों की बनी हुई चबैरी, चमर ।

येत ( वि. ) पतित, पड़ा, भ्रष्ट,  
गिरा, नष्ट ।

७.

७=सातवीं व्यंजन, गुजराती वर्ण-  
मालाका १८ वाँ अक्षर ।

७५ ( सं. ) चपत, तमाचा, चप्पड़,  
पौल, जुकसान, कमी, नाटा ।

७५ ( सं. ) चपत, तमाचा, चप्पड़,  
पौल, जुकसान, कमी, नाटा ।

७५ ( कि. ) मरवाना, तुल  
होना, हासवाना, सन्तुष्ट होना,  
अवाना ।

७५ ( वि. ) चकित, आश्चर्य-  
न्वित, विस्मित, मयभीत ।

७५ ( सं. ) बदकोश भाकुरी,  
छः सहस्र छकोना, बट्मुखसेत्र ।

७५ ( कि. ) चपतमारना,  
चप्पड़मारना तमाचाजमाना,  
पौटना ।

७५ ( सं. ) एक प्रकार का  
तःशोंका खेल, उपाय चिन्ह ।

७५ ( वि. ) प्रकट रूपसे, खुले-  
खुले, खुलमखुला ।

७५ ( सं. ) मूसे की एक जाति,  
छट्ठेंदर नामक एक जीव ।

७५ ( सं. ) छज्जा, बारजा, ओसती,  
उसारा ।

७५ ( कि. ) सिसाना, कुक-  
बेना, कुडाना, पीड़ा पहुँचाना,  
छेदना । [ सटक-कक

७५ ( कि. ) मारवाना,

७५ ( कि. ) छेदना, लाना ।

- छं१ ( सं. ) दीप्ति, उजास, शोभा  
प्रकाश, समाहार, मार्ग, चाल-  
चलन, सौचा ।
- छं२ ( वि. ) प्रसन्न, बचाहुँषा,  
क्षेप, बचाखुचा, बदमाश ।
- छं३ ( सं. ) छिलके, भूसी, चोकर ।
- छं४ ( सं. ) नरकट, छद्, लम्बी-  
छड़ी ।
- छं५ ( कि. ) छिड़कना, उठेलना ।
- छं६ ( सं. ) राजछत्र, छड़ी ।
- छं७ ( सं. ) बंप्पा जी वह  
जी जिस के बालक पैदा नहीं होते ।
- छं८ ( वि. ) छड़ीवाळा, छड़ी  
लेकर राजाओंके आगे चलनेवाला,  
चोबदार ।
- छं९ ( सं. ) अकेला, केवल एक,  
एक मात्र, तनहा, एकाकी ।
- छं१० ( कि. वि. ) छुम-  
छुम का शब्द, ध्वनि विशेष ।
- छं११ ( सं. ) मोतियों का बना  
गलहार, कंठा भरण, गलेका  
आभूषण । [ फुफकार ।
- छं१२ ( सं. ) फुनकार, सिसकार,  
छं१३ ( सं. ) मनसन, खनखन  
छं१४ ( कि. ) छनना, निबरना,  
रखना, छुदहोना । [ सिंचाव ।
- छं१५ ( सं. ) छिड़काव, सींच.
- छं१६ ( कि. ) छिड़काव  
करना, पानी छिड़कना । सींचना ।
- छं१७ ( सं. ) बहुतायत, अधिकता,  
इफरात, छात, पटान, छत ।
- छं१८ ( सं. ) छत्री, छाता, छत्र  
विशेष ।
- छं१९ ( कि. वि. ) तथापि, तौभी,  
ताहस, तिसपरभी । [ उंचा छत्र ।
- छं२० ( सं. ) छत्र, बड़ा और  
छत्रपति ( सं. ) राजा, भूपाल,  
नरेश, स्वाधीन नरपति, महाराजा ।
- छं२१ ( सं. ) पिंगल मुनिप्रणीत  
शास्त्र, जिसमें छन्दों का वर्णन  
किया हो ।
- छं२२ ( सं. ) श्लोक, पद्य, काव्य,  
रचना, अनुष्टुप आदि, पद ।
- छं२३ ( वि. ) चालाक, कपटी,  
धूर्त, प्रतारक, छली, ठग ।
- छं२४ ( वि. ) छिछला, अगंभीर,  
हलका, ओछर, खोखला ।
- छं२५ ( सं. ) आच्छादन, छांद,  
छान, छप्पर, छावली ।
- छं२६ ( सं. ) रट, अनुमति,  
छप्पन प्रकार के साथ पदार्थ ।
- छं२७ ( सं. ) पर्णकुटी, घासफूस  
का बना मकान । [ दांहा, छन्द ।
- छं२८ ( सं. ) वटपदी छन्द, श्लोक,

अध (सं.) मूर्ति, प्रतिमा, तस्वीर ।

अध्याधु (वि.) छोटा, बोझा ।

अध्यात (वि.) कम छिछला, देखो-अध्यात ।

अध्याधु (कि.) पहुँचना, आजावा ।

अध्या (सं.) तस्वीर, चित्र, फोटो, नकशा । [ दुबोना ।

अध्याध्याधु (कि.) तरकरना,

अध (सं.) बेवकूफी, खफ्त, पागल-पन, गर्व, घमंड, अहंकार ।

अध्याधरी (सं.) वार्षिकोत्सव, बरसी ।

अध्या (सं.) छरी, छोटी गोली ।

अध्या (सं.) चाकू, छुर, छुरी ।

अध्याध्याधु (कि.) शेखी मारना, डाँग हाँकना, बड़ीबड़ी बातें मारना, गर्व करना, छलकना ।

अध्याध (सं.) कूँद, फाँद, उछाल ।

अध्याधु (कि.) डाँकना, छुपाना, दवाना, दुवाना । [ प्रतारणा ।

अध्या (सं.) कपट, छल, ठगाई

अध्याध्याध (सं.) दगा, छल, कपट ।

अध्याधु (कि.) धोखा देना, दगा करना, कपट करना, छलना ।

अध्या (सं.) काट, कतर, घञ्जी, चिन्नी । [ शेष ।

अध्याध्याधु (सं.) कतरण; टुकड़ा,

अध्याधु (कि.) कैकना, उंठेलना, छिड़कना, काटना, कतरना, नष्ट करना, बुझाना, गप्पे छानना, झूठ बोलना, रिश्तत या घुँस देना ।

अध्याध्याध्या (कि.) छींटे उड़ाना, छींटना, छींटे डालना ।

अध्याध्याध (सं.) एक दूसरेपर पानी छिड़कना ।

अध्या (सं.) वर्षाकी बूँदाबूँदी, फुहार, छोटी छोटी बूँदों में बरसना ।

अध्या (सं.) डाँटा, बूँद, बिन्दु, हतक, अपमान, चन्ना, बल्ल, कलंक । [ मदिरा, दारु, मद्य ।

अध्याध्याध्या (सं.) सर्वत, शराब,

अध्याध्याधु (सं.) जाँच, परीक्षा, इम्तहान, तलाश, अनुभव ।

अध्याध्याधु (कि.) छाटना, इम्तहान लेना, जाँचना, परीक्षा लेना, तजना, त्यागना, अदा करना, बुझाना, तिलाक ।

अध्याध्याधु (सं.) गोबर के कंटे, आरणा, ठिठ्ठाई, बीरता ।

अध्याध्याधु (कि.) छानना, मिश्रण, झारना, परखना, विवेक करना ।

अक्षर ( सं. ) कंठा, छात्रा, आरणा,  
ईश्वर, बलीता, गोबर की बनी  
हुई रोटी सी जो जवानों के काम में  
आती है ।

अक्षी ( सं. ) हृदय, वक्षःस्थल,  
सीना, दिल, हिम्मत, साहस,  
वीरता, वैर्य ।

अक्षी कुटवी ( कि. ) छाती कुटना,  
शोक से छाती पोटना, विलाप  
करना ।

अक्षी क्षीने आक्षु ( कि. )  
अकड़कर चलना, सीना निकाल  
कर चलना ।

अक्षी ठेक्षी ( कि. ) साहस प्रकाश  
करना, भरोसा देना, छाती  
ठोकना ।

अक्षी तोड़-देड़ ( सं. ) कठोर,  
कठिन, सख्त, दारुण, कड़ा ।

अक्षीनुं क्षीनुं ( सं. ) वह हर्षजो  
कंठ से पेट तक आती है और  
जिस में पसलियाँ लगी होती हैं,  
छाती की हड्डी ।

अक्षी पीमणी ( कि. ) दर्याद्रि  
होना, करुणा से छाती का आर्द्र  
होना, दिल पिघलना, हृदय रक्षी-  
भूत होना ।

अक्षीक्षुं ( सं. ) वीर, बहादुर,  
वीर, हिम्मतवाला, साहसी, वीर ।

अक्षी शेषुं ( कि. ) चुप रहना,  
सामोश रहना, सान्त रहना ।

अक्षी रीते ( कि. वि. ) चुपके से,  
गुप्त रीति से, चुपचाप, गुप्तगुप्त ।

अक्षी ( वि. ) खानगी, घर, गुप्त,  
छुपा, अप्रकट ।

अक्षी भागुं ( कि. वि. ) बिलकुल  
चुप, और गुप्त रीतिद्वारा, गुप्तगुप्त ।

अक्षी शम्भुं ( कि. ) गुप्त रखना,  
छुपा कर रखना, शांत रखना ।

अक्षी शेषुं ( कि. ) चुप रहना,  
सामोश रहना, शांत रहना ।

अक्षी ( सं. ) सुहर, ठप्पा, छापा,  
टाइप, छापे के अक्षर, वक्ष कीर्ति,  
चिन्ह, अंगूठे का निशान, छपाई ।

अक्षीक्षुं ( सं. ) प्रेस, छापाखाना,  
मुद्रण यंत्रालय, जहाँ पुस्तकें  
छपती हैं । [ छापनेवाला ।

अक्षी ( सं. ) मुद्रक, प्रिंटर,

अक्षी ( सं. ) छपाई, छापने का  
मूल्य, प्रकाशन, प्रसिद्ध करण,  
उत्पन्न ।

अक्षी ( सं. ) छप्पर, घर, छत ।



अधुं ( कि. ) अंकित करना, मु-  
द्रित करना, छापना, मोहर  
लगाना । [ पत्र, सम्वाद पत्र ।

अधुं ( सं. ) अन्वहार, समाचार

अधिष्ठुं ( वि. ) छपा हुआ, मुद्रित,  
मोहर लगा हुआ, छपा हुआ ।

अधि ( सं. ) मोहर, धावा करना,  
डाका डालना, कर, टेक्स ।

अधि-ही ( सं. ) उलिया, बासों  
की बनी हुई खोखली उलिया,  
छवड़ी ।

अधि ( सं. ) एक प्रकार का वस्त्र  
जिसे स्त्रियाँ पहिनती हैं ।

अधि-अधि ( सं. ) साया, छाया,  
छप्पर, पनाह, आड़, शरण,  
आश्रय ।

अधि-अधि-अधि ( वि. ) छायायुक्त ।

अधि वन ( सं. ) धूपवर्दी ।

अधि अन्वे-आपवे ( कि. )  
छाया करना, धूपराहित करना,  
छादेना, आश्रय देना ।

अधि ( सं. ) द्वार, मस्म, राख,  
धूँ, साक, द्वार ।

अधि ( सं. ) सरपट चौद, घोड़े  
की सरपट चाल ।

अधि ( सं. ) शिमी, जाला, सॉचा ।

अधि अधुं ( कि. ) आपस में  
मिलकर लिपटना ।

अधि ( सं. ) छिलका, बकल,  
त्वक्, चर्म, बस्त्रक ।

अधि ( सं. ) लहर, तरंग, छिंदे ।

अधि ( वि. ) छिलका, खोखला,  
नीच, कमीना, गरीब ।

अधि ( सं. ) गंधेपर आदमे का  
बोरा, खोखले दिलवा, ओंछे मनका

अधि ( सं. ) छिलका, छात, बकल,

अधि ( सं. ) सिपाहियों के रहने  
का स्थान, पलटनके रहने का  
स्थान, शिविर, कैम्प, कम्पन्स ।

अधि-अधि-अधि ( कि. ) छि-  
पाना, गुप्त रखना, अप्रकट रखना

अधि-अधि ( सं. ) छौंछ, तक, मज,  
मही, गोरस,

छिः ( विस्म. ) तुच्छ करने का  
वाक्य, घृणा युक्त वाक्य ।

छिःछि ( सं. ) नास, दुलास, ऐसी  
वस्तु जिसके संगेनेसे छौंछ आवे ।

छिः ( विस्म. ) देखो छिः ( कि. )  
छौंछना

छिः ( सं. ) छेद, सुराख, बिल,  
दोष, एव, अपराध, विविर, रन्ध्र,  
दूषण ।

छिः अधुं ( कि. ) दोष, विकलकन,  
ऐव हूँ बताना, छिःछिःछिः ।

छिद्र पाठ्य (क्रि.) छेदना, सुरास  
करना, छेद करना ।

छिनपी सेवु ( क्रि. ) सपट लेना,  
छीन लेना ।

छिनाण ( सं. ) वेश्या, वेश्यावृत्ति  
करनेवाली स्त्री, व्यभिचारिणी, दुष्टा ।

छिनाणयाणा ( सं. ) रंडीबाजी, व्य-  
भिचार सम्बन्धी चालाकिया ।

छिनाणवाडे ( सं. ) वेश्यालय, रं-  
दियोंके रहने का बाड़ा, वेश्यागृह ।

छिनाणवे ( सं. ) व्यभिचारी, जिना-  
कार, विषयी, वेश्या दलाल ।

छिन्न ( वि. ) विभक्त, खंडित,  
छेदित ।

छिनाणु ( सं. ) वेश्यावृत्ति, व्यभि-  
चार, रंडीबाजी, छिनाला ।

छिप२ ( सं. ) बड़ा पत्थर ।

छिप३ ( वि. ) मैला गन्दा,

छी ( वि. ) नुरु, मैला, गन्दा,

छीं-छें ( सं. ) सिनक, नाक  
साफ करने की क्रिया, छोंक ।

छींभापी-छींठपु ( क्रि. ) छीकना,

छीछी ( सं. ) चाबल, तन्दुल ( वि० )  
तुच्छ करने का वाक्य, घृणा युक्त  
वाक्य ।

छीट ( सं. ) पक्षपात, उज्र, एत-  
राज, आपात्ति, हानि, घाटा ।

छींठ ( सं. ) छोट ( वस्त्र ) छपत्तका ।

छीडु, छींडु ( सं. ) बाढ़े का खुल्ल  
भाग,

छींडु भोणपु-शीधपु ( क्रि. ) अ-  
पराध वृद्धना, ऐब देखना, छि-  
द्रान्वेषण ।

छीथी ( स. ) खोदने का औजार,  
छेनी, लोहे की बना हुई जो धातु  
काटने या पत्थर भोदने के काम  
में आता है ।

छीडी-री ( सं. ) वृद्धाका की एक  
प्रकार का पोशाक ।

छीप ( सं. ) ढाल, लकड़ी के बने  
हुए छापने के ठप्पे ।

छीपे ( सं. ) कपड़ा छापनेवाला,  
मुद्रक, मोहर लगानेवाला ।

छीपु ( सं. ) चपटी रकानी, च-  
पटी वाली ।

छीसडे ( सं. ) हाथ चक्की की स-  
डक, चक्का का मार्ग, गर्रंड, आटा  
गिरने का स्थान ।

छीध३ ( सं. ) दूरा फूटा तालाब,  
अंश सरोवर, नष्ट सरोवर ।

छुंछ ( सं. ) पख, पौख, पंख, पर

छुट ( सं. ) स्वतन्त्रता, स्वाधोनता  
छुष्टी, आज़ा, मत्ता, छूट ।

धु०५ ( वि. ) खेरना, फुटकल,  
मिथ्रत, मिथोना ।

धु०५१-५१ ( सं. ) मुक्ति, छुड़ाव,  
छुड़ाव, उद्धार, स्वतंत्रता, स्वाधीन

धु०५१ ५२१ ( कि. ) मुक्त करना,  
छोड़ना, स्वतंत्र करना, खोलना,

धु०५१ ५३१ ( कि. ) मुक्त हाना,  
स्वतंत्र होना, छूटना ।

धु०५१ ( कि. वि. ) स्वतंत्रतापूर्वक,  
आजादा में ।

धु०५१ ( कि. ) बन्धन रहित होना,  
छटना गुलना ।

धु०५१ ५४१ ( कि. ) कभी करना,  
छूट देना ।

धु०५१ ५५१ ( सं. ) त्याग, आपुरुष  
का तिराक, आपुरुष का छोड़ना ।

धु०५१ ५६१ ५७१ ( कि. ) संतान  
उत्पन्न होना, अस्त्योत्पादन ।

धु०५१५७ ( सं. ) स्वाधीनता, स्व-  
तंत्रता छुटकारा, उद्धार ।

धु०५१-५२१ ( सं. ) छुटकारा, अव-  
काश, अनध्याय, विश्रान्ति समय,  
विश्राम, तातोळ, कार्यबन्द ।

धु०५१५७ ( कि. ) माग निकलना,  
छूट जाना, अपराध से छूटना,  
निर्दोष होना ।

धु०५१ ( वि. ) विखरा, लुका, छूटा ।

धु०५१ ५२७ ( कि. ) विखेरना, व-  
लग अलग करना ।

धु०५१ ५३१ ( वि. ) अलग अलग,  
पृथक पृथक, निराला ।

धु०५१ ( कि. ) ५२७ कुचलना,  
पादाकान्त करना, पददालेन करना,  
कूटना, दलना, धु०५१ छोटे छोटे  
टुकड़े करना, कतरना, चूर चूर  
करना, पीसना, बुरी तरह पाटना ।

धु०५१ ( सं. ) किसी वस्तु का चूर  
या कुचलन ।

धु०५१ ( कि. ) अपने को छुगना,  
गुप्त होना, छुपना ।

धु०५१५७-५७ ( कि. ) छिगना, गुप्त  
करना, गायब करना, लुकाना ।

धु०५१५७ ( वि. ) छुपाया हुआ,

धु०५१ ५११ ( कि. वि. ) गुप्त रीति से,  
बरू तरीके से । [ अग्रकट ।

धु०५१ ( वि. ) खानगी, बरू, गुप्त,

धु०५१ ५३७ ( कि. ) छिपा रहना,  
घात में रहना, दुबकना, छुप कर  
बैठना । [ दुटका ।

धु०५१ ( सं. ) जादू, टोना, मंत्र,

धु०५१५७ ( सं. ) जादूगर,  
जादूटोनेवाला ।

( छेदी-छरी ( सं. ) छुर, छुरा, छुरी,  
चक्क, चाक, उस्तरा ।

छुपुं ( कि. ) छूना, स्पर्श करना,  
बिगाड़ना, कलुषित करना ।

छूट ( सं. ) बग्न, छूट, बरबादी,  
स्वतंत्रता, मुक्ति ।

छे ( कि. ) है [ सूचक वाक्य ।

छे ( विस्म. ) छि, हुआ, घृणा

छे ( कि. वि. ) गोलक, इतना  
( अधिक ) लम्बाई, सब, बिल-  
कुल, बहुतायत से, तक ।

छेथु ( सं. ) काटकूट, छीलछाल,  
झुंघनी, टुलास, छोकनी ।

छेपुं, छी नुंभपुं, ( कि. ) काट  
डालना, खरोंचना, भिटाना, छीलना

छे ( सं. ) लकीर, जोड़ और  
गुणा का चिन्ह, +, x, खरोंच,  
काट, छील ।

छे ( विस्म. ) देखो छिद् ।

छे ( सं. ) अंतर, फासला, अर्सा,  
( कि. वि. ) दूर, अलग, न्यारा,

छे ( कि. वि. ) दूर, रुखा, न्यारा,  
फासलेपर, दूरीपर ।

छे भेसपुं ( कि. ) झुलमती  
होना, कपड़ों होना, दूर होना,  
झूँकी होना ।

छेपुं ( कि. ) चिढ़ाना, बिसाना,  
कुठाना, छूना, स्पर्शकरना, हस्त-  
क्षेप करना, दसलदेना ।

छेती शोधनी ( कि. ) कुसूर बूँदना,  
दोषान्वेषण ।

छे ( कि. वि. ) अन्तमें, आखिरमें ।

छे ( सं. ) अंत, सिरा, हर,  
सीमा, मृत्यु, नाश, समाप्ति  
परिणाम, कोर, छोर, अंचला,  
किनारा । [ स्त्रीपुरुषका छेड़ना ।

छे ( सं. ) त्याग, तिलाक,

छे ( कि. ) तैकरना,  
पीछा छोड़ना, समझमें आना ।

छे ( कि. ) आश्रय लेना,  
पला पकड़ना, सहारा लेना ।

छे ( कि. ) देखो छे ( कि. )  
छुटके ।

छे ( कि. ) छे ( कि. ) छे पीछा  
करना, पीछे लगना, रगेदना ।

छे ( सं. ) छेनी, टोंकी, रुखाना ।

छेतनार ( सं. ) दगाबाज, धोके-  
बाज, ठग, बंचक, छली ।

छेतपिंडी ( सं. ) बालाक, धोका,  
डगी, जाकसाजी ।

छेतपुं ( कि. ) ठगना, धोकादेना,

छेदशब्द ( सं. ) ठग, छल, कपट । [ जाना, छेलेजाना ।

छेदशब्द ( कि. ) थोकाबाना, ठगे-छेनाणीस-श ( वि. ) छियालीस, चालीस और छः, ४६,

छेद ( सं. ) सूरज, छिद्र, विनिर, रघ, मिन्न मे लकीर के नीचेका अंक । [ मायक ।

छेद ( वि. ) छेद करनेवाला, वेधक ।

छेद ( सं. ) जेडन, वेधना, छेदना ।

छेद विदु ( सं. ) बीचसे दो भाग करने का विन्दु । [ रेखा ।

छेद रेखा ( सं. ) काटने वाली

छेद ( कि. ) काटना, बाँटना, नष्ट करना, छेदकरना, बिलकरना, छेदना, वेधना ।

छेद ( सं. ) पानी के समान पतला गोबर, पशुओं का पतला विष्ट ।

छेद ( सं. ) मैला, कबरा, धूल ।

छेद-शब्द ( कि. ) पतला मछो-रसर्ग करना, पोंकना ।

छेद-डा ( सं. ) छैला, अळनेला, बाँका, रंगीला ।

छेदशब्द, छेदशब्द ( वि. ) छेद सुन्दर, मनोहर, उत्तम, चटकील ।

छेदशब्द ( सं. ) छेदपना, अक-वेधपन ।

छेदी ( सं. ) रेखा छेदशब्द, ६ के छिमे इशारा वा संकेत ।

छेदीधारी ( सं. ) अंतिम समय, आखिर बक, अंतकाल ।

छेदीधारे ( कि. वि. ) अंतमें, आखिरमें । [ पूर्ववत् ।

छेदी, छेदी अरवाणे ( कि. वि. )

छेद ( सं. ) अंत, आखिर, फल, परिणाम, ( कि. वि. ) अंतिम, आखिर मे अन्तको, पीछे ।

छेद ( वि. ) आखिर, बिलकुल आखिर, सब के बाद ।

छेद ( सं. ) विश्वासघात, सिरा, छोर, अंत । [ संतान ।

छेदछेद ( सं. ) बालक, बच्चे,

छेदी ( सं. ) लड़का, छोकरा, पुत्र, आत्मज ।

छेदी ( सं. ) चूना, खरल, ऊसली, ( कि. ) हो, हैं ( विस्म. ) कुछ बात नहीं, होने दो ।

छेदशब्द ( वि. ) बचपन कीसी, लड़कपन कीसी, छछोरपन कीसी, उच्छृंखलता ।

छेदशब्दी ( सं. ) बचपन, छछोरपन ।

छेदरी ( सं. ) पुत्रा, तनवा, लड़की

**ओ३३**—**रै** ( सं. ) बालक, लड़का,  
 पुत्र, बेटा, तनय, आत्मज ।  
**ओ३३** ( सं. ) झन्डा, फूँदा, लटकन,  
 कलाबत्तुका बना फूँदा जो पगड़ी  
 पर लगाया जाता है, कलगी, तुरी ।  
**ओ३७** ( सं. ) रोक, अटकाव, बन्देज ।  
 एतराज, उज्र, आपत्ति । [ थोड़ा ।  
**ओ३५** ( वि. ) छोटा, ओछा, कम,  
**ओ३५** ( वि. ) छोटा, कम कैँचा,  
**ओ३५** ( सं. ) पीधा, पेड़, छोटा पेड़,  
 साड़ी । [ और खोलना ।  
**ओ३३३** ( सं. ) बारम्बार बाँधना  
**ओ३३३** ( सं. ) छोड़नेवाला,  
 खोलनेवाला । [ सुलझाना, खोलना ।  
**ओ३३३** ( कि. ) छुड़ाना, मुक्त कराना,  
**ओ३३** ( कि. ) छोड़ना, स्वतंत्र  
 करना, जाने देना, खोलना, जलाना,  
 छूट देना, बग्न देना, अलग करना ।  
**ओ३३३** ( सं. ) पीधा, छोटा पेड़ ।  
**ओ३३** ( सं. ) चोकर, भूसी,  
**ओ३३३** ( कि. ) देखो **ओ३३३**  
**ओ३३** ( सं. ) टुकड़ा, कत्तल, फाँक,  
 देखो **ओ३३**  
**ओ३३** ( कि. ) छोड़ दो, जाने दो ।  
**ओ३३** **मु३३**—**दे३३** ( कि. ) देखो  
**ओ३३**  
**ओ३३** ( सं. ) छिलका, बकल,

**ओ३३** ( सं. ) छिहत्तर, सत्तर और  
 छः ७६,  
**ओ३३** ( कि. वि. ) चूनेका बना ।  
**ओ३३** ( सं. ) शिशु, बालक, बच्चा ।  
**ओ३३** ( सं. ) देखो, **ओ३३**,—**ओ३३**,  
 ( सं. ) बसूला, एक प्रकार की  
 कुल्हाड़ी ।  
**ओ३३** ( कि. ) छीलना, खुरचना,  
 खाल निकालना, छिलका निकालना,  
**ओ३३** ( कि. ) तुक्कस निकालना,  
 दोष निकालना, छीलना, कुरेदना ।  
**ओ३३** ( कि. ) छीला हुआ होना ।  
**ओ३३** ( सं. ) पलस्तर, अस्तर,  
**ओ३३** ( सं. ) एक प्रकारका दस पाँव  
 का कीड़ा का जिसकी लम्बाई २ इंच  
 होती है, कुछ हरे रंग का जीवित  
 पकाने पर भूरा रंग हो जाता है ।  
 सीप का घोंघा ।  
**ओ३३३** ( कि. ) चूने का पलस्तर  
 करवाना, छबवाना ।  
**ओ३३** ( सं. ) लहर, तरङ्ग, हिलोर,

४४.

४४=गुजराती वर्णमाला का १९ वां  
 अक्षर, आठवां व्यंजन, निश्चय  
 वाचक, प्रत्यय, स्थिर, पक्का ।



अभ्यास-११२ ( सं. ) विश्वेश,  
जगत का स्वामी, ईश्वर परमात्मा ।

अभ्यास-११३ ( सं. ) विश्वात्मा, परब्रह्मा,  
परमात्मा, परमेश्वर ।

अभ्यास-११४ ( सं. ) संसार के गुरु,  
संसार के आचार्य, ईश्वर, ब्रह्मा ।

अभ्यास-११५ ( सं. ) जिसकी संसार  
बंदना करे, ईश्वर परमेश्वर ।

अभ्यास-११६-११७ ( सं. ) विश्वा-  
धार, जगत के आधार, अनन्त,  
बायु, ईश्वर ।

अभ्यास ( सं. ) होम-यजन, यज्ञ,  
बलि, पूजा, होम ।

अभ्यास ( सं. ) जगत्पति, जग-  
दीश, श्री क्षेत्र के देवता, विष्णु  
विष्णु का नवौं अवतार ।

अभ्यास ( सं. ) एक प्रकारका  
यज्ञ ।

अभ्यास ( वि. ) जिसकी दुःख-  
या निंदा करती हो, अत्यन्त  
बुरा, लाज्य ।

अभ्यास-११८ ( सं. ) जगत्कर्ता,  
विधाता, परमात्मा, विश्वनाथ ।

अभ्यास-११९ ( सं. ) विश्वभरण,  
विश्वपोषक, जगदाधार ।

अभ्यास ( सं. ) विश्वमित्र, वह  
जो सभी से प्रेम रखता, विश्व प्रेमी ।

अभ्यास ( सं. ) विश्वेश्वर, सृष्टि  
का स्वामी, विश्व सूत्रधार ।

अभ्यास-१२० ( सं. ) स्थान, जगह,  
दर्जा, ओहदा, मुकाम, भूमे,  
पादचिन्ह, पद, ठौर, गी,  
शून्यपद ।

अभ्यास-१२१ ( कि. ) जगह करना,  
दूसरे के लिये स्मरण बनाना ।

अभ्यास ( कि. ) जगाना, सावधान  
करना, उठाना, सूचित करना,  
निद्रा भंग करना, निद्रा रहि  
करना ।

अभ्यास-१२२ अभ्यास ( कि. वि. )  
उसी स्थानपर, उसही जगह ।

अभ्यास ( कि. ) उठाना, जगाना ।

अभ्यास ( कि. वि. ) बदलीपर, स्था-  
नपर, जगहपर, पदपर ।

अभ्यास ( कि. वि. ) स्थानस्थान,  
हरेक जगह, प्रत्येक स्थल ।

अभ्यास ( सं. ) भावो बुद्धी १३  
मृत बालकों की कर्म किया करने  
का मुकुरर दिन मात्र कृष्ण  
त्रयोदश ।

अभ्यास ( सं. ) कम याद, कुलकुल  
स्मरण, कल्पना, स्मरण, स्मरण ।

अभ्यास-१२३ अभ्यास ( कि. ) लजित  
हो जाना, शर्मिन्दा हो जाना ।



७/भवाभ्यां भवतुं ( कि. ) पूर्ववत्  
७/भवे ( कि. ) कल्पना करना,  
किसी विषय पर सोचना।

७५ (सं.) बुद्ध, रण, संप्राम, लड़ाई।

ज'अडीया ( सं. ) एक स्थान से दूसरे स्थान तक खजाना ले जाने वाले फौजी कोष रक्षक ।

नंगम ( सं. ) जोचले, अस्थायी,  
आस्थिर, चलनशील ।

अंगुष्ठ ( सं. ) वन, अरण्य, रेतीला  
मैदान, विपिन, कानन, निर्जल सथन

ज'भक्ष ज'पु' (क्रि.) पा बाने जाना,  
दष्टी फिरना, शौच होना, मलो-  
त्सर्ग करना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—ऐसे स्थान पर  
आनंद मंगल जहाँ असंभव हो ।

अंगुली (सं.) जंगल का, मूख, शठ,  
असभ्य, बवतहजीव, गंवार, बन्ध.

जंमली ७८ (वि.) गंवार, देहाती ।

जंगल ( सं. ) तांबे का मोर्चा,  
कसाव, पितलई, मुर्चा, जंग, जर।

ब्र०जी ( वि. ) वीर, बहादुर, हिम्मतवाला, बहुत बड़ा, दीर्घ, विस्तृत ।

जन्मान (सं.) यज्ञकर्ता, पुरोहित  
या पजारी का संरक्षक, यजमान।

सं. ७१, सं.) उल्लेखन, संसद,  
प्रपंच, उल्लेखन, व्याकुलता  
उद्दिष्टता ।

અન્યથા (સં.) આદતી પીઠેમહસુલ

७०७२ ( सं. ) सांकल, विन, पदी  
की कमाना ।

अं० ७२। ( सं. ) जजीस, द्वीप, वह  
 किला जिसके चारों ओर समुद्र हो।

१४ (सं.) एक में सटे हुए बहुत से बाल, साधुओं की जटा, जड़ित केस।

७टापार-पारी (सं.) साधू तपस्वी  
शिव, बटकुल, बड़ का पेड़ ।

जटाभासी (सं.) एक औषधि विशेष,  
जटाभासी, शतावरि, क्वाल ।

७५।५ (सं.) इसी नाम का एक पक्षी  
जिस का रामायण में वर्णन है,  
दशरथ का मित्र, संपाती का छोटा,  
भई। [ लटियां, गुच्छियां। ]

७६२ (सं.) उदर, पेट, गर्भ ।

७६२ सं'अ'धी (वि.) पेट सम्बन्धी  
७६३।गिन (सं.) पेट की आग, अन्न

पचानेवाला, आमे, सुधा, बुभुक्ष ।  
जठरानल, उदधामि ।

७३ (वि.) भारी, ठोस, स्थिर, निश्चल  
अचल, निर्जीव, सुस्त, मूर्ख अश्व

७४६ ( सं. ) मूत्र कारण तीबं,  
मूत्र, मूठ, पूंजी मूलघन, निक्कास,  
उदम, मेख ।

अ.१२ (सं.) लाभ, बचत, ओढ़  
अ.१३ (मि.) ठीक, उचित, मनासिब

अक्षय ( सं. ) बाळक,  
 अक्षयक्षय ( सं. ) खिचाव,  
 कसिध, आकर्षणशक्ति ।  
 अक्षु ( सं. ) जड़वा,  
 अक्षुद्धि-भक्ति ( सं. ) मूर्खता  
 सठता, कमअक्षी, बेवकूफी ।  
 अक्षुद्धि ( कि. वि. ) ठीक  
 जड़ना, ठीक ठीक जमाना, रह  
 करना, यथार्थ, सही ।  
 अक्षुद्धि-शील ( वि. ) मूर्ख, मन्द  
 बुद्धि, हतज्ञान, ज्ञानशून्य ।  
 अक्षुद्धि-भांशी ( कि. वि. )  
 बिलकुल, तमाम- समूल, मूल  
 सहित ।  
 अक्षु ( कि. ) जमाना, जड़ना  
 जोड़ना, ठोकना, बिठाना, पाना  
 प्राप्त करना, ढूँढना, नग बैठाना ।  
 अक्षुद्धि-भक्षी ( सं. ) जड़ने की  
 मजदूरी, पक्षीकारी करने का  
 मूल्य ।  
 अक्षुद्धि-भांशी ( सं. ) जवाहिरातों  
 से अडे जेवर ।  
 अक्षुद्धि ( सं. ) पक्षीकारी का  
 काम नगीं जमाने का काम ।  
 अक्षुद्धि ( वि. ) जड़ना, जड़ा हुआ,  
 जड़ाई किया हुआ, पक्षी किया हुआ,  
 नग अड़ा हुआ, खचित, मंडित,  
 शंलल ।

अक्षि ( वि. ) जड़ा हुआ, जवाहि-  
 रातों द्वारा जड़ाई किया हुआ ।  
 अक्षि ( सं. ) जड़ी, बूटी, जड़ें,  
 मूल, ( कि. ) नेंवडालना, जड़  
 जमाना ।  
 अक्षि ( सं. ) जड़नेवाला, जीहरी,  
 सुनार, जडिया ।  
 अक्षि ( सं. ) मूल, मूरी, बूटी ।  
 अक्षि ( सं. ) दवाई, रुखरी,  
 औषध, मूल, जड़ी बूटी ।  
 अक्षु ( सं. ) अकेला, एक, एक  
 मनुष्य, व्यक्ति, [इंग ।  
 अक्षु ( सं. ) बाळक, शिशु, प्रसव  
 अक्षु ( सं. ) ना, माता, जननी,  
 अम्मा ।  
 अक्षु ( कि. वि. ) प्रत्येक, प्रति-  
 मनुष्य ।  
 अक्षु ( कि. ) पैदा करना, बालक  
 उत्पन्न करना, आभेलाणा ।  
 अक्षु ( कि. ) सूचित करना,  
 साबधान करना, सेतान उत्पन्न  
 समय सहायता देना, कहना,  
 बतलाना, सुसाना । [ जानना ।  
 अक्षु ( कि. ) ढूँढना, खोजना,  
 अक्षु ( अम्भय ) इस भांति जानना,  
 जानना  
 अक्षु ( सं. ) यत्न उपाय, उद्योग ।

अतन ४२५ ( कि. ) प्रबन्ध करना, बबाना, रक्षा करना, बल करना, अत२५ ( सं. ) तार खींच कर बंधने का एक यंत्र विशेष, चुनारों के बड़ा तार खींचने का यंत्र, जती, जंतिरा ।

अती ( सं. ) बती, बोगी, संन्यासी जैन साधु ( जतीजी ) ।

अतुं २४५ ( कि. ) जाना, चले जाना, खोजाना, चूकना ।

अथ२ ५५२ ( कि. वि. ) भाकमिक, सवान रहित, दैवी ।

अथ ( कि. वि. ) जैसा, त्यों, जिस प्रकार, जिन रीति । [ इकठ्ठा, अथाप्य ( कि. वि. ) थोक बन्द, अथारथ ( वि. ) ठीक, उचित, मु-

नासिब, योग्य, यथार्थ, सत्य यथायोग्य । [ योग्यतानुसार अथाशक्ति ( वि. ) शक्त्यानुसार, अथे-थ्ये ( स. ) डेर, समूह, स-

प्रह, भीड़, एकत्र, समा । अथि-धपि ( कि. वि. ) जोभी, अगरचे, यदि ।

अथि ( कि. वि. ) जब, जिस कालमें अत ( सं. ) मनुष्य, आदमी, सखारा

अत ( सं. ) पिता, बाप, बाने-बाला ।

अत३था ( सं. ) कहावत, सूत्र-किस्सा, परंपरागत कथा, जनश्रुति ।

अनी-नुनी ( सं. ) माता, मा, अम्मा, [ साधारण, विश्वास ।

अनथत ( सं. ) प्रजामत, लोकमत, अनभारे ( सं. ) उम्र, जीवन,

त्रिन्दगी ।

अनरोत ( स. ) साधारण रीति रिवाज, लोकरीति, प्रचलित रीति,

अनरानी ( सं. ) प्रचलित बात, प्रसिद्ध बात ।

अनस ( सं. ) भील वस्तु, द्रव्य, असबाब पदार्थ, जेवर, शेष भाग ।

अनसपडी ( वि. ) उन्नीस, १९,

अनसपडी ( सं. ) शेष, बचत बाकी अनपारी ( सं. ) व्यवहार, छि-

नाला, जिनाकारी ।

अनात्ने ( स. ) मुर्दे को उठाने की टही, जहाँ, संग्रह ।

अनादी ( सं. ) पैसा, पावजाना,

अनानपानुं ( सं. ) हरम, महल-सरा, जियों के रहने का स्थान, जाना ।

अनानी ( सं. ) बीबण या औरत कासा, बीबत, डरपोक, कायर ।

अनानी ( सं. ) देखो अनानपानुं अनपाना ( सं. ) लोकापवाद,

अनाथ ( सं. ) श्रीमान्, महाशय,  
मान्य सचक शब्द । [ बटोही ।

७५१२ ( सं. ) यात्री, मुसाफिर,

जन्मार्हिन (सं., विष्णुकानाम, नारायण,

७११ व२ (सं.) जानवर, जीव, पशु,  
छोर, अन्तु, प्राणा ।

जनिता ( सं. ) अनित्री, रचयिता,  
बनानेवाला, कर्ता,

जगुन जुन ( सं. ) धार्मिकहठ,  
व्यग्रता, पागलपन ।

७. तुनी-४. तुनी (वि.) कोधी, गुस्सैल  
तामसी, तुन्शमिजाज ।

જનેતા ( સં. ) દેસી જનની,

७ने ४ ( सं. ) यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र  
यज्ञसूत्र ।

जंतु-तुं (स) प्राणी, जीव, कीड़ा।

७४'न(स.) हथियार, यंत्र, मशीन।

● अंतर मंतर (सं.) नटबाजी, भान-  
मती, जादू, डुटका, टोना ।

७४-५ ( स. ) उत्पात्ति, पैदा, उद्भव,  
अवतरण । [जन्म समय ।

७४-२४१०१ (सं ) पैदा होनेका समय.

७-३३: ५ती (स) लग्न कुंडली, जिसमें जन्म समयके नवो ग्रहों को यथास्थान रखकर कुंडली बनाई जाती।

७-अध्या. (सं.) पैदा समयकाएव,  
जन्मदोष ।

७७७७७७ (स.) वर्षगांठ, जन्मदिन ।

अभ्युदय ( सं. ) जीवन चरित्र,  
जीवनी, जीवन इतिहास ।

जन्मतिथि (सं.) पैदा होनेकी खान्द-  
तिथि, जन्मदिन ।

अन्वर्थी ( कि. वि. ) पैदायशसे,  
स्वभावसे, खुदबखुद पैदासे ।

७-७६२६ (सं.) सदाका कंगल ।

७-भेदे (सं.) स्वदेश, मातृभूमि,  
वतन, वह देश जिसमें पदा हुवाहो ।

७-भनक्षत्र ( सं ) जन्म समयका  
नक्षत्र ।

जन्मनाम (सं.) वह नाम जो जन्म  
नक्षत्र के अनुसार रखा जाता है।

अमृद्विषस (सं) देखो अमृभांड  
अमृने। (वि.) माताक गर्भसे, जन्म-

का, स्वभाविक, प्राकृतिक ।  
 मन्त्रिणी ( सं. ) उत्पत्तिके  
 समय प्रहोषी चालकौ देखकर जो-  
 शुभाशुभका बोधक फल पत्रबनाया  
 जाता है । लम्कडली, जन्मकडली ।

७८७५६१ (सं.) कुलीन लोग, शरीर  
आदमी,

अभ्युदये । ( वि. ) माताके उदरसे  
वधिर, स्वाभाविक बहुरा । बोल ।

अ-भक्ष्य ( सं. ) मानभाषा देशी

७७-३७५भी-२थान (सं.) उत्पत्तिस्थान  
स्वयं भवन । विद्युत्ति नाश.

७-३३-२४ ( सं. ) जचिन मरण,

अभ्यास (सं.) जन्मसाध, बद्ध  
मास जिसमें उत्पन्न हुआ हो।

अभ्यास अधिकार (सं.) जन्मा-  
धिकार। [ होनेके दिनकी रात।

अभ्यास (सं.) जन्मरात्रि, पैदा

अभ्यास (सं.) जन्मनामकी राशि।

अभ्यास (सं.) सदाकारण, माता  
के उदरसे साथ आई बीमारी।

अभ्यास (सं.) सदाका बीमार।

अभ्यास (कि.) अवतार लेना, जन्म-  
लेना, पैदा होना, प्रगट होना।

अभ्यास (सं.) देखो अभ्यास।

अभ्यास (सं.) जीव की दूसरी  
स्थिति, इस जन्म के बाद।

अभ्यास (सं.) जन्म का अन्धा,  
सूरास।

अभ्यास (कि. वि.) जीव के  
सब रूपों में, जन्म हा जन्म,  
अनेक योनि,

अभ्यास (सं.) देखो अभ्यास

अभ्यास (सं.) स्मरण, याद, पुनः  
पुनः माला के मणिषो पर देवता  
का नाम या मन्त्रोच्चारण।

अभ्यास (वि.) जन्त, गिरफ्तार,  
मिला हुआ, किसी के माल या याव  
दाद को धरोहर के रूप से रखना।

अभ्यास (वि.), अभ्यास (वि.)  
अभ्यास करवा, हड़पना, पकड़ना।

अभ्यास (सं.) पूजा पाठ, तप-  
श्चर्चा, धार्मिक पूजा, धार्मिक ध्याना

अभ्यास (सं.) जन्ती, गिरफ्तारी,  
पकड़ धकड़।

अभ्यास-भाषा (सं.) भाषा,  
स्मरणी, सुमरनी, जप करने की  
माला। दानेदार माला।

अभ्यास (कि.) स्मरण करना, जपना,  
ध्यान धरना, धैर्यपूर्वक इंतजार  
करना।

अभ्यास (सं.) दबाव, सख्ती, जुल्म,  
अन्याय, कठोरता, स्वतंत्र राज्य।

अभ्यास-की उद्भुत (कि.) चम-  
कना, भयभीत हो जाना, बौकना।

अभ्यास (सं.) भारी, शक्ति सम्पन्न,  
कठोर, बड़ा, कठिन।

अभ्यास (वि.) बहादुराना, वीर,  
शूरतायुक्त, जंगी।

अभ्यास (वि.) बलवान, जालिम  
निहायत सख्त, कठोर।

अभ्यास-शब्द (सं.) सख्ती,  
दबाव, जुल्म, अन्याय, बलात्कार।

अभ्यास-भाषा (सं.) जिह्वा, जीभ,  
भाषा, भाषण, बोल।

अभ्यास (वि.) सीधे उत्तर देदे-  
नाला, हाजिर जवाब, सीधे सीधी।

अभ्यास (सं.) मवाही, साक्षी।

अभ्यास-भाषा (सं.) उत्तर, जवाब।

अभे ४२३ (क्रि.) बघकरना, काटना,  
कल्लकरना, मारडालना ।

अभे-अभे (सं.) लबादा, जंगा,  
चोगा, जामा, कबा ।

अभ-३। (सं.) यमदूत, अन्तक,  
कृतान्त, काल, मृत्यु, मौत ।

अभ (सं.) भोजन, आना, भक्ष्य ।

अभधुवार (सं.) जेवनार, भोज ।

अभलु (सं.) सीधा, दाहिना, दक्षिण ।

अभ३भ (सं.) जामफल, अमरूद,  
बीह, नाशपाती, सेब ।

अभ३भडी-भी (सं.) जामफल,  
कावस, नाशपातीका पेड़ ।

अभुं (क्रि.) खाना जामना, भो-  
जनकरना, रिश्वतलेना, इकठ्ठे होना,  
जमना । [ ( हिसाबमें ) उत्पन्न ।

अभा (सं.) आगे, जमाकी जगह ।

अभा (सं.) जैवाई, जामात्र, पु-  
त्रीका पात ।

अभाभरय (सं.) देखो अभेभरय  
आयव्यय, आमद खर्च ।

अभाडुं (क्रि.) जिमाना, भोजन-  
करना, घूसदेना, रिश्वत देना ।

अभात (सं.) जाति, संगा, मंडली ।

अभाहार (सं.) हाकिम जमादारी  
केपदपर नियुक्त्यक्ति ।

अभाहारी (सं.) जमादार का काम ।

अभान (सं.) जमानत, प्रतिभू ।

अभाते। (सं.) समय, वक्, काल ।

अभापेदी-भी (सं.) भूमिकर, जमी-  
नका लगान । [ औषधि विशेष ।

अभाधभेटी (सं.) जमालगोटा नामक

अभाव (सं.) बहुतायत, भीड़, झुंड,  
संग्रह, एकत्र ।

अभाव ४२वे। (क्रि.) संग्रह करना,  
इकठ्ठा करना, एकत्र करना ।

अभावुं (क्रि.) जमाना, इकठ्ठा  
करना, गंज करना, ढेर करना जो-  
ड़ना, बटोरना, तरकीपर लाना ।

अभावमुध (सं.) रियासतकी माल  
गुजारी, सालाना आय, जमा व  
मुनाफा ।

अभीअपुं (क्रि.) खाजाना, घूस या रि-  
श्वतमें रुपये इकट्ठेजाना, जमजाना ।

अभीन (सं.) भूमि, पृथ्वी, जगह ।

अभीनहार (सं.) जमीनवाला, जमी-  
दार, किसान, कृषक ।

अभीनदेस्त ४२३ (क्रि.) जमीनपर  
छिटादेना, जमीनपर पड़ना, मार  
डालना ।

अभे (सं.) देखो अभे

अभे४२३ (क्रि.) रुपया जमा करना ।

अभेभरय (सं.) अभेभरय आय-  
व्यय, जमाखर्च । [ तरफ ।

अभेपाधुं (सं.) हिसाब में जमाकी

अभेद (सं.) लुरी, कटार, छुर ।

अभ (सं.) आराम, विश्राम ।

अभुक्त (सं.) गीदह, स्फार, लहे-  
वा, बंदूक ।

अभ (सं.) जीत, पराभव, यत्न,  
कीर्ति विजय, फतह ।

अभ्युदये (कि.) भेद्युदये (कि.)  
यशप्राप्त करना, कीर्ति लाभ करना,  
पराजय करना, हराना, जीतना ।

अभ्योपाध (सं.) विशेषतया वैश्य  
जातिमें प्रणाम करनेका शब्द विशेष ।

अभ्युदय (सं.) जीत, अभ्युदय,  
आधीर्वाधारक ।

अभिति (सं.) विजय दिवस, पार्वणी  
कानाम, विजय मान, विजयी ।

अभ्यास (सं.) ब्रह्माका एकनाम ।

अभय (सं.) वह पत्र जिसमें विजे-  
ताकी जीत स्वीकारकी गई हो, जीत-  
कालेख, अश्वमेधमें घोड़े के मस्तक-  
पर जो पत्र बाँधा जाता था ।

अभ्युदय (सं.) जीतने के अभिप्रेत,  
विजय प्राप्ति के निमित्त गमन ।

अभयान (वि.) जीता हुआ, विजेता,  
विजयी, विजयमान ।

अभय (सं.) विष्णु के दा दारपाल,  
जयविजय ।

अभय (सं.) जय घोष, जयजय  
कार, जीत सूचक शब्द ।

अभ्याधी (सं.) जीतने वाला, जयी,  
विजयी, विजेता ।

अभ्यास, अभ्युदय (सं.)  
प्रणाम सूचक शब्द, प्रणाम की  
रीति । [जयोत्साव, जीत की खुशी ।

अभ्यास-अभेदसाध (सं.) वि-  
जयी (सं.) धनुष की डोरी, प्रत्येक ।

अभ्यास (वि.) जब कभी,  
जब जब, जिस जिस समय । [तब,  
अभ्यास (वि.) अब और  
अभ्यास (वि.) कहीं, किस  
जगह ।

अभ्यास (वि.) कहीं,  
वही, जहाँ जहाँ, जिस जिस जगह ।

अभ्यास (वि.) प्रत्येक  
स्थान, हर जगह ।

अभेद (सं.) जेठ मस, हिन्दुओं  
का तीसरा महीना ।

अभेद (सं.) जेठा नामक नक्षत्र,  
१८ वें नक्षत्र ।

अभेद (वि.) छोटा बड़ा,  
लघु दीर्घ, बालक वृद्ध ।

अभेद (सं.) ब्रह्मा, सो-  
शना, आमा, प्रतिभा, चमक, सु-  
हरत ।

अभेद (सं.) अभेद (सं.),  
ईश, परमात्मा, प्रकाशमान ।

नैतिखिं० (सं.) शिव, महादेव।  
नैतिष (सं.) वेदांग, शास्त्र वि-  
शेष, वह विद्या जिस में आकाश  
के ग्रहों के सम्बन्ध का ज्ञान वर्णन  
है। [ सत्ताईस नक्षत्रों का चक्र।

नैतिष्यः (सं.) राशि चक्र,  
नैतिष्याम् (सं.) खगोल विद्या,  
देखो नैतिष

नैतिषी (सं.) दैवज्ञ, जातिषी,  
गणितज्ञ, ज्योतिष विद्या जाननेवाला।

नै (सं.) द्रव्य, घन, कृपा, दो-  
लत, कमलाव, जरी।

नैःसी (वि.) सोने के तारों का काम,  
जरी का काम। [ जरातुर, जोजर।

नैः-रीडि (वि.) वृद्ध, जीर्ण,

नैः-रीडि (सं.) कीमती वस्तु,  
बहु मूल्य पदार्थ। [ डडा।

नैः (वि.) प्राचीन, पुराना, बु-

नैः-रीडि (सं.) ज्योतिष के  
अनुयायी, पारसी।

नैः (सं.) पीछा-पीछा, पीत, ह-  
रिद्र के रंग का, शीकुं (सं.)  
पीला, कपासी, [पत्र।

नैः (सं.) जर्दा, तम्बाकू, तमाल-

नैः (सं.) सुनहरी तारों का  
काम करनेवाला।

नैः (सं.) भय, डर, घ्रास,

नैः (कि.) पचना, हजम होना,  
सूख जाना, पच जाना।

नैः (सं.) तुलापा, वृद्धावस्था,  
(वि.) किंचित, कुछ, थोड़ा, अल्प।

नैः (वि.) थोड़ासा, किन्तिमात्र  
अत्यल्प।

नैः (वि.) वह भूमि जो वर्षा-  
काल के जल से खेती उत्पन्न करती  
हो।

नैः (वि.) गर्मजात, गर्मो-  
त्पन्न, पिडज, मनुष्य आदि।

नैः (सं.) जेवर, आभूषण।

नैः (वि.) जिसपर रुपहरे  
और सुनहरे तारों का कसीदा किया  
गया हो।

नैः-पुराना (सि.) पुराना (वस्त्र)

नैः (सं.) नापनेवाला, सरसवर।

नैः (सं.) बारजा, सिक्की की  
चौखट, झरोखा, सिक्की, गवाक्ष,  
वातायन।

नैः (सं.) अवश्य, निस्सन्देह।

(वि.) आवश्यक, प्रयोजनीय,

(कि. वि.) वास्तविक, सचमुच।

नैः-रीडि (सं.) आवश्यक  
कार्य, आवश्यक बात।

नैः (सं.) पानी, तोर, उदक,  
रामचिरमा, पछी विशेष।



अक्षर-क्षर ( सं. ) तीखा, कड़ा, शीघ्र, चर्चरा, कठोर, गर्म, तेज ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) बेत का वृक्ष, जलन्धर, जलोदर ।

अक्षरी ( कि. वि. ) शीघ्र, तुरत, तेजीसे, फुर्तीसे ।

अक्षर-क्षर ( वि. ) जलोदर रोग-वाला, जिसे जलन्धर हो ।

अक्षरी ( सं. ) जुल्फी, बाला की लटी ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) पानी द्वारा स्नान ।

अक्षर ( स. ) कठोर, हृदयी, निर्दय व्यक्ति, बेरहम, अक्राद ।

अक्षर-क्षर ( वि. ) अप्रवेशनीय, बंगुजर । [ पदवी ।

अक्षर ( सं. ) बड़प्पन, मर्यादा, अक्षर ( सं. ) ठाठ, धूमवाम, शान शौकत, वैभव, ज्योति ।

अक्षर ( सं. ) समुद्र, मागर, गहिरा ।

अक्षर ( सं. ) एक प्रकार की मिठाई, जलबी नामक प्रसिद्ध मिठाई ।

अक्षर ( सं. ) जो, एक अक्ष का नाम, ( कि. वि. ) जब, कब, कदा, कदा ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) नरकट की छद्म, कलम बनाने की बहू ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) जवाहार, कार्बो-बेटाव पोटाक्ष ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) स्वर्ण जौ की माला, सुनहले जौ की सरणी ।

अक्षर-क्षर ( वि. ) ज्वर को नाश करनेवाला, बुखार हटानेवाला ।

अक्षर-क्षर ( वि. ) ज्वरयुक्त, जिसे बुखार हा गया हो । [ कमतर ।

अक्षर-क्षर ( कि. वि. ) कदाचित्, अप देवुं ( कि. ) जाने देना, छोड़ देना, क्षमा करना, मुआफी देना ।

अक्षर ( सं. ) युवक, युवा, तरुण ।

अक्षर ( वि. ) बहादुर, वीर, माहसा । [ साहस, त. ममत ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) बहादुरी, वीरता, उत्तर । [ उत्तरदाता ।

अक्षर-क्षर ( वि. ) जिम्मेवार, उत्तरदायी ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) जवाबदेही, जिम्मेवार, उत्तर दायित्व ।

अक्षर-क्षर ( कि. ) उत्तर देना जवाब देना ।

अक्षर-क्षर ( स. ) वह हुण्डी जिसका रुपया उसके सिकरने तक न दिया जावे । जवाबी हुण्डी ।

अक्षर ( सं. ) ज्वार, एक प्रकार का अन्न, ज्वारी नामक प्रसिद्ध अन्न ।

अक्षर ( स. ) कटीली घास, कृष्ण विशेष, जवासा नामक घास ।

अक्षर-क्षर ( सं. ) मणि मणिक्क, जवाहिरात, कीमती पत्थर ।

अध्यायीरूपानु ( सं. ) राजकोष,  
बहु धन का भंडार जिसमें मणि  
मणिमय हों ।

अपु ( कि. ) जाना, गमन करना,  
गुम होजाना, अंतर्धान होना,  
गमन ।

अवे ( सं. ) एक प्रकार की नरक छड़ ।

अश ( सं. ) यश, कीर्ति, शोहरत,  
लाम, इज्जत, विजय ।

अस्त ( सं. ) जस्त, जस्ता,

अस्ता ( सं. ) धब्बा, दाग, चिन्ह ।

अस्ति ( उप. ) जैसा, मानिद, नमान ।

अर्हा ( कि. वि. ) जिसजगह, कहाँ ।

अर्हागीर ( सं. ) विश्वविजयी, ममार  
को जीतनेवाला ।

अर्हापनाह ( वि. ) विश्व रक्षक, समार  
का आश्रय, जगत का आसार ।

अर्हाल ( सं. ) पोतयान, बर्दानाका  
जलपोत, समुद्र में चलनेवाला बड़ी  
भारी नाव ।

अर्हान ( सं. ) विश्व, संसार, जगत  
म- ( सं. ) नर्क ।

अर्ही ( कि. वि. ) कहीं, जहाँ कहीं ।

अण ( सं. ) पानी, जल, तोय, उदक ।

अण कुक्षी ( सं. ) जल मुर्गी, पानी  
में रहने वाली मुर्गी ।

अण कीड ( सं. ) जलमय में बरा-  
बर बालों के साथ जल छिड़कना  
आदि जल सम्बन्धी खेल, जल  
विहार ।

अणयक्षी ( सं. ) पनचकी, वह चक्की  
जो पानी के बहाव से चले ।

अणयः ( सं. ) जलजंतु, जल में  
रहनेवाले प्राणी, जलजीव, एक  
प्रकार की मछली ।

अणअणु ( सं. ) जल के निवासी  
जीव, जलचर । [ प्रज्वलित होना ।

अण अणु ( कि. ) धक्कना आम

अणअणु ( सं. ) अत्यन्त उष्णता,  
बेहद गर्मी, अति प्रकाश, गज  
मगाहट । [ नेत्रों का पाना ।

अणअणीयां ( सं. ) अभ्र, ओसू,

अणअणीयां ( सं. ) सदा, अश्रुपात ।

अणअरी ( सं. ) जल भरने का पात्र,  
झारी, सुराही, कुंजा ।

अणतरंग ( सं. ) जलकी लहरे,  
पानी के हिलोरें, बाध विशेष ।

अणह ( सं. ) मृनक की जल में  
अन्योष्ठि क्रिया । मुर्दे कोपानी में  
फेंक देना, जलदाग ।

अण देवता ( सं. ) एक प्रह, वरुण,  
जल के अधिष्ठाता देव ।

अणधर ( सं. ) बादल, मेघ, धन ।

अणनिधि ( सं. ) समुद्र सागर,  
धारिधि । [ अधिकारी ।

अणपति ( सं. ) वरुण, जल तत्वों का

अणपान ( सं. ) कलेवा, कल्प,  
प्रातःकालीन भोजन, तरल पदार्थ  
सेवन । [ मे रहनेवाला पक्षी ।

अणपक्षी ( सं. ) जल का पक्षी, जल

अण प्रणय ( सं. ) पानी की बाद,  
जलद्वारा नाव, जलदूत ।

अण प्रवाह ( सं. ) पानी का बहाव,  
पानी का प्रवाह ।

अण माक्षी ( सं. ) जलजंतु, जलचर ।

अणभय ( वि. ) सर्वत्र पानी ही  
पानी । जलामयी, जल प्रलय ।

अणभार्ग ( सं. ) पानी का रास्ता,  
जल के द्वारा रास्ता, जहाजी रास्ता ।

अणयंत्र ( सं. ) जल के द्वारा गति  
प्राप्त करनेवाला यंत्र, वह यंत्र  
जिस से जलद्वारा काम लिया जाता  
हो, जल सम्बन्धी मशीन ।

अणयान ( सं. ) जहाज, नौका, जल  
पोत, नाव, जलमे चलनेवाली सवारी ।

अणयैऋषिपति ( सं. ) जहाजी  
बंदों का हाकिम, जलसेना का  
सेनापति ।

अणरहित ( वि. ) सूखा, शुष्क,  
जिसमें तभी न हो, जलहीन ।

अणवसि ( सं. ) जल में रहना,  
पानी का वास ।

अण स्वयमारी ( सं. ) जलचर और  
जलचर, वह जो जल और जल  
दोनों पर चल सकता है ।

अणपुं ( कि. ) जलना, मलम होना,  
दग्ध होना, दहना, बहना ।

अणकण ( वि. ) चमक, दमक ।

अणसाही ( सं. ) विद्यु, जल में  
सोना, देखो, अणझांझ ।

अणपेः ( सं. ) द्वेष, काह, ईर्ष्या,  
स्पर्धा, जलन, कुडन, बिता ।

अणभास ( सं. ) मृगतृष्णा, धोखा,

अणक्षय ( सं. ) सरोवर, तालाब,  
नदी, कुवा, समुद्र, जल का संग्रह ।

अणो ( सं. ) जोक, लकड़ी का  
फण्ड । लकड़ी की विप्यट ।

अंअ-अ ( सं. ) जोंष, जंघा ।

अंअ ( वि. ) स्वीकृति पर दी हुई  
वस्तु । [ की किताब, स्मृति पुस्तक ।

अंअअही-वही ( सं. ) बाद दास्त

अंअणो ( सं. ) यूरोप का, यूरोपवासी,  
विलायती, यूरोपियन ।

अंअी ( सं. ) बड़ा ठोल ।

अंअीअो ( सं. ) एक प्रकार की  
छोटी बिरजिस, बुटनों से ऊपर  
जंघाओं पर पहिनने का पावनामा  
काष्ठना, कल, जॉबिया ।

अभि ( सं. ) जामुन, फल विशेष ।

अभि फल ।

अभिद्वीप ( सं. ) सात द्वीपों में मुख्य द्वीप, हिमालय, और नर्मदा के बीच की भूमि ।

अभिद्वी ( सं. ) जामुन का पेड़, जम्बू वृक्ष, एक प्रकार का खिलौना ।

अभिद्वी ( वि. ) बैजनी, जामुनी रंग ।

अभि ( कि. वि. ) जहाँ, कहा, जिसजगह, जो स्थान ।

अभि अभि—अभि तल ( कि. वि. ) यत्रतत्र, जहाँतहाँ, हर कहाँ ।

अभि तल ( कि. वि. ) जहाँ तक जब तक, तक, यथा संभव, यथा साध्य । [ को जीतनेवाला ।

अभि तल ( सं. ) विश्व विजयी, संसार

अभि लगभु—वेर—सुधी ( कि. वि. ) देखो अभि तल ।

अभि ( सं. ) स्वतंत्रता पूर्वक आवागमन, आमदरफ्त, जाना आना

अभि ( सं. ) चमेली का फूल, बेला का फूल, जुही का पुष्प ।

अभि ( सं. ) अभि—निद्रा त्याग, जागना, रतजगा । [ विशेष ।

अभि ( सं. ) जायफल, औषधि

अभि—अभि ( वि. ) अनिद्रित, जगताहुवा, बेसोया, सावधान ।

अभि—अभि ( वि. ) देखो अभि

अभि ( सं. ) देखो अभि

अभि—अभि ( सं. ) सावधानी, जाग, जागृति, अप्रमत्तता ।

अभि ( कि. ) जागना, सावधान रहना, अनिद्रित होना ।

अभि—अभि ( सं. ) सरकारकी ओर से दी हुई मुआफ़ी ( जमानकी ) जायदाद ।

अभि—अभि ( सं. ) जागीरवाला, जायदादवाला, मुआफी प्राप्त ।

अभि—अभि ( सं. ) सावधानी का दशा, जागृत अवस्था, जीवित, सावधान, जगताहुवा ।

अभि ( सं. ) याचक, भिक्षुक, मँगता, भिखमंगा ।

अभि ( सं. ) भिक्षा, भीय, प्रार्थना, विनय, दान ।

अभि ( कि. ) मँगना, याचना करना, विनती करना, हाथजोड़ना, विधिवाना, भीख मँगना ।

अभि ( वि. ) दुखदायी भीख, हेतु-दायिनी भिक्षा ।

अभि ( सं. ) विछौना, सतरंजी, दरी, चटाई, बलीचा, जाजिम ।

अभि—अभि ( सं. ) उजाजलमान, चमकीला, प्रकाशमय, वैतन्व ।

अक्षर ( सं. ) पाश्चात्या, संज्ञा, सौचालय, अक्षर, नीच ।

अक्षर ( कि ) अक्षर, पञ्चोत्तरा, शास्त्रा, मङ्गलाना । [ असम्भवा ।

अक्षर ( सं. ) मुद्रा, मङ्गलाना, मङ्गलाना ।

अक्षर ( वि. ) मोटा, ताजा, घना, पुष्ट, खड्ड ।

अक्षर ( सं. ) ज्ञान, इत्य, सूचना ।

अक्षरपिछाक्षर ( सं. ) ज्ञानपिछाक्षर, परिचय ।

अक्षरभेद ( सं. ) कपटी, पाश्चात्या ।

अक्षरवाग्भेद—ज्ञाने योग्य,

अक्षरवाग्भेद—अक्षरवाग्भेद ( कि. वि. ) जो कुछ जानते हो

उसके द्वारा अक्षर या अन्दाज ।

अक्षर ( कि ) जानना, समझना ज्ञात करना, जानलेना ।

अक्षर-त्रेधने ( वि. ) समझबूझकर, बाँकसीमे, सावधानीसे ।

अक्षर ( वि. ) जानकार, परिचित, घरेलू, मेलवाला, चतुर, गुणी ।

अक्षर-३ ( वि. ) मानो, यदि ऐसा, स्वाल करताई, मुझे जानपड़ता है ।

अक्षर ( सं. ) गोत्र, जाति, कोम, वर्ण, भेद, किस्म, प्रकार मौति, वर्ग, दर्जा, कुटुम्ब ।

अक्षर ( सं. ) गोत्रवर्ण, जाति-वर्ण, कुटुम्बी ।

अक्षर-वर्ण ( वि. ) उच्च कुलो-त्पन्न, कुलीन, भेद वर्ण का भेद, उत्तम ।

अक्षर ( सं. ) दर्जा, भेदा, किस्म, मात्र, कुल, कुटुम्ब, घराना, वंश ।

अक्षरभेद ( सं. ) वर्णभेद, गोत्रभेद ।

अक्षर-वर्ण ( कि. वि. ) पतित, जातिच्युत, कुलहीन, जानिसे अलग ।

अक्षरवेर ( सं. ) प्राकृतिक शत्रुता, स्वाभाविक द्वेष ।

अक्षर-वर्ण ( सं. ) जाति का प्रभाव, जातीय आदत, स्वाभाविक विधान ।

अक्षर ( वि. ) कौमी, जाति का ।

अक्षर-वर्ण ( सं. ) कुटुम्बीय जन, समान वर्ताव, हुक्कापानी ।

अक्षर ( वि. ) जन्माध, सूरदास ।

अक्षर-वर्ण ( सं. ) जातीय गर्व, स्वात्माभिमान । [ स्वयं ।

अक्षर ( वि. ) अपने आप, खुद,

अक्षर ( सं. ) यात्रा, तीर्थ गमन, मेल ।

अक्षर ( सं. ) यात्री, तीर्थगामी ।

अक्षर-३ ( कि. वि. ) स्थिरतापूर्ण, पावदारी, यथाविधि, नियमपूर्वक ।

अक्षर ( सं. ) बोलिवाँ जोड़ने के साथ ही

अक्षर-२ ( वि. ) अधिक, विशेष,  
उत्तमः ।

अक्षु ( सं. ) टोना, टुटका, इष्टजाल ।

अक्षुभे-२-३२ ( सं. ) जादू करने-  
वाला, मायाकार, मायावी, इन्द्र-  
जालिक ।

अक्षुभिरी ( सं. ) जादू का काम,  
टोना, टुटका, इष्टजाल ।

अक्षुटोषु ( सं. ) मंत्र टुटका, बुरे  
काम, निष्कार्य ।

अक्षुभं-२ ( सं. ) टोना, टुटका ।

अक्षु ( सं. ) प्राण, जीवन, कोमल  
हृदय, हानि, घाटा, मूल्य, जौहर,  
वरात, जनेत ।

अक्षु आ-२ ( कि. ) प्राण देना,  
दूसरे के लिये प्राणोत्सर्ग करना ।

अक्षु-२ ( सं. ) स्त्री पुरुषों का  
दूल्हे के साथ चलनेवाला समूह ।  
बराती, जनेती, बरात वाले ।

अक्षु-२ भा-२-२-२ ( कि. ) जान  
से मारना, बध करना, कत्ल  
करना । [ जान पहिचान ।

अक्षु पि-२ ( सं. ) परिचय,

अक्षु-२ ( सं. ) जीवन और धन ।

अक्षु-२ ( सं. ) अक्षु-२ पक्षु,  
छोर, प्राणी, जीव । [ भीतरी ।

अक्षु ( वि. ) दिल्ली, अन्दरूनी ।

अक्षु-२ ( सं. ) बरातियों के  
छहरने का स्थान, अनकासा ।

अक्षु ( सं. ) बुटना, जानू ।

अक्षु ( सं. ) देखो अक्षु ।

अक्षु-२ ( सं. ) रोक, अटकाव,  
बन्धेज, जान्ता, बन्दोबस्त, धा-  
नावस्थित ।

अक्षु-२ ( सं. ) दावत, भोज, जेवन,  
आदर, सत्कार, विलास ।

अक्षु-२ ( सं. ) केसर ।

अक्षु-२ ( सं. ) बेपरवाही, असावधानी  
अनिश्चितता ।

अक्षु ( सं. ) प्याला, कटोरा, गम,  
प्रहर, राजा, सुराही, सप्तर ।

अक्षु-२-२ ( सं. ) बन्दूककी  
टोपी ।

अक्षु-२ ( सं. ) जमान, जमानेकी वस्तु,  
पानी दूध आदि जमानेका पदार्थ ।

अक्षु-२ ( सं. ) एक प्रकारका  
सूतीवस्त्र । [ हाकिम, सजानबी ।

अक्षु-२ ( सं. ) सर्वजनिक कोषका

अक्षु-२-२ ( सं. ) सार्वजनिक  
सजाना । [ यामिनी ।

अक्षु-२-२ ( सं. ) रात्रि, रात,

अक्षु-२ ( सं. ) नाशपाती, अमरुद ।

अक्षु ( कि. ) जमना, एकट्ठा होना,  
एकत्र होना, ठोस होना, मिले होना ।

अभिन (सं.) अभिन, प्रतिभा, जमानतदार ।

अभिन ६२वे ( कि. ) जमानतदार-करना, जमानत करना ।

अभिनभत ( सं. ) जमानत की चिट्ठी, जमानतका तमस्तुक, नियम पत्र । [ होना । जिम्मेवार होना ।

अभिन भु ( कि. ) जमानतदार

अभिनगीरी ( सं. ) जमानत ।

अभे ( सं. ) बड़ा कृपा, जामा, वस्त्र विशेष, सभावस्त्र । [ विशेष ।

अभेध ( सं. ) जायफल, औषधि

अभा ( सं. ) पत्नी, भार्या, गृहिणी ।

अभी ( सं. ) पुत्री, तनया, आत्मजा ।

अभे ( सं. ) पुत्र, बेटा, तनय, आत्मज ।

अभ ( सं. ) उबार, उबारी, धान्य विशेष । मार, आशना, उपपत्ति, आशिक । [ कारी ।

अभ २६भ ( सं. ) व्यभिचार, जिना-

अभ २६भ-भारथु ( सं. ) मंत्रोंद्वारा मारण मोहन । निर्वलता या मुल्य । [ छिनाल, विषयी ।

अभरी ( सं. ) व्यभिचारी, जिनाकार,

अभरी ६२भु ( कि. ) चालू करना, शुरू करना, आरंभ करना ।

अभरी भु ( कि. ) काबार होना, बेवस होना, आरंभ होना, शुरू होना ।

अभरी राभु ( कि. ) चलाते-रहता, गतिमें रखना, जारी रखना चालू रखना ।

अभ ( सं. ) व्यभिचार, छिनाल ।

अभभ ( सं. ) निर्देश, कठोर, जुल्मी, अन्याय, कड़ा, सख्त ।

अभक ( वि. ) जो बाहर भेजी जावेगी, जानेवाली ।

अभत ( कि. वि. ) जब, जिस समय, जबतक, थोड़ेमें ।

अभतयं ६ दीवा ६२ ( कि. वि. ) जबतक सूर्य और चंद्र विद्यमान हैं, हमेशा, प्रलयकालतक, सृष्टि विनाश पर्यन्त ।

अभत निशानी ( सं. ) संक्षेपचिन्ह ।

अभ २२ ( सं. ) जावित्री ।

अभेदान ( वि. ) हमेशा के लिये, सदा सदा के लिये । [ नित्यता ।

अभेदानी ( सं. ) सनातनत्व,

अभु ६-स ( सं. ) गुप्तचर, भेदिना, जासूस, हरकार ।

अभरी ( वि. ) अधिक, विशेष,

( सं. ) सख्ती, कड़ाई, उग्रता, कठोरता, बड़ती, बढाव ।

अक्षर ( सं. ) जूते का फूल, बूँत  
पर लगाना जानेवाला फूल ।  
अक्षरान्न ( सं. ) नर्क, यमलोक,  
जहन्नम ।  
अक्षर ( वि. ) प्रकट, खुला, जाहिर ।  
अक्षरकाम ( सं. ) सार्वजनिक कार्य,  
प्रकट कार्य ।  
अक्षरभार ( सं. ) विज्ञापन,  
विक्रय, इस्तहार ।  
अक्षर करण ( कि. ) प्रकट करना  
सूचित करना, जाहिर करना ।  
अक्षरयु ( कि. ) उचढ़ना, प्रकट  
होना, आगे आना ।  
अक्षरनाभ ( सं. ) हँदोरा, दुग्गी,  
मुनादी, डोंडी, इस्तहार ।  
अक्षरगत ( कि. वि. ) खलमखला,  
साफसाफ, प्रत्यक्ष ।  
अक्षर ( सं. ) अज्ञान, हठी, जिद्दी,  
कोधी, बदमाश, जाहिल ।  
अक्षरधारी ( सं. ) ठाठ, धूम-  
धाम, शानशौकत, वैभव, ज्योति,  
चटक । [ पाश, फन्दा ।  
अक्षर ( सं. ) जाल, बचाव, पालन,  
अक्षरयु ( कि. ) बचाना, पालना,  
रक्षा करना, हिफाजत करना ।  
अक्षर ( सं. ) झंझरी, झरोखा,  
खिचड़ी, जाल सरीखी, मोहरा ।

अक्षर ( सं. ) बसी, बारी  
पकीता । [ का, जालीवाला ।  
अक्षरहार ( वि. ) जाली के काम  
अक्षर ( सं. ) मकड़ी का फँद,  
सिली, जाला, ओख का जाल ।  
अक्षर ( सं. ) हानि, दोटा,  
नुकसान ।  
अक्षर ( सं. ) देखो अक्षर,  
अक्षर ( सं. ) दुल्हा, बर, बाद ।  
अक्षर ( सं. ) हठ, जिद्द, बादा-  
नुवाद, शास्त्रार्थ ।  
अक्षर ( सं. ) दिल, हृदय, मन,  
कलेजा, हृत्पिण्ड ।  
अक्षर ( सं. ) कुत्ते, गाय. आदि  
पशुओंकी जूँ, चिचड़ी ।  
अक्षर ( सं. ) पुछार, प्रश्न,  
मनोगत, जाननेकी इच्छा ।  
अक्षर ( सं. ) माता, मा जननी ।  
अक्षर ( सं. ) बर्दाशा, दादी,  
नानी, माता से बड़ी स्त्री ।  
अक्षर ( सं. ) आमकी गुठली का  
छिलका ।  
अक्षर ( सं. ) गद्दी ।  
अक्षर ( सं. ) जय, विजय, शत्रु  
पराजय, शत्रुहार, शत्रुपराभव ।  
अक्षर ( कि. ) जयलभ करना,  
जीतना, विजय श्री प्राप्त करना ।



शुद्धि ( वि. ) जिद्दी, हठी,  
दिक करनेवाला ।  
शुद्धि ( सं. ) जेता, विजयी ।  
शुद्धि ( सं. ) विजयपत्र, जय  
पत्र, जीतका साक्षी पत्र ।  
शुद्धि ( कि. ) जीतलेना, आधी  
न करना, बरा करना, हराणा ।  
शुद्धि ( वि. ) इन्द्रियजीत,  
जिसने इन्द्रियो को बरा करलिया  
हो, शान, बशी, अकामी ।  
शुद्धि ( सं. ) हठ, जिद्द, सरकशी ।  
शुद्धि ( सं. ) हठ करना,  
जिद्द करना, अड़ना आप्रह करना ।  
शुद्धि-गुणी ( सं. ) जीवन,  
उम्र, आयु ।  
शुद्धि ( सं. ) हठी, आप्रही ।  
शुद्धि ( सं. ) काठी, जिन्द, प्रेत,  
लोग । [ गोलोक ।  
शुद्धि ( सं. ) स्वर्ग, वैष्णव,  
शुद्धि ( सं. ) काठी बनाने वाला,  
जान बनानेवाला ।  
शुद्धि नाभु ( कि. ) काठी कसना,  
तय्यार होना ।  
शुद्धि ( सं. ) काठी रॉकने का  
बल, काठी का बल ।  
शुद्धि ( सं. ) वस्तु, पदार्थ, द्रव्य ।  
शुद्धि ( सं. ) दुकड़ा, लयब ।

शुद्धि ( सं. ) गोखर, बनैल वध ६  
शुद्धि-शुद्धि ( सं. ) जिद्दा, जवान ।  
शुद्धि ( कि. ) अल्प माषण  
करना, बोढ़ासा बोलना ।  
शुद्धि ( वि. ) गन्दे मुहँ का, मैले  
मुहँवाला ।  
शुद्धि ( सं. ) अहाज का पाल, जीमी,  
जीब का मेल साफ करने की ।  
शुद्धि ( सं. ) कृषि कार्य, खेती,  
किसानी, जराअत ।  
शुद्धि ( सं. ) जीरापाक, जीरे  
द्वारा बना हुआ पकाज, सुगंधित ।  
शुद्धि ( सं. ) अफरीका का एक  
चापाया जिसकी अगली टोंगे  
पिछलीकी अपेक्षा छोटी होती है,  
एक प्रकारका ऊँट । [ बॉवल ।  
शुद्धि ( सं. ) एक प्रकारका  
शुद्धि ( सं. ) मसालेदार,  
सुसुद्धार, ताँक्षण, चटपटा ।  
शुद्धि ( सं. ) जारक, जीरा एक  
सुगन्धित वस्तु ।  
शुद्धि ( सं. ) प्राचीन, पुराना, बूढ़ा,  
बूढ़ा, परिपक्व, जर्जरीभूत ।  
शुद्धि ( सं. ) पुस्तक की जिल्द,  
पुस्तक का आवरण, गता, पुक ।  
शुद्धि ( सं. ) दफ्तरी, जिन्द  
बांधनेवाला । [ मस्त ।  
शुद्धि ( सं. ) जिन्द, जिस्सिन्द,

अप ( सं. ) प्राण, आत्मा, विष, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार जन्तु, द्रव्य, धन ।  
 अप आपो-होवे ( कि. ) अपने प्राणोंको बलि करना, आत्मघात, प्राणोत्सर्ग । [ ज्ञात होना ।  
 अप उठो भवे ( कि. ) उदासी  
 अप उड़ी होवे ( कि. ) पागलसा हां जाना, होस उड़ना, घबराजाना ।  
 अप ओठो भवे ( कि. ) नाखुश होना, नाराज होना, रुष्ट होना, अप्रसन्न होना ।  
 अप भावे ( कि. ) संभ करना, सताना, दिक् करना, धकाना ।  
 अपगन-सभ ( कि. ) दिली, जिनगी, अति प्रिय, प्राणप्रिय, प्यारा, कठिन कार्य करना, फिक करना, चिंता करना, सावधानी से काम करना, उदार होना, धर्मात्मा होना, शान्त होना, ठीठ होना, बहादुर होना नाराज होना, अप्रसन्न होना, प्रयत्न करना, सताना, जीब खाना, मरना, मारना, बध करना, कंजूस होना, कृपण होना, उदास होना ।  
 अपनी सभ ( सं. ) अपनी कसम, मेरी सौमन्ध, अपनी शपथ ।  
 अपमर्त-जु-हुं ( सं. ) छोड़े छोड़े प्राणी, जानदार । "

अपत ( सं. ) जीवन जीव, जिन्यगी ।  
 अपतर ( सं. ) पूर्ववत्  
 अपतहाव ( सं. ) जीवनदान, अमय बचन, प्राण रक्षा, प्राणदान ।  
 अपतुं ( सं. ) जीवित, जिंदा, चैतन्य ।  
 अपत ( वि. ) पूर्ववत्  
 अपत हरेपुं ( कि. ) जिलाना, जीवित करना, जिन्दा करना, साहस दिलाना ।  
 अपत रेहेपुं ( वि. ) जीवित रहना, जिन्दे रहना, कायम रहना ।  
 अपतो भते ( वि. ) रात्रीसुधी, जीवित और जागृत, जीता जागता, अपतो अप ( सं. ) जीवित प्राणी, चैतन्य जीव अमृत जीव ।  
 अपहरे ( वि. ) द्रव्यपात्र, रुपये पैसेवाला, जिन्दा, जीवित ।  
 अपन ( सं. ) जीविका, रोजी, भोजन, अस्ति, स्वत्व ।  
 अपनभाणे ( सं. ) जीविका, रोजी, रोटी, कपड़ा, निर्वाह ।  
 अपनभुति ( सं. ) मोक्ष, नशात ।  
 अपनभुत ( वि. ) जीवित दशम्ये ही ज्ञानार्जन की सहायतासे ब्रह्म को साक्षात्कार किन्ने, इस जन्म ही में संसार बंधन सेमुक्त, महात्मा ।  
 अपनारे ( सं. ) जीनेवाला ।

अनन्य ( सं. ) जीविका, स्वत्वा।

अनन्य ( सं. ) आत्मा और जीव  
जीवन और आत्मा ।

अनन्य ( कि. ) काम कोष  
को शमन करना, जीव हिंसा करना ।

अनन्य ( सं. ) छोटे छोटे जान-  
वरों की श्रेणी । [ मृत, मुर्दा ।

अनन्य ( वि. ) निजाव, बेजान,

अनन्य ( वि. ) प्यारा, दुलारा,  
प्राणधिक प्रिय, प्रिय ।

अनन्य ( कि. ) जीना, जिन्दा रहना,  
जीवित रहना, जिन्दा होना ।

अनन्य ( वि. ) सतरनाक,  
भयहेतुक, जोखिमका ।

अनन्य ( सं. ) वध, कत्ल,  
जीवनाश, हिंसा ।

अनन्य ( सं. ) मुकुरर जीविका,  
रोजी, आजीविका !

अनन्य ( सं. ) संरक्षक, रक्ष-  
वाला, ईश्वर ।

अनन्य ( कि. ) आत्म रक्षा करना,  
निमित्त करना, जीना, रहना ।

अनन्य ( सं. ) जीव, कीड़े मकोड़े ।

अनन्य ( सं. ) आत्मा, प्राण,  
जीव, रह । [ तेज ।

अनन्य ( सं. ) साहसी, शीघ्र, स-

अनन्य ( सं. ) जवान, जीम, रसे-  
निद्र ।

अनन्य ( कि. वि. ) जवान के  
सिरेपर, जीम के अग्र भाग पर ।

अनन्य ( सं. ) निर्वाह के कारण,  
गुजारे के सबब । [ घर ।

अनन्य ( वि. ) दिल्ली, जिंगरी,

अनन्य ( सं. ) जू, चीलर,

अनन्य ( सं. ) तदवीर, जुमत, ह-  
वौटी, कारण, हुनर, शोभ्यता,  
रीति ।

अनन्य ( सं. ) सदा, जुकाम, ठंडा

अनन्य ( सं. ) युग्म, दो, जोड़ा, युग,  
४ युग, १२ वर्ष की अवधि ।

अनन्य ( कि वि ) विरकाल  
तक हिलते हुए, कोंपते हुए ।

अनन्य ( सं ) जुआ, घूत, जुवा ।

अनन्य ( सं. ) देखो अमर्णा

अनन्य ( सं ) देखो अमर्णा

अनन्य ( सं. ) युग्म, दो इकठे, दो  
एकत्र ।

अनन्य ( सं. ) दो, जोड़ा, दोहरा ।

अनन्य ( सं. ) जुवा, घूत, जुवा ।

अनन्य ( सं. ) जुवारी, जुआ खे-  
लनेवाला

अनन्य ( कि. वि. ) प्रत्येक स-  
मय, हर अवस्थाने, सदैव स्थित,  
सदा ।

शुद्ध-५ ( वि. ) बोड़ा, कम,  
कल्प, कुछ, दुच्छ, छोटा, इसका।  
शुद्ध-६ ( वि. ) अलग, जुदा, नि-  
राला, मित्र, न्वारा, रंग विरंग,  
नानावर्ण ।

शुद्ध ( सं. ) असत्य, मिथ्या, गलत,  
अशुद्ध, झूठा

शुद्ध ( स. ) उच्छिष्ट, भोजन से  
बचा हुआ, जूठन, जूँटा [ झूठ ।

शुद्ध ( सं. ) असत्य, मिथ्या,

शुद्धसे गन ( सं. ) झूठकस्म, झूठी  
सागन्ध उठा, मिथ्याशपथ ।

शुद्ध-८ ( सं. ) झूठा, असत्य ।

शुद्ध-९ ( कि. ) झूठा कहना,  
मिथ्या कहना, असत्य कथन ।

शुद्ध ( सं. ) मिथ्यावादी, असत्य  
बक्ता झूठा । [ गद्दा ।

शुद्ध-१० ( सं. ) पुलिन्दा, बण्डल,

शुद्ध ( सं. ) पन्हेयों, पदत्राण जूती ।

शुद्धी-१ ( वि. ) जूती खानेवाला,  
सदा पिटोकरा, सदाबोधकें योग्य ।

शुद्धी-२ ( सं. ) चेतकी जूती,  
खपोरा जूती, बाली जूती, स्लीपर ।

शुद्धी-३ ( कि. ) जूतियोंसे पीटना,  
बोध लगाना, धिक्कारना ।

शुद्ध-४ ( सं. ) मीढ़, झुंड, जन समूह ।

शुद्ध ( सं. ) विवोग, पार्थक्य,  
अलगभाव, भिन्नता ।

शुद्ध ( वि. ) अलग, पृथक्, भिन्न ।

शुद्ध-५ ( सं. ) संग्राम, रण लड़ाई,  
जंग, समर ।

शुद्ध ( सं. ) पुराना, प्राचीन ।

शुद्ध-६ ( वि. ) बिल्कुल जर्ज-  
रित, जराजीर्ण ।

शुद्ध-७-८-९ ( वि. ) पुराना,  
बूढ़, जर्जर, ।

शुद्ध-१० ( सं. ) पुराना पापी,  
प्रसिद्ध पापी, [ वक्ता ।

शुद्ध-११ ( सं. ) देशभाषा बाली,

शुद्ध-१२ ( सं. ) साक्षी, गवाही ।

शुद्ध-१३ ( सं. ) गुच्छा, झुग्गा कुंदना  
लटकन । [ तमाम ।

शुद्ध-१४ ( कि. वि. ) इकट्ठे, सय  
शुद्ध ( सं. ) बेहोशी की हालत, गफलत

ऊँच, नींद, झपकी ।

शुद्ध-१५ ( सं. ) जिम्मेवारी, उत्तर  
दायित्व, अधिकार ।

शुद्ध-१६ ( सं. ) रकम, जोड़, टोटल ।

शुद्ध-१७ ( सं. ) पूर्ववत्,

शुद्ध-१८ ( सं. ) बृहस्पति बारकी रात्रि,

शुद्ध-१९ ( सं. ) शाकि, बल, साहस ।

शुद्ध-२० ( सं. ) पूर्ववत्,

शुद्ध-२१ ( सं. ) अन्याय, अनैति, दबाव  
सक्ती, उपद्रव, कठोरता ।

शुद्ध-२२ ( सं. ) पूर्ववत्

शुद्धमन्त्रे (कि.) अवीति करना,  
अन्याय करना, सक्ती करना ।

शुद्धमन्त्रे (सं.) अन्यायी, आक्रिम,  
निर्वय, पाषाण हृदयी ।

शुद्धमी (सं.) पूर्ववत्,

शुद्धाम (सं.) विरेचन, जुआब,  
पेट साफ करनेवाली, घमकी, बुढ़की,

शुद्धती (सं.) स्त्री, अवान स्त्री ।

शुद्धती (सं.) पूर्ववत्

शुद्धा (सं.) एक प्रकार का कीड़ा ।

शुद्धातुं (सं.) जुवा खेलने का  
घर, दूत गृह ।

शुद्धाभेद (सं.) जुवारी, दूत प्रेमी ।

शुद्धान-शुद्ध-पट्टे (सं.) तरुण,  
जवान, युवक, हृद्यकक्ष, बली ।

शुद्धापी (सं.) यौवन, तरुणावस्था ।

शुद्धार (सं.) ज्वार, अन्न विशेष ।

शुद्धाण (सं.) ज्वारभाटा, पानी  
का चढाव, पानी का बढाव ।

शुद्ध (सं.) दूत, जूवा, पासेका खेला

शुद्धरी (सं.) जुवा, जूरी, बेलोंके  
कांघोपर रखनेकी, नाचना ।

शुद्धसे (सं.) हलचल, चक्कराहट ।

शुद्धार (सं.) प्रणाम, नमस्कार ।

ने (सर्व.) कौन, क्या, जो, वे,  
विजय, जीत ।

नेकीर्ण (कि. वि.) जोकुछ ।

नेकीर्ण (कि. वि.) जो कोई, जोभी ।

नेजम (कि. वि.) जहाँकहीं, जिसर,

नेयोपाध (सं.) प्रणाम सूचक शब्दा

नेने (सर्व.) जोजो, जोकुछ, जयकच ।

नेनेकार (सं.) जयजयकार, कीर्त  
अभ्युदय, आसीर्वाशार्थक सन्ध ।

नेटुं (कि. वि.) चितना,

नेटले (कि. वि.) जब, तबतक ।

नेटले सुधी-सगी (कि. वि.) जब-  
तक, उस समयतक, तबतक ।

जहाँतक । [ मास, ज्येष्ठमास ।

नेह (सं.) पतिका बढाभाई तृतीय

नेहाथी (सं.) जेठकीस्त्री, पतिके  
बदेभाईकी पत्नी ।

नेहीपुत्र (सं.) सबसे बड़ा पुत्र ।

नेहीभध (सं.) ज्येष्ठीमधु, मधुली ।

नेहीभधनोरीरी (सं.) मधुलीका रस,  
एक प्रकारकी मीठी जड़ का रस ।

नेहैकावे (वि.) जिसजगह, जि-  
सस्थान, जहाँ कहीं, जहाँ, यत्र ।

नेथीअम (कि. वि.) देखो नेअम,  
नेथे (सर्व.) कौन, किसने, जो,

जिसने । [ चीज ।

नेते (कि. वि.) कुछभी, कोई

नेप्रभावे (कि. वि.) जिस तरह  
जिस रीति से, अनुसार, कैसे हो ।

नेम (सं.) पूर्ववत्,

ने० ( कि. वि. ) जैसे, अर्थात्  
बानी, उदाहरणार्थ ।

ने० ( कि. वि. ) जैसे तैसे,  
बयातबा ।

ने० ( कि. वि. ) वैसाका  
वैसा, वैसाका तैसा, ज्यों कों त्यों ।

ने० ( वि. ) बचीभूत, जीताहुवा,  
ने० ( सं. ) लगामकी कड़ी,  
लगामकी जंजीर ।

ने० ( कि. ) बसकरना, आधीन  
करना, जीतना ।

ने० ( सं. ) कमजोर, दुर्बल,  
बयाफ, छोटा, नीचा, मातहत ।

ने० ( सं. ) फीता या बन्ध जो  
बोदेकी लगामके बांधा जाता है  
कोड़ा बाबुल, इंदर, प्रतोद ।

ने० ( सं. ) सहना, ठहरना,  
सुधारना, पचाना ।

ने० ( सं. ) कारावास, बन्दिरवाला,  
'बेलवाला, कारागार ।

ने० ( कि. वि. ) इतना ऊँचा,  
जितना ऊँचा, [ बलहार

ने० ( सं. ) आभूषण, भूषण,  
ने० ( वि. ) वार, वारे, ने० ( कि.

वि. ) जबकभी, जिससमय, जब ।  
ने० ( कि. ) वैसा, समान, ऐसाकि ।

ने० ( कि. वि. ) वैसा तैसा, देखा  
वैसा, जैसाका तैसा, तथा, वही ।

ने० ( सं. ) देखो ने०, ने० ।

ने० ( सं. ) देखो ने०, ने० ।  
ने० ( सं. ) हल, हर, कृषित्र ।

ने० ( सं. ) विष, हुलाहल, द्रोह,  
विद्रोह, क्रोध, गुस्सा ।

ने० ( कि. ) विष देना,  
जहर देना, विषपान कराना ।

ने० ( कि. ) विषके नसेसे  
छुटकारापाना, विषउतरना ।

ने० ( सं. ) कुचला, एक विषैली  
औषधि विशेष ।

ने० ( कि. ) विष पान करना ।  
ने० ( कि. ) विष द्वारा बेहोश

होना, जहरका नशा होना ।  
ने० ( सं. ) विषाक्त, विषपूर्ण, विषैला

जहरी देवी ।  
ने० ( धर्म ) बौद्धधर्म, जिनधर्म ।

ने० ( अ. ) यदि, अगर, बसतैंकि,  
इस दशामें ( कि. ) देखना, निहा-

रना, अवलोकन करना ।  
ने० ( वि. ) आवश्यक, जरूरी, चाह

इच्छा, प्रयोजनीय, उचित ।  
ने० ( कि. ) चाहिये, होना चाहिये

लाजमी होना आवश्यक है ।  
ने० ( कि. ) देखजाना, निगह

करजाना ।  
ने० ( कि. ) देख तो, देखनेदो ।

ॐ३ (सं.) चौक, जलबंदु विदेव ।  
 ॐ३ (अ.) विसपरमी, तथापि,  
 बावजूदेकि, तौमी ।  
 ॐ५ (सं.) तोल, माप, मार,  
 परिमाण, वजन,  
 ॐ५भ (सं.) दावित्व, भार, रखा  
 कामार, बिता, बाधा, उत्तरदातृत्व  
 घन, सोना, चौबी, रत्न ।  
 ॐभरडितादेवे (क्रि.) बीमा करा-  
 देना, जिम्मेवारीसे अलग होना ।  
 ॐभभभरी (वि.) हानिप्रद, जोखि  
 मका, खतरनाक, भयहेतुक ।  
 ॐभभभर (क्रि.) जबाबदार उत्तर  
 दाता, जिम्मेवार । [ परसी ।  
 ॐभभभ (सं.) मापतौल देखा-  
 ॐभभभु (क्रि.) जुकसान पाना,  
 कष्ट उठाना ।  
 ॐभभु (क्रि.) तौलना, वजन  
 करना, पीटना, सख्त मारमारना ।  
 ॐभ (सं.) संयोग, जोड़, मेल,  
 (वि.) योज्य,  
 ॐभटी (सं.) योगिन, जादूगरनी,  
 बाह्य तपस्विन, महंतनी, साध्वी ।  
 ॐभटी (सं.) तपस्वी, योगी, बैरागी ।  
 ॐभभभ (सं.) मौका, अवसर,  
 योग ।

ॐभु (वि.) योज्य, उचित, ठीक  
 ॐभभ (सं.) योजन, ४ कोसका  
 परिमाण । [ यन्न होणे,  
 ॐभे (विस्म.) देखो देखो, साव-  
 ॐभे (सं.) पैरके अगूठे में पड़ि-  
 जनेका चौंदाका छमा ।  
 ॐभे (सं.) जोड़ा, दो । [ दोस्ती,  
 ॐ३ (सं.) जोड़ा, जोड़ मित्रता,  
 ॐ३ (सं.) जोड़ा, दो,  
 ॐभे (सं.) कहानी, अक्षरविन्यास  
 मेल, जोड़, सम्बन्ध उच्चारण ।  
 ॐभे (सं.) बारह, दो एक साथ  
 उत्पन्न ।  
 ॐभु (क्रि.) जोड़ना, संग्रह करना,  
 इकट्ठा करना, एकत्र करना, बैल  
 जोतना, मिलाना, बैलों पर जुड़ा  
 रखना, नाथना ।  
 ॐभे (सं.) जूती जोड़ा, दो जूतियां।  
 ॐभभभ (सं.) संयुक्तकर, मिले  
 हुए अक्षर ।  
 ॐभभभ (क्रि. वि.) पास पास,  
 निकट निकट, सटकर ।  
 ॐभे (सं.) देखो ॐ३  
 ॐभे (सं.) साधी, सेवी, सहकारी  
 ॐभे (सं.) जोड़ा, जोड़कर, पास  
 पत्नी । [ सहित ।  
 ॐभे (क्रि. वि.) साथ, के

लो० (सं.) जूता, पदत्राण, जोड़ा ।

लो० (सं.) देखना, नजर, निगाह, दृष्टि, देख ।

लो० (सं.) ज्योति, प्रभा, सौंदर्य, प्रकाश जलती हुई बत्ती, तेज, दीप्ति ।

लो० (सं.) जोत, जूड़ी, बैलों क कंधों पर रखकर गले में बांधने के पट्टे । पट्टा ।

लो० (कि.) बैल जोतना, जूड़ी, रखना, जोड़ना, जोतना ।

लो० (कि.) तुरंत, फौरन, अभी, देखते देखते ।

लो० (सं.) पुष्ट, तगड़ा, मोटा, बलवान, बौद्धा, लड़ाका, भट ।

लो० (सं.) बोधा, देखो लो०

लो० (सं.) यौवन, जवानी, तरुणावस्था, तरुणार्ह, स्तन ।

लो० (वि.) तरुण, जवान,

लो० (सं.) जवान स्त्री मदमाती स्त्री, तरुण युवती ।

लो० (सं.) देखो लो०

लो० (सं.) लो०-लो०-लो० (कि.)

पसीना निकलना, पसीना छूटना, स्वेद प्रवाह होना ।

लो० (सं.) पसीना स्वेद, थमजल ।

लो० (सं.) क्रोध, फूट ।

लो० (सं.) शक्ति, बल, ताकत, प्रभाव, पौरुष, वेग, प्रचण्डता ।

लो० (कि.) ताकत करना, विवश करना, दबाना, आदना, रोकना । [ शक्ति का प्रयोग करना ।

लो० (कि.) जोर लगाना, लो० (वि.) पुष्ट, बली, खेळ, कबड्डी आदि ।

लो० (कि.) लो० (कि.) बलसे, जबर्दस्तीसे, हठात्, बळात् ।

लो० (सं.) शक्तिमान्, बलवान् हृष्ट, पुष्ट, मजबूत ।

लो० (सं.) जबर्दस्ती, बरजोरी ।

लो० (सं.) पत्नी, गृहिणी, स्त्री ।

लो० (सं.) अधिकार हक, बल, दबाव, ताकत ।

लो० (कि.) दिखाना बताना,

लो० (कि.) देखने योग्य, आकर्षण, दृश्य, दृष्टव्य ।

लो० (कि.) परीक्षा करना, जाँचना, देखना, ध्यान देना, सोचना, खयाल करना ।

लो० (सं.) कर्म, प्रारब्ध, होनहार, उबाल, खदखदाहट, क्रोध, गर्मी ।

लो० (सं.) फलित ज्योतिषी, भविष्यवादा ।



अनेक-स्रोत ( सं. ) कोच, पुस्तक ।  
 अनेकान-बान ( सं. ) बस्ता, स्लेट  
 किताब कापी इत्यादि रखने का  
 बेग । बैली, बसता, बसना ।  
 अनेक ( सं. ) यमक, यमज, जुड़े हुए ।  
 अनेक ( कि. वि. ) देखे गए ।  
 अनेक ( सं. ) दुखार, ताप ।  
 अवसित ( वि. ) जलता हुआ,  
 प्रज्वलित ।  
 अवाण ( सं. ) आग, आगि, हुता-  
 शन, आग की लपट, आँच, लौ ।  
 अवाणामुष्मी ( वि. ) जिस के  
 सिरेपर आग हो, आग के मुहँवाला ।

अ

अनुजराती वर्णमाला का बीसवा  
 अक्षर ९ वाँ व्यंजन ।  
 अभ ( सं. ) मच्छली, मछली, मीन ।  
 अभमगु ( वि. ) जगमगाता, प्रका-  
 शमान, चमकदार, चमकीला ।  
 अभमगु ( कि. ) जगमगाना, चम-  
 कना, प्रकाशित होना ।  
 अभमगु ( सं. ) चमक, प्रकाश ।  
 तेज, जगमगाहट, जावज्य, उजलाना ।  
 अभम ( सं. ) चमक, प्रभा ।  
 अक्षर ( वि. ) अक्षर, अक्षरान्त अक्षर ।

अक्षर ( सं. ) अक्षर, अक्षरान्त अक्षर,  
 फसाद ।  
 अक्षर ( सं. ) आग की जलबली,  
 अक्षर ( सं. ) सनसनाहट, धन  
 सनाहट ।  
 अक्षर-अक्षर ( कि. ) घृणायुक्त वर्तव्य  
 करना, हिलाना, संश्लेषण ।  
 अक्षर ( कि. वि. ) जलसे, फुल्लि,  
 क्षणमें, तुरंत ।  
 अक्षर ( कि. ) छटना, अपहरण  
 करना, छिनालेना, चोकेसे लेलेना,  
 मुलावादेकर लेलेना ।  
 अक्षर ( सं. ) रगड़, खींच, खिंचाव  
 छट, हरण, घूसा, काट ।  
 अक्षर-पक्ष ( कि. वि. ) जलदी,  
 विनाविलम्बके, तुरंत, तत्क्षण ।  
 अक्षर ( सं. ) अक्षर, अक्षरान्त अक्षर,  
 छिना झपटी, विबाध, टंटा,  
 अक्षर ( सं. ) झुकाव, रुख, इच्छा ।  
 अक्षर ( सं. ) चौर, खसोटन, फाड़ ।  
 अक्षर ( सं. ) झीघ्रता, झपटा  
 अक्षर ( कि. ) झपटना, छीनना,  
 पकड़ना । [ विबाध ।  
 अक्षर ( सं. ) आकस्मिक चोट,  
 अक्षर ( सं. ) पानी की क्षमतापूर्ण ।  
 अक्षर-पक्ष ( सं. ) संस्कारजन्य ।

- अथर्व (कि.) स्नाननाना, स्नान-  
स्नान करना, स्नानस्नान करना।
- अथर्व (सं.) व्यग्रता, हठ, विह,  
अथर्व (सं.) एकभाषा, द्वेदभाषा।
- अथर्व-अथर्व (कि. वि.) अचानक  
जकस्मात्, एकाएक। [ वृत्ता।
- अथर्व (सं.) अस्ती, क्षीप्रता, त्वरा,  
अथर्व (सं.) कतल, वच, नाश।
- अथर्व (कि.) गटकजाना, बोल-  
जाना, मारना, पीटना।
- अथर्व (सं.) ओषी, शोका, वायु  
वेप, सपाट, सपाटा।
- अथर्व (कि.) मारना, पीटना,  
अथर्व-अथर्व (कि.) चौकउठना,  
चमक उठना, डरजाना,  
अथर्व (सं.) अचानक प्रकाश।
- अथर्व-अथर्व (कि.) पानी-  
में डुबोना, पानामें डुबोकर हिलाना।
- अथर्व (सं.) बच्चोंका पहिनेका  
बस्त्र, बच्चोंकी ऊपरी पोशाक।
- अथर्व (सं.) जामा, सभाबस्त्र।
- अथर्व (सं.) द्रुक, यमकाशब्द, का-  
फिया, यमक, कविता।
- अथर्व (कि. वि.) समसम की  
आवाज सहित, बल्ले की ध्वनि  
सुक्त। ध्वनि विशेष।
- अथर्व (सं.) करपरा और गर्म  
वस्तु छालने की बकन।
- अथर्व (सं.) विभाव, आराम, चैना  
अथर्व (कि.) कूदना, गिरना।
- अथर्व (कि.) आराम करना, वि-  
भाम करना, आनंद भोग करना,  
चैन करना।
- अथर्व (सं.) आकस्मिक पतन।
- अथर्व (कि.) नौच डालना,  
खुरेच डालना, कुरेदना।
- अथर्व (सं.) पानी का झरन पानी  
का बहाव जमीन में से पानी  
आना।
- अथर्व (सं.) हलका मेह, फुहारों  
की वर्षा, छोटी छोटी बूंदों की छिष्टि।
- अथर्व (सं.) रेशमी कपड़ा।  
गाछ नामक वस्त्र।
- अथर्व (कि.) पिचलना, चू-  
अना, टपकना, धीरेबहना, झरना।
- अथर्व (सं.) झरोखा, गवाक्ष,  
छोटी, बरामदा।
- अथर्व (सं.) फव्वारा, फुहार, बहने-  
वाला, पानी की तलैया।
- अथर्व (कि.) पकड़े जाना,  
अथर्व (सं.) चमक, प्रकाश।
- अथर्व (वि.) चमकीला, चम-  
कदार, प्रकाशमान।

अनेर ( सं. ) जवाहिरत, मणि मा-  
निकस, हीरा पत्ता ।

अनेरी ( सं. ) जौहरी ।

अगःपुं ( कि. ) चमकना, चमचमा-  
हट करना, दमकना । [ ३१८ ]

अगःपुं-अगःपुं ( सं. ) देखो अग-

अगःपुं ( कि. ) जलना, दग्ध होना,  
भस्म होना ।

अगःपुं ( सं. ) चमक । [ गाह ]

अगःपुं ( सं. ) बुंचलापन, हाछे, नि-  
अगःपुं ( सं. ) एक प्रकार की क-

पटकमुक्त झाड़ी, कंटीला पौदा ।

अगःपुं ( कि. ) घूरना, ताकना,  
टकटकी ।

अगःपुं ( सं. ) दशन, लीला, नज़ारा ।

अगःपुं ( सं. ) बुंचला, मन्द, सुस्त,  
उदास, पीला, रंजित ।

अगःपुं-अ ( सं. ) मँजीरा, मजीर,  
झोंक, ताल बाय विशेष, क्रोध ।

अगःपुं ( कि. ) गुस्सा होना,  
कुपित होना, बिड़ना ।

अगःपुं ( सं. ) बुंचरू, मजीरे, झोंक,

अगःपुं ( सं. ) मृग तुष्णा, घोड़ा ।

अगःपुं ( सं. ) देखो अगःपुं

अगःपुं ( सं. ) बेहतर, गलियों का

झाड़ने बुहारनेवाला । [ फाटक ।

अगःपुं ( सं. ) पैठ, डार, आरंभ,

अगःपुं ( सं. ) छाना, छाया, पर-  
छाही, प्रतिबिम्ब ।

अगःपुं, अगःपुं ( कि. ) बेदिल से  
देना, अनिच्छापूर्वक हान ।

अगःपुं ( सं. ) क्रोध, अपने खरीर-  
पर आफत या कष्ट स्वयं कर लेना ।

अगःपुं ( वि. ) स्वच्छता और  
पवित्रता, साफसुथरापन ।

अगःपुं ( सं. ) प्रसन्नता, हर्ष,  
खुशी, आनन्द ।

अगःपुं ( सं. ) जाड़ा, पाल, ओस,  
सबनम, तुसार, तुहिन ।

अगःपुं-अ ( सं. ) जहाज, बड़ी नाव,  
बड़ीनौका, जलपोत, जलमान ।

अगःपुं ( वि. ) अधिक, जियादा  
बहुत । अगःपुं ( वि. ) पूर्ववत् ।

अगःपुं-अगःपुं ( कि. ) झाड़ना,  
झटकना, कचरा बुहारना, दोष

देना, दुतकारना, गालीदेना ।

अगःपुं ( सं. ) पेड़, वृक्ष ।

अगःपुं ( सं. ) फटनेकेबाद बची  
हुई धूल, पिछोरन ।

अगःपुं ( सं. ) झाड़पोंछ ।

अगःपुं-अगःपुं ( सं. ) वनस्तति,  
झाकजाति ।

अक्षुं ( कि. ) बुहारना, झाड़ना,  
बोबरेना, फटकारना, पौदा, छोटा  
रुख ।

अक्षुडी ( सं. ) केंटीलापौधा, जंगल ।

अक्षु ( सं. ) बुहारी, झाड़नेकी  
चीज, जिससे कचरा साफ किया  
जाना हो ।

अक्षु ४२ना२ ( सं. ) मेहतर, भंगी,  
झाड़नेवाला, साफ करनेवाला ।

अक्षुःक्षुः ( कि. ) झाड़ु निहा-  
लना, कचरा साफ करना ।

अक्षुभापुं ( कि. ) हारना, अपमा-  
नित होना, झूटना, भूलना ।

अक्षुभु-४२पुं ( कि. ) टहीजाना,  
पाजानाजाना, मलोत्सर्ग करना  
निकटजाना, पासजाना ।

अक्षु ( सं. ) पाखाना, दस्त,  
मलोच्छार, तलाशी ।

अक्षु अक्षु ३५ ते ( सं. ) काबिज,  
कब्ज करनेवाले, मलाबरोधक ।

अक्षु ३५ ते-३५ ते ( कि. )  
दस्तलगना, पाखाना होना ।

अक्षु ३५ ते ( कि. ) ध्यानपूर्वक  
तलाशीलेना, दिलगुमाकर ढूँढना ।

अक्षु ( सं. ) थपड़, थपड़, चौड़ा ।

अक्षु ( कि. ) झाड़ना, बमकाना,  
बाँटना, चुड़कना ।

अक्षु ( सं. ) वर्षा की बौछार,  
पानी की झड़ी ।

अक्षु ( सं. ) अंधेरा, शोक, जाली ।

अक्षु ( सं. ) अंधेरा, उदासी ।

अक्षु-पो ( सं. ) सदरद्वार,  
गाँवमें या कस्बे में घुसने का मार्ग  
या फाटक ।

अक्षु ( सं. ) कुनसा, बदोरा,  
फोड़ा, छाला, गूमड़ा, एक प्रकार  
का फोड़ा ।

अक्षु ( कि. ) तरल औषधि में  
या पानी में गर्म पत्थर आदिको  
डुबाना ।

अक्षु ( वि. ) आगसा, फोधी ।

अक्षु ( कि. ) गर्म पानी से धोना ।

अक्षु ( सं. ) सुराही, पानी भरने  
का कुंजा, करवा ।

अक्षु ( सं. ) एक पात्र विशेष जो  
रसोई के काम आता है । मोहे का  
बना पतला गोल तवा सा जिसमें  
छेदही छेद होते हैं और एक ढंका  
पकड़ने को लगा रहता है, घर,  
भारा ।

अक्षु ( सं. ) किनारा, गुच्छेदार  
किनारा, बंटा बहिवाल, ढाल  
विशेष ।

अक्षु ( कि. ) झाड़ना, पकड़ना

अवधी-वही ( सं. ) वास, बूझ ।  
 अडी ( सं. ) दृढचित्तक, हितेषुक ।  
 अण ( सं. ) जमिन की लपट,  
 झल, शोहले, आग की लौ ।  
 अणधु ( सं. ) किसी धातु विशेष  
 से चिपकाया हुआ । झालन ।  
 अणपुं ( सं. ) जोड़ना, टोंका देना,  
 अडपुं ( कि. ) पटक देमारना, बल  
 पूर्वक फेंकदेना टकराना ।  
 औभुर ( सं. ) शिल्ली, घुरघुरा. कीट  
 विशेष ।  
 औभुओ ( सं. ) एक प्रकार का चास ।  
 औभुस ( सं. ) खरी, उत्तमता,  
 सौंदर्यता, उत्कृष्टता, अति सूक्ष्मता ।  
 औधुं ( वि. ) उत्तम, पतला ।  
 औन ( सं. ) जीत, विजय, जय ।  
 औतपुं-भेणवपी ( कि. ) हराना,  
 जीतना, पराजय करना ।  
 औपपुं-धपुं ( कि. ) पकड़ना, सम्बद्ध  
 पकड़ना । [ अडियल, आग्रही ।  
 औपटी ( वि. ) हठी, हठीला, जिद्दी  
 औध ( सं. ) वह बड़ा पानीमरा हुआ  
 भाग जो समुद्र के किनारे हो ।  
 नीची जमीन, मिट्टी का एक बड़ा  
 पात्र ।  
 औधत ( वि. ) भर पूर्ण ।  
 औधी ( सं. ) शिल्ली, पतलीतह ।

औधपुं ( कि. ) लेना, सेकना,  
 पकड़ना ।  
 औधो ( सं. ) मिट्टी की सुराही वाकरवा ।  
 औधुं ( कि. ) लड़ना, जूझना,  
 झगड़ना, विवाद करना ।  
 औधपुं-पीधेपुं ( कि. ) झपटकेना ।  
 औं ( सं. ) समूह, डेर, समुदाय,  
 एकट्ठे, बूझ, दल, ठह, मण्डल ।  
 औंधुं ( कि. ) पीटना, मारना,  
 औं ( सं. ) झंडा, ध्वजा, पतका ।  
 औपडी ( सं. ) झोंपड़ी, कुटी, सड़ी,  
 चास, फूम का घर ।  
 औंधपुं ( कि. ) केंपना, सपकी लेना ।  
 औभ ( सं. ) हलवल, चबराट, व्यग्रता,  
 औभपो ( सं. ) गुच्छ, गुच्छा, झन्झा ।  
 औभर-भर ( सं. ) बतियों का  
 झाड़, झाड़ फानूस ।  
 औभपुं-टीभपुं ( कि. ) धूरना, इशारा  
 करना ध्यान देना, झूमना, डग-  
 मगाना, लड़खड़ाना ।  
 औंधुं ( कि. ) झूरना, लटखाना,  
 कुम्हलाना, मुरझाना, झुकना ।  
 औशपो ( सं. ) रज, गम, उदासी,  
 मुर्खायी दशा ।  
 औध ( सं. ) झूल, कपड़े की गोद ।  
 औधपुं-धधपुं ( वि. ) जटकता,  
 हुवा, झूलता हुआ ।

अक्षर ( सं. ) जुलफें, बालों की कटी । [ कैंपना ।

अक्षर ( कि. ) लटकना, झूलना, झुलना ।  
अक्षरभावा ( कि. ) झूलना, झूले की हकत, लहराना, हिलना ।

अक्षरभावा ( सं. ) पूर्ववत्

अक्षर ( सं. ) झूला, लटकन, हानि ।

अक्षरी ( सं. ) जूही, जुवा, जूहा ।

अक्षरी ( सं. ) विवाद, झगडा, टंटा ।

अक्ष ( सं. ) हलचल, बबराहट, व्यग्रता ।

अक्षर ( सं. ) देखो अक्षर

अक्ष ( सं. ) उत्तम धूल या जुराहा ।

अक्ष ( सं. ) धूल, गर्दा ।

अक्ष ( सं. ) बिय, जहर, कोष, शोह ।

अक्षर ( कि. ) देखो अक्षर

अक्ष ( सं. ) मोड़, मुकाब, टेढ़, रुलें, इच्छा, ओंखोंमें अकस्मात,

धूल आदि का गिरना ।

अक्षर ( सं. ) आनन्द, खुशी ।

अक्षर ( कि. ) ठोकना, सोसना, कैंकना ।

अक्षर ( कि. ) अंधे की भांति प्रवेश, कैंकना, चलावा ।

अक्ष ( सं. ) झोंका, ऊंच ।

अक्षरी ( सं. ) जवान जैस, तरुण महिला ।

अक्षरी ( कि. ) देखो अक्षर

अक्षर ( सं. ) बुरावा, पापावा

अक्षर ( सं. ) बमके की बैली, बैला, झोला, बैली ।

अक्षर ( सं. ) पूर्ववत्

अक्षर ( सं. ) मोड़, मुकाब,

२१

अक्षर ( सं. ) गुजराती वर्णमाला का २१ वां अक्षर, १० वां व्यंजन ।

८

अक्षर ( सं. ) गुजराती वर्णमाला का बाईसवां अक्षर, ग्यारहवां व्यंजन ।

अक्षर ( सं. ) टिकटिक की आवाज, बड़बड़ाहट, बकसक ( कि. बि. ) इकटक दृष्टि ।

अक्षर ( सं. ) बक्की, बिना प्रयोजन बोलनेवाला ।

अक्षर ( कि. ) चादूरकना, जारी रकना, ठहरना, बहुत देर के लिए ठहरना, टिकना, जमजामा ।

अक्षर ( बि. ) टिकाऊ, बहुतकाल तक चलनेवाला, दिनों तक ठहरने वाला । [ व्यर्थ ।

अक्षर ( बि. ) देखो, निरुद्धा,

४३१४ ( सं. ) टिकाव, ठहरान, बलाव, चिरस्त्रामित्व ।

४३१५ ( सं. ) तीन पाई, तीन पैसे, एक प्रतिशत, कोसैकड़ा एक ।

४३१६ भातुं ( सं. ) नक्काश खाना, चौबत खाना ।

४३१७ ( सं. ) टंका, बड़ी का शब्द, चोट, टंकार, ध्वनि । [ मज़ाक ।

४३१८ ( सं. ) खेल, तमाशा, ठठ्ठा, ठठ्ठाणीड ( सं. ) मजाकी, खिलाड़ी ठठ्ठाबाज़ । [ ठेलाठेली,

४३१९ ( सं. ) मुँह भेड़, ठोकर, कुन्दा, हिस्का, बराबरी, मुकाबला ।

४३२० भाटवी ( कि. ) कपाल से टकराना, ठोकर मारना, डकेलना, रेलना, पेलना, ओड़ मारना, मुकाबिला करना, मामला करना, बराबर में खड़ा होना ।

४३२१ बेरी ( कि. ) टकराना, ठकर लेना, सामने खड़ा होना, ठोकर झेलना ।

४३२२-४३२३-४३२४-४३२५-४३२६ ( कि. वि. ) हककाबकका रह कर घूरना, उत्तरे मुख से टकराई पूर्वक देखना ।

४३२७ ( वि. ) शरीरअस्तिमात्र अनशेष, अस्तिपंजर मात्र रह जाना । [ रीत बक ।

४३२८ ( सं. ) निश्चित समय, मुक-

४३२९ भाट ( सं. ) झुहावा ।

४३३० ( सं. ) टकराक, सप्या पेसा डालने की जगह, सिक्के डालने का स्थान ठहलना, मुद्रालय ।

४३३१ ( सं. ) उवा शब्द, बजुब के रोदे का शब्द, बिले का शब्द, झनकार ।

४३३२ ( कि. वि. ) समयपर, मरपर, ठीकठीक पूर्ण, सम्पूर्ण ।

४३३३ ( सं. ) टोंग, पैर,

४३३४ रेहेतुं ( कि. ) टंगजाना, लटक जाना, फँस जाना, रुक जाना ।

४३३५ ( सं. ) कसौटी, सोब ।

४३३६ ( कि. वि. ) लणभर में, पल में, निमेष मात्र में, तत्क्षण ।

४३३७, ४३३८ ( सं. ) टंकार, ध्वनि, जुबकार, डोल का शब्द, थाप ।

४३३९ भांगणी ( सं. ) सबसे छोटी अंगुली, कनिष्ठका अंगुली ।

४३४० ( वि. ) शून्य, निरर्थक, व्यर्थ ।

४३४१ ( सं. ) छोटी चोटी ।

४३४२ ( सं. ) छोटा चोड़ा, टट्टु ।

४३४३ ( कि. ) आलायुक्त होकर खींचना, आराम रहित होना, विधास हीन होना, बिलाना, बिचिबाना ।

४३४४ ( वि. ) सीधा, खड़ा, ऊपर की ओर सीधा ।

४६१ ( सं. ) बाँसो की आड़, बाँस  
 की लपटा घास फूसकी बनी दीवार  
 पाखाना, संबाघ, चौचालम  
 ४६२ ( सं. ) बोरा, उदुद।  
 ४६३ ( वि. ) झगडाह, लड़ाका  
 ४६४ ( सं. ) झगडा, लड़ाई, विवाद।  
 ४६५ ( कि. ) झगडा करना,  
 विवाद करना, लड़ाई करना।  
 ४६६ ( सं. ) जहाज का कतान।  
 ४६७ ( कि. वि. ) लण भर में,  
 तुरन्त, फौरन, तत्काल।  
 ४६८ ( कि. ) टपकना, झरना,  
 चुबना, झरना, रिसना, बूंदबूंद कर  
 के गिरना।  
 ४६९ ( कि. ) टपकाना, बूंद  
 बूंद कर के डालना, बूँदें डालना।  
 ४७० ( सं. ) बूँद, बिन्दु, कतरा,  
 बन्ना।  
 ४७१ ( सं. ) लघ्न, जन्मकुंडली।  
 ४७२ ( कि. ) गणना करना,  
 बातचीत करना, चर्चा करना,  
 बकना।  
 ४७३ ( सं. ) उस्ता तेज करने  
 का कीताया चमड़ा रेज़र स्ट्रैप,  
 ४७४ ( सं. ) चिर पर चपल,  
 कलंक, निन्दा, रोष, मिथी के  
 बर्तन ठोकनेकी बप्पी।

४७५ ( कि. ) उछलना, कूबना,  
 छलांग भरना।  
 ४७६ ( सं. ) फटी हुई जूतियाँ,  
 पुरानी फटी हुई जूतियाँ।  
 ४७७ ( सं. ) झगडा, विवाद, टंटा।  
 ४७८ ( सं. ) डाक, पोस्ट।  
 ४७९ ( कि. ) पीटना, मारना।  
 ४८० ( कि. वि. ) तुरंत, तत्काल,  
 फौरन।  
 ४८१ ( सं. ) फासला, अन्तर,  
 एक प्रकार का गीत, लोकवाद,  
 अकवाह। [ बरतन।  
 ४८२ ( सं. ) एक छोटा पानी का  
 ४८३ ( कि. ) देखो  
 ४८४ ( कि. ) हट जाना,  
 चले जाना, गायब होना, स्वस्थ  
 होना।  
 ४८५ ( सं. ) १२ सेर, सेर का ७२  
 बां भाग, निब, लेखनी की पत्ती,  
 लेखलेखनी, पेनहोल्डर, समय।  
 ४८६ ( सं. ) आलपिन,  
 पिच, कोल, बूँटी, दांगने की।  
 ४८७ ( सं. ) बोध, मेल, ऐन बक,  
 ताताल, छुट्टी का दिन, ठीक अब-  
 सर, मौका, छोटी दाँकी, छोटी  
 छेनी, छोटी हलानी।  
 ४८८ ( कि. ) खीन, जोड़ना, नोट  
 करलेना, छेनी या टोंकीसे टोंकना।



४३१ ( सं. ) छेटी तलैया, मैथुन सम्बन्धी बीमारी, उपदंश, आतंकका

४३२ ( सं. ) जलशय, तालाब सरोवर ।

४३३ ( सं. ) सीबन, टोंका बखिया ।

४३४ ( सं. ) पग, पैर ।

४३५ ( कि. ) लटकाना, टोंगना, लगाना, नत्थी करना ।

४३६ ( सं. ) टोंग और हाथ पकड़कर लटकाते हुए लेजाने की क्रिया ।

४३७ ( सं. ) रोक, छक, कमी, घटी, न्यूनता, लेखनी का पत्ती, निब ।

४३८ भा२वी ( कि. ) अलग करना, मिलाना, अपनाना ।

४३९ ( कि. ) ढकेलना, भोकना, कौचना, अल्पव्यय करना, कम-खर्च करना, चिपटना ।

४४० ( सं. ) पग, पैर, पांव, टांग ।

४४१ भा२वे ( कि. ) छुटकारा पाना, नौकरी से प्रभाव हीन कर के हटाना । [ का मुंड, टांका ।

४४२ ( सं. ) व्यौपारियों या यात्रियों

४४३ ( सं. ) तेवहार, उत्सव अवसर ।

४४४ ( सं. ) बिन्ह, निशान, विराम का बिन्ह, पूर्ण बिन्दुका बिन्ह ।

४४५ ( कि. ) घूरना, ताकना ।

४४६ ( सं. ) अंगकी कड़कन एक प्रकारका खिलौना, हथियोंका बटखन शब्द, औषधि विशेष ।

४४७-४४८ ( सं. ) टाट, टाटगद्दी, बैला, गूदड़, सनकाबना एक प्रकारका बिछावन ।

४४९ ( सं. ) दुखस्ती, मरम्मत ।

४५० ( सं. ) बातचीत के बीच में अपने लिखे बोलने का क्रय ।

४५१ भा२वी ( कि. ) बातचीत में दखलदेना, बीच में बोल उठना ।

४५२ ( सं. ) टापू, दीप, जजीरा ।

४५३-४५४ ( सं. ) छोटा धोका ।

४५५ ( सं. ) शीत, ठंड, जाड़ा ।

४५६ ( सं. ) ठंडाई, शीतलता, तोषण, तसल्ली, संतोष ।

४५७ भा२वे ( कि. ) ब्रह्म लगाना, कलंक लगाना, धब्बा लगाना ।

४५८ भा२वी ( सं. ) बुरी उचाई, बुरी उधार, बुराकण ।

४५९ भा२वी ( सं. ) जूझी, जाड़े का बुझार, कम्पज्वर ।

४६० भा२वी ( सं. ) आषण मास के प्रत्येक पक्ष की सप्तमी ।

४६५ ( वि. ) ठंका, सीका,  
छाँतल, बीना, मंद, बान्ति, मौन,  
सुप्पी ।

४६५ ५४५ ( कि. ) ठंका करना,  
मुझाना, नष्ट करना, छाँत करना,

४६५३ ( सं. ) देखो ४६५३३  
छाँतलता [ पीड़ा, झमेला ।

४६६ ( सं. ) बकवाद, बकबक,  
४६६-६ ( सं. ) केवाहीनता, गंज ।

४६६ ५३६ ( वि. ) गंजे सिरका, गंजा  
४६६३ ( सं. ) सिरका मुकुट ।

४६६६ ( सं. ) बची हुई चीज,  
छटतीकी बस्त्र, बची सुची ।

४६६७ ( सं. ) हडाना, छाँटना,  
सरकाना, रही करना, चारित्र्य  
करना, आराम करना, स्वस्थ  
करना, नापसंद करना ।

४६६८ ( सं. ) बहाना, टालमटोल ।

४६६९ ( सं. ) देखो ४६६९९ ।

४६७० ( कि. ) देखो ४६७०० ।

४६७१ ( कि. ) मारना, पीटना,  
( नफरत ) खाना ।

४६७२-४६७३ ( सं. ) टिकट, प्रवेशा-  
धिकार पत्र, डाक विभाग के  
टिकट, स्टाम्प, सूचक पत्र, पर्चा ।

४६७४ ( सं. ) मोटी, रंगी, रोट, रोटा ।

४६७५ ( सं. ) काम, नौकरी, शिक्षा-  
रिक्त, जीविक, पोषण, सहारा ।

४६७६ ( सं. ) सफलता, कार्यसिद्धि,  
सुखार्थता, फायदा, व्याज ।

४६७७ ( सं. ) सुखी, शिक्षा, आनंद,  
बनावट, पालंङ ।

४६७८ ( वि. ) रसिक, ठठेबाज,  
नसखुरा, खिलाड़ी [ नाटा ।

४६७९ ( वि. ) कम, छोटा, ठिगना,  
४६८० ( सं. ) चिक्काहट, कोल-

हल, हाहाकार, छोर ।

४६८१ ( सं. ) बरही, एक प्रकार-  
की विधि ।

४६८२ ( सं. ) याददास्त, स्मरणार्थ,  
कुछ लेख, टिप्पणी नोट, पिटाई ।

४६८३, ४६८४ ( सं. ) पंचात्र,  
जंत्री, पत्रा ।

४६८५ ( सं. ) आबखेर का माप ।

४६८६ ( सं. ) संक्षिप्त स्मरण लेख ।

४६८७ ( सं. ) विराम, विराम चिन्ह ।

४६८८ ( सं. ) एक प्रकार का फल

टिमरू, तेंदू. [ उत्तराधिकारी ।

४६८९ ( सं. ) युवराज, बकी अहद,

४६९० ( सं. ) टेकड़ा, टेकड़ी, पहाड़ी ।

४६९१ ( सं. ) विवरण, किसी विष-

यका मावार्थ, कठिन शब्द का  
सरलार्थ ।

४६९२ ( कि. ) टिप्पणी करना,

अर्थ करना, सरलार्थ बनाना ।

टीकाकार ( सं. ) टीका करनेवाला ।  
टीका-करी ( सं. ) चाँची वा सोने  
की छोटी सीटिकावा ।  
टीका ( सं. ) देखो टीक्षुं  
टीक ( सं. ) टिप्पणी, टीप ।  
टीप ( सं. ) सूची, फेहरिस्त, कैद,  
बंधु आई [ मारना ।  
टीपणुं ( कि. ) कूटना, पीटना,  
टीपुं ( सं. ) बिन्दू, बूँद, टपका,  
कतरा ।  
टीभक्षु ( सं. ) सूखा भोजन । [ टोका  
टीक्षु-क्षक ( सं. ) तिलक, चन्दन,  
टीक्षी-ट्रेक्षी ( सं. ) चोटी, कली,  
कलिका, दोखी, रंगीला, बाँका छेला,  
अलबेला ।  
टुंक्ष-टुं ( वि. ) संक्षेप, सारांश,  
मुख्तसिर, अल्प, कम, थोड़ा ।  
टुंक्षुं ( वि. ) दूरे हाथोंका, दूटा,  
टुंक्षिया ( सं. ) घुटनों के जोड़ में  
से पैरोंको झुकाने की क्रिया ।  
टुंटीष्ठ ( सं. ) एक बीमारी विशेष ।  
टुंप्पुं ( कि. ) सठाना, चुनना,  
नौबना,  
टुंप्पिजे ( सं. ) एक प्रकार की  
माला, हारकी एक जाति विशेष ।  
टुंप्पि ( सं. ) संघ, फाँसी,

टुंप्पिपे ( सं. ) गले में झुद फाँसी  
लगाना, गले में फन्दा लगाना ।  
टुंप्पि देपे ( कि. ) फाँसी देना,  
गले में फन्दा बाँध कर लटकाना ।  
टुंप्पे ( सं. ) निन्हा, तिरस्कार,  
बिस्कार ।  
टुंप्पि ( सं. ) निमटी, थोड़ीसी खाक  
पकड़कर नाखूनसे धबाना ।  
टुंक्षिष्ठाडि-प्पे ( सं. ) द्वारद्वारका  
मिथुन, मैगता ।  
टुंक्षी ( सं. ) टोली, साथ, भाग,  
खण्ड, बटवारा ।  
टुंक्षे ( सं. ) टुकड़ा, हिस्सा, भाग ।  
टुंक्षे ( सं. ) एक छोटासा दिल बह-  
लानेवाला बखान या वर्णन ।  
टुं ( सं. ) फूट, वियोग, अलगव,  
नाराजी, अप्रसन्नता, [ नहीं ।  
टुंक्ष ( वि. ) बेमेल, दटाहूवा, एकसाँ  
टुंक्षिट ( सं. ) जुदाई, विलगता  
नाराजी अप्रसन्नता । [ फटना ।  
टुंक्षुं ( कि. ) टूटना, कंठखंड होना  
टुंक्षुं ( सं. ) किसी विसृति यासू-  
चनाके लिये डोलपीटना, ठसठस ।  
टुंक्षु ( सं. ) जादू टोना, टुटका ।  
टुंक्षु ( सं. ) स्माल, तौकिना अंगोला ।  
टुंक्ष ( सं. ) गर्व, चमक, भाँखार,  
बबेका रुदन ।

- टे३ ( सं. ) आत्मसम्मान, बड़प्पन,  
 मर्जीदा, दबता, मजबूती, स्थिरता।  
 टे३थु ( सं. ) आश्रय, सहारा, खंभा।  
 टे३रे ( सं. ) टेकड़ा, पहाड़ी, उठी  
 हुई भूमि, ऊँची, खमीन।  
 टे३पु ( कि. ) आश्रयलेना, आराम  
 करना, टिकना, झुकना।  
 टे३वपु ( कि. ) टिकाना, आश्रय-  
 देना, सहारा देना, ठहराना।  
 टे३-धु ( वि. ) जिद्दी, पुष्ट, दृढ़,  
 अपनी बातको रखनेवाला, आत्मा  
 भिमानी। [ यता, यंभा।  
 टे३। ( सं. ) सहारा, आश्रय, सहा-  
 टे३आपवे। ( कि. ) सहारादेना,  
 आश्रय देना, मदददेना, सहायता  
 करना।  
 टे३ ( सं. ) तरबूज, खरबूजा।  
 टे३ ( सं. ) पैरका मांसयुक्त भाग।  
 टे३। ( सं. ) शाह बलूतका फल,  
 कड़कने वाला।  
 टे३ ( वि. ) टेढ़ा, तिरछा, आढ़ा,  
 मुड़ाहुवा, मुकाहुवा।  
 टे३ ( सं. ) नापनेका फीता, टेव, आदत  
 कैदका कैसला या हुकम।  
 टे३स ( सं. ) मेज, ठुल्लुमेज, डेस्क।  
 टे३-भो। सीबन, टाँका, बखिया।  
 टे३भावे। ( कि. ) सीना, टाँकल  
 गाना।  
 टे३पु ( सं. ) अग्रभाग, सिरा, नौक।  
 टे३। ( सं. ) पर्वी, मुसहरी।  
 टे३ ( सं. ) आदत, मुकाव, रुख, चलन  
 व्यवहार, अभ्यास, बर्ताव।  
 टे३वापु ( कि. ) आदत, डालना,  
 बान डालना, अभ्यास करना।  
 टे३पु ( कि. ) अटकल करना, अन्दाज  
 करना, क्यास करना, आदत  
 डालना, अनुमान करना।  
 टे३थ ( सं. ) सेवा, बन्दगी, खिदमत  
 गौरसे देख भाल।  
 टे३थे। ( सं. ) सेवक, नौकर, भृत्य  
 सम्बाद दाता।  
 टे३३। ( सं. ) कोष और घृणा।  
 टे३प३ ( सं. ) टिर्, गर्भ, घमण्ड,  
 जल्दी, शीघ्रता।  
 टे३थु ( सं. ) सूआ, छेद करने  
 का औजार, बरमा। [ ललकार।  
 टे३-थी ( सं. ) औंठुस, आन्धान,  
 टे३री ( सं. ) घण्टी के भीतर का  
 छोटा लटकन, याजीम।  
 टे३पु ( कि. ) आंकुस मारना।  
 टे३, टे३ ( सं. ) सिरा, अग्रभाग,  
 नौक, चोटी।  
 टे३पु ( सं. ) गोल चोटी।

टोयपुं ( कि. ) छेव करना, निन्दा करना, बंक्रुवा मारना ।  
 टोटे ( सं. ) हानि, घाटा, नुकसान, गले का टेढ़ा, नरेदी ।  
 टोटे। पडावे।-सडावे। ( कि. ) कंठ, पकड़ना, कंठ को टेढ़े के पास से पकड़ना ।  
 टोडे ( सं. ) एक प्रकार का कड़ा ( आभूषण ) टडा ।  
 टोशा-धुं ( सं. ) जादू, टोना, डुटका, निन्दा, तिरस्कार ।  
 टोप ( सं. ) बोहे का टोप, इंग्रेजी टोपी, भोजन बनाने का पात्र, छाता, छतरी, बन्सूक ।  
 टोपवी ( सं. ) निकम्मी कडाई, टोपू ( सं. ) नारियल की गरी, नारियल का गोल, जोपरा ।  
 टोपवे। ( सं. ) डलिया, टोकरी ।  
 टोपी ( सं. ) शिरत्राण, टोपी ।  
 टोपीवाणे। ( सं. ) अंग्रेज, बोसे-पियन, आंग्ल देशी ।  
 टोपुं ( सं. ) टोप, टोपा, निकम्मी टोपी, औलों का डक्कन, पलका ।  
 टोपवी ( सं. ) एक छोटा बर्तन जो मुख्यतः पानीपीने के लिये होता है ।  
 टोवे। ( सं. ) एक बड़ा डक्कन - का सूँटा जो दीवार में बड़ा हो ।

टोवेयुठपुं ( कि. ) परवाह न करना, ध्यान न देना, खयाल न करना ।  
 टोण ( सं. ) हँसी ठट्ठा, मेघ, नकल, दिक्कती, मजाक, खेळ ।  
 टोणडी-णी ( सं. ) दल, बघा, हुंठ, टोली, मण्डली ।  
 टोणीये। ( सं. ) भौंठ, ठोसबाध स्वंगी, मसखरा, हँसोद ।  
 टोणुं ( सं. ) हुंठ, भौंठ, समूह, यूष, दल, समा, समिति ।  
 टोणेटोणी ( सं. ) यूष, दल, सेना, कटक, रिसाला ।  
 टोडे। ( सं. ) खेल, तमाशा ठट्ठा, कोकिलमन्द, कोयल की आवाज ।

४

टोयुजराती वर्णमाला का तेईसवाँ अक्षर, १२ वाँ व्यंजन ।  
 टोसापुं ( कि. ) मजबूती जोड़ा हुआ, एकदम खूब मक्षण किया हुआ, ठोसना ।  
 टोडक ( सं. ) कोलहल, हो हल्ला ।  
 टोडक-त ( सं. ) राजपूतकी मर्बोदा, बड़प्पन, स्वामित्व, प्रधानता, ठकुराई ।  
 टोडक-णी ( सं. ) ठकुर की, ठकुराइन, प्रधान की की ।

६३३ ( सं. ) देखो ६३३  
 ६३३ ( सं. ) आदिया आदि आतियों  
 को एक पदवी ।  
 ६३ ( सं. ) गठकटा, चोर, चोका  
 देकर चोरी करनेवाला, प्रतारक,  
 चोकेबाज, मुलाबा देकर चोरनेवाला ।  
 ६३३-विधा ( सं. ) ठगई, धूर्तता,  
 ठगका काम, माया, छल, कपट ।  
 ६३ ( कि. ) ठगना, मुलाना,  
 चोका देना, प्रतारण करना ।  
 ६३३ ( सं. ) दुष्ट कृत्य, नीच कार्य ।  
 ६३३ ( सं. ) देखो ६३३  
 ६३३ ( सं. ) ठग, छली, कपटी,  
 ( वि. ) कपटी, छलिया ।  
 ६३ ( कि. ) ठगना, चोका जाना,  
 ठगा जाना, प्रतारित होना ।  
 ६३ ( सं. ) यूथ, समूह, झुंड, भीड़ ।  
 ६३३ ( कि. ) झुंड होना, भीड़ भाड़  
 होना, भीड़ लगाना, इकट्ठा होना,  
 ६३ ( कि. ) निर्बल होजाना, शक्ति-  
 हान होना, कमजोर होना ।  
 ६३ ( कि. ) सँभारना, सजाना,  
 सजित करना, सँभार करना ।  
 ६३३ ( सं. ) ठठ, धूमधाम, शान  
 शौकत, दिखावा ।  
 ६३३-३३ ( सं. ) मसखरा,  
 मजाकी, बिकाड़ी, आवन्दी ।

६३३-३३ ( सं. ) हँसी दि-  
 लगी, मजाक, परिहास, मनोविनोद ।  
 ६३३ ( कि. ) सनकारना, स-  
 दकाना, टीसमारना ।  
 ६३ ( सं. ) मड़क, बड़क, नवे  
 प्रकार की बाल ।  
 ६३ ( सं. ) ठठठ शब्द, शान्ध  
 ता, छुछापन, रिक्ता ।  
 ६३३-३३ ( कि. ) मारना, टक-  
 राना, खटखटाना, थपथपाना ।  
 ६३ ( सं. ) दोष, ऐष, बच्चा,  
 कलंक, दाग, बदनामी, बिकार,  
 डाँट, फटकार, चुड़की ।  
 ६३३-३३-३३ ( कि. ) दोष देना,  
 कलङ्क लगाना, बदनामी देना ।  
 ६३३-३३ ( कि. ) पीछे कलंक  
 या दाग छोड़ देना । [ थपथप ।  
 ६३३ ( सं. ) ठोके का शब्द,  
 ६३३ ( कि. ) सुझौल वाल, स्वा-  
 भाविक ऐठन से चलना, ठुसक  
 वाल चलना ।  
 ६३३ ( सं. ) ठुमका, बकड़ की  
 चाल, नाचके समय पैरों द्वारा  
 चाल प्रदर्शन ।  
 ६३३-३३ ( सं. ) ठवई, अहंकार,  
 कोरा ठठ, झांकी धूमधाम, दूसरा ।

- ६१६भि-७१६भु (सं.) उचित स्थान पर, निश्चित निवास स्थानपर, ठिकाने ।
- ६२पु ( कि. ) ठहरना, बसना, रुक होना, सहना, तब होना, फैसल होना, बैठना, उतरना, धीमा पड़ना, शांत होना, ठिठुर जाना, ठंड से बम जाना ।
- ६२१२ ( सं. ) ठहराव, तब, निपटाव, हरावा, निर्णय, प्रस्ताव, मन्तव्य कौल, करार ।
- ६२१३पत्र ( सं. ) इकरारनामा, विचारपत्र, निर्णयपत्र, बिगरी, कुइकी ।
- ६२१४पु ठहराना, तयकरना, निश्चयकरना, निर्णयकरना, रुक करना, जमाना, नियुक्त करना ।
- ६२१५भ ( सं. ) देखो ६२१५
- ६२१६ ( वि. ) निश्चित, ठहरा हुआ, बुद्धिमान, चैतन्य, दृढ़, स्थिर, अटल ।
- ६२१-२१६२ ( कि. वि. ) परिपूर्ण, गलेतक भराहुवा, खूब भराहुवा ।
- ६२१६१२ ( वि. ) अईकारी चढाई, सिधा महत्व प्रदर्शक, अकड़ ।
- ६२१७१ ( सं. ) बाल, बंदू, ठसक झांसी ।
- ६२१८ ( कि. ) दिल्पर, प्रभाव, होना, सकपर अंकित होना, चुसना ।
- ६२१९पु ( कि. ) मुहर करना, चिन्ह करना, छापना, चुसेटना ।
- ६२२०भि२पु ( कि. ) ईखईस कर भरना, कमाऊ भरना, ऊपरतक भरना ।
- ६२२१भि ( सं. ) बीज, गुठली ।
- ६२२२पु ( सं. ) खांसना, धांसना, छापना, चुसेटना, चढाजाना, छुड़कना, खूब भरना, खूब ठांसना ।
- ६२२३ ( सं. ) कासी, जोखल्य ।
- ६२२४भि ( सं. ) एक प्रकार का बिकल ।
- ६२२५ ( सं. ) मूर्ति, ठाकुरजी, देव, मुख्य, पदवी मुख्यतया राजपूतों आदि क्षत्रियों के लिये ।
- ६२२६२७ ( सं. ) देवता, मूर्ति ।
- ६२२७१२-२६२२ ( सं. ) देवस्वाच, मंदिर देवालय, मूर्तिपूज ।
- ६२२८ ( सं. ) धोका, छल, चालाकी ।
- ६२२९-२१६ ( सं. ) ठाठबाठ, धूस धाम, दाखाव, मर्वादा, पदवी ।
- ६२३०२१ ( कि. ) संवारना, सजाना, बड़ाई करना, बढ़नी ।
- ६२३१ ( सं. ) मुर्दों को लेजाने की यात्री, अर्पी, संगती ।
- ६२३२ ( सं. ) पंजर, ठठरी, झांझ, खरीरजस्थिवात्र, अस्थि पंजर ।

४५५ ( सं. ) अस्तबल, बाँधे बंधने की जगह, बॉचला । [ बर्तन ।

४५६ ( सं. ) स्थान, जगह, स्थळ, ४५६५५-भे४५६ ( कि. वि. ) प्रत्येक जगह, जगह जगह ।

४५७ भे३५-५५५ ( कि. ) आराम लेना, बिधाम लेना, आराम होना, पुनर्विवाह करना । [ कुहर, बढई ।

४५८ ( सं. ) जाड़ा, पाला ओस ।

४५९ ४५५ ( कि. ) बघ करना, मारना, कतल करना ।

४५५ ( कि. ) ठिठरना, ठंड से जमना ठंडा होना, संतुष्ट करना, बुझाना । [ कार होना ।

४५५५५ ( कि. ) खाली होना, बे-

४५५ ( वि. ) खाली, राता, व्यर्थ, गैर जरूरी, अनावश्यक ।

४५५५ ( वि. ) दब, स्थिर, अटल, अचल, बुद्धिमान, चतुर, मेली, जानकार ।

४५५ ( सं. ) मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा, फूटा हुआ बर्तन, ठीकरा ।

४५५ ( सं. ) कपड़े का छोटासा टुकड़ा ।

४५५ सं. बावना, ठिगना, छाटा, नाटा, छाट कद । [ईसी ।

४५५५५ ( वि. ) मजाक, दिहणी

४५५ ( वि. ) उचित, मुनासिब, बौम्व ( कि. वि. ) बहुत अच्छा, अच्छा

४५५५५ ( कि. वि. ) सुप्रबन्ध, समुचित प्रबन्ध, ठीक बन्दोबस्त, उचित ।

४५५ ( सं. ) जल्दी की हंसी में दांत दिखाने का कार्य, हंसी, अट्टहास ।

४५५ ( वि. ) निकम्मा, निरर्थक, बेकाम ।

४५५ ( सं. ) टूटे हुए मिट्टी के बर्तन का नीचेका चपटा भाग ।

४५५-५५५ ( सं. ) कलेवा, उपभोजन, भूना हुआ अन्न, चबेना, सिका अन्न ।

४५५५५ ( कि. ) ठंड की अधिकता से ठिठुरना, शीत से कोंपना ।

४५५ ( वि. ) ढूँढ ढूँढी बंठल ।

४५५ ( सं. ) दुड़ी, ठोड़ी, चिबुक ।

४५५ ( सं. ) गीत को जाति विशेष ।

४५५ ( सं. ) हिचकी ।

४५५ ( सं. ) हँसी ठठ्ठा, नकल ।

४५५ ५५५५ ( कि. ) ठेका भरना, कूदना, फौदना, उछलना ।

४५५ ( कि. ) छलांग मरना, मारना, कूच जाना, उछलना ।



४५५ ( सं. ) घर, मकान, निवास स्थान, जगह, हाबिरी, नेव, बुनियाद, कारण, उद्गम स्थान, पता, मुकाम, दफ्तर, कार्यालय ।

४५५ ४२५ ( कि. ) उपयोगी करने, काम के योग्य बनाने ।

४५५ ( उप० ) बजाय, जगहपर, वास्ते, अपेक्षा ।

४५५ ४२५ ( कि. ) उचित स्थानपर स्थापित करना, छुपाना ।

४५५ ४५ ( कि. ) उचित स्थानपर होना, अपने आपको छुपाना ।

४५५ ५५५ ( कि. ) मुकामपर पहुंचना, जीवन मार्ग पार करना ।

४५५ २६५ ( कि. ) दूरदर्शी होना, विचारशील होना, परिणामदर्शी होना । [ तक ।

४५ ( कि. वि. ) आखिरतक, अतः ४५५-५०५५५ ( कि. ) ठेठ

पहुंचना, सिरेपर पहुंचना, स्थानपर पहुंचना । [ किया ।

४५५ ( सं. ) मीठी रोटी, मीठी ४५५ ( सं. ) जोती ।

४५५-५० ( सं. ) देखो ४५५ ।

४५५ ( कि. ) निबन्ध करना, उद्घारना, तयकरना, इच्छाकरना इच्छा करना ।

४५५ सं. ) उद्घारण, प्रस्ताव प्रस्तुत, निर्णय, विचार, इच्छार, कौल, करार, टीका, सगार, मंगनी ।

४५५५५ ( सं. ) धक्काधक्का, रेल ४५५ ( कि. ) रेलना, धकेलना, छुसेटना ।

४५५५५ ( सं. ) देखो ४५५५५, ४५५ ( सं. ) ठोकर, हानि, टोटा, गंठ

सुई, कील, सूटी । ४५५५ ( कि. ) खासना ।

४५५ ( सं. ) कफ, कास, खास, खासी, घूसा, मुका । [ कलंक ।

४५५ ( सं. ) चोट, घूसा, दोष, ४५५५ ( सं. ) देखो ४५५ ।

४५५५५५ ( कि. ) ठोकर खाना, नसीहत लेना, पाठ सीखना ।

४५५५५ ( कि. ) ठुकराना, लत मारना, अटकल करना ।

४५५ ( सं. ) मूर्ख, मन्द बुद्धि । ४५५५-५५ ( वि. ) बेडंगा, भरा, बेडौल ।

४५५५ ( वि. ) देखो ४५५ ४५५ ( सं. ) घर, मकान, निवास

स्थान, ठौर नामक पक्काज, मिठाई विशेष ।

४५५ ४२५ ( कि. ) बध करना, मारना, कतल करना ।

४५५५५-५५५५ ( वि. ) मूर्ख, पागल गंवार, बेइश्या, ठुठकाज ।

४५५५ ( कि. ) रोकना, उद्धारना ।

६०० (वि.) मृक, गंधार, पागल,  
बेकक, बुद्धिहीन।  
६०० (सं.) एक प्रकार की  
कानो में पहिने की बाखी।

३

६०० गुजराती बर्णमाला का चौबीसवां  
अक्षर, हेरहवां व्यंजन।  
६०० (सं.) डंक, चमक, जह-  
रील कांटा, गुप्त स्पर्श ज्ञान, बैर,  
विरोध, डाह, जग, द्वेष।  
६००-सु (कि.) काटना, डंक  
मारना।  
६००-सी (वि.) शोही, अहितकारी  
बदला लेनेवाला, प्रत्युपकारेच्छु।  
६०० (सं.) अकाल, दुर्मिष्ट।  
६०० (सं.) घाट, बांध, पुस्ता।  
६०० (सं.) चलावा, लम्बीचाल,  
डेग, कदम, पदविन्यास।  
६००-६०० (वि.) च-  
बल, अस्थिर, कांपनेवाला, डार-  
डोल, चलायमान, स्थिर न रहने-  
वाला। [दुबिधा।  
६०० (सं.) पक्षोपेक्ष, एक सन्नेह  
६०० (सं.) मार्ग, रास्ता, पथ,  
पद्धति, पैदा, पहिने की लकीर।

६०० (सं.) पट्ट, डोर, मेथनी,  
चौपाये जानवर।  
६००-६०० (सं.) फिट्टा, फट्टा,  
कोट, अंगरखी।  
६०० (सं.) पाद चिन्ह, सीडी।  
६०० (कि.) हिलना, कांपना  
भटकना।  
६०० (सं.) जो दुखवाणी भैस या  
गाय के गले में लकड़ी या लकड़ी  
का टुकड़ा बांधा जाता है।  
६०० (सं.) बड़ा डोल, पणव।  
६०० (सं.) देखो ६००  
६०० (वि.) चकित, विस्मित,  
आश्चर्यान्वित, अचंभित।  
६०० (सं.) नाब, छोटी नाब, डोपी।  
६०० (सं.) बलवा, ईया, हुक्क,   
गुलमपाड़ा, बखेड़ा, बगावत।  
६०० (वि.) लाठी, सोटा, बन्ना,  
६०० (वि.) मुकसे "नहीं" प्रद-  
र्शित करने के लिए टिचकारी,  
पशु हांकने की टचकारी।  
६०० (कि.) चमकना, चौकना,  
सिसकना, करना। [टचकारी।  
६०० (सं.) "ना" प्रदर्शक  
६००-६०० (सं.) डर या रंजक  
आकस्मिक आघात।  
६००-६०० (सं.) काम, घाट, कार्क।

३३५ ( सं. ) दण्ड, वारह, १२,

३३ ( सं. ) दण्ड, कुर्माणा ।

३३५ ( कि. ) दण्ड देना, कुर्माणा  
देना । [ कुर्माणा देना ।

३३५ ( कि. ) दण्डित होना

३३३ ( सं. ) एक मोटा सोटा,  
भारी लाठी । [ धमकी,

३३३-३३३ ( सं. ) बुझकी,

३३३ ( सं. ) बुझकी, बुझकी, गोता ।

३३३ ( सं. ) बुझ, बिन्दु, बन्ना,  
बाग, डर, भय, चौक ।

३३३-३३३ ( सं. ) गुप्त कारणों  
से अधिकार प्राप्त करने । बुझ  
बैठना । [ का बैला ।

३३३ ( सं. ) सखर इत्यादि भरने

३३३ ( सं. ) लाठी, छड़ी ।

३३-३३ ( सं. ) जैजरी, दण्ड, बंग ।

३३३३ ( कि. ) चलाना, केकना,  
पानी में खसकाना या उसकाना ।

३३३३ ( कि. ) गाढ़ना, दफन  
करना । [ सठ ।

३३३-३३३ ( वि. ) मूर्ख, गैहार,

३३३ ( सं. ) गप्प, झूठ, झपकाव ।

३३३३ ( कि. ) झुककर गिरना  
और होकर गिरना, डलकना,  
गुलाबे खाना । [ ३३३३ ।

३३३३-३३३ ( सं. ) देखो

३३३-३३३ ( सं. ) देखो ३३३ ।

३३३ ( वि. ) देखी से, सीपता से ।

३३३ ( सं. ) बगड़े का बैला ।

३३३३३ ( कि. ) गढ़पगढ़प खाना,  
जल्दी से नियलना, हड़पना ।

३३३-३३३ ( सं. ) चिबिया, छोटी  
सन्दूक या डिब्बा ।

३३३-३३३ ( सं. ) छोटी सन्दूक,  
बन्ना, कागज की लकटेन, प्रास,

पगड़ी, पशुओं का हाता ।

३३३३ ( कि. ) बुझना, बोरना,  
बुझना, गोता खिलाना नष्ट करना ।

३३३ ( सं. ) एक प्रकार का दण्ड ।

३३३ ( सं. ) डमडम, पणव सन्द ।

३३३ ( सं. ) एक प्रकार का डोलक  
डमरु, बाघ विशेष ।

३३३ ( सं. ) बकबक, बकबाद ।

३३३ ( सं. ) धर्म विरुद्धता ।

३३३ ( सं. ) सिध्दा दिखावा,  
डोंग, टीमटाम, बुझाव, दिखावा ।

३३ ( सं. ) भय, सीपि, शंख,  
जातह ।

३३३ ( कि. वि. ) बड़कन, फड़कन ।

३३३-३३३ ( कि. ) बड़कावा,  
डरना । [ नाक, डरावना ।

३३३ ( वि. ) भयानक, चौक-

- अक्षर ( कि. ) डराना, भय प्रदर्शित करना ।  
 अक्षी-णी ( सं. ) ऊनका कपड़ा या नमदा जो काठी के पहिले बोड़े पर रखा जाता है ।  
 अक्ष-भ ( सं. ) एक बड़ा हरा मच्छर, या मक्खी, धातु का बोड़ या झालन ।  
 अक्षी-णी ( सं. ) शाखा, डाल, पत्त, बाली, टहनी । [ लाठी ।  
 अक्ष ( सं. ) एक बड़ा, मोटा लठ्ठ  
 अक्षर-मेर ( सं. ) ढोर, छिलकों मुक्त चावल ।  
 अक्ष-मे ( वि. ) अकेला, बेधरम, निर्लज्ज, झुले मुखका ।  
 अक्ष-मी ( सं. ) बेईमानी, दुष्टता, बंदीपना ।  
 अक्षि ( सं. ) फटे हुए कपड़े को निकालकर फिर से जोड़ा हुआ कपड़ा, पले चाला हुआ कपड़ा ।  
 अक्षि ( सं. ) छड़ी का छोटा सा टुकड़ा, चिल्लाने वाला, बिंदोरा पीटनेवाला, निर्लज्ज जन्तु, बेहूदा, गैवार ।  
 अक्षि ( सं. ) तराजू की बंदी, छोटी छड़ी, बंदी, छोटा डोल, सीधा खड़ा, सम्मा । [ वण्ड, खंभा ।  
 अक्षि ( सं. ) मूठ, हत्था, लम्बा

- अक्ष ( सं. ) मच्छर, बोंस ।  
 अक्ष ( सं. ) डाक, भेल ।  
 अक्ष-मे ( सं. ) डाक की चौकी या मुकाम ।  
 अक्षर ( सं. ) वैद्य, हकीम ।  
 अक्ष ( सं. ) डाइन, डाकिन, डाकिनी । [ बिगुल ।  
 अक्ष ( सं. ) एक प्रकार की तुरही,  
 अक्षि ( सं. ) मुखमरा, पेदू, खाका  
 अक्षि ( सं. ) लुटेरो का आक्रमण, डाका ।  
 अक्ष ( सं. ) देखो अक्ष ।  
 अक्षि अक्षि ( कि. ) देखो अक्षि अक्षि  
 अक्षि अक्षि ( कि. ) पागल होना ।  
 अक्षि ( सं. ) तमाशा करनेवाला चंचल खिलाड़ी, भोंड, नट ।  
 अक्ष ( सं. ) धब्बा, निशान, दाग बैर, डाह, बग्न, कलंक, यादी ।  
 अक्ष ( सं. ) धब्बे, दाग ।  
 अक्षि-क्ष ( वि. ) बोही, ईर्षालु ।  
 अक्षि ( सं. ) जंगली कुत्ता, ब-नैला कुत्ता, अति क्रूर खाल ।  
 अक्ष ( सं. ) वह जो मृतक की अर्धा उठता है या मृतक संस्कार में सम्मिलित होता है ।

अधो ( सं. ) अंकित, हाथलगा  
हुवा, चन्ना, लगावा हुआ, कलंकित।  
अधो ( सं. ) चन्ना, दाग, कलंक।  
अधु ( सं. ) जबड़ा, मुख, शकल।  
अधो ( सं. ) देखो अधो।  
अध ( सं. ) नाश, बर्बादी।  
अध ( सं. ) चौकट।  
अधो ( सं. ) देखो अधो।  
अधवाधो ( कि. ) बर्बाद करना,  
नाश करना, नष्ट भ्रष्ट करना।  
अधु ( कि. ) गाढ़ना, जमीन के  
नीचे छुपाना, मछी देना।  
अधु-अधु-आधु ( कि. ) काटना,  
कुतला, दात से काटना।  
अधोअधो ( कि. वि. ) दाहिने  
और बाये, बाये बाये, दक्षिण और  
वाम।  
अधोय ( वि. ) बायीं तरफ।  
अधु ( वि. ) बायाँ, वाम।  
अधोरी ( वि. ) देखो अधोय।  
अध ( सं. ) एक प्रकार की घास,  
दर्ना, कुशा, पवित्र घास।  
अध ( सं. ) गर्म वस्तु का राग  
जली हुई गर्म वस्तु द्वारा दग्ध।  
अधो ( कि. ) अपमान करना,  
गाली देना, विन्दा करना, ठामा  
देना, दग्ध करना

अध अधो ( कि. ) पूर्ववत्  
अधो ( सं. ) लकड़ी की टि-  
कटी, लकड़ी की बनी तिपाई।  
अधु ( सं. ) पशु की आगे की  
और पीछे की एक एक टोंग बाँधने  
की रस्ती।  
अध ( सं. ) डम्बर, डामर नामक  
एक दुर्गन्ध युक्त और काल तरल  
पदार्थ।  
अधु ( कि. ) गर्म वस्तु द्वारा  
दग्ध करना, ठाम देना, बांधना,  
कलंक लगाना।  
अधो ( वि. ) हिलता हुआ,  
अस्थिर, डगमग, चलावमान,  
डावा डोल। [दग्ध।  
अधो ( वि. ) ठाम दिया हुआ,  
अधो ( सं. ) घमकी, घुड़की।  
अधो ( सं. ) चतुरता, होशियारी  
विचार, बुद्धि। [कलमन्द।  
अधो ( सं. ) चतुर, बुद्धिमान, अ-  
अधो ( सं. ) अन्धे की  
लाठी।  
अधी रीति ( कि. वि. ) बुद्धि मानी  
से, अक्लमन्दी से, बुद्धिद्वारा।  
अधो-अधो ( सं. ) शाखा, डगाली,  
टहनी, पल्लव।  
अधो-अधो ( सं. ) पल्लवयुक्त  
शाखा, पत्तों सहित टहनी।

- हिं ( सं. ) डेर, समूह, रीम,  
केली, गपसप ।
- हिंभुं ( सं. ) लकड़ का टुकड़ा, बूँडा
- हिंभी ( सं. ) बोंगी, छोटी नाव ।
- हिंभुं ( सं. ) देखो ७१५ ।
- हिंभु ( सं. ) कोकवाह, चर्चा,  
अफवाह, गपसप, किम्बदन्ती ।
- हिंभु-भुं ( सं. ) गाँठ, डेर, राशि,  
टाक, पेड़कातना जिस से पतियां  
निकलती है, बँडा ।
- हिं-हिं ( सं. ) स्तन, चूची की  
बुँडी, स्तन मुक, बोबों की डेपुनी ।
- हिं ( सं. ) मोटी छोटी छदियां  
का कट्ट ।
- हिंभी नांभुं ( कि. ) किसी न किसी  
प्रकार खतम करना, किसी तरह  
पूरा कर बालना ।
- हिंभुं ( सं. ) शरीर का निकल हुआ  
भाग, सूजन, फुलाव, गिलटी ।
- हिंभे ( सं. ) सिसकी, आह ।
- हिंभुं ( सं. ) देखो हिंभुं
- हिंभर ( सं. ) पहाड़, पर्वत, भूचर.  
गिरि, टेकड़ी, पहाड़ी ।
- हिंभरभ ( वि. ) पहाड़ी की, पार्वती,
- हिंभरी ( सं. ) टीका, छोटी पहाड़ी ।
- हिंभरी ( सं. ) प्याज, कांदा,
- हिंभे ( सं. ) धूमपान करने की  
नली, हुका, चोर, नख ।
- हिंभुं ( कि. ) चूसना, होठों से  
पीना ।
- हिंभी ( सं. ) नाभि, तोंडी, ठंडी ।
- हिंभुं ( सं. ) अन्न की बाल, अन्न का  
सिरा, झन्डा, फुंदना, लटकन,  
मुकुट, चोटी ।
- हिंभी ( वि. ) बालाक, मकार, बूर्ती
- हिंभे ( सं. ) मैल, कचरा
- हिंभे-हिंभे-री ( सं. ) सुभर, बराह
- हिंभुभी ( सं. ) डोलक, तम्बूरा,  
मृदंग, तबल । [ चम्मच ।
- हिंभे ( सं. ) बमबा, बोई, करछुक,
- हिंभे ( सं. ) गूद की बनावे हुई  
गेंद, छद्म, डाट ।
- हिंभुं ( कि. ) बराब होना,  
बुरी तरह पकाया जाना ।
- हिंभे ( सं. ) उपहा, कंधोंपर बालने  
का उपपन्न, रुमाक ।
- हिंभी ( सं. ) देखो ३५३
- हिंभुं ( कि. ) बूबना, बूबना, मम  
होना, सूर्यास्त होना, छिपजाना ।
- हिंभुं ( कि. ) देखो हिंभुं
- हिंभुं-हिंभुं ( कि. ) डुबाना,  
बोरना, डुबोना ।
- हिंभुं ( वि. ) गरि गाहिरा, बहुत  
गोंडा, रंगीर, अगाव, अथाह ।
- हिंभुं ( सं. ) बहाव का दृश्य ।

- ३५३। ( सं. ) छोटा बोल, डीकडी।  
 ३५४। ( सं. ) काठी, जीव।  
 ३५५। ( सं. ) एक प्रकार का बल।  
 ३५६। ( सं. ) बड़क, भड़क।  
 ३५७-३५८। ( कि. ) बूना, लुबकना, ओंभजाना।  
 ३५९। ( सं. ) हानि, घाटा, टोटा।  
 ३६०। ( सं. ) पानी का साँप, पनियर सर्प।  
 ३६१। ( सं. ) देर, देरी, विलम्ब,  
 ३६२। ( सं. ) तम्बू, पटमण्डप, कुछ दिनोंके रहने का स्थान, कपड़े का घर, विदेश का वासस्थान, घर।  
 ३६३। ( कि. ) डेरा डालना, मुकाम करना।  
 ३६४। ( कि. ) तम्बू गाढ़ना, पटमण्डप खड़ा करना। [ ३६५।  
 ३६६। ( कि. ) देखो ३६६।  
 ३६७। ( सं. ) गैबबेल, गैवार, मूर्ख, बेबकूफ। [ तबेला,  
 ३६८। ( सं. ) हाता, बुढ़साळ,  
 ३६९। ( सं. ) एक प्रकारका समवा।  
 ३७०। ( सं. ) गर्दन, कंठ, मज्जा।  
 ३७१। ( सं. ) बूवा, बूढ़, बर्झ।  
 ३७२। ( सं. ) उपहार।  
 ३७३। ( कि. ) डेढावपुं, डेढीवपुं ३७४। ( कि. ) कुटिलतासे देखना, ताकना, लौकना।  
 ३७५। ( सं. ) देखो ३७६। [ बलक,  
 ३७७। ( सं. ) सिर, सबसे ऊँचा,  
 ३७८। ( कि. ) बोनेसे बकना देना, विश्वासघात करना, सिर काटना, मूँड काटना।  
 ३७९। ( सं. ) देखो ३८०।  
 ३८१। ( सं. ) देखो ३८२।  
 ३८३। ( सं. ) देखो ३८४।  
 ३८५। ( सं. ) बढसूरत, पगवी।  
 ३८६। ( सं. ) फूटा बर्तन।  
 ३८७। ( सं. ) बूही मैस बा मैसा, ( वि. ) मूर्ख, अज्ञानी, बड़, सिद्धि, सिरा।  
 ३८८। ( सं. ) देखो ३८९।  
 ३९०। ( सं. ) मस्तक, बोल, बोलची।  
 ३९१। ( सं. ) छोटा बोलची, कपड़े का वा किरमिन का बोल।  
 ३९२। ( कि. ) हिलना, लहरावा, झुलना, फिरना, घूमना।  
 ३९३। ( सं. ) देखो ३९४।  
 ३९५। ( सं. ) बिचारीबूई झुराव।  
 ३९६। ( सं. ) पारखियों के झुई के दिन।  
 ३९७। ( सं. ) कुचिफ, कुडा, बूही।

३।सीवाधुम्भि ( सं. ) कपदे बेचने  
वाला, बजाज, बकाविकेता ।

३।सुं ६भर ( वि. ) बड़ा डोकरा,

३।से ( सं. ) बूढ़, बूढ़ा आदमी ।

३।६ ( सं. ) पानी का गड्ढा ।

३।६पुं-७।पुं-७। नींभपुं ( कि. )

मोटा बनाना, मैला करना, गड़बड़  
करना, अत्यन्त निकटसे लटका  
करना, डुहना, दूध निकालना ।

३।७ ( सं. ) सूरत, शङ्ख, डंग,  
बेहरा, मार्ग, तर्ज, ठाठ, डौल ।

३।७६१ ( वि. ) डंभदार, योग्य,  
सुन्दर ।

३।७७पुं ( कि. ) हिलाना, झुलाना ।

३।७। ७।३५। ( कि. ) हाँस हवा-  
समें लाना, झान करना, चैतन्य  
करना ।

३।७। ३।६५। ( कि. ) तेवरी चढ़ाना,  
झुड़कना, ऑलिवताना । [ देखना,

३।७। ३।२५। ( वि. ) कौघयुक्त

३।७। ( सं. ) डोली, झूलतेहुए  
पल्लं की छोटी किस्म, नाच, लोप,  
एक प्रकारके बीजे जिनसे तेल  
निकलता है ।

३।७।३ ( सं. ) एक प्रकारका तेल,  
रेडीका तेल, अण्डीका तेल ।

३।७। ( सं. ) नेत्र, आँख, नयन,  
रष्टि, बीनाई. नजर, आँखकी  
पुतली या तारा ।

६

६।गुजराती वर्णमाला का पञ्चीसवां  
अक्षर, १४ वां व्यंजन ।

६ ( वि. ) मन्द, मूर्ख, सुस्त ।

६भ ( सं. ) डेर, राशि, समूह ।

६भरे ( सं. , चूतड़, पुछा, पिछला  
हिस्सा, सिपाही ।

६भसे ६भसा ( वि. ) बहुत, अधिक,  
विशेष, ज्यादा, अत्यन्त ।

६भसे ( सं. ) देखो ६भ

६भे ( स. ) बैल, मूर्ख, बेवकूफ,

६।३पुं ( कि. ) डांफना, पास होना,  
चुप होना, बेठित होना, सामोरा  
होना । [ चालचलन, आचरण।

६भ ( सं. ) डब, रीति, प्रकार प्रथा,

६केलपुं ( कि. ) चक्का देना, घुसेड़ना,  
खोंचना, रेलना, डकेलना ।

६केसे ( सं. ) चक्का, रेल, टूँसा ।

६केस्यं ६ ( सं. ) बेपरवाही से काम  
करनेवाला, असावधान ।

६केसापुं ( कि. ) चक्का खाना, घके-  
लेजावा । [ अजीब, बहुत बड़ा ।

६।३ ( वि. ) अद्भुत, अपरिमित,



६८२१ ( सं. ) बंदोरा, डुन्नी,  
 मुन्नी, इस्तिहार ।  
 ६८२२ हेरवे। ( कि. ) बंदोरा,  
 फिरवाना, प्रकट करना ।  
 ६८२३ ( कि. ) दाये और बाये  
 तरफ फेरना । [ आकृति ।  
 ६४-७५ ( सं. ) डौल, डंग, गडन, गठन,  
 ६४-७५ ( सं. ) अधजा, दो पैसे  
 का सिक्का । [ शब्द, उमादम ।  
 ६४६४ ( सं. ) डोल की आवाज, पणव-  
 ६४६५ ( सं. ) खाली, रीता, दिखावा,  
 ६४६६ ( वि. ) मोला, सीधा, सादा ।  
 ६४६७ ( वि. ) पूर्ववत्, झुका हुआ  
 ६४६८ ( वि. ) देखो ६४६९  
 ६४७०-७१ ७२-७३ ( कि. )  
 बाहर आजाना, बिसक जाना,  
 डुलक जाना, लोभ जाना, लुहकना ।  
 ६४७४ ( सं. ) डलाव, डालू मैदान ।  
 ६४७५ ७४ ( कि. ) देखो ६४७६ ७५  
 ६४७७ ( सं. ) बड़ा भारी पत्थर ।  
 ६४७८ ( विस्म. ) जावो तुम, निकल  
 जावो, दुष्ट, बदमाश ।  
 ६४७९-८०-८१ ( सं. ) डकन,  
 अच्छादन, डाकनेका । [ पर्वी ।  
 ६४८० ८१ ( सं. ) धूषट, मोट,  
 ६४८२ ( कि. ) बन्दकरना, बंद लेना,  
 अच्छादित करना, छुपाना ।

६४८३ ( कि. )  
 खामोश करना, झुनसान करना ।  
 डाक कर रखना, छुपाकर रखना ।  
 ६४८४ ( कि. ) बंधेरा करना,  
 ग्रहण होना ।  
 ६४८५ ( कि. ) देख भाऊका  
 बीजों को बयास्थान संवार कर  
 रखना ।  
 ६४८६ ( सं. ) परोसा, किसी के  
 मकान से किसी के घरको लम्प  
 हुवा भोजन ।  
 ६४८७ ( सं. ) ककड़ी, खीर ।  
 ६४८८ ( सं. ) रखक, डाल, जो समय  
 पर मदद दे, सहायक ।  
 ६४८९ ( सं. ) डलाव, डलान, उतार ।  
 ६४९० ( सं. ) धातु का कठिन  
 टुकड़ा । [ फसल की लुनाई ।  
 ६४९१ ( सं. ) अन्न की कटनी ।  
 ६४९२ ( कि. ) बंदोरना, बंद बंद  
 करके गिराना, छलकाना, डलकाना  
 बहाना, गलाना, मिथलाना, खेत  
 काटना, घास काटना ।  
 ६४९३ ( वि. ) डाढ़, तिरछा ।  
 ६४९४ ( सं. ) नाली, नहर लाक  
 कटनी करनेवाला, फसल काटने-  
 वाला ।

दीवली ( सं. ) पुष्पिका, पुतली,  
कक्षिकोक्ति खेलने की कठ पुतली ।  
दीप्य ( सं. ) झुटना, जानू ।  
दीप्य ( कि. ) बेपरवाही से पीना,  
बुझ पीना, ठोकना, चढ़ाजाना, झु-  
कजाना, चक्कजाना ।  
दी-डी ( सं. ) पीठपर बप्पड़,  
दीभयुं ( सं. ) एक मोटा और चौड़ा  
लकड़ें का टुकड़ा ।  
दीभयुं ( सं. ) पूर्ववत्  
दीभुं-धुं-युं ( सं. ) सूजन, फु-  
काव, गिल्टी, गुमड़ा, फोड़ा ।  
दीभर-भर ( सं. ) मल्लाहा, धी-  
वर, धीमर ।  
दीध ( सं. ) देरी, विलम्ब, टालमटोल  
दीधायुं ( सं. ) झुत्ती, धीलापना  
दीधारी ( सं. ) धीला बन्धन,  
मामूली रोक । [ पोक ।  
दीधुं ( वि. ) धीला, निर्बल, डर-  
दीधुं भरुं ( कि. ) खोलना, धीला  
करना ।  
दीधि ( सं. ) जैन, धर्म का एक  
एक दयापाळन मत विशेष ।  
दीधुं-धुं ( कि. ) तलाश करना  
खोजना, खोजना ।  
दीधि ( सं. ) देखो दीधि ।

दीधि-दी ( सं. ) घेहुं के आटे की एक  
सोटी रोटी जो बजन में १० सेर  
से अधिक हो, पुस्ता, घुसाका दरी ।  
दीधि ( उप. ) निकट, पास, नजदीका  
दी ( सं. ) स्तन, चूबी, बन ।  
दीधिया ( सं. ) सूराल और गठे,  
सुरदरापन, मोटापन ।  
दी ( सं. ) तलवार के मूठ की गिरह,  
ग्रंथी, गाठ, गिरह, गठान ।  
दी ( वि. ) सुस्त, काहिल आकसी ।  
दी ( सं. ) सूजन, फुल्लान, गिल्टी ।  
दी-दी ( सं. ) मेहतर, मंगी ।  
दी-दी ( सं. ) बदनामी, सार्ध-  
जनिक अपमान । [ मंगीपुरा ।  
दी-दी ( सं. ) डेह के रहने का सुहसा  
दी ( सं. ) डेह की औरत, मंगिन ।  
दीधि ( कि. ) अपमान करना ।  
दीधुं-धुं ( सं. ) पत्थर, डेला, लौंदा,  
दीधुं ( सं. ) मोटी रोटी, एक  
प्रकार की मसालेदार रोटी ।  
दीध ( सं. ) म्हेरनी, मयूरी ।  
दीधरी-दी ( सं. ) गोबर का डेर ।  
दीध ( सं. ) छल, कपट, पाखण्ड,  
बनावट, कपट बेष । [ छलना ।  
दीध भरुं ( कि. ) पाखण्ड, करना,  
दीध भरुं ( सं. ) देखो दीध ।

दे०ली (सं.) छली, कपटी, पाखण्डी।

दे०ली सं-पासी (वि.) बनावटी  
छात्र, नकली सैन्यासी।

दे०ली (वि.) फटा, गला, सड़ा।

दे०लीडे (सं.) राज, संगतराज,  
छात्र छोड़ने वाला, पत्थर फोड़ा।

दे०ली (सं.) पत्थर, पाषाण, मूर्ख।

दे०ली (सं.) दाल और चोंवल  
के आटे का बनाया हुआ भोजन।

दे०ली (सं.) एक छोटी किंतु  
मोटी रोटी या टिकिया।

दे०ली (सं.) मृत्तिका पात्र, मिट्टी  
का बना बर्तन, सिर।

दे०ली उ०ली-ली दे०ली (कि.)  
धिरच्छेदन करना सिर काटना,  
मूँड़ काटना।

दे०ली (सं.) पशु, जानवर, चौपाये,  
(वि.) अज्ञान, मूर्ख।

दे०ली (सं.) बड़ी डोलकी, डोल।

दे०ली (सं.) पूर्ववत्।

दे०ली (सं.) रंगीन पालना, रंग  
हुवा झूलना।

दे०ली (सं.) डोलवाला, डोल  
बजाने वाला डोल का पेशा करने  
वाला।

दे०ली (सं.) चारपाई, पलना।

दे०ली (वि.) मूर्ख, दुर्दिष्ट, घट।

दे०ली (सं.) मूर्ख, चोकर, बुर,  
मुलम्मा, कलई।

दे०ली उ०ली (कि.) मुलम्मा  
करना, कलई करना पत्थर चवाना।

दे०ली (कि.) बुलाना, बीधाना,  
बैठेलना, पलस्तर करना।

दे०ली-ली (सं.) उतार, डाल,  
डालव।

दे०ली उ०ली-ली (कि.)  
बीधाना, बिखेर देना, माली देना,  
अपमान करना, तौहीन करना।

दे०ली (वि.) जीवत, ह्रीव, जनाना।  
नपुंसक।

७

७-गुजराती वर्णमाला का छम्भीसवां  
अक्षर, पन्द्रहवा व्यञ्जन।

८

८-गुजराती वर्णमाला का सत्ताईसवा  
अक्षर, १६ वा व्यञ्जन।

८८८८ (वि.) देखो ते८८८

८८८८ (सं.) देखो ते८८८

८८ (सं.) मौका, अवसर, मौ,  
माजरा, योग, मेल, ऐक्य।

८८८८ (वि.) चमकीला, मकलीला,  
प्रभासुक्त, प्रकाशमान।

तक्षकपुं ( कि. ) सूक्ष्म चमकना, चमकना, प्रकाशित होना ।  
 तक्षे ( सं. ) देखो तभते ।  
 तक्षीर ( सं. ) किस्मत, भाग्य, प्रारब्ध ।  
 तक्षीर ( सं. ) किस्मत, लड़ाई, झगडा, विवाद टंट, झगेल, भेद ।  
 तक्षीरभेरी-री ( वि. ) झगडालू, बिबादा, फसादी, लडाका ।  
 तक्षेडी ( वि. ) निर्बल, कमजोरा ।  
 तक्षीर-वीर ( वि. ) अपराध, जुर्म, दोष, कुसूर, गुनाह ।  
 तक्षी ( स. ) शक्ति, बल, पौरुष, तक्षिभे ( सं. ) तकाजा, देनलेन के लिये आवश्यकता प्रदर्शित करना ।  
 तक्षिभे करवे ( कि. ) तकाजा करना ।  
 तक्षिपुं ( कि. ) ताक बाधना, इरादा करना, निशाना बाधना ।  
 तक्षिभे ( सं. ) ओसासा, बलीत, उपधान, सिरहाना, सिर के नीचे रखने की वस्तु ।  
 तक्षिपरी ( सं. ) गव. दर्प, घमण्ड, तक्षिपरी ( स. ) इसा काम को थोड़े दिनके लिये रकना या ठहराना ।  
 तक्षित-पत ( स. ) मच. काठकी बड़ी चौकी, सिंहासन, तख्त ।

तक्षितनीन ( सं. ) राजा, अधिकार प्राप्त राजा, सिंहासनासीन भूपति । [ पूरा पृष्ठ ।  
 तक्षिती ( सं. ) पछी, कागज का तक्षितो ( सं. ) पछ, तख्ता, छीसे का चौकोर टुकड़ा, दर्पण, चौखटे जड़ी हुई तस्वीर ।  
 तक्षि ( सं. ) बकावट, पैदल, बाल ।  
 तक्षि ( सं. ) तीनका अंक ।  
 तक्षिभे-दे ( सं. ) देखो तक्षिभे तक्षिभे ( सं. ) कुम्हार का गारा से जाने का, नाद, कुंवा ।  
 तक्षि ( वि. ) त्रिगुण, तिगुना, तक्षि ( सं. ) तकाबी, कृषको को सरकार की ओर से अयाऊ कृण ।  
 तक्षिपुं ( कि. ) तेज हाकना, शीघ्रतापूर्वक चलाना ।  
 तक्षि ( स. ) थोड़े का तंग, कसके बाधा हुवा, कसा हुवा, ( वि. ) दबा हुवा ।  
 तक्षिभे ( सं. ) देखो तक्षिभे तक्षिभे ( सं. ) आवश्यकता, जरूरत, कमी, महंगी, धक्काहट, व्याकुलता, बैचेनी ।  
 तक्षिभे तक्षिपुं ( कि. ) कोधने चमकना, रोषपूर्ण होजाना ।  
 तक्षि ( सं. ) दारचीनी, दालचीनी, तेजपात ।

तन्त्रपीठ ( सं. ) उपाय, तद्विषय,  
तत्त्वज्ञान, खोज, जांच, तद्दृष्टिकोण,  
बन्धित, यत्न, संशोधन, प्रयत्न ।

दत्तुं ( कि. ) छोड़ना, त्यागना,  
दे डालना, निकाळ देना ।

तट (सं.) किनारा, तीर, कूळ, नदी का कठार ।

तटपंढी (सं.) गड बनानेकी विद्या,  
किल्लबन्दी, मौर्चाबन्दी । [ओर।

तदर्थं (वि.) मध्यस्थ, अलग, एक

त.६ (सं) जुदाई, भाग, तर्क, पक्ष ।

तडकपुं (क्रि.) डरना, चौकना,  
कड़कना, तड़क जाना, दरार होना।

11381 (सं) धूप, सूर्यप्रकाश, गर्मी ।

८४१३ ( कि. वि. ) चंचलतापूर्वक,  
 किसी वस्तुको भूतते समय या  
 मेरुते समय उसका तटतः शब्द ।

तडितडिपुं (कि) तडकना, कडकना,  
धिरना, दरार होना, फांक होना।

तद्विषये। (सं.) आगकी चिनगारी।

तडे पडेवी ( कि. ) दरार होना,  
फाक होना, तडकना, फटना ।

तम्रऽयं (क्रि.) देखो तम्रऽयं

तदुभय (सं.) तरबूज, फल विशेष  
मत्तीरा । [ प्राप्ति ।

तऽके (सं.) टकर, गण्य, लम.

तद्विषय (सं.) विजयली, विद्युत, लोहा-  
मिनी, यपला । [रामानुज, कवचमणि]

पञ्चकुण्ड ( जि. ) गवईया, डोंडीरियाँ.

ਪ੍ਰਤੀ (੪) ਸਾਲਾਨਿਕ ਗਤੀਵਿਧੀ ।

तडोवड ( वि. ) समान, बराबरा  
तडुवड-डु ( सं. ) सिनका, तुल,  
घासकी पत्ती । [ बिंगारी ।

तथुभे। ( सं. ) सोहला, पतिंग,

तक्षु (सं.) एक प्रकारका शहतीर।  
तक्षु (क्रि.) सिंचाहुवा, लिपटा-  
हुवा, सिङ्गाहुवा फुल्ल सन्धि  
द्वि होजाना।

तथुपाशु ( सं. ) देवो पेशो ।

तथा (सं.) उसको, उसका (कवितामें)

तथाऽऽनिषु (क्रि.) विचजाना, तन-  
जाना, अकडजाना । [ काविताने ]

वर्ष ( वि. ) परीक्षा प्रत्याग का

द्वितीयं (वि) द्वाविंशत्यक्षरम् ।

१११६ ( सं. ) खोदी विमाळ नगर

तुम्ही । [ जमीनभूषण बघेंत ।

देवगण ( वि. वि. ) नसी मण्डल

तत्त्वभेष ( कि. वि. ) प्रसिद्ध ।

तमसि ( कि. वि. ) तौमी, हतने  
परमी, उसपरमी, विनानामके स्था-  
नका सूचक शब्द ।

तत्त्व ( सं. ) सत्य, तथ्य, सत्यता, सार,  
उद्देश्य, ध्वनेषण, गूदा ।

तत्त्वबोध ( सं. ) तत्त्वज्ञान, सत्य उप-  
दश, वचार्थ ज्ञान । [ ब्रह्म विद्या ।

तत्त्वविद्या ( सं. ) तर्कशास्त्र विद्या,

तत्त्वशील ( सं. ) तत्त्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञा

तत्त्वमसि ( सं. ) ईश्वरत्व, सुदाई,  
बह तूहै ।

तत्त्वज्ञ ( सं. ) सारांश, आत्मा, कूट ।

तत्त्वभक्त ( सं. ) उसवक्त, उसकाल ।

तत्त्वभुक् ( कि. वि. ) उसीदस, उसी-  
वक्त, तुरंत ।

तत्त्वभुक् ( कि. वि. ) उसी वक्तका ।

तत्त्वज्ञान ( सं. ) ब्रह्मज्ञान, सत्यज्ञान ।

तत्त्वज्ञानी-दर्शी ( सं. ) ब्रह्मज्ञानी,  
ब्रह्मज्ञ, तत्त्वविद्, फिलासफर ।

तथा ( अ. ) और ( कि. वि. ) तैसेही,  
वैसेही, इसकेबाद, उस प्रकार ।

तथापि ( कि. वि. ) तौमी, वैसा होने-  
परमी, उस परमी ।

तथास्तु ( कि. वि. ) वैसा हो, वैसा-  
ही हो, स्वीकारोक्ति ।

तथी ( सं. ) तिथि, चांद्र तिथि, तारीख ।

तदुपशान्त ( कि. वि. ) उसके बाद ।

तदुपरान्त, तत्पश्चात्, तदन्तर ।

तदन ( कि. वि. ) सब, इकट्ठा, तमाम ।

तदपि ( कि. वि. ) देखो तद्वत्पि ।

तदपीर ( सं. ) देखो तद्वत्पीर ।

तदः ( कि. वि. ) तब, उस, समय ।

तदः १२-१५ ( वि. ) तदनु रूप, तादृश,

तत्तुल्य, उसके समान, वैसाही ।

तन ( सं. ) शरीर, बदन, जिस्म,  
अंग, पुत्र, बेटा, तनय ।

तनः ( सं. ) थोड़ा, कम, छोटा, अल्प ।

तनः ( सं. ) चक्कदार दर्द, बह  
दर्द जिसमें टीस होती हो ।

तनः ( सं. ) तनख्खाह, किराया,  
आगकी चिंगारी ।

तनदुस्त ( सं. ) स्वस्थ, निरोग ।

तनदुस्त ( सं. ) स्वास्थ्य, निरोग्य ।

तनभन ( सं. ) शरीर और दिल,  
मन और शरीर । [ ब्रह्म ।

तनभनधन ( सं. ) शरीर, दिल और

तनभनीर्ध ( सं. ) कण्ठमें पहिनेका  
आभूषण, तिमानिया । [ सुत ।

तनय ( सं. ) बेटा, लड़का, पुत्र,

तनया ( सं. ) पुत्री, बेटा, सुता,  
आत्मजा ।

तनयी ( सं. ) तम्बूकी रस्ती ।

तनिधे ( सं. ) कपड़ा, वस्त्र ।

तनु ( सं. ) शरीर, देह, बदन, अंग ।

तनु ( सं. ) पुत्र, बालक, शिशु ।

लुग्न (सं.) पुत्री, बेटी, तलका ।  
 लने (सर्वे.) दुष्टे, दुष्टको ।  
 लनोडे (सं.) कौनोंका आग्रहण ।  
 लन-ख (सं.) बागा, सूत्र, तार,  
 काट्टोना । [ अचेत करना ]  
 लतरेपुं (कि.) कोका देना, छटना,  
 लंतु (सं.) बागा, बोरा, सूत्र, कुमि-  
 सरीका धाना, रंग, नख, नाड़ी,  
 तागा, सूत । [ भ्रान्ति ।  
 लंक्ष (सं.) इषत् निद्रा, बकाबट,  
 लंक्षु (वि.) क्लान्त, भ्रान्त,  
 धकित, निद्रातुर, आठव, निद्राकु ।  
 लन्मथ (सं.) निर्दिष्ट, क्षित, लीन,  
 तल्लीना । [ वप्य सम्पन्न युवती ।  
 लन्वंगी (सं.) कोमलांगी, रूपल-  
 लप (सं.) तपस्या, शरीरकष्ट,  
 शरीर संयमका उपाय, हरिमजन,  
 गर्मी, उष्णता ।  
 लपप्पीर (सं.) हुलास, तवाखीर ।  
 लपप्पीरिया रंगपुं (वि.) तवा-  
 खीरके रंगसे मिलता हुआ ।  
 लपत (सं.) ज्वर, बुखार, ताप ।  
 लपपुं (कि.) गर्म होना, तपना,  
 चमकना, ईतशार करना, क्रोध  
 होना ।  
 लपप्प्या (सं.) तप, तपस्या ।  
 लपप्पीर (सं.) तपसीक, विवरण,  
 वर्णन, कुल्ला शिक ।

लपप्पीर (सं.) तपसीक, विवरण,  
 लपप्पी (सं.) तपकरनेसाल, चपि,  
 मुनि, शानप्रस्थाश्रमी, मतधारी ।  
 लपपुं (कि.) तपना, गर्मकरना,  
 क्रोध चमकाना, किसीके द्वारा  
 ईतशारी करना, रोचना ।  
 लपप (सं.) तलाशी, ईदमाक,  
 जांच पड़ताल, खोज, तहकीकात ।  
 लपपनार (सं.) परीक्षक, ईदने-  
 वाला, जांचनेवाला ।  
 लपपपुं (कि.) तलाश करना,  
 चौकसी करना, जांच पड़तालना,  
 ईदना । [ क्रोधमें भग्न उठना ।  
 लपी नपुं (कि.) क्रोध होना,  
 लपेपुं (सं.) तबेला, पात्र विशेष  
 (प.) तपाहुवा, गर्म कियाहुवा ।  
 लपेसरी-सरी (सं.) देखो लपेरी  
 लपेपण (सं.) तपद्वारा प्राप्त शक्ति ।  
 लपेवन (सं.) तपस्विनोंका आश्रम  
 ऋषि मुनियोंके रहनेका बन ।  
 लपे (वि.) उष्ण, संताप बुद्ध,  
 तपाहुवा ।  
 लपेकेकेपुं (कि.) बेच डालना,  
 छुपाना, गुप्त रखना । [ छुपाना ।  
 लपेकेकेपुं (कि.) गुप्त होना,  
 लपेप (सं.) फर्क, फासला, अंतर,  
 गलती, भूल, उपाय ।  
 लपे (सं.) पत्तर, तस्ती एक  
 छोटी बाल, पतल ।

कम्पटी ( सं. ) एक छोटी बाली  
रक्षात्री, छोटा पत्तर ।  
कम्पटीपु ( कि. ) उबालना ।  
कम्पटी-७ ( सं. ) तबले बजानेवाला  
तबलिया ।  
कम्पटी ( सं. ) तबला, बाद्य विशेष ।  
कम्पटी ( सं. ) स्वभाव ठचि, चाह ।  
कम्पटी ( सं. ) बैद्य, हकीम ।  
कम्पटी ( सं. ) अस्तबल, घोड़े,  
बांधनेका ठान ।  
कम् ( सं. ) अंधेरा, अंधकार, तिमिर,  
क्रोधमा अंधापन ।  
कम्पटी ( वि. ) तिगुना, त्रिगुण,  
तिहोरा, तीनतहता ।  
कम्पटी ( वि. ) तीक्ष्ण, कटु, चर-  
परा, कड़वा ।  
कम्पटी ( सर्व. ) तुमको, तुम्हारेको ।  
कम्पटी-२२ ( सं. ) मूर्च्छा, चक्कर ।  
कम्पटी ( सं. ) प्रयोजन, सम्बन्ध, विन्ता  
मिसबत । [ तमाल ।  
कम्पटी ( सं. ) तमालु, तम्बाकू,  
कम्पटी ( सं. ) थण्ड, चपत; चोंटा ।  
कम्पटी ( कि. वि. ) बिलकुल, सब,  
( वि. ) पूर्ण, सारा, सब ।  
कम्पटी ४२पु ( कि. ) पूर्ण करना,  
कम्पटी ( कि. ) किर्योकी पौधाक  
को रेशम और स्वर्णसे मंडित हो ।

कम्पटी ( सं. ) परिपूर्णता, सम्पू-  
र्णता, कामयाबी, योग्यता ।  
कम्पटी ( सं. ) तुम्हारे लिये, तुमही,  
आपही, अपने हीतई ।  
कम्पटी ( सर्व. ) तुम्हारा, आपका ।  
कम्पटी ( सं. ) वृक्ष विशेष, कालाचौर ।  
कम्पटी ( सं. ) तेजपत्र ।  
कम्पटी ( सं. ) दर्शक, तमाशा  
देखने वाले, भांड । [ खेल ।  
कम्पटी-सो ( सं. ) दृश्य, कौतुक,  
तमे ( सर्व. ) तुम, आप ।  
कम्पटी ( सं. ) बड़ाचूल्हा, भांड ।  
कम्पटी ( सं. ) त्रिविध गुणोके अंतर्गत  
एकगुण विशेष, क्रोधान्धता ।  
कम्पटी ( सं. ) देखो कम्पटी  
कम्पटी ( सं. ) लीमा, डेरा, पट, मण्डप  
रावटी, छोलदारी, वज्रगृह ।  
कम्पटी-भांवे ( कि. ) डेरा-  
खड़ा करना, खेमा लगाना ।  
कम्पटी ( सं. ) बाद्य विशेष, तानपूरा,  
तीन तारकी बोन ।  
कम्पटी ( सं. ) पान, ताम्बूल, कानेका  
पान, नागर बेलका पत्ता, तमोल ।  
कम्पटी ( सं. ) ताम्बूल, पानका  
व्यापारी, पान बेचने वाला, तमोली ।  
कम्पटी ( सं. ) घाटनाव, छोटी खाड़ीवा  
कोल, दूधकी मलाई, ( वि. )



- रसीका, सरस, ताजा, खीका, जोदा  
संका, बनाव, दौलतमन्द, मसो-  
न्मत्त, नसेमेंदूर, आसूदा, बकुबी  
( कि. वि. ) तब, उससमय ।
- त२३४ ( सं. ) बनावट, झूठ, पाखंड,  
धाका, कपट ।
- त२३५ ( सं. ) जालमाज पाखण्डी  
( वि. ) अधर्मी, बेईमान ।
- त२३५ओ ( सं. ) आनन्दी, गैवार ।
- त२३५-३६ ( सं. ) सिपाही सैनिक  
यवन, मुसलमान ।
- त२३६ ( कि. ) अटकन करना  
अन्दाजा करना, अनुमान करना ।
- त२३७ ( सं. ) तूण, निर्दय, क्रोध,  
बाण रखनेका माया ।
- त२३७र ( सं. ) झाक, साग, माजी ।
- त२३७ ( सं. ) बादानुवाद, विवाद  
झगड़ा, तर्क ।
- त२३७५ ( सं. ) उपाय, यज्ञ तरीका  
हिकमत, तरतीब, तदबीर ।
- त२३७ ( सं. ) लहर, उर्मी बीच,  
ढेक, हिलकोरा, उभंग मौज,  
कल्पना, ख्याल । [ जान्हवा ।
- त२३७५ ( सं. ) गैगानदी, सुरसरि,  
त२३७५-३८ ( कि. ) तुच्छ  
जानना, वृणा करना, नकरत करना ।
- त२३७५ ( सं. ) अनुवाद, उल्हा,  
माथान्तर ।
- त२३८ ( सं. ) देखो तऽ ।
- त२३८ओ ( कि. ) ओषमें  
बोलना, गुरीकर बोलना ।
- त२३८ ( वि. ) तीन ( सं. ) कोईभी  
वस्तु जो पानीमें तैरती हो ।
- त२३८ ( सं. ) सूर्य, रवि सूरज ।
- त२३८ ( सं. ) नाव, नौका ।
- त२३८ ( सं. ) तूण, बास, तिनका ।
- त२३८ ( कि. वि. ) तुंत, शीघ्र, फौरन,  
तत्क्षण, समयपर, समयमें ।
- त२३८ ( सं. ) अस्तित्व, तत्व, भूक,  
तत्व ।
- त२३८ ( सं. ) प्रबन्ध, बन्दोबस्त ।
- त२३८ ( वि. ) तैरता हुआ, यशस्व  
सफर, भरापूर ।
- त२३८ ( सं. ) तैरैया, तेरनेवाला ।
- त२३८ ( सं. ) तूत, संतुष्ट, परितो  
बान्धित । [ छुप ।
- त२३८ ( वि. ) दुबला, पनका,  
त२३८ ( उप. ) ओर, दिसा, पक्ष, बगल ।
- त२३८ ( कि. ) लड़ना, छटपटाना ।
- त२३८ ( सं. ) पक्षपात ।
- त२३८ ( सं. ) तरफ, पक्ष ।
- त२३८ ( वि. ) शिक्षित, पठित ।

तरीख-७ ( सं. ) तरबूज, कक  
 शिख । [ पत्तर ।  
 तरीख-८ ( सं. ) ताम्रपत्र, ताँबेका  
 तरीख-९ ( सं. ) कजर वृक्षके मदको  
 खींचकर बाहिर निकालनेवाला ।  
 तरीख-१० ( सं. ) तलवार, खड्ग, कृपाण ।  
 तरीख-११ १२ १३ १४ १५ ( कि. ) बड़ा  
 खावधान रहना ।  
 तरीख-१६ ( सं. ) तलवार, बाला,  
 खड्ग धारी, तलवारसे लड़ने वाला ।  
 तरीख-१७ ( कि. ) तैरना, बहना, काम-  
 बाध होना, सफल होना, मुक्तिपाना  
 मोक्ष पाना, बाहर आना ।  
 तरीख-१८ ( कि. ) बार होजाना, तैर  
 जाना ।  
 तरीख-१९ ( सं. ) वृषा, प्यास, लालसा,  
 अभिलाषा, लकड़बग्घा, पशु विशेष ।  
 तरीख-२० ( कि. ) बड़ी लालसा करना,  
 तरसना, बदले के लिये ललायित  
 होना । [ पिपासित ।  
 तरीख-२१ ( सं. ) प्यासा, वृषित,  
 तरीख-२२ २३ ( सं. ) तड़का, डंठा ।  
 तरीख-२४ ( सं. ) तराछ, तकरा ।  
 तरीख-२५ ( सं. ) तौलने का पलड़ा,  
 पूर्ववत् ।  
 तरीख-२६ ( सं. ) देखो तरीख-२७ ।

तरीख-२८ ( सं. ) बेड़ा, लठ्ठों का  
 बेड़ा । [ सिक्काना ।  
 तरीख-२९ ( कि. ) तैराना, तैरना  
 तरीख-३० ३१ ३२ ( कि. ) तैराना,  
 ऊपर आना, सफलता पालेना ।  
 तरीख-३३ ( सं. ) पारीसे आने वाला  
 ज्वर, आंतराज्वर ।  
 तरीख-३४ ( सं. ) पहुँचाव, देशनिकाला  
 तरीख-३५ ( सं. ) वृक्ष, पेड़, पादप, हुम ।  
 तरीख-३६ ( सं. ) नवीन, नूतन, युवा ।  
 तरीख-३७ ३८ ३९ ( सं. ) जवानो, यौवना  
 तरीख-४० ( सं. ) युवती, जवान ली ।  
 तरीख-४१ ( सं. ) वृक्ष की जड़, पेड़  
 के पेड़ी के नीचे की भूमि ।  
 तरीख-४२ ( सं. ) दोबोदी बैलों के  
 लिये जूड़ा या जूड़ी ।  
 तरीख-४३ ४४ ४५ ( कि. ) बड़ा परि-  
 श्रम करना, भ्रम काम करना ।  
 तरीख-४६ ( सं. ) मेह, प्रकार, अंतर,  
 किस्म, भौति, डब, शक ।  
 तरीख-४७ ४८ ४९ ( वि. ) किस्म किस्म  
 का, भौति, भौति का, अनेक  
 प्रकार का ।  
 तरीख-५० ( वि. ) मित्र, न्याया,  
 नावाचर्ष, मित्रविमित्र, सतरंग ।  
 तरीख-५१ ( सं. ) छोटा बर्मा, बर्मी,  
 छिद्र करने का छोटा बर्ज,

तरेषां ( सं. ) तरिबद्ध, बारीक ।

तरेष्वर ( सं. ) वृक्ष, पाक, तह, पेड़ ।

तर्क ( सं. ) कल्पना, क्वाल, अनुमान, बहस, दर्शन, अनुमान, अनुमानोक्ति ।

तर्कान्तर-ही ( वि. ) तेष्वदि, तर्क बुद्धियुक्त नटखट, तर्कधारक नैयायिक । [ न्यायविद्या ।

तर्कविद्या ( सं. ) आन्वीक्षिकी,

तर्ककर्मित ( सं. ) तर्क करने का बल ।

तर्कशास्त्र ( सं. ) दर्शन विशेष, न्यायशास्त्र, इत्ये मंतक, फिलॉसफी, तत्त्वज्ञान ।

तर्कनी ( सं. ) प्रथम अंगुली, अंगुठे के पास की अंगुली ।

तर्त ( क्रि. वि. ) देखो तरेत

तर्पथ ( सं. ) देहां तृप्ति, देवताओं को अलङ्कार, मृतपुरुषों के नामोच्चारण सहित जल देना ।

तर्पयुं ( क्रि. ) क्षुशकरना, संतुष्ट करना । [ इष्ट ।

तर्पत ( वि. ) तृष्ट, संतुष्ट, प्रसन्न,

तर्पित ( वि. ) प्यासा, तृप्ति ।

तर्क ( सं. ) शरीर पर का तिल, तिल, मसा । [ तर्क, दर्शन ।

तर्क-य ( क्रि. वि. ) तर्क, जब

तर्क ( वि. ) करपटा, ककुवा, तीखा, कटु । [ इष्ट ।

तर्क ( सं. ) कूर, उच्छल, कर्लाव,

तर्कयुं ( क्रि. ) इच्छुक होना, तर्पना, किसी वस्तु के लिये मत्तता करना । [ अभीर्षता ।

तर्कपाप ( वि. ) वेसत्र, बेचैन,

तर्कपीनयुं ( क्रि. ) तर्पना, छटपटा जाना ।

तर्क ( सं. ) दुरी जावत ।

तर्कवार ( सं. ) देखो तरेवार

तर्कसरा ( सं. ) तिल के वृक्ष, झाड़ी ।

तर्क ( सं. ) त्याग, जी पुष्प का छोड़ना, तिलाक ।

तर्कान्तराभुं ( सं. ) त्यागपत्र, तिलाक की हस्तावेज । [ त्याग देना ।

तर्कान्तरापी ( क्रि. ) तिलाक देना

तर्कपी ( सं. ) गांवकी साखना माक गुजारी का मुनीम ।

तर्कपा ( सं. ) बिचा, गुण, उपाय,

तर्क-सं ( सं. ) दूँद, खोज, इन्वेषायरी [ तिन्नी, पेदकी तिन्नी ।

तर्क-पी ( सं. ) तिन्नी, पिन्नी, तप

तर्कपीन ( वि. ) नीन, गरक, मन्न, निमन्न, तन्मय । [ संज, मंज ।

तर्केश ( सं. ) जानू, डोम, ताबीज,

तर्केशात ( सं. ) देखो तर्केश

तव ( कि. वि. ) तब, उस समय, तौ।  
 तवभर ( वि. ) घनाढ्य, दौलतमंद।  
 तवाध ( वि. ) दुर्भाग्य, विपत्ति, आपद्, तबाही, बर्बादी।  
 तवाधन्युं ( कि. ) कमजोर होना, दुर्बल होना, मुर्झाना, पिचलना।  
 तवाधुं ( सं. ) पूर्ववत् [ सम्मत्ता।  
 तवाधु ( सं. ) सुशीलता, नम्रता, तवारीय ( सं. ) इतिहास, वर्णन।  
 तवी-वे। ( सं. ) तबा, लोहेका गोख पत्तर जिसपर रोटीयाँ सिकती हैं।  
 तसडे। ( सं. ) नकचढी, बौली ठोली, ताना, क्रोध, कोप, रोष।  
 तसन्तु ( वि. ) तंग, कसा, निकट।  
 तसही ( सं. ) तकलीफ, कष्ट।  
 तसथी ( सं. ) माव्य, सुगन्धी।  
 तसथीर ( सं. ) देवो तसथीर  
 तसथे। ( सं. ) चमड़ेका फीता, चर्म पट्टिका। [ लहर।  
 तसथ ( सं. ) लकीर, धारी, रेखा,  
 तसथीर ( सं. ) चित्र, फोटो, छवि मूर्ति। [ बैसा,  
 तसु ( कि. वि. ) उसके समान, तैसा,  
 तसु ( सं. )  $\frac{1}{2}$  गज, लम्बाई मापनेके लिये गजका  $\frac{1}{2}$  वां भाग, इंच।  
 तसुभर ( सं. ) चोर, चौर, कुटेरा, चोरा अपहरण, हथरोका वगैरे करानेवाला।

तसुभुं ( कि. ) चुराना, चुराना, छुपाना, छुपाना, छुपाना।  
 तसुभात ( कि. वि. ) इसीलिये, कारणात्, इसकारण, इसी सबबसे।  
 तसु ( सं. ) सावधिसंधि, क्षणिक संधि, झुलह, संधि, विश्राम, सुख, चैन।  
 तसुधीय ( वि. ) ठीक किया हुआ, निश्चित, स्थापित, ठहराया हुआ, मुकर्रर। [शंकाकी दशामें, शंकित।  
 तसुधु ( वि. ) सन्देहकी हालतमें,  
 तसुनाधु ( सं. ) सौदा, ब्यापार, व्यवसाय, लिखित सधिपत्र, लिखा हुआ झुलहनामा।  
 तसु ( कि. वि. ) बही, बहाही, बहा।  
 तण ( सं. ) पैदा, अधोभाग, तला, तलवा, तली, पैदी।  
 तणभट ( सं. ) नैवके लिये बाड़ा हुआ लकड़ीका लड़ा।  
 तणधात ( सं. ) बाँची भूमि, पहाडकी जड़ या सरेदी, पर्वतकी पैदी।  
 तणधाटी ( सं. ) तराई। [ कड़ाई।  
 तणधुी ( सं. ) भूँनने या तलनेकी।  
 तणधु ( सं. ) ग्राम भूमि, वह भूमि जो ग्रामके निकट ग्रामसे सम्बन्ध रखती हो।  
 तणधुं ( वि. ) स्वदेव का, देशीय।

तमिऴ ( सं. ) बे चैनी, व्याकुलता ।

तमिऴुं ( कि. ) भूना, तल्ला ।

तमिऴ ( सं. ) तोशक, सुजनी, बिछौना । [ हिसाब ।

तमिऴी ( सं. ) गोंब का लेखा या

तमिऴुं ( सं. ) माल गुजारी के सजानची का चन्दा ।

तमिऴतमिऴ ( सं. ) लोक विशेष, चोथा पाताल । [ सर ।

तमिऴव ( सं. ) तालाब, सरोवर,

तमिऴवी ( सं. ) तलैया, छोटा ताल ।

तमिऴसुं ( कि. ) चोंपना, दबाना ।

तमिऴ ( सं. ) जूते की तली ।

तमिऴ्या ( सं. ) पेदी, पैदा, तली ।

तमिऴुं ( सं. ) पैदा, तलुका ( पैरका )

तमे ( सं. ) नीचे, उतरकर, तले नीचे की ओर, अघो भाग में कुछ कम ।

तमेउप ( उप. ) उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ ।

तमेउप ( सं. ) बेचैनी, बेकली ।

तमेटी ( सं. ) पर्वतकी पेदी, पहाड़की तरेटी या तराई ।

तक्षक ( सं. ) बड़ई, लकड़ी काटने वाला, सर्पराज । [ ओर

तां ( कि. वि. ) वहां, उधर, उस

तांत ( सं. ) तांत, शेवा, सूज, चागा, रेखा, सार, अंतोऽन्तराका डेरा ।

तांतवे ( सं. ) चागा, सूज ।

तांतवे-जिथे ( सं. ) एक प्रकार का शाक, भाजी विशेष, तरकारी ।

तांतु ( सं. ) चावल,

तांतु भाटी ( सं. ) लाल मिष्टी ।

तांतु-डे ( सं. ) तामपान्न, तौबेकी बनी तस्तरी, तौबेका गोल पान्न । [ करनेका पान्न ।

तांतु-डी ( सं. ) एक प्रकारका स्नान

तांतु-सिक्का ( सं. ) तौबेका सिक्का, ताम मुद्रा । [ विशेष ।

तांतु ( सं. ) ताँबा, ताम, धातु

तांतु ( सं. ) पान, नागरबेलका पान, पत्ते और पानका लपेटा ।

तांतु-सिक्का ( सं. ) भरतका बर्तन, कौसी और पीतलके मिश्रणसे बनाहुवा पान्न ।

तांतु ( कि. वि. ) उस स्थानसे, वहाँसे, उस समयसे ।

तांतु-धुंधी ( कि. वि. ) वहाँ तक, तक, उस जगह तक ।

ता ( सं. ) तल्ला, ताव, कागजका तल्ला, संवत्सरे में लगनेवाली गुर्ज शीतक प्रत्यय ।

दाई ( सं. ) पुनवेवाला ।  
 दाई ( सं. ) बेपरवाह, बेफिक्र,  
 असहचान, अपरिणामदर्शी, उता-  
 वला । [ विशेष ।  
 दाईय ( सं. ) तारबाध, नाथ  
 दाईय ( सं. ) बेइयाका गाने  
 बजानेका समाज, तवाइफ, नाचने  
 वाली बेइया ।  
 दाई ( सं. ) छाछ, तक, मठा,  
 मही, दूधका पानी, तोर, गोरस,  
 महेरी ।  
 दाई ( सं. ) अवसर, मौका, मौ ।  
 दाई ( कि. ) चूरना, ताकना,  
 इकट्ठ दृष्टिसे देखना । [ पौरुष ।  
 दाई ( सं. ) शक्ति, बल, ताकत,  
 दाई ( सं. ) जल्दी, शीघ्रता,  
 हुक्म, आज्ञा, आदेश ।  
 दाई ( सं. ) गुफा, गुप्तवास,  
 छातील, विश्राम ।  
 दाई ( सं. ) कपड़ेका सारा टुकड़ा ।  
 दाई ( सं. ) बागा, सूत्र, गहिराई,  
 मोटा कुरदरा सतीवला ।  
 दाई ( सं. ) बलवा ।  
 दाई ( सं. ) मुकुट, राजविन्ह ।  
 दाई ( सं. ) गुप्त, छुपाहुवा ।  
 दाई ( सं. ) राजी कुशी, नवी-  
 नत, कुसल केम, कुसल आनन्द,  
 शुच ।

दाई ( सं. ) तराईके पकड़े ।  
 दाई ( सं. ) मुकुट वाला, राजा ।  
 दाई ( सं. ) अभीष्ट किन्ना  
 हुवा, बोदे समयका केस, पत्र आदिमें  
 लिखनुकने के पश्चात् लिखाहुवा ।  
 दाई ( सं. ) शीतलता, नवी-  
 नता, ताजगी, मिठास ।  
 दाई ( सं. ) देखो दाई ।  
 दाई ( सं. ) सुशीलता, नम्रता,  
 इज्जत । [ मोटा, भराहुवा ।  
 दाई ( वि. ) नया, ताजा, सुरतका,  
 दाई ( कि. ) ताजा करना ।  
 दाई ( वि. ) आश्चर्य विस्मय ।  
 दाई ( कि. ) आश्चर्य होना,  
 विस्मय होना ।  
 दाई ( सं. ) आश्चर्य, अचंभा ।  
 दाई ( सं. ) देखो दाई ।  
 दाई ( वि. ) ताजा, नया ।  
 दाई ( कि. ) प्रायश्चित्त करना,  
 इष्टित होना ।  
 दाई ( कि. ) पूर्ववत् ।  
 दाई ( कि. वि. ) फिर आ-  
 रंभसे, फिरसे, फिर शुरूसे ।  
 दाई ( सं. ) टाट, ( वि. ) बंध, छुपा ।  
 दाई ( सं. ) बौंसकी बौंसट बौंसकी  
 ताड़ी । [ ताल दूध ।  
 दाई ( सं. ) ताड़, ताड़दूध,

ताडक ( सं. ) देखो ताड ।  
 ताडक ( सं. ) धमकाना, आरना ।  
 ताडक ( सं. ) पैसा बनानेके ताडकी  
 पत्ती ।  
 ताडक ( सं. ) ताड़का पत्ता ।  
 ताडक ( सं. ) पूर्ववत्, एक प्रकारका  
 कपड़ा, बल विशेष ।  
 ताडक ( सं. ) ताड़ वृक्षका फल ।  
 ताडक ( सं. ) नृत्य, नटन, एक  
 प्रकारका नृत्य । [ ताड़ना करना ।  
 ताडक ( कि. ) वृष्टदेना, सजावेना  
 ताडी ( सं. ) ताड़वृक्षके फल का रस,  
 मादक श्रव्य विशेष, तालरस ।  
 ताडी ( सं. ) सुतककी मत्स्य ।  
 ताड ( सं. ) मरोड़, ऐठन, तजी,  
 कमी, महुँगी, तकजा, हठ, जिद्द,  
 कूट, वियोग ।  
 ताडपानी ( कि. ) झगड़ा होना,  
 विवाद होना टँटा होना ।  
 ताडपु ( कि. ) खींचना, अपने  
 पक्षमें लेना, तानना ।  
 ताडताड ( सं. ) खींच ताव, ऐंचा  
 ताणी, घसीटना, और खींचना ।  
 ताडमारना ( कि. ) तानावेना,  
 भला बुरा कहना ।  
 ताडमि ( सं. ) तार बनानेवाला ।  
 ताडमि ( कि. वि. ) ओरसे, खींचकर ।

ताडमि ( कि. वि. ) कमी कटि-  
 नताके, बड़े कट पूर्वक ।  
 ताड ( सं. ) तेराबे ९१, ताना ।  
 ताड ( सं. ) ताना, सूत या रस्सी-  
 द्वारा पुराहुवा ताना ।  
 ताडपानी ( सं. ) ताका बाना ।  
 ताड ( सं. ) बाप, पिता, जनक ।  
 ताड ( सं. ) मोटी रोटी ।  
 ताड ( वि. ) उष्ण, गर्म, ताता,  
 गर्म मिजाज का, तेजमिजाज का ।  
 ताडक ( कि. वि. ) तुरंत, फौरन,  
 तत्क्षण । [ फानन, फौरन ।  
 ताडक ( वि. ) उसी दम, आनन,  
 ताडक ( सं. ) अभिप्राय, आशय,  
 मर्म । [ अर्थ, वाक्यी ।  
 ताडक ( सं. ) अभिप्राय का  
 ताड ( वि. ) गर्म मस्तिष्क का ।  
 तान ( सं. ) राग, स्वर, गान का  
 एक अङ्ग विशेष, चाह, लालसा,  
 अभिमान, धमक, झपट ।  
 ताने ( सं. ) ताका, बानाना ।  
 ताड ( सं. ) यमी, ज्वर, बुखार,  
 तेज, हैरानी, ठठ । [ खेपी ।  
 ताड ( वि. ) ताकन, कड़ा, आसता,  
 ताडक ( सं. ) भूमि पर  
 जलाई हुई अग्नि, तपने के लिये  
 बना हुई आग ।

- दांशु ( कि. ) तपना, बर्न होना ।  
 दांशु ( सं. ) योगी, तपस्वी,  
 ऋषि, साधु, तप करने वाला ।  
 दांशु ३३ ( सं. ) साधुकार्य,  
 ऋषिकर्म, तपस्वी के काम ।  
 दांशु ( सं. ) एक प्रकार का  
 रेशमी बक, रेशमी कपड़ा विशेष ।  
 दांशुतोष ( कि. वि. ) तुरंत,  
 शीघ्र, फौरन ।  
 दांशुत ( सं. ) वह सन्तक जिस में  
 सुर्पा रक्त कर गड़ते हैं, मूर्ति  
 प्रतिमा, हसन और हुसैन के नाम  
 पर बनाई हुई अर्ध, ताजिया, बॉम  
 की खपावियों द्वारा बनाया हुआ  
 मकबरा—जो बहु मूल्य कागजों से  
 बेधित होता है और जिसे यावनी  
 मास मुहर्रम में निकालते हैं ।  
 दांशु ( कि. वि. ) परतन्त्र, परबन्ध,  
 पराधीन ।  
 दांशु ३२ ( कि. ) आधीन करना,  
 स्वयं करना, जीतना, हराना ।  
 दांशु ३३ ( कि. ) बंध होना,  
 आधीन होना, अधिकार में होना ।  
 दांशु ३४ ( सं. ) नौकर, दास,  
 आधीन, परबन्ध, आश्रित ।  
 दांशु ३५ ( सं. ) दासता, नौकरी  
 आधीनता, युक्तता, निवृत्तता ।  
 दांशु ( सं. ) अधिकार, बंध, हक,  
 कब्जा, दखल ।  
 दांशु-डो ( सं. ) देखो दांशु  
 दांशु ( सं. ) क्रोध रोष, गुस्सा ।  
 दांशु ( वि. ) झोपी, आगसा,  
 बिड़बिड़ा । [ पान ।  
 दांशु ( सं. ) नागरबेल का पत्ता,  
 दांशु ( सं. ) ताम्बा, धातु विशेष ।  
 दांशु ३६ ( सं. ) तमेरा, ठठेरा, ताम्बा  
 आदि धातु का काम करने वाला ।  
 दांशु ३७ ( सं. ) ताँबे का बना  
 हुआ पत्र जिसपर पहिले राजाका  
 लिखी जाती थी । ताँबे की पट्टी  
 जिसपर दान या मुवाफ़ी की जाय-  
 दादों का ब्यौरा लिखा जाता था ।  
 दांशु ( सं. ) नर्तकी सम्प्रदाय,  
 वेत्या समूह, रीतिब्यों का समुदाय ।  
 दांशु ( सं. ) टेलाघ्राफ, तार, धागा,  
 सूत्र । [ कर्ता, बचानेवाला ।  
 दांशु ( वि. ) रक्षक, पालक उद्धार  
 दांशु ( सं. ) चांदी और सोने के  
 तारों की बस्तकारी और जरी  
 का काम ।  
 दांशु ( सं. ) छुटकारा, उद्धार,  
 निर्णय, नजात, मुक्ति, मोक्ष,  
 गिरवी, ऋण प्राप्त करने को बतौर  
 जमानत रखा हुआ वस्तु ।



ताश्तम्भ ( सं. ) न्यूनाधिक्य, सामान्य, थोड़ा बहुत भेद ।

ताश्तार ( सं. ) देखो ताश्

ताश्तली ( कि. वि. ) बादमें, उस के या इसके बाद, पीछे, पश्चात् ।

ताश्तपु ( कि. ) हिसाब की किताब में जमा और खर्च की जाव करना, उठाना ।

ताश्तु ( कि. ) उद्धार करना, बचाना, रक्षा करना, छुड़ाना, उठाना ।

ताश्तल ( सं. ) नष्ट, बरबाद ।

ताश्तमंडल ( सं. ) नक्षत्र मंडल, नक्षत्र समुदाय । [ का रिन ।

ताश्तम ( सं. ) दिन, तिथि महीने

ताश्तल ( सं. ) संक्षेप, सारांश ।

ताश्तल ( सं. ) प्रशंसा, बढ़ाई, कीर्ति यश वर्णन, श्लाघा ।

ताश्तल्लार ( वि. ) प्रशंसा योग्य, श्लाघ्य, स्तुत्य, उत्तम, श्रेष्ठ ।

ताश्तल्लायक ( वि. ) पूर्ववत् ।

ताश्तली ( सं. ) तरुणी, युवती ।

ताश्तल्य ( सं. ) जवानी, यौवन ।

त रे ( कि. वि. ) उस वक्त, तत्काल, तत्समय, तुझे, तुझको ।

ताश्तल ( सं. ) नक्षत्र, तारक, ग्रह, आकाश की पुतली, तैरैया ।

ताश्तल ( सर्व. ) तैरा ।

ताश्त ( सं. ) छन्द, पद, नाच, मनुष्य कर्म बाहु खड़ा हो वह परिमाण, भिनोद, विलस, मर्द, मंजापन । [ मुकुट ।

ताश्तल ( सं. ) कपाळ, सिर, सिरका

ताश्तल्लेख ( सं. ) मिथ्या भूमिधाम, व्यर्थ का ठाठबाट ।

ताश्तल्लेखी ( सं. ) चिंता, शोच, व्यग्रता, बेचैनी, बेकली ।

ताश्तली ( सं. ) शिक्षा, अभ्यास, पिछा

ताश्तली अभ्यापी ( कि. ) शिक्षा देना ।

सिखाना, बतलाना, तालीम देना ।

ताश्तलीमालु ( सं. ) अबाढ़ा, दगल, शिक्षागृह, जहा कुछ सिखाया जाता हो ।

ताश्तलीमालु ( सं. ) तालीमयाप्ता, शिक्षा प्राप्त, शिक्षित, सीखा हुआ गुणी । [ भाग, तलुवा, ताल ।

ताश्तु ( सं. ) तारक, मुखके ऊपर का

ताश्तु ( वि. ) सम्बन्ध, प्रयोजन, ताल्लुक । [ ताल्लुकेदार, जमींदार ।

ताश्तुल्लार ( सं. ) पटेल, मुखिया,

ताश्तुल्ले ( सं. ) जिला, प्रान्त, इलाका, अमलदारी ताल्लुक ।

ताश्तुल्लानी ( वि. ) तालम्य, शिष्ट का ताल्लुबान से उच्चारण हो,

ह, ई, च, छ, ज, झ, ञ, ट, थ,

ताम्र-त-व-र-व-न ( सं. ) ताम्र-  
कल, चवचव, द्रव्यपात्र ।

ताव ( सं. ) ऊपर, उच्चार, ताप,  
कागजका तहता, पूरा कागज ।

तावडी-डे ( सं. ) हंडा, कोहे या  
ताम्बे का पात्र, चिकनी मिट्टी का  
पत्तर ।

तावपुं ( कि. ) गर्म करना, तपाना ।

तावी ( सं. ) देखो तवी

तावीश ( सं. ) मंत्र, जादू, टोना,  
गंठा मंत्र, गले में या मुखा पर  
बांधा जानेवाला अलङ्कार विशेष ।

तास ( सं. ) घण्टा, घड़ियाल,  
बक, ताम्रपात्र, तहता ।

तासिक ( सं. ) किसी प्रकारकी  
धातु से बना हुआ । [ वक्र ।

तासितो ( सं. ) एक प्रकारका रेशमी

तासिथी ( सं. ) बसूल ।

तासिपुं ( कि. ) काटना, टुकड़े  
टुकड़े करना ।

तासीर ( सं. ) मिजान, सूरत,  
शक्त, स्वभाव, बान ।

तासुं ( सं. ) तासा, एक प्रकारका  
बोल, वाद्य विशेष ।

तासिणी ( सं. ) प्याले खरीन्ना एक  
पात्र विशेष ।

तासिणुं ( सं. ) देखो तासिणी

तासिक ( सं. ) ठंड, शीतलता ।

तासिक ( सं. ) ताजगी, ठंडाई ।

तासिकुं ( वि. ) ठंडा, शीतल ।

ताण ( सं. ) देखो ताध

ताणपुं ( सं. ) ताक, मुखा का  
भीतरी ऊपर का भाग, तारु ।

ताणी ( सं. ) हाथों की पीठ का  
शब्द, करतल ध्वनि, तारी ।

ताणी भाङ्गी ( कि. ) ताकियां  
पीटना, ठंडा उड़ाना, ताली बजाना ।

तासो प्तावपी ( कि. ) हँसी कराना,  
दिल्ली उड़ाना ।

ताणुं ( सं. ) ताला, कुल्फ ।

ताणे ( सं. ) पत्र व्यवहार, नियम  
पत्र, कौल, करार । [ टिकड़ ।

तिक्क ( सं. ) मोटी रोटी, रोट,

तिथ ( सं. ) तीखी वस्तु, चर्परी  
चीज ।

तिथ ( सं. ) व्याकुलता, शिष्ट,  
चबराहट, दौड़धूप, खड़बड़ी ।

तिथस ( सं. ) तीक्ष्णता, चर्परा,  
हट, कड़वापन ।

तिथुं ( वि. ) तेज, चर्परा, कटु,  
तीखा । [ ध्वज ।

तिथेरी ( सं. ) खजानची, धन-

तिथेरी ( सं. ) रुपया पैसा रखनेकी  
कोहे सम्बद्ध, खजाना, बनानार ।

तिथि ( सं. ) नोकदार, तेज, पैना।

तिथर ( सं. ) ऊपसी, डडुवा, पकी बिसेच।

तिताथीउं ( वि. ) खोखला, खालां।

तितिक्षा ( सं. ) धैर्य, धीरज, क्षमा, सहन क्षमता।

तिथि ( सं. ) तारीख, चांद्रमास का दिन। चन्द्रकला की किया, प्रतिपदादि तिथि।

तिथिक्षम ( सं. ) तिथि का नाश, तिथि की हानि, तिथि की टूट।

तिथ्य ( वि. ) त्रिगुण, तिलड़ा, तिहोरता।

तिथार्थ ( सं. ) टिपार्ह, तिगठी, तीनपोंच की काट की बनी तिपार्ह।

तिथिर ( सं. ) तम, अँधेरा, अंधकार।

तिरक्षम-धुं ( वि. ) तिरछा, टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ाहुवा, ढालू।

तिरंदाज ( सं. ) धनुष चलाने वाला, धनुर्दर, धनुष बिद्या में प्रवीण। [ धनुर्वेद।

तिरंदाज ( सं. ) धनुष बिद्या,

तिरंदाज ( सं. ) देखो तीरंदाज।

तिरंदाज ( सं. ) देखो तिरंदाज।

तिरवे ( सं. ) इतनी मूर्ख बिस-पह एकबार धनुषद्वारा बाण छोड़ा जावे वह अंतरको बाण फेंकनेसे हो।

तिरक्षम ( सं. ) निम्हा, कपकप अप्रतिष्ठ, डुवा।

तिरक्षीत ( सं. ) देखो तिरक्षीत।

तिथ ( सं. ) देखो तथ।

तिथ ( सं. ) चन्दनादिका मस्तकपर लेपन, सांप्रदायिक बिन्दु बिसेच जो मस्तकपर लगाया जाता है।

तिथाने ( सं. ) राग बिसेच, तिथाना नामक राग।

तिसभासभ ( वि. ) कोधी, अकडू, गरम मिखाजका, शेखीखोर।

तीक्ष्ण ( सं. ) कुदाली, खनित्री।

टीक्ष्ण ( वि. ) तेज, तीखा, पैना, कोधी, तीता, कडुवा, क्षिप्रकारी।

तीभा ( सं. ) मिर्च।

टीथुं ( वि. ) चरपरा, कटु, तीखा।

तीथ ( सं. ) प्रतिपक्षकी तीसरी तिथि, तृतीया।

टीथुं ( सं. ) तृतीय, तीसरा।

टीड ( सं. ) टिड्डी, टीडी।

टीतर ( सं. ) देखो तिथर।

टीर ( सं. ) बाण, शर, किनारा, पुछा, कूहा, चूतड़, कड़ी, घहन, कहलीर, धना।

तीरक्षम ( सं. ) धनुषबाण, तीर-कमान, शरछासन।

तीक्ष्ण ( वि. ) तिरछा, टेढ़ा, बौछा ।  
 तीक्ष्ण ( सं. ) क्षेत्र, पुष्पस्थान,  
 श्रुतिश्रेयितबल, तीक्ष्ण । [ धर्माचार्य  
 तीक्ष्ण ( सं. ) जैनियोंके २४  
 तीक्ष्णाना ( ष. ) तीर्थाटन, तीर्थ  
 गमन, पुष्प स्थानोंका भ्रमण ।  
 तीक्ष्ण ( सं. ) पुष्परूप, पवित्र-  
 रूप, पिता, पूज्य, पूजनीय ।  
 तीक्ष्णवासी ( सं. ) तीर्थोंमें रहने  
 वाले, यात्री, पुष्प स्थलवासी ।  
 तीक्ष्ण ( सं. ) तीर्थ गमन, पुष्प  
 स्थलोंमें भ्रमण, तीर्थ पर्यटन ।  
 तीक्ष्ण ( वि. ) अधिक तेज, कटु,  
 कड़वा, प्रखर, गर्म, चपल, चंचल ।  
 तीक्ष्णबुद्धि ( सं. ) कुसाम बुद्धि,  
 तेज बुद्धि ।  
 तीक्ष्ण ( वि. ) तीस, त्रिंश, ३०,  
 तीसभारम्भा ( सं. ) देखो तिसभारम्भा  
 तीक्ष्ण ( वि. ) देखो तीक्ष्ण  
 तीक्ष्णता ( सं. ) तजी, चर्परापन,  
 उत्पन्न, प्रखरता । [ बुद्धि  
 तीक्ष्ण बुद्धि ( सं. ) देखो तीक्ष्ण  
 तीक्ष्णधर्म ( वि. ) सुकीलमा, नौकदार  
 पैनी नौकवाला ।  
 तृ ( सर्व. ) तृ [ मैसूरकी नदी ।  
 तृभद्रा ( सं. ) नदी विशेष,  
 तृती ( सं. ) देखो तृती ।

तृ ( सं. ) सोने या चांदीकी बूटी  
 या मोटा । [ तुवरकी दाह ।  
 तृभे ( सं. ) त्वर, अश्वविशेष,  
 तृभ ( सं. ) बीज, उत्पत्ति,  
 कुल, वंश ।  
 तृभ ( सं. ) पतंग विशेष, एक  
 प्रकारकी गुड़ी, पतंगकी एक  
 जाति, वंश ।  
 तृभे ( सं. ) मौठा बाण, बोधरा  
 तीर, गपराप, चर्चा, अफवाह ।  
 तृभ ( वि. ) अल्प, थोड़ा, नीच,  
 हीन, अधम, निटहा, निकम्मा ।  
 तृभ मानपुं ( कि. ) हीन समझना,  
 न कुछ समझना, हलका मानना ।  
 तृभे ( सं. ) घृणा, नफरत ।  
 तृभे ( कि. ) नफरत करना,  
 घृणा करना ।  
 तृभे ( सं. ) हीनावस्था ।  
 तृभ ( सं. ) नाराजी, अप्रसन्नता,  
 तोड़, खंडन, दूट ।  
 तृभ ( वि. ) टुकड़ा, खंड बिखरा  
 हुआ, अलग, जुदा ।  
 तृभ ( सं. ) फूट, अनेक्य, जुदाई,  
 विलगता, टूटफूट ।  
 तृभ ( कि. ) टूटना, अलग होना,  
 जुदा होना, विलग होना ।  
 तृभ ५३पुं ( कि. ) टूट पड़ना,  
 गिर पड़ना ।

पुं० ( वि. ) दूटा हुआ, क्षणित ।  
 पुं० ( कि. ) कतना, थियरी या  
 पैवन्द लगाना, टांका मारना ।  
 पुं० ( सं. ) सूरत, शल्ल, मुहं ।  
 पुं० ( सं. ) जहाज का तखता,  
 नौका पृष्ठ ।  
 पुं० ( सं. ) बनावट, झूठ, पाखंड ।  
 पुं० ( सं. ) पक्षी विशेष । [ वपं ।  
 पुं० ( सं. ) घमण्ड, अहंकार, गर्वित,  
 पुं० ( सं. ) घमण्डी, अहंकारी ।  
 पुं० ( सं. ) छोटा व्यापारी,  
 छोटा सौदागर ।  
 पुं० ( सं. ) छोटा तूना, साधु-  
 ओका जलपात्र । [ तुम आप ।  
 पुं० ( सं. ) पहियेकी गाह ( सर्व. )  
 पुं० ( सं. ) देखो पुं० ।  
 पुं० ( सं. ) पजामा, पायजामा,  
 बिरजस ।  
 पुं० ( सं. ) बड़ी लिखा पढ़ी ।  
 पुं० ( सं. ) तुरही, तुरम, बिगुल,  
 छोहेकी कील जिसके दोनों ओर  
 नोक हो ।  
 पुं० ( सं. ) तुर्क, मुसलमान,  
 यवन, मलेच्छ, जाति विशेष ।  
 पुं० ( सं. ) सवार, बहादुर,  
 सैनिक । [ रखनेवाला, तुर्की भाषा ।  
 पुं० ( सं. ) तुर्कीस्तानसे सम्बन्ध

पुं० ( सं. ) घोड़ी की सरपट  
 चाल, तेज चाल, लपट ।  
 पुं० ( सं. ) घोड़ी, तरंगी, मल  
 मौजी, लहरी ।  
 पुं० ( सं. ) एक प्रकारका लक्ष्मण ।  
 पुं० ( कि. वि. ) देखो पुं० ।  
 पुं० ( सं. ) तुरही, तुरम, बिगुल,  
 कपड़ा बुननेवालेका डंडा ।  
 पुं० ( सं. ) कब्ज, कोष्ठवद्धता ।  
 पुं० ( सं. ) घोड़ा, नारी, डरकी,  
 जुल्हाहेके कामका औजार, दोनों  
 ओर नोकदार कील । [ विशेष ।  
 पुं० ( सं. ) तुरैया, तुरई, शाक  
 पुं० ( वि. ) न पचनेवाली दवा,  
 कब्ज करनेवाली । [ शांघ ।  
 पुं० ( कि. वि. ) तुरत, फैरन,  
 पुं० ( सं. ) देखो पुं०-तोरी ।  
 पुं० ( सं. ) अनाजका पोटा, अन्नकी  
 चोटा, बाल, या सिरा । [ समानता ।  
 पुं० ( सं. ) कृत, सौल, बराबरी,  
 पुं० ( सं. ) जमीन का कर,  
 उसकी उत्पत्ति के अनुसार लगान ।  
 पुं० ( सं. ) तुलसिका, हरि प्रिया,  
 देव वृक्ष । [ तुलसी का पत्ता ।  
 पुं० ( सं. ) तुलसी दल,  
 पुं० ( सं. ) मकान के  
 आगे तुलसी की बेदी जिसकी नित्य  
 पूजा हो । [ तोलने का यंत्र ।  
 पुं० ( सं. ) कौटा, तराजू, यवन

पुष्प (सं.) समान, बराबर, सदृश ।  
 पुष्प-वत् (सं.) देखो पुष्प ।  
 पुष्पसिंघ (सं.) एक प्रकार की फली । [ चौबलों की भूसी ।  
 पुष्प (सं.) चौबलों का छिलका,  
 पुष्पार (सं.) पाला, ओस, कुहर,  
 ओले, ठंड, शीत, तुहिन ।  
 पुष्प (वि.) सुख, प्रसन्न, आनन्दित ।  
 पुष्प (सं.) चौरस लकड़ का लट ।  
 पुष्प (सं.) देखो पुष्प ।  
 पुष्पासन (सं.) स्वशरीर के बराबर  
 किसी वस्तु का दान, दान विशेष ।  
 पुष्प (सं.) कपट प्रबन्ध, गुट,  
 झूठे बयान ।  
 पुष्प (सं.) देखो पुष्प ।  
 पुष्पवारी (सं.) देखो पुष्पवारी ।  
 पुष्प (सं.) घास, फूस, तिनका ।  
 पुष्प-अक्षी-हारी (सं.) पशु  
 जो घास पात खाते हों ।  
 पुष्प-अक्षी-हारी (वि.)  
 तृण संकुलित, घास से ढका ।  
 पुष्पवत् (वि.) घास के समान,  
 तृण समान, नकुल, व्यर्थ, निकम्मा ।  
 पुष्प (सं.) तीसरा ।  
 पुष्प (सं.) देखो पुष्प ।  
 पुष्प-अक्षी (वि.) एक का तीसरा  
 हिस्सा । १, तीसरा भाग ।

पुष्प (वि.) परितोषान्वित, संतुष्ट,  
 हर्षित, प्रसन्न, हृष्ट । [ आनन्द ।  
 पुष्प (सं.) सन्तोष, परितोष,  
 पुष्प (सं.) तृष्णा, पिपासा, प्यास ।  
 पुष्प (सं.) पिपासा, पीने की  
 इच्छा, उत्कंठा, अत्यंत अभिलाष,  
 क्रोध, लोलुपता, अधिक उत्सुकता ।  
 ते (सर्व.) तू, तुम, आप ।  
 तेतालीस (वि.) ३ और ४०,  
 तेतालीस, ४३ । [ तेतीस, ३३ ।  
 तेन्नीस (वि.) ३ और ३०,  
 तेसठ (वि.) ६० और ३,  
 त्रेसठ, ६३ ।  
 ते (सर्व.) वह, वो ।  
 ते उपशान्त (अ.) इसके अतिरिक्त,  
 इसके बाद, तदुपरान्त ।  
 ते हर्ता (अ.) ते हर्ता, तिस पर  
 भी, तथापि, बावजूदकि, तीर्था ।  
 तेजे (सर्व.) वे, ते ।  
 तेजेतुं (सर्व.) उनका, उन्होंका ।  
 तेजेने (सर्व.) उनको, उन्होंको ।  
 तेजा (सं.) खड्ग, बक्रकृपाण,  
 तलवार, बसि । [ प्रकाश, गर्मी ।  
 तेज (सं.) प्रताप, बल, चमक,  
 तेज (वि.) मजबूत, दृढ़, बड़ी,  
 अनुसार, मुबाकि । [ सहाय्य ।  
 तेजते (सं.) समानता, सदृश्यता,

तेजनी ( सं. ) क्षीतलता, नवीनता,  
तैजी, सज्जगी ।

तेज प्रभाषे ( कि. वि. ) ऐसा,  
उसी प्रकार, ऐसेही, उसी भाँति,  
उसी तरह । [ मकदार ।

तेजवत ( वि. ) चमकीला, च-  
तेजवान-वाणु-स्त्री ( सं. ) पूर्ववत् ।

तेजने ( सं. ) मसाला, नमूना ।

तेज्य ( सं. ) खटाई, तेजाब, सत्व ।

तेजण ( सं. ) चमक, प्रकाश ।

तेज ( वि. ) चंचलता, चपलता,  
शीघ्रता, जल्दी ।

तेजभंटी ( सं. ) चढाव उतार, घट-  
बढ, शान्त उग्र ।

तेजोभय ( वि. ) अभिपुंज, ज्योतिर्मय,  
प्रकाशमय, प्रकाश स्वरूप ।

तेजोवृद्धि ( सं. ) चमक; प्रकाश,  
झुहरत, नामवरी ।

तेजवास्ते ( उप. ) इसकारण, इस-  
वास्ते, अतएव, एतदर्थ ।

तेजवाभां ( कि. ) इतनेमें, इसीबीच,  
उसी समय । [ उतना ।

तेजुं ( वि. ) इतनाज्यादः, इतना,  
तेजसे ( कि. वि. ) तब, तब, तलक,  
जबतक ।

तेजुं ( कि. ) डेरना, बुझाना, विमं-  
श्रित करना, कमरफट, उठाना ।

तेजवुं ( कि. ) बुझाना, बुझा  
जेजना । [ टेढ़ा, तिरछा ।

तेजुं ( कि. ) विमंश्रण, न्योता ( वि. )

तेजुं ( कि. ) विमंश्रित करना ।

तेजुंडीर ( कि. वि. ) वहाँ, उधर ।  
उसतरफ, उसजगह ।

तेजु ( सर्व. ) वह [ तेजुंडीर ।

तेजुमभ-भेर ( कि. वि. ) देखो,

तेजुंडीरने ( कि. वि. ) इसकारणसे  
तस्मात्, अतः, इसलिये ।

तेतर ( सं. ) देखो तेतर

तेथी ( कि. वि. ) इसकारण, इसलिये ।

तेना ( सं. ) परवक्षता, बसी भूतता,  
आधानता, बसता, तैनात, कायम ।

तेनी ( सर्व. ) उसका ।

तेनीमेजे ( सर्व. ) उसके लिये,  
उसके वास्ते । [ वहीका वही ।

तेनेतेज ( वि. ) सत्य, सच्चा, ठीक,

तेपन ( सं. ) त्रेपन, ५० और ३, ५३,

तेप्रभाषे ( कि. वि. ) उसीके अनुसार,  
जो, ऐसा, इस रीतिसे, अनुसार ।

तेम ( कि. वि. ) ऐसे जैसे, तेसे ।

तेमभ ( कि. वि. ) इसी रीतिसे,  
इसी तौरपर, औरभी ।

तेमधे ( कि. वि. ) उसमें ।

तेमट ( कि. वि. ) देखो तेथी,

तेमटुं ( सर्व. ) उनका, उन्हींका ।

तेर ( वि. ) १३, तेरह, १० और ३, त्रयोदश । [ तेरहवाँ ।

तेरु ( सं. ) मृतकको तेरहवाँ दिवस तेरस ( सं. ) तिथि विशेष, त्रयोदशी ।

तेरीभ ( स. ) तारीख, तिथि, व्याज की दर, सूदकी दर । [ द्रव्य :

तेल ( सं. ) तैल, तिल बिहार, निग्ध तेलकडुबुं ( कि. ) तग करना,

यकाना, तेल निकालना, मसलना, कुचलना । [ पसीजना, स्वेदबहना।

तेलानडुली ( कि. ) पछीना निकलना तेलधु ( स. ) तेलकी औरत, तेल

निकालनेवालेकी स्त्री ।

तेलवाणु ( वि. ) चिकना, तेलसा, तिलहा, निग्ध, तेल युक्त, तेली ।

तेल ( स. ) नवरात्री में तीन दिन का प्रतीत्य ।

तेली ( स. ) जाति विशेष, तेल वाला, तेल विक्रेता ।

तेलीआराम ( सं. ) जो तेल में देखकर या स्नान कर के भावज्य बतलाता हो ।

तेल ( सं. ) देखो तेल ।

तेलधुं ( कि. ) तिल लडाकरा, तिहोरा करना, त्रिगुण करना ।

तेल ( स. ) तिलुना, तिहोरा, तिलकड़ा, त्रिगुण, इतना बड़ा जितना कि नह ।

तेलधुं ( कि. वि. ) देखो तेलधुं

तेलधुं ( कि. वि. ) देखो तेलधुं

तेलधुं ( अ. ) इसवास्ते, इसकिये । तस्मात्, अतएव, एतदर्थ ।

तेली ( सं. ) त्रिषष्ठ, तेईस, २३ ।

तेलुं ( कि. वि. ) बैसा, उसके समान । [ बैसा ।

तेलुं ( कि. वि. ) बैसाही, ठीक

तेलुं ( कि. वि. ) गुरंत, कौरन, तल्लण, कौप्र ।

तेलुं ( कि. वि. ) तब, उस समय ।

तेलुं ( कि. वि. ) ठीक बैसाही ।

तेल ( वि. ) ६३, त्रैसठ, ६० और ३

तेलवार ( सं. ) पवित्र दिन, पवनित्यौहार, उत्सव दिन ।

तेलुं ( स. ) माल गुजारी, या लगान का संग्रह ।

तेलुं ( सं. ) माल गुजारी का संग्रह कर्ता, पद विशेष ।

तेलुं ( सं. ) माल गुजारी आदि संग्रह करने का काम, तह-धीलदार का काम ।

तेल ( वि. ) चमकीला, रोशन ।

तेल ( वि. ) उद्यत, सजित, तय्यार पूर्ण, समाप्त प्रस्तुत । [ इच्छता ।

तेल ( सं. ) प्रस्तुति, उद्युक्ता, तेल ( सं. ) देखो तेल ।



तैल्ल-भ-भ ( सं. ) तेलका प्रयोग,  
 तेल और उबड़ना । [ और ३ ।  
 तोतेर ( वि. ) ७३, तिहत्तर, ७०  
 तो ( उप. ) यदि, अगर, तब, तदा,  
 अवश्य, निस्सन्देह, सबमुच ।  
 तोड ( सं. ) पट्टा, बेड़ी, हथकड़ी ।  
 तोडल ( सं. ) घोड़ी, भरोसा, आ-  
 म्परा, विश्वास, सहारा ।  
 तोडपुं ( कि. ) चौकस करना ।  
 तोभभ ( सं. ) देखो तुभभ ।  
 तोभार ( सं. ) अथ, घोड़ा, तुरग बाजि ।  
 तोभ ( वि. ) दुखदार्ह, कठिन, कष्टप्रद ।  
 तोभर ( सं. ) धनाढ्य, धनवान ।  
 तोडडल ( सं. ) गँवारपना, कर्माना  
 पन, ओछापन । [ महा ।  
 तोडपुं ( वि. ) गँवार, सठ, मूर्ख,  
 तोड ( सं. ) आपसमें मिलकर निप  
 टारा, फैसला, तरतीब, उपाय ।  
 तोडडलवे ( कि. ) जुगती करना,  
 त्वचार करना, आपसमें निपटलेना ।  
 तोडपुं ( कि. ) तोड़ना, खण्डखण्ड  
 करना, गलाना, पिगलना । [ करना ।  
 तोडपुं ( कि. ) तुड़ाना, टुकड़े २  
 तोडीनाभपुं-पाडपुं ( कि. ) खींच  
 डालना, तोड़ देना, खंडित कर  
 डालना अपमान करना, गालीदेना ।  
 तोडो ( सं. ) एक हवार रूपसे जिसमें

समा सकं ऐसी एक बैली, एक  
 प्रकारका पैर में पहिने का आभू-  
 षण, तोड़ेदार बन्दुक को चलाने के  
 लिए आग लगानेकी बत्ती ।  
 तोथीआत ( सं. ) छोटा व्यापारी  
 या महाजन ।  
 तोतडुं ओडपु ( कि. ) तुतला  
 कर बोलना, हकला कर बोलना,  
 तोतरा बोलना [ हट  
 तोतडुं ( वि. ) तुतला हट, हकला  
 तोतडो ( सं. ) तुतळा, हकला,  
 अस्पष्ट वक्ता ।  
 तोतणी ( सं. ) एक देवीका नाम ।  
 तोतो ( सं. ) शुक, सुआ, सुग्गा ।  
 तोप ( सं. ) आग्नेयास्त्र, शतघ्नी,  
 बड़ी बन्दूक, तोब ।  
 तोपभानुं ( सं. ) शम्भामार, सुद्धकी  
 सामग्रीका घर, तोपोंकी पल्टन ।  
 तोपथी ( सं. ) तोपवाळा ।  
 तोपथु ( अ. ) अगरचे, यद्यपि,  
 तोमी, तिसपरमी, तथापि, बाव-  
 जूदेकी । [ मार, गोलेकी वर्षा ।  
 तोपनोभारे ( सं. ) तोपके गोलेकी  
 तोप डेडवी ( कि. ) तोप दागना,  
 तोप चलना, तोप छोड़ना ।  
 तोप मारपी ( कि. ) देखो तोप डेडवी ।  
 तोडो-डे ( वि. ) उत्तम, उम्मा, श्रेष्ठ ।

तोला (सं.) तूफान, आंधी,  
उड़ण बायु, झड़, रौला, बल्ला,  
झंझट, हलचल, गड़बड़ी, बदी,  
नुकसान, बुराई, गज्जना ।

तोलाही (वि.) बुरा, दुष्ट, नुकसान  
पहुंचानेवाला ।

तोलाही (सं.) घोड़े के मुंहपर बाध  
कर दाना डालकर खिलाने की  
बैली, फूला हुआ मुँह ।

तोला (वि.) पछतावा, पश्चाताप,  
अफसोस, खेद ।

तोला ४२वी (क्रि.) तोबा करना,  
प्रायश्चित्त करना, पछताना ।

तोलातोला (वि.) अफसोस सद-  
अफसोस, खेद अत्यन्त खेद ।

तोला ५५ (क्रि. वि.) देखो तोला ५५ ।

तोला (सं.) धूमधाम, दिखावा, गर्व,  
झपट, आक्रमण, खेल, भावना,  
हठि, आकार, रूप, सनक, मनो-  
विकार ।

तोलाही (सं.) बह मिथीका बर्तन  
जिसमें मृतककी रथीके आगे आगे  
आंमि उसके दाहकर्म के लियेले-  
जाई जाती है ।

तोला ५५ (सं.) पत्तीकी बनीहुई झालर  
बन्दनवार, पत्तीकी माला ।

तोलाही (वि.) गर्व, घमण्ड, दर्प, (सं.)  
घोड़ा, अश्व ।

तोलाही (सं.) गुलदस्ता, फूलों का  
गुच्छा, मुकुट, पगड़ी का रेशमी  
जिह्वा या कोर, अंगुठा ।

तोला (सं.) वजन, भार ।

तोला ५५ (सं.) कम (वजनमें)

तोलाही (सं.) देखो तोलाही

तोलाही (सं.) तोलनेवाला, तुल्यवट ।

तोलाही (वि.) भारी, वजनदार ।

तोला ५५ (सं.) वजनसे अधिक,  
वजनमें ज्यादा ।

तोला (क्रि. वि.) समान, मानिन्द ।

तोलाही (सं.) १२ माछा, वृद्धिके  
रूपमें भर, एकतोला, छ टोंक ।

तोलाही (सं.) मरकारी खजाना,  
राजकीय कोषागार ।

तोलाही (सं.) बैली, न्योली ।

तोलाही (सं.) ७३ तिहत्तर, ३  
और ७० । [कलक, निंदा, अपयश ।

तोलाही (सं.) दांघ, अपवाद, लगान

तोलाही ५५ (क्रि.) झूठाकलंक  
लगाना, दोष लगाना, अपयश देना ।

तोलाही (क्रि.) तोलना, वजन करना,  
सोचना, विचारना ।

तोला (सं.) वजन, बाट ।

तोलाही (सं.) तोलनेवाला, वजन  
करने वाला ।

तोलाही (सं.) तोलनेका मजदूरी  
यातनस्वाह, तुलाई (कीमत)

त्वां (कि. वि.) वहाँ, उधर, तहाँ ।

त्वांशी (कि. वि.) वहाँसे, उसजगहसे

त्वांशुगी ( कि. वि. ) तक, तबतक,  
तबलग । [ विरक्त, वैराग्य, छोड़।

त्वां ( सं. ) दान, वर्जन, उत्सर्ग,

त्वांशुशु (कि.) छोड़ना, त्यागदेना  
तजना, पोरत्याग करना ।

त्वांशी ( सं. ) वैरागी, जिसने संसार  
के आनन्दभोगोंको त्यागा हो ।

त्वांशी ( कि. वि. ) तबसे उस  
समयसे ।

त्वांशु ( कि. वि. ) बादमें, उपरान्त  
पश्चात्, अनन्तर । [ उसका ।

त्वांशु ( कि. वि. ) उसस्थानसे,

त्वां ( कि. वि. ) तब, उस समय ।

त्वांशुगी ( कि. वि. ) तक, तबतक  
उस समय तक, पर्यन्त ।

त्वांशु ( कि. वि. ) पूर्ववत् ।

त्वांसी ( सं. ) संख्या विशेष, ८३,  
तिरासी, अस्सी औरतीन ।

त्वांशु ( कि. वि. ) वहाँ ।

त्वांशु ( कि. वि. ) वहाँका, उनका,

त्वां ( स. ) छाल, चमड़ा, बकल  
चर्म, छाल ।

त्वांशु ( वि. ) चर्म हीन, बिना  
छालका, जिसपर चमड़ा नहीं ।

त्वां ( सं. ) वेग, शीघ्रता, हुत, जल्दी।

त्वमित ( कि. वि. ) त्वरामित,  
जल्दीसे, तेजीसे, शीघ्रतासे ।

त्वमित-त्वमित ( वि. ) त्रिगुणा, त्रिगुण  
तिहोरा, तीनतर, १×३,

त्वमित ( वि. ) तीन, ३, त्रय ।

त्वमित ( सं. ) त्रयकल्प, त्रिदेव, तीन  
देवता, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ।

त्वमित ( वि. ) तानित्री, ३००, त्रिशत ।

त्वमित ( सं. ) तृतीय देखो ती४,

त्वमित ( सं. ) शिव, महादेव, शंकर ।

त्वमित ( सं. ) तबसे की तर्ज का  
एक बड़ा डोल विशेष । [ चहर ।

त्वमित ( सं. ) एक प्रकारका तौबका

त्वमित ( सं. ) तीन अतोंका राव,  
तान बाजोंका मेल, तानकामेल,

त्रिक, त्रिगुण, तानका जुट ।

त्वमित ( वि. ) तेरह, तेरहवाँ ।

त्वमित ( स. ) मृत्यु का १३ वाँ  
दिन, मौतकी तेरहवी तिथि ।

त्वमित ( सं. ) तिथि विशेष, चान्द्रमा-  
सके पक्षकी १३ वी तिथि, तेरस ।

त्वमित ( स. ) ब्राह्मणोंका उपनाम  
त्रिवेदी ।

त्वमित-त्वमित ( सं. ) तौर, किनारा  
तट, मौज, रस्ताका बट ।

त्वमित ( सं. ) दबाव, बरजोरी, बल,  
चरु मनुष्यकी हानि पहुँचाना ।

त्र्यंशु—शुडी ( सं. ) कांटा तौल-  
वेका, तुल्यबन्ध, तराजू, तखड़ी ।  
त्र्यंशु ( सं. ) अंगपर सूईसे गड़वा  
करके उसमें नीला लाल या किसी  
प्रकारका रंग भरके चिन्हादि  
बनाना, गुदना, गोदना । [ साइट ।  
त्रास ( सं. ) चिन्हाइट, चौंख, चिचि-  
त्राशु ( सं. ) रक्षण, उद्धार करण,  
निस्तार, उद्धार ।  
त्राशु ( वि. ) १३, तेरावने, नब्बे  
और ३ । [ बचानेवाला, उद्धारका  
त्राता ( सं. ) रक्षक, प्राणकर्ता,  
त्राप भारी ( कि. ) एकदमसे  
पकड़लेना, झपट मारना ।  
त्रापी ( वि. ) बेड़ा । [ विशेष ।  
त्राधु ( सं. ) तांबा, ताम्र, धातु-  
त्राभडी ( सं. ) पानी भरनेका पात्र ।  
त्रास ( सं. ) त्रस, शंका, डर, दुःख ।  
त्रास देवे ( कि. ) सताना, दुःख  
पहुँचाना, डराना, भयभीत करना ।  
त्रासः १२६ ( सं. ) दुखदानी, भयप्रद ।  
त्रासन ( वि. ) भयानक, डरावना ।  
त्राशु ( वि. ) तिर्छा, झुकाहुवा, टेढ़ा,  
त्राडी-डे-ख ( विस्म. ) रक्षाकरो,  
बचावो, प्राण करो, दया करो ।  
त्राडित ( सं. ) तीसरा पक्ष,  
तीसरा समाज ।  
त्रि ( वि., तीन, संख्या विशेष, ३ ।

त्रिभ ( सं. ) विष्णु, हरि ।  
त्रिभ ( वि. ) जिसके तीन भाग  
हो, तीन दर्जेवाला ।  
त्रिभ ( सं. ) तीनकाल, भूत,  
वर्तमान और भविष्य, प्रातः,  
मध्याह्न और संध्या ।  
त्रिभः ३ ( वि. ) ऋषि, मुनि,  
तीनों कालका ज्ञाता, सर्वज्ञानी ।  
त्रिभजन ( वि. ) पूर्ववत्  
त्रिभवेत्ता ( वि. ) पूर्ववत्  
त्रिभयात्ता ( वि. ) पूर्ववत्  
त्रिभयान ( सं. ) तीनोंकालोंको जान-  
लेनेकी विद्या, सर्वज्ञता, सर्वज्ञान ।  
त्रिभयानी ( वि. ) देखो त्रिभयानी  
त्रिकुटी ( सं. ) मृकुटीके बीचकी  
जगह, भौके बीच की जगह ।  
त्रिकुटी ( वि. ) पर्वत विशेष, तीन  
शिखरोंका पहाड़ । [ विशिष्ट ।  
त्रिकोण ( सं. ) तीनकोण, त्रिकोण  
त्रिकोणभित्ति ( सं. ) त्रिकोण वस्तु  
ओंको मापनेकी विद्या ।  
त्रिकोणभित्ति ( वि. ) त्रिकोना, तीनको  
नोंकी सहायका, त्रिकोण समान ।  
त्रिभ ( वि. ) त्रिभाग, तीन  
जगह विभाजित ।  
त्रिभ ( सं. ) ऊंची बैठक ।  
त्रिभुज ( सं. ) तीन गण, देव मनुष्य  
और राक्षस । [ रज और तम ।  
त्रिभुज ( सं. ) तीन गुण, सत्त्व,

त्रिधात ( सं. ) चन, छःपहला ।  
 त्रिधरथु ( सं. ) तीन पादका ।  
 त्रिधन-१ ( सं. ) तीन जगत, स्वर्ग,  
 नर्क, और पाताल ।  
 त्रिधन ( सं. ) व्यासार्ध रेखा, आगे  
 विस्तारकी रेखा ।  
 त्रिताप ( सं. ) तीन प्रकारके दुःख,  
 आध्यामिक, आधिभौतिक, आधि-  
 दैविक । [ सुरपति, शचीनाथ ।  
 त्रिदशपति ( सं. ) इन्द्र, देवराज,  
 त्रिं डी ( सं. ) त्रिदण्डचारी, यति,  
 सन्यासी विशेष ।  
 त्रिपद ( सं. ) पदत्रय, त्रिरेखामुक्त ।  
 त्रिपदभूमि ( सं. ) तीन कदम  
 जमीन, तीन पैर पृथ्वी ।  
 त्रिपात ( वि. ) कटक, चटक ।  
 त्रिपुटी ( सं. ) विश्व, भिन्न, ज्ञाता,  
 किंसा वस्तु का ज्ञान और तत्संबंधी  
 अन्य बातों की जानकारी, गुमा-  
 इत, अभिप्राय और काम ।  
 त्रिपु ( सं. ) आड़ी तीन रेखाओं  
 का तिलक, शैवतिलक ।  
 त्रिपुरुष ( सं. ) तीन बड़े जादूमी,  
 बाप, दादा और पड़दादा ।  
 त्रिक्षा ( सं. ) ओंकरा, हरं और  
 महेड़ा, औषधि विशेष, हरक तीन  
 भाग औंकरे १२ भाग और महेड़ा  
 ६ भाग मया “ हरी त्रिक्यालयो

भागां काश्चां द्वादश भाग काः ।  
 वरु भागाश्च विनीतस्य त्रिकलैकं  
 प्रकीर्तिता ” ।  
 त्रिधाम ( वि. ) देखो त्रिधं ।  
 त्रिधुवन ( सं. ) तीनलोक, स्वर्ग,  
 मृत्यु और पाताल ।  
 त्रिभासिक-भाषी ( कि. वि. ) तीन  
 महीनेकी, त्रैमासिक ।  
 त्रिभूर्ति ( सं. ) तीनदेव, ब्रह्मा,  
 विष्णु और रुद्र ।  
 त्रिधा ( सं. ) स्त्री, औरत, पत्नी ।  
 त्रिदाध ( सं. ) तीन रात्रि और  
 तीन दिन की अवधि ।  
 त्रिदभ ( सं. ) धर्म, अर्थ और  
 काम, सत्व रज और तम । हानि  
 लभ और सम, धन, स्त्री और  
 भूमि, जर, जोर, जमी ।  
 त्रिदश ( सं. ) त्रैराशिक, गणित,  
 विशेष । [ शिव, रुद्र ।  
 त्रिदोयन ( सं. ) तीन नेत्र का,  
 त्रिदण्डी ( सं. ) मनुष्य के या स्त्री  
 के पेटमें तीन रेखाएं । [ बतार ।  
 त्रिदिक्रम ( सं. ) विष्णु, वामना-  
 त्रिविधतप ( सं. ) तीन प्रकार का  
 तप ।  
 त्रिविधताप ( सं. ) त्रिताप  
 त्रिविधनामिका ( सं. ) तीन प्रकार  
 की स्त्री, स्त्रियों की तीन जातियां ।

त्रिविध (वि.) तीन प्रकार, त्रिधा ।  
त्रिवेशी ( सं. ) गंगा, यमुना और  
सरस्वती का संयम, इका पिंगला  
और सुषुम्णा ।

त्रिश्र ( सं. ) तीन नोको का भाला,  
महादेव का अस्त्र विशेष ।

त्रीन् ( सं. ) देखो तीन् ।

त्रीऽ ( सं. ) दर्द, दुःख ।

त्रीस ( सं. ) तीस, त्रिंश, ३० ।

त्रीह्वुं ( कि. ) खुश होना, प्रसन्न  
होना, हृष्ट होना, मुदित होना ।

त्रेता ( सं. ) द्वितीय युग ।

त्रेतायुग ( सं. ) द्वितीय युग जिसकी  
अवधि १२,९६,००० वर्षों की ।

त्रेधा ( सं. ) तीन मार्ग, तीन रास्ते ।

त्रेपन ( वि. ) ५३, सख्या विशेष,  
पचास और तीन । [ त्रैयारा ।

त्रेवऽ ( सं. ) प्रबन्ध, बन्दोबस्त,

त्रेवऽ ( वि. ) तीनबार, तीन  
प्रकार का । [ त्रिभासिक ।

त्रैभासिक-भाही ( सं. ) देखो

त्रैश्रिक ( सं. ) देखो त्रिश्रिकी,

त्रैश्रिकभाष ( सं. ) विश्वनाथ, तीनो  
लोकों के अधिपति ।

त्रैश्रिक ( सं. ) तीन लोक, स्वर्ग  
मर्त्य और पाताल ।

त्रैश्रु ( कि. ) तोड़ना, काटना काँटना  
हिस्से करना, भाग करना ।

त्यन् ( कि. ) छोड़ना ।

त्य ( सं. ) (पन) प्रदर्शक प्रत्यय जैसे  
लघु+त्य=छोटापन ।

त्युभिद्वि ( सं. ) स्वर्णोन्मिव ।

त्यन्ता ( सं. ) बमड़ा चर्म, खाल ।

त्यन्ता ( सं. ) जल्दी, शीघ्रता, तेजी ।

थु

थ-गुजराती वर्ण मालाका अठ्ठाई-  
सवाँ अक्षर, १७ वाँ व्यंजन ।

थधुं ( कि. ) समाप्त होना,  
सतप्त होना, पूर्ण होना नष्ट होना,

थधुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

थधुं ( वि. ) मुमकिन, संभाव्य  
होने का योग्य, संभव ।

थधुं-थधुं ( कि. ) थकना,  
थकाना, व्यथित करना ।

थकी ( उप. ) से, वास्ते, कारणसे ।

थ ( सं. ) डेर, छुड़, ठट्टा, भाड़ ।

थभणी ( कि. ) भीड़ होना ।

थ ( सं. ) हँसी दिल्खी ।

थ ( सं. ) घड़, पेड़ी, सूंड पेंदा,  
तली, पौधा, जड़, पाँव ।

थधुं ( कि. ) कूदना, ताज्जुब  
करना, चकित होना, विस्मित होना

भयातुर होना, ठिठकना, तुतलना ।

थधुं ( कि. वि. ) ठोकरों और  
धूलोकीसी आवाज ।

२६५३३ ( सं. ) जोरकी आवाज ।

२६५३४ ( विस्म. ) टकर, मर्मभेदी धपधप, धपधपाहट ।

२६५३५ ( सं. ) डेर, गंज, समूह ।

२६५३६ ( क्रि. ) डेर करना, चढ़ी करना या जमाना ।

२६५३७ ( सं. ) शीत, ठंड, आवा ।

२६५३८ ( सं. ) शीतलता, ठंडाई, ठंडक, २६५३९ ( क्रि. वि. ) सावधानीसे, शान्तिसे, धीरजसे ।

२६५४० ( वि. ) अत्यंतशीत, बहुतही ठंडा, ठंडाबर्फ ।

२६५४१ ( सं. ) धीमापन, सीधापन, मुस्ती, मुशीलता, कोमलता मृदुता ।

२६५४२ ( सं. ) ठंडापना, शीतलता, ठंडक, शान्ति ।

२६५४३ ( वि. ) ठंडा, शान्त, धीमा, मंद स्तुत, शीतल, मृदु, कोमल ।

२६५४४ ( सं. ) ठंडा करना धीमा करना, शान्त करना ।

२६५४५ ( वि. ) अस्ति दशा, अवस्था ।

२६५४६ ( क्रि. ) डाटना, मलाबुरा कहना, सिद्धकना धिक्कारना ।

२६५४७ ( क्रि. ) लीपना, छिड़कना, मोटा मोटा लेसना लपेटना ।

२६५४८ ( क्रि. वि. होना, ) होनेवाला, भविष्य । [ कपत, रैपट ।

२६५४९-२६५५०-२६५५१ ( सं. ) चोंटा, २६५५२ ( क्रि. ) कपतमारना, चोंटा देना, धाप मारना ।

२६५५३ ( सं. ) रुपया, खजाना, धन, द्रव्य, पूंजी, खंभा ।

२६५५४ ( सं. ) स्तंभ, खंभा, खंज ।

२६५५५ ( क्रि. ) ठहरना ।

२६५५६ ( क्रि. ) हुषा, मया, हुषा ।

२६५५७ ( सं. ) रंग या पल्लवर के समान, तह, क्यारी । [ होना ।

२६५५८ ( क्रि. ) डरना, भयभीत २६५५९ ( क्रि. वि. ) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प ।

२६५६० ( क्रि. ) धरीना, कांपना, कम्पित होना, झूजना, हिलना ।

२६५६१ ( सं. ) कम्प, धरधरी ।

२६५६२ ( क्रि. ) धुड़काना, धमकाना, डांटना ।

२६५६३ ( सं. ) कंपकंपी, कम्प ।

२६५६४ ( सं. ) मैल, तलछट, गाद ।

२६५६५ ( क्रि. ) होना, होजाना, वाका होना, बीतना ।

२६५६६ ( सं. ) जगह, स्थान, स्थल ।

२६५६७ ( सं. ) औजार, हथियार, बली ।

२६५६८ ( वि. ) मुस्ती, धीमापन ।

२६५६९ ( वि. ) मन्द, मुस्त, धीमा, डाला, विलम्बी ।

शब्दकोश-भक्ष ( सं. ) देखो शब्द ।

शब्द ( सं. ) शब्दान, शब्दावट, आराम, विश्राम, सीमा, हर, अंत ।

शब्द भावे ( कि. ) आराम करना विश्राम लेना, ठहरना, रुकना ।

शब्दवुं ( कि. ) शब्दना, हारना, अंत होना हार जाना, हाथ पैर आदि का शिथिल होना, अधिक परिश्रम से हन्डियों का अवश होना । [ हारजाना ।

शब्दोत्पुं ( कि. ) शब्दजाना, शब्दोत्पुं ( वि. ) शब्दाहुवा, शक्ति, अंत । [ तली, सीमा, खोज ।

शब्द ( सं. ) पेंदा, सिरा, छोर, शब्दालागवे ( कि. ) पहुँचना, पाना, पता लगाना, गुनतारा लगाना ।

शब्द ( सं. ) ठाठ, धूम धाम, शान शौकत, रौनक, प्रताप, ऐश्वर्य ।

शब्दोद्धार-शब्दोद्धार ( सं. ) कोतवाली, चौकी या स्टेशन का अफसर ।

शब्दुं ( सं. ) चौकी, कोतवाली, बड़ी चौकी ।

शब्द ( सं. ) वस्त्र का लम्बा टुकड़ा, कीमती पत्थर, स्त्री के स्तन या छाती ।

शब्द ( सं. ) बैठक, निवास स्थान ।

शब्द ( सं. ) शब्द, तमाचा, चाँदा, कीचें का फर्श, गारे गोबर का फर्श, भूल, गलती, अशुद्धता ।

शब्दोद्धार-शब्दोद्धार ( कि. ) धोका देना, छलना, दगा देना, कपट करना, कीचड़ से मैला करना ।

शब्द ( सं. ) शब्द, चपत, चाँदा ।

शब्दोद्धार ( कि. ) शब्द शपाना, शपियाना ।

शब्दोद्धार ( सं. ) शब्दी, करनी, कच्ची, कर्नी, शब्द शब्द करने की ।

शब्दोद्धार ( सं. ) जहाज पर खेप रखने का लकड़ी का तल्ला, दाल की रोटी । [ पूंजी ।

शब्द ( सं. ) मंडार, मूल धन, शब्दना ( सं. ) मंदिर में मूर्तें प्रतिष्ठा ।

शब्द ( कि. ) कीचड़ से धरना लगाना, शपना, शपशपाना ।

शब्दोद्धार ( सं. ) भिछी का कुंडा ।

शब्दोद्धार ( सं. ) शब्दी, कच्ची, शब्द-शब्द करने की ।

शब्दोद्धार ( सं. ) जांच, जंचा, पुढ़ा, कूल्हा, रीठ, पीठ, कमर, शब्दोद्धार ( कि. ) शपशपाना ।

शब्दोद्धार ( सं. ) देखो शब्दोद्धार ।

शब्द ( सं. ) देखो शब्दोद्धार ।

शब्दोद्धार ( सं. ) छोटा खंभा, खंभा ।



श्रीमद्दे ( सं. ) स्तम्भ, संभ, संभा,  
संभा, सीनार ।

श्रीमद्दे ( सं. ) देखो श्रीमद्दे ।

श्रीम ( कि. ) हो, होवे, भव ।

श्रीर ( सं. ) देखो श्रीर ।

श्रीवर ( सं. ) स्थिर, कायम, मुक-  
रं अचल, ठहरा हुआ ।

श्रीपु ( कि. ) होना, ( सं. )  
गिरवी, रहन, बन्धक । [ परात ।

श्रीणी ( स. ) बड़ी थाली, थाल,

श्रीणी ( स. ) थाली, गोल पात्र,  
भोजन करने का पात्र ।

श्रीपु ( स. ) थाला, कुंए या चट्टी  
की परिधि । [ थेंगला ।

श्रीमद्दे ( सं. ) पैवन्द, जोड़ा, लता,

श्रीमद्दे ( स. ) चियड़ा चिय-  
ड़ा, थेंगला थेंगली ।

श्रीमद्दे श्रीपु ( कि. ) पैवन्द  
लगाना, फटे कपड़े को पाती सीना ।

श्रीरता ( सं. ) स्थिरता, धैर्य,  
धीरज, सम ।

श्री ( उप० ) से, अपेक्षा; बनिस्वत ।

श्रीमद्दे ( कि. ) जमजाना, जमना ।

श्रीर ( सं. ) स्थिर. अचल, कायम,  
शान्ति, चुप, खामोशी ।

श्रीक ( सं. ) राल, मुँह का पानी ।

श्रीपु ( कि. ) धूकना, धूना करना ।

श्रीपु ( विस्म० ) छिः छिः । फिस,  
हुस, घूर हो, दिश । [ संग्रह ।

श्रीमद्दे ( सं. ) अन्न की थाली का  
धुवर-वेर ( सं. ) धूहर नामक कंदीला

पेद, धूहर नामक झाड़ी, सेहुड़,  
सीज, सेहुण्ड ।

श्रीपु ( सं. ) देखो श्रीपु ।

श्रीपु ( सं. ) मृषी, चोकर ।

श्रीकडी ( स. ) देखो श्रीकडी ।

श्रीकी ( सं. ) अनाज का थैला,  
अन्न का बोरा । [ टिकिया ।

श्रीपु ( सं. ) मीठी रेस्ती या

श्रीपु ( कि. ) भदेपव से कीचड़  
क दाग लगाना, थपना ।

श्रीपु ( सं. ) देखो श्रीपु ।

श्रीपी ( स. ) थैली, झोली ।

श्रीपी ( स. ) थैला, झोला ।

श्रीर-श्री ( सं. ) नृत्य और गान,  
नाचना गाना । [ फुलन्दा, गठरी ।

श्रीक-डी ( सं. ) गठ्ठा, बण्डल,

श्रीकध ( वि. ) इकट्ठा ।

श्रीक ( सं. ) चाटा, चपत, थप्पड़ ।

श्रीपु ( वि. ) थड़ा, अल्प, कम,  
न्यून ।

श्रीपु ( वि. ) थोड़ा सा, बरा सा ।

श्रीपुधु ( वि. ) कमजबान, न्-  
नाधिक, कमबहुत । [ गिस्ती ।

श्रीर ( सं. ) सूजन, फुलाव

शे० (वि.) ध्वज, बेकसदा, खाली,  
मुच्छ, छोटा, हल्का, निस्सार ।

शे०पु (कि.) ठहराना, पकड़ना,  
बामना, रोकना, इंतजार करना ।

शे०भापु (कि.) ठहराना, रोकना  
आश्रय देना ।

शे०भ (सं.) अंत, सिरा ।

शे०भशु (सं.) आश्रय, सहारा, खंभ,  
आड़, रोक, संभालनेवाला ।

शे०भा-शिभा (सं.) गलमुच्छे,  
गलमुच्छे ।

शे०र (सं.) देखो यु०२

शे०ध (सं.) मौका, अवसर, गौ ।

शे०धो (सं.) बदनका मौसयुक्त भाग,  
बदनका मोटा भाग ।

६

६-गुजराती वर्ण मालाका २३ वौं  
अक्षर, अठारहवां व्यंजन । तवर्गका  
तीसरा अक्षर (वि.) देने वाला  
दाता, दानी ।

६०भ (सं.) बंक, कटाहुवास्थान ।

६०भपु (कि.) बसना, काटना, बंक  
मारना, विपैले जीवका काटना ।

६०भ (वि.) चकित, विस्मित, अचंचित ।

६०भ२पु (कि.) चकित करना, वि-  
स्मित करना ।

६०भाभे०र (वि.) झगड़ालू, लड़ाकू  
बलबाई, बागी, बखेदिया ।

६०भे (सं.) झगड़ा, रौला, हुलड़,  
बलबा लड़ाई, फसाद, टंटो ।

६०भे०भे० (कि.) झगड़ा करना,  
उपद्रव करना, बलबा करना ।

६०३ (सं.) डण्डा, लड़ी, जुर्माना, ४  
हाथ कानाप, कसरत, विशेष ।

६०३ ६६१३५१ (कि.) दण्ड निशालना  
दण्ड लगाना (कसरतकी किया  
विशेष)

६०३ पी०३२ (कि.) पूर्ववत् ।

६०३२५ (सं.) साष्टाङ्ग प्रणाम, औंधे  
पड़कर प्रणाम विशेष ।

६०३२५१२२पु (कि.) साष्टाङ्ग प्रणाम  
करना, नमस्कार करना, आभवादन  
करना ।

६०३पु (कि.) जुर्माना करना, सजादेना ।

६०३३ (सं.) छोटा सोटा, छोटा  
लट्ट, लाठी ।

६०३४ (सं.) पूर्ववत् ।

६०३५ (वि.) झुर, लुट ।

६०३६ (सं.) दौत, दसना, रदन ।

६०३७ (सं.) जबानी बात, कहावत  
गप्प, मौखिक बात, सद्गन्तबात ।

इंतयु० (सं.) दांतचूष करनेका  
पाउडर, इंतयजब ।

हंतायाः ( सै. ) दन्तशुद्धि, दन्त-  
मार्जन, दंतकाष्ठ, दंतुवन । [बतोसी,

दंतपत्रिका ( सं ) दाँतोकी पाँति,

इंतपीडा (सं.) वंतशूल, दोतोंका दर्द।

इंतवैध ( सं. ) दौत बनानेवाला,

दौतोके रोगोंका वैद्य ।

इंताणु (मं.) दाँतसे सम्बन्ध रखने-  
वाला, दाँत, लला तवर्गल, स,  
अक्षर ।

हंतशुग (स.) देखो हतपुडा

हंती (वि.) देखो हंताणु (स.) हाथी ।

इत्तुश्च, यत्न ( सं. ) हाभीका दात ।

इ तो १९८५ ( सं. ) व अक्षर, जिसका सम्बन्ध दांत और ओठसे हो ।

इंत्य (वि.) दांत सम्बन्धी, दांतोसे सम्बन्ध रखनेवाला ।

४'पति ( सं. ) पतिपत्नी, स्त्रीपुरुष ।

इं० ( सं. ) धोका, फरेब, शठता,  
छद्मवेश, पाखण्ड ।

इभी (वि.) फरेबी, धोकेबाज,  
पाखण्डी ।

इंश सं.) डाह, बैर, लाग, द्वेष,  
द्रोह, विरोध, देखो इंश

दक्षित ( वि. ) बसाहुवा, प्रसित,  
शोही श्रेणी, विरोधी ।

सप्त-द्वय ( सं. ) जिन्व, राक्षस,  
असुर, निशाचर, व्रेत।

इष्टि ( कि. ) दो, दैसको, दैसकना ।

६६।७ ( सं. ) दंडो दुःखम्

६५ ( वि. ) प्रवीण, विपुल, पट्ट ।

दक्षिण ( सं. ) देखो दक्षिण

इक्षु ( सं ) धनवान, संस्कार, आदि उत्सवों पर शाहिका को जोभेट दीजाती है ।

६६।ध्रु (वि.) दक्षिणदिशा सम्बन्धी,  
दक्षिणनी, दक्षिणनका ।

क्षिता। (वि.) चतुरता, पटुता, निपुण्य  
निपुणता ।

दक्षिण (सं.) दक्षिण दिशा दक्खिन,  
जन्म, (वि) सीधा, दहिना फर्तीला.

इक्षिप्यन् ( वि. ) कर्करा शिसें,  
सूर्यका बदलना, २२ जूनसे ११  
दिसम्बर तकका समय जबकि सू-  
र्यकी गति दक्षिण दिशाकी ओर  
होती है ।

६५ (सं.) देखो ६:५

६५५। ( सं. ) देसो दक्षिण

दशम्यु ( वि ) देसो दशम्यु

दृष्टव्य ( वं ) दक्षिणी स्त्री ।

६५मु-६०५मु (सं) छुपनेका बुर्ज,  
छुपनेका बुर्ज ।

इ.पू. ५५० ( सं. ) दक्षिण, दक्षिणवर्त ।

इभध ( सं. ) रोक, दोरु, भटकाव  
बाधा ।

६३५ (से) पस्वर, प्राधान, पाहुन :

६३५५५ ( वि ) आनादी, उजड़ ।  
 ६३५५५ ( सं. ) पत्थरया लकड़ीका छोटा  
 टुकड़ा जो खंभेया म्याल (सहतार)  
 रखाजाता है ।  
 ६३५५५ ( सं. ) देखो ६३५५५  
 ६३५५५ ( सं. ) शक, सन्देह, पशो पेश,  
 दुबचा, दुबिचा ।  
 ६३५५५५ ( वि. ) विश्वासघाती,  
 बेईमान, अपसी, छली, कपटी ।  
 ६३५५५५ ( सं. ) छल, बेईमानी,  
 अधार्मिकता, विश्वास घात ।  
 ६३५५५५५ ( सं. ) देखो ६३५५५५५  
 ६३५५५५ ( सं. ) चोका, कपट, छल ।  
 ६३५५५५५ ( कि. ) दगा करना, चोका  
 देना, कपट करना, छल करना ।  
 ६३५५५ ( वि. ) दगैल, जलाहुवा ।  
 ६३५५५ ( सं. ) अति दुःख ।  
 ६३५५५ ( सं. ) दर्जन, १२,  
 ६३५५५५ ( कि. ) जलाना, बालना ।  
 ६३५५५५ ( कि. ) गाढ़ना, भूमिमें दबाना ।  
 ६३५५५ ( सं. ) डाट, आड, काग, कार्क,  
 ६३५५५ ( सं. ) रेतीली जगह ।  
 ६३५५५ ( सं. ) डेला, लोढ़ा ।  
 ६३५५५ ( सं. ) मोटापात्र ।  
 ६३५५५-५५५ ( कि. वि. ) लगातार,  
 बरतबर ।  
 ६३५५५ ( सं. ) डेला, लोढ़ा ।

६३५५५५ ( कि. ) झुझुना, फिरना  
 ६३५५५५ ( सं. ) खलनेकी टेढ़ी छड़ी,  
 गाड़ी, बग्गी, खोल बिरेष ।  
 ६३५५५ ( सं. ) छोटी गेंद ।  
 ६३५५५५ ( सं. ) दोना, पत्तोंका प्याला  
 पर्णपात्र, श्रेण ।  
 ६३५५५ ( कि. वि. ) मन्दमन्द चालसे  
 दोड़ाई । [ दोना ।  
 ६३५५५ ( सं. ) छोटा पर्ण पात्र, छोटा  
 ६३५५५ ( सं. ) बड़ापलना ।  
 ६३५५५ ( सं. ) गेंद, कन्दुक. एक प्रकार-  
 का भोजन ।  
 ६३५५५ ( सं. ) लकड़का टुकड़ा जो गड  
 केगले में बाधाजाता है ।  
 ६३५५५ ( वि. ) दियाहुवा, प्रदत्त, कृतदान ।  
 ६३५५५५ ( सं. ) गोद लियाहुवा पुत्र,  
 पोसपूत दत्तक ।  
 ६३५५५५ ( सं. ) गोदलेमेका कार्य  
 या उत्सव आदि, स्थाकृति संस्कार ।  
 ६३५५५५ ( कि. ) देना, देहालना ।  
 ६३५५५ ( सं. ) दूसरोंके आनन्दके लिये  
 किसी स्त्रीको प्राप्त कराने वाली,  
 बीचमें पड़ना ।  
 ६३५५५५ ( सं. ) सुदकी बिगुलया भेरी,  
 सुदकी ठुरही, डोल, ।  
 ६३५५५ ( सं. ) दशर ।  
 ६३५५५ ( सं. ) वधि, दही, छ.छ, मठा,

इधिष्म ( सं. ) धन, इन्ध, लक्ष्मी।  
 इधिष्मत् ( सं. ) विष, जहर, चन्त्रमा  
 मक्खन । [ दैविक प्रवेश पुस्तक।  
 इधिष्ठि—नैधु ( सं. ) रोजकी लेख पुस्तक,  
 इन ( सं. ) दिन, वासर, दिवस, दिवा,  
 सूर्यज्योतिसे नियमित काल ।  
 इधुम् ( सं. ) देखो इध्ति  
 इध्मिभधु ( सं. ) धमकी, डाट, बुढ़की।  
 इध्म ( सं. ) अधिकता, बहुतायत,  
 विशेषता ।  
 इध्मपुं—धुपुं ( कि. ) छुपाना, तेजीसे  
 हाकना, जल्दीसे हाकना । [ गठरी।  
 इध्मो ( सं. ) बोर, बैला, बण्डल,  
 इध्मिपुं ( सं. ) गाढ़ना, दफनाना,  
 जुढ़ाना, मिलाना, खेना, डोंट  
 लगाना ।  
 इध्मर ( सं. ) हिसाब की किताब,  
 सरकारी कागजात, लेख्यपत्र,  
 बस्ता, विद्यार्थियों का कागज पत्र  
 स्लेट आदि सामान रखने का  
 कपड़ा या बैला ।  
 इध्मरभधुं ( सं. ) सरकारी काग-  
 जपत्र रखने का स्थान, पुस्तकालय,  
 लायब्रेरी ।  
 इध्मरइर ( सं. ) एक ओहदा, द-  
 फ्तरदार नामक एक ओहदेदार ।  
 इध्मरइरी ( सं. ) दफ्तरदार का काम।

इध्मरी ( सं. ) कागज पत्रोंको बचा-  
 स्थान रखनेवाला, रिकार्डकीपर ।  
 इध्मपुं ( कि. ) मछी बेना, ना-  
 डना, छुपाना, गुप्त रखना ।  
 इध्मरुं ( कि. ) मिटाना, दूर करना,  
 अलग करना ।  
 इध्मर ( सं. ) बेसी फौजी अफसरों  
 का एक ओहदा । [ पागल ।  
 इध्मर—यं ( सं. ) मूर्ख, शठ, बड़-  
 ध्मपुं ( कि. ) दबना, बशीभूत  
 होना, आधीन होना ।  
 इध्मरी राधुं ( कि. ) छुपाना, छु-  
 काना, दुनकाना ।  
 इध्मपुं ( कि. ) धमकाना, डा-  
 टना, बुढ़कना, डराना ।  
 इध्मो ( सं. ) दिखावा, बड़प्पन,  
 दबदबा, प्रताप, धूमधाम ।  
 इध्मपुं—मिध्मपुं ( कि. ) दबना,  
 आधीन होना, बशवर्ती होना ।  
 इध्मधु ( सं. ) धमकी, बुढ़की, डाँट,  
 दाब, (संदाचार विषयक) दबाव ।  
 इध्मपुं ( कि. ) दबना, धमकाना,  
 डराना, बुढ़कना ।  
 इध्मिपुं ( कि. ) देखो इध्मपुं  
 इध्म ( वि. ) दबनेवाला, परबल,  
 परतंत्र, डरा हुआ । [ खना ।  
 इध्मोऽधुं ( कि. ) छुपाना, गुप्त र-

६५ ( सं. ) सौंख, स्वाँस, जीवन्, जीव सम्बन्धी बल, यक्ष्मा, दमा, शक्ति, पौष्ट्य, ताकत, फूँक, मूल्य, जौहर, क्षण, पल । [ दबाना ।

६५ आ१५वे। ( कि. ) दम देना, ६५ ६६वे। ( कि. ) मारना, प्राण निकालना ।

६५ भा१वे-५६५वे-५२वे। ( कि. ) विश्राम लेना, धैर्य रखना, इंतजार करना, बाट जोहना, सत्र करना, ठहरना, दम लेना, सोंस लेना ।

६५ ७७वे। ( कि. ) अंतिम स्वाँस लेना ।

६५ ७७वे। ( कि. ) अपने बलकी परीक्षा करना, निजबल को आ-जमाना ।

६५ ७७वे। ( कि. ) स्वास का रोग होना, दमे की बीमारी होना । [ दिना

६५ ८७वे। ( कि. ) थोका देना, दम

६५ नि६७वे। ( कि. ) देखो ६५ ७७वे।

६५ भा२वे। ( कि. ) प्रतीक्षा करना, इंतजार करना ।

६५ भु६वे। ( कि. ) सोंस छोड़ना, प्राण निकालना, स्वाँस निकालना ।

६५ रा१५वे-५१५वे-५८वे, भा-२वे, ३५वे। ( कि. ) स्वाँस लेना बन्द होना या करना ।

६५ ६७वे। ( कि. ) आराम करना, विश्राम करना, दुःख देना, कष्ट देना । [ सिखा, ८ पैसा ।

६५ ६८ ( सं. ) सबसे छोटा प्राचीन :

६५ ६८भा२ ( वि. ) तृण समान, तुच्छ ।

६५ ६८तुं ( वि. ) निकम्मा, खोटा, व्यर्थ, गुणहीन, मूल्यहीन ।

६५ ६८ ( सं. ) बैलोंकी छोटी बैल गाड़ी, दमनी, बैलोंकी बगधी ।

६५ ६८ ( सं. ) भारकस गाड़ी, बजन डोनेवाली गाड़ी ।

६५ ६८भा८ ( सं. ) चमक दमक, प्रकाश, ठाठ, दिखावा ।

६५ ६८ ( सं. ) विजय, पराजय, पीछा परिश्रम, दुःख ।

६५ ६८ भा१२ ( सं. ) दमे की बीमारी, यक्ष्मा रोग, राजयक्ष्मा ।

६५ ६८ ६८ ( कि. वि. ) बारम्बार, पुनः पुनः लगातारसे ।

६५ ६८ भुभा२ ( सं. ) छैला, बाँका ।

६५ ६८, ६८भा२ ( सं. ) एक सुशबूदार, पौदा विशेष ।

६५ ६८तुं ( वि. ) हिम्मतवाला, साहसी, दमे रोगवाला, यक्ष्मा पीड़ित ।

६५ ६८ ( कि. ) थकना, दुःख होना, सताना, दुःख पहुँचाना ।

- इभाक-अ ( सं. ) बड़प्पन, ठाठ,  
 जूमबाम दिखावा,  
 इभाभ भरेक्षुं ( वि. ) रौनकदार,  
 दैदीप्यमान, आहम्बरी ।  
 इभावपुं ( कि. ) थकान, सताना ।  
 इभीम्भ ( वि. ) दमे की बीमारी-  
 वाला ।  
 इभी जपुं ( कि. ) थकना ।  
 इभेक्ष ( वि. ) थकित, थका हुआ ।  
 इभेक्ष्म ( कि. वि. ) दबावमे, थ्रेष्ठ-  
 तामें, बड़ाईमें, बराबरीमे, मुका-  
 बिले मे, स्पर्धा में ।  
 इभा ( सं. ) कृपा, स्नेह, करुणा,  
 अनुग्रह, रहम ।  
 इभा आवपी ( कि. ) समवेदना  
 होना, दिलमे करुणा होना ।  
 इभा क्षेपी ( कि. ) कृपा करना,  
 रहम करना, अनुग्रह करना ।  
 इभाक्षे-निधान-निधि-सागर ( सं. )  
 दयाशील, दयालु, कृपावान, कर-  
 णामय, रहीम ईश्वर ,  
 इभाधर्म ( सं. ) दया प्रदर्शक धर्म,  
 हिन्दू धर्म, अहिंसा धर्म ।  
 इभापात्र ( वि. ) कृपापात्र, करुणा-  
 योग्य दीन बुद्धी ।  
 इथाभय ( वि. ) दया निधान, कृ-  
 पानिधि । [ दया ।  
 इथाभाया ( सं. ) कृपा, महरबानी,

- इथाभक्षुं ( वि. ) देखो इथापान  
 इथापुक्ष्म-सम्पन्न ( वि. ) देखो इ-  
 थाभय  
 इथावत-वान-ण ( वि. ) कृपालु,  
 दयायुक्त, करुणायतन मिहरबानी  
 इर ( सं. ) भाव, मूल्य, गुफा, क-  
 न्दरा, सुरास्त्र, छिद्र ( कि. वि. )  
 एक, इरेक, प्रति ( जिन्य ) द्वारा,  
 जरिया, से ।  
 इरक्षर ( सं. ) आवश्यकता, जरूरत,  
 इच्छा, परवाह, सम्बन्ध, मतलब,  
 गर्ज । [ पत्र, मनोरथ, विचार ।  
 इरभासि-स्त ( सं. ) अर्जी, प्रार्थना  
 इरभास्त क्षेपी ( कि. ) प्रार्थना  
 करना, हिलाना, विचारना, मनो-  
 रथ करना ।  
 इरभा-या ( सं. ) मस्जिद, देहली  
 द्वार, बली, पीर का स्थान ।  
 इरभुक्ष ( सं. ) धैर्य, सत्र, क्षमा,  
 सुआफा ।  
 इरभुक्ष क्षेपुं ( कि. ) धैर्य करना,  
 सत्र करना, क्षमा करना ।  
 इरभुक्ष-क्षेपु ( सं. ) दर्जी की स्त्री ।  
 इरभु ( सं. ) दर्जी वस्त्र सीनेवाला,  
 कपड़ा सीनेवाला, एक जाति विशेष ।  
 इरभु ( सं. ) देखो इर

- ६२७-७७ ( सं. ) श्रेणी, क्लास, ओहदा, पद, पदवी ।  
 ६२६ ( सं. ) दुःख, दर्द, रोग, शोक, गुप्त अमिप्राय, छुपी मुराद । [ कारा ।  
 ६२६।७ ( सं. ) दावा, हक, अधि-  
 ६२६।८ ( सं. ) रोगी, दुखिया, बीमार, रगण, अस्वस्थ ।  
 ६२७७ ( सं. ) देखो ६२७७ ।  
 ६२७।२ ( सं. ) राजसभा, कोर्ट, सभाभवन, राजा, न्यायालय ।  
 ६२७।३ ( सं. ) दरबार का, दरबार सम्बन्धी, नीतिज्ञ ।  
 ६२७ ( सं. ) देखो ६७ ।  
 ६२७।४ ( सं. ) मासिक वेतन, महीने वार तनह्वाह, मासिक मजूरी ।  
 ६२७।५ ( सं. ) मध्यमे, बीचमे ।  
 ६२७।६ ( कि. वि. ) नित्य, रोज-मरह, दैनिक, प्रतिदिन, सदा ।  
 ६२७ ( सं. ) देखो ६७७ ।  
 ६२७।७ ( सं. ) नास्तिक, ईश्वर को न मानने वाला ।  
 ६२७।८ ( सं. ) फाटक, द्वार, मार्ग, दुआर, किवाड़, कपाट ।  
 ६२७।९ ( सं. ) द्वारपाळ, द्वाररक्षक हलकारा, दूत । [ साधु ।  
 ६२७१० ( सं. ) योगी, फकीर, ६२७११ ( सं. ) एक प्रकार की चूड़ी । [ होना ।  
 ६२७१२ ( कि. ) दिखाना, प्रकट ६२।१३ ( सं. ) देखो ६२।१४ ( सं. ) दाद, दहु, चर्मरोग ।  
 ६२।१५ ( सं. ) पूर्ववत् ।  
 ६२७।१६ ( वि. ) समुद्री, समुद्र, सम्बन्धी, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।  
 ६२७।१७ ( सं. ) सोच, विचार, अटकल, अनुमान, कल्पना, ख्याल ।  
 ६२७।१८ ( सं. ) देखो ६२७।१९ ( सं. ) गरीबी, निर्धनता, कमी, चटी, न्यूनता, तंगी, विपत्ति ।  
 ६२।२० ( वि. ) निर्धन, कंगाल, अतिदुखी, गरीब । [ दरियाई ।  
 ६२७।२१ ( वि. ) सामुद्रिक, ६२७।२२ ( सं. ) समुद्र, उदाधि, जल-निधि, सिंधु, सागर । [ गार ।  
 ६२।२३ ( सं. ) गुफा, कन्दरा, मांद, ६२७।२४ ( वि. ) ठीक, उचित, दुरु-स्त, योग्य, सही ।  
 ६२७ ( कि. वि. ) प्रत्येक, हरेक ।  
 ६२७।२५ ( सं. ) दूरी, दूज, एक प्रकार की चास विशेष, निरीक्षक ।



दशमे ( सं. ) दारोगा, विगार, निरी-  
लक्ष, क्षारणाराधित, जेलर ।

दशमे ( सं. ) कुदरे के मुंड का  
आक्रमण, डाकुओं की पट्टी का  
हमला । [ निर्दोष, अभ्यंग ।

दशमे ( वि. ) पूर्ण अपवाद रहित,  
दृष्ट ( सं. ) देखो ६२६ ।

दशमे ( वि. ) देखो ६२६ ।

दशमे ( सं. ) मेढक, दादुर,  
मेक, दर्दर ।

दशमे ( सं. ) गर्व, अभिमान, अहं-  
कार, घमण्ड, मान, आत्मश्लाघा ।

दशमे ( सं. ) रूप देखने का आधार,  
आदर्श, मुकुर, आरसी, शीशा ।

दशमे ( सं. ) कुशा, डाम, दर्मा,  
कांश ।

दशमे ( सं. ) कुशासन, डाम  
का बनाहुवा आसन । दर्मा की  
बैठक ।

दशमे ( वि. ) दिखानेवाला देखने  
वाला, दर्शयिता, दर्शनकारक ।

दशमे ( सं. ) अवलोकन, निरीक्षण,  
देख, देखना, नक्का, नेत्र ।

दशमे ( वि. ) परिणाम दर्शा,  
प्रमाणिक, उपपादक ।

दशमे ( वि. ) दरसाला, दिखाना ।

दशमे ( वि. ) जो देखे, देखनेवाला ।

दश ( सं. ) देखो ६६ ।

दशमे ( वि. ) चित्तानुर, चित्तित,  
गमगीन, रंजीदा, शोकाकुल ।

दशमे ( वि. ) चित्तानुर  
होना, रंजीदा होना, शोकानुर  
होना । [ मम ।

दशमे ( सं. ) रंज, शोक, खेद,  
दशमे ( सं. ) देखो ६६३ ।

दशमे ( सं. ) एजेण्ट, आकृतिवा ।  
दशमे ( सं. ) दलाल का धन्धा,  
दलाल की मजदूरी ।

दशमे ( सं. ) पूर्ववत् ।

दशमे ( सं. ) देखो ६६३ ।

दशमे ( सं. ) शास्त्रार्थ, तर्क, शंका,  
प्रमाण, बहस, बहाना, मुकदमा ।

दशमे ( सं. ) एकत्रित कोष,  
बटोरा हुवा खजाना ।

दशमे ( सं. ) जंगल की भारी आग,  
दावानल, वनाग्नि, वनबाहा ।

दशमे ( सं. ) दवा, दारु, औषधि ।

दशमे ( सं. ) औषधालय,  
अस्पताल, औषधालय, वैद्यगृह ।

दशमे ( सं. ) देखो ६६ ।

दशमे ( सं. ) देखो ६६ ।

दश ( सं. ) दस, संख्या विशेष, १०-

दश ( वि. ) दस का समूह,  
दहाई ।

दशमी ( सं. ) दात, दंत, दसन ।

दशमं ( वि. ) दसवां ।

दशमुपे-वः ( सं. ) रावण का नाम, दस मुंहवाला ।

दशमंश ( सं. ) दशमलवभिन्न  $\frac{1}{10}$ , दसवां हिस्सा ।

दश ( सं. ) हाल, हालत, अवस्था, गति, स्थिति, भाव, मृतक को दसवां दिन ।

दशानन ( सं. ) दशकंठ, रावण ।

दशेन्द्रिय ( सं. ) दस इन्द्रियां कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय ।

दशसेर-शेरी-शेरे ( सं. ) वजन, १० शेर का वजन ।

दस ( सं. ) देखो दश

दसम ( सं. ) तिथि विशेष, दशमी ।

दसश ( सं. ) देखो दसेर ।

दशीवीची ( सं. ) सफलता और असफलता, उन्नति और अवनति ।

दसेर । ( सं. ) विजया दशमी, आश्विन शुद्धा दशमी तिथि ।

दशत ( सं. ) अक्षर, हस्तलिपि, हस्ताक्षर, दस्ताखत ।

दशे । ( सं. ) दहाई ।

दश ( सं. ) अधिकार, हक, शक्ति जुझाव, रेचन ।

दशमी ( सं. ) रक्षक, संरक्षक, पालक, बचाने वाला, सरपरस्त, मुरब्बी । [ पराधिकार प्रवेश ।

दशमी ( सं. ) अनधिकार प्रवेश, दशान ( सं. ) मासिक धर्म, रज दर्शन, हाथों के माजे, दस्ताने ।

दशमी ( सं. ) लेख प्रमाण, तम-स्तुक, टीप, मुचलका ।

दशमी ( सं. ) हस्तलिखित प्रमाण पत्र, लिखित साक्ष्य ।

दशमी ( सं. ) रीति, चाल, रिवाज, पारसी लोगोंका पुरोहित ।

दशमी ( सं. ) दस्तूरकी, फीस, शुल्क ।

दशमी ( सं. ) मूसल, लोढा, बछा, मूठ, हत्या, कागजोंका दस्ता, २४ तावका लिखनपत्र ।

दश ( कि. ) जलाके भस्म करना ।

दश ( सं. ) जलन, दाह ।

दशी ( सं. ) दधि, दूधका विकार ।

दशी ( सं. ) एक प्रकारकी टिकिया ।

दशी ( सं. ) एक प्रकारकी टिकिया जो दहीमें बुबोकर खाई जाती है । दही बड़ा ।

दश ( सं. ) एक प्रकारकी मिठाई, शक्ति, फौज, सैन्य संग्रह, गूदा, मुठाई, भक्षण । [ नेकी, चकी ।

दशमी ( सं. ) हाककी चकी, दल-

इण्डु (सं.) पीसने के लिये तय्यार किया हुआ अन्न, पीसन ।

इण्डर (सं.) देखो इरिद्रा

इण्डार (वि.) मोटा, घना, भरा, गूदे दार, मांसयुक्त ।

इण्द्री (सं.) देखो इरिद्रा

इण्द्री (सं.) पीसने वाला, दलने वाला, पीसनहार ।

इण्द्री (सं.) कुहर, अंघ्रायुध, सेना फौज, घनघटा, घोरभटा ।

इण्दु (कि.) पीसना, दलना, कुचलना, आटा करना, चूरना ।

इण्दु-धु (सं.) दलवाई, पीसने की मजदूरी ।

इण्दु (कि.) दलाना, पिसाना ।

इण्ड (वि.) अचेत, असावधान, बे परवाह, अविवाहित, बेव्याह ।

इण्ड (सं.) अविचार, बेपरवाही अज्ञानता, दुष्टता ।

इण्डी (सं.) छड़ी, छण्डी, छंडोरा, डुग्गी, मुनादी ।

इण्डी (सं.) छंडोरा पीटने वाला डुग्गी फेरने वाला, छड़ी ।

इण्डा (सं.) मूठ, हत्था, मूसल, लोढा

इण्ट (सं.) देखो इण्ट

इण्ट (कि.) दांत पीसना ।

इण्ट (कि.) पराजय का बोध होना पराजय के समय दुःखावस्था में होना ।

इण्ट (कि.) इंसाना, दांत पीसना ठोठी करना ।

इण्ट (सं.) दांतफुरचनी, दांत साफ करनेकी सूर्यमकील ।

इण्ट (सं.) दांतबन्द होना, मुँहका नखुलना ।

इण्ट (कि.) दांत लगाना ।

इण्ट (कि.) दांत तोड़ डालना । [ इण्ट (कि.)

देखो इण्ट

इण्ट (कि.) देखो इण्ट

इण्ट (कि.) दांत निकलना, दांत आना, हिम्मत बांधना, साहस आना ।

इण्ट (कि.) दांत निकलना, दांत आना, हिम्मत बांधना, साहस आना ।

इण्ट (कि.) दांतला, जिसका एकया दो दांत होठों से बाहिर निकलाहो ।

इण्ट (सं.) दंतुवन, दंतौन, दंतु दांत साफ करनेकी युक्त, दंतमज्जन ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

इण्ट (सं.) दांत, नोक, दांता, करास, पाहिबेका दांत ।

देना, दागदेना, ( वि. ) जो देवे,  
देता है । [ पिलनेवाली ।

६६४ (सं.) धाय, धात्री, बन्धेको दूध

६६५ ( सं. ) पूर्ववत्

६६६ ( सं. ) देखो ६६७

६६८ ( वि. ) पहुँचा, शामिल ।

पुसा, सम्मिलित, ( उप. ) ऐसा,  
जैसा मानिद ।

६६९ ( कि. ) पेशकरना,  
मिलाना, पहुँचाना, पैठने देना,  
नोट करना, लिखलेना ।

६७० ( कि. ) प्रवेश करना ।

६७१ पुशवा ( सं. ) लेखपत्र  
द्वारा साक्षी, प्रमाणिक, गवाही ।

६७२ (सं.) सुवृत्, प्रमाण, शास्त्रार्थ  
उदाहरण, मिसाल, दर्जाल, बजह,  
दृष्टान्त, बहस ।

६७३ ( कि. ) दिखलाना, प्रत्यक्ष  
करना, निकालना, ढूँढ निकालना,  
नोटिसमें लाना, दृष्टान्त देना,  
मिसाल देना ।

६७४ ( कि. ) सूचित करना, बत-  
लाना, समझाना । [ दाहकर्म ।

६७५ (सं.) मृतक का अग्नि संस्कार,

६७६ (सं.) पैबन्द, थिगरी ।

६७७ अश्वी-अश्वी ( कि. )

दागल होना, सिरि होना ।

६७८ ( सं. ) आमूषण, अदद,  
पुलिन्दा, गठ्ठा । [ स्पर्शज्ञान, क्रोधा ।

६७९-८० (सं.) समवेदना, सहानुभूति,

६८० ( सं. ) जलन ।

६८१ ( कि. ) जलना, बुख उठाना,  
समदुखी होना । [ मोटाई, घनत्व ।

६८२ ( सं. ) बदी, नुकसान, बुराई,

६८३ आणवे ( कि. ) नाश करना.

बर्बाद करना, नष्ट करना, अकारथ  
करना ।

६८४ ( कि. ) गाढ़ना, जमीन में  
दबाना, दफनाना, छुपाना, गुप्त  
रखना । [ सघन ।

६८५ ( वि. ) ससमूह, भीड़युक्त,

६८६ ( सं. ) देखो ६८७

६८८ देवे ( कि. ) बन्द करना,

काट लगाना, डहा देना । [ विशेष ।

६८९-९० ( सं. ) अनार, फल

६९० (सं.) अनार का छिलका ।

६९१ ( सं. ) अनार का पेड़ ।

६९२ (सं.) मजदूर, काम करनेवाला ।

६९३ (सं.) दिन, दिवा, बासर वार ।

६९४ ( सं. ) चौह, पिछले दाँत,

जबड़ा, आड़, पीसनेवाला दाँत ।

६९५ आश्वी ( वि. ) भसुओं का

सूजना ।

६१६ धातु-वधु ( कि. )

मुँह को स्वाद लगाना, चाट पड़ाना, चसका पड़ना, लत लगाना ।

६१६भां धेपुं-शभु ( कि. ) दुस्मनी, करना, ईर्षा रखना, बाह करना ।

६१६भे ( सं. ) देखो ६१६भे

६१६ ( सं. ) श्मश्रु, चिबुक, मुख के नीचे के दुड़ी पर के बाल ( कि. वि. ) दैनिक,

६१६ ( सं. ) बिना मुँड़ी हुई दाढ़ी ।

६१६ ( सं. ) नासिक धर्म, रजसाव ।

६१६ ( सं. ) कर, टेक्स,

६१६भे ( सं. ) वह मकान जहाँ कर सभ्रह किया जाता है ।

६१६भेरी ( सं. ) महसूली माल को छुपाकर बिना महसूल दिये लंजाने का चोरी का काम, कर की चोरी ।

६१६-६१६ ( सं. ) कण, अन्न, दाना, मणिया, गुरिया, मणिका ।

६१६ ६१६ ( सं. ) तितर बितर, कण कण, बिखेर

६१६६१२ ( वि. ) बीजयुक्त, दाने-दार, मोटा, झुरदरा ।

६१६११६ ( सं. ) अक्षोदक, अन्न-जल जीविका रोगी ।

६१६११६ ( सं. ) अन्नविमेता, अनान्न बेचने वाला ।

६१६ ( सं. ) कर इकट्ठा करनेवाला ।

६१६ ( वि. ) अधिकारी, न्याय संगत, बयोचित ।

६१६ ( सं. ) काच के मोतियों का बना गलेमें पहिरने का ज्वर ।

६१६ अक्ष ( सं. ) करद, कर देने-वाला, करदाता ।

६१६ ( सं. ) दाना, अन्न, अन्न, समान कोई गोल वस्तु, माला का मणिया, संख्या, तादाद ।

६१६-११६ ( सं. ) चारा, दाना, घास, पशु भोजन ।

६१६ ११६ ( सं. ) देखो ६१६ ११६

६१६ ( सं. ) देखो ६१६

६१६ ११६ ( कि. ) मुख मार्जन करना, दांत साफ करना ।

६१६ ( सं. ) हँसिया दराती, दातली, घास काटने की दराती ।

६१६ ( सं. ) देनेवाला, दाता, दानी, दानशील, वदान्य ।

६१६ ( वि. ) उदार, दयालु, हितैषी, सच्ची, धर्मात्मा, सीधा ।

६१६ ( सं. ) मिष्टि की वाली (पात्र) ।

६१६ ( सं. ) मिष्टि का पात्र विशेष ।

शब्दार्थः (सं.) किसी वस्तु को सहारा देने के लिये किसी पात्र में डाली हुई पत्तियाँ या घास । भरा हुआ सुँह और फूले हुए गाल ।

शब्द (सं.) उलाहना, अभिबोध, चिन्ता, न्याय, इन्साफ़, उपाय, औषध । [देना औषधि करना ।

शब्द शेषी (सं.) उपाय करना, बदला

शब्दार्थः (सं.) अभियोक्ता ।

शब्दार्थः (सं.) सत्य न्यायकर्ता, ईश्वर ।

शब्दार्थः (सं.) सीढियों में का

झरोखा या किवाड़ । मिलमिल ।

शब्दार्थः (सं.) दादरा नामक गीत, नसेनी, जीना, सीढी, ताळे का एक हिस्सा ।

शब्दार्थः (सं.) देवता का लक्षण या नाम । [पर्यायवाची नाम ।

शब्दार्थः शब्दार्थः (सं.) ईश्वर का

शब्दी (सं.) वादी, मुद्दई, प्रमाता, बाप की माता, दादी, मातामह ।

शब्दार्थः (सं.) मेक, मेंढक, दर्दर ।

शब्दार्थः (सं.) बाप का बाप, प्रपिता, पितामह । [विशेष ।

शब्दार्थः (सं.) बाद, दह, चर्मरोग ।

शब्दार्थः (क्रि.) जलाना, दग्ध करना ।

शब्दार्थः शब्दार्थः-शब्दार्थः (वि.) रुखा चिड़चिड़ा, उदास ।

शब्दार्थः (सं.) दारु, अलाहवा, दानेल ।

शब्दार्थः (सं.) पुण्यार्थ, धनत्याग, त्याग, वितरण, उत्सर्ग, भेट, उपहार ।

शब्दार्थः (क्रि.) देना, त्यागना, दान देना, भेट करना ।

शब्दार्थः (सं.) दान करनेका गृह, जहाँ सदावर्त बटताहो, धर्मशाला ।

शब्दार्थः (सं.) चित्त, दिल, कयाल, निश्चय, विश्वास नजर, कीला ।

शब्दार्थः (सं.) ईमानदारी, सचाई ।

शब्दार्थः (सं.) दानपुण्य, पुण्यकार्य ।

शब्दार्थः (सं.) वृत्ति, दान लाप, दान की हुई वस्तुपर सम्प्रदानका स्वत्व बतलानेके लिये लेख ।

शब्दार्थः (वि.) दानदेने योग्य व्यक्ति, दानके लिये उचित, देने योग्य, वह पात्र जिसमें दान डाला जावे ।

शब्दार्थः (सं.) असुर, राक्षस विष ।

शब्दार्थः शब्दार्थः-शब्दार्थः (सं.) देखो शब्दार्थः [ज्ञाता, अभिज्ञ ।

शब्दार्थः (वि.) अनुभवी, बुद्धिमान,

शब्दार्थः (सं.) बुद्धिमत्ता, ज्ञान, बुद्धि, पूर्व विचार, सचाई ।

शब्दार्थः शब्दार्थः-शब्दार्थः (सं.) दान देने में सुचिन्ता, दान कृत्यमें मुख्यया अभिपति ।

६१५५ ( वि. ) अनुमयी, चतुर ।  
 ६१५६ ( सं. ) दाता, देने वाला ।  
 ६१५७ ( वि. ) देखो ६१५५  
 ६१५८ ( सं. ) देखो ६१५५  
 ६१५९ ( सं. ) दाता, हक, अधिकार ।  
 ६१६० ( सं. ) भय, डर, दाब ।  
 ६१६१ ( सं. ) छोटीसी डिबिया,  
 हुलास मरने की डिब्वी, डिब्वी ।  
 ६१६२ ( सं. ) डब्बा, बक्स, पेटी ।  
 ६१६३ ( सं. ) वजन, दबानेकी वस्तु,  
 पक करनेकी सुई ।  
 ६१६४ ( सं. ) दबानेकी, प्रेस ।  
 ६१६५ ( सं. ) भय, डर, खौफ ।  
 ६१६६ ( कि. ) देखो ६१५९  
 ६१६७ ( कि. ) दबारखना,  
 छुपाये रहना, गुप्त रखना ।  
 ६१६८ ( सं. ) देखो ६१५९  
 ६१६९ ( सं. ) मूल्य, पैसा, कीमत, द्रव्य ।  
 ६१७० ( सं. ) देखो ६१५९ दावन ।  
 ६१७१ ( सं. ) एक प्रकारका आभूषण  
 जिसे स्त्रियां कपालपर धारण क-  
 रती हैं ।  
 ६१७२ ( वि. ) देखो ६१५९  
 ६१७३ ( सं. ) रस्सी, बिजुली, विद्युत् ।  
 ६१७४ ( सं. ) कीमती, मूल्यवान,  
 बहुमूल्य । [ नाम ।  
 ६१७५ ( सं. ) श्री कृष्ण चन्द्रका एक

६१७६ ( सं. ) देखो ६१५९  
 ६१७७ ( सं. ) दसका योग, दहाई ।  
 ६१७८ ( सं. ) देखो ६१५९  
 ६१७९ ( सं. ) समा, संपत्ति सम्मेलन ।  
 ६१८० ( सं. ) देखो ६१५९  
 ६१८१ ( वि. ) दाबक, कण चुका देने  
 के योग्य, रखने वाला, धरने वाला ।  
 ६१८२ ( सं. ) स्त्री, औरत, पत्नि, भार्या ।  
 ६१८३ ( वि. ) व्यभिचार, जिनाकारी  
 वेश्यागमन, छिनारा, जिना ।  
 ६१८४ ( सं. ) देखो ६१५९  
 ६१८५ ( सं. ) लकड़, शराब, मदिरा  
 मद, गनपाउडर, बन्दुक मरनेका  
 बारूद, पाउडर ।  
 ६१८६ ( सं. ) दारुहल्दी, औषधि  
 विशेष, दारु हरिद्रा ।  
 ६१८७ ( सं. ) आगया आग से  
 भड़कने वाले पदार्थोंका कार्य,  
 दारुका काम ।  
 ६१८८ ( सं. ) शराब खाना, बह  
 स्थान जहाँ बारूदका काम होता है ।  
 ६१८९ ( सं. ) लड़ाई का सामान,  
 युद्धकी सामग्री, गोळा बारूद ।  
 ६१९० ( सं. ) मद्यपी,  
 मद्यप, शराबी, मदपीनेवाला ।  
 ६१९१ ( वि. ) कठिन, बोर, कठोर  
 असह्य, भयानक ।

દાર્શનાજી ( સં. ) દેવો દાર્શિણી

६३५१७ (सं.) शराबखोरी, मध्यप्रान्त।

દારશાસ્ત્ર ( સં. ) દેસો દારશાસ્ત્ર

६१६(सं) खेल, पारी, नम्बर, चक्र, वांव, उछाल, लोहेकी कुट्टाई जबतक कि वह गर्म हो, मेल, जोड़, ऐन वक्त, दांवपेच ।

**हाक्षयिनि (सं.) दारचीनी, दारू चीनी**  
एक वृक्षकी छाल, दालचीनी ।

हाथडी ( सं. ) एक प्रकारका पुष्प,  
गुल दाऊदी । [ चालाकी ।

हावपेथ ( सं. ) घात, दांव, युक्ति

દાવર ( સં. ) ધર્મિષ્ઠ, પુણ્યાત્મા ।

दावाएण (सं.) आंधी, तूफान,  
झक्झक, हलचल ।

हावाह्मन् (सं.) बैरी शत्रु, रिप।

દાવાદુસ્તની ( વિ. ) દ્રોહ, વૈર, દ્વેષ  
અશ્રુતા, વિરોધ, રિપુતા ।

हावाक्षर (सं) बादी, मुद्दे, अधि-  
कारी, दाना करनेवाला ।

हावा नण-अन (सं.) देखो हव

६।१६। ( सं. ) दाबा, हक्क, अधिकार  
नामलेख, नालिश, मुकदमा ।

दावेऽश्वे। (क्रि.) दावा करना,  
नालिश करना, अभियोग चलावना।

नालोश दायर करना, सुकहमा दाखिल करना ।

दास ( सं. ) मृत्यु, किकर, सेवक,  
नौकर, गुलाम, अकिंचन, भक्त ।

दासपक्ष ( सं. ) सेवा, नौकरी,  
गुलामी। [ ताबेदारी ।

दासत्व ( सं. ) पूर्ववत् दासत्व,

दासभुदास ( सं. ) दासकाभीदास,  
सेबककाभीसेबक । [ नौकरनी ।

दासी ( सं. ) टहलनी, बादी,

दासीपुत्र ( सं. ) दासीका बेटा,  
वर्णसंकर, दासीसे उत्पन्नपुत्र ।

हास्तान ( सं. ) किस्ता, कहानी,  
बयान ।

दास्य ( सं. ) दासत्व, गुलामी ।

६१६ ( सं. ) जलन, जल्लादेनेवाली  
गर्मी ।

६।६३ ( सं. ) जलानेवालो, अग्नि,  
आग । ( वि. ) जो जलावे, जो  
भस्म करे ।

हाहडी (क्रि. वि) दैनिक, रोज़ाना।

हालजपु ( कि. ) देखो हालजपु

दादा ( वि. ) दस, दस, १०

दाहा ( सं. ) देखो दाहा

हाल ( वि. ) जोशीघरही जल जावे,  
आगसे सटमडक उठनेवाला पदार्थ।

६।६।३। ( सं. ) दिन, दिवस, बार  
बासर, क्रियाकर्म, दाहविधि, प्रेत  
कर्म, समय ।





विमल अठ है, ऐरावत, पुष्करिणी,  
वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त,  
सार्वभौम और सुप्रतीक ।

द्विजिन्म ( सं. ) विद्या अवस्था  
मुद्रके द्वारा देश विजय ।

द्विजिन्मयी ( सं. ) विश्वजेता, सर्वत्र  
जयशील, देशजयी ।

द्वि-४ ( कि. वि. ) पर, प्रत्येक द्वारा ।

द्वि ( सं. ) जंगली पौदा ।

द्विधुं ( सं. ) सूर्य, सुरज  
रवि, दिनकर ।

द्वि ( सं. ) आँक, नेत्र, नयन, वस्तु,

द्विद्वार ( सं. ) सूरत, शाल, हालत,  
दशा, दर्शन,

द्वि ( वि. ) दियाहुवा, दत्त, प्रदत्त,

दिन ( सं. ) देखो द्विपक्ष

दिनक्षर ( सं. ) देखो द्विधुं

दिननिश ( कि. ) रातदिन, अहर्निशि ।

दिनभान ( सं. ) सूर्योदय से सूर्यास्त,  
तकका समय, दिवसकाल ।

दिनरन्गी ( सं. ) देखो दिननिश

दिनांत ( सं. ) संध्या, सार्यकाल ।

दिनार ( सं. ) स्वर्णमुद्रा, सोने का  
लिपिका । [ व्याघ्र ।

द्विपुं-३ ( सं. ) जीता, जैनुका,

द्विपुं ( सं. ) प्रकाश, ज्योतिर्वैभवं ।

द्विपुं ( कि. ) कमकना, प्रकाशित  
होना, योग्यहोना, शोभित होना ।

द्विपुं ( सं. ) सुंदर, मनोहर,  
रूपयुक्त, खूबसूरत ।

द्विपुं ( सं. ) भूमिका, प्रस्तावना ।

द्विपुं ( सं. ) देखो द्विपुं ।

द्विपुं ( सं. ) अहंकार, गर्व,  
मस्तिष्क । [ चतुर ।

द्विपुं ( सं. ) बड़ा, घमंडी,

द्विपुं ( वि. ) पूर्ववत् ।

द्विपुं ( सं. ) ठाठ, धूमधाम ।

द्वि ( सं. ) चित्त, मन, विचार,  
इच्छा, प्रेम, हृदय ।

द्विपुं ( सं. ) एक प्रकार का उत्तम  
फूलवाला वृक्ष ।

द्विपुं ( सं. ) देखो द्विपुं ।

द्विपुं ( कि. ) चित्तभ्रम  
होना, चित्त अस्थिर होना ।

द्विपुं ( कि. ) प्रेम  
कम कर देना, स्नेह कम करना ।

द्विपुं ( सं. ) अपने दिलकी  
साफ साफ बातों का कथन ।

द्विपुं ( सं. ) प्रसन्न, हृष्ट,  
मुदित, तुष्ट ।

द्विपुं ( कि. ) चित्तप्रसन्न  
करना, मनमुत्त करना ।

द्विपुं ( सं. ) प्रसन्नता, हर्ष,  
मनकी मौज ।

द्विध वपुं (कि.) चाहना, दिल होना,  
इच्छा होना, स्वादिस करना ।

द्विध वगाडपु ( कि. ) प्रेम करना,  
ध्यान देना, सोचना, विचारना ।

द्विधगीर ( सं. ) रंजीदा, चितित,  
शोककुल, खेदित । [ चिता ।

द्विधगीरी ( सं. ) रंज, शोक, खेद,  
द्विधहार ( सं. ) प्रेमी, अनुरागी,  
दिलवाला । [ सच्ची मित्रता ।

द्विधहारी ( सं. ) घनिष्ठमैत्री,  
द्विधपसन-अभन ( वि. ) मुआ-  
फिक, पसन्दीदा, दिलपसन्द,  
रोचक । [ प्यारा ।

द्विधपस ( वि. , पूर्ववत्, मित्र,  
द्विधरेश ( सं. ) मनोहर, सुन्दर ।  
द्विधरेशो ( सं. ) विश्वास, यकीन ।

द्विध वगाडपुं ( कि. ) ध्यान देना,  
सोचना, विचारना, ख्याल करना ।

द्विधपाड ( सं. ) खरा, निष्कपट,  
सच्चा ।

द्विधभर ( सं. ) कोमल, हृदयी,  
मृदु हृदय का, प्यारा, प्रेमी ।

द्विधभर ( सं. ) पूर्ववत्, यार,  
आशना । [ उत्सुकता ।

द्विधसो ( वि. ) अनुराग,  
द्विधसो ( सं. ) उत्साह, उद्योग ।

द्विधवार ( सं. ) वीर, बहादुर,  
साहसी । [ साहस ।

द्विधवरी ( सं. ) बहादुरी, वीरता,  
द्विधसो ( सं. ) तसल्ली, वीरज, साहस ।

द्विध ( वि. ) हार्दिक, सच्चा दिल का ।  
द्विधोन्नन ( वि. ) प्यारा, प्रेमी,  
हार्दिक, दिल और प्राण, मन  
और आत्मा । [ मनसे, प्रेमसे ।

द्विधोन्ननशी ( कि. ) सच्चे हृदयसे,  
द्विधट ( सं. ) बत्ती, मसाला,  
पलीता ।

द्विधुं ( सं. ) आटे का दीपक,  
दीपक युक्त टिकिया । [ रोज ।

द्विधस ( सं. ) दिन, वार, वासर,  
द्विधस गुणरो डरवे ( कि. ) दिन  
काटना, उमरटेर करना, किसी  
प्रकार । दिन व्यतीत करना या  
गुज़र करना ।

द्विधोड ( सं. ) रोशनीघर, जिस में  
जहाज बालोंको रास्ता दिखाने के  
लिये ऊँचे पर रोशनी होती है ।

द्विधान ( सं. ) दीवान, प्रधान मंत्री ।  
द्विधान्नीनुं ( सं. ) बैठक, ओता,  
या आगन्तुकों के लिये मकान ।

द्विधानभी ( सं. ) पागलपन, मूर्खता ।  
द्विधानगीरी ( सं. ) यंत्री का काम,  
दीवान का कार्य ।

दिवानापत्र ( सं. ) पागलपत्र, बालकपत्र, सिद्धीपत्र, कृत ।  
 दिवानी ( वि. ) देसी, दीवानी ।  
 दिवालु ( सं. ) पागल, सिद्धी, सिर्री ।  
 दिवानी अदालत ( सं. ) सिविल कोर्ट दीवानी का न्यायालय ।  
 दिवानी क़ायदे ( सं. ) सिविल ल, दीवानी क़ानून ।  
 दिवाण्नी ( सं. ) चिरागबत्ती, दीपक और बत्ती ।  
 दिवाक्ष ( सं. ) दीवार, प्राचीर, भीत, बोडा, अथ ।  
 दिवाक्षगीरी ( सं. ) दीवार पर लटकाने का दीपक । [ संध्या ।  
 दिवाण्भत ( सं. ) सा थं का ल, दिवासणी ( सं. ) अग्निशलाका, दियासलाई, आगकाड़ी, माचिस ।  
 दिवासे ( सं. ) आषाढी अमावस्या आषाढ की ३० वीं तिथि ।  
 दिवाणी ( सं. ) वर्ष का अन्तिम दिन, दीपमालिका, क़ार्तिकी अमावास ।  
 दिवाणीये ( सं. ) दिवालिमा, मुफ़ासिस, दरिद्र, अतिव्ययी ।  
 दिवाणु ( सं. ) दिवाल, अतिव्ययी ।  
 दिवाणु क़ादु ( कि. ) दिखला निकाला, गिरना ।

दिबी ( सं. ) बिबट, दिया रखने की तिपाई, दीपक रखने की स्टैंड ।  
 दिवेष्ट ( सं. ) देखो दिवेष्ट ।  
 दिवेष्टी ( सं. ) देखो दिवेष्टी ।  
 दिवेध ( सं. ) रेंबी का तेल, अंडी का तेल । [ अरंडी के बीज ।  
 दिवेधी ( सं. ) अंडीकेबीज, दिवेधो ( सं. ) अरण्डवृक्ष, एरण्डका पेड़ । [ मनोज्ञ, स्वर्गीय ।  
 दिव्य ( वि. ) सुंदर, मनोहर, दिव्यपादुका ( सं. ) पवित्रखड्ग, पवित्रपादुका ।  
 दिव्य यक्षु-दृष्टि ( सं. ) ज्ञानचक्षु, अलौकिकज्ञानसम्पन्न, सर्वज्ञ ।  
 दिव्य दंती ( सं. ) सुन्दर, और साफ दात वाली स्त्री । चारु दसना ।  
 दिव्यदेह ( सं. ) पवित्र शरीर, स्वर्गीय आत्मा ।  
 दिव्यरस ( सं. ) पारा, पारद ।  
 दिव्यरूप-रूप ( सं. ) पवित्ररूप, दर्शनी रूप ।  
 दिव्यबोह ( सं. ) स्वर्ग, वैकुण्ठ, बहिस्त ।  
 दिव्यगान ( सं. ) ब्रह्मज्ञान, उज्ज्वलज्ञान, अलौकिकज्ञान ।  
 दिव्य-श ( सं. ) दिक्, पूर्वदिक्-दक्षदिशार्ध, ओर बाजू, तरफ ।  
 दिवाये अपु ( कि. ) पखानाजाना, दस्तजाना, मलौत्सर्ग करना ।

द्विषु ( वि. ) वृष्य, जो दिखे,  
दिखता हुआ ।

द्विषु ( कि. ) दिखना मालूम होना ।

द्विषा ( सं. ) मजन, पूजन,  
उपदेश, दीक्षा ।

द्विषा आपत्ती ( कि. ) धर्मोपदेश-  
देना, मंत्रोपदेश देना, दीक्षादेना ।

दी ( सं. ) दिन, वासर, वारा ।

दीप्तेर ( सं. ) देखो दीप्तेर ।

दीक्षित ( सं. ) उपदिष्ट, गृहीतमंत्र,  
मंत्रिन, भजन में प्रवृत्त, दीक्षित  
( पदवी )

दी० ( कि. वि. ) देखो दी०

दी० ( कि. वि. ) देखनेसे, दृष्टिसे ।

दी० ( कि. ) देखा, समझा, सोचा ।

दी०-धुं ( कि. ) दिया, भेट किया ।

दीन ( सं. ) गरीब, दरिद्र, नम्र,  
निरक्ष, म्लान, दुखी, मुस्लिमानीमत ।

दीनद्वेष्टा-व्याधे ( कि. ) धर्म के  
नाम पर या धार्मिक कृत्य पर मुस-  
लमानों द्वारा मगड़ाया दंगा उठना ।

दीनता ( सं. ) दारिद्र्य, गरीबी,  
दुःख, आर्धानता ।

दीनदया ( वि. ) कृपा, दया, दीनपा-  
लक दीनोंपर दया करने वाला,  
दुखियोंका दुःखनाशक, ईश्वर ।

दीनद्वेष्ट ( वि. ) मुसलमानों का  
तपस्वी या भक्त ।

दीनद्वेष्टी ( सं. ) तप, भक्ति,

दीनद्वेष्टिनी ( सं. ) संसार, विश्व,  
जगत, सृष्टि, मूलाकार, ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) दीनता, नम्रता ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) दीनों का स्वामी,  
दीन प्रतिपाल, ईश्वर, प्रभु ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) गरीबोंको भाइयों,  
समान मानने वाला, परमात्मा ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) नम्रतायुक्त प्रणाम,  
नम्रनिवेदन, नम्रदंडवत ।

दीनद्वेष्टि ( सं. ) दीन भाषण,  
नम्र प्रार्थना, नम्रता पूर्वक अर्ज ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) नम्र और धीमी  
आवाज, मृदुस्वर ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) स्वर्णमुद्रा, सोनेका  
सिक्का, दीनार ।

दीनद्वेष्ट ( सं. ) दीनरक्षा, दीनों  
का उद्धार, दीनों का बचाव ।

दीप ( सं. ) प्रकाश, चोतक, लेम्प  
चिराग, दीवा, रोशनी ।

दीप ( सं. ) राग विशेष ।

दीप ( सं. ) देखो दीपदी

दीप ( सं. ) देखो दीप

दीप ( सं. ) दीपककी  
बन्दना जब कि वह जलाया जावे ।

दीपवर्ण ( कि. ) जलाना, चमकाना  
प्रकाश करना, चौधियाना सुंदर  
बनाना ।

दीपदक्ष (सं.) शाह या फानूस जिस में मोमबतियाँ दीपक जलाने जावे।  
शाह, फानूस, बिन्दौरी शाह।

दीपभाण (सं.) दीपकी की पंक्ति,  
दीपकी कतार या पोंति।

दीपबुं (क्रि.) देखो दीपबुं

दीपावतुं (क्रि.) प्रकाशित कराना,  
जलवाना, चमकाना, खूबसूरत  
बनाना।

दीपावणी (सं.) जगमगाहट, रोशनी  
प्रकाश, दिवालीका उत्सव।

दीपावुं (क्रि.) चौधना, जुधियाना।

दीपावडुं (क्रि.) मनोहर, सुन्दर।

दीपिहा (सं.) दीपककी तिपाई या  
बैठक।

दीपोऽऽव-रसव (सं.) वह त्योहार  
जिसमें रोशनी हो, दिवाली,  
दीपमालिका।

दीप्ति (वि.) उजलित, प्रकाशित,  
दृढ़, निश्चित, उग्र, चण्ड।

दीप्ति (सं.) प्रकाश, रोशनी,  
उजाला, शोभा, प्रभा, युति  
सुन्दरता। [स्मिक टक्कर।

दीप्ति (सं.) अचानक धक्का, आक-

दीर्घ (वि.) लम्बा, बड़ा, आबत  
उज्ज्वल, उत्तुंग, लम्बा चौड़ा।

दीर्घर्ष (सं.) बकरी, गधा, कान  
जिस के बड़े हों, लम्बकर्ण।

दीर्घदर्शी (वि.) दूरदर्शी, पारदर्शी,  
दूरन्देशी, आगे की सोचने वाला।

दीर्घदृष्टि (सं.) दिव्य दृष्टि,  
अग्रदृष्टि बहुज्ञ, प्रवीण।

दीर्घद्वेषी (वि.) निर्दयी, कठोर,  
संगदिल, बेरहम।

दीर्घ नयनवाणी (वि.) विशाल  
नेत्र वाली, सुन्दर आँखोंवाली।

दीर्घ वस्तु (सं.) अडाकार वस्तु,  
ग्रहवस्तु, वह मार्ग जिस में ग्रह  
सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

दीर्घश्रेण (सं.) लम्बा तार, लम्बा  
धागा, आरस।

दीर्घस्वर (सं.) द्विमात्रिक स्वर,  
आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं,  
अँ. दीर्घ शब्द, लम्बी आवाज।

दीर्घायु (वि.) चिरायु, चिरजीवी,  
दीर्घ जीवी, परमायु, बड़ी उम्र।

दीर्घायुध (सं.) देखो दीर्घायु।

दीक्ष (सं.) देखो दी१।

दीवासणी (सं.) देखो द्विवासणी।

दीपी (सं.) देखो दी१।

दीवी (सं.) देखो दी१-कुण

दी१, बंश में होनहार, कुल कमला

दीस (सं.) दिन, दिवस, बासर,  
बार, रोज, तिथि।

दीसपुं ( कि. ) देखो दीसपुं ।

दुंटी ( सं. ) नामि, सूँधी, दूँटी ।

दुंठ ( सं. ) बूख की शाखा, पत्र  
हीन पेड़ी, सूँठ, बड़ा पेड़, तोंद ।

दुंठिठि ( सं. ) छोटा हेंगा या  
पहड़ा ।

दुंठिओ ( सं. ) देखो दुंठिओ ।

दुंटी ( सं. ) देखो दुंटी ।

दुंठुं ( सं. ) देखो दुंठुं ।

दुथुपुं ( कि. ) आघे के लगभग  
जला हुआ होना, अर्द्धदग्ध ।

दुथुपुथुं ( वि. ) अधजला, आधा  
जला; वा, अर्द्धदग्ध ।

दु ( वि. ) दो, २, संख्या विशेष ।

दुआ ( सं. ) देखो दुआ ।

दुआगीर-ओ ( सं. ) शुभेच्छुक,  
शुभचिंतक, हितचिंतक ।

दुठपुं ( सं. ) बाळक, बच्चा ।

दुठान ( सं. ) हाट, बाजार, जहाँ  
सौदा रखा और बेचा जाता है ।

दुठानहार ( सं. ) हाटवाला, दुकान-  
वाला, विक्रेता ।

दुठानहारी ( सं. ) दुकानदार का  
काम सौदा रखने और बेचनका  
धन्धा ।

दुठानी ( सं. ) दोपाई, दो कान  
और दाही ठकने के काम का बख ।

दुठान ( सं. ) दुर्मिळ, दुष्काल,  
काल, महींगी, कहत । [ प्रकार ।

दुठध ( सं. ) तास के खेलमें एक

दुठध ( सं. ) अत्युत्तम रेशमी बख ।  
सुन्दर मूल्यवान, रेशमी कपड़े ।

दुठत-भूत ( सं. ) अपराध, पाप,  
कुसूर, गुनाह, अध ।

दुभद-दार्ध ( वि. ) कष्टप्रद, हानि-  
प्रद, दुख देनेवाला, क्लेशप्रद ।

दुःभ-दुं ( सं. ) दुःख, क्लेश, कष्ट  
तकलीफ, दर्द, रंज, शोक, रोग,  
कठिनता, चोट, पीड़ा, व्यथा,  
संताप, संभव मनकाशोम, आपत्ति ।

दुःभ आपुं-दुं ( कि. ) कष्ट  
देना, तकलीफ देना, सताना ।

दुःभ थपुं ( कि. ) दुःख होना,  
व्यथा होना, कष्ट होना, क्लेश होना ।

दुःभ देतुं ( कि. ) देखो दुःभ आपुं

दुःभ थपुं ( कि. ) दुःखी होना,  
व्यथित होना, क्लेशित होना ।

दुःभारक-दार्ध ( वि. ) दुःखद,  
क्लेशद, क्लेशकारी, दुःखदायी दुःख-  
दाता । [ देनेवाला, क्लेश देनेवाला ।

दुःभार्ध ( वि. ) पूर्ववत्, दुःख

दुःभार्ध ( वि. ) पूर्ववत्

दुःभ भरेखुं ( वि. ) दुःख पूर्ण, दर्द,  
दुःखान्धित, दुःखिया, क्लेशभाक्,

दुःखभाजन ( सं. ) दुःख नाशक,  
परमार्थी, सर्वप्रिय, खलक दोस्त ।  
दुःखवपुं ( कि. ) दुखाना, सताना  
व्यथित करना, चोट पहुँचाना ।  
दुःखतुं-भातुं ( कि. ) दुखना दर्द  
होना, पीडा होना ।  
दुःखदरु ( सं. ) दुःखनाश, दुःख-  
मोचन, संकट हरण । [ क्लेश ।  
दुःखव-वे ( सं. ) दर्द, पीडा,  
दुःखी-भित्त-भारे-भु ( वि. ) व्यथित,  
दुखी, पीड़ित, दर्दयुक्त, चोटाला,  
संतापित, दुःखयुक्त, दुःखियारा,  
दुःखान्वित, क्लेशयुक्त, रोगी  
चिंतादुर, अस्वस्थ ।  
दुःखीश्व ( सं. ) दुःखितजीव, व्य-  
थितव्यक्ति, दुखी प्राणी ।  
दुःखी शपुं ( कि. ) देखो दुःख पाभतुं  
दुःखेपापे ( कि. वि. ) बड़े पि-  
त्रमके साथ, बड़ी मिहानतसे बे  
नसाबीसे, कम्बस्तीसे, निकम्मा-  
पनसे ।  
दुःखन ( सं. ) जल्दीका गान ।  
दुःख ( सं. ) दूध, पय क्षीर, स्तन्य ।  
दुःखल ( सं. ) श्रमेल, पीडा, कष्ट ।  
दुःखुं ( वि. ) दुःखर, अन्य,  
द्वितीय, दौगर ।  
दुःख्यु-टी ( वि. ) दुःखारू दूधवाली,  
दुग्धप्रद, क्षीरप्रद, क्षीरस्तनी ।

दुःखुं ( कि. ) दुहना, दूध निकालना ।  
दुःखुं ( सं. ) दूध देनेवाला पशु ।  
दुःखुं ( कि. ) झुराना, लटजाना,  
झुलसजाना, कुम्हलाना, अध-  
जलासा होजाना ।  
दुःख ( सं. ) लम्बोदर, बड़ापेट, तोंद ।  
दुःखी ( सं. ) बड़े पेटवाला,  
स्थूलोदर, गणेशजी, गणपति ।  
दुःखी ( सं. ) पृष्ठोका बंडल, सफो  
या बर्कोकी गठरी या पुलन्दा ।  
दुःख ( सं. ) देखो दूध  
दुःख ( सं. ) छोटे जूते, छोटी जूतियां ।  
दुःख ( सं. ) देखो दूध  
दुःखपाक ( सं. ) दूधकी बनी हुई  
वस्तु, दूधद्वाराबनी वस्तु, चावल  
शकर दूध आदि मधालोंका  
मिश्रण, खीर ।  
दुःखपाक ( सं. ) कोका भाई, दुग्ध-बंधु ।  
दुःखपाणी ( सं. ) ग्वाला, ग्वार,  
घोसी, दूधबेचनेवाला ।  
दुःखपाणी ( सं. ) ग्वालिन, घोसिन,  
दूधवालेकी स्त्री, दूध बेचनेवाली ।  
दुःखी ( वि. ) दो धार की, दोनों  
ओर नौक वाली, दोनों तरफ  
जिसे धार हो ।  
दुःखी ( वि. ) दुधार, दूध देनेवाली ।



दुधिया दांत ( सं. ) दूध के दांत,  
बचपन के दांत । [ तुम्बी ।

दुधी ( सं. ) सफेद कटु, लोकी  
दुधै ( वि. ) देखो दुधै ।

दुनिया ( सं. ) विश्व, जगत, संसार,  
मानवमृष्टि, मानव जाति, सृष्टि ।

दुनिया दौरा — परिवर्तन शील  
संसार, दोरंग की दुनिया ।

दुनियादारी ( सं. ) सांसारिक संबंध,  
संसार से साधारण सम्बन्ध ।

दुनियाध-दार ( वि. ) सांसारिक,  
दुनियाधी, संसार, सम्बन्धी, गृहस्थी ।

दुंदुभि ( सं. ) नगरा, डंका,  
दुंदुभी धौसा । [ द्विगुण ।

दुपट ( वि. ) दुहरा, दोलड़ा,  
दुपट्टा ( सं. ) ओढने का चदर,

वस्त्र विशेष, रुमाल, कन्धे पर  
ढालने का वस्त्र, दुपट्टा ।

दुपट्ट ( सं. ) देखो दुपट्ट ।

दुभणी ( सं. ) भील जाति की स्त्री ।

दुभणीध ( सं. ) कृपता, दुबलापन,  
निर्बलता, पतलापन, कमजोरी ।

दुभणीधु ( सं. ) पूर्ववत्  
दुभणी ( सं. ) कृप, दुर्बल, पतला,  
दुबला, निर्बल ।

दुभणी ( सं. ) मजदूर जाति का  
मनुष्य, मजदूर ।

दुभसु ( सं. ) कुम्हलाहट, बरबादी,  
उदासीनता ।

दुभसु-भासु ( कि. ) सताना, दुष्ट  
पहुंचाना, खिसाना, क्लेशदेना ।

दुभाषि ( सं. ) उल्था या तर्जुमा  
करनेवाला, दोभाषा जाननेवाला ।

दुभ ( सं. ) पूछ, पुच्छ, लाइगुल ।

दुभयी ( सं. ) घोड़ेकी दुमची,  
चमड़ेका थैड़ा जिसमें तमाकू

अफीम आदि वस्तुएं रखी जाती हैं ।

दुभा-र ( सं. ) दो ओर से आक्रमण,  
दुतरफा धावा, दुब्बा, बिता ।

दुभास ( सं. ) एक प्रकारका वस्त्र ।

दुर्देष्टा ( सं. ) चौकसी, रक्षा, अप्र  
दृष्टि, पूर्व दृष्टि, पूर्व विचार ।

दुर्भीन ( सं. ) दूर वीक्षण यंत्र,  
दीर्घ दर्शक काच ।

दुर्भ-स्त ( वि. ) ठीक, योग्य,  
उत्तम, सही, सहीसलामत, शुद्ध,

मुनासिब, ध्वनि, शब्द, ( कि. वि. )  
अच्छा, उत्तम ।

दुर्भ-स्त ( कि. ) ठीक करना,  
सुधारना, बनाना, मरम्मत करना ।

दुर्भ-स्त ( सं. ) हठ, जिद्द, व्यर्थका  
आग्रह, सरकशी, निन्दित हठ ।

दुर्भ-स्त ( सं. ) कुव्यवहार, विरु  
द्धाचरण, कुनीति, कदाचार ।

दुर्भ-स्त ( सं. ) पूर्ववत्

- दुःखार्थी (वि.) अन्यायी, दुःखील  
लम्पट, क्रूर, उपद्रवी ।
- दुःखभा (सं.) पापात्मा, निर्दय,  
दुष्ट, पापी, क्रूर, उपद्रवी ।
- दुःखिन (सं.) देखो दुःखी
- दुःखी (सं.) गड, कोट, किला, गढ़ी ।
- दुःखि (सं.) दुष्टगन्ध, बुरीबास  
बदबू, सखौद, दुर्गन्धि ।
- दुःखिति (सं.) दुर्दशा, कुगति, बुरी  
हालत, दुरावस्था, बुरा अवस्था,  
विपत्ति, दरिद्रता ।
- दुःखि आवपी (कि.) बदबूआना,  
बुरीबास आना, सज्जदआना ।
- दुःखी (वि.) कुबास, बदबू,  
सखौद ।
- दुःखभन्ध (वि.) कष्टगम्य दुःखने  
जाने योग्य, आघट, बाहट, वीगन ।
- दुःखी (सं.) देवी, शिवा, भगवती,  
आद्याशक्ति, हिममतनया ।
- दुःखीश्री (सं.) एक प्रकार की  
छोटी कालीविडिया ।
- दुःखी (सं.) अवयुण, ऐव ।
- दुःखी (वि.) ऐबी, गुणहीन, अ-  
वयुणी, दुष्ट, नीच ।
- दुःखी (वि.) कष्ट साध्य, दुःसाध्य,  
कठिन, कठोर, कष्टप्रद, अघट ।
- दुःखी (सं.) कठिनाई, कठोरता,  
रोक, आट, बेकाबू, अजय, अलं-  
घनीय ।
- दुःखी (सं.) क्रूर, दुष्ट, खल, कु-  
त्सित आचारवाला, अधम, नीच,  
निष्ठ मनुष्य, बुरा आदमी ।
- दुःखीता (सं.) क्रूरता, दुष्टता,  
अधमता, नीचता कर्मानापन ।
- दुःखी (वि.) दुःखसे जीतनेयोग्य,  
अजेय, जो जीता न जा सके ।
- दुःखीता (सं.) अजयता ।
- दुःखीत (वि.) दुष्ट, बुरा, निकम्मा,  
चाण्डाल, नीच, जघन्य ।
- दुःखी (वि.) भयप्रद, भयानक ।
- दुःखी (सं.) दुर्गति, विपत्ति, हीन  
अवस्था, बुरी हालत, कुदशा ।
- दुःखी (वि.) देखो दीर्घदुःखी
- दुःखी (वि.) कुमिक्षा, बुरा शिक्षण ।
- दुःखी (सं.) दुर्भाग्य, कुभाग्य,  
अभाग, बदकिस्मत, विविधामता ।
- दुःखी (वि.) कमजोर, निर्बल, हीन,  
अशक्त, गरीब, दीन, निधन ।
- दुःखीता (सं.) अशक्तता, निर्ब-  
लता, कमजोरी, गरीबी ।
- दुःखी (सं.) देखो दुःखी
- दुःखी (सं.) बुरे विचार, नीच  
बुद्धि, कुविचार, द्वेष, मोह मूर्खता ।

दुर्भाष्य ( सं. ) दुर दृष्ट, अभाष्य, मंदभाष्य, बदकिस्मत ।  
 दुर्भाषि ( सं. ) दुष्टभाव, दुष्ट अभि-  
 प्राय, निन्दित स्वभाव, घृणा, द्वेष।  
 दुर्भाष्य ( सं. ) निर्दय वाक्य,  
 गाली, बुरा बोल, असंस्कृत भाषण।  
 दुर्भिक्ष ( सं. ) काल, अकाल, कुस-  
 मय, महंगी, कहत, महर्ष ।  
 दुर्भेति ( वि. ) कुबुद्धि, मंदबुद्धि  
 अज्ञान, मूर्खता, बुरी अह, बुरे  
 विचार ।  
 दुर्भेद ( सं. ) मस्त, अहंकारी, घ-  
 मण्डी तमोगुण युक्त, मतवाला,  
 हृष्ट कष्ट ।  
 दुर्लभ ( वि. ) अप्राप्य, दुष्प्राप्य,  
 प्रिय अति प्रारस्त, जिसका मि-  
 लना कठिन हो । [ वञ्चुडी ।  
 दुर्लक्ष ( सं. ) भूल, बेखबरी, बेत-  
 दुर्लक्ष्य ( सं. ) अशुभ चिन्ह, अ-  
 शकुन, बुरे लक्षण, कुलक्षण ।  
 दुर्वचन-वाक्य ( सं. ) देखो दुर्भाष्य।  
 दुर्वासना ( सं. ) बुरी वासना, अ-  
 सत् अभिलाष, दुष्ट इच्छा ।  
 दुर्विधि ( सं. ) कुप्रवृत्ति, बुरी इच्छा।  
 दुर्व्यसन ( सं. ) बुरी आदत, बुरी  
 इच्छा, कुटेव ।

दुर्व्यसनी ( सं. ) छोटा, दुष्ट, पापी,  
 सरकश, कुटेवी । [ बाली ।  
 दुष्ट ( सं. ) एक प्रकार की कानकी  
 दुष्ट दुष्टीतपक्षु ( सं. ) मुटाई, पुष्टता।  
 दुष्टदुष्ट ( वि. ) भरा हुआ, चौकोर,  
 मोटा, ताज़ा ।  
 दुष्टपुं ( कि. ) बूबना, घसना ।  
 दुधारी ( सं. ) पुत्री, बेटा, लड़की।  
 दुधारे ( सं. ) पुन, तनय, आत्मजा।  
 दुधो ( वि. ) बड़े हौसिलेका, उदार,  
 बहादुर, मनोमहान, सादा, साफ,  
 खरा, सच्चा, निष्कपट ।  
 दुर्दंश ( सं. ) मुहर्रममें ताजियों के  
 आगे मुसलमानोंका “ बुल्हा ”  
 कहके चिह्नाने का शब्द ।  
 दुर्वा ( सं. ) आशिर्वाद, आशीस,  
 धन्यवाद, आशिर्वचन । [ आन ।  
 दुर्वाध ( सं. ) दुहाई, शपथ, कसम,  
 दुर्वात ( सं. ) दवात, दावात, म-  
 सिपात्र ।  
 दुर्वागे ( सं. ) प्रार्थी, विनयी,  
 प्रार्थी, विनतीकरनेवाला ।  
 दुर्वादेवी ( कि. ) दुआ देना, धन्य-  
 वाद देना, आशीस देना ।  
 दुर्वाभागी ( कि. ) प्रार्थना करना,  
 विनती करना, दुआ मँगना ।  
 दुर्वाषिष्ठ ( सं. ) अर्द्ध वार्षिक, छ-  
 माही, नीमसाला ।

- इ०५५५ ( सं. ) शत्रु, रिपु, अरि, बैरी, नाशक ।
- इ०५५५६-नी-नगीरी, न दावे। ( सं. ) बैर, शत्रुता, रिपुता, नीच बर्तावा ।
- इ०५५६० ( सं. ) दुशाला, घुस्सा, दुशाला जोड़ ।
- इ०५५६५ ( सं. ) अशकुन, अशगुन, बुरे शकुन, बुरे चिन्ह ।
- इ०५५५५ ( सं. ) कठोर श्राप, भयंकर दुराशीष, भारी सराप ।
- इ०५५५५ ( सं. ) देखो इ०५५५६० ।
- इ०५५६० ( वि. ) कठिन, मुश्किल, कष्ट साध्य, असंभव ।
- इ०५५६५ ( सं. ) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम व्यवहार, निष काम, कुकृत्य ।
- इ०५५६५ ( सं. ) दुष्कृतकारी, कुक्रिया न्वित, पापी, अष्टाचारी ।
- इ०५५६५ ( सं. ) देखो इ०५५६५५ ।
- इ०५६ ( वि. ) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ठ, निर्लज्ज, विरुद्धान्तःकरण ।
- इ०५६५५५ ( सं. ) गुण, बैर, बुरी इच्छा, बुरे विचार, निष विचार ।
- इ०५६५५ ( सं. ) पापमय कार्य, बुरे काम, नीच कार्य, निष कार्य ।
- इ०५६५५ ( सं. ) देखो इ०५६५५५ ।
- इ०५६५५ ( सं. ) खलता, दुर्जनता, नीचता, दौरात्म्य ।
- इ०५६५५५ ( सं. ) नीचबुद्धि, मन्दबुद्धि, निषबुद्धि, बुरीअह, अधमबुद्धि ।
- इ०५६५५५ ( सं. ) बुरे विचार, नीच विचार, निषभाव श्रोह, विरोध ।
- इ०५६५५५ ( सं. ) बुरी अह, अधम विचार, निष प्रवृत्ति ।
- इ०५६५५५ ( कि. वि. ) बुरीतरहमे, बुरी प्रकार ।
- इ०५६५५५५ ( सं. ) कामाभि, रता-मिलाष, कामवासना ।
- इ०५६५५५५ ( सं. ) नीच वृत्ति, अधमा-वृत्ति, बुरी जीविका, निष व्यवसाय ।
- इ०५६५५५५ ( सं. ) बुरी आदत, नीच स्वभाव, बैर, विरोध, द्वेष ।
- इ०५६५५५५ ( सं. ) बुराई, नीचता, अधमता ।
- इ०५६५५५५ ( सं. ) कुसंग, नीच संग, बुरा संग, खोटी सोहबत ।
- इ०५६५५५५५ ( सं. ) आह, गहरी सांस, सिसकी, ठंडी सांस ।
- इ०५६५५५५५ ( वि. ) दुष्पार, अतरणीय, दुस्तरणीय, पार होने के अयोग्य कठिन, मुश्किल, संस्कृत ।
- इ०५६५५५५५ ( सं. ) पुत्री, बेटी, तनया ।
- इ०५६५५५५५ ( सं. ) मिसरा, दोहा, सोरठा ।

६८ ( सं. ) बार्ताहर, चर, संवाद-  
वाता, सन्देशी, निःसृष्टार्थ ।

६८१ ( सं. ) दूतकार्य के लिये नियुक्त  
की हुई स्त्री, समाचार हारिणी,  
कुटिनी । [ सफेद रंगका रस ।

६८२ ( सं. ) दुग्ध, पय, क्षीर वृक्षोंका

६८३ ( वि. ) दूसरा, द्वितीय,  
छोटा, नीचा ।

६८४ ( वि. ) अनिकट, असन्निकट,  
अंतर, बीच, व्यवधान, परे,  
न्यारा, अलग ।

६८५ ( क्रि. ) हटाना, दूर  
करना, सरकाना, अलग करना,  
नौकरी से बरखास्त करना, डिस-  
मिस करना, नौकरी से नाम काटना ।

६८६ ( क्रि. वि. ) अतिदूर, बहुत  
दूर, फासलेपर ।

६८७ ( सं. ) दूरदर्शन, विवेक,  
अग्र दृष्टि, परिणाम दृष्टि ।

६८८ ( सं. ) दूज, तृण विशेष ।

६८९ ( सं. ) एक प्रकारकी कानोंकी  
बाली, कर्णा भूषण विशेष ।

६९० ( सं. ) देखो ६९१ ।

६९१ ( वि. ) दोष देनेवाला, निन्दक,  
निन्दा करनेवाला, कलंकित करने-  
वाला, दूषयिता ।

६९२ ( सं. ) दोष, त्रुटि, निन्दा, दोष  
प्रकाशन, भर्त्सना कुलक्षण,

६९३ ( वि. ) दूष्य, निन्दनीय,  
गर्हित कुत्सित, । [ नयन ।

६९४ ( सं. ) दृक्, आँख, चक्षु, नेत्र,

६९५ ( वि. ) पोवा, अचल, कड़ा,  
कठोर, अतिशय, प्रगाढ़, बलवान,  
कठिन ।

६९६ ( वि. ) गणित विशेष,  
महत्तम समापवर्त्य ( गणितमें )

६९७ ( सं. ) काठिन्य, कठिनता,  
स्थिरता, मजबूती ।

६९८ ( सं. ) पुस्तकादिल, दृढमन,  
स्थिरमन अचंचलचित्त ।

६९९ ( सं. ) धर्मपरायण,  
अचलश्रद्धा, स्थिर प्रेम ।

७०० ( वि. ) देखने योग्य,  
दर्शनीय देखनेकी वस्तु, रमणीय,  
मनोहर ।

७०१ ( सं. ) दृढ अभिप्राय  
पूर्ण यकीन, पूर्ण स्थिरता ।

७०२ ( सं. ) पूर्ववत्

७०३ ( सं. ) उदाहरण, उपमा,  
निदर्शन, समानता करण, तुलना  
करण, मिसाल ।

७०४ ( सं. ) आँख, नेत्र, नयन, चक्षु ।

७०५ ( वि. ) आलोकित, ईक्षित,  
देखा हुआ ।

७०६ ( सं. ) दर्शक, दर्शनकारी,  
दिखेवैया, देखनेवाला ।

द्वितीय ३५ अध्याय ( सं. ) उदाहरण के रूपमें कथा, दृष्टांत, कथान, वर्णन ।

दृष्टि ( वि. ) उदाहरण के योग्य, भिन्नानुसंगिक, वर्णन योग्य ।

दृष्टि ( सं. ) आलोकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, नेत्र, नयन, बुद्धि, विवेक, विचार, कृपादृष्टि, कुदृष्टि ।

दृष्टिगोचर ( वि. ) साक्षात्, प्रत्यक्ष, नयन गोचर ।

दृष्टिविधा ( सं. ) चक्षुर्विद्या, नेत्र विद्या, दर्शन ज्ञान, निरीक्षण ज्ञान, मेस्तेरेजम ।

दृष्टि भर्मादा ( सं. ) नेत्रसीमा, लिहाज, आखोर्का हृद्, इंद्रिय गम्यसीमा, इंद्रियसे ज्ञात होनेवाली मर्यादा । [ समानान्तर, बराबर ।

दृष्टिभंड ( सं. ) दृष्टिवस्तुके

दृष्टिविषय ( सं. ) दृश्य अभिप्राय, प्रकट सुराद, लक्ष्य प्रयोजन, निरीक्षण विषय, नेत्रसे सम्बन्ध, रखने वाला विषय ।

दृष्टिमानत ( सं. ) देखनेके तनु नेत्रकीनसे, नेत्रतंतु, आम्बके डोरे ।

दे ( सं. ) पारसी दसवां महीना, ( कि. ) देना, प्रदान करना ।

देउ ( कि. ) छोटा सांप ( पानीका ) बौद्ध, पनियर, छोटा सर्प ।

देख ( सं. ) ताक, आलोकन, निरीक्षण ( कि. ) देखना, दर्शन करना गौर करना, ताकना ।

देखभुं ( वि. ) प्रकट, मालूम, नुमायशी, मद्कीला, रंगीला ।

देखो देखो ( कि. ) देखो देखो

देखत ( कि. वि. ) एक क्षणमें, निमेष मात्रमें, पलभरमें, फौरन, उपस्थितिमें, देखेहुए, मौजूदगीमें, देखते हुए ।

देखतां ( उ. ) देखते हुए, देखते समय, ( की ) उपस्थितिमें, हाजिरीमें ।

देखना ( सं. ) देखो देखो

देखुं ( कि. ) देखना, निरीक्षण करना, गवाह होना ।

देखो देखो ( वि. ) देखो देखो

देखा ( सं. ) उत्तम, उम्दा, देखने योग्य ।

देखाना ( कि. ) दिखाना, दिखलाना, बताना सुझाना, निकालना प्रकट करना ।

देखादेखी ( सं. ) स्पर्शा, प्रतिबन्धता होड़ाहोड़ा, दृष्टानुसरण, देखके अनुसरण करना ।

देखाभू ( सं. ) सुन्दर, मनोहर, नयनाभिराम, खूबसूरत, दृश्य ।

देभाव ( सं. ) बाहरी चटक मटक,  
टीमटास, पीटफाट, दिखावा, रूप  
सीन, दिखाव ।  
देभावद् ( वि. ) सुन्दर, रूपवान,  
खूबसूरत, देखने योग्य ।  
देभावुं ( क्रि. ) दिखाना, प्रकट  
होना, दृष्टि आना, जाहिरहोना,  
मालूम होना ।  
देभीतुं ( क्रि. वि. ) साफ साफ,  
स्पष्ट, स्पष्ट रीतिसे ।  
देग, डेग ( सं. ) बड़ा घातुपात्र  
विशेष, देग, देगना ।  
देगडी ( सं. ) देगची ।  
देगडे ( सं. ) देखो देग  
देगडे ( सं. ) मेढक, मेक, दादुर ।  
देथु ( सं. ) देय द्रव्य, ऋण, कर्ज  
एहसान, कर, लगन ।  
देथुहार ( सं. ) देनेवाला, ऋणी,  
एहसानमन्द । [ बदला ।  
देथुलेथु ( सं. ) लेनदेन, अदला,  
देथुं ( सं. ) देखो देथु  
देथुलेथुं ( क्रि. ) देखो देथुं लेथुं  
देवता ( सं. ) आग ।  
देहार ( सं. ) शङ्ख, रूप, दर्शन ।  
देदीधमान ( वि. ) ज्वाजल्यमान,  
अतिशय बीसि विशिष्ट, चमकीला,  
चमकदार, प्रकाशशील ।

देर ( सं. ) अमेर, बिलम्ब, डील,  
टालमटोल ।  
देराष्टी ( सं. ) वतिके छोटे माईकी  
मार्या, देबरानी, देवरकी पालि ।  
देरं ( सं. ) मन्दिर, मठ, देवालय ।  
देव ( सं. ) अमर, सुर, देवता,  
ईश्वर, मूर्ति, प्रतिमा, प्रभु ।  
देवश्च ( सं. ) देवताओंका ऋण  
जो पूजा भजनसे चुकाया जावे,  
ईश्वरका कर्जा ।  
देवस्थली ( सं. ) एकप्रकारकी काली  
चिड़िया, पक्षी विशेष ।  
देवशु धसाडीये ( सं. ) बेडौल,  
बदसूरत, भद्दा, कुरूप ।  
देवड ( सं. ) ऋण, कर्ज, उधार,  
लेनदेन का पेशा ।  
देवडावपु ( क्रि. ) दिला देना, बंद  
करना, ऋण दिलाना ।  
देवडी ( सं. ) ज्योदी, उसारा, धाना,  
पोलेस स्टेशन, बरोठा ।  
देवडीवाणे ( सं. ) पौरिया, ज्योडी-  
वान, द्वारपाळ, द्वाररक्षक ।  
देवतस्थे ( सं. ) एक पक्षी, पक्षी  
विशेष ।  
देवता ( सं. ) ईश्वर, सुर, अमर,  
आग्नि, प्रभु, असुरार ।  
देवताई ( सं. ) दैविक, आत्मान्नी,  
मनुष्यत्व से अधिक, मनुष्यातिग,  
सुदाई, ईश्वरतुल्य, स्वर्गीय, पवित्र ।

देव इत्यादि (सं.) मन्दिर, देवालय,  
देवस्थान, मठ, ईश्वरका दरबार ।  
देवदूत (सं.) प्रतिमादर्शन, मूर्ति  
दर्शन, मंदिरगमन, प्रभुदर्शन ।  
देवद्वार (सं.) देवद्वार, सनोबर, देव-  
द्वार, बाँठ, वृक्षविशेष, पारिभद्रका  
देवद्विषाणी (सं.) कार्तिक मासकी  
शुक्ल एकादशी तिथि ।  
देवदूत (सं.) देवता का भेजा हुआ  
दूत, पवन, वायु, विष्णुदूत ।  
फरिस्ता ।  
देवधर्म (सं.) पवित्र धर्म, धार्मिक  
कृत्य, धार्मिक अभ्यास ।  
देवनागरी (वि.) संस्कृत अक्षर,  
हिन्दी लिपि, देवनागरी (लिपि)  
देवपूजा (सं.) देवपूजा, देवताका  
पूजन, देवताकी आराधना ।  
देवभक्ति (सं.) हरिमक्ति देवता  
की सेवा पूजा, ईश्वर भक्ति,  
धर्मिष्ठता । [ भाषा ।  
देव भाषा (सं.) देवभाषी, संस्कृत  
देव भूमी (सं.) पवित्र भूमि, पावन  
स्थान ।  
देवभोग्य (सं.) भोला, सीधा, सादा ।  
देवयज्ञ (सं.) पंचमहायज्ञों में से  
एक, अग्निहोत्र, होमयज्ञ ।  
देवद्वी (वि.) देवताकी शक्तिका,  
देवता के समान, देवता के अनुसार ।

देवसौह (सं.) ऊर्ध्व लोक, स्वर्ग,  
वैकुण्ठ, गोलोक, अदन का बाग ।  
देववाणी (सं.) देववाक्य, संस्कृत  
भाषा, आर्य भाषा, आकाशवाणी ।  
देवसभा (सं.) देवताओं का समाज,  
देवताओंकी सभा ।  
देवस्थान-स्थान (सं.) मंदिर,  
देवालय, मठ, देवल ।  
देवस्थापना (सं.) देव प्रतिष्ठापन,  
मंदिर में मूर्तिकी पधरौनी ।  
देवण (सं.) मंदिर, देवालय, मठ ।  
देवांशी (वि.) देवी, ईश्वरतुल्य,  
देवताओं के समान खूबसूरत ।  
देवांगना (सं.) देव स्त्री, देव भार्या,  
अप्सरा । [ देनदार, ऋण प्रस्त ।  
देवादार (सं.) देनेवाला, ऋणा,  
देवाधिदेव (सं.) सुरेन्द्र, इन्द्र, ई-  
श्वर, विष्णु देवताओंका देव ।  
देवाण्य (सं.) देखो देवण  
देवागिणी (सं.) खाऊ उड़ाऊ,  
दिवालिनी, अति व्ययी, हरित्री ।  
देवाणु (सं.) दिवाला, ऋणसे  
उच्छेद न होने की दशा ।  
देवाज्ञा (सं.) ईश्वराज्ञा, प्रकृति  
का नियम, देवता का हुक्म ।  
देवी (सं.) दुर्गा, सामान्य देवपत्नी,  
ब्राह्मणी, देवभार्या ।



देवुं ( सं. ) ऋण, कर्ज, ( कि. ) देना, आज्ञा देना, जुड़ना, भेदना, बंद करना ।

देवुं ६२वुं ( कि. ) ऋण चुकाने का भार उठाना, बेचने को राजी होना ।

देवुं सेवुं ( सं. ) देन लेन, बदला बदला, व्यापार, रुपये पैसे का व्यवहार ।

देव ( सं. ) पृथ्वी का खण्ड, मण्डल चक्र, वतन, राष्ट्र, जन्मभूमि, मातृभूमि ।

देशतेवेदेश=जैसा देश वैसा भेस, देशके अनुसार पहिरावा ।

देशभुवुं ( कि. ) मातृभूमि को वापिस लौटना, जन्मभूमि को जाना ।

देशभाडे ( सं. ) ताल्लुके के गाँवों की सूची या फिहरस्त ।

देशभाग ( सं. ) विदेश गमन ।

देशनिकास ( सं. ) देश निकाला, बंनवास, काबा पाना ।

देशमुप ( सं. ) परगने का मुखिया ।

देशवटे ( सं. ) विदेश भ्रमण, अन्य देशों का पर्यटन ।

देश व्यवहार ( सं. ) देशी व्यवहार, देशकी रीति रस्मके अनुसार आचरण ।

देशहित ( सं. ) राष्ट्रहित, मातृभूमिका कल्याण, स्वदेशानुराग, हुन्नुलवतनी, देशभक्त ।

देशहितकारी ( सं. ) स्वदेशानुरागी, देशभक्त, स्वदेश प्रेमी ।

देशास ( सं. ) जमीन का मालिक, भूमि का अधिकारी ।

देशाधीश्री ( सं. ) देशाई का वतन ।

देशाचार ( सं. ) देखो देशव्यवहार

देशाटन ( सं. ) भ्रमण, यात्रा, पर्यटन, मुसाफिरी, परदेश बास ।

देशांतर ( सं. ) विदेश, अन्यदेश ।

देशानिभान ( सं. ) देखा देशहितकार

देशावर ( सं. ) देखो देशांतर

देशी ( वि. ) देशसम्बन्धी, स्वदेशी

राष्ट्रीय । [ मनुष्य ।

देशी-जन ( सं. ) देश बंधु, स्वदेशी

देशदेश-शी-री ( कि. वि. ) प्रत्येक देश तथा प्रत्येक जगहमें ।

देश ( सं. ) शरीर. बदन, अंग ।

देशकानी ( सं. ) गंवार, उजड़, देहाती किसान ।

देशपाग ( सं. ) मृत्यु, मौत, आत्महत्या, स्ववध, मरण, प्राणत्याग ।

देशदंड ( सं. ) शारीरिक दंड, शारीरिक दुःख, शरीर दंड ।

देशधारी ( सं. ) शरीरवान, अवतारी शारीरिक । [ प्राणत्याग, मरण ।

देशपात ( सं. ) सखीरनाश, मृत्यु मौत

देहभान ( सं. ) चेत, ज्ञान, मान  
श्रिक योग्यता ।

देहभाल ( सं. ) शारीरिक इच्छा ।

देह३ ( सं. ) देहरा, देवरा, मंदिर  
बौहरा, देवालय मूर्तिगृह ।

देहली ( सं ) बौखट, ज्योडी, द्वारके  
नीचेकी लकड़ी, शली ।

देहवान ( वि. ) देखो देहधारी

देहविसर्जन ( सं. ) देखो देहत्याग

देहशत ( सं. ) भव, डर, त्रास, दुःख ।

देहशुद्धि ( सं. ) शरीरशुद्धि, शरीर  
विषयक पवित्रता ।

देहशुद्धिभाषित ( सं. ) देहकी पवि-  
त्रताके निमित्त किया गया प्रायश्चित ।

देहांत ( सं. ) जीवनांत, मृत्यु, मौत ।

देहांतदंड ( सं. ) प्राणान्तकदण्ड, फांसी  
सूली, बहदद जिससे मृत्यु हो ।

देहांतरे ( सं. ) कायापलट रूपभेद ।

देहात्मवादी ( सं. ) अनात्मवादी  
चारोंक, नास्तिक ।

देहाभिमान ( सं. ) शारीरिक गर्व  
शरीरका गर्व, आत्मभिमान, आत्म  
सम्मान, देहका आदर ।

देही ( वि. ) शारीरिक, देह सम्बंधी ।

देह्य ( सं. ) अक्षुर, निशाचर, राक्षस  
जिह्न, जिन्द, प्रेत, पिशाच, दानव ।

देह-निष्ठ ( सं. ) आत्यधिक दिनभर,  
दिनभर, प्रतिदिन होने वाला, नि-  
त्यक, प्रतिभासर सम्बन्धी ।

देव ( सं. ) भाग्य, अदृष्ट, विधाता  
प्रारब्ध, ललाट, देवता ।

देवभति ( सं ) विधि गति, भाग्य  
गति, तकदीरी चक्र ।

देवत ( सं. ) शक्ति, कूम्बत, गुण, आत्मा,  
देव सम्बन्धी, देवी शक्ति ।

देवदत्ता ( सं. ) भाग्य, किस्मत, प्रारब्ध  
तकदीर, ललाट, होनहार ।

देवयोग ( सं. ) अकस्मात्, तकदीर  
सौभाग्य, शुभासरससे, योगात्  
भाग्य, प्रारब्ध ।

देववाद ( सं ) भाग्यवाद, प्रारब्ध  
पर विश्वास, आलस्य ।

देवहीन ( वि. ) भाग्यहीन, बदकिस्मत  
फूटी तकदीरका ।

देवस्य ( सं. ) गणक, लमाचार्य, ज्यो-  
तिषी, भविष्यवक्ता ।

देवाधी-नुसारी ( वि. ) देवायत,  
इंधराधीन, हठात्कार ।

देहदो ( सं. ) एक रुपये का शतांश,  
१०० रुपया ।

देहभु ( सं. ) पारसी बुर्जे, पारसी  
लोगोंकी मौनविषयक बुर्जे ।

देगाधि ( सं. ) गंवारपना, उजड़पन,  
मोटवाई, बेहूदगी ।

देह्यु ( वि. ) बुष्ट, बदजात, हठी  
सुईचोर, गुस्ताख, मोट ।

दो०/११ ( सं. ) नई, अपवर्ण ।  
 दो०-३ ( सं. ) दौड़, भाग, चाबा,  
 सर्प, शीघ्रगमन, अति वेगसे गमना ।  
 दोटी ( सं. ) मोटा वस्त्र, खड्ग  
 कपड़ा ।  
 दो०धाम ( सं. ) भाग दौड़, दौड़-  
 धूप, परिश्रम, मेहनत, यत्न, उ-  
 द्योग, चेष्टा ।  
 दो०धु ( कि. ) दौड़ना, भागना,  
 धावना, सर्पट लगाना ।  
 दो०धो०-डी ( कि. ) देखो दो०धाम  
 दो०धो०-डी ३२वीं ( कि. ) भाग दौड़  
 करना, शीघ्रता करना, दौड़ धूप  
 करना ।  
 दो०धुपु ( कि. ) दौड़ाना, भागाना,  
 जल्दी चलाना, तेज हॉकना ।  
 दो०डी ( सं. ) अब की बाळ, नाज  
 का भुष्ट, ठोडा ।  
 दो० ( सं. ) देखो दो०६६  
 दो०धु ( सं. ) पैसा ।  
 दो० ( सं. ) दावात, मसिपात्र ।  
 दो०तिथे ( सं. ) सुहरिँर, कूक, लेखक ।  
 दो०६३ ( वि. ) अच्छी तरह नहीं  
 पिसा हुआ, बे पिसा, बेकुटा ।  
 दो०धी ( सं. ) देखो दु०धी  
 दो०नी ( सं. ) दोना, पत्रपात्र, पर्ण-  
 पात्र, द्रोण, पत्तों की बनी कटोरी ।

दो०पु ( सं. ) देखो दु०पु  
 दो०पुस्ता-१ ( सं. ) नकल करने का  
 पद्य, लिखने का पद्य ।  
 दो० दो० ( सं. ) बल, प्रताप, वि-  
 जय, कामयाबी, सफलता ।  
 दो० ( सं. ) डोर, डोरी, झुलती,  
 पतली रस्ती, ठाठ, धूमधाम ।  
 दो०३ ( सं. ) रस्सा, डोरा ।  
 दो०३ ( सं. ) इल्हा दुलहिनके हा-  
 थोमे विवाह के समय बाधा जाने-  
 वाला सूत्र ।  
 दो०नार ( सं. ) अगुवा, पचदशक,  
 राह दिखा देनेवाला ।  
 दो०पु ( कि. ) रूठ धीचना, लकीरें  
 करना, लेचलना, आगे चलना ।  
 दो०पूर ( वि. ) बल बराबर अ-  
 न्तर, बाळ बराबर बीच, अति  
 अल्प अंतर ।  
 दो०पु ( कि. ) मार्ग दिवाना, ले-  
 चलना, अगुवा बनना ।  
 दो०पु ( कि. ) लकीरें खिचाना,  
 सतरं कराना, रूल कराना ।  
 दो०पु ( वि. ) सूतदार, रेसेमाळा,  
 सूत सरीखा, सूती ।  
 दो०पु ( सं. ) घड़ा, मटकी, ल-  
 कीरबाळा कपड़ा, डोरिया ( वस्त्र-  
 विशेष )

दोरी ( सं. ) डोरी, सुतली, बारीक रस्सी, प्रभाव, असर, बागडोर ।

दोरी तुटवी ( कि. ) मरना, नाश, होना, मृत्यु होना, देह त्यागना ।

दोरी ( सं. ) धागा, डोरा, सूत्र, गलेकीमाला कंठी या हार, कंठा भरण ।

दोरी पड़ेवे। ( कि. ) सूई मेडोरा डालना सूई में धागा पिरोना ।

दोरी भरवे। ( कि. ) सीना, टांकना बखिया करना ।

दोस्त ( सं. ) दौलत, द्रव्य, धन, जर, रुपया पैसा ।

दोस्तभाई ( वि. ) अशीर्वादत्मक मुहाबिरा, “ ईश्वरकरे भंडार भर-पूर रहे ” आसीस वाक्य ।

दोस्तदार-भंड-वान ( वि. ) धनी द्रव्यपात्र, रुपये जैसे वाला, मालदार, धनाव्य ।

दोस्तदारी ( सं. ) दीवार मेकी अलमारी भंडारा, आला, ताख ।

दोस्ती ( सं. ) साफ, उदार, धर्मात्मा सखी, सीधा ।

दोस्ती-वाणी ( सं. ) बजाज वक्तविकेता, कपड़े बेचने वाला ।

दोष ( सं. ) दूषण त्रुटि, कलंक अपराध, पाप, ऐश ।

दोषपात्र ( वि. ) कलंकित, अपराधी पापी, दूषित ।

दोषभोजन ( सं. ) क्षमा, पापोसे छुटकारा, पाप मोचन ।

दोषी ( वि. ) कलङ्गी, अपराधी, पापी दोषयुक्त, अनुद्ध ।

दोस्त-स्त-स्तदार ( सं. ) मित्र साथी सखा दोस्त, सहयोगी ।

दोस्तदारी-स्ती ( वि. ) मैत्री मित्रता, सखत्व, दोस्ती ।

दोह ( सं. ) अपराध, कुसूर, पाप ।

दोह ( वि. ) डेढ, एक और आधा, १½, १॥, [ मूर्ख ।

दोहडाहुं ( वि. ) बेवकूफ, गानवी

दोहडाहुं ( वि. ) व्यर्थ, निकम्मा, निरर्थक, देहदमङ्गीका ।

दोहसो ( वि. ) डेढसो, एक सौ पचास, १५० ।

दोहणी ( सं. ) दुग्ध दोहने का पात्र, नांह, कूडा, दूध दोहनेकी ।

दोहन ( सं. ) निचोड़, सार सत्व, रस, अर्क, सत्व, दुग्ध, दोहन,

दोहरी ( सं. ) दोहा, सोरठा, पद्य ।

दोहपुं ( कि. ) दूध दोहना, दूध निकालना, दूध काटना ।

दोहिन ( सं. ) पुत्री की पुत्र, दीहित्र नाती, बेटी का बेटा ।

दोहिन ( सं. ) नविनी, नसिन, बेटी  
की बेटी, दौहिनी, पुत्री की पुत्री ।  
दोहेशु ( वि. ) सख्त, कठिन, कठोर,  
कड़ा, मुश्किल ।  
दोहेशु अतुर ( वि. ) अपनी बुद्धि में  
अहमद, सिरी, पागल ।  
दोहो ( सं. ) डोल, पठना, बुझना ।  
दोत ( सं. ) देखो दोत  
दोत ( सं. ) देखो दोत  
दोहन ( सं. ) देखो दोहन  
दोहन ( सं. ) ईमानदारी, हिताहित  
का ज्ञान, निश्चय, विश्वास, सचाई ।  
दोहन २ ( वि. ) सच्चा, सरा,  
ठीक, ईमानदार ।  
दोहनादारी ( सं. ) सचाई, ईमान-  
दारी, निश्चयता ।  
दूत ( सं. ) जुवा, जुआ, पासा का  
खेल, फाँड़ा विशेष ।  
दूतकमे ( सं. ) जुएबाजी, दूतकाँड़ा,  
पासे का खेल ।  
दूत ( सं. ) चमक, प्रकाश, दमक,  
सौन्दर्य, उजाला, तेज ।  
दू ( सं. ) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक,  
आकाश, आस्मान ।  
दू ( सं. ) पिचलाव, गलाव, जेह  
प्रव्य, रस, गतिवेग ।  
दू ( सं. ) वित्त, धन, नैयायिकों  
के मत से पृथ्वी आदि तत्व ।

दू ( वि. ) चन्दाव, फली,  
दौलतमन्द, बगाल ।  
दू ( वि. ) दीन, हीन, गरीब,  
निर्धन, निर्धन, कमाक ।  
दू-५१ ( सं. ) निगाह, दृष्टि,  
ताक, निरीक्षण, नेत्र, नयन ।  
दू ( सं. ) जलप्रपात, झरना, बड़ा  
झरना, मोतियाबिन्द ।  
दू ( सं. ) दाख, किलमिष्ट, अंगूर,  
दू ( सं. ) पूर्ववत् ।  
दू ( सं. ) अर्क, रस ।  
दू ( सं. ) द्रव कारक, गलानेवाला,  
सोहागा, पिचलानेवाला ।  
दू २ ( सं. ) पिचलानेवाला रस,  
तेजाव, द्रवकारक अर्क । [ गलजावो  
दू ( कि. ) जो पिचल सके, जो  
दू ( सं. ) अंगूर की बेल,  
अंगूर के बेल की क्यारी ।  
दू २ ( सं. ) अंगूर का रस,  
मदिरा, मद्य ।  
दू ( कि. वि. ) तुरन्त, शीघ्र, त्वरित,  
( वि. ) पिचलाहुवा, गलित ।  
दू ( सं. ) वृक्ष, पारिजात, पेड़,  
रुख, तरुवर, झाड़ ।  
दू ( सं. ) दोना, पर्णपात्र, ६४  
सेर का एक तौल ।  
दू ( सं. ) जिचाँसा, बैर, द्वेष,  
अनिष्ट चिन्तन, अपकार, क्षति ।

६५६ (वि.) अनिष्टकारी, कल, विघ्न, विरोधी, द्वेषी, वैरी, स्व-  
साधक शत्रु ।

६५६ (सं.) जोड़ी, युग्म, युगल, विभुन, समास विशेष ।

६५६ यु६ (सं.) दो मनुष्यों का युद्ध, सङ्गयुद्ध, दो मनुष्यों की लड़ाई ।

६५६ (सं.) बारह, दस और दो, १२ (वि.) बारहवाँ,

६५६ अ२५५ (सं.) बारह वन, सांकेतिक बारह जंगल जो मन्त्र में हैं ।

६५६ ६५६ (सं.) १२ कोने, बारह कोने का, बारह बौंटा ।

६५६ (सं.) तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, बारस ।

६५२ (सं.) युग विशेष, तीसरा युग, इस का मान ८६४००० वर्ष का होता है ।

६५२ यु६ (सं.) पूर्ववत्

६५२ (सं.) मार्ग, दरवाजा, निकलने घुसने का मार्ग, रास्ता, फाटक ।

६५५५ (सं.) द्वार रक्षक, दरवान, द्वारवान, पहरवा, प्रहरी, पौरिया ।

६५५२ (कि. वि.) दूसरों के द्वारा, दूसरों की मार्फत ।

६५६ (सं.) बुझाई, कसम, शपथ, शान, सौमन्य, रक्षा के लिये किसी

बड़े पुरुष का नाम लेकर सौदाई देना ।

६५६ (सं.) २, संख्याविशेष, दो ।

६५६ (वि.) दो शुरों का, फटे हुए शुरों का, बिरे शुरों का ।

६५६ (वि.) दो पैर का पशु, दो पया, जीव ।

६५६ (सं.) दोबार में उत्पन्न, ब्राह्मण, आदि त्रिवर्ण, अण्डज, पक्षी ।

६५६ (सं.) द्विजपति, चंद्रमा, सशाक, चाँद, चंद्र ।

६५६ (सं.) देखो ६५६ ।

६५६ (वि.) दूसरा, अन्य, दूजा ।

६५६ (वि.) व्याकरण में द्वितीया विभक्ति, दोयज, तिथि विशेष ।

६५६ (सं.) दो पत्तों के रूप में प्रथम उत्पन्न होनेवाला वृक्ष, बीच से दो फाँक या चीर होनेवाला अक्ष ।

६५६ ५५६ (सं.) दो भागों में विभक्त अक्ष कण, चना तुवर, मसूर, मूँच, उर्द, इत्यादि ।

६५६ (कि. वि.) दो प्रकार, द्वयर्थ, सन्देह, अनिश्चित, द्विविधि ।

६५६ (सं.) देखो ६५६

६५६ ५५६ (सं.) पूर्ववत्

द्विवचन (सं.) दो संख्या की वाचक विभक्ति, हुआ बचन, अन्य बचन, शत्रुबचन । [ मातिका, द्विधा ।

द्विविध ( वि. ) दो प्रकार का, दो

द्विच्छ ( वि. ) फटाहुवा पैर, चिरा हुआ चुर, जैसे गऊ बकरी, भैंस, प्रभृति पशुओं के पैर ।

द्वीप ( सं. ) जल मध्यस्थ पृथ्वी का खंड, जमीन ।

द्वीपद्वीप (सं.) प्रायद्वीप, जमीरेनुमा ।

द्वेष्ट-य ( सं. ) विरोध, ईर्ष्या वैर, शोहलाग, शत्रुता, दुस्मनी, हिंसा ।

द्वेष्ट भाव (सं.) कुठन, जलन, हसद ।

द्वेष्टी ( त्व. ) शत्रु, बैरी, हिंसक, दुस्मन ।

द्वैत-भेद ( सं. ) दो प्रकार, भेद सन्देह, जीव और ईश्वर का भेद प्रदर्शक मत । दो वस्तुओं को अनादि बाने का सिद्धांत, अर्थात् ब्रह्म और जीव अनादि अनन्त और एक दूसरे से भिन्न हैं ।

ध

धन्वजराती वर्णमाला का तीसवा अक्षर, सवर्णाय चौथा अक्षर, ३७ वा व्यन्जन ।

ध ( सं. ) प्यास, पिपासा, तृषा, ज्वाला, ध्यान, विचार, चित्त, दिल ।

धधधुं ( कि. ) धक धकना, धड़कना, फड़कना, मारना, पीटना ।

धधध ( सं. ) धड़ धड़ाहट, दिल की चाल, मार, पीट ।

धधेधुं-धधेधु ( कि. ) आगे सरकाना, धक्का मारना, धकेलना ।

धक्काधक्की ( सं. ) रेंकाठेली, धक्कम्-धक्का ठेलाठेली ।

धक्काधुक्का ( सं. ) धूँसे और बके, मारकूट, धूसमधूसा ।

धक्का ( सं. ) धक्का, रेला, ठेक, हानि, दुर्भाग्य की चोट ।

धधधुं (वि.) क्रोधित होना, कुठना, लिमना, दुखी होना ।

धधधुं ( सं. ) हरकार, दूत ।

धधध ( सं. ) राख, भस्म, धूँक ।

धधधधुं ( कि. ) मबंकर रूपसे धमकना, धकधकाना, धधकना, गर्म होना, धड़कना, फड़कना ।

धध ( सं. ) गर्मी, ताप, उष्णता ।

धधारी ( सं. ) हलका ज्वर, बुखार की हुरारत । [ उष्ण करना ।

धधधधुं ( कि. ) गर्म करना, तापना,

धनुष्य-धनुष्य ( वि. ) अनिवि-  
तता, अनिवारितता, पशोपेक्ष,  
सक, सन्देह, दुष्ठा ।

धनु ( वि. ) सुन्दर, मनोहर, उत्तम,  
श्रेष्ठ, उम्मा ।

धनु ( सं. ) पञ्जा, पताका, झंडा,  
फरहरा, सेना का चिन्ह ।

धनु ( सं. ) रुम्ह, शिरहीन शरीर,  
बिना मूँह की देह, गले से नीचे  
का शरीर, देह, काय, शरीर ।

धनुष्य ( वि. ) भय, डर, भय से  
उत्पन्न व्याकुलता, हृदय का क्षोभ  
धुकधुकी, कम्प, सहम ।

धनुष्युं ( कि. ) धड़कना, भय  
करना, कांपना, भय से व्याकुल  
होना, धरधराना, धुकधुकाना,  
धड़धड़ाना, फड़कना ।

धनुष्यु-धनुष्यु-धनुष्यु ( वि. )  
प्रारंभसे, पूर्व से, पहिले से, बहुत  
पहिले से ।

धनुष्युं ( कि. ) धड़धड़ाना, तड़-  
फड़ाना, छटपटाना, जोरसे कूटना  
या मारना ।

धनुष्यु ( सं. ) शरगराहट, जोर  
से गर्जन या गूँजने का शब्द, धड़-  
धड़ाना ।

धनुष्युं ( सं. ) सिर और पूँछ,  
मुखता, बेषकृती, शठता ।

धनुष्यु ( सं. ) भय, सन्देह, दुविधा,  
दुचिता, दहल, कड़क, भड़का,  
धड़का ।

धनुष्यु ( सं. ) भयंकर लड़ाई,  
धड़धड़ का लगातार शब्द, कार्य में  
शीघ्रता, जल्दी ।

धनुष्युं ( कि. ) धड़कना, गरजना,  
गुरीना, गड़गड़ाना ।

धनु ( सं. ) धड़ा, जथा, समूह,  
पाठ, सबक, रुख, इरादा, दृढ़ता,  
वजन मार, प्रभाव, पक्ष, तौल,  
जोख, वह वजन जो सामने के पल्ले  
पर रखे हुए से बराबरी के लिये  
दूसरे पल्ले पर रखा जाता है ।

धनु धरेवे ( कि. ) वजन करना,  
तौलना । [ बायों का झुंड ।

धनु ( सं. ) धन, योचन, गौसमूह,  
धनुष्युधनुष्युं ( कि. ) भयंकर रूप से  
जलना, धकधकाहट के साथ जलना  
कांपना, धरीना, धूजना ।

धनुष्युधनुष्युं ( कि. ) काटना, भला-  
बुरा कहना, कार्य में शीघ्रता करना  
जलना, कांपना, धूजना, धरीना ।

धनुष्युधनुष्यु ( सं. ) पत्नी, मालकिन  
स्वामिनी । [ मालिक, अधिकारी ।

धनुष्यु ( सं. ) पति, खाविद, स्वामी,



धृष्टीनेत्र ( वि. ) खरीदने वाले के देने योग्य अथवा देय ।

धृष्टीधृष्टिमाधृष्टी ( सं. ) पति पति, औरत मर्द, स्त्री पुरुष, आविद बाँबी । [ गार, मालिक, स्वामी ।

धृष्टीधारी ( सं. ) सहायक, मदद-  
धृष्टीपथुं ( सं. ) स्वामीपना, मालिकपन, हाकिमपना, मालिकियत, स्वामित्व, अधिकार ।

धृष्टीआतुं ( वि. ) जिसका मालिक हो, मालिक वाला ।

धृत् ( विस्म. ) छिः, हुआ, छित ।

धृत्तभंत्त ( सं. ) छूमंत्त, जादूभरी इंग्रजाल, डोना टटका ।

धृत्तिभ ( सं. ) कोलाहल, चिल्लाहट, बहाना, झूठा दिखावा, बनावट, झूठा हीला, पाखंड ।

धृत्तरे-धृत्तुरे ( सं. ) धतूरा, नामक विषैला वृक्ष, धतूर, कनक ।

धृधृहा ( सं. ) कामकाजी, काम धन्धेवाला, व्यापारी, लेनदेन करनेवाला ।

धृधृहारी ( सं. ) कामकाजी, ति-  
जारती, ( वि. ) वृत्ति सम्बन्धी, उद्यम सम्बन्धी ।

धृधृडे ( सं. ) झरना, जलप्रपात आखात, पानी का झरना ।

धृधि ( सं. ) व्यापार, लेनदेन, उद्योग, व्यवसाय, काम ।

धृधि ३२२ ( कि. ) उद्योग करना व्यवसाय करना, व्यापार करना, लेनदेन करना । [ रोजगार, पेशा

धृधिराज्यार ( सं. ) आजीविका, धृधृधृधृधृ ( कि. ) डराना, भयभीत करना, धमकाना, डाटना ।

धृधृधृधृधृ ( कि. ) देखो धृधृधृधृधृधृ

धृधृ ( सं. ) वित्त, विभव, सम्पत्ति, द्रव्य, पूंजी, मालमत्ता, सजाना, चिन्ह विशेष, हर्ष, धन्य, ( विस्म ) बाहवा ? शाबास ।

धृधृधृधृधृ ( सं. ) उधार रुपया देने वाला, व्याजपर रुपया देने वाला, साहूकार ।

धृधृधृ ( सं. ) ग्वाला, गडरिया ।

धृधृधृ ( वि. ) द्रव्य पात्र धनी, मालदार ।

धृधृधृधृधृ ( सं. ) आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, कार्तिक कृष्ण तैरस, दिवाली के दो दिन पूर्व ।

धृधृधृधृधृ-धृधृधृ ( सं. ) द्रव्य, धन, धनधान्य, दौलत, माल ।

धृधृधृधृ ( सं. ) द्रव्यपूजन, दीप-  
मालिका । [ देनेवाला, लक्ष्मी ।

धृधृधृ ( सं. ) धनद, कुबेर, धन

धनराशि ( सं. ) नवम राशि ।  
 धनरेखा ( सं. ) हस्त में धन को  
 बताने वाली रेखा, धन प्रदर्शक  
 लकीर, सामुद्रिक रेखा विशेष ।  
 धनक्षेत्र ( सं. ) अर्थ लोभ, धन  
 लिप्सा, धनतृष्णा, द्रव्य का  
 लालच ।  
 धनक्षेत्री ( वि. ) धनलुब्ध, धन-  
 लोलुप, अर्थ लिप्सु, धन का  
 लालची ।  
 धनवंत-वान ( वि. ) कुबेर, धना-  
 लभ, धैर्यपात्र, धनी, दौलतमैद ।  
 धनवंतरि ( सं. ) शिव का नाम ।  
 देव वैद्य, देवताओं का हकीम ।  
 धन्य ( विस्म. ) कृतकर्मा, साधु,  
 पुण्यवान, आश्चर्य्य बोधक शब्द,  
 शाबाश ।  
 धनवी ( सं. ) धनुर्वारी, धानुष्क,  
 धनुर्विद्याप्रवीण, धनुषधारी ।  
 धन्यभाज्य ( सं. ) अहोभाग्य,  
 भूरिभाग्य, लुक्ष किस्मती ।  
 धनसंपत्ति ( सं. ) द्रव्य का ढेर,  
 धनराशि, अर्थ समूह, द्रव्य ।  
 धनहीन ( सं. ) दरिद्री, कमाल,  
 दीन, हीन, गरीब, निर्द्रव्य ।  
 धनाढ्य ( सं. ) देखो धनवंत ।  
 धनाल ( सं. ) लोभ, लालच,  
 तृष्णा, ईप्सा, इच्छा ।  
 धनाधिपति ( सं. ) धनपति, धन  
 का स्वामी, द्रव्यवान, कुबेर ।

धनाधिकारी ( सं. ) द्रव्य का हक-  
 दार, धन का अधिकारी ।  
 धनाध्य ( सं. ) अहंकारी, धनगर्वित,  
 धन के गर्व से अग्धा ।  
 धनाध्यक्ष ( सं. ) कुबेर, धन रक्षक  
 राजाजी, भण्डारी ।  
 धनाश्री ( सं. ) रागिनी विशेष,  
 एक छंद का नाम, धनासरी ।  
 धनिक ( सं. ) कर्जें परतृप्त्य देने  
 वाला ऋणदाता, धनी, धन विनिष्ट  
 कर्जा देनेवाला । [ सबां नक्षत्र ।  
 धनिष्ठा ( सं. ) नक्षत्र विशेष, चौबीस-  
 धनी ( वि. ) देखो धनवंत ।  
 धनु ( सं. ) धनुक, धनुष, बाण,  
 कोदण्ड, शरासन, कमान, कमठा,  
 नवमराशि । [ अचेतनता, बेहोशी ।  
 धनुर ( सं. ) एक प्रकार की मूर्छा,  
 धनुर्धारी ( सं. ) धन्वी, बाण  
 बलानेवाला, तीरन्दाज, कर्मठा,  
 धनुषधारी । [ नबां सौरमास ।  
 धनुर्भास ( सं. ) धन की संक्रांति,  
 धनुर्विधा ( सं. ) धनुष के विषय  
 की शिक्षा देने वाली विद्या ।  
 धनुषधारी ( सं. ) देखो धनुर्धारी ।  
 धनुष-ध ( सं. ) बाण, कमान,  
 कमठा, कोदण्ड, इन्द्र धनुष,  
 वर्षा धनु । [ उम्मा ।  
 धनेतर ( वि. ) उत्तम, श्रेष्ठ,

धनेश्वर ( सं. ) धनपति, कुबेर,  
धनाढ्य ।

धपकारे-धकारे ( सं. ) धमक,  
ठकर, धक्का, भारी शरीर के गिरने  
का शब्द, धमाका ।

धपके ( सं. ) पीठ पर का धप्पा, पीठ  
ठेकने की ध्वनि धापटों का शब्द ।

धपाधप ( वि. ) हाथों की चोटों  
की ध्वनि, धप्पटों का शब्द ।

धपाधपी-धपाधपी-धपाधपी ( सं. )  
धमो और धप्पटों के मारने की  
क्रिया या काम ।

धपे-धपे ( सं. ) सिरपर धप्पट  
का तड़का, मस्तक पर चपत ।

धप ( कि. वि. ) एकदम उठने  
का शब्द, गमन और पतन ।

धपकी ( कि. ) उठाना, फेंकना,  
ठंटी सास लेना ।

धपकुं ( कि. ) भड़कन, धड़कना ।

धपधप ( सं. ) चलने के समय  
शब्द ।

धपकुं-धी नपुं ( कि. ) गिरना,  
पतन होना, दिवालिया होना,  
मुफलिस होना, एकदम मरना ।

धपेधपुं ( कि. ) हाथों से पीटना ।

धपपल-धपपल ( सं. ) मूर्ख, शठ,  
बेवकूफ, पागल । [ उल्टाई- ]

धपके ( सं. ) ठिठकी, बौरता, साहस,  
धपकावतुं ( कि. ) धमकाना,  
डाटना, डराना, भय दिखाना ।

धपकी ( सं. ) भय, डर, शट,  
सिद्धक, धिक्कार ।

धपकारे ( सं. ) नयंकर धक्काके  
का शब्द, जोर का धमाका ।

धपके ( सं. ) पीठपर धूँसे की बोट,  
अगूठा, अशुष्ट ।

धपथु ( सं. ) धौकनी, धुंकनी,  
धुंकनी, टप, डकनी, (गाड़ीका) ।

धपथुं ( कि. ) धौकना, धुंकना ।

धपधपुं ( कि. ) जोर जोर से शब्द  
होना, धमधम होना ।

धपधपपुं ( कि. ) डराना, धुक्-  
काना, धमकाना, भय दिखाना ।

धपधेकारे ( वि. ) तेजी से, जल्दी  
से, शीघ्रता से, चंचलता से ।

धपकी ( सं. ) रक्तावाहक नाली, रक्ता-  
वाहिना नालिका, धुंकनी, छोटी  
नालिका, छोटी नली ।

धपकी छेद ( सं. ) योगाभ्यास  
की किन्ना विशेष ।

धपनी धपुं ( सं. ) शरीरधातु ।

धमरौण ( सं. ) कोलाहल, शोर  
गुलमपादा, हो हवा, अतिबिलाप,  
अति रुदन, करुण कन्दन ।

धमपुं ( कि. ) देखो धमपुं ।

धमायकडी ( सं. ) झगड़ा, टंटा,  
राला, बखेड़ा, गुलमपादा ।

धमाधमी ( सं. ) लड़ाई, झगड़ा,  
फनाद । [ डोरों को नहाना ।

धमारतुं ( कि. ) पशुओंको स्नान कराना

धमास ( सं. ) बहुत भीड़, अति  
भाड़, अति समूह, बृहत्समूह ।

धमाधु ( सं. ) बड़ी बेडौल पगड़ी ।

धमासे ( सं. ) एक प्रकार का  
कटीला पौदा, पौदा विशेष ।

धमीपुं ( कि. ) चुराना, छूटना,  
अपहरण करना, डाका डालना ।

धमेर ( सं. ) लम्बे कानों की गाय,  
दीर्घ कर्ण गऊ ।

धर ( वि. ) रखने वाला, धारण  
करने वाला, धामने वाला ।

धर ( सं. ) दोका पर्यायवाची शब्द,  
बैलकी उम्र या युग, जूड़ा, भरोसा  
आसरा, विश्वास । [ प्रारंभ से ।

धर ( कि. वि. ) आरंभ से, शुरु से,

धर डेतड ( सं. ) चावल का पौदा,  
शाल का पौधा ।

धरधु ( सं. ) बाँध, बंध, पानी  
की रोक, लपेटन, बंधन, कमरपेटा ।

धरधु ( सं. ) पृथ्वी, वसुधा,  
मेदिनी, भूमि, जमीन, ढंग, चाल,  
आचरण, पदवी, बनावट ।

धरधुधर ( सं. ) जमींदार, पृथ्वी-  
पति, राजा, शेषनाग, पर्वत, विष्णु ।

धरधु-तीकप ( सं. ) भूकंप,  
भूचाल, जलजल ।

धरार् ( सं. ) धारण करनेवाला,  
ग्रहण करनेवाला ।

धरति ( सं. ) पृथ्वी, भूमि, जमीन,  
अर्वा, बलुधरा ।

धरतिङप-धारे ( सं. ) देखो  
धरधु-तीकप [ पकड़ धकड़ ।

धरपकड ( सं. ) पकड़ धकड़,

धरपधे ( सं. ) देखो धरपधेधारे

धरपडी ( सं. ) बारह, १२,

धरपध-त ( सं. ) अयानक किंतु  
अर्धहीन नेहृदी व्यर्थ गर्जना ।

धरपधधारे ( सं. ) सनसनानेवाला,  
बमकनेवाला, लड़ाका झगड़ालू ।

धरम-भ ( सं. ) फर्ज, शुभ कर्म,  
पुण्य, सुकृत, न्याय, आचार,  
उपमा, यज्ञ, अहिंसा, जाति-  
व्यवहार, कर्तव्यकर्म ।

धर्म कर्तार्थ धर्म नडे=धर्म करते  
कर्म फूटे, दूसरों के लिये मलाई  
करते अपने ऊपर कष्ट और  
आफत का खाना ।

धर्म शरी पणवे। ( कि ) सद्गुण  
या सत्कार्य के उपलब्ध में ईश्वर  
द्वारा पुरस्कार दिया जाना ।

धर्मनी आयने धंत न हो। धर्म की  
गाय के दात नहीं देखे जाते, जो  
कुछ दान मिले उस पर सतुष्ट हो,  
धर्म धक्का ( सं. ) व्यर्थ का चकर,  
बे फायदा भ्रमण ।

धर्मपुं ( कि ) रखना, धारण  
करना बामना, पकड़ना, रख  
छोड़ना भेट करना । [ वसुधा ।

धर्म ( सं. ) भूमि, पृथ्वी, अवनि,  
धर्मपुं-पुं ( कि. ) सन्तोष  
होना, तसल्ली होना तृप्त होना,  
तुष्ट होना ।

धर्मधर्म ( सं. ) शेष, शेषनाग, कूर्म ।  
धर्म ( कि. वि. ) निस्संदेह, अवश्य,  
निश्चय, वास्तव में, सचमुच, बेसक,  
अधिक भार से लदी हुई गाड़ी ।

धर्मपुं ( सं. ) एहसानमन्द होना,  
आभारी होना, रखाना, भेट कराना।  
धर्म ( सं ) अछरेखा, गाड़ी की  
धुरी या धुरा, आधय, सहारा ।

धर्म कर्ता ( सं. ) धर्म करनेवाला,  
धर्मात्मा, धर्मी, धर्मिष्ठ, पुण्यकर्ता ।

धर्म धर्म-धर्म-धर्म ( सं. )  
धार्मिक काम, पुण्यकार्य, पावन कृत्या

धर्मिष्ठा ( सं. ) धर्म कर्म, शास्त्र  
विहित कर्म ।

धर्म भाग ( सं. ) धर्म के निमित्त  
पुण्य के नाम पर, धर्मार्थ ।

धर्मधर्म ( सं. ) उपदेशक, धर्म  
संबंधी अगुवा, पवित्र मार्ग प्रदर्शक।

धर्मदान ( सं. ) पुण्यदान, दान  
पुण्य, उदारता ।

धर्मधर्म ( सं. ) देखो धर्मधर्म

धर्मधर्म ( सं. ) धार्मिक नेता,  
धर्मकार्यों में आगे रहनेवाला,  
धर्मात्मा, धर्माचार्य, धर्म का  
धुरा उठानेवाला ।

धर्मनिष्ठा ( सं. ) दया, कृपा, रहम,  
धर्मिष्ठता, धर्म में विश्वास ।

धर्मनी आय ( सं. ) धर्मकी  
दानकी गाय, सुफ्त की गाय ।

धर्मनी धर्म ( सं. ) धर्म का तराजू,  
सच्चा काटा या तौल ।

धर्मपत्र ( सं. ) विवाहिता स्त्री,  
माया, अपने हाथों पाणिग्रहण  
की हुई स्त्री ।

धर्मपत्रिका ( सं. ) दानपत्र, पुण्य की हुई वस्तु का लिखित पत्र ।

धर्मपुत-पुत्र ( सं. ) गोद लिया हुआ लड़का । [ बस्ती ।

धर्मपुरी ( सं. ) पुण्य नगरी, पावन

धर्मपुस्तक ( सं. ) पवित्र पुस्तक, वेद, कुरान, बाइबल, धार्मिक पुस्तक, मान्य पुस्तक, वेदवाक्य, ईश्वर वाक्य, अमानुषिक पुस्तक ।

धर्मधु-भाष्य ( सं. ) धर्मब्राता, समपाठाध्यायी, साथ पढ़नेवाला सगोत्री, अपने गोत्रका ।

धर्मधुद्धि ( सं. ) पवित्र विचार, श्रेष्ठ बुद्धि, धार्मिक विचार, धार्मिक कृत्योंकी ओर मनका मुकाब ।

धर्मभार्ज ( सं. ) पवित्र मार्ग, उत्तम रास्ता, दयाधर्म, पुण्य मार्ग, पाकराह ।

धर्मधुद्ध ( सं. ) धार्मिक झगड़े, धर्मविषयक लड़ाई, नियमानुकूल युद्ध, युद्ध शास्त्र के अनुसार लड़ाई, पवित्र मन से किया गया युद्ध ।

धर्मशम्भ ( सं. ) युधिष्ठिर, पांडवों में बड़े, यम, यमराज, नर्काधिपति ।

धर्मवान-वंत ( सं. ) देखो धर्मी

धर्मवाक्य ( सं. ) धार्मिक वाक्य, पवित्र विचार, अच्छा इरादा ।

धर्मशास्त्र ( सं. ) व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, मनु आदि पराक्षर शास्त्रवाक्य आदि रचित शास्त्र ।

धर्मशास्त्र-ज्ज्ञी ( सं. ) जो धर्म शास्त्रों का ज्ञाता हो, धार्मिक ग्रंथों का ज्ञाता, स्मृति आदि का जाननेवाला ।

धर्मशास्त्रा ( सं. ) उपासना गृह, पूजा गृह, दान गृह, अतिथिशाला, धर्मार्थ गृह, धरमसाला ।

धर्मशील ( सं. ) धार्मिक, पुण्य-शील, पुण्यात्मा, धर्मिष्ठ ।

धर्मसभा ( सं. ) विचारालय न्यायालय, वह समाज जिसमें धर्म विषयक चर्चा हो ।

धर्मज्ञान ( सं. ) परलोक सम्बन्धी शुभाशुभ ज्ञान, कर्तव्य ज्ञान, धर्मबोध, धार्मिक विषयों की जानकारी ।

धर्म्यश्चर्य ( सं. ) पवित्राचरण, पावन आचरण, धर्मानुकूल, चाल चलन रीतिरस्म, श्रेष्ठ आचरण ।

धर्म्यार्थ ( सं. ) पुजारी, पादरी, काजी, धर्मगुरु, उपदेशक ।

धर्म्यभा-दु ( वि. ) देखो धर्मी ।

धर्माई ( सं. ) पुण्य के लिये दी हुई वस्तु, धर्मार्थ दी हुई चीज ।

धर्माधि (सं.) धर्म के कारण से होना,  
धर्म के गर्व में अन्धा, धर्मनिष्ठ,  
लकीर का फकीर, ईश विश्वासी ।

धर्माधिकारी (सं.) पुजारी, पुरो-  
हित, धर्म शिक्षक धार्मिक गुरु ।

धर्माध्यक्ष (सं.) न्यायाधिश, न्या-  
यमूर्ति, पुरोहित संबंधी न्यायालय  
का मुखिया ।

धर्माध्य (सं.) धर्म के निमित्त,  
धर्म खाते, दानके लिये ।

धर्माभिषेक (सं.) धर्म शास्त्रों के  
अनुसार किए हुए सस्कार या रीति  
रिवाज ।

धर्माश्रम (सं.) पुण्यस्थान विशेष,  
तपोवन, महर्षियों का आश्रम,  
पवित्र वन ।

धर्मासन (सं.) आसन जिसपर  
बैठकर न्याय किया जावे, विचार  
का आमन न्याय कर्ता की बैठक ।

धर्माज (विं.) दयालु, कृपालु,  
हितैषी, पुण्यवान ।

धर्माभि-भि (विं.) दयावान,  
साधु, पुण्यशालि, धर्मात्मा, धार्मिक,  
पुण्यवान ।

धर्मापदेश (सं.) धर्म के विषय  
का उपदेश, उत्तम उपदेश, मज-  
दूरी हिदायतें । [ हितैषिणा ।

धर्मापेक्ष (सं.) धर्म, पुण्य, दया,

धर्म (सं.) बल, शक्ति, द्रव्य,  
दौलत, पति, खातिर, खसम ।

धर्मापेक्ष (क्रिं.) दूध पिलाना,  
छाती पिलाना, स्तनपान कराना ।

धर्मापेक्ष (विं.) स्वेतवर्ण, झुल्ल, स-  
फेद, सुन्दर ।

धर्मापेक्ष (क्रिं.) देखो धर्मापेक्ष  
धर्मापेक्षारी-३ (सं.) धाय, दूध  
पिलानेवाला धाय ।

धर्मापेक्ष (सं.) धमक, टक्कर, धक्का  
धर्मापेक्ष (क्रिं.) बुझना, प्रवेश करना,  
रास्ता देना, धंसना ।

धर्मापेक्ष (सं.) आक्रमण, धावा,  
हमला, दौड़, चढ़ाई ।

धर्मापेक्ष (सं.) पूर्ववत् ।

धर्मापेक्ष (क्रिं.) आगे तेजीसे  
बढ़ना, शीघ्रतासे आगे धुसना ।

धर्मापेक्ष (क्रिं.) मार्ग देना,  
रास्ता देना, धुसजाना, धंसजाना ।

धर्मापेक्ष (सं.) निष्प्रयोजन झगड़ा,  
नटखटी, बिन। कारण की लड़ाई,  
अन्धाधुन्धी ।

धर्मापेक्ष (सं.) झीझी छाती, बोवे,  
स्तन, पयोधर, चूची, बदन ।

धर्मापेक्ष (सं.) भय, डर, धमकी,  
प्रभाव, आताड़, रोब, ठठकाठ,  
धूमधाम, प्रताप, खीर्ति ।

- धा३ हेभा३वे। ( कि. ) डराना, कमकाना, डाट बताना, रोब दिखाना ।
- धा३ धु३ ( सं. ) भय, डर, खौफ,
- धा३ भेभा३वे। ( कि. ) रोब जमाना आतंक जमाना भय जमाना ।
- धा३ भ३ ( स. ) कल्पना, ख्याल,
- धा३ भेभा३वे। ( स. ) घबराहट, बखेड़ा, रौला, बलबा, झंझट, हलचल, हँसबोली, आन्दोलन ।
- धा३ भे। ( स. ) बाणा, तागा, सूत, सूज, तार, धात्री ।
- धा३ ( सं. ) तराका, मार्ग, तर्ज, डब, भौति, राह ।
- धा३ ( सं. ) आकस्मिक आक्रमण, छुटेरोंका समूह, शीघ्रता, जल्दी, तेजी ।
- धा३ धा३वी ( कि. ) डाका डालना छटना, आक्रमण करना ।
- धा३ धा३ ( सं. ) जल्दी, शीघ्रता, तेजी, अत्यंत त्वरा ।
- धा३ ( सं. ) डाकुओं का जत्था, छुटेरोंका दल, मीढ़ ।
- धा३ धा। ( स. ) धनिया, सुगंधित बबि विशेष, धना ।
- धा३ धी ( सं. ) मूला हुआ जल, गेहूँ अथवा जौ मुने हुए ।

- धात ( सं. ) शरीरधारक वस्तु, कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र पंचतत्व, धातु ( व्याकरणकी ) सोना, लोहा तांबा, चांदी आदि ।
- धात धु३वी ( कि. ) शोचनावस्था में पहुँचना जोवन फूटना तरण अवस्था प्राप्त करना, फोड़े आदि में से मवाद निकलना, पीव निकलना । [ धातु गिरना ।
- धात ध३वी ( कि. ) वीर्यपात होना,
- धात धा३-~~ध~~ ( सं. ) धातु संबंधी काम ।
- धात। ( सं. ) ब्रह्मा, विधाता, सृज, पालक, रक्षक, धारक, रक्षयिता ।
- धातु ( सं. ) व्याकरण में वह गण पठित शब्द जो क्रिया को द्योतित करे । स्वर्णादि सप्त धातु, खनिज, खानिक ।
- धातु क्रि३। ( सं. ) धातु विद्या ।
- धातु नाम ( सं. ) क्रिया सम्बन्धी नाम, ( व्याकरण विषय ) वाचनिक नाम ।
- धातु परीक्ष ( सं. ) खनिज पदार्थों की जाच करने वाला, धातुओं का परीक्षक ।
- धातुधर-पेयधु ( वि. ) पौष्टिक, सुकन्धी, साकतधर, वीर्य पुष्ट ।



धातु३५ ( सं. ) क्रिया का रूप  
( व्याकरण ) [ धातु विद्या ।

धातुवर्धन ( सं. ) खनिज विद्या,

धातु विहार-क्षय ( सं. ) वीर्य  
विकार, वीर्यक्षय, धातु सम्बन्धी  
बीमारी ।

धातुवेत्ता ( सं. ) धातु विद्या का  
जानने वाला, भूतत्ववेत्ता ।

धातु साधित नाम ( सं. ) क्रिया  
ने बनी हुई संज्ञा ( व्याकरण  
विषय )

धात्री ( सं. ) धार्ह, उपमाता, दाईं  
पथ्वी, भूमि, जमीन ।

धाधर ( सं. ) दाद, ददु, चर्म  
रोग विशेष ।

धान्य ( सं. ) अन्न, अनाज, भोजन ।

धान भुङ् ( वि. ) अन्न के लिये  
सगढ़ा, अल्पन्न चुकीला, तेज  
डंक का ।

धाप ( सं. ) मूल, चूक, धोका,  
छल, ठगी, चोरी, गुप्त कर्म ।

धाप अपाक्षी ( सं. ) धोका देना,  
छलना, झूठा बयान करना ।

धाप भास्वी ( कि. ) चुराना, निग-  
लना, भ्रकोसना, छपा मारना ।

धापधिक्षु ( सं. ) मोटा ताजा,  
हृद्य, कष्ट, हृष्टपुष्ट, तगड़ा, बंगली।

धापक्षु ( कि. ) धोका देना,  
छेलेना । [ काँकली ।

धापणी ( सं. ) कम्बल, कामरी,

धापणी ( सं. ) मोटा कम्बल ।

धापु-धु ( सं. ) चौतरा, छत,  
धन्ना, बिन्दु, दाय ।

धाप ( सं. ) घर, स्थान, गेह, भ-  
वन, निवास, देश, मकान ।

धापधु ( सं. ) एक प्रकारका सर्प  
विशेष, विषहीन सर्प विशेष ।

धापधु ( सं. ) मजबूत भैंस, बल-  
वान महिषी ।

धापधम ( सं. ) हल्ला, शोर, गुल-  
गपाड़ा, ठाठ, धूमधाम ।

धापा ( सं. ) कई दिनोंका पड़ाव,  
बहुत दिनों का वास ।

धार ( सं. ) बाढ़, प्रखरता, तीक्ष्णता  
अस्त्रके आगे भाग, नदी का बहाव,  
जलधारा ।

धार क्षरणी ( कि. ) तेज़ करना,  
बाढ़ करना, तीक्ष्ण करना, उँढेलना

धारक्ष ( वि. ) धारणकर्ता, अधमर्ण,  
धरता, रखनेवाला ।

धारक्षु ( सं. ) ग्रहण, अवलंबन,  
तोल, मकानका खंभ या सहारा ।

धारक्षु ( सं. ) बुद्धि, विषय ग्रहण  
करनेवाली बुद्धि, मनकी स्थिरता,

मिथ्यास, स्मरण, चेत, उचित कार्य  
व्यवस्थिति ।

धारवाह-वाहु ( सं. ) तेज, पैना,  
धारवाला, बावदार, तीक्ष्ण प्रखर,  
मिश्रित ।

धार्मिक ( सं. ) पुण्यात्मा, पुण्यशील,  
धर्मनिष्ठ, धर्माचारी ।

धातु ( कि. ) सोचा, विचार, इ-  
राश किया, खयाल भिना ।

धारु ( कि. ) सोचना, विचारना,  
अटकल करना, अनुमान करना,  
अन्धान करना, समझना, खयाल  
करना, इरादा करना ।

धारणो ( सं. ) मजदूर, मजूर,  
सैनिक, सिपाही, योद्धा ।

धारिष्ट ( वि. ) निष्ठर, अभीष्ट, सा-  
हसा, बहादुर, निर्भय, ( सं. )  
धैर्य, साहस, दृढता, हिम्मत ।

धारि सभा ( सं. ) लेजिस्लेटिव्ह  
कौंसिल, व्यवस्थापिका सभा, नि-  
यम स्थापिनी सभा ।

धारिधु ( सं. ) झुरपा, नास कटने  
की हंसिया, देराती ।

धारी ( वि. ) रखनेवाला, ग्रहण  
करनेवाला, ( सं. ) रेखा लकीर,  
खुर, रीख ।

धारीदार ( वि. ) रेखायुक्त, लकीरो-  
वाला, जिसमें लकीरें हों ।

धारेधु ( वि. ) इच्छित, अभिल-  
षित, चाहा हुआ, विचारा हुआ,  
सोचा हुआ ।

धारे ( सं. ) नियम, कबजा, का-  
नून प्रस्ताव, रीति, दस्तूर, चलन ।

धारे आधिधे ( कि. ) नियम बा-  
धना, दस्तूर बाधना, रीति बाधना,  
व्यवस्था करना ।

धाव ( सं. ) धाई, राई, धाव,  
दूध पिछनेवाली, उपमाता ।

धावधु ( सं. ) माता का दूध मा  
का दुग्ध ।

धावधु धोधावधु ( कि. ) दूध छु-  
ड़ाना ( वा ठरका ) स्तनपाल छुड़ाना

धावधु भुक्षधु ( कि. ) पूर्णपत् ।

धधु ( सं. ) बच्चे की नसनी,  
नसनी बालक के मुंह में नसने  
का शिलौना विशेष ।

धावधु ( वि. ) दूध पीनेवाला ।

धावधार्ध ( सं. ) उपभ्रात्रा, दूध  
माई, कोका माई

धावध ( सं. ) बात रोग, बारी  
की बीमारी, धाई का रोग ।

धावधु ( कि. ) नसना, खोजना ।

धातुं ( कि. ) चौकना, जाकना,  
वेगपूर्वक चलन ।  
धातु-रती ( सं. ) चौक, मय,  
चौक, चमक, शोक, धिता, युक्त-  
गप, का, गौगा, शोरगुल ।  
धिमाधुं ( सं. ) टंटा, झगड़ा, ल-  
ड़ाई, दगा, बदी, लुकसान ।  
धिभाभस्ती ( सं. ) अन्यायपूर्ण  
झगड़ा, ऊपम, बेहूदा ऊपम ।  
धि३ ६६ ( विस्म० ) छि, निदार्थ-  
सूचक अभ्यय ।  
धि६६१२ ( सं. ) तिरस्कार, फटकार,  
अनादर, बेइज्जती ।  
धि६६१२वा ग्लेज ( वि. ) घृणाके  
योग्य, निदाके योग्य, तिरस्कार  
के योग्य ।  
धि६६१२पु ( कि. ) निदा करना,  
फटकारना, तिरस्कार करना, अ-  
नादर करना ।  
धि६६१२प२था ( सं. ) अनादर,  
अपमान, बेइज्जती ।  
धिमाधुभा१ ( वि. ) झगडाऊ,  
लड़ाका, टंटाखोर, फसादी ।  
धिमाधुं६२पुं ( कि. ) शोर करना,  
होहलामचाना, ऊपम करना ।  
धिंशु ( वि. ) बडा, मोटा, पुष्ट,  
इष्ट, बड़ा, तगड़ा ।

धियाध, धी३ध ( वि. ) चिठई,  
वीरता, बालकबी, रोखी ।  
धिल्लोले ( सं. ) काहकरलेवाला  
मनुष्य, ईर्ष्यालु, कुल्लेवाला ।  
धी ( सं. ) समझ, बुद्धि, मति, ज्ञान ।  
धी६पुं ( कि. ) गर्म होना गरम  
होना ।  
धी७ ( सं. ) अग्नि वा जलद्वारा  
परीक्षा, कठिन परीक्षा ।  
धी८ ( सं. ) बहादुर, डीठ, साहसी ।  
धीडी ( सं. ) बेटी, पुत्री, लड़की,  
तनया । [ ठोकना ।  
धी७पुं ( कि. ) मारना, पीटना,  
धीमाधी७ ( सं. ) देखो धमधम  
धीम२-दीम२ ( सं. ) एकजाति  
विशेष, कहारजाति, मधुआ, म-  
छवाहा, मछली पकड़नेवाला ।  
धीभुं ( वि. ) झुस्त, शिथिल, आलसी,  
कोमल, धीर, मन्द, धैर्यवान ।  
धीमेधीमे ( कि. वि. ) मन्दमन्द,  
आहिस्ता आहिस्ता, शनैः शनैः,  
धीरे धीरे ।  
धी२ ( सं. ) धैर्यान्वित, पंडित, ब-  
लवान्, अचंचल, सुस्थिर, शान्त,  
स्थिरमता, विनीत, शिष्ट, बुद्धिमान ।  
धी२७ ( सं. ) धैर्य, धीरता, स्थि-  
रता, सत्र, सन्तोष, तसल्ली ।

धीरज व्यापरी ( कि. ) धैर्य बंधाना,  
तसली देना, सन्तोष देना ।

धीरज पक्षी-शायी ( कि. )  
सत्र करना, धैर्य धरना, सन्तोष  
रखना, राह देखना, इन्तजार  
करना ।

धीरज-त-वान ( वि. ) सन्तोषी,  
धैर्ययुक्त, स्थिर, धीरता युक्त ।

धीरधार ( वि. ) फायदेसे व्यापार  
सम्बन्धी देनलेन ।

धीरपुं ( कि. ) ऊधार देना, कि-  
राये पर देना, अगाऊ देना, पे-  
शगी देना ।

धीरे ( कि. वि. ) देखो धीमे

धीरे सांसते ( कि. वि. ) शान्तिसे,  
सन्तोषसे, ठंडाईसे नम्रतासे ।

धीरे ( वि. ) धीमा, ठंडा, शांत, सुस्ता

धीरे ( सं. ) पूर्ववत्, आश्रय, स-  
हाय, खंभ, संभालनेवाला ।

धुँअर-वर ( वि. ) देखो धुँअर

धुँध-ओ-वे। ( सं. ) धूम, धुआ,  
धूम, अमिपताका, अमिचिन्ह,  
वाष्पविशेष ।

धुँधु-धुँधुं ( वि. ) धरधरता  
हुवा, कम्पित, हिलता हुवा ।

धुँधरी ( सं. ) कंपकपी, धराँहट,  
धरधरी ।

धुँधुं-धुँधुं ( कि. ) कांपना,  
धराँना, धुँजना, हिलना, धरधराना,  
कंपित होना ।

धुँधरी-री-धुँधरी ( सं. ) कंपकपी,  
धराँहट, धरधरी, कांप, धुँज,  
खौफ, डर ।

धुँधवपुं ( कि. ) कंपाना, धराँना,  
डराना, डर पैदा करना ।

धुँधुं ( कि. ) धुँडना, खोजना,  
तलाश करना, तलाशना । [ हुवा ।

धुँधुं ( वि. ) ऊँधता हुवा, हिलता  
धुँधुं ( कि. ) हिलाना, सिरहिलाना,  
ऊँधना

धुँधुवपुं ( कि. ) हिलाना, सर  
झुकाना, धुनाना ।

धुँधु ( सं. ) धूनी, धुँवायुक्त अग्नि ।

धुँधुधरेपुं ( कि. ) फटकारना,  
भर्त्सना करना, दुतकारना, धुँधना  
करना ।

धुँधुं ( कि. ) धोका देना, छळ  
करना, कपट करना, ठगना ।

धुँधुरे ( सं. ) धोका, छळ, कपट,  
पाखंडी, ठग ।

धुँधुं ( कि. ) धोका खाना, ठगे  
जाना, कपटमे फंसना, छले जाना ।

धुँद ( वि. ) कुहर, अंधेरा, धुँध,  
तम, धुँधकार ।



शुभभाष्यी ( सं. ) नाश, बर्बाद नष्ट, विध्वंस, पराजय, हार, विफल, विवादा ।

शुभभिषे। ( सं. ) वह मनुष्य जो स्वर्णकार की मही की राख और उसकी दूकान आदि के सामने की बूल मही एकत्रित कर उसे धोकर उसमें स्वर्ण चाँदी आदि कनिष्ठ धातु को निकाल लेता है ।

शुभादे। ( सं. ) देखो शुभदे।

शुभभणपुं-शीलपुं ( कि. ) बूलमें मिलजाना, मिहीमें मिलजाना, बिलकुल नष्ट होजाना, ( वि. ) मैला, गन्दा, बूलपुच्छ, गंदला, कचरा कूड़ा ।

शुभ शिखी ( कि. ) उदरपोषण के कार्य से रहित होना, बूल जाना राजगार से छूट जाना, उदर पोषण का आश्रय छूटना ।

शुभभाषी से।पुं भणपुं ( कि. ) "बूल में से सोना मिलना, बिज्जी के भागों का दूटना, आम्बोदय होना ।

शुभभाषी ( कि. वि. ) बिता नहीं, फिकर नहीं, कुछ परवा नहीं, कुछ मुझका नहीं, बूझती ।

शुभ ५। ( विस्म. ) अत्यंत प्रशंसक शब्द, कर्म, श्रेय ।

शुभपर डेकुं ( सं. ) अपमान, लज्जा ।

शुभे। ( सं. ) बंधक, छड़ी, ठग, कपटी, धूर्त, चालाक ।

शु सं )<sup>१</sup> रौद्र, वाम, तपिस, किरण, तड़का, तावड़ा, तावड़का, सुगन्ध काष्ठ विशेष, गुग्गुलु, जलाने की सुगन्धित वस्तु ।

शुभधी ( सं ) एक ग्रंथ जिससे, सूर्य की छाया या चलन द्वारा समय देखा जाता है ।

शुभधरी ( सं. ) सूर्य पश्चिमा के प्रचंड ताप से रक्षा करनेवाला छत्र, छतरा जो धूप से रक्षा करे ।

शुभानी ( सं. ) वह पात्र जिसमें अग्नि रख कर सुगन्धित द्रव्य जलाया जाता है, धूपावा, आरती पात्र ।

शुभदीप ( सं. ) आरती, धूप या दीपक लेकर मूर्तिया देवताके आगे दाहिनी ओरसे बाईं ओर को घुमाना, पूजापाठ, पूजन ।

शुभ ( सं. ) धूम, धुआँ, अग्नि, अभिपत्ताका, अग्निसे निकले परिमाण ( कि. वि. ) क्षीप्रतासे, चतुरतासे, क्षतिपूर्वक, बलसे ।

भूमिष्ठ ( सं. ) बुच्छन्नाप्रसार, पूच्छन्तार, प्रहस्य, विज्ञानुक्त भूमके आकार का तारा, उत्पातका चिन्ह विशेष उत्पातका प्राकृतिक चिन्ह केतुग्रह ।

भूमस ( सं. ) देखो भुभक्ष

भूम ( सं. ) कृष्ण रक्त मिश्रितवर्ण, कृष्ण लोहितवर्ण, खररोम, सहस्र, धुर्वी, धूम, अभिसि निकले परिमाण, अभि चिन्ह ।

भूमधान ( सं. ) तमाकूका धूमपीना, तमाकू बीबी, हुक्का, चिक्कम आदि पीना, धुर्वी पीना ।

भूर्त ( वि. ) बजक, प्रतारक, शठ, खल, चालाक ।

भूक्षे ( सं. ) लोई, ऊर्ज वक्ष विशेष, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा धुरसा धुरसा ।

भूण ( सं. ) रज, कण, रेण, धूल, धूर, धूरि, मिट्टी ।

धैवशश्वी ( सं. ) प्रथम गर्मा की, वह की जो पहिले पहिल गर्मवती हो ।

धैवभुजशती ( सं. ) मिळी हुई भाषा, मिश्रित भाषा या बोली ।

धैवभुजरी ( सं. ) भाषाओं का अनियमित मिश्रण, भाषाओं का ; शैबाद मेल ।

धैवभेदी ( सं. ) सार्वभौमिक, अपमान, कर्षों के आगे अपमान, अत्यंत कबीर ।

धैवभाडे ( सं. ) नीचों के रहने का स्थान, मंगीपुरा, देखो डैवभाडे ।

धैव ( सं. ) छोटा स्वेत कटु का लौकी का वृक्ष, पौधा विशेष ।

धैव्यु ( सं. ) ' नीच, कमीब, निम्न, शूद्र । [ डेव ।

धैडे ( सं. ) महत्तर, मंगी, डोम,

धैव ( सं. ) प्रथम गर्मा की, वह की जो प्रथम ही गर्म धारण कर ।

धैव-नु ( सं. ) गाय, गक, नौ ।

धैवुके ( सं. ) सबत्सा, गौ, नव प्रसूता, गक, दुधार गाय ।

धैव ( सं. ) ध्यानार्ह, ध्यान, योग्य, स्मरणीय, ताकने योग्य ।

धैव-ता ( सं. ) धीरज धीरता, स्थिरता, अचाबल्य, सम्रा, सहिष्णुता, सज, शांति, तसल्ली ।

धैववंत-धान ( वि. ) दह, धीर, शांत, धैर्यशाली, स्थिरता विशिष्ट धीरता पूर्ण ।

धैडे ( सं. ) पाहन. पाछाण, पत्थर ।

धैसे ( सं. ) कोष एक प्रकार का बल विशेष, दुस्सा ४ । ५

धै ( सं. ) अशक्न साक, पत्तार  
पानी से शुद्ध करने की क्रिया ।

धैकु ( सं. ) रई की गाँठ,  
कपास की गठरी या मट्ठा ।

धैली ( सं. ) छुरे का म्यान ।

धैलानध ( कि. वि. ) बड़ाका  
बन्द, धूमधामसे, बमकदमकसे,  
भक्कीलेपन से, कामयाबी से ।

धैली-डो ( सं. ) मोटा बंडा,  
लट्ट, लठी, बदनसीबीकी चोट,  
धक्का, टक्कर, झतरा, भय, डर,  
पछतावा, प्रायश्चित्त, जोखिम,  
देव गति ।

धैले ( सं. ) थोका, भय, डर,  
रंज, अफसोस, शोक, दुःख, खेद ।

धैलु-वधु ( सं. ) माँड, उबले  
हुए चावलों का धोया हुआ जल,  
चाँवलों का पानी ।

धैत ( सं. ) जलप्रपात, झरना,  
पानी का पतन, आखात ।

धैतश ( सं. ) धोती, लज्जानिवारक  
वस्त्र, धोत वस्त्र, कमर में पहिने  
का वस्त्र ।

धैताध ( सं. ) खले हाथों का,  
खबीला, उदार, फैला, मुक्त  
हस्त ।

धैतानधकु ( सं. ) उदारता,  
उकावत, विर बेकत, खबीलपन  
मुक्त हस्तता ।

धैतिधु ( सं. ) देखो धैतश ।

धैध-वे ( सं. ) देखो धैत ।

धैधै ( सं. ) बल प्रपात की  
टक्कर, पानी के गिरने की टक्कर,  
झरने के झरने का शब्द ।

धैली ( सं. ) ईंटें, इटका ।

धैली ( सं. ) कपड़े धोने वाला,  
जाति विशेष, रजक ।

धैली ( सं. ) बल धोने का  
स्थान, धोबीघाट, घाट ।

धैले ( सं. ) मूल, बुद्धिहीन,  
गंवार ।

धैली ( सं. ) उस्तरे का या  
छुरे का धर या म्यान ।

धैलधु ( सं. ) धोबिन, धोबी की  
झी, कपड़े धोनेवाली, रजकी ।

धैली ( सं. ) देखो धैली

धैलीधारीले-वे ( सं. ) खंजन  
पक्षी, खंजरिच, पक्षी विशेष ।

धैलधु ( वि. ) शुद्ध, पवित्र,  
धुल्ल हुआ । [ हुआ ।

धैलु ( कि. ) धोया हुआ, धुल्ल ।



धैर्य ( सं. ) परम्परागत, कमा-  
नतरीति, जीविका आभन, सहारा  
हुकाव, हलाव, अभिप्राय, प्रवृत्ति  
तात्पर्य ।

धैरिधर ( सं. ) देवो धरधर ।

धैरी ( वि. ) बड़ा, मुख्य, खास  
आप, सामान्य ।

धैरीये ( सं. ) मोरी, नाकी,  
जान में का रास्ता, कुतुब ।

धैरीनस-२२ ( सं. ) मुख्य नस,  
रक्तवाहिनी नाड़ी, जो सारे शरीर  
में रक्त फैलाती है वह नाड़ी ।

धैरी १२तो-२१६। ( सं. ) ऊँचा  
मार्ग, मुख्य मार्ग, सदरद्वार, सीधी  
यात्रा, बड़ी सड़क ।

धैरी ( सं. ) सीनेतक ऊँची दीवार,  
मोर्चे की दीवार ।

धैरिधर ( सं. ) बौल धप्पा,  
धप्पड़, और धुंसा, ठोकपीट ।

धैरिधर ( सं. ) देवो धैरिधर

धैरिधर ( वि. ) धुलाना, साफ  
कराना, धुलवाना, धुद कराना ।

धैरिधर धुं-धुं ( वि. ) धुल  
जाना, पानी से पवित्र किया  
जाना, साफ हो जाना ।

धैरिधर, धैरिधर, धैरिधर ( सं. )  
होने की मजूरी, धुलवाई ।

धैरिधर ( वि. ) धोना, धुने धोना,  
पानी से साफ करना, धुद करना  
साफ करना, उबला करना ।

धैरिधर ( सं. ) एक प्रकार का रीत ।

धैरिधर ( वि. ) पीतना, गुणकारी  
होना ।

धैरिधर ( सं. ) सफेदी, बबकता ।

धैरिधर ५६० ( वि. ) कुछ कुछ  
स्वेत, थोड़ा सफेद, कुछ सफेदी,  
लिये हुए ।

धैरिधर ( सं. ) धौला, धवल स्वेत,  
सफेद, उज्जल, शुद्ध, शुभ्र ।

धैरिधर ( वि. वि. ) दिनदहाड़े,  
सुले मैदान, सरेबजार ।

धैरिधर ( वि. ) सफेदी किया हुआ,  
पीता हुआ । [ रक्त सोखनेवाला ।

धैरिधर ( वि. ) ध्यान कर्ता, विचार-

धैरिधर ( सं. ) सोच, विचार, चिन्ता,  
स्मरण, अनुध्यान, स्मृतवस्तु का  
पुनः स्मरण, लौलगाणा, खयाल,  
उत्कंठापूर्वक स्मरण ।

धैरिधर-नी ( वि. ) ध्यानकर्ता,  
ध्यान करनेवाला, ध्यान लगावने-  
वाला, धीरी, धीरी ।

धैरिधर ( सं. ) गुप्त ध्यान, धुपे विचार ।

५५ (वि.) ध्यानाई, ध्यान योग्य,  
स्मरणीय ।

धु०पु० ( कि. ) देखो धु०पु०

धु०पु० ( कि. ) देखो धु०पु०

धु०५६ ( सं. ) ४०५१री देखो

धु०५६ ( सं. ) राग विशेष,

धु० (वि.) निश्चित, स्थिर, अवल,

दृढ, अटल, नित्य ( सं. ) तारा  
विशेष, उत्तानपाद का पुत्र, पृथ्वी  
के ध्रुव, उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी  
ध्रुव । दक्षिणीय और उत्तरीय  
केन्द्रों के ऊपर का भाग ।

धु०५६ ( सं. ) अटलपद, स्थिरदशा,  
गान में निश्चित स्थान, ध्रुपद ।

धु०५६ ( सं. ) पृथ्वी के अंतिम  
भाग का घेरा, ध्रुववृत्त ।

धु०५६-५६ ( सं. ) नाश, क्षय, हानि,  
क्षति, बरबादी, नुकसान, नष्ट ।

धु०५६ ( सं. ) ध्वजा, केतु, पताका,  
झण्डा, फरहरा, निशान, झण्डी ।

धु०५६ ( सं. ) शब्द, अवाज, सुर,  
स्वर, बोल, नाद, रव, गाना ।

न

ननुवरासी वर्षमासा का ११ वां  
अक्षर, तबर्गका पंचम अक्षर,  
वसिष्ठा ज्योतिष ।

१ ( कि. वि. ) निषेधार्थक अव्यय,  
नहीं, अभाव, मत, विन यनि,  
रोक मना, निषेधा

१३६ ( वि. ) नकटा, नककटा,  
नासारहित, नासिकाहीन, निर्लेज,  
बेशरम, बेनाक का ।

१३२।५५ ॥ १३२।५५ ( सं. ) हुंजी  
के न सिकरने पर उसकी क्षाते  
पूर्ति हुंजी लेनेवालेको उसके न  
सिकरने पर क्षतिपूर्त्यर्थ दिया  
हुवा बद्ध ।

१३२।५५ ( वि. ) विना कर का,  
कररहित, निःशुल्क, बिनाफीस ।

१३३ ( वि. ) शुद्ध, पवित्र, अमि-  
श्रित, सत्व, खरा, सखा ।

१३४ ( सं. ) अनुकरण, प्रतिरूप,  
हस्तलेख, उतार, मेक, प्रतिलिपि,  
अनुरूप, किस्सा, कहानी ।

१३४ ३२५ ( कि. ) नकल करना,  
अनुकरण करना, मिलाता हुआ  
काम करना, हुबहु काम करना ।

१३४।५१-५१-५१-५१ ( सं. )  
नकल करनेवाला, नकल उतारने  
वाला, नकल, नकली, भांष बहु-  
रूप धारण करनेवाला, बहुरूपी,  
स्वामी, नाटकी ।

१३४ ( सं. ) नकली, सुदार्ढ्य  
काम, जेवर, आभूषण अलंकार ।

**मक्षीभर ( सं. ) नक्काश, मोदने-  
वाला, नक्ष करनेवाला, मूर्तिकार,  
लकड़ी वा पत्थर पर हस्तकौ-  
शल का काम करनेवाला ।**

नक्षत्राः ( सं. ) अलङ्कृत, बुद्धा  
हुवा, चित्रित, तरासा हुवा, नक्षत्र  
क्रिया हुवा, सुसज्जित ।

नक्षत्रे। ( सं. ) डौल, डान्चा, चित्र,  
नकशा, चित्रपट, मसौदा, रूप-  
रेखा, खसरा ।

नक्षत्रं ( वि. ) निकाम, व्यर्थ,  
फुजूल, बेफायदा, निरर्थक बूझी,  
बेकाम ।

नकार ( सं. ) नहीं, अस्वीकार,  
प्रतिषेध, निषेध, नाही, इन्कार ।

नकारधुं ( कि. ) नहीं करना,  
इन्कार करना, अस्वीकार करना,  
नामंजूर करना, निषेध करना ।

नक्षत्रं ( वि. ) निकम्मा, मैत्र्य,  
गन्धा, अपवित्र, दुष्ट, नष्टवट ।

नक़्शे-सो ( सं. ) देखो नक़्शे

नक्षत्र ( सं. ) प्रवेशक, मुनिकात  
करानेवाला, चोकरार, आगे चलने  
वाला ।

५३२ ( सं. ) जाइन, चतर, कवीर,  
रेवा, जेन, रंगीट, हल ।

१५. (कं.) कन्दा, दुकन्दा, कुन्दा,  
नकुन्दा, नकुन्दा ।

॥१॥ (सं.) देवता, न्याता, नेता,  
जीव विशेष, जीवा पाण्डव ।

१३३३-३३। ( वि. ) कठिन, कठोर,  
कड़ा, ( मत ) ।

१५५२ ( वि. ) भारी, कठिन, गह,  
ठोस, सख्त, बनाव, संक्षेप, बखनबाण

नमः ( सं. ) देखो नमः

नक्षत्री (वि.) ठीक, उचित, निश्चित,  
मुनासिब, परिमित, अस्थायी,  
स्थिर, पक्का ।

नवीन अर्थ (वि.) निश्चित करना,  
ठीक करना, पूर्ण करना, स्थिर  
करना, पक्का करना ।

१४ ( सं. ) मगर, बड़ियाल, बक,  
बल जन्तु, विशेष, मच्छ, प्राह,  
कुंभीर, नाका ।

नक्षत्र (सं.) तारा, तारक, चितार, २७ नक्षत्र, नक्षत, तारामण्डल, तारामंडल ।

नभ ( सं. ) नाखन, बखन, नरखद,  
अंगुलियों का अग्र भाग कठि  
जर्म विशेष ।

નખ બેઠક ( િ. ) હોય, તુચ્છ,  
વિશકુલ હોય, નવુક, ચોદાસા,  
બાલક ।

नभो ( सं. ) सारपावका टेक, चान्दा पिरोजाका टेक, एक प्रकारका टेक ।

नभो ( सं. ) नाखनों का बांध ।

नभो ( सं. ) अंगुली की जड़ में फटा हुआ चर्म ।

नभो ( वि. ) नाखूनयुक्त, पंजों-दार, पंजेवाला ।

नभो ( सं. ) चीर, काद, दुख, तकलीफ, कष्ट ।

नभो ( वि. ) नाखनों सहित ।

नभो ( सं. ) चोंचला, हावभाव बाज, मदकचटक ।

नभो ( वि. ) नखरेवाला, नाज़रीन, हावभावपूर्ण, गर्वित ।

नभो ( वि. ) नखरा करने वाला, हावभाव प्रकट करनेवाला ।

नभो ( सं. ) चोंचला, हावभाव, नाज़, नखरा ।

नभो ( सं. ) मनमोहनी, चोंचला करनेवाली, नखरेदार ।

नभो ( सं. ) देखो नभो

नभो ( सं. ) पूर्ववत् ।

नभो ( सं. ) एक प्रकारका अक-कार जो कपालपर पहिना जाता है

नभो ( कि. वि. ) समस्त, एहीसे बोली, अविशेष अन्ततक, नखसे पैरतक सम्पूर्ण शरीर ।

नभो ( वि. ) बल विहित, नखेल, नखधारी, नखवाला ।

नभो ( सं. ) देखो नभो

नभो ( सं. ) बिलकुल बर्बाद, बिलकुल नष्ट, सर्व नाश ।

नभो ( वि. ) नाशक, नष्ट-कारक, नष्टकारक, बर्बादी ।

नभो ( सं. ) नाखून या पंजों-द्वारा चीरने या खरोंचने ।

नभो ( सं. ) पहाड़, पर्वत, जेवर, भूषण, आभूषण, हस्त, पैर ।

नभो-३ ( वि. ) अवन्यवादी, कृतघ्न, जुगरा, निशुरा, बे गुरुका ।

नभो ( वि. ) नकद, रोकद, रुपया ।

नभो ( सं. ) सोना, चा चांदी, रुपया, पैसा, बहुमूल्य वस्तु, मूल्य-वान वस्तु ।

नभो ( सं. ) पुर, ग्राम, बड़ा नगर, गांव, कस्बा, सहर, बस्ती ।

नभो ( सं. ) नगरका मुखिया, नगरमें सबसे अधिक इज्जतमान ।

नभो ( सं. ) छोटा गांव, छोटा नगर, छोटा कस्बा, छोटा सहर, छोटी बस्ती ।

नभो ( सं. ) वह स्थान जहां बीबत बचरीहों या रबीजासीहों, डोक रखेकी बगल, नगरखाना ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान् ब्रह्म  
वाक्य, नभ्यान् ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म,  
ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ।

नभ्यान् ( सं. ) ब्रह्म, नभ्यान्,  
नभ्यान्, नभ्यान् ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान् पत्न्य, ब्रह्म,  
नभ्यान्ब्रह्म, देखने में ब्रह्मसूत,  
साध, स्वच्छ, दर्शनीय नभ्यान् ।

नभ्यान्-२ ( सं. ) एक प्रकारका  
पौधा, पौधा विशेष ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्, ब्रह्मब्रह्म, दिग्ब्रह्म ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्, बेपरवाह,  
निश्चित, विचारहीन ।

नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान्, सहाय  
लेना, पढ़ना, पढ़ जाना, फेंके जाना ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान् करना,  
उल्टी करना, बमन करना, साह-  
सहीन होना ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्, नभ्यान्, नभ्यान्  
कुल का गर्भ, एक वस्तु, एक नभ्यान् ।

नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान् नभ्यान् करना ।

नभ्यान् ( वि. ) नभ्यान्, बेपरवाह,  
विचारहीन, निश्चित, नभ्यान् ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्, नभ्यान्,  
निश्चितता, नभ्यान् ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्

नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान्, नभ्यान्,  
नभ्यान् के नभ्यान् ।

नभ्यान् ( कि. वि. ) नभ्यान्, नभ्यान्,  
नभ्यान्, नभ्यान्, नभ्यान् ।

नभ्यान् ( सं. ) नभ्यान्, नभ्यान्,  
नभ्यान्, नभ्यान्, नभ्यान्, नभ्यान्,  
नभ्यान्, नभ्यान्, नभ्यान् ।

नभ्यान् उतारनी- नभ्यान् ( कि. )  
टोने टूटके से लगी हुई नभ्यान् को  
उतारना, नभ्यान् नभ्यान् को नभ्यान् के  
उतारना, नभ्यान् उतारना ।

नभ्यान् उतारनी नभ्यान् ( कि. )  
नभ्यान् नभ्यान्, नभ्यान् नभ्यान्  
लेना, नभ्यान् नभ्यान् ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान्, नभ्यान्,  
नभ्यान्, नभ्यान् ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान् करना,  
नभ्यान् करना, नभ्यान्, नभ्यान् में उप-  
स्थित करना, नभ्यान्, नभ्यान् पूर्वक  
नभ्यान् वस्तु को नभ्यान् ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान् नभ्यान्  
देना, नभ्यान्, नभ्यान् नभ्यान् ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान् नभ्यान्,  
नभ्यान् नभ्यान् नभ्यान् ।

नभ्यान् नभ्यान् ( कि. ) नभ्यान्  
नभ्यान्, नभ्यान् नभ्यान्, नभ्यान् नभ्यान्,  
नभ्यान् नभ्यान् ।

१०७१ २१७वीं ( कि. ) निगाह  
 रखना, कवरवारी रखना, चौकसी  
 रखना, दृष्टि रखना, आँख रखना।  
 १०७२ ११८वीं ( कि. ) दृष्टि फटना,  
 निगाह फटना, नजर फटना,  
 आँखें फटना।  
 १०७३ ११९वीं ( कि. ) कुदृष्टि द्वारा  
 हानि होना, नजर लगना।  
 १०७४ १२० ( वि. ) पहिरे में कैद,  
 कड़े पहिरे में, रखगली में, साधारण  
 कैद, साधारण कारावास।  
 १०७५ १२१ ( सं. ) भूल, गलती, चूक  
 चौकसी, निगरानी।  
 १०७६ १२२ ( सं. ) आँखें बचा कर  
 काम करनेवाला, आँखें चुराने-  
 वाला, दृष्टि बचानेवाला, दृष्टिचोर।  
 १०७७ १२३ ( सं. ) आँखों का खेल,  
 दृष्टि का खेल, नजरबन्दी का खेल,  
 आँखों को धोका देने का खेल।  
 १०७८ १२४ ( वि. ) दुष्ट-  
 दृष्टिवाला, जिसकी बुरी निगाह  
 हो, दुष्ट।  
 १०७९ १२५ ( सं. ) जंत्री मंत्री, आद-  
 टोय जाननेवाला, कवरार।  
 १०८० १२६ ( सं. ) आदमी, आँखों  
 को धोका देकर किया हुआ काम,  
 झूठवाक।

१०८१ १२७ ( सं. ) चौकीय मनुष्य,  
 तेज दृष्टि का आदमी।  
 १०८२ १२८ ( सं. ) देखो १०८२२५३  
 १०८३ १२९ ( सं. ) नवराना, भेट,  
 उपहार, पुरस्कार, बलि।  
 १०८४ १३०-१३१ ( कि. वि. )  
 मुलाकात, भेट, सलाह, पारस्परिक  
 दृष्टि। [ नजला रोग विशेष।  
 १०८५ १३२ ( सं. ) गठिया, सर्दी, छेम्मा,  
 १०८६ ( कि. वि. ) देखो १०८६३  
 १०८७ १३३ ( वि. ) निकम्मा, गुणहीन,  
 चुचक, छोट्टा, हलका, सम्बहीन।  
 १०८८ ( वि. ) मैला, गंदा, बद-  
 मिजाज, खराब, गंदला, भ्रष्ट,  
 अपवित्र।  
 १०८९ १३४ ( सं. ) ज्योतिष, फलित  
 ज्योतिष, ताराओंकी स्थिति से  
 मनुष्यों का कर्मफल बताने की विद्या।  
 १०९० १३५ ( सं. ) ज्योतिषी, फलित  
 ज्योतिषी, भविष्यवाक्ता, जगोल्ल।  
 ११० ( सं. ) नर्तकोंकी एक जाति,  
 नर्तक, नचैबा, भाँच, कौतुकी,  
 नाचावी, किन्नरी।  
 १११ १३६ ( वि. ) दुष्ट, उर्दू, बंजर,  
 डुरा, पारी, बदमाश, कुप्पा, झूठ,  
 दयाबाज, छद्मी, भवारा।

५६५ ( सं. ) नदी, नदी की आवां,  
नदी की, नाचनेवाली ।

५६५२ ( सं. ) नदी में भेड़, प्रभु  
धी कृष्णचन्द्र, सिरा या चोटी ।

५६५४ ( सं. ) नदी का काम,  
रस्सों के ऊपर नाच, नृत्य, विशेष ।

५६५६ ( सं. ) नाचनेवाला, नद,  
रस्सोंपर नाचनेवाला ।

५६५७ ( सं. ) नदी की, ली, नादकों  
में सूत्रधारकी ली, खिलाड़िन ।

५६५८ ( सं. ) महादेव, शिव ।

५६५९ ( वि. ) बुद्ध, बुद्ध, बदमाश,  
निकम्मा, निठाला ।

५६६० ( सं. ) निर्लज्ज, बेधर्म,  
लज्जारहित, बेपरवाह. गुस्ताख,  
ठीठ । [ बाधा, आड ।

५६६१ ( सं. ) रोकटोक, अटकवा

५६६२ ( सं. ) नीच वर्ण का मनुष्य,  
नीच वर्ण, कमजात आदमी ।

५६६३ ( वि. ) रोकना, अटकना,  
ठहराना, अडाना, बाधा डालना ।

५६६४ ( सं. ) देखो ५६६

५६६५ ( सं. ) पति की बहिनी,  
पति की बहिन, ननद ।

५६६६ ( सं. ) पति की बहिन का  
पति, ननद का पति ।

५६६७ ( सं. ) शिरोविन्दु  
का अंतर, कमब्यान्तर, ऊर्ध्व  
दिशा का फासला, कुछ हुआ  
हिस्सा, कुछ हुआ भाग ।

५६६८ ( सं. ) परिचाम, कम,  
नतीजा, फैसला, अंतर ।

५६६९ ( सं. ) नाक में पहिचने की  
वाली, नाक का आभूषण विशेष ।

५६७० ( वि. वि. ) न, नहीं, मत,  
ना, ऊर्ध्व, नहीं है ।

५६७१ ( सं. ) नदी नदी ।

५६७२ ( सं. ) उच्छ्रिता, बेबाक,  
रसीख, भरपाई, छूट, अनधि-  
कार, बे हक्क ।

५६७३ ( सं. ) सरिता पर्वतों से निकल  
हुवा वह जलस्रोत जो समुद्र में  
जा कर मिले ।

५६७४ ( वि. ) स्वामीरहित, बे  
मालिक का जिस का कोई मालिक  
न हो । [ गुमनाम, नामहीन ।

५६७५ ( वि. ) बे नाम, नामरहित,  
५६७६ ( सं. ) कृष्ण, धीकृष्णचन्द्र के  
समान गुणी या चतुर ।

५६७७ ( सं. ) नंद की बालाकियां,  
नन्द के लाल कपड़ ।

५६७८ ( सं. ) पुत्र, तन्म, पैदा,  
सन्तान, आनन्ददायक, प्रवासक,  
इन्द्र का बगीचा, स्वर्गीय उपवन ।

नौकरी ( सं. ) पुत्री, बेटी, तनया,  
कन्या, छोरी ।

नौकरी ( कि. ) तोड़ना, खंडन  
करना, टुकड़े टुकड़े करना, चीरना ।

नौकरी ( सं. ) पुत्री, बेटी, कन्या  
पार्वती का नाम महादेवजीकी स्त्री ।  
नौकरी-बेटी ( सं. ) शिव का द्वार-  
पाल, शिव का अनुचर, शिव-  
दाहन, संकर का बैल ।

नौकरी ( सं. ) अक्षर " न ", तर्ज  
का पंचमाक्षर, निषेधार्थक शब्द ।

नौकरी ( सं. ) निकंज, बेधर्म,  
बेहवा, झूठे मुँह, लज्जारहित ।

नौकरी ( सं. ) स्त्री, छिन्न, नामर्द,  
पुंसत्वहीन, पुरुषत्वहीन ।

नौकरी ( सं. ) व्याकरणशास्त्र  
में लिंग विशेष, तृतीय लिंग ।

नौकरी ( सं. ) स्त्रीत्व, नामर्दी,  
नपुंसकता, निर्बलता ।

नौकरी ( वि. ) देखो नौकरी

नौकरी ( सं. ) डिग्री, वृद्धता,  
पेची, गुस्ताबी ।

नौकरी ( सं. ) एक प्रकार का तेल,  
कनिष्ठ पदार्थ जैसे कोयला आदि  
वस्तुओं का तेल ।

नौकरी ( सं. ) कमीना, नीच, नीकर  
छेपक, सूख ।

नौकरी ( सं. ) दूषा, कुसुम्भ,  
खिनखिनी, चिख । [ करी, कुल्लुमी

नौकरी ( सं. ) सेवा, सिद्धमत, नौ-  
नौकरी ( सं. ) पशुजीवन ।

नौकरी ( सं. ) विषयी, ऐयाश,  
कामी, इन्द्रियों के वशीभूत, इन्द्रि-  
यप्रिय । [ ऐयाशी, आरामी ।

नौकरी ( वि. ) आनन्दो, विलासी,  
नौकरी-नौकरी ( सं. ) भोगविलास,  
ऐसद्वारत, आनन्दभोग ।

नौकरी ( वि. ) शारिरिक, वैदिक, विषयी

नौकरी ( वि. ) कामप्रद,  
फायदेमन्द, कामदायक, हितकारी ।

नौकरी ( सं. ) एक प्रकार का बोल,  
बाद, विशेष, नफोरी । [ मुनाफा

नौकरी ( सं. ) लाभ फायदा, फल,

नौकरी ( सं. ) हानि लाभ, फायदा  
और नुकसान ।

नौकरी ( सं. ) निकंज, बेधर्म,  
बेहवा, लज्जारहित, मुँहफद् ।

नौकरी ( सं. ) देखो नौकरी

नौकरी ( सं. ) नाड़ी, नब्ब, नस ।

नौकरी ( सं. ) निर्बलता, कमजोरी,  
अशक्तता, बलहीनता, दुर्बलता ।

नौकरी ( वि. ) कमजोर, अशक्त,  
दुर्बल, अल्प, निर्बल शक्तिहीन ।

नौकरी ( सं. ) आकाश, यगन, आसमान,  
बादल, मेघ, वन ।



नभः ( कि. ) निभना, चक्का,  
विर्भर रहना, चक्का, अरोसे चक्का।

नभः ( सं. ) निर्वाह, गुजारा, गुजरा।

नभः ( कि. ) चक्का, चक्का,  
निवाहना, गुजारा करना, निर्वाह  
करना।

नभः ( सं. ) नौन, क्षार, लवण।

नभः ( वि. ) रूपवान, सुन्दर,  
खूबसूरत।

नभः ( सं. ) मुका, नमित, नम।

नभः ( सं. ) मोटा ऊन का खट्ट  
बक, ऊनी कपड़ा, नमदा।

नभः ( सं. ) अवोगमन, प्रणाम,  
विनीत भाव, नत, नमस्कार।

नभः ( सं. ) विनय, विनीतत्व,  
मृदुता, नम्रता, आशिषी।

नभः ( वि. ) नम्रतायुक्त,  
विनीत, नम्र, विनयी, कृतप्रणाम।

नभः ( कि. ) प्रणाम करना,  
नमन करना, सिर झुकाना, नम-  
स्कार करना, मान करना, मुकना।

नभः ( वि. ) लचीला, नर्य,  
तरवियत, पिजीर, मुकनेवाला।

नभः ( सं. ) नर्यी, लचीला-  
पन, विनीतत्व, नम्रता, मृदुता।

नभः ( कि. ) झुकना, मुदना,  
नम्र, टेढ़ा होना, नीचा होना।

नभः ( सं. ) प्रणाम, अभिवादन,  
अभिर्नमन, सम्मान प्रदर्शन।

नभः ( सं. ) मुसलमानोंकी ईश-  
रपूजा, इस्लाम धर्मकी धार्मिक  
उपासना, ईश्वर प्रार्थना।

नभः ( सं. ) ईश्वरभक्त, ईश्वर  
भक्तकी नमाज पढ़नेवाला, उपासक,  
उपासना करनेवाला ( यवन )

नभः ( वि. ) नम्र, सीधा, मरीच,  
शिष्ट, विनीत।

नभः ( वि. ) बे मा का मातार-  
हित, जिसकी मा न हो, मातृहीन।

नभः ( सं. ) एक प्रकारका जल,  
जो स्वयं बिना बोवे उमता है।

नभः ( कि. ) झुकना, नमाना,  
लचाना, मोड़ना।

नभः ( सं. ) आदर्श, नमूना, छाया,  
प्रतिरूप, बानगी, चक्का।

नभः ( सं. ) भोजन बनानेका घर,  
बाबर्चीकाना, पाकशाला।

नभः ( वि. ) निर्दय, बेरहम, कृपा-  
हीन, दयारहित, कठोर हृदय।

नभः ( सं. ) एक प्रकारका  
नमस्कार का पर्यायवाची शब्द,  
प्रणामयुक्त शब्द।

नभः ( सं. ) पूर्ववत्

नभः ( सं. ) नम्र, संभवा, शांत

५३५ ( वि. ) विनीत, विनयी, मिक-  
नसाव, कृतप्रणाम, नरम, सीधा,  
मुक्तबन्ध ।

५३६ ( सं. ) विनय, विनीतत्व,  
मृदुता नरमी, सादगी, मुक्तबन्धी,  
मुशीलता ।

५३७ ( क्रि. वि. ) नरमी से  
विनयपूर्वक, मृदुतायुक्त, आजिजीसे ।

५३८ ( सं. ) नयनी, नाककी वाली,  
औरतों के नाक में पहिनेका  
आभूषण ।

५३९ ( सं. ) आक, नेत्र, चक्षु,  
दृष्टि, लोचन, नैन, नजर ।

५४० ( सं. ) मानव, मनुष्य, पुरुष,  
मादुष, आदमी, इन्सान ।

५४१ ( सं. ) कष्टजनक स्थान, पाप  
भोगस्थान, पापात्माओं के कष्ट  
भोगनेका पुराण कथित स्थान  
विशेष अर्थात् रौरव, कुम्भीपाक  
प्रभृति २१ नरक, दोषक, यमालय,  
नरक जहन्नम, गू, गोबर मल,  
विष्ठा, मैला ।

५४२ ( सं. ) पाप भोगनेका स्थान,  
यातनास्थान जोकि बन्दिकुण्ड, तप्त  
कुंड, शारकुंड, आदि पुराणोप-  
बर्णित ८१ हैं, कष्टदायक कुंड,  
वरक से के गड़े ।

५४३ ( सं. ) गंदी जगह,  
मैली बद्बूहार जगह, अष्ट स्थान,  
गू गोबर कालने का स्थान ।

५४४ ( वि. ) धिक्कार के  
योग्य, निन्दापात्र, मैले का बरतना ।

५४५ ( वि. ) कष्ट में रहना  
दुःखी रहना, गंदी जगह में रहना  
यमालय का वास, नरक वास ।

५४६ ( सं. ) ठीक कीमत, बाजार  
भाव, निर्धन, निरक्ष, दर ।

५४७ ( सं. ) एक प्रकार का डोल  
वाद्य विशेष ।

५४८ ( सं. ) मनुष्यजाति,  
मानवजाति, पुत्रिण ।

५४९ ( सं. ) कंठ, गला, हलक,  
नरेटी, टेढ़वा, प्राणनाडी ।

५५० ( सं. ) बुरापन, खराबी,  
दुष्टता, असत, बुराई ।

५५१ ( वि. ) बुरा, अनुचित,  
खराब, गलत, अशुद्ध, बेठीक ।

५५२ ( वि. ) बुरा, खराब, अशुद्ध ।

५५३ ( वि. ) अविभित, स्वच्छ,  
चोखा, शुद्ध, पवित्र, सब, पूरा,  
बिलकुल, अवश्य जरूर, नितान्त,  
स्वेच्छापूर्वक ।

५५४—५५५ ( सं. ) सत्व, मूल,  
सार, तत्व, अस्ति, सारपर्याय ।

नरदेव (सं.) राजा, भूपति, नरेश,  
कायकाह, नृप, भूपति, ब्राह्मण,  
विप्र ।

नरदेह (सं.) मानव शरीर मनुष्य  
शरीर, मानविक देह ।

नरनार (सं.) स्त्री पुरुष, पतिपत्नि,  
औरत, मर्द, नरनारी । [नरदेव ।

नरपत (सं.) शासक, देखो

नरपुं (वि.) पतला, दुबला,  
शीण, निर्बल, कम, सूखा, बारीक ।

नरभ (वि.) मुल्यवम, बर्मे, चीमा  
शान्त, सादा, सीधा, कोमल,  
पतला, रसदार, चिकना, गीला,  
ढीला ।

नरभ ६२पुं (क्रि.) नरम करना  
मुल्यवम बनाना, गीला करना,  
कोमल करना ।

नरभभरभ (वि.) उग्रधात, तेज  
भेद, शीत उष्ण, ठंडा गर्म,  
कोमल कठोर ।

नरभ ५६पुं (क्रि.) नरम होना,  
नम्र होना, शान्त होना, मुल्यवम  
होना ।

नरभडा (सं.) रेवानदी, बर्मदा  
नदी, मध्य भारत की नदी  
विशेष ।

नरभडा-३६ (सं.) नमता, क्षांति,  
मुकाबली, काबली, विचार,  
सुशीलता ।

नरभाडा (सं.) स्त्रीपुरुष, पति  
पत्नी, नर नारी, औरत मर्द,  
योग दुर्गार ।

नरपुं (वि.) तन्दुस्त, मला,  
बेगा, निरोग, मजबूत, मोटा,  
ताजा, हठ, पुष्ट, बलवान,  
पोदा, बली ।

नरस-पुं (वि.) बुरा, दुष्ट,  
खराब, पापी, हानिकर ।

नरसाध (सं.) बुराई, दुष्टता,  
पाप, खराबी, हानि, नुकसान ।

नरसिंह (सं.) विष्णु भगवान  
का चौथा अवतार, नरहरि,  
नरकेशरि ।

नरकेशु (सं.) मृगा, हरिण, मृग,  
नरकरी (सं.) देखो नरसिंह ।

नरसाध (सं.) तंदुस्ती, स्वस्थता,  
नीरोगता, अरुणता । [देखी ।

नरसाध (सं.) बोझ उठाने की

नरसाध-देखी (सं.) नाचल  
काटने का औजार, नहरनी,  
नखरगजनी, नुबसा, नख, नख  
काटनेका शस्त्र विशेष ।

नवम ( सं. ) नवम, नौच, नवी,  
सुसिन्धरी, नवसत्कर्मा, दुष्ट ।

नवमिष ( सं. ) नरमिष, राजा,  
शासक, ह्यपति, भूपति, भूपाळ ।

नवत ( सं. ) मृत्यु, मौत, काल,  
देहान्त, जीवान्त ।

नरि ( सं. ) जूतों के छिमे बकरो  
का चर्म, अजा चर्म, नरी ।

नई-धुं ( वि. ) शुद्ध, पवित्र, अमि-  
श्रित, बेमेल, साफ, पाक ।

नईश ( वि. ) निजर्जन, शून्य,  
उजड़ाहुवा, सुनसान ।

नईर-रेख ( सं. ) देखो नरमिष ।

नईवा कुनईवा ( सं. ) हाथी हो  
या मनुष्य ।

नईर-नईर ( सं. ) पारसियों  
का सौहार्द दिवस ।

नईर ( सं. ) नचनिया नाचने  
वाला, नट, नचैया, जोनाचे ।

नईरी ( सं. ) बेइया, रण्डी,  
नाचनेवाली, नृत्य करनेवाली स्त्री ।

नईर ( सं. ) नाच, नृत्य, अंग अंगी ।

नईर ( सं. ) पद्म, कमल, सरोज,  
अम्बुज, पंकज ।

नईरी ( सं. ) कमल का वृक्ष,  
पद्मलता, कमलिनी कुमुदिनी ।

नव ( वि. ) नौ, ९, संख्या विशेष,  
नूतन, नया, ताजा, अभिनव ।

नव छत्रि ( सं. ) शरीर के नौ  
हस्तर, नौ हस्त्रियां, ९ कान, ९ नेत्र  
१ मुख २ नासिका, १ स्निग्ध  
१ गुदा । [ ९ वंश ।

नवकुल ( सं. ) नव यौत्र, नौ कुल,

नवभूत ( सं. ) पृथ्वी के त्र्यम्ब,  
भरत अग्नि नौ वाण, समस्त  
पृथ्वी, इन्द्रावृत्ति, रम्यक, क्षिरम्भ  
कुरु, हरिभारत, केतुमाल, भद्राक्ष,  
और किंपुरुष ये नौ खंड हैं ।

नवभूत ( वि. ) नौ गुना १×९

नौवार, नौलड़ा, नौबडी या लहका

नवभूत ( सं. ) नौ ग्रह, सूर्य, चन्द्र,  
मंगल, बुध, देवगुरु, वैशाखाचार्य,  
शनि, केतु और राहु ।

नवभूत ( सं. ) सेर का आठवां  
भाग,  $\frac{2}{3}$  सेर, आधपाव, दो  
छटांक ।

नवभूत ( सं. )  $\frac{2}{3}$  सेर का वजन,  
अधपाई, आध पाव का बाट ।

नवभूत ( सं. ) ९ अंक, नौका अंक ।

नवभूत-पुं ( वि. ) नया, अनीका,  
हालका ।

नवभूत ( वि. ) पूर्ववत् ।

नवती ( सं. ) कली, कलिका,  
कौपल, बेबिलापुष्प, पुष्प का  
पूर्व रूप ।

नवनील ( सं. ) नौ प्रकार के सर्प,  
९ वाति के साँप, नाग विशेष ।

नवनिधि ( सं. ) कुबेर का भण्डार,  
देवताओं के नौ खजाने ।

नवनीत ( सं. ) नवीन घृत नया  
निकला हुआ घृत, माखन, मखन,  
नैनू, मोनाची ।

नवनीध ( सं. ) देखो नवनिधि ।

नवपक्षप ( सं. ) नये नये पत्ते,  
कॉपल, किसलय, नूतन पर्ण ।

नवम ( वि. ) नवाँ, नौवीं संख्या  
पूरक, संख्या विशेष ।

नवभाषिणी ( सं. ) एक भाँति का  
पुष्प, नवभाषिका, पुष्प विशेष ।

नवमी ( सं. ) तिथि विशेष, चन्द्रमा  
की नवीं कलाका किया काल,  
कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ९ वीं  
तिथि, नौमी ।

नवयौवना ( सं. ) युवति, तरुणा,  
स्त्री, जवान औरत, नव बाला ।

नवरंगी ( वि. ) नाना प्रकार के  
रंगों का, अनेक रंगों का, बहु रंगी ।

नवरत्न ( सं. ) नौ प्रकार के रत्न,  
९ प्रकार के मणि मणिकन्यादि  
रत्न, नौ रत्नों का समूह, नव  
प्रकार के मणि, विक्रमादित्य की  
सभा के नौ पंडित तथा “ बन्ध-

नरिसं पञ्चकामरासिंह बाहुने, ज्ञा-  
नमह बटवर्षर काकिलस्तः ।

क्यातोन्वराहमिहिरो नृपतेः सभा-  
या, रत्नानिवैवरचचिनेव विक्रमस्वा

नवस्त ( सं. ) नौ तरह के रत्न,  
१ शृंगार, २ हास्य, ३ कल्या,  
४ रौद्र, ५ वीर, ६ भवानक, ७  
विभक्त, ८ अद्भुत और ९ वांस ।

नवरात्रि ( सं. ) नौरात्रि, व्रत विशेष,  
वे नवरात्रियाँ जिन में आश्विन  
शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त  
दुर्गा का व्रताहुधान किया जाता है ।

नवशेषु ( कि. ) स्नान करना,  
नहाना, शरीर मार्जन करना ।

नवरीति ( सं. ) छुट्टी, फुर्सत, आराम,  
अवकाश, सुख, सुभीता, छुट्टियाँ ।

नवः ( वि. ) अलग, ठाका, बे काम,  
निर्ध्यापार, बैठाहुवा, निरथक ।

नवरीति ( सं. ) देखो नरीति

नवध ( सं. ) नया, नूतन, साया ।

नवधम्नी ( वि. ) नौ काका का ।

नवधसा कीर्ति ( सं. ) जब की  
कोई साधारण मनुष्य अपने कर्मों  
को एक बड़े भूमे जादमी के तुल्य  
कहता है तब कहीं जाये कही  
कहावत ।

नवसाध-भर ( सं ) नौसाधर ।

नव विधाभक्ति ( सं ) ईश्वर भक्ति के नव प्रकार, १ भक्त्य, २ कीर्तन, ३ स्मरण, ४ अर्चन, ५ वन्दन, ६ चरण सेवा, ७ आत्म विवेदन, ८ दासत्व और ९ सख्य ।

नवसा, नवशी ( सं ) बुलहा, बुलहिन, घर वधु, काढ़ा लाड़ी, बीद, बीदणी ।

नवसे ( सं ) बुलहा, घर, बीद ।

नवसे ( सं ) नग्न, नंगा, कलहिन, बेकपड़ा, उबारा ।

नवसेरु ( कि. ) सफल होना, सिद्ध होना, बन पड़ना, बन जाना ।

नवसे ( सं ) १६, सोलह, सख्या विशेष । [ लेखक ।

नवसिद्धि ( सं ) लिखने वाला,

नव ( वि ) देखो नव

नव ( सं ) विचित्रता, अनूठा-पन, अचंभा, आश्चर्य, अद्भुत, नयापन, नवीनता ।

नव ( सं ) कृपा, दया, मिह-रवाणी, अनुकम्पा, दयालुता ।

नव ( कि. ) निवहाना, स्नान कराना, नहाना ।

नवा ( सं ) जलाशय, बापीकूप, तलागादि । जल प्राप्ति, ऋतुधर्म रजोवर्धन, रजसाव ।

नवा ( वि. ) निन्या नवे, नौ और नब्बे, ९९, संख्या, विशेष, ९०+९ ।

नवा ( सं ) नवाब, उच्चपदा-धिकारी, पद विशेष ।

नवा ( वि. ) नवाब की प्रभुता, नवाब का आधिपत्य ।

नवा ( वि. ) स्वामीहीन, लावारिश, रक्षकहीन, अनाथ, जिसका कोई धनी धोरी नहो ।

नवा ( सं ) कौर, दूकड़ा, प्रास छकमा, नवाला, नया, नूतन ।

नवा ( सं ) खबर, सम्वाद, समाचार, सन्देश, शगड़ा, विवाद टंटा, फसाद ।

नवीन ( वि. ) नया, नूतन, नवल ।

नवीन-सीद्धि ( सं ) नकल, करनेवाला, क्लर्क, मुहरिर्. लेखक ।

नव ( सं ) नया, ताजा, नवीन, वर्तमान, हालका, टटका ।

नव ( सं ) बदल बदल, नया, पुराना, नया और विचित्र ।

ननुंक्षुं ( वि. ) नया, हालका, ताजा, टटका, अभीका, तुरंतका ।

ननेक्षु ( सं. ) पाकशास्त्र, बाबची-खाना, भोजन बनाने का घर ।

ननेक्षुये ( सं. ) रसोद्भवा, बाबची भोजन बनानेवाला ।

ननेत२ ( कि. वि. ) नूतन, बोदे, दिन हुए, अभी हाल में वर्तमान में, अभी ।

ननेनामे-स२धी ( कि. वि. ) फिरसे, नये सिरेसे, दुबारा, पुनर्बार ।

नने१६ ( सं. ) नवविवाहिता स्त्री ।

नन्याये२ ( वि. ) मद्यपी, नश्या-करनेवाला, मादक द्रव्य सेवन करनेवाला, शराबी, नशेबाज, धमंडी, अहंकारी ।

नन्या१७ ( वि. ) पूर्ववत् ।

नरी१ ( सं. ) मद, मोह, मादक वस्तु, गर्व, मद्य, मत्तता, मत-बालापन ।

नशिञ्जत ( वि. ) उपदेश, सिद्धान्त, शिक्षा, डाट, परामर्श, सुधार, सिद्धी, मन्त्रमत्त, फटकार, नसीहत ।

नथा ( सं. ) देखो नेस ।

न४ ( सं. ) नशामास, प्यस्त, मृत्, पलायित, अपचित, भ्रष्ट, दुष्ट,

शठ, अदर्शन, विविष्ट, तिरोहित, नाशाश्रय, बुरा, पापी, नीच, कमीन ।

नस ( सं. ) नादी, रग, सिरा, आंत ।

नस३१२ ( सं. ) नसुना, नचना ।

नसंत११ ( सं. ) संतानरहित, वंशहीन, जिस के संतान न हो ।

नस२६ ( वि. ) सब, संपूर्ण, तमाम, बिलकुल, समस्त, साद्य ।

नस३ ( सं. ) जड़, मूल, वंशावली, खान्दान, लक्षण, चिन्ह, जन्म, कुल, वंश, गोत्र ।

नस३धी ( वि. ) गोत्री, वंशज, कुलोत्पन्न, सगोत्री ।

नस३११ ( वि. ) दुर्बल, कमजोर, बलहीन, असुखी, म्याकुल, बेचैन ।

नस३१७ ( सं. ) वह स्थान जहाँ पारसी लोगों की मुर्दा धाड़ी या रथी रखी जाती है ।

नस३३३ ( कि. ) निकालना, हांकना, भगाना ।

नसीग ( सं. ) आत्म, किस्मतें, तकदीर, प्रारब्ध, करम, कर्म ।

नसीग ७७१ उ६३ ( कि. ) आग्य जगना, तकदीर खुलवाना ।

नसीगना भोज ( सं. ) दुर्मात्म, विरुद्धज्ञा, फूटी तकदीर : प्रारब्ध के भोग ।

नक्षत्राणां-वा-न-व-त ( वि. )

माम्यशास्त्री, तक्षदीरवाला, प्रारब्धी  
नक्षत्राणि ( सं. ) दुर्भाग्य, बदकिस्मत,  
मन्दभाग्य, विविधामता ।

नक्षत्राणां-वा-ध-र ( सं. ) वह  
जो पारसी जाति के मृतक की  
रखी या अर्धा अपने कंधे पर ले  
जाता है ।

नक्षत्रा ( सं. ) मैलापन, मन्दगी,  
अपवित्रता, मलिनता, अशुद्धता,  
मल्ल और आते, अंग्रावालि और  
नाबिधे या रणे ।

नक्षत्र ( सं. ) नक्षत्र, नक्षत्र चरने  
का अक्ष ।

नक्षत्रा ( सं. ) प्रथम रजोदर्शन,  
आरंभिक रजस्मान, स्नान, नहान ।

नक्षत्र ( कि. वि. ) निषेध मना,  
मत, न, नकारना, ना ।

नक्षत्रा-त-त-त ( कि. वि. ) यदि न,  
नोचेत्, अन्यथा, या अन्य ।

नक्षत्रा-त-त-त ( कि. वि. ) व्यर्थ,  
बेफायदा, फजुल, बेकार, निरर्थक ।

नक्षत्रा ( सं. ) नाखूनों के निकट  
का वर्म, लौकी, कड़ू ।

नक्षत्रा ( सं. ) सफेद कड़ू, लौकी  
सुम्बी, फल विशेष ।

नक्षत्रा ( सं. ) पंखे, नाखून, पंखों  
या नाखूनों की खरोंचन ।

नक्षत्रा ( सं. ) नल, नलिका, नली,  
आंते, अंतही, अंग्रावालि, मोरी,  
नाली ।

नक्षत्रा ( वि. ) नल की सुरत का  
सरीखा, नली जैसा ।

नक्षत्रा-त-त-त ( कि. ) कमजोर  
होजाना, दुर्बल होजाना, अशक्त  
होजाना ।

नक्षत्रा ( सं. ) नली, नल, पाह्य ।

नक्षत्रा ( सं. ) नरिया, नलिया,  
नाल के सरीखा कपड़े ।

नक्षत्रा ( सं. ) देखो नक्षत्रा ।

नक्षत्रा ( सं. ) पैरकी हड्डी, अस्थि  
विशेष, टोंगकी बड़ी हड्डी ।

नक्षत्रा ( सं. ) २७ नक्षत्र, तारा-  
मंडल, ग्रह, तारा, सितारा ।

नक्षत्रा-त-त-त ( सं. ) चन्द्रमा, चंद्र,  
शशि मयंक, राकेश, निशानाच ।

नक्षत्रा-त-त-त ( सं. ) तारापतन, नक्षत्र  
निपात, तारोंका स्थानच्युत या  
बिभी प्रकार के योगसे पतन ।

नक्षत्रा-त-त-त ( सं. ) तारामंडल, तारा  
चक्र, वह गोलाई जिसमें तारे हों ।

नक्षत्रा-त-त-त ( वि. ) तारागणों  
से पूर्व, ताराओंसे भरा हुआ ।



ना (क्रि. वि.) नहीं, अभाव,  
निषेध, मत, निषेधार्थक अभ्यय ।

नाड (सं.) नापिक, नापित,  
इज्जाम, नाक, शौरकार, जाति  
विशेष ।

नाडिका (सं.) वेशा, नाचनेवाली  
स्त्री, प्रेमासक्तयुवती, नायिका ।

नाडिका (वि.) उपायहीन,  
जिसका कोई उपाय न हो,  
जिसरोग की औषधि नहो, बेवश ।

नाडिभेद (वि.) आशारहित, हताश  
निराश, बे उम्मीद ।

नाडिभेद (सं.) देखो नाड

नाड (सं.) नासिका, नासा, घ्राणे-  
द्रिय, श्वास, मान, इज्जत कीर्ति,  
सज्जा, शरम, हया ।

नाड धुनु रक्षेयुं (क्रि.) सम्मानि-  
तहोना, इज्जतदारहोना, दोष  
रहित रहना ।

नाड उपर नाड नहीं भेसवा देवी  
(क्रि.) मानके लिये उत्सुक होना  
नाकपर मक्खी न बैठने देना,  
अपनी इज्जत का पूरा ध्यान  
रखना ।

नाड धुनुं (क्रि.) शर्मिन्दा करना  
लज्जित करना, मानहानि करना,  
नाक काटना, तौहीन करना ।

नाड धुनुं-धुनुं करी नभाधुं  
(क्रि.) बह होना, हीन होना,  
काचार होना, विनीत होना, नाक  
रगड़ना, आभिज्ञ होना ।

नाडधुं (क्रि.) अपमानित होना,  
इज्जत जाया मान जाना ।

नाडनी धुं (सं.) नाक का चिरा,  
नासाग्र भाग, नाकका उत्तम भाग ।

नाडनी धुं (क्रि.) नाकसे  
बोलना, भिन भिनाना, न, न, न,  
न, न, असरों का उच्चारण करना  
मिथियाना ।

नाड धुं (वि.) कुनटा, अपमानित,  
कमइज्जत, मान रहित ।

ना धुनु (वि.) अस्वीकार, ना  
मंजूर ।

ना धुनु धुनुं-धुनुं (क्रि.) इन्-  
कार करना, नाहीं करना, अस्वी-  
कार करना, नामंजूर करना, कहके  
बदलना ।

ना धुनु (सं.) अस्वीकृति, ना  
मंजूरी, नाहीं, निषेध, अस्वीकार ।

नाडनीसेली-लीली (सं.) नाकको  
भूमिपर रगड़ने की क्रिया या कार्य

नाडनी धुं (सं.) मोर्चाबन्दी,  
तैयारी घेरा, घेर, नगर परिवेष्टन,  
मुहासिरा ।

नाक ( सं. ) हड्डी, सीमा, नोक,  
धिरा, छिद्र, काटक, द्वार, छुई  
का कुण्डल, सुकाम, सावर चबूतरा,  
कस्तूर ।

नाकेदार ( वि. ) कर संग्रह करने  
वाला, सत्यर चौकीवाला ।

नाकेमंटी ( सं. ) देखो नाकमंटी ।

नाकेस ( वि. ) अधूरा, कच्चा,  
न्यून दौबी, असम्पूर्ण, सराब ।

नाकेमाला-पत ( वि. ) निर्बल,  
अशक्त, कमजोर, बलहीन, शक्ति-  
रहित ।

नाकेली ( सं. ) निर्बलता, कमजोरी,  
अशक्तता, नाशुकता, सुकुमारता ।

नाभुं ( कि. ) फेंकना, पटकना,  
फैलाना, दमन करना, कम करना,  
दे डालना, ( दूसरेपर ) डाल देना ।

नाभुदा-भेदा ( सं. ) जहाज का  
शासक, जहाज का कमाण्डर,  
जहाज का अधिकारी ।

नाभुक्ष ( मि. ) नाराज, असंतुष्ट,  
रंजीत, दुःखी, अप्रसन्न ।

नाभुक्षी ( सं. ) अप्रसन्नता, असंतुष्टता,  
नाराजगी, दुःख, रंज, खेद ।

नाभ ( सं. ) सर्प, साँप, अहि,  
पद्म, उर्म, विषधरक्रीड ।

नाग कन्या ( सं. ) नागोंकी कन्या,  
पातालवासी देवताओं की लक्ष्मी  
रूपवती कन्या ।

नागेश्वर ( सं. ) बुध विशेष, एक  
औषधि विशेष ।

नागडुं ( वि. ) नागा, बेशरम,  
लज्जा रहित, दुबला, पतला, हीन,  
शीघ्र, निर्बल, ।

नागधु-धु-नेधु ( सं. ) सर्पिणी,  
साँपिन, नागिन, नागन, नागनी ।

नाग दपने ( सं. ) पेचदार  
लकड़ी, काष्ठ विशेष ।

नागनाथ ( सं. ) शिव, महादेव ।

ना नागेम ( सं. ) धावण श्रुत  
पंचमी, नागपंचमी ।

नागपाक्ष ( सं. ) अन्नविशेष, वन-  
पाक्ष, फांस, फन्दा, फाँसी ।

नागपूजा ( सं. ) सर्पपूजन, नागों की  
वन्दना सेवा ।

नागेश्व ( सं. ) साँपका फन,  
सर्पका फन, अहिफन ।

नागभक्षी ( सं. ) सर्पमणि, एक  
प्रकारकी मणिजो पुराने विषधर  
साँपोंके पास होती है, मृत्युवाञ्छा मणि ।

नागर ( वि. ) नगरवासी, नगरवा  
रहनेवाला, नागर ब्राह्मणोंकी जाति,  
हल, लहर, ( वि. ) तेज, चालाक  
होशियार, चतुर, चपल, दस,

नाभर (सं.) देखो नाभर, १ और  
 नाभरना (सं.) हल चलाने वाला,  
 खेत जोतने वाला हलवाही।  
 नाभरनी (सं.) हल्लोपर कर  
 लगानेकी रीति या प्रणय।  
 नाभरु (क्रि.) हलचलाना, खेत  
 जोतना, लहर डालना।  
 नाभरवाडे (सं.) वह गली या  
 मोहल्ला जहा नागर रहते हों।  
 नाभर वेध-वा (सं.) पानकी  
 बेल, ताम्बूल लता, पानका बूट,  
 नागरवल्ली।  
 नाभरी (वि.) नगर सम्बन्धी,  
 नगरसे सम्बन्ध रखने वाली।  
 नाभरिक (सं.) नगर निवासी,  
 पुरवासी सभ्य लोक, गावके रहने  
 वाले।  
 नाभरी (भाषा) (सं.) संस्कृत,  
 देवनागरी भाषा, चतुरन्नी, नागरकी  
 पत्नी।  
 नाभरी [सं.] एक प्रकारका अम्ना  
 नाभरी (सं.) छोटे साँप, सपके।  
 नाभरी (सं.) सपोंकी पृष्ठी,  
 सर्प लोक, पाताल, अशौलोक।  
 नाभरी (सं.) देखो नाभरवेध  
 नाभु (वि.) बजहीन, नंगा,  
 उबाड़ा, बिना डंका, निर्लेज्ज, बेधर्म,

निर्धन, मानहीन, परहीन रहित,  
 रीन, कंगाल, दिवाकिया।  
 नाभुं उभाहुं (वि.) अजुचित, बे,  
 अदब, गुस्ताख, बेहया।  
 नाभुं शुभ्युं (वि.) रहित, रीन,  
 कंगाल, अधम, अतिदुखी, बीष।  
 नाभे (सं.) नंगा, नाया, निर्लेज्ज,  
 निर्धन, निर्द्वय, दिवाकिया, बेधर्म  
 नाभे वरसा (सं.) धूपकेसमय,  
 में वृष्टि, सूर्य प्रकाशमें वर्षा।  
 नाभेरी (सं.) मुसलमानों की एक  
 जाति जो पशु पालती है।  
 नाभ (सं.) नृत्य, नाट्य,  
 नाभ नभापये (क्रि.) नाचनवाना,  
 अपनी कल्पनाओं और इच्छाओं  
 के अनुसार काम कराना।  
 नाभर (सं.) देखो नाभरवेध  
 नाभरी (सं.) मनमोहिनी  
 चोचला करने वाली, नाचने वाली।  
 नाभरी (सं.) छटा, गर्वयुक्त  
 बाल नसरा।  
 नाभरी-नारी (सं.) नर्तकी, नाच  
 नेवाली, दुहाली, कुकर्मा नारी।  
 नाभरीवेध (सं.) नाचनेवाली स्त्री  
 के हावभाव और कटाक्ष।  
 नाभरी (सं.) नर्तक, नाचके  
 वाला, नृत्य करनेवाला, नट।

नान्ये ( सं. ) उत्सव, खादी, आनन्द, सुखी, हँसी, हुलास, नाच नृत्य।

नान्ये ( सं. ) दृश्य, करना, नाच करना, उल्लङ्घना कृदना, जोरसे और तेजी से बोलना।

नान्यारी ( सं. ) गरीबी, दरिद्रता, गुरी दशा, असहायता।

नान्ये ( सं. ) देखो नान्ये

नान्ये ( सं. ) कुमारी, सुन्दरी।

नान्ये ( सं. ) कुशामदी, चाप लूस, दगाबाज।

नान्ये ( सं. ) चापलूसी, कुशामद, लल्लाचापी, लल्लोपत्तो,

नान्ये ( सं. ) हिजडा, लीब, नपुंसक, शहर वा कौन्टीका हाकिम, जिल्ला हाकिम, नाजिर।

नान्ये ( सं. ) निरुत्तर, बे जवाब, चुप, नहीं।

नान्ये ( सं. ) देखो नान्ये

नान्ये ( वि. ) मुलायम, कोमल, मुकुमार, नरम, निर्बल।

नान्ये ( सं. ) कमजोर काध, बारीककाम, सावधानी का काम।

नान्ये ( सं. ) निर्बलस्थान, कोमलस्थान, मुलायम जगह, मर्म स्थान।

नान्ये ( वि. ) कोमलता, मुलायमी, नम्रता, मुकुमा रता, निर्बलता।

नान्ये ( सं. ) गद्य पद्यमय काव्य विशेष, रूपक, अभिनय, खेल।

नान्ये ( सं. ) देखो नान्ये

नान्ये ( सं. ) नाटक करने वाला, नाटक पुस्तक लिखने वाला।

नान्ये ( सं. ) देखो नान्ये

नान्ये ( सं. ) बहमन जहा नाटक खेला जाता हो, रंग-शाळा, नृत्यशाला, नाट्यमंदिर,

नाट्यशाळा, नृत्यस्थान, नाचघर।

नान्ये ( सं. ) रंगमंचपर नट या नाटकका खिलाडी।

नान्ये ( सं. ) नट, खिलाडी, नाटकका पात्र, नाटक सम्बन्धी।

नान्ये ( सं. ) नृत्यगीत और वाद्य, नाटक विषयक बयान वर्णन अथवा खेल, अभिनय।

नान्ये ( सं. ) नाटक, नृत्य इत्यादिका आनन्द।

नान्ये ( सं. ) नाडी, नस, आंत, अंत डी, रग, चमड़ेकी डोरी, प्राकृतिक आदत, नस्ब।

नान्ये ( वि. ) नाडी देखना, नस्ब देखना।

नाडी-देखावटी ( कि. ) नब्ज दिखा-  
ना, नाडी दिखाना, रोग परीक्षा  
कराना ।

नाडी-अंश ५५वीं ( कि. ) मृत्यु-  
के समीप होना, नाडियों छूटना  
या बन्द होजाना ।

नाडी-भणनी ( कि. ) पता प्राप्त  
करनाोजना,

नाडी-छडी ( सं. ) कई रंगों के सूती  
धागे । अनेक रंगों के सूत के बोरे

नाडी-छेड करवे। ( कि. ) पेशाब  
करना, प्रस्राव करना, मूतना,

नाडी-अंश-५५ ( सं. ) परहेजगारी  
अभ्याभिचार, मिताहार व्यवहार

नाडी ( सं. ) नब्ज, चमड़े की  
रस्सी, धमनी, हाथकी मुख्य नस,  
नली ।

नाडी-परीक्षा ( सं. ) नाडी की  
परख, नाडीद्वारा जांच, नब्जकी  
तहकीकात

नाडी-भण-हट ( सं. ) नाडियों-  
का समूह, नाडी समुदाय ।

नाडी-वैद्य ( सं. ) कच्चा वैद्य, ठग  
वैद्य, मिथ्याचिकित्सक, धूर्त वैद्य,  
नीम हकीम ।

नाडी-ज्ञान ( सं. ) नाडीविषयक  
ज्ञान, रोगपरीक्षा, निदान ज्ञान,  
नब्जकाइलम ।

नाडी-अंश ( सं. ) मसौका भाग, नासूर ।

नाडी ( सं. ) कौरी, कौता, नाका,  
सुतली ।

नाडी ( सं. ) रजोवसन, ऋतुअवक,  
न्याय, कपड़ोंहोनेकीवस्त्राभे ।

नाडी-पुं ( कि. ) प्रयत्न करना,  
उद्योग करना, परीक्षा करना,  
जांचना, नहीखाना ।

नाडी-वट ( सं. ) रुपयोंका बाजार,  
शराफा, चौक जहाँ व्यापारीयव  
एकत्र होते हैं ।

नाडी-वटी ( सं. ) खजानची, कोषा-  
ध्यक्ष, शराफ, सराफ ।

नाडी ( सं. ) नकदी, रोकड़, सिक्का,  
रुपया, पैसा, जगदमाल, मूल्य ।

नाडी ( सं. ) जाति, जात, जाति,  
कौम, मजहब, फिरका, जमाअत,  
अंश ।

नाडी-अंश ( वि. ) जातिच्युत,  
जाति से अलग, समाज से बहि-  
ष्कृत, हुका पानी से अलग ।

नाडी-रस ( वि. ) निर्देय, बेरहम,  
दयाहीन, निष्ठुर, कठोर, संगदिल

नाडी-रिवा ( सं. ) वह कौम जिसमें  
नातरा होता हो वह जाति जिसमें  
के लोक बिना विवाह किये किसी  
औको पत्नीके रूपमें घर में रख  
लेते हैं ।

नातस्थि ( सं. ) स्त्रीके साथका उस समय का बालक जबकि उसका पुनर्विवाह या नातरा हुआ हो । स्त्रीको पत्निके रूपमें ग्रहण करनेके पूर्व उस स्त्रीसे उत्पन्न बालक ।

नातई ( सं. ) पुनर्विवाह, नातरा, मेल, जोड़, घरबासा ।

नातईं ४२पुं ( कि. ) पुनर्विवाह करना, घरबासा करना, नातरा करना ।

नातरे ७पुं ( कि. ) अपने पूर्व पत्निके मरणोपरान्त अथवा जीवितस्थानमें दूसरे पुरुषको पत्निरूपमें धरण करना, नर्कमें जाना ।

नातस्थ ( वि. ) मिलाहुवा, जोड़ा हुआ, सम्बद्ध ।

नातवासे ( सं. ) जातीय भोजन, जातभोज, जातिभोज ।

नातवान ( वि. ) निर्बल, कमजोर, असहान, दुर्बल, दीन कंगाल ।

नातवानी ( सं. ) दीनता, कंगाली कमजोरी, निर्बलता ।

नाताध ( सं. ) ईसामसीहका, जन्मदिन, बप्तादिन, २५ दिसंबर, क्रिस्तामस डे ।

नातिमेद ( सं. ) वर्णभेद, जातीय अंतर, जातिभेद ।

नातीसे ( सं. ) सगेजो, जातिका, स्वजातीय, जातभाई, सनाती ।

नातुं ( सं. ) नाता, सम्बन्ध, मेल, जोड़, रिश्ता, रिश्तेदारी ।

नातो ( सं. ) पूर्ववत् ।

नाथ ( सं. ) स्वामी, प्रभु, कर्ता, नियंता, प्रतिपालक, पति, खसम, सम्प्रदाय विशेष, नाक की रस्ती जो बैल आदिपशुके नाकमें डाली जाती है ।

नाथ विनोय-येम ( सं. ) पतिसे पत्निका विछोह ।

नाथपुं ( कि. ) बैलके नाकमें रस्ती पिरोना, दमन करना ।

नाड ( सं. ) ज्वनि, शब्द, वर्जन, सुर, स्वर, आदत, स्वभाव, गर्व, बसीभूत, क्षिप्ता, हृदयगांभीर्य ।

नाडर ( सं. ) पहिला निखं, प्रथम भाव, उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा ।

नाडुं ( कि. ) ठहरना, बसना, वास करना, सर्वथाके लिये रहना ।

नाडन ( वि. ) नासमझ, विचारहीन, मूर्ख, असमझ, बालक ।

नाडनपुं-नीअत-नी ( सं. ) बचपन, लछेरपन, मूर्खता, नासमझी, विचारहीनता, शल्यता, बेवकूफी ।

नाइर ( वि. ) दीन, गरीब, कंयाल, निर्धन, दरिद्र ।

नाइर ( सं. ) दिवालिया, मुफ-लिस, दरिद्री, गरीब, दीन, भिखारी ।

नाइरी ( सं. ) दिवाला, मुफलिस्ती, दीनता, भिक्षुकता, कंगाली ।

नादी ( वि. ) घमंडी, गर्वी, शेकीखोर ।

नापकुं-धुं ( वि. ) छोटा, थोड़ा, कम, न्यून, अल्प, ओछा ।

नान ( सं. ) रोटी, चपाती ।

नानक ( सं. ) सिक्खों के प्रथम गुरु ।

नानकडुं ( वि. ) देखो नापकुं

नानकथी ( वि. ) नानकके अनु-यायी, नानक सम्प्रदायी ।

नानभटाई ( सं. ) एक प्रकारकी मिठाई, मिष्टान्न विशेष ।

नानभ ( सं. ) छोटाई, मातहती, दीनता, गरीबी ।

नाना ( वि. ) अनेक, विविध, अनेकार्थक (विस्म.) नहीं नहीं ना ।

नानाप्रकारनुं-विधनुं ( कि. वि. ) अनेकप्रकार, विविध प्रकारका, बहुत तरहका, पृथक् पृथक् ।

नानाभत ( सं. ) अनेक सम्मतियां, विविध विचार, अनेक सम्प्रदाय ।

नानी ( सं. ) मातामही, माताकी माता ।

नानीथी ( सं. ) छोटीसी, लघु ।

नाने ( सं. ) मातामह, माताके पिता, छोटा, लघु, कुमार, बाल, बच्चा, शालक ।

नांद ( सं. ) एक बड़ाभारी भिखीका कूँडा जो जमीन में प्रायः गाड़ दिया जाता है, मृत्तिका पात्र ।

नांदी ( सं. ) नाटक में सूत्रधार-कृत मंगलाचरण, नाटक के आदि में देवद्विजोंका दिया हुआ आशी-र्वाद, नाटक का मंगलाचरण ।

नान्धतर ( सं. ) नपुंसकलिंग, तृतीय लिंग ( व्याकरण में )

नाप ( सं. ) माप, तौल, परिमाण, अंदाजा, हद, युक्ति ।

नापना ( कि. ) मापना, तौलना, अन्दाजना ।

नापसंद ( वि. ) बेपसंद, अस्वीकृत, अप्रिय, अयोग्य, अरुचिकर, घृणित, नामंजूर ।

नापाक ( वि. ) अपवित्र, अशुद्ध, मैला, गन्दा, अप्रु, पतित ।

नापाही ( सं. ) अपवित्रता, अशुद्धता, मैलापन, गन्दापन ।

नापिक-त ( सं. ) नाई, नाक, हजाम, शौरकार्य करनेवाला ।

नाम ( वि. ) बौद्ध, कसर, मंजर, निष्कल, फलहीन ।

नामभान ( सं. ) अवज्ञाकारी, आशा न माननेवाला, जामुनी या बैजनी रंगका नाम ।

नामभानी ( वि. ) अवज्ञाकारी, वा फरमावरणारी, अवज्ञा, जामुनी रंगका । [नष्टप्राय ।

नामध ( वि. ) नष्ट, बुझाहुवा,

नाम ( सं. ) नौका, नाव, किस्ती, पहियेकी नाह, पहियेका मध्य ।

नामि ( सं. ) पेटका मध्यस्थान, तौरी, सूँची, नाम, पहियेकी नाह, घुरी ।

नामिभण ( सं. ) नामिका कमल ।

नामिछेदन ( सं. ) नाडीछेदन, नाल छेदन, बालक की उत्पत्तिके समय पिताद्वारा नामिसूत्रका छेदन ।

नामिनाडी ( सं. ) नामिसूत्र, वह नस या नाडी जो बालककी नामिसे जुड़ी हुई गर्भ से बाहिर आती है, नाल ।

नामिबर्द्धन ( सं. ) नामिकी बर्द्धनक्रिया ।

नाम ( सं. ) नाव, संज्ञा, अमि-धान, यष्ट, स्वाति प्रसिद्ध ।

नाम देणु ( कि. ) प्रसिद्ध होना, स्वाति पाना, अच्छी कीर्ति लाभ करना ।

नाम ठकालु ( कि. ) घुरा वा मला नाम निकालना ।

नामपर पाण्डी देणु ( कि. ) नाम-पर पानी फेरना, कीर्ति नाश करना ।

नाम गहु ( वि. ) विख्यात, प्रसिद्ध, प्रख्यात, महादूर, प्रकट ।

नामगेम ( वि. ) वह मनुष्य जिसका कि नाम लिखा हो ( हुंडीमें ) नाम जोग हुंडी ।

नामगेम हुंडी ( सं. ) वह हुंडी जोकि खरीदनेवाले का संक्षिप्त विवरण और नाम प्रदर्शित करती हो ।

नाम काम ( सं. ) संपूर्ण पता, पूरा पता, नाम और ठिकाणा ।

नाम तारणु ( कि. ) प्रतिष्ठापाना, कीर्ति प्रकाश करना ।

नामदारी ( वि. ) जगद्विख्यात, स्वनाम धन्य, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, महादूर, प्रख्यात ।

नामदारी ( सं. ) प्रतिष्ठा कीर्ति, स्वाति, महादूरी, तारीफ ।

नाम देणु ( कि. ) नाम रखना, नामधरना, नामदेना ।



नाम धरपुं ( कि. ) नाम लेना ।  
 नाम धातु ( सं. ) वह क्रिया जो  
 संज्ञासे बनी हो ( व्याकरणमें )  
 नाम धारि ( कि. वि. ) किसीका  
 नाम रखलेना, नाम इत्यादिसे ।  
 नामधरी ( कि. वि. ) प्रसिद्ध,  
 विख्यात, कीर्ति सम्पन्न, जाली  
 या झूठे नामका मनुष्य ।  
 नामधुर ( वि. ) अस्वीकृत, ना  
 पसंद अयोग्य ।  
 नामधुरी ( सं. ) अस्वीकृति ।  
 नाम न देपुं-न देपुं-न भोक्षपुं  
 ( कि. ) नाम नहीं बोलना, नाम  
 नहीं लेना, नामसे दूर रहना ।  
 नामना ( सं. ) नाम, यश, कीर्ति,  
 शुहरत, नामवरी, प्रसिद्धि ।  
 नामनिष्ठान ( सं. ) नाम और  
 विवरण, नाम और तफसील ।  
 नाम निष्ठानी कंध नथी-नाम  
 चिन्ह आदि कुछभी नहीं है ।  
 नामपुं ( वि. ) नाममात्र, बरान  
 नाम ।  
 नामपर ( कि. वि. ) नामपर,  
 दिखावमेंसे नाम, कारणपर,  
 कारणसे ।  
 नामधुरापुं ( वि. ) अपमानित,  
 नाम दुकानेशास्त्र ।

नाम भोक्षपुं ( कि. ) अपमान  
 करना, अपमान करना ।  
 नामराशी ( वि. ) एक नामका,  
 मिलता हुआ नाम, नामकी राशि ।  
 नामरह-ई ( सं. ) नपुंसक, हिजड़ा,  
 क्लाब, कमजोर, नपुंसकहीन ।  
 नामरह-ई-रह-ई ( सं. ) कम-  
 जोरी, दुजदिली, नपुंसकता,  
 क्लबत्व ।  
 नामवर ( वि. ) नामवाला, ख्यात,  
 प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिमान ।  
 नामवरी ( सं. ) नाम, यश,  
 ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति ।  
 नामव्याप्त ( सं. ) तृतीय पुरुष,  
 ( व्याकरणमें )  
 नामवुं ( कि. ) उदेलेना, निकालना ।  
 नामरभरथु ( सं. ) हृदयमें अपने  
 इष्टदेवका ध्यान, ईश्वरका नाम-  
 स्मरण, हरिचित्तन ।  
 नामांकित ( वि. ) नामचिन्हित,  
 नामसुचित, सुवाहुवा नाम, प्रसिद्ध,  
 विख्यात, प्रतिष्ठित ।  
 नामावणी ( सं. ) नामधेणी, नाम-  
 सूची नामोंकी फेहरिस्त ।  
 नामी-युं ( वि. ) विख्यात, प्रसिद्ध  
 यशस्वी, कीर्तिमान, ख्यातनामा,  
 महादूर, नामवाला ।

- नक्षत्र ( सं. ) हिसाब, कहानी, बयान, इतिहास, काम, दास्तावेज, लेख प्रमाण, लिखावट, पत्र, चिट्ठी ।
- नक्षत्ररश्मि ( कि. ) इन्कारकर देना, नाही कर देना, अंगीकार न करना, अस्वीकार करना ।
- नक्षत्रांश ( सं. ) पता, हिसाब, बयान ।
- नक्षत्रासम् ( वि. ) अनुचित, शैरमुमकिन, असंभव ।
- नक्षत्राश्च ( वि. ) बदकिस्मत, दुर्भाग्य, अभाग्य ।
- नक्षत्राद ( वि. ) अकृतार्थ. निष्फल, नाकामयाब, बदनसीब, हताश, आशा रहित, नाउम्मीद ।
- नक्षत्रादम् ( सं. ) निराशा, निष्फलता, असफलता ।
- नक्षत्रे ( वि. ) देखो नामपर ।
- नक्षत्रेश्वर ( वि. ) कृपाहीन, नाराज, नाजुब, दया रहित ।
- नक्षत्रेश्वरी ( सं. ) अवकृपा, असंतुष्टता, नाराजी, नाजुशी ।
- नक्षत्रेश्वरी ( सं. ) अपमान, अपकीर्ति, बदनामी, लज्जा ।
- नक्षत्र ( सं. ) मुख्य, मुखिया, अमुवा, प्रदर्शक, नेता, अग्रगामी, अग्र, प्रधान, अंगार सायक पुरुष, प्रेमाभिलाषी, प्रेमी ।
- नक्षत्र-रश्मि ( सं. ) नृत्यकरनेवाली, सखी, प्रेमासक्तावुचती, नाचक की स्त्री ।
- नक्षत्री ( सं. ) धुरी, पहियेकी नाह, चक्र के मध्य का भाग ।
- नक्षत्र-रश्मि ( सं. ) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष ।
- नक्षत्रा ( सं. ) देखो नायका ।
- नक्षत्र ( सं. ) स्त्री, लुगाई, नारी ।
- नक्षत्र ( वि. ) नर्क सम्बन्धी, नर्कस्थ, नर्कवादी, नर्कभोगी, दुराचारी ।
- नक्षत्र ( सं. ) फलविशेष, संतरा, एक प्रकारका सड़ा मीठा फल ।
- नक्षत्र रश्मि ( वि. ) नारंगी, नारंगी के रंगका, पीलासाल मिश्रित । [ वृक्ष की बाटिका ।
- नक्षत्र भाग ( सं. ) नारंगियोंके नक्षत्र रश्मि ( सं. ) नारंगीका पेड़ ।
- नक्षत्र ( सं. ) देवर्षि, मुनि, एक ऋषि, जोकि विवाद सड़ा करे, लड़ावेने वाला, टंटके लिय उस्तकावे वाला ।
- नक्षत्र-रश्मि ( वि. ) असंतुष्टता, अग्रसत्ता, कुद्व, बाह ।

नाशब्द ( सं. ) ईश्वर, विष्णु, योगी, बैरागी, संन्यासी, ऐकान्त-सेवी, वानप्रस्थ, वनस्थ ।

नाशब्दधृति ( सं. ) मृत पति-तोंके उद्धारके लिये प्रायश्चित्त विशेष ।

नाशब्द ( वि. ) गलत, अनुद्ध, झूठ, अनुचित, उलटा, अन्याय ।

नाशब्द ( सं. ) नारिकेलफल, शीफल, नरियल, फल विशेष ।

नाशब्दी ( सं. ) नरियलका पेड़ ।

नारी ( सं. ) धर्मयुक्ता स्त्री, अबला, महिला, ललना, कुटुम्बिनी ।

नारीन्यत ( सं. ) स्त्री जाति औरत, लुगाई । [ रणमें ]

नारीन्यति ( सं. ) स्त्री लिंग ( व्याक-

नारीद्वय-दोष ( सं. ) स्त्रियों के मद्यपान कुसंगादि छःदोष, दुर्जन-संग, पतिसे विरह, घमना ।

नाश ( सं. ) एक प्रकारका कीड़ा ।

नाश ( सं. ) दलाही, किसी काम करनेका पुरस्कार या मजूरी ।

नाश ( सं. ) राजपूतोंकी एक जाति विशेष, देखो खलासी ।

नाश ( सं. ) चोटे आदि के कुर में जड़ी जानेवाली वस्तु, नाली,

मली, खाड़ी, बलके आकारकी बनी हुई वस्तु ।

नाश ( सं. ) पालकी, शिविका, यान विशेष, डौला ।

नाश ( वि. ) अनुपयुक्त, अ-योग्य, अनुचित, बेठीक ।

नाश-बेस ( सं. ) निंदा, कलह, गाली, दुर्वर्त्य, अपवाद पत्र, बदनामी का लेख, अपमश ।

नाश ( क्रि. ) निंदा करनी, कलह लगाना, दोष लगाना, बदनाम करना, अपवाद करना ।

नाश ( सं. ) नौ, नौका, तराया, डोंगी, बोट, जहाज किस्ती ।

नाश ( सं. ) छोटी नाव, डोंगी ।

नाश ( सं. ) डोंगा, नाव ।

नाश ( सं. ) जल नहान ।

नाश-बेस ( सं. ) खाविंद, पति, स्वामी, खसम, मालिक ।

नाश ( वि. ) अपरिचित, अन-जान, अनभिज्ञ, अजान, जड़ ।

नाश ( सं. ) नाकवाला, मक्काह, कबूट, नाव चलानेवाला ।

नाश ( वि. ) स्वामिहीन, बेमालिक, अनाथ, पतिहीन ।

नौविंश ( सं. ) केवट, नावखेने-  
बाळा, मत्ताह, माशी, नाव चलाने  
वाला ।

नौविंशविधा ( सं. ) मत्ताहकीविधा,  
नाव चलानेका इत्थ, जहाज  
बनानेकी विधा, नौका निर्माण  
ज्ञान ।

नौविंशशिल्प ( सं. ) नौकाके कार्य  
निपुण, नौविद्या प्रवीण, नौविद्या  
बुद्ध ।

नौवी ( सं. ) नाई, नाऊ, इज्जाम,  
वाल बनानेवाला, जाति विशेष ।

नौव्य ( वि. ) जहाज या किस्ती  
खेने लायक, जिसमें होकर जहाज  
या नाव जा सके, सामुद्रिक,  
हरिवाई ।

नौश ( सं. ) क्षय, अंश, लय,  
क्षति, हानि, अपचय, अदर्शन,  
शुक्लान ।

नौशक्षणे ( कि. ) अंश करना,  
नष्ट करना, मटिया मेंट करना,  
विनाश करना, बरबाद करना,  
खराब करना ।

नौशक्ष ( वि. ) नाश कर्ता, अशक,  
क्षयकारी, क्षतिकर, हानि कर्ता,  
विनाशक ।

नौशक्षरक्ष ( वि. ) नाशकरनेवाला,  
हानिकारक, क्षतिकारक, बरबाद  
करनेवाला ।

नौशक्षत ( सं. ) नाशमान, अस्थिर,  
नष्ट होनेवाला, नाशनीय, नाशवान्त ।

नौशी ( वि. ) नाशक, नाशकर्ता  
उच्चाह ।

नौशीत ( वि. ) अंसित, हत उ-  
च्छेदित, नष्ट, नाश किया हुआ ।

नौस ( सं. ) नस्य, सूचनी, हुकास,  
तमाषका चूर्ण ।

नौसक्षान ( सं. ) सूचनी रखनेकी  
विधिया, हुकास रखनेकी विधि ।

नौसभ ( वि. ) वे सत्र, असे-  
तोष, बेचैन, उतावळा अधीर ।

नौसते ( सं. ) प्रातःकालीन अस्प-  
भोजन, कलेवा, नाश्ता ।

नौसभ ( सं. ) असमझ, अन-  
जान, बुद्धिहीन, विचारशून्य,  
मूर्ख ।

नौसरी ( सं. ) लगभग आधीपाई ।

नौसपान ( वि. ) पापमय, दोष-  
गन्ध, अशुद्ध, अपवित्र ।

नौसपु ( कि. ) भागजाना, बचके  
भागजाना, दौडजाना, निकल  
भागना, अलप हो जाना ।

नौस-सिक्षा ( सं. ) नाशिका,  
नाक, नाकडा, घ्राणेन्द्रिय ।

नौसिधामेस-स ( वि. ) आशा  
रहित, नाउम्मेद, निराश ।

नस्तीकसी ( वि. ) निराशा, ना उम्मेदी, आशा हीनता ।

नासूर ( सं. ) नसका प्रण, रगके ऊपरका घाव, नाक और आँखों के बीचकी गढ़बढ़ीया रोव ।

नास्तिक ( सं. ) वेदनिन्दक, अनीश्वरवादी, नास्तित्ववादी, ईश्वरका सत्ता न माननेवाला, पासड, चार्वाक, सत्यकी निन्दा करनेवाला ।

नाड ( सं. ) घघकता हुआ कौयल, जलता हुआ लकड़ीका कौयल ।

नाडक ( कि. वि. ) व्यर्थ, अन्यायपूर्ण, बे फायदा, फुजूल, बे सबब, अकारण, अनुचित, बिना प्रयोजन, अयथार्थ ।

नाडथु ( सं. ) ज्ञान, नहान ।

नाडतीधिता ( वि. ) तरुणावस्था प्राप्त ( युवती ) जवानी पाई हुई ( स्त्री )

नाडर ( सं. ) व्याघ्र, बाघ, शेर, शार्ङ्ग, गीता, तेंदुवा, बघेरा ।

नाडानपथु ( सं. ) बचपन, लड़कपन, प्रारंभ, शुरू, छुट्टाई, लघुता ।

नाडानु ( वि. ) छोटा, गधु, बच्चा, बालक, शिशु, शबक ।

नाडानु ( कि. ) ज्ञान करना गुलल करना, नहाना, जलमें डरीर डोबा, घोबा ।

नाडानु ( कि. ) देखो नाडानु

नाडी ( कि. वि. ) देखो नडी

नाण ( सं. ) नाभिसे सम्बन्ध रखने वाली नस, मोड़के सुरमें जड़ी-जानेवाली वस्तु, जूतेकी एड़ीमें जड़ी जानेवाला लोहेकी अर्धचन्द्राकार वस्तु, बालकके पैदा होनेके समय नाभिसे जुड़ी हुई उत्पन्न नस, नली, पानीका नल, नलके आकारकी वस्तु ।

नाणकुं-युं-पुं ( सं. ) सच्ची, सोंगा, तेल आदि द्रव पदार्थ भरनेके लिए चौड़े मुह दार नली ।

नाणनं-ड ( सं. ) घोड़े बैल आदि पशुओंके सुरोंमें नाल जड़नेवाला, नाल बाधनेवाला ।

नाणियर ( सं. ) देखो नारियण

नाणुं ( सं. ) नाळ, पानी का नाळा, छोटी नदी, मोरी, पनाला ।

निःशंक ( कि. वि. ) निडर अभय, भयशून्य, साहसी, बेशक ।

निःशेष ( कि. वि. ) समाप्त, सम्पूर्ण, शेष रहित, बेबाक, बाकी न बचा हुआ ।

निःसंग ( कि. वि. ) अकेला, एक संगरहित, बेसाथी, संगरहित ।

निःसृज्य ( कि. वि. ) बेसक, निः-  
स्सन्देह, निश्चय, संशयहरित,  
अवश्य ।

निःसृज्य ( कि. वि. ) समीप, पास,  
नज्जक, नज्जदीक, अद्दूर, सन्निकट  
आसन्न, उपान्त ।

निःसृज्य ( सं. ) निर्मूलन, उच्छादन,  
उन्मूलन, नाशविनाश ।

निःसृज्य ( सं. ) समूह, राशि, सार  
हेर, निधि, करारहित, आगार,  
( कि. वि. ) यातो, नहीतो ।

निःसृज्य ( कि. ) निकलना, बाहिर  
आना, साबत करना, छोटना,  
छोटना, निकल आना ।

निःसृज्य ( कि. ) भाग जाना,  
हेराउठाना, चलेजाना, गायब हो  
जाना, निकलजाना ।

निःसृज्य ( कि. ) बाहर होना,  
प्रकट होना, सामने आना, निकल  
पड़ना, आगेखिंचना ।

निःसृज्य ( सं. ) विवाह, शादी, वि-  
वाह संस्कार, निकाह ।

निःसृज्य ( सं. ) सार, तत्व, न्याय,  
कैगला, तरतीब, निर्णय, विचार,  
रास्तेकी सफाई, प्रबन्ध ।

निःसृज्य ( सं. ) भरती, दूसरे देशों  
को भेजाहुआ माल, बाहर गमन

अन्वय गमन, विदेश गमन, नि-  
काल, निकलेका मार्ग,

निःसृज्य ( सं. ) गृह, आलय, आ-  
गार, सदन, रहनेकास्थान ।

निःसृज्य ( सं. ) मोरी, परनाला,  
नाला, तंगनाला, सकदी नाली ।

निःसृज्य ( कि. ) सफाईसे धुला  
होना, श्वेतहोना साफ होना,

चमकना, उज्जला होना, निधराना  
निःसृज्य ( वि. ) संख्याविशेष, दश  
खर्व सख्या, दश सहस्र कोटि ।

निःसृज्य ( सं. ) भाटा, उतार, षटती  
ज्वार भाटे का उतार ।

निःसृज्य ( कि. ) उज्जला करना  
साफ करना, प्रथम बार धोना,

निःसृज्य ( वि. ) सादा, सीधा,  
शुद्ध खुले दिलका, साफ दिलका,  
साफ, खरा, सच्चा, निष्कपट ।

निःसृज्य ( सं. ) शास्त्र विशेष, वेद  
की शास्त्रा, ईश्वर, वेद, सार,  
परिणाम, फल, तत्व, उत्पात्ति ।

निःसृज्य ( कि. ) छुट्टी पाना, व्यतीत  
होना, बीतना, गिरना, टपकना ।

निःसृज्य ( वि. ) सुशील, लज्जावान,  
संकोची, लजीला ।

निःसृज्य ( कि. ) सरना, टपकना  
वस्तु ऐसे बूंद बूंद पानी गिरना ।

निर्माहयान ( सं. ) पहलवा, निर्माह  
रखनशाला, चौकीदार, चौकसी  
रखनेवाला, रखक, रखवाला ।

निर्माहयानी ( सं. ) रखवाला, रखा  
हवालात, चौकसी, निगरानी ।

निर्माणा ( सं. ) तलछट, गाढ़ मैल ।

निर्मीन ( सं. ) नगीना, एक प्रकार  
का कीमती पत्थर, मूल्यवान पत्थर  
विशेष ।

निर्भक्ष ( सं. ) दहता, ताड़न,  
प्रहार यंत्रणा, चिकित्सा, क्लेश  
बंधन, रोक, अटकाव बन्धन,  
सीमा । [ संप्रह, नामसंप्रह ।

निर्भट ( सं. ) ज्वपट्ट, कोश, शब्द

निर्भा ( सं. ) दृष्टि, देख विचार  
ध्यान, नेत्र, आख चक्षु, दृष्टि ।

निर्भयानी ( सं. ) देखरेख, कृपा-  
दृष्टि, दयापूर्ण अवलोकन ।

निर्भयु-भेनुं ( वि. ) नीचेका, नीचे  
वाला, छोटा, लघु, नीचा,

निर्यायु ( सं. ) ढाल, ढालभूमि,  
निचाई, उतार ढाल ।

निर्यित ( वि. ) बेफिक्र, चिंतारहित,  
निश्चित, चिंताशून्य, अशोच,  
अचिंत, शोक रहित ।

निर्युं ( वि. ) नीचा, निम्न, अधम ।

निर्ये ( कि. वि. ) तबे, अपनीमे  
उतरा हुआ नीचे ।

निर्येवपुं-यवपुं ( कि. ) निचो-  
ड़ना, दवाना, भरोड़ना चूमना,  
गारना, कपड़ेसे पानी निकालना,

निर्योरी ( सं. ) देखी निडारी

निर्य ( वि. ) स्वीय, स्वकीय, आ-  
त्मीय, मुख्य खास, अस्त्री ।

निर्यवान ( सं. ) अपना इन्ध,  
सुदका धन ।

निर्यधाम ( सं. ) घर, अपना घर  
स्वर्गधाम, देवलोक ।

निर्यवार्ता ( सं. ) अपनाजिवन  
चरित्र, व्यक्तिगत बात, मुख्य  
बात, खानगी बातचीत ।

निर्यु ( कि. ) थकजाना, हार  
जाना, खिंचजाना ।

निर्यर ( वि. ) निर्भय, निश्चिंक,  
भयशून्य, अशङ्क, धृष्ट, बेडर ।

निर्य-रैर्य ( कि. वि. ) प्रतिदिन,  
मदा, नित्य, रोजमर्रा, हमेशा ।

निर्य निर्य ( कि. वि. ) दिन दिन  
प्रतिदिन, निरंतर, लगातार, अब  
और तब

निर्यं ( सं. ) बूतड़, कुल्हा, पुष्ट  
ढोया, खिर्योके काटके पीछे का  
भाग ।

निर्यरपुं ( कि. ) निघरना, निखर-  
ना, साफ होना, बूंद बूंद टपकना,  
खरना, चूना, धीरेधीरे बहना ।

निरुद्ध-२ ( वि. ) स्वच्छ, साफ,  
निष्परा हुआ, चमकीला, विर्यल ।

निरुद्ध ( कि. वि. ) निरुद्ध, रोज  
रोज, दैनिक, सतत, प्रतिवासर,  
हमेशा ।

निरुद्ध ( कि. वि. ) शाश्वत, ध्रुव,  
सनातन, सदैव, निरंतर, सतत,  
अध्यात, अनिष्ट, अनारत, स्थिर,  
निश्चित ।

निरुद्ध ( सं. ) प्रतिदिनका  
वर्तमान कर्म, आवश्यक्रिया,  
दैनिक कार्य ।

निरुद्ध ( वि. ) अमर, सदा  
जीनेवाला, मृत्यु रहित, स्थिर,  
अचल ।

निरुद्ध ( सं. ) प्रतिदिनका वर्त-  
मानदान, रोज मरहटका धर्मपुण्य ।

निरुद्ध ( सं. ) सदानंद, जिसका  
आनन्द सदा वर्तमान रहे, सदा  
आनंद ।

निरुद्ध ( सं. ) दैनिक नियम, रोज  
की क्रिया, दैनिक विधि, पूजापाठ ।

निरुद्ध ( सं. ) स्थाई शांति, सदा  
स्थिरता, चैन, आनन्द ।

निरुद्ध ( कि. वि. ) देखो निरुद्ध

निरुद्ध ( सं. ) निराशा, चासपात,  
मे कर्म के पौधे ।

निरुद्ध ( कि. ) नींदवा, निरुद्ध,  
नींदना, चासपात काटका, चास-  
पात वा निकम्मे पौधे निकालना ।

निरुद्ध ( सं. ) हरीचास, चासपात ।

निरुद्ध ( सं. ) मूल कारण, रोग  
निर्णय, निष्कर्ष, सरास, मूलजु-  
सन्धान, कम मूल्य, ( कि. वि. )  
पीछे, बादमें, अन्तमें ।

निरुद्ध ( सं. ) अवस्थाविशेष, मनुष्य  
की अवस्था, नींद, शयन सुषुप्ति  
की अवस्था, सोना, कर्मेन्द्रियों के  
विषयोसे जीवकी पृथक् होने की  
अवस्था, भेध्या नामक नाड़ी  
सेमनका संयोग ।

निरुद्ध ( सं. ) निद्राकुल, निद्रा-  
गस्त, निद्राकान्त, नींदके वश ।

निरुद्ध ( सं. ) बे चैनी, व्याकुलता  
बेहोशी, निद्राबोध ।

निरुद्ध ( सं. ) प्रबोधन, जागरण  
निद्रालाग, चेत, निद्रावसान ।

निरुद्ध ( वि. ) निद्राप्रस्त, निद्रा-  
तुर, नींदकेवशीभूत ।

निरुद्ध ( वि. ) निद्रारहित, व्याकुल  
बे चैन, बेनींद ।

निरुद्ध ( वि. ) निद्राज, निद्रा-  
शील, सोनेवाला, सुवैवा ।



निर्देश ( सं. ) निर्देश, विवर, अक्षर साहस, उद्योग, ( कि. वि. ) बेकिरीसे, अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात् ।

निर्देशिये ( वि. ) विनास्वामीका, धैर्यालक, अनाथ ।

निर्धन ( सं. ) मृत्यु, नाश, मरण, ध्वंस, मौत ।

निर्धन ( सं. ) निधि आधार, पात्र, स्थापन, सज्जाना, जगह, निवास ।

निधि ( सं. ) भाण्डार, सम्पत्ति रत्नावशेष, गड़ाहुषाकोष, समुद्र, भाण्ड ।

निद ( सं. ) नींद, निद्रा, शयन, सोना ।

निद ( वि. ) निंदा करनेवाला, दूसरों का दोष ढूंढनेवाला, परदोषानुसंधान कर्ता, चुगलखोर ।

निदधुं ( कि. ) कलह लगाना, निंदा करना, अपवाद करना ।

निद ( सं. ) अपवाद कुत्सा, गर्हा, कलंक, अयश दुर्नाम, बुराई ।

निदधे ( सं. ) निंदा करनेवाला कलंकित करनेवाला, निदक, अपवाद कर्ता, बुराई करनेवाला ।

निध ( वि. ) निदनीय, हेय, दुष्ट कुत्सित, गर्हित, कलंकनीय ।

निध ( सं. ) उत्पत्ति, उपज, जन्म, प्रकाश, पैदा, जन्म, फायदा, कर्म, उद्गम, जड़, निक्षेप ।

निधधुं ( कि. ) पैदा होना, निर्माण होना, उत्पन्न होना, जन्म होना ।

निधनधुं ( कि. ) पैदा कराना, रचना, बनाना, उपजाना ।

निध ( कि. वि. ) बहुत, अधिक, अत्यंत, अतिशय, सब, नितान्त, बिलकुल ( वि. ) लज्जारहित, वैश्रम ।

निधनिर्धन ( सं. ) अत्यंत दुष्ट, महान दुर्जन बिलकुल पाजी ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निधात ( सं. ) मृत्यु, पतन, मिरास, मरण, नाश, निधन, अधः पतन, मौत, ।

निष्ठावर्ण ( कि. ) निष्ठावर्ण, पार  
करना, रखा करना, सहारा देना,  
निष्ठावर्ण रक्षना, आश्रय देना ।  
निष्ठावर्ण ( वि. ) प्राप्त रहित, अवश्य,  
वैशक, निस्सन्देह ।  
निष्ठा ( सं. ) देखो निष्ठा  
निष्ठा-भ ( सं. ) नून, नोन, लोन,  
लवण, क्षार ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) नमक पात्र,  
लवण रखनेका पात्र, नोन रख-  
नेका बर्तन ।  
निष्ठावर्ण ( वि. ) अविश्वस्त,  
विश्वासघातक, धोकेबाज, कृतघ्न,  
अभक्त ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) कृतघ्नता,  
नाशकगुजारी, नैकीके बदल बदी,  
धोकेबाजी ।  
निष्ठावर्ण ( वि. ) विश्वस्त, भक्त,  
शुद्ध गुजार, कृतज्ञ ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) कृतज्ञता, एह-  
सानमन्दी, धन्यवाद, भक्ति ।  
निष्ठावर्ण ( वि. ) दूषा हुआ, प्रसित,  
दबा हुआ, बोरा हुआ, मग्न ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) देखो निष्ठावर्ण  
निष्ठावर्ण ( सं. ) आत्मत्रण, आह्वान,  
॥ आवाहन, म्यौता, बुझाहट, बेबता ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) तंगकोठरी,  
गुफा, तलघर, भूगर्भ में कंदरा ।

निष्ठावर्ण ( कि. ) स्थित करना,  
नियुक्त करना, नाम केना, नाम  
निर्देश करना ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) बन्दना, प्रार्थना,  
ईश्वर मजन, नमाज, मुसलमानों  
पूजन । [ पढ़नेवाला ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) भक्त, नमाज  
निष्ठावर्ण ( सं. ) शैवों, बाल,  
क्षेत्र, लोम ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) कारण, हेतु,  
निदान, प्रयोजन, वास्ते, लय,  
मतलब, भूमि, सबब, गर्ज, उद्देश,  
जरिया, झूठा दलील, बहाना,  
झूठा दिखावा ।  
निष्ठावर्ण-भेद ( सं. ) नेत्रोंके पलका  
स्पन्दनकाल, पलक, अति सूक्ष्म  
काल, विपल, क्षण, लग ।  
निष्ठावर्ण ( वि. ) आधा, अर्ध, १/२ ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) जामा, सभावक, कबा ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) शास्ता, शासन  
कर्ता, प्रभु, नियामक शासन कर-  
नेवाला, रणवान ।  
निष्ठावर्ण ( सं. ) निश्चय, अवधारण,  
निर्णय, निरूपण, प्रकार, धारा,  
दमन, निरोध, योगी, शैव,  
सन्तोष, तप, प्रतिज्ञा, अंगीकार,  
स्वीकार, कतर्न्यकर्म, कानून

कायदा, हुक्म, आज्ञा, वंश, सौर,  
तर्ज, विधि, तरीका ।

निम्नोत्तर (कि. वि.) विद्यमानकुल,  
बातरतीन, विधिपूर्वक, उचित  
येतिसे ।

निम्नित (वि.) कृत नियम, निय-  
मबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध ।

निर (सं.) शब्द के पूर्व लग कर  
हीनता या अभाव सूचक अर्थ  
बतानेवाली प्रत्यय, (कि. वि.)  
नहीं, बिना निश्चय, बाह्य, बाहर,  
उचित ।

निरंकुश (वि.) बाधाशून्य, अनि-  
वार्य, स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी, नियम  
निरादरपूर्वक कार्यकर्ता, स्वतंत्र ।

निरक्त (वि.) रक्तहीन, खूनहीन,  
पीला भुभला, फीका, जर्द ।

निगम (सं.) बाजारभाव, दर,  
भाव, वर्तमान मूल्य, जांच, परख,  
परीक्षा, देखभाल ।

निरूपण (कि.) निरखना, देखना,  
ताकना, निरीक्षण करना ।

निरुद्ध (वि.) निर्मल, तेजोमय,  
निष्कलंक, मूल या त्रुटि (देख-  
ताही) सर्वज्ञानी, अनन्तज्ञानी ।

निरुद्ध (कि. वि.) निविद्ध, घन,  
अनवकाश, सर्वदा, अविच्छेद,

अनवरत, असीम, अपरिधान,  
अनेक, सहस्र, सम्पन्न, सघन,  
सदाहुषा, अंतर रहित, पासपास ।  
निरंतरता (सं.) सनातनत्व,  
निरंतरता, समानता, सादृश्य ।

निरधार (वि.) देखो निर्धार  
निरधारण (कि.) देखो निर्धारण

निरपकारी (वि.) निष्पापी,  
निर्दोषी, निरपराधी, बे कसूर,  
निरपराध (वि.) अपराध शून्य,  
दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष ।

निरपराधी (वि.) दोषहीन, निर्दोषी  
अपराध रहित, बे कसूर ।

निरपराधीपक्ष (सं.) निर्दोषता,  
पवित्रता, साधुता ।

निरपेक्ष (वि.) स्वाधीन उदासीन  
लापरवाह अनपेक्ष, इच्छारहित ।

निरभिमान-नी (वि.) गर्व  
रहित, बे घमण्ड, गर्व शून्य,  
अभिमानहीन ।

निरभ (वि.) स्वच्छ आकाश,  
मेघ रहित, बादल रहित, साफ  
आस्मान ।

निरर्थक (वि.) अनर्थक, अप्रयोज-  
न, व्यर्थ, विफल, बे मतलब ।

निरुद्ध (सं.) शुद्धिहीन, मूर्ख,  
शून्य ।

**निरक्षुं** (वि.) पशुओंके चाल  
डाकना, चरने के लिये पशुओं के  
आगे चारा रखना ।

**निरक्षन** (सं.) व्रत, उपवास,  
निराहार ।

**निरक्ष** (वि.) रसहीन, बे स्वाद,  
रसामाव, नीरस, शुष्क ।

**निरक्षत** (सं.) छुटी, फुसत, आराम,  
शुद्ध, चैन, नीरस डाकस ।

**निरक्षरक्ष** (सं.) निवारण, दूरीकरण,  
वहिकरण, फैसला, न्याय, प्रबंध ।

**निरक्षर** (वि.) आकार रहित  
अक्षरी (सं.) आकाश, ईश्वर ।

**निरक्षर** (वि.) वेदविद्या रहित,  
आचार अष्ट, धर्महीन, देवनिदा,  
पाप, न्यायहीनता, आचरणहीनता  
जंगली, बहरी ।

**निरक्षर** (वि.) आधार शून्य,  
अनाश्रय आश्रयरहित शून्यस्थित ।

**निरक्षर** (वि.) अशोक, समस्त  
बे बाहर, बुद्धिसे परे । [स्वस्थ ।

**निरक्षम** (वि.) रोग रति, निरोग,

**निरक्षम** (वि.) खाली, सूना,  
ऊजड़, अन्धकार, अनाश्रय, अनाश्रय  
मित्रहीन ।

**निरक्ष** (वि.) आशाहीन, बे  
अरीसे, हताश, नाउम्मीद ।

**निरक्ष** (सं.) आशा हीनता, बे  
अरीसा, नाउम्मीदी ।

**निरक्षम-भित** (वि.) आश्रय शून्य  
निराश, निराश्रय,

**निरक्षर** (सं.) अमोजन अनशान  
मोजनाभाव, व्रत, उपवास ।

**निरक्षुं** (वि.) निराश्रय, अलग  
एकान्त, निर्जनस्थान बेमेल,  
दूसरा, जुदा, पृथक् ।

**निरिक्षक्ष** (सं.) अवलोकन, देखन,  
देखना, दर्शन, ईक्षण, ताक, घूर  
इकटक दृष्टि ।

**निरक्षर** (वि.) उत्तरहीन, अवाक,  
लाजवाब उत्तर देनेमें अममर्थ ।

**निरक्षर** (वि.) उत्साह हीन,  
निश्चेष्ट, नाउम्मीद ।

**निरक्षर-गी** (वि.) उद्यम हीन,  
उद्यमाभाव विशिष्ट, निकम्मा,  
निकाम, निश्चेष्ट ।

**निरक्षर** (वि.) नाशुकगुजार,  
अधन्यवारी, जो कभी, किसी पर  
कृपा या उपकार न करे । अनु-  
पकारी, अप्राप्त, अग्रिम ।

**निरक्षर** (वि.) उत्पात रहित  
हीरात्मक हीन, शांत, अनेकल ।

**निरक्षरविषय** (सं.) निर्विषय, पवि-  
त्र, साधुता ।

निर्दिष्ट ( वि. ) निरुपराध  
निर्दोष, साधु, भला ।

निर्दिष्ट-२५ ( वि. ) अनुपम, उप-  
माशून्य, अनुपम, बे मिलाऊ ।

निर्दिष्टोक्ति-३ ( वि. ) अनुचित,  
उपयोगमें न आने योग्य, बे कामका  
निकम्मा, व्यर्थ, जिसके उत्तरकी  
आवश्यकता नहो ऐसी बात ।

निर्दिष्ट ( वि. ) उपाय रहित,  
निराश्रित, बे तबदीर ।

निर्दिष्ट ( सं. ) निर्णय करना,  
बिनर्क करना, स्थिर करना, अव-  
धारण ।

निर्दिष्ट ( वि. ) स्वस्थ, तन्दुरुस्त,  
रोग रहित, आरोग्य संग ।

निर्दिष्टोक्ति ( सं. ) स्वास्थ्य आरो-  
ग्यता, तन्दुरुस्ती, नीरोगता ।

निर्दिष्ट ( सं. ) ब्रेष्ठन, अवरोध,  
घेरा, फांस, रोक, आड़ ।

निर्दिष्ट ( वि. ) रोक, अटकाव,  
अवरोधन, घेर, फांस ।

निर्दिष्ट ( वि. ) विस्तृत, निकला  
हुवा, पुनः, शीघ्र, कमबोर-  
निर्दिष्ट ।

निर्दिष्ट ( वि. ) बासरहित, गन्ध-  
शून्य, गन्ध हीन, बेबू ।

निर्दिष्ट ( कि. ) बहिर्गमन, निःसरण,  
भास्यवान, सौभाग्यशाली, सुखी ।

निर्दिष्ट ( सं. ) बहिर्गमन, बहि-  
रकी ओर गमन, निःसार, प्रस्थान ।

निर्दिष्ट-२५ ( वि. ) त्रिगुणातीत,  
गुण रहित, गुणग्रहणमनमानने  
वाला, गुण स्वभावसे परे (विषयता-  
जोंके लिये )

निर्दिष्ट ( वि. ) निर्दय, पापी, बृष्ण  
रहित, बे रहम, पाषाण हृदयी,  
संगदिल,

निर्दिष्ट ( वि. ) शब्द रहित, ज्ञानि  
रहित, प्रत्येक प्रकारका शब्द  
शब्द मात्र ।

निर्दिष्ट ( वि. ) अनरहित स्थानादि,  
अकेला, विजन, एकान्त ।

निर्दिष्ट ( सं. ) अमर, देवता, देव,  
अजर ( वि. ) बृद्धावस्था से  
रहित, जो पुराना न हो ।

निर्दिष्ट ( वि. ) जलशून्य, मरु-  
भूमि, जलरहित, बिनापानी ।

निर्दिष्टोक्ति ( सं. ) निर्ज-  
लैकादशी, जेष्ठ शुक्ल एकादशी,  
बहू एकादशी जिसमें आचमन के  
अतिरिक्त जल को पीना वर्जित है ।

निर्दिष्ट ( वि. ) सर्वथाजिताहुवा,  
बिलकुल पराजित, सम्पूर्ण रूपसे  
बधवर्ती ।

निर्दिष्ट ( वि. ) जिसने काम  
कोषादि को बस में न किया हो,  
विषयी, इन्द्रियवास ।

निर्दिष्ट ( वि. ) जीवात्मा रहित,  
प्राणशून्य, मराहुवा, मृत, दुर्बल,  
अन्त, कमजोर, हीन ।

निर्दिष्ट ( वि. ) पर्वत से झरनेवाला  
जल प्रवाह, पहाड़ का झरना,  
जलधारा, झरना जल प्रवाह ।

निर्दिष्ट ( सं. ) निश्चय, अवधारण,  
स्थिरीकरण, विचार, तर्क, चर्चा,  
विरोध, परिहार, सिद्धान्त वाक्य,  
सार, विधान ।

निर्दिष्ट ( वि. ) निश्चित, स्थिर,  
मंकल्पित ।

निर्दिष्ट ( वि. ) निष्ठुर, कठिन,  
दयाशून्य, संगदिल, बेरहम,  
कृपाहीन बेविल ।

निर्दिष्ट ( सं. ) निष्ठुरता, दया-  
शून्यता बेरहमी, संगदली ।

निर्दिष्ट ( सं. ) अनुदार, निदेश,  
नीच । [ कथन, निरूपण, निर्णय ।

निर्दिष्ट ( सं. ) आज्ञा, आदेश, प्रस्ताव

निर्दिष्ट-धी ( वि. ) दोषरहित,  
अपराधशून्य, निष्कलंक निष्पाप ।

निर्दिष्ट-नी ( वि. ) दरिद्री, कंगाल,  
दीन, गरीब, धनरहित, धनहीन ।

निर्दिष्ट ( वि. ) दुर्बल, कमजोर,  
निर्बल ।

निर्दिष्ट ( क्रि. वि. ) निश्चय, निश्चय  
आतिगुण और किना को लक्ष्य  
में रखकर आत्मादि की उत्कृष्टता  
से सजातीय से पृथक् करना, मथा  
मनुष्यों में ब्राह्मण, गौओं में  
कालीगौ, पथिकों में शीघ्रगामी  
अच्छ है ।

निर्दिष्ट ( क्रि. ) चुनना, निर्णय  
करना, निश्चय करना, स्थिर  
करना ।

निर्दिष्ट ( वि. ) असावधान, अचेत,  
शाफिल, बेहोश । [ दुर्बल ।

निर्दिष्ट ( वि. ) अशक्त, कमजोर,  
निर्दिष्ट ( सं. ) कमजोरी,  
दुर्बलता ।

निर्दिष्ट ( वि. ) मूर्ख, बुद्धिहीन,  
शठ, जड़, बेवकूफ ।

निर्दिष्ट ( सं. ) बेवकूफी, शठता,  
मूर्खता ।

निर्दिष्ट ( वि. ) अशिक्षित बेसीखा  
बेतालीम, अनजान, बोधरहित ।

निर्दिष्ट ( वि. ) अक्षररहित, निडर,  
साहसी, बृह, ठीठ ।

निर्दिष्ट ( सं. ) अक्षरहीनता, निडर-  
ता, साहस, बृहता ।

निर्भर ( सं. ) जिस में अधिक भार हो, अतिशय, अतिमात्र, जो अत्यधिक हो, पूर्ण, परिपूर्ण ।

निर्भरत्सन्ना ( सं. ) डाट, निन्दा, तिरस्कार, त्याग, चिन्कार, सिद्धकी, गाली ।

निर्भर्य ( वि. ) बढाकिस्मत, माग्यहीन, बेतकद्वार ।

निर्भरत ( वि. ) भ्राति रहित, निश्चय, बेशक निश्चङ्क ।

निर्भेध ( वि. ) अगम बेगुजर, अभेद्य, जो बेधा न जा सके ।

निर्भेद्यता ( सं. ) अगमता, अभेद्यता ।

निर्भेषु ( क्रि. ) निर्माण करना, रचना, बनाना, पैदा करना, कारण होना, उत्पन्न करना ।

निर्भेष ( वि. ) मल रहित, स्वच्छ परिष्कृत, शुद्ध, उजला, पवित्र ।

निर्भेषता ( सं. ) सफाई, शुद्धता, पवित्रता, उजळ्ळन ।

निर्भेषा ( सं. ) वृक्ष, पेड़ ।

निर्भेषु ( वि. ) निर्मित, गठन, रचना, प्रथन, सृष्टिकरण ।

निर्भेषुकरता-र्या ( सं. ) निर्माता, रचक, रचयिता ।

निर्भर्य ( वि. ) मायारहित, छल कपटरहित ।

निर्भर्य ( वि. ) गुणहीन, अव्यय, निरुम्मा, विनीकूल, निरस पुष्प, बासीफूल ।

निर्भर्य ( सं. ) बह पुष्प जो देवता को अर्पण कर दिया गया हो या बासी हो गया हो ।

निर्भर्य ( वि. ) रचित, कृत, बनाया हुआ, गठित ।

निर्भर्य ( वि. ) निराश, विमुक्त, आशारहित, ना उम्मेद ।

निर्भर्य ( वि. ) मूल रहित, उल्ला-बाहुवा, बेनुनिवाद, बेजड़, बिना-मूलका ।

निर्भर्य ( वि. ) मोह रहित, निर्द्वय, कठिन, मायारहित, प्रेमहीन ।

निर्भर्य ( सं. ) कषाय, क्षात्र, वृक्षोंका रस, गोंद, काका, अर्क, रस ।

निर्भर्य ( वि. ) युक्तिरहित, अनुपयुक्त अनुचित ।

निर्भर्य ( वि. ) लज्जाहीन, नकटा, बे शर्म, बेहया, लाजरहित

निर्भर्य-शी ( वि. ) लोभ रहित लोभ हीन, अलोभी, बे लालच ।

निर्भर्य ( सं. ) व्याख्या, टीका विवरण, अर्थ,

निर्विक ( वि. ) बंध हीन, कुल-  
हीन, पुत्र रहित, संतान रहित,  
कन्यारहित, अनाथ कुल वा वंशका  
वाला । [ नग्न ।

निर्विक ( वि. ) बन्ध रहित, नंगा

निर्विक ( वि. ) आखिर, अन्तिम  
निबन्ध, अन्त्य, ( सं ) मोक्ष,  
मुक्ति परमपद ।

निर्विक ( सं. ) निष्पत्ति, समाप्ति  
जीविका रोजी, कार्यसाधन ।

निर्विक ( वि. ) वह ज्ञान जिससे  
ज्ञात और ज्ञेयका विभाग विशेष्य  
और विशेषण रूप सम्बन्ध का नाम  
तथा गुणत्व का सम्बन्ध दूर हो  
गया हो, जीव और ब्रह्मकी अख-  
ण्डाकार एकत्व विषयक बुद्धि का  
सातकज्ञान, न्याय शास्त्र में वह  
ज्ञान जो प्रकारता आदिसे रहित  
सम्बन्धान बगाहि और इन्द्रियों  
के गोचर नहीं । देवता ।

निर्विक ( वि. ) विकार शून्य  
वृणा रहित, एक रस, एक भाव  
कोच काम से रहित ।

निर्विक ( वि. ) अवाच, वाधार-  
हित अक्षेप, अनुप्रेष ।

निर्विक ( वि. ) आशाहीन,  
निराश, दबा हुआ, नीचा किया  
हुआ ।

निर्विक ( वि. ) विहाय शून्य,  
आपत्ति रहित ।

निर्विक ( वि. ) निर्वोच, विचार  
रहित, ज्ञान हीन । [ रहित,

निर्विक ( वि. ) बेजहर, विष

निर्विक ( सं. ) सिद्धि, निष्पत्ति,  
निष्पाद, वृत्ति रहित, आराम  
विश्राम, तसल्ली, शांति ।

निर्विक ( वि. ) प्राप्त, शात  
पहुँचाहुवा ।

निर्विक ( सं. ) सम्पूर्णता, परिष्क-  
र्णता, योग्यता, कामयाबी ।

निर्विक ( सं. ) सासारिक बन्धनोसे  
मुक्त, दृढ प्रमाणत्व, यथार्थता,  
वृणा अक्षेप ।

निर्विक ( वि. ) आपत्ति रहित,  
बेरोक, स्वतंत्र,

निर्विक ( वि. ) कुटेव रहित,  
बुरी आदतोंसे दूर, व्यसन रहित।

निर्विक ( सं. ) मकान, वास स्थान,  
रहने का मकान, घर, गृह, गेह ।

निर्विक ( सं. ) कपाळ, मस्तक,  
माथा,

निर्विक ( सं. ) वे अदबो  
विक्रमजता, वे शरणी ।

निर्विक ( वि. ) निर्लज्ज, बेजर्मी ।



निष्ठापुं ( कि. ) बाहर होना,  
लौटना, छावित करना, परीक्षा  
करना, तजकबा करना, होना,  
प्रत्यक्ष होना, स्पष्ट होना, प्रसिद्ध  
होना, नाम पाना प्रतिष्ठा पाना ।

निष्ठाडे ( सं. ) फैसला, तरतीब,  
निर्णय, विचार बन्दोबस्त, प्रबन्ध  
निवारण ( सं. ) रोक रुकावट,  
अटकाव, उपशमन, प्रशमन,  
निराकरण ।

निवारण-धुं ४२पुं कि. ) बाधा दूर  
करना, निवारना, हटाना, प्रशमित  
करना, उपशमित करना, अलग  
करना ।

निवास ( सं. ) गृह, घर, आश्रय,  
रहनेका स्थान, मकान, रहन ।

निवासी ( वि. ) रहनेवाला, बसनेवाला,  
बास कर्त्ता, निवास करनेवाला ।

निश्च ( स. ) मुक्त, अवकाश  
प्राप्त, बंधन रहित, विधाम; निरत,  
लौटा हुआ, हटा हुआ, चोरज,  
डाकस, मुक्त, चैन, सुगम ।

निश्चि ( स. ) परिश्रम से मुक्त,  
मिहनत से छुटकास ।

निवे ( सं. ) देखो निष्ठाडे

निवेद ( सं. ) प्रार्थना, विचन्ती,  
विनय, अभिलाष प्रकाश, मनोरथ

कमन, हरकतवाला, सम्मान शून्य  
वतलाना ।

निष्ठा ( सं. ) रात्रि, रात, स्वप्नी,  
शर्वरी, रात्रिनि, शब्द ।

निष्ठादिन ( सं. ) प्रतिदिन, द्वा-  
दिन, अहर्निधि, शबरोज ।

निष्ठा ( सं. ) रात्रि, रात, रक्की  
नशा, मतवालापन, मस्ती ।

निष्ठाकर ( सं. ) चन्द्रमा, बिजु,  
इन्दु, चांद ।

निष्ठाभोर ( सं. ) नशेबाज, नशा-  
करनेवाला मादक द्रव्य सेवी ।

निष्ठाभर ( सं. ) राक्षस, चोर,  
भृगाल, उलूक, उग्र, सर्प, कुटेरा,  
चकवाक, चकवा, चमगीबट  
रातमें घूमने वाला ।

निष्ठाधुन ( सं. ) झंडा, ध्वजा,  
पताका, चिन्ह, पहिचान, लक्ष ।

निष्ठाणी-धुनी ( सं. ) चिन्होनी,  
चिन्ह, पहिचान, लक्षण, संकेत  
स्मरण, यादगार ।

निष्ठागरी ( स. ) कूटने का पत्थर,  
पानने का पत्थर, लोखी, मूसली ।

निष्ठाण ( स. ) पाठशाला, विद्या-  
लय, मन्दिर, मकतब, स्कूल,  
कालिभ, गुरुगृह, पढ़नेका स्थान ।

निष्ठावर्ण ( सं ) पाठशाला में प्रवेश करने के समय सरस्वती पूजन, पट्टी पूजन, विद्यारंभ संस्कार ।

निष्ठावर्ण ( सं ) विद्यार्थी, छात्र, शिष्य, पढैया, पढनेवाला ।

निर्गोत ( सं ) जुल्लावदायक एक बूटी विशेष, विरेचक बूटी विशेष निर्गोत नामक प्रसिद्ध औषधि ।

निश्चय ( वि. ) दृढ, स्थिर, अचल, अटल एक रूप ।

निश्चय ( सं. ) स्थिर, अचल, असंशय, निर्णय, सिद्धान्त, अवधारण, विश्वास, प्रतिज्ञा, प्रवचन, न्याय विचार, भरोसा, साहस, ( क्रि. वि. ) अवश्य, निस्सन्देह, जरूर, सचमुच, वास्तविक ।

निश्चयपूर्वक ( क्रि. वि. ) दृढता युक्त, विश्वास पूर्वक, अवश्य ।

निश्चय ( वि. ) अचल, स्थिर स्थावर ।

निश्चित-श्चत ( वि. ) निर्णीत, स्थिरीकृत, सिद्धान्तित, निश्चय किया हुआ ।

निश्वास ( सं. ) बाहिः श्वास, प्राण-वायु, निःश्वस, श्वास ।

निश्चय ( सं. ) निश्चय, शंका रहित, अवश्य, निस्सन्देह, निश्चयक ।

निष्ठा ( सं. ) धीवर, मछवाहा, स्वर विशेष, सातवा स्वर " नी "

निषिद्ध ( वि. ) वर्जित, निवारित, रोका, प्रतिषेधित, मनाकिया हुआ दोषयुक्त ।

निषेध ( सं. ) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण, बारण, मना, ना, इन्कार ।

निषेधक ( वि. ) निषेध कर्ता, रोकनेवाला, निवारण करनेवाला ।

निषेधपुं ( क्रि. ) रोकना, वर्जित करना, मनाकरना, निवारण करना

निष्कटक ( वि. ) काटों रहित, जिस में काटे न हों, अकण्टक, कष्टक शून्य, निरुद्दोग, बेरोक टोक ।

निष्कपट-टी अकपट, सीधा, सरस, कपट शून्य, बेदगा ।

निष्कल ( वि. ) निर्दय, दयाशून्य करुणा रहित बेरहम ।

निष्कर्ष-र्ष ( वि. ) श्लोधादि रहित, इच्छारहित, अकर्मी, कर्म रहित, अलस, निष्काम ।

निष्कल ( वि. ) निर्दोष, अदोष, अपराधहीन, शुद्ध दीप्ति शील, बे दाग, कलंक रहित, बे रेश ।

निकृष्ट ( सं. ) देखो निकृष्ट

निकृष्ट ( वि. ) व्यर्थ, बे फायदा, अकारण, फुजूल ।

निकृष्ट ( कि वि ) कारण रहित बेसबब, निष्प्रयोजन ।

निकृष्ट ( वि. ) चितारहित, निर्दिष्ट, बे फिक्र ।

निकृष्ट ( सं. ) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट तत्त्व ।

निकृष्ट ( सं. ) निष्पत्ति, नाश, अंत, निर्वहण, यात्रा, हठ विश्वास, पूर्ण भाक्ति, बर्मे विश्वास धर्म तत्परता, विश्वास, स्थिरता, धर्मादिका यकीन ।

निकृष्ट ( वि ) परुष, कठोर, निर्दय, कठिन, क्रूर, दुराचार, सख्त ।

निकृष्ट ( वि. ) बिनापत्तौका, पत्र रहित, सूखा वृक्ष, पत्ररहित, करील वृक्ष ।

निकृष्टपात-ती ( वि. ) पक्ष रहित, पक्षपात शून्य, बे शिफारिश, न्यायी सच्चा, मुन्सिफ, ।

निकृष्ट ( वि. ) निरपराध, निर्दोष, पापहीन, बेकुसूर, शुद्ध, पवित्र ।

निकृष्ट ( वि. ) निरर्थक, अहे-तुक, अकारण प्रयोजनरहित, व्यर्थ बे सबब, बे मतलब ।

निकृष्ट ( वि. ) फलरहित, निष्फल, निरर्थक, व्यर्थ, फुजूल ।

निकृष्ट ( वि. ) सन्तात हीन, जिसके कोई बालक न हो, बाल ( स्त्री )

निकृष्ट ( वि ) सोपान, नमेनी, काष्ठ सोपान, लकड़ी का बना हुआ उपर चढ़ने का चढाव ।

निकृष्ट ( कि. ) निकलना, बाहिर आना, फूट आना, प्रकट होना ।

निकृष्ट-शुद्ध ( सं. ) चिन्ह, पहिचान, चिन्हहीन, सकेत, सबूत, निशान, मोहर, सिक्का, सैन, इशारा ।

निकृष्ट ( सं. ) आह, ठंडी सॉस, निःश्वास, गहरी सॉस, शीर्ष स्वाद, हाय, कराह, आप, धिक्कार ।

निकृष्टनाभवे ( कि. ) लंबी सॉस लेना, ठंडी सॉस त्यागना, हाय मारना, आह भरना, आप देना, धिक्कारना ।

निकृष्ट ( कि. ) बचना, उद्धार पाना, त्राण पाना, मुक्त होना, मोक्ष प्राप्त करना, छूटना, उबरना ।

निकृष्ट ( सं. ) मुक्ति, मोक्ष छुटकारा, बचाव, उद्धार, त्राण, रक्षा ।

निरालेख (वि.) तेजहीन, प्रताप  
रहित, मोटा, पीला, फीका,  
धुंधला, जर्ब ।

निरालेखी (वि.) निरमिलाप,  
निर्लोमी, बाच्छारहित, स्पृहाशून्य,  
निष्पक्व, बे गरज, अपक्षपाती ।

निरालत (सं.) बाबत, सम्बन्धित

निरालत (वि.) बयसूरत, बे डील,  
सार हीन, रस रहित, बेजान,  
बे स्वाद, फीका, सीठा, कुस्ताडु ।

निरालत (वि.) बेसाक, अवश्य,  
संशय रहित, निःसन्देह, शंका-  
शून्य, बे शुबहा ।

निरालत (सं.) नाश कर्ता, मारने-  
वाला नाशक, बर्बादी, नष्ट करने  
वाला ।

निराली (सं.) कलेवा, प्रातःकालीन  
भोजन, जलपान, फलाहार ।

निरालु (कि.) अच्छीतरह देख  
मालकरना, खूब जान पड़तालना ।

नीच (सं.) सिर के बालों की  
छोटी जूँ, लीख, जूँ के अण्डे ।

नीचतु (कि.) प्रकाशित होना,  
साफ होना, निथरना, उजला  
होना ।

नीचाये (सं.) कंघा, कंघी, केस  
मारनेवा, बाल काटने का (कंघा) ।

नीच (सं.) निम्न, शायन, सोना,  
अपकी, उँहाई, आलस ।

नीचास (सं.) प्रशंसा, सरहना,  
तारीफ, स्तुति, कीर्ति, वामवरी ।

नीक (सं.) नाली, मोरी, गटर,

नीक (वि.) मुसलमानोंका विवाह  
संस्कार, यावनी विवाह, निकाह ।

नीकु (वि.) शुद्ध, पावित्र, साफ,  
स्पष्ट, उत्तम, प्राण, उम्दा ।

नीधा (सं.) दृष्टि, आँख, देख,  
ध्यान, विचार, समझ, निगाह ।

नीच (वि.) अधः निम्न, अपकृष्ट,  
अधम, इतर, अधम्य, कमीन ।

नीच उच (वि.) नुरा मला, छोटा  
बड़ा, लघु वीर्य ।

नीचपथु (सं.) लुप्तता, नीचता,  
अधमार्ह, दुष्टता, कमीना पना ।

नीचधु (सं.) नीचा, धीमा, कमी,  
ना, छोटा ।

नीचाध-पथु (सं.) कमीन पन,  
ओछापन, शूद्रता, अधमता, नाचता  
लघुता, छोटाई । [ कान ।

नीचाधु (सं.) उतार, डाल, लुप्त-

नीचा भुंड़ी करी (कि.) लजित  
होना, समिदा हाना, नीचा सिर  
करना ।

नीत्यु ( वि. ) विम्ब, नीच, लघु, छंटा, कमीन, ओछा, क्षुद्र, धूर्, कम, अधम ।

नीत्यु धामपुं ( कि ) तुच्छ माळूम होना, कमलगना, छेद विदित होना ।

नीये ( कि. वि. ) तले, पेंदेमें ।

नीये उपर ( कि. वि. ) तले उपर ।

नीय ( सं. ) देखो निः ।

नीयत ( सं. ) पापोंसे छुटकारा, क्षमा, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, नजात ।

नीट ( सं. ) नाकका बलगम, नासिका जनित कफादिमल, रीट, रेड ।

नीटपु ( कि ) किसलजाना, खिसक जाना, सरकजाना, रपट जाना ।

नीत ( कि. वि. ) देखो नित्य ।

नीतर ( कि. वि. ) नहीं तो, और, भी, परतु, अथवा, शायद, किंचित क्या जाने, ऐसा न हो कि, कदाचित्, और प्रकार से, दूसरों बातोंमें, या, किंवा ।

नीतरा ( सं. ) उतार, घटाव, कमी, धीरे धीरे कम होना ।

नीति ( सं. ) न्याय्य व्यवहार, आचार, नीतिविद्या, शास्त्रविशेष, योग्यता ।

नीतिविपदेशक ( सं. ) न्यायशास्त्रका उपदेश, नीतिशास्त्रका उपदेशक ।

नीतिशब्दा ( सं. ) हितोपदेश, कुर उपाख्यान, ग्रन्थ विशेष, न्यायकथा ।

नीतिभय ( वि. ) बाजबी, ठीक, उचित, सदसदाचार सम्बन्धी, नीतियुक्त ।

नीतिमान-वान ( वि. ) नीतिज्ञ, नीतिशास्त्र विशारद, राजमन्त्री, नीतिशास्त्र वेत्ता ।

नीतिवचन ( सं. ) हितवचन, शास्त्रवाक्य, उचित सूचना ।

नीतिशास्त्र ( सं. ) नीतिविद्या, हितोपदेश देने वाला शास्त्र ।

नीट्यु-दायु ( सं. ) मोघा, घाब-फूस, निकम्मे पौधे ।

नीदर ( सं. ) नौद, आलस, क्षपत्री, निद्रा । उषाई ।

नील ( सं. ) आचार, समुद्र, भाण्ड, आगार, कोष, खजाना ।

नीलाडे ( सं. ) मट्टी, भट्ट, भावा, अवा, बड़ी भट्टी ।

नीम ( सं. ) निषय, अवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकार, धारा, दमन, निरोध, नियम ।

नीमभाग ( सं. ) आधा, अर्द्ध, १/२

नीमभेजे ( सं. ) गोलाई, गोलाई का अर्द्ध भाग ।

नीमक्षीम ( सं. ) अर्द्धवैद्य, मूर्ख हकीम, अधूरा वैद्य, मिथ्या चिकित्सक, ठगवैद्य, कच्चाहकीम ।

नीलकण्ठी (सं.) मिथ्या चिकित्सा,  
झूठी हिकमत ।

नीलार (सं.) एक प्रकार के लाल  
रंग के चावल, चावल विशेष ।

नीलाण (सं.) बाल, रोवां, रोम,  
केस ।

नीले (वि.) आधा, अर्ध, ०॥,  
(क्रि. वि.) आधेद्वारा, आधेपर ।

नीलेभि (वि.) आधोभाज,  
आधा और आधा, आधों से,  
आधे आधे ।

नीले (सं.) जामा, सभावज,  
झा, गाउन, संया ।

नीले (सं.) पानी, जल, रस ।

नीलेशुंडी (सं.) औषधि विशेष ।  
पौधा विशेष, नीलशेफालिका पुष्प,  
एक औषधि का नाम, पुष्प  
विशेष, संभालू ।

नीले (सं.) बांस जो नौका को  
सँभाल रखने के लिये लगाया  
जाता है ।

नीले (क्रि.) पशु को घास  
हत्यादि मत्स्य पदार्थ खाना ।

नीले (वि.) रसहीन, बे स्वाद,  
इस्वादु, शुष्क, सूखा, बेगजा,  
बीठा, फीका ।

नीले (सं.) तारु, तारु का रस ।

नीले-धु (वि.) हरा, रंग विशेष,  
कालाबन्दर ।

नीले (सं.) शिव, महादेव,  
शंभु, मोर, मयूर, शिखी, पक्षी  
विशेष । [ विशेष ।

नीले (सं.) नीलकातमणि, रत्न

नीले (सं.) एक प्रकार के  
लाल रंग के चावल, चावलों की  
एक जाति विशेष ।

नीले (सं.) स्त्री की नाभि के नीचे  
वज्र ठहराने के लिये गठान,  
पूँजी, जैनियों का व्रत जिसमें  
गुड़, घी सेल आदि वर्जित है ।

नीले (सं.) नष्टा, बेहोशी, मत-  
वालापन, मस्ती, गफलट, मद ।

नीले (वि.) नशेबाज, मद्यपी,  
मादक वस्तु सेवन करने वाला ।

नीले (सं.) मसाला, हत्यादि  
पीसने का चपटा पत्थर ।

नीले (सं.) पत्थर की मूसली,  
खोबी, मसाला आदि पीसने की  
लोबी ।

नीले (सं.) औषधि विशेष ।

नीले (सं.) काला तिल या  
मसा ।

सुशब्द-टीका ( सं. ) सिद्धान्तबोध,  
जांचनेवाला, दोष दूढ़ने वाला,  
कुतर्क, विदूषक ।

सुशब्द-टीका ( सं. ) सिद्धान्तबोध,  
दोषासु सधान, कुतर्कना, छेड़छाड़ ।

सुशब्द-टीका ( सं. ) बिन्दु, सिफर  
बिन्दी, बोली, भाषा, ँप, विचार  
अहंकार, फारसी अक्षरों के ऊपर  
नीचे लगने वाले बिन्दु ।

सुशब्द-टीका ( सं. ) हानि, टोटा, घाटा  
क्षति, कमी, घटी, न्यूनता, हर्ज ।

सुशब्द-टीका ( वि. ) हानिप्रद,  
क्षतिकारक, अहितकर, दुःखद ।

सुशब्द-टीका ( सं. ) हर्जा, हानि ।

सुशब्द ( वि. ) अधन्यवादी,  
निरलज्ज, बेशरम, बेहया, नमक-  
हराम, गुरुहीन ।

सुशब्द ( वि. ) जिसके गुरु न हो,  
बेगुरु का, विश्वासघाती, अभक्त ।

सुशब्द ( कि. ) निर्मल करना,  
साफ करना, शुद्ध करना ।

सुशब्द ( वि. ) असम्पूर्ण, किंचित,  
कम, थोड़ा, अल्प, न्यून ।

सुशब्द ( सं. ) चमक, दमक, ताजगी,  
नवीनता, ( मुक्ती ) स्वस्थता ।  
वीरता, दिठाई, शूरता, बहादुरी  
भाड़ा, रुपया, रुपयों का लेनदेन ।

सुशब्द ( सं. ) उज्ज्वलता, चमक,  
दीप्ति, दमक, सुन्दरता ।

सुशब्द ( सं. ) चमकीला, साफ,  
चमकदार, नवीनता, चेतन्यता ।

सुशब्द ( वि. ) नया, नवीन, अवि-  
नव, ताजा, अमीक ।

सुशब्द ( वि. ) कम, थोड़ा, अल्प,  
किंचित, असम्पूर्ण न्यून ।

सुशब्द ( वि. ) नवीनता, उज्ज्वल,  
तजागी, मुखकी काति, वीरता ।

सुशब्द ( सं. ) तोतेको आति का एक  
पक्षी विशेष, ( वि. ) चमकीला,  
दमकीला, चटकीला, मटकीला ।

सुशब्द ( सं. ) औषधिकी विधि,  
सेवन विधि, नुसखा ।

सुशब्द ( सं. ) नाच, नर्तन, नाचन्य ।

सुशब्द ( सं. ) नरपति, राजा,  
नृपाल, सम्राट, बादशाह, भूपति,  
भूपाल ।

सुशब्द ( सं. ) राजगद्दी, राजा  
के बैठने का आसन, शाहीतख्त,  
सिंहासन ।

सुशब्द ( सं. ) प्रधान मनुष्य, नर-  
श्रेष्ठ, नरशार्ङ्ग, विष्णुका चतुर्थ  
अवतार जिसने सत्ताग्रही प्रहल्य-  
दकी रक्षा कर उसके पिता हिरण्य-  
कशिपुको मारा था ।

ने (अन्व.) और, तदनन्तर, (उप.) को ।

ने३ ( वि. ) मला, अच्छा, ईमान-दार, धार्मिक, बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, सदाचारी, उच्च, उन्नत ।

ने३ असंशत ( वि. ) अच्छे मिजाजका, सरल स्वभावका, धार्मिक विचारवाला, महत्पुरुष ।

ने३भा३ ( वि. ) सदिच्छा, शुभ-चित्तन ।

ने३ग३त ( वि. ) सम्य, शिक्षित, सुशील, दयावन्त, मिहिरबान, देशी

ने३न३२ ( वि. ) उत्तम निगाह कृपादृष्टि शुद्ध चित्तवन, पवित्रा-त्ताःकरण, पावनविचार ।

ने३ना३ ( वि. ) ईमानदार, यशस्वी, नामवर, धर्मात्मा, दयालु, कलक रहित ।

ने३ना३भा३ ( वि. ) पूजनीय, आदर सत्कार के योग्य, माननीय ।

ने३ग३प्त ( वि. ) धार्मिक, सृकृति, चाद चरित्र, भलामानुस, सज्जन ।

ने३ग३भी ( सं. ) मलाई, साधु-शीलता, धर्म, पुण्य, धार्मिकता, सच्चरित्रता ।

ने३गे३धी ( सं. ) धार्मिक वार्ता-काप, अच्छी बातचति, उत्तम-भाषण, पवित्र बोली ।

ने३स३भा३ ( सं. ) सवुपदेश, अच्छी सलाह, अच्छी नसीहत, धार्मिक शिक्षा, उचित परामर्श ।

ने३री ( सं. ) मलाई, सज्जनता, अखंडित्व, सत्थापन, शुद्धता, सफाई, उन्नति, उच्चता, भलम-नसी, धार्मिकता, सच्चरित्रता ।

ने३री ग३दी ( सं. ) मलाबुरा, हानि, क्षम, मलाईबुराई ।

ने३३ ( सं. ) आज्ञा, हुक्म, सासन, उपदेश, इजाजत, आवेश ।

ने३पु ( कि ) खाना, भक्षण करना, भोजन करना, खा लेना ।

ने३ग३३ ( सं. ) नजर, दृष्टि, आँख, नेत्र, चितवन, देख, परख ।

ने३३ ( सं. ) हुक्मेकी नली, हुक्मे की बह नली जिसपर बिलम रखी जाता है ।

ने३ग३३ ( सं. ) नजारा, तिरछी, चितवन, हगवाण, कटाक्ष ।

ने३ग३ ( सं. ) बल्लम, भाला, बछी, शूल ।

ने३ ( कि. वि. ) निश्चयपूर्वक, अवश्य दृढ, पक्का, अवश्यभावी ।

ने३ ( वि. ) पास, निकट, नजीक, समीप, नजदीक, कने ।

ने३३ ( सं. ) स्नेह, प्रेम, प्रीति, मुहब्बत, छोह, मिहिरबानी ।



नेत्र ( सं. ) आँख, नेत्र, चक्षु, दृष्टि, अक्षि, नयन ।  
 नेत्र ( सं. ) नेत्र, एक दृष्टिविशेष जिसकी शाखा की छड़ी बनती है, नेत्र, आँख, चक्षु ।  
 नेत्र ( सं. ) दही मथते समय रई को बाधनेवाली रस्ती, मथानी की रस्ती ।  
 नेत्र ( सं. ) अप्रगामी, अगुवा, पथप्रदर्शक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, व्यवस्थापक, महात्मा, सुपथगामी ।  
 नेत्र ( वि. ) अनन्त, नहीं, ऐसा नहीं, जिसका पार न हो, अपार ।  
 नेत्र ( सं. ) चक्षु, नयन, अक्षि, आँख ।  
 नेत्रक्ष ( सं. ) इशारा, सैन, आँख की मार, नजारा, तिरछी चितवन ।  
 नेत्रक्षणी ( सं. ) आँखों का इशारा, आँखों की झपकी का संकेत ।  
 नेत्रक्षेत्र ( सं. ) आँखों द्वारा किया हुआ इशारा, नजाराबाजी ।  
 नेत्र ( सं. ) देखो नेत्र ।  
 नेत्रवैद्य ( सं. ) डाक्टर, जो आँखों का इलाज करता हो, नेत्र चिकित्सक, आँखों का हकीम ।  
 नेत्र ( सं. ) वेश, अलङ्कार, भूषण, रंगभूमि, वेशस्थान, परदा,

नेत्र ( सं. ) एक औषधी विशेष जो जुल्लाम के काममें आती है ।  
 नेत्र-पुत्र ( सं. ) शिबों के पैरोंमें पहिरने का शब्द युक्त आभूषण, नूपुर, पायजेब, पैरमें पहिने का भूषण ।  
 नेत्र ( सं. ) चुनट के पट्टी लगी हुई जिसमें नाडाडोरी या काया डाला जाता है, जैसे चाचर अर्थात् लहंगे आदिमें ।  
 नेत्र ( सं. ) नियम, वेला, समय, रुळ, कायदा, निश्चय, एक तीर्थङ्कर ।  
 नेत्र ( सं. ) पानी भरने के लिये कुए पर जो लकड़ी का चौकड़ा लगाया जाता है ।  
 नेत्र ( सं. ) देखो नेत्र ।  
 नेत्र ( कि. ) देखो नेत्र ।  
 नेत्र ( वि. ) न्यारा, अलग, जुदा, पृथक । [ समीप, कने ।  
 नेत्र ( वि. ) नजदीक, पास, निकट, नेत्र ( सं. ) वर्षाकाल में वह छोटा गड्ढा जिस में से जल बहता हो ।  
 नेत्र-वां ( सं. ) छप्पर के ऊपर के छपरैलों के छिद्र, वह जल जो छपरैलों पर से गिरता हो, छपरैलों की वह नाळी जिस में से पानी बहकर नाच गिरता है ।

नेत्रे भ्रष्टं ( कि. ) मूलव्यवस्था,  
विस्मयना, विस्मरण होखाना ।

नेत्र ( सं. ) पायलेव, नूपुर,  
आभूषण विशेष, पदाभूषण ।

नेत्रक्ष ( सं. ) बेड़ी, जंजीर, बंधन,  
पैरों में डाली जाने वाली लोहे की  
बेड़ी ।

नेत्रक्षे ( कि. वि. ) वह जल जो  
कि खपरैलों में से खूब गिरता है ।

नेत्राक्षी ( सं. ) वह स्थान जहाँ  
पर खपरैलों में से पानी गिरता है ।

नेत्राक्षे ( सं. ) कौर, डुकड़ा, प्रास,  
कुक्का ।

नेत्रुं ( सं. ) नब्बे, दसकमसां, ९० ।

नेत्र्यासी ( सं. ) एक कम नब्बे,  
८९ संख्या विशेष ८० और ९ ।

नेत्र-स ( वि. ) कम नसीबका,  
छूटे भाग्यका, दरिद्री, कंजूस,  
अपराधकुनी ।

नेत्र ( सं. ) म्वाले की झोंपड़ी,  
वह झोंपड़ियाँ, जहाँ पशु चराते  
हैं वहाँ चर बाड़े बांधते हैं जो  
वे झोंपड़ी जो पशु चराने वाले  
बांगल से बांध लेते हैं ।

नेत्री ( सं. ) कंधरे का झुमिया,  
गन्धी आदि बंधा करने वाला ।  
बाँव में परचूनी की हुकान करने  
वाला ।

नेत्रा ( सं. ) आस्था, यकीन,  
विश्वास, निष्ठा, पत, भरोसा ।

नेत्र ( सं. ) स्नेह, प्रेम प्यार,  
प्रीति, चिकनाहट, चिकणता ।

नेत्रे ( सं. ) पूर्ववत् ।

नेत्ररी ( सं. ) नास्ता, कलेबा,  
हुंगार, फलाहार, जलपान, प्रातः-  
कालीन भोजन ।

नेत्रा ( सं. ) देखो नीरभ ।

नेत्रे ( कि. वि. ) हमेशा, सदैव,  
सदा प्रतिदिन, सर्वदा, नियम  
पूर्वक ।

नेत्रे ( सं. ) नहर, कृत्रिम नदी,  
खेतों में जल पहुंचाने के लिये  
नदी से लिए हुए जल के लेजाने  
का मार्ग, कृत्रिम नाला ।

नेत्र ( सं. ) तंग गली, तंग नाली,  
नल, सकरामार्ग, हुक्का की नली ।

नेत्रे ( सं. ) नय, नैचा, हुक्का  
में लगाने की नलिका जिसपर  
चिलम रखते हैं ।

नेत्र-त्र ( सं. ) कोण विशेष ।  
उपादिशा, दक्षिण और पश्चिम के  
बीच । [ शिस्त, उपस्थेतिव ।

नेत्र ( सं. ) पुच्छेतिव, स्निग्ध,

नेत्र ( वि. ) चित्तवृत्ति, निष्ठ,  
नीचत, निचार, यकीनत्व ।

नैऋतिक ( सं ) श्वावसत्त विष्ठा-  
रद, सर्कताप्रविशारद, न्याव  
पड़ानेवाला ।

नैऋ ( सं ) नाखून से लगते हुए  
चमड़े का एक आधा भाग ।

नैवेद ( सं ) देवता को चढ़ाने की  
कुछ भक्ष्य सामग्री, प्रसाद, नैवेद्य  
भाग ।

नैष्ठिक ( वि. ) कर्म किया करने  
में तत्पर, निष्ठासुक्त, विश्वासवाला  
धर्मनिष्ठ, आमरण, ब्रह्मचर्यपूर्वक।  
गुरुकुल में रहनेवाला ब्रह्मचारी ।

नैष्ठिक अलम्ब्य ( सं. ) आजन्म  
ब्रह्मचारी, बालब्रह्मचारी, निष्ठा-  
पूर्वक ब्रह्मचर्य ।

नैऋदिक ( सं. ) प्राचीन समयमें  
भारत के अफ्निकोण का एक भाग  
वर्तमान में बंगाल देश का एक भाग।

नैऋगिक ( वि. ) स्वभाविक, स्वभाव  
निर्मित, कुदरती, दैवी ।

नै ( क्रि. वि. ) नहीं, ना, मत,  
निषेधावर्क, ( उप० ) बड़ी का  
प्रत्यय, को ।

नैऋ ( सं. ) नौक, अजी, अभिमान,  
सुखा, अतिप्रसम्मान, सुंदर,  
सौभाग्यमान ।

नैऋत ( वि. ) बुद्धिमान, सैंड,  
पैना, निश्चित, स्वयं सम्माननी,  
आत्मश्लाघी ।

नैऋ ( सं. ) दास, सेवक, मूलि,  
चाकर, किंकर, गुलामी, खिस्मै-  
तगार ।

नैऋरी ( सं. ) सेवा, चाकरी, दास  
ता, गुलामी, नौकर का बैठन ।

नैऋत ( सं. ) प्रार्थना ( जैनों में )

नैऋतवणी ( सं. ) प्रार्थना करने  
की माला, ( जैन धर्म में ) ।

नैऋतशी ( सं ) जो जैन मतवा-  
लो को भोजन करावे ।

नैऋ ( सं. ) डंग, बनावट, डौल,  
सुरत, शक्क, डोंचा, रुपरेखा ।

नैऋ ( वि. ) जुदा, अलग, निराश्र  
पृथक्, अलाहिदा ।

नैऋ ( सं. ) पशुओं का दूध  
निकालने के समय पिछले पैरों से  
बांधी जानेवाली रस्ती, न्याना,  
सेला ।

नैऋ ( सं ) सूचना, टिप्पणी, विव-  
रण, कैफियत, नोटबुक, कामकाज  
का सिका, कामकाज की चिट्ठी,  
टीका, फुटनोट । [ मुलाका ।

नैऋ ( सं. ) निर्मग्न, न्याता,

**नैऋत्युं** ( कि. ) निमंत्रणदेना, न्यौतादेना, बुलावादेना, आम्हान करना, बुलावा ।  
**नैऋत्ये** ( सं. ) बुलावा देनेवाला न्यौता देनेवाला, निमंत्रणदेनेवाला ।  
**नैऋतः** ( सं. ) न्यौता, निमंत्रण, आमंत्रण, बुलावा, एजन ।  
**नैऋ** ( सं. ) नोटबुक, स्मरणार्थ-लिखाहुवा, याददास्ती के लिये लिखित, स्मरणपुस्तक, टिप्पण, याददास्त बीजक ।  
**नैऋत्ये-धडे** ( सं. ) छोकरा, लड़का, छोरा, लौंटा बालक ।  
**नैऋडी** ( सं. ) छोकरी, छारी, लड़की, कन्या, बालिका, लौडिया ।  
**नैऋधुं** ( कि. ) नोट करना, स्मरण पुस्तक में लिखलेना, रजिस्टर में दर्जकरना । [ अल्प ।  
**नैऋधुं** ( वि. ) छोटा, थोड़ा कम,  
**नैऋधः** ( वि. ) आधाररहित, निराश्रित, बेसहारा, आश्रयहीन ।  
**नैऋधः** ( वि. ) पूर्ववत् ।  
**नैऋत** ( सं. ) नगारा, बड़ाडोल, बकारा, हुंहुमि, पणव ।  
**नैऋतभाधुं** ( सं. ) जहाँपर नौबत रखकर बजाई जाती हो, हुंहुमि बजाने का घर ।

**नैऋ** ( सं. ) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष का नवम दिन, चांद्र मास की नवीं तिथि । [ नहीं ।  
**नैऋ** ( कि. वि. ) नहोय, नहो.  
**नैऋ** ( सं. ) रेल में बैठने तथा माल लेजाने का भाड़ा, किराया ।  
**नैऋता** ( सं. ) नवरात्रि, नवदुर्गा, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, चैत्र शुक्ल १ से ९ मी तक ।  
**नैऋधुं** ( कि. ) चलते बनना, हारमानना, चलेजाना ।  
**नैऋ-धरे** ( सं. ) आजिजी, दानिता, हार्हा, निहोरा ।  
**नैऋतयुं** ( कि. ) न्यौतादेना, बुलावादेना, निमंत्रणदेना, एजन-देना । [ निमंत्रण, बुलावा ।  
**नैऋतः** ( सं. ) आमंत्रण, न्यौता,  
**नैऋत-रिथां** ( सं. ) नाखूनो से उखड़ाहुवा चमड़ा, नखसत ।  
**नैऋ** ( सं. ) भाड़ा, किराया ।  
**नैऋ-जिथे** ( सं. ) नेबला, नकुल नेबले की जाति का एक जानवर ।  
**नैऋधुं** ( कि. ) धोके साफ करना, माँच धो के स्वच्छ करना ।  
**नैऋथे** ( सं. ) नेबला, नकुल, एक प्रकार का छोटा प्राणी जो साँप और चूहे आदि को खा जाता है ।

नैऋत्य ( सं. ) योग मार्ग की एक क्रिया ( नाक से पानी भरना निकालना इत्यादि ) बदमाशी, चालाकी ।

नैऋत्य ( सं. ) भाषण, शुकल नवमी, भाषण मास के चांदने पक्ष की नवी तिथि ।

नैऋ ( सं. ) नाव, जोंगी, जलयान

नैऋत ( सं. ) नाव का बंधा, पतवार ।

नैऋतमनः ( वि. ) समुद्रयात्रा, जलयात्रा, विदेश गमन ।

नैऋतान्वय ( सं. ) नाविक, विद्या, समुद्रविद्या, नौकाविद्या, नाव विषयक ज्ञान, मल्लाही, मांझी-गरी, जहाजरानी ।

नैऋत सेनापति ( सं. ) समुद्री सेना का स्वामी, दरियावी फौज का अफसर ।

नैऋत सैन्य ( सं. ) समुद्रीसेना, जलसेना, दरियाई फौज, जहाजी बेड़ा ।

नैऋत ( वि. ) नया, नवीन, नूतन, नव, उम्मा, सुन्दर, ताजा, उत्तम, शोभित । [ कोम, ज्ञाति ।

नैऋत-ति ( सं. ) जाति, जात,

नैऋतधुं ( वि. ) देखो नातिधुं ।

नैऋत ( सं. ) इन्साफ, सबे झूठे का निर्णय, फैसला, नीति, मुक्ति, यथार्थ, उचित, तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना ।

नैऋतसभा ( सं. ) न्यायाधीश का समाज, न्यायालय, विचार सभा ।

नैऋतशास्त्र ( सं. ) तर्क शास्त्र, नीतिशास्त्र ।

नैऋतगृह ( सं. ) अदालत, कचहरी, कोर्ट, न्यायालय, इन्साफ करने की जगह, धर्माधिकरण, विचारगृह ।

नैऋतधिकारी ( सं. ) न्याय करने वाला, मुन्सिफ, जज, न्यायक, न्यायकर्ता ।

नैऋतधीश ( सं. ) न्यायी, न्यायकारी, विचारक, जज, न्यायकर्ता ।

नैऋतसन ( सं. ) न्यायाधीश की बैठक, जज के बैठने की जगह, विचारक का आसन ।

नैऋत ( वि. ) मध्यस्थ, उचित करने वाला, न्यायकर्ता, वाजिबी मुनासिब । [ प्रशस्त ।

नैऋत ( वि. ) उचित, यथार्थ,

नैऋत ( वि. ) अलग, पृथक्, भिन्न, आतिरेक, कुशा, निराला ।

अक्षर ( वि. ) इक्ष्म से भरपूर,  
पूर्ण, कृतार्थ, जिस के मनोरथ  
पूर्ण हो गये हों, निहाल ।

अक्षर ( सं. ) इन्साफ, न्याय,  
भार्य, नीति, क्रिया, विधि, रीति ।

अक्षर ( सं. ) रखने योग्य धन  
आदि, अर्पण त्याग, तात्रिक,  
क्रिया विशेष ।

अक्षरी ( सं. ) बैरागी, त्यागी ।

अक्षर ( वि. ) देखो अक्षर ।

अक्षर ( क्रि. ) जी लगाकर  
देखना, मिहनत से देखना, विचा-  
रना, ध्यान करना, गौर से देखना

अक्षर ( सं. ) असवार, समा-  
चारपत्र, सवादपत्र, न्यूजपेपर ।

अक्षर ( वि. ) असम्पूर्ण, किंचित,  
थोड़ा, अल्प, कम, छोटा ।

अक्षर ( सं. ) छुटाई, नीचतापन,  
कमी, जोछाई ।

अक्षर ( वि. ) जिमादा कम,  
थोड़ा बहुत, अल्पाधिक, कमवैशी

अक्षर ( सं. ) नहर, कृत्रिम नदी,  
कृषि आदि कार्य के लिये नदी में  
से किया हुआ बल का मार्ग ।

५

अक्षर ( सं. ) इक्कीसवाँ अक्षर,  
शुक्रवाती वर्ष माघ का ३२ वाँ

अक्षर, अक्षर का प्रथम अक्षर,  
पत्र, वस्त्र, पवन, रक्षा करने वाला  
पालक, ( सम्बन्ध में जाने पर )  
पीनेवाला, जैसे मनुष्य, मशय ।

अक्षर ( सं. ) ३ पैसा, पाई पैसे का  
तीसरा भाग । [ चका, गिरा ।

अक्षर ( सं. ) वहिया, चक्र, नाक,

अक्षर ( सं. ) इक्ष्म, धन, सम्पत्ति,  
पूँजी, रुपया, पैसा, टका ।

अक्षर ( सं. ) पाव आना, ३ आना,  
तीनपाई की कीमत का ताबे का  
सिक्का । [ चर्जी, चकरी ।

अक्षर ( सं. ) खराब, चक्र भंग,

अक्षर ( सं. ) ग्रहण, धरन, रोक,  
कच्चा, पंजा, अवलम्बन, दाब,  
( भूलकी ) पकड़ कोई वस्तु छालने  
का औजार, पकड़ने का यंत्र,  
जम्बूर, सनसी ।

अक्षर ( क्रि. ) थामना, पकड़ना,  
समालना, छालना, डूबना, तलाश  
करना, प्राप्त करना । ग्रहण करना  
लेलेना, कच्चा करना ।

अक्षर ( सं. ) सम्मन, वारंट,  
पकड़ने का आज्ञापत्र, गिरफ्तार  
करने का परवाना ।

अक्षर ( क्रि. ) पकड़ना, थामना,  
गिरफ्तार करना, कच्चे में करा  
देना ।

५३३३ ( क्रि. ) पकड़ लेना, ग्रहण कर लेना, गिरफ्तार कर लेना।

५३३४ ( वि. ) चौदा, विस्तीर्ण, विषाल, दीर्घ।

५३३५ ( क्रि. ) रीचना, पकाना, सेकना, तपाना, गर्म करना।

५३३६ ( सं. ) खेती, कृषि, जोत, बाग। [ धी में बनी हुई सामग्री।

५३३७ ( सं. ) पक्का, मिठाई,

५३३८ ( सं. ) चक्र यंत्र, सराद, छप्पर की धरज अथवा कढ़ी के साथ जड़ी हुई तफ्ते की छपचची या चौर।

५३३९ ( वि. ) भेद, प्रपंच की समझ, सामने से छुट्वाई, देखकर छुट्वाई करना।

५३४० ( वि. ) पक्का, दृढ़, मजबूत, पुख्ता, निश्चय, ठीक, सत्य खरा।

५३४१ ( वि. ) पका हुआ, परिपक्व, सिका हुआ मुना हुआ।

५३४२ ( क्रि. ) देखो ५३४३

५३४३ ( सं. ) बाजू, पकवाड़ा, अर्ध हाथ, आधा पक्ष, तरफ और, बाँध, चहाव, बत, विचार, अभिप्राय, दुकड़ी, बर्ग, समूह, बाह्य विषय बल, विरोध, मित्र, पर, कथन, डैना, सम्बन्धी, दक्ष, पार्श्व,

बाजार, कड़ी, दक्ष, दुकान-पक्ष, दुकान पक्ष, राबहली।

५३४४ ( सं. ) पक्ष कर लेनेवाला, तरफदार, भीड़ बोलनेवाला, सहायक, पक्ष लेनेवाला।

५३४५ ( क्रि. ) तरफ-दारी करना, और रहना, सहायता करना, पक्षमें रहना, सहाय्य देनेवाला।

५३४६ ( सं. ) अनुचित सहायता, दान, एक ओर झुकाव, तरफदारी, स्नेह सम्बन्धादि के कारण अन्याययुक्त साहाय्य।

५३४७ ( वि. ) पक्षपात कर्ता, अनुचित सहाय्यदाता, अन्याय से एक पक्षकी सहायता करनेवाला, तरफदार, ५३४८

५३४९ ( सं. ) वकील तरफसे बोलनेवाला, भीड़ बोलनेवाला भीड़

५३५० ( सं. ) रोग विशेष, किसी अंग का अवयव हो जाना, एक प्रकार का वात रोग।

५३५१ ( सं. ) पक्ष, दल, दुकड़ी, पार्श्व, बाजू, तरफ, ओर।

५३५२ ( सं. ) बाह्य अंग का वात रोग विशेष, एक प्रकार का वात रोग।

पञ्चाशती ( सं. ) तरफ़ा तरफ़ी,  
पार्श्वता ।

पञ्चाशत ( सं. ) धोवन साफ़ करने  
की क्रिया धोनेका कार्य, पवि-  
त्रकरण ।

पञ्चशती ( सं. ) मादापरिन्द, पक्षी  
( जी लिंग ) दो रात्री और  
एक दिन ।

पक्षी ( सं. ) पक्ष विशिष्ट, बिहंगम,  
पक्षेरु चिड़िया, पक्षेरु, बाण,  
तार उड़नेवाला जीव, पंखी, पंखी,  
सापी, समाजी ।

पक्षीक्षणा ( सं. ) विद्या पकड़ने  
की विद्या, पक्षि विद्या पक्षी विष-  
यक ज्ञान ।

पक्षीक्षणा ( सं. ) पक्षियों के रहने  
की जगह, घोंसला चिड़िया घर,  
कबूतरखाना ।

पक्षे ( कि. वि. ) विकल्पतायुक्त,  
एक दृष्टि में, वह भी ठीक और  
वह भी ठीक ।

पक्ष ( सं. ) देखो पक्ष

पञ्चाश ( सं. ) बाय विशेष,  
जिस के दोनों तरफ़ बजाने का  
होता है, मृदंग ।

पञ्चाश ( सं. ) मृदंग बजाने-  
वाला, तबलवा, पञ्चाश बजाने-  
वाला ।

पञ्चाशति-कुं ( सं. ) पन्द्रह दिन,  
अर्द्ध मास, शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष, पक्षा

पञ्चाशी ( सं. ) वह सीक अथवा  
तिनका या पंख विशेष जिसे क्रिया  
अपने कानोंमें कानों के छेद बढ़ाने  
के लिये डालती हैं ।

पञ्चाश ( सं. ) देखो पञ्चाश

पञ्चाश ( सं. ) देखो पञ्चाश

पञ्चाश ( सं. ) मसक, बड़ी मसक  
चर्म निर्मित जलपात्र, पानी  
भरनेका चमड़ा ।

पञ्चाश-दशी ( सं. ) मसकवाला,  
भिस्ती, पानीवाला, बैल अथवा  
पाड़े पर या अपने कंधे पर मसक  
द्वारा पानी लेजानेवाला ।

पञ्चु ( सं. ) पक्ष, तद्, दल, भाग,  
पार्श्व ।

पञ्चे ( कि. वि. ) बिना, सिवाय ।

पञ्चोक्तुं ( कि. ) पछाड़ना, झको-  
रलना, पटकना, देमारना, झेंसो-  
डना ।

पञ्च ( सं. ) पद, पौव, पैर, चरण,  
जोड़, पाया, टोंग, कदम ।

पञ्चाववा-ववा ( वि ) तेजीसे  
चलना, शीघ्रतासे चलना, जल्दी  
चलना ।

पञ्चोक्तुं ( सं. ) कुल, बंध, संतान,



५३३ ( सं. ) पैसे पर बिन्दु या अन्य किसी प्रकारका चिन्ह ।

५३४ ( सं. ) पैसे पर या ठप्पे पर किसी प्रकारका चिन्ह विशेष ।

५३५ ( वि. ) बहुत, विशेष, अधिक, घना, विशाल, दीर्घ, विस्तृत ।

५३६ ( सं. ) समान बैठक, सीधी बैठक, कम सीढियोंका बैठनेका स्थान ।

५३७ ( सं. ) सीढी, नसेनी, पैदे, चढाव, जीना, सोपान ।

५३८ ( सं. ) पैर रखकर चढ़ने के लिये ईंटके के पत्थरके अथवा काष्ठ निर्मित सोपान, नसेनी, जीना ।

५३९ ( सं. ) पगडण्डी, पगडण्डी, घास इत्यादि में एक मनुष्य के जाने योग्य बना हुआ मार्ग, पद-चिन्ह, लीक, गुप्त मार्ग, बिना बनाया हुआ मार्ग, पैरों द्वारा बना हुआ रास्ता ।

५४० ( सं. ) स्वनत्र मार्ग, आज्ञाद रास्ता, बना हुआ रास्ता, जाने जानेका मार्ग ।

५४१ ( सं. ) पैरों में पहिरने का मोजा, जुराब । [ मुहा. ]

५४२ ( सं. ) बाल, अण्ड का छिरा

५४३ ( सं. ) जूते, चप्पान, पगरबी, पैर को रक्षा के लिये बनाया हुआ, जूती, एक तलीका जूता ।

५४४ ( सं. ) उत्सव, खुशी, आनन्द, जनेक विवाह आदि उत्सव, शुभ अवसर ।

५४५ ( कि. ) आरंभ करना, शुरूआत करनी, प्रारंभ करना ।

५४६ ( सं. ) पैरों का शब्द चलने की आवाज । [ पाद ।

५४७ ( सं. ) मोरका पंजा, मयूर

५४८ ( सं. ) पैरका निशान, डग, कदम, साँडी, जीना, सोपान, पग, पैर ।

५४९ ( कि. ) आगे कदम बढ़ाना, पैर बढ़ाना ।

५५० ( सं. ) बारम्बार, पुनः पुनः हरदम, सदैव, हमेशा ।

५५१ ( सं. ) पगडण्डी, पैरों से बना हुआ मार्ग ।

५५२ ( कि. वि. ) कच्चे रस्ते, खुश्की रास्ते, पैदल पगडण्डी द्वारा । [ मासिक मजदूरी ।

५५३ ( सं. ) बेतन, तनखाह,

५५४ ( सं. ) खोज निकालनेवाला, पाद चिन्हों द्वारा चोरी आदि ढूँढने वाला ।

- पंक्ति-संज्ञा (सं.) पैदा होते समय जिसके प्रथम पैर बाहिर आवे हो वैसे की ओर से उत्पन्न ।
- पंक्ति (सं.) भागे हुए चोर के पाव चिन्हों की जांच ।
- पंक्तिपुं (क्रि.) गलना, पिघलना, टिघलना, ब्रह्महोना, पतल होना ।
- पंक्तिपुं (क्रि.) जगह जगह प्रख्यात होना, मशहूर होना, नामपाना कीर्तिपाना ।
- पंक्तिपुं (वि.) प्रसिद्ध, मशहूर, प्रख्यात, नामी, मशहूरी, कीर्तिमान ।
- पंक्ति (सं.) सजातीय सस्त्रान विशेष एक समाज क मनुष्यों की बैठक, पाति, पात, पत्रत, धारी, ककीर, भेणी, कतार, पय का छन्द विशेष, पृथ्वी, गौरव प्रतिष्ठा, जनसमूह, सभा ।
- पंक्तिदोष (सं.) सहकारिता का दोष, समाजदोष, जातीय अपराध, पंयत दोष ।
- पंक्तिपंक्ति-संज्ञा (वि.) जाति से बाहिर, जातिच्युत, समाज से पतित ।
- पंक्तिभेद (सं.) जातिभेद, पाति-भेद, जातीय अंतर, समाज भेद, भेद ।

- पंक्तिपंक्ति (वि.) जाति में अवस्था समाज में सम्मिलित होने योग्य, पाति में बैठने योग्य ।
- पंक्ति-व्यवहार-संज्ञा (सं.) जातीय वर्ताव, सामाजिक व्यवहार रोटी व्यवहार ।
- पंक्ति (सं.) देखो पंक्ति ।
- पंक्ति (सं.) देखो पंक्ति ।
- पंक्तिपुं (सं.) रोग विशेष ।
- पंक्तिपुं-पुं (सं.) एक प्रकार का चावल शालि विशेष ।
- पंक्तिपुं (सं.) पाँखवाला, सपक्ष, पक्षी, वाण, तीर, परिन्द, पक्षयुक्त ।
- पंक्ति (सं.) पक्षी, जिड़िया, विहंग, परिन्द, पाखोवाला, नमचर ।
- पंक्ति-पुं (सं.) देखो पंक्ति ।
- पंक्ति-पुं (सं.) लंगड़ा, लूला, बे पैरका, धीरे चलने वाला, खज, खोटा, जंचाहीन, चलने में असमर्थ ।
- पंक्ति (वि.) पाँच, संख्या विशेष, पाँच मनुष्यों की सभा, न्यायकर्ता ।
- पंक्ति (सं.) पंक्ति नक्षत्र से पाँच, पंक्ति, सतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती, पाँचका-समूह ।

पंचम (सं.) मनुष्य के पाँच कर्तव्य कर्म, अग्निहोत्र संध्या बलिर्वैश्य देवादि पाँच काम । उत्क्षेपण, अवक्षेपण, प्रसारण और गमन, ये पाँच न्याय प्रसिद्ध कर्म । वसन, रेचन नस्य, निरुहण और अनुवसन, ये पाँच वैद्यक शास्त्र के कर्म ।

पंचम (सं.) वह छोटा जिसमें पाँच शुभ चिन्ह हों ।

पंचम (सं.) औजार विशेष ।

पंचम (सं.) खिचड़ी, गोल माल, गडबड़, विजातीय मेल ।

पंचम (सं.) आत्माके रहने के शरीरस्थ पाँच परदे, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विशानमय और आनन्दमय ।

पंचम (सं.) गऊ से उत्पन्न पाँच पदार्थ, दहि दुग्ध, घृत, मूत्र, और गोबर, ( प्रायश्चित्त विशेष में आत्माकी शुद्धि के निमित्त इनका सेवन किया जाता है )

पंचम (सं.) पंचभूत, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, और तेज, तन्त्र शास्त्रोक्त—मय, मांस, मस्तिष्क, मुद्रा और मैथुन का पात्रक ।

पंचम (सं.) पृथ्वी का हिस्सा सूक्ष्म पंच भूत, रूप, रस, गंध, स्पर्श, और स्रग्ध ।

पंचम (सं.) विष्णुसमर्पण संकलित हस्त काम से प्रसिद्ध लीपि ग्रंथ ।

पंचम (सं.) प्रमाण, पुष्कर, नैमिष, विश्रान्ति और शूकर ।

पंचम (सं.) पाँच पातुओं से मिश्रण से निर्मित गिलास, द्विजातीयों के पूजामें पानी भरकर रखने का पात्र, इस में रखी हुई चमनी को आचमनी कहते हैं ।

पंचम (सं.) बिलकुल कच्चे मतका, कच्चे मजहब का अत्यंत धूत ।

पंचम (सं.) शरीरस्थ प्राणादि पंच वायु, प्राण, अपान, व्याव, उदान, समान ।

पंचम (सं.) कामदेव के पाँच तार, कमल, अशोक, आममंजरी, नव मल्लिका और नील कमल ।

पंचम (सं.) हृदय, सुई, पीठ, कमर, बगल में भ्रमरयुक्त अम्ब ।

पंचम (सं.) पंचतत्त्व, पृथ्वी, जल, आकाश, तेज, वायु ।

पंचम ( वि. ) पंचमेल, मिश्रण,  
गङ्गद सिखरी ।

पंचम ( सं. ) पंचोक्ती आह्ला,  
पंच फैसल ।

पंचमहापातक ( सं. ) पांच बड़े  
पाप, ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरु-  
निंदा, साने की चोरी, पापी का  
संग ।

पंचमहायज्ञ ( सं. ) गृहस्थियों के  
नित्य कर्तव्य पांच यज्ञ, ब्रह्म  
यज्ञ, पितृ यज्ञ, देव यज्ञ, भूत  
यज्ञ, और वृ यज्ञ ।

पंचभुज ( सं. ) पांच मृत, पांच  
पेशाब, गाय, भैंस, बकरी, मेढी  
आर गधी का मूत्र ।

पंचभुज ( सं. ) शालपर्णी, पृष्ट-  
पर्णी, रीगणी, गोखरु और डोरली  
पांच औषधियों की जड़ औषधि  
विशेष ।

पंचरत्न ( सं. ) पांच प्रकार के रत्न  
सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता, स्फटिक,  
ताम्र ।

पंचरस-सि-सिधु ( वि. ) नाना  
प्रकार के मित्र मित्र, पांच अवस्था  
अधिक रस ।

पंचराशी ( सं. ) पंचराशिक-  
( गणित में ) हिसाब की क्रिया,  
छत्त त्रैराशिक ।

पंचवदन ( सं. ) पंचवदन, पांच  
मुँहवाला शिव, महादेव, शंकर ।

पंचविध ( सं. ) पंच ज्ञानेन्द्रिय,  
मन, आँख, कान, नाक जिह्वा  
और त्वचा ।

पंचाष्टक ( सं. ) पंच, पंचायत  
करनेवाला मुनिसफ ।

पंचांग ( सं. ) जातीय सभा,  
विचार करनेकी सभा, पंचोक्ती सभा ।

पंचांग ( सं. ) पांच प्रकारकी  
अग्नि, जठराग्नि, कोषाग्नि, कामाग्नि,  
दावाग्नि, वरुवाग्नि ।

पंचांग ( सं. ) पत्रा, जंत्री, केलेडर,  
पञ्चिका, पाचों अंग, तिथि, वार,  
नक्षत्र और कर्ण प्रदर्शक, वृक्षके  
त्वक् पत्र, पुष्प मूल और पट्टका  
समाहार, पुरश्चरणमें जप, होम  
तर्पण, अभिषेक और विप्रभोजन ।

पंचाङ्ग ( सं. ) ५ कम सौ, नब्बे  
और पांच, पिच्यानवे, ९५ ।

पंचात ( सं. ) किसी विषय के  
निर्णयार्थ पांच या अधिक सदस्यों  
का समाज, जातीय सभा, तकरार,  
फुसाद, झगड़ा, उपद्रव, टंटा ।

पंचातप ( वि. ) झगड़ालू,  
उपद्रवी, ऊधवी ।

पञ्चातनाशु ( सं. ) कैसल्य जो पंचोने किया हो, पंचनामा, पंचो-कीलिपिबद्ध आज्ञा ।

पञ्चातिथु-रती ( वि. ) वह काम जो पांच मनुष्यों के विचार से हो, जातीय । [ आजगह ।

पञ्चाती ( सं. ) तकरार, फसाद,

पञ्चाभुट ( सं. ) शर्करा दुग्ध, दधि, घृत और मधु जिससे देवता-ओंको ज्ञान कराते हैं और पान्ते हैं।

पञ्चाभुन भोग ( सं. ) गिलेय, गोलेरु, मूशली, गोरखमुंड़ी और शतावरि इन पांच औषधियों का योग ।

पञ्चाध ( वि. ) लुच्चाई, ठगी, ( सं. ) ठग लुच्चा, गुण्डा, बदमाश ।

पञ्चावन ( वि. ) पचपन, ५५, पचास और पाच, संख्या विशेष ।

पञ्चासी-अष्टाशी ( वि. ) अस्ती और पाच, ८५ पिच्छासी, पचासी

पञ्चासी ( सं. ) खजूर के अवयवों द्वारा बनी हुई रस्ती ।

पञ्चाण ( वि. ) लुच्चा, ओछा, नीच, धूर्त मक्कार, कपटी ।

पञ्चाण्ण ( सं. ) शीपरी, पांडवों की पत्नी, बकरी, गम्भी, बाबाल शम्भूरी अवधवा बकरी ( श्री )

१५

पञ्चिथु ( सं. ) पंच, चोटी के स्थान पर पाँचो जाने वाला पाँच हाथ लम्बा बन्ध, छोटी चोटी ।

पञ्ची-धी ( सं. ) मझरी, ठड्डा, मजाक, दिहगी, हुष्ट, गुण्डा, बदमाश ।

पञ्चीश्चु ( सं. ) पांचको एक जगह एकत्र करनेकी क्रिया, मजबूत गुण वाले आकाशादि पंच तत्वों का देह, आदि सृष्टि के लिये ईश्वर शक्ति से जो अनुकूल संमिश्रण होता है ।

पञ्चीतेर ( सं. ) पचहत्तर सत्तर और पांच, ७५, ५ कम अस्ती ।

पञ्चोपाध्याय ( सं. ) इस नामकी एक प्रसिद्ध पुस्तक ।

पञ्चभाय ( सं. ) ब्राह्मण की यजमान के घर नित्य प्राप्त होने वाला पांच प्रकार का अन्न ।

पञ्चर ( सं. ) शरीर की हड्डियों का समूह, पांजर, पसली, ठठरी, पिंजरा, पलियों को बंद करने का बरत ।

पञ्चशरी ( सं. ) पंजीरी, एक प्रकार का देवता का प्रसाद, अजनायन खोपरा असंख्य चिरोंकी और लोच के मिश्रण से बना हुआ पदार्थ ।

पं०री ( सं. ) देखो पं०री  
पं०री-पं० ( सं. ) ताशमें पाँच बिन्दु  
युक्त, पाँच अंगुलियों युक्त हाथ,  
किसी बड़े आदमी के हस्ताक्षरों  
के स्थान पर उस के हाथ का  
छापा । जिसके अथवा बनेले जटु-  
ओं के नाखून, खिलाड़ी ।

पं०रु आ०पु ( सं. ) हाथ आ  
जाना, चंगुल में फँस जाना, दाव  
में आना ।

पं०रुपु ( कि. ) फँसना, आधि-  
कार में हो जाना, हाथ पड़ना ।

पं०रुपु ( कि. ) आधिकार में  
ले लेना, दाव में लेना ।

पं०रुपु ( कि. ) जब होना, दाव  
पड़ना, अनुकूल समय आना ।

पं०रुपु ( कि. ) धुनना, खरोचना,  
खिलाना, दुख देना, पीड़ा देना ।

पं०रुपु ( सं. ) भय, आवा भय

पं०रुपु ( कि. ) मारना, पीटना

सहन, सहन करना । [ पियारी

पं०रुपु-पं०री ( सं. ) देखो

पं०रुपु ( वि. ) डरपोक, कायर,

बुजदिल, भीरु, भयशील भयभीत ।

पं०रुपु ( वि. ) नरम, रसदार,

पानीदार, पसीजा हुआ, गीला ।

पं०रुपु ( कि. ) हजमकरना,  
डकारना, पचाना, गलाना, खाना ।

पं०रुपु ( कि. ) पिचलाना, गलना,  
पकना, हजमहोना जीर्णहोना,  
सड़ना, जठराग्निमें भस्महोना,  
ममहोना, लीनहोना, मिहनत-  
करना ।

पं०रुपु ( कि. ) पकाना, जीर्णकरना,  
हजमकरना, सड़ाना, गलाना ।

पं०रुपु-स ( वि. ) संख्याविशेष,  
पाँचदहाई, ५०, पचास ।

पं०रुपु ( सं. ) जैनियों के पवित्र-  
दिन, पर्येषण, भाद्रपद मासमें  
होनेवाला जैनियोंका लौहार ।

पं०रुपु ( वि. ) संख्या विशेष,  
५५, पचपन, पचास और पाच ।

पं०रुपु ( वि. ) संख्या विशेष,  
२५, बीस और पाच, पच्चीस ।

पं०रुपु ( वि. ) पचहत्तर, संख्या  
विशेष, ७५, सत्तर और पाँच ।

पं०रुपु ( सं. ) पिचकारी, पिचुका ।

पं०रुपु ( सं. ) दिशा विशेष,  
पश्चिम, मग़रिब, सूर्यास्त की  
दिशा, प्रतीची ।

पं०रुपु ( सं. ) पिछली धरु,  
मन्दबुद्धि, कुन्तजहनी, कमबख़्ती ।

५७७भयुक्ति ( वि० ) जिसे बहुत देर बाद विचार होताहो, मन्द-बुद्धि, करके पछताने वाला ।

५७७भु ( कि० ) पिटना, कुटना, पटकाजाना, बीमारहोना, बीमारी-से बहपाना ।

५७७भुडे भामपु ( कि० ) पीछेपड़ना, विधाना, डराना, सताना, कष्टदेना ।

५७७भुडु ( सं० ) पीछा, पृष्ठभाग, पीठ, पृष्ठ, पीछेकाहिस्सा, पुछा ।

५७७भुडु ( कि० ) जोरसे देमारना, पटकमारना, गिराना, भूमिपर-पटकना, बीमार होना, डराना ।

५७७भु ( सं० ) परिश्रम, मिहनत, मिथ्याश्रम, हाफ ।

५७७भु ( सं० ) बोड़ेके पीछे पैरसे बांधीजानेवाली रस्सी, ( उप० ) पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त ।

५७७भु ( सं० ) देखो ५७७भुडु

५७७भु ( सं० ) पटक, उथला, पकटाव, आरामहो करपुनः बीमार ।

५७७भु ( उप० ) पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात्, उपरान्त ।

५७७भु ( कि० ) तदुपरान्त, तत्पश्चात्, तदनन्तर, बादमें ।

५७७भु ( सं० ) बरके पीछेकी दीवार ।

५७७भु ( सं० ) गाड़ी के माच के पीछे बांधने का ।

५७७भु ( वि० ) बहर मरीजा ।

५७७भु ( सं० ) देखो भिछेडे ।

५७७भु ( कि० ) दुख देना, व्याकुल करना, बहरा देना, बिठाना, सिंझाना ।

५७७भु ( सं० ) ईंट खपरे पकोने की भट्टी, आवा, कुम्हार की भट्टी ।

५७७भुसथु ( सं० ) जैनियों के पूर्व दिन, पर्युषण नामक जैन त्यौहार ।

५७७भु ( सं० ) विविध रंगों से रंगा हुआ पटिया या वस्त्र, शतरंज का वस्त्र, सूची, नामावली, अनुक्रमणिका, नकशा, चित्रपट, स्मृति, बाददास्त, रजिस्टर, केटलाग, कपड़ा, वस्त्र, परदा, नदी की चौड़ाई, घड़ी, पाट, जमीन का लम्बा चीरा, तह, घर, रंग, यवानिका ।

५७७भु ( वि० ) विशेषता सूचक शब्द जैसे " ५७७भु, त्रि५७७ " गुण ।

५७७भु ( अव्य० ) दुरंत, फौरन, क्षीघ्र अवश्य, निश्चय, जरूर ।

५७७भु ( कि० ) ठगना, डराना करना, छलना धोखा देना, मद्बुद्ध करना ।

- ५४५३ ( कि. ) छलेजाना, ठगाना,  
थोका खाना । [ कपड़ा ।
- ५४५४ ( सं. ) छुंदर बल, अच्छा
- ५४५५ ( सं. ) बल यवनिका, कपड़े,  
कापड़ी, अन्तरपट, कपड़े की  
आढ़ ।
- ५४५६ ( सं. ) पदा, यवनिका,  
भेद, भेद दृष्टि, फासला अंतर ।
- ५४५७ ( कि. वि. ) तड़तड़, झट-  
पट, पटापट ।
- ५४५८ ( कि. ) जल्दी जल्दी  
बोलना, बोलने के लिये व्याकुल  
हो रहना ।
- ५४५९ ( सं. ) लफंगा, लबार,  
गप्पी, निरर्थक, वाक्चतुर ।
- ५४६० ( कि. ) नमचमाना,  
ठमटमाना मिचमिचाना ।
- ५४६१ ( सं. ) लकड़ी का  
खिलौना, गुड़ी, खिलौना ( वि. )  
बकरी, बातली, लफंगा ।
- ५४६२ ( सं. ) पटरानी ।
- ५४६३ ( सं. ) बड़ी रानी, राज-  
महिषी, महारानी, मुख्यरानी,  
राणी ।
- ५४६४ ( सं. ) आच्छादन, छुंड,  
टोली, जल्पा, पटेल, सरपंच  
अगुवा ।
- ५४६५ ( सं. ) देखो ५४६६ ।
- ५४६६ ( सं. ) पटेल की आर्वा,  
पटेलन, पटेल की आरत ।
- ५४६७ ( सं. ) पूर्ववत् ।
- ५४६८ ( सं. ) रेशम आदि  
गूँघने का काम करने वाला, जेवर  
में सूत और कलाबसु पिरोकर  
गांठने वाला, जाल बनाने वाला ।
- ५४६९ ( वि. ) कपटी, छली, ठग,  
मोहोत्साहक ।
- ५४७० ( सं. ) कड़कने की  
बड़ी अवाज, पटाखे का शब्द ।
- ५४७१ ( सं. ) बोढ़े का तंग, काठी  
जीन आदि बाधने का बोढ़े का  
कमलदा ।
- ५४७२ ( सं. ) आछ, बटाटा, एक  
प्रकार का खाने का फल ।
- ५४७३ ( वि. ) भारीदार, रेखा  
युक्त, लकीर वाला ।
- ५४७४ ( वि. ) पटा खेलने वाला,  
धूर्त, ठग, बंचक, छली ।
- ५४७५ ( वि. ) बहलाव, फुसलाव,  
मिथ्या प्रशंसा, खुशामद ।
- ५४७६ ( सं. ) पिटारा, टिपारा,  
बड़ा सन्दूक, बड़ी पेटी ।
- ५४७७ ( कि. ) पटा खेलना,  
पटेबाजी खेलना ।
- ५४७८ ( सं. ) अधिकारी, पाई  
का मालिक, उत्तराधिकारी ।



५४१५ ( कि. ) बने जिस तरह  
समझाना, कुछ समझ देना,  
छानना, ढोका देना ।

५४१६ ( सं. ) नगरा, बोल, नौबत  
हुंहुंभि, नगाड़ा, पणव ।

५४१७ ( सं. ) सिपाही, हरकारा  
बूत, सम्बाद बाहक ।

५४१८ ( सं. ) बालों की पक्षियां,  
जुलके, कंधे से झुंधारे हुए और  
जमाये हुए बाल ।

५४१९ ( सं. ) धारी, रेखा, बज्जी,  
पट्टी, फाड़ फाड़, चीप, कतरन,  
कर, अस्तर, लपेटने की पट्टी ।

५४२० ( सं. ) बुद्धिमानों की बात  
अज्ञानों का काम, सयानापन ।

५४२१ ( कि. ) चतुराई, दक्षता,  
प्रवीणता, होशियारी, कुशलता ।

५४२२ ( सं. ) पट्टा, कमरबंदन,  
पटका सनद, प्रमाण पत्र, हुक्म,  
हस्तावेज, बनाव के लिये लकड़ी  
या तलवार का इधर उधर घुमाव,  
पटेबाजी, युक्ति, पेच, दाव, दगा,  
छल, कपट, ढोका, धाव इत्यादि  
पर बाँधने की बड़ी पट्टी, कपड़े  
की चिन्दी, लीची कमचौड़ी दो  
बार की तलवार ।

५४२३ ( सं. ) पटरानी, मछिन्दी,  
महारानी, राखी, सम्मानी ।

५४२४ ( अर्थ. ) झटपट, पटा-  
पट, चटपट, शीघ्र, तुरन्त ।

५४२५ ( सं. ) एक प्रकार का वृक्ष  
और उसका फल, परवर, परोरा,  
पल्लव । [ रेशमी वस्त्र ।

५४२६ ( सं. ) एक प्रकार का  
पट्ट ( कि. वि. ) तुरंत, कौरन,  
शीघ्र तत्क्षण, झट, शीघ्रतापूर्वक ।

५४२७ ( सं. ) नगर, बाहर ।

५४२८ ( सं. ) हुनरमन्द, होशि-  
वार, प्रवीण गुणी, निपुण, दक्ष ।

५४२९ ( सं. ) राज्याभिषेक,  
राज गादी, राजा बनाते समय  
का संस्कार ।

५४३० ( सं. ) चिन्दी, बज्जी, कपड़े  
की पट्टी, धारी, कतरन, लम्बी  
जमीन की बज्जी, नागर पान की  
कत्था चूना और सुपारी युक्त  
बीड़ी, पान बीड़ा ।

५४३१ ( सं. ) कम्बल, कनी वस्त्र ।

५४३२ ( सं. ) पटेबाज, पटेबाजी  
जाननेवाला, लकड़ी तलवार  
इत्यादि को घुमाने फिराने वाला ।

५४३३ ( सं. ) देखो ५४२१ । पट्टा हस्त  
कला, पुष्ट, तयड़ा, सशक्त, बलशाली ।

५४५ ( सं. ) ठहराई हुई कीमत, निश्चित मूल्य, सहा, बादा, शर्त, करार । [ स्वाध्याय, वाचन ।

५४६ ( सं. ) पाठ पढ़ना, अध्ययन,

५४७ ( कि. ) मोल लेने की वस्तु का मूल्य निश्चित करना, कीमत ठहराना, बादा करना, वचन करना, शर्त करना ।

५४८ ( कि. वि. ) देखो ५४८ ।

५४९ ( सं. ) पक्ष, पक्ष, आश्रय, सहाय, दौ, रीति, चाल ।

५५० ( सं. ) तट, परत, घड़ी, पट, अस्तर, किसी एक वस्तुपर आया हुआ पड़ा, एक के ऊपर एक आई हुई पृथक् पृथक् वस्तु, धर, एक प्रकार का चितकबरा ढर, कौडीला साँप, पर्दा, फासला, अन्तर, चक्की के ऊपर का पाट, पृथ्वी भी तह ।

५५१ ( कि. ) पहिरेवाले या चौकीदार द्वारा प्रश्न किया जाना जैसे “ कौन है ? ” सावधानी प्रदर्शित करने के लिये ‘ हाँ, कहना, उभाड़ना, उस्काना, साहस बढाना ।

५५२ ( सं. ) बवाब, प्रत्युत्तर ।

५५३ ( कि. ) बूझ करना, छोड़ी करना, धृष्टा प्रदर्शित करना ।

५५४ ( सं. ) पच्छी, पार्थ, वाद्य, किसी वस्तु का बाहिरी भाग, पड़ोस, पक्ष, तरफ, तट, छरीर का बाहिना अथवा बायाँ भाग ।

५५५ ( उप. ) निकट, पासमें, पड़ोसमें, समीप, नजदीक ।

५५६ ( सं. ) डंडेसे बजानेका एक वाद्य, विशेष, डोल, पणव ।

५५७ ( सं. ) बरतन के पेंदेमें ठहरने के लिये बना हुआ गोल कुण्डल, पात्र के टिकने का पेंदा, जमीन पर चलनेका पाद शब्द ।

५५८ ( सं. ) प्रतिष्ठा, गूँज, जोर से शब्द होने के बाद आ एक प्रकार की आवाज होती है वह ।

५५९ ( कि. ) डंका बजाना, दुनियामें नाम करना, आर्तक जमाना ।

५६० ( सं. ) आकार, सूरत, शक्ल ।

५६१ ( वि. ) मयंकर, डरावना, पुष्ट, बलवान, दार्षकाय ।

५६२ ( सं. ) देखो ५६३ ।

५६३ ( सं. ) छाया, साया, प्रतिबिम्ब, बिम्ब, परछाई, प्रतिरूप ।

५६४ ( कि. ) मिलाव करना, मुकाबिल करना, तुलना करना ।

५४६। ( सं. ) रक्षांत, हवाला, उल्लेख, उदाहरण, मुकाबिला, समानता, ऊंचा सीमा मनुष्य, शक्ति, बल ।

५४६त-२-५ ( सं. ) बिना बोई जमीन, ऊसर भूमि, बेजोती भूमि, जिस भाव मिला उसी भाव सरीदा हुवा, असली कौमत, रखा हुवा, बिना बिका, पठती भूमि, बेबीया ।

५४६तली ( सं. ) तमाख भरनेकी चमड़े की बैनी ।

५४६तलपु ( कि ) टालमटोल करना, उलटपलट करना ( पृष्ठ ) मारके भाग जाना, चबराना ।

५४६ती ( सं. ) गिरती, अवनति अपकर्ष, अस्त, उत्तरावस्था ।

५४६ती ६३। ( सं. ) उत्तरावस्था, निर्बल बसा, नाजुक हालत, दुर्दैव, कमनवीव, आपत्काल, खोटे दिन ।

५४६ती २।त ( सं. ) गई रात, पिछली रात, व्यतीत रात्रि, खोटे दिन ।

५४६तुं ( वि. ) गिरता, पतन, गिरता हुवा ।

५४६तुं मु६तुं-मे६तुं ( कि. ) ठहराना, मुस्तबी रखना, स्थागित करना, विलम्ब करना, टालना ।

५४६तो ( सं. ) बल, शक्ति ।

५४६तो ६६।६। ( सं. ) उतार, घटती, घटाय, आफत, विपत्ति ।

५४६तो२ ( सं. ) घर के बाहिरका चौक, बरामदा, बरम्बा, उसारा ।

५४६ती ( सं. ) गठरिया, बंडक, पुर्द-लिया, एक ईंट की चौदाईकी बनी हुई भीत ।

५४६ती ( सं. ) गठ्ठा, भारा, बंडक, पोट, अंतर, जिससे दो भाग हों ऐसी बीच में आई हुई दवार, सूर्य तप निवारणार्थ गादी पर लगाया हुवा बक, किसीकी दृष्टि न पड़े इस बास्ते की हुई ओट, चिक, पर्दा, सितार का परदा, कानका परदा, उल्लन, आवरण, आच्छादन, ओट, जनाना ।

५४७। ६।पुं ( कि. ) गुप्तहोना, छुपना, आं २।५पुं ( कि. ) बेमालूम रखना, गुप्त रखना, ६।६ती ५।५पे। ( कि. ) बेशरम होना, निर्लज्ज होना ५।६पे। ६।६पे। ( कि. ) बात खोलना, छुपी बात प्रकट करना, भांका फोड़ना ५।६ती ५।५पे। ( कि. ) कपट कौतुक प्रकट होना, पोलखलजाना, गुप्त रहस्य प्रकट हो जाना, २।५पे। ( कि. ) इरादा छुपा कर रखना,

बोली में खज करना, हजबत  
रखना ५४०६ ( कि. ) बबनिका  
सतन, नाटक इत्यादि खेलों में  
चित्रपटका गिरना, ५४०७ ( कि. )  
बबदा उठना ( नाटक में ) गुप्त  
बात प्रकट होना, ५४०८ ४२०९  
( कि. ) गुप्त बात प्रकट कर देना ।

५४०५ ( सं. ) लज्जा, शर्म, हया,

५४०६ ( सं. ) दुर्बल अथवा अक्षय  
पुरुष ।

५४०७ ( सं. ) पूछताछ, तलाश,  
जॉच, पुनर्पुनःप्रश्न, दरियाफ्त ।

५४०८ ५४०९ ( सं. ) लिफाफा जिसमें  
लिखित पत्र रखकर और सरनामा  
करके भेजा जाता है ।

५४१० ५४११ ( सं. ) दीवारको  
गिरने से बचानेके लिये पासमें  
दूसरी बुरज या दूसरी दिवार  
टैक, सहारा ।

५४१२ ५४१३ ( सं. ) चारपाई के  
सिरहाने की ओर पायों के नीचे  
रखनेके काठके टुकड़े, लकड़ी की  
आब बारीक, मोहन करते समय  
पैरों को सहारा देनेके लिये काष्ठ ।

५४१४ ( सं. ) ओसारा, सावधान,  
बरामदा, बराब्का, ठाकिया ।

५४१५ ( सं. ) लकड़ीका डेका,  
थिहते हुएका डेका या सहारा ।

५४१६ ( सं. ) पक्षका प्रथमदिन,  
शुरू पक्षका और कृष्ण पक्षका  
प्रथमदिन, पक्ष्वा, प्रतिपदा,  
तिथिविशेष

५४१७ ५४१८ ( सं. ) देखो ५२३१ ५२३२

५४१९ ५४२० ( सं. ) उत्तम  
आटा, मैदा, गेहूँओं को भिगोकर  
तय्यार किया हुआ आटा ।

५४२१ ( सं. ) पर्दा, सिन्नी ( आंख-  
पर ) पटल, आंख में का आला ।

५४२२ ( सं. ) हथेली और अंगुली  
दोनों से किया हुआ निशान, छपा ।

५४२३ ( सं. ) पतंग, चंग, गुड़ी ।

५४२४ ( सं. ) लावने के लिये माल  
ले जानेका, नाव, ( वि. ) फुसला  
कर या बलात्कार पूर्वक लिबाहुवा,  
हरामका, मुफ्तका, छीनकर लिया  
हुवा । [ एकदम ।

५४२५ ( अर्थ. ) शट, तुरत,

५४२६ ५४२७ ( सं. ) ऊपर कींचे  
गिरना, स्पंको, प्रतिहन्स्का,  
बचावद्वी वॉय,

५३१५ ( सं. ) ठहरनेका स्थान,  
मुकाम, छावनी, डेरा बसनेकी  
जगह, [ अवरहस्ती से ले केना,  
५३१५५ ( कि. ) फुसफुसर अथवा  
५३१५२५ ( वि. ) गावदुम,  
गोपुच्छ सदस। [ छप्पर का ढाल,  
५३१५५ ( स. ) छतका ढलाव,  
५३१५५ ( सं. ) छप्पर, ढलवां छत,  
साया, ओसारा।  
५३१५५ ( सं. ) एक प्रकारका सर्प।  
५३१५५ ( सं. ) देखो ६३१५५।  
५३१ ( सं. ) औषधियों की पार्सल,  
चूर्ण, सूचित करने के लिये  
ढोलका शब्द, पुढ़िया।  
५३१५ ( सं. ) पतले कागज में  
लपेटा हुई वस्तुका बरत, छोटा  
पेकेट।  
५३१५५ ( सं. ) आवक लोगों की  
प्रातः साय ईश्वर से क्षमा माचना।  
५३१५२ ( सं. ) बिंदोरा पीटने  
वाला, चौकी पीटने वाला।  
५३१५५ ( सं. ) मूर्ति, प्रतिमा, मूरत।  
५३१ ( सं. ) कंठा बण्डल, बिंदोरा,  
हुम्मी, मुवादी, इस्तिहार, बण्डका  
५३१५५५५ ( कि. ) संसारमें  
प्रकट करना, बाहिर करना।

५३१५५५५ ( सं. ) एक प्रकारका  
सुनचित कुछ और छसके बने।  
५३ ( सं. ) बडामीर, अमुवा,  
मुखिना, माननीय, ( केसमें )  
५३५ ( कि. ) पढ़ना, अध्ययन  
करना, अभ्यास करना, चौकना,  
सीखना, रटना सोचना, पाठपठना  
५३५-५५ ( वि. ) पठित, सिद्धित,  
पढा, पंडित, पढाहुवा, सीखाहुवा।  
५३५५५ अज्युधनहि ( वि ) पढा,  
किन्तु गुणा नहीं, पठित मूर्ख,  
अनभ्यस्त।  
५३५ अज्युध ने श्रेष्ठ ( वि ) पठित,  
अभ्यस्त, चौकस, ध्यानी, सिद्धित  
५५ ( सं. ) वचन, शपथ, प्रश्न,  
प्रतिज्ञा, वादा, डेक, मसाल,  
नियम, ( अन्व. ) किंतु, परन्तु,  
लेकिन, तोभी, तथापि, ताहब,  
तिसपर भी, भी, इसी तौरपर,  
औरभी, इसीरीतिसे, सम्मान्तमें  
'पना', वा, 'ता' सूचक प्रत्यय।  
५५५ ( सं. ) बांसकी चीप, बांसकी  
छपछवी प्रत्यंग्वा, रोदा, बिस्का,  
पनव।  
५५५२ ( सं. ) विवाह, कम विवा-  
हिता भी, विवाही, निवाही।  
५५५ ( कि. ) देखो ५५५५

अक्षिपत (वि.) विवाहित, निकाही,  
विवाह की हुई, लम की हुई ।

अक्षिपारी ( सं. ) पानी भरनेवाली  
झी, पनहारिण. पानी खानेवाली ।

अक्षी ( सं. ) छोटा बंडल, भाजी  
इत्यादिका बण्डल, गुड़ी, जुड़ी ।

अक्षुब्ध ( सं. ) पानी क पात्र  
रखनेकी जगह, परेडा, घडौची ।

अक्षु ( अव्य. ) गुण, स्थिति प्रद-  
र्शक शब्दान्तमें लगनेवाला प्रत्यय ।

अक्षे ( कि. वि. ) वहां उस जगह,  
तत्र, तहां ।

अक्षेक्षु ( वि. ) देखो अक्षेक्षु

अक्षे ( सं ) रेत और धूलका  
मिश्रण, मिट्टीका डेला, रेत ।

अप्यन्त्री ( सं. ) कस्बी, छिनाक,  
वेस्या, रंढी, गणिका, कुटनी ।

प'ड ( सं. ) शरीर, देह, बदन,  
पांडु रोग, कंबल रोग ।

प'डू ( सं. ) रोग विशेष, पांडु  
रोग, कंबल रोग ।

प'डे ( कि. वि. ) स्वयं, खुद, आप,  
बिना किसी के द्वारा, अपने आप ।

प'डेप'ड ( अव्य. ) सुदबसुद, आपो-  
आप, स्वतः ।

प'डे।शु ( सं. ) एक प्रकारके भूरे  
साँप के आकारका फल, जिसका  
साग बनता है ।

पत ( सं. ) आश्रय, विश्वास, यकीन,  
बढ़ाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश ।

पत ( सं. ) पति, सावित्र, सख्त  
( कवितामें ) पाण्डु रोग ।

पतक३२३ ( कि. ) मान करना,  
इज्जत करना, मानना, स्वीकार  
करना, विश्वास करना, किसीका  
काम करना सिर लेना ।

पत३ ( सं. ) फतिहा, टिड़ी,  
तितली, उड़नेवाला कीड़ा, कन-  
कौवा, चंग, गुड़ी, सूर्य, पारा,  
एक प्रकारकी लकड़ी जिससे रंग  
निकाला जाता है ।

प'त गिथु-थे। ( सं. ) तितली,  
टिड़ी, उड़नेवाला कीड़ा, पतंगा ।

पत७७डी ( सं ) शरद् ऋतु, बसों  
के पते सड़ने का मौसम, पतझड़  
होने के महीने ।

पतन ( स. ) नक्षत्र पात, पछाड़,  
पटकन, स्थलन, पड़न, पात ।

पतन७७।थु ( सं. ) अक्षांस के साथ  
का कोना या नोक ।

पत३३डी ( सं. ) आश्रय, इज्जत,  
मान, पतर ।

पत३१७७।३ ( वि. ) गर्विष्ठ, कमजोरी  
मानी, आत्म-आधी ।

पत३१७७-७ ( सं. ) प्रसंसा, सेखी,  
गर्व, बसण्ड, खोचा, बढ़ाई ।

पतशब्दकोश (वि.) देखो पतशब्दकोश

पतशब्द-णी (सं.) पतल पत्तर, पलाश आदि वृक्षों के पत्रों द्वारा सीकों के योग से बनाई हुई भोजन करने की पतल, ।

पतश (सं.) धातु को पीट पीट कर बनाया हुआ पत्तर, पतरा, पत्र ।

पतशब्द (क्रि.) मांगत देना, चुकाना।

पतशब्द-णी-णी-णी (सं.) देखो पतशब्द

पतशब्द (क्रि.) समाधान होना फैसला होना, परिणाम होना, जाना, रहना, छुटकारा पाना, स्वतंत्रता पाना ।

पतशब्द (क्रि.) रूठना, गुस्से होना, कोप होना, वचन भंग करना, पिघलना, नरम होना, मुलायम होना ।

पतशब्द (क्रि.) समाधान करना, फैसला करना, परिणाम निकालना, छुटकारा पाना, तय करना, चुकाना

पतशब्द-णी (सं.) केवल शक्कर की गोल गोल फूली हुई ठिकिया, बत्तासा, मिठाई विशेष, शक्कर का बिस्कुट तुल्य पदार्थ ।

पतशब्द (सं.) देखो पतशब्द

पति (सं.) स्वामी, मालिक, प्रभु, अधिकारी, खसम, घर बनी, मर्ता ।

पतिपशब्द (सं.) पतिव्रता स्त्री, कुलवती, पति सेवक भार्या ।

पतिपशब्द (सं.) आचर, इज्जत, मान, विश्वास, यकीन, निश्चय ।

पतिपशब्द (सं.) सफेद बकरी का बच्चा, सफेद रंग का मेमना ।

पतिपशब्द (सं.) सुचरित्रा, साध्वी, सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, वह स्त्री जो अपने ही पतिमें अनुराग रखती हो, पति सेवा करने वाली स्त्री ।

पतिपशब्द (सं.) खातरी, विश्वास, दृढ निश्चय, भरोसा, वैर्य, गवाही ।

पतिपशब्द (वि.) पौना,  $\frac{1}{3}$  (संकेतार्थ)

पतिपशब्द (सं.) तपेली, तबेला, पात्र विशेष । [ भरोसा ।

पति (सं.) कोढ़, विश्वास, मान,

पतिपशब्द (क्रि.) विश्वास करना, भरोसा करना, मान करना, ध्यान देना, आज्ञा देना, होने देना ।

पतिपशब्द (सं.) शहर, नगर, बड़ा गाँव, कस्बा ।

पतिपशब्द (सं.) नामवरी, बस, इज्जत, विश्वास, आचर, पात्र, वरतन ।

पत्तरी (सं.) छोटा पत्थर, नार्च के  
जोखार बिसने की सिद्धी, पत्थर  
समान गोल सख्त वस्तु जो मूत्र  
पिंद में बनजाती है और जिस  
से पेशाब करते समय वेदना होती  
है, चकमक पत्थर का टुकड़ा,  
खेलने के पत्थर के पत्थरे, सिक्का,  
एक प्रकार का रोग ।  
पत्तरी (सं.) पत्थर, आलसी पुरुष,  
धीमा, जड़बुद्धि का पुरुष, बहम ।  
अबचन, कुछ नहीं, धूल, भाव,  
रोक ।  
पत्तरी (सं.) देखो पत्तरी ।  
पत्तरी-२ (सं.) बिस्तार, फैलाव ।  
पत्तरी (सं.) बिछौना, बिछाने  
का, चटार्ह, साबरी, मुकाम, ठहरने  
की जगह, पड़ाव ।  
पत्तरी सेवणी (क्रि.) रोगग्रस्त  
होकर बिछौने में पड़े रहना,  
बीमार होना, चारपाई सेना ।  
पत्तरी सेवणी (क्रि.) मरे हुए  
मनुष्य के यहाँ दस दिवस तक  
शोक सूचनार्थ सोने जाना ।  
पत्तरी (सं.) किसी भी चीज़ का  
मोटा बिछौना, प्रसार, फैलाव ।  
पत्तरी (वि.) फैलाव, प्रसार,  
विस्तार ।

पत्तरी (सं.) पत्थर, आलसी पुरुष,  
धीमा, जड़बुद्धि का पुरुष, बहम ।  
अबचन, कुछ नहीं, धूल, भाव,  
रोक ।  
पत्तरी (सं.) देखो पत्तरी ।  
पत्तरी-२ (सं.) बिस्तार, फैलाव ।  
पत्तरी (सं.) बिछौना, बिछाने  
का, चटार्ह, साबरी, मुकाम, ठहरने  
की जगह, पड़ाव ।  
पत्तरी सेवणी (क्रि.) रोगग्रस्त  
होकर बिछौने में पड़े रहना,  
बीमार होना, चारपाई सेना ।  
पत्तरी सेवणी (क्रि.) मरे हुए  
मनुष्य के यहाँ दस दिवस तक  
शोक सूचनार्थ सोने जाना ।  
पत्तरी (सं.) किसी भी चीज़ का  
मोटा बिछौना, प्रसार, फैलाव ।  
पत्तरी (वि.) फैलाव, प्रसार,  
विस्तार ।



५६२२ ( सं. ) देखो ५६२१

५६२२ कोटला देव ४२५१ ( कि. )  
पत्थर पत्थर को देखता मानना,  
अनेक यत्न करना, बन सके सो  
सब कुछ करना ।

५६२२ भे'यवे। ( कि. ) बड़ी कठिन-  
तासे गृहस्थ का निर्वाह करना,  
मिहनत मजदूरी करके जैसे तैसे  
काम चलाना ।

५६२२नी छाती ( सं. ) संगदिल,  
कठोर हृदय, पाषाण हृदय,  
साहसी हृदय ।

५६२२ने। अ३२३। ( सं. ) मूढ़,  
मूर्ख, शठ, अशिक्षित, बे पढ़ा,  
देखा करे किंतु बोले नहीं, कम अङ्ग ।

५६२२ आ५५२ = अपने हाथों  
अपने पैर कुल्हाड़ी, आ बैल गुझे  
मार, अपने आप आपाति में  
जा फंसना ।

५६२२भांथी बोली ४१६५ ( कि. )  
असंभव कार्य करना, चलनी में  
दूध डुहना, पाड़े ( जैसे ) से दूध  
निकालना ।

५६२२थे। ( सं. ) पत्थर का प्याला,  
पत्थरकी कुन्नी ।

५६ ( सं. ) पाँच, पैर, चरण, पग,  
पैर का किन्हा, पासहा, स्थान,

प्रतिष्ठा, मान, आरह, अभिमान,  
महिमा, शब्द, स्वल्प, विमर्श के  
साथ का शब्द, शोक का बहुत  
भाग, दर्जा, ओहदा, मजान, खेडा,  
मृतक पुरुष के नाम पर ब्राह्मणको  
दिया गया बिलौना, चार पाई  
बज्र आदि राज । प्रति के घर  
जाते समय तुलहिन को दिया  
हुवा सामान, बारहखड़ी, शक्य में  
कर्ता, कर्म, क्रियापद अव्यय  
इत्यादि, तुक, कड़ी, पाद ।

५६३। ( सं. ) गुदाख भर कर  
रखनेकी चमड़ेकी लम्बी बैली,  
तमाखू पोच ।

५६४५ ( सं. ) कविता के चरणों  
का योग, छंदशास्त्र, पिंगल ।

५६४५५५ ( सं. ) शब्द विद्या,  
शब्द रचना, वाक्य रचना ।

५६४ ( सं. ) कमल, सरोज, पंकज ।

५६४५५। ( सं. ) पद्मिनी ( स्त्री )

५६२ ( सं. ) बज्रका सिरा या नोक,  
कपड़ेका पल्लू, पल्लव ।

५६२ ( वि. ) अपना, निजका,  
सुदका, गाँठका, पासका, छरण,  
आश्रय, आसरा, सहारा ।

५६२५५५ ( सं. ) रसोईघर, भोजक  
गृह, शीटक, डाका, भट्टिकारकाना ६

- ५४२५ ( वि. ) अपना, निजी, पास-का, गौठका, खुदका ।
- ५४२६ ( सं. ) देखो ५४२७
- ५४२६-६ ( सं. ) संसारमें उत्पन्न अद्वय वस्तु, चीज, वस्तु, ( तर्कशास्त्रमें निम्न सात पदार्थ माने हैं द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ) वाक्यार्थ, स्वादिष्ट उत्तम भोज्य वस्तु, सोना, चांदी, हीरा इत्यादि, ( चार पदार्थ धर्म अर्थ, काम, और मोक्ष ) तत्त्व, सत्त्व ।
- ५४२७ विद्या ( सं. ) पदार्थ के गुण सामान्य धर्मकी शिक्षा देने-वाला शास्त्र, क्लियासफी, तत्त्वविद्या
- ५४२८ ( क्रि. ) डराना, घबराना, हाराना, छकाना, कष्टदेना, पदाना, तग करना, दबाना । [ पीडा ।
- ५४२९ ( सं. ) पैररखने की चौकी
- ५४३ ( सं. ) जिसमें पदहों, श्लोक, चरण ( कविताके ) जैसे अष्टपदी ।
- ५४४ ( वि. ) देखो ५४ ( सं. ) काम, धंधा,
- ५४४५ ( क्रि. ) भगाना, पदाना, घबराना, खदेड़ना, देखो ५४२८
- ५४४६ ( क्रि. ) खूबकाममें लाना,
- ५४४७ ( सं. ) रसदना, मैलाकरना, बरबादकरना।

- ५४२९ ( सं. ) रक्तचर्चकी मणि विशेष, माणिक, लाल नामक प्रसिद्ध रत्ना ।
- ५४३० ( सं. ) हस्त रेखा विशेष, धनसूचक हाथकी रेखा ।
- ५४३१ ( सं. ) भाग्यवान, तकदीर, बाला, उन्नतिशील, कुतकूल ।
- ५४३२ ( सं. ) झुंगार साल में चार प्रकारकी झियों में से एक, कमलिनी, नलिनी, सुलक्षणा स्त्री, उत्तमा स्त्री, वर वर्णिनी, रंग रूप सुकुमारता इत्यादिमें सर्वश्रेष्ठा स्त्री ।
- ५४३३ ( सं. ) आदर पूर्वक निर्मंत्रण, भजान पुरुषका आगमन, सम्मान पूर्वक बुलावा,
- ५४३४ ( क्रि. ) मानदेना, आदर पूर्वक स्थापना करना, आदरपूर्वक बुलाना, सम्मान पूर्वक विदा करना, बे बिकने वाले मालको शूठ मूठ समझाकर किसी के माथे मढ़देना ।
- ५४३५ ( क्रि. ) मानपूर्वक आना, मान सहित विदा होना, सिधा-रना ।
- ५४३६ ( सं. ) देखो ५४३७

५०३। ( सं. ) तिन्यों के काममें पहिले का एक प्रकारका आभूषण । [ संगति ।

५०३। ( वि. ) आईबन्धी, मैत्री,

५०३। ( सं. ) संरक्षण, आद, ओट, सहारा, आश्रय ।

५०३। ( सं. ) जूता, पदत्राण, जोड़ी, पगरखी ।

५०३। ( सं. ) देखो ५०३। ( सं. )

५०३। ( सं. ) स्नाय विशेष, स्नाने की एक वस्तुका नाम ।

५०३। ( सं. ) गुड़ और अमलीका झोल मिश्रित पदार्थ, कबे आम ( कैरी ) को भूनकर बनाया हुआ पानी जिसमें मसाला इत्यादि पड़ा हो । [ अरज ।

५०३। ( सं. ) कपड़े की चौड़ाई,

५०३। ( सं. ) शनिकदिशा, खोटी दशा, जिस समय तन मनको

कष्ट हो, दुर्भाग्य, दुर्दैव, दुष्टग्रह, पूर्ण और शुभ सूचक ।

५०३। ( वि. ) मंगलग्रह, लाभकारी सुखद, भाग्यशाली, सुचारक बधाई, बहुकुटुम्बी, भाग्यवान ।

५०३। ( सं. ) हिस्सेदारी का काम, पांतीकाम, सहयोगिता, दाय किया हुआ व्यापार, कम्पनी,

५०३। ( सं. ) मापी, हिस्सेदार, सहयोगी, पांतीदार ।

५०३। ( सं. ) मार्गका, मतका, प्रवासी गामी, पथिक, पन्थाई, अनुयायी, यात्री, मुसाफिर, बटोही, पांथ ।

५०३। ( सं. ) पूर्ववत्

५०३। ( वि. ) पन्नाह, संख्या विशेष, दस और पांच, १५,

५०३। ( सं. ) पक्ष, पक्षवादा, १५ दिनकी अवधि । [ स्ता ।

५०३। ( सं. ) प्रणाली, सिस्-

५०३। ( सं. ) एक प्रकार का फल ।

५०३। ( सं. ) पारसियों की साल का प्रथम दिन, नयादिन, ( पारसियों का । )

५०३। ( सं. ) पक्षी विशेष चातक पक्षी, पपीहा, जलने से अथवा अन्य किसी कारण से उत्पन्न छाला या फोला, पपीहा ( सितारमें ) एक प्रकार का फल विशेष ।

५०३। ( सं. ) एक प्रकार का फल ।

५०३। ( सं. ) एक प्रकार का वृक्ष ।

५०३। ( सं. ) प्रकट, देखा ।

५०३। ( वि. ) सुगंध फैलना, सुगंध फैलना, प्रसारित होना ।

५५५५५ ( सं. ) सुवन्ध, सुवधू.  
सहक, सुवास, इव, गन्ध ।

५५५५५ ( कि. ) देना, पहुँचाना,  
दिलाना, प्रदान करना ।

५५५५५ ( सं. ) ईटका टुकड़ा,

५५५५५ ( कि. ) टटोलना, टोहना,  
धीरे धीरे हाथ केरना, पपोलना,  
प्यार करना, प्रेम करना, छूना ।

५५५५५ ( कि. ) टटोलना, टोहना,

५५ ( वि. ) शब्द के प्रथम लगने  
वाली प्रत्यय जो 'दूसरे का, अन्य  
का' इत्यादि अर्थ पैदा कर देती  
है, ( उप. ) पीछे, बादमे, उप-  
रान्त, आगे, ऊपर, पिछला,  
पश्चात्तामी, मोक्ष. ( सं. ) पंख,  
पर, पाँख, पक्ष ।

५५५५५ ( सं. ) विदेशी राज्य,  
दूसरे की अमलदारी, पराधिकार ।

५५५ ( सं. ) मूसल, छोड़ा, कूटने  
की मूसली ( वि. ) दूसरे की, पराई ।

५५५५५-५५-५५-५५ ( सं. )  
आसपास घूमना, चक्कर, परिक्रमा,  
प्रदक्षिण, गोल घूमना ।

५५५५५ ( सं. ) पूर्ववत्

५५५५ ( सं. ) कियों का एक मूलन  
विशेष, कमरपट्ट, कटिबंध ।

५५५५ ( सं. ) दूसरे की की  
( जिसकी पर पुरुष के साथ प्रीति  
हो ) रसशास्त्र में तीन प्रकार की  
नायिका है स्वकीया, परकीया,  
सामान्या, नायिकाभेद, उपनायिका  
५५५ ( सं. ) परीक्षा, जाँच, खोज,  
अनुसन्धान, इन्तहाज ।

५५५५५ ( सं. ) परीक्षक, जाँचने  
वाला, खोजी, अनुसन्धान कर्ता ।

५५५५ ( कि. ) परीक्षा करना,  
जाँच करना, पढ़तालना, कसौटी  
कसना ।

५५५५५ ( सं. ) परीक्षा  
करने की मजदूरी, जाँच का मिहन-  
ताना ।

५५५५५ ( कि. ) परखाना, जाँच  
वाना, असली नकली पहँचनवाना ।

५५५५ ( कि. ) परखाना, सम-  
झाना, परीक्षा किया जाना, पहि-  
चाना जाना ।

५५५५ ( सं. ) परीक्षक, जाँचने-  
वाला, सत्यासत्य निर्णय करने  
वाला ।

५५५५ ( सं. ) दूसरे की आवश्यक-  
कताओं पूर्ण करनेवाला, मला,  
परोपकारी ।

५२५५ (सं.) परगना, एक राज्य का छोटा विभाग, जिला, प्रांत।

५२५६ (सं.) आरकर्म, व्यक्ति-चार, छिनाला, परकी अथवा पुरुष गमन।

५२५७ (सं.) दूसरा गांव, अन्य-गांव विदेश, परदेश, गैर मुल्क।

५२५८ (सं.) बाहिरी बिदशी, दूसरा, दूसरे गांवका अन्य देशीया।

५२५९ (सं.) परायाचर, दूसरे-का घर, व्यक्तिचार, जिनाकारी, छिनाला।

५२६० (सं.) आटा, दाल, मसाला आदि कुटकर सामान।

५२६१ (सं.) चमत्कार, आश्चर्य, कौतुक, कगमात, सम्बन्ध, पश्चिब।

५२६२ (सं.) गारेकी दीवारपर छाड़ हुई चास पात इत्यादि।

५२६३ (सं.) देखो ५३६।

५२६४ (सं.) हाथकी रस्तेके लिये तलवार के मूठके आगे का भाग, परज नामक एक प्रसिद्ध राग।

५२६५ (सं.) सोने की चार पाई, छाट, पलंग, पर्प्यट, सेज, मंच।

५२६६ (सं.) अव्युत्त, अजीब, दूसरा व्याप्ति, पराया, अनदेखा।

५२६७ (कि.) जलाना, बर्क-काना, प्रलम्बलित करना, जल देना।

५२६८ (सं.) परब, परबसम के विसमें कुछ में कुछ स्वर हों, शोक गीत, मरासिया, शोक सूक्त गीत।

५२६९ (सं.) दसा, हाजत, होड़, नियम, प्रतिज्ञा, शर्त, कौल, कराह।

५२७० (कि.) कीमत ठहराना, शर्त करना, होड़ बढ़ना, पकड़ना, जाना विदा होना, देखो ५६५।

५२७१ (सं.) कौल करार, प्रतिज्ञा।

५२७२ (सं.) व्यक्ति सूचक शब्द, पादनेके समय का शब्द, अपर्ण वायुके त्यागने के समय शुद्ध शब्द। परदे धूमचाम।

५२७३ (सं.) पति पत्नीका चुनाव, लग्न, विवाह, निकाह, पर्ण, पत्ता।

५२७४ (कि.) प्रणामकरना, नमस्कारकरना, अभिवादन करना, नमनकरना।

५२७५ (कि.) विवाह करना, लग्न करना, शादी करना, निकाह करना, स्त्री पुरुषका साक्षात्कार संबंध होना।

५२५५५ ( वि. ) लटका, लटकी का विवाह कर देना, बहाने के लिये पानी मिलावना, गले बांधना, माथे में डना । [ ब्याहा ।

५२५५६ ( वि. ) विवाहित, ५२५५७ ( सं. ) विवाह, लग्न ।

५२५५८ ( सं. ) पूर्ववत्, ( वि. ) देखो ५२५५९ [ गृहस्थी ।

५२५६० ( वि. ) ब्याहा, विवाहा, ५२५६१ ( सं. ) गुण, बल, प्रभाव, प्रतप, कौतुक, करामात, आश्चर्य विलक्षणता । [ वर्म से ।

५२५६२ ( उप० ) लिये से, द्वारा, ५२५६३ ( सं. ) मार्ग, रास्ता, पथ, राह ।

५२५६४ ( सं. ) प्रपितामह, दादा का बाप, पिता के पिता का भी पिता ।

५२५६५ ( वि. ) विजातीय, दूसरी फीम का, जाति बाहर, दूसरे वर्ण का ।

५२५६६ ( सं. ) नल, नाला, नाली,

५२५६७ ( सं. ) वंशपरंपरागत राति प्रणाली, जल का नल, कुल, शीत, सनातन मार्ग ।

५२५६८ ( अ० ) किन्तु, अधिकन्तु, तथा, अपर, लेकिन, तौभी, पर ।

५२५६९ ( सं. ) पत्नी, चिकिया, खग ।

५२५७० ( सं. ) प्रपञ्च, विपर्यास, प्रक्षरण, प्रप, जात ।

५२५७१ ( वि. ) कमायत, बंसा-  
लुकम से आया हुआ, कुल शीत ।

५२५७२ ( सं. ) पूछ, पूछताछ, चौं  
अपढ़ताल, तलाश, खोज ।

५२५७३ ( सं. ) दूसरा पुरुष,  
अपने पति के अतिरिक्त, अन्य  
पुरुष, दूसरा स्त्री का पति, भद्रमुत  
पुरुष । [ हईं हुआ ।

५२५७४ ( सं. ) तासरी बार लिखी

५२५७५ ( सं. ) फफोला, छात्रा,  
बुदबुदा, बुलबुला, पानी का  
बुदबुदा ।

५२५७६ ( सं. ) बहस्थान जहाँ प्यासे  
यात्रियों को मुफ्त पानी मिलाया  
जाता है, पर्व, उरगव, लौहार,  
प्याऊ ।

५२५७७ ( सं. ) कबूतरों के लिये  
ऊँचे खंभे के ऊपर अन्न आदि  
रखने के लिये बनाया हुआ ।

५२५७८ ( सं. ) लिफाफा, जिसमें  
लिखा हुआ पत्र रखकर ऊपर  
सरनामा किया जाता है, कवर ।

५२५७९-५२५८० ( सं. ) वह मनुष्य  
जो रास्ते पर यात्रियों को पानी  
मिलाता है, प्याऊवाला, शीवाळा ।

परमेश्वर्यु ( कि. ) कायरकरना,  
बकाना, बराना, परवाह न करना,  
तिगस्कार करना ।

परमेश्व ( सं. ) प्राचीन समयमें,  
पुराने बर्जोंमें, पहिली उन्नमें  
पूर्वजन्ममें ।

परमा ( सं. ) परवाह, दरकार,  
फिक्र, चिंता, ह्याल, ध्यान ।

परमात ( स. ) प्रभात, भिनुसारा,  
तड़ना, सवेरा, सुबह, भोर ।

परमातियु ( स. ) प्रभाती, सुनह  
के बक्त गाने का राग, परभाती ।

परमाईर्यु ( वि. ) अवभुत,  
अजीब, दूसरा, अनजाना, अप-  
रिचित ।

परमेश्वर ( सं. ) प्रभु ईश्वर, हिंदु-  
ओं की एक जाति विशेष ।

परम ( वि. ) उत्कृष्ट, प्रधान, आच,  
श्रेष्ठ, अप्रगामी, अप्रेसर, अवभुत,  
बिलकुल, बहुत, परसो ( दिन )

परमेश्वर-दी ( वि. ) ( गत )  
परसों के दिन ( आगामी )  
परसों के दिन ।

परमेश्वर ( सं. ) बागी, सन्वासी,  
अवभूत, छन्यास विशेष, ब्रह्म ।

परमादी ( सं. ) मांस, मींस ।

परमाद्य ( सं. ) प्रमाण, उदाहरण,  
सुबूत, दृष्टांत ।

परमाद्यु ( कि. ) सत्यमनना,  
सत्य प्रमाणयुक्त समझकर स्वीकार  
करना ।

परमाद्य ( स. ) सादीकिकेट,  
प्रमाण पत्र, दस्तावेज ।

परमाद्यु ( सं. ) अत्यंत सूक्ष्मवस्तु,  
कणमात्र, कालविशेष, पारिमात्र,  
माप, नाप, तौल, अन्वाक ।

परमाद्यु ( उप. ) अनुसार, सुवा-  
फिक, समान, प्रमाण से ।

परमाद्यु ( सं. ) उत्कृष्ट पद,  
यवार्थ वस्तु, मोक्ष, सुख,  
दुःखाभाव, पवित्रज्ञान ।

परमेश्वर-मो ( सं. ) शुकदोष,  
प्रमेह, मूत्र के साथ वीर्य जानेकी  
बिमारी, शुकमेह ।

परमेश्वर ( सं. ) विदेश, अन्य देश,  
इतर देश, परदेश ।

परमेश्वर-मर-सर ( सं. ) शिव,  
परब्रह्म, विष्णु, ईश्वर, भगवान् ।

परमेश्वरती माय ( सं. ) बोधा,  
काहिल, आलसी, सुस्त ।

परमेश्वरपद्यु ( वि. ) ईश्वरता,  
प्रभुता, देवत्व कोदर्श ।

परमेश्वरी ( सं. ) देवी, आदिशक्ति,  
कल्मी, भगवती, दुर्गा, सरस्वती ।

परमेश्वर ( कि. ) बहुत समझा-  
कर कहना, सबसमझाना ।  
परमेश्वर ( वि. ) आनन्दित, मग्न,  
मुदित, खुश दिल, आनन्दी ।  
परमेश्वर ( अ. ) शेषसीमा, अंतसीमा,  
सक, हर ।  
परमेश्वर ( सं. ) पाला, क्रम, आनुपूर्वी  
परिवर्तप्रकार, अवसर, निर्माण,  
द्रव्य धर्म, सम्बन्ध विशेष,  
सम्पर्क ।  
परमेश्वर ( सं. ) सनातन, अन्वय,  
वंश, कुल, संतान, परिपाटी,  
अनुक्रम, क्रमशः, उत्तरोत्तररिवाज ।  
परमेश्वर ( सं. ) दूसरेका राज,  
विदेशी राज्य, विदेशी शासन ।  
परमेश्वर ( सं. ) छिपकली, बिसतुइया,  
बिसमरी, पल्ली ।  
परमेश्वर ( कि. ) मरजाना,  
गुजरजाना, मृत्युहोना, नाशहोना ।  
परमेश्वर ( सं. ) देखो पर्व अथवा प. ५  
परमेश्वर ( कि. ) इच्छानुकूल होना  
अनुकूल होना, योजना ।  
परमेश्वर ( वि. ) अनुकूल ।  
परमेश्वर ( सं. ) ज्ञान, दान इत्यादि  
पुण्य करने का शास्त्रोक्त दिवस ।  
देखो पर्वेश्वर  
परमेश्वर ( सं. ) विदेश, बह्यदेश  
अन्य देश, पराग्य देश ।

परमेश्वर ( कि. ) प्रकाशित करना,  
उद्घाटन करना, ठीक करना,  
नया बनाकर चलाना, फैलाना ।  
परमेश्वर ( सं. ) परमात्मा, ईश्वर,  
प्राणीमात्र को जीवन दाता, प्रभु ।  
परमेश्वर ( कि. ) सिधारना, जाना,  
बिदा होना, रवाना होना, गमन  
करना ।  
परमेश्वर ( सं. ) पालन पोषण,  
रोजी, निर्वाह, कृपा, रक्षा, पालन ।  
परमेश्वर ( सं. ) पराई चीज़, दूसरे  
की वस्तु, दूसरे का माल असबाब ।  
परमेश्वर ( सं. ) एक प्रकार का शाक,  
फल विशेष, सौंपसरीखी लौकी ।  
परमेश्वर ( सं. ) परवाह, फिक, चिंता  
दरकार ।  
परमेश्वर ( सं. ) डोंड, पतवार,  
नौका चलानेका दण्ड अथवा स्थान ।  
परमेश्वर ( सं. ) गाँवके पास का  
आसपास भाग ।  
परमेश्वर ( सं. ) हुकम, आशा,  
छुट्टी, इजाजत, रजा, अनुशासन ।  
परमेश्वर ( सं. ) लायसेंस, वारंट,  
आज्ञापत्र, पास, हुकम ।  
परमेश्वर ( सं. ) अवकाश, फुरसत,  
छुट्टी, समय, बत्त, परिवार,  
कुटुम्ब, कुनबा, घर क लोग ।



परवाशु ( सं. ) देखो परवाशु  
परवाशु ( सं. ) बे चन्दा, बे रोज  
मार, बे काम, निकम्मा, ठगवा ।

परवाशु ( कि. ) कामकाज कर के  
फुरसत पाना, ठगले होना ।

परवारी ( स ) इस नामकी एक  
नीच जाति, नीच कौम विशेष  
भंगी ।

परवाशु ( सं. ) मूंगा, प्रवाल, एक  
प्रकार के समुद्री जानवर के रक्तमें  
से उत्पन्न मेल जो लाल गुलाबी  
और कुछ कुछ पीले रंग का  
होता है ।

परशाण-साण ( स. ) प्रवेश गृह,  
पटशाल, घर के चौक के पास  
का एक मकान ।

परशी ( सं. ) परशु, कुल्हाड़ी,  
छोटी कुल्हाड़ी, फरसी, कुठार ।

परशु ( सं. ) शस्त्र विशेष, परश्वध.  
कुल्हाड़ा, पशु, फरसा ।

परशुडी-मुडी ( सं. ) मैदा, एक  
प्रकार का मेहू का उत्तम आटा ।

परस ( सं. ) ओस, सबनम, कुहर  
झुंघ, पाल, जाड़ा ।

परसतुं ( कि. ) पहिचानना, पर-  
खना, जानना, चीन्हना, छूना,  
स्पर्श करना, मचना, नाद करना ।

परसंभ ( सं. ) खाट, परलंग, खाटिया,  
पर्यङ्क, चारपाई, प्रसंग, योग,  
संगतिविशेष ।

परसाह ( सं. ) नैवेद्य, भोग, देव,  
देवीको चढाया हुवा भोजन,  
भोजन, आशिर्वाद, कृपा, गुरुदेवता  
प्रभृति द्वारादिया हुवा कृपाफल,  
( लड़ाई के समय ) मार, पीट,  
कुटार्ह, पिटार्ह ।

परसेवे-वे ( सं. ) पसेव, पसीना,  
स्वेद, भ्रमजल, प्रस्वेद ।

परसेवे उतासेवे ( कि. ) पसीना  
खूट जावे इतनी मिहनत कराना,  
अत्यंत कठिन परिश्रम कराना ।

परस्तश्च-स्ती ( सं. ) पूजा, पूजन,  
यजन, नमन, प्रणाम, अभिवादन  
सेवा, देव सत्कार, आराधना ।

परस्ती ( सं. ) प्रशंसा, प्रशस्ति,  
वर्णन, तारीफ, सुशामद, चाव-  
लूसी, गोंडगुलामी ।

परसाहडे ( सं. ) पाखाना, संकल,  
टट्टी, झाड़ा, दस्त, सौच ।

परदेव-शु ( सं. ) रोक, बंधी,  
पथ्य, देखो परेश ।

परदेव अरतुं ( कि. ) बंद करना,  
बंद करना, पथ्य करना, परदेव  
करना ।

परिचय ( वि. ) जाने जानेकी  
कई वस्तुओं का परीक्षण करनेवाला  
पद्य करनेवाला, वृणा करनेवाला

परिचय ( सं. ) देखो परिचय ।

परिचय ( सं. ) दोष, बाकी, अवशिष्ट,  
बादबाकी बचाहुवा, उपरान्त ।

परिचय ( कि. ) देखो परिचय ।

परि ( सं. ) कंठमें से निकलतेही  
प्रारंभिक ज्ञान, शब्द का स्वरूप  
विशेष, नाद स्वरूपवर्ण, शब्दका  
आदि स्वरूप, योगाभ्यासद्वारा  
समस्त शब्दका प्राप्त बजिरूप,  
सबसे उच्च गति, गंगा, गायत्री  
( अ. ) पीछे, तरफ, ओर, दूर ।

परिचय ( सं. ) मूसली, मूसल, लोड़ी ।

परिचय ( सं. ) मर्यादा, इद,  
सीमा, अतिश्रम ।

परिचय ( वि. ) कामाखोल, अम-  
णकारी, रमता ।

परिचय ( सं. ) मचान, मंच, तमाशा  
गाह का ऊंचा चबूतरा, फासी देने  
का मचान ।

परिचय ( सं. ) बड़ी भारी बाली,  
बड़ा शाल, परात, शाल ।

परिचय ( सं. ) तीस बीघे का माप  
काठी, मूमि का माप विशेष ।

परिचय ( सं. ) गधे के ऊपर गुपड़ी  
रखकर बकरे के बालों की बनी  
जिस डोरी से बांधा जाता है वह  
रस्ती ।

परिचय ( सं. ) बैल हांकने की  
आरवाली लकड़ी, वह लकड़ी  
जिस में बैल चलाने के लिये कौल  
ठोकी गई हो, आंकुस, अंकुश ।

परिचय ( कि. वि. ) बलात्कार पूर्वक  
बल पूर्वक, जबरदस्ती से, बिना  
इच्छा के, जोराजोरी, बेमर्जी ।

परिचय ( सं. ) देखो परिचय ।

परिचय ( सं. ) छाछ का पानी, मठ  
का पानी, देखो परिचय ।

परिचय ( वि. ) श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ,  
उत्तम से उत्तम, सब से अच्छा,  
देव, ईश्वर ।

परिचय ( वि. ) परतंत्र, ताबेदार,  
अन्याधीन, दूसरे के आधीन ।

परिचय ( सं. ) दो पहर के बाद,  
मध्याह्न के उपरान्त, दो पहर ।

परिचय ( वि. ) असली, बपौती,  
बापदादों का, अगलापिछला ।

परिचय ( वि. ) पराखित, परास्त,  
हाराहुवा, तिरस्कृत ।

परिचय ( सं. ) मूसल, लोड़ा, बड़ा,  
मूसली, लोड़ी, बत्ता ।



परिभाषा ( सं. ) पूर्ववत्,

परिभाषा ( सं. ) कृत्रिम नाम,  
बनावटी संज्ञा, सुप्रकाकक्षण विशेष,  
अवयवार्थ को छोड़ समूह का  
अर्थ, संक्षिप्त वाक्य, स्पष्ट व्याख्या,  
प्रस्तावना, परिष्कृत भाषा, प्रशस्ति,  
प्रथ संक्षेप करने के लिये सांके-  
तिक नियम, साक्षात् निबन्धमे  
सूत्र । [ वृ. गन्ध ।

परिभ ( सं. ) सुगन्ध, सुगन्ध वास

परिभ ( सं. ) सुगन्ध, सुगन्ध,  
सुवास, अच्छी महक, सौरभ ।

परिभ ( सं. ) छाट, पलका, पलङ्ग,  
सेज कपड़ा, चारपाई, खदिया ।

परिभ ( सं. ) घोड़ी, वस्त्र-  
बोलेवाला, जाति विशेष, रथक ।

परिभ ( सं. ) पूर्वज, पुरुषा, नाप-  
सादे अमज, पूर्वपुरुष, पितामह-  
आदि, पुरखा, पुरुखा ।

परिभाषा ( कि. ) नाप-  
सादों की कीर्ति को नाश करना ।

परिभाषा ( सं. ) गमन, प्रस्थान,  
कूच, यात्रा बिदाई, पवान ।

परिभा ( सं. ) आत्मिन, भेट  
करना, इष्ट्यात्मिन ।

परिभा ( सं. ) गाळी, उमहना,  
तिरस्कार, निन्दा, सत्व निन्दा,  
डुपई, अपकीर्ति ।

परिवे ( सं. ) चन्द्र सूर्य के आस-  
पास का गोळ चक्र ।

परिवे ( सं. ) आच्छादन, ढक्कन,  
वस्तुर्दिक से आच्छादन, लपेटन ।

परिवे ( सं. ) अन्त, सीमा,  
विच्छेद, समाप्ति, शेष, बाकी,  
अवशेष ।

परिवे ( सं. ) पाठशाला, कालिज,  
महरा, स्कूल, गुरुकुल, समा ।

परिवे ( सं. ) सार्वजिन, चक्र, नौकर ।

परिवे ( कि. ) देखो भिक्षु

परिवे-गान ( सं. ) निश्चय शेष,  
सब प्रकार से जाना हुआ, ज्ञात ।

परिवे ( सं. ) आश्रय, आसरा,  
हिसाब, गणना, सीमा कुल, योग,  
जोड़, टोटल, गिनती लेखा ।

परिवे ( सं. ) त्याग, विसर्जन,  
मोचन, निकाल, छोड़, छीन,  
हरण ।

परिवे ( सं. ) अवज्ञा, अन्याय,  
मोचन, छोड़ना, त्याग, विसर्जन,  
एक जाति विशेष, रोक, आद ।

परिवे ( सं. ) अपाधि, हट ।

परिवे ( कि. ) जानना,  
परखना, कसौटी कसना, इम्तहा-  
न लेना ।

भरीक्षित ( वि. ) खिलका गुणविने-  
चित्त हुआ है, जांचा हुआ, अभि-  
मन्युका पुत्र ।

भरीभ ( सं. ) शराफोंकी पदवी,  
शराफी बंधा करने वालों के  
नामके साथ लगाया जाता है ।

भरीभगत-गढो ( सं. ) अत्यंत  
खूबसूरत, विशेष मनोहर, रूपस-  
म्पन्न । [ कियत ।

भरीभरी ( सं. ) मालमत्ता, मिल-

भरीसबुं ( कि. ) भोजन करने  
वाले के आगे भोज्य पदार्थ  
रखना, परसना, परोसना,  
भोजन रखना ।

भरीसे-सा ( सं. ) पीडा, दुःख,  
कष्ट, अडचन, तकलीफ, क्लेश ।

भरी ( सं. ) उपपुर, नगर प्रांत,  
बाहिरी भाग, पुरा, सहर या कस्बे  
के बाहर लगी हुई बस्ती, बिल्डी,  
खरहा, दूर, असमीप, अल, पीव,  
गुमडी, फुनसी के एक जानेपर  
निकला हुआ सफेद पीव ( वि. )  
सलटा, आठा,

भरी ( सं. ) देखो भरी

भरी ( कि. ) कहना, बोलना,  
कथन करना, वर्णन करना ।

भरी ( वि. ) निष्ठुर, कठोर, कठिन,  
कड़ा, निर्दय, क्रूर, रुस, तीव्र,  
निष्ठुरोक्ति, कठोर वाक्य ।

भरी ( सं. ) प्रभात, अरुणोदय,  
सूर्योदय का समय, ( वि. )  
प्रकारसे, रीतिसे ।

भरी ( सं. ) परहेज, पच्य, वृणा।

भरी ( कि. ) पच्य करना,  
बचना, परहेज करना, वृणाकरना ।

भरी ( वि. ) अल्पभोगी,  
मिताहारी, अल्पाहारी, पच्य  
करने वाला ।

भरी ( सं. ) देखो भरी

भरी ( स. ) प्रेस, शिकंजा,  
यंत्रालय ।

भरी ( वि. ) निर्लज्ज, तोफानी  
पहुंचवान, चतुर, धूर्त, अशुद्ध,  
व्यभिचारी, असाधु, दुष्ट, अवारा ।

भरी ( सं. ) स्वर्ग, वैकुण्ठ, परि-  
यों के रहनेका स्थान, इन्ड्लोक ।

भरी ( सं. ) बोलउठाने की बन्दी ।

भरी ( सं. ) पर पंच, पक्ष, पांख ।

भरी ( सं. ) किनारा, अत, सिरा ।

भरी-६-दिथुं ( सं. ) भिडुसाय,  
भोर, प्रभात, सुबह, सबेरा,  
तबका, दिनोदय, सूर्योदय,  
प्रातःकाल ।

परिचयः ( सं. ) ज्ञात स्वगत,  
आतिथ्य, अतिथि सत्कार, सेवा-  
सुभूषा, आतिर तबज्जोह ।

परिचयः ( सं. ) पूर्ववत्,

परिचयः ( सं. ) पूर्ववत्,

परिचयः ( सं. ) अंकुश, बैल चला.

नेकी बहलकरी जिसमें नीचे कील  
लगी हो, अतिथि ( स्त्री ), मुईमें  
का दौरा ।

परिचयः ( सं. ) पाहुना, मेहमान,  
अतिथि, अनजाना मनुष्य, अंकुश,  
आरदार डंडा ।

परिचयः ( कि. ) मुईमें धागा डालना,  
धागे में फूल या मालाके दाने  
अथवा गुरिमें गूँथना, पिरोना,  
पोना ।

परिचयः ( सं. ) पत्ता, पत्र, पान, दल,  
पत्ता, पाती, पात, ताम्बूली दल ।

परिचयः ( सं. ) परम ।

परिचयः ( सं. ) खाट, पलका, पलङ्ग,  
सेज, शय्या, चार पाह ।

परिचयः ( सं. ) सिरा, छोर,  
सीमा, अन्त, आखिर, परिणाम,  
पूर्ण । [ दुर्गमनी ।

परिचयः ( सं. ) रोक, बैर, द्वेष,

परिचयः ( सं. ) नदी, नास, छोटी  
नदी । [ रवानगी, गमन ।

परिचयः ( सं. ) कूच, प्रस्थान, पवान,

परिचयः ( सं. ) बंधेष्ट, पूर, लुति,  
सन्तोष, प्रसि, संतुष्टि, कापी ।

परिचयः ( सं. ) रोति, रस्त, मार्ग,  
तरीका, जुक्ति, उपाय, सिलसिला,  
क्रम प्राप्त वह शब्द जो समान  
अर्थ का बोधक हो, क्रम, अनु-  
पूर्वी ।

परिचयः ( सं. ) पचोसन, पचोसन  
पचसन, जैनियोंका प्रताविशेष ।

परिचयः ( सं. ) पौर्णिमा, प्रतिपदा,  
पद्मा, पूनम ।

परिचयः ( सं. ) क्षण, अल्पकाल,  
चड़ी का साठवां अंश, निमेष,  
साठ विपल काल, घास, तृण,  
मास, पुल, सेतु, पुलिया ।

परिचयः ( कि. ) हँसना, खुशी  
होना, प्रसन्न होना, मुँदित होना ।

परिचयः ( सं. ) देखो परिचयः

परिचयः ( सं. ) चमका, दमका,  
प्रकाश, तेज ।

परिचयः ( सं. ) छोटापलंग, छोटी-  
खाट, पीठा, पल्ला, छोटा कोच ।

परिचयः ( सं. ) पलंग पर डालने  
का वस्त्र, पर्यहनक, चदर ।

परिचयः ( कि. ) उलटना, हेरफेर-  
करना, ओँझा करना, चित्त धरना,  
फटना, वचन भंग करना, पल्लोना  
सुधारना ।

५५५८ ( सं. ) एक प्रकार का वस्त्र जिसे गुजरती भील और कुली पहिनाते हैं, वस्त्र लपेटने के लिये दी हुई गठान ।

५५५८ पुं ( कि. ) बदलना, हेरफेर करना, लौट पलट करना, पलटना ।

५५५९ पुं ( कि. ) रीझना, खुश होना प्रसन्न होना, आनन्दित होना ।

५५५१३ ( सं. ) आद बाढ़, रोक, अटकाव ।

५५५१ पुं ( कि. ) नीचना, तरहीना, गीला होना, पानीयुक्त, भीगना ।

५५५१ पी ( सं. ) अंकों का अनुक्रम पूर्वक गुणाकार, पहाड़ा, पटी ।

५५५१ डी ( सं. ) पर पर पर रखकर बैठक, पैर में आटी डाल कर बैठने की रीति ।

५५५१ डी वाणवी ( कि. ) पैर पर पैर रखकर बैठना, पैरों में आटी डालकर बैठना । [ विशेष ।

५५५१ डुं ( सं. ) प्याज, कादा, कंद

५५५१ थु ( सं. ) काठी, जूनि, घोड़े पर चढ़ने के लिये डालने की गद्दी, खोगीर, आसन ।

५५५१ थुं डर पुं ( कि. ) छूच करना घोड़े पर चढ़ कर प्रस्थान करना,

काटना, काटी करना, सघाटी करना ।

५५५१ थु ( सं. ) छावने के टाइट को बराबर करने के लिये वह काठका टुकड़ा जिसे अक्षरों पर रख कर ठेकते हैं ।

५५५१ व ( सं. ) मात, मसाला, और मास के मिश्रण से पकाया हुआ भोजन पुलाव, मुसलमानी भोजन, खाद्य पदार्थ । [ जाति

५५५१ थ ( सं. ) भीलों की एक

५५५१ थ ( सं. ) किशुक वृक्ष, टेसू का पेड़, खा जरा, छीला, वृक्ष विशेष, ठाक । [ बाज ।

५५५१ थ ५१३ ( सं. ) पलाश का ५५५१ थुं ( कि. ) नीला करना, नर करना, मिगोना, पानी से मिगोना, समझाना, अपने विचार दूसरे के दिल में जमाना, मोहित करना ।

५५५१ थ ( सं. ) देखो ५५५१, भूत, त्रेत, मैला, गंधा, दुष्ट, दुखदायी, वृद्ध, पिशाच, योनि विशेष, राक्षस ।

५५५१ थ ( सं. ) गंधा, मैला ।

५५५१-थुं ( सं. ) पतल्य, उम्प्य, दुकड़ा ।

पक्षितो ( सं. ) बड़ी बत्ती, बड़ी बागी, मशाल, पटाके या आति-शबाजी जलाने की सुलगती हुई बत्ती, रोटी का टुकड़ा, मोरी बत्ता ।

पक्षितो भुक्षणे ( कि. ) जगाना, प्रज्वलित करना, झुलगाना, तप्या करना, मड़काना, उस्काना, छेजेजना देना, सुरंग लगाना ।

पक्षित ( सं. ) भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, योनिविशेष ।

पक्षेयधु ( सं. ) जीव जंतुकी रक्षाके लिये द्रव्य ।

पक्षेऽपुं ( कि. ) शिक्षादेना सिखाना, सिखाके तैयार करना, दाबना, दबाना ( पैर )

पक्षि ( सं. ) छिपकली, बिसतुइया, बिसमरी, नवरात्रीके दिनोंमें शीपकों का समूह रखकर जिसके आसपास लोग गीत गाते हैं वह ।

पक्षुं ( सं. ) तराजूके पल्लवे, तख्खरी के पल्लवे, विवाह के पूर्व बरकी ओर से कन्याको दोजाने-वाली वस्तुएँ जेवर इ०, झीवन, जिसपर पुरुष का कोई अधिकार नहीं होता जबतककि जीजीवित रहती है ।

पक्षे ( सं. ) कपड़ेका छोर, आँचर, अम्बल, फासल, अंतर, दूरी, व्यवधान, आंगा, आनिया ।

पक्ष ( सं. ) क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, जनाना, पुसत्वहीन ।

पक्ष ( सं. ) वायु, हवा, बतास, सधीर, वायुके तीन प्रकार शक्ति मन्द और सुगन्ध ।

पक्षन्त्यु ( कि. ) उच्छृङ्खल विचारके होना, अविवेक पूर्वक व्यवहार करना ।

पक्षन्त्यु ( कि. ) बात फैलाना ।

पक्षन्त्यु ( कि. ) गर्व होना, बसंठहोना, मिजाज होना, दर्प होना ।

पक्षन्त्यु ( कि. ) अच्छी बुरी बात फलाना, गुणदोषलगना, सगतिका प्रभाव होना ।

पक्षन्त्यु ( कि. ) व्यर्थ-जाना, निष्फळ होना, पार न पड़ना, मिथ्या होना, अलोप होना, खोजाना, बंदहोना ।

पक्षन्त्यु ( सं. ) हवासे चलनेवाली चक्की, वायुद्वारा गमनशील वंज ।

पक्षन्त्यु ( वि. ) तेज, शीघ्रगति, द्रुत गति, तेजचाळ, पक्षवतुत्प-न्न ।



पवनपावडी ( सं. ) मज्जित खड्गकं  
जिनपर चढ़ने से पवनकी भांति-  
शीघ्र दौड़ने लगता है, पवन  
समान शीघ्र गति ।

पवनवाणुं ( वि. ) हवादार, वायु-  
युक्त, ससंघीर हवाई ।

पवनवेगी ( वि. ) पवनके समान  
वेगवाला, जल्दबाज, हवा जैसा  
वेगवान ।

पवाडुं ( क्रि. ) पिलाना, प्याना,  
जल इत्यादि तरल पदार्थ खिलाना ।

पवाडी ( सं. ) ताख, आला,  
आलमारी वस्तु रखनेके लिये  
दीवार में किया हुआ छिद्र अथवा  
स्थान ।

पवाडे। ( सं. ) लावनी की चालकी  
कवितारचना जिसमें शूरवीर  
पुरुषोंका यश वर्णन होता है, वीर  
रस काव्य, निन्दा, आक्षेप, नि-  
न्दात्मक कविता, व्यर्थकी बकबक  
अपवाद, निन्दोपाख्यान ।

पवाडुं ( सं. ) एक प्रकारका लंबा  
और पीतलके मिश्रणका गिलास  
जो पूजाके समय काम आता है,  
पंचपात्र, पानी पीनेका प्याला,  
एक प्रकारका माप, परिमाण  
विशेष ।

पवित्राग्रास ( सं. ) भावण कुडी  
ब्राह्मी, तिथिविशेष ठाकुरजी को  
पवित्रा चढ़ाने का दिन ।

पवित्री ( सं. ) कुछ मुद्रिका, पैताँ,  
अंगूठी विशेष, दर्मा की अंगूठी,  
तपन आदि कर्म करते समय हाथ  
की अंगुलियों में पहिने का  
छात्रा, कंठमें पहिने का मूषण  
जिसपर "श्री नाथजी" लिखा हो,

पवित्रुं ( सं. ) पवित्र सूत्र, बल्लभी  
संप्रदाय में रेशम का गुथा हुआ  
बह सूत्र जो पहिले ठाकुरजी को  
भेंट कर बादमें स्वयम् धारण  
करते हैं ।

पशभ ( सं. ) ऊन, बाल, रंआ,  
रोवाँ, रोम, मुलायम बाल,  
तिनका, तृण ।

पशभी ( वि. ) ऊनी बालयुक्त,  
रोमयुक्त, तृणयुक्त ।

पशभीना ( सं. ) ऊनी पौसाक,  
पहिनेके ऊनी बल ।

पशधी ( सं. ) हथेलीके गट्टे में  
जितना समा सके, छात्रा, अंगूठी,  
मुद्रिका, बह भेंट जो भावण मास  
में माई की खोर से बहिनको दी  
जाती है ।

पञ्चपञ्ची ( सं. ) पञ्च और पञ्ची,  
ये पञ्च जो तेजासे बल सकते हैं  
और उड़ भी सकते हैं जैसे  
• शुचिर्मुनि ।

पञ्चपक्ष ( सं. ) दोर पालने वाला,  
ज्वाला, बरबाह, गरुडिना, शिव,  
शंकर ।

पञ्चभान ( सं. ) पञ्चात्तापयुक्त,  
व्याकुल, पछतावा करने वाला ।

पञ्चभानी ( सं. ) पञ्चात्ताप, पछ-  
तावा, व्याकुलता, परेशानी अनु-  
शोचन ।

पञ्चातकाल ( सं. ) बादमे, समयो-  
परान्त, कालान्तर, पीछेका ।

पञ्चाताप ( सं. ) कर्मान्तर सन्ताप,  
पञ्चात् शोक, अनुशोचन, पछतावा ।

पञ्चातापी ( वि. ) पछतावा करने  
वाला, कर के पछताने वाला ।

पश्चिम ( सं. ) अस्ताचल के  
समीप की दिशा, पछाह, प्रतीची,  
विशा विशेष, सूर्यास्त की दिशा ।

पश्चिमभाषी ( कि वि. ) पश्चिम  
दिशा की ओर, पीठ पीछे ।

पञ्चाभिषे ( सं. ) कुंजदा, शाक-  
भाजी बेचने वाला, तरकारी  
बेचने वाला ।

पञ्चता ( सं. ) विस्ता प्रसिद्ध मेवा ।  
एक प्रकार का मेवा ।

पञ्चद ( वि. ) खुश, राजी, प्रसन्न,  
मान्य, स्वीकृत, चुना हुआ,  
इच्छित ।

पञ्चदम्भी ( सं. ) अनुमत्, अनु-  
मोदन, प्रशंसा, स्वीकृति ।

पञ्चद पञ्चु ( कि. ) स्वीकार होना,  
पसंद आना, ठीक होना, उचित  
होना ।

पञ्चर ( सं. ) वह स्थान जहाँ प्रातः  
ढांगे को चरने ले जाते हैं और  
द्वार वहाँ चरते हैं । ढांगों का  
सुबह का चरना ।

पञ्चरपु ( कि. ) प्रसरित होना,  
फैलना विस्तृत होना, लंबा होना,  
बड़ा होना ।

पञ्चली ( सं. ) देखो पञ्चली

पञ्चवारपु ( कि. ) पपोलना, धीरे  
धीरे हाथ फेरना, पलोटना ।

पञ्चाप ( सं. ) प्रसाद, कृपा, द्रव्य,  
घन, दौलत, अनुकम्पा ।

पञ्चावतु ( सं. ) नौकरी के बदले  
भरण पोषण के लिये दी हुई  
चमाँदा भूमि या गांव, इनाम में  
दी हुई भूमि ।

५५५३ ( सं. ) यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ व्यापार के लिये चकर ।

५५५४ ( वि. ) पार उतराहुवा, परीक्षोत्तीर्ण, प्रविष्ट, दाखिल ।

५५५५ ( कि. ) परीक्षा देना, व्यतीत करना, निर्गमन करना, विश्वासनकरना, कुछ न गिनना ।

५५५६ ( कि. ) पास होना, परीक्षामें उत्तीर्ण होना, दाखिल होना, भागजाना, मरजाना, रोपहोजाना ।

५५५७ ( कि. ) फैलाना, विस्तृत करना, बढ़ाना, लम्बाकरना ।

५५५८ ( सं. ) फैलाव, विस्तार, वृद्धि ।

५५५९ ( सं. ) कुलाव, कच्चा चूल, कील डालनेका नकूचा ।

५५६० ( सं. ) पिस्तानामें प्रसिद्ध देवा ।

५५६१ ( सं. ) फलबेचनेवाला कुंजडा, शाक तरकारी बेचनेवाला ।

५५६२ ( सं. ) प्रस्थाना, मुहूर्त समय साधनार्थ अपने घरसे निकलकर कहीं अम्यत्र जा रहना, मुहूर्त के दिन दुपहरा खोदा और जानेकी दिशामें किसीके यहाँ रुक देना और जाते समय लेजाना ।

५५६३ ( सं. ) जोरके वृद्धि,

५५६४ ( कि. ) किसी पर जोरमें बतारु होजाना ।

५५६५ ( कि. ) पछताना, पश्चात्तापकरना, अनुशोचन करना, अनुताप ।

५५६६ ( सं. ) अनुशोचन, पश्चात्ताप, पछताना, शोक, जेद, अफसोस, कर्मान्तर सन्ताप, पश्चाद्, शोक ।

५५६७ ( सं. ) रक्षा, दूसरी तरफ से लड़ने वाला, रही कागज, सहायक ।

५५६८ ( सं. ) रक्षक, सहायक, पक्षलेने वाला, तरफदार, भिदू ।

५५६९ ( कि. ) बहा, तडा, उस जगह उधर । [ की चरई ।

५५७० ( सं. ) आधी रातमें डोरों

५५७१ ( वि. ) डाल डोलमे बडा, विस्तृत, पहाड़सा, जवान बोझा, भारी,

५५७२ ( सं. ) छोटापहाड़, डुंगरी, टेकड़ी, ( वि. ) पहाड़ सम्बन्धी, पार्वती, पर्वतका, बडा, पिछाड, दीर्घ ।

५५७३ ( सं. ) पर्वतवासी, पर्वतपर रहनेवाले, पहाड़ी देशके निवासी ।

- पहेलियु ( कि. ) कोरा वस्त्र रंगने के लिये घोना, सफेद करना ।
- पहेला ( सं. ) देखा पैना
- पहेला-ही ( कि वि. ) वहाँ, उधर तन, तहा, उस जगह ।
- पहेली ( सं. ) वह मिहमान जो दूसरे दिन ठहरे, दो दिन ठहरन वाला आतिथ ।
- पहेरेक्षु ( स. ) लम्बा नाँचा डाला गले में पहिरने का वस्त्र, झगा, पहिरनेकीरीति ।
- पहेरेक्षु ( स. ) पहिरनेकी रीति पहिरने का, ओढ़ने का ।
- पहेरेनु ( कि. ) ओढ़ना, पहिनना, डालना, धारण करना, वस्त्रादि पहिरना, आभूषण पहिरना ।
- पहेरेवेक्ष ( सं. ) पहिरनेकी रीति, पहिराव, पहनाव, वेशभूषा, लिबास वस्त्र पहिरने का ढङ्ग, कपडा ।
- पहेरेभयु ( सं. ) स्त्री धन, विवाह पश्चात् कन्या के स्वसुर सास इत्यादि के लिये दी हुई भेट, पहरावनी, कपड़े का जोड़ जो विवाह में दिया जाता है ।
- पहेरेवयु ( कि. ) पहिराना, उढ़ाना सज्जित करना, भ्र्गार करना, वस्त्र सजना, वस्त्र भेट करना,

- गलेमें डालना, अपने कामरे लिए दूसरेके गलेमें डालदेना ।
- पहेरेगीर ( सं. ) चौकीदार, प्रहरी, पाहुरू, रसक, रखवाला, गारव ।
- पहेरे ( सं. ) चौका, रखा, संभाल, सिपुर्ह, निगाह, चौकसी, पहरा ।
- पहेण ( सं. ) आरंभ, शुरुआत, जो कुछ पहले पहिल आरंभ किया हो, प्रथम, प्रारंभ ।
- पहेल ( वि. ) पहिलेका, प्रथपका, आरंभ का, शुरुआतका, आदि का
- प'हल-पहेलु ( वि. ) दुरंत, प्रथम ही
- पहेलवान ( सं. ) लडाई में मर से आगे बढने वाला, बहादुर, वार, शूर, भट, रणधीर, कुश्ती में प्रवाण, मल्ल । [ भाषा ।
- पहेलवी ( सं. ) प्राचीन फारसी
- पहेला ( वि. ) पहिले, पूर्व काल में प्राचीन काल में, आगे, इस से पहिले, पूर्व, आरंभ में शुरुआत में
- पहेलु ( वि. ) पहिला आरंभिक । शुरुआत का, बडा, मुख्य ।
- पहेलापेलावु ( वि. ) क्लृप्त से पाले उत्पन्न बालक ।
- पहेले धरती ( वि. ) पहिले से, शुरु से ।

पहले ( वि. ) आरंभमें,  
 शुरूमें, पहिले पहिल, आरम्भ ।  
 पहले ( सं. ) समझना, पहचाने  
 की ताकत, अह, ज्ञान, मति, गति,  
 समर्थ, पैसार, प्रवेश, पैठ, प्राप्ति  
 सूचक पत्र रसीद बल, ताकत ।  
 पहले ( कि. ) प्राप्त होना, पहुँच-  
 जाना, चलाजाना, बढ़जाना,  
 पूगना, पासजाना, हाथमेंजाना,  
 मिलना, समझना ।  
 पहले ( सं. ) कलाई पर बोंध-  
 नेका चाँदी अथवा सोनेका आ-  
 भूषण, कङ्कण ।  
 पहले ( वि. ) पहुँचाहुवा,  
 पहुँचवान पक्का, चतुर, प्रवीण,  
 कुशल दख ।  
 पहले ( वि. ) जिसका  
 मुक्ति समझमें नहीं आवे, पहुँची  
 माया, अति चतुर, बहुत होशि-  
 यार मनुष्य । [ कलाई ।  
 पहले ( सं. ) पहुँचा, मणिबंध,  
 पहले ( सं. ) पूर्ववत् ।  
 पहले ( कि. ) अत्यन्त  
 पश्चात्ताप करना, अनुताप करना,  
 पछताना ।  
 पहले ( सं. ) प्रहर, रात दिनका  
 ८ वाँ हिस्सा, आठघड़ी, तीनघंटे,  
 काल परिमाण, समय विज्ञान ।

पहले ( अ. ) मत्त वा आगत् पर्व ।  
 पहले ( कि. ) अधिक  
 समय लगना, मुक्त वीतजाना ।  
 पहले ( सं. ) चौकीदार,  
 चौकती, रखवाली, हिफाजत ।  
 पहले ( सं. ) चौकीदार, प्रहरी  
 सन्तरी, रक्षक पाहुर ।  
 पहले ( सं. ) पहरा, रक्षा, चौकी ।  
 पहले ( सं. ) देखो पैठ ।  
 पहले ( सं. ) देखो पैठ ।  
 पहले ( सं. ) बड़ीका साठवाँ भाग,  
 पल, क्षण, एकघंटेका २४ वाँ  
 भाग, डायै मिनिटका काल ।  
 पहले ( कि. ) निगलना, भक्षण-  
 करना, एक बार मिलजावे  
 दुबारा जानेकी इच्छा करना,  
 हड़पना ।  
 पहले ( कि. वि. ) तुरंत,  
 पलमे, क्षणभरमें, फौरन, तत्क्षण ।  
 पहले ( कि. ) जाना, भयना,  
 कूचकरना, पबानकरना, बरदाश्त  
 होना, पोषणहोना, ( वचन )  
 पालना, पोषण करना, बाल सफेद  
 होना, बुढ़ापा जाना, प्रकटहोना,  
 मिटजाना ।  
 पहले ( सं. ) सुसामर, लफ्फे-  
 पत्ते, काम निकालने के सिरे  
 देखा ।

पञ्चम ( सं. ) देखो पञ्चम  
 पञ्चम ( कि. ) पैरवाना, पैर  
 पल्लोना, सेवाकरना, चाकरी  
 करना, बेहद खुशामद करना ।  
 पण ( सं. ) चाकरी, नौकरी, सेवा  
 खुशामद, गुलामी, अदबन अथवा  
 झंझट पैदा करने वाला कार्य ।  
 पण्य ( सं. ) पकेहुए बाल,  
 सफेद बाल भूरेबाल, बूढ़ावस्था ।  
 पण्य ( सं. ) घी तेल इत्यादि  
 निकालनेकी पली, चम्मच, कुड़ली।  
 एक प्रकारका चम्मच, तरल  
 पदार्थ निकालनेकी कछी, सफेद  
 बाल ।  
 पण्य ( सं. ) बड़ी पली, बड़ा चम्मच,  
 बड़ी कछी, बड़ा चमचा ।  
 पण्य ( कि. ) देखो पण्य  
 पण्य ( सं. ) रोटी, ( इंग्रेजी रीतिसे  
 पकाई हुई )  
 पण्य ( सं. ) ताजा तुरंत के भूने  
 हुए दाने अथवा अन्न ।  
 पण्य ( वि. ) ऊसर, अनुपजाऊ,  
 वह भूमि जिसमें अन्नादि न  
 उगते हों ।  
 पण्य ( वि. ) नियत किया हुआ,  
 मनसूबा बना हुआ, इरादा किया  
 हुआ ।

पण्य ( कि. ) इच्छा करना, विष्का-  
 रना, पण्यना, इरादा करना ।  
 पण्य ( उप. ) बिना, बगैर, अल्पाव,  
 अतिरिक्त, रहित, बिन, छोड़ कर,  
 पण्य ( वि. ) इच्छित, चाहा हुआ  
 विचारा हुआ ।  
 पण्य ( सं. ) पक्ष, पंख, पर, सेना,  
 उड़नेका साधन, छप्पर के किनारे  
 किनारे का भाग, पंखा, व्यजन,  
 बीजना ।  
 पण्य पण्य-पण्य ( कि. ) अपने  
 हाथ में रखना, अपनी शरण  
 रखना, अपने आश्रय रखना,  
 हिम्मत बंधाना ।  
 पण्य पण्य ( कि. ) आश्रय में  
 जाना, शरण में जाना ।  
 पण्य आवणी-पण्य ( कि. )  
 सामर्थ्य से विशेष पराक्रम करना,  
 पुष्ट उन्न का होना, ब्रह्मलोक में  
 उड़कर जाना ।  
 पण्य पण्य ( कि. ) बल  
 कम कर देना, निराश्रय कर देना,  
 शक्तिहीन करना, सत्ता हारण  
 करना, बल न सके ऐसा निर्बल  
 कर देना ।  
 पण्य पण्य ( कि. ) यथाशक्ति  
 सहायता करवा, संकट में से छूटने  
 के लिये प्रयत्न करना ।

शब्दी ( सं. ) जिसमें कुछ कम के अवयव, पंचरी, प्रसूती पचरी, तुल्य भेद, लोच सत्कार ।

शब्दी ( सं. ) शाखा, डाल डाली, वृक्ष का अवयव ।

शब्दी ( सं. ) कनक, युद्ध में रक्षाएं बाज, बर्ष, शिल्प, सजाह, बखतरा

शब्दी ( बि. ) सपह, पांच वाला उड़ सकने वाला ।

शब्दी ( सं. ) पक्ष, तड़, डाली, शाखा, टहनी ।

शब्दी ( उप. ) बिना, बगैर, वह दिन जो कि सुधी के बाद आवे ।

शब्दी ( सं. ) शाखा, डाली, डगाल, शाख, टहनी, डारी, डाल ।

शब्दी ( सं. ) स्बंध से कोहनीतक हाथ का भाग, कंधे से कुहनीतक ।

शब्दी ( सं. ) परलंगका वह भाग जिधर पैर करके सोया जाता है ।

बिछौनों में सोनेवाले के जिस ओर पग होते हैं वह भाग ।

शब्दी ( सं. ) छोटी चोटी, पंचा, चोटी का टुकड़ा, पोतड़ा, चोली ।

शब्दी ( कि. ) खिलना, विकास होना, नये पत्ते खाना, अंकुर खाना, पुष्प का विकसित होना, कली का खुलना ।

शब्दी ( सं. ) मोहन के शीनों ओर बंठकती हुई डोर, बालक की झूलने लवण कुलवि के लिये बांधी हुई डोर, पल्ले की डोरी, तराजू के पल्लों की एकत्रित से सब डोरियाँ जो बंडी में गिरी जाती हैं ।

शब्दी ( सं. ) बालकोंके पैर चलना सिखानेकी गायी, ठेका गायी चलन सकने वालोंकी गायी

शब्दी ( बि. ) पंगु, पंगुला, लूला, लंगड़ा पांगा, रेंगनेवाला, स्थिति ।

शब्दी ( सं. ) लूला पुरुष, पंगु ।

शब्दी ( सं. ) पूर्वपक्ष, डोर ( संकेतार्थ )

शब्दी ( सं. ) स्कंध, कंधा, कोहनीसे कंधे तकका भाग

शब्दी ( कि. ) माया कूटना, माया फोड़ करना ।

शब्दी शब्दी ( कि. ) बड़ी भद्रा भक्तिसे पूजन करना ।

शब्दी ( सं. ) जहाँ पंच वहाँ परमेश्वर, अवान्तर खलक नरकारण सुदा ।

शब्दी शब्दी ( सं. ) जिसने समुच्च वतनीही बुद्धि, प्रयत्न प्रयत्न, विचार, अपनी अपनी उफली करना अपना राय ।

पंचमः ( सं. ) पांचका अंक. ५.  
पंचम-वेम ( सं. ) पंचमी, तिथि  
विशेष, शुक्र और कृष्ण पक्षकी  
पांचमी तिथि, पार्वे ।

पंचु ( सं. ) पांचका एक दो तीन  
इत्यादिसे गुणा, पांचका पहाड़ा ।

पंचेभ ( सं. ) देखो पंचम ।

पंचेभुगः पञ्च ( स. ) पाचकपत्रे,  
पूरी पौषाक, शिरत्राण, अंगत्राण,  
पादत्राण, धोती और कुपट्ट ।

पंचरः ( सं. ) घाव, व्रण, चोट,  
जलम् ।

पंचधु-शी ( सं. ) लत, आदत  
अभ्यास, व्यवसन, ताने में लगाने  
की लेही, कपड़े में लगाने की  
माड़ी, माड़ी लगाने का साचा ।

पंचर ( सं. ) गावकी सीमा, नगर  
प्राचीर, नगर कोट, सहर पनाह ।

पंचरापेग ( स. ) अशक्त जान-  
वरों को रखने का धर्मस्थान, पिंजरा  
पोल ।

पंचरी ( सं. ) गाड़ी में भरा हुआ  
माल निकल न पड़े इस वास्ते द्वार  
के रूप से लगाया हुआ काठ का  
तख्ता या टट्टी ।

पंचर ( सं. ) पिंजरा, पले हुए  
पड़ा रखने का घर, बलवान पक्ष

जिसमें बन्द रखे जाते हों, अदा-  
लत में अपराधी को खड़ा करने  
का पिंजरा, अस्थि समूह, शरीर  
का पंजर, ठठरी ।

पंच ( सं. ) टेढ़, लत आदत, व्यवसन ।

पंच ( सं. ) पंक्ति, पांति, कतार,  
पंगत, देखो पंचम

पंचरी ( सं. ) ज्वार, बाजरा के  
पौधों का लम्बा पत्ता, छोटे पत्ते ।

पंचरी-स ( सं. ) संख्या विशेष,  
वैतीस, तीस और पाच ३५ ।

पंची ( सं. ) हिस्सा, भाग बटवार,  
शेअर, विभाग, किसी पूंजी के  
समान भागों में से एक, बाजू,  
पक्ष, गणित में एक प्रकार का  
हिसाब, रीति, दस्तूर ।

पंचीदार ( सं. ) साक्षीदार, बंटेती,  
बटाऊ, हिस्सेदार, शेअर होल्डर ।

पंचीना हिसाब ( सं. ) गणित में  
एक प्रकार का हिसाब ।

पंची ( सं. ) फूलकी पल्लुरी, पत्ता,  
जियों के पहिने के कान का  
जेवर ।

पंच ( सं. ) पत्ता, पर्ण, पत्र,  
पाना, पत्ता, पृष्ठ, दल ।

पंच १२३ ( कि. ) भाग्योदय होना,  
आम्य पलटना, शुभ प्राप्ति होना,  
अटकाव टोक इत्यादि दूर होना ।



पा० ३ पा० १ पा० १ ( कि. ) बहुत दुःख देना, हेरान करना, संतापित करना, बिद्वाना, पीड़ा देना ।

पा० १ ( सं. ) आँख के पलक के ऊपर के बाल, माफन, बाफन ।

पा० १ ( सं. ) नामर्द, लीब, नपुंसक जनना ।

पा० ३ ( वि. ) सीधा, ठीक, बे मुड़ा, सबाना, होशियार, लायक, योग्य, नियम पूर्वक, सच्चा सीधा ।

पा० ३ ( सं. ) पाँख, पसला, पाँजर की हड्डी ।

पा० ३ ( सं. ) धूल रेणु, रेणुका, रज ।

पा० ३ ( वि. ) गंदा, अपवित्र, धूलि धूसरित, मैला, अपमान ।

पा० ३ ( सं. ) लम्पट ली, म्यभिचारिणी, बदकार औरत, छिनाल ।

पा० ३ ( वि. ) बैठ, १५. साठ और पांच, संख्या विशेष ।

पा० ( वि. ) चतुर्थांश, पाव, १/४ ।

पा० ( सं. ) पाई, पैसे का तीसरा भाग, आने का बारहवाँ भाग, अड़ची ( बंबई में ) सुपारी, पूंगी. फल ।

पा० ३ ( सं. ) तला, पाया, पग ।

पा० ( सं. ) एक प्रकार की बड़ी रोटी, बबल रोटी, योरोपियनों की खाने की रोटी ।

पा० ( सं. ) बनाई हुई रसाई, पैदा मस, निपज, उपज, समुद्र में मोतियों की उत्पत्ति, मसाला इत्यादि ढाल कर बनाया हुआ पदार्थ, शकर की भाशनी में बनाया हुआ पदार्थ, खीर, चास फूस आदि की गर्मी से फलों का पका होना, मैले पनसे जीवों की पैदा, फोड़ा फुन्सी का पकाव । ( वि. ) पवित्र, शुद्ध, ईमानदार, सच्चा, अष्ट ।

पा० ३ ( वि. ) अथ पका, कम पका हुआ, अर्द्ध पक, गहर ।

पा० ३ ( वि. ) पका हुआ ( फल ) पका, तय्यार, पूर्ण, पूरा ।

पा० ३—३ ( सं. ) पक, तर्क ओर ।

पा० ३ ( सं. ) वह शरीर, जिसकी प्रकृति जरा चोट अथवा जघाति के हो जानेसे पक आवे ।

पा० ३ ( सं. ) पवित्र प्रेम, शुद्ध प्रेम, सत्य प्रेम, दिली प्रेम ।

पा० ३ ( सं. ) जिसमें खराब इच्छा नहीं ऐसा प्रेम ( जी पुस्तक में ) बार्मिक प्रेम, शुद्ध अंतःकरण का स्नेह ।

५३५ ( कि. ) पकना, उपजना  
 जब तब होना, फल पकना,  
 पोषा हो कर मीठा हो जाना,  
 फोड़ा फुन्सी पकना, बहुत व्याकुल  
 होना, दुःख होना, गरमी होना,  
 निश्चित समय का आपहुँचना,  
 तयार होना, पैदा होना, मुहाफे में  
 बाँधों का पकना, हारकर आधीन  
 होना ।

५३६ ( वि. ) शुद्धता, पवित्रता,  
 झौहर का दिन, जिसदिन बाजार  
 का कारबार बंद रहे, बंदी, प्रति-  
 बन्ध, रोक । छुरा, अल्लुरा, ( कि  
 वि. ) जिना, बगैर ।

५३७ मुहल ( सं. ) नियत समय,  
 मुकर्ररा बन्ध, मितकाल, परिमित  
 सीमा ।

५३८ ( वि. ) परिपक्व, पकाहुवा,  
 पूर्ण, तय्यार, सिद्ध, पुस्ता, हद,  
 पुष्ट, टिकाऊ, जाहू, मजबूत,  
 होखिनार, काबिल, निपुण, अनु-  
 बन्धी, वाकिफ, इम्दावतुपाहारा  
 कर्तपिक ।

५३९ ५३९ ५३९ ५३९ ( कि. )  
 मिथ्या प्रयत्न करना, समय बूझ-  
 कर प्रयास करना ।

५३९ ५३९ ( वि. ) उलझा, लीझा  
 समझाकर काम निकाल लेने  
 वाला ।

५३९ ५३९ ( वि. ) लुब्धा  
 मारवाही, ठग, बँधक, छद्मी ।

५३९ ( सं. ) पक, तरक, बाजू,  
 दिशा ।

५३९ ( सं. ) बिछौनीपर बिछाने  
 की फूलदार चादर, हाथी अथवा  
 घोड़ों पर डालने की सोने चांदी  
 के फूलों की कनी हुई झूल, हाथी  
 नार घोड़ों पर डालने का कोहमय  
 बस्तार या कवच । [ वाति ।

५३९ ( सं. ) बोरे की एक  
 ५३९ ( कि. वि. ) पीछे, पास,  
 नजदीक, समीप, निकट, अदूर ।

५३९-५३९ ( उप० ) देखो ५३९ ।

५३९ ( सं. ) पत्थर, पाहन,  
 उपक । [ समीप ।

५३९ ( वि. ) पास, निकट,  
 ५३९ ( अ० ) जिना, बगैर, सिवाय ।  
 ५३९ ( सं. ) पग, पैर, पद, पाद,  
 चरण ।

५३९ ( सं. ) रकन, समझ,  
 कोई व्यक्ति जो समझ के बल  
 के रखनेका, लीझ, वेकल ।

५३९ ( सं. ) पक, पक, तरकदाही,  
 रकन, पावदा ।

पायरे ( सं. ) हवा से चढ़ जाने से  
आस छोड़ जाने के लिये किनारे  
पर से रस्सीद्वारा झूलना ।

पायरेधु ( सं. ) बिलौना, बिलाने  
का सामान, शोभा, अलंकार,  
शृंगार ।

पायरेधुधु ( सं. ) पैर में पहिरने  
का चाँदी का एक प्रकार का जेवर ।

पायरेधुधु ( सं. ) पदस्पर्श, पैर  
छूना, प्रणाम, नमस्कार, पैर छूने  
के बाद बाहु की ओर से अपने से  
बयोवृद्धाको दी हुई भेट ।

पाय ( सं. ) अश्वसेना, फौज के  
घोड़ों के बांधने का तबेला,  
अस्तबल ।

पायिन्ना ( सं. ) परामर्शदाता,  
सलाहकार, मदद देने वाला,  
तरफदारी करनेवाला, पक्षप्राही,  
सहायक, उपदेशक ।

पाय-डी ( सं. ) उष्णीष, शिरत्राण,  
फेंटा, साका, सिरके बांधनेका  
लंबा बक ।

पायडी उतायेवी ( कि. ) आँखों  
करना, मतलब सिद्धकरनेके लिये  
नक़्क़ा प्रदर्शित करना, प्रदर्शक  
करना, देखेकी सी सूरत बनाकर  
प्रदर्शक करना ।

पायडी कुभायवी ( कि. ) कीर्ति,  
शोभा, इज्जत, शौना, उम्मान

पायडी नीन्नी करवी ( कि. ) कर्क-  
कित करना, बग़माव करना ।

पायडी हेरववी ( कि. ) शिवालय  
निकालना शिवालय इत्यदि फिर  
न देना ।

पायडी अभायवी ( कि. ) बयर्झ  
बंघाना, इनाम देना, सत्कार  
करना ।

पायडी भूखवी ( कि. ) बूझाहुवा  
चाटना, दिवाला खोलना ।

पायडी अल्ये ( सं. ) गाली प्रत्यः  
क्रिया पुरुषको यह गाली देती है ।

पायडी रगी नाभवी ( कि. )  
इज्जत ले डालना, अपमान कर  
देना ।

पायडी बेवी ( कि. ) इराना, उगाना,  
इज्जत लेना, कान काटना, निर्वक  
करना ।

पायडी संवाणवी ( कि. ) बह  
सावधान रहना, संभलकर चलना

पायडी मेधवी ( सं. ) बाली  
पुरुष, इज्जतदार आदमी, बका  
मानव ।

पायडु ( सं. ) बड़ी बराही, आदमी  
बाली में लगेटीहुई पशु ।

**पाठ्य** ( सं. ) देखो पाठ्य  
**पाठ्य** ( सं. ) देखो पाठ्य  
**पाठ्य** ( कि. ) पछटना, पछाड़ना,  
 हेमरना, पटक मारना ।  
**पाठ्य** रात ( सं. ) अर्धरात्रि  
 पश्चात्, पिछली रात, रातके हो  
 बजे बाद ।  
**पाठ्य** ( वि. ) पीछिका, बादका,  
 अंतका, गत, भूत, पिछला,  
 अंतिम, पृष्ठका, पीठका ।  
**पाठ्य** आरंभ ( सं. ) अंतिम-  
 दशा, अंतावस्था, पीछिकी चार  
 बड़ी ।  
**पाठ्य** पोछो ( सं. ) पिछला  
 प्रहर, दोपहरी बाद, मध्याह्नान्तर ।  
**पाठ्य** ( अप. ) बादमें, उपरान्त,  
 पीछे, अनन्तर, पश्चात् ।  
**पाठ्य** मुठु ( कि. ) अंधेराकरना,  
 आगे निकलना, बढ़जाना, पीछे  
 छोड़ना, चमकमें बहकर होना ।  
**पाठ्य** कटु ( कि. ) पीछे गिरना,  
 पीछे हटना, पीछे खिंचना, पीठ  
 देना ।  
**पाठ्य** ( कि. वि. ) फिरसे, पुनः,  
 दुबारा, बिचरसे आया हो उस  
 ओर, पिछाड़ी, पृष्ठे, पीछे ।  
**पाठ्य** ( कि. ) मरवाना, मृत्यु,  
 होना, मिटना, क्षयहोना ।

**पाठ्य** वणु ( कि. ) पूर्ववत्  
**पाठ्य** भस्ती ( सं. ) काटिगाबाह,  
 ( इसलिये कहते हैं कि वह भाग  
 समुद्रकी तरफ गया है )  
**पाठ्य** पानी भस्ती-भस्ती ( कि. )  
 पीछे हटना, वापिस लौटना,  
 हारवाना ।  
**पाठ्य** नाभु ( कि. ) उलटी  
 करना, बमन करना, कम करना ।  
**पाठ्य** वणु ( कि. ) बिगड़जाना,  
 उतरजाना, स्वादरहित होजाना ।  
**पाठ्य** वाण्ये नोवु ( कि. ) अंगे  
 पीछे की सोचना, मविष्य का  
 निचार करना, संकोच होना,  
 दीर्घ दृष्टि से देखना ।  
**पाठ्य** टियु ( सं. ) पहिरे हुए कपड़े  
 में पीछे का जेब, पीछे का बीसा ।  
**पाठ्य** तर् ( वि. ) पीछे का, बाद  
 का, देर का, पछेता, मृत उपरान्त  
**पाठ्य** ( सं. ) घाट, बांध, पुस्ता,  
 पुल, सेतु, एक प्रकार का चीनी  
 रेशमी वस्त्र ।  
**पाठ्य** ( सं. ) देखो पाठ्य  
**पाठ्य**-वणु ( वि. ) कंजूस  
 जति कृपण, मक्खी मूत्र, मूत्र ।

५१८ ( सं ) पटा, बसीनसे ऊँचा बैठने का तख्ते का बना हुआ, पाटा, पछ, गादी, आसन, बैठक, तख्त, राज्यासन, बङ्ग, पट, अरज, चौड़ाई, पना, समूचा स्थान ।

५१८डी ( सं ) चौबंटा काठ का डुकड़ा, पछी, पटरी, देखो ५१८वी

५१८डे। ( सं ) मोटा तख्ता, पछ, पाट, बरण, सहतीर, लट्ठा ।

५१८थी ( सं ) एक प्रकार की जाति ।

५१८नगर ( सं ) मुख्यशहर, राजधानी ।

५१८थ ( सं ) पाटली पुष्प, गुलाबका फूल, पुष्प विशेष, ( वि ) गुलाबी रंग, केत और लाल रंग का मिश्रण ।

५१८थाथी ( सं ) जन्तु विशेष, पाटगो, गोहरकी जातिका बड़ा जन्तु ।

५१८था साधु ( सं ) साली, बड़ी साली, झी ( पत्नी ) की बहिन ।

५१८थी ( सं ) बैठनेकी पटिया, पछ, पाटा, पटा, गादीवानके बैठनेका तख्ता स्टूल, तिपाई, बेंच, एक प्रकारकी खुदियाँ, पटकी, ( पोती वा बलकी ) एक प्रकारका वस्त्र ।

५१८थी ( सं ) टृण्णी से पाँच छः अंगुल ऊँचा काष्ठ निर्मित आसन ।

५१८थी ११३५५ ( कि. ) डुकसान करना परन्तु पढ़ना न लिखना ।

५१८थी ११३५६ ( कि. ) चैन पढ़ना, आराम होना, समाना ।

५१८थी १२० ( कि. ) काम पूरा पढ़ना, कामहोना, काम बनाना,

५१८वी ६०५१ ( सं. ) राज्यका उत्तराधिकारी, राजकुमार, गुन-राज, राजाका बड़ा लड़का, भावी राजा ।

५१८थां ( सं. ) गलेमें पहिनेका जियों के लिये स्वर्णामूषण ।

५१८थुं ( सं. ) लकड़ी का तख्ता, काठ का पटिया, पाठशाळा का काला तख्ता, बोर्ड, ब्लैक बोर्ड ।

५१८थ्यां देवावां ( कि. ) बैठवाना, भारी डुकसान होना, पुर्वशा में होना दिवाला निकालना, भाग पड़ना, काम रोकना ।

५१८थं भाज्यां ( कि. ) खा पी कर जूठन निकाल कर निश्चित होना ।

५१८थं रंभाथ नर्थां ( कि. ) बहुत डुकसान में पड़वाना ।

प्राकृत भाषा शब्द ( कि. ) काम  
करना, सम्पन्न करना ।

प्राकृत ( सं. ) छोटी की सुरत का  
मिठी का पात्र जिस में शाकमाजी  
इलायति बनाई जाती है, चौड़े मुँह  
का मिठी का पात्र, एक प्रकार का  
कार ।

प्रादी ( सं. ) बार पाई की पाटी,  
पट्टी, स्लेट, लिखने की काठ की  
पटिया, तस्ती, फौज के मनुष्यों  
का मुँह, नाड़ा, पीता, कुमार की  
कलिया ।

प्रादीबाणवी ( कि. ) बिगाड़ना,  
बे काम करना, धूलबानी करना ।

प्रादीपट्ट धूण न्यम्बवी ( कि. )  
पढ़ना, विचारम करना ।

प्रादीपट्ट ( सं. ) पटेल, बपौती,  
( मौरवी ) कुचक, पातीदार ।

प्राड ( सं. ) कात, ठोकर, पैर  
उठाकर मारना ।

प्राड भाखी ( कि. ) ठोकर मारना,  
कात मारना, किक देना ।

प्राडडी ( सं. ) एक प्रकार का  
खोजन, पी, लेके खरवे का छोटा  
कलक ।

प्राडुडे ( सं. ) पूर्वपत् ।

प्राडेडी ( सं. ) पूर्वपत् ।

प्राडे ( सं. ) पट्ट, पीता,  
खोहे का कम्पा जपदा दुकान,  
पट्टियों पर बड़ाने का खोहे का  
बवा, कपड़े की पट्टी, एधि,  
प्रकृति ।

प्राडे जेडवे ( कि. ) लम्बाव  
मिलता हुआ होना, बनना, मेल  
मिलना ।

प्राडे न्यम्बवे ( कि. ) रीति पढ़ना  
रिवाज होना, चलन होना ।

प्राडेडी ( सं. ) एक प्रकार का  
भोजन, चने के बाटे को मटे में  
उबालकर गाढा कर ठंडा कर के  
दुकड़े, दुकड़े किया हुआ पदार्थ,  
पतोड़, पितोड़ ।

प्राडेप्राड ( कि. वि. ) एक छोर से  
दूसरे छोर तक, मुकाम से मुकाम,  
एक दूसरे के सम्बन्ध में बला  
हुवा ।

प्राडेप्राड सणभुं ( कि. ) एक  
दूसरे के विषय में कड़ाई सिद्धान्त,  
आगलता ।

प्राडे अणु-अणु ( कि. ) केक-  
एक बार बार रचना, बिना बने  
बतावेना । [ करना १-

प्राडेपणु ( कि. ) मेकना, रचना,

पानी ( सं. ) जितने घाट बंठल्य  
हो, जितने किसी विषय का अभ्यास  
किया हो, घाट करने वाला, पढ़ने  
वाला ।

धुं ( स. ) रूप बोलते समय  
रस्सियों के द्वारा कसी हुई मिथी  
निकासने की टोकरी, पाँठ पर  
अथवा शरीर के उस भाग पर  
जो खुद को दिखाई नहीं देता  
हो वहाँ पैदा हुआ फोड़ा इत्यादि  
वर्ण ।

५।४३ वृत्तं ( कि. ) जबानी याद  
करना, कंठस्थ स्मरण करना,  
स्मरण रखना ।

५।३ ( स ) आभार, उपकार, अह-  
मान, दया, अनुकम्पा ।

५।६ अर्था (क्रि.) अपने किये  
उपकार को प्रदर्शित करना ।

पा३ श३भवे। (क्रि.) उपकार रक्षना,  
अहसान रक्षना, ऋणी बनाना ।

५।३ ऋद्धये। (कि.) अहसान होना ।

११६ भाष्ये (वि.) उपरान्त सङ्ख्ये,  
अन्तर्गत सङ्ख्ये, अन्तर्गत सङ्ख्ये ।

५५५ पञ्चम ( सं. ) मन्त्रालय पञ्चम,  
घर के पास का खजाना गोदी हर  
का निवास, निकटवर्ती निवास ।

पा. १४७१ ( वि. ) उपकार के बदले उपकार करना ।

५।३३ ( कि. ) पटकना, गिरने देना,  
पृथ्वीपर पटकना, हराना शुरू

बनाया। भारत पाकिस्तान सीमा में  
रस्ता बना कर चोरी करना, शकल

पा३वे। (क्रि.) नया रास्ता निज-  
लना. पा३ पा३वी ( क्रि. ) खिनी

गांधी पर आक्रमण कर छुटना।  
अमर ५१३वी ( कि. ) समझना.

भाव पाउवे (क्रि.) माव कस  
करना. हर राहना. ना पाउवे।

५।३५ ( स. ) मिथ्या प्रशंसा, बड़ी

पाठा आह ( सं. ) वैद, शत्रुता,

अंटस, कसर, बदला, प्रतिहिंसा ,  
 ५१६१ ५३०९ (स.) देखो ५१६५३०९

पाटीधुं ( वि. ) आमाती, जूनी,  
उपकृत कृतज्ञ, अहसान मंद ।

५१३ (सं.) मैसूरका बच्चा, पादा ४  
५१३वा (वि.) निर्बल, कमजोर,

अशक्त, दुर्बल, बुद्ध, नीच, कुरा ।  
 ५०६ (६) मैत्र, तर मैत्र, श्रेष्ठ,

पहला, रही परमा, अंशका प्रका-  
कार सम्बन्धी दृष्ट दृष्ट का काल.

हृदि, सम्प्रदाय, वात, शूल,  
यन्त्र, मोहता, मोहान, मात ।

प्राक्प्रत्यय ( वि. ) अनघद,  
मूर्ध, शठ ।

प्राक् ( सं. ) पावके संकेतार्थ खड़ी  
लकीर, ०१, पत्थर, पाहन, हाथ,  
खेतमें पानी पिलाना, पाणि, हस्त ।

प्राक्प्रत्यय ( सं. ) पानी पिलाने वाला,  
प्राक्प्रत्यय ( सं. ) मोटा कपड़ा,  
कुरदरा वस्त्र, रेखाके समान कपड़ा ।

प्राक्प्रत्यय ( सं. ) दूरसे आये हुए  
पानीको खेतमें देनेवाला ।

प्राक्प्रत्यय ( वि. ) जिसमें पानी हो,  
गीला, पानीवाला, रजा, छुट्टी,  
निकाला, विसामिस ।

प्राक्प्रत्यय आ०पुं ( कि. ) छुट्टीदेना,  
हजामतदेना, बिदा करना ।

प्राक्प्रत्यय भ०पुं ( कि. ) छुट्टी मिलना  
थर बठना, बिदागी मिलना ।

प्राक्प्रत्यय ( सं. ) व्याकरण शास्त्र के  
सूत्रों के प्रणेता एक ऋषि ।

प्राक्प्रत्यय ( सं. ) पानीके वर्तन  
रखनेका स्थान ।

प्राक्प्रत्यय भु०पुं ( सं. ) वह  
मनुष्य जोकि घरमें बैठकर तो लम्ब  
बाँधी बातें मारे और बाहिर  
आकर बोल न सके ।

प्राक्प्रत्यय ( सं. ) बल, पानी, तोप,  
उदक, पाँचतत्वोंमेंसे एक, आव,

एक प्रकारका रंग, स्वाद,  
गन्धरहित कुदरती पदार्थ, सौर्य,  
दम, टेक आवरू, स्वर्ण चाँदी इ०  
का रस, घार, बाढ, (इधियारोंकी)  
वीर्य, रेत, शुक्र, घातु, ओज ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) खोना, नाश  
करना, बर्बाद करना, खाली करना

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) दम्पती देना,  
ज्ञासादेना, उस्काना, उत्तेजनदेना,

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) क्रोध बढ़ना,  
वीरता बढ़ना, बढ़ना ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) पानीदार  
कच्चा नारियल देना, बिदा करना,  
छुट्टी देना, निकाल देना ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं क०पुं ( कि. ) मान  
भंग करना, शर्मिन्दा करना ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) क्रोध बरैरः  
शांत करना, ठंडा करना ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) किसीको कोई  
वस्तु खाते देखकर मुहंसे लार  
टपकना, खानेकी अवशिष्ट इच्छा  
होना, कमजोर होजानेसे पसीना  
सूटना ।

प्राक्प्रत्यय क०पुं ( कि. ) पानी भरने  
जाना, टेक जाना, आवरू जाना,  
शोभा जाना ।



प्राथमीय शब्द ( कि. ) साधारण  
शौच देखकर उस विषयमें हलका  
विचार करना, बल देख लेना ।

प्राथमीय शब्द ( कि. ) नर्म करना,  
मुलायम करना, पसीना आना  
( चोदनेको ) बहुत प्यासे होना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) परि-  
श्रमसे अधिक पसीना छूटना,  
अधिकारमें होजाना, नरम होजाना  
प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. )  
कोई कहे उतनाही करना, किसीके  
समक्षमें अनुसार करना अधिक  
नहीं ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) किसी  
क पीछे उसकी सेवा करने के  
लिये मर जाना ।

प्राथमीय शब्द ( कि. ) एक घातु पर  
रंग चढ़ाना । धार करने के लिये  
लौहको गरम करके पानी में  
डुबाना, पानी चढ़ाना, उल्लाना,  
पेड़ों में पानी देना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. )  
बढ़ाव जाना, उपयोगके अवयव  
होना, उकसाना होना, धूल होना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) रङ्ग करना,  
धूल में मलाना, मिट्टी में मिलावना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) बल वातु  
बढ़लाना, आब हुआ बढ़लाना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) जुलम करना,  
जीकमाना, खूब उचालना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) दुष्कृत कथा  
में होना, धर्मिण्या होना, ग्याकुल  
होना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) बालु  
समय निकट आना, अंत आना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) हलका  
करना हलाना, बखाना, नर्म करना  
प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) गान्त होना,  
पतिव्रत धर्म खाना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) किसी काम  
करने की प्रतिज्ञा लेना, संकल्प  
करना, किसी बात का द्रष्ट करना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) कहीं का  
पाणी पी कर रोपी होना ।

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) किसी की इज्जत  
लेना । [ दल करना ]

प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. ) मिथ्या  
प्राथमीय शब्द शब्द ( कि. वि. ) सस्ते  
भाव, पानी के मोल, बिलकुल  
सस्ते दाम पर ।

प्राथमीय शब्द शब्द शब्द ( कि. )  
बिलकुल इच्छा करना, मान में  
करना, वमकी द्वारा समिधा करना ।  
प्राथमीय शब्द शब्द शब्द ( कि. ) बहु-  
तही के सम्य होना ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. वि. )

जन्मा, मृत्यु, मृत्यु, मृत्यु, मृत्यु ।

पञ्चमः शब्दः ( सं. ) पानी का

बूझा, पानी का बुझा, कणिक,

पञ्चमः शब्दः ( कि. )

दिन प्रतिदिन मोटा होता है

फूलता है ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. ) बरपाद जाना,

छूट पड़ना, निष्फल होना, मिथ्या

जाना ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. ) टेक में

रहना, बात रखना ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. ) पाना में

पड़ना, खुल जाना, छूट जाना ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. ) उकसान

करना, खराब करना, बेकाम

करना, व्यर्थ जाने देना, गमाना ।

पञ्चमः शब्दः ( कि. )

मिथ्या प्रयास करना, व्यर्थ कोशिश

करना, फुजूल मिहनत करना ।

पञ्चमः शब्दः ( सं. ) पानी भरने का

घर का दूसरा कामधन्दा ।

पञ्चमः शब्दः ( सं. ) शीघ्रगामी घोड़ा

तेज घोड़ा, द्रुत गामा अश्व ।

पञ्चमः शब्दः ( सं. ) पत्थर, पाहन, पाषाण,

उपल शिला ।

पञ्चमः शब्दः ( सं. ) अधिक पीला और

कुछ स्वित रंग, शुक्ल और पीत

मिश्रित रंग, रोग विशेष, कुर्क-

साव एक राखा ।

पातर ( सं. ) बेश्या, गणिका,

बारायना, पतुरिया, जिनाल,

नाचनेवाली स्त्री, छोटा पर्वत,

किरण, रश्मि ।

पातरवर्धिया ( सं. ) एक प्रकारके

पत्ते, पत्तोंपर बेसन छपेटकर

बनाया हुआ खानेका पदार्थ,

पकोडी, फलोरी ।

पातर ( सं. ) पत्त, पत्र, पर्ष ।

पातग पातवे ( कि. ) खुद मेह-

नत करना. स्वयम् परिश्रम

करना ।

पातरी ( सं. ) फूलोंकी छोटी पुष्पिया,

फूलोंका दोना, पुष्प पत्र । [पर्ष]

पातर ( सं. ) पत्ता, पात, पत्र,

पातर पातरी पातु ( कि. ) सिद्धान्त,

चिदान्त, कुदान्त, जैन सम्प्रदाय

के साधुओं का भोजन करनेका

काष्ठ निर्मित रंमिन पात्र ।

पातण ( सं. ) सिद्धोंकी निम्न

दर्जेकी पौष्टाक, पत्तल, पातर,

पत्रावली, हलका पतला सिद्धोंका

लूचड़ा ।

पातण पेदु ( वि. ) कृषोदर, पतले

पेटका, अल्पभोजी, कमखानेवाला ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) इवत्वा पतत्वा  
किन्तु नीरोष्ठी पुंस्य, कृष किन्तु  
स्वस्य ।

प्राक्प्रतिपद ( वि. ) पतला, पुष्कल,  
कृष, सूक्ष्म, सूखाहुवा, क्षीण,  
बहुजनेशाला, तरल, क्षीना, क्षीवा,  
बारीक ।

प्राक्प्रतिपद प्राप्ति ( वि. ) कुवा कुंडका  
बहुपानी जो कमी न सूखताहो,  
अथाहजल, बहुत औढा, सूब  
गहिरा ।

प्राक्प्रतिपद ईडपुं ( कि. ) खूबगहिरा  
खोदना, गहिरा खोदकर पानी  
निकालना ।

प्राक्प्रतिपद पुतला इक्ष्वावपां ( कि. )  
गजब करना, अतिशय उत्पात  
करना ।

प्राक्प्रतिपद पम छे ( कि. वि. )  
जितना बाहिर है इतनाही भीतर  
है, जड़ दृढ है ।

प्राक्प्रतिपद प्रात लावणी ( कि. )  
बड़ी कठिनतासे गुप्त बात को  
दुंद खोजकर निकाललना ।

प्राक्प्रतिपद पेक्षी जपुं ( कि. )  
पृथ्वीमें घुसजाना, गमब होना,  
लुप्त होना ।

प्राक्प्रतिपद-पेक्ष्वापुं ( कि. )  
धर्मिन्ना करना, क्षमिन्ना करनीया  
दिखाना ।

प्राक्प्रतिपद जनी-पनी ( वि. )  
जिसकी सलाह भंत्रवा बहुत  
गहरी हो । बने जिस तरह काम  
पार पटकने बाल-बलता पुरजा-  
छटी रकम ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) पतीली, भोजन  
राखने का पात्र, देयनी, नेतली,  
मिष्टी का पात्र, जिस में शाकभाजी  
राखी जाती हो ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) देग, ताम्बा या  
पीतल का बना हुवा चौड़े मुख  
का पात्र विशेष ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) बिछाने का बख,  
बिछौना, बरी, जाजम, धतरजी,  
फर्श ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) बिछौना, विस्तर,  
जाजम वगैरः मृतक के लिये झोक  
प्रदशनार्थ आये हुए मनुष्यों के  
लिये बिछौना ।

प्राक्प्रतिपद ( कि. ) फैलाना, बिखेरना,  
बिछाना, विस्तृत करना, पटकना ।

प्राक्प्रतिपद ( सं. ) हरीवास, बड़ी हुई  
कढ़वी, खेत में पड़ी हुई ।

पक्षि ( सं. ) गुजर, मार्ग, संघी, स्याही, संघी, मार्ग, सहायक ।

पक्ष ( सं. ) पक्ष, पक्ष, पैर, पांश, टांग, लात, चरण, चौथा भाग । कविता का एक चरण, मंत्र का चौथा भाग ।

पक्ष ( सं. ) गांव के बाहिर की जगह, जहाँ होर इत्यादि चरते हैं, फाटक ।

पक्ष ( क्रि. ) वादना, गुद मार्ग से दूषित बाधु त्यागना, अपान बाधु छोड़ना ।

पक्ष ( सं. ) मुसलमान राजा, बादशाह, राजा भूपति, भूपाल ।

पक्ष ( सं. ) राजकुमार, युवराज, राजपुत्र, राजा का लड़का ।

पक्ष ( सं. ) राज, सत्ता, राज्यशासन, बादशाह का कार्य, बादशाही ।

पक्ष ( सं. ) पारसियों का किया कर्म सम्बन्धी जुलूस ।

पक्ष ( वि. ) सीधा, सूधा, ठीक, ऊपर की ओर सीधा, सीधे मार्ग जाने वाला ।

पक्ष ( वि. ) सीधा, सच्चा, सचाना, सरल, समुच्च ।

पक्ष ( सं. ) पत्ता, पर्ण, पत्ती, पत्र, नागरवेल्का पत्ता, ताम्बूल. नागर पानकी सकलका छिन्नोके सिरमें चालनेका ज़ेवर. पीना, श्व इन्ध आदिको चूटवाना, उपभोग ।

पक्ष ( सं. ) वसन्त, वह ऋतु जिसमें वृक्ष पतझड़ होते हैं,

पक्ष ( सं. ) लम्बा पतला पत्ता, लीके कानसे पहिनेका भूषण ।

पक्ष ( सं. ) पत्ता, पर्ण, पत्र, पाती, पत्ती ।

पक्ष ( वि. ) पानोंको फेरनेका किया होशियारी, चालाकी चतुरता ।

पक्ष ( सं. ) पान-बीड़ी, नागर पानकी लपेटन या पुड़िया ।

पक्ष ( सं. ) ताश, ताशके पत्ते, पन्ने, पुस्तकके पृष्ठ, चादी सोनेके बर्क । [ तकक भाग ।

पक्ष ( सं. ) पैरके तलेका एड़ी

पक्ष ( सं. ) घृष्ट. पन्ना पेज, सफा, बर्क, गजफाका पत्ता, सोना अथवा चांदीका बर्क, फल ( चाकूडा ), लोहेकी धारदार पत्ती जिसमें मूठ लगाहो, बीके रंगकी मणि, नवरत्नमेंसे एक, गम्भ, संबंध ।

५१५ ५३५ ( कि ) पत्ते बंधना,  
सम्बन्ध होना, पाठे पढ़ना,  
मोचना, पढ़ना ।

५१५ शौच्यु ( कि. ) मृग्य भोजना,  
मृत्यु दूंदना, रखना बात खोलना ।

५१५२ ( सं. ) वह खरटा जिसे  
कन्या पाणिग्रहणके समय में डती  
है, लड़की की ननसारने मतके  
समय रश्मी सफेद रंगीन किताबों का  
लवड़ा जिसे कन्या फेरोंके समय  
ओढ़ती है ।

५१५ ( ग. ) गाय भैंस इत्यादि  
पशुओं में दूधका उतरना,  
आगे स्तनोंमें दूधका भर आना,  
पानी, क्रोध । [ पत्ती ।

५१५६ ( सं. ) ज्वार बाजरे की  
५१५ गधु ( कि. वि. ) पीड़ा रुक-  
सान करनेवाला मनुष्य गया,  
कटक हटा ।

५१५ छूटी आत ( वि. ) पवित्र  
मर्ने से की हुई बात, कपट रहित  
कही हुई बात ।

५१५ धोषु ( कि. ) निर्दोष होने  
पर भी कोई मनुष्य किसी की  
निन्दा करता हो तब यह कहा  
जाता है । [ मित्रना ।

५१५ क्षरी यक्षु ( कि. ) पाका फल

५१५ कुटी नीक्षु ( कि. ) दूध  
पापोंसे उपवसादे रोग होना,  
पप का प्रतिकूल निलना, अफस  
आ पटना ।

५१५१ द्युद ( सं. ) वह भाव  
जो जो पाप कर्म में सहायता  
करने से अथवा देखने से उसका  
दसवा हिस्सा मित्रता है ।

५१५२ पो धुं मांधु ( कि. ) पाप  
का गठिया बाधना, अधर्म संभव  
करना ।

५१५३ धो ५४३ ( कि ) शुभ  
पापका प्रकट होना, पाप पुरित  
पात्र का नाश होना ।

५१५४ भा२-भा३ ( सं. )  
पाण्ड में डालने का खार, सज्जी,  
सनचोरा, कार्बोनेट आम्ह सोडा,  
केले की राख ।

५१५५ ( स. ) एक प्रकार की सेम,  
फली, चावल के आटे द्वारा बनाया  
हुवा एक प्रकार का खानेका पदार्थ,  
छोटी पतली रोटी ।

५१५६-५१६ ( सं. ) पापीयक्षी,  
अधर्मचारिणी, पापिन स्त्री ।

५१५ ( सं. ) रोटी, भोजन, मास ।

५१५ ( सं. ) ऊन, रेशम, धागा  
बना हुआ कंबोपर जोड़ने का बन्ध,

पावीर शंसक अफगानी स्वयं में  
बना हुआ, रेशमी वस्त्र ।  
पावर्तु ( कि. ) पाना, प्राप्त करना,  
सहीना सेलवा, सठाना जानना,  
समझना, अधिकार में होना ।  
पाव ( सं. ) पैर, पांव, पाद, चरण,  
टांग, टंगड़ी, कटि के नीचे का  
भाग ।  
पावर्तु-१ ( वि. ) ऊजड़, निर्जन,  
कुतुहल, ऊसर, अनुपजाऊ ।  
पावभातु ( स. ) पाखाना, टहल,  
झाड़ा, सहास, शौचगृह, बपुलिस ।  
पावभा ( स. ) एक सवार की सत्ता  
में जितने सवार और घोड़े हों ।  
अश्वारोही, सैनिकों का समुदाय ।  
पावभभे ( स. ) धूसना, सूचना,  
पजामा, पतछल, टांगों में पहिन  
कर कमर में बांधने का वस्त्र ।  
पावतप्त ( स. ) राजधानी, मुख्य  
नगर, खास तख्त, राजा के रहने  
का नगर, राजनगर ।  
पावदग ( सं. ) पैदल फौज, पैदली  
सेना, पैदल सिपाहियों का दल ।  
पावपोस ( स. ) जूता, पदनाग,  
पत्रही, जूती, बूट, खटार्क,  
स्लीपर ।  
पावपाव ( वि. ) गड़, बिगड़सित,  
• दुर्लभावस्थित, गड़ ब्रह्म ।

पावभाथी ( सं. ) विनाश, दुर्दशा,  
नाश, लय, निरुद्धन पुरा हाक ।  
पावरी ( सं. ) सीढ़ी, सोपान, पंखा  
नसेनी, प्रतिष्ठा, भारव, मान, दर्जा  
पदवी, वर्ग, जाति, पक्षि ।  
पावध ( सं. ) पैरों में पहिनने का  
एक आभूषण विशेष, नूपुर,  
जुधरु ।  
पावथी ( स. ) चबूची  $\frac{1}{2}$  सपया,  
पावली, चार सेर का तौल या  
माप ।  
पावधु ( स. ) देखो पावधु ।  
पावधु-१२ ( स. ) देखो पावधु ।  
पावधु-२ ( स. ) सच्चा, ठीक,  
खरा, प्रामाणिक, मजबूत, पुस्ता ।  
पावधुदित ( वि. ) निराधार, निरा-  
श्रय, बेसहारा, कमजोर, बेजरिया ।  
पावधु-३ ( स. ) एक प्रकार का  
केल ।  
पावे ( सं. ) खाट, कुर्ती, टेबल,  
इत्यादि का पैर, पग, खट्वाग, बोने  
के समय बस्त्र कूटने का डण्डा,  
नींव, जड़, बुनियाद, आधार,  
आश्रय, चौपा हिस्सा, पैदा ।  
पावे उपरी भवे ( कि. ) समूल-  
नाश होना, बिलकुल बरबाद होना ।

पारस ( कि. ) उत्तेजना देना  
सहाय देना, आश्रय देना, सम्मत  
होना ।

पारस ( कि. ) प्रारंभ करना  
शुरूआत करना, नींव डालना ।

पार ( सं. ) तौर, दूसरा तः,  
समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्रांत, लंघन,  
तरण, उद्धारण, मोचन, हृद, सीमा  
छोर सिरा, किनारा, अंत अक्ष  
का सिरा या भुजा, बाल, गुत,  
मर्म भेद, ( कि. वि. ) द्वारा,  
वज्ररिंदे ।

पार पारवे-वेवे-हहहवे ( कि. )  
गुम रहस्य जानलेना, पारपढ़ना ।

पार ( कि. ) किनारे लगाना ।

पार ( वि. ) अन्यथा, पराया,  
दूसरे का परकीय ।

पार ( सं. ) लड़की, बेटा,  
पुत्री, पराना घर बसानेवाली,  
पराये मनुष्यों के काम में आने  
वाली वस्तु ।

पार ( सं. ) परीक्षा, परल्ल,  
खोज, इम्तहान, खरे खोटे की  
जांच ।

पार ( कि. ) परल्लना, परी-  
क्षा करना, जांचना, इम्तहान  
करना । [ जीव ।

पार ( सं. ) परीक्षा, कबौटी,

पार ( कि. ) देखो पार  
पारति ( सं. ) बारिमात्र वृक्ष,  
देवतक, सुरहुम, देवताओं का वृक्ष  
पुष्प विशेष, हरि-चन्दन वृक्ष ।

पार ( सं. ) व्रत के अंत में भोजन  
उपवास के दूसरे दिन भोजन  
करना, समाप्ति, तृप्ति ।

पार ( सं. ) पलना, बच्चों के  
खलने के लिये काठ का खल,  
देखो पार ।

पार ( सं. ) शिकार, मृगया, पशु  
हिंसा, जीवाहिंसा ।

पार ( सं. ) शिकारी, मृगयावादी,  
भीड़, काल, पारदी ।

पार-पार-र ( सं. ) पूर्ण, संपूर्ण,  
परा, पार से भी परले किनारे ।

पार ( म. ) जंगली कबूतर या  
फालता, पक्षीविशेष । [ अधिक ।

पार ( वि. ) पुष्कल, बहुत,  
पार ( कि. ) नौदना, गोदना, जल  
आदि में से बास फूस निकालना ।

पार ( सं. ) एक प्रकार-  
का पीपल वृक्ष, अश्वत्थ, बिना  
सित्रका ।

पार ( सं. ) पारसी औरत ।

पार ( सं. ) मैत्री, लेखक,  
सेक्रेटरी, अक्षर चिह्न के साक्ष्य  
का समोहक होता है ।

पारभात ( कि. वि ) पाससे ।

पार ( सं. ) गोली ।

पारधु-धु ( सं. ) पुराणपाठ विशेष, नियम पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन ।

पारपार ( कि. ) सम्पूर्ण, इस छोर से उस छोर तक, सत्र, समस्त ।

पारपार ( सं. ) समुद्र, उदधि, सागर, ( वि. ) अगाध, अगम्य, गहिरा ।

पारपत ( सं. ) आदमानी कबूतर, गृहकपोत, पक्षी विशेष ।

पारिपत-त ( सं. ) सजा, दंड, शिक्षा, नसीहत, ताड़ना ।

पारी ( सं. ) देखो नराज, पथर, सोदनेकी लोहेकी छेनी, हाथियार,

पारे ( सं. ) शकुन, सगुन, शुभसूचक चिन्ह, मंगलगान, शुभचिन्ह ।

पारेभ ( सं. ) देखो परीभ

पारेड ( सं. ) बहुवदिनों की ज्याई हुई भैंस ।

पारेपु-वे ( सं. ) आदमानी कबूतर, फाखता, पक्षी विशेष, कपोत ।

पारी ( सं. ) छरी, बन्दूक में भरनेकी शिकेकी गोली, पारद,

धातु विशेष, रसधातु, यकेंसे पहिनेका एक प्रकारका आभूषण शरीरस्थ धातु ।

पारेड ( सं. ) बहुत दिनोंतक पड़ा रहने से बिगड़ा हुवा, खराब ।

पारेपार ( सं. ) देखो पारेपार

पारिनी ( सं. ) सीताका नाम, जानकी ।

पारिद ( सं. ) मृगमय, पृथ्वी से उत्पन्न मिट्टीके बनये हुए महादेव ( लिग ) राजा, नृपति, पृथ्वी सम्बन्धी ।

पाल ( सं. ) वह चिकना पदार्थ जो कई जगह पानी पर तैरता रहता है । चारों ओर पहाड़ों के बीचका मैदान, तंबूकी दीवार, कनात, रक्षक, प्रान्तका नाम, छिपकली, बिसतुइया, शाक विशेष ।

पालक-भां-गाप-डोडर-भाप ( सं. ) रक्षक, सौतेलीमा, सौतेलापिता, पोष्य पुत्र, रखी हुई स्त्री ।

पालभ ( सं. ) एक प्रकारकी भाजी, मचान, राजमजदूर इत्यादि द्वारा मकान बनाने के लिये ऊँची लकड़ियों की बाँधी हुई सजाव ।



पाक्षणी ( सं. ) पालकी, शिविका,  
डोला, मनुष्य वाह्यशन विशेष,  
डोला ।

पाक्षणी नशीन ( सं. ) अमीर,  
धनाढ्य, पालकी में बैठकर चलने  
वाला ।

पाक्षटपुं ( कि. ) बदलना, लौटना  
पलटना, फेरना, उलट पलट  
होना । [ प्रातिफल ।

पाक्षो ( सं. ) पक्ष, बदला,

पाक्षशु ( सं. ) भरण पोषण,  
प्रातिपालन, रक्षण, निर्वाह गुजर ।

पाक्षशु पोषशु ( सं. ) पूर्ववत् ।

पाक्षव ( सं. ) देखो पक्षव, गोट,  
मगजो, पक्षियोंका गुच्छ, पत्र-  
गुच्छ, आश्रय, शरण ।

पाक्षवपुं ( कि. ) अनुकूल होना,  
इच्छानुकूलहोना, खोजन, पालना,  
संभालना, पालन करना, रक्षा-  
करना ।

पाक्षपुं ( कि. ) पालना, परवरिश  
करना, मदद करना, पोषण-  
करना ।

पाक्षश ( सं. ) ठाक, टेसूका वृक्ष,  
किंशुक वृक्ष, साखरा, छीला ।

पाक्षि ( सं. ) जलकी एक जाति,  
( यह अति मीठा नहीं होता  
किंतु खारा भी नहीं होता )

पाक्षी ( सं. ) ( बंबई में ) चार  
चैरका परिमाण, लताग्र, नवपल्लव,  
छोटाप्याला, प्याली, पंगत, हारा

पाक्षीमा ( सं. ) पत्थरकी चट्टानका  
पानी, समाधिया कब्रका पत्थर ।

पाक्षुं ( सं. ) घास फूस तिनकों  
आखड़ों इत्यादिकी टट्टी, चटाई  
इत्यादिकी बनाई हुई अब भर-  
नेकी टट्टी, बरसातके पानी से

बबानेके लिये दीवारों पर लगाई  
जाने वाली टट्टी, प्याला, कटोरा,

पाक्षे ( सं. ) वृक्षादिके पत्ते, पर्ण,  
हृदय, पैदल मनुष्य, पल्लव ।

पाक्षे आनार ( वि. ) घान पात  
छानेवाला ।

पाक्ष ( सं. )  $\frac{1}{2}$ , चौथाई, पग, पैर  
चाथा भाग, ०१, चतुर्थांश ।

पाक्षी ( सं. ) काष्ठ निर्मित पाव-  
त्राण, पादुका, खड़ाक, जूती ।

पावटपुं ( सं. ) पैरका तलुवा ।

पावटुं ( सं. ) देखो पावडे ।

पावडे ( सं. ) घोड़ेपर आरोहण  
करते समय जिसमें पैर रखा  
जाता है, रक्वांच, पावड़ा, फावला,  
फावड़ा, कचरा मिश्रण खींचनेका  
औजार, लकड़का बांधा हुआ  
कच्चा पुल, गाड़ी तांगों बगची  
आदिमें बठनेकी बठनेका लोहेका  
पेडल ।

पावली ( सं. ) रसीद, भरपाईकी  
चिट्ठी, प्राप्त होनेकी इस्तक़िफ़ ।

पावशुं ( वि. ) मित्र, होशियार,  
लाभक, योग्य, झूठा, दगाबाज,  
बदमाश, लुच्चा, अमान मनुष्य ।

पावटों ( वि. ) पूर्ववत्

पावरे ( सं. ) तोबरा, चोडेके  
मुखपर दना खिलानेको बांधा  
जानेवाला बैला, चोडेके मुँहपर  
बांधनेकी बैली । [चरण,

पावसिथे ( सं. ) पग, पैर, पद,

पावली-धु-बो ( सं. ) चवली,  
 $\frac{1}{2}$  रूपया, चार आना, पाव रूपया

पावबोधा ( सं. ) यह शब्द तब  
प्रयोग किया जाता है जब कि कोई  
बड़ा आदमी अपने पैरो पर छोटे  
बालकको बिठा कर झुगता है,  
पैर पर बालकको झुलाना  
“ पापा ”

पावस ( सं. ) वर्षाकाल, प्रविष्टकाल  
वर्षाकाल, बरसात ।

पावणिये ( सं. ) इकतारा बजाने  
वाला एक प्रकारका वाद्य बजाने  
वाला ।

पावुं ( वि. ) पिलाना, कुत्तेको  
पानी पिलाना, सींचना, शहरकी  
चाखनी चवाना, पाना, प्राप्तकरना ।

पावे-बो ( सं. ) व पुष्प व की  
ऐसा अनुस्य, जिसके लिनेत्रियके  
स्थानपर केवल एक छिद्र होता  
है । पंख, झींझ, हिलदा, नपुंसक ।  
पावेने पावे। न बोडे=नामर्द को  
शूरता नहीं चढती ।

पावे ( सं. ) बांसरी, बन्धी, मुरली

पावली ( सं. ) छोटा पाश

पाशातक्षिये ( सं. ) चांदीप/  
सोनेकी पतरी चढाकर तार  
खींचनेवाला ।

पाशियुं ( वि. ) देखो पाशयी

पागेर ( वि. ) चार छटाक,  $\frac{1}{2}$   
मेर, सेरका चतुर्थांश, २० तोला

पाशेरी-रे ( सं. ) चौवा, चार  
छटाकके बजनवा बाट, पोवा ।

पाशी-से ( सं. ) चाँदीका डकड़ा,  
चाँदीकी डली, चाँदीका पासा ।

पावंड ( सं. ) पाखंड, ठोंग, ठगी ।

पापाथ्य चतुर्दशी ( सं. ) जिस  
मासमें सूर्य वृश्चिक राशिपर हो  
उस महीनेकी शुक्ल चतुर्दशी तिथि  
जिसमें पाषाणकी क्रांतिवृत्ति  
मेखन किया जाता है ।

पाषाण्य मेह ( सं. ) इन्द्रजालकी  
एक बीघवि, पत्थर पर जवा  
हुवा चार ।

पासे ३२५ (कि.) अन्तर् में से पत्थर  
कंकर दूर होना, इस लिये  
फटकना, पिछोरना, सूरंकिना,  
फटकना ।

पास ( सं ) आज्ञापत्र, प्रमाणपत्र,  
रंग, (वि.) दाखिल होना, प्रवेश  
करना, ( कि. वि. ) निकट,  
समीप, नजदीक । [ गं होना ।

पासवपुं ( कि. ) पासहोना, उत्ती-

पासवान ( स. ) साथ साथ रहने  
वाला, आज्ञाकारी, हजरिया ।

पासु ( स. ) पासली, बाजू, करवट ।

पासु वाष्पने सुपुं ( कि. ) निश्चित  
होकर सोना, आराम लेना ।

पासु सेवपुं ( कि. ) तबेदारी  
करना, पक्ष ग्रहण करना, तरफ-  
वारी करना ।

पासे ( कि. वि. ) पास, निकट,  
समीप अदूर, हाथमे, सत्तामे ।

पासेनुं ( कि. वि. ) पासरा,  
समीप वर्ती, कुटुम्बी, गोत्रका,  
गाठका, अपना ।

पासेनी ( उप. ) पाससे, से, बिना,

पासेनी ( सं. ) दूत विद्यामें पास,  
जुआ खेलनेके लिये हाथी दांत  
अथवा अन्य किसी बातका बनाव  
जुवा पास ।

पासे ३२६ (कि.) मम्मो  
द्व होना, संवत्तिके दिन आना ।

पासे भाभवे ( कि. ) साहस करके  
देखना, मम्म परीक्षा करना ।

पासे ३२७ ( कि. ) मम्म  
मम्म अनुकूल अथवा प्रतिकूल  
होना, का हुई युक्ति सफल होना  
या निष्फल होना । [ माफसल ।

पास्त ( सं. ) दूसरी सेती,

पास्त ३२८ ( वि. ) मजबूत, मोटा,  
ताजा, पुष्ट, दृढ़, कष्ट, स्थूल ।

पास्त ३२९ ( सं. ) पत्थर, पाहन,  
पाषाण ।

पास्त ( वि. ) देरसे, पीछे, पश्चात् ।

पास्तानी ( स. ) एड़ी, एड़ ।

पाण ( सं. ) सरोवरके चारों ओर  
बाधी हुई दीवार, आड़, हड्  
दताने के लिये जमीन से ऊंची  
लम्बी बनाई हुई भीत या चबू-  
तरा, शब्दान्त में लगनेवाली  
प्रत्यय जिससे अर्थमें ' कर्ता ',  
' या ' 'वाला' और हो जाता है ।

पाणक ( सं. ) रक्षक, पालक  
पोषण करने वाला, पालनद्वारा ।

पाणक ( सं. ) देखो पाणक

पाणक पोषक ( सं. ) देखो पाणक  
पोषक

पिं०ना२ ( सं. ) देखो पिं०  
 पिं०पुं ( कि. ) भरणपोषण करना  
 कालन पालन करना, बढ़ा करना,  
 आश्रयमें रखना, विधिपूर्वक  
 आचरण करना, सासारिक कूटके  
 अनुसार बर्ताव करना, मानना ।  
 पिं० ( सं. ) दात, दसन, दत, दाते ।  
 पिं० ( सं. ) शरबीरकी कत्रपर  
 अथवा सनापि पर यादगारक  
 रूपमें लगाया हुआ परवर ।  
 पिं० ( सं. ) चकू, छुरी, शकभाजी  
 सुधारकेका शस्त्र, मुकुर, किया  
 हुआ दिन, बारी, पागी ।  
 पिं० ( सं. ) पैरो चलना हुआ  
 ( मनुष्य ) पैदल, पदाती ।  
 पिं० ( सं. ) पैदलसिपाही, पदाती,  
 'गोलरेखा, पल्लव ।  
 पिं०पुं ( कि. ) हथर उधर पट-  
 कना, फेकना, नोचना, चूँचना,  
 बिठाना, गुस्से करना, जहाँ तहाँ  
 पटकना ।  
 पिं०पुं ३२ ( कि. ) अतिशयोक्ति  
 पूर्वक बढ़ाना, बड़ाकर वर्णन  
 करना ।  
 पिं०पुं ७० ( सं. ) अच्छी अच्छी  
 कहने वाला भविष्य वक्ता ।

पिं०पुं ( सं. ) विदेह देशमें रहने  
 वाली एक वेश्या का नाम, नाकी,  
 विशेष, दाहिने नयने से चकने  
 वाला स्वर, मालकायनी, मोरो-  
 चन, भरथरी की भार्या का नाम ।  
 पिं०पुं ( सं. ) धुनकने का हाथ-  
 यार, धुनने पंजने की बड़ी लम्बा  
 चाँड़ी बात, पर में पाहिने का  
 भ्रमण विशेष, पजनो, माथाफोड़  
 गिरपच्ची ।  
 पिं०पुं ३१-३२ ( सं. ) धुन-  
 कना, रुई उन अदि धुनने का  
 यंत्र, रंग माया का पहना निकल  
 न जावे इस लिये आदी लगाई  
 हुई लकड़ी ।  
 पिं०पुं ३३ ( सं. ) देखो पिं०पुं,  
 पाले रंग का, पाले ओर लाल  
 रंग का ।  
 पिं०पुं ( कि. ) धुनना, पंजना,  
 रुईको अथवा ऊनको धुनना ।  
 पिं०पुं ( सं. ) पिंजारेकी श्री,  
 रुई धुनकनेवाली श्री, पक्षा  
 विशेष ।  
 पिं०पुं ( सं. ) रुई धुनकनेवाला,  
 पिं०पुं ( सं. ) गारेका अथवा  
 नाकी मिश्रका योल ।

पि०००० ( सं. ) ग्वाल, अहीर, महरिका, एकजाति विशेष, बाहु-धोका दल, लुटेरा, ठग, डकैत, गोप, चरवाहा ।

पि०००० ( वि. ) केवल मिष्टके गोलेद्वारा बनाया हुआ घर, केवल मिष्टका घर ।

पि०००० ( सं. ) काकिल, कायल, एक जाति का पक्षी, पान सुपारी अथवा जुरदेका थूक, पाक ।

पि०००० ( सं. ) थूकनेका पात्र, थूकनेका वह पात्र जिसका मुख ऊपरसे बाधा होता है, पीकदानी ।

पि०००० ( कि. ) फेंकना, बिखेरना, इधर उधर फेंक देना, नाव डालना ।

पि०००० ( कि. ) पिघलना, टघलना, ढव होना, पतला होना, पानी होना ।

पि०००० ( कि. ) टिघलाना, ढव करना, पिघलाना, पानी करना ।

पि०००० ( सं. ) पचूका, दमकला, वह यंत्र जिसके द्वारा पानी भरकर धार रूपमें छोड़ा जाता है, होली के दिनोंमें रंग डालनेके काम आता है, पान अथवा जुरदेके बहृतसे थूकका पिचकारीकी तरह थूकना ।

पि०००० ( सं. ) देखो पी००००००  
पि०००० ( सं. ) मयूर पुच्छ, मोर पुच्छ, शिखण्ड, लाङ्गूल, पूँछ, पंख, पक्ष ।

पि०००० ( सं. ) एक प्रकारकी रस्ती, पाँछे, पश्चात्, पृष्ठभाग ।

पि०००० ( सं. ) पाँहचान, परिचय, मेल, जान पड़िचान, ।

पि०००० ( कि. ) पहिचानना, जानना, परिचय प्राप्त करना, जानलेना ।

पि०००० ( सं. ) पीछा पश्चाद्गमन ।

पि०००० ( कि. ) पीछे पड़ना, सताना, पीछा पकड़ा, कष्ट देना, खोज करना ।

पि०००० ( सं. ) डुगाह, पिछोरी, कपड़ा, उपवस्त्र, कंधेपर डालनेका वस्त्र । लूचड़े पर ओढ़नेकी सफेद चादर । बिछेनों पर डालनेका वस्त्र ।

पि०००० ( सं. ) बड़ी चादर, चहर ।

पि०००० ( कि. वि. ) हरेक बातको खूब बढ़ाना, और पिछपेक्षण करना ।

पि०००० ( सं. ) पड़ापट शब्द, कूटने अथवा पीटनेका शब्द ।

पि०००००० ( सं. ) पाण्डुरोग युक्त, जिसे कमला हो गया हो, कन्म-रोगी, मुख पीका हाथपैर दुर्बल और पेट बड़ा ।

पितृज्ञान (सं.) वेदज्ञान, शरीरज्ञान  
पितृहारी (सं.) दर्वयुक्त, दुखवादी,  
कष्टकर्ता, दुःखमय ।

पिडित (वि.) दुःखित, दुःखी, कष्ट  
पूर्ण, श्लेशित ।

पिण्डी (सं.) मह देवजीकी मूर्ति  
(लिंग) शिवलिंग, पिंडली, पिण्डरी ।

पिण्डु (सं.) घागे आदिका  
लपेटन द्वारा बनाहुवा गोला,  
पिंवा ।

पितृशत्रु-नाथ (सं.) चचाके बेटे  
आई, सहोदर आईके अतिरिक्त  
संबंध ।

पितृशत्रु भाध (सं.) चचाका पुत्र  
आई, पिताके मामाका पुत्र, चचेरा  
आई, चचा ज़ादूआई

पितृशत्रु भेन (सं.) चचेरी बहिन  
पिताके मामाकी पुत्री ।

पितृशत्रु (सं.) कद्, लौकी  
फल विशेष ।

पितृगणपान (सं.) पीतलकी पतंगी,  
पीतल धातु निर्मित पन्नी ।

पितृवाणु (सं.) पितृयुक्त, पितृ  
प्रकृतिक, [ पीतलका

पितृवर्ण (वि.) वैश्वर्म, निर्द्वज,

पितृवर्ण (सं.) पीतलका प्याल ।

पितृगणु (वि.) पीतलका बत्ता,  
पीतल धातु द्वारा बनाहुवा ।

पितृवाणु (वि.) देखो पितृवाणु

पितृ (सं.) शरीरस्थ धातुविशेष,  
तिक्तधातु, पितृ (वात, कफ)

पितृवर्ण (सं.) पितृ जनितज्वर,  
पितृके कारण शरीर दाह ।

पितृप्रकृति (सं.) जिसके शरीरमें  
पितृनामक धातुकी प्रधानता हो,  
गरम मिर्जाऊ, [मिल, वातपितृ

पितृवा (सं.) पितृ और धातुका

पितृग (सं.) धातु विशेष, पीतल  
ताम्बे और जस्तेके मिश्रणसे बनी  
हुई एक पीली धातु । तेज मिर्जा-  
ऊका, ओछा पात्र, तेज तरार ।

पितृगण (सं.) दुग्ध, कलेजा,  
दिल ।

पितृ (सं.) क्रोध, गुस्सा, तेज  
मिर्जाऊ, पितृवाह, तीखास्वभाव ।

पितृ उच्छ्रय (वि.) काध हाजाना  
पिपिध (वि.) अस्त, मद्यपान  
कियाहुवा, शराबा मदमाता ।

पिपिधु (वि.) शराब पीया हुवा ।

पिपिधे (वि.) पूर्ववत्

पितृ-वेद (सं.) एक प्रकारके  
वृक्षका फल जो आम्बरके काममें  
लाये जाते हैं

पिपली भूष ( सं. ) पीपलामूल,  
पीपल वृक्षकी जड़ ।

पिपली ( सं. ) पीपल नामसे  
प्रसिद्ध पवित्र वृक्ष, अमृत्य ।

पिपले दीवे। ४२वे। ( कि. ) संसारको  
गुप्तकात प्रकट करना, बात फैलाना,

पिपले। ७४वे। ( कि. ) निस्संतान  
होना, अपुत्र होना, निर्वंश होना ।

पिपण ( सं. ) मन्द मन्द सुगन्ध,  
बीमी २ कुशब्, गन्ध, सुवास ।

पिपणपुं ( कि. ) मंद मद सुरास  
आना, बीमी बीमी कुशब् आना,  
मारम आना ।

पिप२ ( सं. ) छोटा पितृग्रह,  
पीहर, मेका, मायका पीर ।

पिप२पने। ती-समधी ( वि. ) जिसके  
सुखी म्थ्यात हो ।

पिप२रिथु-पे२थुं ( सं. ) ली के  
बापकी ओरका सगा सम्बन्धी  
या कुटुम्बी ( वि. ) पीहर सम्बन्धी

पिपण ( सं. ) देखो पीपण

पिपु-डे। ( सं. ) पति, सावित्र,  
सासी, ससस, धनी, प्यारा,  
स्त्रिय । [ पीकूषा ।

पिपु३ ( सं. ) कपूर, कुप, कुप,

पि२सथु ( सं. ) पकाहुवा भोजन  
परोसना, परोसन ।

पि२सथु-प२ ( सं. ) परसने  
वाला, भोजन करावे वाला ।

पि२सथुं ( कि. ) परोसना, पात्रमें  
भोजन रक्षना, त्रिसलेकी वालों  
भोज्य वस्तु रक्षना ।

पि२१०४-१०५ ( सं. ) आशमानी रंग  
का मृत्पथान पत्थर ।

पि२१०७ ( वि. ) आशमानी रंग,  
नील रंग, पि२जेका रंग ।

पि२१०८ ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

पि२१०९ ( कि. ) दवाना, निचोड़ना,  
यत्रमें कुचलना, दो वस्तुओंके  
बीचमें रखकर दवाना ।

पि२११० ( कि. ) दबवाना, कुचलाना ।

पि२१११ ( सं. ) पि२१०८ वृक्षका फल,  
पदि, फल विशेष, मुर्गाका बच्चा ।

पि२११२ ( सं. ) ज्वार दाजरेकी  
ढंठलमेंसे फूटा हुवा फुनगा ।

पि२११३ ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

पि२११४ ( सं. ) बैली, कोबली,  
मुसलमानोंकी शिवोंके पहिरनेका  
पड़ावा ।

पि२११५ ( सं. ) कोबली, बैली ।

पि२११६ ( कि. ) दबाना, पीसना, चूँच  
करना, झक झक, कुचलना,

पि२११७ ( सं. ) मिट्टीकी बगई हुई  
बंसरी या शुरकी, सीटी ।

पिछुडी ( सं. ) एक प्रकारका बाघ,  
मुरली, बांसरी, वेणु ।

पिस्ता ( सं. ) पिस्ता नामक  
प्रसिद्ध मेवा ।

पिस्तालीस ( वि. ) संख्या विशेष,  
बालीस और पांच, ४५, पैतालीस ।

पिडुपिडु ( सं. ) कोयलका शब्द,  
पपीह नामक पक्षीको बोली ।

पिडेर ( सं. ) स्त्रीका पितृगृह  
पंहर, मायका, पीर बापके घर ।

पिण-पीण ( सं. ) छुनसमय पर  
स्त्रियोंके कपाल पर लगाया हुवा  
कुमकुमका बिंदु, सीमांमय बिन्दु ।

पिणयडुं ( सं. ) पीला रंग लभे  
हुए, पीत वर्णयुक्त, पीलाई ।

पिणपुं ( कि. ) कुमकुमके रंग में  
रंगना, रंगटना, मसलना, कुचलना ।

पिणाल-स ( सं. ) पीलापन,  
दिखने में कुछकुछ पीत रंग युक्त,  
पिलाई ।

पिणियुं ( सं. ) पीला ओठना,  
पोले रंगकी लूषड़ी, हस्ती के रंग  
का रंगा हुवा, पीली ईंट, एक  
प्रकारका रोग । [ रंग

पिणुं ( सं. ) पीला, पीत, हलादिया

पी ( सं. ) कबीरहत, अपमान,  
अपकीर्ति ।

पीआन ( सं. ) कौवा, गंठा,  
प्याज, कस्तूरी ।

पीक ( सं. ) अन्न हत्यादिका पाक,  
पान तमाखुका शुक ।

पींगाणी ( सं. ) सुगन्धित तेल  
का प्याला, खुशबूदार पदार्थ युक्त  
कटेरा ।

पीछ ( सं. ) पीछा, पत्र, पक्ष,  
पिच्छ, पूछ, देखो पीछुं

पीछी ( सं. ) मोरपख, मोरका  
पाखों का बनाया हुआ, चमर,  
चंबर, चवरी, मक्खी भगानेका,  
ब्रश, बुरस ।

पीछुं ( सं. ) पीछ, पख, पर, पक्ष

पीछःपु पादेपुं ३२पुं ( कि. )  
राईका पहाड़ करना, आंतवायोक्ति  
पूर्वक कहना ।

पीछाने ३३गडे ( सं. ) किसी  
थोड़ी बातको बढाकर कहना ।

पीछुं धावपुं ( कि. ) बाधा  
उपस्थित कर देना, आड़ करना,  
रोक करना ।

पीछे ( सं. ) पीछा, पश्चाद्गमन ।

पीछे ३२वे ( कि. ) पीछा करना,  
खदेरना, भगाना, दौड़ाना, पीछे  
जाना ।

पीछुपी ( सं. ) पिटाई, कुटाई,  
मार, छातीकी पिटाई ।



पीछे ( वि. ) अति मरेके समान,  
दुखदायी पुरुषको गाली देनेके  
लिये किया यह शब्द काममें  
लगता है ।

पीछुं ( कि. ) देखो पीछुं

पीछे उधाड़ी पःरी ( कि. ) कोई  
मददगार न होना, असहाय होना ।

पीछे ठोड़ी ( कि. ) शाबाशी देना,  
उत्तेजित करना, अभयदेना,  
साहस देना ।

पीछे दांड़ी ( कि. ) मदद करना,  
आश्रय प्रदान करना, बात  
रखना । [ पीछे ठोड़ी

पीछे थाड़ी ( कि. ) देखो

पीछे छः ईश्वर ( कि. ) धैर्य-  
देना, साहसदेना, हिम्मत बंधाना ।

पीछे पाछे भूछुं ( कि. ) मुल-  
तबी रखना, स्थगित करना,  
ठहराना ।

पीछे पुःछुं ( कि. ) आवश्यकता के  
समय सहायता करना ।

पीछे ईश्वरी ( कि. ) त्याग देना,  
तज देना, तिरस्कार पूर्वक देखना  
आवश्यकता के समय छोड़कर चले  
जाना ।

पीछे अतादी ( कि. ) हार मानकर  
भागजाना, पीछे हटना, भाग  
जाना ।

पीछे बेरी ( कि. ) पछि पड़ना,  
दुखदेना, आप्रह पूर्वक मांगना ।

पीछुं गेर ( सं. ) सहायक का  
बल, ज़ारया, बसोला, पीछे का  
जोर ।

पीछे ( सं. ) आटा, पिष्टी, भिंसा  
हुवा गोळ अन्न, अन्न की गौलो  
लुब्दी । मंरि, स्वळ, जचह,  
छोटा टेबल, स्टूल ।

पीछे ( सं. ) बंधावली, आरंभ  
से विवरण पूर्वक बात ।

पीछे ( सं. ) विवाह के समय घर  
अथवा कन्या के शरीर में कुछ  
दिन पूर्व से हल्दी मिश्रित लगाने  
का मसाला, उबटन, अम्ब्यंग,  
उबटना ।

पीछे ( सं. ) सराव की दुकान,  
तादी की दुकान, कलाली, अन्न  
का बाजार, जहाँ माल थोकबन्द  
मिलता हो ।

पीछे ( सं. ) देखो पीछे, पीछे,  
दुःख, व्यथा, उपद्रव, आपदा,  
व्याधी, रंगकी लुब्दी ।

पीछुं ( कि. ) पीड़ाकरना, दुःख-  
देना, कष्टदेना, तकलीफदेना ।

पीछुं ( कि. ) पीड़ापाना, कष्ट-  
पाना, तकलीफ पाना, सिद्धान्तः ।

- पीठ-दि ( सं. ) छत पर शह-  
लीयों पर रखनेके पटिया ।
- पीठारे ( सं. ) लटेरा, ठग,  
नथक ।
- पीठियां ( सं. ) दाढ़, दाढ़, दाँत ।
- पीठियु ( सं. ) आदी तल्ली,  
शहतीर । [ चाह ।
- पीथु ( सं. ) इच्छा, स्वाहिस,  
पीत ( सं. ) पित्त, माजी, पानी से  
उत्पन्न होनेवाला शाक, ( वि. )  
चपटा, गूदेदार, भोटा, पीला ।
- पीत डोडी ( सं. ) एक प्रकारका जान  
वर, जिसको गुदा लाल होती है ।
- पीतपापडी ( सं. ) एक प्रकारके  
बीज, पलाशवृक्षके बीज, साखरे-  
का बीज ।
- पीतवाडी ( सं. ) जिस क्षेत्रको  
कुएँका पानी पिलाया गया हो ।
- पीथु ( क्रि. ) पीया, पिया ।
- पीनस ( सं. ) नासिकारोग, रोग  
विशेष ।
- पीनार ( सं. ) पीनेवाला, पानकर्ता ।
- पीप ( सं. ) बारू, शराब, काष्ठका  
बोल पीपा, काठका डोल समान  
पीपा ।
- पीपेर ( सं. ) देखो पिपेर

- पीपा ( सं. ) एक प्रकार का बाजा,  
बाद्य विशेष, फगीहत, खराबी ।
- पीपी ( सं. ) बाँसरो, मुखसे  
बजाने की सीटी, अपमान, हतक,  
बदनामी ।
- पीपुडी ( सं. ) पूर्ववत्
- पीपोडी ( सं. ) पूर्ववत् [ सुगंध ।
- पीथगाट ( सं. ) महक, सुसू,  
पीथण ( सं. ) स्त्री के मस्तक पर  
हिगल अथवा सिंदूर से चित्रित  
सौभाग्य चिन्ह ।
- पीपो ( सं. ) आँखों के कोनों का  
एकत्रित मल, आँखों का गोड़,  
नेत्रों का मल ।
- पीर ( सं. ) मरेबाद, मुसलमान  
साधु की पदवी, बली, ओलिया,  
फकीर ।
- पीथपु ( क्रि. ) देखो पिथपु
- पीथुध ( सं. ) पीथुड़ी के फल,  
एक प्रकारके फल ।
- पीथुडी ( सं. ) वृक्ष विशेष,  
जिसके पीले बेर तुल्य फल लगते  
हैं, एक प्रकार का राग ।
- पीथे ( सं. ) वृक्ष पीथे का यह  
भाग जो सर्व प्रथम जमीन से  
बाहिर होता है, अंकुर, पुनगा,  
तमाख की कोमल शाखा ।

पीपु ( कि. ) पाल करना, छोड़  
सा सरक पदार्थ कंठ के नीचे  
उतारना, धूमना, सराब पीना,  
ममाना, अंदर प्रवेश होना, दम  
लेना, मुँह में धुँवा भर लेना,  
सहन करना, गम खाना ।

पीपु ( कि. ) सहन करना, बर-  
दास्त करना का जाना, कुछ पर  
बाह न करना, देना अनदेखा  
करना, अवहेलना करना, सह  
जाना ।

पीसपु ( कि. ) पीसना, दलना,  
चूँ करना, कुचलना, आटा करना ।

पीणक ( सं. ) पालापन, फाँकापन ।

पीणपु ( कि. ) देखो पिणपुं

पीणस ( वि. ) देखो पिणस

पीणुं ( वि. ) पीला, पीत, हल्दी  
के समान, सोने के रंग समान ।

पीणु धर्मक ( वि. ) अतिशय पील,  
बिलकुल पीले रंग का ।

पीणो देडे ( सं. ) जिस में रक्त  
नहीं रहा हो और फीका दिखाई  
देता हो ।

पीषतन ( वि. ) यज्ञतुल्य, हाथी  
समान, मोटा, भारी, स्थूल ।

पीपुं ( सं. ) पिप्पू नामक सुगंध अमृत,  
सुच्छ प्राणी ।

पुंभ ( सं. ) देखो पुंभ पर के  
छप्पर के दोनों ओर का बाह्य  
भाग, पक्ष, घर के दोनों बाजू ।

पुंभुं ( सं. ) मंद हवा, धीमी  
वायु ( वि. ) थोड़ासा, अ-सा, कम ।

पुंभपुं ( कि. ) जेठ में हाम से  
अन्न आदि बँधेरना,

पुंभ-डी ( सं. ) हुम, पूँछ,  
पुच्छ, लाइगूल, पश्चाद्भाग ।

पुंभपुं ( कि. ) पौछना, साफ करना,  
छोड़ना, छोटना, पूँछना ।

पुंभपु ( कि. ) पूजना, पूजा करना,  
मान करना, सम्मान करना, जीव  
जंतु की रक्षा के लिये साहू से  
सादना ( जैन सम्प्रदाय में )

पुंभपुी ( सं. ) जिन साधुओं के  
पास सड़ जो जीवादि सादने के  
काम में आती है ।

पुंभ ( सं. ) दीकत द्रव्य, धन अर्थाः

पुंभे ( सं. ) उच्छिष्ट, कचरा,  
मैला, कूड़ा ।

पुंभे भडेवे ( कि. ) कचरा सादना,  
मैला उधारना, उच्छिष्ट दूर करना

पुंभुं ( सं. ) पुष्टा, घृष्ट, पीठ,  
पिच्छल भाग, गाड़ी में से कुछ  
गिर न जाय इस लिये लगाया  
हुवा किताड़ का या आड़ ।

पुधि ( सं. ) बीच में से फटा हुआ घोंटी का ३४ हाथ का टुकड़ा, बल टाँकने वाले की कमरबो पाछे की ओर बांधने का चमड़ा ।

पु०२ ( सं. ) लड़का, पुत्र, छोकरा,

पु०३ ( सं. ) देखो पु०३

पु०४ ( सं. ) खेत में ये कपास बाँधने के बाद जो थोड़ा थोड़ा कपास रह जाता है ।

पु०५ ( सं. ) देखो पौआ

पु०६ ( कि. ) गुहराना, हाँक मारना, डाँकना, आह्वान करना ।

पु०७ ( सं. ) देहो पौआ

पु०८ ( सं. ) निश्चल बुद्धि का, दृढ़ बुद्धि का, दृढ़ मजबूत सुदृढ़ ।

पु०९ ( वि. ) बस चले जितना, हो सके उतना, देखो उतना, जितना संभव हो ।

पु०१० ( कि. ) पहुँचना, जाना, चलना, प्राप्त होना, निमना, टिकना, मिलना ।

पु०११ ( कि. ) पहुँचना, भेजना, स्थापन करना, पहुँचा देना ।

पु०१२ ( सं. ) सान्त्वना वाक्य, डाँट, शान्त करने के लिये ओंके द्वारा वाक्य ।

पु०१३ ( सं. ) लाँगूल, पूँछ, दुम, पाछे का भाग, पशु शिन्ध, पञ्चाङ्गाम ।

पु०१४ ( वि. ) पूँछवाला, दुमदार

पु०१५ ( सं. ) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा, पूँछल तारा ।

पु०१६ ( सं. ) छोटी पूँछ, छोटी दुम,

पु०१७ ( सं. ) पशु पक्षी के गुदा मार्ग के ऊपर, निकला हुआ अवयव, पूँछ, दुम ।

पु०१८-१२९-१३० ( सं. ) तलाश, खोज, हूँट, जाँच पड़ताल, अनुसन्धान, जिज्ञासा, टोह, पूछताछ ।

पु०१९ ( कि. ) पूछना, जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, टोह लगाना ।

पु०२० ( सं. ) बारबार पूछताछ, पुनःपुनः अनुसन्धान, बारबार प्रश्न

पु०२१ ( कि. ) पुछना, निश्चय कराना, कहलाना, अनुसन्धान करा देना ।

पु०२२ ( सं. ) देखो पु०२२

पु०२३ ( कि. ) अर्चन करना, आराधन करना, ध्यान करना, सम्मान करना ।

पुष्प ( सं. ) पूजा के उपकरण,  
पूजा की सामग्री, चन्दन, पुष्प,  
धूप, दीप, नैवेद्य, फल, जल,  
इत्यादि सामग्री ।

पुष्पशि ( वि. ) पूज्य, मान्य,  
पूजनाय, माननीय, पूजा करने  
योग्य ।

पुष्ट ( सं. ) युगल, युग्म, आच्छादन,  
पत्रादि रचित मध्य, अभ्यन्तर  
औषधि पकाने का पात्रविशेष,  
बख पट, कपड़ा । [ श्रीफल ।

पुटोदक ( सं. ) नारियल, नारेल,

पुठ ( सं. ) देखो पुठ ।

पुठल ( क्रि. वि. और अ ) पीछे,  
बादमें, अनुपस्थिति में, गैरहाजिरी  
में, पीठ पीछे ।

पुठ ( सं. ) पुस्तक की जिल्द,  
आवरण पृष्ठ, दालमें के छिलके  
या कचरा ।

पुठियां ( सं ) पुठ, कुल्हा, चूतड़।  
गाड़ी के पहियों के आरे ।

पुठियां हलवा ( क्रि. ) डरना, भय  
उत्पन्न होना, डर के मारे घबराना  
बेहरा फीका होना ।

पुठी ( सं. ) छोटा पुठ, गाड़ी के  
चक्के के आरे ।

पुठ ( सं. ) देखो पुठ ।

पुठ ( सं. ) देखो पुठ ।

पुठी ( सं ) पुष्टि, कागज की छोटी  
गांठ जिसमें औषधि इत्यादि लगी  
जाती है ।

पुठ ( सं. ) सहस्रका छत्ता, पूरी,  
एक प्रकार की ची या तेल में भूयीं  
हुई आटे की रोटी, पूरी, शक्कुली,  
कचौरी ।

पुष्पशु ( वि. ) ओछा, अपूर्ण,  
बाका, टेढ़ा, आढ़ा, तिरछा ।

पुष्प ( क्रि. ) काटना दुःख देना,  
पीटना ।

पुष्प ( सं. ) रुई की लगभग एक  
बालिशत लंबी और अंगुली समान  
मोटी कम बल दी हुई बत्ती, पूनी,  
कातने के लिये तय्यार की हुई  
रुई की बाती ।

पुष्पनिवाध ( सं. ) राईका पहाड़,  
रजका गज । मूर्ति ।

पुत्तल ( सं. ) पुतला, मूर्ति, प्रति

पुत्तल विधान ( सं. ) मनुष्यका  
मृत शरीर हाथ न लगने के कारण  
उसका प्रतिनिधि रूप पुतला बना  
कर उसका संस्कार इत्यादि ।

पुत्तल ( वि. ) जिसमें पुतल या  
मूर्ति हां, ऐसा गहना जिसमें  
मूर्ति बनी हो, सिक्का, गिनी, मो-  
हर, मुहर ।

**पुतली** (सं.) आँखों का तारा, काँट-  
दिनिर्मित छोटी, पुतली, छोटी  
की प्रतिमा, सौन्दर्य सुन्दर  
औरत ।

**पुतलु** ( सं. ) गुड़ा, पुतली, कठ  
पुतली, मूर्ति, प्रतिमा, तस्वीर ।

**पुत्री** ( सं. ) लड़की का लड़का,  
बेटी का बेटा, नाती, भानजा,  
बहिन का पुत्र । [ पुत्रीका ।

**पुत्रीय** ( वि. ) लड़की का, बेटी का,

**पुत्रेष्टि** ( सं ) पुत्र की इच्छा के लिये  
किया हुआ यज्ञ इत्यादि पूजापाठ,  
संतानार्थ यज्ञ, संतान, प्राप्ति का  
उपाय विशेष । [ की चाह ।

**पुत्रेष्ट्या** ( सं ) पुत्र की इच्छा, बेटे  
**पुद्गल** ( सं. ) आत्मा, देह, शरीर,  
जैनियों के मत से चैतन्य विशिष्ट,  
परार्थ विशेष, सुन्दराकार, रूपादि  
विशिष्ट द्रव्य, अच्छे आकारवाला ।

**पुनम** ( सं. ) पूनम, पूर्ण, पौर्णिमा,  
शुक्लपक्ष की अंतिमदिन, तिथिविशेष

**पुनरागमन** ( सं. ) द्वितीयवार  
आगमन, फिर आना, लौट आना,  
लौटना । [ ली ।

**पुनरु** ( सं ) दोहरा, दोबारा व्याही

**पुनर्विवाह** ( सं. ) द्वितीयवार  
विवाह, दूसरा विवाह, ली का

द्वितीय विवाह, ( पति का पतन  
व लगने पर पति के मरणाने पर,  
संन्यासी हो जाने पर, नपुंसक  
प्रतीत होने पर, और पतित होने  
पर किया हुआ ली का दूसरा  
विवाह । )

**पुनित** ( वि. ) पवित्र, पावन,  
सुन्दर, श्रेष्ठ, उत्तम, चारु  
पुनीत ।

**पुनम** ( सं. ) पौर्णिमा, पूनम,  
पूर्ण, शुक्लपक्ष की अंतिम तिथि ।

**पुष** ( सं. ) पुरुष, नरजाति, रुई  
में से उड़ती हुई बारीक रज यज्ञ  
के ऊपर की रोमावली, यज्ञ के  
रोम ।

**पुम्व** ( सं. ) देखो पुम्व । .

**पुम्वु** ( सं. ) कान के छिद्र में  
डालने की सुई, देवताओं के आगे  
जलाई जाने वाली रुई की फूल-  
बत्ती, रुई की टुकड़ा, ( वि. )  
बोड़ा, कुछ, सहम ।

**पुरुसर** ( वि. ) आगे जानेवाला  
अग्रगामी; अग्रसर, अगुवानी ।

**पुर** ( सं. ) शहर, ग्राम, कस्बा,  
अधिक व्यापार और दुकान युक्त  
गाँव, घर, मेह, गृह, मकान, देह,  
शरीर । ( रि. ) समस्त, साध,

संपूर्ण ( सं. ) पुष्कल जल, नदी की बाढ़, रेल देखो पूर ।

पुरब्धे ( सं. ) ठुकरा, छोटा हिल्ला, कागज का ठुकरा, खण्ड ।

पुरश्च ( सं. ) अन्दर भरने का मावा, मसाला, कचौरी आदि में भरने का मसाला । पूर्ण, समस्त संपूर्ण ।

पुरश्चपोष्ण ( सं. ) बेड़नी, वेड़ई, कचौरी, मसालेदार पूरी ।

पुरश्चि ( सं. ) गड्ढे में पत्थर मिट्टी इत्यादि की भरती, भराई, पूर्णता ।

पुरतल ( वि. ) इच्छा पूरी करने वाला, दाता, पूरक, पूर्ण कर्ता ।

पुरतुं ( वि. ) पर्याप्त, काफी, उचित, मुनासिफ, ठीक, पूर्ण ।

पुरनिधे ( सं. ) उत्तर भारत का रहनेवाला, पूर्व दिसा का वासी मनुष्य ।

पुरवशी ( सं. ) उपसंहार, न्यूनातापूर्ति, भरती, सप्रमाणसिद्धि, पूर्ति ।

पुरवार ( सं. ) सप्रमाण सिद्ध, बाजला चाहारत से साबित ।

पुरवार कश्तुं ( कि. ) सप्रमाण सिद्ध करना, साबित करना । सिद्ध करना । [ यथाही ।

पुरवारी ( सं. ) प्रमाण, साक्षी, पुरवी ( सं. ) एक प्रथर की रामिनी जो संख्या समय माई जाती है, पूर्वी ।

पुरतुं ( कि. ) पूरना, भरना, गड्ढे में मिट्टी पत्थर आदि डालना, किसी बर्तन को परिपूर्ण करना, जमीन लीप कर उस पर चित्र बनाना, बढ़ाना, चकचकित करना, उकसाना डाटना, कैद करना, बन्द करना, असंपूर्ण को पूर्ण करना, देना, सामने करना । पटचवान होना, पटुवाना, पूर पटकना, पेश करना ।

पुरधातन ( सं. ) देखो पुरधातन । पुरधातन ( सं. ) पुस्तक, मरदाई, शाय, पुरुषत्व, वीरता ।

पुरधीस ( सं. ) पूछताछ, तलाश, अनुसंधान, प्रश्न ।

पुरश्शर ( कि. वि. ) आदि सहित, इत्यादे बगैरः प्रभृति, पूर्वक, साथ में, सहित ।

पुरात-भाषी ( सं. ) सराफ़ी, बड़ी खातेमें जमा उधार करदे हुए जो लिखक में बाकी रहे ।

पुशाथ ( सं. ) व्यासादि मुनिप्रणीत ग्रंथ विशेष, इतिहास ग्रंथ, अठारह पुराण ( पुराण तीन भागों में विभक्त हैं राजस, तामस और सात्विक, तामस पुराण, मतस्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कंद और अग्नि, राजसपुराण, ब्रह्मांड, ब्रह्मवैवर्त, माकण्डेय, भविष्य, कामन और ब्रह्म, सात्विकपुराण विष्णु, नारद, भागवत, गरुड, वाराह और पद्म ) । ( वि. ) प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।

पुशाथ ४१६पुं ( कि. ) किस्सा छेड़ना, बात कहना. वर्णन करना छिम्बी बात कहना ।

पुशाथ-तन ( वि. ) प्राचीन, पूर्व कालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का, पहिले बत्तों का, जीर्ण ।

पुरात ( सं. ) कांटा, तुला, शेष भाग ।

पुरातुं ( कि. ) भगाना, पुराना, गड़ढे इत्यादि को बराबर कर देना ।

पुरावे। ( सं. ) प्रमाण, गवाही, साक्षी, सुबूत, संतोष, तसल्ली ।

पुरी ( सं. ) नमरी, शहर, कस्बा, गांव, पुरवा, जगन्नाथपुरी । पुरी, लुन्वाई, सोहारी, पकवान, विशेष, भी में तली हुई रोटी ।

पुरीथ ( सं. ) बिछा, मल, गूद, तरक, पाखाना, गू, बांट ।

पुरं ( वि. ) पूर्ण, पूरा, भरापूरा, सम्पन्न, पर्याप्त, समाप्त, काफी, ठीक, ( सं. ) पुरा, मोहल्ला, गांव के पास का छोटा गांव ।

पुरं ४२पुं ( कि. ) पूरा करना, पूर्ण करना, संपूर्ण करना, समाप्त करना । [ होना ।

पुरं ४३पुं ( वि. ) पूर्ण होना, समाप्त

पुरं ४४पुं ( कि. ) येनकेन प्रकारेण कहलना, पूरा पटकना, जुटाना, पूरा करना ।

पुरं ४५पुं ( वि. ) संपूर्ण, कुछभी शेष नहीं, सब, तमाम, बिलकुल ।

पुराक्ष ( सं. ) यज्ञायहवि विशेष, हवनका अवशेष, हविष, यज्ञप्रसाद ।

पुराहित ( सं. ) ऋत्विक्, पुरोधा, याजक, ब्राह्मण, उपाध्याय, ब्राह्मण ।

पुरा-२५ ( सं. ) पुरुष, मर्द, जन ।

पुथ ( सं. ) देखो पुथ

पुथ ( सं. ) रोमांच, रामोज्ज्वल, शरीर के बाहिर और भीतर हर्ष अन्य विकार ।

पुथात ( वि. ) रोमांचकारी ।

पुथाक ( सं. ) संश्लेष, बहादुरी, वीरता, चाबलों कातुष, शस्त्र हीन धान्या



पुखिन ( सं. ) द्वीप, पानी के बीच में घिरी हुई जमीन, नदीका मध्य तट, किनारा जलसे निकला हुआ भाग, तीर, तट।

पुथी ( सं. ) घासकी पूली, घासका बंधा हुआ छोटा पूल, घास की पिंडी।

पुष्कर ( सं. ) मूरा कमल, सप्तद्वीपों में से एक, आकाश, अजमेरके पास एक तीर्थ, इसनामका तलाब, आकाश जल, कमल, असिकोष, तलवार की म्यान, सारस पक्षी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, रोग विशेष। [ धूल।

पुष्टं ( सं. ) पुष्ट, मोटा, ताजा,

पुष्प भर्त्तातु ( सं. ) ऋतु धर्म स्थावक, नस, रजतंतु।

पुष्प आवे ( कि. ) आशा बंधना उम्मीद होना, रजोदर्शन होना।

पुष्परात्रि ( सं. ) पुष्कराज, पद्मराग मणि, गोमेद, मणि विशेष, एकरत्न।

पुष्परात्रि ( सं. ) पूर्ववत्।

पुष्पवती ( सं. ) ऋतुसती की वह रजस्वला स्त्री जिसे रजस्त्राव होता हो, न छूनेकी।

पुस्त ( सं. ) उपज, औलाद, वंश, पीढ़ी, खानदान, कुल।

पुस्तकालय ( सं. ) पुस्तकालय, लायब्रेरी, जहाँ बहुत सी पुस्तकें संग्रह हों।

पुस्तक पुस्त ( कि. वि. ) वंश परंपरा, पीढ़ी दर पीढ़ी। [ वीणा।

पुस्तपना ( सं. ) आश्रय, सहारा,

पुस्ती ( सं. ) कागजकाटुकड़ा, दीवारपर किया हुआ चूनेका लेपन ( दृढ़ताके लिये )

पुस्ती ( सं. ) घाट, पानीके ठहराने के लिये बांधा हुआ चूने आदिका बन्ध।

पुणी ( सं. ) देखो पुधी

पुणे ( सं. ) घासका पूला, घासका बण्डल, घासकी पिंडी।

पुणे मुकवे ( कि. ) खराब करना, दूर करना, सुलगाना, भड़काना।

पुणे उकवे ( कि. ) सुलगाना, खराब होना, नाशहोना, निरर्थक होना, जलजाना, बुरी उत्पत्ति होना।

पुणे मुकवे ( कि. ) नाशकरना, भड़काना सुलगाना, नाम बिगाड़ना।

पुष्कर ( कि. ) मूतना, पेशाबकरना।

पुष्कर ( सं. ) दोनो ओंठ बंद करके बीचमेंसे, तिरस्कार प्रदर्शनाई हवा निकालना, ( तुच्छता प्रदर्शितार्थ )

पूडी ( सं. ) बेसी पूडी  
 पूडी ७५५ ( कि. ) लम्बे लम्बे  
 चिताय मिलना, लम्बी लम्बी  
 उपाधि लगाना, ( विलम्बित  
 बोला जाता है )  
 पूडीभा पेसपु ( कि. ) किसी  
 श्रीमान या बड़े आदमी के  
 आश्रय रहना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) छे = बिना  
 पुष्पका पशु, एक दुमकी कसर ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) दस्त  
 लगाना, भयसे घबरा जाना, डरना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) पीछे लगना  
 पीछे पीछे फिरना, आश्रय लेना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) हृदय फटना,  
 डरना, घबराना, भयसे मुँह पीला  
 होना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) मिटेलगना  
 गुस्से होना, अप्रसन्न होना, गुस्से  
 में व्याकुल होना, घबराना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) विचार के  
 अनुसार होना ।  
 पूडी ( कि. ) छूटना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) पीपु  
 ( कि. ) पानी की पीपि तो बिना  
 बसाह के नहीं पीना, अपनी बुद्धि  
 काममें नलाकर दूसरों से बिना  
 पूछे कोई कार्य न करना ।

पूडी ( सं. ) सून्, सिन्धु, बोट,  
 पुनस्तप, अनुस्तर, बैन साधु ।  
 पूडी ( सं. ) पुजारी, देवलक,  
 अर्चक, मंदिरों की पूजा करने  
 वाला । [ धन, सेवा, टहल ।  
 पूडी ( सं. ) पूजा, अर्चन आरा-  
 पूडी ( कि. ) देसी पुडी  
 पूडी ७५५ ( कि. ) गुणहीन, अयोग्य  
 रहित, निकम्मा । [ करना ।  
 पूडी बेपी ( सं. ) पूजन स्वीकार  
 पूडी वाणवी ( कि. ) बहुत दिनों  
 से चालू पूजन समाप्त करना ।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) पूजा करना, पूजा  
 पीटना कुटार्ह करना, छानना देपने  
 भासना पूडी अर्थात् अष्ट देवकी  
 अष्ट, पूजा, बड़ाहो किंतु नालायक हो  
 तब यह वाक्य प्रयोग किया जाता है।  
 पूडी ७५५ ( कि. ) पूजने योग्य, पूज्य  
 माननीय, पूजार्ह, पूजनीय ।  
 पूडी ( सं. ) पुजारिन, पूजक  
 पूजा करने वाली, देवलक (जैरत)  
 पूडी ( सं. ) पुजारी, पूजा करने  
 वाला, देवलक, पूजक, अर्चक ।  
 पूडी ( सं. ) मूल्य धन, स्टॉक, केपी-  
 टक ।  
 पूडी ७५५ ( सं. ) धनी, प्रभवान, ।  
 पूडी ( कि. ) आर्चित, पूजा किया  
 हुआ ।

पूने (सं.) कचरा, बूझ, नई, मैल।  
 पूनेध्या (सं.) देव पूजा के लिये  
 सामग्री बल, गंध पुष्प चोंबल  
 इत्यादि। पूजा, पूजन।  
 पूं (सं.) पीठ, पृष्ठ, पिछला भाग,  
 परोक्ष, अनुपस्थिति।  
 पूं ईरीने भेतपुं (कि.) विरुद्ध  
 होकर बैठना, मुंह छुपाकर बैठना।  
 पूं पाछण ओलवु (कि.) पीठ  
 पीछ कहना, परोक्ष में कहना।  
 पूं अताववी (कि.) पीठ दिखाना  
 हार जाना, लड़ाई में से भाग जाना।  
 पूं ठेठाळ (सं.) उलटा ठिकाणा,  
 स्वप्न पक्ष, ससुराल।  
 पूं पाछण (कि. अव.) बाद में,  
 पीठ पीछे।  
 पूं पुश्वी (कि.) मदद देना, सहा-  
 यता देना।  
 पूं वाणतुं छोडरं (सं.) छोटेसे  
 छोटा, उत्तरावस्था में उत्पन्न  
 (बालक)।  
 पूं वाणीने न भेपुं (कि.) बहम  
 न होना, विश्वास होना, यकीन  
 होना।  
 पूंथ (सं.) देखो पुंथिं  
 पूंथिं शिथं (कि.) साहस हूट  
 जाना, हिम्मत हूट जाना।

पूंथिं व थुटी अर्थ (कि.) कचरा,  
 कचराजाना, भयभीत होना।  
 पूं (सं.) शूत, कुल्हा, पुछा,  
 किताब के दोनों ओर लगाया हुआ  
 पुष्टि पत्र, पुछा (किताब का),  
 जिल्द, आवरण पृष्ठ।  
 पूं (कि. वि.) पृष्टे, पीछे, बादमें,  
 पिछाड़ी, पश्चात्, पीठपर।  
 पूंलागुं (कि.) पीछे लगना,  
 दुखदेनेका प्रयत्न करना।  
 पूं (सं.) शहदकी मक्खी के  
 छत्ते समान छिद्रयुक्त पदार्थ,  
 पूवा, मालपूवा, एक प्रकारका  
 पकवान, गुलगुल। [टेढा।  
 पूंथ्यां (सं. वि.) ओछा, अपूर्ण  
 पूं (सं.) पुत्र, बेटा, सुजन,  
 तनय, आत्मज।  
 पूंथ (सं.) पौर्णिमा, पूनो, शुक्ल  
 पक्ष की अंतिम तिथि, पूर्ण चन्द्र  
 तिथि। [गेहुं।  
 पूंथिया पड (सं.) एक प्रकार के  
 पूं (सं.) देखो पुंथ  
 पूं (वि.) पूरण, परिपूर्ण, भरा  
 हुआ बाढ़, मोटाई, कद, पूर्ण।  
 पूंथ (वि.) देखो पूंथ  
 पूंथपोथी (सं.) कचोरी, बेहई,  
 मसालेदार पूरी, पकवान विशेष।

पूत ( सं. ) पत्ता, पहरावनी ।

पू०५८ ( कि. वि. ) क्षपाटापूर्वक,  
अति शीघ्रता, बहुत बन्धी, उता-  
बल । [ फाड़िल ।

पू०५९ ( सं. ) गुणी, प्रवीण, दक्ष,

पू०६० ( सं. ) देखो पुरी

पू० ( वि. ) देखो पुर

पू०६१ ( कि. ) चाहिये उतना  
प्राप्त होना, काफी होना, पूरा पड़ना ।

पू०६२ ( कि. ) पूर पटकना,  
अधूरे का पूरा करना, ला देना ।  
पालन करना ।

पू०६३ ( कि. ) भार डालना,  
अंत करना, समाप्त करना, पूरा  
करना ।

पूर्व० ( उप. ) साथ, सहित, युक्त ।

पूर्व० ( सं. ) अग्रज, जेष्ठ भ्राता,  
बड़ा, अपनी उम्र में बड़ा, पुरुषा-  
बाप दादे । [ पहिले का जन्म ।

पूर्व०० ( सं. ) इस जन्म के

पूर्व००० ( सं. ) कार्तिक मास में  
पूर्वजों के उद्धारार्थ की गई क्रिया ।

पूर्व००० ( वि. ) पहिले का दिया  
हुवा, पूर्व जन्म का दिया हुआ,  
गत जन्म में दिया हुआ ।

पूर्व००० ( सं. ) प्राची दिशा, वह  
दिशा जिस में सूर्योदय होता है ।

पूर्व००० ( सं. ) पूर्व दिशा की  
ओर का द्वार, मुख, पूरब का  
दरवाजा । [ तक ।

पूर्व००० ( वि. ) पूर्व से पश्चिम

पूर्व००० ( सं. ) आज्ञा, हुक्म, विधि  
नियम, कायदा, प्रमाण, दस्तूर,  
कहावत, मसला, स्थिति ।

पूर्व००० ( सं. ) पहिला पखवाड़ा,  
मास का पूर्वाद्ध, शुक्लपक्ष, ( गुज-  
रात में ) कृष्णपक्ष ( भारत वर्ष के  
गुज और मध्य प्रदेश में ) चर्चा,  
गांभीर्य संशय के निराकरण के  
लिये किया हुआ प्रश्न, सिद्धान्त  
विरुद्ध कोटि, बचन, प्रतिज्ञा  
शिकायत ।

पूर्व००० ( सं. ) नाटक में मंगला-  
चरण, नांदी बंगर का पाठ ।

पूर्व००० ( सं. ) नायक नायिका का  
वह प्रीतियुक्त भाव जो मिलाप के  
पश्चात् हृदय में उत्पन्न होता है,  
दर्शन-श्रवण अन्य पारस्परिक  
अनुराग ।

पूर्व००० ( सं. ) संध्याकाल से मध्य  
रात्रि तक के बीच का समय, पहली  
रात ।

पूर्व००० ( कि. वि. ) पहिले के  
समान, पूर्व दुस्य, पूर्वानुसार ।

पुर्ववध ( सं. ) मनुष्य के जीवन का पूर्व प्रथम भाग । पहिली उम्र ।

पुर्ववादी ( सं. )-मुद्दर, बादी ।

पूर्वा ( सं. ) ग्यारहवां नक्षत्र, प्राचीनक प्रथम, पूर्वज, पूर्व पुरुष पुरना, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ और पूर्वा भाद्रपद, प्रथम जात ।

पूर्वापर ( वि. ) अगला और दूसरा, अगला और पिछला ।

पूर्वाक्ष ( सं. ) पहिला आधा, दोखंडों में का एक पहिला खंड ।

पूर्वावबोधन ( वि. ) दूर दृष्टि, दीर्घ दृष्टि दूरन्देशी । २बी ।

पूर्वि ( सं. ) एक प्रकार की रागिनी

पूर्व ( कि. वि. ) प्रथम, पहिले, उपरोक्त, ऊर्ध्वकथित ।

पूर्वेथी ( कि. वि. ) पहिले से, प्राचीनकाल से, पहिले जमाने से ।

पूर्वोक्त ( कि. वि. ) प्रथम कथित, पहिले कहा हुआ उपरोक्त ।

पूर्वोत्तर ( वि. ) अगला पिछला, पूर्व से उत्तरतक ।

पुल ( सं. ) पुल, सेतु, बाँध, नदीनाला, गड्ढा, झील इत्यादि को पार करनेके लिये लकड़ी पत्थर इत्यादि का बनाहुवा पुल ।

पुलक ( वि. ) शोधक, पूछनी वाला, जाँचनेवाला, पूछताछ करनेवाला ।

पुलक ( सं. ) पूछपाछ प्रश्न सवाल

पुल ( सं. ) रीति, रवाज, रस्म, प्रथा, चाल । [ हाकिम ।

पुधीनाथ ( सं. ) राजा, वाक्साहू,

पुधी-थी ( सं. ) भूमि, धरती, जमीन, धरणी, धरित्री, जिस पर समस्त प्राणी पर्वत इत्यादि और अन्दर अनेक प्रकारके पदार्थ भरे हैं वह गोलाकार जड़ पदार्थ, जिस पर हम लोग रहते हैं, आकाश में सूर्य के आसपास फिरनेवाला एक ग्रह, पाँच तत्वों में से एक, विंगल शास्त्र में इस नामका एक मात्रिक छन्द जिस में १७ मात्राएं होती हैं ।

पे ( कि. वि. ) से, होते ।

पेभु ( सं. ) घोड़े की जीन का पावड़ा, रक्काब, पायदा ।

पेभुभा भम धाक्षवे ( कि. ) जूती में पग देना, जूतिवा पहिनना ।

पेभु ( वि. ) निर्बल, असक्त, कमजोर, दुर्बल, क्षकिहीन, बलहीन ।

पेभेपेभे ( कि. वि. ) गुमगुम, गुपगुप, चुपचाप, डुलडुल ।

पेडा ( सं. ) वह हुंदा जो अस्सी  
है कोकाने पर दुबारा लिखी जाने।

पेडा ( सं. ) भाषा में शककर  
हाल कर बनाई हुई गोल गोल  
चपटी मिठाई, पेदा, मिठाई विशेष  
मिष्टी का गोदा जो चाक पर  
रखा जाता है।

पेदाभर ( वि. ) कमाताहुवा,  
कमाऊ।

पेदाबु ( कि. ) एक बार प्राप्त हो  
जाने पर दुबारा फिर उसकी  
हृच्छा करना। [ व्यसन।

पेदा ( सं. ) टेव, आवत, लत,  
पेदा ( सं. ) शेकी, गर्व, दर्प,  
चमण्ड। [ जानलेना।

पेदाबु ( कि. ) देखना, देखकर  
पेदाभाषे ( वि. ) बहानाबोरा।  
कैल फितूर करनेवाला।

पेदाभर ( सं. ) ईश्वर प्रेरित  
ज्ञानवान पुरुष जो ईश्वराज्ञासे  
लोगोंको बोध देता है, अवतारी  
पुरुष, महात्मा।

पेदाभ ( सं. ) सम्वाद, खबर,  
सन्देश, समाचार।

पेदा ( सं. ) घुमाव, मोहर, कौल,  
बांटा, ऐठ, कांटा, स्फू, कुपीकुकि  
कमझूत, कजा, प्रपंच, उपाच,  
ऊल, कंदा, बाल, चाकली।

पेदा कीड़े बने। ( कि. ) कुकसान  
हो ऐसा काम होवा, शरीरकी  
तन्दुरस्ती नष्ट होने पर यह  
शक्य प्रयोग होता है, पायल  
होना, मस्तिष्क बिगड़ना,  
शक्ति कम होना, काममें शिथि-  
लता जाना।

पेदाभवा ( कि. ) ठगना, छल-  
करना, कपट करना, प्रपंच रचना,

पेदा लड़ाववा ( कि. ) पतंगकी  
दोरी दूसरी पतंगकी दोरीमें  
उलझा देना, कपट व्यवहार  
करना। [ निर्बल।

पेदा ( वि. ) पतला, दुर्बल,  
पेदा ( वि. ) खटपटी, कुच्छा,  
लवार।

पेदादी ( सं. ) नाभिके नीचेकी  
सबनवोंकी बंधनरूप रफकी  
गाँठ, दूँही, नाभि।

पेदा ( सं. ) चाँवलेंका मांड,  
चाँवलेंका पानी, पृष्ट, पन्ना,  
सफा, वर्क।

पेदा ( सं. ) जूता, चदभान, पकरकी।

पेदा ( सं. ) उधर, नठर, शरीरका  
छाती और पेदू के बीचका भाग,  
यह भाग जिस में सादा चमड़ा  
पाचन होता है, कोम, अनासन,

होजरी, गर्मस्नान, (जीके) गर्म,  
स्नान, वन, श्वी, सन्तान, बालक,  
मदकालवृद्धी, आजीविका, पुत्र,  
निर्वाह, दस्त, टकी, पाखाना,  
मन, अंतःकरण, हृदय ।

पेट ४२१वे पेट निर्वाह के लिये  
परिश्रम करना पड़ता है ।

पेट ४२१वे पेट ७५५५५५ (कि.)  
अपने आप खुश कर लेना, अपने  
पैरों कुल्हाड़ी मारना, आ बैल  
मुझे मार करना ।

पेट ७५५५५५ ७५५५५५ (वि.)  
सज्जन, बहुत भला, अच्छे  
स्वभाववाला ।

पेट ७५५५५५ (कि.) पैदा होना,  
उदय होना । [पाखाना होना।

पेट ७५५५५५ (कि.) दस्त लगना,

पेट ७५५५५५५५५५ (कि.) निहाल  
होना, फायदा होना, संतोष होना,  
फल प्राप्ति होना ।

पेट ७५५५५५ (कि.) मनकी बात  
कहना, जी की कहना, गुप्त बात  
प्रकट करना ।

पेट ७५५५५५ ७५५५५५ (कि.) उदर  
वोधन न करना, पेटकी परवाह  
न करके खूशमन होना ।

पेट ७५५५५५ (कि.) कोष्ठमय होना,  
अजीर्ण विकार होना, अपाक होना।

पेट ७५५५५५ (कि.) गर्म स्थिति  
होना, दस्त बहुत लगना, बार  
बार पाखाने जाना ।

पेट ७५५५५५ (सं.) संतुष्टि  
या अतिसार हो जाना, बहुत  
दस्त लगना ।

पेट ७५५५५५ (कि.) सिद्ध  
कटना, विचार बदलना मन अलग  
होना, अप्रति होना, मन फटना ।

पेट ७५५५५५-७५५५५५ (कि.) सुखी  
होना, कुश होना, संतोष पाना ।

पेट ७५५५५५ ७५५५५५ (कि.) सहन  
करना, शांत हो रहना, जी मार-  
कर रहना ।

पेट ७५५५५५-७५५५५५ (कि.) क्षयिक  
खालेने से व्याकुलता होना ।

पेट ७५५५५५ (कि.) पैदा होना,  
जन्मना ।

पेट ७५५५५५ (कि.) गर्म में आना,  
पेट में आना, पेट में पड़ना ।

पेट ७५५५५५ ७५५५५५ (कि.) (किष्की  
वाट-मूर्क, संतान के लिये यह  
वाक्य प्रयोग किया जाता है, )  
पेट में से पत्थर निकलना ।

पेट ७५५५५५ ७५५५५५ (कि.) किष्की  
के उदर बोधन के लिये में अज्ञा  
होना, पेट पर हात रखना ।

- पेट ५२ ५३-५४ भुं ( कि. ) किसी की आजीविका को हानि पहुंचाना, निर्वाह करने के मार्ग में अटकाव डालना ।
- पेट ५५ भुं ( कि. ) जन्म ग्रहण करना, हंसते हंसते पेट दुखना ।
- पेट ५६ भुं ५७ न देवुं ( कि. ) बमने न देना, हरान करना, कष्ट देना, संतापित करना ।
- पेट ५८ भुं ७५ भुं ( कि. ) अत्यंत भूख लगना, पूर्ववत् । पेटमें कौवे बोलना, भूखके मारे पेट पीठ की रीठके ज लगना ।
- पेट ५९ भुं ७५ भुं ( कि. ) पूर्ववत्
- पेट ६० भुं ( कि. ) जलन्धर रोग होना, गर्म रहना, पेट रहना ।
- पेट ६१ भुं ( कि. ) गुप्त बात को प्रकट करना, मनकी बात कहना ।
- पेट ६२ भुं ( कि. ) ढाह होना, ईर्ष्या होना, जलन होना, दूसरे को देख कर स्पर्द्धा करना ।
- पेट ६३ भुं ( वि. ) निराश, कोबसे, व्याकुल, कोंघातुर, आसाहीन ।
- पेट ६४ भुं ( कि. ) पेट भरकर नहीं खाना, पूरा न खाना, थोड़ा पेट रहना, भूखा रहना ।
- पेट ६५ भुं ( कि. ) जैसे तैसे कर के उदर पोषण करना, निर्वाह करना, गुजर लायक कमाना ।
- पेट ६६ भुं भुं ( कि. ) खूब खाना ठस कर खाना ।
- पेट ६७ भुं भुं ( कि. ) मनकी गुप्त बात मनही में रखना, उदार होना, बड़े पेट का होना ।
- पेट ६८ भुं भुं भुं ( कि. ) भूख के मारे पेट पीठ की रीठ से जा लगना ।
- पेट ६९ भुं ७५ भुं ( वि. ) स्खर्बी, मतलबी, खुद का फायदा देखने वाला ।
- पेट ७० भुं भुं भुं ( वि. ) कपण है, कपण है, ओछे पेट का है, गुप्त बात दिल में नहीं रहती ।
- पेटनी भात ( सं. ) अंतःकरण की चित्ता, गुप्त चित्ता, मानसिक चित्ता, पेटनी पत्राभा ७५ ( कि. ) भूख के मारे पेट लग जाना, पेट पाताल जाना ।
- पेटनी पूजा ७५ ( कि. ) भोजन करना, खाना, भक्षण करना, पेट मरना ।
- पेटनी भात पेटनी रबी ७५ ( कि. ) सोची हुई बात पूरी न पड़ना, अभीष्ट कार्य सफल न होना, मनकी मनमें रह जाना ।



पेटने भाङ्गुं आधुं ( कि. ) शरीर  
के निर्वाहार्थ कुछ भी खा लेना,  
पेट की ज्वाला को येन केन प्रका-  
शण शांत करना ।

पेटने। पडो। ( सं. ) गुप्त बात,  
गुप्त विचार, छुपा रहस्य, गुप्त भेद ।  
पेटना। भेद ( सं. ) भेद, मर्म, मनका  
पार, दिलके कलुषित विचार ।

पेटभां आभ लाभवी ( कि. ) छुपा  
लगाना, भूख लगाना, ईर्ष्या होना,  
द्वेष होना ।

पेटभां आभणे। ( सं. ) दिल में आंट,  
बैर, द्वेष, ईर्ष्या, टेक, किसी को  
नुकसान पहुंचाने के लिये पेट में  
आंट ।

पेटभां कश्मीआ भोलवा ( कि. )  
भूख लगाना, पेट में बिल्ली लड़ना ।

पेटभां हुवा ( सं. ) भूख के कारण  
पेट का संकोचन ।

पेटभां डोण जोखे छे भूख  
के मारे पेट की आंते बोलती हैं,  
पेट में कौवे लड़ते हैं ।

पेटभां तेल शैठुं ( कि. ) आतंक  
पड़ना, क्रोध में व्याकुल होना,  
भय से चौंकना, देख के कुठना,  
द्वेष करना । [ शत्रुता है दुस्मनी है ।

पेटभां छत छे बैर है, द्वेष है,

पेटभां दुभुं ( कि. ) किसी काम  
को करने के लिये आनकानी  
करना । [ भूख लगाना ।

पेटभां धाड पाउपी ( कि. ) खूब

पेटभां पभ-गुंठियां ( सं. ) हाथ  
सुमरनी बगल कतरनी, देखने  
के नम्र किंतु अव्यल नम्वर के  
हरामी, भेद में भेड़िया ।

पेटभां पाणी हाती ( सं. ) कपट,  
बैर बुद्धि, दिली बाह, हार्दिक द्वेष ।

पेटभां पेसपुं ( कि. ) पेट में घुसना,  
विचारों में ऐक्यता करना, किसी  
के मन का पता लगाना, किसी  
मिसी के विचारों को जान लेना ।

पेटभां पेसी नीठणपुं ( कि. ) मन  
की बातें जानना, मर्म जान लेना,  
पार पाना ।

पेटभां पार पाभवा ( कि. ) खूब  
कड़के की भूख लगाना खूब भूख  
होना । [ पूर्ववत् ।

पेटभां जिलाआ आ बोठवा ( कि. )

पेटभां राणपुं-सभावपुं ( कि. )  
गुस्तरखना, अप्रकट रखना,  
सहनकरना, छुपारखना, मक्के  
उतारना, सामने उत्तर न देना,  
जो कहे सो सुनते जाना ।

पेटाई उतारु ( कि. ) सहन करवा, गले उतारना, समझा कर दिखमें जमाया ।

पेटाई की ओरी कडावु ( कि. ) सबकुछ कह देना, नकहने योग्य भी कह देना, बिना विचारे मनकी बात कह देना ।

पेटाई काँच काटना भाड़ा पडावा ( कि. ) खूबही भूख लगना, तबाकेकी भूख लगना,

पेटाई की भी नीकपु नथी पेटमेंसे कोई भी सीखकर नहीं आया है ।

पेटे पडा आधवा ( कि. ) भूख रहना, मक्कीचूस, कंजूस, कृपणता, खानानपाना ।

पेटे पेटु आधु ( कि. ) खूब पेट भरके खाना जो गठरीसी दिखाई पड़े ।

पेटु छोडई ( सं. ) आत्मज, बेटा, पुत्र, तनय, खुदका बालक, अपनापुत्र ।

पेट भरने ( कि. वि. ) घापकर, खूब खाकर, तृप्तहोकर, पूर्ण होकर ।

पेट ५२ ( कि. कि. ) भितना चाहिये जितना दिखे, बहुत, पुष्कल ।

पेट ५३ खाने चुकी होना, तुष्ट होना । [ बैठक, पाखानेखाना ।

पेट भेसखु ( कि. वि. ) पेटके बल

पेट ५४ ( वि. ) स्वाधी, पेटु पेटाधी, अपने पेटकोही भरनेवाला ।

पेट ५५ ( कि. ) सुलगना, जलना, प्रज्ज्वलितकरना ।

पेट ५६ ( कि. ) पूर्ववत्, सुलगना, जलना, प्रज्ज्वलित होना ।

पेटाभातु ( सं. ) एक नामके खाते की विगतमें दूसरे नामका अलग डाला हुवा खाता ।

पेटाभागीये ( सं. ) बड़े हिस्से दारका हिस्सेदार ।

पेटा २३५ ( सं. ) जो छोटी छोटी रकमों के योगसे बनी हो वह रकम ।

पेटारी ( सं. ) पिटारा, टिपारा, बड़ा बक्स, मंजूषा ।

पेटियु ( सं. ) दैनिक वेतन, निल का पेटके खानेका खर्च, अन्नशेत्र, सदावर्त, सीधा, आटासमान ।

पेटु ( सं. ) एकाधी बड़ी रकम की विगत में आनेवाली छोटी रकमें, ( हिसाबमें ) बड़ी वस्तुमें आनेवाली छोटी छोटी वस्तुएँ,

मान्यके बीचका भाग, बटव,  
एकक । [ स्थान में, जगहमें  
पेट ( कि. वि. ) एकक में, बटवमें  
पेट ( कि. ) पुसा, प्रविष्टहुवा,  
हाथिल ।

पेट-पेट ( कि. वि. ) इस प्रकार,  
से, तरह, रीतिसे, ऐसे, जैसे ।

पेटा ( सं. ) एक प्रकारकी मिठाई  
जो मावे और शकर के मेलसे  
गोल और चपटी तय्यार की  
जाती है, पेदे ।

पेटा भणवे ( कि. ) रुकसत होना,  
छुड़ी पाना, फुरसत होना ।

पेदी ( सं. ) शरीर की दुकान,  
पीढी, कुदुम्ब, गोत्र, वंश ।

पेदी दर पेदी ( कि. वि. ) वंश  
परम्परा, प्रलेख पीढी, पीढी  
दर पीढी ।

पेदंओगत ( वि. ) वंश परंपरा ।

पेदी-नाशुं ( सं. ) वंशावली,  
कुल वर्णन । [ वंश नाशक ।

पेदी पंथक ( सं. ) वंश निकंदन,

पेदुं ( सं. ) गुहोन्निद्रयके ऊपरका  
आर पेटके निचेका भाग ।

पेथी ( सं. ) कढ़ाई, लोहा ताँबा  
पीतल का बना हुआ पात्र  
जिसमें पूरे इत्यादि बनती हैं ।

पेथी ( सं. ) कढ़ाई, लोहा कढ़ाई.

पेथी ( सं. ) मिठाई बिस्किट,  
पेठा, पुसा, मुक्का, मुष्टि, सम्बूक

पेत ( सं. ) सातका संकेत ।

पेटान ( सं. ) डोंग, करेव, कपट,  
छल ।

पेट ( सं. ) कटवरसाथ, कुचलन ।

पेदरे ( कि. वि. ) कमरा: धीरे  
धीरे, शनैःशनैः, आहिस्ता, आहि-  
स्ता ।

पेदा ( कि. वि. ) उत्पन्न, जन्मा-  
हुवा, नया आया हुआ, शोधित,  
बनाया हुआ, तय्यार किया हुआ,  
प्राप्त किया हुआ । [ बनाना ।

पेदा करुं ( कि. ) उत्पन्न करना,

पेदा खुं ( कि. ) पैदाहोना,  
उत्पन्न होना ।

पेदास-वस ( सं. ) उत्पत्ति, जन्म,  
प्राप्ति, कमाई, उपज, फल ।

पेदास कर ( सं. ) आमदनी पर  
कर, इनकमटैक्स ।

पेधुं ( कि. ) आदत होना,  
अभ्यासी होना, आदीहोना,  
बानबालना ।

पे ( सं. ) कलम, इंग्रेजी लिख-  
नेकी कलम, पत्थरकी कलम ।

पेनशील ( सं. ) कागजपर लिख-  
नेकी बतिका पेन्सिल, पेन्सिल ।

पेशावे ( सं. ) नाप, माप ।

पेश ( सं. ) प्रकार, रीति, तर्ज, रंग, तजवीज, बुक्ति, स्थिति, हकीकत, सत्तर, हद, समरूप, आमकल, नासपाती, फलविशेष ।

पेशु ( सं. ) कर्माज, शर्ट, कुरता । [ वस्त्र ।

पेशुं ( सं. ) पौशाक, पहिरने के

पेशी ( सं. ) तजवीज, युक्ति, यत्न ।

पेशुं ( कि. ) देखो पेशिु बोना (बीज) प्रेरणा करना, भोजना, पठाना ।

पेश ( सं. ) दो गांठों के बीचका, छांटे के टुकड़े, गले के टुकड़े ।

पेशा ( सं. ) देखो पेशुं

पेशुं ( सं. ) पेरी, गनेरी, पंगोली, गले की गठानों के बीचका भाग, लिंग, उपस्थेन्द्रिय ( गंवारी का प्रयोग )

पेश ( सं. ) देखो पेश

पेश ( कि. वि. ) मुवाफिक, अनुसार, रीतिसे, ऐसा इस प्रकार ।

पेशी ( सं. ) पुजारी, पादरी, पुरोहित, पहलवी नामी भाषा ।

पेशी ( सर्व. ) वह ( जी ) वह

पेशीअभ-पेश-तश् ( कि. वि. ) वहां, सरली ओर, उस तरफ, उधर, वर उस ओर ।

पेशी ( कि. ) वह, उसका, ( जी )

पेशुं ( सर्व. ) वह, वो, वे ।

पेशे ( सर्व. ) वह आदमी, वह व्यक्ति, वह एक ।

पेशे ६६।६ ( कि. वि. ) उसदिन, चौथे दिन, दो दिन पूर्व दो दिन बाद ।

पेशे १६५से ( कि. वि. ) पूर्ववत्

पेश ( वि. ) आगे, सामने, वजन-दार मुख्य पूर पड़ाहुवा, उपस्थित, बल, प्रतापी पेशा, धन्धा उद्योग, रोजगार ।

पेशा-शी ( सं. ) संकट समय में सहायता के लिये आधीन राजा अथवा प्रजा की ओर से दिया हुवा द्रव्य, कर, वंद चौपाई हिस्सा भाग, लगान ।

पेशार-गार ( सं. ) कारबारी, काम धन्धा करने वाला, नाई हजूरिया ।

पेश ७७ ( कि. ) सफल होना, कृतकार्य होना, कामयाब होना ।

पेशवा ( सं. ) मुख्य प्रधान, मराठों का सरदार, सितारे के राजा जो ब्राह्मण प्रधान पूने में प्रबल प्रतापी सत्ताधारी हुए हैं ।

पेशवा ( वि. ) पेशवाओं का शासन, वैभव, ठाठपाठ, प्रभाव ।

पेक्षान्व ( सं. ) पेक्षान्वीकी  
पौषाक, रंजनों के नृत्य समय  
पहिरनेकी पौषाक ।

पेक्षी ( सं. ) फलका प्राकृतिक  
भाग, कली, फलका भाग, उर्दकी-  
गल, गर्मको दबा रहने वाला  
जमदेका टुकड़ा ।

पेशी ( सं. ) धंदा, पेशा, रोजगार,  
उद्योग, काम, व्यवसाय, व्यापार ।

पेशपुं ( कि. ) प्रवेश करना, अंदर  
जाना, शक्ति होना, घुसना,  
बसना, बिना कहे अबरदस्ती  
भीतर घुस जाना ।

पेश निष्ठा ( सं. ) आवागमन,  
घुसना निकलना, बारम्बार आना  
जाना ।

पेक्षर ( वि. ) पहिले, पूर्व, आगे  
का, आनेवाला, प्रथम, पेक्षर ।

पेक्षान्वुं ( कि. ) ठोसना, घुसाना,  
छेदना, जमाना, घुसेड़ना, बिठाना ।

पेक्षेश्व ( सं. ) एक प्रकार का वस्त्र  
विशेष जोकि अंगरक्षे या कमीज  
के समान बना होता है । पौषाक  
विशेष ।

पेक्षेपेक्ष-वेक्ष ( सं. ) पौषाक,  
पहिरावा, पहनावा, रीति, चाक,  
प्रथा, रस्म ।

पेक्षान्वस्त्री ( सं. ) पहिरानकी, जिसका  
इके समय की एक प्रथा, वस्त्र  
और वस्त्र इत्यादि की भेट ।

पेक्षेश्व ( सं. ) पहिराव, पहिनावा  
पौषाक, वस्त्र धारण का रंग ।

पेक्षेश्वपुं ( कि. ) पहिराना, पौषाक  
करना, पौषाक भेट करना, छेदना  
देना, के लेना ।

पेक्षेश्वी ( सं. ) देखो पेक्षेश्वी

पेक्षेश्वी ( सं. ) चौकीदार, पहिले  
वाला, संतरी, रसक, रसवाला ।

पेक्षेश्व ( सं. ) देखो पेक्षेश्व

पेक्षी ( सं. ) गले की पेशी के नाँव  
द्वार दोनों भाग काटने पर फिर  
जिने हुए भाग या टुकड़े ।

पेक्षेक्ष ( सं. ) पहिल, प्रथम, आरंभ  
आदि, शुरु, प्रारंभ ।

पेक्षेक्ष ३२वीं-३३वीं ( कि. )  
प्रथम करना, उदाहरण देना ।

पेक्षेक्षान्व ( सं. ) थोड़ा, मात्र,  
वीर, बहादुर, कसरती, व्यावाय  
करने वाला ।

पेक्षेक्षान्वी ( वि. ) पहिलवान का  
कार्य, वीरता, बहादुरी, शूरता,  
कुरती, कसरत ।

पेक्षेक्षेक्षेक्ष ( कि. वि. ) पहिले  
पहिले का, सब से पूर्व का, आदि  
का, सदा का ।

पैसा ( कि. वि. ) पहिले, पूर्व, प्रथम, आगे, वेस्ट, पिछला ।

पैसा ( वि. ) पाइसा, प्रथम, मुख्य ।

पैसा पैसा ( सं. ) रोपहरी के पूर्व, मध्यम काल के पूर्व का समय । पहिला प्रहर, पहिली जाठ पदी ।

पैसा-वे-पैसा ( सं. ) अंककोष, वृषण, फोते, निद्रव के नीचे के अंक । [ तीन ।

पैसा ( सं. ) पाई, १०० आना, ऐसे बी

पैसा ( सं. ) प्रतीक्षा, बचन, सदा ।

पैसा ( कि. ) देखो पैसा ।

पैसा ( सं. ) पहिया, चक्र, चक्र, काम का रास्ता, कार्य का नियम ।

पैसा साँप, चाक ( कुम्हार + )

पैसा १२५ ( कि. ) काम चलना पार पचना ।

पैसा ( सं. ) फल का गोल पतला टुकड़ा, बच्चों के खेल में लोह या मिट्टी का गोळ ।

पैसा ( सं. ) पिशाच, प्रेत, विधवा, उपदेवता, अनाचारी ( वि. ) पिशाच का, पिशाच सम्बन्धी ।

पैसा ( सं. ) तुलसी के निन्दक, भावों का १४ वाँ पाप स्थान । पराजिता ।

पैसा ( सं. ) ताम्बे का सिक्का, बेजुका धन, रोकड़, सम्पत्ति ।

पैसाभाई ( सं. ) वह जो पैसे के किन्तु काम ठीक नहीं करे, विवादास्पद ।

पैसाहा-बाग ( वि. ) बना, धनवान, धनिक, द्रव्यपान्न, दौलत मन्द, धन सम्पन्न, भीमंत, मातबर ।

पैसा ( सं. ) ताँबा का सिक्का, विशेष, तीन पाई की कीमत का ताम्बे का सिक्का, पाव आना, रुपया, धन, दौलत, द्रव्य, सम्पदा ।

पैसाभावा ( कि. ) अपने स्वार्थ के लिये कोई का पैसा बिना अधिकार के ले लेना । अनधिकार ले लेना ।

पैसाभावा बेवा ( कि. ) रुपये लेकर कन्या का विवाह करना ।

पैसा भेदा गया ( कि. ) पैसे खूबना ।

पैसा अंश १२५ ( कि. ) पैसों को पत्थर की तरह बेकफी से खर्च करना, फजूल खर्ची करना ।

पैसा १५५१ १२५ ( कि. ) पूर्व-वत्, पैसा बर्बाद करना, हस्तमुक्त होकर खरब करना, पानी की तरह पैसा देना ।

पैसाये (पंक्ति) हस्ती (वि.)

धन संग्रह कर रक्षणा, उचित  
कार्य न करना, कंजूसी करना,  
कृपणता करना ।

पैसायुं पुत्रयुं (वि.) केवल पैसा  
संग्रह कर के जाने वाला, भजक-  
लदार का पाठ करनेवाला, धन का  
उपासक पैसा को ही ईश्वर समझने  
वाला धनवान, धनिक, धनाढ्य ।

पैसेलडे (सं.) रुपया पैसा, धन  
दौलत, पैसा टका ।

पै (सं.) चौपड़ के पासे का एका  
जलसत्र, पासे का इका ।

पै-भ (सं.) ज्वार, बाजरा,  
गेहूं आदि अन्न के सिके हुए  
गोले ताजा दाने । ताजा ज्वार,  
बाजरी के सिरों (मुँहों) को भून  
कर उनमें से निकाला हुआ अन्न ।

पै-भुं-भुं (वि.) घर बधू के  
ऊपर से घर के बाहिर एक प्रकार  
की रीति रवाज करना । घर के  
लिने सासू की ओर से किया हुआ  
न्यांछावर ।

पै-भुं (सं.) हरा मुस, अन्त  
का ताजा गीला सिप ।

पै-भुं (सं.) लकड़ी के बन्धे  
हुए छोटे छोटे खड़ी, मूसल, रई

लोहे का ताम्र वा ताम्र का लोह  
सम्बन्ध हस्तादि को घर बधू के  
संस्कार के लिये होते हैं ।

पै-भ (सं.) देखो पै-भे ।

पै-भ (सं.) देखो पै-भे ।

पै-भे-भे (वि.) देखो पै-भे-भे ।

पै-भुं (वि.) कुरेदना, कुचलना ।  
कुतरना, मसलना ।

पै-भ (सं.) कुचली हुई वस्तु ।

पै-भे (सं.) आगमन, पैसा,  
प्रवेश, पैठ, रसीद, प्राप्ति सूचक  
पत्र, पट्टा ।

पै-भे-भुं (वि.) पहुँचना, प्राप्त  
होना, चलाजाना, पूगना, पाक  
आना ।

पै-भे-भुं (वि.) पहुँचाना,  
मेजना, पूगाना, रवाना करना ।

पै-भे (सं.) कण, कण,  
आभूषण विशेष कलाई पर पहिने  
का जेवर ।

पै-भे-भे (वि.) पहुँचा हुआ,  
चालाक, मक्कार, छली, जाननवाला ।

पै-भे-भे (सं.) पहुँचा, सप-  
बंध, कलाई, हाथ का एक हिस्सा ।

पै-भ (सं.) एक प्रकार की वस्-  
त्यति, इसको पकौड़ी, में बाँधते  
हैं, (पैसे) मेहों की मेहनत ।

पे० ( सं. ) याही हांकने का शब्द जिससे कि मार्ग भोग हट जायें । ( विस्म० ) हटो, दूर हटो, सावधान ।

पे० ( सं. ) कमल का रस ।

पे० ( सं. ) जोर का रुदन, उच्च स्वर से विलाप, हाय तोबा ।

पे० ( कि. ) रुदन करना, विलाप करना, हाय हाय करना कदना क्रन्दन करना ।

पे० ( वि. ) जोशला, खाली, शून्य, निरर्थक, झूठा, असत्य ।

पे० ( कि. ) रोना, रुदन करना, विलाप करना, हाय हाय करना ।

पे० ( सं. ) आकाश, अस्मान, वन, खाली, शून्य, ख, पोल ।

पे० ( सं. ) हांक, गुहार, डांक, दुःख निवेदन, लम्बी आवाज, चीख ।

पे० ( कि. ) खूब जोर से शब्द करना, पुकारना, गला फाड़ कर चिल्लाना ।

पे० ( सं. ) हाय तोबाह कदना कदन, रुदन, विलाप, हाय हाय ( कि. वि. ) खूबरोने वाला ।

पे० ( सं. ) पीले रंग का रंग, पुष्कराब्ज, रत्न विशेष ।

पे० ( कि. ) उत्तेजना पूर्वक तृप्त करना, तसल्ली देना, छेताव बंधाना, पोषण करना ।

पे० ( सं. ) देखो पे०

पे० ( सं. ) गाँठ, गठरिया, पोटली । [ आकाश, पोलापन ।

पे० ( सं. ) खाली, पोल, शून्यता ।

पे० ( सं. ) सत्वहीनता, सारहीनता, बीजरीहित ।

पे० ( वि. ) पचकनेवाला, गूदा रहित, सारहीन, बदम, निर्जीव ।

पे० ( सं. ) पोचा, मुलावम, नर्म दाबने से जोसिकुड़े । नरम, कच्चे दिल्फा, अभीर, नम्र, गरीब, कमजोर, निर्बल अशक्त, करपोक ।

पे० ( सं. ) बठरी, पोटली, पुटरिया ।

पे० ( कि. ) जंगलजाना पाखानेजाना, टट्टीजाना ।

पे० ( सं. ) जो थोड़े के सामान के साथ रह सके, चपटी चमड़ेकी मशक, धी मरनेका पात्र विशेष ।

पे० ( सं. ) पुटलिया, गठरी, छोटी पोट, बंडक ।

पे० ( सं. ) पोट, थोट, गहुड़, बड़ी पुटलिया, बड़ा बंडक ।



पोत ( सं. ) पूर्ववत्  
पोतीस ( सं. ) पुलीस, नेहू अ-  
बवा अलसी के आटेको पकाकर  
जो गुमके पर पकानेके लिये बा-  
धा जाता है ।

पोत ( सं. ) माल मरा हुआ बन  
जारेके बैलोंका टोका, बैलपर माल  
भरनेका बोरा या बैला, टोली,  
समुदाय, छुण्ड, काफला, साथ,  
संग, संघ ।

पोती ( सं. ) महादेवका बैल,  
बृषभ, सांठ, लहूबैल ।

पोती ( सं. ) बड़ाबैल, सांठ, बृषभ ।  
काफला, संघ, बनजारा ।

पोतपुं-६पुं ( कि. ) सोना, शयन-  
करना, लेटना, पौडना, मरजाना ।

पोतुं ( सं. ) पपड़ी ( लीपनकी )

पोतुं ( वि. ) प्रौढ, पुष्ट, बलवान,  
साहसी, उत्साही । [ प्रतिज्ञा ।

पोतु ( सं. ) प्रण, वचन, नियम  
पोतियुं ( वि. ) पौन के तुल्य है  
के बराबर ।

पोतिये ( वि. ) एक सांमें पाव  
रुम, ९९।।।, नन्यामने और पौन  
९९३

पोतुं-६ ( वि. ) एक में से पावकम,  
सौवचतुर्थांश, ३, ॥

पोतुं-६ ( वि. ) तीन बचची,  
बारह जाने, ॥॥

पोतुं-६ ( सं. ) रेंववा, नामर्द,  
हिजड़ा, नपुंसक, बंठ, झीव ।

पोतुं-६ ( वि. ) अचूरा, अपूर्ण,  
छोटा, बांका, टेका ।

पोतुं-६ ( सं. ) पौनसौ, ७५  
पिचहत्तर, सत्तर और पांच ।

पोत ७५६ ७२७ ( कि. ) बात  
प्रकट करना, छुपा रहस्य प्रकट  
करना [ बिछोना ।

पोतडी ( सं. ) छोटी पोती, बन्नेका

पोतपोता ( कि. वि. ) अपना  
अपना निजनिजका, हमारा ही  
हमारा ।

पोतपोताभां ( कि. वि. ) अपनेमें  
उनमें, अपने बीचमें । [ निज ।

पोतानी मेले ( सर्व. ) कुद, स्वयम्,

पोता ( सर्व. ) अपना, कुदका,  
निजका ।

पोता ७२ २१७ ( कि. ) क-  
पना बना रखना, स्थापन कर  
रखना ।

पोतापोतुं ( वि. ) स्वार्थ, मतलब,  
कुद्दी, स्वकाम, स्वहित, स्वत्व ।

पोतियुं ( सं. ) जोति, कठिपका,  
पंचा, कमरेस नाँचे पैरोंपर हिन्दु-  
जोके पहिरनेका लज्जा निवारकवस्त्र

शैतिथ्यं शब्दाः ( कि ) चराना,  
व्याकुलहोना, चराना, मच-  
मीत होना ।

शैतिथ्यं धुटी शब्दाः ( कि ) हिम्यत  
जाती रहना, हांस उड़जाना, वे  
केन हो जाना ।

शैतिथ्यं शब्दी शब्दाः ( कि ) करना  
चराना, कसेवा कटना व्याकुल  
होना । [ होनी ।

शैतिथ्यं शैथिल्यं ( कि ) व्याकुलता  
शैथिल्यं ( सं ) शैथिल्य, शैथिल्य ।

शैथिल्यं ( सर्व ) निजका, अपना,  
बुद्धका ।

शैथिल्यं ( सं ) सरकारी खजाने में  
नाशके वस्तु करके भेजा हुआ  
होना, बिबदा पानीमें भिगोया  
हुवा पोतनेका बिबदा ।

शैथिल्यं शैथिल्यं ( कि ) रद्द करना धूल  
में मिलावना, ध्वंस करना, पानी  
फेंकना, धूलधानी करना, नष्ट  
करना ।

शैथिल्यं-शैथिल्यं ( कि ) पहुँचा, पूरा,  
प्राप्त । [ वह ।

शैथिल्यं ( सर्व ) आप, बुद्ध, स्वयम्,

शैथिल्यं ( सं ) बड़ा भव, मोटी पु-  
स्तक, बड़ी किताब, पोषा ;

शैथिल्यं ( सं ) मोहर, डेर, मोहर,  
स्थूल और पोषा, मोहरमोहर, शैथिल्य  
बहुते उठ न सके ऐसा, शैथिल्य ।

शैथिल्यं ( सं ) पलक, माँझोंके  
ऊपरकी आल, जेवरोंमें लगाई जाने  
वाली चुंघरीका अर्द्ध भाग, रोटी  
कटनेके बाद बचा हुआ अंश कंकर ।

शैथिल्यं ( सं ) धुक, तोता, कीर ।

शैथिल्यं शैथिल्यं शैथिल्यं ( कि ) पका के  
प्रयोग करना, तोतेकी तरह पकाना  
शैथिल्यं शैथिल्यं शैथिल्यं ( कि ) कड़े  
में रखना, आधीन करना, अपनी  
इच्छा के अनुसार रखना, वशमें  
करना ।

शैथिल्यं शैथिल्यं ( कि ) निबटना,  
पूर्ण होना, चुकना, संपूर्ण हो जाना

शैथिल्यं शैथिल्यं ( कि ) प्यार करके  
बढ़ाकरना ( आला, पोषा पुन्नी  
आदि )

शैथिल्यं ( सं ) चना नामक अन्नका  
वह चने सहित भाग जिसमें चना  
होता है । खोल होला ।

शैथिल्यं ( कि ) तोते के रंगका  
सूखा पंखी, हरा रंग ।

शैथिल्यं शब्दः ( सं ) विचार  
शक्ति रहित ज्ञान, शैथिल्य के लक्षण  
ज्ञान, ( तोता बोलता है किंतु वह

सुख सकका कई विलकुल नहीं  
ममलता, इस लिये ऐसे मनुष्यको  
वह उपमा दी जाती है )

पौष्पिकी पंडित ( सं. ) मूल  
पंडित, पंडित बनकर उगनेवाला,  
अरुण पंडित, ठग, धूर्त, छद्मी,  
बंचक ।

पौष्पि ( सं. ) मैना, सारिका,  
तीली, तितली, एक प्रकार का वृक्ष  
जिस में शक के समान फल  
आते हैं, एरण को होने वाला एक  
प्रकार का रोग ।

पौष्प ( सं. ) फल विशेष ।

पौष्प ( सं. ) फली देखो पौष्प

पौष्प ( सं. ) पपड़ी, ऊसर,  
बासका खेत ।

पौष्प ( सं. ) वह जमीन जिसपर  
केवलबास ही उग सके ।

पौष्प ( सं. ) किसी वस्तुके ऊपर  
का पतला बर, पपड़ी, लेव, बास  
उगे ऐसी जमीन ।

पौष्प ( सं. ) एक प्रकार का फल ।

पौष्प ( सं. ) बकचक, हाथहाथ,  
कोरी भाषा शिक ।

पौष्प ( सं. ) छडा, कोड़ा, साज ।

पौष्प ( सं. ) बनस्पति इत्यादि का  
बीना मूल, पिलपिका, नर्म ।

पौष्प ( वि. ) उरपोक, ऊसर ।

पौष्प ( सं. ) छोटे बसकों के  
काजल आंखों के बाहर इंधी में  
लिये हुए काजल के चिन्ह ।

पौष्प ( सं. ) अक्षिराज्य  
अक्षराजा, डीकपोर की हाथिनी  
के लिये वह वाक्य प्रयोग होता है ।

पौष्प ( सं. ) उरपोक ऊसर ।

पौष्प ( सं. ) एक प्रकार का वृक्ष  
एक प्रकार का फल, छाल, ईंटका  
टुकड़ा ।

पौष्प ( सं. ) रोड़ी, बपाती ।

पौष्प ( सं. ) एक और बारह ऐल  
तीन पाँसों का दाब, सफाई ।

पौष्प ( कि. ) नान जाना,  
निकल भागना, अदर्य होना, छठक  
जाना, पलायन कर जाना ।

पौष्प ( कि. ) फतह होना  
जीत होना, साथे पाँस मिरना ।

पौष्प-पौष्प ( सं. ) इन्धनी हिंदू  
ओं में एक जाति विशेष, उरपोक  
ऊसर । [ बुद्धिदिन ]

पौष्प ( वि. ) पोषा, जोड़ी,

पौष्प ( कि. ) प्रसन्न होना, खुश  
होना, प्रसुद्ध होना, सुसुप्ता ।

पौष्प ( सं. ) पानी में पैदा  
होने वाली एक प्रकार की घेस,  
कुमोदिनी ।

शेखर (सं.) एक प्रकार का कमल  
कुण्ड, कुमुद पुष्प, रात्रि को खसता  
है और सूर्योदय पर बन्द हो जाता  
है ऐसा जल में पैदा होने वाला  
पुष्प ।

शेखर (सं.) हृदय, सीमा ।

शेखर (सं.) देखो शेखर ।

शेखर (सं.) पुर, नगर, शहर, ग्राम,  
कस्बा, पुरवा, गांव, ( कि. वि. )  
नतवर्ष, आगामी वर्ष, (सं.) प्रहर  
तान बंदों का परिमाण, बुद्धावस्था,  
उत्तरावस्था, ( पाठ्य. शेखर )

शेखर ( कि. ) पिरोना, पोना,  
छेद में डोरी डालना, धागा पिरोना

शेखर (सं.) अत्यंत हर्ष की बात  
सुन कर प्रमुदित होना ।

शेखर (सं.) बालक, शिशु, बच्चा,

शेखर (सं.) लड़का, छोकरा छोरा  
लौका, धालक ।

शेखर (सं.) छोकरी, लड़की, लौकिया  
बालिका, कन्या ।

शेखर ( वि. ) गये बालका, गत  
वर्ष का ।

शेखर (सं.) पहिरे वाला, पाहक  
चौकीदार, रखवाला, रक्षक ।

शेखर ( सं ) एक प्रकार का जल  
तंतु, पाहिर, चौकी देने का समय,

कुए में से पानी निकालने का एक  
तरह का पात्र, समय ।

शेखर ( सं. ) देखो शेखर ।

शेखर ( सं. ) आकाश, आस्मान।  
नभ, शून्य, गण, अफवाह, नर्म  
बिछीना, सुदगुदा गद्दा, आँख के  
ऊपर रखने के लिये बनाये हुए  
रुई के फोड़े ।

शेखर (सं.) शून्यता, खालका।

शेखर ( सं. ) बदन, (छोटा) ।

शेखर (सं.) कीलमडीला, नरमा

शेखर ( वि. ) पोछा, असार अत्व-  
हीन, कच्चा, ढीला, स्खलित ।

शेखर ( सं. ) रीतापन, शून्यता,  
रिक्तता, पोसापन, डीसापन ।

शेखर (सं.) कौलाह पक्का लोहा,  
स्टील ।

शेखर (सं.) हठ, मजबूत, कौलाह  
का, स्टीलका, अच्छे लोहे का ।

शेखर ( वि. ) पोछा, शून्य, ढीला ।

शेखर ( सं. ) देखो शेखर

शेखर ( वि. ) देखो शेखर ।

शेखर ( वि. ) हल्ला, शून्य, रीता,  
खाली, बिचके भीतर, कुछ नहो,  
रिक्त ।

शेखर ( सं. ) कोमल गद्दी,  
सुभावय गद्दा, सुदगुदा, बिछीना ।

पेक्षे ( सं. ) वह मूर्ति जो  
सदा कोती और बोई जाती हो ।  
पेक्षेपुं-पेक्षेपुं ( कि. ) पिराना,  
वागा, बलवाना, कोरी पिराना ।  
पेक्षु ( कि. ) देखो पेक्षेपुं  
पेक्ष ( सं. ) देख, बाकी, एक  
महीना विशेष, चैत्र से दसवां  
महीना, पौ, पौष, शिशिरमास ।  
पूत ।  
पेक्षने। दोहा ( सं. ) अफीमका  
ढोवा, वह ढोवा जिसमें से खस-  
खस निकलता है ।  
पेक्षा ( सं. ) पोषण ।  
पेक्षाण-णी ( सं. ) बैनों की सेवा  
पूजा करने का स्थान ।  
पेक्षागीर ( सं. ) उग, बंबक,  
उन्नी, बदमाश, उठाई गीरा,  
पहलवान ।  
पेक्षिन्दु ( वि. ) आश्रय दाता,  
सहायक, मुरब्बी, खरीददार,  
मान करता ।  
पेक्षिंदे ( सं. ) रखक, मालिक ।  
पेक्षी ( सं. ) पौष महीने की, पूष  
महीने की पौषिमा ।  
पेक्षेक्षणा ( सं. ) आश्रय लेणों  
के रहने का स्थान, जहां रात को  
दीपक नहीं जलाते ।

पेक्षुं ( कि. ) पोषण करना, पोषण  
करना, रखा करना, रखना करना ।  
पेक्षुं ( सं. ) पाले जाना, रखित  
होना, बहुतकृष्ण स्थिति में होना,  
कदर होना ।  
पेक्षिन् ( वि. ) पोषण करने वाला,  
पात्रक, पोषक, रखक ।  
पेक्ष ( सं. ) पोस्त, अफीमका ढावा,  
खसखस, पूषकामहीना, केव, बोवा  
मुठ्ठीमर, होमी बिबानी की खुली  
में नौकरों को दी हुई इनाम ।  
पेक्षिन् ( वि. ) अफीमची, डीका,  
सिबिल, नर्म, मुलामम, पोचा ।  
पेक्ष ( सं. ) चुबह, सबेरा, भोर,  
मिनुसारा, तबका, भैस बैक  
इत्यादि को पानी पिनाते समय  
बोला जाने वाला शब्द । [बाली ।  
पेक्षे ( सं. ) पहिरा, चौको, रख-  
पेक्षे होते ( कि. वि. ) तबके,  
सबेरे, मिनुसारे, दिन निकलते ।  
पेक्षेक्षे ( सं. ) नई कोती हुई  
मूर्ति ।  
पेक्षे ( सं. ) तीन बंदे का परि-  
नाम, रातदिन का आठवां भाग,  
जानेवाला बर्ष, गया हुआ बर्ष ।  
पेक्षेक्षे ( सं. ) रखवाला, पड़े  
वाला, पाहक, चौकीदार, संतरी ।

पेलेदरे ( सं. ) एकवाली, चौकसी ।

पेलेणा-व ( सं. ) चौदाई, चौदापथ ।

पेलेणियुं ( सं. ) कलहार रचना,

पेलेणुं ( वि. ) चौदा, अंदाई से कम । [ रास्ता ।

पेण ( सं. ) गली, सड़क, आम

पेणार्थ ( सं. ) देखो पेलेणाई

पेणियुं ( सं. ) सरकारी रचना, कलहार ।

पेणिये ( सं. ) दरवान, द्वारपाल, अंतहार, द्वारदूत, पौर पर बैठने वाला । [ चपाती ।

पेण्ण ( सं. ) पतली रोटी, पतली

पेणुं ( सं. ) देखो पेलेणुं डौला,

पासपास नहीं बल्कि दूर दूर ।

पेण्ण-वा ( सं. ) एक प्रकार के

चावल, अने हुए चपटे चावल ।

पेण्णव ( वि. ) पुनर्विवाहिता स्त्री

का पुत्र, विधवा का अड़का ।

पेण ( वि. ) नगरनिवासी, शहर में

रहनेवाले, पुरजन ।

पेण ( सं. ) घर के पास का बगी-

चा, नगरबाग, गृह बाटिका ।

पेण ( सं. ) नागरिक, शहर

के बाशिन्दे, नगरवासी ।

पेण्णभास ( सं. ) पूनम के दिन

करवे का एक नाम, बाग विशेष ।

पेण्णभासी ( सं. ) पूनम, पौर्णिमा,

पूर्व, शुक्ल पक्ष की १५ वीं तिथि ।

पेण ( सं. ) पूस, मास विशेष ।

पेण ( सं. ) कांदा, गंठी, कुण्ठा-

वली, मूठ विशेष, एक प्रकार का

वस्त्र ( रेशमी )

पेण ( सं. ) मित्राजी, साधारण

बात में ओछापन दिखावे वह

मनुष्य ।

पेण्णभास ( सं. ) शतरंजके

खेल में आखिर में बादशाह का

प्यादे से हार खाना ।

पेण्ण ( सं. ) शतरंज के खेल में

प्यादा, पदाती, पैदल सैनिक,

पैदल बोझ ।

पेण ( सं. ) पूर्ववत्

पेण ( सं. ) प्रीति, प्रेम, स्नेह ।

पेण ( सं. ) प्रिया, प्रियारी,

प्रियतमा, मायूक दुलारी ।

पेण ( वि. ) प्यारा, प्रेमी । प्रिय

सनेही, प्रियतम, जोही ।

पेण ( सं. ) छोटा प्याला, कटोरी,

बाटकी, कनौली ।

पेण्ण ( सं. ) प्याला, कटोरा, फूल ।

पेण ( सं. ) प्रिया, प्रिय, प्रियतम, प्रिय

दृष्ट, कलसा, चाह ।

५५५ ( वि. ) विपाकित, वृष्णा-  
वन्त, वृष्णान्वित, विवासा,  
व्यासा ।

५५६ ( उ० ) आगे, बाहिर, दूर  
इत्यादि सूचक उपसर्ग जो शब्द  
के आगे लगता है । आरंभ,  
उत्कर्ष, प्राचम्य, आद्य क्पाति,  
उत्पत्ति, व्यवहार, विशेष, अति-  
शय, अधिक ।

५५७ ( सं. ) समूह, दल, डेर,  
सहाय, मदद, अगर बन्दन ।

५५८ ( सं. ) प्रस्ताव, अभिनय  
करने की रीति, रूपक भेद, प्रथ  
सभि, प्रथ विच्छेद, निरूपणीय  
एक विषय की समाप्ति, प्रसन्न,  
काण्ड, अध्याय, सर्ग, वाक, काम,  
वात, उपोद्घात ।

५५९ ( कि. वि. ) यथेष्टित,  
यथेष्ट, इच्छापूर्वक, इच्छापूर्ति,  
मनमाना, मनभरके, खूब, ( वि. )  
अत्यत, बहुत ।

५६० ( कि० ) प्रकाश करना,  
फैलाना, व्यक्त करना, बाहिर  
करना, प्रकट करना ।

५६१ ( सं. ) स्वभाव, बर्ण, चरित्र,  
बोली, उत्पत्ति, स्थान, उद्भवोद्गम,  
विन्द, ईक. स्वाधी, असाध्य,

बुद्धत, केतु, राशु, राज्य, दुर्ग,  
पुरवासी, किमा, समूह, कर्क,  
परमात्मा, पंचभूत, इकील अक्षर  
के छन्द विशेष, मासा, वातु ।

५६२ ( वि. ) स्वभाव आत,  
स्वभाव सिद्ध, स्वाभाविक ।

५६३ ( सं. ) गमन, विद्या ।

५६४ ( सं. ) प्रवक्षिषा, परिष्कार,  
आसपास परिभ्रमण ।

५६५ ( सं. ) परिषद्, सभा,  
समाज, समिति, मण्डली ।

५६६ ( वि. ) दीक्षा, तीर्थ, न,  
निश्चित, अधिक गर्म, सख्त,  
कठोर ।

५६७ ( वि. ) प्रसिद्ध, विख्यात  
यशस्वी, कीर्तिमान, मशहूर ।

५६८ ( कि. ) प्रकट होना, व्यक्त  
होना, प्रसिद्ध होना, प्रकाश होना ।

५६९ ( सं. ) परगना, प्राप्त ।

५७० ( कि. ) खेसना, फैलाना,  
प्रज्ज्वलित होना ।

५७१ ( वि. ) प्रफुल्लित, परिष्कृत,  
पूर्व निश्चयात्मक, निर्बिकार, शुद्ध  
प्रसन्न, उदार ( चित्त ) ।

५७२ ( सं. ) पाहुना, मेहमान,  
अतिथि ।

प्रत्यारु ( कि. ) फैलाना, प्रचार करना, चलाना, प्रसिद्ध करना ।

प्रत्ये ( सं. ) एकता ।

प्रत्ये ( वि. ) डंकनेवाला, कष्टप्रदा ।

प्रत्ये ( सं. ) गर्भ, इमल, पुष्पा, पूर्ण । [ अम्मा ।

प्रत्ये ( सं. ) माता, मा, जननी,

प्रत्ये ( कि. ) प्रज्वलित होना, जलना, प्रकाशित होना ।

प्रत्ये ( सं. ) सन्तान, संतति, वसवती मनुष्य अधिकारस्थित मनुष्य, रैवत । [ प्रजाका कर्तव्य ।

प्रत्ये ( सं. ) रैवतका फल,

प्रत्ये ( सं. ) ब्रह्मा, इक्षु, कश्यप,

महीपाक, राजा, कामात, दिवाकर,

वह्नि, स्वर्ग, इसप्रजापति पिता,

कीट विशेष, विष्णु, देवताओंका

वर्ण, संवत्सरका नाम विशेष,

कुम्हार, कुंभकार, मरीचि, पुच्छ,

पुलस्त्य, अंगिरस, ऋतु, प्रवेतस,

वशिष्ठ, मृग गौतम और नारद ये

एक प्रजापति ।

प्रत्ये ( वि. ) राज्य जिसमें सम्पूर्ण प्रभुता प्रजाके जुने हुए लोगोंकी मिलती है, लोकप्रता ।

प्रत्ये ( सं. ) प्रजापा-  
लित राज्य, सत्प्रजापतिमहारी,

लोकपालित राज्य, पंचायतद्वारा राज्य । [ वृद्धि ।

प्रत्ये ( सं. ) वंशवृद्धि, कुल-

प्रत्ये ( वि. ) प्रजाके लिये हितकारक, संतानके फायदेका ।

प्रत्ये ( कि. ) प्रज्वलित करना, जलाना, प्रदीप्त करना, दग्ध करना ।

प्रत्ये ( सं. ) बुद्धि, मति, धी, अज्ञ, समसंशयि, विचार ।

प्रत्ये ( वि. ) नमित, विनीत, नम्र ।

प्रत्ये ( कि. ) प्रणाम करना, नमन करना, झुकना, नमस्कार करना ।

प्रत्ये ( सं. ) ब्रह्मकी उत्पत्ति, स्थिति अथ इन तीनों शक्तियोंके ज्ञानका प्रदर्शक सकेत शब्द, ओम्कार, ॐ, परमात्माका सर्वोत्तम नाम ।

प्रत्ये ( सं. ) मणिमन्त्रायुक्त नमस्कार, प्रणति, प्रणिपात, अभिवादन, वह प्रणाम जो दोनों भुजा दोनों करण, वक्षःस्थल, शिर, रश्मि, मन और वाणी इन आठ अंगोंद्वारा किया जाय ।

प्रत्ये ( सं. ) अन्न निकलनेका मार्ग, नल, नली, परनाल, नाब, गटर ।



प्रतिपद ( सं. ) प्रणाम, नमस्कार, आप्रह, आज्ञाजी, ताबेदारी ।

प्रत ( सं. ) प्रति, कर्ग, निरुद्ध, नकल, कापी, जात, गुण, मुख्य, महत्त्व, लक्षण, चिन्ह, एक एक, सब, भाग अंश, लोक, अल्प, निश्चय, विरोध, समाधि, अभि-मुखता, स्वभाव ।

प्रतवार ( कि. वि. ) कर्मशः ।

प्रति ( सं. ) पन्द्रहवा उपसर्ग, पीछा, आगा, उलटा, अनुकूल और प्रतिकूल, प्रत्येक, विस्तृत होना, फैलना, व्याप्ति, निश्चय, भाग, पुनः, तरफ, ओर ।

प्रतिध्वज ( सं. ) प्रतिष्ठा, गूंज, प्रतिनाद, निनाद ।

प्रतिध्वज ( सं. ) प्रतिविम्ब, प्रतिकृति, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, छाया, मूर्ति ।

प्रतिधा ( सं. ) पूर्ण, बचन, नियम, शपथ, पण, अगीकार, साध्यानिर्देश ।

प्रतिदान ( सं. ) दान के बदले में दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य को लौटाना, वापिस देना ।

प्रतिनिधि ( सं. ) प्रतिमा, मुख्य के समान, मुख्य स्वरूप प्रधान के स्थानापन्न, प्रतिभू, वकील, हामी, जामिन, तस्वीर, चित्र, एवजी ।

प्रतिपक्ष-क्ष ( सं. ) चन्द्रमा की पहिली कला का किना काक, पक्ष की प्रथम तिथि, पड़वा, एकम ।

प्रतिपक्ष ( सं. ) बैरी, अरि, शत्रु, रिपु, विरुद्ध पक्ष, प्रतिवादी, दुश्मन, ( कि. वि. ) हर, पक्षवाधेय ।

प्रतिपक्षी ( वि. ) विरुद्ध पक्ष का ।

प्रतिपादक ( वि. ) प्रतिपादक, बोधक, ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक ।

प्रतिपिं ( सं. ) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, मूर्ति, अनुरूप ।

प्रतिभा ( सं. ) प्रत्युत्पन्नमतिर, दीप्ति, प्रगल्भता, बुद्धि ज्ञान ।

प्रतिभा ( सं. ) तात्कालिकबुद्धि, समग्र सूचकता, सूझ, अह ।

प्रतिभाव ( सं. ) समभाव, तुल्य भाव ।

प्रतिभास ( सं. ) प्रकाश, प्रति-विम्ब, मनपर उत्पन्न प्रभाव ।

प्रतिभू ( सं. ) विचारवान्, जामिनदार, मनोतिया ।

प्रतिभा ( सं. ) मूर्ति, चित्र, नकल, तस्वीर, प्रतिरूप, प्रतिकृति, पुत ।

प्रतिपन्न ( सं. ) उत्तर, जवाब, प्रत्युत्तर ।

प्रतिपक्षी ( सं. ) विपक्षी, प्रति-  
पक्षी, आसामी, मुहाबजेह ।

प्रतिविधान ( सं. ) इलाज, तज-  
वीज, एक कार्य के स्थान में  
दूसरा कार्य रचना । [ वारण ।

प्रतिषेध ( सं. ) निषेध, विचारण,

प्रतिस्पर्धा ( सं. ) ईर्ष्या, मस्तरता,  
गुप्त द्वेष, कीना, डाह, कुचन,

प्रतिकार ( सं. ) द्वार, ज्योड़ी डेवड़ी  
द्वारपाल दरवान, ज्योड़ीवान ।

प्रतीक ( सं. ) इस नाम का अल-  
ङ्कार जिसमें उल्टी उपमा दी  
जाती है । प्रतिकूल, विपरीत ।

प्रतीक्षा ( सं. ) प्रत्याशा, बाट जो-  
हना, किसी के आने के लिये  
टहरना ।

प्रतीक ( सं. ) चाबुक, हंटर ।

प्रतीक्ष ( सं. ) सालात, सम्मुख,  
सामने, प्रकाश, प्रकट, प्रसिद्धी ।

प्रतीक्ष प्रमाथु ( सं. ) स्वयंसिद्ध  
प्रमाण ।

प्रतीक्षा ( सं. ) सम्मुखधात,  
सामने का जोर ।

प्रति ( उप० ) प्रति, तर्फ, ओर, को ।

प्रतीक्षान ( सं. ) निराकरण,  
विरसन, खण्डन अस्वीकार, निन्दन

प्रतीक्षा ( सं. ) दोष, अनिष्ट,  
विष, व्याघात, पाप, दुरदृष्ट ।

प्रतीक्षा ( सं. ) जवा, बोरी, बट्ट-  
करी बोरी, रौंदा ।

प्रतीक्षा ( सं. ) अपने अपने  
विषयों से हानियों को हटाना ।

प्रतीक्षपुत्र ( सं. ) आवि पुत्र, ईश्वर  
में, हम सर्वनाम ( व्याकरण में ) ।

प्रतीक्षा ( सं. ) पहिली बिभाकि,  
छेदा बड़ी, प्रधानता ।

प्रतीक्षा ( सं. ) बलन, धारा, रीति,  
इत्यति, प्रकार, व्यवहार, रस्म,  
रवाज ।

प्रतीक्षा ( सं. ) परिक्रमा, वेवोहे-  
इत्ये, दाक्षिणा वर्त भ्रमण, चारों  
ओर भ्रमण ।

प्रतीक्षा ( सं. ) कियों को होने वाला  
एक योनि रोग विशेष ।

प्रतीक्षा ( सं. ) ईक्षण, दर्शन, दिखाना  
जुबाबत, अलग, कारीबानी का  
दिखाना ।

प्रतीक्षा ( सं. ) रजनी मुख सायदाक,  
सूर्याल के पचात, दो मुहूर्त काक,  
रात्री के पहिले चार दण्ड, प्रत्येक  
पक्ष में प्रति त्रयोदशी का संख्या  
काळीनाशिवजी का जत, दोष ।

प्रतीक्षा ( सं. ) सायदाक ।

प्रधान ( सं. ) भेद, भाव, मुख्य, अग्रिम मंत्री, सचिव, वकील, परमेश्वर, सेनापति, राजाका मुख्य कारभारी, उत्तम, वरिष्ठ ।

प्रधानमन्त्री-वृद्ध-मण्डल ( सं. ) भेदता मुख्यता, प्रधानत्व, मंत्रित्व ।

प्रधानपद ( सं. ) मंत्री का दरजा, वकील का ओहदा, मुख्य पद ।

प्रध्वंस ( सं. ) नाश, विनष्टि, क्षय, अपक्षय, बरबादी ।

प्रध्वंस ( सं. ) संसार, दुनिया, भ्रम, विपर्यास, प्रतारण. सचय, विस्तार माग, मिथ्या नाटक, कपट दगा ।

प्रध्वंसी ( वि. ) ठोंगी, ठग, कपटी, मायावी, सांसारि, लुब्धा, वृत्त ।

प्रपिता ( सं. ) दादा, बाप का बाप, दादा, पिता का पिता ।

प्रपितामह ( सं. ) बाप का बाप और उसका भी बाप, दादा का बाप, पड़ दादा ।

प्रपितामही ( सं. ) बाप के बाप की मा दादा की मा, पड़ दादी ।

प्रपौत्र ( सं. ) पौत्र का पुत्र, पनाती, पोते का बेटा, बेटे के बेटे का बेटा ।

प्रपौत्री ( सं. ) पौत्र की कन्या, पनातिन, पोते की लड़की, बेटे के बेटे की लड़की ।

प्रभेद ( सं. ) ज्ञान, जानबेसी, सावधानी, विद्वत्त्व, जागृति, होशियारी ।

प्रभेदी ( सं. ) देव विद्यावी, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

प्रभव ( सं. ) जन्म, उत्पत्ति, पैदा, जहासे जन्म होता है, स्वभाव, सत्ता ।

प्रभा ( सं. ) दीप्ति, आलोक, प्रकाश, कान्ति, तेज, सरकार गरज, स्पृहा, बर्षा प्रभुता ।

प्रभातिधुं ( सं. ) कोई सा प्रातः कालीन राग, मौरव, मौरवी, इत्यादि, प्रभाती, दातुन दतौन ।

प्रभु भाष्य ( सं. ) भोक्ता, सीधा, देव ।

प्रभा ( सं. ) ब्यार्थज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, अमरद्वितज्ञान, सत्यज्ञान ।

प्रभाष्य ( सं. ) मर्यादा, शास्त्रनिर्देशन, दृष्टान्त, उदाहरण, साक्षी, लक्ष, सृष्टि, प्रतिपत्ति, माननीय, सत्यवादी, नित्य, दाखला, पुरावा प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द । भोग, लेख साक्ष और दिव्य । निश्चय, संख्या, माप विस्तार, आधार, सत्यता, सिद्धांत ( वि. ) भरोसेवाक्य, सत्तावाक्य

अभ्यास ( सं. ) निर्धारण पत्र,  
इष्टान्तलिपि, सर्दिक्रिडेट, साटी  
टिकट ।

अभ्यास ( कि. ) सिद्ध करना,  
साबित करना, प्रमाण द्वारा  
निश्चय कराना, मानना, गिनना,  
जानना ।

अभ्यास ( वि. ) सच्चा, ईमानदारी,  
विद्वत्त्व, भरासे का, टिकाऊ ।

अभ्यास ( वि. ) नेकी, ईमा-  
नदारी, सचाई, शुद्धता, पवित्रता ।

अभ्यास ( कि- वि ) अनुसार, मुवा-  
फिक, तरह से, रीतिसे ।

अभातामह ( सं. ) मा का बाप  
और उसका बाप, नाना का बाप,  
पड़नामा ।

अभातामही ( सं ) प्रमातामह की  
पत्नी, मातामह की जननी, पड़-  
नानी, परनानी ।

अभादी ( वि. ) असतर्क, भ्रान्त  
स्वभाव, बे परवाह, अनवधान-  
तायुक्त ।

अभुध ( सं. ) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम,  
माननीय, प्रेसिडेन्ट, मुख्य अगुवा ।

अभेदी ( सं. ) महादेवजी के अनु-  
चर, भक्त ।

अभेद ( सं. ) मूर्च्छा, बेहोशी, मत्त ।

अभेद ( सं. ) प्रकट, मत्त, उपाय,  
वेष्टा, आदर, प्रवास, परिभ्रम,  
तत्त्वबीज ।

अभेदी ( वि. ) उपाय करने वाला,  
वेष्टा करनेवाला, बल कर्ता ।

अभेद ( सं. ) समझ, कूब, मार्ग,  
प्रस्थान, नियोजन, यात्रा ।

अभेद ( सं ) प्रयोज, प्रयोजन,  
विशेष युक्ति, तत्त्वबीज । योग ।

अभेद ( वि. ) इस काक, संस्मा-  
विशेष ।

अभेदाधि ( सं. ) रसम, रीति,  
विधि, शास्त्रोक्त कर्म, प्रयोग करने  
की तरकीब ।

अभेद ( वि. ) जिसका मुख्य  
कर्ता दूसरे की प्रेरणासे कुदी  
छोड़ कर वह दूसरा मुख्य कर्ता

बन जाता है वह भाव । वहकाने  
वाला, भडकाने वाला, प्रथम कारण ।

अभेद ( सं ) चटनी, अवलेह,  
चाटने योग्य पदार्थ; लेप्य पदार्थ ।

अभेद ( सं. ) प्रलय, कल्पांत, मय,  
नाश, कथामत्त, विलय ।

अभेद ( सं. ) संतान, वंश, श्रेष्ठ,  
प्रधान, गोत्र, गोत्र में उत्पन्न  
सबसे श्रेष्ठ पुरुष ।

अभेद ( वि. ) प्रेरक, प्रयोजक,  
उत्साहवाता, सहायक, उठानेवाला  
कैलानेवाला, उत्तेजना देने वाला ।

प्रवर्तमान ( वि. ) प्रवर्तित, संसारमें फैला हुआ, प्रसरित, मौजूद ।

प्रवर्तित ( कि. ) बिधा, चर्म, रीति, इत्यादि का संसारमें प्रचार होना, जमना ।

प्रवर्तित ( कि. ) चलाना, फैलाना, प्रचार करना, विस्तार करना ।

प्रवाद ( सं. ) चर्चा, निन्दावाद, किवदन्ती, उड़ती सबर, अफवाह ।

प्रवाण ( स. ) मूंगा, रत्नविशेष कोमल पत्र ।

प्रवाणी ( सं. ) मूंगे के रंगका, लाल रंगका, गुलाबी, रक्तवर्ण ।

प्रवृत्त ( वि. ) उद्यत, उत्पर, प्रविष्ट, लगा हुआ, निरत, संलग्न ।

प्रवृत्ति ( सं. ) कार्य में लगने की इच्छा, यत्न, उपाय, इच्छा, सामारिक वृत्ति ।

प्रवेश ( सं. ) पैठ, पहुँच, दखल, वेग दिखाव ( नाटक में )

प्रवेशक ( सं. ) प्रवेश कर्ता, उपोद्घात, ग्रंथ प्रवेश में सूचना, या विज्ञप्ति, नाटक के आरंभ में उसका भावार्थ सूचक दिया हुआ भाषण ।

प्रशस्त ( वि. ) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परिसर युक्त, प्रशंसनीय, अतिश्रेष्ठ, अति उत्तम, विशाल ।

प्रशस्ति ( सं. ) प्रशंसा, स्तुति, पथ्य, गुणस्तुति, अभिनन्दन ।

प्रभ ( सं. ) जिससा, पूर, दृच्छ, सबाल, शंका, सम्बेद ।

प्रभार्थ सर्वनाम ( सं. ) कौन, क्यों क्या इत्यादि प्रश्न प्रदर्शक सर्वनाम ( व्याकरण शास्त्र में )

प्रभावणी ( सं. ) प्रश्नों की प्रणी ।

प्रसक्त ( वि. ) प्रसंग विशिष्ट, अविशय, अनुरक्त, अनुरागी, प्राप्त ।

प्रसक्ति ( सं. ) प्रार्थना, अनुराग, नमन, दरख्वास्त, प्रसंग ।

प्रसंग ( सं. ) संगति विशेष, प्रसक्ति, प्रस्ताव, संधि, योग, सम्बन्ध, मेल, सङ्गम, घटती जगह, सहवास, मिलाप, व्यवहार, मैथुन ।

प्रसंगवशात् ( कि. वि. ) योगात्, कारणात्, देवात्, प्रसंग के कारण ।

प्रसंगोपात् ( कि. वि. ) प्रसंग आनेपर ।

प्रसर ( सं. ) प्रकट रूपसे संचार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह ।

प्रसरण ( कि. ) प्रसरण, फैलाना, निकल बहना, विस्तार पाना, बिछाना ।

प्रसव ( सं. ) गर्भ भोजन, अपत्य जन्म, फल, कुसुम, फूल, चन्म, उत्पाति ।

३३५५ वेदना ( सं. ) बालक पैदा होने के समय का दुःख, प्रसव कष्ट, जनते कष्ट कष्ट ।

३३५६ ( कि. ) पैदा होना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना ।

३३५६-डी ( सं. ) प्रसन्नता, नैर्मल्य, अनुग्रह, काव्य का गुण विशेष, स्वाध्य, सुस्थिता, देव निवेदित प्रथ्य, गुरु की जूठन, आशिर्वाद, कृपा, मेहरबानी, देवताके आगे का धरा हुआ नैवेद्य, भोजन, तर्क शक्ति । [ फैलाव ।

३३५७ ( सं. ) प्रसरण, विस्तार

३३५८ ( वि. ) विस्तार कर्ता, फैलाने वाला, बढ़ा देने वाला, बिछाने वाला ।

३३५९ ( कि. ) फैलाना, बढाना ।

३३६० ( सं. ) नोटिस, विज्ञापन, सक्चूरलर, इतिहास, मुनादी आम ।

३३६१ ( वि. ) उत्पन्न, जात, जन्मा हुआ, पैदा हुआ, जनित ।

३३६२ ( सं. ) जातापत्त्या, पसव कारिणी, जिसने बच्चे उत्पन्न किये हैं, जच्चा, जापेवाली ।

३३६३ ( सं. ) प्रसव, उत्पत्ति, जन्म, जन्माना, गर्भ मोचन ।

३३६४ ( सं. ) वह जी जिसने तात्काल बालक उत्पन्न किया हो ।

३३६५ ( सं. ) किसी दिन बाहर जाने को यथार्थ मुहूर्त न हो तो, जिस दिन हो उस दिन अपना सामान इत्यादि मार्गपर के किसी दूसरे घर पर रख देना, प्रस्थाना, पर स्थाना ।

३३६६ ( सं. ) अवसर, प्रसन्न-स्तुति, प्रसन्न, प्रकरण, वृत्तान्त, कथा, कथानुष्ठान, कारण ।

३३६७ ( सं. ) आरंभ, वाक्यानुष्ठान, भूमिका, अवतरिका, दीर्घाचा, शुरुआत, प्रथं हेतु वर्णन ।

३३६८ ( वि. ) समयानुसार, यथा समय, प्रसंगानुसार ।

३३६९ ( सं. ) कूच, प्रयाण, गमन ।

३३७० ( वि. ) बहना, पर्वत का निर्धार, एक पर्वत का नाम, पेशाब ।

३३७१ ( सं. ) अधिक पसीना, पसेवा

३३७२ ( सं. ) खुशी, आनन्द, हर्ष, आह्लाद ।

३३७३ ( सं. ) परिहास, उपहास, आक्षेप, रूपक विशेष, नाटक का एक भेद । [ प्रहार करना ।

३३७४ ( कि. ) मारना, पीटना,

अक्षर (सं.) उष्ण, हँसी, ठंडा, परिहास, ठंढाई, किल खिलाहट।

अक्षर (वि.) प्रकृत सम्बन्धी, अक्षर, लोक व्यवहार में आने वाला, संस्कृत भाषा के सिवा कोई दूसरी भाषा, नीच, हल्का, पामर, अन्त्यज, भाषा विशेष। वास्तविक वस्तुतः।

अक्षर भाषान्तः (सं.) अनुवाद, देशी भाषा में अनुवाद।

अक्षर (सं.) भाग्य, किस्मत, तकदीर।

अक्षर (सं.) सूर्योदय, प्रभात।

अक्षरवासी (कि वि.) प्रातःकाल हुआ, सूर्योदय हुआ, भोर हुआ।

अक्षर (सं.) प्रगल्भता, अहङ्कार, अभिमान, दर्प, गर्व, घमण्ड अद्वत्य।

अक्षर (सं.) प्रायश्चित्त, पापनाशन कर्म, पाप क्षय करने वाले काम।

अक्षर (सं.) एक प्रकार का विवाह, द्वादश दिन का व्रत, याग विशेष।

अक्षर (सं.) पराजय, हार।

अक्षर (वि.) सयाना, जतुर, होशियार, कुशल, प्रवीण, दक्ष।

अक्षर अक्षर (कि) बहुत आतुर रहना, कुरबान होना, सताना।

आध्यात्म (वि.) जीव देने को तय्यार होना, अर्थात् आदर सरकार करना।

आध्यात्म (कि) जीवन जाना, प्राण खोना, जान देना।

आध्यात्म (वि.) जीवनदाता, पोषण कर्ता, जीवन का आधार।

आध्यात्म (सं.) देखा आध्यात्म

आध्यात्म (सं.) जीवदान, आरमदान

आध्यात्म-प्रिय (सं.) प्रियतम, प्राणतुल्य, प्रिय।

आध्यात्म (सं.) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पंचक, पंच कोशों में से एक जिस में प्राण रहता है।

आध्यात्म (सं.) आत्म रखण, जीव रखण, प्राणों का बचाव।

आध्यात्म (सं.) प्राणों का आभक जीवन का आधार।

आध्यात्म (सं.) प्राणवमान, मरण, मृत्यु, मौत, प्राण शेष।

आध्यात्म (सं.) वेगज्ञ, विशेष, व्यास विशेष प्राण वायु को वश में रखने के लिए की हुई क्रिया

तीन प्रकार से, कुनक पूरक और रेचक, यह कर्म जिसमें प्राणवायु को अवरोध हो।

प्राक्प्रति ( स. ) पांच प्रकारकी  
आहुतियों में से एक प्रकार की  
आहुति, ( प्राणाय स्वाहा, अपा  
नाय स्वाहा, समानाय स्वाहा,  
उदानाय स्वाहा और व्यानाय  
स्वाहा इन पांच मंत्रों से दी हुई  
पांच आहुतियाँ )

प्राक्षिन्ना ( म. ) देखो प्राक्षु  
प्राक्षु ( सं. ) प्राणविशिष्ट, सञ्चतन  
जीव, जगम जीव, शरीरी, देही,  
जीवधारी, जलचर, नभचर,  
भूचर इ० चतन, जानवर  
जन्तु, जन्तु ।

प्राक्षु धर्म शुश्रूषा विधा ( स. )  
मानसिक विद्या, दामास का इत्तम ।

प्राप्ति ( वि. ) बुद्धिका प्रकाश ।

प्राप्तुर्भाव ( स. ) आविर्भाव,  
उदय, प्रकाश, भावना, प्राकटय,  
बाहिर होना ।

प्राप्तुर्लत ( वि. ) उदित, प्रगलित  
प्रकट, आविर्भूत, बाहिर,

प्राप्तुर्लत ( सं. ) प्रधानता, प्रवा-  
नम्ब, धेष्टना, मुख्यता ।

प्राप्त ( सं. ) अतभाग, शेष,  
समा, कगर, हृद् ।

प्राप्तु ( सं. ) प्रवसता, आत्म ।

प्राक्प्रति ( सं. ) पापनाशन कर्म,  
पापशुद्ध करनेवाला कर्म, तोषा ।

प्राप्ति ( कि. वि. ) प्राप्ति, विशेषतः,  
बहुत करके, अक्सर ।

प्राक्प्रति-प्राप्ति ( सं. ) पूर्वाहुति  
कर्म, अष्टष्ट, प्राक्तन कर्म, पूर्व  
कर्म, भाग्य, ब्रह्मलेश, कर्मफल,  
नसीब, देव, भविष्य, होनहार,  
आनन्द, परेच्छ, और स्वेच्छ  
तीन प्रकारका प्राक्प्रति ।

प्राक्प्रति-प्राप्ति ( वि. ) कमहीन,  
भाग्यहीन, अभागी, बेनसीब ।

प्राक्प्रति-प्राप्ति ( सं. ) अष्टष्टवादी,  
भाग्य भरोसे रहनेवाला ।

प्राप्ति ( कि. ) प्रार्थना करना, निवे-  
दन करना, याचना करना, अर्ज  
करना ।

प्राप्ति ३२२ ( कि. ) पूर्ववत्

प्राप्ति भक्ति ( सं. ) धर्मस्थान,  
उपासना भवन, वह स्थान जहाँ  
बहुत से लोग ईश्वर प्रार्थना के  
लिये एकत्रित हों ।

प्राक्प्रति ( सं. ) देतो प्राक्प्रति

प्राक्प्रति ( सं. ) भोजन, पान, चाटना  
चूसना, पीना ।

प्राक्प्रति ( कि. ) खाना, भक्षण करना,  
पीना, चूसना, रसास्वादन करना ।



प्रसन्न ( सं. ) अनुप्रास, यमक शब्द  
प्रसन्न ( सं. ) मंदिर, मकान,  
देवताओं और राजाओंके रहने  
का भवन, महल।

प्रसन्न-छ ( सं. ) भाला, बरछी साग,  
बल्लम, जल्लम, जण, घाव, लूट।

प्रसन्नजिह्वा ( वि. ) समयानुसार,  
प्रसंगानुसार, वक्तु के मुआफिक,

प्रसन्नजिह्वा कविता ( सं. ) ईश्वर  
कृपासे बनी हुई कविता, बोधे  
परिश्रमसे प्राप्त अति कवित्व,  
शक्ति।

प्रसन्न ( कि वि. ) पराये देओ,  
जुलूमसे बलात्कारस, अप्रसन्न  
होने पर। [ अतिथि।

प्रसन्न ( सं. ) पाहुना, मेहमान,  
प्रसन्न ( कि. ) समझना, जानना,  
पहिचानना चीन्हना। [ गण।

प्रसन्न ( सं. ) प्यारे लोग, स्नेही  
प्रसन्न ( सं. ) अत्यन्त नि,  
पति, प्रीतम, धनी लाल उत्तम।

प्रसन्नभा ( सं. ) प्रिया, प्रेमात्म्य-  
दानारी, गणविनी, प्यारी, पत्नी,  
अच्छी।

प्रसन्नभा ( वि. ) मिष्ट माषण कर-  
नेवाली स्त्री, चार अक्षर के चरण  
का छंद।

प्रसन्न ( सं. ) पोसना, पोसन,  
पोसने की वस्तु, परिवेषण।

प्रीतडी ( सं. ) प्रेम, प्यार, मुहब्बत  
स्नेह, छोह, मिहरबानी।

प्रीतिकर ( वि. ) प्रेम पदा करने  
वाला, मनोहर, रमणीय, सुन्दर।

प्रीतिपत्र ( सं. ) प्रेमपत्र, प्यारका  
पत्र, प्रेमपाती, प्यारेका पत्र।

प्रीतिपात्र ( सं. ) प्रेमक शौच,  
मुहब्बत करनेकावक, कृपापात्र,  
स्नेहपात्र।

प्रतिभंदि ( सं. ) प्रियतमा, प्रिया,  
मास्यदानारी, सहृदय।

प्रीति-वाणुं ( वि. , प्यार  
वाला, स्नेही, प्रिय, प्रेमयुक्त।

प्रमद्री ( सं. ) हावभाव, रसि-  
विलास।

प्रेमपाश ( सं. ) प्रेम का गन्धन,  
स्नेह का फन्दा, प्यार का फांसा

प्रेम पत्रिका ( सं. ) आक्षिप्त  
माशूक का पत्र, स्नेह पूर्ण चिट्ठी,  
प्रेमी का पत्र। [ सौरभ।

प्रेमणी ( सं. ) सुगंध, सुगन्ध,  
प्रेमाश्रु ( सं. ) प्रेमके कारण आये  
हुए आँसू।

प्रेमाणी ( वि. ) प्रेम से भरा हुआ,  
मायावी, अनुप्राणी, आसक्त।

**प्रेरक** (वि०) प्रेरण कर्ता, प्रेरक, पठने वाला, भेजने वाला, प्रयोजक । [उत्प्रेरण, हुक्म, इच्छा ।  
**प्रेरक** (सं) विधि, भाषा, आदेश,  
**प्रेरक** (क्रि०) भेजना, प्रेरण करना, उत्काना, खड़ा करना, आवा देना ।  
**प्रेरित** (सं) प्रेषित, नियोजित, पठाया, भेजा हुआ, नियुक्त किया हुआ ।

**प्रेस** (सं) कपाकाना, मुद्रण यंत्र, मुद्रणालय, दारने का यंत्र, प्रिंटिंग प्रेस । [उपाध्याय ।

**प्रेत** (सं) सन्निधियों का पुरोहित,  
**प्रेत** (क्रि०) पिरोना, बागा बालना, बोना, सूत्र पिरोना ।

**प्रेत** (वि०) प्रवृद्ध, प्रगल्भ, निपुण, जीवनवस्था के बादकी अवस्था, विवाहित ।

**प्रेत** (सं) रस शास्त्र में तीन प्रकार की नायिका, तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की जो, नायिका विशेष ।

**प्रेत** (सं) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उत्कंठा, उत्सुकता, उद्योग, अभ्यवसाय ।

**प्रेत** (सं) स्वर विशेष, इस स्वर से त्रिगुणा, तीन मात्रा का स्वर, अतिमध्य दीर्घ स्वर ।

**प्रेत** (सं) रोम विशेष, पिल्ली ताप शिला नामक रोम ।

६

**प्रेत** (सं) वर्णमाला का ३३ वाँ अक्षर, २२ वाँ व्यंजन, उच्चारण स्थान ओष्ठ है, (सं) कुबेर के दूत कोवश करने का एक मंत्र, कुंवार ।  
**प्रेत** (सं) पितामहिनी, बाप की बहिन, फूर्त, भूषा ।

**प्रेत** (सं) फजीहत, हाँसी, दिवंगी, मशकरी, मजाक, मसखरी अपमान । [कुच्छा, पुच्छा ।

**प्रेत** (वि०) उच्छृंखल तथियतका  
**प्रेत** (सं) बिता, उपाय, कल्पना ।  
**प्रेत** (सं) पूर्ववत् ।

**प्रेत** (सं) फिकरा, वाक्य, किसी श्रम का प्रमाण, हवाला, वाक्य खण्ड ।

**प्रेत** (क्रि०) फंकी लगवाना, फंका लगवाना, निगलाना, खिलाना ।

**प्रेत** (सं) वह मुसलमान जो ससारी को छोड़ कर अक्काह की बंदगी में लग जाये, मुहर्रम महीने में ताजियों के समय जो फकीर का बाना बनाते हैं, निर्बल अकेला मनुष्य, साधु, संन्यासी, बली ईश्वर भक्त ।

६११ ( वि. ) साधुता, फकीर की दशा, गरीबी, भिक्षावृत्ति, हरिद्रा-वस्त्रा, फकीरका बेष, भीख फकीरका । [ स्वेत दृष्टि ।

६१६ ( वि. ) पीला, बीमारसा,

६१६ ( वि. ) उच्छृंखल, हुड़, बलेडिया, झगडाह, लड़ाका, उड़ाक, बेफिक्र । [ खल्ला ।

६१६३ ( सं. ) फकाहपना, उच्छृं-

६१६३ ( सं. ) खापीकर उड़ा देना रीता ।

६१६४ ( कि. ) फहराना, फर-कराना, इधरउधर उड़ना ।

६१७ ( सं. ) पुष्परज, पराग, पुष्प-रेणु । [ लना ।

६१७५ ( कि. ) फुमलाना, बढ-

६१७ ( कि. ) फलटाना, बदलाना, टेढ़ा बोलना, लौटाना ।

६१७६ ( सं. ) होली का पुरस्कार, फाग की इनाम इत्यादि, होलि-की मिठाई ।

६१७७ ( कि. ) देखो ६१७७

६१७८ ( सं. ) सुबह, कल सुबह, जाने वाले दिन के प्रातःकाल ।

६१७९ ( सं. ) कृपा, आशिर्वाद, गुण गान, बसवन्त, भरापूरा, सफल ।

६१७९ ( वि. ) कजीरुत, अपमान, बदनामी, मानभंग, कलंक ।

६१७९ ( कि. ) फेंक देना, पछाड़ना

६१७९ ( कि. वि. ) कचपच, गच-पच कीचड़ या दलदल में चलने का शब्द ।

६१७९ ( वि. ) फजीरुत करावे वाला, निध, अपमानकारक ।

६१७९ ( सं. ) फजीरुत, अपमान, मानभंग, अपकीर्ति, बदनामी, नामोशान्, बेआबरू, अपयश, अप-तिष्ठा ।

६१७९ ( सं. ) अशम, नीच,

कमीना, कुस्ति, निकम्मा, बाण्डाल

६१७९ ( सं. ) बेआबरू ।

६१७९ ( सं. ) वह काज या पानी जिसमें कच्चे आम के किलके और गूदे का मिश्रण हो, एक प्रकार की चटनी, अपमान, अप-कीर्ति, बदनामी ।

६१८ ( अ. ) तंजोख योग, तंजोख अरथ नामक मंत्र, छिः, हुण, शर्म, घृणासूचक शब्द. तिरस्कार ।

६१८ ( सं. ) स्वेत पत्थर, एफ्रिटिक ।

६१८ ( कि. ) बुद्धि प्रादुर्भाव, अटकना, चूकना, फिरना, रमना ।

६१८ ( सं. ) देखो ६१८१२

हटकारुं ( कि. ) देखो हटकारुं  
हटकारे। ( सं. ) चाबुक का शब्द,  
फटकारने का शब्द, निराश्रम।

हटकिं आरुं ( वि. ) दोनों  
किंतु एकही बड़ा द्वार।

हटकि ( सं. ) देखो हटकि

हटकि इलाही ( सं. ) कम दौरे  
की दलाली, छोटी दलाली।

हटकि ( वि. ) ओछा, छोटा,  
कम दौरे का, अदना फुटकर बे-  
चने वाला, छोटा व्यापारी।

हटकि इलाह ( सं. ) कम दौरे  
का दलाल, अदना दलाल।

हटकि बेचनार ( न. ) फुटकर  
बेचनेवाला, अदना व्यापारी कम  
दौरे का व्यापारी।

हटकि सोभल ( सं. ) बहुत  
सफेद संखिया, सफेद हरताल,  
विष विशेष।

हटकेल ( वि. ) केन्द्र से हटा हुआ,  
अव्यवस्थित, विषयगामी, कड़-  
काहार। [ प्रहार, फटकार का शब्द।

हटके ( सं. ) सपट, सपाटा, ठोक,

हटके सभाषणे ( कि. ) पतली  
छड़ी से पीटना, शिक्षा देना,  
नमोदित करना।

हटके भाषे ( कि. ) जुकसान  
छापा, मारकाना, पीटे जाना।

हट हट ( कि. कि. ) पटाखे इत्यादि  
का शब्द, बिस् बिस्, सट सट,  
बिना बिचारा।

हटहटावुं ( कि. ) छटपटाना,  
खटखटाना, तड़फटाना।

हटहटे ( सं. ) पटाखा, फटाका,  
बड़ाया, बन्दूक आदि का शब्द,  
आतिशबाजी।

हटहटी ( सं. ) हलकापन, निरम-  
रता, अहङ्कार, गर्व, अहंमन्यता।

हटहटे ( सं. ) अतिर आरुद रख-  
कर कपड़े या कागज ये बनाई  
हुई आतिशबाजी जिसे जलाने  
से या फैलने से पट की आवाज  
होती हो, पटाखा, फटाका,  
बड़ाका।

हटहटी ( सं. ) फुंकार, फुनकार।

हटहटु ( कि. ) फटाना, फटवाना,  
हट से पार जाने देना।

हटहटु ( सं. ) सीठने, गालीगान,  
भद् और फोश गाने।

हटहटु ( सं. ) ली के मुख से निकले,  
दुर्वाच्य, गाली, गन्दे लफ्ज।

हटहटे ( सं. ) युवा पुरुष जो सेना  
में पद प्राप्ति की आशा से काम  
करता हो, संपात्ति आदि का भाग  
लेकर भाई से अलग हुआ मनुष्य।

१४१२ ( वि. ) उषादा, उषा, प्रगट,  
अनादृत, वेद्यंका अनाच्छादित ।

१४१२पुं ( कि. ) आँखें निकालना,  
बड़ी बड़ी आँखें काटना ।

१४१२री ( सं. ) मुट्ठाई, बड़ाई,  
बढ़प्पन, गर्व, दर्प, घमण्ड ।

१४१२लुं ( वि. ) जुला हुआ, उषदा  
हुवा, भय अथवा क्रोध से दिखाई  
हुई बड़ी बड़ी आँखें ।

१४१४पुं ( कि. ) भोका देना,  
चालाची करना, छलना, किसी  
का में शामिल होकर उसे अनु-  
चित बताकर विष्ण कर देना,  
फटपट करना । फटवाना ।

१४१४थे ( सं. ) देखो १४१४थे ।

१४१४ट ( कि. ) तुरंतही, क्षणपट ।

१४१२-०१ ( वि. ) मुकाम, और  
मीठा, पकी हुई पवन से गिरी  
हुई कैरी ( आम ) ।

१४३ ( सं. ) शराब की भट्टी, फट  
फट, एक ओर की टोली, ( लावनी  
में ) बाज़ार, मार्केट, गान नाचने  
वालों की टोली, ( कि. वि. )  
शब्द विशेष, जल्दी से ।

१४३ ( सं. ) अंगरखे का नीचे का  
वह भाग जो हवा से फड़ फड़  
शब्द करता हो ।

१४३४पुं ( कि. ) खीर शर्करा,  
रायता, आदि खाने के तरल  
पदार्थों को मक्षण करने के समय  
का शब्द, सुदृक्ता, सबकुत्ता ।

१४३४पुं ( सं. ) अथ इत्यादि  
पिछोरने के लिये बाहर, खुर्र  
समान वज्र, लटकता हुआ वज्र भाग्य  
१४३५ ( सं. ) मुदकन, सम्पूर्णक  
चुमा, होठोंका चपचप शब्द,  
अंगुलियों में लिया हुआ कानिका  
तरल पदार्थ ।

१४३५ ( सं. ) कड़ाका, शब्द विशेष  
१४३५० ( सं. ) फैसला, प्रवन्ध,  
परिणाम । [ बोलना ।

१४३५१२पुं ( कि. ) निरर्थक शब्द  
१४३५१२पुं ( सं. ) सरकारी  
आफिसर जिसके अधिकारमें  
सनद देने तथा हिसाब आँचनेका  
काम होता है, डेप्युटी अकाउन्टन्ट ।

१४३५३ ( सं. ) छटपटाने या फड़-  
फड़ानेका शब्द ।

१४३५३५ ( वि. ) छटपटाता हुआ,  
फरफराता हुआ, यर्म, तेज, उष्ण ।

१४३५३पुं ( कि. ) फटफटाना, छट-  
पटाना बढ़बढ़ाना, फरफराना ।

१४३५३५ ( सं. ) फड़फड़ शब्द,  
बढ़बढ़ाहट, भय, जखरा, बनावट,  
अहंकार ।

१३३१५५ ( कि. ) फटफटना,  
फटफट शब्द हो इस प्रकार  
हिलाना । [ अनादृत ।

१३३१५६ ( वि. ) कुल, बेडोंका,  
१३३१५७ ( सं. ) मिथ्या बड़ाई, सेली,  
असत्य प्रशंसा, व्यर्थवात, डोंग ।

१३३१५८ ( कि. वि. ) तवातद्, बढ़ा-  
बढ़ । [ गल्लेका व्यापारी ।

१३३१५९ ( सं. ) अन्न बेचनेवाला,  
१३३१६० ( सं. ) लकड़ी की फाँक  
या बीर । [ भाग ।

१३३१६१ ( सं. ) कमरेके ऊपर का  
१३३१६२-७ ( सं. ) बोंस वा तस्लों-  
की बनी हुई दीवार ।

१३३१६३ ( सं. ) पाणी अववा  
ठंडसे मुलायम हुई वस्तुसे  
निकला हुआ अवयव, जंकुर,  
फुनगी । [ फल ।

१३३१६४ ( सं. ) एक प्रकारका  
१३३१६५ ( सं. ) फणस वृक्षके  
फलके गूदेमें पूरीमें रखकर तली  
हुई पूरी, फणसकी कचौरी ।

१३३१६६ ( सं. ) इलविशेष ।

१३३१६७ ( सं. ) एक प्रकारकी फली  
फणसवृक्षका पेड़ अववा उसकी  
लकड़ी ।

१३३१६८ ( सं. ) पूर्ववत्

१३३१६९ ( सं. ) सोंपका फन, सोंपकी  
गर्दनका वह भाग जो चौड़ा हो  
जाता है ।

१३३१७० ( सं. ) नाग, सर्प, सोंप,  
कौडा, काला, भुजंग, अहि ।

१३३१७१ ( सं. ) कंघी, नरकट,  
तीर । [ भुजंग, अहि, वासुकि ।

१३३१७२ ( सं. ) सर्प, सोंप, नाग,  
१३३१७३ ( सं. ) सर्पराज, फणिपति,  
वासुकि, अनन्त, नाग ।

१३३१७४ ( कि. ) रस्ता बदलना,  
आबा निकलना, अलग होना,  
विभक्त होना, भटकना, आबा  
जाना, तिरछा होना, बदलना  
( विचार ) [ पक्ष, कैल ।

१३३१७५ ( सं. ) डोंग, फितूर, पास-  
१३३१७६ ( सं. ) पासण्डी, डोंगी,  
फितूरी, बहानाखोर, छली, धूर्त ।

१३३१७७ ( सं. ) फतह, जीत, जय ।

१३३१७८ ( वि. ) विजयी, जयी,  
जीताहुवा । [ सफलता ।

१३३१७९ ( सं. ) जीत, जय,

१३३१८० ( सं. ) एक प्रकारकी  
छोटी नौका, एक प्रकार कायाव ।

१३३१८१ ( सं. ) जय, जीत, फतह,  
यश, इज्जत, साव ।

१२६३ ( वि. ) जीताहुवा, जेता, जयवाली, विजयी ।

१२६३ ( सं. ) जय, जीत, विजय, जय, सफलता ।

१२६३ ( कि. वि. ) चारों पैरों चौड़ा हुआ, बहुत सपाटे में, चौकड़ी भरता हुआ ।

१२६३ ( कि. वि. ) उफनने के समान हालत में, फड़फड़ी दबा में, फफुन्दी ।

१२६३ ( कि. वि. ) उफनना, फुद-फुदना गुदगुदा होना, फफोला होना, पक कर रस से भर जाना, पक कर फूटने योग्य होना ।

१२६३ ( सं. ) चार पाई का तांबे का सिक्का, ( चार पाई में ) तीन पाई, एक पैसा, फादिन, छोटी मोटी रोटी, एक प्रकार की पपड़ी ।

१२६३ ( सं. ) देखो १२६३

१२६३ ( वि. ) नष्ट, बरबाद, पैसा, बंदार किया हुआ, नुशाहुवा, नाश ।

१२६३ ( कि. वि. ) समूल नाश होना, बंदार होना, नष्ट होना ।

१२६३ ( वि. ) कंठा बाल, दुर्गुण, अनीति, दुर्मयस, तदवीर, व-न्दिश, कपट, प्रवन्ध, किकंका, दोष, माजिश ।

१२६३ ( वि. ) कटपटी, कंठ, चूँ, कितरी, किकासी, किकनी, कूफनी ।

१२६३ ( कि. वि. ) कंठना, बराना, चूना, दाँत कटकटना, कुत्ते होना, कड़कड़ाना ।

१२६३ ( सं. ) कड़कड़ाहट, स्फुरण, अभ्यवस्था, गड़बड़, व्याकुलता, कोष ।

१२६३ ( कि. वि. ) कड़कड़ाना, कड़काना कुपित करना, उसका ।

१२६३-१२६३ ( सं. ) फोला, फफोला, फुस्का, स्फोट फुस्का, फासका, स्फोटक ।

१२६३ ( सं. ) पूर्ववत्

१२६३ ( कि. वि. ) खोलना, और तलाश करना, शोध करना, खंडना ।

१२६३ ( सं. ) असमानता, अंतर, फेर, फासला, फूँकता, फर्क, फासला, छेदा, दूरी, भेद ।

१२६३ ( कि. वि. ) अंतर होना, रूपान्तर, बदल होना, फलटना, प्रतिकूल होना, फर्क होना ।

१२६३ ( सं. ) फिरकनी, फिरकी, चकरी, जोर न आ सके किन्तु अनुष्ण हासके देती द्वार पर लगाई हुई चकरी, +, आधी

देवी लक्ष्मियों को बनाकर तज्जार किया हुआ चक्र, पहिना ।

१२६७ ( कि. ) कबकना, कांपना, स्फुरण होना, कुरकुराना, इधर उधर हिलना हाथमें सिसक पकना, वापिस आना, मुंह दिखाना, पीछी नजर से देखना पीछा लौट कर देखना, नाचना, हवा से कांपना ।

१२६८ ( सं. ) हवा में फुर फुर उड़ने की क्रिया प्यजा, पताका ।

१२६९ ( सं. ) फिरेगा, पोच्युगीज इमेज, यूरोपियन ।

१२७० ( सं. ) कतव्य, धर्म, ब्यूट ।

१२७१ पांडवी ( कि. ) विवश करना कृपा करना, प्रसन्न करना, मज-बूर करना, कर्तव्यकार्य करना ।

१२७२-७३ ( सं. ) बालक, लड़का छोकरा, सन्तान, सन्तति ।

१२७४ ( सं. ) ताकु के ऊपरकी चकरीया फिरकी ।

१२७५ ( वि. ) गोल, आसपास, वृत्त, परावर्तन बाल, घूमने वाला, घूमता ।

१२७६ ( सं. ) जोड़े में से एक, एक खण्ड, एक भाग, कपड़े की फरद ।

१२७७ ( वि. ) घूमनेवाला, भटकने वाला, केरी वाला, लुच्चा ।

१२७८ ( कि. वि. ) पवन की धौंसी गति में, फलफलाहट के साथ, बर्बा, फुहारें । [ स्मूल ।

१२७९ ( वि. ) मोटा, साजा, पुट,

१२८० ( सं. ) बादशाह की दस्त-खती मुहर युक्त हुक्म, बादशाही सनद, हुक्म, आज्ञा नृपाज्ञा ।

१२८१-८२ ( सं. ) आज्ञा पालक, ताबेदार, सेवक, स्वामि भक्त ।

१२८३-८४ ( सं. ) आज्ञा पालन, स्वामिभक्ति, ताबेदारी सेवा ।

१२८५-८६ ( कि. ) आज्ञा देना, हुक्म करना, इच्छा प्रदर्शित करना, आदेश करना ।

१२८७-८८ ( सं. ) इच्छा प्रदर्शन, फरमागश, शिफारिश, सौपाहुना काम, आज्ञा, हुक्म, सौंप ।

१२८९-९० ( वि. ) इच्छा प्रदर्शित करने पर बिचा हुआ, उम्दा, उत्तम सरस, उद्भुत, प्रथम भाव ।

१२९१ ( सं. ) डंग, शक्क, खुरत, डांचा, खांचा, नकशा, नमूना, फार्म ।

१२९२-९३ ( कि. ) टहलने के लिये बाहिर जाना, बांधु सेवन के लिये जाना ।



६२९ (कि.) घूमना, कीटना, फिरना  
एक ओर से दूसरी ओर घूमना,  
बापिस लीटना, पछि मुड़ना, सब  
जगह जाना, स्थान स्थान फिरना,  
गोल आकार में फिरना, घूसाकार,  
घूमना, सिर घूमना, चक्कर आना,  
बदलना, हवा साने जाना, वायु  
मेवन करना, नामने होना बिधा  
बदलना, चक्कर खाना ।

६२९० ६२९० (कि.) चलना, हिलना,  
कुलना, टहलना, घूमना ।

६२९१-२९११ (सं.) पशु, फरसा,  
परशु कुल्हाड़ी, शस्त्र विशेष,  
बढई का हथियार, कुल्हाड़ा,

६२९२ (स.) पत्थरकी शिला ।

६२९३-२९१३ (सं.) जमीन पर  
पत्थर या ईंटका चुनाव, पत्थर  
ने जडीहुई जमीन, फर्श,

६२९४ (सं.) चना आदि धान्य  
आनेक समान स्वाद ।

६२९५१५१ (सं.) चना और गेहूँके  
आटे में जीरा डाल कर घी में  
तली हुई रोटी, पूरी विशेष, पकाव  
विशेष ।

६२९५२५२ (सं.) आज्ञा, धारा,  
नियम, कानून, आश्रय, परवाना  
विधि, हुकम ।

६२९६ (वि.) कसबिल और लेटन  
वस्तु खाने का सा स्वाद वाला ।

६२९७ (सं.) अवकाश, सुई, फुर-  
सत, आराम, फुर्लत, विराम  
आराम, मुलहत्त, विराम, सि-  
थिलता ।

६२९८ (सं.) शब्द तथा उसके  
पास ही अर्थ लिखा हो ऐसा  
संग्रह, कोष, शब्द कोष, दिक्शनेरी  
संग्रह ।

६२९९ (सं.) उचाँ किस्म का लोह,  
फौलाद, स्टील, उत्तम लौह ।

६२९९० (वि.) फुर्लत में, अवकाश  
प्राप्त, टलना, निवारा, बेकाम ।

६२९९१ ६२९९१ (कि.) भूलजाना,  
भूलना, बिसरना, गफलत करना ।

६२९९२-९९२२ (सं.) विस्मृति,  
भूल, गफलत, चितसे पृथक ।

६२९९३ (सं.) गीदड़ के समान  
एक प्रकार का जानवर ।

६२९९४ (सं.) जिसका काम बिछौने  
करना, सामान रखना दीवारती  
करने का हो ऐसा नौकर, बैरा,  
सेवक, भृत्य, दास, ।

६२९९५९५ (सं.) दणिक टेल  
बिछौने आदि सामान रखने की  
जगह या घर ।

६२१७ ( सं. ) फलहार, फलका  
भोजन, प्रतमें अन्वतिरिक्त फल  
भोजन ।

६२१८-६१ ( सं. ) दावा, मुकदमा  
शिकायत, मुकसान, मरनेके लिये  
सजा कराने के लिये उसका बदला  
पुकारने के लिये अर्जी देना ।  
दुःकोद्वार, बडबडाहट, रोना,  
रदन ।

६२१८ ( सं. ) दावा करने वाला,  
अर्जी देने वाला, वादी, अभियोक्ता  
अर्था, फरियाद, दावा मुद्दा ।

६२१८-६१ ( कि. ) नालिस  
करना, शिकायत करना, मुकदमा  
चलाना ।

६२१ ( कि. ) चारों ओर  
घूम जाना, बचन भंग करना,  
दौड जाना, फिर जाना, ऊपर  
होकर निकल जाना ।

६२१-६२-६२ ( कि. वि. ) फिर-  
से, दुबारा, पुनर्पुनः बार बार,  
एक बार पुनः पीछे, बहुरि ।

६२१ ( कि. ) लौट जाना, फिर-  
जाना, सीपी चला जाना ।

६२२ कुल ६४ ( कि. ) भाव  
पडना, सोखना-पूछ निकलना ।

६२१ ( सं. ) लकड़ी के तख्तों  
द्वारा बनी हुई दीवार ।

६२१ ( सं. ) परेड, फौजी तमाशा,  
खपटियों तथा बीपों द्वारा  
लिटकी और द्वाज बने हुए ।  
फौजकी कवायद होते समय  
बन्दूक के शब्द ।

६२१ ( कि. ) भास हो  
जाना, नष्ट हो जाना, हुदशा में  
आ गिरना ।

६२१ ( कि. वि. ) चालाकी  
द्वारा, प्रपंचसे, ठगईसे, धोकेसे ।

६२१ ( वि. ) अनुमती, तजुवेंकार,  
घूमा हुआ, भिजायी, हठीला जिद्दी ।

६२२ ( सं. ) देवदत्त, देवताओं  
के सम्पाद लाने वाला, पार्षद,  
सुंदर, मनोहर पुरुष, कपट रहित  
मनुष्य ।

६२१ ( सं. ) अन्न का एक माप  
विशेष, ( बंवाई में ) १६ पाली =  
१/२ खण्डी ।

६४ ( सं. ) देखो फल ।

६४ ( सं. ) पैसा, तीन पाई  
( संकेत )

६४ ( सं. ) झूठ, उल्लास, ठेका,  
फलांग, झूठके उत्सवनाम उल्लास,  
फाँद ।

१६५६ ( सं. ) नाम गुण वर्धन करके जिसे परिचित कराया हो, अमुक, कला, ऐसा एक ।

१६५६१२ ( सं. ) फैलना, फला-केन एक प्रकार का कनी बल ।

१६५६१२ ( सं. ) फलोंका भोजन व्रत में अन्न के अतिरिक्त फलों का आहार ।

१६५६ ( वि. ) खला, प्रकट, चौड़ा विस्तृत, फेला हुआ, वृद्धिगत ।

१६५ ( स ) द्वार, पराजय, परास्त अयश, पराभव, तिरस्कार ।

१६५ ( सं ) फस्द, रक्त मोक्षण आव, खूनके निकालनेकी क्रिया, फस्त ।

१६५ भोक्षणी ( कि. ) खून निकालना सींगी लगाना रोग निवारणा-र्थरक्त मोचन, नसके द्वारा खून निकालना ।

१६५६५-१६५६५ ( कि. ) खसकना सटकना, फिसकना, पार न पड़ना,

१६५६५५५ ( सं. ) खेतीकी फसल।

१६५६५५५ ( सं. ) खेतीका वर्ष ।

१६५६५-१६५६५ ( कि. ) बुरा समझा कर फन्देमें फाँसना, फाँसना, धोके में लेना, बन्धन में लेना ।

१६५६-१६५६ ( कि. ) फाँसना, ठगना बन्धनमें आना, जाकमें आना ।

१६५ ( सं. ) सस्य, लाभ, फलक, चर्म, डाल, अष्टा सिद्धि, अभिप्राय कर्म जन्म, शुभकावशुभ फल, अनिष्ट इष्ट परिणाम, अंत, नतीजा सिद्धि लाभ, प्राप्ति, पैदायश, उत्पात, उद्देश, प्रयोजन, कारण, संतान, सबब, सुपारी ।

१६५ आवशं ( कि. ) लाभ दायक फलीभूत होना, पार पड़ना, लाभ होना, फल प्राप्त होना ।

१६५५५-१६५५५ ( सं ) फलवाला पेड़, मेवेका पेड़, फल वृक्ष ।

१६५५५ ( वि. ) वह वृक्ष जिसमें फल लगे, रसाल, फल देने वाला ।

१६५५५५ ( सं. ) फल इत्यादि, कन्दमूल फलफूल, अन्नातिरिक्त ।

१६५५५५५ ( सं. ) पूर्ववत् ।

१६५५५-५५५५ ( वि. ) सफल फल दा, रसा, लाभ युक्त ।

१६५५५ ( कि. ) फलना, उत्पाति होना, गर्भ रहना, लाभ दायक होना शुभप्रद होना, फूलना फलना ।

१६५ भुति ( सं ) नाना, फलदा, लाभ-

१६५५५ ( वि. ) जिसमें फल आते हों, फलमें फूलने योग्य ।

१५५३ ( सं. ) फलदायी, केवल फल देने वाला, जिसका फल आधार हो ।

१५५४ ( सं. ) फल देने वाला, माली, फल विक्रेता, कुंजदा ।

१५५५-५५५६ ( सं. ) फलसेवन, फल भोजन, फल ।

१५५७ ( सं. ) गली, बाजार, राह, गलियारा, सड़क ।

१५५८ ( सं. ) मुहल्ला, पुरा, मोहल, गली, बाजार, बाड़ा, पौल आंगन ।

१५५९ ( वि. ) फलदायक, जिस से फल मिला हो, लाभदायक ।

१५६० ( सं. ) देखो १५५३

१५६१ ( सं. ) टुकड़ा, अंश, विभाग, हिस्सा, भाग, चीर, कतरण, फाट, फाड़ ।

१५६२ ( सं. ) छेलापन, आहम्बर, नखरा अलबेलपन ।

१५६३ ( वि. ) छल, रसिक, रंगीला, सुसज्जित, साहसी, फक्कड़, सुन्दर, आहम्बरी अलबेला, ( सं. ) लिखी हुई सतर, लिखितपंक्ति, वाक्य ।

१५६४ ( कि. ) फंका मारना, फंकना, खाना, चबाना ।

१५६५ ( सं. ) जाग, जागृत, जागृत, जागृत, जागृत ।

१५६६ ( सं. ) जमिनाम, गुस्सा, गर्व, घमण्ड, दर्प, बेसी ।

१५६७ ( वि. ) एक आंक से तिरछा देखनेवाला, भेदी आँखोंवाला, तिरपट दृष्टिवाला, ऐँचकतानी दृष्टिका ।

१५६८ ( सं. ) फन्दा, फाँसा, पेच, कठिनाई, जाल, दाँव ।

१५६९ ( वि. ) फन्देमें फंसाना, जालमें डालना, घेर लेना ।

१५७० ( सं. ) अंगरखा बगैरका पल्ला, उकाला हुवा पदार्थ, काब, कषाय, शोली, रबोई, मनुष्य क्षेत्रमें बीनते समय कपड़ेकी बना लेते हैं वह शोली, बैली ।

१५७१ ( कि. ) सोरे डालना, बखिया करना, सोरे भरना ।

१५७२ ( सं. ) नदीका आढ़ा गया हुवा भाग, गुस्सा, शाखा, बाजू, कल्पना, डाली, तुरंग, बेसी, कोष ।

१५७३ ( सं. ) मोटा पेट, स्थूलोदर ।

१५७४ ( सं. ) कपट, जाक, ठगई, फंद, फाँसा, पाश, बन्धन ।

१५७५ ( कि. ) खैच कर फाड़ना, खैच कर फाड़ डालना ।

क्षी ( कि. ) इधर उधर व्यर्थ के  
चक्के खाना, कुछ नहीं, खोटापन ।

क्षी भारवा ( कि. ) व्यर्थ परि-  
भ्रम करना, कुछ नैवहन करना ।

क्षी ( सं. ) बड़, बाजीयरी, भान  
मती, इन्द्रबाक, बाह्यरी ।

क्षी ( सं. ) लकड़ी की पतली  
किरच या टुकड़ा जो चमड़े में जुल  
जाती है, छलम कांटा, सीक  
फांस, जुनाई का निकाल डालने  
वाला भाग, बबराइट, जुकसान  
करने के लिये बीच में पड़ना, हर-  
कत करना, फन्दा, फांसा, गांठ  
पाश, फांक, चौरा ।

क्षी क्षीवी ( कि. ) कठिनाई बुर  
करना, कष्ट से मुक्त करना ।

क्षी भारवी ( कि. ) बाधा डालना,  
जिस से उद्धार न हो सके ऐसी  
कोई आद चीजों कर देना,  
रेड मारना ।

क्षी क्षीवा पेसे साध भला  
करते हुए हो, परम करते करम  
फूटे, देने गई पूत और जो आई  
झुसम, चीजे गये छन्ने होने हो  
गये छुन्ने ।

क्षीक्षु ( कि. ) रस्ती द्वारा छुने में  
मददगार, उराहता, बड़ा खेदा ।

हस्तादि यंत्र का गन्ना बांध कर  
पानी बरने के लिये कुछ खादि  
किसी बलासब में बाँधना, मुँह  
हुए किसी एकाग्र हिले की खोद  
खाना, खीच के बलम पटकना,  
तोड़ना ( कुछ की छाया पर  
आदि ) पड़त जमीन को खोले  
करने के लिये खोदना, खंवर  
भूमि खोतना, खंघना, फन्दे में  
लेना, बाल में लेना, लिपटाना ।

क्षीक्षु ( वि. ) फन्दे में भागे  
योग्य, ठगई, दगाबाजी कुचार्ई ।

क्षी ( सं. ) छाँवा, कठिन बोरी  
से गन्ना खोदने की किता, खल  
करने वाले अपराधी को प्राण  
बंद के लिये गले में बाँधा हुआ  
रस्सी का फन्दा, खी की रस्सी  
से गन्ना बोट कर मारने का प्राण  
बंद, पाश, गले में बाँधने की  
रस्सी, प्राण बंधन द्वारा ब्याकुल  
हो ऐसी बुझि । [ देने वाला ।

क्षीक्षी ( सं. ) दवाने वाला, फाँसी

क्षीक्षी देना ( सं. ) जलद, कठि-  
नार, फाँसीपर चढ़ाने वाला  
व्यक्ति ।

क्षी ( वि. ) देना क्षीक्षि ( वि. वि. )  
हृष्ट, खेद, विवशता, दे देना

३५५१ ( सं. ) फन्ना, फाँसा, फाँस, फाँसना, फाँसना, फाँसना, फाँसना ।

३५५२ ( सं. ) फोली, फुल ।

३५५३ ( सं. ) फोली, फुल ।

३५५४ ( सं. ) फुल, फुल, फुल, फुल ।

३५५५ ( सं. ) फाँकने वास्ते हथेली से या मुठ्ठी में लिया हुआ अंश, फाँकने के लिये ली हुई वस्तु ।

३५५६ ( कि. ) फटा मारना, जाना, मारना करना, पूर्ण अथवा, भुना हुआ धान्य फाँकना, गफफा मारना ।

३५५७ ( कि. ) पचाताप तथा अत्यंत दीनता प्रदर्शन के समय यह वाक्य प्रयोग होता है, भूख से मरना ।

३५५८ ( सं. ) फंकी, फाँकने योग्य चूर्ण, औषधि आदिका फाँका, गफफा ।

३५५९ ( सं. ) फंका, फाँकने योग्य वस्तु का परिणाम, व्रत, निराहार हलका घूना, हलचल, बाबा, छल ।

३५६० ( सं. ) वसंत ऋतु, राग विशेष, होली का गान, होलिका खेल, होली में रंग आदि डालना । होरी, होली में गाली बलोज़ ।

३५६१ ( सं. ) एक प्रकार का सिक्के का पहिरने का वस्त्र ।

३५६२ ( सं. ) फन्ना, फाँसा की संज्ञा यह फाँक को किसी छेदी चीज में ठोक कर रंग कर दी जाती है, फाँक, फाँक, चीज में विभिन्न उपस्थिति, एक प्रकार का बर्तन का औजार ।

३५६३ भास्वी ( कि. ) अकस्मात् हानि पहुंचाने के ह्रादे से बीच में पड़ना, बीच में विभिन्न उत्पन्न कर देना, पहिये में आरा या तान बिठाना ।

३५६४ ( वि. ) छीटा, चपटा, जिसके बीच में बहुत अन्तर हो, टेढ़ा मुड़ा ।

३५६५ ( सं. ) लकड़ी का फाँदा हुआ टुकड़ा, खपट्टी, बीच फट्टर ।

३५६६ ( वि. ) बड़ा हुआ बुद्धिगत, शेष, बाकी रहा हुआ, फालतू, निकम्मा काममें न आने योग्य, निरूपयोगी, बचा, अनुपयोगी वे कामका ।

३५६७ ( वि. ) विद्वान्, पंडित, पठित, पढ़ा हुआ, श्रुणी, चतुर, मुन्न, कोविद, भीमान, बुद्धिमान पदु, आलिस ।

३५६८ ( सं. ) तड़कन पटने से जोरदार हो आवे, फाँक, फाँक, फाँक, विचार

दे दृक्, दू, दूट, दरार, देव,  
अस्मत्, अस्मिन्, अस्मिन्, दूट,  
विरोध, नेद, फाटक, द्वार, दर-  
वाजा, दरज ।

१६५५ ( सं ) विरोध, स्नेहभग,  
अस्मत्, दूट, विरोध नेद ।

१६५६ ( सं ) द्वार, दरवाजा,  
बाहिर का दरवाजा, सदन द्वार ।

१६५७ ( कि ) फटना, दूटना,  
दरार होना, दरज होना, चीर  
होना, फाट होना, दूक होना,  
खण्ड होना, मर्यादा के बाहिर  
जाना, अस्मिन्की होना, गाली देना  
ओरमें जाना, नुकसान ओर  
मृत्यु से निडर होकर काम करना,  
अथ वितासे व्याकुल होना,  
आंध्र १६५८ ( कि ) गुस्सा  
बढ़ जाना, मृत्यु होना ।

१६५९ ( कि ) ५५ धातु ( कि )  
निर्वल का सामना करना, दुस्मै  
दुख देना, आ बैल मुझे मार  
करना, खुद फंसना ।

१६६० ( सं ) ५६ धातु जरा बड़ी  
है, मर चढ़ा है । [ जाना ।

१६६१ ( कि ) अचानक मर

१६६२ ( कि ) अचानक मर  
जाना, मर्यादा के बाहिर जाना  
अस्मिन्की होना, ।

१६६३ ( सं ) देखो १६६४

१६६५ ( वि ) फटा हुआ, कम्पित,  
फिरा हुआ, दरज, दरार, चीर,  
निर्वल, अचानकी, दूर ।

१६६६ ( वि ) वेकना, अविचेकी  
दृष्टि, बाहिर सोलने वाला,  
दिवाला, उन्मत्त, पावन बावला ।

१६६७ ( वि ) देखो १६६८

१६६९ ( सं ) चीर, फाट, दरार, दरज  
दूकना, खण्ड, आधा सपका  
( संकेतार्थ ) ओर अन्ध्र ओर १६७०  
एक बारके दो लठके ।

१६७१ ( कि ) फाटना, चीरना,  
बिना हथियार भाग करना, दुकड़े  
करना, अन्ध्र १६७२ ( कि )  
बारबार जाना, उगाही करना ।

१६७३ ( सं ) आधा, आधा सपका  
किसी पदार्थ के किये हुए दो  
भागोंमें से एक भाग ।

१६७४ ( कि ) चीर फाड़कर  
छा जाना, ( पशुद्वारा )

१६७५ ( सं ) हिजड़ा, नपुंसक,  
नामद, बड़, कड़ी, अनसु ।

१६७६ ( सं ) बाध, विरोध,  
बर्बाद नष्ट, फटा, पैदा ।

अभिधेय ( सं. ) कुराव के पहिले प्रकरण का पहिला भाग जो मृतक की आत्मा की शांति के निमित्त पढ़ा जाता है ।

अभिधेय ५४५ ( कि. ) मृतक की आत्मा की शांतिके लिये ईश्वरोपासना करना, अंत्येष्टी ईश्वर प्रार्थना ।

अभिधेय ( सं. ) कच्चील, लालटेन दीप मंदिर, दीपक रखने की चीज ।

अभिधेय ( वि. ) नाशमान, अणमंशुर, नष्ट होने वाला, मिथ्या । [पापदा ।

अभिधेय ( सं. ) एक प्रकार की फली,

अभिधेय ( सं. ) बाद स्मरण, स्मृति ।

अभिधेय ४१२४ ( वि. ) उपयोगी काम में आने योग्य, लाभदायक, हितकर, लाभप्रद, किराबती, लाभकारी ।

अभिधेय ( वि. ) पूर्ववत्

अभिधेय ( सं. ) लाभ, नफा, कमाई, आय, हित, किरायत, प्राप्ति, पैदा ।

अभिधेय ( सं. ) रुई का फोना, सुखद्वार बन्दु तेल में डूबा हुआ रुई का टुकड़ा, रुई का पहला ।

अभिधेय ( कि. वि. ) बहुतही, विशेष, अधिक, अत्यधिक, मात्र में न लीजें कि इतना ।

अभिधेय ( वि. ) कुर्बत प्राप्त, निवृत्त, साफ, सुद, ठुल्ला, ठाका, अवात निठाला ।

अभिधेय ( वि. ) अवकाश प्राप्त, सुधी पाया हुआ, ठुल्ला, ठाका, निवृत्त, अवारा ।

अभिधेय ( सं. ) सुधी, मोचन, सुटकारा, अवकाश, कुर्बत, ठुल्लाई ( वि. ) फारिग, ठाका, निवृत्त, अवकाश प्राप्त ।

अभिधेय ( सं. ) सुटकारा पाने का प्रमाण पत्र, बन्धन मुक्ति का लेख, सुलासा ।

अभिधेय आधेय ( कि. ) सुधी देना, सुलासा करना, बन्धन रहित करना, सम्बन्ध तोड़ना, सुधी का लिखित पत्र देना, तलाक देना ।

अभिधेय ( स. ) अधिकता, बहुतायत, पोटा, खेती, शकुन, सुगम, पूर्वलक्षण, सुभाषुम चिन्ह, भविष्य सूचना ।

अभिधेय ( वि. ) अधिक, ज्यादा, आवश्यकता से अधिक, निरुपयोगी, अनावश्यक, फुजूल, व्यर्थ ।

अभिधेय ( कि. ) मोटा होना, बढ़ में बढ़ना, फैलना, फूलना, दुब होना ।



१।१०० (सं.) एक प्रकार का फल ।

१।१०१ (सं.) एक प्रकार का फल जो माँसे पर रहना जाता है ।

१।१०२ (सं.) एक प्रकार की छपची, एक प्रकार का चाब पदार्थ ।

१।१०३ (सं.) जंगली पशु विशेष, स्वार, गौरव, बन्दुक, लोमड़ी ।

१।१०४ (वि.) अनुकूल, योग्य, उचित, सुवासि, फबता हुआ ।

१।१०५ (वि.) अनुकूल होना उचित होना, योग्य होना, सुवासि होना, किसी कार्य में जागे बढ़ना, परिश्रम में सफल होना, चलना, कृतकार्य होना ।

१।१०६ (सं.) पोचा, दुर्बल, पोला, निकम्मा, निरर्थक, अनुपयोगी, कुतूहल, कचरा कूड़ा, अगव, बगव, बासकूट, बकसक तुच्छ वस्तु ।

१।१०७ (वि.) निकम्मा, पोचा, पोला, नीरस, रसहीन, कूड़ा-करकट ।

१।१०८ (सं.) सरपट दौड़, सरपटी, छलांग, दूध, चाँद, उल्लास, दौड़, कीड़ा गति ।

१।१०९ (वि.) कुरग, चाँदवा, छलांग, शारदा, धारी कमर हैं

निकुल, चौकना, चबरागा, बक से व्याकुल होना ।

१।११० (वि.) लपेटने विचार, करना, हवाई विधि काना, छलांग, मागना, उल्लास, दूधना, पाँदना ।

१।१११ (वि.) अकस्मात् चौकना, डर लगना, चौकना होना ।

१।११२ (सं.) सूत की आँटी, वेधित सूत, लपेटा हुआ सूत का गोला रील ।

१।११३ (सं.) अंदरन पर लपेटा हुआ सूत, बाँस के बने अंग्रे पर लपेटा हुआ सूत ।

१।११४ (वि.) हिस्ता करना, बटवारा करना, भाग करना, धृक् करना ।

१।११५ (सं.) फाल, लोहेका औजार विशेष, छवि सम्बन्धी औजार ।

१।११६ (सं.) एक प्रकार का मेवा जो प्रीत्य बहुत में उत्पन्न होता है, फल विशेष ।

१।११७ (सं.) कैदा, साफ, छोटी पचवी, पाग, उल्लेख, पथिया, सिरबन्ध, जली पल, कम्पल, लोका ।

- होली ( सं. ) एक प्रकार का कियो  
'वा बका, सादी, लूबही, फरिया ।
- होशु ( सं. ) बेचो शब्द ।
- होश ( सं. ) हिस्सा, भाग, पांती,  
विभाग, शेखर, बांटा ।
- होशो नाशवे ( कि. ) हिस्सा करना  
अमुक मनुष्य को अमुक वस्तु  
देना इत्यादि हिस्सा करना ।
- होश ( सं. ) चिंता, सोच, फिक्र,  
उद्वेगता, व्यग्रता, चिन्त की बे-  
बेनी, लटका ।
- होश ( सं. ) फोकापन, हस्कापन,  
विचर्यता, उदासीनता, निस्तेजता,  
काम्यहीनता, चैतन्यतारहीन ।
- होश ( सं. ) निस्तेज निःसार,  
विचर्य, उदास, निरस, निःसत्त्व,  
रसहीन, पीलापन, क्षीणता, मन्द ।
- होश ( सं. ) चिक्कार तिरस्कार,  
हुत्कार अनादर, अवज्ञा, हुत्कार,  
अवगमना, उपेक्षा, आप, बह  
हुवा, शाप, अनिष्ट चिन्तन, दुर्वाक्य  
कथन ।
- होश ( कि. ) चिक्कारना,  
तिरस्कार करना हुत्कारना, हुच्छ  
गिपना ।
- होश ( सं. ) प्रलय काल,  
मृत्यु समय, नाशकाल, अंत समय,  
क्यामत ।
- होश ( आश. ) चिक्कार  
छिः छिः, धूँ, छी, छी, धूना  
सूचक शब्द, लज्जा सूचक शब्द ।
- होश ( कि. ) दे देना, ( गृह )  
ललचाना, उस्काना, उभाड़ना,  
साफ करना, घूस देना, रंक्षित  
देना, हुटकारा पाना ।
- होश ( कि. ) छटना, सफाई होना,  
नहीं के समान होना, लज होना,  
मिटना, पड़ना, सफ़रना, मुक्त  
होना, शत्रु होना, सामने होना,  
मरना, हटना ।
- होश ( वि. ) नाशवत, मृत्युशोभ,  
मरनेका ( समय )
- होश ( सं. ) नाशवत शरीर,  
मिथ्या शरीर, मरने वाली देह ।  
आनन्द शरीर । [ का समूह ।
- होश ( सं. ) केन, ज्ञान, बुद्धि
- होश ( कि. ) मचाना मंचन करना,  
मचन करना, किसी चीज़े पचाव  
को फफेड़ना, कायदा निकालना,  
नाम पाना । [ शर ।
- होश ( वि. ) केनकुछ, ज्ञान-  
हितने ( सं. ) रौल, बल्लभा,  
संसाद, हल्लके, हल्लकी, बनावत  
हुल्ल ।

विश्व ( सं. ) दुर्लभ, तीक्ष्ण, रंगा, बलवा, राजसीह सम्राट्, टंटा, बलवा उपग्रह, कपट, बनावली ।

विश्वभोरी-२ ( वि. ) विश्वास-वादी, बेईमान, अचर्मी राजसीही उपग्रही ।

विश्वरी ( वि. ) बलवा करने वाला, दगार्ह, दुष्टानी, दगाबाज, कपटी, दुल्लड़ी ।

विश्वी ( सं. ) चाकर, भक्त, सेवक दास नौकर, गुलाम, किंकर ।

विश्व ( वि. ) आसक्ति में उन्मत्त, प्राण देने के लिये तय्यार, अत्यंत प्रसन्न, क्षमा ।

विश्वे ( स. ) तापतिल्ली, ग्रीहा, बकृत और ग्रीहा ये दोनों शरीरके अंग हैं, दाहिनी ओर बकृत, और बाईं ओर हृदन के नीचे ग्रीहा रहता है ये दोनों रक्त से उत्पन्न होते हैं प्परसे जो निर्बल मनुष्य निर्बल हो गया हो उसे यह रोग हो जाता है ।

विश्वी ( सं. ) बकरी, फिरनेकी चीज खीनेके लिये विश्व पर बाणा लिपटा हुआ होता है यह काठकी गरी, शीत ।

विश्वी ( सं. ) ६६ राज्य वर्धक एक वर्ग के जोग, कौम, फिरकी रंग, वाति, जोग, मर ।

विश्वी ( सं. ) एक वाति विवेक, पोर्चू गीज, कोई भी छोटी वाति गौरा, पोर्चू गीजों का राज्य नहीं होने के बाद नहीं रहेजो अक्षय पतित हिन्दू मुसलमान, जैन्स, योरोपियन गौरा ।

विश्व ( वि. ) दसो विश्व

विश्वी ( सं. ) एक इसाहि जुमाने का इशियार या औजार ।

विश्व ( वि. ) केरना, उलट-पुलट करना, हेर फेर करना, ।

विश्वे ( सं. ) दूत, देवदूत, गार्हद, फरिस्ता, देवसंवाद वाहक ।

विश्व ( सं. ) दसो विश्व

विश्व ( वि. ) दीमानी, मिखाजी, गार्हित, हटोका, जिही, बनबनकरा

विश्व ( सं. ) तत्वज्ञानी, जगज्जवा वर्ग जानने वाला, पंडित, तत्वसोचक, रसायनी, किन्न, जगज्ज

विश्व ( सं. ) तत्वज्ञान, विज्ञान तत्वज्ञान, बहुरता, फिअलकी ।

विश्व ( सं. ) रंग, दुर्लभ, तोराम, क्षय, टंटा, कौम ।

विश्वकोश ( वि. ) इगई उपग्रही,  
कपसी, दुकानी उपग्रह ।

विसिपारी ( सं. ) आत्मस्वाभा,  
आत्म स्तुति, अहम्मति, मगकरी,  
स्वामिमान, स्वयंस्तुति, बदाई ।

विसिपारी भोर ( वि. ) आत्म-  
स्वाभा, वमण्डी, गर्वित, अहंकारी  
अभिमानो, अपनी आप तारीफ  
करने वाला ।

विसेयो ( सं. ) परिभ्रम द्वारा  
अथवा रोगसे प्राणी मात्र के  
मुख से जो एक प्रकारका रससा  
निकलता है, मुखसे निकले  
आग, लार ।

विसेयो ककडी ( = ) इतनी  
मार मार्क्या कि तेरे मुखसे आग  
निकलेगी, तू बे दम हो जावेगा ।

शीक ( सं. ) शुष्कमुख, तबियत  
खराब हो जानेसे मुँहमें फोकापन,  
बे स्वाद ।

शीकुं ( वि. ) फोका, मन्दा, अच्छा  
( रंगमें ) बे स्वाद, रोग, कच्चा  
अथवा मचसे उतरा हुआ मुई,  
निलोब, उतरा हुआ ।

शीकु ( सं. ) फेन, झाग, किसी  
प्रवाही वस्तुपर मयन धूँक बैरता  
हुआ जोत पदार्थ ।

शीकु अगवुं ( कि. ) बकवास,  
मुखसे झाग जाना, फेन जाना ।

शीकुं ( कि. ) देखो दिखवुं ।

शीत ( सं. ) फंता, पतला निहार  
किनारी, गोटा, बेक, डोरी लैव,  
नाड़ा, नापने की पट्टी, साड़ीपर  
लगाने की किनारी ।

शीरस्ते ( सं. ) देखो दिस्ते ।

शीसी ( सं. ) आत्मस्वाभा, आत्म  
प्रशंसा, स्वयंस्तुति अहम्मन्वता,  
गर्व । [ फोका ।

शीसुं ( वि. ) दुरन्त दूटजाने वाला

कुं ( कि. वि. ) फुंकार, मुखसे  
एक दम छोड़ा हुआ स्वासका शब्द  
छि, हुस, हिस्, छिट, बत्, ।

कुं ( सं. ) फुंक, होठोंको संको-  
चन करके बोड़ा पोसा रखके  
पेटमेंसे निकाली हुई थोड़ीसी हवा,  
स्वास, सौंस, दम, प्राण, फुंकार,  
फूत्कार, समझायश, सिखावन ।

कुं निः निःणी अपी ( कि. )  
अज्ञानक मार खाना, मृत्युदोना,  
दम निकलना, ।

कुं बाप्पी ( कि. ) ( काममें )  
गुप्त परामर्श करना, समझा देना  
सिखा देना, समझाकर इच्छा-  
कार कर देना, पुनर्गम देना,

- उपेयन देना, उरकावा, उर देना, उपेय देना, थिका देना ।  
 ५'३ ११२५ ( कि ) मय खाना, उरना, फूँकते बीच उठना, फूँकते फटना ।  
 ५'३५ ( सं. ) फूँकनी, बहनामिका जिस के द्वारा फूँक दी जाये, भोगणी, फूँकनी । [ मड़कना ।  
 ५'३ भा३पी ( कि. ) फूँक मारना,  
 ५'३५ ( कि. ) फूँकना, फुलाना मड़काना, बेसाना, बुझाना, साम्त करना, मुँहसे बजाना, सपाटा खाना, सपाटेसे बेहाल होना, उरकाना बोध देना, समझाना, उपदेश करना, गुप्त बात प्रकट करना ।  
 ५'३ भा३मे ओ३ला ११५१ नवी कुछ भी अल नहीं, बरा भी बुद्धि नहीं, फूटी अलका ।  
 ५'३ भा३-मे३५ ( कि. ) उड़ा देना, ( वन ) प्रयोग कर खाना वन मालका उपयोग कर खाना ।  
 ५'३ भा३-मु३५ ( कि. ) दाहकिया करना, मृतक का अग्नि-संस्कार करना, मरम करवाकना फूँक देना ।  
 ५'३ भा३ भा३ ओ३मी ओ३नी-मरा भी अल नहीं, विज्ञान बुद्धि नहीं ।

- ५'३१२-३१ ( सं. ) कुम्हार, लोह के एक दम लाने का काम, कुछ सर्व आदि, कम्ह, कुम्हार ।  
 ५'३ भा३ ( कि. ) कितराना, उड़ाना खाना, ध्वज ध्वज करवा, छटाना, मड़ करना, रवाना, उठावना, बरबाद करना ।  
 ५'३५१२-३१३ ( सं. ) कुम्हार, कनकार, फूँ, मुल में पानी भर कर फुरे सम्भ, उर, मय, सर्व का बोध ।  
 ५'३ ( सं. ) बरसकक, पक्षिपक्ष, एक. सन्देश, बुद्धि, अरु, अस्ति, आपावहार ।  
 ५'३ ( वि. ) मेला, मन्दा, विरल, अधिशित, अनसीका ।  
 ५'३ भा३ ( सं. ) कम्हार, कुम्हार, सरना, ऐसी बुद्धि जिससे पानी ऊपर चढ़कर नीचे गिरे, पानी का ऊपर उठकर पतन ।  
 ५'३ ( सं. ) देखो हेम  
 ५'३ ( सं. ) मन्दा, मेला, रीति भाति में बोध ।  
 ५'३ ( सं. ) आप की अस्ति का, परि, बुद्ध, बुद्ध, बुद्ध का कर्म-)

कुक्षि ( सं ) गेह के समान कुली  
हुई वस्तु, कुक्ष्याक के नीतर का  
रबर, पयोदा, पेसाब की बैली,  
मूत्राशय, गुर्दा ।

कुक्षिपुं ( कि० ) फूलना, हवा मरना,  
विकसित होना, फैलना ।

कुक्षि ( कि० ) सूखना, फूलना, बढ़ना  
कुक्षिपुं ( कि० ) फुलाना, बुझाना,  
यमं स्थापन करना, शांति  
करना । [ हुवा ।

कुक्षिपुं ( वि० ) विकना, उठा

कुक्षि ( वि० ) शीतोष्ण, कम गरम ।

कुक्षि ( कि० ) फोला, उठाहुवा,  
गुम्हा ।

कुक्षिपुं ( कि० ) फुलाना, उरखाना,  
उत्तेजना देना, बढ़ाना ।

कुक्षि ( कि० ) बहुत देर तक  
भीनी हवा में तथा भाप में रहने  
से पीची वस्तु पर उत्पन्न हो-  
जाने वाले रंग के समान रंग,  
फण्डना, बफा जाना ।

कुक्षि ( सं० ) १२ इंच का माप,  
माप विशेष ।

कुक्षि ( वि० ) निकम्मा, टूटा,  
फूटा, फुटकर, मिथित, कईएक,  
पूराक पूराक, फुट, दोहरा, किस्-  
कील ।

कुक्षि ( वि० ) देखो कुक्षिः,

कुक्षि ( वि० ) गाधी, मोटी, (बाल)

कुक्षि ( सं० ) गाधी बाल,  
मोटी बाल ।

कुक्षि ( वि० ) सुन्दर, सोभायुत,  
खूब सूरत, दर्शनीय, मनोहर,  
विराटर्षक ।

कुक्षि ( कि० ) फूटना, टूटना,  
उगना, अंकुर आना, खिलना,  
विकसना, अंदरकी वस्तु बाहिर  
निकलने के लिये फटना, भाग  
जाना, जोरसे निकलना, फैलना,  
आरपार जाना, निकल पड़ना,  
दूसरी तरफ दिखना, ( अक्षर  
कागजपर ) प्रगट करने में आना,  
पक्षमेंसे निकल जाना, बिपक्षी हो  
जाना, रोग होना, कुन्सी इत्यादि  
कम रोगों का उत्पन्न होना, काम  
करनेसे बन्द होना, ( श्रद्धा )  
कमजोर होना, मूर्ख होना, मन्द  
होना, ( आत्म ) आवाज होना,  
( पदार्थ का ) ।

कुक्षी लोकायतः नृपिन्वकोदा इत्यादि  
कई जगहों में बहामोसे लेनदेन  
होता है ये बहामें खाने योग्य  
नहीं होती है, अतएव अतिशय  
दीर्घा भित्त के पास पैसा नहीं

उसके सिद्धि बंद बाक्य प्रयोग किया जाता है, फूटी बीड़ी नहीं, कसम कान के पैसा नहीं, ।

फूटी भाषा ( कि. वि. ) गुच्छ, हलका, पाखी, कम कीमत का, ओछा ।

फूटेला भाषा ( कि. वि. ) भाग्य-हान, फूटी कस्मत का, अभागा, दुर्देशा प्रस्ता ।

फूटेला भाषा ( कि. वि. ) स्मृति-हीन, वे समय, अभावधान, बार बार भूलने वाला ।

फूटाफूटा ( सं. ) देखो फूटाफूटा

फूटीला ( कि. ) लुप्त हो जाना, टूट जाना, फूट जाना, टुकड़े टुकड़े हो जाना ।

फूली ( सं. ) कली, कौपल, मंजरी, कोमल पत्ते, फुजगी, फुन्सी, फोड़ा, दबोरा, छला, बुलबुला, बुवबुदा । [ का शब्द ।

फूनी ( सं. ) फुंकार, स्वास्त्याग

फूनी ( कि. ) फुफकारना, फुंकारना ।

फूटी ( सं. ) गोल चक्कर में घूम कर खेलने का एक बियों का खेल, फूटी, दल विशेष, फूटि-यों का खेल, तारों के आकार का चिन्ह, ४, फूली ।

फूटी ( सं. ) गन्ध युक्त एक प्रकार का जीव, एक प्रकार का वास ।

फूटी ( सं. ) खेलते समय गोल चक्कर में घूमना ।

फूटी-दीना ( सं. ) एक प्रकार का पीरा, पीरीना नामक दुग्ध युक्त पीरा ।

फूटी ( सं. ) एक प्रकार का कीड़ा, कीट विशेष, एक प्रकार का उड़ने वाला, जीव । [ हुंकार ।

फूटी ( सं. ) फुंकार, फुंकार,

फूटी ( सं. ) फू फू, शब्द विशेष, श्वास परित्याग का शब्द, शीघ्र शीघ्र मांस का शब्द । [ दाह ।

फूटी ( सं. ) फूटेदार, गुच्छ

फूटी ( सं. ) एक प्रकार का केसर जा फूंद के रूप में लटक रहा है । झुंका, गुच्छा ।

फूटी ( सं. ) देखो फूटी

फूटी ( सं. ) गुच्छा, लुब्धा, फुन्दा फूरा, झुमर, झुमका, रेशम कल-बपु आदि का डोपीपर लटकने का गुच्छा, फूटी डोपीपर लटकने वाला गुच्छा, चांदी की चुबड़ियों का फूटा ।

५१० ( सं. ) सावर नौकी, कस्तुर  
हावस, बाका भर, कुंभीकर, नौका  
अथवा अन्य जलवाहन से सामान  
इत्यादि उतारने के लिये लकड़ी  
अथवा पत्थरों का बाका हुआ पुल।

५११ ( सं. ) अक्कास, कुठी, मुक्ति  
फुल्लत, विनाम आराम।

५१२ ( कि. ) हिलना, चलना,  
चुराव, होना बहुत, बार स  
अवकाश।

५१३ ( सं. ) पुष्प, पुष्प, कसुम,  
फूल, कलिका, कली, मलिनता,  
बुधा। भाँक में सफेद दाग, फूलों,  
लिमिश्रयकी गिरीया गाँठ।

५१४ ( सं. ) एक प्रकार की आतिश  
बाजी जिसको चलते समय फूल  
समान प्रकाश होता है, फुलसबाजी।

५१५ ( सं. ) फुलकारी, एक  
प्रकार की आतिशबाजी, चिनगारी।

५१६ ( सं. ) तारा, तारक, ग्रह  
मन्त्र।

५१७ ( सं. ) ब्याह होने वाले  
लड़के लड़के के बहने का बोझ  
छोटी पतली रोटी, चपाती।

५१८ ( सं. ) तेज से हुआ हुआ  
बल, फूलीकावन, मान्य को  
हूँक हो।

५१९ ( वि. ) कुम्भवीर्य फूल  
बाध ऐलाम्बाकि, (सूटी) प्रसवसे  
फूलनेवाला, सत्य सम्प्रदाय प्रसव  
होने वाला।

५२० ( सं. ) वह छोटी जिसके  
बारों ओर फूल गुँथे हों।

५२१ ( सं. ) कुम्भित बल,  
फूलदार पेड़, वह पेड़ जिस में  
पुष्प लगते हों।

५२२ ( सं. ) फूल रत्नने  
का बरतन, बह्मपात्र। इस में  
फूल मजाये जाते हैं, मुक्त दस्ता  
रत्नने का पात्र।

५२३ ( सं. ) कियों के पैरे में  
पहिरने का एक प्रकार का  
आभूषण। [ मस्त।

५२४ ( वि. ) फलक, कैल,  
५२५ ( सं. ) दाह का अर्क, शराव  
का अर्क, अलम्बोहल।

५२६ ( वि. ) जो फूल कलम करे  
अच्छा, स्वच्छ, साफ, पवित्र।

५२७ ( सं. ) एक प्रकार की  
सुपारी।

५२८ ( सं. ) एक प्रकार का  
पकाव, जो अथवा तेज में लका  
हुआ भाँके का मसालेदार पदार्थ  
विशेष।



कुल्लु (कि.) कुल्लना, हवा भरना।

कुल्लु (कि.) कंचा होना, उठना, फूलना, खिलना, बीजव में आना, विकसित होना, बीर फूल आना, सूजना, सोजा आना, छटी बढाई दिखाना, बाहिर आना, पानी लगने से लकड़ी का फूलना, मोटा होना, कंचा होना, रोग से मोटा होना, बादी से फूलना, आनन्दी होना, गर्भ रहना, दिन रहना।

कुलीने धेउ मरु (कि.) मिथ्या डंवर रसना, बाझा डंवर करना।

कुलीने रेडा मरु (कि.) आँखें रद से सूज आना, खूब सूज आना।

कुलीने शल्लो मरु (कि.) फूल के कुप्पा होना, आनन्द में मग्न होना बाग बाग होजाना, गह्वर होजाना।

कुलीने-क (सं.) बढाई, प्रशंसा, बढावा, उत्तेजना।

कुलीने (सं.) कियों के पैर में पहिने का एक प्रकार का चादी का आभूषण। एक प्रकार का जेवर।

कुलीने (कि.) फूलना, कंचा करना, हवा भरना, मिथ्या प्रशंसा से बढावा, कड़ी बढाई देना, प्रशंसा करना।

कुलीने (कि.) मिथ्या प्रशंसा से फूल जाना, अभिमान होना।

कुलीने (सं.) बढाई, प्रशंसा, डींग, सेखी, अभिमान।

कुलीने (सं.) एक जाति की वनस्पति, छोटा प्याज।

कुली (सं.) आँख में का रोग कुली, फूला, कुली, फोला।

कुली (सं.) वे लकड़े लकड़ी पिन का विवाह होने वाला हो उनकी बनोरी या निकासी निकालने के लिये पोड़ा, विवाह का जुनूस, बनोरी।

कुली (सं.) फूलों की सुगन्ध से बना हुआ तैल, सुगन्धित तैल सुसुबदार तैल।

कुली (सं.) जिस में पुष्प हों, फूलोंदार, सुसुमित, तास के खेल में फूल वाले पत्ते (विधिना)।

कुली (सं.) हथ्य, रुपवा, पैसा, धन, दौलत, टका, जर।

कुली (सं.) बढाई, प्रशंसा, डींग, सेखी,

कुली (सं.) देखो कुली

कुली (सं.) देखो कुली

कुली (वि.) विजीव, वेदम, वेदम व्यवस्था, निर्दल, हलक, निरन्ता।

कुसुम ( वि. ) पूर्ववत्  
 कुसुमि ( वि. ) पूर्ववत्  
 कुसुमावतु ( कि. ) बहकावा, दम  
 देना, पछी पछाना, पुकारा देना,  
 झांसना, चोकावेना, पोटना,  
 फुसलाना ।  
 कुसुमि ( वि. ) देको कुसुमि  
 बबनामी, तोहमत, बछ ।  
 कु ( सं. ) कफूदन, किसी वस्तु  
 पर सबने अथवा गलने पर पैदा  
 हुए कफूदनके रोएं, बिकनाइट ।  
 कुम्भ ( वि. ) बिकना, वणवार,  
 कुम्भी ( वि. ) पूर्ववत्  
 कुम्भ ( सं. ) बड़ईका आभास,  
 १२ इंच, परिमाण विशेष, एक  
 प्रकारका खरबूजे के समान फल,  
 अनैक्य, बैर, विरोध, टूट, अंतर,  
 अनयन, अदावत ।  
 कुम्भ ( सं. ) इस अथवा लताका  
 सुगीबयुक्त पंखडियोंदार एक कां-  
 मक शोभायुक्त अवयव जो विवे-  
 ककर फलोत्पत्तिका कारण होता  
 है । विकसित कलिका, खिली हुई  
 कली, कुसुम, पुष्प, पुटुप, बहुलसे  
 सुशोभी फलीयों फूल कहलाती हैं,  
 फूलके आकारका सीना, चांदी  
 हाथीदांत कायजू इत्यादि, आतिथ  
 -वाची चलाने पर उसमेंसे निकले

हुये फूलके समान, फूलक निम्न,  
 अंकनमें लगेदमन, फूल, फूली,  
 नेत्रोंके विशेष । कुमारी परसे  
 उतारा हुआ भारीक धूसा, बहुरंग  
 किससे बने रहता है, गर्माग्न,  
 कमल ( सीका ) पैरों की अंगु-  
 लियोंमें पहिनेका आभूषण, नाकमें  
 पहिनेका कांटा वा लौंग, दही  
 आदि मयनेकी रई के अंशके फूल  
 पुरुषकी लिंगविका अभ्यास,  
 लिंगकासिर, लिंगीसुपारी, बहुत  
 समय ( सीका ) औषधिकी आ-  
 गकी गर्मासि तपाकर उसमेंका  
 उकाया हुआ भाग, हलका, माजुक,  
 कोमल, कच्चा, सुकुमार, सुन्दर,  
 मनमोहक ।

कुम्भ ( कि. ) बहुतसाव होना,  
 ( सीका ) आला बंधना.

कुम्भ अथि छेकाम घंघा होने परभी  
 नेठा रहे अथवा काम करने में  
 आलस करता हो तब उसके लिये  
 बहवाक्य प्रयोग किया जाता है  
 कि " कुम्भे, कुं कुम्भ अथि छे ?  
 ते काम करते नथी "

कुम्भी ( सं. ) तुच्छ भेट,  
 बधाईकी सेवा, मानपूर्वक अंतर  
 भेट ।

५०३ ( सं. ) देखो कुली

५०३ ( सं. ) कुलका, पत्नी छोटी होती ।

५०४ ( सं. ) वह मनुष्य जो आपसी सुखानंद अपना अपनी मित्रता प्रसंसा सुनकर फूलकर कुप्ता हो जाये ।

५०५ ( सं. ) आतिथ्याज, आतिथ्याजीका काम करने वाला ।

५०६ ( सं. ) आँखमें सफेद फूला, फुस्ली, नेत्र रोग विशेष ।

५०७ ( सं. ) घास, तृण, चारा, सदा घास ।

५०८ ( वि. ) बका हुआ, हारा हुआ, बकित, जिसका साँस भर आया हो, व्यथित । [ अर्थ में, ]

५०९-५१० ( कि. वि. ) बक जाने के

५११ ( कि. ) प्रक्षेपण करना, स्थायना, दूर कर देना, निकालना, अलग कर देना, छोड़ने को सर्पट चौकाना, डालना, पटकना, छोड़ना, पात करना ।

५१२ ( सं. ) कपड़े से कसी हुई कमर, कमरबन्धा, कमरपेटी, पारिफद ।

५१३ ( सं. ) सुरेखा, साका, सुंदर बन्धा, एक प्रकारकी छोटी बन्धी,

उन्नीस विंशति, सात छह बंदि के बीच का वह भाग जिसकी रस्सी बँधेटी कसती है । अतः, ठपार्ह, छक, भेद ।

५१४ ( सं. ) कुबलना, कुदना, नौचना, खराब कर डालना, मसलना, पिचलना । [ कों गर्दना ]

५१५ ( सं. ) सर्प का फन, छाँट

५१६ ( सं. ) मृगी, रोग विशेष, मूच्छा रोग, केकड़े का रोग, उन्माद, बार्ह ।

५१७ ( सं. ) केकड़ा, बड़का, शरीरस्थ अंतरंग अवयव ।

५१८ ( सं. ) भरी भी ( सं. ) रोग विशेष,

५१९ ( कि. वि. ) बहृधा, चारों-ओर चतुर्दिक्, हुत गति में, इच्छानुसार, चाहिये, वैसा भटकता हुआ । [ बका हुआ, भमित ]

५२० ( कि. वि. ) खूब गर्म, डीला,

५२१ ( कि. वि. ) देखो ५२२

५२३ ( सं. ) फिसला, न्हाव, निबटारा, परिजाम, सार, इन्साफ, जजमेंट ।

५२४ ( वि. ) तुरंत दूढ़ने योग्य,

( सं. ) एक प्रकार के छोटे काच-बर का बनाया हुआ घर जो औपकि आदि के ऊपर से बनाया है ।

कुसकुसुं ( वि. ) पूर्ववत्  
कुसकुसिथुं ( वि. ) पूर्ववत्  
कुसलावथुं ( कि. ) बहकाना, दम  
देना, पछी पछाना, भुलावा देना,  
झांसना, धोकादेना, पीटना,  
फुसलाना ।

कुसिथुं ( वि. ) देखो कुसकुसिथुं  
बदनामी, तोहमत. बघा ।

फू ( सं. ) फफूदन, किसी वस्तु  
पर सहने अथवा गलने पर पैदा  
हुए फफूदनके रोएं, चिकनाहट ।

फूअवाथुं ( वि. ) चिकना, रुएदार,

फूभी ( वि. ) पूर्ववत्

फू२ ( सं. ) बड़ईका आधागज,  
१२ इंच, परिमाण विशेष, एक  
प्रकारका खरबूजे के समान फल,  
अनैक्य, बैर, विरोध, दूट, अंतर,  
अनबन, अवावत ।

फू३ ( सं. ) वृक्ष अथवा लताका  
सुगंधयुक्त पंखड़ियोंदार एक को-  
मल शोभायुक्त अवयव जो विशे-  
षकर फलोत्पत्तिका कारण होता  
है । विकसित कलिका, खिली हुई  
कली, कुसुम, पुष्प, पुद्गुप, बहुतसे  
वृक्षोंकी फलीमी फूल कहलाती है.

फूलके आकारका सोना, चांदी  
हाथीदांत कागज इत्यादि, आतिथ-  
वाजी चलाने पर उससेसे निकले

हुये फूलके समान, फूलका चित्र,  
आंखमें सफेदभाग, फूला, फूली,  
नेत्ररोष विशेष । सुपारी परसे  
उतारा हुआ बारीक भूसा, वहस्थान  
जिसमें गर्भ रहता है, गर्भाशय,  
कमल ( स्त्रीका ) पैरों की अंगु-  
लियोंमें पहिनेका आभूषण, नाकमें  
पहिरनेका कांटा या लौंग, दही  
आदि मयनेकी रई के नाचेका फूल  
पुरुषकी लिंगेद्रियका अग्रभाग,  
लिंगकासिर, लिंगकीसुपारी, ऋतु  
समय ( स्त्रीका ) औषधिको आ-  
गकी गर्मीसे तपाकर उसमेका  
उड़ाया हुआ भाग, हलका, नाजुक,  
कोमल, कच्चा, सुकुमार, सुन्दर,  
मनमोहक ।

फू४ आवथुं ( कि. ) ऋतुजाव होना,  
( स्त्रीको ) आशा बंधना.

फू५ थुथे छेकाम धंधा होने परभी  
बैठा रहे अथवा काम करने में  
आलस करता हो तब उसके लिये  
बहवाक्य प्रयोग किया जाता है  
कि “ छेने, थुं फू५ थुथे छे ?  
ते क्षम करतो नथी ”

पूखी धांधडी ( सं. ) तुच्छ भेट,  
बधासाके सेवा, मानपूर्वक अल्प  
भेट ।

५५१ ( सं. ) देखो कुधी

५५१ ( सं. ) फूलका, पतल छोटी रोटी ।

५५१ ( सं. ) वह मनुष्य जो चापलूसी खुशामद अथवा अपनी मिथ्या प्रशंसा सुनकर फूलकर कृपा हो जावे ।

५५१ ( सं. ) आतिथबाज, आतिथबाजीका काम करने वाला ।

५५१ ( सं. ) आँखमें सफेद फूला, फुल्ली, नेत्र रोग विशेष ।

५५१ ( सं. ) घास, तृण, चारा, सड़ा घास ।

५५१ ( वि. ) थका हुआ, हारा हुआ, थकित, जिसका साँस भर आया हो, व्यथित । [ अर्थ में,

५५१-५५१ ( कि. वि. ) थक जाने के

५५१ ( कि. ) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर कर देना, निकालना, अलग कर देना, घोड़े को सर्पट दौड़ाना, डालना, पटकना, छोड़ना, पात करना ।

५५१ ( सं. ) कपड़े से कसी हुई कमर, कमरबन्धा, कमरपेटी, पारिकद ।

५५१ ( सं. ) मुरेला, साफ़, मुँह-बन्धा, एक प्रकारकी छोटी पगड़ी,

उष्णीष विशेष, ताब इस आदि के बीच का वह भाग जिसकी रस्सी नगैर बनती है । कमट, ठगई, छल, भेद ।

५५१ ( सं. ) कुचलना, कूटना, नोंचना, खराब कर डालना, मसलना, पिचलना । [ कां गर्दना

५५१ ( सं. ) सर्प का फन, साँप

५५१ ( सं. ) मृगी, रोग विशेष, मूर्च्छा रोग, फेफड़े का रोग, उन्मद, बार्ह ।

५५१ ( सं. ) फेफड़ा, संकृत, शरीरस्थ अंतरंग अवयव ।

५५१ ( सं. ) रोग विशेष,

५५१ ( कि. वि. ) चहुँधा, चारों-

ओर चतुर्दिक्, द्रुत गति में, इच्छानुसार, चाहिये, वैसा भटकता हुआ । [ थका हुआ, थमिता

५५१ ( कि. वि. ) खूब गर्म, डीला,

५५१ ( कि. वि. ) देखो ऐसल

५५१ ( सं. ) फैसला, न्याय,

निबटारा, परिणाम, सार, इन्साफ,

जजमेंट ।

५५१ ( वि. ) तुरंत दृढ़ने योग्य,

( सं. ) एक प्रकार के छोटे जान-

वर का बनाया हुआ घर जो औषधि आदि के काम से आता है ।

ई०अ० (कि.) दे देना, अवा करना,  
नुकाना, देना, उभूण होना,  
फोटना, तोड़ना, खण्डित करना,  
भंजन करना, टालना, मिटाना ।

ई० (सं.) भी गरम रखने के  
लिये दीपक पर रखने की ताबे  
की जीप । शाय ।

ई० (वि.) उत्तम, उम्दा, श्रेष्ठ.  
अच्छा, (अंग्रेजी शब्द) फाइन्  
(का अपभ्रंश)

ई०री (सं.) देखो ई०३३

ई० (सं.) अंतर, भिन्नता, फर्क,  
अंतर, पृथक्ता, हेरफेर, जुदाई,  
चक्कर आना, (रोग) जुमाव,  
घेर, बक्रता, बांकापन पलटाव,  
बदली बाकी, शेष, कपड़े के  
नीचे भाग का घेराना, (कि. वि.)  
पुनः बहुरि, बारबार ।

ई० ५४वे० (कि.) आराम होना,  
पूर्वा पेक्षा अच्छी दशा होना ।

ई० ५४वे० (कि.) अच्छा करना ।

ई० ५४वीं ५४वीं (कि.) वचन  
दे कर बदल जाना, वचन भंग  
करना, सामने बोलना, धूक कर  
साठना सामने के पक्ष में हो  
जाना चुपी आवत में बदलना ।

ई० आववा (कि.) चक्कर आना,  
सिर घूमना, बी फिरना ।

ई० कुंअ० (सं.) गड़बड़, मोठ  
मोठ, चक्कर, मंडल, भूलभुलैया,  
घोटाला ।

ई०अ०आ० ५४० (कि.) चक्क-  
रमें आना, गड़बड़ीमें पड़ जाना  
जिससे धीघ्र उद्धार न होवे ऐसे  
झगड़े में फंसना ।

ई० आववा (कि.) चक्कर खाना,  
इधर उधर भटकना, मारे मारे  
फिरना ।

ई० ५४वे० (कि.) अंतर पड़ना,  
फर्क पड़ना, आराम होना,  
फायदा होना, प्रतिकूल होना,  
रूपान्तर होना, चक्कर पड़ना ।

ई० ६८४ (वि.) आढ़ा तिछा, उलटा  
सीधा, आढा, उलटा विरुद्ध ।

ई० ५६थी (वि.) उलटा पलटी,  
हेर फेर, परिवर्तन, स्थान परि-  
वर्तन । [लौटना ।

ई०व०शु० (सं.) परिवर्तन, फेरफार

ई०व०पुं० (कि.) बदलना, जगह ब  
दलना चलना, इधर उधर ले  
जाना, मोठ चक्कर में घुमाना,  
चाक पर बढाना, घुमाना, परि-  
भ्रमण करना, फेरफार करना,

दुस्त करना, रद्द करना, नार्मन्त्र करना, बदलना, पुराने के स्थानपर नवीन करना, धीरे धीरे धिसना, पपोलना, पुनर्कारना, उलटना उबलना, एक वस्तु रख कर दूसरी वस्तु लेना, तर्क के जाना, उत्तराना, पक्ष बदलना, मौआ करना, ऊपर नीचे करना, स्थानान्तर करना, प्रकट करना, फैलाना, फजाहत करना । भन ईश्वरे ( कि. ) निश्चय किया हुआ भंग करना, छोटा समझाना, डेडे। ईश्वरे ( कि. ) छोड़ा टहलना छोड़ा भस्तीपर न आवे अतः गर्म करना, भन ईश्वरुं ( कि. ) घर बदलना, दूसरे घर में जा कर रहना, हाथ ईश्वरे ( कि. ) चोरी होना, ठगे जाना, लूटे जाना, भाये हाथ ईश्वरे ( कि. ) आशिर्वाद देना, भांभ ईश्वरी ( कि. ) गुस्ता लाना, धमकाना, आखें बताना, धुंका, पुठ ईश्वरी ( कि. ) पाठ दिखाना, पीठ फेरना, ईश्वरी नांभपुं ( कि. ) उल्ट देना, ईश्वरे ( कि. ) वह जहाँ घूमकर जाना पड़े, चक्कर, परिधि, घेर, घेर ।

ईश्वरे ( सं. ) रास्तेपर घूम घूम कर बेचने वाला, फेरी वाला ।

ईश्वरे ( सं. ) बाढ़, नौच, सूखी, लिस्ट, केटरिंग, फिहरिस्ट ।

ईरी ( सं. ) चक्कर, बक्क, बार, प्रदक्षिण, भिका मांगना ।

ईरीवाणे ( सं. ) बिसाती, पैकार, गली गली घूमकर बेचने वाला ।

ईश्वरुं ( कि. ) पाखाने जाना, टही जाना, जंगल जाना, झाड़े जाना, शौच जाना, मल्लोत्सव करना ।

ईशे ( सं. ) प्रदक्षिण, पुनाच, आंटा, चक्कर, आवागमन, दूर जाना, दूर भटकना, टही, पाखाना, बक्क, बार, समय ।

ईशे ईश्वरे ( कि. ) बरकन्या का विवाह संस्कार के समय यज्ञवेदी की प्रदक्षिणा करना, भांवरें फिरना

ईशे लाभवे ( कि. ) टही लगना, दस्त लगना, पाखाना होना ।

ईशे ( सं. ) पाठन, सिध्दा, शोंग सिध्दा आचरण, छळ, बहलना, भिच, अपराध, चोरी के कपेटीहुई वेद ।

इक्ष्वा ( वि. ) पाकणी, डोंगी, बहानाखोर, छली फैली, मिसक-रनेवाला ।

इक्ष्वाभीन ( सं. ) जमानत, जिम्मा, जिम्मेदार, प्रतिभू, सदा-बारी जामिन ।

इक्ष्वा ( कि. ) फैलना, पसरना, विस्तृत होना, औषना, बढना, कुठकना ।

इक्ष्वा ( कि. ) पूर्ववत् ।

इक्ष्वा ( सं. ) बढाव, प्रसार, बुद्धि चौड़ाई ।

इक्ष्वा ( कि. ) फैलाना, पसारना बिछाना, विस्तारयुक्त करना, चौड़ाना, प्रचार करना, प्रकाश करना लम्बा करना बढाना, प्रसिद्ध करना ।

इक्ष्वा ( कि. ) फैलना, बढना, पसरना, बिखरना, बिधरना, चारोंभोर फैल जाना, । [वृद्धि ।

इक्ष्वा ( सं. ) प्रसार, विस्तार,

इक्ष्वा ( सं. ) सुसीबत, कठिनता, उपपत्ति, पीड़ा, आपत्ति, संताप, अद्वयन, विग्र, बाधा, क्लेश,

इक्ष्वा ( कि. ) दुखहोना, क्लेश होना, सुसीबत पाना, विग्र होना ।

इक्ष्वा ( कि. वि. ) बिपत्ति कैसला हो चुका, हो, अंतिम परिणाम प्राप्त ।

इक्ष्वा ( सं. ) ठहराव, फैसला, परिणाम, न्यायपत्र, निर्णय, समाधान, तय, निपटारा, जजमेंट, इन्साफ ।

इक्ष्वा ( कि. ) तौड़ना, भंगकरना, मर्दन करना, खण्डन करना ।

इक्ष्वा ( सं. ) फूफी, भूवा, बापकी बहिन । [ पुनः भ्रमण ।

इक्ष्वा ( सं. ) बारंबार चक्कर, पुनः

इक्ष्वा ( सं. ) आराम, रोगक्षमन, सेहत, रोगमें कमी । [ बहिन ।

इक्ष्वा ( सं. ) फूफी, भूवा, बापकी

इक्ष्वा ( सं. ) पतिकी भूवा, पतिकी फूफी, पतिके बापकी बहिन ।

इक्ष्वा ( सं. ) फूफीकी सी हुई भेट, भूवाकी भेट ।

इक्ष्वा ( सं. ) रव, खराब, व्यर्थ, निकाम, मिथ्या, बुरा फीका, निरस बेस्वाद ।

इक्ष्वा-भट ( कि. वि. ) व्यर्थजाने योग्य, मुफ्तका सेतमेत, बिना पैसोंका, निकम्मा । [ मिथ्या ।

इक्ष्वा ( सं. ) व्यर्थ, निकम्मा,



शेअर इमागी ( सं. ) शेअरी, शींग, अहम्मन्यता, अकदवाजी ।

शेअरतु ( वि. ) सुप्तका, सेतमे-  
तका, बिला प्रमाण, धर्मार्थक ।

शेअरिनु ( वि. ) सुप्तखोर, इरागी,  
जो बिना पैसे खर्च काम में आवे ।

शेअरीजो ( वि. ) पूर्ववत ।

शेअर ( सं. ) सेना, सैन्य, फौज  
सैनिकदल, लश्कर, टोला, जत्था,  
मनुष्यों की भीड़, लड़ने वालों की  
मंडल ।

शेअरदार ( सं. ) शहर-गावकी रक्षा  
संभाल करने वाला आफीसर,  
कोतवाल, पुलिस मजिस्ट्रेट ।

शेअरारी ( वि. ) दोषी, अपराधी,  
( सं. ) चोरी खून लड़ाई इत्यादि  
अपराधोंका न्यायालय, अथवा  
तत्सम्बन्धी समस्त कार्य ।

शेअरारी अदालत ( सं. ) वह  
न्यायालय जहाँ लड़ाई सगदा  
खून चोरी इत्यादि अपराधोंका  
विचार होता हो ।

शेअरारी अमलदार ( सं. )  
पुलिस आफीसर ।

शेअरी ( सं. ) देखो शेअरी

शेअरु ( वि. ) तोड़ना, फोड़ना,  
अंधकारना, खण्डन करना, चूर्ण

करना, अंगद्वारा शब्द करना  
( पटाखा इत्यादि ) बाहिर करना,  
छोड़ना, चलना ( बम्बूक ) कूटना,  
( माथा ) धार चुसेक कर उठाटना  
( फोडा फुन्सी इत्यादि ) गुप्त बात  
प्रकट करना, सुरंग लगाना, शरीर  
के किसी अवयवका कार्य बन्द  
करना, कठिन शब्दद्वारा कानको  
कष्ट पहुँचाना ।

शेअरी शेअरु ( वि. ) दैवयोगसे जिस  
समयको आबने उसे भोग लेना,  
सिरपर आई आफत सहलेना ।

शेअरी शेअरी ( वि. ) निहाद्वारा  
तुच्छ करना, छिद्रान्वेषण कर  
लोगोंको दिखाना ।

शेअरी शेअरी शेअरु ( वि. ) खुल्लम  
खुल्ला समझकर कहना, अपना गुप्त  
दुःख लोगोंको कहकर प्रकट  
करना, गुप्त बात कहना ।

शेअरी ( सं. ) देखो शेअरी

शेअर ( वि. ) कतलद्वारा बध किया  
हुआ, मृत्यु,

शेअर ( सं. ) छिलका, भूसा,  
जबफक आदिके उपरका भाग,

शेअर ( सं. ) छिलका, भूसा, चिट,  
कागजका टुकड़ा, जमाहुवा ( दही  
का बर ) [ ( मनुष्य )

शेअर ( वि. ) बाल, पोसा निर्बल

ईश्वर ( वि. ) सुलायन, कोमल,  
नर्म, पिलपिला, ढीला, पिचपिच ।

( सं. ) सुपारी, पुंगीफल ।

ईश्वरी ( सं. ) सुपारीका पेड़ ।

ईश्वरी ( सं. ) छाया, फोला, पानीसे  
भरा हुआ फोला,

ईश ( सं. ) देखो ११५

ईश ( सं. ) गंध, बास, महक, वृ,  
सौरभ, यश, आश्चर्य, इज्जत ।

ईश्वर ( क्रि. ) बासदेना, गंधदेना,  
बूकना, महक आना ।

ईश्वर ( सं. ) स्फूर्ति, होशियारी,  
सावधानी, बचलता ।

ईश ( सं. ) टपका, छीटा, बूंद,  
बिन्दु, फुहार, टपका ( रंगका )

( वि. ) मोटा, मुच्छे सरीखा ।

ईश ( सं. ) बुलबुला, वर्षाकी बूंद ।

ईश ( सं. ) दूटी हुई इमली बिना  
बीजकी इमली ।

ईश्वर ( क्रि. ) छिलके निकालना,  
बीज निकालना, चूटना, चुनना ।

ईश्वरी ( क्रि. ) उठाखाना,  
चूटखाना, निन्दा करना, चरचा,  
करना, किसीका धन माल अथवा  
पैसा टका उठानाखाना, धन द्रव्य  
लेकर के कंगाल कर देना, भीत-  
रका असली माल निकालकर  
छोड़ना ।

ईश्वरी ( सं. ) छोटी फुनसी, छोटा  
फफोला, फुली, फूली ।

ईश्वरी ( सं. ) छाया, फोला, स्फो-  
टक, फफोला, चर्मरोग विशेष ।

ईश्वरी ( क्रि. ) बला  
टलाना, पीडा हटाना, आफत  
टलना, झगडा भिटना, संशय  
टलना वहम दूर होना, छुटकारा  
पाना ।

ईश्वर ( सं. ) फरेब, लालच,  
फुसलाहट, पोटनेकी क्रिया ।

ईश्वर ( क्रि. ) पोटना, लल-  
चाना, बुरा समझना, फुसलाना  
बहकाना ।

ईश्वर ( सं. ) बहकानेवाला,  
फुसलानेवाला, बिगाड़ने वाला ।

अ

अ=गुजराती वर्ण माला का ३४ वां  
अक्षर, प वर्ण का तीसरा अक्षर ।

अक्षरी ( सं. ) स्त्री, औरत, पत्नी,  
बधू ।

अक्षर ( सं. ) पाखण्ड, धंभ,  
मतलब, सिद्धि का ध्यान, बगुले  
का सा ध्यान ।

अक्षर ( वि. ) डोंगी, धंभी,  
पाखंडी, बकमफ, बगुला भ्रमस्त ३

५१५५ ( सं. ) बकवाद, निरर्थक  
बहु वाद, बहुबदाहृत, शुल्मपादा,  
व्यार्थ की बातें; बकसक ।

५१५५६-२१ ( सं. ) पूर्ववत् ।

५१५५७ ( सं. ) बकी, शिक्षा,  
बहुबदाने वाला, लभार, बिड़बिड़ा

५१५५८ ( कि. ) देखो ५१५६ ।

५१५६ कुडी ( सं. ) बकरे की तरह  
खड़े होना और कूदना, कूद फाँद,  
खफान, एक प्रकार की कसगत,  
मस्ती ।

५१५६७ ३२५ ( कि. ) तागड़ बिजा  
करना, तूफान करना, मस्ती में  
आना । [ शय गरीब होजाना ।

५१५७ ३३५ ( कि. ) अति-

५१५७ ३३६ ( सं. ) मुसलमानों का  
एक स्वीकार-बकरीद ।

५१५८-५१६ ( सं. ) बकसक, मिथ्या  
भाषण, बकसक, बाद विवाद ।

५१५९ ( कि. ) सकमारना, बकवाद  
करना, बिना बिचारे बोलना,  
मिथ्या भाषण करना, गप्पें मारना,  
छोट बहना ।

५१६० ( सं. ) निरर्थक भाष, व्यर्थ  
बोलावारा, बकवाद ।

५१६१ ( सं. ) जझाई, जंगदाई,  
जमुहाई, मुंड फाड़ने की किया  
विशेष ।

५१६२ ( वि. ) बाकी, शेष, बचाहुवा ।

५१६३ ( सं. ) कम, उलटी, छर्दि,  
उबाकी, उछांट ।

५१६४ ( सं. ) चिन्हाहट, कोलाहल,  
शोर, गुलामपादा हल्ला, बकसक ।

५१६५ ( सं. ) जैसे तैसे दुकान लगा  
बैठने वाला बनिवा, बैश्य, बनिवा ।

५१६६ ३३६ ( सं. ) भाजी बजार, भाक  
वाजार, कुंजबोकी दुकानें, भाक  
मार्केट । [ भाजी ।

५१६७ ( सं. ) हरीतरकारी, भाक

५१६८ ( सं. ) पूर्ववत्

५१६९ ( कि. ) बकसक करना,  
बिठाना, उसकाना, बहुकाना,  
बिठाना ।

५१७० ( सं. ) प्यारा, प्रिय, लाइनों  
( यह शब्द बालकको सिखाते  
समय जड़ में बोलते हैं । )

कपूतर, पैहुकी, मेरुका बच्चा ।

५१७१ ( सं. ) कोलाहल, शोर, गुल,  
हल्ला, गुलामपादा, होहल्ला, भाषा,  
शब्द ।

५१७२ ( कि. ) लौक करना, हल्ला  
मचाना, भाषण देना, बिठाना ।

अक्षर ( कि. ) देना, प्रश्न करना, बर्णन करना प्रसादी देना, अर्पण करना, कमा करना, मुआफी देना ।

अक्षी ( सं. ) फौज का सरदार, फौजी आहमियों को वेतन देने वाला आफीसर, जनरल, कमान्डर इन चीफ ।

अक्षीस ( सं. ) पुरष्कार, भेट, इनाम, प्रसन्नता पूर्वक भी गई वस्तु, बड़े की ओरसे छोटे को दी हुई चीज, भेट, नजर ।

अक्षत ( सं. ) होनहार, कर्म, प्रारम्भ, किस्मत, भाग्य, तकदीर, भविष्य ।

अक्षतर ( सं. ) उत्तम लोहेकी कड़ियों द्वारा जालीदार बनाहुवा बदन पर पहिरनेका वस्त्र विशेष जिसे योद्धा लोग संग्राम में पहि-  
नकर जाते हैं, कवच, बर्म, शिलम बाजु, सचाह ।

अक्षतावर ( वि. ) भाग्यशाली श्रीमंत, सुश किस्मत, सुखी, तकदीरवाला ।

अक्षतावरी ( सं. ) सुशकिस्मती, चौखम्ब, अच्छी तकदीर, भाग्य-  
वानी ।

अक्षर ( सं. ) इतिहास, तथारीख, पूर्ववृत्तांत, कथा, इतिवृत्त, वृत्तांत, हकीकत ।

अक्षर ( कि. ) लगना, जुमना, खटकना, पचना, बिखरना, साजना ।

अक्षर ( कि. ) देखो अक्षर

अक्षरी ( सं. ) देखो अक्षरी

अक्षर ( कि. ) बकबाह करना, लम्बी चौड़ी हांकना, जोर जोर  
मे हल्ला करना ।

अक्षर ( सं. ) विवाद, कलह, वाकजुद्ध, लड़ाई, झगडा, फिसाह ।

अक्षर ( सं. ) हल्ला, गुलमपाड़ा ।

अक्षर ( सं. ) एक प्रकार की सिलाई, बारीक उम्दा सिलाई ।

अक्षर ( सं. ) कंजूसपना, कृप-  
णता, कगलीपन, कंगाली, सूमपन ।

अक्षर ( वि. ) कंजूस, कृपण,  
सूम, कंगालान, मक्खीपूत ।

अक्षर ( वि. ) झगडाह, फिसादी, लड़ाका, बिबादी, कल-  
हकारी ।

अक्षर ( सं. ) टंटा, फिसाह, मारा-  
मारी, झगडा, कलह, उत्थात ।

अक्षर ( सं. ) पेड़की दरार, बिल,  
पेड़का खोखला, वृक्षका छिद्र ।

अक्षर ( सं. ) नखीब, शकलब,  
दैब, भाग्य, किस्मत, भविष्य,  
अदृश्य फल ।

अभ्यास (वि.) आत्मसील, तत्त्व-  
दीर्घात्म, कुशास्त्रित, प्रसन्नधी ।

अभ्यास ३३३ (वि.) विश्व के  
आगमन से काम हो ।

अभ (सं.) बक, पक्षी पक्ष, वगुला, सारस, बगला ।

अभ्यु (कि.) खराब होना, भ्रष्ट  
होना, सड़ना गलना, बिगड़ना,  
नष्ट होना ।

अभ्यु (सं.) शोक अंक, १ ।

अभ्यु (कि.) खराब होना  
बिगड़ना । [ कर्कट ।

अभ्यु (सं.) धूल, कचरा, कूदा-

अभ्यास (सं.) एकाग्र ध्यान,

स्तब्ध, बगुला भक्ति, सुपचाप,  
दृष्टि या विचार ।

अभ्यु (सं.) गुंथला, अंधला,  
मन्द, प्रातःकाल, मितुसारा,  
पोंफटे मोर ।

अभ्यु (सं.) डोंगी, कपटी,  
धूर्तसाधू, तिलकराजवट आदिसे  
साधू किन्तु स्वार्थी, ठग,  
और धूर्त, भक्तिका डोंग रचने  
वाला पाकण्डी, छली, कपटी,  
बगुला भगत, देखने में सज्जन  
किन्तु दुर्जन ।

अभ्यु (सं.) धीको तपने पर  
ऊपर आना हुआ मैल, वृत्त अथवा  
तेलका कचरा ।

अभ्यु (सं.) काँच, कोँच, स्कंध  
तथा हाथके नीचेका गद्दा,  
आश्रय, शरण, वस्त्रों वगलमें  
लगने वाला त्रिकोण टुकड़ा, बाजु,

अभ्युभास्यु (कि.) वगलमें  
रखना, ढबालेना, आविर्कार में  
रखना ।

अभ्युभास्यु (कि.)  
लेकर सटकजाना, मुच्छ समझना,

अभ्युभास्यु (कि.) शरणमें  
लेना, शय्य देना, अभय देना,  
आश्रय देना ।

अभ्युभास्यु (कि.) अधिकारमें  
होना, वशवर्ती होना, देखरेखमें  
होना ।

अभ्युभास्यु (कि.)  
अपने मनसे बात बनाकर गल्ल  
हांकना ।

अभ्युभास्यु (कि.) दम्ब-  
हीन होना, साफ होना, आत्ममत्ता  
उद्धाना, पुष्टता पाना, शांति  
होना ।

अभ्युभास्यु (कि.)  
खरमझाना, कपटी इच्छा

बगलमें रखना किसीके कलह  
अथवा उल्लाहिनेकी परवाह न  
करना, निर्लज्जता ग्रहण करना ।

अभक्षे छ्ठी ४२वीं ( कि. ) दिवाळा  
निकाळना, हाथ फूटना, पास  
नहीं है ऐसा कहके छुटी पाना,  
गरीबी दिखाना ।

अभक्षे छ्ठी ४३वीं ( कि. ) प्रसन्न होना,  
हर्षित होना ।

अभक्षे छ्ठी ४४वीं ( कि. ) दिवाळा  
निकाळना, पासमें कुछ नहीं ऐसा  
प्रकट करना ।

अभक्षे छ्ठी ४५वीं ( सं. ) इदयालिंगन,  
जतीसे लगाना, बिपाना ।

अभक्षे छ्ठी ४६वीं ( सं. ) पैरमें पहिने  
का एक प्रकार का आभूषण ।

अभक्षे भाषा ४७वीं ( वि. ) दिखावे  
में साधुवृत्ति प्रदर्शित करने वाला  
किंतु भीतर से स्वार्थ साधन की  
वृत्ति रखने वाला, मौन होकर स्वार्थ  
साधनेवाला ।

अभक्षे भाषा ४८वीं ( सं. ) देखो अभ  
अभक्षे । [ वयुक्त ।

अभक्षुं ( सं. ) बक, पक्षीविशेष,

अभक्षे ( सं. ) बक, वयुक्त, गीन  
मोची बकपर पक्षी, अरब के  
जंगलोंका लोहमयी का बकबाज ।

अभक्षे भाषा ४९वीं = ठग तथा  
दासिक पुरुष के लिये यह वाक्य  
प्रयोग होता है, अर्थात् बगला  
अगत बनके बैठा ।

अभक्षे ( सं. ) कमका मैल, वह  
मलबो कर्पेन्द्रिय में होता है ।

अभक्षे ( सं. ) कुत्ता गाय भैस  
आदि पशुओंके चर्मपर रोमावली  
में छुपकर रहने वाला एक तुच्छ  
जीव, कलीली, चिन्वी, गोंचवी,  
पिस्तू, कर्णरोग विशेष ।

अभक्षे-३६ ( सं. ) नुकसान, खराबी,  
कसर, रोग, विकृति, अनवन,  
खड़ा, गला, मलिनता, भट्टता,  
हानि असम्मत, फूट, विरोध,  
भेद, सदन, बिगाड़ ।

अभक्षे-३७ ( कि. ) बिगाड़ना, खराब  
करना, बर्बाद करना, अनवन  
करना, मलिन करना, नुकसान  
करना, आचार भट्ट करना, नापाक  
करना, दोषयुक्त करना, दूषित  
करना, सड़ाना ।

अभक्षे ( सं. ) देखो अभक्षे

अभक्षुं ( सं. ) जंभाई, उभासी,  
जंगदाई, मुंह फाड़ना, आकसका  
विह्व ।

अग्नी ( सं. ) बन्धी, एक प्रकार की बोझा वाली, दृष्टि, नज़र।

अग्नी क्षीय ( कि. ) गुस्सा बहना, क्रोध आना, मस्तीमें आना, आँखें फटना।

अग्ने ( सं. ) शिवों के पहिरने का वस्त्र विशेष। दीवार की बाँक।

अधारे ( वि. ) झूठे इरादों का, मस्तिष्कहीन, जिसकी बादवास्त खराब हो।

अक्षरे ( सं. ) छेल, बाफ़ा, आत्म खाधी, अक्ल, अभिमानी।

अक्षर्यु ( कि. ) हज़ा मचाना, शोर मचाना, शिकाना।

अक्षरे ( सं. ) हज़ा, कोलाहल, शोर मचाना, होहल्ला, गुल मचाया। एक प्रकार का खार, बंग।

अग ( सं. ) रीति, प्रकार, तर्क, कल्पना, युक्ति, एक प्रकार का खार, नमूना, बानगी।

अग्नी ( सं. ) चूड़ी, हाथ में पहिरनेकी काँचकी चूड़ी, आभूषण विशेष, चूड़ी की तर्ज का केसर, गोल बंगड़ा।

अग्नी ( सं. ) छोटा बंगला।

अग्ने ( सं. ) मैदान अथवा बागीचे में बनाया हुआ अच्छा मकान, बंगला।

अग्नी अग्नि ( कि. ) खाली हो जाना, खतम होना, खस बचना।

अग्नी ( सं. ) पक्का रस, छली, चप्पा छपड़ी, ऊपर से सीप कियु छली पक्का चूँत, छुटेरा।

अग्नी तोष ( सं. ) और बच्चों से भारी, भारी तौल।

अग्नी ( सं. ) एक प्रकार का वस्त्र जो बाधे ( लड़के ) के लिये होता है।

अग्नी-अग्नी ( कि. वि. ) बालक के दूध पीने का शब्द, बालक जब कि दूध पीता है उस शब्द की नकल।

अग्नी ( सं. ) ऐसा बात रंग जिसमें नीले और लाल होते हैं।

अग्नी ( सं. ) देखो अग्नी

अग्नी ( सं. ) पुठिया, छोटी गठरी।

अग्नी ( सं. ) बटका, काटना, कुतरना, पोडना, गाँठ, गठरी।

अग्नी ( सं. ) मोटा, पोटा, बन्धक, गाँठ, गठरी, पुठिया, पोडका।

अग्नी ( कि. ) हुबोना, खोरना, चलना करना। [ चुबकी।

अग्नी ( सं. ) चुबकी, चुबकी,

अथर्वी ( सं. ) बचपन, बालकपन,  
छोटीरपन, बचप, बचपन ।

अथर्वी—श्वी ( सं. ) बाल-  
बचपना, कुटुम्बी, बचपना, बचपन ।

अथर्वी ( सं. ) देखो अथर्वी

अथर्वी ( कि. ) बचना, लहरना,  
छलापना रहना, रहना, लहरना,  
बाकी रहना ।

अथर्वी ( कि. ) पशुको हाँकने के  
लिये मुँहसे एक प्रकारका शब्द  
करना टिचटिच देना । टिचटिच  
करना ।

अथर्वी ( वि. ) असक्त, गरीब,  
रक्षा करने योग्य, बेचारा, दीन,  
असहाय ।

अथर्वी ( सं. ) रक्षण, रक्षा, हिफा-  
जत, संभाल, बचत, संरक्षण,  
उद्धार ।

अथर्वी ( कि. ) उद्धार करना,  
रक्षा करना, बचाना, पालना,  
रखना, संभाल करना, बचाना,  
तारना मोक्ष करना, संभाल करना,  
अटकाना, प्रसंग ठाठना,

अथर्वी ( सं. ) मुँह ( तिरस्कारमें )  
पूसा, कुम्बन, बोसा प्यार, लिप्ता,  
पीम । [ हाँक होना ।

अथर्वी श्वी ( कि. , बोलनेकी

अथर्वी श्वी ( सं. ) बालकपन,  
बचप, बचप, कुटुम्ब, गृहस्थ ।

अथर्वी ( सं. ) तिरस्कार सूचक  
शब्दोपन, मेरेसंगी, बचपनी ।

अथर्वी—श्वी—श्वी ( सं. ) बच-  
पन, छोटीरपन, बचपन ।

अथर्वी ( सं. ) प्यार, पूसा, बोसा,  
कुम्बन, मुँहद्वारा अंगस्पर्श,  
लड़की, बालिका, छोटी ।

अथर्वी ( सं. ) छोटा बालक, लड़का,  
छोटी, बालक ।

अथर्वी ( सं. ) लड़का, छोटी,  
बालक, कुमार, किशोर, यह शब्द  
प्यार और तिरस्कारमें भी कहा  
जाता है । [ रफ ।

अथर्वी ( वि. ) छरबरा, मोटा,

अथर्वी ( सं. ) तमाकू, तम्बाकू ।

अथर्वी ( सं. ) एक प्रकारकी  
जड़, एक प्रकारका तालाबमें पैदा  
होनेवाला फल, रीछके मुँहमें  
डालकर पुनः निकाला हुआ काल  
मक्का, जिसे बच्चेके गलेमें धागे  
में डालते हैं ।

अथर्वी ( कि. ) अक्षर होना, प्रभाव  
पड़ना, पार पड़ना ( काम )  
बचना ( बाजा )



अभिव्यक्ति ( सं. ) बचनी, बचाने वाला, वाचविद्याप्रवीण ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) मूल, सठ, शिक्की, सिरपक, खरदीमाग ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) कपड़ा बेचने वाला, कपड़ेका व्यापारी, बक विक्रेता, अभिव्यक्ति ( सं. ) कपड़े बेचनेका व्यापार, बक बेचनेका बंधा, कतरब्यौत, मॉकगड सौदागरी ।

अभिव्यक्ति-वे। ( सं. ) मक, नट, नर्तकी, रस्नीपरनाचनेवाला ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) अफगाह, छेटी खबर, किम्बदन्ती, बजाइवात ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) बजारका भाव, निर्ख, विक्रीका भाव ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) साधारण, मामूली, हलका, सादा, विशेषता हीन ।

खराब, [ कलमबंधी, अभिव्यक्ति ( सं. ) शोक, जन्ती, अभिव्यक्ति ( सं. ) वधिक, जहाद, बजानेवाला, बचतरी, बचैबा ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) कार्य में परिणत करना, पार पटकना ( काम ) पालना, ( बचन ) बजाना ( वाचा ) दुकानदार अभिव्यक्ति ( वि. ) बाजारपट्टीमें स्थित अनुसार वसूल करने की सज्जियों करना ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) मारना, पीटना ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) जीता हुआ, अग्रह करने वाला, हठी, जिद्दी, बरनेत आविषक ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) छोट, पात्रविशेष, अभिव्यक्ति ( सं. ) एक प्रकारका धिरनेका भूषण । [ नाम, अभिव्यक्ति ( सं. ) हनुमानजीका अभिव्यक्ति ( वि. ) ठोक्ना, भिजाना, बजाना, अभिव्यक्ति ( वि. ) शरीर पर दना-दन चोट मारना, पीटना, ठोक्ना, मारना ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) पूर्ववत्, अभिव्यक्ति ( सं. ) एक प्रकारका बहा और खूब दूरत घोड़ा, दू, उम्दासे उम्दा लोहा, ( वि. ) ठोस, जड़, मजबूत, बहा ।

अभिव्यक्ति ( वि. ) दू. घोड़ा, दुक-कीला, भुरभुरा, कचकनेवाला ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) विचोद, हास्य, मजाक ( वि. ) परिहासजनक, विनोदी, बकसी ।

अभिव्यक्ति ( सं. ) ठिपनी औरत, नीचे दबेके देसना, दासी, खैली, रंड रबी हुई औरत, खैकली ।

५४३ ( सं. ) दुकड़ा, छोटा दुकड़ा ।

५४५० ( सं. ) बहसोगरा जिसमें बड़ा और बहुत पंखड़ियाँ बहुत गन्धवाला पुष्प लगता है । एक प्रकारका फूलदार वृक्ष, बेला वृक्ष ।

५४५१ ( सं. ) पैली, झोली, न्योली खपवा, पैसा रखनेकी छोटी पैली बटुआ ।

५४५२ ( कि. ) बटवाना ।

५४५३ ( वि. ) उड़ाक, जाक छैल, रकीबाज, ब्यभिचारी, रगीला ।

५४५४ ( सं. ) आलू, एक प्रकारका कन्द, अरबी ।

५४५५ ( सं. ) देखो ५४५६, यात्री, पान्थ मुसाफिर, पथिक ।

५४५६ ( सं. ) मिट्टीका प्याला ।

५४५७ ( सं. ) कलंक, तोहमत, दाव, लाज्जन, बदनामी, शराब की बातल ।

५४५८ ( सं. ) कैरी ( कच्चे आम ) के टुकड़ों को उबालकर बनाया हुआ अथवा, आमका अचार ।

५४५९ ( वि. ) जोरसे ठेंस ठेंस कर-अरा हुआ, जोखला बैझा हुआ ।

५४६० ( वि. ) मोटा, बड़ा, दीघे, कठिन सख्त, मुश्किल ।

५४६१ ( सं. ) कबास इत्यादि क मत वर्षके पुराने घेड़ ।

५४६२ ( वि. ) सख्त, कठोर अस्थिवाला ।

५४६३ ( सं. ) गर्दमुक्त बोली, कुत्तेका गलाफ, मिबाज करके बोल्ना ।

५४६४ ( कि. ) गप्प होंकना ।

५४६५ ( सं. ) बकबक, लजालब टॉयटॉय, ब्यर्थप्रलाप, निष्प्रयोजन बात ।

५४६६ ( कि. ) बकबक करना, क्रोधमें कुछ मनहीमन बोलना, बड़बड़ाना ।

५४६७ ( सं. ) बकबक, (क्रोधमें) बोले ही करना, लगातार निष्प्रयोजन बातें ।

५४६८ ( वि. ) बकनेवाला, निष्प्रयोजन बोलते रहने वाला, बड़बड़ाने वाला ।

५४६९ ( कि. ) चबरेना शीखना मारना कूटना, पीटना, अन्नकी बाकीको पादाघात द्वारा खूबकुचलना, बचाना ।

अनुष्ठे। ( सं. ) जिस मनुष्यके मुँह न हों, बिना मुँहका आदमी ।

अनुष्ठे। ( सं. ) कुकामे, कठजे, चूल ।

अनुष्ठे। ( कि. ) चरस में रुईका मोटा सूतकरना, ( स ) चूल, कच्चा, लोह के वे कुन्दे जो दर-बाजेकी चौखट में और किबाडों में लगाये जाते हैं और जिनपर किबाड़ फिरता है ।

अनुष्ठे। ( सं. ) यज्ञोपवीत संस्कार के बाद १२ वर्ष तक द्विजबालक का ब्रह्मचर्य पालन, बालकका यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वह विद्याध्ययनार्थ घरसे बाहिर निकलता है और उसका मामा उसे पकड़ कर वापिस ले आता है वह कृत्य ।

अनुष्ठे। धुधुपवी। ( कि. ) पूर्व गुजरातमें कोल भील लोगों में मनुष्य बीमार पड़ जावे तब या छोरुने न होत हैं। अथवा संतान न आती है। तब तब एक प्रकार की मानता आ जाती है, लोग अनुष्ठे। को जीवित डाकिन कहते हैं और वे उसको मानते हैं, यह मानता वे अपने मुख्य देव " बाबादेव " जिसको वे अपना मुख्य देव समझते हैं उसकी रखते हैं ।

अनुष्ठे। ( सं. ) बाँटे को खींचकर किये हुये टुकड़े, यन्त्रे की पेरी गले के टुकड़े ।

अनुष्ठे। ( वि. ) जिसका सिर मुँगा हो, मुँगित भुंकासेर, बदसूरत बेडौल ।

अनुष्ठे। ( स. ) बढ़ाई करने वाला सेन्ही खोर, खींग हॉकने वाला, आत्मश्लाघी ।

अनुष्ठे। ( कि. वि. ) ऐसाका तैसा, अभ्यवस्थित, उलटपलट ।

अनुष्ठे। ( कि. वि. ) पूर्ववत्

अनुष्ठे। ( वि. ) उच्चकुलोत्पन्न, श्रीमान्, प्रख्यात ।

अनुष्ठे। भदेरमान् ( राजाके सामने ऐसा जोबदार बोलते हैं ) महा राजकी दीर्घायुहो, प्रताप बढ़े, यश फैले ।

अनुष्ठे। ( स. ) बृद्ध मुसलमान के लिये सम्मान सूचक संबोधन शब्द, बडा आदमी ।

अनुष्ठे। ( नि. ) बडा, दीर्घ, महान्, प्रधान, मुख्य, बृहत्, विशाल, मुख्य ।

अनुष्ठे। ( सं. ) ' अधिकता, कृद्धि, अम, प्राप्ति, उन्नति, चढती दशा, उत्कर्ष । [ कोलाहल ।

अनुष्ठे। ( सं. ) दुष्ट, दल, दूरी,

अधुधुधु ( कि ) बरबर बजह  
जगह बात फैलाना, प्रकट करना,  
छोगों पर बाहिर करना, प्रशंसा  
करना, गुण गाते रहना ।

अधुधुधुधु ( कि ) भिनभिनाना,  
गुन गुना, मक्खो आपि के  
उड़ने का शब्द होना ।

अधुधुधुधु ( सं. ) भिन भिनाहट,  
गुंबार, निनाह, गुन गुनाहट ।

अधुधुधु ( सं. ) एक प्रकार के दाने  
जो बाँवलों के भीतर होते हैं ।

अधु ( सं. ) एक प्रकारका जंगल  
में पैदा होने वाला अन्न ।

अधु ( सं. ) हुल्लड़, फिसाद, बलवा,  
उरपात, उपद्रव, झोलाहल,  
लुचबाई ।

अधुधुधु ( वि. ) बागी, राजशेही,  
फिसादी, उपद्रवी, हुल्लड़ मचाने  
वाला ।

अधुधुधु ( सं. ) बदन, अंग, शरीर,  
बच्ची, कमर तक पहिरने का वस्त्र  
कुदता ।

अधु ( सं. ) छोटी कुल्हिया, मिट्टी  
का छोटा पात्र ( धी इत्यादि भरने  
का ) ।

अतरीश-त्रीशी ( सं. ) बत्तीस,  
तीस और दो, ३२, संख्या  
विशेष ।

अतरीश लक्ष्य ( सं. ) मनुष्य में  
होने योग्य ३२ गुण, सिंह का एक  
गुण, ( पराक्रम ) बगुले का एक  
गुण, ( एक लक्ष रखकर पकड़  
लेना ) मुर्गे के चार गुण ( प्रातः  
काक उठना, मरना, किंतु युद्ध में  
पीछे न हटना, परिवार का पालन  
पोषण करना, झी पर हेत ) मोर  
के छ गुण ( ऊँचे स्थानपर रहना,  
शत्रु को मारना, मधुर भाषण  
करना, अच्छा रूप होना, चतुराई  
रखना, युक्ति प्रयुक्ति जानना,  
नम्रता रखना, ) कुत्ते के छः गुण  
( बोहे मिलने पर भी संतोष,  
बहुत भिड़े तो भी संतोष, निद्रा  
कम, तुरन्त समझ जाना, स्वाभि  
मक्ति शौर्य प्रदर्शित करना )  
गधे के तीन ( परिभ्रम करना,  
दुःख की पर्याह न करना,  
संतोषी रहना ) कौवे के पाँच  
गुण ( किसी का विश्वास न  
करना, झी प्रसंग गुप्त करना,  
नम्रता, समझ जानना, और  
चंचलता ) पुरुष के छः विपत्ति में  
वैर, युद्ध में पराक्रम, चतुराई, सभा  
में शक्ति सादुरी, वक्ता की शक्ति ।

अनीस के ७७ (सं.) सब ओर की संमाल खबरदारी, होशियारी सावधानी, चौकसी ।

अनीस के ७८ (सं.) अन्तःकरण में प्रकाश, सन्देश अथवा भाँति की सफाई, आनन्द, विघ्नो का विनाश, घट घट में प्रकाश, तेजोमय आनन्द मय ।

अनीसी-शी (सं.) सोलह दाँत ऊपर के और १६ नीचे के; दन्ताबली, जिह्वा, जीभ, मुख के समस्त दाँत ।

अनीसी अतावनी (कि.) हुँस देना, धमकी दिखाना, दाँत बताना ।

अनीसीओ २६७ (कि.) दाँत चढ़ना, बाढ़ में घुसना, निंदा होना, अपवाद होना ।

अतावपुं (कि.) बताना दिखाना, समझाना प्रदर्शित करना बतलाना

अतावपुं (कि.) दरसाना, दृष्टिके आगे करना, आगे आगे चलना साबित करना, समझाना, स्पष्ट करना, प्रकट करना, कहना कह कर सावधान करना, प्रगट करना, सूचित करना, हाथसे इशारा करना, सैन करना, बर्बन करना, आँख अतावनी (कि.) बराना,

बमकाना ७७ अतावपुं (कि.) मारना, पीटना, धावने अतावने (कि.) गिरानी करना ।

अतेओ (सं.) एक प्रकारका वेशी जहाज, जलमान विशेष ।

अती (सं.) बाती, पलीता, बर्ती, दपिक, दिया, मोमबत्ती, दीवट, समझ, उतेजन, दमपट्टी ।

अती आपवी (कि.) प्रेरणा करना, उत्तेजना देना, उत्कारना नया पुराना हो ऐसा प्रयत्न करना जिह्वा, जीभ ।

अती ३१८वी (कि.) बोलनेकी शक्ति कम होना. भाषण शक्तिका न्यून होना ।

अती लाओ = आग लगे, चूल्हेमें जाय, अनावश्यकता, प्रदर्शक वाक्य ।

अतो (सं.) दस्ता, मूसली ।

अनीस (कि.) देखो अनीस ।

अनीसी (सं.) जीभ, जिह्वा जवान ।

अतावपुं (कि.) बकाना ईकाना, मथना, बका बालना ।

अतावी ५५७ (कि.) बलपूर्वक छीन लेना, पटक लेना, छिन्न लेना ।

अक्षर ( सं. ) निंदा, अपवाद, बदनामी, अपराध, अपकीर्ति ।

अक्षरता ( वि. ) निंदक, बदनामी करनेवाला, विदूषक, अपवादकर्ता ।

अक्षर ( सं. ) आप, अनिष्ट चित्त, पाप, दुराशीष, बददुआ ।

अक्षरान्त ( सं. ) बेईमानी, दुष्कामना, कुचर्म, कुनिश्चय ।

अक्षर ( सं. ) मिथ्याका पात्र विशेष,

अक्षर ( सं. ) दुराचरण, दुर्मन

अक्षर ( वि. ) व्यसन, दुराचारी ( सं. ) अनैति दुर्मन ।

अक्षर ( वि. ) अभागा, बदकिस्मत, बे नसीब, खराब चालवाला ।

अक्षर ( सं. ) दुर्गन्ध, बदबु, बुरी बास, कुबास, बदनामी निन्दा । [ मगर, अहंकारी ।

अक्षर ( वि. ) घमण्डी, गर्वित,

अक्षर ( सं. ) गर्व, घमण्ड, अहङ्कार ।

अक्षर ( कि. वि. ) खदब बदल, पलट, प्रतिकार, परिवर्तन हेरफेर,

अक्षर ( कि. ) एकके बदलेमें कुछरा लेना देना, बदला बदला करना, हेरफेर करना परिवर्तन

करना, पलटना, उलटना करना, अन्यथा करण, एक स्थानसे दूसरे स्थान रखना ।

अक्षर ( कि. ) एक रखकर उसकी जगह दूसरी लेवाना ।

अक्षर ( सं. ) देखो अक्षर ।

अक्षर ( कि. ) फिराना, बदलाना, बदलवाना, लौटवाना,

अक्षर ( कि. ) एकके स्थानपर दूसरा लाना, फिराना, बदलाना ।

अक्षर ( कि. वि. ) एवजमें, बदलेमें एक के स्थानपर जगह ।

अक्षर ( सं. ) एवज, उपकार, आभार, बेर, खार, प्रतिफल ।

अक्षर ( कि. ) आज्ञानुसार, चलना हुकम मानना आज्ञा पालन करना,

अक्षर-क्षर ( वि. ) बद सूरत बेहौल, कुरूप, खराब चेहरेका ।

अक्षर ( सं. ) बदामका वृक्ष ।

अक्षर ( सं. ) दुराचरण, अनैति, अपर्म, पाप, निन्दा, चुगली बुराई गिन्ती बंकाका खेल खेलने के लिये जमीन में सोदा हुआ छोटसा गड्ढा ।

अक्षर ( कि. वि. ) देखो अक्षर

अक्षर-क्षर ( वि. ) सब समस्त, तमाम, सारा, सम्पूर्ण सम्पत्ति ।

अन्धे ( कि. वि. ) सर्वत्र सब जगह, यहाँ-वहाँ सब स्थानमें ।

अन्दी ( सं. ) बधू, दुलहिन बीवनी नव बधू, बह्म्याही औरत ।

अन्धे ( सं. ) बौद्ध, दुलहा, बर, दुल्हा, बना, नव विवाहित पुरुष, एक प्रकार का गीत जो: बिया-गाती हैं ।

अन्धु ( कि. ) बिना सोचा होना, जैसा चाहिये वैसा होना, अच्छा होना, अनुकूल होना, कर सकना, होना, निकलना निर्बन्धना, स्नेह मिलाप होना, एक साथ रहना-बनना, हिल मिल के रहना, साफ सुथरा हो कर सजना, दिखगी होना । [ जैसे, बनाने योग्य ]

अन्धे ( कि. वि. ) बन सके अन्ध ( सं. ) अज्ञ, धरम, आवर, इजत ।

अन्ध ( सं. ) होनहार, प्रसंग घटना वस्तु, एकाएक बेसोचा होना, स्नेह मिलाप, बनावट, मित्रता ।

अन्ध ( कि. ) करना, घटना रखना, जोड़ना, बनाना, उत्पन्न करना, पैदा करना, कहना, धिक्कित करना, मजकूर करना, धे बकूष बनाना, रंग रक्ता ।

अन्धे ( वि. ) होसके बैसा, यथा संभव, संभव, सुप्रसिद्ध, यथा संभव । [ वृत्ति ।

अन्धी ( सं. ) बहिनोई, बहिन का

अन्ध ( सं. ) जिस से कोई चीज बन्ध हो बन्धन, बन्ध, बांधा हुआ, बेड़ी, सीमा, कैद, काबूदा नियम, बाण्ड, पानी रोकने के छिने आकृ पडा, बाधने वाला अर्थ सूचक प्रत्यय ( वि. ) अटकावा हुआ, रोका हुआ, बांधा हुआ, कैद किया हुआ ।

अन्धे ( वि. ) योग्य, उचित, ठीक, सुनासिब, अनुकूल ।

अन्धे ( कि. ) फिटकरना, ठीक करना, योग्य करना ।

अन्धे ( कि. ) ठीक होना, योग्य होना, उचित होना, अनुकूल होना ।

अन्धे ( सं. ) जहाज हत्यादि छहरेकी जगह, जहाजी मुकाम, पोर्ट, वह जगह जहाँ जल यात्रा छहरेतें हों जुगाँवर, कस्तम हाउस ।

अन्धे ( सं. ) एक प्रकारका कल जिसकी पनकी बीबी जाती है, ( क्योंकि वह कल मजकी बन्धी

अभृतिस्त्रागोति आता है, ) बन्दर  
 अम्बन्धी, कीमती । [ बन्धी,  
 अम्बो ( सं. ) बँपुवा, केरी,  
 अंही ( सं. ) स्तुतिपाठक, बारण,  
 बन्दीजन, भाट, कलक, प्रसंसक ।  
 अटकाव, आड, रोक, बन्धी,  
 जना, जोड, दोस्ती, लौडी,  
 गुलाम ( की ) इठपूर्वक पकड  
 कर लाई हुई जो।  
 अंहीआनु ( सं. ) जेल, बन्दी  
 घर, कारावास, कारागृह, कैदखाना।  
 अंहीआनावाणे ( सं. ) जेलर,  
 अंहेजे ( सं. ) ईश्वर का दास,  
 हरिमण ।  
 अंही ( सं. ) नौकर, गुलाम, भक्त,  
 दास, सेवक, सूर्य, किकर,  
 चाकर, फिदवी, घमण्ड में अपने  
 लिये प्रयोग ।  
 अंध ( सं. ) अटकाव, रोक, नियम,  
 कायदा, रचना, बांधा हुआ, बेबी,  
 शरीर, डोर, रस्सी ।  
 अंधशत्रु ( कि. ) रोकना, बन्द  
 करना, सूदना, मीजना, संकोचन  
 करना, प्रतिबंध करना, मना  
 करना, भीतर करना, पूर्ण करना,  
 समाप्त करना, ठंकना ।  
 अंधी ( सं. ) बेरवा, छिनाल, रण्डी।

अंधशत्रु ( सं. ) बड्कोड, कन्जिवर,  
 अपचनल, कुपच, बडहण्डी ।  
 अंधेडाव ( सं. ) पूर्ववत्  
 अंधेभेक्षुं ( कि. ) मणिक होना,  
 अनुकूल होना, ठीक होना, नीच  
 होना ।  
 अंधव ( सं. ) भाई, बन्धु, भ्राता ।  
 अंधाधु ( सं. ) गाँठ, पाव, जाल,  
 रोक, प्रतिबन्ध, बंधन, बन्द ।  
 अंधाधु ( वि. ) अभ्यास में लाई  
 हुई, अभ्यस्त, ( सं. ) अफीम  
 खाने वाला ।  
 अंधामधु-मधु ( सं. ) बांधने की  
 मजदूरी, बांधने का मूल्य, बंधाई ।  
 अंधारधु ( सं. ) रचना, योजना  
 प्रबन्ध, वसुधार्तिता, लिप्त, कानून,  
 कायदा, पेटपर दवाई इत्यादि  
 का पलस्तर, रंगरेज की ओरत,  
 रंगरेजन ।  
 अंधारधु ( सं. ) अफीम खाने  
 वाला, अफीमची, ब्यसनी ।  
 अंधारे ( सं. ) रंगने का भाग  
 अलग अलग बांध कर रंगने  
 वाला, रेशमी कपड़ा धोने वाला ।  
 अंधावधुं ( कि. ) बंधीना, पुस्तक  
 पर पुष्टि पत्र कपडाना, बिल्द  
 बंधाना ।



अंधाधुं (कि.) बंधना, बांधे जाना,  
बन्धन में पड़ना, फँसना, पमार  
अंधाधुं—वेतन निश्चय होना, पम  
अंधाधुं—पैर अकड़ जाना ।

अंधाधुं (वि.) घेरा हुआ, बँधा  
हुआ, बंधे रहने वाला पानी ।

अंधा (सं.) मना, अटकाव, रोक,  
आड, निषिद्ध, वर्जित, करार,  
कौल, शर्त, बचन, बोली ।

अंधी करणी (कि.) करार करना,  
वर्जित करना, रोक करना, अमुक  
वस्तु न खाना, बन्द करना ।

अंधीआधुं (सं.) कैदखाना, जेल  
खाना, कारागृह, बन्दीगृह ।

अंधुं (सं.) बाबू, भाई, साथी,  
संगी, सहचारी, मित्र, भाईबुदु,  
दोस्त, स्नेही । [ प्रत्युत दो ।

अंधि (वि.) दोनों, केवल एक नहीं

अन्धुस (सं.) कम्बल, कामरी,  
कमरिया, ऊनी वस्त्र विशेष ।

अन्ने (वि.) दोनों, दो मनुष्य ।

अंधुं (सं.) काष्ठ का गोला खिलौना ।

अंधाधुं (सं.) दादा, नाना ।

अंधे (सं.) दादा, नानी ।

अंधेधे (सं.) पर्याया, एक प्रकार का  
पक्षी, चातक, इस पक्षी के कण्ठ  
में छेद है जिसके कारण वह सदा

पिवासा मरता है किंतु वर्षा ऋतु  
में इसकी प्यास मिट जाती है,  
कहते हैं तब वह उल्टा हो कर  
आकाश से गिरने वाली बूंद को  
पान करता है ।

अंधे (सं.) दो पहर, मध्याह्न  
सूर्योदय के पश्चात् दुसरे प्रहर  
का अंत ।

अंधेधुं (सं.) एक प्रकार की  
आतिसबाजी, एक प्रकार का  
पुष्प, मध्याह्न तक काम करने  
वाला मनुष्य, दो पहरिया ।

अंधेधे (सं.) एक प्रकार का  
वृक्ष, इस में दो पहरों के समय  
फूल खिलते हैं, इसके फूल लाल  
और सफेद होते हैं ।

अंधेरी अंधत-रे (कि. वि.)  
मध्याह्न, दिनके मध्य में,  
दुपहरी में ।

अंधा (सं.) घाम, बफारा, भाप ।

अंधाकरुं (कि.) गुण करना,  
फायदा करना, लाभ करना ।

अंधाधुं (सं.) एक प्रकार का आम  
का आचार, उबाल कर राई के  
योग से बनाया हुआ आम का  
आचार, खिचड़ी बयैरा में उबाली  
हुई कैरी ।

- अक्षर (सं.) भाप, बफारा, बाष्प, घाम, गर्मी का भपका, उष्ण जलकी गर्मी ।
- अक्षु (कि.) बाष्प से गरम करना रांधना, सिजाना, उबालना, घाम, से व्याकुल होना, गर्मीसे घबराना ।
- अक्षु (कि.) बड़बड़ना ।
- अक्षु (सं.) देखो अक्षु अक्षु
- अक्षु (सं.) रसोइया, भोजन करने वाला, पाकी, रोटी बनाने वाला ।
- अक्षु (सं.) पाकगृह, भोजनगृह, रसोई घर, रन्धन गृह ।
- अक्षु (सं.) मूर्ख, शठ, बेवकूफ ।
- अक्षु (सं.) पूर्ववत्
- अक्षु (वि.) बहुत वस्तुओं में प्रत्येक दो, दो दो, प्रत्येक दो का समुदाय ।
- अक्षु (कि. वि.) आवाज का सूचक शब्द, दन, (सं.) गेला, बम्म यह शब्द शिवजीके सामने भी बोला जाता है, जोगी भिक्षा मांगते समय भी इस शब्दको उच्चारण करते हैं ।
- अक्षु (वि.) ठसाठस भराहुवा, बिलकुल भराहुवा ठसाठसा ।
- अक्षु (कि.) पंखका शब्द होना, एक जगह बारबार भट-कना भिनभिनाना ।
- अक्षु (सं.) भिन भिनाहट, भिक्षा आदिके उड़नेका शब्द, भिनभिन । [ दुगुना, डबल ।
- अक्षु (वि.) दुहरा, दुपट, अक्षु (सं.) अतिपीड़ा, कठिनता, अत्यन्त माथाफोड़ी ।
- अक्षु (सं.) मृदंगमें बड़बड़, लड़ाई का ठंका, फोलाहल, होहला, जलका नल, बड़ा, स्थूल भारी युद्धबाण । [ मारमारना ।
- अक्षु (कि.) ठोकना, अक्षु (वि.) आधी (कि) पूर्ववत्, अक्षु (सं.) शिवजी के लिये सम्बोधन वाक्य. ( शिव-जीकी जटासे गंगा के प्रवाह के शब्दसे इसशब्दकी रचना है ।
- अक्षु (कि.) पैसा टका कुछ भी न होना, खाली होना, कुछभी न होना ।
- अक्षु (वि.) बाहिरसे भटक बिंदु भीतर से कुछभी नहीं, पोला खाली, अंधेर, अग्यवस्था ।
- अक्षु (कि.) अटकल पंज कड़ना, शप्य मारना, अक्षु चलाना ।

अने ( सं. ) पम्प, पानीका नल,  
कुएसे पानी निकालनेका रंप,  
आम बुझानेका नल, कोई दीर्घ  
और स्थूल वस्तु । [ दीर्घ ।

अने ( वि. ) मोटा, विशाल भारी  
अनेआने ( कि. ) पिचकारी  
चलाना ।

अने ( सं. ) चौड़ाई, पना, अरज,  
जात, नाल ( वि. ) पूरा पदा  
हुवा, अनुसार मूजिब, मुआफिक,  
योग्य, लायक ।

अने ( सं. ) ऊँठके बाल ।

अने ( सं. ) हित, लाभ, फायदा  
जिससे फायदा हो, फतह, शुभ,  
कल्याण, सिद्धि, अधिकता ।

अने ( सं. ) बन्दूकवाला,  
बंदूकची । [ पुकारना, आवाज लगाना ।

अने ( कि. ) चिल्लाकर बुलाना,

अने ( सं. ) चर्ईकी गाँठ ।

अने ( सं. ) हल्ला, ध्वनि, शब्द,  
कोलाहल, आवाज, रव ।

अने ( कि. ) छुड़ी देना  
छोड़ना, त्यागना, विसर्जन करना ।

अने ( कि. ) छुड़ीहोना,  
समाप्त होना, इस्लत छूटना ।

अने ( वि. ) सुरघरा और  
कठोर, दृढ़ शरीरका ( मनुष्य ),

अने ( वि. ) निम्न कुलका,  
नीच वर्ण, बर्बसाठ, नीच, कमीन

अने ( वि. ) तुरंत दृढ़जाने वाला,  
चटकीला कड़कीला, ( सं. )

दांत पीसनेका शब्द, करबकरब ।

अने ( वि. ) भोला, सीधा ।

अने ( सं. ) घुट, पीठकी हड्डी,

बांस, सुपारीकी एक जाति, जर्ब  
पकी हुई सुपारीको तोड़कर उसको  
उबालकर सुखाई हुई सुपारी ।

अने ( कि. )

बहुत मारने पीटनेसे पीठकी हड्डी  
में हानि पहुँचना, सीधे लड़ने  
न सकेना ।

अने ( कि. ) मार

मारकर पीठकी हड्डी हलकी करने  
की जरूरत पड़ना [ का पात्र विशेष ]

अने ( सं. ) चीनो अथवा मिट्टी

अने ( वि. ) निकाला हुआ,

आज्ञा दी हुई, दूर किया हुआ  
( नौकरीसे )

अने ( सं. ) पृथक्करण, निकाला

अने ( सं. ) मानता, संकल्प,

प्रतिज्ञा, वचन, अफ को बरबाद  
देने की प्रतिज्ञा ।

अने ( सं. ) संभाल, मुक्ति,  
पूर्वकपालन, आसिर, आदर, प्रबन्ध

अश्वि ( सं. ) राज्यका स्तुति  
पाठक, चारण वन्दी भाट प्रभृति ।  
अश्वि ( वि. ) रह, निकम्मा,  
सिध्या, बाली, नाश किया हुआ ।  
अश्वि ( सं. ) दया, सम्बन्ध ।  
अश्वि ( कि. ) नौदमें बहबहाना,  
बरबराना, निद्रा में बोलना ।  
अश्वि ( वि. ) झट दूट जानेवाला ।  
अश्वि ( सं. ) तापकी क्षानक्षनी,  
हलका ज्वर, ज्वरका पूर्वरूप ।  
अश्वि ( सं. ) हवा, कोलाहल,  
जोरकी आवाज ।  
अश्वि ( कि. ) चिल्लाना, जोर से  
हवा करना, बकारना ।  
अश्वि ( सं. ) जोरका शब्द,  
जोरका हवा, खूब कोलाहल ।  
अश्वि ( वि. ) समान, तुल्य  
ठीक, उचित, योग्य, बाजबी,  
घटित, लायक, अनुकूल, अनुसार,  
मुवाफिक, समतोल, सरीखा,  
सीधा सच्चा, एकरूप, समरूप,  
दुरुस्त, भूलचूक रहित, पूरा पूर्ण,  
समस्त, सब, सम्पूर्ण ।  
अश्वि ( कि. ) होरहना,  
पारहोना, नाशपाना, मरजाना ।  
अश्वि ( कि. वि. ) चाहिये जैसा,  
वैसाका वैसाही, केवल ।

अश्वि ( वि. ) समान, बराबर  
का, हमउम्री, साथी, समवयस्क ।  
अश्वि ( सं. ) समानता, स्पष्टी,  
बाह ।  
अश्वि ( सं. ) कपूर में मसाला  
डाल कर बनाया हुआ एक  
प्रकारका सुगन्धित तथा ठंडा  
मसाला । कूची, जवा, जुरस,  
पीछी, कलम, पत्थर नापनेका माप ।  
अश्वि ( सं. ) एक प्रकारका  
कपूर । [ रंजीदा गुमगुनि ।  
अश्वि ( वि. ) उदास, शोकार्त ।  
अश्वि ( सं. ) उदासा रंजित,  
गम ।  
अश्वि ( सं. ) अंगरकोश एक भाग ।  
अश्वि ( सं. ) एक प्रकारकी चास,  
बर्क, जिसकी कलम बनती है,  
नरकट, नरसल ।  
अश्वि ( सं. ) निर्बलताके कारण  
ओष्ठ पर उत्पन्न फुनसी, आभि-  
मान, गर्व, घमण्ड ।  
अश्वि ( सं. ) जुबार बाजरी आवि  
का डंठल, बर्क, एक प्रकारकी  
चासकी छडे ।  
अश्वि ( सं. ) देखो अश्वि  
अश्वि } देखो अश्वि  
अश्वि }

अक्ष ( सं. ) देखो अक्ष या गण  
अक्ष ( कि. वि. ) बल्कि, विशेष,  
प्रत्युत ।

अक्षक ( वि. ) बलवान, क्षति-  
सम्पन्न, ताकद्वर जोरावर, सशक्त ।

अक्षभ्रम-भ्रम ( सं. ) कफ, धरी-  
रस्थ एक प्रकारकी धातु, कंचार,  
शरीरस्थ मैल ।

अक्षभे ( सं. ) पूर्ववत्

अक्षभरी ( सं. ) एक प्रकारका गले  
में पहिरनेका सिनोका जेवर ।

अक्ष-हीजे ( सं. ) देखो भेज

अक्षम ( सं. ) गरम पानी में डाले  
हुए तुपपरहित चावल, इस प्रकार  
के दाने (चावलके) टूटते नहीं हैं ।

अक्षवधु ( सं. ) एक प्रकारका क्षार,  
आबले के पानी में उबाला हुआ  
नमक ।

अक्षवे ( सं. ) तृप्तान, किसान,  
उत्पात, झगड़ा, टटा, ऊबम,  
उपग्रह ।

अक्षा ( सं. ) भूत, प्रेत, आफत,  
पीडा, दुख, डेग, कष्ट ।

अक्षा लेवी ( कि. ) किसीकी पीडा  
स्वयम अपने ऊपर के लेना, भारी

अक्षा अक्षे = मैं नहीं जानता  
मुझे जानने की आवश्यकता नहीं ।

अक्षाक्ष ( सं. ) बगुला, बक, पक्षी  
विशेष । [ जी ।

अक्षाक्ष ( सं. ) बगुली, बक की

अक्षाक्ष ( वि. ) हरामी, नीच कार्य-  
कर्ता । [ जाने ।

अक्षा रात अक्षे=ईश्वर जानें, हरि

अक्षा वणभयी ( कि. ) बल्य लगाना,  
आपत्ति में घिरना ।

अक्षाडी ( सं. ) भिलाडी

अक्षे ( सं. ) बगल में का एक रोग  
विशेष जो गाठ के रूप में होता है ।

अक्षेया ( सं. ) बारकेर, किसी  
मनुष्य के सिरपर हाथ घुमानेकी  
क्रिया जो यह प्रदर्शित करती है  
कि तेरी सारी बलाएं और आप-  
दाएं दूर हों, बुद्धिवा ।

अक्षेया भेयस ( कि. ) हिसाब  
लगा कर दिखाना ।

अक्षेयु ( सं. ) बूढ़ी बल्य ।

अक्षेतिथु ( सं. ) बालकों के मूत्र  
मूत्र करनेका कपड़ा, पोतड़ा ।

अक्षेक्ष ( सं. ) कलेजे का बर्द,  
हृदय झूल ।

अक्षेयु ( सं. ) पतली पतली की  
बूढ़ी, आगे पहिरने की पतली  
बूढ़ी । [ में बोझा, बर्तना ।

अक्षेयु ( कि. ) नीच में वैजय, मित्र

अव्ययं ( सं. ) नई आबाद जमीन का द्वितीय वर्ष ।

अक्षर ( सं. ) अस्सी तोले ।

अक्षरी ( सं. ) अस्सी तोलों का बाट-वजन ।

अक्ष ( कि. वि. ) पूर्ण, काफ़ी, हुवा, 'इत्यादि अर्थों का सूचक शब्द ।

अक्षेप्ते ( वि. ) दोसौ, द्विशत, २०० ।

अक्षेप ( सं. ) बण्डल, पोट, गठरी ।

अक्षयपुं ( कि. ) बोलना, भाषण करना ।

अक्षय ( वि. ) साहसी, वीर, मर्द, छाती वाला, शूरवीर ।

अक्षयुं ( सं. ) निमित्त, मिम, डोंग, मिथ्या कारण, बहाना ।

अक्षर ( सं. ) शोभा, आनन्द, मजा, खुशी, वसन्तरुद्र, ( कि. वि. ) बाहिर, पृथक्, अलग ।

अक्षर छे तेडखे जेभाभां छे उसकी जड़ बड़ी गहिरी है, बहुत ही लुब्धा है, चल्ता पुरजा है ।

अक्षर अपुं ( कि. ) पाखाना फिरने जाना, टंछी जाना, शौच जाना, दस्त जाना, घर से बाहिर जाना ।

अक्षर मारवे ( कि. ) मजा मारना, आनन्द लूटना, खूबसूरती का आनन्द प्राप्त करना ।

अक्षरपुं ( कि. ) साइ निकालना, हुहारी देना, हुहारना, कचरा साइना, साफ करना, अलग करना ।

अक्षर ( सं. ) बन्दूक का शब्द ।

अक्षरवटिथे ( सं. ) देखो आरवटिथे ।

अक्षरवटुं ( सं. ) देखो आरवटुं ।

अक्षर ( वि. ) कायम रखा हुवा निकाल देने के बाद फिर से रखा हुवा ।

अक्षयुं ( कि. ) बहाना, कैलाना ।

अक्षय ( वि. ) विह्वल, घबराया हुवा, व्याकुल, व्यथित ।

अक्षय धर ( कि. ) बहुत दुःख बीता, बेहद हुवा, अति हुई ।

अक्षयध ( सं. ) पीली जुदी, काला जीरा, चंपाकी कली, श्याहजीरा ।

अक्षरपी ( सं. ) नाटकी, बहुत बेश बनानेवाला, बहुरूपिया, स्वांगी ।

अक्षरवेण ( कि. वि. ) प्रायः, कई बार, कई प्रकार, अक्सर ।

अक्षरवे ( कि. वि. ) बहुत ठीक, अच्छा, अत्युत्तम, अतिश्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।

अक्षेप ( सं. ) बहिन, भगिनि, बार्ह ।

अक्षेप ( वि. ) बधिर, बहिरा, जिस कानसे नहीं सुने, जिस कान से नहीं सुने, अक्षय शक्तिहीन ।

अक्षर (वि.) बड़ा, शीर्ष विस्तृत।

अक्षर (वि.) दुक  
हस्तसे, उदात्त रीतिसे, उदारता  
पूर्वक, बिना संकोचके, विस्तीर्ण  
हृदयसे।

अक्ष (सं.) बल, शक्ति, पौरव,  
ताकत, शौर्य, सामर्थ्य कृत,  
प्रभाव, प्रताप, पराक्रम, गौरव,  
सैन्य, दल, फौज, लश्कर, प्राण,  
जीव, जुलूम, जबरदस्ती, बलात्कार।

अक्ष (वि.) बलवान्, बलवन्त,  
ताकतवर, सशक्त सामर्थ्य युक्त।

अक्ष (सं.) कफ, कंठार, बलगम।

अक्षरी (सं.) बरजोरी, जोर  
जुलूम, जबरन, बलपूर्वक, बलात्।

अक्षर (सं.) ईधन, इन्धन, जलने  
की सामग्री, बलीता, राखनेका  
पात्र, बरतन, पकानेका बरतन।

अक्षर (सं.) रंज शोक अफसोस।

अक्षर (सं.) ताप, अभि, गर्मी, जल,  
शोहले, शोक, रंज अफसोस।  
(वि.) प्रज्वलित, जलता हुआ।

अक्ष (सं.) बैल, दूधन, साँढ  
बिना बुद्धिका अनुष्ण, बल देने  
वाला, पौष्टिक, जोर देने वाला।

अक्षर (वि.) बलवान्, मजबूत,  
शक्ति सम्पन्न, ताकतवाला।

अक्षरी (सं.) अत्यंत दृढ़, बहुतां  
मजबूत।

अक्षर (सं.) बरंबर चिता, शोक।

अक्षर (सं.) एक प्रकार की  
फल। [औषधे।

अक्षर (सं.) एक प्रकार की  
अक्षरतरे (वि.) बहुत ताकत  
वाला, अधिक शक्ति सम्पन्न।

अक्षर (वि.) दृढ़ होना, मरम्  
होना, जलना, दागना, क्रोध में  
व्याकुल होना, कुदना, स्पष्टी  
करना।

अक्षर (वि.) ईर्ष्या  
तथा स्पष्टी से हृदय जलना,  
किसी का भला देख कर जलना,  
चिंता होना, जल भुन कर मरम्  
होना।

अक्षर (सं.) देखो अक्षर।

अक्षर (सं.) बलवान्,  
बागी, बख्शिया, उपग्रही, ईर्ष्या।

अक्षर (सं.) पूर्ववत्

अक्षर (सं.) दुककी जलन,  
हृदय दाह, शोक रंज संताप  
देह, स्पष्टी। [वन्त।

अक्षर (वि.) शक्तिमान्, बल-

अक्षर (वि.) ईर्ष्या, देखी,  
स्पष्टी, देखकर कुदने वाला।

- अक्ष ( सं. ) बकि, भेट, भोग, पूजा ।
- अक्षय ( सं. ) आषणकी पूनम, आषण मासकी पौर्णिमातिथि, इसदिन के बाद दरियामें जलयान चलना आरंभ हो जाता है । इसदिन ब्राह्मण लोग यजमानके हाथमें राखी रक्षासूत्र बांधते हैं, यजुर्वेदी ब्राह्मण इसदिन यज्ञोपवीत आदि बदलते हैं, उपाकर्म ।
- अक्षय्य ( सं. ) देखो अक्षय्येक्ष
- अक्षय ( सं. ) जमाहुवा, दूध ।
- अक्षयतिथि ( सं. ) पोतड़ा, वहवज जो बालक के नीचे मलमूत्रादि के लिये बिछाया जाता है । बच्चे का बिछोना । [ बेतन देनेवाला क्लृप्त ।
- अक्षी ( सं. ) तनस्त्राह देनेवाले
- अक्षीस ( सं. ) इनाम, पुरस्कार, भेट दान, बकशीस ।
- अक्षि ( सं. ) बैठनेकी सख्ती, बेंच टिपाई, लम्बीतिपाई ।
- अक्षिपुं ( कि. ) बकना, बोलना, कहना । [ छेलापन, छेलाई ।
- अक्षिप ( सं. ) टेढ़ापन, बांक,
- अक्षि ( वि. ) छेला, बांकुरा, खसूरत, हिम्मत, साहस, फकड़, टेढ़ा, नाबुक, ( काम ) रणसीपा
- अक्षिपुं ( कि. ) सुखामद करना, सुखानुवाद करना, प्रशंसा करना ।
- अक्षिप ( सं. ) फकड़, बांका, शेखीबाज, अभिमानी, अकड़ ।
- अक्षि ( सं. ) चिल्लाकर नमाज पढ़ना, नमाजका समय बताने के लिये " अल्लाहो अकबर " की प्रचण्डध्वनि, झियोंका एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
- अक्षि ( वि. ) लुच्चा, चालाक, मझार, टेढ़ा, बहादुर, बीर ।
- अक्षि ( वि. ) शिरपर बढाया हुवा, बहकाया हुवा, फुलाया हुवा ।
- अक्षिपुं ( कि. ) डकारना, अर्थात् कर रोना, चिल्लाना ।
- अक्षि ( सं. ) झियोंके पहिरनेका एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
- अक्षिपुं ( कि. ) बांटना, हिस्सा करना, विभाग करना ।
- अक्षिपिण ( सं. ) वैशाख मासके शुक्ल पक्षकी द्वितीयातिथि ।
- अक्षिपुं ( सं. ) मुसलमानों के लिये तिरस्कार सूचक शब्द ।
- अक्षिप ( सं. ) पूर्ववत् ।
- अक्षि ( वि. ) वे पूछ, पुछ कटा, पुच्छहीन, बड़सकस, नम्र, उबाड़ा, नंगा । [ दाखी, खैरी ।
- अक्षि ( सं. ) चाकरी, झैकरनी,



अधि ( सं. ) पानीका प्रवाह, रोक-  
नेके लिये बांधा हुआ बांध, पुल,  
पाल, बन्ध ।

अधि क्षम ( सं. ) चुनार्थका काम,  
बांध का काम, भवनादि निर्माण  
कार्य ।

अधि छेद ( सं. ) बांधने तथा खोल-  
नेका कार्य, पकड़ना, और छोड़ना ।

अधि छेदनी आत = दावपैचकी  
बात, ऐसी कठिन बात जिसमें  
होशियार मनुष्य की सलाह  
लेनी पड़े ।

अधिधु ( सं. ) वह कपड़ा जिसमें  
पुस्तकें तथा वस्त्र आदि बांधे जाते  
हैं, बसना, बन्धन, गाठ  
लिफाफा ।

अधिधु छेदधु ( कि. ) झुक जाना,  
हार जाना, सामना करने की  
हिम्मत छोड़ना ।

अधिधु ( सं. ) बांधनेका उद्देश,  
रचना, योजना, चुंबड़ी, ( जिनको  
की ओड़नी, ) ग्रंथ की विषय  
योजना, इबारत ।

अधिधु ( सं. ) श्मशान, मरघट,  
मुर्दा, पट, मसान, अंखोड़ी की  
जगह ।

अधिधु ( कि. ) बांधना, कसना,  
गांठना, साधना, गुंथना, गांठ  
लगाना, बकवना, डँट करना,  
बहुत सामग्री द्वारा नवीन रचना,  
नियमसे मर्यादा पूर्वक रचना,  
जंकुस मारना, बिचार करना,  
बन्धन में लाना, एकत्र करना,  
जमाना ।

अधि धेधु ( कि. ) जवाब देने में  
चबरावे ऐसा करना, अपना कहा  
हुवा वापिस लेना पड़े ऐसी स्थिति  
में पड़ना, यंत्र मंत्रादि प्रयोग से  
बश में करना, अधिकारमें कर लेना ।

अधि दडीधु ( वि. ) बहुत नीचा,  
बहुत ऊँचा, बहुत मोटा न बहुत  
पतला ।

अधि धीडी ( सं. ) दावदव, भांठा  
फोड़ नहीं हुई हो ऐसी हालत ।

अधिधु क्षमधु ( वि. ) तय्यार,  
जंचल, हाजर, तत्पर, हिम्मत-  
वाला, कसर बांधे हुवे तय्यार ।

अधिधु ५५ रूखेवे ( कि. ) फुरसत  
से एक ही जगह बहुत देर तक  
बैठना ।

अधि सुस्त ( सं. ) नियमित  
समय, मुकुररफ्तक, निर्दिष्ट काल

नब्दी भारी ( कि. वि. ) संतप्त  
बुद्ध, संदेहपूर्वक, संदिग्धता बुद्ध,  
गोलमोल ।

नब्दी भारी ( कि. वि. ) पूर्ववत् ।

नब्दी ( सं. ) जन्मसे अथवा कस-  
रतसे शरीर संगठन, हड्डी, कठोर,  
रूप, शक्ति, बाँचा, साँचा ।

नब्दी ( सं. ) बाँध, बन्ध, बंध ।

नब्दी ( सं. ) बंबई, मुंबई नगर ।

नब्दी-३१ ( सं. ) कोयल पत्थर,  
नरम पत्थर, ( पोरबन्दर की  
तरफ ) । [ अस्तोन ।

नब्दी ( सं. ) बाहु, बाँह, बाजू,

नब्दी ( सं. ) हाथ, हस्त, कर,  
बहु, मुजा । [ गेरंटी ।

नब्दी-री ( सं. ) जमानत,

नब्दी ( सं. ) हाथ, बाँह, अस्तोन,  
बल का वह भाग जो हाथको  
ढाँकता है । कन्याके हाथकी चूड़ी  
सहाय, मदद ।

नब्दी-री ( सं. ) हाथ पकड़ने  
वाला, जामिन, हमीदार ।

नब्दी ( सं. ) लकड़ी के वे टुकड़े  
जो कि घर के द्वार में लगाये  
जाते हैं ।

नब्दी ( सं. ) बहिन, मा, बार्ह, बालक  
के लिये लड़ में बोलने का शब्द ।

नब्दी ( सं. ) घर में की बड़ी ली  
के लिये सम्मान सूचक शब्द,  
सासू ।

नब्दी-भाषी ( सं. ) याचना, निर्ध-  
नता, दारिद्र्य, गरीबी, आजिबी,  
नामदी ।

नब्दी-भाषी करतु ( कि. ) भोज  
मांग कर खाना, वे पुरुषार्थ होना ।

नब्दी ( सं. ) सासू, सास, स्वसुर  
पत्नी ।

नब्दी भाषुस ( सं. ) ली जाति  
बैर बानी, मस्तूरात, जनाना,  
अबला जाति । [ के लिये )

नब्दी ( सं. ) लड़, हौवा, ( बालकों

नब्दी ( सं. ) हठ, जिद्द, दुराम्ह ।

नब्दी ( सं. ) समता, टकर, हठ,  
जिद्द ।

नब्दी नब्दी ( कि. ) समता  
करना, बैर करना, सामना करना,  
जिद्द बाँचना ।

नब्दी ( सं. ) राँचा हुआ अन्न,  
बिना पीसे या टुकड़े किये राँचा  
हुआ अन्न ।

नब्दीतली ( कि. ) मांगती हुई  
( रकम ) लेने योग्य, बाकी ।

नब्दीसङ्घी ( सं. ) शेष, बचत ।

नब्दी ( वि. ) बाकीका बचाहुवा ।

भा३-३३ (सं.) बड़ा भारी छेद।

भा३३३ (कि.) बाक युद्ध करना, सगड़ा करना, व्याकुल करना।

भा३३३ (कि.) पूर्ववत्

भा३३३ (सं.) बहुत दिनों की व्याख्याय मैस, समर्था गाव अववा मैस जो रूप देती हो।

भा३३३ (सं.) सारा, सच्चा, निष्कपटी।

भा३३ (वि.) बाका, रंगीला, छैली।

भा३३३ (सं.) संगीन, बच्क की नली के ऊपर भास।

भा३३३३ (सं.) वाटिका उप-वन इत्यादि, फुलवारी।

भा३३३ (सं.) माली, बागीचे के वृक्षों की हिराजत करने वाला।

भा३३३३ (सं.) बागीचे की भूमि, कृषि बिद्या, बागीचे का हुनर। [ बराबना, उद्धत।

भा३३३३ (वि.) बौफनाक, भयंकर

भा३३३ (वि.) मूठ, कठ।

भा३३३ (सं.) मुठ्ठी भरने में जितना अंगुलियों पकड़ा जा सके उतना, औषा हाथ कर के चमड़ी पकड़ कर कीचने की किया, मुठ्ठी।

भा३३३ (सं.) एक प्रकार का पत्ती, थिकरा, पत्तल, पत्तर, पातर, पत्रावलि, बाला, रसने बाला इत्यादि अर्ध सूचक फारसी का प्रत्यय, बोझा बोझ की एक भाति विशेष। [ बेंच, चौकी।

भा३३३३ (सं.) स्टल, तिपाई, पत्तल पत्रावलि, पत्तरा

भा३३३३ (वि.) बेंचल, चपल।

भा३३३३३ (सं.) बेंचलता, बच-लता, लुचवाई, बदमासी, ऊबस।

भा३३३३३ (सं.) मुड़ा, सिरा, बाल, (अन्धके) एक प्रकारकी, आतिशबाजी।

भा३३३३३ (सं.) बाजरा नामक अन्धके सिर-मुड़े एक प्रकारका जेवर।

भा३३३३३ (वि.) सिरपर बड़े बड़े बाल बढवाना (हंसीमें)

भा३३३३३ (सं.) बाजरे के सिरों को पानी छीटकर उसको कूट कर और बाजरा निकालकर अन्धके रोपा हुआ पशाने।

भा३३३३३ (सं.) बाजरा नामक धान्य का पेड़, बाजरा नामक अन्न। [ करना।

भा३३३३३ (वि.) जेक आरंभ

भाषा ( कि. ) सारी बात बिगड़ना ।

भाषातवी ( कि. ) यशोदाता कार्य में सफलता पाना, विजय पाना ।

भाषा धूण धवी-भमनी ( कि. ) खेल बिगड़ना, बिचारी हुई बात बिगड़ना, उलटे पासे गिरना ।

भाषा डाबिआ आववी ( कि. ) भाग्य परीक्षाका अवसर प्राप्त होना ।

भाषा डारवु ( कि. ) निष्फल होना, हारना, इच्छा पूर्ण न होना हिम्मत हारना ।

भाषायाडार ( सं. ) फजीहत, खराबी ।

भाषु ( सं. ) तरफ, पक्ष कोर, कोना, मदद, दिशा, ओर, बांह, भुजा । [ पर ।

भाषुपर ( कि. वि. ) अलग, पक्ष-  
भाषे ( वि. ) कोई एक, कईएक  
अमुक प्रायः ।

भाषेबेले ( सं. ) कोई कोई मनुष्य,  
अमुक आदमी, कई लोग ।

भाषे भपत ( कि. वि. ) कमी,  
कमी, किसी समय, प्रसंगात्,  
बाजवत् ।

भाषुं-ई ( वि. ) कुचना, हरामी  
धूर्त, नीच कार्यमें योग्य (मनुष्य)

भाषुं ( कि. ) बिपटाना, छत्तीसे  
लगाना, पकड़ना, लड़ना, होना ।

भाषीपु ( कि. ) भिड़ पड़ना,  
लड़ मरना गुंथजाना ।

भाट ( सं. ) एक प्रकारका मिछावा

भाटवी ( सं. ) सीसा, लम्बे आका-  
रकी सकेड़े में की काचकी सीसी  
बोतल, बोटा

भाटवी भमर ( सं. ) शराबी  
मनुष्य, मद्यपी, शराबी, मदिरा  
भक्त ।

भाटबे ( सं. ) मोटी बड़ी बोतल ।

भाटी ( सं. ) कण्ठोंकी आगपर  
सेकी हुई मोटी गोल गंगल रोटी ।

भाडुं ( वि. ) ऐस उचार बाजरे के  
ठंडल जिनमें भुटे-सिरे न आये हों ।

भाडुं ( वि. ) बांकी आंखों वाला  
ऐचकतानी आंखोंवाला, फनखा ।

भाडीआंभ-नजर ( सं. ) टेढ़ी  
आंख, टेढ़ी नजर, दूधित नेत्र ।

भाडीनजर नेवुं ( कि. ) तिरछी  
आंखों में देखना, चुपचाप देखना ।

भाडुआं-वां-दुवां ( वि. ) बेचारा,  
गरीब, बापड़ा, निर्दोष, साधा  
सधा, तुतलाकर बोलने वाला ।

आक्षुर्त ( वि. ) बालक के सवाव  
वे समझ और तोतर ।

आक्षु ( क्रि. वि. ) ठीक, मका,  
बहुत, उत्तम ।

आक्षु ( सं. ) तीर, शर, निशानी,  
खंती के लिये चिन्ह, लोहे की  
नली में बारूद भर के उसे लकड़ी  
से मजबूत किया हुआ शस्त्र, एक  
प्रकार की आतिशबाजी, नर्मदा  
नदी में कातवरा नामक गांव के  
पास का लम्बा और गोल पत्थर  
जिसे शिव मान कर पूजा करते  
हैं । खाड़ी के पास की विशाल  
अगह जहां बहुत जोर से पानी  
आता हो, । काम देव के पाँच  
बाण—“ अरविंद मशोकंच, चूर्तच  
नवमल्लिका । नीलोत्पलंच पंचैते  
पंच बाणस्य सायकाः— ॥ ” अर-  
विंद=कमल अशोक, चूर्त ( आभ-  
मंत्ररी ) नवमल्लिका ( मोगरा )  
और नीलोत्पल ( काल कमल )  
य कामदेवके पांच तीर हैं । वाग  
आक्षु ( सं. ) बाणी रूपी वाण,  
तीर समान तक्षिण भाषण ।

आक्षु वागवां ( सं. ) शब्द शर  
चुमना, तक्षिण भाषण से हृदय  
पर प्रभाव होना ।

आक्षुर्तुं ( क्रि. ) सष्ट करना ।

आक्षुभुता ( सं. ) कमा, अनिष्ट  
की ली ।

आक्षुषणी ( सं. ) तीर चल्ने में  
दल, अर्जुन का दूसरा नाम,  
बजुर्वेदम् ।

आक्षु ( सं. ) निर्दिष्ट समय, अवधि  
सुरत, शर्त, वचन, स्वीकृति,  
वचन बोली, ठप्पि, भाषण ।

आक्षु ( सं. ) संस्था विशेष, बानवें,  
नन्वे और दो, १२

आक्षु ( सं. ) खबर, सम्वाद,  
समाचार, सूचना, पता ।

आक्षुक्षर ( सं. ) खबर के जाने  
वाला, सम्वादवाहक, सूचक ।

आक्षु ( वि. ) निरुपयोगी, रद्द,  
बे काम, निकम्मा, व्यर्थ ।

आक्षु ( वि. ) खानगी, गुप्त, छुपा  
हुवा, ग्राह्येष्ट, परदे में ।

आक्ष ( सं. ) थक, दोनों युवाओं  
के बीच का स्थान, सामने टक्कर  
लेना, सामने होना, हृदयास्मिन्,  
दोनों हाथों को लंबा कर के उस  
में किसी वस्तु को ठेकेना ।

आक्षुक्षु ( क्रि. ) छाती से लपकना  
हृदय के शिपकना, साबने होना ।

आधेरी ( कि. ) पूर्ववत्  
आधेरी ( सं. ) प्रवृत्त कोशिस,  
आधेरी ( सं. ) संख्या ( जमा ) में  
से कम किया हुआ, कमी, घटी,  
रही, ( कि. वि. ) पश्चात्, उप-  
रान्त, पीछे से ।

आधेरी ( कि. ) कम करना, रही  
करना, निकाल डालना ।

आधेरी ( सं. ) शेष, बाकी, अवशिष्ट ।

आधेरी ( सं. ) शेष, बचा-  
हुआ, बाद करनेकी गणित रीति ।

आधेरी ( वि. ) मोटा, स्थूल, जो  
विखलाई पड़े, बड़ा, भारी ।

आधेरी ( वि. ) छोटा, नकली,  
बनावटी, कृत्रिम, चांदीसोनेका  
मुलम्मा किया हुआ, नाजुक,  
कोमल ।

आधेरी ( सं. ) एक प्रकारकी  
सुगंध, सुगन्धित धूप विशेष ।

आधेरी ( सं. ) वातार्क  
बादी का बवासीर, रोग विशेष ।

आधेरी ( सं. ) पूर्ववत् ।

आधेरी ( सं. ) बाधा, कठिनाता,  
अड़चन, हरकत, उपद्रव, दोष,  
पाप, प्रतिबंध, प्रतिरोध ।

आधेरी ( वि. ) बाधा हुआ, प्रति-  
बंध किया हुआ, रोका हुआ ।

आधेरी ( सं. ) एकबार मोचन  
करने का व्रत ( श्रियोमि ), पूरा,  
सिक्का ।

आधेरी ( कि. वि. ) संकेतमें,  
सन्देह युक्त रीतिसे, ऐसे और  
ऐसे । [ एवञ्च ]

आधेरी ( सं. ) बहाना, बदला,

आधेरी ( सं. ) डांचा, डङ्ग; रचना,

आधेरी ( सं. ) नौकरनी, चांदी,  
दासी, टहलुई ।

आधेरी ( सं. ) डंग, डांचा, तर्ज,  
दासी, नौकरनी, बाणों, बोली,  
वस्तु, चीज ।

आधेरी ( सं. ) सम्मानित स्त्री  
सेठानी, सभ्य स्त्री, घनाढ्य स्त्री,  
बहाना, रुपये पैसेका लेन देन ।

आधेरी ( कि. वि. ) जब से  
जन्म लिया तब से आज तक,  
कभी आज तक ।

आधेरी ( सं. ) अपने से बयौवृद्ध  
मनुष्य के लिये मान सूचक शब्द ।

आधेरी ( कि. ) पुत्र  
और पिता के तुल्य प्रेम, बाल्यस्य  
प्रेम । [ बेटेप्रा, गरीब, निर्धन ।

आधेरी शिवादिभ्यः ( सं. ) कंगाल,

आपना कुवार्त्तुभीभरतुं ( कि. )  
परम्परागत, रीति के द्वारा हानि  
उठाना, लकीर के फकीर बने  
रहना ।

आपना आप भासे भयो=मर गया,  
स्वर्गवासी हुआ, मृत्यु पाई, बहुत  
दूर जाना, दृष्टि से बाहिर होना ।

आपना आप भोलाववा ( कि. )  
दुःख के समय बापकी सहायता  
मांगना, बाप बाप चिन्तना ।

आपनी आप साहीने ( कि. वि. )  
बाप की अथवा किसी अन्य की  
सहायता ले कर, आश्रय ले कर ।

आपनु भरत-कपाण ( सं. ) कुछ  
भी नहीं, नकुछ ।

आपनु धुआई ( सं. ) बिना ढंग  
के काम करने वाले के लिये यह  
वाक्य प्रयोग किया जाता है ।

आपनु कठो=कुछ भी नहीं आता ।

आपने धुधवार ( सं. , कुछ भी  
नहीं (ज्योतिष में धुधवार नपुंसक  
माना है )

आपने लाववा ( सं. ) लज्ज,  
फावदा, बापका रक्षा हुआ  
अधिकार ।

आपडिथुं ( वि. ) गरीब, रंक, कंगाल  
दारी, से मायापका, दवा योग्य ।

आपडी ( सं. ) दीन, बाकिर  
अथवा झी ।

आपडुं ( सं. ) निर्धन, दीन, अस-  
हाय, गरीब, रंक, दमित्री, कंगाल,  
अनाथ ।

आपडाहा ( सं. ) पूर्वज, पुरुषा,  
अग्रज, पुराने लोग, बड़े लोग ।

आपपडुं ( सं. ) पितृत्व, जनकता ।

आपपार्थ भरतुं ( कि. ) कोसना,  
गाली गलौज करना, बहुत सम-  
झाना, विनती करना, मित्रता  
करना । [ सहायता करो, दइया ।

आपरे ( विस्म. ) अरे बाप, कोई

आपवभरतुं ( कि. ) पितृहीन,  
बिना बाप, पितारहित ।

आपसमान ( वि. ) पितृ तुल्य,  
बाप के अनुसार, पितारहित ।

आपला-लिवा ( वि. ) पिता, बाप,  
बेचाग, दीन, असहाय, निर्बल ।

आपा ( सं. ) बाप, पिता, जनक,  
माननीय पुरुष के लिये यह शब्द  
प्रयोग होता है ।

आपडुं ( वि. ) बापका, पैतृक ।

आपीडुं वतन ( सं. ) पितृ भूमे,  
बाप का देश, वतन, देश ।

भापु ( सं. ) बाप, पिता, जनक, शिक्षा देते समय सम्बोधन शब्द, बालकों के लिये भी प्रयोग होता है । सम्मान सूचक शब्द ।  
 भापुडी ( वि. ) प्यारी, प्रिय, ( सं. ) लड़की, बालिका, कन्या, दुलारी ।  
 भापू ( सं. ) बाण, बफारा, गर्म जल आदिका धुआं, घाम, पसीना ।  
 भापू ठेपे-आपवे-छुटवे-निठणवे ( क्रि. ) उबलना, खोलना ।  
 भापूवेवे ( क्रि. ) बरार लेना, बाण ज्ञान करना ( पसीने के लिये )  
 भापू ( वि. ) रंधने का, उबालने का, कबापका रंधा हुआ, ढोरे के लिये उबाली हुई खुराक ।  
 भापू ( क्रि. ) उबालना, औटाना, राधना, उकालना ।  
 भापू ( सं. ) प्रकरण, परिच्छेद, अध्यय, भाग, कांड, सर्ग, विषय काव्य, आभूषण, नग, कलम ।  
 भापूत ( सं. ) विषय, प्रकरण, कारण, हकीकत, बनावट, तफ-सील, विवरण, विगत । ( क्रि. वि. ) लिखे, वास्ते, विषयमें, सम्बन्धी, कारण से ।

भापूतवार ( वि. ) क्रमशः विवरण युक्त, मयतफसील, व्योरेवार ।  
 भापूतसर ( सं. ) अनुसार, योग्य ।  
 भापूतनु ( वि. ) सम्बन्धी, विष-यक ।  
 भापूती ( सं. ) कमीशन, फौ कर लगान । खेत में अन्न, निकलने के बाद ब्राह्मण, भाट, नाई इत्यादि को दिया जाने वाला हक दलाली ।  
 भापू ( सं. ) देखो भापूत ।  
 भापू ( सं. ) मस्तक के छोटे छोटे बिखरे हुए बाल, छोटे बियुरे केश ।  
 भापूथिं-ये ( वि. ) बिखरे बालों वाला, जटिल ( सं. ) भक्त, योगी ।  
 भापूरी ( सं. ) छोटे छोटे बिखरे हुए बाल टोपीके आसपासकी बालर ।  
 भापूस्ता ( वि. ) सघन संबंधी, नातेदार, रिस्तेदार । द्रव्य ।  
 भापू ( सं. ) एक प्रकारकी भील जाति, अंग्रेजोंके लड़कों के लिये प्यारका शब्द, रोटीयां, ताता ।  
 भापू सार्ध ( सं. ) एक प्रकारका बड़ोस गजबका बलनी कपड़ा ।



आभु ( सं. ) संन्यासी, बैरागी बाबा, ( बालक को समझाने के लिये ) बंगाली लोगोंकी एक जाति विशेष, बंगाली ।

आभे ( कि वि. ) बाबत, विषे, सम्बन्धी कारण से, वास्ते, लिये ।

आभे। ( सं. ) ताता, रोटी ।

आभ ( सं. ) एक प्रकारकी बेलि, दोनों हाथ तथा छाती इतनी लम्बाईका परिणाम, फेदम, बाम, सर्पाकार मछली ।

आभधु ( सं. ) ब्राह्मण, विप्र, द्विज भूषुर, अग्रजन्मा, माहेसुर ।

आभधुी ( सं. ) दो मुखका साप, दुमुही, साँसकी ब.मनां, एक प्रकारका चार पैर वाला छिपकली के बारबर साँस के रंगका और उली प्रकार मुड़कर चलने वाला जीव, ब्राह्मणी ।

आभहाइ ( सं. ) भोर, भिनुसारा, प्रभात, सबेरा, सुबह, तड़का, पौफटना, लश, प्रत्युष काल ।

आभला ( सं. ) काल में होने वाला एक प्रकारका रोग, बगल में होने वाली बीठ ।

आभण ( सं. ) पूर्वाव ।

आभणधुणी ( सं. ) पूर्वाव ।

आभाशी ( सं. ) डाकिनो, डाकिन, बावन, चुंदल, प्रेतिनी, जन्तर मंतर आकने वाली स्त्री, यंत्रिनी ।

आभिवा ( सं. ) एक प्रकारकी तरकारी शाक विशेष ।

आभडी ( सं. ) स्त्री, औरत, विवाहिता स्त्री, बहू, पत्नी ।

आभलापधुं ( सं. ) डरपोकापना, कायरता, भीरुता ।

आभले। ( सं. ) स्त्रियोंकी बातों से प्रसन्न होने वाला, स्त्रियों के झुंझके बैठकर उनकी बातों में आनन्द मानने वाला, स्त्रीवश जिसकी कुछ निजकी स्त्री के समाने बात न चलती हो, नामदं, बीरहीन, नपुंसक, हिजड़ा कायर, डरपोक, शक्तिहीन ।

आभुं ( सं. ) तबलेमेंका एक तबल जिसको आटा लगाया जाता है, बाई ओर रख कर बजने वाला तबला, त्रिगा, नर तबला ।

आ२ ( सं. ) तोर या बंदूक का फायर, तड़ाका, आनन्द मजा, छोड़, त्याग, खोड़, द्वार, आनन, चाक, ( वि. ) द्वादश, बारह, संख्या विशेष १२, सारा, सर्व, समस्त [ आनन्द, मजा, राज्य ]  
आ३ ( सं. ) सुह, बीना ।

भारभाषी देव ( सं. ) सबही हुकम करने वाले किंतु काम करने वाला कोई भी नहो तब यह वाक्य प्रयोग किया जाता है ।

भारभाषी भाषी ( वि. ) निश्चितता, निरांत, सुख, चैन, आनंद मजा । [ छोटा हूं ।

भार भरसने भेड़ा धुं = अभी

भार वाणी भवा ( कि. ) आफत आना, सुखका अंत होना ।

भारुं योथ = कुछनहीं, नकुछ ।

भारभो अंद्रमा ( सं. ) विरुद्धता, अनवन ।

भारे इरवाण भुल्ला छे = जिते जिस, ओर जाना हो वह जा सकता है, चाहे जहां जावो, जाने की इजाजत है, यह दही सा सीधा रास्ता पड़ा है, स्वतंत्रता है ।

भारे ददाडाने अनीस धडी = सदैव, सदा, रातदिन, अक्षरनिशि, निरंतर ।

भारे भागेभा भोःणी = सब रास्ते खुले हुए, किसी भी रास्ते से जानेकी जरूरत ।

भारे भलीनाने देरे भाण-सारे बर्ष-भर, हमेशा, सदैव, निरंतर ।

भारे भेड़ भरसवा ( कि. ) सब प्रकार की कृषि सिद्धि प्राप्त होना ( शाखों में बारह प्रकारके भेघ कहे हैं । )

भारे ठस ( सं. ) बड़ जहाज, बड़ा भारी, समान लादने वा जहाज, व्यापारी जलयान, भार लादने की गाड़ी ।

भारभाडी-णी ( वि. ) माटी जमीन बिना लगानकी भूमि ।

भारगीर ( सं. ) घोड़े का सवार घुड़ चढ़ा, सैनिक, अश्वारोही सवार ।

भारडी ( सं. ) र्चा निकालने के लिये खर्च में लगने वाली रस्ती, नेती, नेता ।

भारधुयो ( सं. ) सुनारके यहाँका कूड़ा कबरा खरीद कर ले जाने वाला । धूल धोवा ।

भारधुं ( सं. ) द्वार, दरवाजा, कपाट, बारना, मार्ग, फाटक, आंगन, ।

भारभां तोडी भाषा ( कि. ) पंछि लगकर उगाही करना, सख्त तकावा करना ।

आरखे ताण्ठा देवावां ( कि. )  
सत्यानाश जाना, निस्सन्तान  
होना, निर्वंश होना, मटियामेट  
होना ।

आरखे दीवे रडेवे ( कि. ) वंश  
चलना, सतान होना, पुत्र होना ।

आरखे भेसपुं ( कि. ) तकाजा  
करना, जबरन मांगना, लांचना ।

आरखे छथी खुशवा ( कि. )  
अत्यंत अनवान होना, खूब ठाठ  
पाठ होना ।

आरखान ( सं. ) बह पंटा अथवा  
घेला जिसमें माल भराहो, बांधने  
कां बेठन, बेठन, बंधनका वजन,  
जितना वजन गाड़ीमें भरा हों,  
वृषण, अंडकोष, लिंगके नीचे के  
अंडे, आंड, पलड़े, रुईकी गांठका  
लपेटन बन्धन इत्यादि, लपेटन ।

आरखान आरे धवां ( कि. )  
मिजाज बढना, गर्व होना, अहं-  
कार होना ।

आरनिश ( सं. ) हुंडीपत्री, कागज  
हुकम इत्यादि की नकल हुए बाद  
अथवा किताबमें चढावे बाद  
निशानी या नम्बर करने वाला  
सरकारी मनुष्य ।

आरनिशी ( सं. ) आवक जावक  
फाइल, हुंडी पत्री कागज इत्यादि  
को पुस्तकमें लिखने मोहर करने  
तथा निशानी इत्यादि करनेका  
कार्य ।

आरभुं ( सं. ) मृतक का बारहवां  
दिन, द्वादशा, मृत्युके पश्चात् १२  
वें दिन की क्रियाकर्म, ( वि. )  
बारहवां ।

आरवटियो ( सं. ) बदला लेने  
वाला, सरकार परियाद न सुने  
अथवा अन्याय करे उसके कारण  
दुखी होकर गांवों में बसेड़ा करने  
वाला तथा लूटने वाला ।

आरवटुं ( सं. ) बदला, पेहनसाफी  
बैर, सज़ा, दंड, बसेड़ा लूट ।

आरवासियो ( सं. ) भंगी, मेहतर,  
जोस, खपच, चाण्डाल, डेढ़ ।

आरपुं ( कि. ) बुहारना, झाड़ना,  
झाड़ निकालना, संभालना, इकट्ठा  
करना, पाखाना झाड़ना, कचरा  
हटाना ।

आरसे नांभवी ( कि. ) सरे हुए  
को आवणी के दिन सम्मन्धियों  
द्वारा दिया हुआ ।

आरसे भेसवी ( कि. ) मृतक का  
शोक प्रदर्शित करना, मातम  
मनावना ।

आरक्षण-साध ( सं. ) द्वार की चौखट, दर्वाजे का चौखटा, चौखट ।

आरखें-सें ( सं. ) बारह बार सौ, १२००, एक हजार दो सौ ।

आर ( वि. ) बारह, १२, द्वादश, दस और दो, सख्याविशेष ।

आराधनी-क्षरः ( सं. ) द्वादश मात्राओं का ध्यंजनों के साथ मिलान, पद, बारहखड़ी, द्वाद-शाक्षरी ।

आरि ( वि. ) सूक्ष्म, पतला, झीना, बहुत सावधानी से करने का ( काम ), नाजुक, कोमल, हलका, साक्ष्य, तीव्र ।

आरिह नररे ( कि. वि. ) गहरी निगाहसे, संपूर्ण रीतिसे ।

आरिहधये ( कि. वि. ) सूक्ष्म रीतिसे ।

आरिहध-धी ( वि. ) सुकुमारता, नैजिकपन, सूक्ष्मता, पेच, चातुरी ।

आरिहध ( सं. ) कानून शास्त्र में परीक्षोत्तीर्ण प्रथम वर्ग का प्रमाण पत्र प्राप्त वकील. उच्च कोटि का वकील बालिस्टर ।

आरी ( सं. ) खिड़की, छोटाद्वार, बातायन, यवाल, उजाला दान ।

आर ( सं. ) द्वार, दर्वाजा, फाटक, रास्ता, जाने जाने की युक्ति, जहाँ नदी समुद्र से मिलती हो वह स्थान । खाड़ी, ( वि. ) स्वर-हीन, बेसुरा ।

आर ( सं. ) बरह, दारू, आग्नि से भभकने वाला चूर्ण ।

आरतदान ( सं. ) बारह भरने का पात्र, बारह भरने का साँग ।

आरशभुं ( कि. ) स्थान करना, जगह करना ।

आरभास ( कि. वि. ) हमेशा, निर-न्तर, सदा, वर्षभर, सदैव, स्थायी ।

आरेवाट ( कि. वि. ) बिखरा हुआ इधर उधर पड़ा हुआ, उथल पुथल, निकाम, निष्फल, बारह रास्ते ।

आरेवाट ३२पुं ( कि. ) इधर उधर उड़ा देना, फैला रखना, मुक्त हस्त हो कर खर्चना,

आरेवाट ३४ ७पुं ( कि. ) उड़ जाना, खप जाना, बिगड़ जाना, नष्ट हो जाना ।

आर्यो ( सं. ) बारह हाथ लम्बा लट्ठा ( गार्दामें ), जिसे कोई संभालने वाला न हो, जो बाहिर टुकटा फिरता हो, जिसने

लुप्तवांसे संप्रह किया हो, कचरा  
कूड़ा साठने बाका, मंथी मेहतर।

आर्य१४-३ ( वि. ) माटकी एक  
जाति विशेष; कवि, माट, कथक,  
प्रशंसक।

आर्य१५ ( सं. ) किसी भी रकम  
पर बारह टके व्याज, व्याजकी  
रकमका १२वां भाग, सूदका  
बारहवां हिस्सा।

आर्य१६ ( क्रि. वि. ) सीधा, पर  
भारा, पर बये बिना, सूचा  
योंकायों।

आर्य१७ ( सं. ) पानी निकालने का  
चमड़े का डोल, बालटी, एक  
प्रकारका चमड़ा।

आर्य१८ ( सं. ) प्रेमी, आशिक,  
आसक्त, बर, पति, धनी,  
मालिक।

आर्य१९ ( सं. ) पचवी का बांका  
पेच अलबेला दिखानेके लिये।

आर्य२० ( सं. ) श्री कृष्ण चंद्रजी  
का बाल कालका नाम। बालकृष्ण।

आर्य२१ ( सं. ) जीनको खैरकर  
बांधने का तज्ञ। [ बरदात।

आर्य२२ ( सं. ) संभाक, रक्षण,

आर्य२३-२४ ( सं. ) पूर्ववत्।

आर्य२५ ( क्रि. वि. ) रोम रोम  
में, बरं बरंमें, बाल बालमें, बेहद,  
बहुत ही।

आर्य२६ ( सं. ) एक प्रकारका  
फूल कापेड़, वृक्ष विशेष। [ क्रि. वि. ]

आर्य२७ ( सं. ) बालक, बच्चा,

आर्य२८ ( सं. ) प्रवभावस्था,  
लड़कपन, बाल्यकाल, शैशवकाल  
लड़काई, बचपन, बालक दशा।

आर्य२९ ( सं. ) चांदीकी वह वस्तु  
जिस पर सोने का मुद्रमा किया  
हुवा हो ( क्रि. ) कृत्रिम, जोटा,  
नकली, बनाबटी।

आर्य३० ( सं. ) एक प्रकारकी वस्-  
स्पर्ति, वस्तुलसी, बाबची।

आर्य३१ ( सं. ) चिन्ह, ध्वजा,  
झंडा, एक प्रकारका बाजरे समान  
धान्य।

आर्य३२ ( सं. ) स्कंध और कुहनी  
के बीचका हाथका भाग। [ ५२।

आर्य३३ ( सं. ) पचास और दो,

आर्य३४ ( सं. ) सबको सम्हा-  
लने ऐसा मनुष्य, महा बली,  
बहादुर। [ श्री कृष्ण, चन्दन विशेष।

आर्य३५-३६ ( सं. ) एक प्रकार

आर्य३७ ( वि. ) वाहन संख्याका  
समुदाय युक्त। बाबका।

आवर् ( वि. ) व्याकुल, घबराया हुआ, व्यथित, आकुल, जिसे कुछ भी न सूझता हो ।

आवर् ३२५ ( कि. ) यकाना, व्याकुल करना, व्यथित करना ।

आवर् ( सं. ) धातु अथवा मिट्टी की पुतली, मूर्ति, प्रतिमा, गुड़ी, गुलिया । [ बंबूलोंका बन ।

आवर्-गिरी ( सं. ) बंबूलका वृक्ष ।

आवर् ( सं. ) पूर्ववत् ।

आवर् ( सं. ) योगिन, बाबन, तपस्विनी ( वि. ) बाईस, २२, बाँस और दो । [ संख्या विशेष ।

आवर् ( वि. ) बाईस, २२,

आवर् ( सं. ) मकड़ी का जाल ।

आवर् ( सं. ) साधू, संत, योगी, बाबा, वैरागी, गृहत्यागी, तपस्वी पिता, बाप, जनक ।

आवर् ( वि. ) बेमर्याद, लम्पट, बुराचारी, बदकार, सुजा हुआ, निरंकुश, मटका हुआ, भूला हुआ ।

आवर् ( सं. ) गन्ध, महत्त, बों, वृ, दुर्गन्ध, बदबो ।

आवर् ( सं. ) देखो आवर्

आवर्-सेठ ( वि. ) संख्या विशेष साठ और दो, ६२, बासठ ।

आवर् ( सं. ) एक प्रकार का मोटा नादरपाट के समान कपड़ा । जिस समय विदेशी वस्त्रों का यहाँ प्रचार नहीं था तब इसी कपड़े के अंगगरखे इत्यादि बनते थे और यह "अहमदाबादी आवर्" कहलाता था ।

आवर् ( सं. ) मसालेदार उबाल कर गाढ़ा किया हुआ दूध, रबड़ी ।

आवर्-४ ( वि. ) देखो आवर् ।

आवर् ( सं. ) त्याग, छोड़ देना ।

आवर् ( सं. ) दुर्ग विशेष ।

आवर्-३६४ ( सं. ) बाहिरी किला

आवर्-३६४ ( सं. ) दूसरा गांव, अन्य देशीय नगर ।

आवर् ( कि. वि. ) बाहिरते ।

आवर् ( सं. ) मेहतर, अंगी, झाड़ लगाने वाला ।

आवर् ( वि. ) बाहिरी, ऊपरी, विदेशी । [ तरफ, बाहिरकी बाजू ।

आवर्-३६४ ( सं. ) बाहिरकी

आवर्-३६४ ( सं. ) छुटेरा, बाकू, चोर ।

आवर् ( कि. ) दुहारना, झाड़ना झाड़ लगाना, साफ करना ।

आवायु ( सं. ) देखो आवयु ।

आंही ( सं. ) बाँह, अस्तान, भुजा, बाजु ।

आंहीधर ( सं. ) मददगार, सहायक, आश्रय दाता, धोरज देने वाला । [ आश्रय, सहारा, योग ।

आंहीधारी ( सं. ) सहायता, मदद,

आंहीधरी ( सं. ) जमानत जिम्मा, प्रतिभू, गारण्टी ।

आंहीभण ( सं. ) भुज बल, बाहु, बल, शक्ति हाथोंकी ताकत ।

आइल ( सं. ) बेटील बंद शकल मनुष्य, समस्त अंगमें मस्म लगाय तथा आँखोंकी भौंहे पीली बनाये हुए आँचड़ योगी । मुखे, मूठ, बन्दर, बानर, ऋतुपर्ण र.जा के यहाँ सारिस बनकर रहा हुवा राजा नल ।

आइलु ( सं. ) देखो आवलु ।

आइर ( कि. वि. ) बाहर, भीतर नहीं, अन्दर नहीं, सीमा के परली ओर ।

आइर ( वि. ) होशियार, चालाक चतुर, सावधान, सावचेत ।

आण ( सं. ) बालक, बच्चा, शिशु, छोटा बालक छोटा छोकरा ।

आणकि ( सं. ) बालिका, बच्ची, छोटी लड़की, बाल ।

आणकुंवारी ( सं. ) अतिबाहिता, बे ब्याही लड़की, कन्या ।

आणके ( सं. ) लड़का, छोकरा ।

आणभेआण ( सं. ) कुटुम्ब के, सब लोग छोटे बड़े घरके लोग ।

आणप ( सं. ) दया, कृपा, दृष्टि मिहरबानी, अनुकम्पा ।

आणपछु-पु ( वि. ) बचपन, छुटपन, शैशवावस्था, बालवय ।

आणइशालु-पथालु ( कि. वि. ) बचपन का, छुटपनका, शैशव ।

आणअन्ना ( सं. ) कुटुम्ब, कबीला घर एहस्थ, झटला, बालबच्चे ।

आणभेध ( सं. ) बालकों को बोध प्रद, संस्कृत अथवा देव नागरी लि.पि ।

आणअध्वारी ( सं. ) आजन्म ब्रह्मचारी, जिस पुरुष का विवाह नहीं हुवा होवा हो, जिस पुरुषने स्त्री प्रसंग न किया हो, जिसने जन्मसे अन्त तक वीर्यन मिरायाही ।

आणभाषा ( सं. ) बालकों की बोली, समझने न आवे ऐसी भाषा, तोतली भाषा, मातृ भाषा, मागची भाषा, संस्कृत से अप-भ्रंस होकर बनी हुई भाषा ।

आणवुं ( क्रि. ) जलाना, दख  
करना, दहना, सुलवाना, लगाना,  
विताना, ममकाना, खूब गर्म  
करना, पकाना, दाजना, डाम देना,  
सताना, बिद्वाना, शिक्षाना, दुख  
देना, शुव आणवे। दुखी होना,  
दिल जलाना, कृपालु होना। ६।१-  
आणवा, रौंधना, स्वयम् करना।  
आणा ( सं. ) लड़की, कन्या, छो-  
करी, बालिका, १६ वर्षसे कम  
उम्रकी ली।  
आणापथु ( सं. ) बचपन, बाल्य-  
काल, अज्ञानता, कौमार्य, बाल्य,  
कन्याकाल।  
आणाभंध ( सं. ) बालकके सिरपर  
बाँधनेका साफा या फेंटा।  
आणाशान ( सं. ) वह बालक जो  
राजाकी समान माना जाता हो,  
जवान राजा, छोटी उम्रका राजा।  
आणी ( सं. ) पुत्री अथवा लड़की  
के लिये लावने प्रयोग होता है।  
आणिश ( वि. ) मूर्ख, झूठ, बुद्धि-  
हीन। [ अज्ञान।  
आणुआणु ( वि. ) बालक समान,  
आणुवां ( सं. ) लड़के (कवितामें)  
आणेश ( वि. ) जवान कमउम्र,  
युवक।

आणोहा ( सं. ) बचपनमें विवाही  
हुई लड़की, विवाहिता कन्या।  
भिंडी ( सं. ) लपेटनमें लपेट कर  
साँची हुई छोटी गठरी, पार्सल।  
भिष्ट ( वि. ) कठिन, कठोर, भया-  
नक, भयङ्कर, खौफज़द। [ दिल।  
भिष्टु ( सं. ) डरपोक, भीरु, बुज  
भिगडुं ( क्रि. ) बिगड़ना, खराब  
होना, नाश होना, बर्बाद होना,  
नष्ट होना पायमाल होना, बुरा  
होना। [ लड़ाई, झगड़ा हानि, क्षति।  
भिआ३ ( वि. ) विरोध, तोड़, भंग,  
[अभ्रातुं ( वि. ) अद्भुत, अजीब,  
विचित्र, गैर, परदेसी, अजनबी,  
अन्य देशी।  
भिआरी ( सं. ) बेगारी, मजदूर,  
मुफ्त का मजदूर, सेतमेंत का  
मजदूर, जबरदस्ती मजदूरी करा-  
कर पैसे या उसका मेहनताना न  
देना, और देना तो केवल नाम  
मात्र का।  
भिआवे। ( सं. ) एक प्रकार की  
तलवार।  
भिआ३ ( वि. ) गरीब, दीन,  
दुर्बल, हीन, बेचारा, बेवश, रंक,  
बापड़ा, दुखी, मृदुमाषी, निराश्रय,  
दरिद्र, कंसाक।



शिक्षण (सं.) एक प्रकार का आभूषण जो जिसे पैरों की अंगुलियों में पहिनाती हैं, बीछ्डी, नूपुर, नुटकी। अनवट।

शिक्षण (सं.) बिछौना, बिस्तर, चटाई, साबरी, बैठने सोने के लिये वस्त्रादि।

शिक्षण (सं.) बिछाई हुई आजम, सतरंजी बगैर, बिछौना, बिछी हुई वस्तु।

शिक्षण (क्रि.) फैलाना, बिछाना, बिछौना करना, बिस्तर लगाना।

शिक्षण (सं.) एक प्रकार का फल, फलविशेष, तुरंग।

शिक्षण (क्रि.) बन्द करना, अट-कना, पक करना, सीलमुहर करना। सिकोड़ना, घड़ी करना मुहर करना।

शिक्षण (क्रि.) बन्द कर के रखना करना।

शिक्षण (क्रि. वि.) बिना, बगैर (सं.) पुत्र, एक प्रकारका स्वरवाच, शीन,

शिक्षण (सं.) दोनों भौंहों के बीच में की हुई सिन्दूरकी बिन्दी, ठीकी, बिन्दी।

शिक्षण (सं.) बाहु का भीटा पात्र।

शिक्षण (क्रि. वि.) बेकाम-धंसे, टकड़ा, निठाला।

शिक्षण (क्रि. वि.) बिना, बगैर।

शिक्षण (सं.) हकीकत, वर्णन, कथन, बाबत, विवरण, तफसील, विषय, सार।

शिक्षण (सं.) बिन्दु, बूंद, टपका, दाग, चिन्ह, प्वाइन्ट।

शिक्षण (सं.) देखो शिक्षण।

शिक्षण शिक्षण (क्रि.) अति-शयोक्ति करना, रजका गज करना। बात का बतकाड़ बनाना, पाद को पदमसिह करना, राई को पहाड़ कर देना। हिस्सा।

शिक्षण (सं.) फौज का आगे का

शिक्षण (सं.) सेना के खाने पीने की खबर रखनेवाला ऊपरी।

शिक्षण (सं.) प्रातःकाल गाने का एक राग, राग भेद।

शिक्षण (सं.) अस्म, पवित्र अस्म, राख, ऐश्वर्य, धन।

शिक्षण (सं.) बयान, वर्णन, जिक्र।

शिक्षण (सं.) द्वेष, अनयन, बैर।

शिक्षण (सं.) मुनसान, निर्जन, ऊजड़, जंगल, बोरान।

बिधाभूषण ( वि. ) मयानक, लौक-  
नाक, विकराल, डरावना ।

बिश्द ( सं. ) प्रण, प्रतिज्ञा, टेक,  
बचन, वादा, पण ।

बिश्दाल ( वि. ) टेकवाला, प्रण-  
वाला, सत्यप्रतिज्ञ, बचन पालने-  
वाला । [यशोवर्णन, प्रसंशा, तारीफ]

बिश्दाली ( सं. ) वर्णन, बखान

बिश्भाषा-भोषा ( सं. ) एक प्रकार  
की जंगली वनस्पति ।

बिश्भुषुं ( कि. ) विराजना, शोभना  
सुन्दर मादम होना, सुखभोग करना  
सुखपूर्वक रहना, आना, पधारना,  
मानपूर्वक बैठना ।

बिश्दर ( सं. ) भाई, बन्धु ।

बिश्दरी ( सं. ) मित्रमंडली,  
भाईचार, जतिमंडली, स्वजाति ।

बिश्दुं ( वि. ) दूसरेका, पराया,  
अन्यका ।

बिध ( सं. ) छिद्र, माँद, बाँमी,  
संध, गुहा, कन्दरा, छेद, दरार,  
बाँबी, सूराल ।

बिधकुध ( कि. वि. ) सब, समस्त,  
सारा, जग जग, समूचा, सगला,  
समाम ।

बिधवर ( वि. ) बिहौरी काचका ।

बिधनी ( सं. ) एक जातिका फल ।

बिधाडी ( सं. ) बिहो, बिलाई,  
माजोर, बिडाल, मांजार, भिनका,  
एक प्रकारका चौपगा पशु, लोहे  
का यंत्र जिसे कुए में रस्सीद्वारा  
ढाल कर पात्र इत्यादि निकाल  
जाते हैं, लोहे का कांटा जहाज को  
स्थिर रखने तथा ठहराने का  
लंगर ।

बिधाडं बंधं ( कि. ) आंखों में  
बहुत काजल लगाने से बिन्हा कां  
सां सूरत दिखाई पड़ना ।

बिधाडी गेरी आंघ ( सं. ) भूरी  
आंख, मांजरी आंख, अंग्रेजों को  
सी आंख ।

बिधाडीतुं अयेगिथुं बिन्ही जिस  
प्रकार अपने बच्चे के मुँह  
में उठाये फिरती है उसी भाँति  
कि सी वस्तु को अपने साथ साथ  
लिभे फिरने वाला ।

बिधाडुं ताथुपुं-भेयुं ( कि. )  
बिना पढे अथवा बिना समझ  
बिन्ही की पूछ जैसे गटर पटर  
जल्दी जल्दी हस्ताक्षर करना ।

बिधाडीना टीप ( सं. ) कुत्ते के  
कान समान वनस्पति, जो वर्षा  
ऋतु में उत्पन्न होती है और  
एकाध दिन में सूख जाती है,  
छत्रक, कूकरमूला, सांवकी छतरी ।

अध्यास ( सं. ) शिली अथवा  
शिली ।

अध्यास ( सं. ) शिल, ब, बिटल  
शिल, शिल, चालकलुच्चाव्यक्ति।

अध्यास ( सं. ) शिलवत् नामक  
राग, प्रातःकालीन एक राग ।

अध्यास ( सं. ) काटकर जिसे  
ठीक किया हो ऐसा हीरा ।

अध्यास ( सं. ) जिस काच में साफ  
स्वच्छ आरपार देखे, शिली  
काच ।

अध्यास ( सं. ) धेत, धेत, मिह्राव

अध्यास ( सं. ) तेंगा, पदसूचक  
छ.ती पर लगनेवाला चिन्ह विशेष,

अध्यास ( सं. ) एक ईंटके आकार  
की दीवार, भीड़, दोस्त, सहायक,  
निपुण, सयाना, चालक, धूर्त ।

ठग, लुच्चा, साथी, जोड़ीदार ।

अध्यास ( सं. ) देखो अध्यास ।

अध्यास-राव-राव-राव ( वि. )  
हराना, चौकाना, भयभीत करना ।

अध्यास-६ ( सं. ) पूंजी, शैल, शैल,  
शैल, मूल्य, मूलधन ।

अध्यास ( सं. ) बिस्तुट, एक  
कार की वाहन शैल की शैल

अध्यास ( सं. ) गवा, घमण्डी,  
लम्पट, भ्रष्टाचारी, व्यसनी,  
पिअवकट ।

अध्यास ( सं. ) शिलीना बिस्तर।

अध्यास ( सं. ) फर्श, शिली,  
साथी ।

अध्यास-शैल ( वि. ) शरावना,  
शौफ जद, भयङ्कर, भयानक ।

अध्यास ( सं. ) भय, शर, शौफ ।

अध्यास ( सं. ) शरपोक, भीड़,  
जुज दिल ।

अध्यास ( सं. ) शरिता, काय-  
रता, शरपोकान, जुजदिली ।

अध्यास ( कि. वि. ) भयानकतासे,

अध्यास ( कि. ) शराना,  
चौकाना, भय देना, शौफ पैदा  
करना ।

अध्यास ( वि. ) भयभीत,  
शर हुवा, चकित, भीत ।

अध्यास ( कि. ) शराना, भयानक-  
होना ।

श्री ( सं. ) शैल, शैल, मूल, जद,  
मुख्यपदार्थ, कारण ।

श्री उग्री नीलधनुं ( कि. ) शक-  
प्रकारसे लाभ दावक होना, शि-  
नत सफल होना, जय होना,  
सफलता पाना ।

श्री भोक्तुं ( कि. ) जड़ उखाड़  
कैकना, नाश करना, अन्त करना,  
श्री शेषधुं ( कि. ) नीव डालना,  
घेर रसाना, प्रवेश होना, बीजबोना  
श्री ( कि. वि. ) भी, तौभी, अपि  
श्रीभ्रातृ ( वि. ) डरावना, भयङ्कर  
श्रीभो ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष,  
श्रीक ( सं. ) डर, भय, शौफ,  
दहसत ।  
श्रीकथु ( वि. ) डरावन, बे हिम्मत  
का, साहसहीन, भय, डरपोक ।  
श्रीकथु श्रीधडी ( सं. ) डरपोक,  
बिली के समान डरने वाला ।  
श्रीकथुपथुं ( सं. ) डरवोकपन,  
भीरुता कायरता, बुजदिली ।  
श्रीग ( सं. ) द्वितीया, दोयज,  
बाँझ मासके प्रत्येक पक्षकी दूसरी  
तिथि, बौर्य, घातु, रेत, ओज,  
मणि, मदन सार, बीज बीजा,  
लेसदार स्वेन रंग की विशेष  
प्रकार की गंध वाली वस्तु जो  
लिंगेद्रिय से निकलती है और  
जिससे गर्भ स्थित होता है, जड़  
भूल, कारण, पाया, नींव, भावार्थ,  
मतलब, सार, अक्षर तथा बिन्दु  
मे होने वाला गणित, मंत्र सिद्धि  
के हेतु सांकेतिक चण, औटाद,  
सन्तान, संगति, अक्षर ।

श्रीगक ( सं. ) वस्तुओं की सूची,  
चेक, लेबल, टिकट बालान,  
लिस्ट, बिल ।

श्रीग भाग ( सं. ) एक प्रकारका  
धर्म । [ अनुगामी ।

श्रीग भांभी ( वि. ) बीज मार्गका

श्रीगवर ( सं. ) एक श्री मरजाने-  
पर जिसका दूसरा विवाह हुआ हो  
वह पुरुष, दूजवर, पुनर्विवाहित  
पुरुष ।

श्रीग नकल ( सं. ) प्रतिनिधि, दूसरी  
नकल, दूसरी प्रति, कापी ।

श्रीगवार ( कि. वि. ) पुनर्वार,  
दुबारा, फिरसे, दूसरीबेर, पुनः ।

श्रीगुं ( वि. ) दूसरा, द्वितीय,  
पृथक जातिका, दूजा, दुसरा, ।  
और, फिर ।

श्रीक ( सं. ) पशुपक्षिकामल, जानवरों  
का गू, विष्टा, बीठ,

श्रीक ( सं. ) घासका जंगल, बरगाह  
दृण, भूमि, कच्ची धातु ।

श्रीडी ( सं. ) कृषा चूना सुपारी  
इत्यादि रखकर पुढ़या बनाया  
हुवा पान, पसेमें सभ्यक रखकर  
सपेटी हुई संकके आधारकी कली

चुसद, सिगरेट, पानबाड़ी, ताम्बू-  
सक बीड़ा ।

भीड़ुं ( सं. ) पान बीड़ा, बड़ी पा-  
नकी बीड़ी ।

भीड़ुं अड़पुं ( कि. ) बीड़ा उठाना,  
कोई कठिन काम करनेकी प्रतिज्ञा  
करना ।

भीड़ो ( सं. ) बड़ा लिफाफा, कव्हरा

भीड़ुं दुं ( कि. ) डरा, चौंका,

भीन ( सं. ) बीणा, एक प्रकारका  
तारवाला बाजा जिसके दोनों ओर  
तूँबे होते हैं । सितारकी शकल-  
का बाज ।

भीना ( सं. ) बनाव, बना, हुवा,  
हकीकत, बात, वर्णन, विषय, वाक्य ।

भीम ( सं. ) धातुके अक्षर, टाइप,  
शीशके अक्षर, छारेके अक्षर केडवा

भीम गोलवना ( कि. ) अक्षर,  
जोड़ना, कम्पोज करना, हुक्क  
जोड़ना,

भीमी ( सं. ) गृहत्व मुजलान की ।

भीमुं ( सं. ) धातुका अक्षर, टाइप,  
आकृत, स्रुत, सांचा, ठप्पा,  
लुगड़े, वज्र इत्यादि छापनेका ठप्पा ।

भीमुं ( सं. ) बीज, बीजा, पेड़के  
फल हूँ मैं से निकल हुआ बीज

पदार्थ जो उसी प्रकारके वृक्षोत्पाद  
नका कारण होता है ।

भीरभंडी ( सं. ) एक प्रकारकी  
वनस्पतिकी जड़, कंट कंटारीकी  
जड़ ।

भीध ( सं. ) बिल, दर, सुराह,  
छिद्र, बांसी, बिल्ववृक्ष, बिल  
सूची, याद, रसीद, पहुँच ।

भीधी ( सं. ) बिल, बिल, बिल  
पत्र, इस, पेड़के पत्ते, महादेवजी  
को चढाते हैं ।

भीधुं ( सं. ) बिल्व फल, बिल  
वृक्षका फल, गुमटा, फोड़ा, गांठ ।

भीधुं ( कि. ) डरना, डर ल-  
गना, भय खाना, चौंकना, बह-  
राना, हिम्मत न करना, कायर  
होना, व्याकुल होना ।

भुंठ ( सं. ) ऐना कुशा जो वे  
काम हो ।

भुंठुं ( सं. ) किसी पात्रका पेंसे,  
नौकाका पेंसा ।

भुंवी ( सं. ) बुद्धिहीन, भंडवादे,  
मूर्ख, आलसी और ऐसी ।

भुधुं ( सं. ) पात्रका पेंसा, बर्तनकी  
बड़ काकी पेंसे या आगपर रक-  
नेने काकी हो गई हो, मोटा बंका  
सोडा, कट ।

शुभ्रिये ( सं. ) आकास्मिक मयका,  
ढोल ।

शुभ्रणी ( सं. ) चूर्ण, मूसी, धूल ।

शुभ्रडी ( सं. ) कियोंके कानमें पहि-  
ननेका एक प्रकारका आभूषण ।

शुभ्रडे ( सं. ) फांका, फंका, फक्का ।

शुभ्रतुं ( कि. ) फांकना, फंका लगाना  
गफका लगाना, बूकना ।

शुभ्रानी ( सं. ) मस्तकपर बांधनेका  
एक कपड़ेका टुकड़ा जो डाढी  
और गालपर भी रहता है,  
जादिया ।

शुभ्रं ( सं. ) ठांसा, फांसा, मुहंमें  
समा सेक उतना गफका ।

शुभ्रथु ( सं. ) गाड़ीमें अन्न भरेतस  
अथ अन्न न बिखरनेके लिये बिछा  
बाहुवा भोटा कपड़ा पाल, चादर ।

शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र डाटा, ठकन  
काग, फार्क, रोघ ।

शुभ्रडे ( सं. ) शुच्छा, स्रव्य  
सुठ्ठीभर ।

शुभ्रिये ( वि. ) बूचा, बेकान,  
कानरहित, ( सं. ) नक टा,  
चिपटानाक ।

शुभ्रे डारभार ( सं. ) बुरा दम्बा,  
ऐसा रोखगार जिसमें लज्ज न हो ।

शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र ।

शुभ्रम् ( वि. ) बृद्ध, बुजुर्ग बूढा-  
पूर्वज, अप्रज, वयोवृद्ध, माननीय ।

शुभ्रतुं ( कि. ) जानना, समझना,  
कदर करना, पहिचानना चिन्हना ।

शुभ्रवपुं ( कि. ) बुझाना, शांत  
करना, ठंडा करना, कम करना  
घटाना ।

शुभ्रतुं ( कि. ) वृक्षना, मन्द होना  
कम होना, शांत होना, ठंडा होना ।

शुभ्रपेक्षुं ( वि. ) बुझा हुआ, शांत ।

शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र ।

शुभ्रके ( वि. ) रंगमें काली और  
मोटी ताजा लठ औरत ।

शुभ्र ( सं. ) सज्जित पुष्प, तरंग,  
कल्पना, कपड़ेपर छपे हुए पुष्प ।

शुभ्रयेर ( सं. ) छोटे दर्जेका चोर,  
भुट्टेचोर, कम कामती वस्तुओं  
का चोर ।

शुभ्रदार-देदार ( सं. ) फूलदार,  
बूटे वाला, फूलोंके काम से सुस-  
ज्जित ।

शुभ्र ( सं. ) छोटा दूँटा, भांत,  
तरह, बूढ़ी, बहुत गुणवाली वन-  
स्पति, जड़ीबूटी, बहु उद्गुण्य को  
प्रसन्न करे, भंग, भाया, भांग ।

शुभ्र शुभ्रणी ( कि. ) अद्भुत गुण  
दिला कर अपने अपने आपीन  
करना, वशमें करना ।

पुद्गल ( वि. ) देखो पुद्गल ।

पुद्गल ( सं. ) कपड़ेपर छापा हुआ चित्र, छोट ( बल ) बनावट में बनाया हुआ चित्र, युक्ति, कल्पना तरङ्ग ।

पुद्गल ( वि. ) भैंस, घिसा हुआ, कुटित, बे धारका, जंगली, मोटी बुद्धिका । ( सं. ) मक्का का सिरा, भुद्य ।

पुद्गलपथ ( सं. ) मोड़पन कुठितता ।

पुद्गल ( सं. ) बूढ़ा और मोटा बन्दर, बूढ़ कपि, मोटा बन्दर ।

पुद्गल ( सं. ) डुबकी, डुबकी, गोता ।

पुद्गल भास्वर ( सं. ) गोताखोर, कामचोर ।

पुद्गल भास्वर ( कि. ) गोता लगाना, डुबकी मारना, मुँह छुपाना ।

पुद्गल भारी ज्वर ( कि. ) काम के समय बीचोंसे ही भाग जाना, गायब होना, मुहंन दिखाना, पार बोलना, अदृश्य होना ।

पुद्गल पाथे ( सं. ) अधः पतन का आरंभ, तनजुली की शुरुआत छुटती कमान । [ हुआ ।

पुद्गल ( वि. ) बूढ़ता हुआ, बूढ़ता

पुद्गल ( वि. ) बेवकूफ, मूर्ख, पशु, सठ ।

पुद्गल ( कि. ) दूकना बूढ़ता, पानी में नीचे बैठना, अन्दर उतर जाना, नष्ट होना, बरबाद होना ।

पुद्गल ( कि. ) दुबाना, उबोना, सुदाना, कुतराना, नष्ट करना ।

पुद्गल ( वि. ) मूर्ख, सठ, बेवकूफ ।

पुद्गल ( सं. ) लंगूर, काले मुँह का बन्दर, बन्दरों की सेना नायक बूढ़ा बन्दर समान मनुष्य ।

पुद्गल ( वि. ) नष्ट, भ्रष्ट, हुआ हुआ ।

पुद्गल ( सं. ) नुदापा ।

पुद्गल ( सं. ) देखो पुद्गल

पुद्गल ( सं. ) बूढ़ा, बूढ़ी, बुद्धिया डोकरी । [ प्रस्त ।

पुद्गल ( वि. ) बूढ़ा, डोकरी जरा-

पुद्गल ( सं. ) पूर्ववत्

पुद्गल ( सं. ) देखो पुद्गल

पुद्गल ( सं. ) बटन, गोदाम ।

पुद्गलपूज ( सं. ) मूर्तिपूजक, काष्ठ, पाषाण मूर्तिकादि की प्रतिमा बनाकर पूजने वाला मनुष्य ।

पुद्गल ( सं. ) मैली फटी पक्की, तोहमत, झंझट, बह ।

पुद्गल ( सं. ) पूर्ववत्

पुद्गल ( सं. ) काष्ठ, दुहाई ।

पुनर्वि ( सं. ) सतर्ज का श्रेष्ठ, सतर्ज की भाँति ।

पुनर्वि ( सं. ) पुनर्वि, पावी का पुनर्वि, वन्या ।

पुनर्वि ( सं. ) विज्ञान, चतुर मनुष्य, अभिरु, चतुर्वि प्रह, सौम्य, पुनर्वि ।

पुनर्वि ( वि. ) पुनर्वि का, पुनर्वि को प्रकट होने वाला समानार्थक ।

पुनर्वि ( सं. ) मोटा बंदा, सौठा, लहू, बल कर काला हुवा वर्तन का पैदा ।

पुनर्वि ( सं. ) बहिन, भगिनी ।

पुनर्वि-वि ( वि. ) खान्दान, कुलीन, कुल, जाति, कुल, मानवीय ।

पुनर्वि ( सं. ) खान्दानी, सुखीलता, सम्पत्ता, उच्छता, भला मनसी ।

पुनर्वि ( वि. ) विन्दु, बूँद, टपका, काफी के जाने ( जो चायकी भाँति पीए जाते हैं ।

पुनर्वि ( सं. ) जन का मोटा कपड़ा । कम्बल, बन्मूल ।

पुनर्वि ( वि. ) मूर्ख, बेवकूफ, लठ, जड़भरत, बुद्धि विवेक रहित ।

पुनर्वि ( सं. ) मूल, पुष्पा, हल्का ।

पुनर्वि ( सं. ) सौम्य, भावार्थ, भावि, सौम्य, होहल्ला, मूल ।

पुनर्वि-वि ( सं. ) किसी एककी बात का हल्ला, गद्गद, हल्ला, गप्प, गपोंवा, अफवाह, किम्ब-वन्ती ।

पुनर्वि-पुनर्वि ( सं. ) लगातार हल्ला, जहाँ तहाँ होहल्ला, हल्ला-महल्ला ।

पुनर्वि ( सं. ) पूर्ववत्

पुनर्वि ( सं. ) पूर्ववत्

पुनर्वि ( सं. ) सिरसे पैर तक जिस में बदन लुप्रा रहे ऐसा शिथिल के ओढ़ने का बल, जिस में आँखों के भाँगे देखने के लिये जाली-दार कपड़ा लगा होता है मुँह ढाँकने की जाली ।

पुनर्वि-वि ( सं. ) गुम्बज, तोंप वगैरे छोड़ने के लिये किछे के बाहर तरफ भववा, भेदान में बनाया हुआ गोल पोल स्तूप, दीवार को गिरने से रोकने के लिये बनायी हुई रोक । [ विशेषः ]

पुनर्वि ( सं. ) सतर्ज का श्रेष्ठ

पुनर्वि ( सं. ) देखो पुनर्वि

पुनर्वि ( वि. ) देखो पुनर्वि

पुनर्वि ( वि. ) पुनर्वि, भरा जाला, पूर्व होना, पूर हो जाना ।



पुस्तकालय (सं.) पुस्तक, पुरी हाकत ।  
पुस्तक (वि.) कपड़ा, पुता, पुता,  
नीच, अथवा निकम्मा, ककर  
का दूरा । [ मन्त्र ।

पुस्तक (वि.) कंचा, दीर्घ, बड़ा,  
पुस्तक (सं.) पुस्तक, दोनों  
नयनों के बीचमें पहिरने की मोती  
की बाली, दोनों नयनों के बीच  
का पदार्थ । [ पुष्टे ।

पुष्ट (सं.) गाँव चूतड़, कूहा,  
पुष्टकाली अथवा (वि.) घर के  
मारे बचरा जाना, घर जाना,  
घर से दस्त लगना ।

पुस्तक-६ (सं.) प्रथम गर्मावस्था  
में अग्रणी नामक संस्कार के दिन  
गर्भिणी के गाल पर उस के देवर  
झात दिया हुआ कुमकुम का  
तमाचा ।

पुस्तकालय-६ (सं.) समितोन्नयन  
संस्कार के दिन स्त्री की गोदी में  
बैठ कर उस के गालों पर दोनों  
हाथों से कुमकुम मर्दन करने  
वाला अनुष्ठान, देवर । [ करना ।

पुस्तकालय (वि.) सादना, साक

पुस्तक (सं.) प्रास, कौर, कंकण,  
गण्डा, (वि.) किकाक, पोधी, पुस्तक

पुस्तक (सं.) पूर्ववत् ।

पुस्तक (सं.) कपड़, कपड़क, रोच,  
कपड़, ताकके केक में धारे हुए  
मनुष्यसे दूसरी बाजों केकने के  
पूर्व पत्ते केना और फिर उसे  
देना इत्यादि ।

पुस्तक (वि.) मूर्क, ओकरापन ।

पुस्तक (सं.) परीक्षा, समझ, कवर,  
गुणवृत्ता, देखो पुस्तक ।

पुस्तक (सं.) कानका शिरा, कर्मे-  
न्द्रिय का अवयव, अंग्रेजी हँस  
का जूता ।

पुस्तक (सं.) प्रतिमा, मूर्ति, तस्वीर ।

पुस्तक (सं.) कट्ट, सौंदा, सोदा  
दंडा ।

पुस्तक (सं.) एक प्रकार के बीज,  
जिन्हें उबाळकर खोब पीते हैं,  
काफी ।

पुस्तक (सं.) हाँक, हल्का, आवाज  
सम्बन्ध, खोर युक्त, खोरकी ध्वनि,  
एक बात के किये एक स्वरसे  
बहुत से मनुष्योंकी बोली, पुकार,  
परिचार, बाराजी, अकवाह ।

पुस्तकालय (सं.) पूर्ववत् ।

पुस्तकालय (सं.) आवाते के  
समय चेतावनी के किये बज्ज  
हुवा जोर ।

भूँ ( सं ) शुद्ध खांड, बुरा चकर  
( वि. ) बुरा, दुष्ट, नीच, निक-  
म्मा, सराब ।

भूँसु ( वि. ) जिसे किसी बात का  
शौक न हो, अरासिक, जो मजा  
न समझे । [ खुरदरा ।

भूँसे ( वि. ) मूर्ख, मोंग, बोधरा

भूँसे ( सं. ) मूर्ख, शठ, बेवकूफ ।

भे ( सं. ) बकरी अथवा भेड़ का  
शब्द ।

भे आनी ( सं. ) दुअली, दो  
आने का सिक्का,  $\frac{1}{2}$  रुपया ।

भेजी ( सं. ) डाकद्वारा भेजी हुई  
पुढलिया, पार्सल ।

भेताण ( सं. ) बृद्धावस्था आ  
जानेसे दृष्टि कम होना और नेत्रों  
पर उप नेत्र ( चश्मा ) लगना,  
४२ वर्षसे अपरकी उम्र ।

भेताणीस ( वि. ) बयालीस,  
चालीस और दो, ४२, संख्या  
विशेष । बकरे अथवा भेड़की  
बोली ।

भेभे ( सं. ) भिमियाहट, भेंभें,

भे ( वि. ) १+१, दो, द्वि, उभय ।

भे आंगण बडे जेपुं ( कि. वि. )  
जो मदमें फयादा हो । जो बडे  
सा बडे ।

भे आंगण भरीने हापी लडख डी-  
नाक काटखंगा, हज्जत लेखंगा,  
जीभ काटखंगा ।

भे आंगण स्वर्ग पाडी छे =  
अतिशय गर्विष्ठ है ।

भे हान वच्चे भाथुं करीख=बालक  
को धमकी दी जाती है, दोनों का-  
नों के बीच सिरकर दूंगा ।

भे धडीने भरेछे। कुछ देर का  
मेहमान, थोड़ीही देरमें मरने  
वाला ।

भेजववाणी ( वि. ) गर्मिणी, सगर्भा,  
ग्याभिन, गाभिन ।

भे तरनी डेखडी बभाडी ( कि. )  
दोनों तरफ का गाना । [ अरु नहीं ।

भे हाथु आकड नथी-बिलकुल

भे धारनी तरवारे रभपुं ( कि. )  
दोनों पक्ष पर रहना, खतरनाक  
वस्तु अथवा मनुष्य के साथ  
रहना । [ पेट खाना ।

भे पेठ करवां ( कि. ) खूब भर

भे पापपुं ( कि. वि. ) दो बापका,  
व्यभिचारिणी का पुत्र ।

भे मोक्ष छे के शु ? कवा दो मुंह  
है ? मुंह है याकि गुदा ।

બે હાથે પાપડી અક્ષીને હોંડવું  
( કિ. ) વિચાર એવમ્ સાવધાની  
સે ચલના ।  
બે હાથે બેડવા ( કિ. ) વિનતી  
કરના, આજિજી કરના, નમ્રતા  
કરના ।  
બે હાથે જમવું ( કિ. ) અચ્છી  
તરફ કમાના, સ્વ કમાના ।  
બે બેહાથે પેટ બતાવવું ( કિ. )  
મૂલ લગી હૈ એસ સહેતદ્વારા  
પ્રદર્શિત કરના ।  
બે ( ઉપ. ) ગૈર, કમ, ઘર, હીન,  
રહિત, નહીં, હીનતા સૂચક ઉપ-  
સર્ગ, ( કિ. વિ. ) રે । ઝરે । ઓ ।  
બેઉ ( વિ. ) ઘોનોં, ઉભય, ઘોનોં હી ।  
બેબેક ( વિ. ) એક યા ઘો, પ્રાયઃઘો  
બેક ( વિ. ) છકા સંકેત શબ્દ,  
થોડાક, જરાસા, કુલેક ।  
બેકવું ( કિ. ) બહક જાના,  
ગલતી કરના, સુગન્ધ ફેલના  
અમર્યાદ હોના, બહ જાના, તૃપ્ત  
હો જાના ।  
બેકાવવું ( કિ. ) બહકાના, મુલના  
બેકી ( વિ. ) પૂરા, પૂર્ણ, જિસમેં  
ઘોઠા મામ્ બરાબર લગ જાવે  
ઔર કુલ ન વચે, કડકે પાલાને  
જાતે સમય કો ઘો મંગુકિયાં

દિલા કર સૌચ કો છુટ્ટે માંગે  
હૈ વહ । [ટકી જાના, સૌચ જાના ।  
બેકીજવું ( કિ. ) પાલાને જાના,  
બેકે ( વિ. ) જો કેહમેં ન હો,  
સ્વતંત્ર, સુલ્લા, મુલક બન્ધન રહિત  
ઉદત, અમર્યાદ, ન્યાયરહિત,  
અનિયમિત ।  
બેકેલું ( વિ. ) બહકા હુવા, મિજા-  
જમેં મરા હુવા । [ પત્રા ।  
બેમક ( વિ. ) કલહસે રંગા હુવા  
બેમમ ( સં. ) વહે દરજે કી મુલ-  
લમન લી, અમીર અથવા શાહ-  
શાહ કી ઔરત, રાણી, મહારાણી ।  
બે મરજ ( વિ. ) અનાવડયક જિસે  
કુલ મતલબ ન હો, વિષ્ણુપ્રયોજન,  
બેદરકાર, અકારણ ।  
બેમજિલું ( વિ. ) એક પ્રકાર કા  
કાલ્જ એવમ્ પતલા કપડા ।  
બેમાર ( સં. ) બિના પૈસોંકી મજુરી,  
મુફતકી મજદૂરી સસ્ત પરિધમ ।  
બેમારી ( સં. ) મુફત કા મજદૂર,  
કુલી, મારવાહી, મજૂર ।  
બેમારું ( વિ. ) નિધ, થેલ,  
મિલ્કાવટ, અવિચારી, નિર્લેખ ।  
બે ભરેક ( વિ. ) ઘો ચાર, ઘો ચા  
ચાર, કુલ, થોડા, ચન્દ, લગભગ  
૨ થા ૪



भेडुं ( सं. ) अंगुलियों के बोध,  
अंगुलियों की बद्ध के पास गार्ह के  
ऊपर गौ, अमलीका बीच युक्त भाग,  
वर्षा से मार्गमें हुवाकीचेंद, वर्षा  
से भरे हुए छोटे छोटे गड्ढे ।

भेडुं ( कि. वि. ) वेडुं देखो,  
भेडुं-भा ( सं. ) अभिमान,  
गर्व एवं अहंकार, प्रमत्त ।

भेडुं भा ( कि. ) बड़ाई मारना  
आत्मप्रशंसा करना, बोली मारना ।

भेडुंभा ( सं. ) चलासी, मलाह,  
केवट जहाजी, कर्णधार ।

भेडुंभा ( वि. ) वह भमरी या भंवर  
री जो ( बोध के ) मस्तक में पास  
पास ही दो एक ही जगह हो ।  
मस्तक में दो भंवरोंका जोड़ा ।

भेडुं भा ( वि. ) पूर्ववत्

भेडुं ( सं. ) आम परसे कैरी  
तोड़नेका थंन, बत्तीस मणका तौल  
दो बैलोंकी गद्दी ।

भेडुं ( सं. ) कैदीकी पहिरनेकी  
छोटे की जंजीर, सांकल, धृंखला  
हथकड़ी, बन्धन, अटकाव, रोक,  
आड़, रज्जाक, संछट, काष्ठबन्ध,  
बाधा के बिने अंगुलियोंमें पहिनी  
हुई दो छड़ी हुई अंगुलियां, पैरों  
में पहिनेका एक प्रकारका जंजीर  
का केसर ।

भेडुं ( सं. ) ऊपर लीये रखे हुए दो  
बलके पात्र, बोधा, ( कमखिल ) ।

भेडुं ( सं. ) जहाज, हल, पाटी,  
खुर, संघका निमाण, हेतु, निर्दिष्ट  
कारण, पक्ष, खोजना, कंवर ।

भेडुंभा ( सं. ) विभव, फतह,  
सिद्धि, कृतकार्यता, जीत ।

भेडुंभा ( वि. ) नेदीक, दोमस्तक  
वाला ( जहाज ) ।

भेडुंभा ( वि. ) कुरार, बहवकल, ।

भेडुंभा-भु ( वि. ) अव्यवस्थित,  
विलक्षण, विपरीत, दुराचारी, बेक-  
रतीव, बेहंगा, बेतर्ज ।

भेडुंभा ( वि. ) वह ऊपर,  
जिसमें दो डालहों, दो डालवका  
ऊपर ।

भेडुं ( सं. ) देखो भेडुं

भेडुं ( सं. ) उर्दू में कविता करने  
की एक रीति, इसमें दो चरण  
अठारह मात्राओं के ५. ५. और  
१ तीन मात्रापर गति होता है ।  
दो दो समाज अनुमास के चरण,  
दुपार, कविता । मन्सूफ, विचार  
इरादा, मुक्ति, सबाँव, सपाव ।

भेडुंभा ( वि. ) वेडुंभा, विवेक,  
विरमण, वे कुदूर ।

भेतभा ( वि. ) बे फिक, बेपरवाह ।

भेतश्री ( वि. ) दोनों तरफका, दु  
तरफी, दोनों ओरका ।

भेताक्ष ( वि. ) बिनातालका ( गाय-  
नमें ) ताल रहित, युक्तिहीन, हाथ  
से गया हुआ, खराब हुआ ।

भेताण ( सं. ) ब्यालीस वर्षकी उम्र ।

भेताण आवर्था ( कि. ) दृष्टिमें  
न्यूनतामाना, चश्मा लगना ।

भेताणीस ( वि. ) संख्या विशेष,  
ब्यालीस, ४२, चाळीस और दो ।

भेताणुं ( सं. ) ब्यालीस सेरका मना ।

भेदक्षर ( वि. ) भेतभा ।

भेदक्षी ( वि. ) निरोगी, बेपीर,  
अरसिक ।

भेदक्ष ( वि. ) गैरबाजिव, अन्धेर,  
अव्यवस्थित, अनुचित । [ औषधि ।

भेदक्षकी ( सं. ) एक प्रकार की

भेदक्ष ( सं. ) पूर्ववत्, बीदाना ।

भेदक्षी ( वि. ) गैर इन्साफी, अन्याय,  
अन्धेर, अंधाधुंधी, अव्यवस्था ।

भेदक्ष ( वि. ) नाखुश, अप्रसन्न,  
नाराज, निरुत्साह, निराश, उदास,  
अनिच्छुक ।

भेदक्षी ( सं. ) अवनवन, मित्रतामें  
बिगाड़, अप्रसन्नता, नाराजी ।

भेदुं ( सं. ) अंड, अंडा ।

भेधारी ( वि. ) दुधारी, दोनों ओर  
जिसके बाढ़ हो, दोनों ओर पैनी ।

भेन ( सं. ) बहिन, भगिनी, सहोदरा ।

भेनडी ( सं. ) प्यार में बहिन के  
लिये शब्द ।

भेनपथुं ( सं. ) स्त्रियों स्त्रियों की  
भैत्री, सखीत्व, सहेलीपना ।

भेनपथु ( सं. ) सखी, सहेली, सजनी ।

भेनसीन ( वि. ) अनागा, भाग्य-  
हीन, बदकिस्मत, फूटे करमका ।

भेनी ( सं. ) सजनी, सखी, प्यारी,  
बहिन ।

भेनीक ( सं. ) बदसकल, कुरूप ।

भेक्ष ( कि. वि. ) निर्लज्जतापूर्वक  
बेधमसि, साफ साफ दुर्वाक्य ।

भेक्ष ( कि. वि. ) दो टुक, बेधर्म ।

भेभनाव ( वि. ) अनबन, ड्रेष,  
अप्रसन्नता, नाराजी ।

भेभन ( वि. ) बिना बाकी, बिल्-  
कुल, समाप्त, सम्पूर्ण, कुछ नहीं ।

भेभापुं ( वि. ) छिनाल स्त्रीका  
पुत्र, वैश्वापुत्र, पिताहीन ।

भेभापुं ( वि. ) चषराया हुआ,  
व्याकुल ।

भेयुनिभात ( वि. ) नीच शीर्ष का,  
हरामशाबा, पतित कुलोत्पन्न ।

भेअ-पु-थुं ( वि. ) दो जातिका,  
दो प्रकारका, पृथक् पृथक् मिश्रणका  
भेअन ( वि. ) बेसुधि, बेहोश,  
अचेत, चेष्टारहित मूर्च्छित ।  
भेअना ( सं. ) सङ्कल्प, विकल्प,  
दुविधा, पक्षोपेक्ष ।  
भेअन<sup>१</sup> ( वि. ) असीम, बेशरम,  
मर्यादाके बाहिर ।  
भेआर ( वि. ) बीमार, अस्वस्थ, रुग्ण  
भेआलभ ( वि. ) गुप्त, अप्रसिद्ध ।  
भेअनासथ ( वि. ) अनुचित, अयोग्य  
भेअरवत ( वि. ) नमकहृदय,  
कृतघ्नी, बेलिहाज, भोंडा ।  
भेरअ ( सं. ) देखो भेदेरअ ।  
भेरअी ( सं. ) स्त्रीके बाँये हाथ में  
कोहनी के ऊपर पहिनेका आभू-  
षण विशेष ।  
भेरअे ( सं. ) रुद्राक्ष के मोटे  
मोटे मणियोंकी माला ।  
भेरअ-अी ( वि. ) चित्रविचित्र,  
रंगबदला हुआ, ताल, बे भिसल,  
अधिक रंगोंका ।  
भेरअा ( सं. ) हठता, चंचलता,  
लुत्ताई । [ लुत्ता, जिद्दी ।  
भेरअं ( वि. ) हठीला, चंचल,  
भेरअे ( सं. ) एक प्रकारकी औषधि ।  
भेरअ ( वि. ) देखो भेरअं ( सं. )  
कुसुमय ।

भेरअेर ( कि. वि. ) बारम्बार, पुन-  
म्पुनः, मुहुर्मुहुः फेरफेर ।  
भेरअुं ( वि. ) एक जातिका पक्षी ।  
भेरीअ ( सं. ) बीग, जोड़, टोटल  
रकम । [ अफिहीन ।  
भेरं ( वि. ) बहिरा, बधिर, अवण-  
भेल ( सं. ) साबी, जोड़ीदार, पैल,  
वृषभ ।  
भेलडी ( सं. ) दोका साथ ।  
भेलदार ( सं. ) हमाल मजदूर, मजूरा  
भेलाशक ( कि. वि. ) निस्संकोच,  
अलबत्ता, निःसन्देह, अवश्य,  
बेसक ।  
भेलिथुं ( सं. ) निर्बलताके कारण  
हाथकी अंगुलियाँ अचानक खिंचना,  
बाँयटा, एक प्रकारका फूल वा इत्र ।  
भेली ( वि. ) घनी, सहायक, हि-  
मायती, पक्षप्राही, भिडु, तरफदार ।  
भेलुं ( सं. ) रुईकी पूनीका जोड़ा,  
सफेद रेतीला पत्थर, जोड़ा ।  
भेवकुइने आइआ ( सं. ) अत्यंत  
मूर्ख, मूर्खराज, मूर्खानन्दस ।  
भेवअेर ( वि. ) बेवंपा ।  
भेवअत ( वि. ) कुसुमय, असुख ।  
भेवअत अत ( वि. ) चाँदे का,  
जब इच्छा हो उसी समय ।

लेखनी (वि.) अप्रमाथिक, विखा-  
सपाती, बेवका, वचन तोड़नेवाला।

लेख (वि.) लपेटा हुआ, चढ़ी  
किना हुआ दुहरा, दुहरता।

लेखतुं-ठरतुं (कि.) दुहरता  
करना, चढ़ी करना, लपेटना।

लेखितुं (सं.) एक तांबेका त्रिका,  
जिसका मूल्य लगभग आध आना  
होता है।

लेखुं (वि.) दुपट, दुहरा, डबल  
एक से दुगना।

लेखनी (वि.) जिसका कोई देश  
न हो, देशसे निर्वासित, परदेशी।

लेख (वि.) बेईमान, अपकारी,  
कृतघ्नी, अवर्मी, कपटी, छठी।

लेखनी (वि.) अनाथ, जिसका  
कोई मालिक न हो, अकारा।

लेख (कि. वि.) दो बार, दो बक्त।

लेख (वि.) देखो लेखनी

लेख (सं.) ऊठबैठ, ऊठक बैठक।

लेखनी (सं.) आसन, बैठक, वह  
वस्तु जिस पर घर के देवता  
बैठते जाते हैं। वेन्च तिरपेई,  
स्टूल।

लेख (सं.) बैठक, बैठनेकी रीति  
भरने बाँटने के यहाँ शोक सूख  
बैठक उठाना।

लेख (सं.) ऊनी हुई कीमत, अत्यन्त  
कीमत। [ बहुत, पुष्कलें।

लेख (वि.) अपार, अत्यंत,

लेख (वि.) लायक, बेम्ब,  
उचित, ठीक, फवता, अरम  
(बर्षका) नवीन। [ सत्री।

लेखनी (सं.) असन्तोष, बे

लेखनी (सं.) एक प्रकारकी  
भूमि।

लेखनी (सं.) खर्च, मूल्य, कीमत।

लेखनी (कि.) बैठना, आसन

लगाना, चूतड़ टेकना पग फैला-  
कर बैठके बल होना (पशु) पैर  
टेककर पल सिंकोदना (पक्षी) पंखों  
चलते ठहर कर एक स्थानपर  
पड़ रहना, लगे रहना, बुझना,  
आरंभहीना, नवीन बालू होना,  
उपड़ना, युक्तिमत्त आना, भाव  
होना, कीमत ठहरना, ठहरना,  
ठलेहोना, आलसी हो रहना,  
नचि जा ठहरना, मोटा खरखरा  
होना, कर्मासे वर्तनमें मोचे विप-  
क जाना।

लेखनी शीखतुं (कि.) चिकनी  
जमीनपर पल न समझकर किसल  
पड़ना। [ उठता बैठता।

लेखनी (वि.) आया जाता,



भेसतो पावे ( सं ) मेक, बनाव, प्रेम।  
भेसवा भुं ( कि ) मृतक के घर  
शोकमें धार्मिक होने जाना, मातम  
में जाना शोक प्रदर्शनार्थ बैठने  
जाना। संभोग करना।

भेसवानी क्षण तोड़नी ( कि )  
अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारना,  
जिससे गुजर चलता हो उस धन्धे  
को अपनी मूर्खतासे गमा बैठना।

भेसी भुं ( कि ) बैठजाना, दि-  
वाला निकालना, भूखसे ( पेट )  
बैठना, निस्तंतान होना, राजगार  
धन्धा न चलना, मालोंमें गड़बड़े  
पड़ना।

भेसीने भुं ( कि ) सोच समझकर  
चलना। विचारकर चलना।

भेसाक्षुं ( कि ) बिठाना, बैठाना,  
जड़ना, जमाना, ठहरना, रखना,  
बनाना, स्थापित करना, स्थिर  
करना।

भेसाभक्षु ( सं ) रोगके कारण  
पशुका खड़ा न होना और बैठही  
रहना, बैठान, उठान।

भेसाभक्षु\* ( सं ) मृतक के घर  
शोक प्रदर्शनार्थ बैठक, उठाना,  
बैठक, अतिथि। [ पत्रिक।

भेसाक्ष ( सं ) मुसाफिर, यात्री,

भेसुभार ( वि ) अवैक्य, अव्यक्ति  
अतिशय, बेहद, असीम।

भेसुर-ई ( वि ) बेसुरा, कानोंको  
भरी लगने वाली आवाज ( गा-  
वनमें ) बाला, स्वरहीन।

भेस्ती ( सं ) माहबन्दी, मित्रता,  
मेक, दोस्ती, बन्धुत्व।

भेक्ष ( वि ) अनधिकार, लाचारीये।

भेक्ष भुं ( कि ) रोगके कारण  
पशुने खड़ा न हो सकना।

भेक्ष भेसुं ( कि ) मुकसान  
उठाना, खदान रहा आसके इध  
तरह बैठना।

भेक्षुर ( कि. वि ) दो जने हाजि  
रहो तब, दो की उपस्थितिमें,  
अनुपस्थिति। [ कजाहीन।

भेक्ष ( वि ) बेसरम, निर्बल,

भेक्ष ( वि ) दोनों, उभय।

भेक्षुभत ( वि ) अपमानित, ति-  
रस्कृत। [ खैरन।

भेक्ष ( सं ) गन्ध, दू, मईक,

भेक्षुं-डीभुं ( कि ) बहकना,  
भूलना, भटकना, बदबसना,

भेक्ष ( सं ) दुयान्न, खसबू,  
सुकास, खैरन, मईक, अन्नियान,  
गर्ब।

भेदेकावतुं (कि.) बहूकाना, भुलाना ।  
 भेदेत२ ( वि. ) अच्छा, उत्तम,  
 धेष्ट, बाधिया, ठीक, भला, तोष ।  
 भेदेन ( सं. ) देखो भेन ।  
 भेदे२ ( सं. ) बाधिरता, बाधिरपना ।  
 भेदे२भ ( सं. ) नगरा तासा,  
 और बोलकी जोड़, निशान, च्वाजा,  
 संबा, नगरा बोल और संडेवाली  
 पाटी ।  
 भेदे३ ( वि. ) देखो भे३,  
 भेदेस्त-स्त ( सं. ) स्वर्ग, कैलाश,  
 वैकुण्ठ, ( नाबनी भाषा में )  
 भेदेस्ती ( वि. ) स्वर्ग, गत, मृत  
 मरा हुआ, कैलाशवासी ।  
 भेदे३-भ२ ( सं. ) औरत, स्त्री ।  
 भे३भो३धुं ( वि. ) बीच में बोल-  
 नेवाक, मजाक, करनेवाला ।  
 भे३धुं ( सं. ) नरमादा, द्वार के  
 कुन्दे नकूचे, चूल ।  
 भे३धी ( सं. ) एक प्रकारका पाँदा,  
 जो गाँठ दार होता, है और पशुको  
 भी अधिक होने के लिये छि-  
 माते हैं ।  
 भे३भा२ ( सं. ) मनबन, द्वेष ।  
 भे३भु३ ( सं. ) स्त्री मुदि, औरतों  
 के समान अङ्ग ।

भे३भा३ ( सं. ) स्त्रियोंकी रीति  
 रवाज, दुकरियापुराण ।  
 भेरी ( सं. ) स्त्री, भार्या, पत्नी,  
 औरत बहू, वधू, लुगाई, नारी ।  
 भे३ भे३स्ती ( कि ) रोने के लिये  
 स्त्रियां आकर बैठें ऐसी दुर्दशा होना  
 अतिसब हानि होना दुर्दशा होना ।  
 भे३ ( सं. ) स्त्री, औरत, नारी, पत्नी ।  
 भे३ ( सं. ) गन्ध, बास, वास,  
 अहंकार, समत्व, पतंगकी डोरी ।  
 भे३ध ( सं. ) एक प्रकारकी मछली,  
 भे३धुं-३३ ( सं. ) अज, बकरा,  
 छाग ।  
 भे३धने भेते भ२धुं ( कि. ) बे  
 मौत, मरना, अकाल मृत्यु, होना,  
 असहति होना, कुत्तेकी मौत मरना ।  
 भे३धुं ( सं. ) कुतियाका बच्चा,  
 पिछा, छोटा कुत्ता ।  
 भे३धी ( सं. ) प्यार, चूसा, चुंबन,  
 बोसा, दोनों ओठों से प्रेमपूर्वक,  
 स्पर्श ।  
 भे३भ ( सं. ) कुएँ मेंसे पानी  
 निकालने का चमड़े का डोल ।  
 कोस, कोष ।  
 भे३भधुं ( वि. ) देखो भे३धुं ।  
 भे३भा२ ( सं. ) ताप, ताब, ज्वर,  
 बुखार ।

भोथु ( वि. ) बिना दाँतका,  
दन्तहीन, बोड़ा, दन्तहीन, पोला।  
भोभडा ( वि. ) काणा, एक चक्र।  
भोभपुडु-शु-धु ( सं. ) चौबे  
मुँहका पात्र।

भोभश ( सं. ) रास्ते मेंसे कचरा  
झाड़ने की मजबूत झाड़ू।

भोभधु ( वि. ) सीधा, सादा,  
भोला, अज्ञान असमझ, भौलिया।

भोभ ( वि. ) सादा, ज्वारोंमें दाने  
आये बिना उसका रसदार साँठा।

भोभके ( सं. ) टोरा, टोपा, कान  
भी टंक जावे ऐसी टोपी, बच्चों  
की टोपी।

भोभी ( सं. ) कंठका पिछला भाग  
गर्दन घ्रीबा गरदन।

भोभीपर हाँकरी ( सं. ) अत्यंत  
कठोर शासन में रहना, प्राम्थ  
पाठशालाओंमें विद्यार्थी को  
अंगूठा पकड़ा कर उसकी गर्दन  
पर कंकर रख देते हैं, यदि वह  
कंकर गिरजावे तो दंड दिया  
जाता है।

भोभीपर भेसधु ( कि. ) आग्रह  
पूर्वक माँगना, काम का तकावा  
करना।

भोभ ( सं. ) बोझ, भार, बजन।

भोभडा ( सं. ) बजनदार, भारी।

भोभधु ( कि. ) पालना, अनुकूल  
माना, देना, बेचना या खर्च  
कर सकता।

भोभे ( सं. ) भार, बोझा, बजन,  
जोखम, जवाबदारी।

भोभ ( सं. ) मछवा, जलयाव,  
अगन बोट, पतला गोबर का  
लेप।

भोभधु ( सं. ) अन्न प्राशन संस्कार,  
बालक के मुख में पहिलेपहिले  
अन्न देना।

भोभधु ( कि. ) खानेपीनेके पदार्थ  
में से थोड़ासा खा कर शेषको इस  
योग्य कर देना कि दूसरा काम  
में न ला सके। प्राप्त करना,  
संपादन करना, रोकना, अपवित्र  
करना, जूठा करना, खाना, बिगा-  
ड़ना, कलुषित करना।

भोभधु ( सं. ) देखो भोभधु

भोभ ( सं. ) खन्दक, खोखला,  
गुफा, मार, खन्दर, बिल, खोह।

भोभी ( सं. ) सिर मुंडी औरत,  
जिस सिरपर बाल न हों, ( स्त्री )  
रांड, विवशा।

मोक्ष ( वि. ) बन्ना, सिरपुटा,  
के सकोका सिर मुंका हुआ ।

मोक्ष ( कि. ) उत्तरे के बाक  
काटना, मूचना, बाक काटना ।

मोक्षपु ( कि. ) मुंकावाना, बाक  
काटना, हजामत कराना, खौर  
कार्य करना, बाक बनवाना, श्मश्रु  
कार्य करना, सिर और मुक के  
बाक काटना ।

मोक्षी ( सं. ) देखो मोक्षी

मोक्ष ( सं. ) नवे सिर, नम सिर,  
उवाड़ा माथा ।

मोक्षतक्ष ( वि. ) बिना बाकका ।

मोक्षान्तर ( सं. ) काना मात्राहीन,  
अक्षर, मुठिया अक्षर ।

मोक्षपु ( कि. ) बौनी कराना,  
मिलाना, देना, गाली देना, ठेना  
स्वीकार करना ।

मोक्षी-होक्षी ( सं. ) हुकानदार  
की हुकान खोलने पर सबसे  
पहिली बिक्री, वर्षारंभ में व्यापारी  
परस्पर दस्तकों को अवका  
बाधित को जो इनाम अथवा  
प्रम्य देते हैं वह, गाली ।

मोक्ष ( वि. ) आयेक, बहुत, विशेष  
उवाड़ा विचारणीय, पानी बिगुल,

मोक्ष ( वि. ) मूक, मूक, नेवकक,  
सठ । [ मोता जंत ।

मोक्ष ( सं. ) छोटा जंत, वे  
मोक्षपु ( सं. ) पचरी के अ-  
न्दरका बक । [ हो, ७२ ।

मोक्ष ( वि. ) बहतर, सतर, और  
मोक्ष ( वि. ) मोक्ष, जड़ ठेठ,  
मूक, अशिक्षित, सठ, सुस्त, पागल ।

मोक्ष ( सं. ) एक प्रकार के लेक  
का समाप्ति ।

मोक्षसिंभ ( सं. ) मुरदारसिंभ ।

मोक्षपु ( कि. ) पानी धी कर तर  
होना, पानी से फूककर बाक  
हो जाना, गद्गद होना । [ बोलना ।

मोक्ष ( सं. ) अधकचरा पात्र, गद्गद,

मोक्ष ( सं. ) समझ, ज्ञानघाती,  
शिक्षा, अनुभव, उपदेश, विवेक, मति ।

मोक्ष ( वि. ) शिक्षण, निहापन,  
सूचन ।

मोक्ष ( वि. ) अनाड़ी, सीका, मोल ।

मोक्षपु ( कि. ) अर्थ समझाना,  
शिक्षा देना, सुझाव करना, सिखाना

मोक्षित ( वि. ) शिक्षित, सूचित,  
ज्ञाता ।

मोक्षी ( सं. ) शिक्षा, जीभ, ( वि. )  
सोताकापक, सुतकाहट ।

भोज्यी नक्षत्री ( कि. ) नौकी बहना, जवान बहना, बोकनेकी शक्ति बहना ।

भोज्युं ( वि. ) तुतका, तोतका, जिसकी बीम बोकने के समान लक्ष्य बढ़ाती हो । [ अस्तिपञ्जरा

भोज्युं ( सं. ) खोखा, सांवा, नमूना,

भोज्य ( सं. ) एक प्रकार की जूप, एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य ।

भोज्युं ( वि. ) सनके वृक्षकी लकड़ी सदृश जकनेवाली लकड़ी, बोया काठ जो छंगर में बंधा रहता है और पानी के ऊपर उतराया रहता है ।

भोज्य ( सं. ) बेर, बड़ीफल, बेर के बराबर ली के पैरोंकी अंगुली में पहिने का अथवा सामने कपाल पर पहिनेका एक आभूषण ।

भोज्य कुटो हरवे। ( कि. ) खोखल करना अच्छी तरह मारकूट कर धरम करना, कूट डालना, संहार करना ।

भोज्यकुटे वाधवे। ( कि. ) पूर्ववत् भोज्यकुटी=अपरिचित के विषय में यह वाक्य प्रयोग होता है ।

भोज्यी ( सं. ) बेर नामक वृक्ष, एक प्रकार का कटिहार वृक्ष,

भोज्यी भोज्यी ( कि. ) मारमारवा जूना खूब ठेंकना । धनकाका बलपूर्वक किली से कुक छिना देना ।

भोज्यी कुक्षी ( कि. ) खूब जकत मारना, खूब ठेंकना, खूब पीटना,

भोज्युं ( सं. ) तर्क, खोर, धाज, पक्ष, खोर, किनारा, पाटी

भोज्युं ( कि. ) पारखाना साक करना, टही झाड़ना ।

भोज्यस्य ( सं. ) एक प्रकारका गंध युक्त पुष्पवाला वृक्ष ।

भोज्युं ( सं. ) एक प्रकार का वृक्ष और फूल, एक प्रकार का खेवर, बटन ।

भोज्यी ( सं. ) ज्वार बाजरे के मुहों की चारों ओर, ईर्ष की कच्ची गांठ ।

भोज्य ( सं. ) मुँह का वह भाग जिस में अन्न का दाग रहता है ।

भोज्यी ( सं. ) बिछाने का बक, कमल ।

भोज्य ( सं. ) जङ्गर, बचन, सम्य, वाक्य, कड़ी, तुक, चरण, पक्ष, फिकरा, ताना ।

भोज्य भागवे। ( कि. ) लाना देना, बक वाक्य बोलना, उक्तव्य देना ।

भोक्षार्थ ( वि. ) बोलने वाला, बाला, बालूनी, बहुभाषी, वक्ता ।

भोक्ष्ठा ( सं. ) भाषा, बोलने की रीति । [ वचन ।

भोक्ष्मन्ध ( सं. ) कौल, करार,

भोक्ष्मोक्ष ( सं. ) तकरार, किसान, बोलचाल, जिदाजिदा, वाक्कलह ।

भोक्ष्मक्ष ( सं. ) सिद्धि, जय, वृद्धि, चढती, आबादी ।

भोक्षुं ( क्रि. ) मुहं से कहना, उच्चारण करना, बोलना, भाषण करना, शब्द कहना, बात करना ।

भोक्षतो व्याक्षतो ( वि. ) तन्दुरुस्त, स्वस्थ, नीरोग, राजी खुशी ।

भोक्ष्मं भोक्ष नथी=भाषण में कुछ सचाई नहीं है, बोलने में इमानदारी नहीं, कहने में प्रमाणिकता नहीं ।

भोक्ष हे भोक्षुं-आवश्यकता के समय काम में आने योग्य ।

भोक्ष्म साभुं भोक्षुं ( क्रि. ) अयुक्त भाषण पर दुखी होना या क्रोध करना ।

भोक्ष्मन्ध नथी = बोलने में दृढ निश्चय नहीं, सदैव वचन भंग करता है ।

भोक्षेभोक्षे भोती भरवां ( क्रि. )

मृदु भाषण करना, सुंदर मनमोहक बोली बोलना, प्रिय वाणी उच्चारण करना ।

भोक्षवपु ( क्रि. ) बुलाना, उच्चारण करना, आवाज लगाना, हांक मारना, याद करना, खबर पूछना निमंत्रण देना, पुकारना, आह्वान करना ।

भोक्षुं ( वि. ) बोलने वाला, वक्ता ।

भोक्षुं ( क्रि. ) बोना, बीज डालना, उगाना, उगने के लिये बिखेरना ।

भोक्ष ( सं. ) दृढ, जिद्द, बलवत्तर ।

भोक्षो ( सं. ) चूमा, चुम्बन, प्यार, दोनो ओष्ठों द्वारा प्रेमपूर्वक स्पर्श ।

भोक्षो ( वि. ) बदबूदार, दुर्गन्ध युक्त,

भोक्ष्णी ( सं. ) देखो भोक्ष्णी

भोक्षो ( वि. ) बहुत, बहु, अधिक, ज्यादा: विशेष, घना, अति ।

भोक्षोताण ( वि. ) पुष्कल, अतिशय ।

भोक्षोक्ष ( सं. ) आप्रह, अनुरोध ।

भोक्षोक्षुं ( वि. ) बड़ा, बहुत, दीर्घ, विस्तृत, विशेष अत्यत, अतिशय, असंख्य, अपरिमित ।

भोण ( सं. ) एक प्रकार का गोंद, अगर बीकुबार मुसन्वर, कचरा, ( वि. ) नमकीन, एक प्रकार का वृक्ष ।

भेदभाष्ये ( कि. ) बोलबोल के  
चक रहना, बोल कर पेट दुखाना।  
भेदभेदवपुं ( कि. ) निकम्मा कर  
रखना, काम बिगाड़ डालना, रद्द  
करना । [ लव, किनारेतक, पूरम्पूर।

भेदभाष्ये ( वि. ) छलाछल, लबा-  
भेदभाष्ये ( सं. ) भ्रष्टता, अपवि-  
त्रता ।

भेदभाष्ये ( वि. ) डबोना, ममकरना  
पेंदे बिठाना, नष्ट करना, बर्बाद  
करना, गमाना, खोना, रंगना ।

भेदभाष्ये ( सं. ) देखो भेद ।

भेदभाष्ये ( वि. ) बुद्धिहीन, असमझ,  
मूर्ख, सीधा भोला, साधा ।

भेदभाष्ये ( सं. ) भिगाया हुआ आटा,  
पानीमें तर किया हुआ चून ।

भेदभाष्ये ( सं. ) बुद्धका फैलाया हुआ  
धर्म, बौद्ध, बुद्ध सम्बन्धी । बौद्ध  
धर्मी । [ हकीकत ।

भेदभाष्ये ( सं. ) बयान वर्णन, हाल,

भेदभाष्ये ( वि. ) बयासी, अस्ती  
और दो, ८२, संख्याविशेष ।

भेदभाष्ये ( सं. ) वेदपाठ, विधिपूर्वक  
वेदाध्ययन, वेदाध्ययनाभ्यापन ।

भेदभाष्ये ( सं. ) ईश्वर प्रार्थना,  
भक्ति, उपासना, एक प्रकारकी  
समाधि ।

भेदभाष्ये ( सं. ) मनुष्य के मस्तक  
का एक छिद्र, जहाँसे योगी मन्त्रक  
को वेध करके कृतिस्फाटन करते  
हैं और ईश्वर का दर्शन करते हैं  
उत्तमांग, ब्रह्मताल ।

भेदभाष्ये ( सं. ) भूत विशेष,  
योनिविशेष, वह भूतविशेष जो  
पहिले ब्राह्मण होकर फिर कुर्बान-  
वश राक्षस योनि को प्राप्त हो  
गया हो, ब्राह्मण हो कर असत्कर्म  
करने वाला मनुष्य, पढ़े लिखे  
मनुष्य की आत्मा भूत बनी हुई ।

भेदभाष्ये ( सं. ) लुट्टे ब्राह्मणों का  
झुंड, बदमाश ब्राह्मणों का समूह ।

भेदभाष्ये ( सं. ) जनेऊ, उपवीत ।

भेदभाष्ये ( सं. ) अस्मरूप, ब्रह्म  
का रूप ।

भेदभाष्ये ( सं. ) बिधाता, रचने वाला  
सृष्टि कर्ता, प्रजापति, विधना,  
रजोगुण प्रधान ईश्वर का रूप,  
ब्राह्मणों का मूल पुरुष ।

भेदभाष्ये ( सं. ) जगत्, विश्व, संसार  
चतुर्दश भुवन, गोलक ।

भेदभाष्ये ( सं. ) एक प्रकार का विवाह  
नारद, पार, रात्रिके पिछले गहर  
की अंतिम दो घड़ी का काल,  
ब्रह्मपुराण, ( वि. ) ब्रह्म विष्णुक ।

आक्षेपः ( वि. ) ग्राह्य सम्बन्धी, खादा, सुषुप्त, पवित्र शुद्ध ।

आक्षेप ( सं. ) एक बूटी का नाम, शाक विशेष, सरस्वती, वाचा, वाराहीकन्द, एक प्रकार की वनस्पति ।

आक्षेप ( सं. ) ब्रज, वृन्दावन अथवा तत्सम्बन्धी, गोकुलनामक गाँव, गोष्ठ ।

आक्षेपः ( सं. ) ब्रजकी बोली, मथुरा वृन्दावन गोकुलके लोगोंकी भाषा, ब्रज भाषा, पदी बोली ।

अ

अ—गुजराती वर्णमालाका ३५ वां अक्षर, चौबीसवां व्यंजन, पदार्थका चतुर्थ अक्षर नक्षत्र, पर्वत ।

अक्षेप ( सं. ) शत्रुकी एक जाति विशेष, भीलोंसे मिलती जुलती पहाड़ोंमें रहने वाली एक जाति ।

अक्षेप ( वि. ) जोरसे ।

अक्षेप ( सं. ) भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु, भक्ष्य, खानेकी चीज । [नाशक, हजम करनेवाला ।

अक्षेप ( वि. ) खानेवाला खादक,

अक्षेप ( सं. ) भोजन, आहार, भोजन करनेकी वस्तुएं ।

अक्षेप ( वि. ) खानेवाला, भोजी, भक्षक, खादक, नाशक ।

अक्षेप ( सं. ) खानेका पदार्थ, शिकार, भोजन, चारचार गिनने से कुछ भी न बने ऐसी संख्या ( कि. वि. ) झट ।

अक्षेप ( कि. ) खाना, शिकार करना, हड़पना, बकना ।

अक्षेप ( कि. ) कहना ।

अक्षेप ( वि. ) आचार विचारसे भ्रष्ट, नैतिक विचारोंसे पतित, च्युत ।

अक्षेप ( कि. ) आचार विचारोंसे पतित होना, भ्रष्ट होना ।

अक्षेप ( वि. ) सोया हुआ, गया हुआ, पतित, भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ, अव्यवहार ।

अक्षेप ( वि. ) भ्रष्ट, पतित च्युत ।

अक्षेपः ( वि. ) झटपट जो कुछ मुहंसे निकल बही कह डालने वाला ।

अक्षेप ( सं. ) छेद, छिद्र, सुराज, भोनि, झीका मूत्रद्वार, चूत, गुदा और जेठ कोषों के बीचकी जगह, उत्कृष्टता, ऐश्वर्य, सौभाग्य, कीर्ति मान, सूर्य ।

अक्षेपः ( सं. ) छेद, छिद्र, काबा, बांका, सुराज, गुप्त अंगप्रायः ।



अभङ्ग ( सं. ) रोग विशेष, एक रोगका नाम, बुढ़ाके आसपासका नासूर । छेद, सूरस, छिद्र ।

अभभम ( कि. वि. ) जैसे पानी गहनेके शब्दके अनुसार आवाज ।

अभमद् । [ भुरा ।

अभम् ( सं. ) बे चिकना हट, भुर

अभध्र ( सं. ) धोका, कपट, छल, चलाकी, पालण्ड, बनावट ।

अभध आधार्थी ( सं. ) देखो भग

अभत ।

अभक्षी ( नि. ) धूर्त, कपटी, पालण्डी, छलिया, चालाक, धोखे बाज ।

अभवती ( सं. ) देवी, पार्वती, दुर्गा पूजा, राणी, ( नि. ) ठाकुजी की सेवा करनेवाला, भक्तजन ।

अभपुं ( वि. ) काषाय रंग, मेह-आ रंगका । [ संन्यासी होना ।

अभन्यं करथां ( कि. ) बैरागी होना

अभने। अुडे। ( सं. ) पेशवा ओंकी ध्वजा ।

अभने। ( वि. ) देखो अभपुं

अभग ( सं. ) पोछा, खाली, रीता ।

अभगभाधार्थी ( वि. ) ऐसा मनुष्य जिसके मनमें कुछ ही और दिखावे कुछ, कगुअभक, दुरंग ।

अभे। ( सं. ) रेशमका कीड़ा ।

अभ ( सं. ) माघ, ( वि. ) जिसके टुकड़े किंचि हों, बाँका हुआ हुआ ।

अभ ( सं. ) भाग, भेद, खण्डन, टटा, तराज, कर्म, लहर, पराजय एक प्रकारकी नशीली पत्ती ।

अभं ( वि. ) जिससे भाग पीनेका व्यसन हो, भेंगी, मन्थ, मूर्ख, सुस्त । [ भेंग चोटने पीने का स्थान ।

अभंभानुं ( सं. ) भेंगेकी भाइयों के

अंभाधु ( सं. ) टट, कचक, टेढ ।

अभार-रे। ( सं. ) फूटे दूटे पात्र, फल इत्यादिका गूदा ।

अभिये। ( सं. ) मेहतर, भेंगी, डोम, पल्लाना झाड़नेवाला, टेढ ।

अंभियेधु ( सं. ) भगिन, मेहतरानी ।

अंभी ( वि. ) भाग पीने वाला, भाग नामकी नखेली वस्तु सेवन करने वाला, सुस्त, गफलती ( सं. ) मेहतर, भयी ।

अभीअभी ( वि. ) माँघ पीकर मस्त रहने वाला, सराई, लहरी, मनमौजी ।

अंभुर ( वि. ) क्षणिक, नागार्जुन, दूढ़ने सोम, अस्वायी ।

अभि ( सं. ) देखो अभिनी,  
अभ्य ( क्रि. वि. ) भाटा बछी या  
कटार के घुसने का शब्द ।

अभ्य ( क्रि. वि. ) पूर्ववत् ।

अभ्यक्षुं ( क्रि. ) पछाड़ना तोड़ना ।

अभ्यक्षिपुं ( क्रि. ) भच्च देकर  
मारना ।

अभ्यङ्ग ( सं. ) नक्षत्र मंडल ।

अभ्यङ्गभ्यङ्ग ( सं. ) दांतोंसे कुचल  
कर अथवा कुतर कर खानेका  
शब्द । [ कुचल देना ।

अभ्यङ्गुं ( क्रि. ) दाब डालना

अभ्यङ्गिपु ( क्रि. ) दब जाना, पिस-  
जाना, कुचला जाना, दबी हालत  
में होना ।

अभ्योभ्य ( क्रि. वि. ) तलवार  
छुरी, भाला इत्यादि के घुसने का  
बारबार शब्द, खचाखच ।

अभ्योभ्य ( क्रि. वि. ) पूर्ववत् ।

अभ्यन् ( सं. ) स्मरण, कीर्तन,  
निरंतर ध्यान, रटन, जप, गान,  
स्तुति, प्रार्थना, पद, ईश्वर सम्ब-  
न्धी गीत ।

अभ्यनिः ( वि. ) भजन करने वाला ।

( सं. ) भक्त, अर्चक, पूजक,  
भगत ।

अभ्यनिः ( सं. ) मंजीरे, झांझ,  
करताल, बहजो कि गीत-गाकर  
पूजा करता हो, भजन, कीर्तन ।

अभ्यनिये ( सं. ) गाकर भजन  
करने वाला, गायक, गवैया ।

अभ्यपपुं-अपपु ( क्रि. ) हो बैस  
करने दिखा देना, नाटक के समय  
वेश रखकर आरंभ से अन्त  
तकका वर्णन कह सुनाना ।

अभ्यपुं ( क्रि. ) भजन करना,  
ईश्वर का ध्यान करना, जपना,  
बड़े लोगोंका प्रेमसे पूजन करना,  
पहिरना, घालना, डालना, प्रका-  
शित होना, शोभित होना, प्रज्व-  
लित होना ।

अभ्यपुं ( सं. ) फलेरी, पकोड़ी,  
मंगोड़ा, बेसनका बनाया हुवा  
एक प्रकार का खाद्य पदार्थ,  
बेसनका गुलगुल्ल कंद अथवा  
किसी फलके बेसनमें लपेट कर  
घृत या तेलमें तला हुआ पदार्थ ।

अभ्यु ( वि. ) भजने वाला ( कवि-  
तामें )

अट्टकधु ( सं. ) मटक, बिछोह ।

अट्टकभाषे ( सं. ) प्रलापी, वाचाल,  
तड़ाके से जवाब देने वाला ।

अट्टकभवानी ( सं. ) बिना काम  
घर घर घूमने वाली स्त्री ।

अक्षर ( कि. ) व्यर्थ ही इधर उधर घूमना, बहकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रष्ट होना ।

अक्षर ( सं. ) देखो अक्षर

अक्षर ( कि. ) भुलना, बहकना, भ्रम में डालना, चकर में डालना, डराना ।

अक्षर ( सं. ) भ्रमण, पर्यटन, धरम घूमे, भ्रम, भ्राति, भूत ।

अक्षर ( कं. ) ब्राह्मण के लिये मान सूचक शब्द । महाराजजी, देवताजी ।

अक्षर ( सं. ) चापलसी, झुगामद, अतिशयोक्ति प्रशंसा ( भाट की तरह )

अक्षर ( सं. ) ब्राह्मण की स्त्री, ब्राह्मणी, भाट की औरत, भाटन, भाट की स्त्री ।

अक्षर ( सं. ) वह जो बिना विचारे बोला करे, गोसाईंजी महाराज के मठ में रहने वाला आश्रित व्यक्ति, गोसाईंजी महाराज का जंबाई ।

अक्षर ( सं. ) गाय जैसे के दूध बढाने के लिये बना कर तय्यार किया हुआ पदार्थ ।

अक्षर ( सं. ) ब्राह्मण के लिये तुच्छता प्रदर्शक शब्द ।

अक्षर ( कि. ) चमकना, डाटना, अलं बुरा कहना, दुस्स निहालना, बुढ़कना, दोष निहालना ।

अक्षर ( सं. ) रसोई का घर, पाक शाळा, बाबरची खाना, अक्षर ( सं. ) पकाने वाला, रसोइया, पाक शाही, एक जाति विशेष ।

अक्षर ( सं. ) माइ, पजाबा, बड़ा चूल्हा, शराब, अर्क निकालने की जगह, आबा, भट्ठा, ढंग ।

अक्षर ( सं. ) ताक, आला, मादी या बगची में वस्तु रखने के लिये बनाई हुई सन्दूक ।

अक्षर ( वि. ) अति बलवान, प्रतापी समृद्धिमान, ( सं. ) बीर, योद्धा, श्रीमान्, एक प्रकार का शब्द, घड़ाका ।

अक्षर ( सं. ) चमक, स्फुरण, कंपन ।

अक्षर ( कि. ) उज्ज्वल, महकीला, चमकीला ।

अक्षर ( कि. ) चौकना, आगना, चमकना, डर कर रुकना ।

अक्षर ( कि. ) डराना, चमकाना, चौकाना, आश्चर्य में डालना एकदम सडना, भगवान् पकड़ देना ।

अक्षिपुं ( सं. ) गंधक का टपका, धी और गंधक दोनों कपड़े पर लपेट कर जो आग लगाने पर टपके गिरते हैं ।

अक्षी ( सं. ) ज्वारी या बाजरे में पानी डाल कर पकाया हुआ पदार्थ ।

अक्षुं ( सं. ) पूर्ववत्—, चकाचौंध चौंधियां, ताप, अत्यंत प्रकाश ।

अक्षी ( सं. ) चकाचौंध, चौंधिया, लपट ( आग की ) भभक, ताप, अत्यंत क्षुधाग्नि, दुःस्वाग्नि, अलस ।

अक्षी उवे ( कि. ) दिलमें दुःखकी झुले उठना, व्यर्थ जाना, निरर्थक होना, प्रकाश होना, उजाला होना । [ उचित ।

अक्ष ( कि. वि. ) बिलकुल, ठीक,

अक्ष ( सं. ) भुरता, भड़ीता, बैंगन आदि आदिको आगमें सेक कर और फिर उसे छील कर तथा कुचल कर दही इत्यादिके साथ मसाला डाल कर खानेका पदार्थ विशेष ।

अक्षपुं ( कि. ) अग्नियों में झुलसना, भुरता होना, आगमें हमपक होना ।

अक्षपुं ( कि. ) इच्छा होना, मन होना, इरादा होना, भड़भड़ाना ।

अक्षपुं ( वि. ) बाचाल बक्की, बढ़ बढ़ानेवाला, बहुभाषी, मौला, निष्कपटी दिलकी बात एकदम कह देने वाला ।

अक्षपुं ( कि. ) एकदम क्रोध करना, भभक उठना, बकने लगना । [ वाला, मानी ।

अक्षपुं ( वि. ) बढ़ा, इज्जत

अक्षपुं ( सं. ) भड़वेका काम, भड़वेकी कमाई ।

अक्षपुं ( कि. ) दलना, मोटा पीसना, लडना, एकदम जोशमें भड़भड़ाना, खांच निकाडना, चित्रित करना ।

अक्षपुं ( सं. ) पुरुषोंको परस्त्रीके साथ, और स्त्रियोंको परपुरुष के साथ मिला देने वाला व्यक्ति । वेद्योंकोके यहाँ रहने वाला पुरुष, जीवश भर्तार, कुटना, दुरे कार्य की सिद्धि कराने वाला ।

अक्षपुं ( सं. ) गरम राख, उष्ण भस्म, भूषल, जिस राखमें आगकी छोटी छोटी चिंगारियाँ हों ।

अक्षपुं ( सं. ) चकाके की आवाज ।

भडाभडा ( सं ) भडाका, घडाका, तोप बन्दूक का शब्द, तडाका, किसी बड़ी वस्तुके ऊपरसे गिरनेका शब्द ।

भडाभे भारेवे ( कि. ) जोरसे (काम) करना, पहिले ही समयमें जीतवाना बिनाडरके बोलना सत्यको दूर रखकर खोरी जवान बोल ।

भडाभड ( अ. ) घडाभड तडातड लगातार भडभड शब्द ।

भडाभूट ( अ. ) जहां तहां फैला हुआ, अव्यवस्थित, बे इन्तजाम, भडुं ( सं. ) पतली दीवार, मकानके सामनेकी दीवार ।

भडे भेसपुं ( कि. ) पड़कर भागना, दिवाला निकालना, निस्संतान होना, हीन बचामें होना ।

भडेभड ( वि. ) देखो भडाभड ।  
भधु ( सं. ) सूरज, दिवाकर, रवि ।

भधु कुभवे ( कि. ) सूर्यास्त होना दिन छुपाना, संध्या होना ।  
भधुभार-रे ( सं. ) आंति कारक शब्द, सूचनार्थ शब्द, अनक, शब्द जनि ।

भधुडे ( सं. ) पूर्ववत् ।

भधुतर ( सं. ) विद्या, ज्ञान, अभ्यास, अध्ययन पढ़ने का विषय ।

भधुतिपाध ( वि. ) विद्या, पंडित, साक्षर, बहुत पढ़ाहुवा ।

भधुतुं ( कि. ) पढ़ना, सीखना, ज्ञानार्जन करना, जो बात मालूम न हो उसे ज्ञान लेना, अभ्यास करना, कहना, बोलना, सूझ दृष्टिपूर्वक झूठना ।

भधुतुं भधुतुं ( कि. ) पढ़ना गुनना, पढ़कर उसका उपयोग करना ।

भधुभधुने—पठ लिखकर, हो-शियार बनकर, विद्वान होकर ।

भधुभधुं ( कि. ) केकर भाग जाना, छू होना, दस पचीस होना ।

भधुता पंडितनीयने भधुता लडिसे भाव—अभ्यासद्वारा मनुष्य होशियार होता है ।

भधुभधुने का पाठवा इडवा—पठ कर क्या किया ?

भधुभधु ( सं. ) भिनभिन, अनक ।

भधुभधु भरतुं ( कि. ) भिनभिनाना,

भधुभधुतुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

भधुभधु ( सं. ) सिझाई, पडाई, फीस, झुलक, फी, पढ़ानेकी मजदूरी ।

अध्यायपुं ( कि. ) पढ़ाना, शिक्षा देना। बोधकराना, ज्ञानदेना, उप-  
देश करना। समझाना सलाह देना  
आदत करना, अभ्यास कराना,  
विद्याध्ययन कराना।  
अध्यापी भुक्पुं ( कि. ) सिखा  
पढ़ाकर पका करना, संकेत करना  
इशारा करना, सूचित करना, सा-  
वधान करना। [ तर्क।  
अधी ( उप. ) तरफ, बाजु, ओर,  
अधो ( वि. ) शिशित, विद्वान,  
पठित।  
अंअस्थि ( सं. ) ताक, आल,   
दीवार में बनाया हुआ वस्तु रख-  
नेका स्थान, आलमारी।  
अंअरे ( सं. ) जवनार, जातिभोज  
साधुओंका भोज, अपनी सारी  
जातिको बुलाकर,जिमनेका कार्य।  
अंअल-ण ( सं. ) मूल वन, फन्ड  
केपिटल, एकत्रित, इन्व, पूंजी।  
अंअणिभे ( सं. ) पूंजीवाला।  
अतरीश ( सं. ) आई की बेंटी,  
भतीजी। [ भतीजा।  
अतरीभे ( सं. ) आईका पुत्र,  
अपुं-यु ( सं. ) कृपा खानेयोग्य  
उपहार, पुरस्कार, भत्ता, लौस,  
अनीश ( सं. ) देखो अतरीश।

अनीने ( सं. ) देखो अतरीने।  
अथवा१३ ( सं. ) खेतमें काम कर-  
नेवालोंके लिये रोटी पहुंचानेवाला  
व्यक्ति।  
अथु ( कि. ) बढना, आगे जाना।  
अथामलु ( सं. ) जिस पात्रमें खेत  
पर काम करनेवाले मनुष्यों के  
लिये खानेका पदार्थ ले जाया  
जाता है।  
अथु ( सं. ) भत्ता, अलउंस,  
लौस, जो जेल में के कैदियोंको  
खाने के लिये पैसे दिये जाते हैं  
वेतनातिरिक्त वेतन।  
अथ ( सं. ) कल्याण, सुख, अबादी,  
इंद्र जी, कमल, २२ अक्षर का  
छन्द विशेष, देवदार का वृक्ष।  
अथठं ( सं. ) बड़ा गोखरू।  
अथथ ( वि. ) अच्छे शरीर वाला।  
अथ ( सं. ) द्वितीया, सप्तमी, और  
द्वादशी तिथि। कायफल, गौ,  
दुर्गा, पार्वती, गोकर्णी, वनस्पति  
विशेष, राजा, नीलवृक्ष, रूपवान  
औ। [ और।  
अथथथु ( सं. ) मुंढन, हजामत,  
अथथ ( सं. ) कृत्रिम स्त्राक्ष, वृक्ष  
विशेष।

अक्ष ( सं. ) मुँह, सारे सिर को  
अस्तुरे से मुँह करना । [कटना ।  
अक्ष क्षीवुं ( कि. ) मुँहना, बाल  
अप ( अ. ) कपाटे से ( पवन का वेग )  
अपक्षी ( वि. ) बंसी, पाखण्डी,  
रौनकदार, आठम्बरी, दिखाऊ ।  
अपक्षी ( वि. ) पूर्ववत्  
अपक्षीवुं ( कि. ) भड़काना, भप-  
की देना, प्रज्ज्वलित करना, जोर  
से पानी फैलाना, कुद करना,  
जलना । [मड़की, दहशत ।  
अपक्षी ( सं. ) घुड़की, धमकी,  
अपक्षी ( सं. ) धमकी, घुड़की,  
रोब, तयोर, दिखावा, आठम्बर,  
स्वरूप, अग्नि, प्रज्ज्वलन, ठठ ।  
अपक्ष ( वि. ) अत्यन्त स्थूल  
और निर्बल, भोदू, पदर, पोला,  
कमजोर ।  
अपक्षी ( सं. ) देखो अपक्षी  
अक्ष ( सं. ) तेजी चमचमाहट,  
शोभा, कांति, लालिख, खूबी, पानी।  
अक्षीवुं ( कि. ) देखो अपक्षीवुं ।  
अक्षी ( सं. ) देखो अपक्षी ।  
अक्षी ( कि. ) खाने के लिये जी  
जलाना, भोजन के लिये लार  
टपकना जोर से आवाज करना  
( बुढ़ में ) ।

अक्षी ( सं. ) भयंकर गर्जन,  
हॉग भिन्न और संचोरा ( क्षार  
विशेष ) का काढ़ा । काय विशेष ।  
अक्षीवुं ( कि. ) किसी के ऊपर  
थोड़ा थोड़ा चूर्ण इत्यादि डालना,  
छिड़कना ।  
अक्षी ( वि. ) बिखरी, भुरभुरी ।  
अक्षी ( सं. ) मभका, एकदम  
जोश में प्रज्ज्वलन ।  
अक्षी-ती ( सं. ) राख, मस्म,  
मंत्रित मस्म, देवता के सामने  
की धूप इत्यादि की मस्म, विभूति ।  
अक्षी योणवी ( कि. ) भीख  
मांगना ।  
अक्षी योणवी ( कि. ) किसी  
की अत्यन्त, दुर्दशा कर देना ।  
अक्षी ( सं. ) कांतित, आकाश  
की गोल रेखा जहाँ से सूर्य गति  
करता है ।  
अक्षी ( सं. ) मक्खी, भक्षिक,  
अक्षी ( सं. ) भौरा, भ्रमर, अलि,  
मधुप, भौं, सड़की पुमरी, भंवर,  
जलभ्रम ।  
अक्षी ( सं. ) छोटा भौरा, छोटा  
लहू, चकरी, भौरी, भ्रमरी ।  
अक्षी ( सं. ) लहू, भौरा, काष्ठ,  
अक्षी, भातु का बना हुआ मोल

गोल लेखने का विलोना जिस को  
कोरी खोद कर जमीन पर केंद्रते  
हैं और वह भन्जन् शब्द पूर्वक  
चकर खाता है ।

अभक्षो ( वि. ) मोले, सीधेसादे,  
पवित्र । [प्रकारका मिष्टिका वर्तन ।

अभक्षी ( सं. ) पानी के लिए एक

अभक्षि ( सं. ) एक प्रकारका  
जियों के पहिरनेका वस्त्र ।

अभक्षी ( सं. ) भ्रमरो, भौरी, भुंगी,  
चकरी, फिरकी, छोटा भौरा ।

अभक्षी ( सं. ) देखो अभक्षि

अभक्षी ( सं. ) भौरा, अलि, भ्रमर,

भृंग, मधुप, पीले मुख तथा काले  
शरीरका लकड़ी में छेद करनेवाला  
जीव, एक प्रकारकी बड़ी काली  
मक्खी जो सुगन्धित पुष्पों पर  
भंडराया करती है, जलमें का  
भंवर. गोल चक्कर, वर्षाकाल में  
उड़नेवाला एक जीव जिसकी पूंछ  
लम्बी होती है । पशु अथवा मनुष्य  
के शरीरपर बालोंका चक्कर ।

अभक्षी भुक्षाभक्ष ( कि. ) विषया  
होना, राग होना, वैषम्य प्राप्त  
होना ।

अभक्ष ( कि. ) भटकना, घूमना,  
चक्कर खाना, भ्रमण करना,  
फिरना ।

अभक्ष ( कि. ) भ्रम में डालना,  
चक्करमें पटकना, ठगना, धुमना,  
धोका देना ।

अभक्ष ( वि. ) अमित, घूमा हुआ,  
भटका हुआ, फिरा हुआ, फटा हुआ ।

अभक्षी ( वि. ) जैसे सरीखा मोटा,  
मोटा, स्थूल, भौंदा ।

अभक्ष ( वि. ) देखने में मोटा  
और भीतर से पोला ।

अभक्ष ( वि. ) कुछ उलटा सीधा  
समझाना, उस्काना, ठगना, छलना

अभक्षी ( सं. ) उत्तेजना ।

अभक्ष ( कि. ) अनुचित मार्ग  
पर ले जाना, भ्रम में डालना,  
धोका देना । [ का पात्र ।

अभक्ष ( सं. ) पानी भरनेका मिष्टी  
अभक्ष ( कि. ) हंडना, तलाश  
करना, अनुसन्धान करना, खोजना,  
शोधना, ध्यानपूर्वक देखना ।

अभक्ष ( अ० ) धम्म, ऊपरसे किसी  
बड़ी वस्तु के गिरनेका धमाका ।

अभक्ष ( सं. ) मौं, भौंदा, मृकुटी ।

अभक्ष ( सं. ) बरकी घरघरी ।

अभक्ष ( सं. ) भारं, भन्धु, भैया ।

अभक्ष ( वि. ) भयचक. डरपोक,  
भयभीत, भयविह्वल .



अथान ( वि. ) मयहर करीना,  
मयप्रद, विकाराळ ।

अथी-यु ( कि. ) हुवा, बना ।

अथे। ( कि वि. ) बहुत हुआ,  
बस हुआ ।

अथे। करीवने। ( कि. ) मानता पूरी  
होने पर पुजारीकी साक्षी भराना ।

अथे। ( सं. ) आई, बन्धू, पति,  
स्वामिन्द, उत्तर भारत का रहने-  
वाला विदेशी ।

अथ्ये। ( सं. ) पूर्ववत्

'अयु' आइयु' ( वि ) धन जन  
से पूर्ण, कुटुम्बी और धीमान,  
भरापूरा ।

अर ( सं. ) अधिक से अधिक,  
होबे उतना, पूर्ण, बड़ा, नापा  
हुवा, तौला हुआ । [ निद्रा,

अरुध ( सं. ) गहिरी नींद, पूर्ण

अरभत ( सं. ) भार बजन, बोझ ।

अरधु ( सं. ) निकम्मे मनुष्यों  
का समुदाय ।

अरध ( सं. ) भल, अहार, भोजन ।

अरधयु' ( कि ) खाना, खाना,  
उसना । [ख, मनोचित, बेहद ।

अरधु-३ ( सं. ) पुष्कल, बहुत,

अरध'टी ( सं. ) अधिक से अधिक  
चाहिये उतना थोड़े का रतना ।

अर योभाधु' ( सं. ) खूब वर्षा,  
वर्षाफट्ट भर, खूब बरसात के  
दिन । [ शरा

अरअरी ( सं. ) जरीन, खूब जरी-  
अरगुवानी ( सं. ) भरी खर्चानी,  
पूर्ण जीवन, पुरुष को २२-२५  
वर्ष की अवस्था में और स्त्री को  
१५-२० की अवस्था में ।

अरधु' ( कि. ) दलना, मोटा  
मोटा पीसना, बलबलना, गुन-  
गुनाना, अश्लेष बोलना, अधिक  
बोलना, जो जी चाहे सो लिख  
मारना ।

अरडे। ( सं. ) दलिया, मोटा मोटा  
चूर्ण चूरी, महादेव का पुजारी,  
तपोधन, छपर में बासों के बन्द,  
गले में का रोग विशेष ।

अरधु ( सं. ) भरना, पूरना, पालना,  
पोषण करना, रक्षा, बचाव,  
गुजर, दुकती हुई आल में औ-  
षधि इत्यादि भरना ।

अरधुी ( सं. ) सत्ताईस नक्षत्रों में  
का बूसरा नक्षत्र, पूर्ति शाक बनाने  
का पात्र विशेष ।

अरधु' ( सं. ) संग्रह, सरकारी  
रक्का देना, पूर्ण करना, देर,  
लगाव ।

भरत (सं.) माप, क्षेत्रफल, नाप तोल के लिये बना हुआ पात्र, नक्काशी का काम, कसीदा, ढाली हुई धातु, राजा दशरथ के पुत्र का नाम, शकुंतला के पुत्र का नाम, एक ऋषि का नाम ।

भरतभंड (सं.) शकुंतला के पुत्र भरत के नामसे पड़ा हुआ हिंदु-स्थान का नाम, भारतवर्ष, हिन्दु-स्थान, आर्यावर्त, इण्डिया, ब्रह्मावर्त ।

भरतश् (सं.) भरकर देने के लिये बनाया हुआ तौल परिमाण विशेष, सीसा जस्त, कांसा मिला हुआ पीतल, क्षेत्रफल, माप, जिस में तस्वीदार पात्र बनते हैं, सांचा ।

भरतक्ष-णी (सं.) पूर्ववत्

भरतरी (सं.) नाप, क्षेत्रफल, माप, भर्तृहरि, विक्रमादित्य राजा के भाई ।

भरतवर्ष (सं.) देखो भरतभंड

भरतीये (सं.) भरतका काम करनेवाला ।

भरती (सं.) ज्वार, समुद्र में लयवा उससे मिली हुई खादी और नदी में छः छः घण्टे के अन्तर से आनेवाला पानीका चढ़ाव (२४ घंटे में २ बार ज्वार

भाटा समुद्र में आता है) अधिक प्राप्ति, फौज में वृद्धि, नौकर रखना, वृद्धि । [करनेवाला ।

भरतीये (सं.) भरतका काम  
भरतीये (सं.) ज्वार, भाटा चढ़ाव उतार, घटा बढ़ी, न्यूनाधिक ।

भरतीये (सं.) देखो भरतीये ।

भरतीये (क्रि वि.) देखो भरतीये

भरतीये (सं.) रसीद, मालप्राप्ति या धन प्राप्ति की दस्तावेज ।

भरतीये (सं.) बहुतायत, ज्यादाती, इफरात, अधिकता ।

भरतीये (सं.) पूर्ति, सम्पूर्णता ।

भरतीये (सं.) पूरी पौधाक से फुल ड्रेस, कपड़े लत्तों से सुसज्जित ।

भरतीये (वि.) कोरा, सूखा, चिकनाई रहित, बुकनी, भुरभुरा ।

भरतीये (सं.) गांधूली, संध्या सूर्योदयके पहिलेका प्रकाश, उषा ।

भरतीये (सं.) भांति, शक, भ्रम, बहम, गुप्त रहस्य, गुप्त, भेद ।

भरतीये (वि.) बहुत विपुल, विशेष, ज्यादा, अत्यधिक ।

भरतीये (सं.) भरीसभा सरेवाज्वार, भरे दरबार ।

अरभावत्तु ( कि. ) देखो अरभावत्तु

अरभावत्तु ( कि. ) चोका देना,  
चक्करमें डालना, ठगाना, छलना,

अरभी ( सं. ) एक प्रकारके पत्ते  
होते हैं जो पायल मनुष्य को  
अच्छा होने के लिये सेवन कराये  
जाते हैं । [ अरभस ।

अरभस ( सं. ) देखो अर-  
अरभस ( सं. ) आम रास्ता,  
स्वतंत्र और उत्तम मार्ग उच्च  
मार्ग ।

अरवत्तु ( सं. ) पूरी मालगुजारी ।

अरवत्तु ( सं. ) बकरिया, भेड़ी  
बकरी पालने वाला मनुष्य ।

अरवत्तु ( सं. ) गडरियाकी जी ।

अरवाडी दाभुपी ( कि. ) सोजाना ।

अरवाडी ( सं. ) गडरिया, एक  
प्रकार का वृक्ष ।

अरवत्तु ( कि. ) भरना, पूरा करना,  
कृष्ण चुकाना, बन्दकमें गोली  
डालना, सहना, पाना, खेचना,  
नापना, फसादा करना, बुलना,  
बन्दा देना, लादना, संकेतना,  
छिड़कना, पानी भरना लाना,  
पापी खींचने इत्यादि की नौकरी  
करना, लोगोंको एकत्रित करना,  
रंग करना, सीना पूर्ण करना ।

अराध आधवत्तु—अवत्तु ( कि. )

बक जाना भारी होना, अकड़  
जाना ।

अरभवत्तु ( कि. ) बहरा जाना, पंस  
जाना, उलझना, खुपना गुप्त  
रखना बिलकुल भरना, बिपक्वता ।

अराडी ( सं. ; ) बरा हुवा, गूदेवर,  
स्थूल, मोटा, पुष्ट, ठोस ।

अराव ( सं. ) छुंड, समूह, पार्त,  
भर्ता, जथा, भीड़, संघ ।

अरावत्तु ( कि. ) उलट्टा सीधा  
सुझाना, कान भरना, संज्ञ पढ़ाना ।

अरावत्तु ( कि. ) भर जाना, पूर्ण  
होना, लिपट रहना, भीतर बुझना ।

अरिधीवत्तु ( कि. ) मिलना, ऐक्य  
होना ।

अरी आधवत्तु ( कि. ) नुकसान का  
बदला चुकाना, ठीक करना, सुर-  
क्षित रखना, माप डालना ।

अरीपुरी ५ अवत्तु ( कि. ) पूर्ण रूप  
में पाना, उचित रूपमें प्राप्त करना ।

अरी अरवत्तु ( कि. ) संचित कर  
रखना, संभ्रम करना, इकट्ठा कर  
रखना ।

अरीवत्तु ( कि. ) हाथ का पूरा  
बदला ले लेना, नुकसान ले लेना ।

अशीपूरी ( कि. वि. ) सब, समस्त  
परिपूर्ण । [ घर ।

अशुधर ( सं. ) धन जन से पूर्ण

अशो ( सं. ) विश्वास, यकीन,  
भरोसा, आशा, प्रतीति, प्रत्यय ।

अशेडी ( सं. ) रंग, वान्ति, ढांचा,  
रूप, रेखा, रूप ।

अरेभाणे ( कि. वि. ) एक ही बार  
लिया हो और पीछे से न लिया हो,  
लिया हुआ पदार्थ सब खा जाना और  
उच्छिष्ट न छोड़ना, भरी थाली पर ।

अरेधुं ( वि. ) पूर्ण, पूरा, भरा  
हुवा, परिपूर्ण ।

अरेसपत ( सं. ) बृहस्पतिवार,  
गुरुवार, जुमेरात ( यावनी भाषा )

अरोसादार ( वि. ) विश्वस्त, प्रामा-  
णिकविश्वास, ईमानदार, धार्मिक ।

अरोसे ( सं. ) भरोसा, विश्वास,  
आशा, प्रतीति, प्रत्यय । [ विशेष ।

अलके ( सं. ) भाला, बल्लम, शस्त्र

अलताध ( सं. ) भलाई, भलापन,  
भलमंसी, सज्जनता । [ कुछ भी ।

अलतु ( वि. ) योही, कोई भी,

अलपथु ( सं. ) भलाई, अच्छापन,  
भलमन्साहत, सज्जनता ।

अलभला ( सं. ) बड़े लोग, पूज्य  
पाद, योग्य-मनुष्य, योग्य, पूज्या

अलभधुं ( वि. ) कईएक, बहुतसेक,  
प्रायः अक्सर, अधिकांश ।

अलभनसाध ( सं. ) भलाई, सम्यता  
प्रमाणिकता, नम्रता, सिधार्ह ।  
नेकी । [ बड़े बड़े ।

अलाभला ( वि. ) अच्छे अच्छे,  
अलाभधी ( वि. ) बड़े बड़े यशस्वी  
पुरुष हों ऐसी ( दुनिया ) विस्तृत  
( सृष्टि )

अलाभथु ( सं. ) शिफारिश, अनु-  
ग्रह कारण, गुण वर्णन, लाभ पत्र ।

अलीभात ( कि. वि. ) अच्छी तरह,  
भली प्रकार । अच्छी ।

अलीवार ( सं. ) साहस, हिम्मत,  
तत्त्व, पौरुष, शौर्य, होश, शान  
शौकत ।

अलुं ( वि. ) अच्छा, सम्य, सत्त्व  
नर्म मिजाज का, भला, ईमान-  
दार, दयालु, नम्र सुशील, स-  
ज्जन, साधु, शांत प्रकृति, कुशल,  
क्षेम, मंगल, आनन्द, ( कि. वि. )  
अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम ।

अले ( कि. वि. ) अच्छा, बहुत  
उत्तम, अति श्रेष्ठ, शाबाश, धन्य,  
वाहवाह ।

अलेश ( वि. ) देखो अलुं [ वान ।

अक्षोभनेतर ( वि. ) अत्यन्त धन-

अक्षे ( सं. ) भावा, बलम, सख  
विशेष ।

अक्षे ( सं. ) भावा, बलम, एक  
प्रकार का रोग, सञ्चिपात, ( वि. )

भला, अच्छा, भ्रेष्ट । [ जंतु विशेष ।

अक्षुः ( सं. ) रीछ, ऋक्ष, बनेला

अक्ष ( सं. ) संसार, जगत, जन्म,  
प्राप्ति, शिव, महादेव, मनोभव,  
अवतार ।

अक्ष ( सं. ) घर, गृह, स्थान,  
वासस्थान, सदन, निकेत, ठाम,  
धाम, मकान, अस्तित्व, जगह,  
आश्रम । [ सगड़ा ।

अक्ष ( सं. ) तकरार, फसाद,

अक्ष ( सं. ) देखो अभ्र

अक्ष ( सं. ) सांसारिक दुःख ।

अक्ष ( सं. ) देखो अक्ष

अक्ष ( सं. ) चलते फिरते नाटक  
के खिलाडी का एकट, लज्जा,  
अपमान ।

अक्ष भरी ( कि. ) फजीहत का  
काम होना, व्यर्थ छे. गों की हंसी  
का कारण होना, अपमान होना ।

अक्ष अक्ष ( कि. ) तेवरी चढाना  
पुड़कना, डाढना, आँखें दिखाना ।

अक्ष ( सं. ) देखो अक्षे ।

अक्ष अक्षे=जगत में फजीहत,

अपयस, नाभौखी । अक्षे अक्षे  
लेना व देना और व्यर्थ का  
अपवाद ।

अक्षी ( सं. ) संसार की मार्ग ।

अक्षी ( सं. ) स्तंग रचने वाला,  
नाटकी बेशरम, निर्लज्ज, खिलाडी  
कृत्यक ।

अक्ष धनुं ( कि. ) मरजाना,  
मृत्यु होना, अन्त होना ( काठि-  
यावाड में ) [ मैंहें भुङ्कटी ।

अक्ष ( सं. ) देखो अभ्र । अक्षे,

अक्षे ( सं. ) फजीहत, अपमान

अक्षे ( सं. ) एक प्रकारका नाटक,  
चुत्यगीत, स्वाग रखकर किया  
हुवा खेल ।

अक्ष मय ( कि. वि. ) उत्तरोत्तर,  
जन्मान्तर, जन्मजन्म, सदासदा,  
हमेशा । [ चाह, ( खानेके लिये )

अक्षे ( सं. ) मन, इच्छा, मर्जी,

अक्षे अक्ष ( कि. ) खानेकी  
इच्छा करना ।

अक्ष ( सं. ) राख भस्म. छार ।

अक्ष ( सं. ) वर्षा ऋतुकी बीअरों

अक्षक्षीत ( वि. ) बहुत सूखा,  
जस्दीसे दूट जाने वाला, भुरभुर ।

अक्ष ( सं. ) भस्म, राख, छार,  
रक्षा ।

अक्षरं ( कि. ) ओकना, भूखना  
कुत्तेकी आवाज, व्यर्थकी निन्दा  
करना, बोलना । [सो बोल उठना।  
अक्षरी छिपुं ( कि. ) मनमें आवे  
अक्षरताकुत्ता छटे नहिं=जो बोले वह  
करे नहीं, गरजे वह बरसे नहीं ।  
अक्षरता कुत्ताने रोखीनी छडे।  
( आपवे ) बोलते हुएको लोभ  
द्वारा बन्द करना । काम निका-  
लना ।

अक्षरं-रतो ( सं. ) जठर, पेट,  
उदर, पारसी लोगोंका कबरस्तान।

अक्षरं ( सं. ) चांदी, बायाविडंगा।

अक्षरं ( सं. ) इस नामका  
पर्वत ।

अक्षरं ( सं. ) पित्त पापडा ।

अक्षरं चिठा-नी ( सं. ) पूर्ववत ।

अक्षरं ( सं. ) पूर्ववत ।

अक्षरं ( वि. ) राखके रंगका ।

अक्षरं ( सं. ) कपोत पर्खा,  
एक जातिकी मणि । [ खीफ ।

अक्षरं ( सं. ) सङ्कोच, डर, शर्म,

अक्षरं-अक्षरं ( सं. ) संध्या,  
सूर्योदयके पहिलेका समय, ऊषा,  
थोडा प्रकाश, दिखे न दिखे ऐसा  
प्रकाश ।

अक्षरं ( सं. ) भाला, बल्लभ ।

अक्षरं ( सं. ) देखो अक्षरं

अक्षरं ( वि. ) मुवाफिक, पसं-  
दीदा, दिल पसन्द, रोचक मानने  
योग्य ।

अक्षरं ( कि. ) मिलना, समान  
होना, सम्मिलित होना, शामिल  
होना, समान होना, जोड़ना,  
एक होना, जानकार होना ।

अक्षरं ( वि. ) देखो अक्षरं

अक्षरं ( कि. ) परिचय करना,  
अक्षरं करना, सँभलना, पक्षको  
डोरोमें हिलाना । [ हाँ हाँ ।

अक्षरं ( अ० ) गाय बल्लका शब्द,

अक्षरं ( सं. ) एक प्रकारका विशैला  
पेड, मादकपत्ती, भंग, विजया,  
एक प्रकारकी पत्ती जिसे प्रायः  
अशिक्षित लोग घोटकर पानीमें  
छानकर पीते हैं और नशेमें  
उन्मत्त रहते हैं । तमाख ।

अक्षरं पीवी ( कि. ) भांगका पानी  
पीना, भांगके नशेमें कुछ का कुछ  
बचना बिना विचारे, बोलना ।

अक्षरं अक्षरी ( कि. ) भांगका नशा  
होना, बेसुखि होना, उन्मत्त होना  
अहंकार होना ।

कांभलु (वि.) तोड़ते समय जिसका चूरा हो जावे, टूटनेवाला ।

कांभर (वि.) चांबलोंका चूरा ।

कांभरी (सं.) मंगरा, एक प्रकार का वृक्ष, जो वर्षाऋतुमें उत्पन्न होता है । [ प्रकट करना ।

कांभरी वाढवे (कि.) चुन बात काटना, अलग करना, भाग करना, कमदेना, न देना, रस्ती में बल देना, बटना ।

कांभु (वि.) टुकड़ हुआ, खंडित टूटा हुआ, फूटा हुआ, विभजित ।

कांभुग (सं.) तकरार, झगडा, होना, वाद विवाद, लड़ाई झंझट पंचायत, खटपट, समाधान, फैसला, न्याय ।

कांभुगिथु (वि.) तकरारी, फसादी झगडेल, विषम, दुबोध, गूढ़, गहन । [ पक्ष, दलाल, टंटाखोर ।

कांभुगिथो (सं.) लवार, अमीन कांभुगिथाना छोडरा थुपे भरे= दूसरों की पंचायत और अपना काम खराब ।

कांभुथी (सं.) संख्याका भाग करना, एक प्रकारका गणित विषय, रस्तीमें बलदेना, माग, हिस्सा ।

कांभु (कि.) देखो कांभु ।

कांभु (वि.) उपाहा, जंगल, अशुभ भावना, एक प्रकारकी खाति जो बहुत वीमल शब्द बोलती है याती है मज़ाक करती है और पशुपक्षी की बोली बोलती है ।

कांभुगिथु (कि.) अपशब्द बोलना, गाली बकना, गन्देलकच बोलना ।

कांभु (सं.) गाली, बकबक, अपशब्दोच्चारण ।

कांभुगिथु-कांभु (वि.) भाई बहिन, एक मा बापके पुत्र, कुटुम्बीजन ।

कांभु (कि.) गाली बकना, गन्दे शब्द बोलना, निन्दा करना अपशब्द बोलना, बुरे शब्द बोलना ओछा बोलना । [ कांभुगिथु ।

कांभु (सं.) पात्र, बर्तन, देखो

कांभु (वि.) खारी, क्षारयुक्त, खार ।

कांभु (सं.) सिर मुंढाते समय बाल जो रह गये हों उन्हें निकलना ।

कांभुगिथु (वि.) क्षार युक्त, खारी, जिल्बिला पानी ।

कांभुगिथु-कांभु (वि.) पूर्ववत् ।

कांभु (सं.) बड़ों के लिये पूज्य शब्द, दादा, बाप, माई, नाना भाई का भासे=सर का, जहाँ मेरे पूर्वज गये वहाँ जा ।

भा४ (सं.) एक मा से उत्पन्न पुत्र,  
सहोदर, बन्धु, भ्रातृ, सा०१॥भा४  
पिताकी दूसरी पत्नीका पुत्र, सौ-  
तेला भाई, भसिया भा४ (सं.)  
मौसीका पुत्र भो०भा४ (सं.)  
मामाका बेटा। पि०भा४ (सं.)  
बचेराभाई, काकाका बेटा। ई०  
भा४ (सं.) भूवाका पुत्र।  
भा४ (सं.) झेही, मित्र, बन्धु,  
दोस्त, सुहृद, जाति स्वभाव दरजा  
इत्यादि प्रदर्शित करनेके लिये दूसरे  
शब्दों के साथ जोड़ा जाता है,  
जैसे भटभाई, सिपाहीभाई ३०  
भा४ भा५३ (सं.) भाई बहिन,  
भाई बन्धू, सगे सम्बन्धी।  
भा४ भा५३ (कि.) आजिजी  
करना। निवेदन करना, नम्रता  
पूर्वक कहना हाहाखाना, निहारे  
करना।  
भा४भा५३ (सं.) बन्धुत्व, मित्रता  
भ्रातृ भाव, झेह, मैत्री, प्रेमसम्बन्ध।  
भा४भा५३ (सं.) पतिका बड़ा भाई,  
जेठ, ज्येष्ठ, पिता, बाप।  
भा४भा५३ (सं.) बर, धनी,  
पति, पुरुष, स्त्रीविद, स्वसम।  
भा४भा५३ (सं.) झेही, बचपनका  
संगी, समाजका मेंबर, रिश्तेदार,  
जातीय।

भा४भा५३-भा५३ (सं.) कर्त्तक,  
मासके शुक्ल पक्षकी द्वितीया तिथि,  
इस दिन भाई बहिनके यहां सो-  
जन करने जाता है। मैसा दूज।  
भा४भा५३ (सं.) भाई बहिन।  
भा४भा५३ (सं.) अस्ली दोस्ती,  
यारी, मित्राचार, मित्रता, सुहृदता।  
भा४भा५३ (सं.) भाग्य, तकदीर,  
किस्मत, अदृष्ट, प्रारब्ध, देव।  
भा४भा५३ (कि.) भाग्य (कि.)  
तकदीर खुलना, भाग्योदय होना,  
सुदिन आना, प्रारब्ध चेतना।  
भा४भा५३ (कि.) भाग्यफूटना  
भा४भा५३ (कि.) भाग्यवतवान-भा५३ (कि.)  
किस्मती, प्रारब्धी, भाग्यशालि,  
कुस किस्मत, अच्छे तकदीरवाला।  
भा४भा५३ (कि. वि.) पूर्ववत्।  
भा४भा५३ (वि.) देखो भा५३।  
भा४भा५३ (सं.) जो दूध न देवे,  
बांझ, दूधसे हटा हुआ पशु।  
भा४भा५३ (सं.) गप्प महापुराण,  
छंदी बातें, असत्य वर्णन, असम  
व लम्बी लम्बी बातें।  
भा४भा५३ (सं.) बाटी, मोटी छोटी  
गेहूं की रोटी, गांठरी, रोटी।  
भा४भा५३ (सं.) रोटी, मोटी रोटी।



भाष्य ( कि. ) बोलना, भाषण करना, कहना कथन करना, अ-विषय कहना । हिन्दी, बोल चाल ।

भाषा ( सं. ) भाषा, ब्रज भाषा, भाषा ( कि. वि. ) घुटनेपर ।

भाग्य ( वि. ) दया हुवा, संदित फटा हुवा, दरारवाला, तडाका हुवा, अभाग्य भाग्य ( वि. ) जो चल न सके । भाग्य भाग्य-आलसी सुस्त, काहिल, काम चोर । [ निराशा, निरुत्साह ।

भाग्य भाग्य ( सं. ) नाउम्मेदी, भाग्य भाग्य ( सं. ) आलसी, सुस्त । [ हुए, निराश होकर । भाग्य भाग्य ( कि. वि. ) बरते भाग्य ( सं. ) माता के लिये परसा हुवा नैवेद्यका थाल ।

भाग्य ( कि. ) तोड़ना, फोड़ना चुराचुरा करना, टुकड़े टुकड़े करना हिस्से करना, बाँटना, वापिस न देना, अदा न करना ।

भाग्य ( कि. ) टुकड़े होना, चीर होना, दरार होना, छूट भागना, दीड़ जाना, तोड़ना, दिवाला निकालना, उतारना ।

भागी भाग्य ( कि. ) ठेठ तहन पहुँच कर बीचमें ही अटक रहना ।

भागी भाग्य ( कि. ) भागाकार गुणाकार इत्यादि जोड़ हिसाब करना ।

भागीरथ ( वि. ) पिछली रात,

रात्रि के अंतिम प्रहर, आधी रात के पछेका समय । [ ओछा तोल,

भाग्य तोल ( वि. ) कम बजन, भाग्य ( सं. ) देखो भाग्य ।

भाग्य ( सं. ) बाजारमें दुकान लगाकर बैठनेवाला, दूकानदार, द्वारपाल । [ दौड़धूप ।

भाग्य ( सं. ) दौड़दौड़,

भाग्य-भागीरथ ( वि. ) पांतीदार, हिस्सेदार, सहयोगी, संगी, साथी ।

भाग्य-भागीरथ ( वि. ) पूर्ववत् ।

भाग्य ( वि. ) पूर्ववत् । [ पांती ।

भाग्य ( सं. ) हिस्सा, भाग,

भाग्य ( वि. ) टुकड़े, टुकड़े टूटा, फटा, ( पात्र ) जिससे परिश्रम न हो, आलसी, प्रमादी ।

भाग्य ( वि. ) अजड़, रुक्ष, निरस ।

भाग्य-भाग्य ( वि. ) नगरके कोठके पासका द्वार, नगरके बाहिरकी छूटी हुई जगह ।

भाग्य भाग्य ( कि. ) टट्टी जाना, देखाने जाना, जंगल जाना, हगने जाना, मलोत्सर्ग करना, झाड़े जाना ।

भाषावट ( वि ) मध्यम स्थितिका,  
बीचके वर्गका, मध्यम श्रेणीका ।  
भाषा दुष्टुं ( क्रि. ) इच्छा पूर्ण न  
होना, घुरा होना, दैवकोप होना ।  
भाष्ये ( म० ) योगात्, दैवयोगे,  
कदाचित्, कदापि, क्वचित्, कोकाले,  
शायद, संभवतः ।  
भाष्यरे ( सं ) मिथीका पत्र ।  
भाष्ये ( सं. ) जिस संख्यासे भाग  
दिया जाने, बांटनेवाला (गणित) ।  
भाष्युं ( क्रि. ) देखो भाग्युं ।  
भाष्य ( क्रि. ) साग, तरकारी,  
शाक, शाक बनाने योग्य काम  
पत्र पुष्प, फल अथवा मूल  
इत्यादि ।  
भाष्यभाड ( वि. ) पोचा, निर्बल,  
शौर्य्य हीन, कोमल, शक्तिहीन,  
उरपोक ।  
भाष्यभाषे ( सं. ) तरकारी, शाक ।  
भाष्यभूना ( वि. ) न कुछ, व्यर्थ,  
अयोग्य ।  
भाष्य ( सं. ) चारण, स्तुतिप्रसंगिक,  
वन्दी, वरदैत, एकवर्तविशेष,  
ब्राह्मणोंकी एक जाति, खुशामद  
करनेवाला, छठी प्रशंसा करनेवाला  
भाष्यी-धु ( सं. ) भाटकी स्त्री,  
भाटनी । [ मोहंला ।  
भाष्यवाडे ( सं. ) भाटोंके रहनेका

भाष्यवेडा ( सं. ) अतिशयोक्ति  
भाषण, भाटकी तरह स्तुतिगान ।  
भाष्यवेडा ( सं. ) देखो भाष्यवेडा ।  
भाटकी पदवी, कहावत, मसल ।  
भाष्ये ( सं. ) गोसाईजी महा-  
राजको माननेवाला भक्तोपवीतयुक्त  
वैष्णवोंकी एक जाति विशेष, ये  
अस्त्री रजपूत थे, दूधवाला, भाला,  
घोसी ।  
भाषी ( सं. ) देखो भट्टी ।  
भाष्युं ( सं. ) नदीके किनारे छि-  
छले पानी वाली जगह, रेती, ब्रण,  
क्षत, चांदी ।  
भाष्ये ( म० ) ब्राह्मणोंकी जाति  
विशेष इनका अस्त्री नाम अनावल  
है इनकी बस्ती सूरतके जिलेमें है  
जो कृषिकार्य करते हैं ।  
भाष्य ( सं. ) चूल्हा, मट्ठा, जलपू-  
रनेका बड़ासा चूल्हा ।  
भाष्यभूने ( सं. ) भट्टभूजा, अन्न  
आदि सेकनेवाला, कांदू, भूजा,  
भूजनेवाला, एक जातिविशेष ।  
भाष्यवात ( सं. ) देखो भाष्युत ।  
भाष्यमिथी-नाभुं ( सं. ) किरायेका  
पत्र, भाड़ेके लिये लिखितपत्र ।  
भाष्ये ( सं. ) अन्न सेकनेका  
मिथीका एक पात्र ।

भा६ ( सं. ) भावा, किराना, मह-  
सूत, मिहनताना, लगान ।  
भा६धुं धर ( सं. ) किरायेका म-  
कान, भाड़ेकी झोंपड़ी । [ लेना ।  
भा६ शम्भु ( कि ) किराये पर  
भा६नी वेधेध उधायीभेध-जहातक  
बनी बहातक बनी बाइमें तू तेरे  
घर और मैं मेरे घर ।  
भा६न ( सं. ) किरायेदार, भाड़ेती ।  
भा६ती ( वि. ) मजदूर, ठाँकेदार,  
भाड़ेका घोड़ा-गाड़ी, किरायेका  
टह, पैसे लेकर काम करनेवाला ।  
भा६ भा६धुं ( कि ) किराये पर  
देना, भाड़े पर देना ।  
भा६ शम्भु ( कि ) भाड़े लेना,  
किराये पर लेना ।  
भा६ ( सं. ) नाटकके दस रूपको मेंसे  
एक, सूर्य, भानु, रवि, भास्कर ।  
भा६धी ( सं. ) भानजी, बहिनकी  
पुत्री ।  
भा६धु ( सं. ) पूर्ववत् ।  
भा६डी ( सं. ) भानवा, बहिनका  
पुत्र, मामिनेय । [ पूर्ववत् ।  
भा६धु ( सं. ) भा६धुने भा६धुने  
भा६धु ( सं. ) देखो भा६धु ।  
भा६धु ( सं. ) भोजन इन्धुपुत्र  
वाली, भोजन, बाँकी, रख ।

भा६धु ५६५३ ( सं. ) पेटको पूरा  
खानेके लिये नहीं मिलना ।  
भा६धुअंतर ( सं. ) खानेको रखने  
में फेरफार रखना ।  
भा६धु भा६धु ( कि. ) भोजन पर-  
सना, खानेके लिये आगे रखना ।  
खाने बैठना ।  
भा६धुभां वृष नृपवी ( सं. )  
निर्वाहमें बाधा डालना, सुखमें  
लात मारना, भोजन बिगाड़ना ।  
भा६धु-धु ( सं. ) बहिनका पुत्र  
भानजा, मामिनेय ।  
भा६धु भा६ नहीं ने भा६धु धाम  
नहीं=हिन्दूशास्त्रानुसार भानजेका  
भाग नहीं गिनाजाता उसी तरह  
मिल्कियतमें जेबाईका हिस्सा नहीं  
गिनाजाता । [ भाजन ।  
भा६धु ( सं. ) पात्र, बर्तन, बासन,  
भा६धु ( सं. ) भाई, बन्धु, सगपन,  
रिश्ता । सगा, प्रेमी, बहिनभाई ।  
भा६धु ( सं. ) छिलके युक्त चोंबल,  
धन, उबले हुए चावल, भौंति,  
तरह, तर्ज, डँग, ढाँचा, प्रकार,  
उब, छटा, ढील, रीति, जाति,  
समूह ।

भात पाठवी (क्रि.) अपमानित करना, निंदा करके मानहानि करना । [चित्र विचित्र, बहुरंगी।  
भात भातनुं (वि.) तरहतरहका,  
भातिथुं (सं.) उबले हुए चाब-  
लोंका पानी (मांढ) निकालनेका  
छिद्रयुक्त पात्र, रांधाहुवा भात  
निकालनेका बर्तन । [भातभातनुं  
भाती-तीभर-तीथुं (वि.) देखो  
भातुं-थुं (सं.) मुसाफिरीमें छा-  
नेकी खुराक, राहखर्च, मार्गमें  
यात्राके समय खानेका पदार्थ,  
भत्ता, अठाउंस, लौस, वेतनके  
अतिरिक्त वेतन ।

भातो-बडा (सं.) टेपो भाथे।  
भाथी (सं.) बीर, भट, शूर, योद्धा,  
भाथे (सं.) तूण, तरकस, तीरों  
के रखनेका कोष, हथुधि, निषत्र,  
तूणीर, मुसाफिर या फौजी सिपाही  
का सामान रखनेका बैला ।

भाहरवानी भेंस (सं.) जीव विशेष  
(वि.) फूल के मोटा हुवा पुष्ट  
मनुष्य जिससे चलाफिराभी नहीं  
जाता हो ।

भाहरवे (सं.) भाद्रपद मास,  
बह हिन्दू मास जो उत्तरा भाद्रपद  
और पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रोंके उदय

के समय होता है, भादौ, भादवा,  
वर्षका छठा महिना, विक्रम वर्षका  
११ वां महीना, (गुजरातमें, क्योँ  
कि कई जगह कार्तिक माससे वर्षा-  
रंभ होता है ।)

भाद्रपदी (सं.) भादौ मासकी पूनम  
भाद्र पौर्णिमा, तिथि विशेष ।

भाज (सं.) बुधि, होश, स्मरण,  
स्मृति, याद, ज्ञान, बोध, चेत,  
समझ, बुद्धि, अह, कल्पना, त्रास,  
धारण, तर्क, छाया, नजर, लक्ष,  
सावधानी ।

भाभा (वि.) मोटी बुद्धिका,  
मूर्ख, बेवकूफ जड़, ठोठ, मूठ ।

भाभा भूत (सं.) वर्षाऋतुमें इस  
नाम के पेदा होनेवाले एक प्रकार  
के जीव, जड़, मूर्ख. शठ, मन्दबुद्धि।

भाभु (सं.) बापकी माता, दादी,  
भाभी, बाप के बड़े भाईकी स्त्री,  
ताई । हीनबुद्धि ।

भाभो (सं.) मूर्ख, कुन्दजहन ।

भाभ (सं.) स्त्री, बीरत, मरे हुए  
होर के चमड़ेका महसूल, चमड़ेका  
टेक्स, याद, स्मरण, मान ।

आभटो (सं.) नजर चुका कर  
चुरा ले जानेवाला चोर ।

भाभक्षु ( सं. ) बारीबाळ—बलि-  
हारी आर्ष ऐसा प्रदर्शित करने के  
लिये हाथों का चालन, बलिहारी ।  
भाभक्षु ( वि. ) बे स्वाद, बे मज़ा  
फ्रीका, सीठा, आनन्दरहित, बे  
ज़ायका ।

भाभा ( सं. ) व्यर्थ भ्रमण, व्यर्थ  
परिश्रम, बहम. अंधविश्वास ।

भाभु ( सं. ) खोटा विचार, बहम,  
व्यर्थकी आतुरता, झूठा विश्वास ।

भाभे ( सं. ) ओभ, लालच ।

भाभग ( सं. ) देखो भाभेभ,

भाभडे ( सं. ) पुरुष, मर्द, धनी,  
वर, पति, स्वामी, खसम, खाविंद ।

भाभात ( सं. ) राजाका सगा, नाते-  
दार रिश्तेदार, भाईपन ।

भाभापी ( वि. ) भाईके नातेदार,  
भाईका सगा, सम्बन्धी ।

भाभे ( सं. ) देखो भाभ ।

भाभ ( सं. ) बोझा, वजन, बोझ,  
लदा हुआ अथवा रखाहुवा जड़  
पदार्थका वजन, २०२०७४०००X  
१८ संख्या, अठारह भार वनस्पति  
( इसमें ४ भार फलते फूलते वृक्ष  
४ भार फलफूलरहित, ४ भार  
कांटेवाले वृक्ष, और ६ भार बेलि )  
२० टोलेका वजन, कागज़ इत्यादि

न उड़े इस लिये रखाहुवा वजन,  
पेपर बेट, तोला, एक रुपया भार  
वजन, अपच, अजीर्ण, मान, बरजा,  
बदप्पन, चेहरे पर मानकी कांति ।  
उपकार, अहसान, आभार, किसी  
वजन के बराबर, समूह, अत्था,  
मुंड, शक्ति, हिम्मत, दम, महत्त्व,  
गौरव, प्रभाव, असर, किसीभी  
चीज़ पर जोर दे कर बतलाना ।

भाभ वेडवे ( कि. ) वज़न उठा-  
कर चलना ।

भाभ मुडवे ( कि. ) अहसान करना,  
किया हुआ उपकार प्रदर्शित  
करना । [ जाना, मान भंग होना ।

भाभ भाभवे ( कि. ) हलका हो  
भाभ भभु ( वि. ) जितना बोझा ले  
जाया जास्के जितना भार उठ सके  
उतना । [ स्थान या वाहन, भारकस ।

भाभ भाभु ( सं. ) भार भरनेका  
भाभ ( सं. ) पत्नी, विवाहिता  
स्त्री, औरत ।

भाभट्टिभे-डिभे ( सं. ) लछा, शह-  
तीर, घरमें म्याल, तीर, पाउ ।

भाभक्षु ( सं. ) दाबन, वजन, बोझ,  
किसी वस्तु को दबाने के लिये  
रखी हुई भारी वस्तु ।

आर्य्य अक्षय्यं (कि.) अथ लम्बी  
चौड़ी बना कर कहना, अतिशयो-  
क्तिपूर्वक बहाना ।

आर्यी (सं.) वाक्य, वचन, बोली,  
शारदा, शब्दपात्रिका, वाक्चातुर्य,  
सरस्वती देवी, दस प्रकार के  
गोसाइयों में से एक भेद । (वि.)  
भारतीय, भारतविषयक ।

आर्यी (वि.) बहादुर, वीर, भट,  
बोद्धा, शूर ।

आर्योरी (सं.) गर्भपात न हो  
जावे इसलियेमात्रित भाग जो अफे  
कमरमें बांधा जाता है, डोरो के  
लिये भी काम में लाई जाती है ।

आर्य्यहारी (वि.) लाटा हुआ  
रखा हुआ वजन खेच कर या ले  
कर चलनेवाला मजदूर, बेगारी,  
कंठ बेल इत्यादि ।

आर्य्योन्मत्तः (सं.) मार, वजन,  
मान, इज्जत, स्तब्ध । [ माननीय ]

आर्य्योन्मात्तः (वि.) वजनदार,

आर्य्योन्मात्तः (सं.) देखो आर्य्ये ।

आर्य्युं (कि.) आज कुस न जावे  
इसलिये रात में दाब कर रखना,  
अंत्रित करना, बाध, वशीकरण  
करना, मोहित करना, अन्वेष  
करना ।

आर्यी (वि.) वजनदार, मूल्यवान,  
कीमती, महंगा, मुनिकल, मोटा,  
कठिन, सुस्त, जड़, ठीला, ( कि  
वि. ) बहुत, अतिशय, ( सं. )  
दो चार लम्बी चीजों को एक  
जगह बांधी हुई, मोली, गठ्ठा ।

आर्ये (वि.) अधिक भारयुक्त,  
बहुत वजनदार, संगीन, मोसदार,  
सुगन्ध, काहिल, चपलतारहित, जड़,  
बहुत, शिथिल, अतिशय, कठिन,  
मुश्किल, नाकममक, पिग्ता,  
उदासी, कुपच, गुरुपाक, तोलमें  
अधिक, कड़क, सख्त, बहुतही ।

आर्ये ४२० (कि.) एक बात को  
बडी करना । [ माना होना ।

आर्ये ४३० (कि.) गव करना,

आर्ये ४४० (कि.) महंगा होना,  
अधिक मूल्य में प्राप्त होना । भारी  
मालम होना ।

आर्य्यम् (वि.) आबरूदार, प्रति-  
ष्ठित, वजनदार, रोबदार, वजनी ।

आर्य्यम् (वि.) गर्भवती, सबर्भा,  
ग्याभन, गाभन, पेटसे ( जी )

आर्य्यम् (वि.) बहुतही वजनदार ।

आर्य्य (सं.) मोटा गठ्ठा, बडा  
बण्डल, सिरपर उठानेका बोस  
( रुकड़ी घात इत्यादि ) घना,  
विशेष, अतिशय ।

आरंभिक-भिक्षावेको आरंभिक।

आरंभिकी ( सं. ) ककद्विषाका गठ्ठा,  
भरोटा, छोटा गठ्ठा ।

आरंभिक ( कि. वि. ) समान बोझ,  
वजनके बराबर, समतोल ।

आरंभ ( सं. ) कीचड़वाली जमीन,  
रेतीली भूमि, चिकनी जमीन,  
मस्तक, कपाल, पता, हुँद, खोज,  
तलाश । [ इलकारा नकाब, दूत ।

आरंभिक ( सं. ) जोरदार छड़ीदार

आरंभिकी ( सं. ) जलका पात्र,  
गगरा, घड़ा, घट ।

आरंभिकी ( सं. ) बछी, बास के  
उंडे में लगाया हुआ लोहेका फट,  
शस्त्र विशेष । [ वाता ।

आरंभिक ( सं. ) बलमवाला, बला-

आरंभिक ( सं. ) देखो आरंभ

आरंभिक ( सं. ) फर, तीरका मुख,  
बाणकी पत्ती, तीर पर लगनेवाला  
लोहेका पाता ।

आरंभ ( सं. ) अभिप्राय, चेष्टा,  
मानस विकार, सत्ता, स्वभाव,  
जन्म, क्रिया, लीला पदार्थ,  
विभूति, घालवर्ध, मोदि, उपदेश,  
नवप्रहोषी द्रावण चेष्टा, कृति,  
क्रोध, प्रकृति, ( रससास्त्रवर्धित  
पांच भाव ) १ विभाव, २ अद्भु-

भाव, ३ सात्विक भाव, ४ व्याभि-  
चार भाव, और ५ स्वायी भाव,  
हाथ पैर बांछ इत्यादिका सत्वा-  
लन, निर्ले, दर, मूल्य, इच्छा,  
धारणा, रुचि, इच्छा, हेत, भावा,  
प्रेम, आस्था, विश्वास, हृदयका  
प्रेम, स्थिति, हालत, दशा, स्व,  
ता, पन, कार्य, फल, होना, उप-  
स्थिति, सुखजन ! विद्वान ! ( नाटक  
में सम्बोधनार्थ प्रयोग ) कीर्ति-  
सूचक कविता, जेह, प्रीति ।

आव आवे ( कि. ) नफा लेना,  
खुशामद चाहना । [ त्यागना ।

आव छोड़वे ( कि. ) मरना, देह

आव पूछवे ( कि. ) परवाह करना,  
गिनना, मानना, विश्वास करना,  
गिनती में गिनना ।

आवक-क ( सं. ) उपाधि, जेजाक,  
आपदा, विचार, मनोव्याधि,  
माई, बन्धु ।

आवक आभवी ( कि. ) पीड़ा हर  
करना, उपाधि समन करना, कष्ट  
विचारण करना, साधारिक आभा-  
वालसे मुक्त होना ।

आवतपीन-नगरी ( सं. ) कर्त्तव्य  
शुद्ध द्वितीया । भारद्वाज, इस दिन  
आई बहिनके घर भीमने जाता है।

भावपुं ( वि. ) अनुकूल, रुचिकर, मनपसन्द, पसन्दीदा, इच्छित, ठीक ।

भावन ( सं. ) उल्लाहिना, आक्षेप, उपालेभ, टोना, ताना, मर्मवचन, अनुकूल, (वि.) देखो भावपुं

भावपुं ( कि. ) रुचना, पसन्द आना, अच्छा लगना, स्वाद लगना।

भावसाक्षि ( वि. ) कपड़े छापनेका धन्धा करनेवाला, छीपा, एक जाति विशेष ।

भावी-वे प्रथेभ ( सं. ) जिस में क्रियापद का अर्थ ही कर्ता हो ( व्याकरण में ) [ कौल ।

भाष ( सं. ) बचन, वादा, करार,

भाषक ( वि. ) बोलने वाला, वक्ता, कहने वाला, कथन करने वाला, अधिपति ।

भाषी ( वि. ) वक्ता, बोलने वाला ।

भास ( सं. ) ज्ञान, छाया, असर, प्रभाव, प्रकाश, आभास ।

भासपुं ( कि. ) दिखाना, दिखना, प्रकाशित होना, नजर आना, कल्पना में आना, स्फुरना ।

भाण ( सं. ) कपाल, मस्तक, ललाट, खबर, शोच, पता, ठिकाना, चिकनी मिट्टी, हुँड, खोज ।

भाणवक्षु-श्री ( सं. ) शिफारिश, गुण प्रशंसा, अनुग्रह कारण, गुण वर्णन ।

भाणवपुं ( कि. ) पहिचान कराना, परिचय कराना, सौपना, शिफारिश करना ।

भाणपुं ( कि. ) देखना, ताकना, अवलोकन करना, निगाह डालना।

भाणियो ( कि. ) घट, घड़ा, गगरा ।

भाणुं ( कि. वि. ) अच्छा, उत्तम, ठीक, श्रेष्ठ, बहुत अच्छा ।

भिभ ( सं. ) दान, भिक्षा, भीख ।

भिभारीवेड ( सं. ) दरिद्रता, दीनता, कंगाली, रंकता, गरीबी ।

भिभ ( सं. ) समुद्री स्वेत रंगकी मछली का नाम, मच्छी का नाम विशेष । [ लीका ]

भिभभं ( सं. ) छिलका, ( मछ-

भिभभुं ( सं. ) चमड़े का कठिन टुकड़ा, मछली के ऊपर का चमकदार चमड़ी का टुकड़ा, छाला या फुन्सी के ऊपर की मरी हुई छाल का हिस्सा । छिलका, ( दाल का ) फोतरा ।

भिभारी ( सं. ) एक प्रकार का पंख वाला जीव, भौरी, भुंगी, भ्रमरी ।



बिंभारे ( सं. ) मौरा, युंग, मधुप, अलि, प्रमर, घटपद, मंवर ।

बिंभरे ( वि. ) अधिक रोमयुक्त, बहुत बालों वाला, जिस के बाल बिखरे हों, बिथुरे केश, जटिल ।

बिंभपु ( कि. ) भिगोना, ललचाना, समझकर अपनी मति के अनुसार करना ।

बिंभु ( कि. ) भीगना, तर होना

बिंभु ( कि. ) पूर्ववत् आदि करना ।

बिंभाल ( सं. ) गोकन, पत्थर फेंकने के लिये रस्सियों का बनाया हुआ । वर्तमान समय में अभिकाश खेलों पर पक्षी उड़ाने के लिये रखवाले इसे अपने पास रखते हैं, अश्म वर्षण यंत्र । भिन्दिपाल, डेलवाम गुफना, गोकणा, गोफिया, अरु विशेष ।

बिंभाल ( सं. ) एक प्रकार का शाक, मिण्डी नामक प्रसिद्ध शाक ।

बिंभी ( सं. ) एक प्रकार का वृक्ष, सन विशेष, पटुवा सन, इस की बंठलोंको कूटकर सन समान रेशे निकाले जाते हैं यह सन से अच्छा होता है ।

बिंभीभाग ( सं. ) देखो बिंभाल छीका, झोली ।

बिंभी ( सं. ) एक प्रकार का शाक

बिंभीभावे ( कि. ) गप्प मारना ।

बिंभडी ( सं. ) छोटी भीत, छोटी दीवार ।

बिंभडी ( सं. ) पूर्ववत्

बिंभपु ( कि. ) दाबना, निचोड़ना, लिपटना, जोर से आलिंगन करना ।

बिंभालन-वृत्ति ( सं. ) भीख मांगने का धन्धा, भीख से गुजर करना ।

बिंभपु ( कि. ) भीख मांगना, इनाम मांगना, पुरस्कार चाहना ।

बिंभपणी ( सं. ) नाते, रिश्तेदारोंसे द्रव्य मांगकर बनाई हुई कानकी बालो ( छोकरी के लिये )

बिंभाले ( वि. ) मिश्रक समान फायदेका ( काम ), भूखा, दरिद्री कंगाल, मिश्रककी तरह देखनेवाला ।

बिंभाल ( सं. ) भीख मांगनेवाली स्त्री, मंगती, मिश्रककी स्त्री ।

बिंभाली वे ( सं. ) मंगतापन, मिश्रकी, भिख मंगे की रीति ।

बिंभालपु ( कि. ) दबना, सकरी, जगह में आजाना, चबदा जाना ।

भिन्नु ( कि. ) देखो भिन्नु  
भिन्नु ( कि. ) मिटना, मिलना,  
सटना, लड़ना, मुठ भेद होना,  
सट जाना, आमना सामना करना  
चिपकना, साहसपूर्वक घुसना,  
आलिगन करना, फसना, बांधना  
बन्द करना, लड़ाई करना ।

भिन्नुभीन्नु ( सं. ) जनसमूह, अग-  
णित लोगोंका ठह, अधिक भीड़ ।

भिन्नुवुं ( कि. ) घबराना, उल-  
झन में डालना, निरुत्तर, करना,  
अँटस, उत्पन्न कराना, मनोमा-  
लिन्य कराना, धमकी देना, भय  
दिखाना, लिपटना ।

भिन्नुवुं ( कि. ) तंग हालतमें आना ।

भितडी-रडी ( सं. ) देखो भीन्,

भितर ( सं. ) दिल, कालजा, हृदय  
यकृत, ( कि. वि. ) अन्दर, भीतर,  
में, माँही । [ पानी डालना ।

भिन्नुवुं ( कि. ) भिगोना, तरकरना,

भिन्नुवुं ( सं. ) तरी, गीलापन,  
आर्द्रता, नमी, सदाँ, सील, ठंडाई ।

भिन्नु ( वि. ) भीगा, तर, आर्द्र, ठंडा ।

भिन्नु ( सं. ) बालककी, मुहं,  
बन्दकके धुक उड़ानेकी क्रिया ।

भिन्नु ( सं. ) मीलनी, मिन्ननी,  
मीलकी खी, किराती, म्लेच्छा ।

भिन्नु-भो ( सं. ) भिन्ना,  
एकपेदका बीज, औषधि विशेय,  
इसके रससे लिखा हुआ वक्त्रपरसे  
नहीं हटता ।

भिन्नुभो उरडीवे ( कि. ) जगह  
जगह लड़ाईका बीज रोपण करना,  
लड़ाई खड़ी करना ।

भिन्नुभो अरवे ( कि. ) तेल नि-  
कालना, भिन्ना का तेल चोपड़ना

भिन्नु ( सं. ) साथी, जोड़ीदार,  
मित्र, मित्र, गोठिया, लंगोटिया  
मित्र, बराबरी का

भीत ( सं. ) देखो भीत,

भीतने पथु डान होय छे=किसी  
को गुप्त बातकी चेतावनीके लिये  
इस वाक्यका प्रयोग होता है  
अर्थात् कोई सुन लेगा संभल कर  
बोलो । [ दोषोंकी प्रसिद्धि होना ।

भीति अह्वुं ( कि. ) किसीके गुण-  
भीति ( वि. ) सुअर जैसे ( बाल ) ।

भीन् ( सं. ) सील, नमी, तरी,  
आर्द्रता ।

भीन् ( सं. ) लोगोंका जमाव, ठह,  
जनसमूह, संघ, जमावडा, समुदाय,  
दुःख, कष्ट, आपद, संकट ।

भीन्भीन् ( सं. ) देखो भिन्नुभीन्

भीन् ( सं. ) देखो भिन्नु

भौंडी ( सं. ) देखो भौंडी।

भौंडी धाधवे ( क्रि. ) रेड मारना  
बीचमें कठनाई पैदा कर देना ।

भौन ( सं. ) भित्ति, दीवार, भबनीत,  
हरा हुआ, कंपासमान, शंकित ।

भौति ( सं. ) भय, त्रास, डर, शंका।

भौती ( सं. ) पूर्ववत्

भौती ( सं. ) दीवार के लगानेका  
खड़ा टैका ।

भौतुं ( वि. ) सीला, ठंडा, भीगा,  
आला, गीला, आर्द्र नरम, हरा ।

भौनेवाने ( क्रि. वि. ) भीगे हुए  
शरीरसे ।

भौभञ्जिवास्स ( सं. ) जेष्ठ मास  
के शुक्ल पक्षकी एकादशी, निर्जला  
एकादशी ।

भौभक्त ( सं. ) पार्वतीके रोमसे  
उत्पन्न एक गण, रुक्मिणी ।

भौभरथी ( सं. ) एक नदीका नाम,  
बहु जिसे कि ७७ वे वर्ष के सातवें  
मासकी सातवीं रात्रि जिसे  
कठिन हो ।

भौर ( सं. ) सहायता, मदद ।

भौर ( सं. ) मित्र, साथी, संगी,  
गोटिया, समवयस्क, प्रेमी, पक्षी,  
मिष्ट, व्याघ्र, स्यार, बघेरा, गीरह,  
बकरी, भौरीगनी, ( औषधि कि-

शेष ) छाया, ( वि. ) भयभील,  
डरनेवाला, भयानक ।

भौध ( सं. ) एक पहाड़ी जातिका  
नाम, म्लेच्छ जाति विशेष, अर्थात्  
जाति । [ मीलही श्री, भीकनी ।

भौधडी ( सं. ) भिक्षु, किंगती,  
भौधडीना भे' = किसी वस्तुको अ-  
र्पण कर उसकी तुच्छता प्रदर्शित  
करने के लिये यह वाक्य प्रयोग  
किया जाता है ।

भौधु ( सं. ) रिक्त, रीछ, भालु ।

भौधु ( वि. ) भयंकर, भयानक,  
भैरव, घोर, भयजनक, भयावह ।

भु ( सं. ) जल, पानी, तोय, नीर,  
सलिल, भूमि, पृथ्वी, जमीन,  
अवनि, भूवि ।

भुआं ( सं. ) पानी, जल, नीर,  
तोय, सलिल, रस ।

भुआं भगिष्ठ भवां ( क्रि. ) पानी  
भरजाना, थक जाना, हार जाना ।

भुंघ ( सं. ) भूमि, पृथ्वी, जमीन,  
भू, अवनि, मुर्वा, धरती ।

भुंघुं ( क्रि. ) भों भों करना,  
रेंकना, गधेकी बोली बहना ।

भुंभरे ( वि. ) राखके रंगके समान ।

भुंभं ( सं. ) औषधिका चूर्ण ।

भुंडी ( सं. ) चूने, रोटीका गूदा,

शुभंश (सं.) सिके हुए गेहूँ या चने।

शुभंश (सं.) पूर्ववत्

शुभंश (सं.) गर्मराख, तातीराख,  
भूबल, तप्त भस्म।

शुभंश (सं.) बिगुल, तुरम,  
तुरही, नफीरी, तूती, सहनाई,  
धतुरेके पुष्पके आकारका किसी-  
धातुका बनाहुवा फूंककर बजानेका  
बाजा। रणसिंगा, भेरी, द्वारको  
बंद करनेका लकड़ी का या लोहेका  
गज, शंख। [ पंचांग।

शुभंश अटियुं— भटजीका पत्रा

शुभंश अटियुं भणपुं (कि.) छुट्टी  
मिलना, घर बैठना, अलग होना।

शुभंशिये (सं.) बिगुल बजानेवाला  
तुरमचा, टुम्पेटर भेरी सहनाई  
इत्यादि बजाने वाला।

शुभंशी (सं.) बांस अथवा किसी  
धातुकी बनीहुई अग्नि में फूंक  
मारनेकी नलिका। छातीपर लगा-  
नेसे जिसकेद्वारा हृदयकी गति  
जानी जाती है, कानकी नली,  
बाहिरे आदमी जिसे कानमें लगा  
कर सुनते हैं। [ नलिका।

शुभंशुं (सं.) मोंगला, नली,

शुभंशुं शुभंशुं (कि.) प्रशंसा  
करना, तारीफ करना, गुणगान  
करना, दिवाला निकालना, बम  
बोलना।

शुभंशो भीक्षवी (कि.) सत्यानाश  
जाना, बंशनाश होना, विस्संतान  
होना, बंश में नाम लेवा पानी  
देवा कोई न होना। [ मंडली।

शुभंशवाडे (सं.) छोटे बच्चोंकी  
शुभंशुं (कि.) भूना, सेकना।

शुभं (वि.) देखो शुभं

शुभंशुं (कि.) शर्मिन्दा करना,  
लजित करना, क्षोभित करना।

शुभं (सं.) सुवर, सुवर, बराह,  
शकर, कोल, कोड।

शुभंशु (सं.) सुअरी, बराही,  
शकरी, वह स्त्री जिस के बहुत  
संतानें हो।

शुभंशुनी शुभंशु—एकही स्त्री के  
बहुतसे छोटे छोटे बालकोंके लिये  
इस वाक्य का प्रायःप्रयोग किया  
जाता है।

शुभंश शैशु (कि.) देवी जह-  
रीला, कपटी विपैला, ईर्ष्यालु,  
जलकुक्षड़ा।

शुभंशु (सं.) खराबी, बदी, अन-  
बन, खटपट, नाराजी, झगड़ा।

शुं०६३ ( सं. ) खराब भाषा, अपशब्द, गाली, बॉमत्स भाषा, गन्दी जवान ।

शुं०६३ ( सं. ) देखो शुं०६३

शुं०६३ ( वि. ) खराब, दुष्ट, पापी, अनीतिवान, जहरी, कपटी, बॉमत्स, बेसर्म, निर्लज्ज, असभ्य, निन्ध, भांड ।

शुं०६३ शुं०६३ ( वि. ) छटा हुआ, खराबमें खराब, अव्वल नंबरका असभ्य ।

शुं०६३ भूत नासे ( वि. वि. ) बुरे से दूर रहनाही दूर अच्छा ।

शुं०६३ ( सं. ) जड़ विशेष, मूल विशेष, ( वि. ) बेजौल, बदशकल, कुरूप ।

शुं०६३ ( सं. ) भेरी शंस विगुल आदि बाद्यका शब्द ।

शुं०६३ ( क्रि. ) नोचना, खुदेरना, मिटाना छिलना, घिसना, नष्टकरना ठीक करना । [ भूसा ।

शुं०६३ ( सं. ) छिलके, कदश, बूर,

शु ( सं. ) जल, पानी, ( बच्चेकी भाषामें ) । [ तोय, सलिल ।

शु०६३ ( सं. ) जल, पानी, नीर,

शु०६३ ( सं. ) प्रेत विधा जाननेवाला भूत इत्यादि उतारनेवाला, एक प्रकारका जीव विशेष ।

शु०६३ ( सं. ) बारीक चूर्ण, चूरा, बुछादा ।

शु०६३ ( क्रि. वि. ) ऐसा बिसकाकी चूर्ण हो गया हो, छोटे छोटे टुकड़े ।

शु०६३ ( सं. ) ( किसी वस्तुको काटने कूटने अथवा पिसनेसे हुआ ) चूर्ण चून, आटा, पिष्ट, रोटीका मूदा ।

शु०६३ ( क्रि. ) भोगना, काममें लाना, उपभोग करना ।

शु०७२ ( सं. ) खानेकी इच्छा, लुधा भूक, रुची, लोभ, इच्छा, तृष्णा, लालसा, आकांक्षा, चाह जरूरत ।

शु०७२ ( वि. ) भूला, कंगाल, क्षुधित, गरजी, लोभी, इच्छुक, तंगीकी हालतसे दुखी ।

शु०७२ आ०२३ ( वि. ) एकादशी द्वादशीको भोजनकी जैसी लालसा होती है उसी समान आतुरता-वाला तद्दशामें आया हुआ, कंगाल, दीन, गरजमन्द ।

शु०७२ आ०२३ ( सं. ) अत्यन्त आतुरता, खानेकी जल्दी इच्छा ।

शु०७२ ( सं. ) नाव इत्यादि के लिये उत्तर दिशाकी पवन, तूफान उत्तरो बायु ।

शुभ्र ( वि. ) फीका, निस्तैज,  
कांति हीन मन्द, उदास, बेचमक ।  
शुभाणु ( वि. ) देखो शुभ्र ।  
शुभ्रि ( वि. ) जो द्रुत जावे,  
फूटनेवाला, ( थोड़े घीका लड्डू )  
कमजोर ।  
शुभ्र ( सं. ) भुजा, बाहु, कंधे से  
कोहनी तक हाथका भाग, एक  
देशका नाम ।  
शुभ्रपुं ( कि. ) देखो शुभ्रपुं,  
शुभ्र ( सं. ) पश्चाद्गामिनों  
अथवा आश्रितोंकी जमात ।  
शुभ्रि ( सं. ) हलका चोरी करनेवाला  
कम कीमतकी वस्तु हरण करने  
वाला । [ फल,  
शुभ्र ( सं. ) भुष्ट, सिरा, मकईका  
शुभ्रपुं ( कि. ) मंत्र से वशमें  
करना, वशिकरण करना, मंत्रित  
करना, जादू करना, ठगना, छलना ।  
शुभ्र ( सं. ) छोटे छोटे बालक,  
बच्चे ।  
शुभ्र ( सं. ) भूतों के रहने  
की जगह, भूतोंका डेरा जिन्दोंका  
निवासस्थान, गलच्छस्थान ।  
शुभ्र ( सं. ) कुगति प्राप्त जीव,  
यौनिविशेष, भूत, पिशाच आदि ।  
शुभ्र ( सं. ) चिकनी मिट्टी, मुळ  
तानी मिट्टी, शिबोंके माथे में डाल  
कर बोलनेकी मिट्टी ।

शुभ्र ( सं. ) भूतोंकी जमात,  
पिशाचोंकी टोली, राक्षसोंका हुंज ।  
शुभ्र ( सं. ) देखो भूभ्र ।  
शुभ्र ( सं. ) तूवर में से निकली  
हुई हरी सूखी तूवर, पीपल वृक्ष  
का फल ।  
शुभ्र ( सं. ) देखो भूभ्र ।  
शुभ्रपुं ( कि. ) देखो शुभ्रपुं ।  
शुभ्रपुं-शुभ्रपुं ( कि. ) चमकना,  
चौकना, मंत्रित करना, ठगना,  
छलना ।  
शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र ।  
शुभ्र ( सं. ) दक्षिणा, दान,  
दक्षिणा विशेष, भूरसी, बख्शीश,  
पान सुपारी, रिशवत ।  
शुभ्र ( सं. ) भूरा रंग-  
वाला, वादामी रंगका, प्राडन ।  
शुभ्र ( सं. ) एक प्रकार की  
मिट्टी, पांडु मिट्टी, एक प्रकार की  
मिट्टी, जिससे ग्रामीण लोग अपने  
घरोंकी दिवारें सफेद करते हैं ।  
शुभ्र ( सं. ) भूरा, बवामी,  
मट मैल ।  
शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र ।  
शुभ्र ( सं. ) देखो शुभ्र ।  
शुभ्र भाषा ( सं. ) भूराकटू,  
सफेद, कटू, पेठा, फलविशेष ।  
शुभ्र भाषा ( सं. ) पूर्ववत् ।

शुद्धि ( वि. ) बारम्बार भूलने  
 बाल, विसर जानेवाला, भूलना ।  
 शुद्धि ( सं. ) गलती, भूल, चूक  
 अपराध, दोष, पाप, विस्मृति, भुट्टा ।  
 शुद्ध धाम ( सं. ) मुलाकर मारना,  
 छळ धोका, बहकाना, कपट ।  
 शुद्धशुद्धिभूषी ( सं. ) गली कूँचे  
 वाला मार्ग, आड़ा देठा मार्ग,  
 अटपटा काम, चौरासीका फेर ।  
 झंझट ।  
 शुद्धशुद्धिभूष ( वि. ) अटपटा,  
 अतिगहन, आड़ा देठा मार्गवाला ।  
 शुद्धवधु-धु ( सं. ) देखो शुद्धधाम  
 शुद्ध ( कि. ) भूलना, विस्मरण  
 होना, भूल जाना, चूकना, बिस-  
 रना, याद न रहना, गफल होना,  
 ओकर खाना ।  
 शुद्धवधु-धाम ( कि. ) भूलना ।  
 शुद्धावे ( सं. ) भुल, बो, फुल्लाना  
 बहकाना, धोका । [ भटकना ।  
 शुद्ध ५३ ( कि. ) भूल जाना,  
 शुद्ध ( सं. ) जगत, विश्व, लोक,  
 ये १४ होते हैं ( १ ) तल ( २ )  
 अतल ( ३ ) वितल, ( ४ )  
 सुतल ( ५ ) तलतल ( ६ ) रसा  
 तल ( ७ ) पाताळ ( ८ ) भूलोक,  
 ( ९ ) भुवर्लोक, ( १० ) स्वर्ग

लोक, ( ११ ) महर्लोक, ( १२ )  
 जनलोक, ( १३ ) तपलोक ( १४ )  
 और सत्यलोक ।

शुवे ( सं. ) देखो शुभे ।

शुसे ( वि. ) बुरा, खराब ।

शुसके ( सं. ) कूद, छलांग, देका,  
 फलांग, फुदकी ।

शुसपुं-सेपुं ( कि. ) काट देना,  
 मिटा देना, छेक देना, रद्द कर  
 देना, निकाळ डालना, रबर से  
 घिसना, घसीट डालना, रगड़  
 देना ( लिखना )

शुसार ( सं. ) अज, अनाज, गन्ना ।

शुसारी ( सं. ) अज बेचनेवाला ।

शुसरेपुं ( कि. ) पेशाब करना, मू-  
 तना, ( छोटे बच्चोंको लिये प्रयोग )

शुपीता नपुं ( कि. ) मरना, देह  
 त्याग करना, विना अर्ध सिद्धि  
 लौटना ।

शुपीतुं ३२पुं ( कि. ) दुरन्त के  
 पैदा हुए बालकको पानीमें डुबो  
 कर मार देना । दूधमें अफीम  
 मिलाकर पिळा कर मारना ।

शुद्ध ( वि. ) देखो शुद्ध

शुद्ध ( सं. ) भूडोल, भुँडोल,  
 भूचाळ, घराणिकम्प, जलजला ।

शुद्धी ( सं. ) बहुत बारीक चूर्ण,  
 चूर्ण, भूसा, चूरी पाववर ।

भूके। ( सं. ) पूर्ववत्, छोटे छोटे टुकड़े । पिष्ट, चूरा, चून ।

भूभभरे। ( सं. ) मुखमरा, मुकट वृक्षित भूख से मृत्यु समान कष्ट पाने वाला ।

भूभ आ२पी ( कि. ) चिर कालकी इच्छा पूर्ण होना, मनोरथ सिद्ध होना । [ नरिस, फल राहत वृक्ष ।

भूभ२ ( वि. ) ऊजड़, रुखा, रुखा,

भूभुं-भु ( वि. ) भूखा, जिसे भूख लगी हो, क्षुधार्त, क्षुधातुर ।

भूभ्ये। भ०भाणी ( सं. ) आधा भूखा रहनेवाला पुरुष, तंग हालत मनुष्य । [ क्षुधातुर होना, भूखे होना ।

भूभ आ२पी ( कि. ) भूख लगना भूहुं ( वि. ) लजित, शर्मन्दा ।

भूत ( सं. ) तत्त्व विशेष, काल विशेष, अतीतकाल, योनिविशेष, पिशाच, प्रेत, बैताल, असुर, सैतान राक्षस, शरीर, देह, भयंकर विचित्र मनुष्य ।

भूत ( वि. ) बीता हुआ, गुजरा हुआ, जो हो चुका हो, गुजरा हुआ, व्यतीत ।

भूतकाण ( सं. ) अतीतकाल, गुजरा हुआ जमाना, गत समय ।

भूत अभवां ( कि. ) स्वार्थ सिद्धि के पीछे पीछ फिरना ।

भूतभरावुं ( कि. ) पागल, होना, चित्त विभ्रम होना । [ भूमण्डल ।

भूतण ( सं. ) पृथ्वीतल, धरती,

भूतापण ( सं. ) भूतोंका झुंड, भूत टोली ।

भूति ( सं. ) अरितत्व, जन्म, उत्पत्ति उद्भव, पोशाक, कल्याण, उद्दित, विजय, सफलता, फतहमन्दी, यश, सिद्धि, धन, मालमत्ता, प्रभुता, बडप्पन, शोभा, गौरव, अमानुषिक-बल, दैवीबल, ऐश्वर्य शिवभस्म, जाति, औषधि विशेष ।

भूप ( सं. ) राजा, बादशाह, नृप, नरपति, नरपाल, महिपाल, एक, प्रकारका राग ।

भूप ठस्याथु ( सं. ) कल्याण राग का एक भेद विशेष ।

भूभार ( सं. ) पृथ्वी के ऊपरका बोझा, पापकर्म, जमीनके ऊपरका वजन ।

भूभा। ( सं. ) जमीनकी छाया, भूछाया ।

भूमिका। ( सं. ) आभास, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, वेशान्तर, परिग्रह, अन्यरूप धारण, कथा मुख, दीक्षाचा, जमीन, जो जगह नाट्यशाला, रंगभूमि,

भू२ ( सं. ) देवो भु२सी ( वि. ) प्रचुर, बड़े, अधिक, ढेर, बहुत ।



भूरयना सान्न ( सं. ) देखो,  
भूरतरविधा ।

भूरि ( वि. ) देखो भूर ।

भूरं ( वि. ) भूरा, एक प्रकारका  
रंग, लाल, काला और पालि रंगका  
मिश्रण, पिंगलवर्ण, कपिल, कपिश ।

भूरे ( सं. ) बाल, रोम देश ।

भूरेभट्टक ( वि. ) सफेदसक, बहुत  
सफेद ।

भूल ( सं. ) चूक, विस्मृति, अज्ञानसे  
अपराध, त्रुटि, गफलत, चूक ।

भूलयूक ( सं. ) गळती, अपराध, दोष  
भूरतरविधा ( सं. ) पृथ्वीरचना  
शास्त्र, भूगोलविद्या, जिआग्रफी ।

भूसष्टिविधा ( सं. ) पूर्ववत् ।

भूंय ( सं. ) त्रमर, अलि, भौरा,  
षट्पद ।

भृष ( सं. ) आँखकी भौह, पलक ।

भे'डडे ( सं. ) बच्चा या बच्चेकी  
तरह खूब चिल्लाकर रोना ।

भे'पु' ( कि. ) चिल्लाना रोना ।

भे'यो ( सं. ) कुचलन, पोचा ।

भे'यो छराडे ( कि. ) कुचल  
ढालना, मटिया मेट कर ढालना ।

रौंदना । [ विशेष ।

भे'स ( सं. ) भैंस, महिषो, पशु-

भे'सर ( सं. ) पाड़ा, सोरा, महिष ।

भे'सहो ( सं. ) गाड़ी चलनेसे पड़ी  
हुई गडारके बीचकी जमीन ।

भे'सासर ( सं. ) मयंकर बढसूरत  
पुरुष, मोटा काला बराबना मनुष्य ।

भे'हुं ( सं. ) भैंसका कच्चा बमड़ा ।

भे ( सं. ) मय, बर, खौफ, खतरा ।

भे'क ( सं. ) दातुर, मण्णूक, मेंढक,

बेंग, जन्तु विशेष । [ साधू ।

भे'प ( सं. ) वेश, स्वांग, कृतमवेष,

भे'प भे'यो ( कि. ) साधु होजाना ।

भे'पड ( सं. ) भिड़ीका बड़ा डेला,

डेला, लै'दा, करारा, ढाकू, जमीन ।

भे'पडापुं ( कि. ) मिलना, समापन

करना, लड़ाई करना, गह्दे'भे

गिरना । [ मिलान ।

भे'ग ( सं. ) भेल, मेळ, मिश्रण,

भे'गधारी ( सं. ) साधु, स्वांगी ।

भे'थुं ( कि. वि. ) इकट्ठा, एकत्रित,

साथ, मिला हुवा, मिश्रित सम्मि-

लित । [ साथ साथ ।

भे'भा भे'थुं ( वि. ) साथ लगा हुवा,

भे'थुं छरथुं ( कि. ) मिलाना,

एकत्रित करना, इकट्ठा करना ।

भे'थु' व'थुं ( कि. ) मिलना, इकट्ठा

होना । [ आबर्थाग्वित, बसभीत ।

भे'थ'क ( वि. ) बक्ति, बरा हुवा,

भे'यो ( सं. ) ओर, शाकि, साफत ।

बेज ( सं. ) सर्दी, ठंड, आर्द्रता, वायु । [ सीला, भीगा, आर्द्र, सर्द ।  
 बेजवाणुं ( वि. ) गीला, ओढ़ा,  
 बेजुं ( सं. ) मगज़, दीमाग, मस्तिष्क, ज्ञानशक्ति, बुद्धि, अहं ।  
 बेजुं शरीर जलुं ( कि. ) पागल होना । [ अहं है ।  
 बेजुं देहाखे छे ( कि. ) बुद्ध है,  
 बेजुनो जलुं जेहे ( कि. ) चित्ता-  
 रहित, बेफिक । [ घमण्डी होना ।  
 बेजुनो अहेरअशवे ( कि. )  
 बेजुं असपुं ( कि. ) पागल होना,  
 बुद्धि जाना ।  
 बेजुं भाष जलुं ( कि. ) दुःख  
 देना, कष्ट पहुंचाना, सिर खाजाना ।  
 बेजुं देहाखे होजुं ( कि. ) खबर-  
 दार होना, अहं टिकाने होना ।  
 बेजुं शरीर जलुं ( कि. ) दीवाना  
 होना, पागल हो जाना, अविवेकी  
 होना ।  
 बेजभेदा-ट ( सं. ) हृदयालिंगन ।  
 बेजुं ( कि. ) मिलना, मुलाकात  
 करना, आलिंगन करना, भेट देना,  
 अर्पण करना ।  
 बेजुं-वजुं ( कि. ) मिलाना,  
 मेल कराना, मिलाप कराना ।  
 बेजिये ( सं. ) भेट करनेवाला,  
 मंदिरका पुजारी ।

बेटी ( सं. ) आलिंगन, भेट,  
 मुलाकात ।  
 बेड ( सं. ) बैठा, मेघ, लड़ते समय  
 कपड़े न उढ़ें इस लिये कन्धे पर  
 लपेटनेका एक वस्त्र विशेष ।  
 बेडिये ( सं. ) हिलजंतु विशेष,  
 हुंकार, चरगढ़ा, भेड़िया ।  
 बेधुं ( सं. ) धी गरम करनेका  
 मिश्रीका बर्तन जिसका मुँह चौड़ा  
 होता है ।  
 बेद ( सं. ) भिन्नता, गुप्तकी बात,  
 पृथक, द्वैध विशेष, विदारण, विवे-  
 चन, विच्छेद, छुपी बात, विवेक,  
 चार गुणोंमेंका एक ( साम, दाम,  
 दंड, भेद ) तफावत, फरक,  
 अन्तर, जुदाई, जाति, प्रकार,  
 वर्ग, रीति, तरह, मुख्य, अम,  
 मर्म, कपट, छठ ।  
 बेद खेवे ( कि. ) गुप्त बातको  
 तलाश करना, मनकी पूछ लेना ।  
 बेद देइवे ( कि. ) छुपी बात प्रकट  
 करना, झांडा फाड़ करना, फेक  
 खोलना ।  
 बेद ( वि. ) विदारक, विरेचक,  
 फोड़नेवाला, छेदनेवाला, तस्त्रि,  
 पैना ।  
 बेदुं ( कि. ) छेदना, फोड़ना,  
 बारपार छेद करना, वैधन, अंदर  
 छुसना ।

भेद्वि ( सं. ) जासूस, गुप्तचर,  
भेद, जानकार, भेद रखनेवाला ।  
भेदुं ( वि. ) गुप्त रहस्यका ज्ञाता,  
जासूस, साथी, जानकार, मर्मज्ञ ।  
भेद ( वि. ) भाज्य, विभाज्य,  
भाग होनेलायक, जो बँधी जा सके ।  
भेद-२४ ( सं. ) गरम राख,  
भूमल ।  
भे२ ( सं. ) देखो बेरी ।  
भे२व ( सं. ) राग विशेष, ( जो  
प्रातःकाल गाया जाता है ), महा-  
देवजीका भयंकर रूप, देवविशेष  
भैरव, भयङ्कर, भीषण, कराल,  
शिवजीके गणोंका स्वामां ।  
भे२वभव भावे ( कि. ) दुर्दशा  
प्रस्त होना, अतिशय दुःखपाना ।  
भे२वी ( सं. ) भैरव रागकी पाँच  
स्त्रियों मेंसे एक, रागनी, अव-  
धूतिनी ।  
भे२वपुं ( कि. ) लगाना, जड़ना  
चस्पा करना, चिपकाना, लपेटना,  
ऐठना, मरोड़ना, हिलमाना, उल-  
झाना, बल लपेटकर लटकता  
हुवा छोड़ देना ।  
भे२वपुं ( कि. ) लगे रहना, संगी  
में आना, मुसीबतमें फँसना ।  
भे३ ( सं. ) देखो बी३ ।

भेद्वि ( सं. ) बिगाड़, नुकसान,  
हानि ।  
भेद्विपुं ( कि. ) नुकसान करना,  
बिगाड़ करना, उज्जड़ना, बह  
करना ।  
भेद्विपुं ( कि. ) पूर्ववत् ।  
भे२ ( सं. ) भेद, मर्म, भीतरी बात ।  
भेसपतवार ( सं. ) शुक्रवार,  
बृहस्पति वार ।  
भेण ( सं. ) मेळ, मिश्रण, संयोग,  
पके हुए खेतमें ढोरोँको हाक कर  
उसे चारा देना, लूट । [ मिश्रण ।  
भेणवधुी ( सं. ) मिळान, नेळ,  
भेणवपुं ( कि. ) मिळाना, एकत्रित,  
करना, इकट्ठा करना, शामिल  
करना ।  
भेणपुं ( कि. ) साथ रखना, पूर्ववत् ।  
भेणसेण ( सं. ) मेळ, मिश्रण, संयोग ।  
भेण ( कि. ) साथ, सहित, संगमें ।  
भेणपुं ( कि. ) मिळना, संम्बध  
करना ।  
भेणुं ( वि. ) साथी, मुलाकाती,  
सगी, ( कि. वि. ) साथ संगमें ।  
भेणुं ३२पुं ( कि. ) एकत्रित करना  
इकट्ठा करना, संग्रह करना, जमा  
करना ।  
भेणुं ( वि. ) एकत्रित, संग्रहीत ।  
भे३-३ ( सं. ) देखो भे३  
और भे३ ।

लैङ्गु ( कि ) देखो अरुङ्गु ।

भो ( सं. ) मंत्री, शस्त्र आदिका शब्द विशेष, भूं भूं शब्द । भूमि जमीन ।

भो डोडी ( सं. ) जमीन में गड़ा करके और उसमें बारूद भरके उसे चलाते हैं ।

भोय ( सं. ) जमीन, पृथ्वी, धरती माल, दरद या ज़ण के ठीक हाने पर आती हुई नई खाल ।

भोय भाववी ( कि ) नई खाल आना, धाव पूरना, दर्द रुकना ।

भोय भ मवी ( कि. ) दर्दसे खाल अधिक दर्द करना ।

भोय कुडाणी भमवी ( कि. ) मरण स्थान निर्माण करना, कहते हैं कि जहाँ भोय कुडाणी लिखी होगी वही मृत्यु होगी ।

भोय भोतरीवी ( कि. ) लज्जित होना, शर्मिदा होना, नीचा देखना ।

भोय न'भावुं ( कि. ) भूखके मारे मर जाना ।

भोय नाभ्मा ( सं. ) बियां क्रोधमें बालकों को कहा करती हैं ।

भोय पर पजे न भूङ्गुं ( कि. ) गर्व में उन्मत्त होना, बहुत ही घमण्डी होना ।

भोय भराभर करुं ( कि. ) जमीं दोस्त करना, मिष्टीमें मिश्रणा, नष्ट करना, मारते मारते जमीनमें लिटा देना ।

भोय भरवी ( कि. ) भिन्न-वक्तृ खाना, घरमधके खाना ।

भोय भारेवध पडवी ( कि ) भय और चकराहट के कारण भागना कठिन हो जाना ।

भोय भेणुं भेथुं करुं ( कि. ) जमीन के बराबर करना ।

भोय सुधवी ( कि. ) पृथ्वीपर सोने की तय्यारी होना, अन्तसमय का आना ।

भोयभां उभुं ( कि. ) छोटी उन्न का मनुष्य हो उसकी चालाकी देखकर यह कहावत कही जाती है ।

भोयभां पेसतो नय छे ( कि. ) ठिगना होता जाता है, धामन स्वरूप है ।

भोयभां थुणां छे ( कि. ) कपटी है, दूषित हृदयका है, दिलभे कुछ औरही है ।

भोयभांभी भथुडे निठणवे ( कि. ) अघट घटना होना, अचानक अनिश्चित युद्धाग्नि मद्धक उठना ।

भोगराभां राभपुं ( कि. ) गुत  
रखना ।

भोगे भेपुं } ( कि. ) देखो भोगि  
भोगे उतारपुं } नाभपुं ।

भोगे पडपुं ( कि. ) मृत्युके समीप  
होना, मृत्युशय्यापर होना । मृत्यु  
दशाने होना ।

भांये उतारपुं ( कि. ) मृत्यु होती  
देखकर खाट अथवा पलंग परसे  
जमीनपर उतारलेना । [चंपा वृक्ष ।

भोग्य य'पे। ( सं. ) एक जातिका  
भोग्य तण्णुं ( सं. ) घरके बिलकुल  
नाचैका भाग ।

भोग्य रसे। ( सं. ) गायका मूत्र  
अथवा पानी जमीनपर फैलाकर  
उसे समेटते हैं और इसे गरम  
करके सृजनपर लेप करते हैं ।

भोग्य शिंअथुी ( सं. ) एक आषधी  
विशेष ।

भोग्य३ ( सं. ) देखो भांय३ ।

भोग्यस्त्रीभ ( सं. ) एक प्रकारका  
वनस्पति । [ बदाम ।

भोग्यभभ ( सं. ) मुंगफली, चीनिया  
भोग्यतरव३ ( सं. ) वनस्पति विशेष ।

भोग्यकेणुं ( सं. ) बिदारी कंद,  
औषधि विशेष ।

भोग्यपातरी ( सं. ) एक प्रकारकी वन-  
स्पति जिसकी तरकारी बनती है ।

भोग्ये ( सं. ) देखो भोग्ये। खाता  
भोग्येभे। ( सं. ) देखो, अभरी  
अभरी ।

भोग्यपु ( कि. ) देखो भुं'सपुं ।

भो ( सं. ) भय, डर, खौफ ।

भोर्ध ( सं. ) एक जाति विशेष जो  
पालखी इत्यादि ले जाते हैं,  
मछली इत्यादि मारकर बेचते हैं ।  
कहार ।

भो३ ( सं. ) छेद छिद्र, सूरान्न, बेज ।

भो३पुं ( कि. ) तेज तीखी पैनी  
बीज अंदर घुसेडना, जोरसे  
घुसाना ।

भो३३ ( सं. ) खोखलापन, रिफता ।

भोग ( सं. ) उपभोग दुःखसुखका  
अनुभव, स्त्री आदिका उपभोग,  
पाळन, भोजन, तिरस्कार, अप-  
मान, नैवेद्य, बलिदान ।

भोगधरावपे। ( कि. ) ठाकुरजी या  
देवताको नैवेद्य लगाना ।

भोगभरीवणवा ( कि. ) दैव प्रतिकूल  
होना, दुर्भाग्य होना ।

भोगभ भणवा ( कि. ) खराबी होना  
बड़ीमारी हानिहोना, दुर्दैव होना ।

भ

भ=पञ्चीसवाँ व्यंजन अक्षर, गुजराती वर्णमालाका ३६ वाँ अक्षर, ( सं. ) शिव, ब्रह्मा, चन्द्र, काल, समय, जहर, विष, ( कि. वि. ) नहीं, ना ।

भई ( वि. ) नरम, नम, कोमल, मुक्यायम, मधुर, दान, शान्त, सन्तोषी, गंभीर, गरीब, कगल, दरिद्र, दयालु ।

भई भुं ( कि. ) दबना, नम होना, दान होना, गरीब होना ।

भइने हाथी ( सं. ) एक प्रकारका झुण्ड हीन हाथी, जन्तुविशेष, गेंडा हाथी ।

भइ ( सं. ) ठगी, जाल, फरेब, छलमेद, माया, बकध्यान । मगर, प्राइ, एक भयानक जलजन्तु, मच्छ, राशि विशेष, कुबेरका भंडारी ।

भइकेतन ( सं. ) देखो भइपय ।

भइभाज ( वि. ) चालाक, दगा-खोर, कपटी, धूर्त, प्रपंची ।

भइरवा ( सं. ) गजेके टुकड़े (बहु वचन) ।

भइरकुंडल ( सं. ) मछलीके आकारका बना हुआ कानोंका भूषण विशेष, मकराकृत कुण्डल ।

भइरसंभय-हांति ( सं. ) बहदिन जिसदिन कि सूर्य मकर राशिपर आते हैं । उत्तरायण । संक्रांति विशेष । [जलनिधि, अर्णव, सागर ]

भइराइर ( सं. ) समुद्र, उदाधि,

भइराइर ( वि. ) मगरकी शकलका ।

भइलातुं ( कि. ) मुस्कराना, मन्दमन्द हसना, मुदित होना, प्रसन्न होना ।

भइसइ ( सं. ) मतलब, भावार्थ, हेतु, धारणा, उपदेशविचार, अर्थ, आशय, इच्छा, इरादा ।

भइसुइ ( कि. वि. ) सास, मुख्य, समस्त वृत्तकर, इच्छानुसार ।

भइई ( सं. ) अन्नविशेष, मक्का ।

भइत ( सं. ) खुरकी रास्तेसे शहरमें आये हुए माल पर कर, एक प्रकारका टेक्स ।

भइ ( सं. ) देखो भइई ।

भइडी ( सं. ) चींटी, कीड़ी मकोड़ी, मकोड़ेका क्रीलिंगशब्द ।

भइडा ( सं. ) एक बड़ी चींटी, चींटा, मकोड़ा, कीड़ीकी आकृतिका बड़ा जंतु ।

भञ्ज ( वि. ) दड, पुस्तक, मन्त्र-  
वृत्त, पञ्चा, डीठ, मिर्जर, धैर्य-  
वान, स्थिर ।

भञ्ज ( सं. ) देखो भञ्ज ।

भञ्ज ( सं. ) पाठशाळा, विद्या-  
मंदिर, गुदगुह, मदरसा, स्कूल,  
कॉलेज ।

भञ्ज ( कि. वि. ) बाड़ा, विस्तृत,  
विस्तीर्ण, फैलाहुवा, विशाल, बड़ा ।

भञ्ज ( सं. ) ठेकेदार, कंटेक्टर ।

भञ्ज ( सं. ) कांटेक्ट, ठेका,  
इजारा, प्रतिज्ञापत्र, करारनामा ।

भञ्ज-भञ्ज ( सं. ) एक प्रकारका  
गुदगुहा कृपेदार रेशमी वस्त्र ।

भञ्ज ( वि. ) मन्त्रमलका ।

भञ्ज ( वि. ) कृपण, आति-  
शय कंजूस, बख्ख ।

भञ्ज ( सं. ) कपट, बहाना,  
छठ, धोका, फरेब, दगा ।

भञ्ज ( सं. ) एक प्रकारकी मटर,  
दाल, मूंगविशेष, मार्ग, राह,  
( उप० ) तरफ ।

भञ्ज भञ्ज ( सं. ) चूचुड़ा, गपड़  
सपड़, पसड़ पसड़ ।

भञ्ज ( सं. ) कण्डे  
लकड़ी, लकड़ी, बलीटा, ईषन ।

भञ्ज ( सं. ) खोपड़ी, भेजा, म-  
स्तिष्क, गुहा, समझ, दीमाग,  
एक प्रकारकी मिठाई ।

भञ्ज ( कि. ) पागल  
होना, दीवाना होना, सुधि भूठ-  
जाना, दीमाग बिगड़ जाना, चित्त  
स्थिर न रहना ।

भञ्ज ( कि. ) बहुतही  
व्याकुलता होना, बेचैनी होना,  
सिर दुखना ।

भञ्ज ( कि. ) जुद्धि  
ठिकाने न रहना, अल काम नही  
देना । [ अल आना, सूझ पड़ना ।

भञ्ज ( कि. ) आरक्ष्यु उपाधवां ( कि. )

भञ्ज ( सं. ) मिजाजी,  
मगरूर, गर्विष्ठ, हठी, जिद्दी ।

भञ्ज ( कि. ) समझमें  
आना तरंग उठना, लक्ष्यमें आना ।

भञ्ज ( कि. ) पूर्ववत्  
समझ जाना, ध्यानमें समाजाना ।

भञ्ज ( कि. ) भवन  
घमंडी होना, खिरजोरी करना,  
जिद्द करना, हठ करना, तकरार  
करना ।

भञ्ज ( कि. ) भूलना,  
विस्मृत होना, याद न रहना ।

भञ्ज ( सं. ) संज्ञाफ, पहिरनेके  
बक्कोके बखिया, मोट ।

- भगडे ( सं. ) गुलबांस नामक वृ-  
क्ष का बीज, बीजविशेष ।
- भगतर् ( सं. ) एक प्रकारका पांख-  
वाला कीट, अच्छर, वांस, मच्छर ।
- भगवण ( सं. ) मूंगके आटे के लड्डु ।  
सुहर, डम्बल, कसरत के लिये  
घुमाने केवास्ते दो लकड़ी के सोटे ।
- भगवणधुं ( सं. ) पूर्ववत् ।
- भगधु ( सं. ) छंद शास्त्र में वह-  
गुण जिसमें तनपुरु होते हैं
- भगदुर ( सं. ) शक्ति, बल, ताकत,  
साहस, हिम्मत, सामर्थ्य, कूबत,  
जोर, छाती, शौर्य, मर्दुमी, परा-  
क्रम, बहादुरी, जमामदी ।
- भगन ( वि. ) राजी, खुशी, सज,  
प्रसुद्धित, हर्षित, प्रफुल्लित, मम ।
- भगनाशु ( सं. ) देखा भगसार  
भाइयू, यह शब्द छोटे छोटे बा-  
लकोंको गाळी के रूप के प्रामीण  
लोग प्रायः कहते हैं ।
- भगणी ( सं. ) मूंगफली, चीनिया  
बदाम, एक प्रकारका फल जो  
भूमि के अन्दर से निकलता है ।
- भगभग ( वि. ) देखो भगभग
- भगभग ( सं. ) ग्राह, मकर,  
मगर, एक भयानक जलजीव  
विशेष ।
- भ ( वि. ) इष्ट, पुष्ट, बलिष्ठ,  
री, दीर्घ, लघु, विस्तृत,  
ार, बेफिक्र ।
- भ ( वि. ) अभिमानी,  
वर्द्ध, मस्त, उन्मत्त ।
- भ ( सं. ) अभिमान, गर्व,  
मद, दीमाग, घमण्ड ।
- भ ( सं. ) मंगवाना, बुलाना,  
पासलाने कहना ।
- भगिधुं ( सं. ) एक प्रकार का  
स्त्रियों के रंगका  
अच्छा बरदार, मन्धमय ।
- भगभग ( सं. ) पुगन्धित, खश-  
भगभग ( सं. ) पुगना, सुगन्ध  
मयहोना, खुशबूना ।
- भगभग ( वि. ) सुगन्ध,  
सौरभ, सुगंध, सुब
- भगानी ( सं. ) गन्धक में  
अन्नबोने की किया, इनबरी  
फरवरी में )
- भगडी ( सं. ) देखो भग ।
- भगडी ( सं. ) देखो भगडी
- भगधु ( सं. ) भिक्षुक, यक,  
मंगता । [ भूध ।
- भगरी ( सं. ) पहाड़, पर्वत, शै-  
भगरीधुं ( सं. ) शरीर, शरीरवादा ।



भंभण ( सं. ) कल्याण, शुभ, अच्छा, श्रेष्ठ, हित, अभिप्रेत, अर्थसिद्धि, क्षेम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीय ग्रह, वार विशेष ( वि. ) शुभप्रद, प्रशस्त ।

भंभणसूत्र ( सं. ) वैवाहिकसूत्र ।

भंभणकरो-ईश्वर माला करे ।

भंभण ( सं. ) मंदिरमें प्रातःकाल के समय पवित्रले दर्शन, हल्दी, दूब, घृत । [ प्रकारकी भांवरें ।

भंभणदेश ( सं. ) विवाहमें एक

भंभापुं ( कि. ) देखो भंभापुं ।

भंभाण ( सं. ) पत्थर रखकर काम धातक बनाया हुआ चूल्हा ।

भंभणि ( वि. ) गुणकारक, शुभ ।

भंभुस ( सं. ) न्योळ, नकुळ, जेवला । [ अपसरण ।

भंभु ( सं. ) पश्चाद्गमन, परावृत्ति

भंभु ( सं. ) पलंग, खाट, तख्त, पीढी ।

भंभुभु ( सं. ) वहजेवर जिसे जियां कानके अगले भागमें पहि-  
नती है ।

भंभु ( सं. ) देखो भंभु

भंभु ( सं. ) लचक, जियों के चलने के समय की अंगनगी ।

भंभु ( सं. ) प्रातिपात, तिर-  
स्कार, झटका । [ सुखमोचना ।

भंभु ( कि. ) मुंह फेटना,

भंभु ( कि. ) दबाकर टेढ़ा  
तिरछा करडालना ।

भंभु ( कि. ) बिड़वा,  
शिक्षा, छेड़ करना, निदाना ।

भंभु ( कि. ) समाना, कार्य में  
संलग्न होना, घूमना, युद्ध में किसी  
के सामने डटे रहना, जमाव होना,  
भीड़ होना, मस्ती में आना ।

भंभु ( कि. ) मचाना, हिलाना ।

भंभु ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

भंभु ( सं. ) मछली, मच्छी, मीन,  
आकाशका, इन्द्र धनुष, विष्णु के  
दस अवतारों में से प्रथम-वधा-  
“ मत्स्य कूर्मोवाराहश्च नरसिंहोऽथ  
वामनः रामो रामश्च कृष्णश्च बौद्ध-  
कल्कीचतुर्दशः ” ।

भंभु ( सं. ) मशक, मस, मांछड़,  
डांस, मत्सर, अनदेखाई, उन्माद,  
आवेश, क्रोध, अहंकार, गर्व, द्वेष,  
डाह ।

भंभु ( सं. ) मोजन के पश्चात्  
मुई घोने की क्रिया, कुली, चुल ।

भंभु ( सं. ) मच्छर या उसी प्रका-  
रका कोई दूसरा जन्तु ।

भञ्जवे।-छुओ। ( सं. ) छोटी नौका,  
डोंगी, छोटीसां नाव डोंगा ।  
भञ्जवे ( सं. ) चूहा, मूषक, ऊँदर ।  
भञ्ज ( सं. ) इच्छा, चाह, खादिस,  
इरादा, मनशा ।  
भञ्ज ( सं. ) देखो भुञ्ज  
भञ्ज ( सं. ) देखो भञ्ज  
भञ्ज ( सं. ) विषय, मतलब,  
बाबत, जिकर, उपरोक्त, हकीकत,  
हवाल, वर्णन ।  
भञ्जनु- ( वि. ) हाँलदिल, दीवाना,  
पागल, खफ्त, मूर्ख ।  
भञ्जभक्षे ( कि. वि. ) सब, समस्त,  
संपूर्ण, तमाम, कुल एकदम ।  
भञ्जु-भुं ( सं. ) सहयोग, पांती,  
हिस्सेदारी ।  
भञ्जमुदा ( सं. ) परगनेका हि-  
साब, रखनेवालेका ओहदा, हि-  
साब किताब देखनेवाला आबीटर,  
पांतीदार, हिस्सेदार, सहयोगी ।  
भञ्जमुदारी ( सं. ) आबीटरका  
कामकाज करनेका कार्यालय,  
हिस्सेदारी । [ मुजरे, पेटे ।  
भञ्जरे ( कि. वि. ) मार्गतमें बसली,  
भञ्ज ( सर्व ) गुप्तमें, मेरेमें ।  
भञ्जरे आषुं ( कि. ) मुजरे देना,  
हिसाबमें जमा करा देना ।

भञ्जरे सेपुं ( कि. ) हिसाबमें जो  
कुछ खपनेवा या सो लेना ।  
भञ्जरे ( सं. ) देखो भुञ्जरे ।  
भञ्ज ( सं. ) मैजिल, कूब, सु-  
काम, पक्व, अमुकस्थान, दो  
स्थानोंके बाँवका फासला, मुसा-  
फिरी, खेप, पंध, विश्रामस्थान,  
उतारा ।  
भञ्जस ( सं. ) सतह, सभा, दर-  
बार, मीटिंग, एक स्थानमें बहुत  
मनुष्योंका एकत्र का होना ।  
भञ्जले ( सं. ) मैजिल, मैडी, घरके  
ऊपरका घर ।  
भञ्ज ( सं. ) देखो भुञ्ज । [ चूळ ।  
भञ्जभक्षे ( सं. ) कुल, जावा, कच्चा,  
भञ्जनुं ( कि. वि. ) देखो भुञ्जनुं देखो ।  
भञ्जल ( सं. ) शक्ति, ताकत, बल,  
पुरुषार्थ, हिम्मत, साहस, छाती,  
योग्यता, कूबत, शौर्य ।  
भञ्जिआ-भुञ्जिआ ( सं. ) पांती-  
वाला, हिस्सेदारी, सहयोगिता  
( वि. ) संयुक्त, एकत्र, सम्मिलित ।  
भञ्जभक्षे ( सं. ) देखो भुञ्जभक्षे ।  
भञ्ज ( सं. ) इस नामकी एक  
बनस्पति, इसकी जड़ इत्यादि से  
लाल रंग बनाते हैं । मंजिष्ठ ।  
भञ्जिआ ( वि. ) लाल रंगका,  
रक्त वर्णका, राता रंगका ।

भक्षु ( सं. ) मजदूर, भारवाहक, हमाल, बेलदार, बेगारी, रोज़ाना पैसे लेकर काम करनेवाला ।

भक्षु-रेषु ( सं. ) मजदूरी कर-नेवालेकी पत्नी, मजदूरनी ।

भक्षुस-क्ष ( सं. ) मोटी पेटी, बड़ा, पिटारा, बड़ी सन्दूक, मंजूषा ।

भक्षे ( सं. ) देखो भक्ष ।

भक्षन् ( सं. ) नहाना. स्नान करना पानी इत्यादि में डुबकी मारना, अभिषेक, नहान, धो धोकर नहान ।

भक्ष-जे-जे ( सं. ) आनन्द, रंग हर्ष, उल्लास, गम्मत, क्रीडा, दिहणी, तमाशा, स्वाद, रस, रुचि भाव, मजा, खेल, विलास ।

भक्षु-जे-जे ( वि. ) आनन्दकारी सुखद, मनोहर, सुंदर, अच्छा, रम्य, रमणीय, मजेदार ।

भक्ष-क्ष ( सं. ) तख्त, सिंहासन, पलंग, कोच, उच्चासन, खेतकी रक्षाके करनेको बैठने के लिये किसी वृक्षमें या लकड़ियों पर ऊंचा बनाई हुई छोपड़ी ऊंचा मंडर, मचान, बीजा ।

भक्ष ( सं. ) बिल्वा, बिडाल, बिल्ला, मार्जार, बिल्ली ।

भक्षरी ( सं. ) पूर्ववत् ( लीजिंग )

भक्ष ( सं. ) बेइया, रंडी, पातुर रामजनी, बारांगना, गणिका, बार वधु ।

भक्ष ( सं. ) कांस्य और पतल चातु निर्मित एक प्रकारका ताल, बाघ, झांझ, करताल, मंजीरा ।

भक्ष ( सं. ) मजीठ, एक प्रकारकी औषधि ।

भक्ष ( वि. ) स्वीकार, कबूल, ठहराव, बहाल, कायम ।

भक्ष-क्ष ( सं. ) सुन्दर, मनोहर रमणीय, मनोह, अभीष्टित, हृद नरम, कोमल, मृदुल, मधुर, प्रिय मंदमंद धीमा, ( वायु ) ।

भक्षे ( सं. ) बाळकोंके खेलनेका एक प्रकारका खिलौना, ललौटा ।

भक्षरी ( सं. ) स्वीकृति, सम्मति अनुमति, आज्ञा, अनुमोदन ।

भक्ष ( सं. ) आराम, भाव, चेष्टा, विश्राम, शान्त, तसल्ली ।

भक्ष ( सं. ) चोचला, झाबली, नखुरा, हावभाव, अंगभंगी ।

भक्ष भक्ष ( कि. वि. ) उत्सुकतासे, अभिलाषासे, तीक्ष्णतासे ।

भक्षभक्ष ( कि. ) मटकाना, आंच चमकाना, कटाक्षकरना ।

भट्टी ( सं. ) हांडी, मृत्तिकाका घटा, मृष्मय घट, मिथीका पात्र विशेष ।

भट्टुं ( सं. ) पूर्ववत् ।

भट्टे ( सं. ) अंगवेष्टा, अंगभंगी, हावभाव, चेष्टा, अभिनय, कटाक्ष ।

भट्टुं ( कि. ) भिटना, नष्टहोना, दूरहोना, टलना बरबादहोना ।

भट्टभटावुं ( कि. ) आखे टमट-माना, आखे मारना, नेत्रोंको जलदी जलदी कोलने और मीच-नेकी दिया ।

भट्टाडुं ( कि. ) हटाना, सरकाना दूर करना, मिटाना, नष्टकरना ।

भट्टीवुं ( कि. ) देखो भट्टुं ।

भट्टी ( सं. ) देखो भट्टी ।

भट्टी ( सं. ) मिथी, चिकनी मिथी ।

भट्टे ( सं. ) कचि, मिथी, कांचड ।

भट्टेभुं भगव ( सं. ) बुद्धिहीन अस्तिष्क, मूर्ख, बेवकूफ दीमाग ।

भट्टेदरी वणुं ( कि. ) व्यर्थ जाना, निष्फळ, होना, निरर्थक, होना ।

भट्ट ( सं. ) एक प्रकारका अन्न, मीठ, मठ, गुरुद्वारा, कुटो, एकान्त वास, आश्रम, बिहार बाबा मोसाई, साधु संन्यासी वि-

थार्या आदि के रहनेका स्थान, मंदिर ।

भट्टाकवा ( कि. ) निरर्थकी रहना ।

भट्टे छाये भण करवी ( कि. ) ( मौठकी छाया नहीं होती न उसका वृक्ष इतना बड़ा होता है कि उसकी छायामें कोई बैठ सके ) एक व्यंग वाक्य, मृग तृष्णा से आनन्दित होना ।

भट्टेवुं ( कि. ) देखो भट्टेवुं ।

भट्टे ( सं. ) देखो भट्टीया मौठके आटेकी बनी नमकीन तीखी पप-डिया, खाद्य पदार्थ विशेष, चनेके आटेका बना हुवा पदार्थ विशेष ।

भट्टेवुं ( सं. ) बटईका रन्दा एक प्रकारका औजार ।

भट्टेवुं ( कि. ) साफ करना, छील कर पिसकर चिकना करना, दीप टाप करना । छीके साथ समागम होना, ( प्रामीण भावामें ) ।

भट्टे ( सं. ) छाछ, तक्र, मही, मठा ।

भट्ट ( सं. ) हठ, जिद, आगह । धुन, दबता, अह ।

भट्टे ( सं. ) लोय, लाश, शव, प्रेत, मृतदेह, निर्जीव पिंड ।

भट्टाना ताणवार्भादी ठाढी आ-नारो ( सं. ) बहुतही कंजूस,

अतिशय, कृपण, महानलोमी कफ  
न बसीट, मन्मथीपल, निर्दय, दुष्ट  
घाती ।

महाभागे श्रींभा नृधियां ( कि. )

बूढे खंसटका विवाह करना, बूढ  
पुरुष को लड़की देना ।

महाधि ( वि. ) मोटा, पुष्ट, लठ्ठ ।

महाध ( सं. ) एक प्रकारकी वनस्पति  
एक प्रकारकी तरकारी । शाक  
विशेष ।

महाध ( सं. ) स्त्री, औरत, महाशया ।

महाधुं ( कि. ) देखो मरुधुं

महाभ्रंश ( सं. ) सख्त गाँठ, कठोर  
ग्रंथि बहुत उलझन ।

महाधो ( सं. ) एक प्रकारका कंकर  
ओषधिसकर फोका फुन्सीपर लेप  
किया जाता है । कंकड़, रेत, पथरी ।

महाधुं ( सं. ) देखो मरुधुं

महाधुं ( कि. ) मटना, तोपना,  
आवरण करना, छिपा देना, तार  
कपड़ा चमड़ा आदि चढाना ।  
चाँदी खोनेका पत्तर चढाना ।

महाधि ( सं. ) कुटिया, झांपड़ी, कुटी  
महैया, मंढप ।

महाधीली ( सं. ) पूर्ववत्

महाधु ( सं. ) तौलपारिमाण विशेष,  
मन, चाखीससेर ।

४०

महाधि ( सं. ) गुरिया, दाना,  
मनका, लकड़ी, या काचका माख  
का दाना ।

महाधि ( सं. ) ओछा, थोड़ा ऊँच,  
बाकी इच्छा चाह, स्वाहिस ।

महाधि ( सं. ) चापपक्षी, नील कण्ठ  
पक्षी विशेष ।

महाधि ( सं. ) बहपाय जिसमें  
एक मण बजन सजाता हो । मणा,  
एक मणका बजन ।

महाधो दीवो मरे ( कि. ) अ-  
त्यंत परिश्रम कराके हाथ पैर  
ढाले करदेना ।

महाधुध ( सं. ) कड़ाई, पटुना ।

महाधुध ( सं. ) हाथीदाँतका  
काम करनेवाला ।

महाधुध ( सं. ) काचका गुरिया,  
काचका गोल माछाका दाना ।

महाधु ( सं. ) मंडका, जन विश्राम  
गृह, तृणादिनिर्मित देवगृह, विवाह  
उत्सव के छिन्ने बनाया हुआ घर,  
कुंज मत्तागृह ।

महाधु ( कि. ) लगना, मिटना,  
पिळना, आरंभकरना, शुरूहोना ।

महाधु स्त्रीधु ( कि. ) भिंदेरहना,  
छेनेरहना, संतभरहना ।

अंशजिह ( सं. ) राज्यके एक छोटे भागका अधिपति, चक्रवर्ती राजा यादविक ।

अंशजिह ( सं. ) समूह, सभा, यूथ जया, छुंर, भीरु समाज, बैठक, मजलिस, ठोड़ी, कम्पनी ।

अंशजिह-अंश ( सं. ) देखो अंश-अंश ।

अंशजिह ( सं. ) आरंभ, शुरुआत, नीच, मूल, कुवे परके बेह लकड़ इत्यादि जिनमें पानी खींचनेका चाक लगा होता है । कुवेका ढाणा, कुवेका घाला, ढंग, बादलेका आच्छादन । [ नलाना ।

अंशजिह ( सं. ) नवोन बहोलाता

अंशजिह ( कि. ) लिखाना, आरंभ कराना, शुरु कराना, ढंग रचाना ।

अंशजिह ( कि. ) होना, विवाह हाना, बंधना, ठिकाना होना, अच्छी दशमें होना ।

अंशजिह ( वि. ) भूषित, सज्जित, अलंकृत, वेष्टित, जडित, श्रृंगारित ।

अंशजिह ( सं. ) देखो अंशजिह

अंशजिह ( सं. ) लोहका मैल रसायन विशेष ।

अंशजिह ( सं. ) विचार, श्राव्य, अ-मिश्राय, पक्ष, धर्म, मजहब,

सम्प्रदाय, रीति, कब, सिद्धान्त, आशय, मन्तव्य, पंच, सम्मति, अनुमोदन, फैसला, इच्छा ।

अंशजिह ( सं. ) स्वार्थ, हेतु, मुराब आशय, कारण, इच्छा, अर्थ, तात्पर्य, भाव, सारांश ।

अंशजिह ( कि. वि. ) स्वार्थसे, हेतुसे, मरजमदी ।

अंशजिह ( वि. ) स्वार्थी, सुदगर्जे, कपटी, दगाबाज, स्वार्थनिष्ठ ।

अंशजिह ( सं. ) अपने मतके लिये आप्रह जिह हठ, आप्रह ।

अंशजिह ( सं. ) स्वमताग्रही, हठ-वादी, जिहरी मताग्रही ।

अंशजिह-वी-धु ( वि. ) सुन्दर, भङ्कीला, आनन्दी, मौजी लहरी बहादुर, धैर्यवान, प्रतापी, व्यक्ति चारी, छिनाल, मद्यमस ।

अंशजिह ( वि. ) मजबूत, हठ, पुष्ट ।

अंशजिह ( सं. ) एक प्रकारका व्रत विशेष जो आपाठ कुण्ठपक्षमें होता है ।

अंशजिह ( सं. ) माळ, दौलत, पूँजी, द्रव्य, जीव, धन, मिलकियत, द्रव्य । [ विष्ट ।

अंशजिह ( सं. ) आत्मनिमान

भतार ( सं. ) लकड़ीका छद्दा, सड़तीर, लड्डा, सोया, लड्डा, बन्डा ।

भतार ( वि. ) हठी, जिरी, अडि यल ।

भतारो-बो ( वि. ) पूर्ववत्, मन-वाही करनेवाला, स्वमत पुष्टी कर्ता । [कव्यविशेष, तरङ्ग ]

भतार ( स. ) छोटीककड़ी, तोरई, भतार-पु ( सं. ) हस्ताक्षर, दस्तखत ।

भतारपु ( कि. ) हस्ताक्षर करना, दस्तखत करना, मही करना ।

भतार ( सं. ) सरकारी रुपयोंको जमा करनेका माफी ।

भतारान ( वि. ) बुद्धिमान सम-झदार चतुर, कुशल दक्ष ।

भतार ( सं. ) मुख्यस्थान, जहाँपर बड़ा बाजार हो, बंदर, शहर इत्यादि, बुद्धस्थल विद्यालय, बड़ी छावनी ।

भतार ( सं. ) बिलोवन, लोदन, मंथन, सिरपन्नी, प्रयास, प्रयत्न कष्ट, उद्योग, व्यवसाय, श्रम ।

भतार ( सं. ) महानी, मचनिया हवि इत्यादि मचन करनेका वात्र विशेष ।

भतार ( कि. ) महना, बिलोना, पी विकारना, मंथनकरना, मंथोदना

बोझना, परिश्रमकरना । [उप्यास ]

भतार ( सं. ) पचवी, पाप, भतार ( सं. ) ऊपरका भाग, हेडिंग, शीर्षक, देने देनेका निबन्ध

करना, पचवी, पाप, साध, टोपी ।

भतार ( सं. ) गाय मैस इर-वि पक्षु ।

भतार ( सं. ) मस्तक पर्वन्त गाहरा, छः फुटका माप । ( वि. )

मस्तक की उंचाई के बराबर ।

भतार ( स. ) गर्व, मय, मत्ता, मोह, मादक इष्य, उन्माद, अतिगर्व, अभिमान, उन्मत्तता,

काम, मदन, काम विकार, अभि-ल्लाष, रस, पुष्परस ।

भतार ( वि. ) मदके कारण बलबढ़ाहट ।

भ-भण ( सं. ) हाथी, कुंजर, यवन्द, वारण, करिबर, मातंग, गज ।

भतार-द ( सं. ) सहाय, पुष्टि, सहाय, आश्रय, रक्षा, आचार,

रक्षण, टेका, बचाव ।

भतार ( सं. ) सहायक, आश्रय दाता, रक्षक, मददकार, अशि-स्टेण्ट ।

भतार ( वि. ) पूर्ववत् ।

भतार ( सं. ) पूर्ववत् ।

मदनपूतलु ( सं. ) अत्यंत खूबसूरत,  
अत्यंत मनोहर ।  
मदन द्वय ( सं. ) देखो भिन्न ।  
मदभातु ( वि. ) मद्योन्मत्त, मर्द-  
कारी, प्रफुल्लित, अभिमाना,  
कामातुर ।  
मदरेखा ( सं. ) पाठशाला, विद्या-  
लय, कालेज, महाविद्यालय,  
युनीवर्सिटी ।  
मदविहारी ( सं. ) मत्सर, उन्मत्तता ।  
नशा, दान, मदबोध, हाथी के  
गण्डस्थलमे से टपकता हुआ पानी ।  
मदारी ( सं. ) खातरी, भरोसा,  
विश्वास, उद्देश, हेतु, मनोरथ,  
मतलब, इच्छाकारण, ध्यान, लक्ष  
रंजीवाज, आशिक, मद्योन्मत्त हाथी ।  
मदरित ( सं. ) सुश्रुषा, खातिर,  
अतिथिसत्कार ।  
मदारी ( सं. ) बाजीगर, इंदुजाली,  
सांपवाला, नटवर, तमाशा जादू  
बतानेवाला, इस्मी, ठग, दगा-  
खोर, डोंगी ।  
मदिराक्षी ( सं. ) संजन पक्षी के  
नेत्र के रंगवाली, मृगनयनी, अच्छे  
नेत्रोंवाली । [ उन्मत्त ।  
मदी ( वि. ) मदवाला कुद,  
मध ( सं. ) पुष्पमद, फूलोंके भीत-

रका रस, मधु, शहद, पराग ।  
मध मदीने मधपु ( कि ) शहद  
लगा कर चाटना, ( व्यंगोक्ति )  
निरर्थक रस छेड़ना ।  
मधवाणी शुभ ( सं. ) सुशामद  
करनेवाली वाणी, मिष्टभाषी जिह्वा ।  
मधमां हाथ मेधाववे। ( कि. )  
लालच दिखाना, मोहमे फंसाना ।  
मधपाक ( सं. ) एक प्रकारका  
जिह्वा रोग जो बालकको होता है ।  
मधपुंडा ( सं. ) शहदकी मक्खियों  
का छत्ता, मधुमक्षिकाओंके रहने  
का घर । एक एक छत्ते में दस  
हजार से लगाकर ५० हजार तक  
मक्खियां रहती हैं ।  
मधभाभा-भा ( सं. ) मधुमक्षिका  
शहदकी मक्खी । जन्तु विशेष ।  
मधभाग ( सं. ) बीचका हिस्सा,  
मध्य का भाग ।  
मधरात नी ( सं. ) आधी रात,  
मध्य रात, रा-का १२।१ बजेका  
समय ।  
मधसाध ( सं. ) अतिइच्छा, प्रबल  
इच्छा ।  
मधवे। ( वि. ) पुष्ट, मोटा, स्थूल ।  
मधु ( सं. ) शहद, पुष्परस,  
अमृत, मकरन्द, मद्य, शह,  
शराब, वसन्तमद्य, ( वि. ) मीठा  
स्वादित ।



अधुकर ( सं. ) अमर, मंथरा, बलि,  
मौरा, बटपद्, मधुप, मस्तिन्द, ।  
अधुकेल ( सं. ) देखो अधुपडे ।  
अधुभरी ( सं. ) भिक्षाद्वारा प्राप्त अन्न ।  
अधुप ( सं. ) देखो अधुकर ।  
अधुपक्ष ( सं. ) दधियुक्त मधु,  
शहद और दही, घी, दूध, दधि,  
मधु, और शकरका मिश्रण ।  
इनपांच वस्तुओंको कांश्यपात्र में  
दान देनेकी क्रिया । [ पदार्थ सेवन ।  
अधुपान ( सं. ) मद्यपान, मिष्ट  
अधुपक्षिपान ( सं. ) वहस्थान  
जहाँ पशुमांसिकाएँ हों ।  
अधुभति ( सं. ) योगशास्त्रवर्णित योगी  
की एक चित्तवृत्ति, काश्मीरीवृक्ष, इस  
नामकी एक देवी नायिका ।  
अधु२-२ ( वि. ) मोठा, भिष्ट, मृदु,  
स्वादिष्ठ, कर्णसुखद, प्रिय, रुचिकर,  
सुंदर, मनोहर, सुगंधित ।  
अधुश ( सं. ) फलविशेष ।  
अधुसिद्ध-वेद ( सं. ) देखो अधुकर  
अधिभध ( क्रि. वि. ) बीचोंबीच,  
ठाँक मध्यमें । [ में ।  
अधे ( क्रि. वि. ) भीतर, अन्दर,  
अध्व ( सं. ) अन्तरात्, बीच, मांस ।  
अंझार, कटिभाग ।  
अध्वभा ( सं. ) बीचकी खगुली ।

जवानी प्राप्त स्त्री, शब्दोच्चारणकी  
तीसरीवृत्ति, फूलों के गुच्छे में से बीच  
का पुष्प, दृष्टरजस्कानारी ।  
अध्वस्थ ( सं. ) बीचवाला, साध्वी,  
निर्णयकर्ता, तटस्थ, पंच,  
अध्वस्थान ( सं. ) कटि, कमर ।  
अध्वस्थी ( सं. ) देखो अध्वस्थ  
अध्व ( सं. ) एक प्रकारकी ग्रह  
गति ।  
अध्वान-हन ( सं. ) दोपहर, मध्य  
दिवस, दिनके बारहबजेका काल ।  
अध्वे ( क्रि. वि. ) बीचमें भीतर,  
अंदर ।  
अन ( नं. ) मन, चित्त, हृदय,  
समस्तशक्ति, ज्ञानेन्द्रिय, बुद्धि, दिक्,  
हिया, इच्छा, मरजो, धारणा, वि-  
चार, स्मरणशक्ति, अंतःकरण ।  
अनकरपुं-अपुं-आरपुं ( क्रि. ) इच्छा  
होना, इरादा होना ।  
अभानपुं ( क्रि. ) स्वीकार करना,  
जित प्रसन्न होना ।  
अनभाटुं करपुं ( क्रि. ) नाराज  
अप्रसन्न करना ।  
अन्योअपुं ( क्रि. ) पुकड़ पुकड़,  
करना, पखाँताप करना ।  
अनभनीपुं ( क्रि. ) प्रज्ञा करता,  
समझाना ।

मनभां आवपुं उतरपुं ( कि. ) स-  
मझना इच्छा होना, इरादा होना ।  
मनवाणपुं ( कि. ) आरामलेना,  
संतोष पूर्वक बैठना ।  
मन छिपुं ( कि. ) अप्रीति होना,  
इच्छा शक्ति नष्ट होना, वैराग्य  
उत्पन्न होना । [ समझना ।  
मनभेपुं ( कि. ) दूसरका इरादा  
मन भेषपु-आगपुं ( कि. ) प्रेमहो-  
ना अनुरागहोना, जी लगना ।  
मनधासपुं-भरपुं ( कि. ) ध्यान  
देना ।  
मन छुपुं ( कि. ) नाखुशहोना,  
अप्रसन्न होना, स्नेहदूटना, अम-  
तोष होना । [ यादरखना ।  
मनभां लावपुं ( कि. ) जीमेलाना  
मनतुं मनभां ( कि. वि. ) जीका  
जीमें ।  
मनभोडपुं ( वि. ) उदार, फर्याजा  
मननुं कपटी ( सं. ) जो ऊपरसे  
साफ और अंदरसे कपटहो ।  
मननुं पोथुं ( वि. ) कमजोर  
दिलवाला ।  
मनभां धाणाय कपुं ( कि. ) मन  
ही म. में सोचा करना ।  
मनुभरपु ( कि. ) संतुष्ट करना  
पूर्ण होना ।  
मन भांणपुं ( वि. ) कुछ सुझ न  
पड़े ऐसी स्थितिमें होना ।

मनभाडुं वपुं ( कि. ) अप्रसन्न  
होना, दिल हटजाना, माराज  
होना । [ कहना ।  
मनभोसपुं ( कि. ) जीकी बात  
मनभोपुं राभपुं ( कि. ) निष्कपट  
मन रखना ।  
मनभोपु ( कि. ) जी लगना,  
मोहमाया में पड़ना । [ होना ।  
मननीयुं थपुं ( कि. ) नांव वृत्ति  
मनभानपुं ( कि. ) जी प्रसन्नहोना,  
संतोषहोना, इच्छा पूर्ण होना ।  
मनभारपुं ( कि. ) मन वक्षमें  
रखना इन्द्रिय दमन करना ।  
मनभूषपुं ( कि. ) भेद अथवा  
प्रपंच नहीं रखना छळ कपट न  
रखना । [ उठना ।  
मनविभरारपुं ( कि. ) दिल  
मनसां कपुं ( कि. ) संकीर्ण हृदय  
होना ।  
मनभां पेसी निभपुं ( सं. ) दूसरेके  
मनका सबबाते जान लेना ।  
मनकाभनी ( सं. ) मनकी इच्छा  
सुराद मरजी मनोरथ वाञ्छा,  
आभिलाष । [ मानुष ।  
मनभ ( सं. ) मनुष्य इन्सान,  
मनभाडे ( सं. ) मानव जीवन,  
मनुष्य शरीर मरदेह ।  
मनभो ( सं. ) मनुष्य इन्सानभित्त ।

भनभनपुं ( सं. ) इच्छिकर, संतोष  
प्रद, मनोरंजक, प्रिय, रम्य ।

भनभु ( सं. ) मन, दिल, चित  
( काव्यमें )

भनभेरे ( वि. ) वह मन जिसमें  
कुछ फेरफार हो गया हो ।

भनभंभ ( सं. ) इच्छाभंगनिरासा

भनभापु ( वि. ) मनमाना, इच्छि-  
कर, पसन्दाद, दिल पसन्द ।

भनभव ( सं. ) कामदेव, मदन ।

भनभानपुं ( वि. ) देखो भन-  
भापु

भनभान्युं ( वि. ) बहुत, अधिक,  
पुष्कल इच्छित, चाहे उतना ।

भनभेणापी ( वि. ) मनोहर, मन-  
भाषना ।

भनवक्षिपुं ( वि. ) मन मनानियोग्य ।

भनवर ( सं. ) मनुहार, स्वागत,  
सुश्रुषा, अतिथिसत्कार, सेवा,  
आतिथ्य । [ मन, चित ।

भनव ( सं. ) मनुष्य, मानव,

भनवारे ( सं. ) युद्धका बड़ा जहाज,  
सैनिक जलयान, जंगी जहाज ।

भनवेगी ( वि. ) बहुत जस्दी,  
मनके समान अत्यंत बेगवाला ।

भनभ ( सं. ) एक प्रकारकी भात,  
मेनछिह, बबः सिल ।

भनभा ( कि. वि. ) मनद्वारा, चि-  
त्तसे, ( सं. ) इच्छा, अभिलाष,  
मनोरथ ।

भनसूभे ( सं. ) इरादा, इच्छा,  
विचार, युक्ति, तदवीर, उद्देश,  
मतलब, हेतु, सलाह, धारणा ।

भनसभदारे ( सं. ) सेनाका अधि-  
कारी विशेष ।

भना ( सं. ) प्रतिबंध, रोक, नि-  
शेध, निरोध, अटक, इन्कार ।

भनार्ध ( सं. ) पूर्ववत् ।

भनादी ( सं. ) पूर्ववत् ।

भनाभय ( सं. ) आराधना, सन-  
सौती, सांत्वना, ऐक्य, समाधान,  
सलाह ।

भनारे ( सं. ) पत्थर चूनेका ब-  
नया हुआ ऊंचा गोक स्तंभ, सीमा-  
स्तंभ, मीनार, स्मरणस्तंभ ।

भनावधुं ( सं. ) देखो भनभधुं ।

भनावपुं ( कि. ) समझना, मनाना,  
दिल मिलाना, मिलाव करना,  
स्वीकार कराना, सत्य सत्य  
कहलाना । [ कोष उत्तरना ।

भनापुं ( कि. ) भिन्नता होना,

भनी ( सं. ) विही, विहाल, विहास,  
मार्जार, मीनार ।

मनीषा१२ ( सं. ) रुपये जैसे डाक-  
घर द्वारा भेजनेका आज्ञापत्र,  
एक जगह डाखनेमें रुपया जमा  
कर देने पर दूसरे स्थान पर  
भेजनेकी हुंसी ।

मनीषा२-धुषा२ ( सं. ) चूड़ा ।  
चूड़ियां बेचनेवाला, छेहरा, मनि-  
हार । [ करनेवाला ।

मनीषा३ ( सं. ) मनिहारेका धन्धा

मनीष ( सं. ) मनुष्य, मानव, मनुज ।

मनु ( सं. ) ब्रह्माका पुत्र और  
मनुष्योंका आदि पुरुष, मन्वंतरका  
मूल पुरुष, प्रसिद्ध १४ ऋषियोंमेंसे  
प्रत्येक, (१) स्वयंभू (२) स्वरोचिष  
( ३ ) उत्तम (४) ताम्रस ( ५ )  
रैवत ( ६ ) आदित्यदेव ( ७ )  
सावर्णि, (८) ऋक्ष सावर्णि (९)  
देव सावर्णि ( १० ) ब्रह्मसावर्णि  
( ११ ) धर्मसावर्णि, (१२) देव-  
सावर्णि ( १३ ) इन्द्रसावर्णि और  
( १४ ) चाक्षुष । एक धर्मशास्त्र-  
कर्त्ता ऋषि, चौदहवीं संख्याका  
सूचक ।

मनुष्य ( सं. ) मानव, मनुष्य,  
मनुकी संतान, इन्सान, मर्द्द,  
आदमी ।

मनुष्य२ ( सं. ) सातिर, शर्पण्य,

आव भगत, आतिथ्य, सुश्रुषा,  
सेवा ।

मने ( सं. ) देखो मना ।

मने ( सर्व. ) मुझे, मुझको, मेरेको ।

मनोमति ( सं. ) मनकी पहुँच,  
चित्त की शीघ्र गति ।

मनोमत्र ( वि. ) रुचिकर, सरस ।

मनोमल्ल ( सं. ) सुंदर, मनोहर,  
दिग्द पसन्द, मनमोहक ।

मनोमय ( सं. ) मेनसिल, मनः  
शिला, जीरक, जीरा, मदिरा,  
दारु, राजपुत्री । [ चित्त धर्म ।

मनोधिर्भ ( सं. ) मनका धर्म,

मनोभाव ( सं. ) मनकी इच्छा,  
इरादा, सात्पर्य, मतलब ।

मनोभंग ( सं. ) आनन्द, उल्लास,  
हर्ष, खुश भिजाऊ, संतोष ।

मनोभय ( सं. ) मानसिक, हार्दिक,  
मनसम्बन्धी ।

मनोमथकोश ( सं. ) पंचकोशोंमें से  
एककोश, अर्द्ध ब्रह्मास्मि पर्यंत ज्ञान

मनोभिराग ( वि. ) मनोहर, रम-  
णीय, आल्हादक, सुखद, आनंद-  
जनक, रम्य, रुचिकर ।

मनोपथ ( सं. ) मनका परिश्रम,  
पाठ, अभ्यास, प्रयोग, शिक्षा,  
सबक ।

भन्तर ( सं. ) देखो मंत्र।

भन्तरपुं ( कि. ) जादूकरना मंत्रित करना, मोहितकरना, बशीकरण करना, बुरकी बालना।

भन्तशेषपुं ( कि. ) जादूकराना, मन्त्रा बोरा कराना, जादू कराना।

भन्त्री ( सं. ) बजीर, दीवान, सलाहकार, परामर्शदाता, सेक्रेटरी, सिकतार।

भन्त्रित ( वि. ) मन्ताराहुवा, मन्त्र-द्वारा संस्कृत, जादू किया हुआ।

भन्धन ( सं. ) बिलोडन, मथन, महना, रवाई, मंथन दण्ड।

भन्ड ( वि. ) धीमा, धीरा, अल्प, बोधा, शिथिल, अतीक्षण, अधम, योगी, सुस्त, ओछा, कम, मूर्ख, कोमल, मृदु।

भन्डवा ( सं. ) रोग, बीमारी, अस्वस्थता, प्रकृतिमें विकृतिउत्पत्ति।

भन्डवार ( सं. ) शनिवार।

भन्डवार ( सं. ) मुस्तुराहट, मुसक्यान, स्मितहास्य।

भन्धक्ष ( सं. ) लाज, शरम, लज्जा, हया, शर्म।

भन्धमि ( सं. ) कफद्वारा बठरामि का निरोधहोना, अजीर्णता, कृम्य-कोष्ठकता, बद्धकोष्ठता।

भन्डार ( सं. ) स्वर्गस्थित एक वृक्ष विशेष स्वर्गीय पांच वृक्षोंके अन्तर्गत एक वृक्षका नाम, पारिजात वृक्ष।

भन्डर ( सं. ) घर, भवन, मकान, देवालय, देवगृह, महल, देवरा।

भन्डि ( सं. ) जरीतारोंके काम-बाळी पचड़ी, जूरीकी पचड़ी।

भन्दी ( सं. ) गिराबाजार, कममूल्य ( तेजी ) मन्दी, व्यापारमें शिथिलता। [धोवा, शिथिल]।

भन्डुं ( वि. ) धीमा, सुस्त, अल्प,

भन्वन्तर ( सं. ) एक मनुका राज्य काल, एक मनुका समय, ३०६७२०००० वर्षोंका काल, कल्पका १४ वां भाग।

भन्पारो ( सं. ) माल तौलने वाला, अन्नका व्यापारी।

भन्पावपुं ( कि. ) तुलवाना, भराना।

भन्पापुं ( कि. ) तुलाना, भराना।

भन्पत ( कि. वि. ) मुफ्त, बे मूल्य, बिना कीमत, फोकट अल्प, मूल्य।

भन्पतिपुं-तीठ ( वि. ) मुफ्तखोर, फोकटानन्द, हरामकी खानेवाळ।

भन्धक्ष ( सं. ) दीन, गरीब, दरिद्र।

भन्धक्ष ( वि. ) अतिमथ, बहुत, पुष्कल, बरा, बियादः।

अभाङ्ग ( कि. वि. ) शायद, किङ्क-  
हुना, संभवतः देवात्, योगात् ।

अभाङ्गी ( सं. ) एक प्रकारका,  
रोग जो बाळकोंको होता है ।

अभाभ ( वि. ) अत्यष्ट, संदेहात्मक,  
संनिग्ध, द्विवर्था, अव्यक्त, संशय-  
त्मक, शंकाजनक । [ बच्चोंका ।

अभ ( सं. ) खानेका संकेत विशेष

अभत ( सं. ) हठ, जिह्. दुराग्रह,  
अद, आग्रह ।

अभती ( सं. ) मोह, माया, स्नेह,  
प्रेम, ममत्व, अहंकार, गर्व, हठ,  
जिद, आग्रह, अद ।

अभती ( वि. ) जिही, हठी, आग्रही ।

अभतीशु ( वि. ) पूर्ववत् ।

अभती अभती ( सं. ) चढाना, दो  
देखादेखी, ईर्ष्या, स्पदां, विरोध ।

अभती ( सं. ) सिके हुए चावल,  
भुके हुए चावल, मुरमुरा ।

अभती भूँवे ( कि. ) पानी  
चढाना, उलकाना, रंजकदेना, दो  
आदभियोंको फ़ेस हो ऐसा बोलना ।

अभतीभु ( कि. ) होठोंसे चबचब  
कब्द करना, स्वाद लेना, मुँहमें  
रखकर इधर उधर हिलाना, मन्व  
करना, स्तरण करना ।

अभाध ( सं. ) माकी मा, नानी ।

अभावे ( सं. ) माका बाप ।

अभावेणी ( सं. ) देवीका नाम विशेष ।

अभावे। एक प्रकारका जीव ।

अभावे अभावे ( सं. ) गाळी अपसन्द ।

अभ ( वि. ) युक्तबालों और भरपूर  
सूचक प्रत्यय, यथा-जलमभ,  
आनंदमय ।

अभय ( सं. ) देवो भयनय ।

अभय ( वि. ) मृत, मराहुका,  
जीवहीन ।

अभा ( सं. ) दया, माया, कृपा,  
इरशाद, अनुकम्पा, अनुग्रह ।

अभा ( सं. ) एक प्रकारकी वन-  
स्पति की बोले ।

अभ ( कि. ) भरजा, जाता रह  
( विस्म. ) ऐसा ही हो, कुछ  
परवाह नहीं ।

अभती ( सं. ) मणिविशेष, हरे  
रंग का मणि, नीलम, पद्म ।

अभती ( वि. ) मन्वहास्यबाळा,  
मुसकानेबाळा, हंसोकवा, हंसमुखा ।

अभती ( सं. ) जिसमें बहुत मनुष्य  
हों, हैजा, फ़ेग, महामारी, यरी,  
बह रोग जिससे बहुत आदमी  
मरें, चेकक, इन्फ़्लूएन्जा । क्वर  
विशेष, एक प्रकारकी मिटाई ।

भ२५ ( सं. ) हरिष, मृग, कुरंग,  
सारंग, सांभर, कृष्णसार ।

भ२५ी ( सं. ) मुर्गी, कूकड़ी, पक्षी  
विशेष । [ अरुणशिल्प, पक्षीविशेष ।

भ२५ी ( सं. ) मुर्गी, मुर्गे, कूकड़ा,

भ२५ी ( सं. ) मिर्चका पेड़ ।

भ२५ु ( सं. ) मिर्च, मिरच, चिल्ली,  
एक प्रकारका चपरा फल ।

भ२५ां-५ाभवां ( कि ) क्रोध  
करना, दिलदुखाना, व्याकुल होना,  
चिढ़ना ।

भ२५ ( सं. ) रोग, दर्द, पीड़ा,  
व्याधि, विकार, आजार, बीमारी ।

भ२५न ( सं. ) स्नान, नहान,  
माज्जन । सीमा, प्रतिष्ठा, मर्यादा

भ२५-५ ( सं. ) मान, पत, टेक,

भ२५इयेस ( सं. ) पानी के किनारे  
पेड़ा होनेवाली एक प्रकारकी बेलि ।

भ२५दी ( वि. ) बल्लभ संप्रदाय में  
पुष्टि मार्ग, और इसके अनुसार  
कार्य करनेवाला वैष्णव ।

भ२५ ( सं. ) इच्छा, लुब्धी, का-  
मना, मनोरथ, स्पृहा, आकांक्षा,  
वाञ्छा, मनोकामना, वात्सना,  
मिवाञ्छ ।

भ२५ शभरी ( कि ) दिलरखना,  
इच्छानुसार वर्तन करना ।

भ२५ राभु ( वि. ) कुण्डलमयी,  
चाटुकार । [ निकालनेवाला ।

भ२५े ( सं. ) समुद्रमें से मोती

भ२५ सं. ) मरोड़, ऐंठ द्वेष, नाह ।

भ२५ु ( कि. ) ऐंठना, मरोड़ना,  
टेढ़ा करना, उलटना, फेरना ।

भ२५ा ( सं. ) ( प्यारमें ) कसब  
होना, जन्मोक्ति, उपरोध, बल्ले  
बल्ल लटका, ऐंठ, मरोड़, द्वेष ।

भ२५ु ( कि. ) टेढ़ा होना, मुड़ना,  
झुकना, काम करने में उलझ  
होना, शरीर टेढ़ा करके नक़रे  
कमना ।

भ२५सिंभ ( सं. ) एक प्रकारका  
वृक्ष, इसकी फलियाँ ऐंठो हुई  
होती हैं; मरोड़ फली, औषधि  
विशेष ।

भ२५-भै५ ( सं. ) आतेसार, पेड़  
में बारबार दर्द होना और शौच  
जाना, पेड़ का दर्द, दस्त लगना ।

भ२५ाणी ( सं. ), अन्तसमय,  
मृत्युसमय, आखिरी वक्त ।

भ२५ात ( सं. ) ऐसीधात जिससे  
मृत्यु होजाना संभव हो [ रक्षण ।

भ२५व२५ ( सं. ) मृत्यु और

भ२५तोष ( वि. ) मृत्युसुख, मरण-  
लक्षक ।

भरखुआभुं ( कि. ) मरना, मर-  
जाना, मौत होना, देहावसान।

भरखुपैक ( सं. ) मृत्युके समय  
पुकार। मरेके नामपर पुकार।

भरखुलल ( सं. ) चिताकाष्ट,  
मुर्देको मस्म करनेके लिए लक-  
डियां। [ काळ।

भरखुंभत ( सं. ) मृत्युसमय, अंत-

भरखुंभु ( वि. ) मरनेवाला, मृत्यु  
शय्याभित, मरनेसे नहीं डरनेवाला,  
साहसी जो प्राणकी पर्वाह न करे।

भरखुं ( सं. ) मौत, मृत्यु, नीच,  
काळ।

भरतभे ( सं. ) पदवी, दर्जा,  
ओहदा, प्रभुता, गौरव, अधिका-  
रतबा।

भरतभेसांथवे ( कि. ) प्रभु-  
तास्थापितकरना, गौरवान्वित होना।

भरतललवत ( कि. वि. ) क्वचित,  
कभी, किसीदिन, कोई समय।

भरह ( सं. ) आदमी, पुरुष, नर,  
पुरुषार्थपुष्क, पहलवान, वीरमनुष्य।

भरहपुं ( कि. ) दबाना, मसळना  
मर्दन करना।

भरहा ( सं. ) पौरुष, पुंसत्व,  
शौर्य, पुरुषार्थ बहादुरी, साहस,  
मनुष्यता, वीरता।

भरहानभी ( सं. ) पूर्ववत्।

भरहानी ( वि. ) मर्दकी, पुरुषके  
योग्य, आदमी योग्य ( सं. ) बहा-  
दुर, शूर, निहट, साहसी दृढ

भरहानी ( सं. ) देखो भरहा।

भरही ( सं. ) पुंसत्व, पौरुष, मातु  
विकसक्ति, बहादुरी वीरता।

भरहुभी ( सं. ) देखो भरहा।

भरहेआइभी ( सं. ) कुलीन, सद्य-  
हस्थ, सजन, उच्चकुलोत्पन्न,  
मलामानुस, जेष्ठकमन, बहादुर।

भरनार ( वि. ) मरनेवाला, मृत,  
परलोकप्राप्त, स्वर्गप्राप्त।

भरवत ( सं. ) मुरब्बत प्रेम, स्नेह  
मुहब्बत, छोह, सुशीलता।

भरखुं ( कि. ) मरना, मृत्युपाना,  
अंतिम स्वास लेना, देहत्यागना,  
प्राणछोडना, गुजरना, शरीरान्त  
होना, परलोकवास करना, दुःख-  
जाना, कुम्हलाजाना, कष्टदेना,  
दुःखपाना, कमीहोना, नष्टहोना,  
मरना, सहना, नुकसानसहना,  
परिश्रमकरना, स्थान व्युत्तहोना,  
मस्मकरना फूँकना, ताकतकट  
करना, जखीरहोना व्याकुल होना



भरणी ( क्रि. ) बुराई, बल्लाहो ।

भरवे। ( सं. ) छोटेनीबूके बराबर कच्ची आमकी कैरी, एक प्रकारका वृक्ष, होना मरुआ, इसकुलके पत्ते अत्यंत सुगंधित होते हैं ।

भरखीया ( सं. ) किसीप्रसिद्ध मनुष्यके स्मरणमें गाया जानेवाला गीत । शोक सूचक गायन ।

भरसीथि। ( सं. ) पूर्ववत् ।

भरहुभ ( वि. ) मृत, मराहुवा, स्वर्गस्थ ।

भरहा-डा। ( सं. ) महाराष्ट्र में रहने वाला आदमी, वाखेजी, मरहटा ।

भरहाथ्य ( सं. ) मरहटेकी ली, मरहटन, इक्षिणी ली ।

भरभत ( सं. ) मरम्मत, सुधार, जाँचोद्वार, रिपेअरी दुरुस्ती ।

भरववुं ( क्रि. ) मराना, कुटाना, पिटाना । [ मराना ।

भरवुं ( क्रि. ) कुटना, पिटना, भरव ( सं. ) एक प्रकार का पत्ती, राजहंस, हंस ।

भरवणी ( सं. ) हंसिनी, मराठी ।

भरवस ( सं. ) बेपौती, मोरास, खंजा । [ थिकारी ।

भरवसभीर ( सं. ) बारिच, उत्तरा-

भरि ( सं. ) काखीमीरव, सफेदमिर्च एक प्रकारकी औषधि विशेष ।

भरीवुं ( क्रि. ) बसकहोवा, मृत्युसमान दुःखपाना, ठंडाहोना

भरीवुं ( क्रि. ) झुद्धमनसे अपना साराबल्लगाना ।

भरीवुं ( क्रि. ) बमण्ड, पूर्वक कुछ बकते रहना ।

भरीने भंभाणवे। बेबाय गरीब रहकर जीवित रहना अच्छा किंतु भनवान होकर मरना ठीक नहीं ।

भरी भखे। ( सं. ) मिर्चमसाल, बढाकर कही हुई बात ।

भरी भसावे। भरवे। ( क्रि. ) अतिशयोक्तिपूर्वक कथन, बढाबढा कर कहना, नमक मिर्च मिलाना ।

भरिथे-डीने। ( सं. ) चूड़ीवाला, चूड़ी बेचने और पहिरानेवाला, मणिहार ।

भरि-दी ( सं. ) पर्णकुटी, छोपड़ी, मैथिया, पर्णशाख, कुटिया ।

भरि। सं. ) मरहटो भाषा, महाराष्ट्र देशकी लिपि और भाषा, एक प्रकारका वृक्ष, औषधि विशेष ।

भरि। ( सं. ) मरहटा, महाराष्ट्रस्थ ।

भरि ( वि. ) मृत, मराहुवा, मोमई ।

भक्ष ( सं. ) मृत्यु, समान दुःख,  
 बुरी हालत, दुर्दशा, अत्यंत क्लेश ।  
 भक्ष ( सं. ) ऐंठ, बल, स्वरूप,  
 आकार, ढोल, दंग, ढाँचा, अकड़ ।  
 भक्षयु ( कि. ) देखो भक्षयु ।  
 भक्षन ( सं. ) मार्जन, स्नान,  
 महान ।  
 भक्ष ( वि. ) नाशवन्त, काळवश,  
 अनित्य, मरणाधीन, मरणधर्मा,  
 ( सं. ) मनुष्य, आदमी, मानव ।  
 भक्षन ( सं. ) मलन, रगड़न, घिसन ।  
 भक्ष ( सं. ) रहस्य, भेद, अमि-  
 प्राय, आशय, सन्निधस्थान, जीवन-  
 स्थान, गुह्य, अंतःकरण, तात्पर्य ।  
 भक्ष ( वि. ) मर्मवेत्ता, रटस्यह,  
 तात्पर्य ज्ञाता । [ अर्थ, गुह्यार्थ ।  
 भक्षभेद ( सं. ) गूढ़ अर्थ, गुप्त  
 भर्त्ता-गु ( वि. ) महत्वपूर्ण, रह-  
 स्ययुक्त ।  
 भक्षक्षीय ( सं. ) सुखाढता, वि-  
 नय, लज्जा, शर्म, शोक ।  
 भक्ष ( सं. ) देखो भक्ष  
 भक्ष ( सं. ) मँगिया या कँचुकी  
 का छाती ऊपर का भाग विशेष ।  
 भक्ष ( सं. ) मसहई, दूध के ऊपर  
 गरमी के कारण जमी हुई बर ।  
 भक्षयु ( कि. ) इसना, मन्दमन्द

हास्य करना, मुस्काना, प्रफुल्लित  
 होना ।  
 भक्षायु ( कि. ) इसना, खिलाना,  
 प्रफुल्ल करना, प्रसन्न करना ।  
 भक्षयु ( कि. ) इसना, मुस्काना,  
 मन्दहास्यकरना, खुश होना ।  
 भक्षयु ( सं. ) मटकी (छाछकी) ।  
 भक्षयु ( वि. ) गर्ब में और किसी  
 दर्प में चकता फिरता । छठमें  
 किसी उमंग में चकता हुआ ।  
 भक्षभ ( सं. ) लेप, प्लास्टर, अक्केह,  
 दरद पर लेपन करने की दवा,  
 सरहम, मसहम, मसम ।  
 भक्षभपटी ( सं. ) मसहमपटी,  
 मसम लगाकर पटी बांधना, सातौर  
 तवज्जोह ।  
 भक्षभामर ( सं. ) माकड़ार देशका  
 उत्तम चन्दन काष्ठ ।  
 भक्षभामर ( सं. ) चन्दन का कु-  
 गन्ध, उत्तम से उत्तम सुगंध ।  
 भक्षभ-दे ( सं. ) दूध के ऊपर  
 जमी हुई बर, सार, सत्व, तत्व ।  
 भक्षभे ( सं. ) भुंखभे देखो ।  
 भक्षभे ( सं. ) मिष्ट भावार्थ,  
 प्यारी लगे बैसा बार्ताबाय,  
 बादुकारी ।  
 भक्षयु ( कि. ) दुखारना, 'पुष्क-

कारना, प्रयुक्ति करना, अतिशयोक्ति करना ।

अध्यायो-वर्ग ( सं. ) अतिशयोक्ति, हुकार, पुनकार, पूर्ति ।

अधिका ( सं. ) राणी, महाराणी, साम्राज्ञी, योगरा, पदविशेष ।

अधीष्ट ( सं. ) मल्लीदा, चूरमा, एक प्रकारकी मिठाई, खूब घृत और शर्करायुक्त गेहूं के आटे का पदार्थ विशेष, तरमाल ।

अधिन ( वि. ) मंला, धुंधला, अस्वच्छ, उदास, मलयुक्त वस्तु, मलयुक्त, कुण्ठवर्ण, पापगति, गंदा, धूमित, साफ नहीं ।

अधिनता ( सं. ) मालिन्य, विरस्ता अप्रफुल्लता ।

अधीष्ठा ( सं. ) देखो अधीष्ठातर ।

अधीष्ठा ( सं. ) वास लकड़, हलादि नदीमें बहना ।

अधु ( सं. ) उत्तम, बेष्ट, अच्छा अथ, आश्चर्यकारक, मुलक, देश, बतन । [ श्रीमान्, सज्जन पुरुष ।

अधिक ( सं. ) अमीर, उमराव, अधिक ( सं. ) देखो अध्याय ।

अधीष्ठ ( सं. ) देखो अध्याय ।

अधीष्ठ ( सं. ) चर्कमें जुमाते समय माल न सरक जाने इस धास्ती

कलाई हुई पोखी नलिकारं किन्हें पोखा भी कहते हैं ।

अध ( सं. ) पड़लवान, कुलीवान पृष्ठ बलवान मनुष्य, पंडा, जवान ।

( वि. ) मजबूत हृष्टपुष्ट, कसस्ती ।

अध ( सं. ) छोटे बेर ।

अध्याय ( कि. ) समाना, मरना, समाजनेका उद्योग करना ।

अध्याय ( कि. ) पूर्ववत् ।

अध्याय ( कि. ) पूर्ववत् ।

अध ( सं. ) बहाना, भिस, निमित्त, मिथ्याकारण प्रदर्शन, छत्र, कैतब, कपट ।

अध्याय-संज्ञ ( सं. ) पानी भरनेके लिये बनाई हुई बकरे बकराकी समूची छाळ, चमड़ेका बहपान जिसे भिस्ती कमरपर रखकर पानी ले जाता जाता है । मच्छर, बांस ।

अध्याय ( वि. ) संलग्न, भिदाहुषा लगाहुषा, तल्लीन । [ ईसी

अध्याय ( सं. ) विस्मयी, मजाक, अध्याय-री और ( सं. ) दिग्गमि-

बाज हंसमुख, मजाकी, आनन्दी ।

अध्याय ( सं. ) रोसमी धारीधार रंगीन वस्त्र विशेष ।

अध्याय ( वि. ) विस्मात, प्रस्मात, प्रसिद्ध, जाहिर, प्रकट ।

भक्षामत ( सं. ) मेहनत भ्रम,  
परिभ्रम, मञ्जरी, मञ्जरी, रोच ।

भक्षामती ( वि. ) मेहनती, परिभ्रमी ।

भक्षाम्भु ( सं. ) स्मशान, मुरदाघाट  
मुर्दे जलानेका स्थान, मरघट ।

भक्षाम्भु ( सं. ) थोड़े धीके लड़ू,  
राखोदिया लड़ू ।

भक्षाम्भु ( सं. ) पूर्ववत् ।

भक्षाम्भु-ओ ( सं. ) मुर्दा उठा-  
कर स्मशानभूमिको लेजानेवाले,  
गंदा मनुष्य, म्लच्छ मनुष्य ।

भक्षाम-साध ( सं. ) पत्नीता, कपटे  
लपेटकर बनायाहुवा जवानेके लिये  
पत्नीता, उल्का ।

भक्षाम्भु-ओ ( सं. ) मसाल जला-  
कर प्रकाश बतानेवाला, पत्नीता  
उठानेका काम करनेवाला, हजाम

भक्षाम्भु ( सं. ) पूर्ववत्

भक्षाम्भु ( सं. ) देखो भक्षाम्भु ।

भक्षाम्भु ( सं. ) काजळ, निस्सी  
दांत साफ करनेकी दवा । जिसके  
रगड़नेसे काळे दांत हो जाते हैं ।

भक्षाम्भु ( वि. ) देखो भक्षाम्भु ।

भक्षाम्भु ( वि. ) देखो भक्षाम्भु ।

भक्ष ( वि. ) अधिक, विशेष,  
जियाद, आवश्यकतासे बहुत बना  
( सं. ) मस्सा, हजा, मांसच्छि  
मिस, बहाना, छद्म, कैतव, कपट

भक्ष ( सं. ) मक्कन, माक,  
नवनीत । सुशामक, चापकसी, ।  
लक्षो पत्तो ।

भक्ष ( सं. ) सुशामक  
करना, मिथ्या प्रशंसाद्वारा प्रसन्न  
करना, चापकसी करना, लक्षोपत्तो  
करना ।

भक्ष ( सं. ) ताना, उपात्म,  
उल्लाहिना, दूसरेको कोष हो ऐसी  
बात कहना ।

भक्ष ( वि. ) मोटा, निश्चित,  
पृष्ट, मस्त, बेपर्वाह ।

भक्ष ( सं. ) चमण्ड, गर्व, वा-  
चस्व, बदी, बुराई, बुकसान ।

भक्ष ( वि. ) हानिप्रद, बुरा  
बुष्ट ।

भक्ष ( सं. ) गारी, तस्त, सिंहासन

भक्षभक्ष ( वि. ) अत्यंत सुगन्धयुक्त ।

भक्षभक्ष ( वि. ) सुगन्ध फैलना,  
महंकना, लुगबू उठना ।

भक्ष ( सं. ) देखो भक्ष ।

भक्ष ( सं. ) सलाह, विचार,  
इरादा, मनसूबा, परामर्श ।

भक्षभक्ष ( सं. ) मंत्री, सलाह-  
कार, परामर्शदाता ।

भक्ष ( सं. ) गर्भस्थिति, गर्भके  
दिन, मास, महीने ।

भक्ष ( सं. ) एक प्रकार का  
पशुओं परकर, म्यूनीसिपल टैक्स  
विशेष ।

भस्मवाङ्म ( सं. ) पिछवाड़ा, घरका पीछेका भाग, घरका पृष्ठभाग ।

भस्मवाड़े ( सं. ) गाँवके पीछेका भाग ।

भस्मगुप्त ( वि. ) रगड़ना, भस्मलाना, बसाना, मिचोड़ना, गोंदना, गुं-दना, मार मारके अधमरा करना, मर्दन करना । [लाना, मर्दन कराना]

भस्मगुप्त ( कि. ) रगड़ाना, भस्म

भस्माक्ष ( सं. ) स्मशान, मरघट, मुर्दा जलाने का स्थान, भस्मान ।

भस्माक्ष अभाव ( कि. ) कोई आवश्यक कार्य के लिये पिछान हुआना ।

भस्माक्षभां अंश ( कि. ) मरना समाप्त होना, अंत्येष्टी संस्कार में जाना ।

भस्माक्षभांशो जेन्नी कड़ेबो ( वि. ) मृत, बिल्कुल अशक्त, मृतवत् ।

भस्माक्षिभो ( सं. ) देखो भस्माक्षिभो

भस्माक्षी ( सं. ) स्मशानवासी, दुष्ट नीच, स्मशान सम्बन्धी वस्तु विक्रेता ।

भस्माक्षो ( सं. ), भस्माला, विविध वस्तुएं, किसी पदार्थ को उत्तम बनाने के लिये अन्य पदार्थ विशेष, ममक मिर्च इ० ।

भस्माक्षो कड़ेबो ( कि. ) कुठना, मारना, कुचलना, बचाना ।

भस्माक्षो पुरेवो ( कि. ) हिस्सना, उस्काना, उभाड़ना, चलाना ।

स्फट्टी देना ।

भस्माक्षो अमरावो ( कि. ) पूर्ववत् ।

भस्मिष्ठा ( वि. ) मामाकी बहिनके, मौसीके ( पुत्र पुत्री इ० )

भस्मिष्ठा ( वि. ) मौसीकी ( पुत्री ) मामाकी बहिन की ( बेटी ) ।

भस्मी ( सं. ) वृक्षों पर रहनेवाला एक प्रकार का जीव, गणों में एक प्रकार का शैव जिससे उसके पत्ते काले हो जाते हैं । काबक, मिस्सी, काबक दंतमंजन ।

भस्मी ( सं. ) मास्जिद, लुहाको सिज्दा करनेका मंदिर, मकबरा, दरगाह ।

भस्मी ( सं. ) भस्म, भस्मा, भस्मा, इला, मासकृष्ट, रोगविशेष । हरक, अर्ध, पत्तोंपर उठी हुई छोटी गठनें ।

भस्मी ( सं. ) चिबड़ा, कपड़े के टुकड़े कपड़े के टुकड़े जो गरम वस्तु चूल्हे परसे नीचे उतारने के काम आते हैं ।

भस्मी ( वि. ) भस्मकत बंदर माह से संबंध रखनेवाला ।

भस्म ( वि. ) भस्मोष्मत्, नसे में उष्मत्, शरीर में पुष्ट, बलवान्, कामी, रसमम, पायक ।

भस्तीकृत् भुञ्जते ( कि. ) माषा-  
फोड़ करना, सिरपशी करना, सिर  
काटकर और देवताको भेंट करके  
पूजन करना ।

भस्तीवाक्ष ( वि. ) घमण्डी, अहङ्कारी ।

भस्तीर्षि ( सं. ) देखो भस्ती ।

भस्तीभोज ( वि. ) तूफानी, चंचल,  
मस्तान, उन्मत्त ।

भस्तीन ( सं. ) बैठक, तख्त, सिंहा-  
सन, तकिया, तोपक, मसंघ, खोटेन ।

भस्तीभू ( वि. ) मुलतबी, बन्द,  
हिल में डालना, थोड़ी देरको  
ठहराना ।

भस्ती ( वि. ) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य,  
पूज्य, माननीय, श्रेष्ठेय, भारी ।

भस्तीभू ( सं. ) एक प्रकारकी  
आतिश बाजी, रुपलवण्ययुक्त स्त्री ।

भस्तीव ( सं. ) बड़ापन, श्रेष्ठता,  
उच्चता, प्रतिष्ठा, मानमर्यादा,  
महिमा, ऐश्वर्य्य, वैभव, प्रभाव,  
शोभा, गौरव ।

भस्ती-तार्षि ( सं. ) पूर्ववत् ।

भस्तीभुजुं ( कि. ) महंकना, सुगन्ध  
आना, खुशबू फलना ।

भस्ती ( सं. ) ताना, मर्मबन्धन,  
उपास्य, उल्लाहिना ।

भस्ती ( सं. ) पूर्ववत् ।

भस्ती ( वि. ) महादूर, प्रख्यात,  
प्रसिद्ध, नामांकित, विख्यात ।

भस्ती ( वि. ) महसूल विषयकी  
करसम्बन्धी । [ किराया ।

भस्ती ( सं. ) टेक्स, कर,

भस्ती ( वि. ) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ,  
महान् । माघनामक महीना ।

भस्तीनिधुं ( वि. ) बेधनी, छावा-  
रिश, अकारा । [ माघ ।

भस्ती ( सं. ) एक प्रकारका राग,

भस्ती ( वि. ) पराजित, हाराहुवा,  
जेलमें पड़हुवा, बंधाहुवा, रुकाहुवा ।

भस्ती ( सं. ) सप्तपातालमें से  
एक चतुर्थ अधोलोक ।

भस्ती ( सं. ) उपकारिता, उप-  
योगिता, प्रसिद्धि, बड़ाई, तारीफ,  
गुण ।

भस्ती ( वि. ) देखो भस्ती

भस्तीभाव ( सं. ) महाशय, प्रश-  
स्तदृश्य, विशालहृदय ।

भस्ती ( सं. ) संख्या विशेष,  
सफेद कमल, स्वेत पद्म ।

भस्तीभू ( सं. ) जो अक्षर कुल  
जोर लगानेसे बोले जावें, ख, ब,  
छ, झ, ठ, ड, ढ, ध, फ, भ, क्ष,  
ष, स, ह ।

भस्तीभारत ( सं. ) इस नामका एक  
बड़ा वीररस्य पूर्ण काम्य, पांडव

और कौरव के युद्धकी कथा का काव्यग्रन्थ, ( वि. ) कठिन, दुस्तर अपार ।

महाभक्षा ( सं. ) एक वनस्पति विशेष, अति बल्य नामक एक जीवधि ।

महाभीष्ट ( सं. ) पारद, पात ।

महाभो ( सं. ) वज्र, बोझा, भार ।

महाभाम ( सं. ) भाग्यशील, भागवान्, सदाचारसम्पन्न, सुश-  
किस्मत ।

महाभूत ( सं. ) पंचभूत, ( १ ) पृथ्वी, ( २ ) जल, ( ३ ) तेज, ( ४ ) वायु और ( ५ ) आकाश । परमात्मा, ईश्वर ।

महाभाटधुं ( सं. ) वह रात्र जो रात बिदा होते समय पापड़ और बड़ी ( मुंघोड़ी ) से भरकर भेजा जाता है ।

महाभारी ( सं. ) श्लेष्म, मिश्रचिका हैजा, चेचक, इन्फ्लुएंजा, मरी, वह रोग जिसमें लोग बहुत मरे ।

महाभौ ( सं. ) महान् बोझा, १९००० धनुर्धर बोझाओंके साथ अकेल युद्ध करनेवाला वीर ।

महाशब्द ( सं. ) देश विशेष, मगध-  
होके रहनेका देश, नर्मदाके दक्षिण

तथा कर्नाटकका उपरी प्रदेश भाग ।

महाध ( सं. ) परगना, जिल्हा प्रांत ।

महाधानी-हरी ( सं. ) जिल्हा अधिकारी, परगना आफिसर ।

महाधनुं ( वि. ) देखो भाटधुं ।

महाधानिकाथ ( वि. वि. ) सारे प्रांतमें ।

महाधत ( सं. ) हाथी हांकनेवाला फौलवान, हस्तिचक्र, हाथवान ।

महाधध ( सं. ) पूर्ववत् ।

महाधरो ( सं. ) अभ्यास, डेव, आ-  
गत, सहवास, व्यवहार, प्रचार, रीति, परिचय, परंपरागत, प्राकटीक

महाधाध ( सं. ) बड़ा प्रतिपादक वाक्य ( उपनिषदमें ) ।

महाधीर ( सं. ) हनुमान, बीरयोद्धा गहड़, जानियोंका अंतिम २४ वीं तोर्थकर । एक जैनसाधु ।

महाधय ( वि. ) उदार अच्छेदिऊका उदाग्वेग ( सं. ) दाता, महापुरुष महानुभाव, जनाब, श्रीमान् ।

महिना ( सं. ) गर्भ, हमल, गर्भ-  
स्थितिसे प्रसव होनेतकक दिन,  
दिन, बारह महीनोंका गंत, मास महीना ।

महिना रहेना ( वि. ) गर्भरहना दिन चटना, महीने चटना ।

भटिनाहार ( वि. ) प्रतिमास बेतन  
लेकर नौकरी करनेवाला ।

भटिनावारी ( सं. ) हरमहीनेका  
औंठ निकालना तथा लिखना ।

भटिनावाण्ड ( सं. ) गर्भवती,  
सगर्भा, पेटसे, हमलवाली ।

भटिनावाणो ( सं. ) देखो भटिनाहार

भटिनेभटिने ( कि. वि. ) प्रतिमास  
हरमहीने, मासे मासे ।

भटिनो ( सं. ) ३० दिनोका समय  
मास. १२ बोंवर्ष, देखो भटिना ।

भटिनेहारावो ( कि. ) बेतन नि-  
खय करना ।

भटिनारहेवा ( कि. ) गर्भ रहना,  
पेटरहना, सगर्भाहोना, ग्याभन  
होना ।

भटिनो आववो-बवो ( कि. ) ऋतु-  
काळ प्राप्तहोनेकी अवधि पूर्ण होना  
ऋतुमतीहोना, रजोदर्शन होना,  
मासिक बेतन मिलना ।

भटिभावान ( वि. ) यशस्वी,  
प्रतापी, तेजस्वी, प्रशंसनीय ।

भटियर ( सं. ) पीहर, आँके पिता  
का घर, मैका, काष्ठका जीव विशेष ।

भटियारी ( सं. ) दहीदूध बचने  
वाला डी, ग्याकिन, गोपी, बोखिन  
कुटुम्बकी पूजन करनेवाली स्त्री ।

भटियेर ( सं. ) देखो भटियर ।

भट्टी ( सं. ) पृथ्वी, भूमि, गऊ,  
गाव, एक नदीका नाम, छाछ,  
दही, ( कि. वि. ) भीतर,  
अन्दर में ।

भट्टीभट्टिनी ( सं. ) दधि मचन  
करनेकी हांटी या मटकी ।

भट्टुडी ( सं. ) महुवका छोटा वेद,  
शराब ।

भट्टु ( सं. ) महु ए का फूल,  
इसकी गराब बनती है ।

भट्टुडे ( सं. ) महुवा वृक्ष, एक  
वृक्ष विशेष ।

भट्टुवर-भावर ( सं. ) बाजीगरकी  
बोमरी, तुमडीका बाजा, साँप  
बालोंका पूगी ।

भट्टेराभा ( सं. ) समुद्र, सिंधु ।

भट्टेरासा ( सं. ) बड़ाभारी उस्ताह ।

भट्टेस्को ( सं. ) टोंका, पुरा, पाड़ा  
जलप्या, बाजार, चकका, मोहाल ।

भट्टे ( सं. ) स्वर्णमुद्रा, गिनी,  
पाउण्ड, साबरिन, गिरनी, १५ इ.  
का एक सिक्का विशेष ।

भण ( सं. ) कचरा, कूड़ाकैड,  
मैल, गंदीवस्तु, गू, मिछ, मक,  
पाखाना, इच्छा ।



भण्डारी ( सं. ) बहाबसे बची हुई  
कीच, मही रेती इत्यादि ।

भण्डुं ( वि. ) अत्यंत कीचड़युक्त,  
जरा मैला ( पानी ) ।

भण्डूभण्डुं ( वि. ) मैला, गंदका,  
अस्वच्छ । [ चूमलः ।

भण्डूसिधुं ( वि. ) जो मलको

भण्डु ( सं. ) सहवास, मिळाप,  
मुलाकात, जेहप्राति ।

भण्ठा ( सं. ) पैदायश, आमदनी,  
लाभ, कमाई, प्राप्ति, नफा, फायदा ।

भण्ठावडुं ( वि. ) मेळ भिलापी,  
मिलनसार, सामाजिक, बारबाश,  
जानन्ही, हंसमुख ।

भण्ठिये ( सं. ) संगी, साथी,  
सोहबती, मित्र, भाईबंधु, जोडीदार ।

भण्ठावसै ( सं. ) एक दूसरेके  
मिलते हुएप्रह, ( ज्योतिषशास्त्रे ) ।

भण्ठा ( सं. ) गुदा, मूळद्वार,  
बिछाद्वार, गांड, पन, पोद ।

भण्ठा ( सं. ) अधिकमास, पुरुषोत्तम  
मास, प्रत्येक दहाई वर्षके पञ्चात  
आनेवाला महीना, अधिमास, लौद

भण्ठा ( सं. ) दस्तसाक न  
होनेका रोग, मलबरोध, बद्धको-  
ष्ठ ।

भण्ठा ( कि. ) भेटने जाना  
मिलने जाना, दर्शनार्थजाना ।

भण्डुं ( कि. ) मिलना, प्राप्तहोना,  
आमदहोना, लाभहोना, पैदाहोना,  
पाना, साथहोना, एकत्रहोना,  
जुटना, एकमतहोना, सम्बंधहोना,  
प्रेमहोना, स्वभावगुण और बिसयमें  
समान होना, अंतरनिटना, भेद-  
भाव दूरहोना, अनुकूलहोना,  
आमनेसामनेहोना, हाथलभना, एक-  
रस होना, तालीनहोना ।

भण्ठाभाण्ठनीप्रोत ( सं. ) नाममा-  
त्रकाप्रेम, मुख देखकी प्रीति ।

भण्ठावसै ( सं. ) मेळ, प्रेम, प्रीति ।

भण्ठीपांती ( सं. ) भिलाप, संघ,  
ऐक्य, मिलती जुळती प्रकृति ।

भण्ठु ( सं. ) दस्तसाक, मल-  
रोग हीनता, पेट सफाई, भैळसुद्धि

भण्डुं ( सं. ) ओर, ज्ञातव्य,  
भिनुसारा, सवेरा, तद्का ।

भण्ठरी ( सं. ) पैच, चकर, फेर ।

भण्ठरी ( सं. ) पेचीदा, चकरदार ।

भण्ठावसै ( सं. ) कब्ज, बद्धको-  
ष्ठता, बद्धजमी, उदरमें मलबिकार

भण्ठा ( सं. ) वह पेळभाज  
जहां पर मल रहता है, मलबारा ।

भजिभाभई ( सं. ) उत्तम प्रकारका चन्दनकापेड़, या काष्ठ । यह मलयान्ध्र पर्वतपर माळावार प्रांत में पैदा होता है ।

भञ्ज ( सं. ) गाड़ीके पहियेमेका कीट, अंगन, हनुमान भैरव आदिकी मूर्तिपरका कीट, कपड़े भरनेका बैला विशेष ।

भञ्जने ( कि. बि. ) साथ. इकट्ठे, एक मत होकर, मिलकर ।

भञ्जाना ( कि. ) मिलाना. भेट करके आना ।

भञ्जाना ( कि. ) मिलजाना, इकट्ठा होना, दर्शन करके लौटना, सम्मिलित होना, जुटना ।

भञ्ज ( वि. ) पाने योग्य प्राप्त. हासिल करने लायक ।

भां ( अ. ) भीतर, मॉही, अन्दर, मे मध्ये, मंझार, सप्तमी विभक्तिका प्रत्यय, नहीं, ना, मत, न ।

भांभ ( सं. ) खटमल, स्वेदज जन्तु विशेष, बन्दर, कपि, प्रायः चार पाई और सोने बिछानेके बल्लोमें रहता है ।

भांभडी ( सं. ) बूल, चार्कमे काठका लगाबाहुवा छिद्रयुक्त टुकड़ा, मर्मा, चक्कीमेंकी वह लकड़ी जिसमें

कीला घुसता है, एक प्रकारका जीव मकड़ी, बेंदरिया, बेंदरी, मकंटी, भूरीभैस, एक प्रकारका चर्मरंग ।

भांभडी डूंडी ( सं. ) एक प्रकारका बड़ी पूंछवाला जीव जिसके मूत्रके लगजानेसे सफेद फफोले हो जाते हैं

भांभु ( सं. ) लाल मुहं तथा छोटी पूंछवाला बन्दर, मकंटी, कपि, कीश, वानर, शास्त्रामृग, बूजना ।

भांभु ( सं. ) देखो भांभ ।

भांभुडी ( सं. ) बहकाष्ट जिसमें खटमल घुस बैठते हैं ।

भांभ ( सं. ) मक्खी, मक्षिका ।

भांभ ( वि. ) आठके लिये व्यापारियोंका सांकेतिक शब्द । बड़े बड़े नगरोंमें किसी अवसरपर कांसीकी धाळीमें दो बालक बिभ्र बनाते हैं वह । एक नीच जाती के गलेमें कांड़ियां बांधकर भीख मांगती हैं । बाणोंको सवारना । पक्षी करना सिरके बालोंको बीचसे दो भागोंमें बांटना ।

भांभु ( सं. ) मिश्रुक, मिश्रारिन, संगती, देखो भांभु ।

भांभपडी ( सं. ) व्यापारियोंका जठारह संख्याका सांकेतिक शब्द ।

भांभस्थ ( सं. ) शुभकार्य, मंगल ।

भांभलिङ ( वि. ) शुभ अवसर,  
मंगलकारक, शुभप्रद ।

भांभु ( सं. ) विवाहकी मंगनी  
( लड़केवालेकी ओरसे । )

भांभिरी ( सं. ) मछवा, मछली,  
परुड़नेवाला

भांभ ( सं. ) खाट, पलंग, चारपाई  
पर्यंक, पीठा, खटोला, मंच,  
तख्त, तखत, चाँकी ।

भांभडे ( सं. ) देखो भांभे ।

भांभी ( सं. ) छोटी खाट, पीठा,  
खटिया, खटोला ।

भांभे ( सं. ) देखो भांभ ।

भांभर ( सं. ) मंजरी, बाँर, मुकुट  
कळी, कोडी, जूतोंमें धुखतला,  
चमड़ोंके टुकड़े जो जूतोंमें पैरों के  
आरामके लिये रखे जाते हैं ।  
मुँगोंके सिरके ऊपरकी कलगी ।  
जटा, बिल्ली, विलाव, बिड़ाव ।

भांभर ( वि. ) बिल्ली कीसी आँखों-  
वाला, कुछ पीळी आँखोंवाला  
भूरी आँखोंवाला, लुभा ।

भांभपुं ( कि. ) बिसकर साफ  
करना, भाँजना, भाँजना करना,  
शुद्ध करना ।

भांभेहुं ( वि. ) ठज्जवळ किवा  
हुवा, साफ किवाहुवा, भाँजित ।

भांटी ( सं. ) पति, स्वामी, धनी,  
वर, पुरुष, खाविद, असम ।

भांटीडे ( सं. ) पूर्ववत्, मनुष्य,  
पुरुषवर्ग, लोग ।

भांड ( सं. ) शोभाके लिये रखेहुए,  
पात्र । ( वि. ) मिथ्या व्यवस्था,  
( कि. वि. ) बड़ी कठिनातापूर्वक ।

भांडधु ( सं. ) गाँवके पासका पानी  
भराहुवा गड्ढा जिसमें भैंस सुजर  
इत्यादि पशु पड़े रहते हैं ।

भांडधुी ( सं. ) तजवीज, व्यवस्था ।

भांडभांड ( कि. वि. ) जैसेतैसे,  
बड़ी कठिनाईसे, सहज ही ।

भांडवत भंडरत ( सं. ) विवाह  
संस्कारके लिये मंडप बनानेका  
शुभ समय ।

भांडलिङ ( वि. ) छोटे छोटे राजा,  
चक्रवर्ती राजाका अधिकार मानने  
वाले राजा, करद राज्य ।

भांडपी ( सं. ) जकात लेनेकी  
जगह, घरके आगे बनाई हुई  
ऊंची बैठक, नवरात्रिमें घरका  
गांवके सिने दीपक रखनेकी लक-  
ड़ीकी शीवट । साबर-बर ।

भांडवी ( सं. ) नाकेदार, सायर बाज, जूकतलेबाजा, कन्या पक्षका मनुष्य (विवाहमें) बैठती ।

भांडपुं ( कि ) आरंभ करना, शुरू करना, रखना, युक्तिपूर्वक करना, लिखना, स्थापित करना, नायनिकालना, शोक प्रदर्शनार्थ नातेरिश्तेदारोंको एकत्र करना, सुलगाना, मड़काना, करना ।

भेभांडपुं ( कि. ) ध्यानपूर्वक समझना, जाना ५३भांडवा ( कि. ) पैरों चलनाजाना भांडभांडवी ( कि. ) बैठना, ३१भांडपुं ( कि. ) सुनना श्रवण करना, पातभांडवी ( कि. ) बात प्रारंभ करना नाभुं भांडपुं ( कि. ) नामे लिखना. दुकान भांडवी ( कि. ) नईदुकान खोलना, व्यापार आरंभ करना, वेइयावृत्ति करना, ( औरतांको ) भोटभांडपुं ( कि. ) मुहंलगकर पीना, संसार भांडपु ( कि. ) ग्रहस्थाश्रममें पटना ।

भांडवे ( सं. ) मांडवा, मण्डप, मढ़वा, लतामवन, आच्छादित भवन, विवाह इत्यादि उत्सवोंपर बैठनेके लिये बनाईहुई बैठक ।

भांडवे छमे बवे ( कि. ) विवाह योग्य लड़की होना । [ पदार्थ ।

भांडा ( सं. ) एक प्रकारका कानिका

भांडीवाणवुं ( कि. ) बनाहालना करहालना, देहालना, रचना ।

भांधु ( सं ) मोयण, मोवन, किसी पदार्थमें नरमाई पैदा करनेके लिये उसके बनानेके पूर्व उसके आटेमें तेल अथवा घृत मिळाना, ईख, जुवा, इत्यादिका विण, सॉठके ऊपरका भाग, अच्छी तरह रखे हुवे पात्र, पानी भरनेका घड़ेसे बड़ाकर्तन । [ अस्वस्थता ।

भाइगी ( सं ) बीमारी, रोग, पीडा

भांडु ( वि. ) बीमार, रोगी, अस्वस्थ ।

भानत ( सं ) देखना भूत

भाय ( कि. वि. ) भीतर, अंदरमें ।

भांस ( सं. ) पलल, अभिष, गूरा, गोदत, मास, मिष्टी ।

भांडि-हे ( कि. वि. ) देखो भांय ।

भांडेधुं ( वि. ) अंदरका, भीतरका ।

भाढोभाडे ( कि. वि. ) भीतरही-भीतर, घरमें, अन्दर अन्दर ।

भां ( अ. ) तुरंतही, तत्क्षण, फौरन ।

भा ( सं. ) माता, जन्मदातृ, जननी जनैता, बूढ़ा कियोंके लिये मान

सूचक शब्द, बाळिदा (कि. वि.)

नही, ता, मत्त, न ।

भा० (सं.) देखो भा ।

भा०ध (सं.) मील, आधीकोस,

५२८० फुटका माप, ८ फर्लांग ।

भा०भा०भा (वि.) मोटी, बड़ी,

महान् बृहत्, दीर्घ ।

भा०ने (सं.) मायना, अर्थ,

अन्वय, सार, मतलब, टीका ।

भा०ने (सं.) पूर्ववत् ।

भा०भा०भा (वि.) जनना, नामर्द,

साहसहीन, रेतिसूरत, नाजुक ।

भा० (सं.) देखो भव ।

भा०भा०भा (वि.) लालमुहंका, बंदर

कीशङ्कका, भंगूरशङ्क ।

भा०भा०भा (वि.) बाँकी मूछोंवाळा,

टेढी मूछोंवाळा ।

भा०भा०भा (सं.) मखली, मसिका,

पारदर्शक, पंखवाळा छ पेंरोंका

एक जीव । [ होना ।

भा०भा०भा (कि.) अपसकुन

भा०भा०भा (सं.) होन दशमें

होना, धंगली, निर्धनता, वारिप्रिय

भा०भा०भा (कि.) कं-

जूसीकरना, कृपणता करना, अति

शय करिणी अथवा हीन दशमें

होना ।

भा०भा०भा (कि.) बाळे बैठना,

निरुपयोगीहोबैठना, सुस्तहोना ।

भा०भा० (सं.) मक्खन, माखन,

नवनोत, ताजा ची, खुशामद,

भा०भा०भा०भा (वि.) खुशामदी,

चापलूस, नरम, पानमें लगानेका

उम्दा बेकंकरोंका चूना, मक्खन

बेचनेवाला ।

भा०भा०भा०भा०भा (कि.) खुशामद,

करके प्रसन्न करना, स्वार्थके लिए

बेहद चापलूसी करके स्वार्थ

सिद्ध करना ।

भा०भा०भा०भा०भा (सं.) मिष्टभाषण

द्वारा स्वार्थ साधक, बगुलाभक्त,

खुशामदी, मतलबके लिये हृदसे

अधिक प्रशंसा करनेवाला पुरुष ।

भा०भा० (सं.) पकाहुवा मान्य

जाळियानमें लाकर अन्नका तोळ

होकर सरकारका भाग चुकाना ।

भा०भा०भा०भा०भा (सं.) एकप्रकारका लड्डका

खेळ, गाढवकरमें सब लड्ड रक्क

दिये जाते हैं और जिसके ऊपर

मक्खी बैठती है उसमें लड्डमें सब

खेळनेवाले अपने अपने खूबोंका

आरोसे चोट मारते हैं ।

भा०भा०भा०भा०भा (सं.) एकप्रकारका

जीव जो मक्खियोंकी वकइता है ।

भाषे। ( सं. ) बड़ी हरेरंगकीमकली  
मकल, साँई ।

भाभ ( सं. ) मार्ग, राह, पथ, पंच  
सड़क, रस्ता, वाट, जगह, स्थान,  
अन्तर, फासला, पैरोंके चिन्होंको  
देखते हुवे चोरको हूँटना, खोज  
हूँटना ।

भाभः। ( कि. ) पैरोंको देख  
कर चोरी निकालना, चोरके पैरोंके  
निशानसे चोर पकड़ना ।

भाभधु ( सं. ) मेगता, भिक्षुक,  
भिक्षारी, याचक, भाटचारण ।

भाभधा ( सं. ) माग, उगाई,  
भावमें वृद्धि, लड़कीके विवाहके  
छिये पूछ, ताशके खेलमें मागलेना

भाभधीभाट ( सं. ) देखो भाभधु  
भाभधु ( सं. ) कर्ज, ऋण, देन,  
बधार, ।

भागतु ( सं. ) पूर्ववत्

भागध ( सं. ) चारण, भाट, कापटी  
कथक, नकीब, प्रसंशक ।

भागधी ( सं. ) मगध देशसम्बन्धी  
एक भाषाजो मगध देशकी है ।

भागधुार ( सं. ) लेनदार, अधि-  
कारी, हकदार, मांगनेवाला,  
भिक्षारी ।

भागनार ( सं. ) पूर्ववत्

भाभपुं ( कि. ) दिया हुआ वापिस  
देने को कहना, माचना, याचाकर-  
ना, चाहना, निवेदन करना, भीख  
मागना, दान चाहना ।

भाभभेठपरसवा ( कि. ) इच्छित  
वस्तुमिलना, मनोर्षपूर्ण होना ।

भागीसेवुं ( कि. ) मांगलेना, ऋण  
लेना

भाभु ( सं. ) देखो भाभधु

भाभु भावपुं ( कि. ) कन्यापक्षवालों  
से विवाह करने के लिये पूछना ।

भाभुंभीधपुं ( कि. ) विवाह करने  
की स्वीकृति देना ।

भाभुभेठपुं ( कि. ) विवाह कर  
ने का पुछना । [कावत, माघस्थान,

माघपटे। ( सं. ) माघमास में करने

भाभडे। ( सं. ) देखो भाभे।

भाभी ( सं. ) देखो भाभी

भाभे। ( सं. ) देखो भाभडे।

भाभधु ( सं. ) मछुहेकी स्त्री, मोई  
की स्त्री, भोयन, धीमरी,

भाभधुं ( सं. ) मच्छ, मोटी मच्छकी,

भाभधेभुंभाडीमन्ना नेवुं ( वि. )  
प्राण जाने योग्य ।

भाभी ( सं. ) मछली पकड़ने का  
धन्वा करनेवाला, मछवाहा, धीमर  
धीमर

भाजन ( सं. ) सीमा, दर, अङ्कुर ।  
 भाजम ( सं. ) देखो भाजम  
 भाजर ( सं. ) देखो भाजर  
 भाजरपाट ( सं. ) एक प्रकारका  
 सूतीवस्त्र, नादरपाट [ चावळ :  
 भाजरवेध ( सं. ) एक प्रकार के  
 भाजर ( सं. ) देखो भाजर  
 भाजपु ( कि. ) देखो भाजपु  
 भाष्ट ( वि. ) पिछ्छा, गत, भूत,  
 विगत, गुजराहुवा, गया, पहिलेका,  
 ( सं. ) बड़ीमा, दादी बूझाजी ।  
 भाष्टुक्ष ( ग. ) एकप्रकारकाफळ,  
 आषधि विशेष ।  
 भाष्टुभी ( वि. ) जिसे भाजूनखाने  
 की आदतहो, भाजूम काव्यसनी,  
 भाष्टुर ( वि. ) अन्धा, नेत्रहीन :  
 भाजे ( सं. ) लेही और काच मि-  
 लाकर उससे लपेटा हुआ धागाजो  
 पतंगडङ्गने के काम आता है,  
 भाजम ( सं. ) एक मादक पदार्थ,  
 भागकी धीमें भूनकर मसाळा इत्यादि  
 डालकर शकर की चाशनी में बना-  
 या हुआ पदार्थ विशेष जिसे खाकर  
 कौन नशेमें उल्लू हो जाते हैं :  
 भाजभशत ( सं. ) चोर अंधेरी  
 रात, तमाकूख रजनी, डरावनी  
 अंधेरी ।

भाजो ( सं. ) इज्जत, मान, अदब  
 सुल्हाहिवा, मर्यादा, अन्तर ।

भाट ( सं. ) छाछ, मठा. महीनोरस,  
 एक प्रकारकी माजी, हांड़ी, मृ-  
 त्तिका, कलश, छुराके लिये मांस  
 ( कि. वि. ) वास्ते, लिये ।

भाटरियो ( सं. ) चूने पत्थर इत्या-  
 दिसे नहीं बना हुआ कूवा, कट्वा  
 कूवा ।

भाटवी ( सं. ) मटुका, हंडी, हांड़ी,  
 मिट्टीका चढा, आषाढ तृतया के  
 दिन दान विशेष ।

भाटखुं पुरखुं ( कि. ) पापड़बड़ी  
 ( मगाड़ी ) लगका रुपया छुपारी  
 और सवापांचसेर गेहूं जो विवाह  
 के समय देते हैं ।

भाटी ( सं. ) मिट्टी, मृत्तिका, रज,  
 धूल, पति, स्वामी, बड़ा आदमी,  
 जबर वस्तु अनुष्य, मांस, आमिष,  
 गोस्त । [ राख होना, मरजाना ।

भाटी मवी ( कि. ) नोरा होखाना,

भाटी बीकवी ( कि. ) मिट्टी दबाना,  
 शव गाढ़ना, ऐब हांकना, ठंक्ना,  
 छुपाना । [ डुर, अनुष्य, पुरुषार्थी ।

भाटीडी ( सं. ) पुरुष, मर्द, बहा-

भाडी भाष्य ( सं. ) वह खदान जहाँ से लीपने के लिये मिट्टी खोदी जाती है । मिट्टी की कान ।

भाटे ( कि. वि. ) वास्ते, डिये, अँघे, कारण, सबब, इसलिये ।

भाड ( सं. ) एक प्रकारकी भाजी । तरकारी विशेष ।

भाडी भयश् ( सं. ) शोक सूचक बनाव, दुष्ट सम्बाध ।

भाडुं ( वि. ) सराब, बुरा, निकम्मा, कुछ कम, कुछ सराब, शोकप्रद ।

भाडुं आभुं ( कि ) अप्रसन्न होना नाराज होना ।

भाडुं क्षयुं ( कि. ) बुरा करना, अहित करना । [ न्यून ।

भाडेहं ( वि. ) थोड़ा, कम, अल्प,

भाड ( सं. ) नारियलका वृक्ष, मोहना ।

भाडधु ( सं. ) जत उत्सवादिपर क्रियों के माथेपर तथा गालोंपर रंग इत्यादि का लेपन, देखो भांडधु ।

भाडधुन ( सं. ) गोद लिया हुआ लड़का, बतक पुत्र ।

भाडभाड ( कि. वि. ) कठिनाईसे, मुश्किलसे ।

भांडसिंह ( सं. ) राजपुत्र, राज-कुमार, शाहजादा, राजा, समर्थ, बादशाह ।

भांडवी ( कि. ) देखो भांडरी ।

भांडवुं ( कि. ) देखो भांडवुं ।

भांडवे। ( सं. ) देखो भांडवे। ।

भाडा ( सं. ) ज्वार गेहूँके मिश्रित आटेकी एक प्रकारकी रोटी ।

भाडी ( सं. ) मा, माता, अम्मा, जननी, माजी, जनेता, बाबिया ।

भाडी वाणवुं ( कि ) कर डालना, निश्चय करना, ठीकठाक करना ।

भाडी ( सं. ) रोटीकी पपड़ी, बहुत बड़ी और पतली गेहूँकी रोटी ।

भाडुआं ( सं. ) प्यारेलुब्ध, प्रिय-जन ।

भाडुं ( सं. ) प्रिय, प्यारा, लज्जल ।

भाधु ( सं. ) धातुपात्र विशेष जो वाजोंके रूपमें प्रयोग होताहै, खमीर खाई, देखो भाधु । हव सीमा ।

भाधुभाठि ( वि. ) जो कुछ नहीं कमाता हो, आलसी, सुस्त बाहिल

भाधुडी ( सं. ) एकप्रकारकी घोड़ी, घोड़ीकी जाति विशेष ।

भाधुकाड ( सं. ) एकप्रकारका प्रायः कच्चाकर कया कहुनेवाला व्यक्ति ।

भाधुभाधु ( कि. वि. ) कैसे कैसे, मेव केन, देखो भाडेभाड ।



भाष्य ( कि. ) अनुभव करना, प्रयोगकरके देखना, अनुर्वाचना ।  
 भाष्य ( सं. ) अनुभव, मानव, अनुभव, आदर्श, इन्सान, व्याप्ति ।  
 भाष्यणी वर्षाभाषी निष्पत्ति ( कि. ) विविध जीवन निर्वाह करना, वामर्शहोना, अक्षयहोना ।  
 भाष्य ( सं. ) अनुभवता, अनुभवता, इन्सानियत, अलमनसाहत, विवेकदया, मर्दाई ।  
 भाष्यसम्पत् ( सं. ) मानवजाति ।  
 भाष्यी ( सं. ) १६ मणका माप, ताल विर्णव ।  
 भाष्यी ( सं. ) तेल, या भरेनेका मिष्टीका पात्र विर्णव ।  
 भाष्यी ( वि. ) विलास, भोगी, आनंदी, सुखभोगका चाहनेवाला ।  
 भाष्यीत ( सं. ) सुखस्थान, शान्ति भवन, आरामकी जगह ।  
 भाष्य ( सं. ) इत्य विशेष, माण, माणिक्य, इत्य, लाल, रक्तमणि ।  
 भाष्यी ( सं. ) शरदपूज्य, आश्विनशुक्ल १५, शरदपौर्णिमा ।  
 भाष्यी ( सं. ) मौख आनन्द ।  
 भाष्य ( सं. ) मा, मातृ, ज्वनी, ज्योति, ज्योति, ज्योति, देखो महत् ।

भाष्यी ( सं. ) देवी चित्की सवारी झुपी है, झुपीनी ।  
 भाष्य ( वि. ) पूजावाला, वनवा, ब्रह्मवान, श्रीमान, वैद्यावाला ।  
 भाष्यी ( सं. ) गौरव, आवद, इज्जत, श्रीमानता, बहुप्य ।  
 भाष्य ( सं. ) महात्म्य, उपकारिता, प्रसिद्धी बर्दाई । [ सूत्र :  
 भाष्य ( सं. ) वेद्याव, लघुसंका  
 भाष्य ( कि. ) शरीरमें माताजाना, कौपना, चिठवा, बर्गना ।  
 भाष्य ( कि. ) चित्ते चैतन्य पर बलसे मंदिर सा बनाकर उसमें बवाहरे ६० पूजा सामग्री रखकर शुभअवसर पर वासे बकाते जाकर देवीके मंदिरमें शिवा रख जाती है वह ।  
 भाष्य ( कि. ) गेहूं लो इत्यादि, एक पात्रमें बाँकर, देवीकी पूजा आरंभ करना ।  
 भाष्य ( वि. ) बायाल बहुत बोलनेवाला ।  
 भाष्य ( सं. ) याका बाप, ज्ञान ।  
 भाष्य ( सं. ) याताकी याता, जानी । [ सर्वार्थ ।  
 भाष्य ( वि. ) मत्त, यण्डुवा, कुछ  
 भाष्य ( वि. ) देवी भाष्य ।

भातेक्षु ( वि. ) खानपान से वृष्ट, देखो भातुंतातुं । [ मदमत्त ।  
 भातेबो साई ( सं. ) तूफानी,  
 भाभा ( सं. ) अक्षरों पर लगाने की  
 रेखायें, स्वर । धातुमत्स जो औ-  
 यधि के रूपमें काममें लाई जाती  
 है, मोताद, परिमाण, रसायन ।  
 भाभाओ ( सं. ) वह हक जोकि  
 साथ रहनेवाले देवर जेठके पाससे  
 बच्चोंके संचित द्रव्यमेंसे खाने पदि-  
 रने के लिये पिचवा ली मांगती है ।  
 भाभाई ( सं. ) भांजगड़, सिरपची,  
 क्यर्थ की बकलक ।  
 भाभाळी ( सं. ) पूर्ववत् ।  
 भाभाळी ( अ० ) प्रत्येक मनुष्यको,  
 हरेक आदमीको ।  
 भाभाई ( सं. ) देखो भाभाळी ।  
 भाभाईली-छ ( वि. ) सड़े होने  
 पर जिससे सिर फूटे । सिरदर्द ।  
 भाभाओ ( कि. वि. ) ममस्त  
 शरीर पर ।  
 भाभा अभाधु ( सं. ) वह कपड़ा  
 जिससे पारसी शिवा सिरके बाल  
 बांधती है, बाल बांधनेका पट्टा ।  
 भाभाओ ( वि. ) रजस्वला, बहुत  
 प्राप्ता, मासिकवर्धनुष्ण ।

भाभावली ( सं. ) सिरमें लगे सेल  
 इ० से साड़ी न बिचके इस लिये  
 साड़ी के नीचेकी ओर लगाया हुआ  
 वस्त्र, इस वस्त्रपर तेजसे पड़े हुए  
 धब्बे । आवक इजमत, मान ।  
 भाधु ( सं. ) सिर, मस्तक, कलाठ,  
 अग्रभाग, गर्दनसे ऊपरका भाग,  
 कपाल, खोपड़ी, प्रत्येक मनुष्य,  
 मुख्य सरदार, मुख्य स्थान, किसी  
 में वस्तुका ऊपरी भाग ।  
 भाभा वितार ( कि. वि. ) सिरसे  
 बोझा उतारने के तुल्य ।  
 भाभा पभरतु ( वि. ) जिसे अपने  
 सिर की कुछ चिंता न हो, जिसे  
 मृत्युका भी भय न हो । साहसी ।  
 भाभाणा कडा बवा ( कि. ) जति-  
 मय निरश्रुल होना, अवस्था सिर  
 दर्द होना ।  
 भाभाणा बागी भरे ओधु ( कि. वि. )  
 बहुत ही बुरा, जो बिलकुल असल  
 हो । अव्यंन कड़वी ( औषधि ) ।  
 भाभाणा आग धसाई कवा ( कि. )  
 बहुत दुःख सहन करना ।  
 भाभाणी पूमली रबी कपी ( कि.  
 वि. ) सिरपर भार सहते सहते  
 मजबूत होना,  
 भाभाणी पापली ( सं. ) अनेक  
 अवधानी, मनुष्य ।



भाषां हेतुवत् ( कि. ) गुस्ताकरना  
भाषां मोक्षवत् ( कि. ) बिना देखवार  
बन्दे होजाना ।

भाषां भाषवत् ( कि. ) गर्व दूरकरना  
नुकसान करना, दुःखदेना ।

भाषां काले भवत् ( कि. ) मित्राज  
बदजाना, गर्वसे फूलजाना, सिरमें  
पीड़ा होना, पिटाई चाहना ।

भाषां भाषभां भाषवत् ( कि. ) सर-  
माजानेसे सिर नीचाकरना, नीचा  
देखना । [ सिरमें खून निकालना ।

भाषां रंजवत् ( कि. ) बोटमारकर  
भाषां वेमणु भुजवत् ( कि. ) मरनेसे  
नहीं करना, किसीकाममें प्राणोंकी  
पर्वाह नहीं करना । [ जीव देना ।

भाषां शोषवत् ( कि. ) छरण जाना  
भाषां छलाववत् ( कि. ) हों या नो  
कहना, स्वीकार करना, सम्मति  
देना ।

भाषे अंशु ( सं. ) दबाव, बन्दना  
भाषे आववत् ( कि. ) रखलावहोना,  
जवाबदेही होना, उत्तरदायित्व  
होना, पतनका आकाशमें उड़ते  
समय कमजोर सिरपर होना,  
दोष जाना ।

भाषे भाग भटवी-भेभरी ( कि. )  
लोहमत लगना, कलंक लगना ।  
खेनोंमें डुरी फहावत होना ।

४९

भाषे भाग भटवी ( कि. ) कलंक  
लगाना, दोषाद्येषण करना ।

भाषे ( कि. वि. ) सिरपर, बड़ेके  
गुप्त ।

भाषे भाषरी भूरी भुभुवत् ( कि. )  
डुरी बालोंमें अगुसा होना, खरबटि  
कामोंमें पड़कर मॉजगड भबवा  
पंचायत करना ।

भाषे भाषवत्-भाषवत् ( कि. ) उत्तर  
दायित्वपर सौपना ।

भाषे भटाववत् ( कि. ) स्वीकार  
करना, संजूर करना, पाठना,  
प्रेमकरना ।

भाषे भट्टी भेसवत्-भाषवत् ( कि. )  
आज्ञा न मानना, दुःख देना, मर्मा-  
दा लगाना ।

भाषे भीषं जे नरहेवत् ( कि. )  
अर्जित गिरी दशामें पहुँच जाना ।

भाषे भोष्टवत् ( कि. ) कलंक लगाना  
कलिया-लॉछन जाना, छरण  
रहना, आश्रितहोना, पल्ले पड़ना ।

भाषे छाषा भाषवा ( कि. ) सिर-  
पर बड़जाना, सिरके बाक उकाड़-  
ना, दुःखदेना ।

भाषे छाषां वधवत् ( कि. ) सारे  
सिरपर बाक बड़जाना, हत्याकृत  
बढ़ना ।

भाधुं देवधुं ( कि. ) दुःखकरना  
भाधुं भोधुं ( कि. ) बिना देवना  
अग्नि होना।

भाधुं भाधुं ( कि. ) नव दूरकरना  
दुःखकरना, दुःखदेना।

भाधुं भाधुं ( कि. ) मित्राव  
वदना, पक्षे दूतना, सिरमें  
पीका होना, पिटाई बाहना।

भाधुं भाधुं भाधुं ( कि. ) मार-  
मामनेसे सिर नीचाकरना, नीचा  
देखना। [ सिरमें नय निकालना।

भाधुं रंभाधुं ( कि. ) बोटमारकर  
भाधुं वेमधुं ( कि. ) मरनेसे  
नहीं करवा, किसीकाममें प्रार्थना  
पर्यंत नहीं करना। [ जीव देना।

भाधुं भोधुं ( कि. ) छरण जाना  
भाधुं कभाधुं ( कि. ) हों या ना  
कहना, स्वीकार करना, सम्मति  
देना।

भाधे भाधुं ( सं. ) दबाव, दम्पना  
भाधे भाधुं ( कि. ) रजसावहोना,  
जवाबदेही होना, उत्तरदायित्व  
होना, पतनका आकाशमें उड़ते  
समय उड़ान सिरपर होना  
होना जाना।

भाधे भाधुं भाधुं-भाधुं ( कि. )  
हीनकरना, कर्मक कर्मना।  
कोशमें दुःख कर्मक होना।

भाधे भाधुं भाधुं ( कि. ) कर्मक  
कर्मना, कोशमें कर्मक।

भाधे ( कि. नि. ) सिरपर, कर्मक  
दुःख।

भाधे भाधुं भाधुं ( कि. )  
दुरी कर्ममें कर्मना होना, कर्मक  
कर्ममें पडकर मर्मक कर्मना  
पंचायत करना।

भाधे भाधुं-भाधुं ( कि. ) उत्तर  
दायित्वपर सौपना।

भाधे भाधुं ( कि. ) स्वीकार  
करना, मार करना, पाठना,  
प्रेमकरना।

भाधे भाधुं भाधुं-भाधुं ( कि. )  
जाह्न न जानना, दुःख देना, कर्म-  
वा लागना।

भाधे भाधुं भाधुं ( कि. )  
असंत गिरी दृष्टाये पहुँच जाना।

भाधे भाधुं ( कि. ) कर्मक कर्मना  
कर्मना-कर्मक जानना, उत्तर  
रहना, जाधितहोना, पक्षे पडना।

भाधे भाधुं भाधुं ( कि. ) सिर-  
पर बडवाना, सिरमें सक्त उडान-  
ना, दुःखदेना।

भाधे भाधुं भाधुं ( कि. ) सिर  
सिरपर सक्त बडवाना, दृष्टाये  
पहुँचना।

आयेगी। सुखी ( कि. ) दुःखमान करना, कराही करना, बिगाड़ करना, नासकरना ।

आये छेड़ा-नांभवे। ( कि. ) सर्वादा गद्दी रखना, धर्म न रखना ।

आये छेआ भूडे जेपुं ( कि. ) सुंदर, खूबसूरत, रूपवान, नयना-भिराम ।

आये छःछः उभवां आली छे ( कि. ) अत्यंत दुःखीमनुष्य अनेक विपत्ति जोको सहतेहुए व्याकुल हो कर यह वाक्य कहाकरता है ।

आये दाण्डी भेपुं ( कि. ) कोई काम अपने उत्तरदायित्वपर ले लेना ।

आये दाण ५३वी ( कि. ) बोझाको तेडोते सिरके बाल विसजाना ।

आये ५४ छे=आफत आगई है ।

आये ५५ ( कि. ) अनुमती होना, मासिक धर्म होना, रजोदर्शनहोना ।

आये दुस्मन आलवे। ( कि. ) शत्रु सबलहोना, दुस्मनका डर होना ।

आये नांभुं ( कि. ) सौपना सिपुर्द करना, अपने ऊपरसे जबाब देही दूसरेके सिर ढाडना ।

आयेबी छतारी नांभुं ( कि. ) मार दूर करना, बिम्बेदारी दूर करना, मुखपर बल झुलना ( सोफमें )

आये ५६ ( कि. ) सिरजाना, बिम्बेदारीहोना, हैबाद होना ।  
आयेपडी बिम्बेबा ( सं. ) मसितम्ब योगिकिना छुटकारा बही ।

आये भाषी हेरेवपुं ( कि. ) भूलमें गिरना, बिगाड़ना, दुःखमानकरना चढना, और सरस होना, मर्महोना कुछ न समझना । [ होना ।

आये भोड होवे। ( कि. ) अगवानी  
आये भोत भमे छे—मरने योग्यहुवा है, सिरपर मौत खल रही है ।

आये ६१ ( सं. ) कृपा, दया, मिहरबानी, आभय, आधार, रहम ।

आये ६२ होवे। ( कि. ) निराशा होना, सिरपर हाथ भरकर बैठ जाना ।

आये ६३ भूकेवे—हेरेवे। ( कि. ) आशीर्वाद देना, डुआ देना ।

आयेबी ८५से छतारेवे। ( कि. ) लालन दूर करना, कलंक कासिमा हटाना ।

आयेबी ८५से छतारेवे। ( कि. ) अपने सिरपरसे उत्तर दायित्व हटाना । [ न्यता, गम्भी ।

भा ( सं. ) नद, नका, अर्द्ध-भा ( सं. ) एक प्रकारका अण्डकपक, बाबरकड ।

आकस्मात् ( वि. ) किमत्क, एक प्रकारकी बाजी ।

आकस्मिक-निधुं ( सं. ) सातु १० की लोक कर्मके आकरका आसू-पन विशेष, सुखवन्द, गोठताबीज ।

आक्षि ( सं. ) पशुपक्षी इत्यादिमें खीजाति, जनाना, औरत ।

आहुं ( सं. ) बीमार, रोगी, अ-स्वस्थ, दुस्त, मन्द, सिधित ।

आभ्यान ( सं. ) दोपहर, दिनके १२ बजेके लगभगका समय, मध्याह्न ।

आहुकरी ( सं. ) ब्राह्मणको बनी बनाई रनोईका भोजनदान । बनी बनाई भिक्षापर गुजर करनेवाला ।

आभ्यभि ( सं. ) एक प्रकारके बौद्ध । [ कितान, ओहदा ।

आनन्धशम ( सं. ) आबल, पदवी,

आनन्धरी-हारी ( सं. ) माननीय पुरुष, गण्यमान्य पुरुष ।

अनन्दा ( सं. ) मानव, प्रण, प्रतिज्ञा, सैकठ विचारणार्थ अथवा मनो-कामना पूरी करनेके लिये देव देवीको अर्पण करनेका प्रण अथवा व्रत । [ औरत, लुगाई ।

आननी ( सं. ) अभिमानयुक्त स्त्री,

आननुं ( कि ) मानना, स्वीकार

करना, कबूल करना, ताबेमें होना,

इज्जत देना, सम्मान, जैक मानना

बुझ होना, कबूल होना, मान्य होना, स्वीकृत विवका, पूना, मरोका रचना ।

आनन्धुन ( सं. ) पुनान्धन कष्टन, सुविन्द, उत्तम कष्टन । [ कित ।

आनन्ध ( सं. ) मन, इन्द्र, मन्त्रा,

आनन्धेय ( सं. ) सेनापति । [ पूज्य ।

आनन्धुं ( वि. ) माननीय, मान्य,

आनी ( वि. ) अभिमानी, अहंकारी,

गर्वित, मगरूर । [ योग्य उत्तर ।

आनीयात ( सं. ) स्वीकार करने

आनन्दा ( सं. ) मान, पूजा,

स्वीकार, इज्जत, आबल ।

आनुनी ( सं. ) औरत, स्त्री, लुगाई ।

आनुकी ( सं. ) स्त्री, औरत, लुगाई ।

आप ( सं. ) नाप, तौल, परिमाण,

वजन, मान, भार, आबल, इन्द्र,

सीमा, शक्ति ।

आपक्रेयु ( सं. ) नाप करनेका

गमित, मेन्स्यूरेशन, रेखायणित ।

आपक्षी ( सं. ) तौल, नाप, परिमाण ।

आपक्षी आपक्षी ( सं. ) जमीन

नापनेवाला, मूलापक, सीमा स्थिर

करनेवाला, सर्वेचर ।

आपक्षी आपक्षी ( सं. ) जमीननापने

वालोंका विभाग, सर्वे विपरीत ।

भाषण ( सं. ) मेहुं खोरनेवाकेके  
खिचे खानेको घरसे भेजा हुवा  
मोजन ।

भाषण ( कि. ) नापना, मरना,  
तौलना, वजन करना, माप करना

भाषी भाषी—घैर किसल जाने  
से पृथ्वीपर गिर पड़ना, भाग  
छटना, सटक जाना ।

भापु ( सं. ) माप, अन्न इत्यादि  
मापने की जगह ।

भाष ( वि. ) क्षमाकिया हुवा,  
छेड़ा हुवा, मुआफ, क्षमित ।

भाष ( वि. ) योग्य, अनुसर,  
अनुकूल, बयोचित, मूजिब, ( कि.  
वि. ) प्रमाणे ।

भाषरै भाषण—बस रहने दीजिये  
मुझे तो बचने दो बाबा ।

भाषसर ( कि. वि. ) नियमानु-  
सार, रीतिपूर्वक, परिमित ।

भाष करण ( कि. ) क्षमा करना,  
मुआफ करना ।

भाष भांभवी ( कि. ) क्षमा चाहना  
मुआफी मांगना, विनय करना ।

भाषी ( सं. ) क्षमा, दयादान, सु-  
आफी, मोचन, मुक्ति, अपराधी

कोबण्ड न देकर उसे दयापूर्वक  
छोड़ देना, छुट्टी ।

भाषी भाषी ( सं. ) बिचः कृमि-  
पर सरकारी अमान्य नहीं, दान में  
या इनाम में दी हुई कमीन ।

भाई ( सं. ) मन्दिरकी छतरी के  
शकलकी गाड़ी, गाड़ी विशेष,  
बाहन विशेष ।

भाभ ( सं. ) खानेका कुछ पदार्थ,  
( बालकों की भाषा में ) । ममत  
धैर्य, दृढ, दृढता, आभार्य ।

भाभना बांधा ( सं. ) खाने पीने  
को नहीं मिलना, अत्यंत बीनता ।

भाभ भाभना बांधा-सांसा ( सं. )  
पूर्ववत् । [सफेद जगु, जीव विशेष ]

भाभभुडे ( सं. ) एक प्रकारका  
भाभभ ( सं. ) एक प्रकारका  
फल ।

भाभभत ( सं. ) कीमत, मूल्य, दम  
जीव, सत्व, सार, मत्ता, धनमाळ,  
साहस, नया काम, परगना अर्थात्  
जिलेकी माळ गुजारी की बसूळी,  
लोक रक्षण अथवा व्यवस्थाकार्य ।

भाभभतदारी ( सं. ) परगनेकी माळ  
गुजारी बसूळ करनेवाळा सरकारी  
आदमी ।

भाभभतदारी ( सं. ) माळ गुजारी  
बसूळ करने वाले का काम ।



भाभादेहा ( सं. ) देखो भाभादेहा ।

भाभादे ( सं. ) कामकाज, प्रसंग,  
काम, कौतुहारी कामचूच ।

भाभादे धुंधले ( कि. ) मारी  
मुकसान होना, मालमिलकियतकी  
हानि होना ।

भाभाभासीना ( सं. ) सम्बन्धियों  
का पक्षपात, रिश्तेदारोंकी मुहन्मत  
या तरफदारी, पक्षपात ।

भाभुल ( सं. ) रीति, बाल, रवैया,  
रस्म, रवाज. ( वि. ) साधारण,  
मानूकी ।

भाभुलभाल ( सं. ) देखो भाभुल ।

भाभे ( सं. ) प्रथम प्रसवके समय  
पुत्री और बालकके लिये माता  
पिताकी ओरसे भेजी हुई वस्तुएँ ।

भाभे ( सं. ) मामा, माताका भाई ।

भाभे ससरे ( सं. ) बर अवका  
बधूका मामा, सासूका भाई ।

भाभ ( सं. ) मा, माता, अम्मा,  
अम्मा, जननी, जनेतृ, ( सर्व. )  
मेरा ( कि. वि. ) मैं, अन्दर,  
माहि, भीतर ।

भाभने ( सं. ) अर्ध, टीका, मत-  
लभ, माय, आशय, भावना ।

भाभनेपुत ( सं. ) वीरपुत्र, स-  
हसी ।

भाभने-भाभु ( सं. ) मांजूकड,  
फलविलेख जो जीवजीने काम  
आता है ।

भाभे ( सं. ) झीकी माका घर,  
पीहर, पिबर, मैका, मातृगृह,  
देखो भाभे ।

भाभा ( सं. ) कृपा, मोह, दया,  
स्नेह, करुणा, अनुकम्पा, छळ,  
कपट, चोका सम्पाति, धन, योग  
ऐन्द्रजाल, ममता, आदिशक्ति,  
प्रपंच, छलमेह, जगतका रूपदर्शन  
नाटक, बुद्धदेवकी माता, कम्भी,  
मांग, बिबवा, मंग, तमाकू,  
तम्बाकू, गुदाकू, पूंजी ।

भाभाभाधी ( सं. ) मंग, मांग,  
मादक वनस्पतिसे तय्यार किया  
हुवा जल, जिसे ठंडाईभी कहते हैं ।

भाभाभमता ( सं. ) कल्या, दया ।

भाभाभेसो ( सं. ) कपटद्वारा मि-  
थ्याभावण, जैनियोंका १७ वां  
पाप । [ मांजूकड, जीवजी विशेष ।

भाभु ( सं. ) एक प्रकारका फल

भाभे ( सं. ) माया, धन, इच्छा, पूंजी ।

भाभे ( सं. ) प्रहार लगाई, ताकन,  
झपाटा, बहुतकामका बोझ, दुःख  
विपत्ति, आपदा, कामदेव, मन्मथ  
अवन ।

भारतभू ( वि. ) जिसकी मारनेकी  
देव हो, मरणा, ममानक, दारुण  
हृदयभरक, जो तुरंत प्रभाव  
दिखावे ।

भारतः ( कि. ) निधान, चिन्ह,  
मार्क, विपत्ति, आफत, संकट,  
दुःख । [ टुकना, मारसाना ।

भारतभावे ( कि. ) पिटना, कुटना

भारतु ( सं. ) मिसल, फाईल ।

भारत ( सं. ) मार्ग, मग, पंथ,  
पथ, राह, रस्ता, सड़क, बाट,  
न्याय, फैसला, निपटारा ।

भारतः ( सं. ) पूर्ववत् ।

भारती ( वि. ) इसनामका एक धर्म  
( काठियावाड़में ) मुसाफिर, यात्री  
बटोहि, जेभारभी सीधी गहका  
यात्री ।

भारत ( वि. ) पथिक, राहगीर,  
यात्री, मुसाफिर, मार्ग संबंधी ।

भारतभू ( सं. ) प्रस्तुता, कुर्ती,  
मुस्लीमी चाकसी, हुलस ।

भारतभू ( सं. ) मारमार करना,  
( कि. वि. ) जख्मीसे, सपाटेसे ।

भारतभू ( सं. ) पूर्ववत् ।

भारत ( सं. ) द्वारा, मध्यस्थता,  
साधनद्वार, उपाय, दखली,  
जरिया ।

भारतभू ( सं. ) मारफतसे हुआ  
हुआ, दखल, एजेंट ।

भारतभू ( सं. ) दखल, काह-  
तिया, एजेंट, मध्यस्थ कार्यकर्ता ।

भारतभू ( सं. ) कंगाल तथा  
दीन दरिद्र नम्र अनुष्य ।

भारतु ( कि. ) पीटना, कुटना,  
बिगाड़ना, जोरसे पटककर दुखपहुं-

वाना, बचकरना, प्राणलेना, किसी  
पदार्थके आधारसे किसी पदार्थको  
उगाना, धातु फूंकना छेदने कोई  
वस्तु घुसेड़ना, " डाटा मारना "

होड़ना, बाजी जीतना, हराना,  
कोलाहल करके लड़ना अथवा  
बहुमूल्य वस्तु चोरना, जीतना,  
बमनकरना, समन करना, अन्धर  
घुसेड़ना, बंद करना, फिटकरना,  
बड़ना, कुलशास्त्रके बीचका भाग

जमीन में गाड़ना, आंसे मटकना  
इशाराकरना, ६।५भारतु=एक  
कमाना, ६।५भारतु=तैरना,

पेरना ( पानीमें ) भाभाभाभारतु  
=कोईतकाजाकरे उसे बमन्ड  
पूर्वक उसकी वस्तु देदेना, ५।६

भारतु=एकाधा बहाकाय करना,  
भारतुभा तद्वार भारतु=बातेंकैनी  
चौरी, और करना करना कुछभी  
नहीं ६।५भारतु=देभारतु=एक

करना, बनकरना, प्राप्त करना,  
अभ्यास=किसी बड़े अपराधपर  
दृष्ट पक्षालाप करना ।

भाः वेतो हाथी ने छुट्टे वेतो भंडार  
( सं. ) मारना तो अपने से बलवान  
को निर्बल को मारने से क्या लाभ ?  
भारी हाथुं ( कि. ) मारकूट के  
भयादेना ।

भागीधाम ( कि ) चोरीसे छुग्कर  
रुपये पैसे मारलेता-हडपजाना ।

भारीने हाथ न धोवा ( कि. ) अ-  
तिसय निर्दय तथा क्रहोना ।

भारी भूध्रुव (कि.) ओरसे दौड़ाना,  
खूब प्राणान्त कह देकर छोड़ना ।

भारीप ( स ) नट । [ स्वयमका ।  
भाई ( सर्व ) मेरा, हमारा, खुदका,

भाई भाई ६२५ (कि) इस जग-  
तमे जन्म लेकर तेरा मेरा करते  
रहना ।

भा३ (सं.) एक देशका नाम,  
मारवाड, एक वीर रसात्मक राग ।

भादे ( सर्व ) मुझे, मेरेको, हमको ।  
 'भादेखु' ( वि. ) गाराहुवा, दमन  
 किया हुवा, जलाया हुवा, मस्मी-  
 भूत ।  
 भादे ( सर्व ) मेरा, हमारा, मम,  
 ( सं. ) गार, पीठ, लकड़े का लकड़ा

सत्ता, यह विद्या विधरसे होयके  
गोले चक्रे, जो मंत्र प्रयोगसे मुख  
पाये ।

भाष्यमयी ( सं. ) छिनाक, रण्ये,  
गुप्ती की, हरामजायी, बेइबा ।  
भाष्यमयीन ( सं. ) माकमसेकी  
जमानत देवेवाला व्यक्ति ।  
भाष्यमयीनकी ( सं. ) मालज-  
मीनका इफ्तर, कार्यालय ।  
भाष्यमयीनी ( सं. ) जमानत,  
मकद-जमानत, प्रतिभू ।  
भाष्य ( सं. ) मालिन, मालीकी पत्नी,  
फूल बेचनेवाली, एक प्रकारकी  
कुन्सी जो नाकके अन्दर होजाती है ।  
भाष्यदार ( सं. ) धनी, दौलतमन्द,  
इस्बपात्र, बहाल, सम्पन्न ।  
भाष्यधारी ( सं. ) स्वामी, प्रभु,  
मालिक, अधिपति, अधिष्ठाता ।  
भाष्यधूँ ( सं. ) माकपूवा, पकाव  
विशेष, आटेको मीठे पानीमें चोल्-  
कर फिर तेल या घी में तल लेते हैं ।  
भाष्यभ ( सं. ) नाव जहाज इत्या-  
दिका माल, उतरनेका हिसाब  
रखनेवाला, मल्लाहोंका सर्दार,  
साथी सगी, ( वि. ) जानाहुवा,  
वाकिफ, श्रात ।  
भाष्यभता ( सं. ) रोकड़, माल,  
अवयान, वस्तु, इस्ब, धन ।  
भाष्यभ वपुं ( कि. ) माकूम होना,  
श्रात, होना, वाकिफ होना ।

भाष्यभस्त ( वि. ) धनके गवेषे  
वर्जित, धनोन्मत्त लक्ष्मीपात्र, कुबेर ।  
भाष्यभिलत ( सं. ) देखो  
भाष्यभता ।  
भाष्यपनुं ( वि. ) तुच्छ, हलका,  
हीन, मालवेका, मालवी, मालवीय ।  
भाष्यपनी भाषा ( सं. ) शन्दराबंवर  
हीन भाषा, मालव देशका । माःबी ।  
भाष्यपु ( सं. ) छालकी हाडी या  
मट्टकी, ( मिष्टीका पात्र विशेष )  
( कि. ) ठाठ बाठसे आनंदपूर्वक  
यत्रतत्र भटकना, बिलकुल चिंता  
न हो इस प्रकार सुख भोगना ।  
निश्चित और आनंदपूर्वक जीवन  
ज्यतीत करना ।  
भाष्यि ( सं. ) स्वामी प्रभु, पात,  
धनी, सेठ, अधिपति, अधिष्ठाता,  
( वि. ) धन सम्पन्न ।  
भाष्यिवात ( सं. ) गन्ना, अदरक  
लहसुन इत्यादि ऊँचे दर्जेका बाग-  
वानी पदार्थ ।  
भाष्यीवेपुं ( कि. ) ऊपर फेरना,  
मकानके ऊँचेदखना ।  
भाष्यीव-स ( सं. ) मर्दन, रगड़,  
साहीस ( चोटेका ) साईस ।  
भाष्यभ ( वि. ) देखो भाष्यभ ।  
भाष्यभार ( सं. ) डेठ, कोली, चुल्हा ।

भावे ( सं. ) देखो भाषिनी ।  
 भावेकपक्ष ( सं. ) देखो भाषिनी ।  
 भावेय ( सं. ) देखो भाषीय ।  
 भावेस ( सं. ) देखो भाषीस ।  
 भाव ( सं. ) बनी, स्वामी, पति,  
 भर्तार, साविन्द, असम ।  
 भाववत् ( सं. ) संभाळ, देखरेक  
 ध्यान । [वर्षावृत्त के अतिरिक्त वर्षा  
 भाववृत्त ( सं. ) शीतवृत्त में अक्षर  
 भावविधि ( सं. ) माताकी ही आश्रम में  
 रहनेवाला पुत्र ।  
 भावडी ( सं. ) मा, ( प्यार में )  
 माता, माके समान प्रेम रखनेवाली  
 स्त्री । [महावत, पाँकवान, हाथवान ।  
 भावत-ध ( सं. ) हाथी हाँकनेवाला  
 भावत-विदर ( सं. ) माबाप,  
 मातापिता, बालक ।  
 भाववदर ( वि. ) गुह्यार, बलवान ।  
 भावु ( वि. ) मोतर बुझ सकना,  
 समाधान, प्रवेश करना, सीमा  
 में रहना, बरी उभराना ।  
 भावैतर ( सं. ) भावत-र ।  
 भावे ( सं. ) दूधको आगपर गर्मी  
 से उबका पानी उड़ाकर बनाया  
 हुआ गाढ़ा पदार्थ, खोब, खोवा,  
 माया, सत्व, सार, गुदा ।  
 भाववत्तु ( सं. ) एक प्रकार  
 की मिठाई ।

भावेक ( सं. ) प्रीति, स्नेह, माया,  
 बलता, बरोपा ।  
 भावुक ( सं. ) प्यारी स्त्री, प्रिया,  
 बलमा, प्रिय, रमण, बलम । ( वि. )  
 जिसके वास्ते जो अधिक प्रेम में  
 निमग्न हो । [ भावि ।  
 भास ( सं. ) महीना, माह, मांस,  
 भासभेदारी ( वि. ) बिम्बेदार,  
 जवाबदेह, उत्तरदाता ।  
 भासने ( सं. ) परीक्षा, इम्तहान,  
 परख, उत्तरदानित्व, जवाबदेही ।  
 भासने ( सं. ) नमूना, भानगी,  
 आकार, तरह, डील, आकृति,  
 रूप, कसौटी पर कसनेकी किस्म ।  
 भासने प्रीति ( सं. ) कठोर ज्ञान  
 के प्राणी, मुलबल मांसवुक जीव ।  
 भासा ( सं. ) पतिकी माताकी  
 बहिनका पति । मौसा ।  
 भासि-धी ( सं. ) माताकी बहिन ।  
 भासीसे ( सं. ) स्वर्गस्थ, मनु-  
 श्यकी आत्माकी तुल्यके लिये एक  
 वर्षपर्यन्त मासिक आदकर्म ।  
 भासेभास ( वि. ) प्रतिमास, हर  
 महीने, महिनके महीने ।  
 भासे ( सं. ) मासी कापति, माता  
 की बहिनका पति ।  
 भास ( सं. ) मास, महीना, ३०  
 दिनोंकी अवधि, मासमास, ( वि.  
 वि. ) अन्तर ।

भाषातम ( सं. ) महात्म्य, फल,  
रत्न, शोक, प्रताप ।

भाषात ( सं. ) नारेलका पेड़, राग  
विशेष, माद राग, मोंड ।

भाषात ( सं. ) सहमात, शतरंजकी  
अंतिमबाल, घोड़ी ।

भाषातम ( सं. ) देखो भाषातम,  
शोक, कदन, चिन्ता, दुःख ।

भाषावरी ( सं. ) अभ्यास, प्रेक्टिस,  
मुहाविरा, आदत ।

भाषाव'र ( सं. ) सक्ता, विशेष,  
दस करोड़, अरब, अर्ब ।

भाषित ( वि. ) भिन्न, विरु, झूठा,  
बाकिफ, जानकार, निपुण, दख ।

भाषितभार ( वि. ) जानकार, होशि-  
मार, चतुर, काबिल, योग्य ।

भाषितभार श्रु' ( कि ) जानना,  
समझना, बाकिफकार होना ।

भाषितभार श्रु' ( कि ) सुझाना,  
समझाना, अभिज्ञ करना ।

भाषितभारी ( सं. ) परिचय, जान-  
कारी, अनुभव, तजुर्बी, जान

पहिचान, निपुणता, बाकिफकारी ।

भाषिती ( सं. ) पूर्ववत् ।

भाषी ( सं. ) मछली मछली, मीन ।

भाषीपैर ( सं. ) मछली खानेवाला ।

भाषीपैरी ( सं. ) मछलीखाना,  
मछुवा, मछवाहा बीकर, डीमर ।

भाषी ( वि. ) दुखी ।

भाषी ( कि. वि. ) भीतर, अन्दर,  
मोंहि, मोंव, विवाह काकमें मृत्तिका  
के छोटे बड़े पात्र ।

भाषी ( वि. ) देखो भाषितभार ।

भाषी-भाषी' ( सं. ) वह स्थान  
जो विवाहके छिये बन जा गया हो ।

वर वधूके बैठनेका छोटासा मण्डप ।

भाषीभाषी-डे ( कि. वि. ) एक  
दूसरेमें, भीतरही भीतर, आस-  
पास, आपस आपसमें, छुपे छुपे ।

भाषी ( सं. ) मकानकी मंजिल, पुष्प-  
हार, माला, भेजी ।

भाषी-भाषी ( सं. ) सूत्र जबवा  
तारमें फाड़ल किसे हुए कागज,  
फाड़ल ।

भाषी ( सं. ) छप्परमें बत्तियाँ  
लकड़ी गेदे इत्यादि । मालीकीकी ।

भाषी ( वि. ) मालव देशका,  
मालवीय ।

भाषी ( कि. ) पासपास बत्तियाँ  
रखकर जन्हीके आधारपर छप्पर  
को रखना । भाषी ( कि )  
छपरे कबेछ केरना, छप्पर लकड़ी ।

भाषी ( सं. ) माला, स्मरणी, अर-  
माला, तसवीह, सुगरनी, मोती  
जबवा कलाक जबवा सुकनीके  
काष्ठकी माला । भेजी ।

भाषा देवी (कि.) सांसारिक कल्प-  
नीसे मुंह केर केना । ईश्वर मजन  
करना । [ करना ।  
भाषा ईश्वरी ( कि. ) ईश्वर मजन  
भाषानो भैर ( सं. ) मयुषा, लंडर  
अपेसर मयुष्य, मुखिया ।  
भाषाना भूषमा भूषा-बौदेजी गये  
कचेजी होने होगये दुन्देजी ।  
छेने गई बेटा और नो आई ससम ।  
भाषिये-भुं ( सं. ) बागला, मैदी,  
मेलरी, टांक, मजान, मांच, मंच ।  
भाषी ( सं. ) मागी, बागवान  
फूल हार बनानेवाला, एकजाति  
विशेष । [ विशेष ।  
भाषु ( सं. ) मेरा साला ( माळी  
भाषी ( सं. ) पक्षीका बोंसका,  
कंचा मकान, बौचा, खेतमें पक्षी  
आदि हानिप्रद जीवोंसे रक्षित  
रखनेके लिये एक खेतसे कंची  
अटारी । बड़े घर । [ बोली ।  
भाषाउ ( सं. ) म्याऊं, बिताकी  
भियु ( कि. ) बन्द करना, मी वना ।  
भियान ( सं. ) मेहनान, पाहुना  
भारति ।  
भियानी ( सं. ) पट्टवाई, मेह-  
मानी, भारिध, उजीपी,  
विवाक्य ।

भियम ( सं. ) मैकली, लप्ता,  
कचहरी, बैठक, मेला, मकानि ।  
भियम ( सं. ) कूल, भिन्नपर  
किवाय चमता है ।  
भियम ( सं. ) पूर्ववत् ।  
भियम ( सं. ) स्वभाव, आप्त,  
प्रकृति, मरजी, इच्छा, तस्मिन्,  
रंग, आवेश कोष, कामस, गर्व,  
दर्प, वमण्ड ।  
भियमको ( कि. ) कोष होना ।  
भियमको-वि-न होना ( कि. )  
रीय बढना, गुस्साआना, वमण्ड-  
करना । [ वमण्डी और गर्दित ।  
भियमको-वि-न ( सं. ) अत्यंत  
भियम ( वि. ) वमण्डी, विड-  
विडा, नाजुक प्रकृतिवाक्य, मजकर  
भियम ( सं. ) माप, मापक,  
अटकक, अन्दाज, जोड़, योग,  
छुमार ।  
भियम ( सं. ) देखो भियम ।  
भियम ( वि. ) देखो भियम ।  
भिय ( सं. ) सत्र, संतोष, तसली,  
आम्रित, भैर्य, सहनशीलता, जांच  
कामिजन, आगने सामने एकटक  
राहसे अवलोकन ।  
भियु ( कि. ) मिटवाना, नष्ट-  
होना, जातारहना, इदवाना, खूद  
होना, फेरपड़ना, मच्छे होना,  
बाक होना ।

मिथी शब्दकोश ( कि. ) हैरान होना, इज्जत बिगड़ना, नाशहोना ।

मिथीमां मिथी मन्त्री ( कि. ) देह पंचत्वको प्राप्त होजाना, मरजाना ।

मिथ्या ( सं. ) बकिया, कठिहारी, आत्मियन, चुम्बन ।

मिथुं ( वि. ) मिष्ट, मीठा, मधुर, मिष्ट भाषी, प्रियभाषी । [ स्त्रील ।

मिथुमर ( सं. ) नमककी चार्ई वा

मिथुमेधुं ( वि. ) मृदुभाषी, मिष्टभाषी ।

मिथुं ( सं. ) नमक, कवण, ( कि. वि. ) मिष्ट, मीठा, मृदु, प्रिय ।

मिथुं तेक्ष ( सं. ) तिर्छाका तेक्ष, देखीतेल ।

मिथुनिश ( सं. ) ताकी, शरबत मिली हुई शराब, एक प्रकारका मद ।

मिथुभात ( सं. ) मीठे चावक, केसरिया भात, गुद वा शक्करमें पकाये हुये चावक ।

मिथु ( वि. ) मोटा और मजबूत पुष्ट और दृढ़, मोटा ताजा । ( सं. ) चासस, गुप्तचर, हलफ़ारा, कासिद ।

मिथु ( सं. ) कपाळ के ऊपर गुंथी हुई बालोंके कट, कपाळकी बेनी ।

मिथि ( सं. ) बहपल्लु जिसके सौंख नीबेकी ओर झुक गये हों ।

मिथ ( सं. ) एक प्रकारका पल्ले जो छुम कार्यमें तथा दवामें काम आता है ।

मिथिमावण } एक प्रकारका वृक्ष  
मिथिमावण } जिसके पत्ते दवाके काममें आते हैं । स्वर्णमुखी ।

मिथुपट-६ ( सं. ) बहकपड़ा जिसपर वार्निश रोपनतेल, इत्यादि लगाया गया हो, मोमकपड़, मोम पोताहुवा कपड़ा ।

मिथुमती ( सं. ) मोमवत्ती, केण्डक एक प्रकारकी वत्ती जो सूतके धागेके चारों ओर मोमछपेट कर बनाई जाती है । मोमकी बनी हुईवत्ती ।

मिथुधुं ( सं. ) मोमपुता हुवा कपड़ा, मोमसप्यद, मोमकपड़ ।

मिथुधुं ( सं. ) छळ, प्रपंच, गर्व, बाळाकी, घमण्ड ।

मिथुधुं ( वि. ) बोझा बोझेवाला, धूर्त, कपटी, काठ, गरिष्ठ ।

मित ( वि. ) परिमित, बपाहुवा, चौका हुवा, निबमित, यथा प्रमाण ।

मिती ( सं. ) तिथि, दिन, वार, वासर, महीनेका अनुकदिन, तारीख ।



भिन्न ( सं. ) बन्धु, सखा, मित्र, मीत हिन्दू, स्नेही, प्रेमी, दोस्त वार, सोहृदती, साथी, आशिक ( लीका ) [ माझक ।

भिन्न ( सं. ) खली, अघना,

भिन्न ( सं. ) मैथुन, श्रीपुरुषका विषय संयोग, दम्पति, श्रीपुरुषका जोड़ा, युग्म, द्वन्द्व, तीसरी राशि, युगल ।

भिन्ना ( सं. ) असल, झूठ, अव-  
धार्य, व्यर्थ, निकम्मा, रीता,  
खाली । [ नहीं माननेवाला ।

भिन्नाधि ( सं. ) जैन धर्मको

भिन्नाध्याय-२१५ ( सं. ) झूठा

दोष, असल दोषारोपण, झूठीनिन्दा

भिन्नाभिभानी ( सं. ) बड़ाईदार,  
घमण्डी, गुमानी, अहंकारी,  
अभिमानी । [ माजारी ।

भिन्नी ( सं. ) बिलाई बिस्की,

भिन्नी ( सं. ) बिलाव, बिला,  
मांजार ।

भिन्नी ( सं. ) पूर्ववत् ।

भिन्नतन्त्री-वारी ( सं. ) तकाजा,  
हठ, जिह्, गौरव, बानगी, बिनती,  
मिसत ।

भिन्नभेद ( सं. ) पटवड, फेरफार ।

भिन्नभेद नहीं ( कि. ) कुछकुछ  
नहीं है । ठीक है, निश्चित है ।

भिन्नासे ( सं. ) अनवन, बेदिनी,  
ऊंचामन, खडपट, बिरोध, बैर,  
द्वेष, कार, अंतर्घ, अवाक्य, काह,  
कीना ।

भिन्नासे ( सं. ) रंग भरनेका  
कार्य, जड़नेका काम, कारीगरीका  
काम ।

भिन्नासे ( वि. ) रंग भरनेका  
काम करनेवाला, पच्चीकारी ।

भिन्नासे ( सं. ) मीनार, बुनै,  
कंगूरा, प्रसादशून्य, शुम्भन ।

भिन्ना ( सं. ) जडाक काम, नीमा ।

भिन्ना-या ( सं. ) देखो भीन्ना ।

भिन्ना भक्षाया पम्प रक्षा छे ( कि. )

पेछे नहीं भिन्ने तबतकही सीया है ।

भिन्नाभक्षादेवने भेभ ( सं. ) अनवन ।

भिन्नी भिन्नी ( सं. ) नामर्ह,  
पस्त हिम्मत, डरपोक ।

भिन्ना ( सं. ) देखो भिन्ना ।

भिन्ना ( सं. ) देखो भिन्ना ।

भिन्न ( सं. ) मुसलमानोंमें एक  
उप सित्ताव ।

भिन्ना ( सं. ) पूंजी, धन, दौलत ।

भिन्ना ( सं. ) दान, दिय, बपौती  
जगीर ।

भिन्नभीरे ( सं. ) बारिस, उतस-  
विकारी, मृत्युके अधिकारी ।

भिक्षु ( सं. ) दौलत, बचन, काशीर, वृत्ती, शब्द ।  
 भिक्षुसार ( वि. ) भेदी, भिक्षु, भिक्षुनेत्र, भिक्षुताहुवा ।  
 भिक्षुसारपङ्क्त-सारी ( सं. ) भेद, भिक्षु, भक्ष्यनसार, भुषीलता ।  
 भिक्षु ( सं. ) मुलाकात, मल, गेद, प्रेम, मित्रता, भिक्षु, संघ ।  
 भिक्षु ( वि. ) देखो भिक्षुसार ।  
 भिक्षु ( सं. ) समाज, समा, भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) भिक्षु, दातोके लगा-  
 नेका काका भिक्षु । दत्तभिक्षु ।  
 भिक्षु-भिक्षु ( वि. ) भिक्षु, भिक्षु  
 हुवा, धातुमेक, भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु  
 की एक पदवी विशेष ।  
 भिक्षु ( सं. ) बहाना, भिक्षु, वाका,  
 फरेव । भिक्षु, सद्ध, वाग ।  
 भिक्षु ( सं. ) मधुरता, मित्रता ।  
 भिक्षु ( वि. ) पामर, दीनहीन,  
 भिक्षु, गरीब, निर्दोष ।  
 भिक्षु ( सं. ) बहानाखोर, झूठा ।  
 भिक्षु ( सं. ) मिश्री, खाद्य,  
 शब्द ।  
 भिक्षु-साध ( सं. ) रीति, व्यव-  
 सथा, बुद्धि, तरह, व्यवसाय,  
 सद्गति उदाहरण ।

भिक्षु ( सं. ) जरीगर, बहुर  
 भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) देखो भिक्षु ।  
 भिक्षु ( वि. ) भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु  
 वाकीकी कृपिकीको उममें पदुच  
 नेपर हांतोंमें भिक्षु लगाना  
 अर्थात् उसे बेरवाके धन्वेमें प्रवेश  
 काना ।  
 भिक्षु ( सं. ) देखो भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) देखो भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) भिक्षु, मार्गरी, लगर  
 जहाज, ठहरानेका मोटा रस्सा ।  
 भिक्षु ( सं. ) देखो भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) बीचके भीतरकी गिरी,  
 गर, मावा, मगज, गर्भ, गूहा,  
 जाहज ।  
 भिक्षु ( कि ) बन्द करना, सिको-  
 जना, समेटना, सकोचन करना ।  
 भिक्षु ( सं. ) देखो भिक्षु ।  
 भिक्षु ( सं. ) दृष्टि, नजर, आंख,  
 नेत्र, तयोर ।  
 भिक्षु ( वि. ) बलिहारी जाना,  
 न्योछावर करना, बारना ।  
 भिक्षु ( सं. ) वह बन्दर गाह  
 जहाँ नमक पकाया जाता हो ।  
 भिक्षु ( सं. ) अक्षरमुक्कन, अक्षि-  
 नन, होंठमुक्कन । ( वि. ) भिक्षु,  
 मृदु, प्यारी, स्वादिष्ट, प्रेममुक्त ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) बृहन्नामक,  
बृहन्नामक तथा भाष्यवती ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) धर्मना, पुष्पना  
करना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) ब्रह्मधर्मना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) नमक ( समुद्री )  
( वि. ) एक प्रकारका स्वाद,  
सद्य, सारा, रुदु, मृदु, प्यारा,  
पसंद, सौम्य, कोमल, प्रसन्न,  
अन्यत्र ।

श्रीमद्भगवद्गीता भगवद्भगवद्गीता ( कि. )  
नमक भिन्न भिन्नाना, सुंदर बनाना  
बुराभासकरके प्रिय करदेना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) क्रोध आना,  
नमक भिन्न भिन्नाना । तेज होना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( वि. ) सहवास योग्य  
प्रेम करने योग्य ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) शून्य, बिन्दु, ०,  
अनुत्पन्न, कुछभी नहीं, रही ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) रद्द करना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) रद्द होना,  
व्यर्थ होना । [ रद्द कर देना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) निष्काश देना,

श्रीमद्भगवद्गीता ( वि. ) मकार, नाकाक,  
सिरा, घूर्त, बहुर, कपटी ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मोम, बबु मक्खीके  
निर्मित कर्तव्ये लोचन मक्खीके  
कर्म है ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) लोका ब्रह्म  
बहुलक, निरुद्ध ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) विष्णुना-  
ना, नम होना, बरम पदनामा ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) कृष्ण कृष्ण,  
बेहद मारना, हृत्पसदी धीवी  
करना, स्व परिधम कराना,  
बकाना, तेज निष्काशना [ करदेना ।

श्रीमद्भगवद्गीता नाभुं ( कि. ) मुक्तवम

श्रीमद्भगवद्गीता-भाष्य ( सं. ) मोम  
कपक, बहुकपकानिपर मोम  
पोता गयाहो । [ केकड ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मोम बली, केकड

श्रीमद्भगवद्गीता ( कि. ) उद्धाना, पुराना,  
कोष चडना, नशाचडना ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) देको श्रीमद्भगवद्गीता ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मद, विद, जहर,  
नशा, मत्तवाकापन, मस्ती ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मच्छी, मछली, मत्स्य,  
१२ वीं राशी, विष्णुका अवतार  
विशेष, कबजेकी भमिका हह  
अथवा सोमा, पक्ष, बायू, ओर  
तरफ ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मच्छी, मछ, मच्छी ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) मोलाचदा, मोला  
बहुत, [ निष्कल ।

श्रीमद्भगवद्गीता ( सं. ) विपत्ती, शर्वक,

भौरी (सं.) मार्जारी, बिल्ली, बिकार्ई ।  
 भौने (सं.) मरकतमणि, काचके  
 समान चमकदार वस्तु विशेष ।  
 भौषा (सं.) बचन पुरुष, सुसज्ज-  
 मान पुरुषके लिये मानसजक शब्द ।  
 भौर (सं.) अमीर, सवार, राजा,  
 ताशके पत्तोंमें बादशाह, उत्तम,  
 श्रेष्ठ, एक प्रकारके भिक्षुकोंकी  
 जाति । [ रक्षक, दूत, हरकारा ।  
 भौरधे (सं.) राजाका मुख्य देह-  
 भौरज (सं.) राजकुमार, युवराज ।  
 भौरासी (सं.) एक जातिके भिक्षारी ।  
 भौध (सं.) सूत कातने तथा  
 कपड़े बुननेका कार्यालय, पक्ष,  
 तह, हल ।  
 भौध भौधवी (कि.) पक्ष तय्यार  
 करना, हल बांधना, मंजली बनाना ।  
 भौसी (सं.) देखो भौसी ।  
 भुंभु (सं.) रांघे हुए चांवखोंमें  
 नमक मिर्च मिलाकर बनाई हुई  
 रोटी । एक प्रकारकी रोटी ।  
 भुंभु (वि.) मूक, गूंगा, अवाक्,  
 चुप चाप, मौन, गुपचुप ।  
 भुंभे (सं.) दो मूँलोंके बीचका  
 ओठके ऊपरका भाग ।  
 भुंभु (सं.) मूँल, मुच्छ, ऊपरे  
 ओंठके बाह ।

भुंभु (सं.) एक प्रकारका चास  
 मूँल, पवित्र चास इसकी बोरी  
 बनाकर जनेऊके सबब पहिनी  
 जाती है तथा संघाती पर इससे  
 मृतकको भी बांधते हैं ।  
 भुंभे (वि.) मृत, मराहुषा,  
 गत स्वर्गलोकस्थ, प्राणहीन ।  
 भुंभे (वि.) भुंभे के काटे जाँरे  
 शरीरपर सफेद बाल होऐसा (बैल)  
 भुंभु (सं.) देखो भुंभु ।  
 भुंभु (कि.) देखो भुंभु ।  
 भुंडी (सं.) बाईमनका तौल, परि-  
 माणविशेष, एक प्रकारका तौल ।  
 भुंभु (कि.) शिष्य होना, हजा-  
 मत बनवाना, ठगै जाना ।  
 भुंभे (सं.) देखो भुंभे ।  
 भुंभे (सं.) अभिभोग, मुक-  
 रमा, केस, दावा, कामकाज ।  
 भुंभे (वि.) निश्चित, ठहराया  
 हुवा ।  
 भुंभे (कि.) स्थापित करना,  
 कायम करना, स्थानांतरण करना ।  
 [ लगाना, जड़ना ।  
 भुंभे (कि.) नष्ट जाना,  
 इन्कार कर देना, अस्वीकार करना,  
 ना करना ।  
 भुंभु (कि.) रसना, एक वस्तुपर  
 दूसरी वस्तु रखना, डालना, छोड़ना,  
 स्थापना, सौंपना, सिपुर्ब करवाना,

मेकना, ध्यान न देना, बाकी रखना,  
कमी करना, शोध त्यागना ।

मुभडी ( सं. ) ठेका, कन्वेक्ट ।

मुभडेभ ( सं. ) मुखिया, नायक,  
अग्नेसर, जमादार, सरदार, दरोगा,  
ओम्हरसीबर, सुपरिण्डेण्डेड, सुपर-  
बट, एजेण्ट ( बन्दरगाहोंपर ) ।

मुभडेभी ( सं. ) जमादारी, सरदारी ।

मुभडेभ ( वि. ) सादर्य, समान ।

मुभडेभो ( सं. ) तुलना, समानता,  
सामना, बराबरा, आमनासामना,  
दृष्टान्त, उपमा, उदाहरण ।

मुभडेभु ( कि. ) छुड़ाना, अलग  
करना, पृथक्करण, हटाना ।

मुभडेभु ( कि. ) छूटना, छूट सकना,  
तुड़ाना, अलग होना, नभ होना ।

मुभडेभु ( कि. ) देहाटना, छोड़  
देना, त्यागदेना, रखदेना ।

मुभडेभ-२ ( कि. वि. ) मुकरर,  
निश्चित, निश्चय, निरसन्देह,  
अवश्य ।

मुभडी ( सं. ) मुठ्ठी, मूठी, मुक्का,  
कुस्सा धूँसा, मुष्टिका प्रहार ।

मुभडे ( सं. ) धूँसा, चपेटा, खूब  
बोरका मुक्का, धूँसा ।

मुभडे ( वि. ) कुल्ल, छूटा, लच्छ,  
मुक्तिप्राप्त, मोक्षप्राप्त, बन्ध रहित ।

मुभडी ( सं. ) मोती, मौलिक, रत्न ।

मुभडी ( सं. ) सतपुरुषका वार्षिक  
भाद या उत्सव ( पारसी भाषा में )

मुभित ( सं. ) दुःखाकी अत्यंत वि-  
द्वृत्ति, नित्यसुखकी प्राप्ति, भव,  
कैवल्य, निर्वाण, निश्चयस, मोक्ष,  
अपवर्ग, परित्राण, मोचन, संगति,  
छुटकारा, स्वतंत्रता, ईश्वर प्राप्ति ।

मुभ ( सं. ) बदन, मुहं, मुखड़ा,  
खानेका अंग, चेहरा, सिरका खा-  
मनेका भाग । जहाँ नदी समुद्रमें  
गिरती हो, द्वार, दरवाजा ।

मुभडे ( सं. ) चूहा, नूसा, कँदरा,  
मूषक ।

मुभडेभा ( सं. ) मुहंका दिखावा ।

मुभडेभाती ( कि. वि. ) मुहंसे,  
मौलिक, मुहंसे, जवानसे । [चेहरा ।

मुभडे ( सं. ) मुक्क, बदन, मुहं,

मुभडेभा ( सं. ) देखो मुभडी

मुभडेभर ( वि. ) थोड़ा मुक्तिसर,  
सूक्ष्म, संक्षिप्त, परिमित, सार,  
अल्प ।

मुभडेभर ( सं. ) प्रतिनिधि, स्व-  
तंत्र, समस्त अधिकारवाला ।  
वकील ।

मुभत्पारनाभुं ( सं. ) अधिकारपत्र  
मुख्यार बानानेकी लिखी हुई दा  
स्ताएवेज, वकालतनामा ।

मुभत्पारी ( सं. ) समस्त अधि-  
कार, मुख्यारकाबंधा, वकालत,  
स्वतंत्रता, स्वमतानुगमन, सत्ता  
घट ।

मुभना भोभां ४२वां ( कि. )  
मुहं देखी बातें करना, ऊपरी  
बातों से खुश करना ।

मुभभा ( वि. ) कंठस्थ, कंठाग्र,  
मुंक्षाग्र, जिह्वाग्र, मुखस्थ ।

मुभभां २३ भभभां धुरी-हाथ  
धुमरनी बगल कतरनी । [रणपत्र ।

मुभपत्र ( सं. ) टाइटलपत्र, आव-

मुभपरीक्षा ( सं. ) जबानी इम्त-  
हान, मुखाग्र परीक्षा ।

मुभपटी ( सं. ) मूर्तिवा सिक्केका  
बेहरा, अधि शरीरका चित्र ।

मुभवास ( सं. ) भोजन करने के  
बाद पानसुगरी इलायचीद्वारा मुख  
छुदीकरण, खानेकी सुगन्धित  
वस्तु ।

मुभभंधि ( सं. ) वस्तुके आरंभमें  
भिन्न भिन्न प्रकारके अर्थ और  
रस के सहारे जो दूसरेकी उत्पत्ति

कही जावे । इसमें बारह अंग हैं  
१ उपन्यास, २ परि. २४, ३ परि-  
न्यास ४ विलोभन, ५ युक्ति, ६  
प्राप्ति, ७ समाधान, ८ विधान, ९  
परिभाषना १० उद्देश ११ भेद  
और १२ करण ।

मुभियुं ( सं. ) कोबलाका मुहं  
बन्द करनेकी रस्ती ।

मुभिये ( स. ) ठाकुरजीकी सेवा  
करनेवाले सेवकोंका मुखिया ।

मुभी ( सं. ) नायक, पटेल, मुखब,  
सर्दार ।

मुभीओ ( सं. ) देखो मुभिये ।

मुभभा ( वि. ) मोरवा शहरकी  
अनार या बेदाना इत्यादि ।

मुभभ ( वि. ) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखि-  
या, आगेवान, अगुआ, खास ।

मुभभत्वे-४रीने ( कि. वि. ) सबसे  
पहिले, खाम करके, बहुत करके,  
विशेषतः ।

मुभभ ( सं. ) मुकुट, ताज, किरीट,  
सेहरा, मोर, मोरपक्ष, कळगी,  
शिरबन्ध, मुकुट, सिरमौर, पूज्य,  
मान्य ।

मुभडी ( सं. ) छोटा मुकुट ।

मुभटे ( सं. ) देखो मुभटे=सौला पूजा तथा भोजनके समय पवित्र परिधानवस्त्र ।

मुभडी ( सं. ) एक प्रकारका आभूषण जो कानमें पहिना जाता है, लकड़ी हुई पपड़ी विशेष, साध पक्का विशेष । [ मुख्य जाति ।

मुभल ( वि. ) मुसलमानोंकी एक

मुभलाध ( सं. ) मुगलवादश हो का शासन, भारतका वह समय जिसमें मुगलोंका राज्य रहा, ठाठ बाठ, ज्ञान शौकत, भपका, शोभा, ऐश्वर्य, अन्यायी तथा स्वेच्छाचारी राज्य, दगाबाजी, ठगी, धूर्तता, बदमाशी ।

मुभलाध व्यक्षायी ( कि. ) स्वेच्छा चरण करना, अन्याय पूर्वक बताव करना । [ नकी ली, मुसलमानी ।

मुभलाधु ( सं. ) मुगल मुसलमा-

मुभलाडी ( सं. ) एक प्रकारका रेशमी वस्त्र जिसे स्त्रियां पहिनती हैं ।

मुभु-जे ( सं. ) मूक, गूंगा, अवाक् ।

मुभेभार ( वि. ) दिखे नहीं परन्तु बहुत ।

मुभट ( सं. ) देखो मुभट ।

मुभरेल्लेड्डे ( सं. ) करारनामा, प्रतिज्ञापत्र, बचनपत्र ।

मुभरुं ( कि. ) रत्नना, छोड़ना, त्यागना ।

मुभ ( सं. ) मूँछ, मुच्छ ।

मुभाला ( वि. ) मूँछवाला, बकीर मूँछवाला, मूरी मूँछवाला, मर्दे, मनुष्य ।

मुभ ( सर्व० ) मेरा, मैं शब्दकी बच्ची ।

मुभल्लु ( सं. ) दमेका रोग, हृदय-रोग, फेफड़ेकी बीमारी, श्वास, कास ।

मुभने ( कि. वि. ) मुझे, मेरेको ।

मुभन ( वि. ) अनुसार, तुल्य, समान, सरीखा, जैसा ।

मुभमुभर ( सं. ) देखो भभमुभर ।

मुभरे ( कि. वि. ) देखो भभरे ।

मुभरे ( सं. ) नमस्कार, प्रणाम, वन्दन, नमस्ते, सलाम, बन्दगी ।

मुभलाभत ( सं. ) टीका, टिप्पणी, विवरण, चर्चा, विवेचन, छिद्रान्वेषण, आपत्ति, व्याधि, काटछांट ।

मुभल ( सं. ) पदार्थ, वस्तु, सत, मवाद, मतलब, पीव ।

मुभले ( सं. ) हिसाब, लेखा, हरकत, दरकार, प्रभाव, अरु-रत, गौरव ।

मुभले ( सं. ) नम्रता, सुशीलता, सभ्यता, साधुता, भलमन्दी ।

शुभवार ( सं. ) कबरका पुजारी,  
मस्जिदका मेहतर ।

शुभवारी ( सं. ) कार्यालय, दफ्तर  
-धन सम्पत्ति इत्यादि शुभवार को ।

शुभिये। ( सं. ) पवित्र घासका,  
मूँजका, वह ब्रह्मचारी, जिसका  
ब्रह्मोपवीत संस्कार हुवा हो ।

शुभवत् ( सं. ) व्याकुलता, बेचैनी,  
घबराहट, व्यग्रता, क्षोभ, उन्माद,  
उद्वेग ।

शुभशै ( सं. ) एक प्रकारका रोग,  
एक प्रकारका भयंकर ज्वरविशेष ।

शुभपुं ( कि. ) घबराहट, व्याकुल  
होना, बेचैन होना, क्षुब्ध होना ।

शुभ ( सं. ) देखो शुभ ।

शुभियुं ( सं. ) आटेको प नीमें गूंध-  
कर उसे मुठ्ठीमें दाबकर तेल या  
घृतमें भूना हुवा पदार्थ ।

शुभी ( सं. ) देखो शुभी ।

शुभी वाजवी ( कि. ) मुठ्ठी बन्द  
करना, अंगुलियोंको हथेलीके साथ  
बन्द करना, कुलमी नहीं देना  
निश्चय करना ।

शुभीमे वाजोने नासपुं कि. ) जो-  
रसे भागना । सपाटेसे दौड़ना ।

शुभी ग्रापवी ( कि. ) निख चर्मार्व  
वध अथवा चून दान देना ।

शुभीभर ( कि. बि. ) थोड़ा, मुठ्ठीमें  
भरा सके उतना । [ मोठ्ठा ।

मुठ्ठी ( सं. ) बड़ी मुठ्ठी । रेशमका  
मुठ्ठ ( सं. ) हजामत, सौर, बपन,  
बालोंका मुंठवा देना । एक संस्कार  
जिसमें पहिलेपहिल बच्चेके बाल  
काटे जावे ।

मुठ्ठा-ल-ण ( वि. ) सूखा, रुखा,  
असक्त, निर्बल, निर्बाध, मरने  
योग्य, क्षीण, कृश, निरुत्साही ।

मुठ्ठाशिम ( सं. ) मुर्दा सींगी,  
एक प्रकारका औषधि ।

मुठ्ठ ( सं. ) मृत, मृक, प्रेत, शव,  
लाश, जांवरहित शरीर ।

मुठ्ठ ( सं. ) देखो मुठ्ठ ।

मुठ्ठुं ( कि. ) मुंठना, छुरेया उत्तरे  
से बाल साफ करना । ठगना ।  
धोका देना, शिष्य करना, हजाम-  
त करना ।

मुठ्ठापुं ( कि. ) ठगाना, साधुका  
शिष्य होना । हजामत कराना ।

मुठ्ठिये। ( सं. ) सिर मुंठवाया हुवा  
मनुष्य ।

मुठी ( सं. ) देखो मुठी ।

मुठी ( सं. ) देखो मुठी ।

मुठ्ठा ( सं. ) मस्तक, माथा, शिर ।

मुठ्ठान ( सं. ) देखो मुठ्ठ ।



मु०५६ ( वि. ) मूत्र, अपक, सठ ।

मु०५७ ( सं. ) देखो भू०५१ ।

मु०५८ ( कि. ) मूतना, पेशाब करना, टिगेड्रियद्वारा पानी बाहिर निकालना ।

मु०५९ ( कि. ) ( पशुका ) पेशाब करना ।

मु०६० ( कि. ) पेशाब कर, नैका स्थान साफ करना ।

मु०६१ ( कि. ) मूत देना, डरना, कांपना । [ योनि ।

मु०६२ ( सं. ) मूत्रोन्निष, लिंग,

मु०६३ ( वि. ) जिसे मूतनेकी जरूरत हो, पेशाबकी हाजतवाळा ।

मु०६४ ( कि. ) मुताना, डराना, धमकाना, मूते ऐसा काम करना ।

मु०६५ ( सं. ) पेशाब करनेका पात्र, भूत्रघर, मूतदानी ।

मु०६६ ( कि. वि. ) बिलकुल, जरा, थोड़ा, अल्प, सर्वथा, तमाम ।

मु०६७ ( सं. ) एक ओहदेदार जो कि राजमंत्रीके नीचे होता है ।

मु०६८ ( सं. ) नायबदीवान । सहायक मंत्री ।

मु०६९ ( सं. ) देखो मु०६० ।

मु०७० ( सं. ) बादी, मुहूर्त, धनु, दुश्मना

मु०७१ ( सं. ) ठहराना हुआ समय, मुकुरर वक्त, निबततिवि, समय, वारा ।

मु०७२ ( सं. ) विगत समयपर ।

मु०७३ ( सं. वि. ) बिलकुल, तमाम मात्र, समस्त ।

मु०७४ ( सं. ) उल्लास, हर्ष, आनन्द, संतोष, विशेष ।

मु०७५ ( कि. वि. ) कास, विशेष, साफ, स्पष्ट, प्रकट, निश्चय, निस्संदेह । सदा, हमेशा, बहुत समयका ।

मु०७६ ( सं. ) सचूत, प्रमाण, साक्षी, पता, दाखला, मूक, जड़, बिन्हु, नामनिर्गण, अवशेष ।

मु०७७ ( सं. ) बिन्हु, निशानी, मुहर छाप, सिक्का, अंगुठी, छरला, बींटी बड़भंगूठी जिसमें मुहर हो, जोगियोंके कानोंमें छले, गरम करके लगाये हुए हाथोंपर बिन्हु विशेष टाईप, देवता विशेषकी आराधना करनेके समय अंगुठियोंकी रचना विशेष । बेहरेके भाव, आकार, नमून, लक्षण, स्थानके बाद मस्त कमें गोपीबंदन आदिके बिन्हु, विशेष । समाधिके समय मुकुरकी

आकृति। गोचरी, अगोचरी चेचरी  
ज्ञान, खेचरी, भूचरी अगोचरी  
बलकी आदि। [छापाहुवा।

मुद्राकित (वि.) टाइप जोड़कर

मुद्राधारी (वि.) जिसके अगपर  
गोपीचंदन आदिके तिलक छापे हों।

मुद्रालेख (सं.) मोटो, कहाबत,  
मसला। [छापा, अंगूठी।

मुद्रिका (सं.) निशानी, छाप, सिक्का  
मुनखा (वि.) मनुष्यका।

मुनशी (सं.) कर्क, मुहरिर, लेखक  
कारभारी, सेक्रेटरी, फारसी, अरबी  
उर्दू आदि बदन भाषाओंका ज्ञाता  
प्रणलेखक।

मुनसख (सं.) दीवानी कामका  
इन्साफ करनेवाला, देशी ओहदेदार  
न्याय करनेवाला, इन्साफी।

मुनीम (सं.) सेठोंकी दुकानपर  
मुख्य कार्यकर्ता मनुष्य, मेनेजर  
व्यवस्थापक, आवतिया, कारभारी  
नायक, अधिकारी।

मुने (सर्व.) मुझे, मुझको, मेरेको।

मुन्ध (सं.) मौन, मूकभावसंज्ञाति,

मुश्कल (वि.) गरीब, कंगाल,  
दब, दरिद्री, दुखी, बेहाल।

मुश्कली (सं.) गरीबी, दीनता,  
दारिद्र्य, कंगाली, लाचारी, दुर्दशा  
आपत्ति।

मुश्कील (सं.) देखो मुश्किल।

मुश्कीली (सं.) देखो मुश्कीली।

मुश्बेस्ती पूर्ववत्। [बाहिरगांव।

मुश्कील (सं.) परदेश, विदेश,

मुबारक (वि.) भाग्यशाली, सुखी  
आबाद, मंगल, अनुग्रहकारी,  
अनुकूल, भागलिक, कल्याणप्रद।

मुबारकगिरी-माही-डी (सं.) धन्य,  
वाद, बधाई, अभिनन्दन।

मुभती (सं.) कपड़ेका, बह दुकड़ा  
। जेये जेन साधु अपने मुहपर बां-  
धते हैं।

मुभना (सं.) मुसलमानोंकी एक  
जाति विशेष। मुसलमानोंकी बह  
जाति जो हिंदूजातिसे पतित होकर  
मुसलमान बने हों।

मुभम (सं.) मनुष्यकी चर्बीद्वारा  
बनाहुवा मल्हम।

मुभम (वि.) देखो भूभे।

मुभम (सं.) देखो भूभे।

मुभमली (सं.) जलमुर्गा, पानीमें  
रहनेवाला पक्षीविशेष।

भुखी (सं.) सुखी, पक्षीविशेष।

भुरषी ( सं. ) सुग्री, सुर्ग, कुक्कुट  
भुरभ ( सं. ) एक जातीका बोक,  
नगारा विशेष ।

भुरत ( सं. ) प्रतिमा, मूर्ति, आदमी  
( साधु समाजमें ) सोमंतोषयन  
संस्कार, तीसरा संस्कार, जो  
बालकके गर्भ समयमेंही किया  
जाता है, अगरणा मुहूर्त, अच्छा  
समय ।

भुरतक्षेपुं-भंडापुं ( कि. ) किसी  
कार्यके आरंभ करनेके लिये शुभ  
कर्ता समय निश्चयहोना, आरंभ  
करना ।

भुरभुषी ( सं. ) कुटुंबमें बड़ाआदमी  
बयोवृद्ध, बड़ा, मानी पूज्य  
रक्षक, आश्रयदाता पोषक, मदद  
गार, दिनायती, पालक ।

भुरभुषी ( सं. ) आमके कषेफळ,  
सेवनासपाती आंवके आदिका  
उबालकर शकरकी चासनीमें  
तय्यार किया हुवा पदार्थ विशेष  
मुरब्बा ।

भुरभुरा ( सं. ) देखो भभरा ।

भुरवत ( सं. ) अदब, मर्यादा,  
मान, पूज्यबुद्धि, वजन, भार ।

भुरसः ( सं. ) धर्मगुरु, धर्मशिक्षक ।

भुरशीः ( सं. ) पूर्ववत् ।

भुरतभ ( सं. ) गौरव, प्रतिष्ठा,  
मान, आवरु, बढपन्न ।

भुराः ( सं. ) इच्छा, चाह, आशा,  
अभिलाष, बांछा, चाहना, उम्मीद ।

भुरीः ( सं. ) शिष्य, चेला, शगिर्द ।

भुस ( सं. ) देखो भूल ।

भुस-भुस-भुस ( सं. ) देश, प्रवेश,  
राज्य, मुल्क, राष्ट्र ।

भुसगिरी-भभिशरी ( सं. ) यात्रा,  
त्रमण, देशपर्यटन, देशाटन,  
मुसाफरी ।

भुसडी ( वि. ) रेवेन्यूसम्बंधी, मह-  
मूल विषयक, देसी, दिसावरी ।

भुसडी भभभर ( सं. ) रेवेन्यू  
ऑफीसर, मामलतदार ।

भुसडी भःपुं ( सं. ) रेवेन्यूका हि-  
साब, महसूस्का खाता । [ पूरा ।

भुसधुं ( कि. वि. ) धिलकुल, सभ,

भुसतपी ( कि. वि. ) मौकूठ, स्थ-  
गिल, रोंका, ठहरावा ।

भुसतपी राभपुं कि. ) विचाराधीन  
गखना, स्थगित करना, ठहराना ।

भुसतानी ( वि. ) मुलतान देशका  
( सं. ) रागविशेष ।

भुनहार ( वि. ) कीमती मूल्यवान,  
बेसामीती, अधिक मूल्यका ।

मुश्कली ( वि. ) व्यापारमें बन्धनके  
 लिये सांकेतिक शब्द ।  
 मुश्कली ( सं. ) रोगन, लेपन,  
 स्नायु, कर्कश ।  
 मुश्कली ( कि. ) कीमत करना, भाव  
 निकालना, मूल्य करना ।  
 मुश्कली ( वि. ) देखो मुश्कली ।  
 मुश्कली ( वि. ) नरम, कोमल, मृदु ।  
 मुश्कली-हात-भात ( सं. ) मेल,  
 मेट, मिलन, समागम, बातचीत ।  
 मुश्कली ( सं. ) मर्यादा, मान, प्रतिष्ठा,  
 विवेक विचार, अदब ।  
 मुश्कली ( सं. ) मुलुमा, कलई,  
 ( वि. ) उम्दा, उत्तम, धेष्ट,  
 मुलायम, कोमल ।  
 मुश्कली ( वि. ) कोमलता, मुलायमी ।  
 मुश्कली ( सं. ) देखो मुश्कली ।  
 मुश्कली ( सं. ) मुसलमानोंका धर्मो-  
 पदेशक, न्यायकर्ता । शिक्षक, पंडित  
 मुश्कली ( सं. ) पूंजी, धरोहर,  
 मूलधन ।  
 मुश्कली ( सं. ) छोटा, गांव, गांवडा ।  
 मुश्कली ( सं. ) बाल, केश, कच,  
 रोम ।  
 मुश्कली पहेली } कुछ भी नहीं हुआ  
 धीरे } और तदनुसार कार्य  
 मुश्कली पहेली } करना ।  
 भौतिकी }

मुश्कलीने पाछा गया = जैसाका तैसा ।  
 ज्योंकात्यों, एक एक ।  
 मुश्कली ( वि. ) मुसी, मरा, मृत,  
 इस शब्दको क्रिया गालियोंमें  
 प्रयोग करती हैं ।  
 मुश्कली वरने अणी अन = मुझे किस  
 बातकी चिन्ता, मुझे क्या दुख,  
 मेरी बलासे, चूल्हेमें जाय भाइमें  
 निकले ।  
 मुश्कली पांचपुं ( कि. ) दोनों हाथोंको  
 पीठके पाँछे बांध देना ।  
 मुश्कली ( वि. ) कठिन, क्लिष्ट, गहन  
 गूढ़, विकट, अशक्य, असंभावी ।  
 मुश्कली-पत ( सं. ) मुश्किल, मिह-  
 नत, संकट, दुःख, कष्ट, कठिनता ।  
 मुश्कली ( सं. ) देखो मुश्कली ।  
 मुश्कली ( सं. ) लेबक, कर्क, मुश्किल  
 मुश्कली ( सं. ) मजमून, निबन्ध,  
 नकशा, आलेखन, नमूना, रूपरेखा ।  
 मुश्कलीमान ( सं. ) अपने ईमानपर  
 हठ रहनेवाला अनुप्य, यवन,  
 मुहम्मद साहेबका अनुयायी ( वि. )  
 उद्धत, वदमाश, अच्छल, नाच,  
 दुष्ट ।  
 मुश्कली ( सं. ) जिस दरी फर्श या  
 कपड़ेपर मुसलमान, नमाज पढ़ते  
 हैं । ( ओछी बोलीमें ) मुसलमान ।

मुसण ( सं ) देखो मुसणु ।

मुसणभंडी ( सं. ) चावल, तंदुल, धान्य विशेष, बोझा, अक्षत ।

मुसणधार ( वि. ) भयंकर दृष्टि, मोटी मोटी धाराओंकी महान वर्षा ।

मुसणस्नान ( सं. ) शरीरपर थोड़ा बहुत पानी डालकर नहा लेना । ऐसा स्नान जिसमें आधा शरीर भीग जावे और आधा सूखा रह जावे । कौवा स्नान ।

मुसणी ( सं. ) एक प्रकारकी औषधि, यह दो जातिकी होती है । सफेदमूखली और काळीमूखली ।

मुसणु ( सं. ) मूसल, बत्ता, पदार्थ कूटनेका लोहकाष्ठ अथवा पत्थर-काट्ट ।

मुसाक्षर ( सं. ) पथिक, यात्री, बटोही, प्रवासी, पंथी, राहगीर ।

मुसाभाधने वापाथी-कोरम्कोर लूछा धनमाळहीन हालत ।

मुसाभेन-रेडा-हित ( सं. ) रेवक, नौकर, मूल, चाकर ।

मुसादे ( सं. ) बेतन, तनख्वाह, मजदूरी, मासिक या वार्षिकवेतन ।

मुसाडिग ( सं. ) साथी, संगी, मित्र, सहायसी, सहायसी ।

मुसी ( सं. ) एक प्रकारकी मछली ।

मुसीगत ( सं. ) दुःख, तकलीफ, मेहनत, कठिनाई ।

मुस्तडीन-१ ( वि. ) मजदूर, दूत, पुस्ता, स्वायी ।

मुदुर्त ( सं. ) अनुकूल समय, द्वादशक्षण परिमितकाळ, दोघड़ी का समय, ४२ मिनिटका समय । आरंभ, शुरुआत । सीमित संस्कार ।

मुण ( सं. ) देखो भूण । [ बरोबर ।

मुणथु ( कि. वि. ) बिल्कुल, ठीक,

मुणथी-छी ( सं. ) बहुत भोजन करके तृप्त होना । कय करना, दुखना ।

मुणापथी ( सं. ) मूखियोंकी गद्दी ।

मुणिथु ( सं. ) वृक्षकी छोटी जड़, मूठ । [ बाळा ।

मुठधारी ( वि. ) मौन धारण करने

भूथु ( वि. ) मूक, गूंगा, बाणीहीन । [ के बाळ ।

मूथ ( सं. ) श्मश्रु, मौत, ओठपर

मूठना आंढरी वाणना ( कि. ) मूठोंपर ताव देना । [ मित्र ।

मूठनोवाण ( सं. ) अत्यंत प्यारा,

मूठपरतान-ताण देवा ( कि. )

मूठोंपर हाथ फेरना थिकारना ।

भूषणशिखर शिखर ( कि. ) शेषी-  
विखाना, अकड़ना, गर्व करना ।  
भूषणशिखर ( कि. ) मुस्कुराना ।  
भूषणशिखर ( कि. ) जिह्व है,  
हठ है, टेक है ।  
भूषण शिखर शिखर ( कि. )  
अपनी बात ऊँची रखना ।  
भूषण ( सं. ) बैचनी, पाँड़ा,  
केश, दुःख ।  
भूषण ( वि. ) बिना अकड़ना, नम,  
ठोठ, जड़, मूर्ख, मतिमन्द, जड़ ।  
भूषण ( सं. ) दस्ता, बेटा, हथवा,  
हँडल, हाथकी मुठ्ठीमें पकड़ने का  
भाग । मारहालने के लिये एक  
मंत्र प्रयोग । चोट, गिलाहंड के  
केलमें एक दाव विशेष ।  
भूषणशिखर-शिखर ( कि. ) मंत्र  
प्रयोगकी शान्ति करना ।  
भूषणशिखर ( कि. ) मंत्र प्रयोग  
अजमाना ।  
भूषण ( सं. ) मुट्ठी, पाँचों अंगुलियों  
को हथेलीसे मिश्रित मे जो वस्तु  
उसके अन्दर हो, मुठ्ठी ।  
भूषण शिखर-शिखर ( कि. ) संकेत  
करना, इशारा करना ।  
भूषण शिखर शिखर ( कि. ) लेनदेन  
बन्द होना, देना बन्द करना ।

भूषणशिखर नासुं ( कि. )  
प्राण लेकर भाग छूटना, भयातुर  
हो भगना ।  
भूषण शिखर ( कि. ) अपने  
अधिकारमें रखना, सत्तामें रखना ।  
भूषण शिखर शिखर=योडे बहुत ।  
भूषण ( सं. ) माया, सिर, मस्तक,  
चोटी पूंजी, । व्यपारमें लगाया,  
हुआ धन ।  
भूषण नौथी शिखर शिखर ( कि. )  
इज्जत कम हो जाना । अपमानसे  
सिर झुक जाना ।  
भूषण शिखर ( कि. ) उलटासीधा  
समझाना, फुसलाकर कुछ छे लेना ।  
भूषण शिखर शिखर ( कि. ) अप-  
मानित करना । मान भंग करना  
सिर झुटना । [ आधीन होना ।  
भूषण शिखर शिखर ( कि. ) अपने  
भूषण ( सं. ) सौ मणका माप ।  
बंयईमें पच्चीस सेर वजन भरनेका  
पात्र विशेष, तौल परिमाण विशेष ।  
भूषण ( वि. ) मूर्ख, अज्ञानी, अपढ़,  
अनभिज्ञ, अज्ञ, मतिमन्द, बेवकूफ ।  
भूषणशिखर ( सं. ) पथरी नामक रोग ।  
भूषण ( सं. ) मृत, पंशाब, मूत्र,  
लघुशंका, वह पानी जो पेटके  
नीचेकी इन्द्रियमेंसे निकलता है ।

भूतशब्दांश ( सं. ) पेशाब करनेकी जगह, मूतघर, पेशाबघर ।

भूतरडी ( सं. ) पूर्ववत् ।

भूतरहुं ( क्रि. ) पेशाब करना, मूतना, लघुशंका करना ।

भूतशब्द ( वि. ) मुताया, जिसे मूतनेका इच्छा हो ।

भूतपथ ( सं. ) पेशाब आनेका नली ।

भूतपिण्ड ( सं. ) वह स्थान जहां रक्तसे अलग होकर पेशाब बनता है । यह पिण्ड पेटमें होता है । गुदे ।

भूतशय ( सं. ) वह थंजी जो पेटके अंदर होती है और जिसमें मूत्र संचय होता है । [ योनि ।

भूतल ( सं. ) भैंस अथवा गऊकी

भूर्भ ( वि. ) मूठ, अज्ञान, अज्ञान अनभिज्ञ, बेबकूर, शठ, अबोध, मतिहीन ।

भूतना-भूतना ( सं. ) मोह, कर्मल, सम्मोह, अचेतता, बेहोशी बेसुधि ।

भूतना-भूतना ( सं. ) अचेत, बेहोश, बेसुध, भानरहित । मोहित ।

भूतना ( सं. ) गीतका अंग विशेष, स्वरको एक बार बजाने और उतारनेकी क्रिया विशेष ।

भूर्भ ( सं. ) एक प्रकारका रोग विशेष ।

भूर्भ ( सं. ) परधर या लकड़ीमें खोदी हुई आकृति विशेष, धातु या मिट्टीका बनाया हुआ आकार विशेष । बनाया हुआ चित्र, प्रतिमा आकार, पुतळी, तस्वीर, साधु-पुरुष, संत ।

भूत-भूत ( सं. ) मोल, भाव, दर, दाम, निरख, कीमत, मजदूरी, वेतन, राजाना वेतन ।

भूतभार ( वि. ) कीमती, महंगा, बेश कीमती मूल्यवान ।

भूतवान ( वि. ) पूर्ववत् ।

भूती ( सं. ) मजदूर, श्रमजीवी, मजूर ।

भूस ( सं. ) धातु गालनेके लिये बनाई हुई एक प्रकारकी मिट्टीकी-कटोरी, विशेष सांचा ।

भूण ( स. ) जड़, वृक्षकी वह शाखा जो पृथ्वीमें होती है । उचीसवां नक्षत्र, कारण, नींव, आरंभ, आचार, कुल, वंश, जिसपुरुष धर्मसे वंश विस्तार हुआ हो । पुरुषा, पूर्वज, आदि पुरुष, आरंभ उत्पत्ति, शुरुआत, मूल ( पुस्तक

बिना टीकाकी), पूंजी, नदीकी स्थान, पांचकी संख्याके लिये संकेत शब्द ।

भूणअक्षर ( सं. ) प्रथम अक्षर ।

भूण ७३३ ७३३ = उस अनुषङ्गके लिये यह वाक्य प्रयोग किया जाता है जिसके मनकी और बाहिरकी जानना कठिन हो ।

भूण ७३३ ( कि. ) समूह नष्ट करना, बिलकुल बरबाद करना ।

भूणपीडिका ( सं. ) आरंभिक कथन भूमिका मात्रा आदि रहित हो, स्वर, व्यंजन ।

भूणाडीड ( सं. ) मूळ, जड़ ।

भूणी ( सं. ) कोमल जड़, पतली जड़ ।

भूणे ( कि. बि. ) आदिमें, आरंभमें ।

भूणी ( सं. ) एक प्रकारकी तरकारी भाजी मूलीकी भाजी, मूरी, मूरह ।

भूणीना १५३३ कमजोर, हिम्मतहीन

भूणीना १५३३ नेवा १५३३-गोळ गोळ तथा सुन्दर ।

भूभ ( सं. ) हरिण, कुरंग, सांभर; पांचवां नक्षत्र, मृगशिर, इसनक्षत्र में वर्षा होती है ।

भूभ ( वि. ) हरिणसे उत्पन्न ( सं. ) कस्तूरी, मृगमद, मृगनाभि ।

भूभ ( सं. ) जम्बू, सुगमरीचिका मृगतृष्णा, । वृक्षरहित जंगलोंमें और प्रायः रेतीले मैदानोंमें धूपकी लहरें जलके समान बोध होती हैं जिन्हें पानी समझ कर हरिण अपनी प्यास बुझानेके लिये वहाँ जाता है वह जल ही मृगजल कहाता है ।

भूभनाभि-३६ ( सं. ) करतूर, मुदक भूभया ( सं. ) शिकार, हिंस वशु-ओंका जंगलमें जाकर वध करना, आखेट ।

भूभंजन ( सं. ) चन्द्रमाका काळ्य दाग, चांदमें काला निशान ।

भूभवी ( सं. ) हरिणी, मृगी ।

भूभांके ( सं. ) चन्द्रमा, चांद, कपूर ।

भूभी ( सं. ) हरिणी, मादाहरिणी । सुन्दरणी ।

भूभुक्ष ( सं. ) कमलनाळ कमलकी जड़ ।

भूभुक्षि ( सं. ) कमलिनी ।

भूत ( वि. ) मुवा, मराहुवा, मुर्दा, प्राणरहित, परलोक गत ।

भूतके ( सं. ) शव, मुर्दा, लाश, जीव रहित शरीर, लेश ( वि. ) मरने वालेसे संबंध रखनेवाला ।



भूतधन ( सं. ) बसीबतनामा, बृत  
लेख, अधिकार पत्र ।

भूताशैव्य ( सं. ) मरानेका सूतक  
मृत्युके बादकी १० दिवकी अप-  
वित्रता ।

भूभ ( सं. ) एकप्रकारका बाजा,  
यहडोलककी शकलका होता है  
इसकी आवाज तबलेके समान  
होती है । पखावज । [ मधुर ।

भू ( वि. ) नरम, कोमल, मीठा,  
भे ( सर्व. ) भै सर्व, मुझसे ।

भेऊ ( सं. ) दादुर, मेक, मण्डूक,  
मैंडक । [ मेंडा ।

भेढा ( सं. ) मेघ, गाडर, मेड़ा,

भेढी ( सं. ) मेढी, मेड़, मेपी ।

भेढु ( सं. ) मेंडा या मेंडी, भेड़,  
मेढी, मेघ ।

भेदी ( सं. ) मेंहडी, एकप्रकारकी  
पत्तियां, जिन्हें पीसकर हाथ पैर  
लगानेसे खल होजाते हैं । प्रायः  
स्त्रियां लगाती हैं ।

भेडी ( सं. ) मेहुओंका सत्व, मेंडा,  
मेहुओंका बारीक चूर्ण, निस्तास्ता ।

भेस ( सं. ) कज्जल, काजल,  
इयाही ।

भेसना भास भासा छेजव कोई  
अधिक काजल आंखोंमें लगाकेता  
है तब यह हंसीके रूप कहते हैं  
भेकने। याहवे। ( सं. ) अपकीर्ति,  
लांछन, कलंक, काळाटीका ।

भे ( सं. ) मेघ, मेहं, वर्षा ( काव्यमें )  
सत्ता, अमलदारी, अधिकार,  
अंग्रेजी पांचवां महीना मई ।

भेक्षु ( सं. ) खोंवा, चमचा,  
चाट ।

भेभ ( सं. ) खंरी, कीठ, कीळी,

भेभ ( सं. ) देखो भेष ।

भेभयुं ( सं. ) मोगरी, हयोडा,  
छोटा बालक ।

भेभ ठेठवी ( कि. ) किसी प्रकारका  
अटकाव करना, बीचमें रोकना ।

भेभदीवी ( सं. ) देखो भेभयुं ।

भेभ भेसवुं ( कि. ) अटकना, देरी  
होना, बाधाउपस्थित होना ।

भेभभास्वी ( कि. ) अत्यंत दुखदेवा  
सताना ।

भेभण ( सं. ) लड़ाईका एक प्रकारका  
हथियार, काटीपूत्र, ताचडी, कंदोरा  
मेखला, करधनी ।

भेभणा ( सं. ) पूर्ववत् ।

भेभवे। ( सं. ) पूर्ववत् ।

भेजान्तर ( सं. ) बहाना, भिस, भिमिल, ढोंग ।

भेजिथुं ( सं. ) अफीम, एकप्रकारका मादक द्रव्य, अमल ।

भेजी ( सं. ) अफीमची, अफीम खानेवाला ब्यसनी, अफीमी ।

भेजुं ( सं. ) अफीम, अमल, पोस्त कसूभा ।

भेजनी ( सं. ) बकरी भेड़ीआदिकी विष्टा, गोखीके रूपमें विष्टा । [ गज भेजण ( सं. ) हाथी, कुंजर, करि, भेज-णे। ( सं. ) बादल, मेघ, घन वर्षा, मेघ, बरसान, जलधर ।

भेजुं ( सं. ) छोटासा बच्चा ।

भेज ( सं. ) टेबल, कुर्सीके आगे रखकर लिखने पढ़नेका तख्त ।

भेजणका पद्य । [ होना ।

भेजणर भेजुं ( कि. ) काम जोरांसे

भेजणान ( सं. ) जिसे भोजनके लिये बुलायाहो, पाहुना भेजमान, अतिथि ।

भेजणानी ( सं. ) निहमानी, आतिथ्य, पाहुनाई, रसोई खिलाना आगत स्वागत ।

भेजण ( कि. ) कौजमें कप्तानसे बड़ा ओहदेदार, कोतवाल, इकीम

बड़ी उमका मनुष्य ।

भेजणान ( सं. ) बहुतसे मनुष्यों का हस्ताक्षर युक्त पत्र, अर्जी, प्रार्थना पत्र ।

भेज ( सं. ) देखोभेज

भेज ( सं. ) मकान के ऊपरका मकान, अष्टालिका, ढागळा ।

भेज करणी ( कि. ) स्त्री पुरुषोंकी योग्य अवस्था आनेपर एकान्तमें सुलाना । इसे ओरडी करणी भी कहते हैं ।

भेज ( सं. ) बड़ी अष्टालिका ।

भेज ( सं. ) एक प्रकारका जीव जो लकड़ीमें पैदा होता है । घुन ।

भेजणुं ( कि. ) मिलाना, समानता करना, मुकाबिला करना ।

भेज ( सं. ) मेधी, भेड़ी ।

भेजुं ( सं. ) भेड़, गाबर, मेघ ।

भेज ( सं. ) पूर्ववत् ।

भेज ( सं. ) देखो भिजु ।

भेजभेज ( वि. ) अंधेरघुप्प, ऐसा अंधकार जहां कुछभी नहीं सूझ ।

भेज ( सं. ) ताना, उल्लाहिना, उपाखंड, आक्षेप, कठोर वचन, टोक ।

भेजुं भाजणुं ( कि. ) ताना देना, उल्लाहिना देना, उपकारकी कहना ।

भैतर ( सं. ) भैमी, खपख, भैहतर, डोम, डेड, झाड़ू लथानेवाला ।

भेदरी ( सं. ) बेहतरकी स्त्री ।  
 भेदियुं-धीह ( वि. ) भेधी आदि  
 मसाला भरकर बनाया हुआ आचार ।  
 भेधी ( सं. ) एक सागका नाम ।  
 इसके बीजोंका भी साग होता है ।  
 भेधीना छे=फायदा है, लाभ है ।  
 भेधीपाक ( सं. ) जादेके मौसिममें  
 चीशकर भेधीका आटा इत्यादि  
 चीजोंका जो पदार्थ बनाया जाता  
 है वह । मार, पीटनेकी ध्वनि ।  
 भेधीपाक अभाउवे ( कि. ) मारना,  
 ठोकना, पीटना, कुटना ।  
 भेह ( सं. ) मज्जा, बसा, चर्बी, सत्व,  
 सार, मुट्ठाई, गर्भ ।  
 भेहनी ( सं. ) संसार, लोक, दुनिया,  
 पृथ्वी भीड़, ठूठ, झुंड, जम्हा,  
 समूह, समुदाय ।  
 भेहान ( सं. ) सीधी वृक्ष पर्वत रहित  
 भूमि । किलेकी आसपासकी खुली  
 हुई जगह । लड़ाईकी खुला जगह,  
 रणभूमि, खेत, फील्ड, क्षेत्र, घा-  
 सका जंगल, बाँहड़ ।  
 भेहान करी भूधुं ( कि. ) तोड़ताड़  
 कर सघाट करना ।  
 भेहान भूधुं ( कि. ) उखाड़ा करना,  
 खुला छोड़ना, पूर्ण करना, खतम  
 करना ।

भेहान पाधुं ( कि. ) बाहिर होना,  
 प्रगट होना, खुदके गुण अवगुण  
 लोगोंपर प्रगट करना, प्रकाशमें  
 आना, आये आना ।  
 भेहानभा आवपुं-पेधपुं ( कि. )  
 लड़ाईमें सामने आना, शत्रुके सामने  
 होकर युद्ध करना ।  
 भेही ( सं. ) देखो भेही ।  
 भेही ( सं. ) देखो भेही ।  
 भेन ( सं. ) कामदेव, मदन, कन्दर्प ।  
 भेन ( सं. ) एक जातिका सुन्दर  
 पक्षी, मना, सारिका, तोतेकी तरह  
 बोलना सहजहीमें सीख लेती है ।  
 भेने ( सं. ) देखो भेने ।  
 भेभधु ( सं. ) काठियावाड़की  
 तरफ मुसलमानोंकी एक जाति  
 विशेष ।  
 भेभान ( सं. ) मेहमान, पाहुन,  
 अतिथि, यात्री, मुसाफर ।  
 भेर ( कि. वि. ) भले, मुझमें,  
 तरफ, ओर, बाजूपर, पक्षपर,  
 ( सं. ) बाजू, कोर, तरफ, दिशा,  
 एक प्रकारके छेग, जति विशेष,  
 मालाका मुख्य मनिदा जहाँसे  
 मालाकी गणना होती है, मेरुनाम  
 का पहाड़, हुकेका नैना, वह  
 ककरी जिसपर हुकेकी चिलम

रखी जाती है, एक प्रकारका जीव  
एक प्रकारका दाल बनानेका  
ताम्बेका पात्र ।

भेर भेटो=सूर्यास्त हुआ ।

भेरभ ( सं. ) दरजी, कपड़ेसीने  
बाढा, सूचीकार ।

भेरभ्या ( सं. ) वह दावजो खेलके  
समय एक का दूसरे को फायदे  
में पड़ता है ।

भेरिथुं ( सं. ) एक प्रकारका दपिक  
जो दीपावली को जलिया जाता है

भेरी ( सं. ) स्त्री, औरत, पत्नी,  
नारी ।

भेइ ( सं. ) मित्र, साथी, संगी,  
जोड़ीदार, एक पर्वत का नाम ।

भेख ( सं. ) मछ, मैल, कचरा,  
कूदा, काँट, कानका मैल शेष,  
उच्छिष्ट ।

भेख छिखे ( कि. ) मैल निकाल-  
ना, साफ करना, पवित्र करना ।

भेख भुखे ( कि. ) मनका सफाई  
करना, दिठका कपट भाव छोड़ना ।

भेखडी ( सं. ) इस नामकी एक  
देवी ।

भेखपुं ( कि. ) रखना, स्थापित  
करना, पहुँचाना, भेजना, रोकना,  
रहने देना, जमा कराना, जेबना ।

भेखाधु ( सं. ) मुक्ति, छुटकारा  
( ग्रहण ) कदम, मुकाम, दग,  
स्थान ।

भेखाध ( सं. ) देखो भिखाध ।

भेखाधपुं ( कि. ) भिखना, अलग  
करना, पृथक् करना, छुड़ाना ।

भेखाधिपुं ( कि. ) धर देना, रखे  
देना, छोड़ देना, त्यागना ।

भेखी विधा ( सं. ) भूत पिशाच  
उतारने की तथा मारण जारण  
की विधा, कपट भरी चतुराई ।

भेखुं ( सं. ) भूत, प्रेत, राक्षस,  
पत्नीत, नर्क, ( बि. ) गन्दा, मैला,  
कपटी, मैला । [ लगाना ।

भेखुं वणभुं ( कि. ) भूत प्रेत  
भेखुं छिपाधुं ( कि. ) पाखाना  
उठाना, बिछा साफ करना ।

भेखे ( सं. ) देखो भेखे ।

भेखे ( सं. ) वर्षा, मेह, बरसात ।  
नहीं बरसता है तब भिक्षुक स्नि-  
यां जिस गीत को गाती हैं वह  
गीत, वे एक के सरपर बरसात  
का पुतला बनाकर पट्टे पर रखती  
हैं और माँगने निकलती हैं तब  
कोम उस पुतले पर पानी चढ़ाते  
हैं और जल देते हैं ।

मेवाड़ी ( सं. ) एक प्रकारकी मिठाई ।  
 मेवाड़ा ( सं. ) गुजरातमें आये हुए  
 मेवाड़ राज्यके मनुष्य ।  
 मेवाड़ी ( वि. ) मेवाड़ देशकी,  
 भाषा या कोई वस्तु जो मेवाड़  
 सम्बन्धी हो ।  
 मेवाड़े ( सं. ) मेवाड़ा का एक  
 बचन, एक प्रकारका राग ।  
 मेवाड़ा ( वि. ) मेवामहित पदार्थ ।  
 मेवावाला ( सं. ) फलबचनवाला,  
 फलपुष्प, मेवासहित ।  
 मेवास ( सं. ) ऐभी छुपनेकी जगह  
 या झाड़ी जहाँ चार या ढाकड़ो  
 गांव । [ तुफानी ।  
 मेवासी ( सं. ) चोर, लुटेरा,  
 मेवा ( सं. ) फल, मेवा, सूखेफल ।  
 मेसी ( सं. ) कंजूस, कृपण, मक्लीचूस ।  
 मेपरासिधुं ( वि. ) अफाम अमर  
 पोस्त ।  
 मेपो-मेप ( क्रि वि ) आंस खो  
 लना तथा बन्द करना, आम्बकी  
 पलक खोलना आर मीचना,  
 विमिश्र ।  
 मेथ ( सं. ) काजल, मासि, रयाही,  
 कज्जल । [ मोहखरी बमिया ।  
 मेथरी ( सं. ) वैश्वोमें एक जाति,

मेथुर ( सं. ) पत्तेके आटेमें ची  
 और साकर डालकर बनाया हुआ  
 पदार्थ ।  
 मेथुण ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा ।  
 मेथ-कुलो ( सं. ) वर्षा, बरसत,  
 पानी ।  
 मेथक ( सं. ) सुगन्धि, सुसब् ।  
 मेथकुं ( क्रि. ) सुगन्ध आना,  
 सुसब् फैलाना, सुवास आना ।  
 मेथेडा ( सं. ) देखो मेथक ।  
 मेथेधुं ( सं. ) किया हुआ उपकार  
 कह सुनाना, किसीको गुप्त बातको  
 प्रकट करके उसे दिलको चोट  
 पहुंचाना । [ प्रत्यय ।  
 मेथेधुन ( वि. ) राजा, सुखी  
 मेथेतर ( सं. ) भगा, खपन, बाव ।  
 मेथेतराधी ( सं. ) भागन, महतर  
 का आ ।  
 मेथेतथ ( सं. ) अवधि, समय,  
 वक्त, मुहत्त । मुआतिल, देरी,  
 विलम्ब, मुलतवी ।  
 मेहेता ( सं. ) गुरु, अध्यापक,  
 शिक्षक, उपाध्याय, मास्टर साहेब  
 आचार्य, टीचर ।  
 मेहेतीश ( सं. ) अध्यापिका, गुरु-  
 वाना, शिक्षिका, मिस्ट्रेस, स्त्री  
 गुरु ।  
 मेहेताभिरी ( सं. ) मुहरीरका कार्य  
 ठेकाकर कर्म, कलकक्षिप ।

भेदेताम ( सं. ) चन्द्रमा, चांद ।

भेदेतो ( सं. ) लेखक, मुनीम,  
गुमास्ता, नकल करनेवाला, क्लर्क,  
मुहरिर्, अभिष्टुक ब्राह्मण ।

भेदेनत ( सं. ) परिश्रम, श्रम,  
शारीरिक परिश्रम, दुसकष्ट,  
कामका बदला । मजदूरी, मिहन-  
ताना । बेतन ।

भेदेनतु ( वि. ) परिश्रमी, उद्योगी,  
उद्यमी, व्यवसायी, कार्यशील ।

भेदेभान ( सं. ) देखो भेभान ।

भेदेभानी ( सं. ) सेवा, सुश्रूषा,  
आतिथ्य, पहुनाई, मिजमानी ।

भेदेर ( सं. ) कृपा, दया, अनुकंपा  
ध्यान ।

भेदेरेनकर ( सं. ) कृपादृष्टि, दयादृष्टि

भेदेरभान ( सं. ) दयालु, कृपालु,  
दयार्थ सहायक ।

भेदेरभानी ( सं. ) देखो भेदेर ।

भेदेरभ ( वि. ) अत्यंत प्रिय, सगा,  
प्यारा ।

भेदेशम ( सं. ) दो खंभोंके बीचमें  
उपरकी तरफ बनाया हुआ गोल-  
कार फारींगी तुफदार । कटाव,  
कमान, बल्लकके आकारका ।

भेदेशमथु ( सं. ) कटार, कटावि ।

भेदेश ( सं. ) डोखा या पाखड़ी  
आदि उठानेवाला, कहार, मोई ।

भेदेश ( सं. ) मकान, हवेली, राज-  
भवन, प्रासाद, बैंगला, बहुतबड़ा  
घर ।

भेदेशध ( सं. ) कर, टेक्स,  
टिक्क्स, भाड़ा, किराया, ज़कात ।

भेदेशे ( सं. ) देखो भेदेशे ।

भेण ( सं. ) रोजनामा, जमाखरब,  
बराबर, उचित, लेखा, गणना,  
आश्रय, रोजनामचा ।

भेण ठावे ( कि. ) जमाखर्च  
निकाळना ।

भेण भेणवे ( कि. ) हिसाब  
मिळना, रोकड़ मिळना, मिळाप  
होना ।

भेणवथु ( सं. ) मेळ, मिळान,  
मिक्स्चर, मिश्रण ।

भेणवथु ( सं. ) पूर्वघन । अत्युक्ति,  
अतिशयोक्ति, तुळना, मुकाबिला,  
योग, जोड़, सम्बन्ध, मेळ ।

भेणवपु ( कि. ) जोड़ना, इकट्ठा-  
करना, संग्रह करना, मिळाना,  
कमाना, प्राप्त करना, बढाकरबात-  
करना, तुलनाकरना, मुरमिलाना,  
मुकाबिलकरना ।

भेणनी आ१५५ ( कि. ) भिजनेना,  
परिक्वकराना, जाव पहिचान-  
करना ।

भेष्ठा ( सं. ) झी, जौरत, जगई ।

भेष्ठाप ( सं. ) देखो भिष्ठाप ।

भेष्ठावडो ( सं. ) रंढियों का एक साथ मिलकर गान । मित्रोंका एक साथ मिलकर रागरंगका काम ।

जमाव, झुंड, टोली, समुदाय, ठठ ।

भेष्ठावे। ( सं. ) आपसमें मिलना, पारस्परिक मिलन । भेष्ठा, जमाव ।

भेष्ठा ( कि. वि. ) खुद, स्वयं, आपोंआप, अपनीइच्छासे, स्वेच्छापूर्वक ।

भेष्ठा ( सं. ) ठट्ठे, जमाव, झुंड, मेला, समूह, जनसमुदाय, तमाशा भेट ।

भेष्ठा ( सं. ) लीपुरुषकासंभोग, लीसंसर्ग, रतिक्रिया, संगम, प्रसंग, किंगमर्दन, वीर्यपात ।

भेष्ठा ( सं. ) मौत, मरण, देहत्याग, मृत्यु, स्वर्गवास, ( वि. ) मृत, मरनेवाला, मर्त्य ।

भेष्ठाभरम्भ ( सं. ) मरेहुवेंकेकफन तथा दाह कर्म आदि अन्त्येष्टी संस्कार काव्यय ।

भेष्ठा ( सं. ) मैका, मायका, पीहर, लीका मातृगृह ।

भेष्ठा ( सं. ) मां, माता, जवनी, मायिका ।

भेष्ठा ( सं. ) आषाकोस, खीक, ८ फलंग ।

भेष्ठा ( सं. ) मुई, मुक, वदन ।

भेष्ठाभीपर श्वाही रेष्ठी ( कि. ) अपमानहोना ।

भेष्ठा यक्षपुं ( कि. ) नीचमनुष्यको मान देना, शिरपर चढाना । गुस्मादिलाना । [ बिगड़ाना ]

भेष्ठाभेष्ठा ( छे।३३ ) ( सं. ) लाइसें भेष्ठा घे।३३ भेष्ठा ( कि. ) सरकजाना, रो उठना, मौका आनेपर लचक न करना । [ सञ्चल ।

भेष्ठा भाधुं ( सं. ) आचार, प्रमाण, भेष्ठा भूझीने ( कि. वि. ) मान अथवा लज्जा की कुछपरवाह न करके । [ मशदाता ।

भेष्ठापात ( सं. ) अत्यंत प्यारा,

भेष्ठा ठाणो करे। ( कि. ) मुक-सामने न देखना, खूब अपभ्यय करना ।

भेष्ठा भभभे।रवा ( कि. ) सूफहो-कर मौनधारण करके चुपचाप बैठना ।

भे.भांभाभे.भे.भगुंनभी.भिरप-राधी, कोपहीन, निर्विक पुख ।

भेष्ठा भाधुं भेष्ठा ( भेष्ठा ) ( कि. ) खूब सर्वांग सुख, उचित ।

भोधवारी ( सं. ) देखो भोधवारी।

भोभाध ( सं. ) मान, लाव, प्यार प्रेम।

भोधुं ( वि. ) माहंगा, अधिककीम-  
तका, कीमती, बहुमूल्य, प्यारा  
खडला।

भोधुं सोधुं भुं ( कि. ) घमण्ड  
होना, गर्व आना, अकहमे रहेना।

भोलेधुं ( सं. ) मुंह दिखाई, मुंह  
देखकर कुछ देना, जबकि ससुरा-  
लमें पहिले पहिल बहुत आती तब  
मुंह देखकर उसे कुछ न देते हैं  
वह रीति। [ प्रिय।

भो भोधुं ( वि. ) एकही अत्यंत

भो भोधुं ( वि. ) इच्छित बहुत,  
जितना चाहे उतना।

भोभा२ ( वि. ) छातवाळ साहसी  
हिम्मतवाळा, निर्दोष, उच्छृंखल।

भो२धुं ( वि. ) विनयी, लज्जाशील  
पक्षपाती, एकतरफी। [ सामने।

भोवठ ( वि. ) मुंह आगे, पस,

भो ( सर्व. ) अन्दर, भीतर, मांही।

भो ( कि. वि. ) नहीं, मत, न, मा।

भोभ ( सं. ) गिल्ली, हो, भळोही,  
परवाह नहीं।

भोभ देखो भोभ।

भोभणुं ( कि. ) भोजना, खाना  
करना, पठाना, प्रेषण।

भोभणाळ ( सं. ) विशाळता, बाहु-  
त्वता, विशेषता, अधिकता, स्वतं-  
त्रता, सरलता।

भोभणुं ( वि. ) बहुतबड़ाखान,  
उदार, सखी शुद्ध, प्रकट, बहुत,  
विपुल, स्वतंत्र, स्वाधीन, विस्तृत,  
पृथक।

भोभाध-भोधुं ( सं. ) किसीके  
मरनेका समाचार आता है तब  
स्त्रियां रोती हैं उसे मुंहपत्ता कहते  
हैं, शोक प्रदर्शनार्थ सम्मिलित  
होना, अशुभ समाचार।

भोभोधुंभांभो ( कि. ) बहुत  
नुकसान होना या होने कीसी  
दशा होना।

भोभोधुनासभाभा२ ( सं. ) अशुभ  
समाचार, किसीके मरनेकी खबर।

भोभासदा२ ( सं. ) इनाम पार्ई हुई  
भूमिका मालिक। [ स्थगित

भोभु३ ( वि. ) मुक्तर्षी, बन्द,

भोभु३ ( वि. ) पूर्ववत्। [ या कण्ठा।

भोभ ( सं. ) सम्मूके अंदरभा बांस

भोभरे ( कि. वि. ) सबके आगे,  
सर्व प्रथम, आगे, सामने, बाहिर।



भोभरी ( सं. ) बाहिरकी जगह,  
सामनेका स्थान, ऊँचा मार्ग ।

भोभ ( सं. ) देखो भभ ।

भोभरी ( सं. ) सेंगरी, सोगरी,  
मूखीकी फछी, साग विशेष, धान,  
आदि कूटनेका ढण्डा, मूसळ, लक-  
ड़ीकी हथौड़ी । [बनावा हुआ तेल ।

भोभरेश ( सं. ) मोगरेके फूलोंसे

भोभरी ( सं. ) पुष्प विशेष, बेल,  
मोगरा, यह कई प्रकारका होता है  
मोगरे के पुष्पकी शकलका एक  
प्रकारका आभूषण, नास, हुळस,  
खुंवनी, दीपक के ऊपरकी जल के  
रही हुई बत्ती, बटाटोप, गोल  
चक्र ।

भोभस ( सं. ) सुसलमान, यवन,  
मुगल जातिका सुसलमान ।

भोभसाध ( वि. ) देखो भुभसाध ।

भोभभ ( वि. ) हो जैसा, सामान्य,  
अस्पष्ट, अनिर्दिष्ट, अनिश्चित ।

भोभवारी-भाध ( सं. ) महंगी,  
महर्षता, दुर्भिक्ष, काळ, दुष्काळ ।

भोभुं ( वि. ) महंगा, अधिक  
मूल्यवाळ, महर्ष, कीमती, दुर्लभ ।

भोभ ( वि. ) छोड़नेवाळा, छुड़ी  
देनेवाळा ।

भोभ ( सं. ) मोचीकी ली, जूते  
बनानेवाळे चमारकी बीरत ।

भोभाधभुं-भुं ( कि. ) हाथ पैर  
मुडकवाना ।

भोभी ( सं. ) श्रुतिया बनानेवाळा,  
चर्मकार, चमार, एक जाति  
विशेष ।

भोभेभु ( सं. ) देखो भोभभु ।

भोभ ( सं. ) आनन्द, हर्ष, खुशी,  
कांडा, मजा, हंसी खेळ, ह्छका,  
छवि, मजी, राजी, सल्लस ।

भोभडी ( सं. ) बच्चोंकी नाजुक  
जूती जोड़ी ।

भोभ ( सं. ) देखो भोभ, बोहा ।

भोभ ( सं. ) केत वा भूमिका  
माप, नाप, माप, सरवे ।

भोभकीसर ( वि. ) नापनेवाळा,  
जमीन मापनेवाळा, सरवेबर ।

भोभभ ( सं. ) आनन्द मंगळ,  
हर्षोल्लास, रागरंज ।

भोभभ ( वि. ) रंगीळ, आनन्दी ।

भोभभ ( कि. ) नापना, मापना,  
सरवे करना, लेना, जानना ।

भोभ ( सं. ) हाथ वा पैरोंमें अंगु-  
ली इत्यादि ठाकनेकी कपडोंकी  
बैलियां विशेष, भोजे जुरांव, दस्ता  
ने, ग्लोव्ह, सॉक्स ।

भोजन ( सं. ) लहर, तरंग, कर्मि  
भोजन-अर ( अ. ) भीतर,  
अन्दर, में, माही ।

भोजन-७ ( वि. ) मौज करने  
वाला, आनन्दी, विलासी, लंपट ।

भोजन ( सं. ) एकमोजा, एक  
जुरांच । [ हाजिर, वर्तमान, समक्ष ।

भोजन ( सं. ) तय्यार, उपास्थित,

भोजन ( सं. ) ग्राम, गांव, गांवड़ा,  
खड़ा । [ तमाशा, करामात ।

भोजन ( सं. ) आश्चर्य, कांतुक,

भोजन ( सं. ) लहर, हिलार, तरंग ।

भोजन ( सं. ) देखो भोजन ।

भोज ( वि. ) देखो भोजन

भोजन-५ ( सं. ) बड़प्पन, प्रातिष्ठा,

शोभा, बड़ाई, अभिमान, अहङ्कार  
आदाय ।

भोजन ( सं. ) पूर्ववत् । वृद्धि ।

भोजन ( सं. ) पोट, गांठ, गठरी,  
पुटली ।

भोजन ( सं. ) परिश्रमी, मज-  
दूर, इम्माक, भारवाहक ।

भोजन ( सं. ) गर्व, महिमा, महत्ता,  
ऐश्वर्य, प्रभाव । [ ( बंबई में ) :

भोजन ( सं. ) अन्न भरनेका बेल्ला,

भोजन भा-भोजन ( सं. ) पतिकी

बहिन, पतिकी बड़ी बहिन, ननैद ।

भोजन ( वि. ) विस्तार, बड़ा, दीर्घ,  
विस्तृत, विस्तार, मारी, अचर,  
बहुत, अनेक, अतिसय, घना,  
पुष्कल, विफळ, ध्यान में आने  
योग्य, प्रभावोत्पादक, उच्च, वृद्ध,  
वयोवृद्ध, बुजुर्ग, जर्जर, बूढ़ा,  
उदार, महाशय, महात्मा, प्रति-  
ष्ठित, मानी ।

भोजन भा-भोजन ( कि. ) दूरकाल में  
आगेहोना, प्रत्येक, कार्य में अपने  
नाम शाबाशी लनेको आंग होना ।

भोजन भोज ( सं. ) छोट होनेपर  
भी बड़ों के समान आचरण करने  
वाला व्यक्ति ( मजाक में कहा  
जाता है ) ।

भोजन भा-भोजन ( सं. ) बड़े  
आदमी के आश्रय रहनेवाला ।  
गर्विष्ठ मगरूर, तथा मस्त मनुष्य ।

भोजन भन ( सं. ) उधार मन,  
परोपकार बुद्धिवाला आदमी ।

भोजन पेठ ( सं. ) सहन क्षील,  
गंभीर विचारवाला, विचारशील ।

भोजन पेठ ( वि. ) लालची ।

भोजन शब्दार्थ भोज ( वि. ) मारा  
झूँट, फुलावाहुआ मुँह, सूखकर  
मोटा हुआ मुँह ।

भोटे पाठ्ये भेसाधुं ( कि. )

मान देना, तारीफ करना, प्रशंसा करना, प्रशंसा करके फुलाना ।

भोडुं पशेडिधुं ( सं. ) भोर, प्रातः

काल, भिलुपारा, आरंभ, तड़का, चौफटना । [ मानी, पूज्य ।

भोडुं भाधुस ( सं. ) बड़ा आदमी,

भोटेथी ( अ. ) जोरकी आवाजसे,

बिज्जा कर, डकारकर, हल्ला-  
चाकर ।

भोटे पशेडिधे ( अ. ) मूर्खोंदय

पा ११, अलम्बुबह, बिल्कुल प्रातः  
काल में ।

भोटेडं ( वि. ) देना भोडु ।

भोटे पशे ( सं. ) डेढ़ पैसा,

४॥ पाई । [ जीमन ।

भोडी ( सं. ) भोजन, आहार,

भोडी दास ( वि. ) भोजनभट्ट,

लाऊ, भागी, विलासी, बिहारी,  
चटोरा ।

भोड ( सं. ) एक प्रकार की घास

के तिनकों से बनायी हुई वस्तुजिस

स्त्रियों शुभ कार्य में मस्तकपर  
बाँधती हैं । या उसपर कपड़ा

मैडकर मोती आदि लगाकर

बनाती हैं । खेतमें दूटकर गिरी

हुई बालें । मजमून, तर्ज, रंग, ।

हाथ पैरों तथा कमर में काढ़ई

विशेष । हाथभाव, नकरा, बिद,  
इठ, डील, देर, बिलम्ब ।

भोड्डी ( सं. ) कल और दस्त,

वमन और अतिसार ।

भोडपुं ( कि. ) मरोड़ना, टेढ़ा-

करना, तोड़ डालना, भगकरना,

अपमान करना । ( सं. ) कन्धों-  
कादेर, घासकी गंजी ।

भोडा ( स. ) गुजरात की प्राचीन

पाठशालाओंमें प्रातःकाल विद्या-

धियोंके आनेपर अनुक्रम पूर्वक

नामलखन । रजिस्टर, पत्रक,

नामावली, हाजरी ।

भोडाभोड ( अ. ) तोड़मरोड़ी,

रुबक, सन्मुख, समझ, आमे

सामने । [ भी वस्तुका ऊपरीभाग ।

भाडिधुं ( सं. ) मुखपरका, किसी

भोडी ( सं. ) छोटा मुंह ( तिरस्कार

सूचक ), मराठी भाषाकी मुख्य

लिपि । [ समयके बाद ।

भोडुं ( वि. ) देर, बिलम्ब, पीछे,

भोडाभोड ( अ. ) रुबक, सन्मुख

समझ, आमे सामने ।

भोडुं ( सं. ) मुंह, मुख, चेहेरा,

बदन, मार्ग, राह, रास्ता, छिद्र,  
नाका, श्वा ।

श्रीहृदं भजन्नापुनं (क्रि.) मुस्कुराना  
कुरुहास्व, जराहंसना ।

मोक्षानुप्राप्त्यु-जब कुछ अच्छा न किया हो तब यह वाक्य प्रयोग करते हैं।

भोक्षंश्चालयवा ( कि. ) यश मिलना  
आनन्द होना, खशबख्ती होना ।

ਮੇਠਾਨੀ ਮੀਠਾਸ (ਬਿ.) ਕੁਪਰਕੀ  
ਥਿਕਨੀ ਕੁਪਡੀ ਬਾਤ ।

मेहान्नीभाते ( सं. ) खाली बात-  
चीतका जमाखर्च करना कुछ नहीं ।

भो.६.१७ (वि.) लवार, बाचाळ,  
बकवादी, स्पष्टवक्ता ।

भोक्ष्यं पश्येत्' ( कि. ) बिना किसी  
संका और लजके सामने कहना ।

भेदापर शुद्ध ( कि. ) धिक्कारना,  
फटकारना. दुतकारना ।

मेधापरधी भाँभतो उडती नथी-  
होश नहीं, हिम्मत नहीं, शक्ति  
नहीं।

भोदाबशी हाथ करवा (कि.)  
खाना, जीमना, भांजन करना ।

आश्चर्य करना, अचंभित होना,  
विस्मित होना ।

श्री ४१६॥ ५३५॥—इस वाक्य का प्रयोग बारम्बार धूँकेवाले मनुष्य के लिये किया जाता है।

મોઢાંખાં ખીલો ઠાકો ( કિ. )  
જવાન બન્દ કરના, ચોલના રોક-  
દેના ।

मोक्षार्थं शुभं साधयि ( कि. )  
बोलते समय अटकना, बन्द होना,  
चुप रहना ।

ਮੇਲਿਆਂ ਅਤੇ ਨਦੀ (ਕਿ.) ਗੁਮਾਸਤ  
ਸੰਗ ਬੈਠਾ ।

भोक्षभां यूके जेपुं तुच्छ, बेकदर ।  
 भोक्षभां हांत नथी—जाय्य, कम,

नहीं ।  
मोदोंभा धुन नाचवी ( जि. )

किसी के भाषण को बुरा बताकर  
बोलनेमें रोक देना, लज्जित करना ।

मोक्षार्थां क्षीणं तरेणुं प्राप्तुं (क्रि)  
अपनी दानता प्रदर्शित करना ।

भोलाभां साक्षरईश्वर करे तुम्हारा  
वाक्य सफल हो ।

भेदभांती धांत पाडी नाभवा  
( कि ) हराना, परास्त करना,  
बोली बन्द करना ।

मोड़ुं अरुणुं करी नाभुं ( कि. )  
 खूब बुरी तरह मारना, बहुत  
 पीटना ।

મોહું આવડું (કિ.) મુહું દિલ્લાના  
મોહું આવડું થઈ જવું (કિ.)

मुहँ उतर आना, मुख फीका होजाना।

भोड़ुं आवपुं ( कि. ) मुखमें छाले  
पड़ जाना, मुख रोग होना ।

भेदुं उपाधुं ( कि. ) बुझाना,  
कहाना । [ कहना ।

भेदुं उपधुं ( कि. ) बोलना,

भेदुं वतरी जपुं ( कि. ) मुहं-  
फोका होजाना । [ बकना ।

भेदुं उपधुं ( कि. ) बे हट

भेदुं उपाधुं ( कि. ) गालियाँ  
देना ।

भेदुं ताधुं कश्-दूरहट, निकलना ।

भेदुं ताधुं कश्पुं ( कि. ) बदनाम  
होना, कार्निफो कलंकित करना ।

भेदुं ताधुं भैश्च-धन सधुं जपुं  
( कि. ) मुहं काळा हो जना ।

भेदुं अधापुं ( कि. ) गाली देना,  
मनही मन कोसना ।

भेदुं अधुं ( कि. ) गुस्सा होना ।

भेदुं याधुं ( कि. ) दिनभर जब  
देखों तब कुछ न कुछ खाते रहना,  
हृद से अधिक बढ़बढ़ाना ।

भेदुं जेपुं होय तो ( आवणे )  
सरणासन्न मनुष्य के विषय में  
किसीको बुलावे के लिये यह वाक्य  
प्रयोग होता है । [ तो आना ।

भेदुं जेपुं ( कि. ) मुहं देखना हो

भेदुं ठेधुं सधुं ( कि. ) मुहं  
संभाळ कर बोलना ।

भेदुं तपासीने ( व. ) विवेक पूर्वक,  
मर्यादासे, हज्जतका ध्यान रख के ।

भेदुं धिआव-मुहं थोकर आ,  
बोग्यता सीखकर आ ।

भेदुं पधुं ( कि. ) मुहं फोका  
पड़ना, होठ सूखजाना ।

भेदुं भरपुं ( कि. ) कुछ देकर  
समझा देना, रस्मिन्तदेना, घूसदेना ।

भेदुं हेरपुं ( कि. ) नाराज होकर  
कोपमें पाँठ फेरना, बिमुल होना ।

भेदुं जभाधुं ( कि. ) नाराजी  
दिखाना । [ इच्छा होना ।

भेदुं अडभधुं ( कि. ) खानेकी

भेदुं भरपुं ( कि. ) वृत्तहोना,  
धापना । [ समझा देना ।

भेदुं अजधुं ( कि. ) कुछ देकर

भेदुं भेधभांधाधुं ( कि. ) नोवा  
देखना ।

भेदुं रदीजपुं ( कि. ) बोलते  
बोलते धकजाना ।

भेदुं रापीने ( व. ) शरम रखकर ।

भेदुं धधनेआवधुं ( कि. ) योग्य-  
तासे आना ।

भेदुं वाधुं छे ने पूड खियाजनी  
देखनेमें बहादुर परन्तु महान  
उरपोक । [ रोना ।

भेदुं रागपुं ( कि. ) मुहं ठंकर

भोड़ुं-सीपीयेतुं ( कि. ) चुप रहना

भोड़ुं-बधावतुं ( कि. ) बोलना  
कहना । [ कहना ।

भोड़े बढीनेकेहेतुं ( कि. ) सामने

भोड़ाने। छूटे। ( वि. ) बलवादी  
बक्की । [ बाला ।

भोड़ाने। सांभो। ( वि. ) सचबोलने

भोड़ाने। बुड़ो। ( वि. ) बुरे वचन  
बोलने वाला । [ सन्मुख ।

भोड़ाभोड़ा ( अ. ) स्वरूप, समक,

भोड़ुं-बेवातुं ( कि. ) मुहं फोका  
पड़वाना ।

भोड़े करतुं ( कि. ) जबानों याद  
करना, कंठाप्रकरना ।

भोड़े बधावतुं ( कि. ) अत्यंत चार  
करना । [ मौन होना ।

भोड़े तालुदेतुं ( कि. ) चुप रहना,

भोड़ेभांभुं ( वि. ) इच्छित, जी  
चाहा । [ निकालना ।

भोड़ेभाये जोड़तुं ( कि. ) दिवाळा

भोड़े भाये दाख दधने ( कि. वि. )  
सिरपर हाथ रखकर, निराश हो-  
कर, थककर ।

भोड़े साकर भीरसवी ( कि. ) मोठी  
बाणी बोलकर उसे अपने आधीन  
करलेना ।

भोड़ ( सं. ) ब्राह्मण तथा वैश्योंकी  
एक आतिथिविशेष, मोड़ेरके निवासी ।

भोड़िथुं ( सं. ) दीपकपर चिमनी  
लगानेकामुहं जिसमें बत्ती रहती है  
मुहं बांधनेकी आळी ।

भोथु ( सं. ) देखो भाथु जिसमें  
दोषदे पानी समासके इतना बढा  
मिष्टीका पात्र ।

भोथुभोथु ( अ. ) धीरे धीरे शनैः  
शनैः जैस तैस करके, जबरदस्ती ।

भोथेभोथुकरतुं ( कि. ) डीलपोल  
करना, घुसपुस करना ।

भोत ( सं. ) मृत्यु, काळ, मरण ।

भोतभिना ( सं. ) अभिसंदंकार,  
प्रेताक्रिया ।

भोत श्री वणतुं ( कि. ) मौत  
वेगलेना, अचानक आबनना, अन्त  
होना ।

भोतभायेभावेतुं ( कि. ) बहुत  
थककर मरनेके तुल्य होना ।

भोतनेभाये ( अ. ) काळके मुखमें  
यमका अतिथि, मौतका प्राप्त ।

भोतल-६ ( सं. ) खुराक, मात्रा,  
परिमाण विशेष, जरिया, क्षाफि ।

भोतलाना ( सं. ) गुजरातमें ब्राह्म-  
णोंकी एक आति विशेष [ धैर्य ।

भोतियुं ( सं. ) बल, पौरुष, हिम्मत

भोतिना मरीचिका ( कि. ) हिममत  
हारना, होना चढ़ाना, बल कम  
होना ।

भोतिथु ( सं. ) ओलती, छपरे  
मेंका पाटिया विशेष ।

भोतियो ( सं. ) एकप्रकारका मो-  
गरा, आँखका मोती, फूला, शाकी  
बल, होना ।

भोती ( सं. ) मुक्का, मणि रत्न,  
मौक्तिक रत्न विशेष, समुद्रीय रत्न ।

भोतीभोःपुश्वा ( कि. ) बरका  
आंगन सुसांज्जत करना, मीठा  
जोचना, इच्छा पूरण करना ।

भोतीना पाष्ठी उतयो ते उतया-  
हुआसो हुआ, एकबार बिगड़ोकि  
बिगड़ी ।

भोती परावर्वा ( कि. ) कोई बारीक  
काम करना, कारीगरी करना ।

भोतीना भोः पूरवा ( कि. ) बड़ी बड़ी  
इच्छाएं करना, हवाईकिले  
बनाना, बड़ेबड़े विचार बांधना ।

भोतीनाभाशान्भेवा गोल और सुंदर  
( अक्षर )

भोतीनाभेःपरसवा ( कि. ) आन-  
न्दहाना, खुशीहोना, हर्षहोना ।

भोतीभुर ( सं. ) एकप्रकारकी  
मिश्राई ।

भोतियो ( सं. ) एक प्रकारका मेव  
रोग, भोतिया बिन्द ।

भोः ( सं. ) एकप्रकारकी घासकी  
जड़, नागरमोथा, बलवान जानवर ।

भोः ( सं. ) आनन्द, सुखी, हर्ष,  
प्रसन्नता, आल्हाद, अन्न आदि  
लानेके लिये वह कपडा जो गाँधीमें  
अन्न न गिरनेके लिये बिछाया  
जाताहै । [ होना ।

भोःपुं ( कि. ) प्रसन्न होना, खुश

भोः ( सं. ) लड्डू मिठाईका गोल  
( वि. ) सुखद, रुचिकर, मनमोहर,  
रम्य, मनोरञ्जक, आल्हादकारक ।

भोःपुश्वा ( कि. ) लड्डूखाना,  
विजय प्राप्त करना, लाभ होना ।

भोः ( सं. ) लड्डू, एकप्रकारकी  
मिठाई ।

भोः ( वि. ) प्रसन्न, सुखी, मुग्ध ।

भोः ( सं. ) छोटा नागरमोथा  
( जड़विशेष )

भोः ( सं. ) व्यापारी, बनिया,  
महाजन, कोठारी, कारभारी ।

भोःपायु ( सं. ) जिस दुकानसे  
फौजके लिये खर्चा मिलता है,  
कोठार, भंडार ।

भोःपुं-पुं ( वि. ) संकीर्ण  
हृदय, घृता, घामघ मनका ।

भोजेत-६ ( सं. ) पारसी जातिकी धर्मोपदेशक, पारसी धर्मान्धार्य ।

भोज-भारी ( सं. ) बरका सबसे लम्बा आड़ा और मोटा लकड़ ।

भोजाभ्युद्धी ( सं. ) मूर्ख, जड़, मंदमति ।

भोजाहार-पाणु ( वि. ) बजनदार भारी, मुख्य, प्रतिष्ठित ।

भोजाभंगण ( वि. ) अत्यंत दुःखद अवस्था ।

भोजी ( वि. ) घरमें प्रबंध कर्ता, ब. १, मान्य ।

भोजभोजी ( सं. ) बजन, मान, आबरू, बरजा, भार, बोझ प्रतिष्ठा ।

भोज ( सं. ) मधुमल, शहदमेंस निकलता है शहदकी मक्खनका छत्ता प्रायः सारा मोमकाही बना होता है ।

भोजने ( सं. ) मुसलमान जुब्बाहा, कपड़े बुननेवाले, मुसलमानोंकी जाति विशेष ।

भोजभरती ( सं. ) मोम लपेटकर बनाई हुई बत्ती ( जलनेके लिये )

भोजाभुं ( वि. ) इच्छित, मांगा-हुआ ।

भोजभे ( सं. ) बेल घोड़े इत्यादिके मुखके लिये चमड़े या रस्सीका मोहरा ।

भोजभं ( सं. ) मंडप, बिंतान, मढ़वा ।

भोज ( सं. ) मयूर, शिल्पी केकी, पक्षी विशेष आभ्रमंजरी, बौर, ( अ. ) पेस्तार, पहिले, पूर्व, सामने पास ।

भोजभंडी-भरी ( सं. ) समुद्रके किनारेकी भूमि, कोर्टलेण्ड ।

भोजभुं ( वि. ) गरम रस्सकर, बोल नेवाल्म ।

भोजभ ( सं. ) एक प्रकारका आद्य, मुहं चंग, फूंकसे बजनेवाला वाद्य विशेष । [ उलटो ।

भोजभो ( सं. ) हैजा, दस्त और

भोजभे ( सं. ) शहरके कोटका द्वार, सेनाका अग्रभाग पञ्जा, निशान ।

भोजभो भारवो ( कि. ) विजयप्राप्त करना, जीतना, परास्त करना ।

भोजभ ( सं. ) एरुप्रकारका खाद्य पदार्थ, मोरस, फलेरी पकौड़ी विशेष ।

भोजभु ( सं. ) नाला बोधा, तुथ, औषधि विशेष, एकप्रकारका श्वार ।

भोजभभुं—पाई ( सं. ) मूलका चिन्ह, मोरपंजा मोरका पांव ।

भोजभे ( वि. ) अलग तरहका, भिन्न प्रकारका, बनावटी, कृत्रिम, जाळी ( सिका )



भोःरवी ( सं. ) बंसी, बाँसरी, सुरली  
भोःरवधु ( सं. ) आगसुखानेके लिये  
दण्डका टुंडा, गरसी, दूध जमा-  
नेके लिये किसी तरहका अष्टपदार्थ  
जामन, जमावन ।

भोःरवपुं ( कि. ) दूध जमाना दहि  
बनाना, दूधमें जामन डालना ।

भोःरपुं ( कि. ) मंजरी आना, बौर  
आना, फूल आना, लपेटना ।

भोःरवेक्ष ( सं. ) एकप्रकारकी बेलि  
जो दवाके काममें आती है ।

भोःरक्ष ( सं. ) समुद्रके किनारे पैदा  
होनेवाला एक पौधा, इसका साग  
होता है ।

भोःराप्पी ( सं. ) देखो भोःराप्पी  
( वि. ) मान रखकर बात कहने  
वाला, लज्जालु । [ नायक ।

भोःराप्पी ( वि. ) मुख्य, प्रधान,

भोःराक्ष ( सं. ) देखो भुःराक्ष ।

भोःराप्पी ( सं. ) रानीकी गवाही,  
अथर लखेवाला, पता बतानेवाला ।

भोःरिथो ( सं. ) चढ़ा, चट, गगरा ।

भोःरी ( सं. ) बाँके पनाळा, नाळा,  
सकानकाजल निरुद्धेध मार्ग ।

गटर, गळ, गाय भैसआदि पशु-  
ओंको मुईसे बाँधने के लिये रस्सा  
सोहरा, सोहरी ।

भोःरी ( अ. ) पहिले, आरंभमें  
शुरूमें ।

भोःरी ( सं. ) साँपके मुईके अंदर  
तालुमें होनेवाली मष्ठी विशेष, इसे  
जहर मोरा नामसे पुकारते हैं, इसे  
विष द्रष्टृपर लगानेसे विष नष्ट  
लेता है, बिचकर चमक पैदाकर-  
देना, गायनमें अस्ताई की कढ़ी,  
टेक, धुन, नगारा बजानेकी एक  
रीति विशेष कुश्तीके आरंभमें इधर  
उधर भ्रमण, तलवारका चाब ।

भोःक्ष ( सं. ) पीटा, झेती, अक्षकी  
उत्पत्ति बहुतसे गाँवोंका समूह,  
पाक उत्पन्न ।

भोःक्ष ( सं. ) किसी अन्य वर्णकी  
औसे उत्पन्न प्रजा, वर्ण संकर,  
अच्छर ।

भोःक्षपी ( सं. ) मुसलमान वैद्य या  
न्याय जाननेवाला, इकीम, यवन  
विद्वान् । [ नर्थ ।

भोःक्षयभ ( वि. ) कोमले, मृदु,

भोःक्षुं ( सं. ) राक्षस या भूतको  
बकरानेके लिये जोरसे नगरेका  
वाक्य ।

भोःक्षेक्षर ( सं. ) मोहनेकी हिक-  
अत रखनेवाला सिपाही, चौकीदार ।

भोक्षे ( सं. ) सिगरेट, बा बीडी, के डंगका बनाहुवा पटाका, अतिशबाजी विशेष घुर्लू, घुर्लू, छबूंदर, पैरि, मुहल्ला, पुरा, टोळा, स्ट्रीट, पाड़ा, गांवके जुदे जुदे भाग, मोहल्ला ।

भोक्षे ( सं. ) अप्रभाग, पेशानी ।

भोक्षे ( सं. ) मोयन, पकाऊको बर्म बनानेके लिये आटे में डाला हुआ घृत या तेल ।

भोक्षे ( सं. ) एक प्रकारका रोग यह पशुओंके मुखमें होता है ।

भोक्षे ( सं. ) घोरोपा, मेल, प्रीति-सम्बंध, दोस्ती, मैत्री ।

भोक्षे ( कि. ) निल सायंकाल को रोना ।

भोक्षे ( सं. ) बाल, रोम, लोम ।

भोक्षे ( कि. ) बाल इत्यादि पदार्थ को घुन या ईली आदि अज जन्तु खराब न करदे इस लिये घी या तेल आदि चिकनाई लगाना । आटेमें बोड़ा दूध या पानी मिलाकर, मोहित करना । [ समय ।

भोक्षे ( सं. ) ऋतु, अनुकूल,

भोक्षे ( सं. ) एक जातिकी नारंगी

भोक्षे ( सं. ) सरकारकी आज्ञासे बुझनेके लिये आया हुआ नाजिर, सम्मन, दरखास्त, आज्ञापन ।

भोक्षे ( सं. ) नानीका घर, नन-सार, माताका पीहर । [ मनुष्य ।

भोक्षे ( सं. ) ननसारके संबंधी

भोक्षे ( सं. ) विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंमें मामाकी ओरसे जो वस्त्र धन आदि दिया जाता है माभेरा, उसउत्सवके समय गाये जानेवाले गीत, अगरणी आदि उत्सवोंमें उस ज्ञाके पीहरसे आया हुआ धनवस्त्र आदि ।

भोक्षे ( सं. ) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, माया, प्रेम, प्यार ।

भोक्षे ( वि. ) मोह पैदा करनेवाला मनोहर, आदुगर आकर्शक, चित्त चोह, मनको मोहित करनेवाला ।

भोक्षे ( सं. ) अज्ञानताका पाक्ष प्रेमबंधन, मायाजाल ।

भोक्षे ( सं. ) वशीकरण, जादू, ( वि. ) मोहनेवाला, जादूगर ।

भोक्षे ( सं. ) मोटे मोटे शब्दोंकी माला, गळेमें पहिरनेका हार विशेष ।

भोक्षे ( सं. ) एक प्रकारका हारिवार जिसके प्रयोगसे शत्रु मूर्च्छित हो जाता है ।

भोक्षे ( सं. ) देखो भोक्षे ।

मोहभक्त ( सं. ) परिचय, पहिचान  
प्रेम, प्यार, जानकारी । [ बाण ।

मोहभाष्य ( सं. ) मोहके बाण, प्रेम

मोहभाष्य ( सं. ) सम्बाद दाताको  
हनाम, पताजानने वालेके लिये  
पुरस्कार ।

मोहभाष्ये ( सं. ) अपराधकी  
कावर देनेवाला, सम्बादवाहक ।

मोहभ ( सं. ) मुसलमानी वर्षका  
पहीला महिना, मुहर्रम, ( मुहर्रम  
सफर, रबीउलअव्वल, रबीउल  
अखीर, जमादिउलअव्वल, जमादि  
उक अखीर, रज्जब, साबान,  
रमजान, सवाल, जिल्काद और  
जिस्सहज ) जिसमहीनेमें मुसल-  
मानोंके ताजियोंका लौहार आता  
है । मुसलमानोंके पूज्य हुसन और  
हुसैनकी यादगारीमें यह वार्षिक  
आज उनके शोकरूपमें इस मही-  
नेमें मनाते हैं ।

मोह३ ( सं. ) बेहो मोह३ ।

मोहपुं-मोहुं ( कि. ) मोहित करना,  
बसमें करना, अशको तेल आदि  
कमाना । [ मूर्ख ।

मोहपु ( वि. ) अज्ञानोध, निर्बुद्धि

मोहित ( वि. ) बुझित, अचेत,  
सुप्त, मोह प्राप्त, आकर्ष, आसक्ति

मोहिनी ( सं. ) प्रेमवैशा करनेवाला  
औ, जादूगरनी, जादू ( वि. )

मनोरंजक मनोहारी, मोहक ।

मोहोक्ष ( वि. ) बहुत, मोटा,  
अत्यंत ।

मोहोक्षि ( सं. ) सिर, नोक, छोर,  
अग्र भाग, चोली की अस्तीन का  
कफ, बन्दूक का मुभीका ( मुंह ) ।

मोहोर ( सं. ) मुहर, ठप्पा, छप्पा,  
अक्षर, निष्क, स्वर्णमुद्रा, मिनी,  
नामकी मुहर, मुरली, बंसी, बा-  
सरी, वेणी । ( वि. ) कीमती  
बहुमूल्य ।

मोहो३ ( कि. ) गुण, सौन्दर्य तथा  
बुद्धिमें विचक्षण पुरुष, सतरंज के  
खेलमें राजा, बकीर, पैदल, हाथी  
इत्यादि ।

मोहोक्ष ( सं. ) राजमंदिर, प्रासाद,  
महल, हली, रहनेका बड़ा तथा  
उत्तम घर ।

मोण-भ ( सं. ) उवाकी, कम,  
बमन, छर्छि, पात्र आदि रखनेके  
लिये कपड़े वा अन्य वस्तुका बनाव  
हुना मोक्ष आकार, ईदी, चूमली,  
मंदी बाजार में माफकी चटी ।

मोणपुं ( कि. ) काटना, बनारना,  
तरावना (आवनाबीइलाहि) मोहना ।

भेष्ठा ( वि. ) मामाके लड़के,  
मामाके यहाँके, ननसार तरफके ।  
भेष्ठा-भेष्ठा-भेष्ठा ( सं. ) मामाकी  
बेटी बहिन, मातुल पुत्री, भगिनी,  
भेष्ठा-भेष्ठा ( सं. ) मामाका बेटा,  
भाई । [ नारी, ज़रीफा साफा ।  
भेष्ठा ( सं. ) ज़रीदार कोर, कि-  
भेष्ठा ( सं. ) बेसन (बनेका आटा)  
का बना हुआ खानेका एक पदार्थ  
विशेष ।  
भेष्ठा ( वि. ) स्वादहीन, जिलबिला,  
बहु मनुष्य जो रसकी बात नहीं  
समझे, ठंडा अथवा डीला पशु ।  
भेष्ठा ( सं. ) मामाकी लड़की,  
बहिन ।  
भेष्ठा ( सं. ) मूँज नामका घासका  
तीन सूत्रों का बना हुआ कटिस्त्र ।  
भौ ( वि. ) मृदुल, नरम, कोमल,  
सुलायम, बहुत दिनोंका भुखा,  
क्षुधित, दीन, अन्नका भिखारी,  
कंगाल, ( सं. ) जड़, बुद्धिहीन ।  
भौ ( वि. ) वृक्ष । [ महुप ।  
भौ ( सं. ) महुआवृक्ष, वृक्षविशेष,  
भौ ( सं. ) दृष्णाभाव, अभाव,  
अकथन, चुपचाप, भूकभाव,  
अनालाप ।

भौतिक ( सं. ) मौती, मुष्ठा, मौक्तिक ।  
भौतिक ( सं. ) सिर, मस्तक, भावा,  
माक ।  
भौतिक ( सं. ) तलवारका घर, खर्ज-  
कोष । [ नमैं रखिना ।  
भौतिक ( कि. ) तलवार व्या-  
भौतिक ( कि. ) कन्जेमें  
रखना । [ नरयान ।  
भौतिक ( सं. ) पालकी, डौला,  
भौतिक ( सं. ) नगर की  
सपाई आदिकी प्रबन्ध कारिणी  
सभा । [ मलिन ।  
भौतिक ( वि. ) खिन्न, उदास, दीन,  
भौतिक ( वि. ) अंलज, नीच, ना-  
रितक । विदेशी, अहिन्दू ।  
भौतिक  
भौतिक ( सं. ) गुजराती वर्णमालाका १७ वाँ  
अक्षर, तालुसे उच्चारण होनेवाला  
अन्तस्थ अक्षर ( सं. ) भी, विशेष  
तदुपरान्त, फिरसे ( जबकिनी  
शब्दके साथ आता है तब यह  
अर्थ होता है । [ प्रस्थान ।  
भौतिक ( सं. ) पलायन, कूच,  
भौतिक ( सं. ) मान, इज्जत, प्रतिष्ठा ।  
भौतिक ( सं. ) देवयोंनि विशेष, हलके  
रत्नोंका देवता, उपदेव विशेष ये देवता  
कुबेरके खजाने तथा वन उपवन  
आदिकी रक्षा करते हैं कुबेरभनपति ।

यज्ञकी ( सं. ) यज्ञकी स्त्री ।  
यज्ञत ( सं. ) यज्ञकी दाहिनी ओर  
सांसखण्ड, विपर, विल, कलेजा  
प्लीहा, तापतिही, उदररोग,  
पिलही ।

यज्ञधु ( सं. ) पिंगलशास्त्र कथित  
आठगणोंमेंसे एक जिसका पहिल  
अक्षर लघु और शेष दो गुरु हों ।

यज्ञन ( सं. ) होम, हवन, यज्ञ,  
मेघ, याग, पूजन, यागकरण ।

यज्ञभान ( सं. ) यज्ञकर्ता, यज्ञानु-  
ष्ठानमें दीक्षित, ब्रती, याजक,  
याज्ञिक ।

यज्ञभानिये। ( सं. ) बह्मशास्त्र  
जिसका उदर पोषण यज्ञमानद्वारा  
होताही यज्ञमानवृत्ति करनेवाला  
शास्त्र ।

यज्ञभानवृत्ति ( सं. ) यज्ञमानके  
यहाँ किना कर्म कराकर दान  
दक्षिणा लेनेका भन्दा ।

यज्ञधुं ( कि. ) पूजना, सेवा करना,  
सत्कार करना, भजन करना,  
हवन करना ।

यज्ञवेद ( सं. ) स्वयम्भ प्रसिद्ध  
त्रितीयवेद । ( ऋक्, यजु, साम,  
और अथर्व ) ।

७५

यज्ञवेदी ( सं. ) यज्ञवेद पढ़ा हुआ,  
या तदनुकूल आचरण करनेवाला ।

यज्ञ ( सं. ) वेदोक्त कर्म विशेष,  
याग, होम, हवन, मेघ, यज्ञ,  
अध्वर, कर्तु ।

यज्ञकुण्ड ( सं. ) यज्ञ करनेके लिये  
बौकोना बना हुआ गर्त, यज्ञके  
लिये निर्मित गद्दा, दैनिक आग्नि-  
होत्रके लिये बना हुआ १६ अंगुल  
चौड़ा औरउतना ही लम्बा जिसकी  
पेंदी केवल ४ अंगुल लम्बी चौड़ी  
रहे ऐसा धातु निर्मित पात्र ।

यज्ञाना। यधु ( सं. ) यज्ञपुरुष, विष्णु,  
अग्नि ।

यज्ञश्ले ( सं. ) कोई भी वृक्ष जो  
हवन में समिधा के लिये प्रयोग  
होता हो । [ स्थान ।

यज्ञशाला ( सं. ) हवन पूजन करनेका

यज्ञोपवीत ( सं. ) यज्ञसूत्र, ब्रह्म-  
सूत्र, जनेऊ, उपवीत, शिखाविन्दु,  
बिना इसे पहिने शूद्रवर्ण होता है  
सूत्रकी बनीहुई बिची पूर्वक सिगु-  
नीकी हुई गले तथा दाहिने हाथ  
के नीचेसे पहिनेकी आम्बवी  
शास्त्र, कश्मिर और वैष्ण्व हवन  
करके धारण करते हैं ।

- शक्ति ( सं. ) कवितामें विरामका स्थान, वाक्यमें बिन्दु विशेष ।
- शक्ती ( सं. ) लगी, साधू, संन्यासी, परिमार्जक, चितेन्द्रिय पुरुष ।
- शक्तिचित ( अ० ) बोझा, जरा, जो कुछभी, बोझा-बहुत, लेश ।
- शक्त ( सं ) उपाय, उद्योग, धर्म, कोशिश, चेष्टा, जतन ।
- शक्ता ( अ० ) जैसे, जैसा, ज्यों, जिस प्रकार जिस रीति, मस्लन् ।
- शक्तिक्रम ( अ० ) क्रमानुरूप, आनु-पूर्विक, क्रमशः, ठाँकठाँक, क्रम-बद्ध, व्यवस्थित, नियमानुसार, शासित ।
- शक्तिरूप ( अ० ) वास्तविक, उचित, सम्बन्ध, जैसा चाहिये वैसा ।
- शक्तान्तर ( अ० ) पक्षपातशून्य, न्याय, धर्मानुकूल, न्यायसंगत, नेक ।
- शक्तिक्रम ( अ० ) वैसाही, उचित, शासित, ( सं. ) न्यायपरायण ।
- शक्तिरूप ( अ० ) शब्दोचित, जैसा उचित, चाहिये वैसाही ( सं. ) प्रणाम, अभिवादन आशिर्वाद ।
- इत्यादि ( वि. ) यथार्थ, वास्त-विक, सच्चा, खरा ।
- शक्तिरूप तथा शक्ति-जैसा राजा वैसाही प्रजा,—
- “ राजे धर्माणि धर्मिष्ठा, पापेपापा समेसमाः । प्रजा तदनुवर्तन्ते ”
- “ यथाराजा तथा प्रजाः ” ॥
- शक्तिरूप ( अ० ) जिसतरह अच्छा लगे, इच्छानुसार, रुचि अनुकूल ।
- शक्ति ( अ. ) ठीक सत्य, उचित, बत, विधिवत्, यथायोग्य, व्यव-स्थाके अनुसार रीतिके अनुसार, बराबर ।
- शक्तिरूप ( अ० ) समानानुसार, फुरसत होनेपर, समय मिलनेपर ।
- शक्तिरूप ( अ. ) यथायोग्य, विधि पूर्वक ।
- शक्तिरूप ( अ. ) बलके अनुसार, अपनी ताकतके मुआफिक ।
- शक्तिरूप ( अ. ) पहली स्थितिके अनुसार, पूर्व अवस्थानुसार ।
- शक्तिरूप ( अ. ) उचित रीतिसे ।
- शक्तिरूप ( अ. ) दलीके अनु-सार, कुछ सर्वाधिके मुताबिक ।
- शक्तिरूप ( अ. ) जैसा मुना वैसा ।

५५३३ (अ.) अपनी समस्तके  
अनुसार ।

५५३४-२७१-५४ (अ.) इच्छानु-  
रूप, जैसी इच्छा हो वैसा, प्रचुर,  
आधिक बहुत ।

५५३५ (अ.) पूर्व कथित, पूर्वोक्त  
आज्ञानुसार, कहे सुआंकक ।

५५३६ (सं.) जोभी, अगरच  
यादि, कदापि ।

५५३७ (सं.) ऐसा, वैसा, भला  
बुरा, अनिश्चित, अनियमित, जैसे  
तैसे ।

५५३८ (सं.) कलपुरजा, सावा,  
धातुका पत्रा, अथवा कागजपर  
बिनपर देवदेवीका चित्र या नाम  
लिखा हो, जिसकी पूजा होती है,  
अंतर वाय, देवताओंका अधिष्ठान,  
पात्र विशेष भेदीन ।

५५३९ (सं.) बंत्रका बनाना,  
कठपुजोंका निर्माण, कठकी  
बनावट ।

५५४०-३४७ (सं.) वत्र विव-  
रक विद्या, भेषीन आदिज्ञान ।

५५४१ (सं.) कारीगर, शिल्प  
कार, सिल्ली, वंत्र विद्याका जाल-  
बेदाका ।

५५४२ (सं.) यमराज, काल, अंतक-  
सूर्यका पुत्र, मनुष्यकी मृत्युके  
बाद पापपुण्योंके अनुसार स्वर्ग,  
अथवा नर्कमें ले जानेवाला देवता,  
जम । (अ.) जैसा, जैसे, पूर्वोक्त

५५४३ (सं.) शब्दालंकार विशेष,  
अनुप्रास, (विंगल शास्त्रमें)

५५४४ (सं.) यमराजके नौकर,  
यमके गण, यमका संदेव,  
मृत्युका लक्षण, यमके जासूस ।

५५४५ (सं.) यमराजकी हाँ हुई  
सबा, यमराजाका शस्त्र विशेष,  
काठदंड, यमयातना, यम शिक्षा,  
नर्क भोग ।

५५४६ (वि.) निर्देव कण्ठ  
शून्य, निष्ठुर, कसाई, बेरहम ।

५५४७ (सं.) ऐसा पापी  
जिसके कार्योंको देख सुन कंप  
कंपी हो ।

५५४८ (सं.) अत्यंत  
दुःख, सख्त बमारी, महान्  
कठोर दंड ।

५५४९ (क्रि.) मार-  
हालना, बधकरना, मरानेमें  
मेजना, कैदकरना, जेलमें हालना ।

५५५० (सं.) रागविशेष, ईमनराग,  
कल्याणरागका एक भेद ।

अभ्यास ( सं. ) यमराजकी कांसी,  
अभ्यास दुःख, काठपास । [ नर्क ।

अभ्युरी ( सं. ) यमराजका नगर,  
अभ्यु-अभी-अभ्यु ( वि. ) काठरूप,  
यम स्वभावका, निर्दय, घृणायोग्य  
पुरुष ।

अभ्यु-अभ्यु ( सं. ) देखो अभ्युरी  
अभ्युना ( सं. ) इसनामसे प्रसिद्ध  
एक बड़ी नदी ।

अभ्य ( सं. ) औ अक्ष विशेष ।

अभ्यन ( सं. ) प्रीति अथवा यूनान  
देशका रहनेवाला पुरुष, मुसलमान  
जवन, अनार्य, आहिन्दु, इस्लाम  
धर्मका अनुयायी ।

अभ्यु ( सं. ) नर्म खिचड़ी ।

अभ्य ( सं. ) कीर्ति, कृपाति, प्रसिद्धि  
नामवरी, फलद, जय, विजय,  
प्रतिष्ठा, नाम ।

अभ्यु ( वि. ) कीर्तिमान, सुविख्यात  
कण्ठ प्रतिष्ठ ।

अभ्यु ( वि. ) जो बुद्धिद्वारा  
बस प्राप्त करे, कृष्णचंद्रकी माता,  
बशोदा ।

अभ्यु ( सं. ) वाचना, मांग ।

अभ्य ( अ. ) अथवा, वा, किंवा ।

अभ्यु ( सं. ) माधिक, मांग, मंग ।

अभ्यु-अभ्यु ( सं. ) वाक, बलवाक्य,  
परार्थ विशेष, भागको भी सत्कर  
तथा मसालेमें मिलाकर बनाया  
हुआ पदार्थ । [ हवन, भजन ।

अभ्य ( सं. ) यज्ञ, अक्षर, होम,

अभ्यु ( वि. ) आचक, भिक्षुक, भंगता,  
भिक्षारी, भीख मांगनेवाला ।

अभ्यु-अभ्यु ( सं. ) भिक्षारोपना,  
भिक्षा मांगनेका रोजगार ।

अभ्युना ( सं. ) भीख, प्रार्थना,  
अर्त्री, विनती, निवेदन, दरखवास्त,  
भीख मांगना ।

अभ्यु ( वि. ) भीख मांगना, भिक्षा  
मांगना । इच्छाकरना, प्रार्थना,  
करना ।

अभ्यु ( सं. ) याज्ञिक, आत्मेक,  
पुरोहित । पूजा करानेवाला ।

अभ्यु ( सं. ) पूर्ववत् ।

अभ्युना ( सं. ) पीड़ा, दुःख, कष्ट,  
तीव्रवेदना, अधिक कष्ट ।

अभ्युना ( सं. ) राजस, निराचर,  
दैत्य असुर, दनुज दानव ।

अभ्यु ( सं. ) तीरथ, कृष, प्रस्थान,  
मुसाफिरी, गमन, यात्रा ।

अभ्यु ( वि. ) मुसाफिर, यात्री,  
बटोही ।



**शब्दार्थ** ( सं. ) वसता, बसायता ।  
**शब्द** ( सं. ) स्मृति, स्मरण, नोट, मेमो, नानी, स्मरणसूची ।  
**शब्दगारी-गिरी** ( सं. ) निशानी, अभिज्ञान, नाम, वर्णन, वाद ।  
**शब्दार्थ** ( सं. ) स्मरणशक्ति, स्मृति, नोटबुक, स्मृतिपत्र ।  
**शब्दी** ( सं. ) पूर्ववत् ।  
**शब्द** ( अ० ) जैसा, अनुसार, सुआफिक ।  
**शब्दार्थ** ( सं. ) जीवजन्तुका समुदाय ।  
**शान** ( सं. ) वाहन, गाड़ी, असवारी, पालकी, गमन, शत्रुसन्मुख सेना ले जाना, राजनीतिक छः वर्गमेंसे एक ( संधि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय भार इंधा भाव )  
**शाने** ( अ० ) अर्थान्त, सारांशक, तात्पर्यक, या, अथवा, वा ।  
**शान्ति** ( वि. ) शंखविषयक ।  
**शान** ( सं. ) एक प्रहर, तीन घण्टे, त्रेदिन, विराम, पहर, आठ घड़ी ।  
**शान्नी** ( सं. ) रात, रात्रि, रानी, निशा । [ दक्षिणी पार्श्व ।  
**शान्ति** ( सं. ) कतिवृत्तका  
**शान्ति** ( सं. ) शीघ्र, क्षणान्द, मध्यान्ध रेखा । [ पश्चिम  
**शान्ति** ( सं. ) सुसज्जित, नानी,

**शर** ( सं. ) मित्र, दोस्त, सखा ।  
**शरी** ( सं. ) मैत्री, दोस्ती, साहाय्य, सखत्व, स्नेह, इत्क, प्यार, प्रेम ।  
**शर-ग** ( सं. ) चोदे आदि पशुके सिर तथा बर्धनपरके काठ, अवाठ  
**शर** ( सं. ) अस्त्रका रंग, बनावी हुई लासका लाल रंग ।  
**शर-ग** ( सं. ) जबतक सूर्य और चन्द्र आकाशमें हैं । प्रलय पर्यंत । [ जब ताई ।  
**शर** ( अ. ) जबतक, जबलय,  
**शरनी** ( वि. ) मुसलमानी, यवनसे सम्बन्ध रखनेवाला वस्तु ।  
**शरदी** ( वि. ) जुदिया नामक देशके निवासी । [ हाकर, मृत्यु पर्यंत ।  
**शरदी** ( अ० ) गुस्तेमें, मरणतुल्य  
**शरदी** ( कि ) किसी आफ-तके समय पर मृत्युको हाथपद लेकर काम करना ।  
**शरदी** ( वि. ) विशिष्ट, सहित, समेत, साथ ( सं. ) उचित, योग्य, बचार्थ ।  
**शुक्ति** ( सं. ) मिलना, मेल, योग्यता, प्रवीणता, चतुरार्थ, चतुरता, हथौड़ी, विवेचन, कला, तदवीर, उपाय, याचना, रचना, कथायात, हिकमेत, इत्क, तजवीब, इस्म, आलाकी, हुकर, शुब ।

**युक्तिवान-मान-वंत-वाशुं (वि.)**

चतुर, होशियार, प्रवीण, सुदक्ष, करामाती, योग्य, काबिल ।

**युग (सं.)** आर्योके बनाये हुए चार समय विभागमें से एक ।

सतयुग या कृत युग, प्रथम युग, इसकी अवधि सत्रह लाख अष्टाईस हजार वर्ष । त्रेतायुग बारह लाख छियानवे हजार वर्षका ।

द्वापर युगकी अवधि आठ लाख चौसठ हजार वर्ष । और कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हजार वर्ष । समय, युग, जोड़ा ।

**युगल (वि.)** जोड़ जोड़ी, दो युग

**युगन्तयुग (अ०)** निरन्तर, सदा, आयु पर्यन्त अवोमव ।

**युगेयुग (अ.)** पूर्ववत् ।

**युगम-युग (सं.)** द्रव्य, दो, जोड़ा युग, द्वैपति, वरवधू ।

**युत (वि.)** मिलित, अपृच्छभूत, एकत्र विलिष्ट, जड़ित, सहित, साथ ।

**युद्ध (सं.)** लड़ाई, संप्राम, समर, विवाद, विग्रह, रण, जंग ।

**युद्धा (सं.)** योद्धा, वीर, लड़ाका, युद्धार्थी, छुर, जैगी ।

**युनानी (वि.)** यूनान देशका ।

**युरोपियन-यूरोप (वि.)** योरोप खंडका, अंग्रेज, योरपवासी ।

**युवति-ती-वंती (सं.)** यौवन-वती, तरुणी, युवावस्थाकी स्त्री । १६ और ३० वर्ष के मध्य अवस्थावाली स्त्री ।

**युवराज (सं.)** राजका बड़ा लड़का, राज्यासनका उत्तराधिकारी ।

**युवा-वान (सं.)** जवान, तरुण, यौवन, अवस्थावाला । १४ और ४० वर्षकी मध्यकी वयवाला पुरुष ।

**युवावस्था (सं.)** जवानी, यौवन, तरुणार्थ । [ आंशविक्षेप ।

**यूथ (सं.)** जूँ, बिलर, स्वेदज

**यूथ (सं.)** सजातीय समूह, हुन्द, समूह, झुण्ड, डोळा, जत्था, समुदाय । [ मेस ।

**यूथ (सं.)** खूटावा संभ, स्तंभ, ये (अ०) भी, भारसूचक शब्द ।

**योग (सं.)** संगति, युक्ति, वित्त-निराध, विषयान्तर से मनकी निश्चिन्ता, मेक, संयोग, साधन, उपाय, इत्यज, संघि, समागम, सांस्कृतिक जंजीर, भ्रंशला, श्रेणी, दवा, औषधि, दवाई । ज्योतिष-शास्त्र वर्णित विष्णुभादि १० योग, जोग ।

योगभाषा ( सं. ) योगनिष्ठ, प्रलयके समय परमात्माका संहार कार्य, प्रगाढ समाधि, दुर्गा, शक्ति, देवी ।

योगभेद ( सं. ) जिस शब्दका उसकी धातु प्रत्ययके अनुसार अर्थ उसके व्यावहारिक अर्थके समान हो ( व्याकरणशास्त्र में । )

योगाभ्यास ( सं. ) समाधि लगाकर ईश्वरचित्तन करनेका अभ्यास । योगविषयक अभ्यास ।

योगायोग ( वि. ) अनुकूल तथा प्रतिकूल समय, उचित अनुचित ।

योगासन ( सं. ) योगसाधन करते समय की बैठक । योगाभ्यास के समय बैठनेका ढंग विशेष । योगसाधन के लिये २४ प्रकार के आसन होते हैं ।

योगिनी ( सं. ) भूतिनी, पिशाचिनो, डाकिनी, दुर्गाद्वारा उत्पन्न उपदेवी, कहते हैं ये संख्यामें छियाळीस हैं । बैरागिन, साध्वी, जोधिन ।

योगी ( वि. ) योगसाधक, तपस्वी, संन्यासी, योगाभ्यासी । योगी, ।

योग ( वि. ) उपयुक्त, उचित, ब्यार्थ, लायक, अनुकूल, मुष्ठाधिक, पात्र, प्रतिष्ठित ।

योगता ( वि. ) निपुणता, प्रवीणता, लायकी, मान, प्रतिष्ठा, पदवी ।

योग्य ( वि. ) योजना करनेवाला, मिलानेवाला, जोड़नेवाला, कारीगर, व्यवस्थापक, प्रबन्धक ।

योग्य ( सं. ) चार कोसका माप, ५ माइलकी लम्बाई ।

योग्यभेदा ( सं. ) मृगमद, कस्तूरी, मुद्ग ।

योग्यता ( सं. ) व्यवस्था, प्रबन्ध, मिलाप, विन्यास, युक्ति, हिकमत, कल्पना ।

योग्यु ( कि. ) प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, तदबीर सोचना, जोड़ना, रखना, बिठाना, मिलाना ।

योग्यित ( सं. ) व्यवस्थित, योजना किया हुआ ।

योगी ( सं. ) बीर, बहादुर, धूर, लड़ाका, पहिलवान, जंगी, सिपाही सैनिक ।

योगि ( सं. ) उत्पत्तिस्थान, भय, कीचिन्ध, औरतकी मूत्रेन्द्रिय, अशसार, मूल, कारण, बीज, उत्पत्ति

शेवना ( सं. ) जवानी, तारुण्य, बौ-  
वनावस्था, तरुवाई । [भीरत ।

शेवना ( सं. ) तरुण स्त्री, जवान

२

२=गुजराती वर्षमाळाका २८ वां  
मूर्धन्य अक्षर ।

२४ ( सं. ) रति, कामदेवकी स्त्री, राई ।

२४४४ ( सं. ) बक्षक, कल, तक-

रार, वाक्युद्ध, विवाद, वाद, भांज-  
गढ़, पंचायत, हठ, जिद्द, लड़ाई ।

२४५५ ( सं. ) खेतका क्षेत्रफल, जमी-  
नका टुकड़ा, गाँवके आसपासकी  
भूमि ।

२४५६ ( सं. ) आँकड़ा, अंक, नो-  
टकी हुई एकार्था वस्तु, संख्या,  
( बड़ी खातेमें ) कलम, जोड़,  
योग, वस्तु, चीज़, पदार्थ ।

२४५७ ( सं. ) रुपये लेना,  
दाम लेना ।

२४५८ ( सं. ) बेची  
हुई या खरीदी हुई वस्तु कीमत  
साहित वहीमें जिसने खी हो उसके  
नाम लिखना, की हुई वस्तु खातेमें  
लिखना ।

२४५९ ( सं. ) हकरी, खुलने,  
कमपूर्वक कमकी कलम । एकके  
बाद एक । [ डंग, चलन ।

२४६० ( सं. ) रीति, रिवाज, हबि,

२४६१ ( सं. ) पायदा, घोड़ेपर बैठ  
कर पैर जमाने के लिये बने हुए  
छोटे या पीतल के पाँवड़े, पैदा,  
पंढल ।

२४६२ ( सं. ) सेवक, टहलुभा,  
खिदमतगार, भूय, चाकर ।

२४६३ ( सं. ) तस्तरी, तसली,  
छोटीचाली, ड्रेड, धातु अथवा  
काचनिर्मित कमगाहरी कटोरी ।

२४६४ ( सं. ) बन्दोबस्त, ठहराव,  
नियम, चिट्ठी, पत्र, परवाना ।

२४६५ ( सं. ) खून, छोड़ी, शोषित,  
( वि. ) छाल, राता, रक्तवर्ष ।

२४६६ ( सं. ) एक प्रकारका रोग ।  
कोड रोग विशेष, रक्तकुष्ठ ।

२४६७ ( सं. ) लाल चन्दन,  
देवी चन्दन ।

२४६८ ( सं. ) एक प्रकारका  
चर्म रोग, रक्तकोड, छालकोड,  
त्वचाकी बीमारी विशेष ।

२४६९ ( सं. ) पेशाबमें खूब  
आनेका रोग, प्रमेह, रोग विशेष ।

रक्षणी ( सं. ) रक्ष, वादी,  
शिरा ।

रक्षणी ( सं. ) कोहीकी सराभी ।

रक्षणी ( सं. ) खटमल, माकड़,  
एक प्रकारका जीव विशेष जो मनु-  
ष्य रक्त चूस कर जीवित रहता है ।

रक्षणी ( सं. ) खनकी बढती,  
बेमारीके बाद आराम होनेका समय,  
धीरे धीरे होनेवाली स्वस्थता ।

रक्षणी ( सं. ) रक्षका बहना,  
बह रोम जिससे गुदा मांग द्वारा  
खन गिरें ।

रक्षक ( सं. ) रक्षा करनेवाला,  
पालनेवाला, पालक, उद्धारकर्ता,  
स्वामी, प्रभु, मालिक, हिफाजत  
करनेवाला । [ सभाळ, बचाव ।

रक्षक ( सं. ) रक्षा, पालन, पोषण,

रक्षक ( वि. ) देखो रक्षक

रक्षक ( सं. ) चौकीदार, पहरे-  
वाला, रक्षवाला, रक्षक ।

रक्षक ( कि. ) रक्षा करना, देखरेख-  
करना, सँभाळना हिफाजत करना,  
पालना ।

रक्षा ( सं. ) बचाव, हिफाजत,  
रखली, चौकसी, सँभाळ, रक्षण,  
रक्ष, रक्ष, रक्ष, रक्ष, रक्ष,  
रक्ष ।

रक्षणी ( सं. ) प्राण मासकी  
पौर्णिमाके दिनका उत्सव, राखी,  
इसदिन लोग विशेष कर ब्राह्मण  
समुदाय आशीर्वाद तथा शोक  
उच्चारण कर किसीके राखीसूत्र  
हाथमें बाँधकर वक्षिणा लेते हैं ।

रक्षित ( वि. ) रखा हुआ, पाळा  
हुआ, सावधानीसे सँभाळ कर  
रखा हुआ, सँभाळकर रखा हुआ,  
रक्षा किया गया

रक्ष ( वि. ) तीनको संज्ञा । ( सं. )  
रुख, भाव, घटाबट्टी ।

रक्ष-पटी-पटी ( सं. ) भ्रमण,  
विहार, भटकना, घूमना, धरम  
धक्का, चक्कर ।

रक्ष-पु ( कि. ) इधर उधर भटकते  
फिरना, धरम धक्के खाते फिरना  
राजगार न मिलना, उद्यमहीन होना ।

रक्ष-पु ( वि. ) भटकनेवाला,  
धक्काई इधर उधर फिरनेवाला  
स्वेच्छा-चारी, विहारा, मनमानी ।

रक्ष-पु ( सं. ) देखो रक्ष-पु ।

रक्ष-पु ( सं. ) देखो रक्ष-पु ।

रक्ष-पु ( कि. ) भटकना, शोक  
देना, खामोशी ।

रक्ष-पु ( वि. ) देखो रक्ष-पु ।

रक्ष-पु ( सं. ) कज्जा शब्द, शब्द ।

२५५८ ( सं. ) मानप्राप्ति ।

२५२५ ( सं. ) छटपटाहट, तड़-  
फड़ाहट । [ पटाना, बेचैन होना ।

२५२५पुं ( कि. ) तड़फना, छट-

२५२५वाट ( सं. ) देखो २५५८ ।

२५५७-जेवाण ( सं. ) रक्षक.  
पहिरदार, चौकीदार, संभालनेवाला  
पाळक ।

२५५७णी-जेवाणी ( सं. ) रक्षा,  
रक्षण, चौकसी. हिफाजत, पहिरा  
२५५७णुं ( सं. ) रक्षक, पाळक,  
रखवालेका बेतन ।

२५५८ ( सं. ) देखो २५५८ ।

२५५८ ( सं. ) पक्ष, तरफदारी,  
किसीकी कान शर्म रखकर कुछ  
सुचचारण ।

२५५९ ( सं. ) भंगी, मेहेतर, श्वपच,  
बोम, डेठ, मळमूत्र ठठानेवाली  
जाति । ( वि. ) रखनेवाला ।

२५६० ( वि. ) रखनेवाला, धारण  
करनेवाला ।

२५६१-२५६२ ( अ. ) कदापि, शायद,  
संभवतः नजाने, कदाचित् ।

२५६२-६२ ( सं. ) भंगी, मेहेतर,  
बोम, श्वपच, देखो २५५९ ।

२५६३पुं ( कि. ) रखवाला करना,  
हिफाजतके लिये मुकदर करना ।

२५६४ ( सं. ) चौकीदार, गांवकी  
रक्षा करनेवाला, मील, रखवाला ।

२५६५पुं ( कि. ) देखो २५६३पुं ।

२५६५पिथो-पी ( सं. ) देखो २५६४ ।

२५६५पुं ( सं. ) चौकी दारीका बेतन,  
रक्षण, रखवाला, चौकसी । [ छार ।

२५६५ ( सं. ) राख, धूळ भस्म,

२५६५ ( सं. ) नस, शिरा, नादी,  
घमनी, रक्तवाहिनी, भेद, मर्म,  
भाव, हाति, तबियत ।

२५६६ ( सं. ) देखो २५६६ ।

२५६६ ( सं. ) संघर्षण, बिसाव ।

२५६६६६ ( अ. ) जैसे तैसे, यथातथा ।

२५६६६६ ( सं. ) कसरती जवान  
धृष्ट, लठापांडे, जंगली, गंवार  
बळवान ।

२५६६पुं ( कि. ) घिसना, पीटना,  
पीसना, बांटना, मसलना, मर्दन  
करना, निचोड़ना, खूब पीटना,  
अत्यंत परिश्रम लेना, सताना,  
हेरानकरना, कष्टदेना ।

२५६६६६६ ( सं. ) कोलाहल, हो-  
हल्ला, शोरगुल, जोछी बकबक ।

२५६६६६ ( सं. ) सकृत्मिहान्त,  
माथाफोड़ अत्यंत परिश्रम ।

२५६६६६पुं ( कि. ) मसलाना, मर्दन  
करना, रगड़वाना, परिश्रम, कष्टवान ।

रञ्जकवीक्षेणुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

रञ्जकपुं ( कि. ) पिसाना, कुच-  
लाना, धँसाना, घुटाना, निचुड़ाना  
मारखाना, दुःख होना हैरान होना  
परिश्रममें पड़ना ।

रञ्जकः ( सं. ) गाढा तरल पदार्थ,  
तलेटीमें जमा हुआ पदार्थ, तळ-  
छट, नैल, शेष, भोड़, खटपट ।

रञ्जकगणपुं-धोणपुं ( कि. ) एक  
वस्तुके पास दूसरी वस्तु अड़ाकर  
सटाकर रखना, मिष्टीमें मथन  
करना, मिष्टीमें मिलाना, अत्यंत  
परिश्रम साध्यकार्यमें मिटाना ।

रञ्जक ( सं. ) ऐसा शब्द जिसका  
पहिली और तीसरा अक्षर लघु  
तथा बीचका अक्षर दीर्घ हो,  
( “ जैसे प्रणाम ” ) । ५१,  
( गणशास्त्र वर्णित । )

रञ्जक ( सं. ) देखो २४८ ।

रञ्जक शैली ( सं. ) लश्करी नौकरी  
सिपाहीगिरी, सेनामें नौकरी,  
सेनामें नौकरी करनेपर मिठा हुआ  
पुरस्कार ।

रञ्जक शैली ( सं. ) एक प्रकारकी  
बनस्पति, यह हथियार के हुए  
चाकर काट देती है ।

रञ्जकपुं ( कि. ) चापकूटी करना,  
निहोरा करना, हा हा खाना ।

रञ्जकपुं ( कि. ) मुलतबी  
रखना, स्थगित करना, सताना,  
पीटना ।

रञ्जक ( कि. ) बिनती करना, हाथ  
जोड़ना धिधियाना, हाहाकार  
करना । [ वाळा, मंद ठण्डा, सुस्त ।

रञ्जक ( वि. ) घारे घारे बल्ले-

रञ्जक ( वि. ) हठी, जिद्दी ।

रञ्जक ( वि. ) देखो २४८ ।

रञ्जक-वाट ( सं. ) जल्दी बौद्धभाग,  
त्तरा, धूम, गड़बड़ ।

रञ्जकपुं ( वि. ) म्हाकुळ, चबराया  
हुआ । [ गरीब ।

रञ्जक ( सं. ) कंगाल, दरिद्र, कृपण ।

रञ्जक ( सं. ) वर्ण, डील, रीति,  
ढंग, रस, शोभा, आनन्द, खुशी,  
राग, पेट, नशा, बेहोशी, चिन्ह,  
बिश्कानी, दिस्वाव, बहाना, मिस,  
निमित्त, कसूबेका पानी, जो होलीमें  
छिड़का जाता है । इज्जत, सेह,  
प्रीति, भाव, गंजीफा नामका खेल  
के पत्रोंका अलग अलग वर्ण,  
पाठनाला, अखाड़ा, नाटक, ( अ० )  
चन्ग, साबाऊ, बाहबाह, साबाबाह ।

२'अ६ ( वि. ) विषयी, कासी, कामासक्त, विषयासक्त ।

२'अ७ ( सं. ) रंगार्ह, रंगसाजी, रंगनेका काम ।

२'अ८ ( वि. ) रंगाहुआ, सुन्दर, सुशोभित, सोमायमान, नकसोदार बेलबूटेवाळा । [ लाळी बजाना ।

२'अ९ ( सं. ) आनन्दके समयमें

२'अ१० ( वि. ) रंगवाला, खूबसूरत ।

२'अ११ ( सं. ) फिटकरी, औषधि विशेष ।

२'अ१२ ( सं. ) नशापनी, अमलपानी, नशापत्ता, नशा, अमल ।

२'अ१३ ( वि. ) विलासी, विषयी, भोगी ।

२'अ१४ ( सं. ) मौजमजा, खुशाली, ताश के पत्तेका एक प्रकारका खेल

२'अ१५ ( वि. ) चित्रविचित्र, रंग रंगीला ।

२'अ१६ ( सं. ) नाट्यशाला, भूमिका, नाटक भवन, रंगमंच नाटक खेलनेकी जगह, अखाड़ा, आनन्द करनेकी जगह ।

२'अ१७ ( अ० ) सुशीसे, आनन्दपूर्वक, राग रग सहित ।

२'अ१८ ( सं. ) आनन्द प्राप्तिका कार्य, विषयभोग । आनन्दभोग, मौज ।

२'अ१९ ( सं. ) रंगभूमि, थिएलमें रंगोंका काम हुआ हो, नाटकशाला, समारम्भ, अखाड़ा, उत्सवके लिये निर्मित पटभवन ।

२'अ२० ( सं. ) सुसज्जित भवन, क्रीडामवन, आनन्दमन्दिर ।

२'अ२१ ( सं. ) वसन, आनन्द ।

२'अ२२ ( सं. ) क्रीड़ा तथा खेल, आनन्द, हर्षोल्लास ।

२'अ२३ ( वि. ) रंगीला ।

२'अ२४ ( सं. ) सूरतशकल, रंग और शकलकी प्राकृतिक बनावट ।

२'अ२५ ( सं. ) शरीरके ऊपरके चिन्ह ।

२'अ२६ ( सं. ) रंगार, वस्त्र रंगनेवाळा, छापा, रंगनेका धन्धा करनेवाळा ।

२'अ२७ ( सं. ) बेहद खुशी, अवार हर्ष

२'अ२८ ( सं. ) मशखरा, रंगीला, विदूषक ।

२'अ२९ ( क्रि. ) रंगना, रंगीनकरना, चित्रविचित्र करना । किसीको नशा कराके मस्ती में लाना, अतिशयोक्त करना, डंकना, दोष छुपाना लज्जित होना. एक शकलसे दूसरी शकलमें बदलना ।

२'अ३० ( सं. ) रंगनेकी मजदूरी, चमके रूपमें रंगनेका बदला ।



२०४५-डी ( सं. ) रंगसाजी, रंगरेख  
रंगरेखाब्ज ।

२०४६ ( सं. ) पानी भरनेका ता-  
बेका एक बड़ा भारी पात्र ।

२०४७-खी ( सं. ) देखो २०४८ ।

२०४९ ( सं. ) देखो २०४७ ।

२०५० ( कि. ) रंगाना, रंगचव-  
वाना । रंगवाना,

२०५१ ( कि. ) रंग युक्त होना,  
रंगेजाना । नशा करके आनन्द  
करना, ठगाना ।

२०५२ ( सं. ) आनन्दी, लहरी,  
रंगीला ( सं. ) एक प्रकार की लाल  
मिट्टी सेनागुरु । [ किया हुआ ।

२०५३ ( वि. ) रंगाहुआ, रंग

२०५४ ( वि. ) रंगाहुआ, आनन्द,  
खुश मिजाज, लहरी ।

२०५५-जी ( वि. ) पूर्ववत् ।

२०५६ ( वि. ) पूर्ववत्, एक प्रकार  
का रोग, यह रोग मनुष्योंमें अचा-  
नक हो जाता है सन १८७२ में  
यह रोग यहाँ हुआ था ।

२०५७ ( अ. ) आनन्दसे, खुशीसे,  
संनै पान, बिना उपद्रव के ।

२०५८ ( वि. ) २०५३ देखो

२०५९-जी ( सं. ) एक प्रकार  
की बिम्बी सी जिसमें गुल्लक

और छिपेला भरकर जमीन पर  
खीचने से बेगबूटे दार लक्ष्मी बन  
जाती है ।

२०६० ( सं. ) भोजन करनेके  
आसनके चारों ओर बनाई हुई  
रंगकी रेखाएँ । जमीनपर बनाया  
हुआ चित्र विशेष ।

२०६१ ( सं. ) बनावट, निर्माण,  
व्यवस्था, क्रम, शोभा, ठठ,  
दिखावा ।

२०६२ ( कि. ) निर्माण करना,  
बनाना, शोभित करना, कविता  
बनाना, अनुकूल होना, सजाना ।  
२०६३ ( सं. ) रचना करनेकी  
मजदूरीके परिवर्तनमें दिया हुआ  
द्रव्य ।

२०६४ ( कि. ) रचाना, बनवाना ।

२०६५ ( वि. ) रचा हुआ, निर्मित,  
प्रीयत । [ शय, अधिक ।

२०६६ ( वि. ) बहुत, पूर्ण, अति-

२०६७ ( सं. ) घूल, गर्द, पराध, रेनु,  
परिमात्र, कण, लीला नीर्व, रस-  
स्वला, रजोगुण ( अ० ) जरा,  
अल्प, मोटा, किंचित् ।

२०६८ ( सं. ) ओझेकी दोहर,  
कलक, गूहदी, सौर, रजार्द ।

२७४ ( सं. ) दानापानी, आहार,  
सुराक, घोषी, कपड़े धोनेवाला ।

२७४५ ( सं. ) धूँक का छोटा परि-  
माण, कंकरी । [ वां महीना ।

२७४७ ( सं. ) मुसलमानों का ।

२७४८ ( सं. ) चाँदी, रूपा, रौप्य,  
हुवण ।

२७ नांभवी-अक्षरपी ( सं. ) लिखें  
हुए पर अक्षर सुझाने के लिये धूँक  
झालेंना । [ यामिनि ।

२७५१ ( सं. ) रात्रि, रात, निशा,

२७५२ ( सं. ) राक्षस, निशाचर,  
दैत्य, चोर, भूत, प्रेत ।

२७५३ ( सं. ) तुच्छको  
अत्यंत करके दिखाना, छोटी बा-  
तको बड़ी बनाना । राईका पहाड़  
बनाना, बातका बतंगड़ करना ।

२७५४ ( सं. ) क्षत्रिय, जाति-  
विशेष, राजपूतानेका रहनेवाला,  
वीर, बहादुर । [ क्षत्राणी ।

२७५५ ( सं. ) राजपूत स्त्री ।

२७५६ ( सं. ) सात्र तजे, राजपूत-  
पना, वीरता, बहादुरी ।

२७५७ ( सं. ) राजपूतोंके रह-  
नेकी जगह, राजस्थान । राजपूताना

२७५८ ( सं. ) अनुमती स्त्री,  
आधिक धर्मयुक्त स्त्री ।

२७५९ ( सं. ) छुट्टी, आज्ञा, हुक्म,  
अनुमति, इजाजत, सम्मति ।

२७६० ( सं. ) परवानगी लेना,  
हुक्म लेना, छुट्टी लेना ।

२७६१ ( सं. ) छुट्टी देना,  
सम्मति देना, निकाल देना ।

२७६२ ( सं. ) बाँझारी, अस्व-  
स्थता, मृत्यु अचानक कह ।

२७६३ ( सं. ) सम्मति, राजों,  
प्रसन्नता ।

२७६४ ( सं. ) किरण, रश्मि ।

२७६५ ( वि. ) हलकी जातका को-  
यला । वड़ लकड़ी जो अखाने के  
बाद फौरन कजल जाता है, नि-  
लैज्ज, बेशर्मा, अनजान । नीच ।

२७६६ ( वि. ) लकीरकं बराबर,  
बहुतही छोटा ।

२७६७ ( सं. ) रेतदानी, गीले  
अक्षरोंपर झालनेके लिये जिस पात्र  
में रेत भरते हैं ।

२७६८ ( सं. ) रेत, धूँक, रज, गर्द ।

२७६९ ( वि. ) जो दृष्टिके सामने हो ।

२७७० ( सं. ) मुकाबिल,  
अनुसंधान, तजवीज़, जाँच, परि-  
चय, मेक, मुलाकात, समागम ।

२७७१ ( सं. ) परिचय  
करना, मिळाना, समागम करना ।

२०३५ ( कि. ) सामने खाना,  
पेश करना, मुकाबिल करना, उप-  
स्थित करना ।

२०३६ ( अ. ) जराजरा, तमाम,  
बिलकुल, समस्त, सब, सारा ।

२०३७ ( सं. ) देखो २०३८

२०३९ ( सं. ) प्रकृतिके त्रिविध  
गुणों में से एक ( सतोगुण, रजो-  
गुण, और तमोगुण ) इससे विष-  
मवासना, लोभ, गर्व, क्रोध, अस-  
त्य, दुःख आदि होते हैं, स्वभाव,  
प्रवृत्ति [ आनंदो ।

२०४० ( सं. ) तामसी, कोपी,

२०४१ ( सं. ) बारीक धूलकण,  
रजकण ।

२०४२ ( सं. ) देखो अतश्चिं

२०४३ ( सं. ) प्रथम ऋतुधर्म,  
पहिला मासिकधर्म ।

२०४४ ( सं. ) याद ( साधू )

कीलकणिके साथ बांधा हुआ गुच्छा ।

२०४५ ( सं. ) रस्सी, डोर, तंतु,  
सूतली, जेबरी

२०४६ ( सं. ) देखो २०४७

२०४८ ( कि. ) भटकाना मुला-  
ना, चक्करमें डालना, कष्ट देना ।

२०४९ ( वि. ) जरा, थोड़ा, अल्प,  
सूक्ष्म, हल्का, दुष्क ।

२०५० ( सं. ) शोक, विता ।

फिक, दुःख, खेद, भ्रम, मेहनत ।

२०५१ ( सं. ) जिससे कोई वस्तु  
मुखगठे, बंदक अथवा तोप के  
कानपर रखी हुई बरूद । उसका-  
नेवाळा, भटकानेवाळा, तकरार  
करानेवाळा भाषण, ( वि. )  
मनोहर, मोहक, आकर्षक । जरा,  
थोड़ासा,

२०५२ भूके ( कि. ) बन्दूक या  
तोपके कान पर बरूद रखना,  
उकसाना, भटकाना ।

२०५३ भाई भूके ( कि. ) बन्दूक,  
या तोप का न चलना, भटकाना  
निष्फल होना । [ मचना ।

२०५४ उडवे ( कि. ) लड़ाई लड़ना

२०५५ भैरवी ( कि. ) परिश्रम  
करना, मेहनत करना ।

२०५६ ( सं. ) प्रसन्न करना, खुश  
करना, प्राप्ति, प्रेम ।

२०५७ ( कि. ) खुशी करना,  
आनन्द देना, बलिष्ठ होना  
पसन्द आना ।

२०५८-३३ ( सं. ) बिगाड़, जुक-  
सान, मस्ती, तोकान ।

२०५९ ( कि. ) घबराना, तफ-  
लीफ देना, कष्ट पहुंचाना, पीड़ा  
पहुंचाना ।

२७६। ( वि. ) बिधा हुआ, बच-  
राया हुआ, रिसाया हुआ, कुट्ट,  
गमगान, शोकित, दुखी, मिजार्जा।

२८५ ( सं. ) स्मरण, रातदिन  
भजन, निरन्तर अध्यास, परि-  
भ्रमण, घोषना, एक बातको कई  
कई बार कहना।

२८५ ( वि. ) स्मरण करना, अपना,  
भजना, बार बार बोलते रहना,  
कई बार कहना।

२८५ ( सं. ) सूख भ्रमण, अत्यंत  
मुसाफिरी, ( वि. ) नीरस, निरु-  
म्मा, व्यर्थ। [ आग्रह।

२६ ( सं. ) ध्यान, लय, हठ,

२६१५ ( वि. ) भटकनेवाला,  
घूमने फिरनेवाला, शोकानुर,  
विक्र, दुखी, ( सं. ) शोक,  
विलाप, अश्रुपात। [ उदासमुह।

२६१५ ( सं. ) रोती झकल,

२६५५ ( वि. ) भूलाभटका,  
भ्रमित। [ लगाना।

२६५५ ( वि. ) भटकना, बककर

२६५ ( वि. ) रुदन करना, शोक  
करना, विलाप करना, हायहाय  
करना, रोना, अश्रुपात करना,  
हुहूकरके रोना, निराश होना,  
हारना, ठगाना, आँखिबी करना,

बिलसी करना, पोसावाना।  
आवाज देना, पुकारना, दुस्वप्ना।

२६५ ( सं. ) बहुतधीमे  
छु।

२६५ ( सं. ) शिओंके लिये  
मजाकमें यह वाक्य उपभोग  
होता है अर्थात् राधाके समान  
रोनेवाली स्त्री।

२६५ ( वि. ) विषल  
हृदय होना, रात दिन निश्वास  
छोड़ना।

२६५ ( सं. ) यह शब्द शिवा  
गाली में प्रयोग करती हैं।

२६५ ( वि. ) छिन्नमित्र,  
बिखरा हुआ, छूटा हुआ, पृथक्  
पृथक्। भूला भटका, दुखी, भूला  
हुआ।

२६५ ( सं. ) न्यर्षपरिभ्रम,  
रोआपीटी। रोदन ताड़न।

२६५ ( सं. ) रोआपीटी, रोते  
हुए छाती में दूध फूटना।

२६५-२६५ ( सं. ) चित्ता चित्ता  
कर रोना।

२६५ ( वि. ) रुलाना, मित्र  
करना, ठगना, छलना, पोटना।

२६५ ( वि. ) रातदिन रोनेवाला,  
जरा जरासी बात पर रोनेवाला

२६१ उडुं ( कि. ) स्वप्नमें विस्मा  
उठना, रोदेना, विस्मय हारजाना,  
निराश होजाना, चकजाना ।

२६२ उडुं ( कि. ) दुःखसे घबराकर  
रोदेना, विलाप करना । दुःख  
प्रदर्शन करना ।

२६३ उडुं ( कि. ) हानिको सहकर  
रहजाना, रोकर घुरहो बैठना ।

२६४ ( सं. ) लय, ध्यान, लक्ष्य,  
आग्रह, इच्छा, जिह्वा ।

२६५ ( वि. ) बिनाधनी, स्वा-  
मीहीन, बेदावा, लावारिश, ( पशु )  
सूना । [ पुरुष ।

२६६ ( वि. ) सुन्दर, खूबसूरत

२६७ ( सं. ) संग्राम, लड़ाई, युद्ध,  
समर, जंग । रेगिस्तानी जंगल,  
रेतीला, मैदान । कर्ज, कण,  
उधार । [ शब्द ।

२६८-३० ( सं. ) ठोके का

२६९ ( सं. ) युद्ध का समय,  
लड़ाई का वक्त ।

२७० ( सं. ) देखो २७१

२७२-७३ ( सं. ) लड़ाई का मै-  
दान, युद्ध, क्षेत्र, मैदाने जंग,  
रणस्थली, रणगण । [ संग्राम ।

२७४ ( सं. ) युद्ध, लड़ाई, समर,  
४६

२७५ ( सं. ) कणसे युक्त कर-  
नेवाला, कृष्ण, यशोदाके पुत्र  
गोपाळ । ( वि. ) कयर, करपोक,  
मीह । [ वस्तु, लड़ाईमें जयभीष्म ।

२७६ ( वि. ) विजयी, जयी, जय

२७७ ( कि. ) एक प्रकारका  
सम्बन्ध होना, ( नूर नामक आभू-  
षणका । )

२७८ ( सं. ) लड़ाई का नगर,  
युद्ध के समय बचनेवाला बड़ा  
भरा होल ।

२७९-८० ( सं. ) युद्ध समय  
बचाने की भेरी, तूर्य, तुरही,  
रणसीगा ।

२८० ( सं. ) देखो २८१

२८२ ( सं. ) वीर, बहादुर,  
येडा । [ युद्धक्षेत्र ।

२८३ ( सं. ) लड़ाई का मैदान,

२८४ ( सं. ) रतीला मैदान,  
ऊँचा जंगल, रेगिस्तान ।

२८५ ( सं. ) युद्ध धर्म, क्षात्र  
धर्म ।

२८६ ( सं. ) उत्पातो, लुटेरा,  
अन्यायी, राजाके विरुद्ध उत्पात  
करके बैरका बदला चुकानेवाला ।

२८७ ( सं. ) महक, रानियोंके  
रहनेका महक, मत्तःपुर ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) रत्नमेरी  
रत्नसूत ।

शब्दकोश-अक्ष-कुंक्षु ( कि. ) बात फैला  
देना, आत्मस्थापा करना, गुणगान  
करना । [ महायुद्ध भयंकर समर ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) भयानक युद्ध,

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) दो सेनाओं के  
बीचमें गाढ़ा हुवा या बनाया हुआ  
बंधा, जीतकी निशानोंके लिये  
निर्मित चिन्ह ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) समरस्थलीका को-  
लाहल, धारोंकी हुंकार, युद्धकी  
ललकार ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) पूर्वजन्मका  
सम्बन्ध, पूर्वजन्मका संस्कार ।

शब्दकोश-अक्ष ( वि. ) देनेवाला, कर्जदार  
ऋणी, आभारी, अनुग्रहीत, उपकृत ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) सोनेका टुकड़ा, ( आ-  
भूषण बनानेके लिये दिया हुआ । )

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) युद्धभूमि, समर-  
क्षेत्र, मैदानेजंग, लड़ाईका मैदान,  
खेत ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) बिना स्त्रीका पुरुष,  
पत्नी रहित, कन्याराशी, नामर्द,  
विधुर, लोभ ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) विधवा, पतिहीना,  
रंड, बेवा, फुट्टू स्त्री, रण्डी, बेइया ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) वैधव्य, पतिहीनवस्था ।

शब्दकोश-अक्ष ( वि. ) विधवा ( स्त्री ) ।

शब्दकोश-अक्ष ( वि. ) विधुर, पत्नीहीन  
पुरुष । [ मरना ।

शब्दकोश-अक्ष ( कि. ) विधवा होना पीत

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) गणिका, बेइया, पातर  
राम जनी, नगरनारी, पटुरिया,  
व्यभिचारिणी ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) बेइयापत्नी, व्य-  
भिचारी, रंडीके साथ कामकासना  
पूर्ण करनेवाला ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) बेइया गमन  
व्यभिचार, परस्त्री गमन, जारकर्म ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) तोफान, गड़बड़,  
धामधूम ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) ऋतु, मौसिम, समय,  
वेला, अनुकूल समय, संभोग,  
मैथुन, स्त्रीसंभोग, रतिक्रिया ( वि. )  
छिन, छवलीन । [ मणी ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) देखो २२१ आंखकी

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) एक वृक्ष कि-  
शेष, यह आंखकी बीमारी पर  
काम आता है ।

शब्दकोश-अक्ष ( सं. ) समुद्र, हिन्दस-  
हासागर, महोदधि, सागर, रत्नों  
की खानि । [ महाकविदा सागर ।

शब्दकोश-अक्ष ( वि. ) चुम्बकीय, वैद्यकी

शतभाषाविशेष ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

शतक्ष ( सं. ) एक प्रकारका तौल  
सूरत नगरका एक खेर, एक पौष्ट  
३९ तोल्य ।

शतपा ( सं. ) एक प्रकारका रोग  
इस रोगमें शरीरपर जलबक हो  
जाते हैं ।

शतभाषा-शुभं ( सं. ) जिसे दिनको  
दिखे और रातको बिलकुल न दीखे ।

शतभाषा-शी ( सं. ) जलाल चन्दन  
रक्त चन्दन । [ गता ।

शताभ ( सं. ) लाली, लज्जाई, अरु-

शताशु ( सं. ) एक प्रकारका कन्द,  
लाल आसू ।

शति ( सं. ) कामदेवकी स्त्री, प्रीति  
प्रेम, जेह, कीड़ा, कामकेलि, स्त्री  
प्रसङ्ग ।

शतिशेखी ( सं. ) संभोग, मेथुन ।

शतिपति ( सं. ) कामदेव, मदन,  
अनंग, काम, मार, रतिनाथ,  
कन्दर्प ।

शतिधुर ( वि. ) रक्तिकाके समान, रत्नी-  
अर, थोड़ा, अर, किंचित । ३ भाषा ।

शतिभार ( वि. ) पूर्ववत् ।

शतिरस-सुख ( सं. ) काम सुख,  
संयोग, जमित आनन्द, स्त्रीप्रसङ्ग-  
आनन्द सुख ।

शती ( सं. ) परिमाण विशेष, मूल्य-  
वान वस्तु तौलनेके लिये बज्र  
विशेष, रत्नी, भाठ यन्त्रका तौल्य  
३ माशा, पुंचची ।

शतीभार ( वि. ) देखो शतिभार ।

शतु ( सं. ) ऋतु, मौसिम, अनु-  
कूल समय, रजोधर्म, ऋतुधर्म ।

शतभं ( वि. ) कुछ लाली लिये हुए ।

शतोपाध-वै ( अ. ) रातके समय,  
रातकोही, रातोरात ( दिनको नहीं )

शत ( सं. ) मणि, हीराक, जवाहिर  
मूल्यवान पत्थर, मुक्ता, मोती,  
प्रवाल, मर्कत, पुष्कराज, नीलम,  
वैदुर्य । समुद्र मथनके समय,  
निकले हुए चौदह रत्न १ लक्ष्मी  
२ कौस्तुभ, ३ पारिजातक, ४  
सुरा, ५ धन्वन्तरि, ६ चन्द्रमा,  
७ कामधेनु, ८ ऐरावत, ९ रत्ना,  
१० सप्तमुखी अश्व, ११ सुधा,  
१२ सार्ङ्गधनु, १३ शंख, और १४  
हलहल ( विष ) । अपनी अपनी  
जातिमें उत्तम ।

शतभर्मा ( सं. ) वह जिसके उद्गर-  
मेंसे रत्न निकलते हों, पुष्पी,  
भारतवर्ष ।

शतभक्ति ( वि. ) जिसमें रत्न  
जिसमें गढ़े हों, रत्नोंसे बहारा हुआ ।

रत्न पाठ्य ( कि. ) गुणवान् मनुष्य  
होना ।

रत्नाकर ( सं. ) देखो रत्नाभर ।

रत्नावली ( सं. ) रत्नोंकी माला ।

रथ ( सं. ) गाड़ी बहल, चर  
पहिये और दो गुम्दजकी गाड़ी,  
प्राचीन राजाओंके बैठनेकी गाड़ी ।

रथकार ( सं. ) रथ बनानेवाला,  
कारीगर ।

रथमित्र ( सं. ) आषाढ सुदी  
द्वितीया के दिन बैष्णव मंदिरोंमेंका  
उत्सव दिवस । उसदिन मूर्तको  
रथमें बिठाकर सारे नगरमें घुमाते  
हैं । ( वि. ) अस्थिर मनवाला ।

रथी ( सं. ) सवार, रथपर चलने  
वाला, रथका स्वामी, रथपर सवार  
होकर युद्ध करनेवाला, योद्धा,  
महावीर ।

रथी ( सं. ) दीवारोंपर मिट्टीका  
मोटा लेपन, छर्वाई, मोटी छिपाई ।

रथ ( वि. ) निकम्मा समझकर दूर  
क्रिया हुआ, छेका हुआ, अस्वी-  
कृत ( सं. ) दांत, दन्त, दसन,  
हृदय, अंतःकरण ।

रथ कर ( कि. ) अमान्य करना,  
निकाल बाहरना, भजन करना ।

रथ कर ( सं. ) रथियों देखो ।

रथ ( सं. ) दांत, दसन, दन्त,  
रोदन, विलाप, अधुपात, हृदय,  
अंतःकरण । [ दुःखदेना ।

रथ शैकुं ( कि. ) दिल जलाना,  
रथशैकुं ( सं. ) हेरफेर, रथशैकुं,  
निकम्मी वस्तुका बदलना ।

रथी ( सं. ) रथ जवान, सैन्य,  
तरदीद, काट, बिनाशमण ।

रथी ( वि. ) निकम्मा कया हुआ,  
अनुपयोगी, खराब, बेकामका ।

रथन ( वि. ) विल्ला हुआ, अन्य-  
वस्थित, एक महीने एक बहा,  
दुखी ।

रथन शकुं ( कि. ) अस्तम्यता  
होना, घुरी दशमें होना, दूरफूट  
कर मैदान होना, बरबाद होना,  
हिम्मत छूट जाना । [ शिखी, मयूर ।

रथ शकुं ( सं. ) मोर, केकी,

रथी ( वि. ) जंगली, वनचर,  
वन्य, निर्जन, जनशून्य ।

रथी-थी ( सं. ) बर्बादका औजार  
विशेष, इसको लकड़ी पर रखकर  
घिसने से लकड़ी साफ हो जाती  
है, रूखा ।

रथपाथी ( सं. ) रसोइया, पाक-  
शाली, बाबची, भोजन बनानेवाला ।



२३भाभक्षु-धु ( सं. ) रसोई बनाने की मजूरी ( धन ) लक्षद्वपर रम्दा फेर कर साफ करने का वेतन ।

२३धापुं ( कि. ) सोजना, पकना, लाम होना ।

२३न्नादेव ( सं. ) उपनयन या विवाह संस्कार के समय डळिया में बोये हुए गेहूं या जौ, ( जवारा ) सुर-जकी पत्नी, ब्रह्माकी पटरानी ।

२३ाटी-पेटी ( सं. ) लम्बी दौड़, कबड्डी ।

२३ाटी ( सं. ) छोटी दौड़, सपाटा, चपत, तमाचा, चप्पट, धौल, धप्पा ।

२३ेटीभां लेतुं ( कि. ) लक्ष परिश्रम कराना, थकाना, लबड़ धक्का लेना, खबर लेना । [ छपेटा ।

२३ेक्ष ( सं. ) चक्कर, आंटा, फेरा,

२३ेटी भारवे। ( कि. ) चक्कर खाना, फेरा खाना, आंटा खाना, छपेटा मारना ।

२३े। ( सं. ) सूखना, किम्बदन्ती, अफवाह, उड़ती खबर, कैफियत, नाक़िश, फरियाद, रपट ।

२३त ( सं. ) मुहाबिरा, अन्धास, आपत ।

२३ते २३ते ( अ० ) धीरे धीरे, शनैः शनैः, आहिस्ता आहिस्ता, थोड़ा थोड़ा, क्रमशः ।

२३ु ( सं. ) बराबर, कपड़ेके फटे हुए भागमें धागे का जाल बनाकर उसे सुधारने का कार्य ।

२३ु ३२पुं ( कि. ) बराबर करना, फटे हुए कपड़े को इस सावधानी से सीना कि वहां एकाएकी मालूम ही न पड़े ।

२३ुअ३३२-अ३ ( सं. ) हानि, नुक़-सान, शत्रु का पेच या दांव, व्यूह, प्रपंच ।

२३ुअ३३२ ३री अ३पुं ( कि. ) चुप-चाप भाग जाना, सटक जाना, पलायन करना । [ बर शांत ।

२३ेइदे ( अ० ) नष्ट, बरबाद, बर-

२३ ( सं. ) प्रभु, ईश्वर, परमात्मा, स्वामी ।

२३२ ( सं. ) एक वृक्षका गोंद कि-शेष, रबड़, यह इयाही पेन्सिल आदिके लिखे अक्षर साफ करनेके काम में आता है । यह खींचने पर लम्बा और छोड़नेपर सिक्कु-ड़ा है, रबड़ । [ परिश्रम ।

२३३ ( सं. ) थकान, मेहनत, २३त ( सं. ) देखो २३त ।

रभाशब्द-रैषु ( सं. ) गडरिने की स्त्री, बकरी भेड़ चरानेवाली स्त्री ।

रभारी ( सं. ) गडरिया, भेड़ बकरी पालने या चरानेवाला ।

रभ्यी ( सं. ) शीत कालकी फसल, वह अन्नकी फसल जो फाल्गुन चैत्र के आसपास आती है ।

रभ ( सं. ) पति, स्त्राविद, स्वसम, स्वामी । [ वस्तु जीवित मनुष्य ।

रभङ्ग ( सं. ) खिलाना, खेलनेकी

रभङ्गुं षष्ठि रेहेपुं ( क्रि. ) खिलाना हो रहना, बिलकुल आधीन हो रहना, जैसा नाच नचावे वैसा ही नाचना । [ तूफान ।

रभभाष्य ( सं. ) नाश, तकरार, रभ्यी ( सं. ) एक प्रकारकी लाल मिट्टी, सोना गेरू, हिडमची, हिरमच ।

रभान ( सं. ) मुसलमानी नवा महीना, इस सोगे महीने भर मुसलमान दिनको भोजन करना पाप समझते हैं और रातको खाते हैं जिसे वे रोजा ( व्रत ) कहते हैं ।

रभ्यु ( सं. ) चित्तविनोद, क्रीड़ा, खेल, विहार, साधियोंके साथ खेल । संभोग, स्वामी, पति, मालिक लीला ।

रभ्युभय ( अ० ) अन्वयवस्थित रीतिसे, मृच्छलाहीन रूपमें ।

रभ्यु ( सं. ) देखो रभ्यु ( कवितामें )

रभ्यु ( सं. ) मनोहारिणी स्त्री, सुन्दर स्त्री, ललना, महिला, संभोगनीय ।

रभ्युकि ( वि. ) मनभावन, मनोहर. सुन्दर, रम्य, रमणवरते योग्य ।

रभ्युयि ( वि. ) पूर्ववत् । [ मैदान ।

रभ्यु ( सं. ) सुली हुई जगह,

रभ्यु षष्ठ्युं ( क्रि. ) भड़कना, अस्थिर चित्त होना ।

रभत ( सं. ) खेल, क्रीड़ा, लीला, मौज ।

रभतरोणुं ( सं. ) भ्रमण, भटकना, धरमधक्के ।

रभतिपाण ( वि. ) खिलाड़ी, जिसकाजी खेलमें लगा हो ।

रभपुं ( वि. ) खुला हुआ, धूमता हुआ । दृष्टि आने योग्य दशा ।

रभतां रभतां ( अ० ) सुखपूर्वक, धीरे धीरे, बिना परिश्रमके ।

रभताशभ ( सं. ) जहाँतहाँ भटकने-वाला, एक जगह स्थिर नहीं रहने-वाला, धूमनेवाला साधू, सर्वव्यापक ।

रभरभावपुं ( क्रि. ) दिग्ले कान्त करना, जोर से बलना ।

२५५ ( कि. ) मनोविनोद करना, बिना परिश्रमका कार्य करना, मनोरंजन करना, खेलना, केलि करना, प्यार करना, व्यर्थ का कार्य करना, भटकना, घूमना ।

२५६ ( सं. ) कोलाहल, तूफान, भय, डर, सर्वनाश, आक्रमण ।

२५७ ( कि. ) बहुत जोर से दूट पड़ना; उपद्रव करना ।

२५८ ( सं. ) पंचरस धातु के पाँसे बना कर भविष्य जानने की विद्या, ज्योतिष शास्त्रका अंग विशेष, प्रश्न शास्त्र ।

२५९ ( सं. ) रमकका ज्ञाता, प्रश्न का उत्तर दाता, भविष्य वक्ता, ज्योतिषी । [ विष्णु परित, कमळा ।

२६० ( सं. ) ली, सुलक्षणास्त्री, लक्ष्मी,

२६१ ( कि. ) खिलाना, मनोरंजन करना, चढाना, उसकाना, मूर्ख बनाना । ठगना, भुलाना, फुसलाना । घुमाने के जाना ( बाळको )

२६२ ( कि. ) मार डालना, बध, करना, जान के लेना ।

२६३ ( सं. ) खेल, मीठा, विनोद ।

२६४ ( कि. ) लीलाकर के चलेते बनना, देह त्याग देना ।

२६५ ( सं. ) विनोद, विळास, खेल, तमाशा, मजाक, ठग ।

२६६ ( वि. ) दिलगुस्त, मनोरंजक, मजाकी, विनोदी, रसिक, नकल, हाज़िर जबाबी ।

२६७ ( सं. ) आलाप, ( गायनमें ) गर्जन, चुम्बन ( चूमा ) लेते समयका शब्द ।

२६८ ( सं. ) स्वर्गांगना विशेष, एक अप्सरा का नाम, परी, रूपवती, केला, कदली ।

२६९ ( सं. ) केला ।

२७० ( सं. ) जिसकी जंघा केले के वृक्ष के समान सुन्दर हो, रूप सुंदरी, परी ।

२७१ ( वि. ) आनन्द दायक, सुखद, मनोहर, रसिक, रमणीय ।

२७२ ( सं. ) रात, रात्रि, रजनो, निशा, रैन ।

२७३ ( सं. ) शब्द, ध्वनि, गीत, गाना, आवाज, कीर्ति, प्रसिद्धि ।

२७४ ( सं. ) रई, लीला, मनोरंजन, मजा, मजाक, मजाकी, मजाकिया ।

२५५५ ( सं. ) रीति, चक्र, प्रचलन, अभ्यास, मुहाविरा ।  
 २५५६ ( वि. ) भटकानुशा, भ्रमित ।  
 २५५७ ( कि. ) भटकना, घूमना, भ्रमण करना, धरम धक्के खाना ।  
 २५५८ ( सं. ) शर्त, होड़ ।  
 २५५९ ( सं. ) अकरकरा या बैसी ही कुछ चरपरी बस्तु खाने पर बीभक्षा चरपराहट ।  
 २५६० ( सं. ) पागल, विवेक भ्रष्ट, जिसे पहिने ओढ़ने चलने आदिका शरर न हो । व्यतीपात, उपद्रवी ।  
 २५६१ ( सं. ) कण, सोने चांदी छोटा टुकड़ा, ( वि. ) ठीक, उचित, मुनासिब, ठहराव ।  
 २५६२ ( सं. ) एक प्रकारका बाजा ।  
 २५६३ ( वि. ) दानेदार, कण सहित ।  
 २५६४ ( सं. ) दलाळी, छुपी दलाळी, पक्षपात, तरफदारी ।  
 कृपा । [विदागी, विदेसगमन, भेट ।  
 २५६५ ( सं. ) कूच, प्रस्थान,  
 २५६६ ( कि. ) भेजना, बाहिर भेजना ।  
 २५६७ ( सं. ) छावर बैकीसे

माल निकलजावेकी चिट्ठी, पास ।  
 २५६८ ( कि. ) प्रस्थान करना कूच करना, बाहिर निकल जाना ।  
 २५६९ ( सं. ) धाक, डाट, अधिकार ।  
 २५७० ( सं. ) देखो २५६७ ।  
 २५७१ ( सं. ) चोड़े बैलआदिकी एक चाल विशेष, न विशेष दौड़ न विशेष मन्दगति, खदड़क खदड़क चाल ।  
 २५७२ ( सं. ) सूर्य, सूरज, भास्कर, मार्तण्ड आदित्य, दिवाकर, प्रभाकर दिनकर ।  
 २५७३ ( सं. ) सूर्यका गोला ।  
 २५७४ ( सं. ) सूर्यवार रविवार, ऐतवार, प्रथमवार ।  
 २५७५ ( सं. ) सैनिकोंकी जाँच पड़ताल, कवायद, सर्दीकै दिनोंमें बोईजानेवाली फसल, रबी ।  
 २५७६ ( सं. ) देखो २५७३ ।  
 २५७७ ( सं. ) छज्जा, शरोखा, मकानसे आगे निकलता भाग ।  
 रिवाज, चाल, रीति, रस्म, शिरस्ता, दस्तूर ।  
 २५७८ ( सं. ) देखो २५६८ ।  
 २५७९ ( सं. ) बहुत छोटे तथा गोल भटे ( बैंगन ) । सामके बड़ेबड़े टुकड़े जिनमें गरम मसाला भरके बनावते हैं ।

२२२२ ( सं. ) रीति, बाळ, रस्म, रवाज, दस्तर, बहुत दिनोंसे चला आनेवाला कार्य ।

२२२३ ( सं. ) रवा, छोटा छोटा दुकड़ा, चूर, घूळ, बाळ, छोटा कण ।

२२२४ ( सं. ) किरण, तेज, कान्ति, मयूख, रास, बोड़ेकी बागबोर, मरीचि ।

२२२५ ( सं. ) स्वाद, सवाद, अर्क, खार, सत, सत्व, निष्कर्ष, द्रवप-  
चाय, एक प्रकारका रोग, जिससे  
अंड जो लिंगके नाँचे होते हैं बड़े  
हो जाते हैं । छःके लिये सांकेतिक  
शब्द, पारा, गन्धक, घट्टरस  
( मधुर, खट्ट, खारा, कटु, तीखा,  
कषाय, ) मधुरता, लज्जत, नव-  
रस, ( भृंगार, हास्य, करुण, वीर,  
चौद्र, भयानक, अद्भुत, वीभरस  
और शान्त, ) कईलोग, दस रस  
भीमानते हैं वह दसवाँ वात्सल्य  
रस है । रक्त, पसीना, अश्रु, नीर्य,  
रुफ, खम, उपज, नफा, कमाई,  
दम, कस, आनन्द, मजा, खूबी,  
ठाठ, गुण ।

२२२६ ( कि. ) रजक गज करना,  
आदिष्टबोधि करना, नियोजना ।

२२२७ ( कि. ) हाथसे पीट  
पीट कर ठंडा करना, धरमपट्टे  
खाकर लौट आना, बहुत समय  
तक खड़े रहना, हृदसे जिवादः  
बोलना, आप देना ।

२२२८ ( सं. ) एक प्रकारकी औषधि  
( इसमें पारा गंधक और लवण  
होता है ) ।

२२२९ ( सं. ) तेजाब, अर्क, सत्व,  
जिद, हठ तकरार, बिरोध, फसाद  
२२३० ( वि. ) आवेशी, उत्सुक, व्यग्र  
कोपी, पागल, सिरा ।

२२३१ ( कि. ) स्वाद लेना,  
खाखना, जायका लेना ।

२२३२ ( कि. ) आनन्द होना,  
हर्ष होना, रंगत जमना । [नाटकका]

२२३३ ( सं. ) रसोंका ज्ञाता ( काव्य

२२३४ ( सं. ) झोक चढानेवाला,  
मुलम्मा करनेवाला, कब्ई करने-  
वाला ।

२२३५ ( सं. ) देखो २२३६ ।

२२३६-अरेधुं ( वि. ) सरस, र-  
साळ, रसयुक्त, स्वादिष्ट, मिष्ट,  
रुचिकर, मनोहर, वित्तकर्षक ।

रसवाच ( सं. ) आनन्द स्वरूप,  
( वि. ) मोहक, विसाकर्षक ।  
रसना ( सं. ) जवान, जिह्वा, जीम ।  
रसनेन्द्रिय ( सं. ) पूर्ववत् ।  
रस भवे ( कि. ) प्रसन्न होना,  
मुदित होना ।  
रस भरावुं ( कि. ) उभाड़ना, उ-  
त्कावा, दमपट्टी देना ।  
रसभरे ( अ. ) आनन्दसे । [रसमय  
रसभक्त ( वि. ) सरस, रसाळ,  
रसभक्त ( सं. ) किसी रसका नाश,  
रंगमें भंग, विघ्न, नैराश्य ।  
रसभ ( सं. ) प्रथा, रीति, रिवाज,  
चाल, प्रणाली, परंपरागत कार्य ।  
रसभय ( वि. ) आनंदरूप, मनो-  
रंजक ।  
रसराज ( सं. ) एक प्रकारकी  
औषधि, प्रेम, प्यार, स्नेह,  
मोहन्वत् ।  
रसपट ( सं. ) बैर, अश्वत्थ, द्वेष ।  
रसवंती ( सं. ) एक प्रकारकी  
औषधि ।  
रसवाद ( सं. ) ईर्ष्या, द्वेष ।  
रसवाणुं ( वि. ) देखो रसदा ।  
रसविशार ( सं. ) एक प्रकारकी  
बीमारी, अण्डवृद्धि रोग ।

रसधुं ( कि. ) झोल चढाना, मु-  
लम्मा करना, कलई करना ।  
रसधृति ( सं. ) प्रेमरोग, कामज्वर ।  
रससिंदूर ( सं. ) एक प्रकारकी  
औषधि, जस्त, पारा, नीला थोषा  
और क्षारसे बना हुआ पदार्थ ।  
रसधुं ( कि. ) बैर लगाना, ठीक  
करना, निकम्मे इधर उधर  
फिरना ।  
रसावली ( सं. ) एक प्रकारकी  
औषधि, दाद हल्दीके काव और  
बकरीके मूत्रसे बनाया हुआ चूर्ण ।  
रसातल ( सं. ) पृथ्वीतल, अधो-  
लोक विशेष, सातवां अधोलोक,  
बलिहारीलोक ।  
रसातल धावुं ( कि. ) मटियामेट  
करना, ध्वंस करना, बरबाद करना ।  
रसातलधुं-वण्ण धुं ( कि. )  
दूढ़ जाना, नाश होना, बरबाद  
होना, निर्वास होना ।  
रसानेाल धावुं ( कि. ) सत्ता-  
नाश करना, नष्ट करना, मिटा देना,  
बरबाद करना ।  
रसावन-धु ( सं. ) कौमिया, रस-  
विशेष, प्राण बचानेवाले रस, प्राण  
पदार्थविज्ञान । [ कौमिया :-  
रसावनविद्या ( सं. ) रसज्ञान,

रक्षाभंगी (सं.) रक्षाभंग शास्त्रका संज्ञित ।

रक्षाभंगी (सं.) बोदेकी फौजका  
आफीसर, अखारोहियोंका अधिपति ।

रक्षाभंगी (सं.) अखारोही सेना, घुड़  
सवार फौज, फौज, सेना, निबंघ ।

रक्षाभंगी (कि.) कलई करना,  
झोळ चढाना, मुकम्मा करना ।

रक्षाभंगी (वि.) जिसमें रस  
अधिक हो, सुस्वादु, अज पकने  
योग्य, (भूमि) (सं.) आम,  
आमफल, कैरी ।

रक्षिक (वि.) रसीला, रसिया,  
लम्पट, दुराचारी, गुण्डा, रसज्ञ ।

रक्षिक (वि.) पूर्ववत् ।

रक्षिकी (सं.) ली लम्पट, विला-  
सी, भोगी, कामी, विषयी पुरुष ।

रक्षिक (वि.) देखो रक्षिक

रक्षी (सं.) पीप, रीम, मेवाद,  
राध, पीप, व्रण के भीतर पीप-  
रक्षादि । रक्षी, डोरी, सुतली ।

रक्षी (सं.) पावती, पहुंच,  
प्राप्ति स्वीकार, प्राप्तिपत्र ।

रक्षेन्द्र (सं.) देखो रक्षेन्द्र

रक्षेन्द्र (वि.) कलई किया हुआ,  
मुकम्मा किया हुआ, कलई चढाना  
हुआ ।

रक्षे (सं.) आचार, मुरब्बा सांग  
भाजी इत्यादिका मसाला सहित  
रस, पतला शाक, पतली तरकारी,  
रस्ता । [दुराक ।

रक्षे (सं.) पाक, भोजन, खाना,

रक्षे (सं.) रसोई बनानेवाला,  
पाक, शाजी, भोजन तय्यार करने-  
वाला, बर्खा ।

रक्षे (सं.) पाक शाळ, भोज-  
नगृह, वह स्थान जहाँ भोजन  
बनता है ।

रक्षे (सं.) देखो रक्षे

रक्षे (सं.) रोग विशेष, गठ  
गण्ड, गोंठ ।

रस्तो (सं.) सड़क, मार्ग, पथ,  
पन्थ, राह, बाट, पगदण्डी, रीति,  
चाळ ।

रस्तो (कि.) चलने रहना,  
मंजल करना, मार्ग कमज करना ।

रस्तो (कि.) जाना,  
चल देना, रस्ता जापना ।

रस्तो (सं.) गुप्तमेद, गोपनीय,  
छुपीबात ।

रक्षित (वि.) बंजित, हीन, खम्ब  
बिना । [(वि.) ठिकानेवाला ।

रक्षित (सं.) रहने वाला, निवास

रहीमपुं ( कि. ) ठहरवाना, पि-  
छुदवाना, किसी अंगको बादी या  
छक्का मारना ।

रही रहीने ( अ. ) ठहर ठहर,  
कर, अन्तर, फासना, लम्बाई,  
आखिरकार । [ शेष ।

रहीं भइं ( वि. ) बचा बचाय,  
रहेथुं ( सं. ) स्थान, मुकाम,  
रहनेकी जगह, निवासस्थान ।

रहेथी ( सं. ) रहनेकी रीति, आ-  
चार व्यवहार, रहन सहन ।

रहेभ ( सं. ) दया, कृपा, करुणा,  
महरबानी । [ कृपादृष्टि ।

रहेभ नभर ( सं. ) दयादृष्टि,  
रहेभित ( सं. ) देखो रहेभ ।

रहेवास-इ ( सं. ) घर, गृह,  
भवन, मकान, स्थान, वास, नि-  
वास । [ रहनेवाला ।

रहेवासी ( वि. ) निवासी, वासी,

रहेपुं ( कि. ) रहना बसना, ठह-  
रना, मुकाम करना, निवास क-  
रना, वास करना, ठिकना, स-  
माना, रुकना, चैन होना, निभना,  
अटकना, अधूरा रहना, जीना,  
दूर होना । [ करना, नाश करना ।

रहेपुं ( कि. ) कत्तक करना, बध

रगतरे ( सं. ) उत्पात्ति, कमाई,  
प्राप्ति, अर्जन, पैदा, आमद, लाभ,  
मुनाफा ।

रगपुं ( कि. ) कमाना, पैदा करना,  
प्राप्त करना, उद्यम करना, पैसे  
पैदा करना ।

रगाडि ( वि. ) पैदा करनेवाला,  
कमाऊ, लाभकारी, हितावह ।

रगिवात ( सं. ) प्रसन्न, राजी, खुशी,  
तुष्ट । [ प्रसन्न होना ।

रगिवात भुं ( कि. ) खुश होना,

रगिवाभइं ( वि. ) सुशोभित,  
सुन्दर, रम्य, रमणीय ।

रणी ( सं. ) खुशी, आनन्द, हर्ष,  
उमंग, उछाह, प्रसन्नता ।

रणीराशी ( अ. ) धीरेसे, शांतिपूर्वक,  
सुखचैनमें, खशीसे, निरुपद्रव ।

रंङ-रंङ ( वि. ) गरीब, निर्धन,  
दरिद्र । पामर, बेचारा, दीन,  
कंगाल, नम्र । [ मंगता ।

रंङ ( सं. ) भिक्षुक, भिखारी,

रंभ ( सं. ) शहर पनाइकी भीत,  
नगर प्राचीर, दुर्गकी एक दिशा ।

संभेडो ( सं. ) धीरे धीरे चलने-  
वाला ।



शंभुजी ( सं. ) घृष्टीपर बनाये हुए रंगके चित्र, साधिया, भोजन करनेके स्थानमें भूमिपर रेखाएं खींची जाती हैं । [ प्राचीन ।

शंभे ( सं. ) गांवडेका, गंवार, शंभु ( सं. ) एक प्रकारका रोग जो पैरोंमें होता है ।

शंठ ( सं. ) बांक, बक्रता, टेढ़ाई, अनवन, द्वेष, विरोध, मनोमालिन्यता ।

शंठु ( वि. ) टेढ़ा, तिरछा, बांका, बक्र, झोटा, असत्य, झूठा ।

शंठ ( सं. ) रंडा बिचवा स्त्री पति हीना, बेव्या, रण्डी, छिनाल, पुंथली ।

शंठ गत ( सं. ) स्त्रीजानि, नारी ।

शंठानभर ( सं. ) चोचल, लियोंका हाव भाव, स्त्रीचरित्र ।

शंठना पेठे ( सं. ) वर्ण संकर दोगला, जिसके बापका पता नहो ।

शंठनु शंभ ( सं. ) घाघरेका राज, लहंगेकी अमलदारी, स्त्रीकाशासन ।

शंठभाज ( वि. ) व्यभिचारी, परस्त्री गमन, स्त्रीलम्पट, रण्डीबाज ।

शंठभाज ( सं. ) व्यभिचार, परस्त्री गमन, बेव्याप्रसंग, रण्डीबाजी ।

शंभु ( कि. ) रांडहोना, बिचवा होना, पति मरना, दयादिखाना ।

शंभे ( सं. ) जनाना, जनसा, ननुंसक, नामर्द, रांडका, कलांव ।

शंभुपत्नी डंडापत्नी ( ज. ) जुकसान होनेपरही बुद्धि आती है, ठगाए ठाकुर होता है ।

शंभुशंभ ( सं. ) बिचवा, रांड, निराश्रित स्त्री । [हुई स्त्री ।

शंभुशंभ ( सं. ) छोटीहुई, खानी

शंभु ( सं. ) पानी भरनेकी रस्सी, बोरी जेज, अबाध, बुद्धजन, अज्ञान मनुष्य ।

शंभे ( सं. ) देखो शंभे ।

शंभे ( सं. ) जगार, देखी भैरव आरिके पूजामें बावेहुए जो जीरु मेहू, भुजूरियां ।

शंभुछंड ( सं. ) धवण सुझा या कृष्णा घड़ी, इसदिन घीतळा पूजन करनेके लिये पदार्थ बनाते हैं ।

शंभुछिपु ( सं. ) रसोई घर, भोजनशाळा, पाकशाळा, बाबचौखाना, खंजर ।

शंभुछिपे ( सं. ) रसोईवा, भोजन-बनानेवाळा, बाबची, खंजरी ।

- शब्दार्थ ( सं. ) देखो शब्दार्थ ।  
 शब्दार्थ ( सं. ) वह जो शब्दार्थ के लिये हो ।  
 शब्दार्थ ( सं. ) पकाना, उबालना, सिझाना, भोजन बनाना, रसोई करना । [ किया हुआ काम ।  
 शब्दार्थ रसोई ( वि. ) युक्ति, तय्यार शब्दार्थ ने जमे शब्दार्थ=चूहा खोदे और सांप निवास करे । परिभ्रम कोई करे और आनन्द दूसरे भोगे ।  
 शब्दार्थ रसोई शब्दार्थ ( कि. ) बना बनाया कामका बीचमें ही रह जाना ।  
 शब्दार्थ-डी ( सं. ) एक प्रकारका औजार जो खेत नींदने तथा गोड़ने के काममें आता है, खुरपा खुरपी रौपी ।  
 शब्दार्थ ( कि. ) बीदना, गोड़ना, खेत में से घासफूस कचरा आदि निकालना ।  
 शब्दार्थ ( सं. ) मोची या चमारका एक औजार जो प्रायः चमड़ा काटनेके काम में आता है ।  
 शब्दार्थ-शब्दार्थ ( सं. ) गड्ढा खोदने का औजार, कुदाल, गेंती, खनि-जा, गेंवार, ग्रामीण, गंवडेल ।  
 -श ( सं. ) लक्ष्मी, पैसा, सोना, प्रभु, ईश्वर ।  
 शब्दार्थ ( सं. ) सर्वप, सरसों, शब्दार्थ का, एक प्रकारका सरसों के बरा-

- बर तैल युक्तबीज, यह आचार, रायते आदि में डाली जाती है, ( वि. ) अत्यंत छोटा । तुच्छ ।  
 शब्दार्थ-शब्दार्थ ( कि. ) उकसाना, उभारना, उत्तेजित करना ।  
 शब्दार्थ शब्दार्थ शब्दार्थ ( कि. ) बल कम होना, देख न सकना, आँख निकली पड़ना ।  
 शब्दार्थ शब्दार्थ शब्दार्थ ( कि. ) घुरा लगना, अभ्रिय मालूम होना ।  
 शब्दार्थ ( सं. ) भपका, ठाठ, शोभा, ऐश्वर्य ।  
 शब्दार्थ डेरी-शब्दार्थ ( सं. ) मसाला भरा हुआ आमका अचार ।  
 शब्दार्थ-शब्दार्थ ( सं. ) व्यंजन विशेष, दही में किसी चीजको डालकर राई नमक मिर्ची आदि डालकर बनाया हुआ पदार्थ, रायता, किसी की हानि ।  
 शब्दार्थ शब्दार्थ ( कि. ) किसी की खराबी करना, किसीको हानि पहुँचाना ।  
 शब्दार्थ शब्दार्थ ( सं. ) राईनैन, जब किसीको नजर लग जाती है तो उसके ऊपर राई नमक और मिर्ची उसर के आग में डालते हैं ।  
 दुकान, दोकान, बिघ, देव, ।

राक्षित ( सं. ) बहादुर पुरुष, वीर ।

राक्षि ( वि. ) उचित, ठीक, मुना-  
सिब ।

राक्षेय ( सं. ) देखो राक्ष

राक्ष ( सं. ) कुछ प्रतिपदा युक्त  
पूर्णिमा, वह तिथि जिसदिन पूर्ण  
चन्द्र हो । [ मयंक ।

राक्षे ( सं. ) विधु, चांद, चन्द्रमा,

राक्षपति ( सं. ) पूनमका चांद,  
पूर्ण चन्द्र ।

राक्षस ( सं. ) निशाचर, भयंकर,  
निर्दय, दैत्य, दानव, असुर, दनुज,  
भूत, पिशाच, शैतान, दाना,  
हिंसक मनुष्य, मांस भोजी, हत्यारा,  
नाच, तुष्ट ।

राक्षसगण ( सं. ) मनुष्योंके तीन  
गण होते हैं किसीका देव गण  
किसीका मनुष्य गण और किसीका  
राक्षस गण होता है, यह विषय  
ज्योतिष शास्त्रका है विवाह शादी  
के समय पुरुष और स्त्रीके गणों-  
कामी ध्यान रखा जाता है ।

राक्षसकी-राक्षसीः ( सं. ) राक्ष-  
सकी स्त्री, झुहड़ औरत, मैली  
झापाप प्रणीता स्त्री ।

राक्षसी ( वि. ) क्रोध, क्रमली,

राक्षसके सम्बन्ध युक्त कार्य या  
वस्तु, राक्षसके समान, भयंकर,  
विकराळ । [ प्रेतविद्या ।

राक्षसी विद्या ( सं. ) भूतविद्या,

राक्षी ( सं. ) दोनों तरफके नौक  
दार पैने दांत, राक्षसी, निशाचरी,  
भूतनी ।

राक्ष ( सं. ) किसी वस्तुके जक-  
जाने उसकी धूल, खाक, भस्म,  
रक्षा, न कुछ, धूल, रखी हुई  
ज्वां, बेश्या, रबी ।

राक्ष योणवी ( वि. ) बैरागी  
होना, भस्म रमाना, राखको  
बदनार, मलना । खराबहोना,  
बरबाद होना, खाक छानना ।

राक्ष योणावरी ( वि. ) बर-  
बाद करना, दरिद्री करना ।

राक्ष धुग ( अ० ) कुछमी, न  
कुछ ।

राक्ष धुग धध नपुं ( वि. ) ख-  
राबहोना, बिगड़जाना, बरबाद  
होना ।

राक्ष माथे धासवी ( वि. ) कि-  
सीकी काममें आने होजना, क-  
राव काम करना ।

शब्दी ( सं ) विघ्न संकट दुःख  
केश आदि न हो इस लिये हाथ-  
के पहुँचे पर मंत्र बोळ कर बाँधा  
हुआ डोरा, राखी, रक्षासूत्र,  
गर्भवती स्त्रीको वह सूत्र जो आ-  
शीर्वाद रूपसे उसकी नैनद पाँचवें  
या सातवें महीने में बाँधती है ।

शब्दी ( सं ) संरक्षक, शरणमें,  
रखने वाला, हिफाजत करने  
वाला ।

शब्दी शब्दी ( सं. ) देखो शब्दी

शब्दी ( सं ) अमानसे मान  
रक्षा, जाती हुई इज्जतकी सं-  
भाळ ।

शब्दी ( कि. ) रखना धरना,  
पाळन, करना, पालना, संरक्षण  
करना, संभाळना, संग्रह करना,  
यत्न करना अधिकारमें करना.

अन्दर रहने देना, बाहिर न नि-  
काळना । शेष रखना, रोकना,  
अटकाना, एकत्र करना, जमाना,  
प्रण पालना, काममें लाना ।

शब्दी ( सं. ) देखो शब्दी ।

शब्दी ( सं. ) देखो शब्दी ।

शब्दी शब्दी ( सं. ) जादू, टोना,  
मिथ्या प्रपंच, नास्तिक पूर्वक छळ ।

शब्दी ( सं. ) रखी हुई स्त्री, अविवाहि-  
तापत्नी, नासरेसे लई हुई स्त्री ।

शब्दीना पेटनी ( सं. ) वर्णसंकर  
संतान, दौगळी औलाद ।

शब्दी ( सं. , देखो शब्दी ।

शब्दी ( सं. ) पूर्ववत् ।

शब्दी ( सं. ) रंग, लाल, क्लेश,  
अनुराग, प्रेम, जेह, गानकासुर,  
भैरव, मालकौस, मेघ, श्री शीपक  
और हिंडोळ, अच्छास्वाद, मधुर  
ध्वनि, ( आवाज ) स्वर सुर  
रव, लालसा ।

शब्दी ( कि. ) बनना ।

शब्दी ( कि. ) गाना ।

शब्दी ( कि. ) गाना ।

शब्दी ( सं. ) लम्बा गीत ।

शब्दी ( कि. ) गळाफाड़कर  
रेना ( बाळकका )

शब्दी ( सं ) रागकी स्त्री, एक  
एक रागको पाँच पाँच लिया है,  
( भैरवकी राजिनी ) भैरवी, विभा-  
करी, गूजरी, गुनकरी और बिज्ज-  
वळ ( श्री रागकी ) गौरी, गौरा,  
नीलावति, बिहंगवा, बिजयती,  
और पूरिया ( मालकौसकी ) मठ  
हारी, सरस्वती, रूपमंजरी, चहु-

रक्तवन्मी, और धौशिक नंदिनी,  
( शोषककी ) कान्हडा, केदारा,  
अहना, मरु, विहाग, ( भेषकी )  
सारंग, गौड़गिरी, जै जै वन्ती,  
धूरिया और सभावती, ( हिण्डो-  
लकी ) टोही जयश्री, आसावरी  
बंगाल और सैंधवी ।

राभभाषा ( सं. ) काव्यमाला,  
जिसमें बहुतसे राग साधसाध  
गाये जावें ऐसी रचना । [ इर्ष्य ।  
राभशंभ ( सं. ) गीतवाद्य, जेठकूद  
रागी ( वि. ) जिसे फौरन क्रोध  
हो जावे, प्रेमी संसारमें तल्लीन,  
कुद, कुपित । [ रीतिभेदाना ।  
राभेपठपुं ( कि. ) ठंगमें आना,  
राभेमरापुं ( कि. ) कुद होना,  
गुस्साआना ।

राभेठपुं ( कि. ) गाते समय ऊँक  
करना, अलपना, स्वर भरना,  
सुरजेना ।

राभेठे ( सं. ) आलप, देखो राभेठे  
राधु ( सं. ) एक प्रकारका लाल  
लौता ।

राभ ( सं. ) घरमें काम आनेवाला  
सामान, वर्तन भाड़े, कपड़ेलसे  
देवल, सुर्सी आदि घरका सामान  
४७

राभरभीषुं ( सं. ) पूर्ववत् ।

राभपुं ( कि. ) प्रसन्न होना, खुशी  
होना, सुदित होना, अच्छा मालूम  
होना ।

राभ-भय ( सं. ) देश, राजाका  
आधिकृत देश, राष्ट्र, राजाका  
अधिकार । राजा, नरेश, राजन् ।  
( सम्बोधन ) ( वि. ) राजविषयक ।

राभभाषपुं ( कि. ) रजलव होना,  
मासिक धर्म होना । [ ईश्वरकाकोप ।

राभके देवके ( वि. ) राजाका अथवा

राभकेन्या ( सं. ) राजाकी लहकड़ी,  
राजपुत्री ।

राभकेव ( सं. ) राजा का कवि ।

राभकेल ( सं. ) राज्य सम्बन्धी  
कार्य, राज नीति, राजा के काम ।

राभकेरभारी ( सं. ) प्रधान, दीवान  
बजीर, मुत्सवी, मंत्री । [ सम्बन्धी ।

राभकेय ( वि. ) राजाका, राज्य

राभकेवर ( सं. ) राजाकापुत्र, राज  
कुमार ।

राभकेवरी ( सं. ) देखो राभकेन्या

राभकेभार ( सं. ) देखो राभपुत्र

राभके ( सं. ) राजा के रहने का  
किन्ना, दुर्ग ।

राजभरी ( सं. ) पहाड़ी, टेकड़ी जहाँपर राजा रहताहो, कांदा, प्याज ।

राजभरी ( सं. ) एक प्रकारका धान्य जो फळाहार के काम आता है, रजगिरह ।

राजभादी ( सं. ) राजासिंहासन, राजा के बैठनेका आसन, राज्यासन । [ राजाका कुलशुभ ।

राजभरी ( सं. ) राजाका पुरोहित,

राजभित्त ( सं. ) ऐसे निशान जिन्हें देखकर यह बोध हो कि समुक्त राजा है, छत्र चंवर मुकुट दण्ड आदि, कागज या धातु पर राजाका निशान । सिका ।

राजत ( सं. ) चांदी, रजत, रूपा ।

राजतंत्र ( सं. ) राज्यका कारभार ।

राजतिष्ठ ( सं. ) टीका, राजगद्दी, गद्दीपर बिठाकर मस्तक में किया हुआ तिळक, राज्याधिकार ।

राजतु ( वि. ) शोभित, राजित, प्रकाशित । [ माऐश्वर्य ।

राजतेज ( सं. ) राजाका प्रताप

राजधवे ( कि. ) चिराग, गुळ होना, दीपकका बुझना, दीप होना ।

राजदंड ( सं. ) राजा द्वारा दीहुई सजा, राजाके हाथका दण्ड ।

राजदरभार ( सं. ) राजसभा कचहरी, कोर्ट, न्यायालय ।

राजदरभारी ( सं. ) सरकारी, राजा से या राज्यसे सम्बन्ध रखनेवाले ।

राजदूत ( सं. ) राजाकी तरफसे समाचार लानेवाला, एलची ।

राजद्रोह ( सं. ) बलवा, उपद्रव, राजा के विरुद्धाचरण, कितूर ।

राजद्रोही ( सं. ) राजाया राज्यका विरोधी उपद्रवी, अराजक ।

राजद्वार ( सं. ) जहाँ राजा न्याय करता है वह जगह । कचहरी कोर्ट, अदालत ।

राजद्वारी ( वि. ) राजनीति विषयक ।

राजधर्म ( सं. ) राजाका प्रजाके प्रति कर्तव्य कार्य, प्रजारक्षण ।

राजधानी ( सं. ) राजाके रहनेका नगर, मुख्यनगर, पायेतस्त ।

राजन ( संबो. ) राजा, हे राजा !

राजनभर ( सं. ) राजधानी ।

राजनीति ( सं. ) राज्यकरनेकी विद्या, राजाका प्रजाके साथ कर्तव्य धर्म, राजकाज, सरकारी रीतिसम ।

राजपाद ( सं. ) राजगद्दी, राज, सिंहासन ।

राजपद ( सं. ) राजाकी पदवी ।

राजभनी ( सं. ) रानी, राजनहिनी ।

राजभाषिणी (सं.) स्वारी, सवारी ।  
 राजपुत्र (सं.) देखो राजकुंवर ।  
 राजपुत्री (सं.) देखो राजकुंवरी ।  
 राजपुत्र्य (सं.) राजका नौकर,  
 राजकर्मचारी, दवान, प्रधान,  
 बजीर ।

राजप्रतिनिधी (सं.) राजाकी तरफ से  
 कार्य करनेवाला, गृहसराय,  
 बहालाट । [ उत्पन्न ।

राजभीम (सं.) राजा के कुलमें  
 राजभक्ति (सं.) राजाकी भक्ति,  
 प्रजाका कर्तव्य, राजप्रेम, राजाका  
 शुभचिंतन ।

राजभोग (सं.) बड़ाभोग, ठाकुर-  
 रजीको दीपहरका नैवेद्य, देवताका  
 प्रसाद ।

राजभूट (वि.) राजच्युत, राज-  
 गद्दीसे उतारा हुआ राजा ।

राजभंडारी (सं.) दरबारी लोग,  
 हजरिये, राजसमाज, सुशामबीलोग

राजभंडार-भवन (सं.) महल,  
 आसाद, राजा के रहनेके मकान,  
 राजमाड़ा ।

राजभट्ट-राजभट्ट (सं.) राजाका  
 बर्ष, अपने राज्य (शासन) का  
 चमण्ड ।

राजभट्ट (सं.) देखो राजभंडार ।  
 राजभाटा (सं.) राजाकी माता,  
 राज्यमें ।

राजभानु (वि.) राजाके द्वारा  
 प्रतिष्ठा प्राप्त, नरेशद्वारापूजित,  
 प्रसिद्ध, राज्यमें मुख्य अधिकारी  
 विद्वियोंमें यह वाक्य शोभा प्रद-  
 र्शनार्थ लिखते हैं । [भानिका रस्ता ।

राजभार्ग (सं.) राजाके जाने-  
 राजभुद्रा (सं.) राजाकी छाप,  
 राजाके हस्ताक्षरोंकी मुहर ।

राजभोग (सं.) योगसाधन,  
 विशेष, राजहोनेका ग्रहयोग ।

राजशिक्ष (सं.) राज्यकी उन्नति,  
 राष्ट्र वृद्धि, शासनवृद्धि ।

राजशैल (सं.) हाथमें राजा होनेकी  
 रेखाएं, शंख, गदा, भज्र,  
 चक्र, ध्वज इत्यादि चिन्ह (सामु-  
 द्रिक शास्त्र) ।

राजर्षि (सं.) वह ऋषि जो राज  
 त्यागकर तप करता है, क्षत्रिय  
 ऋषि ।

राजधर्म (सं.) राज्य वैभव,  
 राज्यश्री । वृद्धि, वधती, राजकोष ।

राजबोध (सं.) राजाके हस्ताक्षर,  
 राजाकी आज्ञा, बिंदीराजशासन ।

राजवट-३ ( सं. ) राजदरबारी रीति  
रिवाज ।

राजवट ( सं. ) देखो राजभार्ज ।

राजवटवट ( सं. ) राज्य कार्य  
बाही । [ क्षत्रिय ।

राजवंशी ( सं. ) राजाके कुलका,

राजवंशु ( सं. ) दरबारी, हजूरि-  
या, दरबार ।

राजवी ( सं. ) किसीके मरनेके  
बाद छाती कूटकर रोनेकी एक  
रीति ( औरतोंमें ) रोनेका एक  
प्रकारका गीत । राजा, महाराज,  
माय्य शाही पुरुष । धीमंत ।

राजवुं ( सं. ) शोभित होना, सुं-  
दर दृष्टि आना ।

राजवैद्य ( सं. ) राजाका या राजा-  
से मान प्राप्त वैद्य, राजाका द-  
धीम । [ राजाकी शोभा, ठाठ ।

राजवैभव ( सं. ) राजाका प्रताप,

राजश्रीवाविशालित ( वि. ) राज  
शोभासे शोभित, बड़ेपदसे सम्मा-  
नित ।

राजश्री-लेश्री ( सं. ) राज्यलक्ष्मी ।

राजशी ( वि. ) देखो राजस ।

राजस ( वि. ) रजोगुण प्रधान,  
अहंकार, गर्व ।

राजसत्ता ( सं. ) राजाका अधिकार  
बादशाही अमल्दारी, हुकूमत ।

राजसभा ( सं. ) राजदरबार, कच-  
हरी, कोर्ट, न्यायालय, राजाकी  
सभा ।

राजसेव ( सं. ) यज्ञविशेष राजाके  
करनेका यज्ञ, राजसूयज्ञ, ऐसे  
अनेकों यज्ञ करके प्राचीन कालमें  
राजा सम्राटपद पाते थे ।

राजस्तान-स्थान ( सं. ) राजपूताना  
भारतके देशी राज्य, देशी रियासतें ।

राजसू ( सं. ) पक्षी विशेष उत्तम  
हंस । [ मारवाला ।

राजसूय ( सं. ) राजबध, राजाको

राज ( सं. ) नरेश, भूपाल, नृपति,  
भुवाल, अधिपति, नाथ, स्वामी,  
मालिक, संरक्षक, अधिकारी बाद-  
शाह, अधिराज, श्रेष्ठता प्रदर्शनार्थ  
शब्दके साथसाथ गायाजाता है  
जैसे " वैद्यराज, मुनिराज, मज-  
राज । " स्वतंत्र पुरुष, सतराजके  
खेलमें मुख्य गोट, ताशके खेलमें  
राजाका पत्ता । [ मोटे मनका ।

राजलेश्वरी ( सं. ) उदाराविचारवाला,

राजसाधे लक्ष्मी ( कि. ) सरल  
माळखाना ।



शब्दार्थ भवती शब्दी ने भाषा  
वीक्ष्यती भाषी सफेद किन्तु दूध  
नहीं।

शब्दभाष्य ( सं. ) जो राजाके  
समान गुणमें विद्यामें सर्वमें ऐश्वर्य  
आदिमें हो।

शब्दधिशब्द ( सं. ) शाहंशाह,  
राजाओंका भी राजा, सम्राट, चक्र-  
वर्ती नरेश।

शब्द भे भ ( सं. ) उदार पुरुष,  
हितैषी, परमार्थी, विद्याप्रेमी,  
न्यायी भ्रष्टपुरुष। [ शेष।

शब्दधे ( सं. ) शोकका गीत वि-

शब्दव ( वि. ) शोभित, सुन्दर।

शब्द ( वि. ) श्रुत, प्रसन्न, स्वीकार,  
तैयार।

शब्दकश्रु ( कि. ) प्रसन्न करना।

शब्दश्रु ( कि. ) श्रुत होना।

शब्दश्रुती ( अ० ) प्रसन्नतासे,  
स्वेच्छासे।

शब्दभाषु ( सं. ) स्वेच्छा पूर्वक  
लिखाहुवा पत्र, प्रसन्नता प्रदर्शक  
लेख, इस्तिका।

शब्दभाषादीधी ( अ. ) राजा श्रु-  
तीसे, बिनाजबरदस्तीसे, इच्छा-  
पूर्वक।

शब्दधे ( सं. ) प्रसन्नता।

शब्दव ( सं. ) कमल, पंकज, पद्म।

शब्दवदोत्थन ( सं. ) कमल नवन,  
पुंवरीकाश, ईश्वर, परमात्मा,  
राम, कृष्ण।

शब्दधे ( सं. ) राजाओंकाभी राजा,  
महाराजाधिराज, सम्राट, राज-  
राजेश्वर।

शब्दधे ( सं. ) देखो शब्दधे।

शब्दधे ( सं. ) राज, देश, राष्ट्र,  
राजाका अधिकृतदेश, शासन,  
हकूमत।

शब्दधे ( सं. ) राजनीति,  
राज्य सम्बन्धी कामकाज।

शब्दधे ( सं. ) राज्यकारभार।

शब्दधे ( सं. ) राजधानी, राजा-  
के रहेनेका नगर, राजनगर।

शब्दधे ( सं. ) सनद, राज्यकी  
ओरसे दस्तावेज, सरकारी कागज।

शब्दभाषिधे ( सं. ) राजगादी  
राजतिलक, राज्याधिकार, समस्त  
नदियों का जल, वृक्षपत्तल, सम-  
स्तरल आदि मंगाकर वैदिक  
विधिसे किया हुआ राजतिलक,  
तस्तनशीनी।

शब्दभाषन ( सं. ) राजाके बैठनेका  
आसन, यादी, तस्त, सिंहासन।

२१६६ ( सं. ) राबपूत क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष, राठौड़नामक जाति ।

२१६ ( सं. ) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, झगड़ा, हल्ला, शोरगुल, होहल्ला ।

२१६ ( सं. ) ज्वारका डण्डा, टठारा, राका, ज्वार मक्काका सूखा हुआ बृक्षदण्ड ।

२१६ ( सं. ) बाकयुद्ध, कलह, झगड़ा, बकबक, तकरार, फरियाद जुदाई, तलाक ।

२१७ ( सं. ) राक्षी, राजपराना, राजमहिषी, राजकरनेवाली क्री, राजरानी ।

२१७ ( सं. ) शेरकीबोर, झकड़बाज, चमकी, अहंकारी ।

२१७ ( सं. ) पूर्ववत् ।

२१७ ( सं. ) अन्तःपुर, रज-वास, रानियोंका रहनेका महल ।

२१७ ( सं. ) राणीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र, राजपुत्र, दुवराज, राज्याधिकारी ।

२१७ ( सं. ) सलाह, परामर्श, ऐक्य, राजीखुशी, प्रसन्नता ।

२१७ ( सं. ) राजा, राजपूत, क्षत्रिय विशेष, रापूतराजा, चाक-

रमें रहनेके कारण यह शब्द ' गोला ' के लियेभी प्रयोग करते हैं जैसे " गोलाराणा " ।

२१७ ( कि. ) चिराग बुझाना, दीपक ठंडा करना ।

२१७ ( कि. ) चिराग गुलहोना, दीपक बुझाना, नष्टहोना ।

२१७ ( सं. ) नाई, इज्जाम, नापित, नापिक रात्रि, निशा, रजनी, रैन ।

२१७ ( सं. ) अंगर वि-नने काम न होसकतो सारी रात जागकर करेंगे ।

२१७ ( सं. ) रात ने हल्ला डेला हल्ला डेला = जो जैसा कहावे वैसाही बोलना ।

२१७ ( सं. ) सुधि, होश, खबर, बुनियादारीकी खबर ।

२१७ ( सं. ) उल्लू चु-धु, चोर, राक्षस, निशाचर ।

२१७ ( सं. ) लालिमा, ललाई अरु-णता, लालज्वार, गाजर ।

२१७ ( सं. ) सुहाली, पपकी, गेहूंचने आदिके आटेकी बनी हुई ।

२१७ ( सं. ) गाजर ।

२१७ ( सं. ) ज्वार, जुवारी ( लाल ) दान्य विशेष ।

शतडी ( सं. ) देखो शत ।

शत दहाडे ( सं. ) अर्धनिशि,  
नित्य, रातदिन, सदा, हमेशा,  
सबोरोज ।

शतम् ( सं. ) बंधानी, रोज किसी  
वस्तुके आनेका नियम, बंधी,  
सीधा ( आटा ढाल ची नमक  
मिर्च आदि ) । [ ( कवितामें )

शतधडी ( सं. ) रात्रि, रात  
शतभ ( सं. ) नित्यका आहार,  
खोराक, पेट खर्ची, भत्ता वजीफा ।

शतपश्त ( अ. ) चाहे जिस समय ।

शतवासो ( सं. ) यात्रामें किसी  
स्थानपर रातभर निवास । रात  
काटना । [ पलिके साथ रहना ।

शतपुं ( कि. ) अपने पति या  
शताश ( सं. ) देखो शतास ।

शतुं ( वि. ) लाल, रक्तवर्ण, लालका-  
रंग, मग्न ।

शतीशयधुनेपुं ( कि. ) सुहृद,  
पृष्ठ, मजबूत । [ कोप करना ।

शतुंपीधुंशुपुं ( कि. ) क्रुद्ध होना,  
शते ( अ. ) रात्रिमें, रातके समय ।

शतोशत ( सं. ) रातही रातमें  
सूर्योदयके पूर्व ।

शत्र-त्री ( सं. ) देखो शत ।

शधा-धिका ( सं. ) कृष्णवन्द्यको  
झी, छिनाल औरत, वांस झी,  
भली झी ।

शान ( सं. ) झाड़ी, सघन वन, जं-  
गल, वृक्ष झाड़ी आदिसे आच्छन्न  
वन आरण्य, बिना वृक्षोंका मिशान ।

शानशान ने पानपान धुधपुं  
( कि. ) बरबाद होना धूलधानी  
होना, दुर्दशामेंहोना ।

शानपुं ( वि. ) असन्ध, जंगली,  
व्यर्थही घूमनेवाला, गँवार ।

शानी ( वि. ) जंगली, बनी, मूख,  
पशु, निर्बुद्धि, अशिष्ट, बेरंग

शानीधुकेडे-भरधो ( सं. ) तीतर,  
पक्षीविशेष । [ मधु ।

शानीभध ( सं. ) शहद, जंगली  
शानेशान-शानेशान ( अ. ) जंगल

जंगल, एक वनसे दूसरे वन ।

शानतो ( सं. ) रीति, रिवाज रस्म  
शान-डे ( सं. ) दामकका घर,

सांपके रहनेका बिल, बगई, बांधी ।

शान ( सं. ) पात, गुडियानी, आटा  
चीमें सेक कर और मीठे पानीमें  
औटाकर तय्यर कियाहुआ पतल

पदार्थ ।  
शान्डी ( सं. ) रबड़ी, किसी वस्तु-  
को उबालकर आनेके लिये बनाया  
हुआ द्रव पदार्थ, बसौड़ी ।

शंभु ( सं. ) रावडी ( बेपरवाहीसे  
बनाई हुई )

शंभ ( सं. ) सर्वव्यापक ईश्वर, दश-  
रथका बेटा रामचन्द्र, दम, बळ,  
शाक्त, पौरुष, जमदग्नीका पुत्र  
परशुराम, कृष्णचन्द्रका बड़ाभाई  
बळराम, व्यापारी लोग व्याजकें  
खानोंकोभी संकेतार्थ यह शब्द  
प्रयोग करते हैं । [ मकी कसम ।

शंभ्याथु ( सं. ) रामदुहाई, रा-

शंभुछाथु ( सं. ) बढालम्बा,  
चौड़ा, किरसा, लंबीबात, रामा-  
यणकी कथा ।

शंभुणी ( सं. ) प्रातःकाल गानेकी  
एक रागिनी विशेष ।

शंभु ( सं. ) साधुन, बाबी, संन्धा-  
सिन, योगिनी, जोगन, फकीरनी ।

शंभु जौवाणिजे ( सं. ) इधरउधर  
फिरते हुवे छोटे छोटे नंगे बच्चोंके  
लिये यह शब्द प्रयोग होता है,  
बाळगोपाळ ।

शंभु ( सं. ) एकराग विशेष ।

शंभु ( सं. ) दुष्टोंका संहारक,  
छातवा अवतार, कई लोग इन्हें  
ईश्वर कहते हैं ।

शंभु ( सं. ) बेइया, रंको,  
नर्तकी, गणिका, वारनारी ।

शंभु ( सं. ) वैत्र शुक्ल  
नवमी तिथि ।

शंभु ( वि. ) दूटाहुवा,  
खंडित, भग्न, फूटाहुवा, खोसला ।

शंभु ( सं. ) मुर्देको लेजानेकी  
टंठी, संगती, रथी ( मृतककी )

शंभु ( सं. ) बड़ाभारी ढोल,  
नगरा ।

शंभु ( सं. ) किसी शुभ  
अवसरपर सिरपरमौर धारणकर  
हाथमें लटकताहुवा दीपक रखतीहै ।

शंभु ( सं. ) राम  
दुहाई, रामचन्द्रकी सौगंध ।

शंभु ( सं. ) हनुमान, बन्दर,  
बानर ।

शंभु ( सं. ) रामका भक्त ।

शंभु ( वि. ) गरीब, कंगाल  
भिखारी, विपदग्रस्त ।

शंभु-नाभी ( सं. ) देखो  
शंभु ( सं. ) [ चित्त ।

शंभु ( सं. ) मजन, ईश्वर

शंभु ( सं. ) एक अंगूठी जिस  
पर रामका नाम अंकित हो ।

शमशुशम ( सं. ) ऐसा राज्य जिसमें प्रजा सबतरह स्वतंत्र और सुखी हो ।

( “ इष्ट प्रमुदितो लोक तुष्टपुष्टः सुधार्मिकः निरामयोऽहं रोगश्च दुर्मिष भयवर्धितः । न चार्मिजमयं किञ्चित्तापी ज्वरकृतं तथा, न चापि क्षुधभयंतत्र न तस्कर न भयं तथा । नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्य युता निच, निर्व्यप्रमुदिता सर्वे यथाकृत युगे तथा ” । रामराज्यकी प्रशंसा में उक्त श्लोक महर्षि वाल्मीकिने लिखे हैं ) स्वराज्य, सुराज ।

शमशुशम ( सं. ) मिष्टीकाढेर ।

शमभनि ( सं. ) एकप्रकारकी औषधि  
शमपान ( सं. ) एक प्रकारका मिष्टीका जलपानिके लिये बर्तन, सकोरा ।

शमभू ( सं. ) एक प्रकारका फूल ।

शमभाषु ( वि. ) अच्छे गुणवायक अव्यय, निष्फल, गुणदायक ।

शमभूषुः ( सं. ) मिष्टीका मोटा भारी ढकना । [ पाठ रामकी कृपा ।

शमरक्षा ( सं. ) रामकी स्तुतिका

शमरस ( सं. ) नमक, लवण, क्षार ।

शमशम ( सं. ) देखो शमशुशम ।

शमशम ( सं. ) सखम, प्रणाम, अभिवादनके लिये यह शब्द प्रयोग होता है ।

शमशेटी ( सं. ) साधुओंका भोजन, मोटी मोटी रोटी, रोटी टिकड़ ।

शमश्वशु ( कि. ) मरजाना, समाप्त होजाना, स्वर्गवास करना ।

शमश्वशु ( कि. ) पूर्ववत् ।

शमशुनाम दे-यह बात छोड़ो, किसोकीभी निन्दा न करना ।

शमश्वशु ( अ. ) बेजान, बिना-दमका ।

शमशम ७५११ ने ५२१५ भाष्य ७५११ धर्मकी आड़में नीच कार्य करना ।

शम शपे तेने के। भू भूभूमिपर ईश्वर अनुकूल हो उसे कौन मार सकता है ?

शम नामे भयंर तरेईश्वरकी कृपासे असंभव बात संभव हो जाती है ।

शमने रणशु नहि ने सीताने रणशु नहि-निर्धन दशमें होना ।

शमशु सपशु भरतने इष्ये ( सं. ) बिल्लो खोदे चूहा और वास करे साथ ।

शमशब्देजेठकर सयका मुकरा लेत ।  
जेसी जहा आकरी वेशा उनहुं  
देत जैसा करना बैसा भरना,  
कर्मानुसार फल ।

शम आशरे ( अ० ) परमात्माके  
भरोसे, आश्रयहीन, देव इच्छासे ।

शम ठडाधुी शयी—( कि० ) रामचन्द्र  
के समान संकट या विपत्ति  
आपड़ना ।

शमधुथुना पारानी ( वि० ) अत्यंत  
प्राचीन, बहुत पुरानी ।

शम कुंठाणुं ( वि० ) गोल चकर ।

शमभलोलाजेवे ( कि० ) खूब मोटा  
ताजा, खा पी कर मस्त, अगइबंब ।

शमभाडिधुं ( वि० ) बेडब, बेठंगा,  
पागल ।

शमजोटीलोकरवे ( कि० ) गोल गें-  
दके समान लपेटना । [ रोट ।

शमअककर ( सं० ) मोटी रोटी,

शमनाभनी ( सं० ) देखो शमडोणी ।

शमनाभनीआपरी ( कि० ) मार-  
मारकर अघमरा करदेना, मरण-  
तुल्य पीटना ।

शमभोलोशये ( कि० ) मरजाना,  
अन्त होना, स्वर्गवासी होना, इ-  
न्तकालहोना ।

शमशब्दभननीजेठ = उम्दा जोड़ी,  
समाज रूपगुण लक्षण सम्पन्न  
पुरुष ।

शमशरधुकरपुं—पहोआडपुं ( कि० )

मारना, बध करना, मार डालना ।

शमरभवाणुं ( वि० ) जिसका के-  
वल ईश्वरही रक्षकहो और आगे-  
पीछे कोईभी नहो ।

शमा ( सं० ) सुन्दर स्त्री, मनोहर  
स्त्री, बनिता, मानिनी, बामा,  
महिला ।

शमानुष ( सं० ) हिन्दुओंका एक  
मत, इस नामका एक अवैदिक  
मतका प्रचारक मनुष्य दक्षिण भा-  
रतमें आजसे लगभग ७०० वर्ष  
पूर्व होगया है । इस मतके अनु-  
यायिओंका चिन्ह मस्तकमें दो स-  
फेद लकड़ोंके बीचमें एक लड़ी  
लाल लकड़िका तिलक है ।

शमापधु ( सं० ) त्रेतायुगमें उतरा  
दशरथके लड़के महात्मा रामचंद्र-  
के जीवन चरित्र बताने वाली पु-  
स्तक, रामचंद्रका इतिहास, बा-  
स्मीकि रामायण, अथ्यारम रामा-  
यण, तुलसीकृत रामायण, अद्भुत  
रामायण अ.दि । बड़ी विचित्र  
तथा असंभव बात ।

शमश्रुवेरीनाभवी (क्रि.) नुकसान करना, अतिशय दुःख पहुँचाना ।

शभी (सं.) माट्टो, बगवान, फूलमाखी ।

शभैयो (वि.) बिना सँढका चरस (पानी खींचनेका) बड़स, चरसा ।

शभैसी (सं.) एक जंगली जाति विशेष, लुटेरोंकी जाति विशेष, चौकीदार, पहिरेवाला, रखवाला ।

शभ (सं.) राजा, बनाव्य पुरुष  
शभभाभा (सं.) आवरा, आवरा, इस नामसे प्रसिद्ध फल ।

शभवाण (सं.) ब्राह्मणोंकी एक जाति विशेष ।

शभो (सं.) ग्वाल, चरवाहा, अहीर ।

शभु (सं.) एक वृक्ष विशेष, एक प्रकारका फल । [ वृक्षका फल ।

शभु कुँडी-डोडी (सं.) रावण

शभत (सं.) किरायत, कमी, द्युनता, कृपा दया, मिह्रबानी, अनुकम्पा, आराम, विभाम ।

शभरंठ (सं.) धनी दरिद्री, किसी पटेल या गाँव के नम्बरदारका लड़का ।

शभु (वि.) प्रतिष्ठित पुरुष सम्बन्धी ।

शभ (सं.) फरियाद, नालिश, चुगली, राजा, नरेश, भाट, राज कवि. बन्दी ।

शभ (सं.) भाट तथा स्तुति गायक  
शभभावी (क्रि.) फरियाद करना, चुगली करना, झूठी बातें पीछे से कहना ।

शभटी (सं.) छोटा तम्बू, छोटी छोलदारी पट भवन (छोटा)

शभु सं.) रावण नामक प्रसिद्ध लंका का राजाजो अनार्य्या और जिस दशरथ के लड़के रामने माराथा । कहते हैं उसके दस सिर तथा बीस हाथये ।

शभु नेवुं भो (सं.) चढा हुआ मुँह, फूल हुआ मुँह । कुद मुल ।

शभु भु (क्रि.) मोटा होना, फूलना ।

शभु ३५ ३२धु (क्रि.) मुँह चढाना, मुँह फूलाना, कुद होना ।

शभुयो (सं.) गाँवका चौकीदार छोटेसे गाँवके का पहिरेवाला ।

शभु (सं.) राजपूत ठाकुरोंकी समा । क्षत्रियों की जातीय समा, चौकीदार व्यवसायी सिपाहियों के रहने की बगह ।

रावधुं ( सं. ) पूर्ववत्

रावधुं ३२५-धुं ३२५ ( कि. )

राजपूतों का एक जगह इकट्ठे हो कर अमलपानी नशा करना, भाट इत्यादिकों कसूमा नामक नखेदार चीज देना ।

रावत ( सं. ) बुद्धि सवार, अश्वारोही, अश्वरसक, अश्वपाल, सार्इस, सईस ।

रावता ( सं. ) राजाकी रीति, राज कुल की रिवाज, राजत्व ।

रावधुं ( सं. ) देखो रावधुं ।

रावधिये ( सं. ) एक प्रकारकी शूद्र जाति जो प्रायः कपड़े बुनेन तथा दातुन बेचने का धन्धा करते हैं ।

रास ( सं. ) राशि, सरासर, हिस्से दारी, पार्सी, सहकार, डेर, समूह, गधा, गर्दभ, गवहा, रासभ, समान गुण, लगामकी डोरी, रास ।

रासि ( सं. ) नक्षत्रों के द्वादशचक्र ( मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ औरमीन, ) समूह, पुंज, डेर । [ रस्सी चाँदीकीकण्ठी ।

रासडी ( सं. ) डोरी, सुतळी,

रासवा ( वि. ) डोरीकी लंबाईके बराबर फासला, १६ फुटका माप ।

राशी ( वि. ) खराब, हलकी जातिका ।

राधधी ( सं. ) औषधि ।

राष्ट्रे ( सं. ) देश, प्रांत, प्रजा, रैयत ।

रास ( सं. ) घोड़ोंके या रथमें जुते हुए किसीभी पशु के चलाने रोकने की रस्सी, गोल चक्करकी नूल कीड़ा, बारह राशियां ( मेष, वृषभ ६० ) समानता साम्रा, पांती सहयोग, डेर, पुंज, लगाम, मूलचन, पूंजी ।

रासडी ( सं. ) बुन्दाबनमें कृष्णका गांपियोंके साथ खेलाहुआ खेल, कृष्णके समान खेल ।

रासभातु ( सं. ) सासेदारी, हिस्सेदारी, सहयोगिता, सहकारिता ।

रासडी ( सं. ) डोरी, रस्सी, सुतळी चाँदीकी कंटी ।

रासडी ( सं. ) एक प्रकारका राग, एक प्रकारका गरबा, नाच गान, खेल इत्यादि ।

रासधारी ( सं. ) कृष्णकी लीलाओंको खेलकर दिखानेवाले, राधाकृष्ण बनकर नाचने वाले लोग ।



शशभ ( सं. ) खर, गधा, बर्देम, गहड़ । [ खेळनेवाळे पुरुष ।

शशभंडण-ली ( सं. ) रासक्रीड़ा

शशधीक्षा ( सं. ) देखो शशक्रीडा ।

शसी ( वि. ) खराब, गढ़बढ़युक्त, निरस ।

शसो ( सं. ) झंठा किस्सा, अपूर्व कहानी, कहावत, परंपरागतगाथा ।

शस्त ( सं. ) खरा, सत्य, उचित, सच्चा, बाजिब, मुनासिब योग्य ।

शस्ती ( वि. ) न्याय्य, ईमानदारी, औचित्य, सत्यता, वफादारी ।

शशुंदा ( सं. ) अन्धा नेत्रहीन, अंध, जिसे रातको नहीं सुझे, रतौंधका रोगी, रात्रांध रोगवाला ।

शः ( सं. ) मार्ग, रास्ता, पथ, सड़क, रीति, तरह, ढंग, चाल, तर्ज, ढील, राह, ग्रह विशेष ।

शःहारी ( सं. ) एकस्थानसे दूसरे स्थान अने या सामान ले जानेका आज्ञापत्र, मार्ग, रास्ता ।

शःलेवी ( क्रि. ) इतजार करना, मार्ग निरीक्षण करना, बाटजोहना ।

शःभारवे। ( क्रि. ) धूलधानी करना, बरबाद करना, बिनष्टकरना

शः ( सं. ) एकग्रह विशेष, कूरग्रह हानि पहुंचानेवाला नीच पुरुष ।

शण एक प्रकारकी औषधि, यह अग्नि संयोगसे फौरन जल जाती है । धूनी, एक प्रकारका गोंद । एक प्रकारका सिका. डालर, इसका मूल्य लगभग ढाई रुपये के होता है, अमेरिका जापान आदि देशोंमें अब प्रचलित है । [ करना ।

शणपुं ( क्रि ) साफकरना, शुद्ध

शिक्षी ( सं. ) वादानुवाद, शिक्षक, बकबक, शास्त्रार्थ, विवाद ।

शिक्षुं ( क्रि. ) घूमना फिरना, भटकना । [ का वृत्त, ।

शिक्षु ( सं. ) भनेकापेद्, बैंगन

शिक्षुं ( सं ) भटे, बैंगन राख. कुम्भाण्ड, वृंताक फल, सागके लिये फल विशेष ।

शिक्षुं-अपुं ( क्रि. ) प्रसन्न होना, खुश होना, मुग्ध होना ।

शिक्षु ( सं. ) प्रसन्न होनेका कार्य ।

शिक्षु ( सं ) समुद्र, सागर, सिंधु, उदधि ।

शिक्षि ( सं. ) श्रद्धि, सम्पत्ति, वृद्धि, लक्ष्मी, दौलत, विभूति, ऐश्वर्य उदय उत्कर्ष समृद्धि, शुभ, क्षेम, कल्याण ।

शिक्षिसिद्धि ( सं. ) शुद्ध संपत्ति, वैभव, गणेशजीकी कियां ।

रिष ( सं. ) तख्तेकी पट्ट या घञ्जी  
 रिषु ( सं. ) शत्रु, वैरी, द्वेषी, वि-  
 रोधी, दुश्मन, अरि, जासूस, भेद,  
 गुप्तचर । [ कष्ट देना ।  
 रिषुं ( कि. ) पीड़ा पहुँचाना,  
 रिषावुं ( कि. ) दुखपाते रहना,  
 बहुत समयतक तकलीफें उठाना ।  
 रिषाव ( सं. ) चाल, रीति, रस्म,  
 मार्ग, आचार, अभ्यास, पद्धति,  
 आदत, टेव मुहाबिरा । [ दुखद ।  
 रिष्ट ( वि. ) खोटा, बुरा, अशुभ,  
 रिषाभक्षु ( सं. ) रिस, कोप, ना-  
 राजी, खफगी, अप्रसन्नता, असं-  
 तुष्टता ।  
 रिषाभक्षुं ( वि. ) जो जराजरासी-  
 बातमें नाराजी प्रदर्शित करने-  
 वाला ।  
 रिषावुं ( सं. ) नाराज होना, कु-  
 पित होना, रुठना, चिढ़ना, गु-  
 स्से होना ।  
 रिषाभक्षु ( सं. ) एक प्रकारका  
 वृक्ष, लाजवतीका वृक्ष, लज्जाव-  
 तीका पेड़ ।  
 रिषाव ( वि. ) देखो रिषाभक्षु  
 रीछ ( सं. ) माछ, ऋक्ष, भल्लुक ।  
 एकवचन माँसाहारी जीव विशेष,  
 बंगली आदमी ।

रीभवुं ( कि. ) दुखी होना कष्टमें  
 होना ।  
 रीभ-ञ ( सं. ) खूशी, आनन्द,  
 हर्ष, सन्तोष, प्रसन्नता, उपहार,  
 भेट ।  
 रीठ ( सं. ) देखो रिष्ट ।  
 रीठ-ठ ( सं. ) आवाज पुकार, बि-  
 लाहट, होहल्ला, शोर गুল, ।  
 रीद्धुं ( वि. ) अत्यंत प्रयोगद्वारा  
 मजबूत ( मिट्टीका पात्र ) कठिन,  
 टिकाऊ, कठोर, दृढ़ ।  
 रीत-ती ( सं. ) चाल, चलन,  
 प्रकार, व्यवहार, मार्ग, राह, ढंग,  
 तरीका ।  
 रीतभांसेधुं ( कि. ) लोकाचारसे  
 विरुद्ध कार्य न करना, चलनके  
 अनुसार बर्ताव करना ।  
 रीतभांभावधुं ( कि. ) समल-  
 जाना, ठोकरें खाकर योग्य कार्य  
 करना ।  
 रीतपक्षी ( कि. ) रिवाज होना,  
 आदत पढ़ना, टेव होना ।  
 रीतक्षरी ( कि. ) जो कुछ कुलरीति  
 हो उसे करना ।  
 रीतराभवी ( कि. ) रिवाजके अनु-  
 सार काम करना, मर्याद रखना ।

रीतसर ( अ. ) रीत्यानुसार, रिवा-  
जके मुआफिक, यथा विधि ।

रीतगत ( सं. ) रस्मारिवाज, रीति,  
चालचलन, बर्ताव, चालचलन ।

रीतशेख ( सं. ) तर्ज, डंग, फेशन,  
तरीका मुहाविरा, सम्प्रता ।

रीति ( सं. ) देखो रीत ।

रीध ( सं. ) देखो रिद्धि ।

रीपोट ( सं. ) बयान, हाल, वर्णन  
नोट, अफवाह, गप्प, जनवाद,  
लोकचर्चा, किम्बदन्ती ।

रीभ ( सं. ) कागजोंके बीस दस्ते,  
४८० कागज ( के शीट ) [ पुकार ।

रीर ( सं. ) लड़ाई, कसाव, हला,

रीस ( सं. ) क्रोध, कोप, रोष,  
गुस्सा । [ होना ।

रीस उतरवी ( कि. ) क्रोध शांत

रीस ४२वीं-५६वीं-७२वां ( कि. )

क्रोध आना, कोप करना, गुस्सा होना ।

रिन्नाटी ( सं. ) रोम, छोटे छोटे,  
बाल, पद्म ।

रिं-रिं ( सं. ) रौंवा, रेंवाँ,  
रोम, लोम ।

रिं ( सं. ) रोमावली, रोना, बिलाप

रिं ( सं. ) दोपहर का भोजन ।

रिं ( सं. ) नरसिरमाज, मनुष्यकी  
खोपड़ियोंका हार, मुंडमाला ।

रिं ( सं. ) पूर्ववत् । [ वकल ।

रिं ( सं. ) नरियल के ऊपर का

रिं ( सं. ) गोल मटोल ।

रिं ( सं. ) दो पहरीका भोजन,  
उपहार । [ स्तंभन ।

रिं ( सं. ) निरोध अवरोध,

रिं ( कि. ) रोकना, अवरोध  
करना, धरना, स्तंभन करना,  
धामना ।

रिं ( सं. ) रोम, लोम, रूआँ, पशम ।

रिं ( सं. ) रीष, रिस, रोष,  
क्रोध, कोप ।

रिं ( सं. ) रवाव, मुखकृति, डंग,

रिं ( सं. ) देखो रिं ।

रिं ( वि. ) जिसके भीतर रुई

भरी हो, रुई सहित, रुई युक्त ।

रिं ( सं. ) देखो रिं ।

रिं ( सं. ) रोग, बीमारी ।

रिं ( कि. ) अटकाना, रोकना,

ठहराना । [ लिखा हुआ पत्र ।

रिं ( सं. ) छोटी चिट्ठी, संक्षेपमें

रिं ( सं. ) भाव, मनोवृत्ति, इच्छा

रुख ।

३६८ ( सं. ) छुड़ी, इजाजत, रजा ।

३६८ ॐ१५पी ( कि. ) निकाल देना  
पृथक कर देना, अलग करना ।

३६८-६ ( सं. ) पेड़, वृक्ष, तरु,  
पादप, वंश, झाड़, गाछ ।

३६८सत ( सं. ) देखो ३६८

३६८यु ( कि. ) भाना, अच्छा लगना  
मनोहर मालूम होना, रुचिकर होना ।

३६८पी ( सं. ) इच्छा, आमिलाष,  
भरजी, प्रसजता, आसक्ति, भाव,  
स्पृहा, मजा, हर्ष, आनन्द ।

३६८३२ ( वि. ) सुन्दर, मनोहर,  
रुचिकर रुचिर मधुर ।

३६८३ आल्हाद कारक, सुखद, म-  
नोरंजक, रम्य, हर्षजनक ।

३६८३३ ( सं. ) देखो ३६८३३

३६८३३१५पी-३६८३-३६८३ ( कि. )  
बंदहोना, छिद्र रकना, नई चमड़ी  
आना, दर्द मिटना, कान या नाक  
का छिद्र पुरना ।

३६८३ ( कि. ) नाराज होना, रुसना,  
मचल जाना, रुठना, खफाहोना,  
अप्रसन्न होना । [ रीतिरिवाज ।

३६८३३ ( सं. ) अच्छे आचरण,

३६८ ( वि. ) उत्तम, उम्दा, उत्कृष्ट,  
सुंदर, योग्य, लायक, उचित,  
प्राप्त, रुचिर ।

३६८३३३ ( कि. ) सुसमय जीवन  
काटना ।

३६८३३३३ ( सं. ) भला आदमी,  
चतुर मनुष्य, सद्गुणी, गुणवान्  
पुरुष । [ कलाई, ओसू डालना ।

३६८३ ( सं. ) रोदन, विलाप, रोना,

३६८३ ( सं. ) हृदय, दिल, अंतःकरण,  
छाती ।

३६८३ ( सं. ) महादेवका नाम, परमा-  
त्माका नाम, द्वादशरुद्र कहाते हैं

१ सोमनाथ, २ मल्लिकार्जुन, ३ म-  
हाकाल, ४ ओंकार, ५ बैलनाथ,

६ भीमशंकर ७ रामेश्वर, ८ नागेश्वर,  
९ विश्वेश्वर, १० ज्येष्ठक,

११ केदार और १२ पुस्तनेश  
( वि. ) ग्यारहकी संख्याका संकेत ।

३६८३३ ( सं. ) रागशास्त्रमें ताल  
विशेष ।

३६८३३ ( सं. ) एक प्रकारके वृक्षका  
बीज जिसमें छिद्र करके माला  
बनाकर पहिनते हैं, शिवभक्त इस  
मालाको प्रायः पहिनते हैं ।

३६८३ ( सं. ) रुद्रका स्तुतिपाठ, कुछ  
वेद मंत्रोंका संग्रह करके शिवमू-  
र्तिके सामने पढ़ते हैं वह रुद्रा-  
रुद्राष्टाध्यायी । पुस्तक विशेष ।

- ३धिर ( सं. ) रफ, खून, लोह, लोह, सोणित, शरीरस्थ लाल वर्णका रस । [ बंधन ।
- ३धन ( सं. ) रोक, आड़, अटकाव ।
- ३धातुं ( वि. ) खूबसूरत, सुन्दर, रूप सम्पन्न ।
- ३धिथे-पैथे ( सं. ) चाँदीका प्रसिद्ध सिक्का, १६ आनेका सिक्का, शैल्य मुद्रा विशेष, कलदार । [ रुपया ।
- ३धिथे शैडे-भाग्य में ही एक
- ३धरी ( वि. ) रूपहरी, चाँदी के वर्णका चाँदी के मुळम्मावाळा, चाँदी समान ।
- ३धः ( सं. ) दांतकी इड्डी ।
- ३धळम ( वि. ) मन्दमन्द जल वृष्टि, छुमक छुमक, रुमक झुमक, आ भूषण विशेष ।
- ३धडुं ( सं. ) देखो ३ध्मांटी
- ३धटी ( सं. ) शरीर में से खून खींच निकालने की नली । सॉगी, सिधी ।
- ३धडी ( सं. ) पूर्ववत् । [ फिरना ।
- ३धवुं ( कि. ) घूमना, इधर उधर
- ३धडा ( सं. ) शोरकोलाहल, होहल्ला
- ३धाल ( सं. ) देखी या सूख भपवा कल के कपड़े का चौकीर डुकड़ा ।
- ३भी भस्तडी ( सं. ) एक प्रकारका गोंद, औषधि विशेष, रूमी मस्तगी ।
- ३भांटी ( सं. ) देखो ३भटुं
- ३वान ( सं. ) मुर्दा, शव, भूतदेह, प्रेत, लाश । [ रूईदार ।
- ३वेल् ( वि. ) रूई से भरा हुआ,
- ३वे ( सं. ) वह लोहेका गड्ढे युक्त टुकड़ाजो द्वार के नीचे लगाते हैं । [ लिखने की इयाही ।
- ३खनाड ( सं. ) स्याही, मसि,
- ३खवत ( सं. ) रिश्वत, घूस, जलख किसी से काम निकालने के छिंदे दिया हुआ पदार्थ ।
- ३खवतभोर ( वि. ) घूसलेनेवाळा, रिश्वत लेनेवाळा, लोभी, कालची ।
- ३खडुं ( सं. ) रुसना, मचलना, रुठना, लाड़ में नाराज होना ।
- ३(सं) रूई, कपास, तन्तु विशेष, रूस ।
- ३नाभा भला नेउं ( वि. ) नि-दोष, साफ तथा कोमलसा ।
- ३ओ ( भ. ) द्वारा, मार्फत, जरिये, से ।
- ३ओर ( सं. ) मानलेना, सम्मति, हाँ, स्वीकृति, हाँ कहना ।
- ३ओ ( सं. ) देखो ३ओडे ।

३५ ( सं. ) वृक्ष, तह, पेड़, शाद, मूल, जड़, तर्क, अटकल, अन्दाज, अनुमान, कल्पना, कयास, अजमायश, विचार, अच्छा समय, अभिप्राय, इच्छा, हेतु, गाल, चेहरा, मुख, शकल, ढब, तर्ज, रुख, मुखमुद्रा ।

३५१ ( सं. ) ऋषि, मुनि, संत, साधु, महात्मा, तपस्वी, सिद्ध, मुमुक्षु ।

३५२ ( सं. ) देखो ३५३ । [ सम्मत ।

३५३ ( वि. ) लोकप्रसिद्ध, लोक

३५४ ( सं. ) उत्पत्ति, प्रसिद्धि, सु-  
ष्टिक्रम, रीति, विधि, मार्ग, नियम  
व्यवहार, लोकाचार, जनरीति,  
धिरस्ता, पद्धति ।

३५५ ( सं. ) कर्ज, देना, ऋण ।

३५६ ( सं. ) मौसम, अनुकूल समय  
ऋतु, अवकाश, अवसर, प्रसंग,  
हवा, जलवायु, आबोहवा, देश-  
प्रकृति ।

३५७ ( कि. ) ऋतुमतिहोना,  
( स्त्री ) छूनेकीहोना, रुपड़ोंसेहोना  
चौके बाहिर होना, मासिक धर्म  
होना ।

३५८ ( सं. ) वसन्त, उत्तमऋतु ।

३५९-६० ( सं. ) हृदयदिल ( काव्यमें )

३५९ ( सं. ) चेहरा, दिखावा, शकल  
सूरत, ढंग, ढौल, सांचा, मुंह,  
मुख, आकृति, रूप रेशा, आकार,  
सुंदरता, क्रम, मर्यादा, नियम,  
रीति, प्रकार, विधि, सौंदर्य, खुद-  
सूरती, कांति, शोभा, स्वभाव,  
धर्म, प्रकृति, भाव ।

३५९५५५५५ ( सं. ) अनिशय  
तेजस्वी, तथा सुंदर ।

३५९५५५५५ ( सं. ) रुपवा, कलदार  
चांदीका सिक्का ।

३५९५५५५५ ( कि. ) अतिरूपवान होना ।

३५९ ( वि. ) समान, मिलताजुलता  
अनुरूप ।

३५९ ( सं. ) उपमा लक्षण, रूपवर्णन  
उपमान, काव्यालंकार, अभिनयका  
प्रदर्शक दृश्य काव्यविशेष, नाटक ।

३५९५ ( सं. ) आकृति, औररंग ।

३५९५५५ ( सं. ) रूपवाली, सु-  
रूपा, सुन्दरी, रूप लावण्य युक्तस्त्री ।

३५९५५५ ( सं. ) खूबसूरत  
सुन्दर ।

३५९५५५५ ( सं. ) संज्ञा, किन्हा,  
और अव्ययका वर्णन ( व्याकरण  
शास्त्र ) ।

श्यावणी ( सं. ) एक संस्कृत पुस्तक जिसमें संज्ञा शब्दोंके रूप का वर्णन है, शब्द रूपावली, ( व्याकरणशास्त्र )

श्याणुं ( वि. ) खूबसूरत, सुंदर मनोहर ।

श्यापी ( वि. ) समान, सरीखा, जैसा एक से मिलताहुआ, सम्बंधी ।

श्यापुं ( सं. ) चांदी, रौप्य, धातु विशेष ।

श्यापेरी ( वि. ) चांदीके रंगका, रौप्यवर्ण ।

श्यापेरीअंधछुटना ( कि. ) मृत्युके निकट पहुंचना, नादियें छूटना, हाथपर ठंडे होना ।

श्याश ( अ. ) सन्मुख, समझ, सामने, आमने सामने, दृष्टि सामने ।

श्याल ( सं. ) मुई पोंछनेका चौकेना कपड़ेका टुकड़ा ।

श्या-२ ( सं. ) कागजपर सतरों खींचनेका सीधा गोल डण्डा बगैरः ।

श्यापुं ( सं. ) रेश्मा, रोम, लोम, मुलायमबाल ।

श्यापुंअध्यापुं ( कि. ) स्वभाव बदलना, आदत बदलना, प्रकृति बदलना ।

श्यापुंअध्यापुं ( कि. ) प्रेम अवस्था अवस्था रोमांच होना । रोमांच बढ़ने होना ।

श्यापुंअध्यापुं ( कि. ) अत्यन्त फिक रखना, बहुत संभाल सावधानी रखना ।

श्यापुं ( वि. ) अपमानित ।

श्यापुंअध्यापुं ( सं. ) अपमान, मानभंग, फजीहत, बदनामी, तोहीन, बिककार, निंदा ।

श्यापुं ( सं. ) आत्मा, जीव, प्राण, ।

श्यापुंअध्यापुं ( सं. ) एक प्रकारकी बैलगाड़ी, खूब चिल्लाकर रोना, रेंकना ।

श्यापुं ( सं. ) बैगन, भटे, राजकूष्माण्ड, वृंताक ।

श्यापुंअध्यापुं ( सं. ) मुर्दा, निर्बल अशक्त, ढीला, सिटहड़ा, निर्जीव ।

श्रियोपेथियो ( वि. ) पूर्ववत् ।

श्रियोपेथियो ( वि. ) पूर्ववत् ।

श्रियो ( सं. ) रहंट, कुएमेंसे पानी निकालनेका घट मालिका यंत्र, ( वि. ) देखो श्रियोपेथियो ।

श्रियोपेथियो ( सं. ) वह घट मालाजो रहंटके गोल चक्कर पर पानी निकालनेके लिये पड़ी रहती है । अस्तोदव, चटा बदी, धूर छाई, छाड़ी और भरा ।

श्रियो ( सं. ) सूत कातनेका चरखा, रहंट, चर्खा ।

रैक्ष ( वि. ) बाहुल्यता, पूर, बाव,  
लोहकी सड़क का मार्ग, रेलवे,  
लोहकी पटरी ।  
रैक्षलेख ( सं. ) बाहुल्यता, अना-  
पसनाप, अनचाहा समृद्धि ।  
रैक्षवे ( सं. ) लोहकी सड़क; लोहे  
की पटरी ।  
रैक्षपुं ( सं. ) पानीमें रहनेवाला  
मर्पे, डीङ्ग, पनियर सांप । ( कि. )  
फैलाना, बिखेरना, उडेलना, डुलाना,  
घूरकरना, निकालना । [ जाना ।  
रैक्षानुं ( सं. ) पानीकी तरह फैल  
रैक्षियुं ( वि. ) रेल विषयक ।  
रैक्षे ( सं. ) किसी तरह पदार्थका  
घूरतक बहना, रैला, प्रवाह,  
बहाव, सोता, धावा, आक्रमण ।  
रैक्षंभी ( सं. ) एक प्रकारकी वन-  
स्पतिका रस । [ रक्षा हलुवा ।  
रैक्षंभीनेलीरे ( सं. ) एक प्रका-  
रैक्षी ( सं. ) तिल और शक्कर  
तथा गुड़की चासनीसे बनाया  
हुआ पदार्थ, फजीहत, बरबादी ।  
रैक्षीक्ष्णंवी-रैक्षी ( सं. ) फजी-  
हत करना, इज्जत बिगाड़ना ।  
रैक्षीक्ष्णान्दानथवी ( कि. ) अप-  
मान होना, कम इज्जती होना ।

रैक्षीनापेंअभाक्षियुं ( कि. ) फौस-  
ना, पंजेमें लेना, चक्करमें लेना ।  
रैक्षती ( सं. ) सत्ताईसवाँ नक्षत्र ।  
रैक्षंती ( सं. ) अश्व, तुरग, घोड़ा ।  
रैक्षन्तु ( सं. ) उपज, वसूलात, आय ।  
रैक्षपुं ( कि. ) टाँकालमाना, जो-  
ड़ना, मरम्मत करना ।  
रैक्षेभदीक्ष-नभर ( सं. ) कृपादृष्टि,  
दया, स्नेहभाव, प्रीति, कृपा ।  
रैक्ष ( सं. ) रज, कण, अणु, सब-  
से छोटा, जरा, थोड़ा ।  
रैक्षभ ( सं. ) एक कीड़ेके बनावे  
हुए तंतु जिन्हें वह अपने ऊपर  
लपेटता रहता है, जब उसका  
लपेटना बंद हो जाता है तब लोग  
उस रेशमको पानेके लिये उस  
कीड़ेको उबलेत हुए पानीमें छोड़-  
कर मार डालते हैं, उसपरसे जो  
तन्तु प्राप्त होते हैं वह रेशम क-  
हाता है । सिक्क । [ गाढ़मैत्री ।  
रैक्षभनीभांड ( सं. ) अत्यंत प्रेम,  
रैक्षभनेलीरे ( सं. ) वह कीट जि-  
ससे रेशम मिलता है । [ मक ।  
रैक्षभी ( वि. ) रेशमका, नई, को-  
रैक्ष ( सं. ) देखो देखी ।



शे३ ( सं. ) एक रुपयेका चार सौ-  
वां भाग, चूँक रुपया, आधी  
पाईसे कुछ कम, इस समय जैसे  
रुपये आने और पैसे चलते हैं  
वसी तरह कुछ वर्ष पूर्व यहाँ रुपये  
पावला और रस चलते थे ।

छो रे३ ।

शे३। ( सं. ) तंतु, तार, नस, धागा ।

शे३।६।२ ( वि. ) तन्तुयुक्त, डोरी-  
दार ।

शे३।७ ( सं. ) जोड़, टांका, सीवन ।

शे३।७। ( सं. ) देखो रे३। ।

शे३।७।६ ( सं. ) रहनेका स्थान,  
देश बतन ।

शे३।७-त ( सं. ) दया, कृपा, अनु-  
कम्पा, छोड़, माया, महरबानी ।

शे३।७।६-न७२ ( सं. ) दयालु,  
कृपालु महरबान, कृपा, अनुकम्पा ।

शे३।७।६।७ ( कि. ) पड़े रहने देना,  
ठहराना, रखछोड़ना, रहेनेदेना ।

शे३।७।६।७। ( सं. ) रहनेवाला, वासी ।

शे३।७।६।७। ( कि. ) रहना, बसना, ठह-  
रना, ठिकना, मुकाम करना, आ-  
श्रित होना, छोड़ना, त्यागना,  
पड़ावकरना, बासकरना, निवास  
करना ।

शे३।७।६।७। ( कि. ) काटना, अलगक-  
रना, पृथक्करना, भिन्नकरना ।

शे३।७।६।७।७ ( सं. ) प्रजा, लोग,  
निवासी, जनपद, राजाकी सत्ता-  
माननेवाले ।

शे३।७।६।७।७। ( कि. ) विकना करना  
साफ, करना, रन्दा करना ।

शे३।७।६।७।७।७ ( सं. ) बढईका औजार,  
विशेष जिससे बढ काठको साफ  
करता है । रन्दा, रँधा, रंदा ।

शे३।७।६।७।७।७। ( कि. ) रन्दा फेरना, वि-  
कना करना ।

शे३।७।६।७।७।७।७ ( वि. ) जंगली, प्रामीण,  
गंवडेल, विवेक चातुर्म्यहीन ।

शे३।७।६।७।७।७।७। ( सं. ) तीसरे पहरका भोजन,  
अपरान्ह काठका भोजन, ब्यालू,  
टिफन ।

शे३।७।६।७।७।७।७।७ ( वि. ) नगद, कैश, रोकड़ा,  
( सं. ) अटक, छेक, आक,  
हकाव ।

शे३।७।६।७।७।७।७।७।७ ( सं. ) हायहाय, रोआपी,  
टी, विलाप, करुण, मंदन । [ कैश ।

शे३।७।६।७।७।७।७।७।७।७ ( सं. ) नगद, हाजिर रुपया,

शे३।७।६।७।७।७।७।७।७।७।७ ( सं. ) हिसाब किताब,  
कैश जुक, हिसाब लिखनेकी कि-  
ताब, जिसमें आयव्ययका लेखा  
रहता है ।

शैवि ( वि. ) जो उचार नहो,  
जो तुरत जवाब दे, हाजिर जवाब ।

शैवि ( वि. ) नकद, नगद, सि-  
ककों के रूपमें धन । [सूखा जवाब ]

शैवि ( सं. ) तुरत जवाब,

शैवि ( सं. ) रोक, आद, अटक,  
प्रतिबंध, प्रतिकार, बन्दी ।

शैवि ( कि. ) ठहराना, रोकना,  
अटकाना, उलझाना, आड़करना,  
अवरोध करना, विघ्नकरना काममें  
लगाना, नौकर रखना । [अटकाव ।

शैवि ( सं. ) आड़, रोक, बन्धन  
शैवि ( कि. ) रोकना, अटकना,  
फँसना, उलझना, ठहरना ।

शैवि ( कि. ) पूर्ववत् ।

शैवि ( सं. ) पूंजी, मूलधन, न-  
कद, नगद, रुपया पैसा ।

शैवि ( वि. ) देखो शैवि ( सं. )  
इच्छा, आकांक्षा, मरजी, रुख,  
( अ. ) अहंकारमें, अभिमानमें ।

शैवि ( सं. ) बखोड़ा, फिसाद,  
झगड़ा ।

शैवि ( वि. ) अनुसार, मुआफिक,  
खितने मूल्यका । ( सं. ) लकड़, इंधन,  
अनुनिष्ठा काष्ठ, बखीता ।

शैवि ( सं. ) व्याधि, पीड़ा, दुःख,  
शारीरिक अस्वस्थता, बीमारी,  
दर्द, आजार, विकार, मांदगी,  
क्रोध, गुस्सा, स्वर्द्धा । [ बोलना ।

शैवि ( कि. ) क्रोधमें

शैवि ( कि. ) ठिक्काने  
लाना, क्रोध शान्त करना ।

शैवि ( सं. ) संकाम रोग, छू-  
तकी बीमारी, हवाके साथ फैलने  
वाला रोग । [प्रितादि जनित पीड़ा ।

शैवि ( सं. ) रोग और भूत

शैवि ( सं. ) रोगन, बार्निश, मो-  
म तेल शाल आदिसे बना हुआ  
पदार्थ ।

शैवि ( कि. ) रंगना, टी-  
पटाप करना, मरम्मत करना, ऐ-  
ब झांकना, दोष छुपाना ।

शैवि ( कि. ) बिगड़ना, दु-  
कसान जाना, खराब होना ।

शैवि ( वि. ) बीमार, रोगी,  
अस्वस्थ ।

शैवि ( वि. ) पूर्ववत् ।

शैवि ( वि. ) पूर्ववत् ।

शैवि ( वि. ) पूर्ववत् ।

शैवि ( वि. ) स्वादिष्ट, पाचक,  
वधिकारक, मज आवन, मजेदार ।

शेअडी ( सं. ) व्याधिग्रस्त, शेगी,  
मिथ्या, बदमाशी, छद्मार्थ ।

शेअ ( सं. ) दिन, बार, दिवस,  
आठ प्रहर, २४ घंटोंका समय ।  
मजदूरी, मजदूरीके एक दिनकी  
मेहनत । ( अ. ) सदा, नित्य,  
हमेश, प्रतिदिन ।

शेअभाअधु ( कि. ) रोना आना,  
दुःखसे छाती फटना, आंसू आना ।

शेअखीने ( अ. ) दैनिक नित्य,  
हररोज ।

शेअभर ( सं. ) उद्यम, धन्धा, पेसा,  
काम, व्यवहार, वृत्ति । [ भरना ।

शेअभरवा ( कि. ) मजदूरीके दिन

शेअभरभर ( अ. ) उद्यमसे, ध-  
न्दसे ।

शेअभारी ( वि. ) उद्यमी, जिसे  
अपने उदरपोषणकेलिये काम हो ।

शेअभाधु ( सं. ) दैनिक हिसाब-  
की किताब, हाथरी, दैनिक पुस्त-  
क ( जिसमें हिसाब लिखा जा-  
या हो । )

शेअनिखी ( सं. ) हाथरी, दैनि-  
क कुल पुस्तक शेअनामका ।

शेअनेण ( सं. ) बेसो शेअभाधु ।

शेअशेअ ( अ. ) दिनप्रति दिन,  
नित्य हमेश, सदा ।

शेअभर ( सं. ) नित्य कामपर  
आने वाला मजदूर, बाधकता ।

शेअ ( सं. ) चन्वा शेअमार, उ-  
दर पोषणका डंग, आजीविका,  
गुजर, पैदायश, आय, आमद ।

शेअधु ( कि. ) मजदूरी आना,  
शेअना मजदूरीपर आना ।

शेअभाधु ( कि. ) दैनिक मज-  
दूरी पर रखना । [ दिन ।

शेअभाभत ( सं. ) प्रलयका

शेअ ( सं. ) मुसलमानोंका उप-  
वास जत, मकबरा, कबर ।

शेअ ( सं. ) एक प्रकारका जंगली  
तृण भोजी पशु, नीलगजभी क-  
हते हैं । [ रत, जो कुछभी न समझे ।

शेअवे ( वि. ) जंगली, जड़भ-

शेअली ( सं. ) रोटी, फुलका, चप्प-  
ली, खानेका पदार्थ, गुजर, नि-  
र्वाह ।

शेअवे ( सं. ) मोटी रोटी रोड,  
टिक्कड़, ज्वाराया बाजरेकी रोटी ।

शेअभाजवे ( कि. ) काम बि-  
गाड़ डालना, गड़बड़ कर डालना ।

शेअभावे= दोपतंगोंके लड़ते समय  
जब वेच होजाते हैं तब यह वाक्य  
प्रयोग करते हैं । [ मुक भिक्षा ।

शेअभावेअधु ( कि. ) खानेकी

शे०शानान०३२पुं ( कि. ) भोजन-  
के लिये स्नान करना ।

शे०शे०३३ती ( अ ) मूकों मरती ।

शे०शे०३२वे। ( कि. ) खूब पीटना,  
चूरा करदेना, संहार करना । [रोना ।

शे०शे०३३वे। ( कि. ) नाम पर-

शे०शे०३४वे। ( कि. ) रोजगार जाना,  
उद्यम रहित होना, गुजारा बंद  
होना ।

शे०शे० ३१०वे। ( कि. ) चलता  
रोजगार बन्द होना, पेटपर लात  
मारना ।

शे०शे० पुं०३३पुं ( कि. ) रोजगार बन्द  
होना, चलता धन्धा रुक जाना ।

शे०शे० ५३३पुं ( कि. ) चलता  
रोजगार खराब करना, हानि  
पहुंचाना ।

शे०३ ( सं. ) हलके दर्जेकी सुपारी ।

शे०३ ( सं. ) ईंटका टुकड़ा, मिट्टी  
काडैला ।

शे०३ ( सं. ) एक बड़ाकण्डेकी  
टुकड़ा, मोटा कण्डा, छाणा, कपला ।

शे०३ ( सं. ) पूर्ववत् ।

शे०३ ( सं. ) फिसाद, तूफान,  
झगड़ा, विवाद, टण्टा, वाक्युद्ध ।

शे०३-३ ( सं. ) दुख की बात,  
शोक भरी बातें ।

शे०३३ शे०३ ( कि. ) रोते हुए अ-  
पनी दुःख कथा को वर्णन करना ।

शे०३ ( सं. ) देखो शे०३ ।

शे०३ ( सं. ) रोक, रुकावट, विरोध ।

शे०३पुं ( कि. ) रोकना, अटकाना,  
बन्द करना, विरोध करना ।

शे०३ ( सं. ) दोचार सिपाहियोंके  
साथ रात्रिके समय जाँचके लिये  
निकलना रातका पहिरा । [भपका ।

शे०३ ( सं. ) तेज, कांति, शोभा ।

शे०३ ( सं. ) पौधा, छोटा वृक्ष, जड़,  
मूळ, मिथ्याबंजर, ठाठ, ढोंग,  
राब, तेज । [ मूळ लेना ।

शे०३३वे। ( कि. ) जड़लेना,

शे०३३ ( सं. ) बोवनी, पेड़ोंको  
लगाना, बौधोंको बोना बाजमाना ।

शे०३पुं ( कि. ) भूमि में अन्न बोना,  
पौधे की जड़ जमीन में गाड़ना,  
बीज बोना, नाँव डालना, शुरू-  
आत करना, बुनियाद डालना ।

शे०३ ( सं. ) देखो शे०३ ।

शे०३ ( सं. ) देखो शे०३ ।

शे०३ ( वि. ) भड़कदार, आठम्बर-  
री, दिखाऊ, शेपी, गर्बिष्ठ, वा-  
मिक ढोंगी ।

शे०३ ( सं. ) भड़क, आठम्बर,  
ढोंग, दबदबा, गर्व शेखी ।

- शे०४ (वि.) मूर्ख, झुझीव, गंवार अरसिक, निरानन्द ।
- शे०५ (सं.) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां धारण करती हैं ।
- शे०६ (सं.) खेम, हज्जा, बाला । केश, पदम सुलभयम छोटेछोटे बाल ।
- शे०७ (सं.) रोमकी जड़काशीरस्थ छिद्र, कर्णकी जड़का, रोमका छिद्र । [पिक, नानित, हज्जाम
- शे०८ (सं.) नाई, नौआ, ना-
- शे०९ (सं.) पुलक, रोपड़े खड़े होना ।
- शे०१० (सं.) रोमोंका खड़ा होना, भय आश्चर्य तथा हर्षसे रो-गड़े खड़े होना ।
- शे०११ (वि.) पुलकित, रोमांच युक्त, भयभीत, प्रसन्न ।
- शे०१२ (सं.) रोमश्रेणी ।
- शे०१३ (सं.) रोदन, बिताप, रोना ।
- शे०१४ (सं.) ऊंगर, (जहाज ठहरानेका) ।
- शे०१५ (वि.) पिटा, कुटा, रोबाहुआ ।
- शे०१६ (सं.) समुद्रीबीमरी, चक्र, सिरपूमना, पिटा, गोळा, एक्स्टर, केटकाय, एक प्रकारका रोकनी, बल ।
- शे०१७ (वि.) मूर्ख, मूड, मतिमन्द, गठ ।
- शे०१८ (कि.) रक्ताना, विलपाना ।
- शे०१९ (कि.) रोना, बिलाप करना, ठगाना, ठगे जाना ।
- शे०२० (वि.) जाहिर, प्रकट, प्रकाशित, खुला, प्रत्यक्ष ।
- शे०२१ (कि.) बहुत हानि करना, धूलधानी करना, नष्ट करना ।
- शे०२२ (कि.) प्रकट होना, जाहिर होना, प्रकाशित होना ।
- शे०२३ (सं.) मति, स्वाही, इयाही, चमक, दमक, प्रकाश, कांति ।
- शे०२४ (सं.) प्रकाश, उजाला, तेज दीप्ति, बुद्धि, दमक, चमक, स्वाही ।
- शे०२५ (सं.) कोच, गुस्सा, क्रोध, रिस, अप्रसन्नता, नाराजी ।
- शे०२६ (सं.) चतुर्थ नक्षत्र, शकटाक्षरमें पांच तारोंका समूह ।
- शे०२७ (सं.) आभि, जाय, हुताशन ।
- शे०२८ (सं.) चक्रावट, हैजा, हेय, खोर, हला, गुळगुळाना, जम्बब-स्वा, चदुबक, जयबकका कर्च ।

शैलवाणवे। ( कि. ) महामारी फैलना, हैजाबलना, डेयबाना ।

शैलवाणवी ( कि. ) आफत फैलना कलाना, अत्यंत हानि पहुंचाना ।

शैलवापुं ( कि. ) चिड़ना, गुस्से होना, खिन्नना ।

शैलापुं ( कि. ) मसलना, निचोड़ना हलाना, कुचलना, मथना, साफ करना ।

शैलापुं ( कि. ) खददना, नीचे बहकर खूबमारखाना, धकना ।

शैल्लोडोडोवेण। ( सं. ) संधिप्रकाश संध्याकाल, मन्दप्रकाश. सुखदीप्ति सकने योग्य, प्रकाश, ब्रह्ममुहूर्त ।

शैल। ( सं. ) हल्का, बकबक शकलक भाँजगड, पंचायत, कमाई पैदा ।

शैल ( वि. ) भयानक, भयंकर, ( सं. ) रस विशेष ।

शैलरस ( सं. ) नवरसमेंसे एक विशेष ( नाटक तथा काव्यमें को' बोत्पन्न रस । [ कष्टदायककर्क ।

शैरस ( सं. ) नरकविशेष, असंत

६

शैलजराती वर्षमाळाका ३९ वां अक्षर, २८ वां अर्धजन अक्षर, अंतस्थ अक्षरोंमें का एक ।

शैल आवुं ( कि. ) ले आना, लाना, प्राप्त करलाना । [ करना ।

शैल ७पुं ( कि. ) लेजाना, सहन शैल ५६पुं ( कि. ) लेपड़ना, लपेटना, उलझाना, फंसाना, पकड़ना, गिर पड़ना, ऊपर आना ।

शैल भेसपुं ( कि. ) लेबैठना, कब्जा करना, अधिकारमें करलेना, आरंभ करना ।

शैल भुडपुं ( कि. ) पकड़ना, ले रखना, रखछोड़ना, तय्यार रखना ।

शैल बेपुं ( कि. ) लेलेना, बापिम लेना, पकड़ना ।

शैलभे। ( सं. ) देखो शैलभे ।

शैवे। ( सं. ) एक प्रकारका रोग, बात रोग विशेष, पक्षाघात, जिस रोगमें कोई अंग बाँका होजाता है और जीभको भी तुतलापन आजाता है, अर्धांगवाल ।

शैलर ( सं. ) 'ल' अक्षर 'ल' का उच्चारण ।

शैलर ( सं. ) रेखा, धारी, बिन्दु, पंक्ति, पांति, लाइन, सतर, रूल ।

शैलरै। ( सं. ) रंजीबाज, हँसी, व्यभिचारी, छुआ [नफा, फायदा ।

शैलभे। ( सं. ) लोभ, मुनाफा,

लकुटि ( सं. ) लकुट, लकी, लकी, यष्टि ।

लकड़ ( सं. ) काष्ठ, काठ, लकड़ी, कुन्दा, म्याल, सहतीर, घरण, इमारती, लकड़ी ।

लकड़ोका काम, सुतारका काम, बड़ईका धन्धा ।

लकड़ोका बनाया हुआ किला । वह बंदर जहाँ जहाजमेंसे लकड़ उतरते हों । लकड़ियोंसे बनाया हुआ बाड़ा ।

लकड़ोपोड ( सं. ) इस नामका एक पक्षी होता है, जो अपनी ओरसे लकड़को छेद कर अपने खानेको कीड़ा निकाल लेता है । कठफोड़ा पक्षी, जाती चिड़ा ।

लकड़ोपुड ( कि. वि. ) सपाटे बंध, घन घोर, अगड़बंध । लिना ।

लकड़ोपुडोपु ( कि. ) सपाटेमें

लकड़ोशी ( सं. ) एक प्रकारके लकड़, बिना धीके लकड़, ( वि. ) कठोर कठिन, सख्त ।

लकड़ोडिपु ( सं. ) वह काठकी सड़क जिसमें रोज रोज लकड़ों का मसाला पड़ा रहता है । काठका वह पात्र जिसमें गुदाख इसादि

तमाख पड़ी रहती है । ( वि. ) कठोर, सख्त । [ क्षी एक वाति ।

लक्षी ( सं. ) कबूतर नामका पक्ष

लक्ष ( सं. ) ध्यान, एकाग्र दृष्टि, चित्त, निशान, दृष्टि, निगाह, ( वि. ) संख्या विशेष, लाख, सौहजार ।

लक्ष्यु ( सं. ) बिन्दु, पहिचान, स्वभाव, प्रकार, रीति, भात, छाया, रूपक, चाल चलन, आचरण, बर्ताव, गुण, दिखाव, बौल, रूप, आदत्त, व्यवसन ।

लक्ष्युपु ( वि. ) शुभ बिन्दुयुक्त, सुलक्षणयुक्त, गुणी योग्य, कार्यपटु, चतुर, प्रवीण, विवक्षण, काबिल ।

लक्ष्यु ( सं. ) शब्दकी शक्ति विशेष, शब्दार्थसे सम्बन्ध रखने वाले, अभ्याहार, पदग्यूनता । [ अवश्य ।

लक्ष्यु ( अ. ) जरूर, निश्चय,

लक्ष्यु ( कि. ) धारना, निश्चय करना, ताकना, निशाना बंधना, इरादा करना, आशा रखना, राह देखना, अंदाज लगाना, ईदना, जानना ।

लक्षधिति ( सं. ) लाख रुपयों की सम्पत्ति सम्पन्न पुरुष ।

लक्ष्मीधन ( सं. ) पूर्ववत्

लक्ष्मीधन ( अं० ) लाखों, बहुत,  
जिनकी संख्या लाखों की हो ।

लक्ष्मी ( वि. ) ध्यान रखनेवाला,  
सावधान, चौकस, एकाम्र, एकचित्त

लक्ष्मी ( सं. ) विष्णुप्रिया, इन्दिरा,  
कमला, हरिवल्लभा, ऐश्वर्य्य, धन,  
सम्पत्ति, दौलत, धनकी अधिष्ठात्री  
देवी, शोभा, भाग्यशीला स्त्री, यह  
लक्ष्मी दस प्रकारकी कहाती है  
(१) नन्दद्वय्य, (२) स्त्री, (३)  
पुत्र (४) वरतन भोंडे (५) रहने  
का घर (६) गाय भैंस आदि (७)  
बाहन, (८) मुक्त (९) जागीर  
और, (१०) यश । अथवा ध-  
न, धान्य, पशु, पुत्र, गृह, आरोग्य-  
मयता, उद्यम, यश, सन्तोष औ-  
र ज्ञान ।

लक्ष्मी आने ४२वा आये त्पारे  
भौ धे.४ आवपुं=जब लाभ होने-  
की आशाकी जावे तब निरुपमी  
बनकर बैठ जाना ।

लक्ष्मीपुजन ( सं. ) आश्विन कृ-  
ष्णा १३ को धनकी पूजा लोग  
करते हैं । गुजरातमें आश्विन औ-  
र अन्वत्र वस्र महीनेको कार्तिक

लिखते हैं । गुजरात और अन्य प्रां-  
तीय मासमें १५ दिनका अंतर  
होता है अतएव, दीपमालिका,  
धनतेरस, दिवाली ।

लक्ष्मीपत-वान ( सं. ) धनाढ्य,  
धानिक, धनी, दौलत मन्द, श्री-  
मंत, धनपात्र ।

लक्ष्म ( वि. ) ध्यान देने योग्य,  
निशाना, ताकने लायक, देखने  
योग्य ।

लक्ष्म ( वि. ) लाख, लक्ष ( सं. )  
लत, छंद, लक्ष्मी, सौ हजार ।

लक्ष्म्यु ( सं. ) लिखाहुआ, लक्षण,  
चिन्ह ।

लक्ष्मी ( सं. ) लिखनेकी क्रिया ।  
सूची । देणे लक्ष्म्यु ।

लक्ष्मी ( सं. ) सनद, लेख, पट्टा ।

लक्ष्मी-भित्त ( वि. ) लिखने  
वाला । लिखावट ।

लक्ष्मीपती ( वि. ) देखो लक्ष्मीधन ।

लक्ष्मी ( अ. ) तीक्ष्ण, स्वच्छ,  
साफ ।

लक्ष्मीधनवाणुं ( सं. ) अत्यं-  
त प्रकाश, बौद्धीबर्धन, उपदकर  
बोझना ।



अभ्युपगमः ( कि. ) किरणों के  
साथ प्रकाश होना, जगमगाना,  
कांपना, ररीना, धूजना । [ होना ।

अभ्युपगमः ( कि. ) फटना, पीड़ा

अभ्युपगमः ( सं. ) जगमगाहट,  
रर, मय, तेज ।

अभ्युपगमः ( वि. ) चमकदार, जग-  
मगाता हुआ, प्रकाशित, मपकेदार ।

अभ्युपगमः ( सं. ) अधिकता, बहुता-  
यत, विपुलता ।

अभ्युपगमः ( कि. ) लिखना, रचना,  
जोड़ना चित्र बनाना, खोदना,  
अंकित करना, ध्यानपूर्वक देखना ।  
नकल करना ।

अभ्युपगमः ( कि. ) देखो अभ्युपगमः ।

अभ्युपगमः-अभ्युपगमः ( सं. ) लिखने  
का मेहनताना, लिखार्ह, लिखनेकी  
मजदूरी, लेखकका वेतन ।

अभ्युपगमः-वट ( सं. ) लिखावट,  
लिखनेकावंग, इबारत, भुतलिपि,  
दाखिला, दस्तावेज, प्रार्थना पत्र,  
अर्जी, सनद । [ की भिक भिक ।

अभ्युपगमः ( सं. ) बरकत, व्यर्थ-

अभ्युपगमः ( सं. ) देखो अभ्युपगमः ।

अभ्युपगमः ( सं. ) लिखना, कदपड़ना,  
( कार्यमें ) उतरवाना । [ होना ।

अभ्युपगमः ( कि. ) पड़ना, कमजोर

अभ्युपगमः ( सं. ) भाग्य, भावी, लि-  
खालेख, लिखा हुआ, दस्तावेज,  
ठहारा हुआ । [ छेकक ।

अभ्युपगमः ( वि. ) लिखनेवाला,

अभ्युपगमः ( कि. ) लिखकर दे-  
ना, सनद देना, सर्टीफाय करना ।

अभ्युपगमः ( सं. ) लिखित, छेक,  
दस्तावेज । [ अभ्युपगमः ।

अभ्युपगमः-अभ्युपगमः ( वि. ) देखो

अभ्युपगमः ( कि. ) मुलम्मा करना,  
पालिश करना, कलई करना ।

अभ्युपगमः ( सं. ) लाखकी बनी हुई  
छोटीगोली ।

अभ्युपगमः ( सं. ) लाखकी बड़ी  
गोली, प्रायः बच्चे और लड़कि-  
या इससे खेला करते हैं । बन्द  
कियाहुआ या मुहर च पड़ी किया  
हुआ कागज ।

अभ्युपगमः ( देखो ) देखो अभ्युपगमः ।

अभ्युपगमः ( सं. ) देखो अभ्युपगमः ।

अभ्युपगमः ( सं. ) सखी पतली लकड़ी  
जो छप्पर बनाते समय काममें  
लाई जाती है । ( अ. ) तक्र,  
खै, तलक ।

अमड़ी ( सं. ) सोनेकी छद्, स्वर्ण-  
का पासा ।

अमडुं ( सं. ) गधेके ऊपर बोझा  
लादनेका बैला, गधे परका बोरा,  
गदहेके पीठपर चौखूँटा लकड़ीका  
वजन भरनेका । गधा, गदहा,  
गर्दभ, रासम, ख, बोझा, वजन ।

अमथु ( अ. ) सीमा, मर्यादा,  
हद, सूचक शब्द, तक, तलक, लो ।

अमत ( सं. ) सम्बन्ध, भेळ, जान  
पहचान, समीपता, घोरोपा,  
( वि. ) देखो अमत् । ( अ. )  
पासही, निकटमें नजदीक ।

अमती ( सं. ) पक्ष, तरफ, शर्म,  
( अ. ) अड़कर, सटकर, पास-  
सेही ।

अमत्तु ( वि. ) सम्बंधी नाते रिस्ते-  
दार, समीपी, प्रेमी, निकट स-  
म्बन्धी ।

अमदी ( सं. ) लुगदी. लुबदी ।

अमन ( सं. ) विवाह, शादी, लड़के  
लड़कियोंका गार्हस्थ सम्बन्ध, प्रेम  
संबंध, पांच घड़ीका काल, लग-  
भग दोघंटोंका समय, रातदिनमें  
१२ मुहूर्त होते हैं, प्रेम, पाणि-  
ग्रहण, परिणय ।

अमनधेवुं ( कि. ) विवाहका दिव-  
स निश्चय करना । विवाहका मुहूर्त  
ठहराना । [ तय्यारी करना ।

अमनभांडपुं ( कि. ) विवाहकी  
अमनकरपुं ( कि. ) विवाह करना  
शादी करना ।

अमनगेवुं ( कि. ) वरकन्याकी  
जन्म पत्री देखकर विवाहका दि-  
न और समय निश्चित करना ।

अमनधडीयाक्षेत्रा ( कि. ) जैसे व-  
ने तैसे जल्दीसे विवाह करना ।

अमननागीत अमनभां अवाय =  
हरेके वस्तु मौसिममेंही मिलती है ।

अमन करी शुबो ने धर ठुकेली शु-  
वे। = कहनेसे करना कठिन है ।

अमने अमनेकुंआरा = हरेक बात-  
में तय्यार ।

अमनभाणो ( सं. ) वह समय जि-  
समें कुछ अंतरसे बहुतसे विष-  
य हो ।

अमनयोधदियुं-धडी ( सं. ) विवाह  
के समय की घड़ी ( चार घड़िका  
एक चौघड़िया होता है ) लगभगटी ।

अमनपडे। ( सं. ) रेशी, कुंकुम  
हरिद्रा या अन्यमांगलिक वस्तुका  
पुड़ा जो वरकी तरफसे विवाहके  
दिनों में कन्या के यहाँ भेजा  
जाता है ।

अमरसंज्ञा-सारा ( सं. ) देखो  
अमरभाषा ।

अमरिणे ( सं. ) कन्याका कोई  
सम्बन्धी जो घर को बुझाने जावे,  
सामा इ० । [ युक्ति, प्रबन्ध ।

अमनी ( सं. ) लय, ध्यान, लगन,

अमरभ ( अ० ) आसपास, निक-  
टही, प्रायः, करीब, अन्दाजन ।

अमरीञ्ज-रीड ( वि. ) बोझ, कुछ,  
जराक, कुछक, तनिक ।

अमवाड ( सं. ) सम्बंध, प्रेम,  
आशिक माशूकोंका प्रेम, प्रीति,  
आसक्ति ।

अमाडवुं ( कि. ) लगाना, धुआना,  
टिकाना, नौकरी पर करना, मुल-  
गाना, चुपड़ना, अर्थ करना,  
भाषांतर करना, सीना, बिपकाना,  
ध्यान देना, मानना, मारना,  
ठोकना ।

अमाभ ( सं. ) घोड़ेकी बगमें रखने  
के लिये उसके मुहमें लगाने के  
लिये कढ़ियादार लोहेका टुकड़ा  
जिन कढ़ियोंमें बगदेकी रस्सों या  
सूत सन आदिकी रस्ती बालते  
हैं और जिसे बामकर घोड़े की  
काधुमें रखते हैं, अंकुश, मर्बादा,

सत्ता, अधिकार, बंधन, रोक,  
अटकान । [ शीलदेना ।

अमाभभापवी ( कि. ) छोड़ना,  
अमाभ छूटी भूखी ( कि. ) वशमें  
नहीं रखना, स्वेच्छानुसार फिरने  
देना, स्वतंत्रता देना ।

अमाभ छावभां आववी ( कि. )  
अधिकारमें आना, हाबबाना ।

अमाभभां राभवुं ( कि. ) अवि-  
कारमें रखना, मर्प्यादामें रखना ।

अमाभ-रेड ( अ. ) बोझासा, जरा,  
कुछक, कुछदूर, तनिक, अल्प ।

अमाववुं ( कि. ) चुपड़ना ( द-  
वाई ), मारना, मिदाना जो सं-  
भोग करना, मैथुन करना ।

अभी ( अ. ) तक, समय पर्यंत ।

अभे ( अ. ) पूर्ववत् ( विस्मया. )

यह शब्द साहस बढ़ानेके लिये  
बोला जाता है जैसे लगे लगे ।

लू लगे लू लगे ।

अभे।अभ ( अ. ) नजदीक, पासही  
निकट, सटकर, एक दूसरेके  
समीप ।

अभु ( अ. ) जो पांछे लगाहो  
पास, समीप, निकट । [ म्तर ।

अभुं ( अ. ) बाद, पश्चात्, अन-

६३१ ( सं. ) देखो ६३१ ।

६३१कथे ( सं. ) विवाह कार्य ।

६३१ कुंडणी ( सं. ) जन्मपत्री, चन्मते समग्रपर गणित करके द्वादश गृहोंमें यथा स्थान गृहोंको रखकर एक पत्री बनाना ( ज्योतिष विषय ) ।

६३१ भट्टिका ( सं. ) वह घड़ी जिसमें घर कन्याका पाणिग्रहण होता है ।

६३१तथ-तथी-तिथी ( सं. ) विवाह दिवस, पाणिग्रहणका दिन ।

६३१पत्रिका ( सं. ) जिस कागज पर विवाह करनेका शुभ समय लिखा हो । पोली चिट्ठी, लमचिट्ठी ।

६३१भंडा ( सं. ) एक अस्थायी मंडवा जो विवाह संस्कार के समय बना लिया जाता है । वैवाहिक बितान ।

६३१भूत ( सं. ) विवाहकी घड़ी, फेरोंका समय, पाणिग्रहणका वक्त ।

६३१ ( सं. ) लघुता, छोटाई, छोटापन, लाघव, अष्ट सिद्धियोंमें से एक ।

६३१ ( वि. ) छोटा, हलका, हल्का, मरु, दुच्छ, सरल, सुगम,

सहल, एक मात्रिक स्वर । ठिगना, नाटा ।

६३१कथ ( सं. ) छोटाकोना ।

६३१ता-ध ( सं. ) छोटापन, छुटाई, नीचता, निचाई, ओछापन ।

६३१ ( सं. ) पूर्ववत् ।

६३१ीति ( सं. ) लघुशंका, कमलाज युक्त कार्य ।

६३१धवी ( सं. ) पेचीदा तदबीर, प्रपंच, पेच, दांव, युक्ति, छलछंद ।

६३१वृत्त ( सं. ) छोटा गोलचक्र ।

६३१कं ( सं. ) जिस काम में कुछ शरम आती है, पेशाब करना, मूतना, प्रस्राव करना, नाढ़ाछोड़ करना ।

६३१जुं ( कि. ) झूलना, टंगना, हिलना, भूमि से ऊपर किसी वस्तुको पकड़कर रहना, गले में फांसी डालकर मरना, गिरने के योग्य होना, नीचा झुकना, निराधार होना, भटकना । लटकना ।

६३१वपुं ( कि. ) हिलाना, झुलाना, टांगना, लटकाना, फांसी देना या चढ़ाना ।

६३१शु ( वि. ) हावभावयुक्त, नाच नखरेवाला, लटका करनेवाला ।

६४३ ( सं. ) हावभाव, अंगमयी,  
नाज़, नखरा, अदा, बनावटी  
चाल, लचक ।

६४ ( वि. ) घनाव्य, धनी, धो-  
मंत, तर, पतली कमर ।

६४३ ( वि. ) धनवान होना,  
पैसा होना ।

६४३ ( वि. ) धनवान बनाना ।

६४३ ( सं. ) इतिहासप्रसिद्ध राक्ष-  
सेन्द्र रावणकी राजधानी, सीलोन,  
वृक्ष, घर बन्दर राक्षस इत्यादि  
चारुदके बनाकर जिसमें एकदम  
आग लगा देते हैं वह आतिशबाजी ।

६४३ ( वि. ) सुलगाना,  
भड़काना, आग लगाना ।

६४३ ( वि. ) बहुत धन  
प्राप्त कर लेना ।

६४३ ( वि. ) ६४३ (=) बहुत दूरकी कन्या ।

६४३ ( वि. ) लंगड़ा, लूला, पंगु,  
पंगुला ।

६४३ ( वि. ) लंगड़ाकर चलना ।

६४३ ( वि. ) देखो ६४३ ।

६४३ ( सं. ) जहाज़ या नाव ठह-  
राने के लिये लोहेका बना हुआ  
भारी कांटा, पैरों में पहिने का  
एक आभूषण विशेष । वह रस्तीया  
औरी जिसके एक सिरे पर कुछ

वज़न बंधा हो । लड़के प्रायः  
ऐसी डोरियां बनाकर आपस में  
फेंककर, उलझाकर खेलते हैं ।

६४३ ( वि. ) लंगर डालना,  
जहाज़ अथवा नाव ठहराना ।

६४३ ( सं. ) बच्चों के पैरों में  
पहिनाने का सुघरुदार आभूषण  
विशेष । [ डेकी चाल ।

६४३ ( वि. ) लंगड़ाना, लंग-

६४३ ( सं. ) वानर विशेष, बड़ी  
पूंछवाला बन्दर, लखुआबन्दर,  
काले मुख और हाथपांवका बन्दर,  
पूंछ, पुच्छ, लांगूल, दुम ।

६४३ ( सं. ) पूंछ, पुच्छ, दुम,  
बन्दर, बड़ी पूंछवाला बन्दर,  
मर्कट, कपि वानर ।

६४३ ( सं. ) पुच्छ, पूंछ, दुम,  
लांगूल, कपि, बन्दर, वानर,  
मर्कट, लंगुर कीश ।

६४३ ( सं. ) कछोटा, लंगोटी,  
रुमाली, जांचिया, लिंग, और  
गुदा इंद्रियोंके गोपनार्थ वस्त्र वि-  
शेष ।

६४३ ( वि. ) जिसने स्त्री प्र-  
संग कभीभी नहीं किया हो, ब्रह्म-  
चारी, यती, जितेन्द्रिय, पवित्र,  
निर्दोष, बटी ।

अंग्रेज़ी (सं.) बालसखा, बाल-  
मित्र, बाल्य कालका मित्र, बाबा,  
फक्कड़, वैरागी, तपस्वी, साधु,  
फकीर, जोड़ीदार, साथी, बार-  
बास, समयस्क । [ दोस्त ।  
अंग्रेज़ीभित्र (सं.) बचपनका  
अंग्रेज़ी-टी (सं.) कमरमें बंधे  
कटिसूत्रमें अटकाकर लिंगनिय  
हुंके उतनी चौड़ी लम्बी कपड़ेकी  
चिन्धी । कौपीन, कलनी, करधनी ।  
अंग्रेज़ीभारपी (कि.) वैरागी ।  
होना, अपने पासका सब मालम-  
ताको बैठना । खाली हाथों होना ।  
अंधन (सं.) लांघना, पार करना,  
उछाल, कूद, उपवास, अनाहार,  
फाँका संयमन, निवृत्ति परहेज ।  
अंधुं (कि.) लांघना, फाँका,  
करना, उपवास करना, अनाहार  
करना, व्रत करना पार करना ।  
अंधी (सं.) रोकको आनेवाली स्त्रि-  
याँ (कई जातियोंमें रोकको कि-  
राये पर स्त्रियाँ बुलाई जाती हैं ।)  
अंधी (सं.) सहनार्ह बजानेका  
धन्धा करने वाला मुसलमान ।  
अंधीर (वि.) रूप संपन्न (स्त्री) ।  
अंधक (सं.) नवन, झुकाव, ल-  
चीला ।

अंधक (कि.) लचकना, नमना,  
झुकना लचना, संग भंगी करना ।  
अंधक (अ.) बड़ेबड़े प्रास  
खाकर जल्दी बल्दी (खाना) ।  
अंधक (सं.) पोचा और ढल्लि  
पदार्थ, (वि.) गाढा, ढल्लि, पोचा,  
नर्म । [ लगाना, लपेटना, पोतना ।  
अंधपुं (कि.) चुपड़ना, रगड़ना,  
अंध-अंध (सं.) सिर फुटौवल  
कराने वाला (मनुष्य अथवा वा-  
र्य ६०) ।  
अंधपुं (वि.) चिकना, गीला, तर ।  
अंधपुं (कि.) देखो अंधपुं ।  
अंधपुं (कि.) बीचमेंसे थोड़ासा  
झुक जाना, नमना, टेढ़ा होना,  
लचकना शरण होना, अधिकारमें  
होना, झुकना ।  
अंधन (सं.) देखो अंधन ।  
अंध (सं.) माँजा, काच पीसकर  
सरेस या लहू इत्यादिमें मिलाकर  
धागेपर चुपड़ा हुआ धागा, जो  
पतंग उड़ानेके लिये विशेषतया  
बनाया जाता है ।  
अंधपुं (कि.) लज्जित करना,  
शरमिदा करना लजाना, शरमाना ।  
अंधपुं (कि.) लजित होना,  
शरमिदा होना । सिर झुकाना ।

अममथी ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष जिसे पुरुष अथवा बेस्त्रा स्त्रीका स्पर्श होतेही सारे पत्ते सिमिट जाते हैं, लज्जवन्ती, लज्जवन्ती, लज्जवन्ती । जिससे लज्जा उत्पन्न हो ।

अममथुं ( वि. ) जिससे लाज पैदा हो, लज्जानेवाला ।

अममपुं ( कि. ) शरमाना, लज्जित करना, नीचा दिखाना ।

अमम ( सं. ) शर्म, शीघ्र, तप, लज्ज, संकोच, शील, मर्यादा, विनय, नम्रता, अपकीर्ति, कलंक, अपमान ।

अममममान-मान ( वि. ) मर्यादा-शील, निरभिमानी, विनयी, शरमदार ।

अममथु ( वि. ) लज्जवाला, संकोची, लज्जवन्तीका पाँदा :

अममथीण ( वि. ) देखो अममममान । [ माया हुआ ।

अममथ ( वि. ) शीघ्रित, शर-

अम ( सं. ) लट्ठी केश, सिरकेवालोंकी एक गुच्छली, मस्तकके बालोंका उलझा हुआ एक गुच्छ । फेंदा, पाश, आळ, पेच उलझन । मोतियोंकी लड़ी ।

अम ( सं. ) डंग, रीति, भाँसि, प्रकार ।

अममथु-थिपुं ( सं. ) झूमर, झूमका, लटकनेवाली कोई वस्तु, लटकन ।

अममतीमथ ( मं. ) अलबेली चाला, अदापूर्ण चाल, लचकदार चाल ।

अममपुं ( वि. ) लटकता हुआ, निराधार, निराश्रय, अधवीचका, निरुद्यमी ।

अममपुंमुपुं ( कि. ) निराधार, छोड़ना, मंस्रधार छोड़ना, उद्यम-हिन करना ।

अममपुं ( कि. ) फाँसी चढ़ाना, लटका देना. मुआतिल करना ।

अमम ( सं. ) नखरा, अदा, हाक-भाव, अंग मंगी, टुटका, टोना, जन्तर मंतर ।

अममममम ( अं. ) अचानक, अकस्मात् दैवयोगसे, योगात्, दैवात्, प्रसंगात् ।

अममथ ( वि. ) दुबरी, गुणी, चाळीक, मक्कार, नटखट, चंचल ।

अममथी ( सं. ) गुण, चाळीकी, चांचल्य, मक्कारी, नटखटपन ।

**६६५४ ( सं. )** यह शब्द तोते के साथ बातचीत करते समय “ छटपट पंछी ” कहके प्रयोग करते हैं । छटपट । जल्दी ।

**६६५४ ३२वीं ( कि )** भूल छुपाने के लिये जल्दी करना, घसट घसट करना ।

**६६५४५ ( सं. )** उस्तरा तेज करने के लिये चमड़ेका टुकड़ा । कोथली, पेटी । ( वि. ) चंचल, उतावला, जल्दबाज ।

**६६५४५३२-नार्क का कामकर ।**

**६६२ ( सं. )** पुष्पकी रेखाएँ, फूल में की लकीरें, भटकना ।

**६६५ ( कि. )** लगना, भिड़ना, जुटना, इटना, सरकना, समझ जाना, सकुचाना ।

**६६५ ( सं. )** बहुतसी बालोंकी गुच्छलियाँ, लट्टें, उलझे हुए बालों की बलियाँ ।

**६६५ ( वि. )** १५५५-१५५५ ( कि. ) मार डालना, कुचल डालना ।

**६६५ ( वि. )** १५५५ ( कि. ) भीतरही भीतर खूब घनिष्ठ सम्बन्ध होना ।

**६६५ ( वि. )** लटकती, झूलती, आनंद में नाचती हुई ।

**६६५ ( वि. )** मोहित, भासक, जो एक ही विषय में फँस रहा हो, तल्लीन, तन्मय, विषयान्ध, पायल, मुग्ध, ( सं. ) भौंरा, भ्रमर. एक प्रकारका खिलौना । यह गोल काटका होता है नीचे एक छोटी सी नोकदारकील लगी होती है, इसको रस्सी लपेट कर घुमाते हैं । शांत, चुप. स्तब्ध, शिथिल ।

**६६५ ३४५५ ( कि. )** मुग्ध हो जाना, तल्लीन हो जाना ।

**६६-४ ( सं. )** छाठी, सोटा, डण्डा, चाँद, डोंग, लुहंगी । ( वि. ) मोटा, स्थूल, पुष्ट, बलवान, हठपुष्ट ।

**६६५ ( सं. )** लट्ट, लुच्चा, बदमाश,

**६६५ ( सं. )** लाठी, सोंटा, लम्बा डण्डा, एक प्रकारका कपड़ा, ( मोटा नादरपाट ) ( वि. ) बलवान, भारी, पुष्ट, फिसादी ।

**६६५ ( वि. )** टंटाखोर, सगड़ा, फिसादी, तकरारी, लड़ाकू ।

**६६५ ( सं. )** तकरार, फिसाद, सगड़ा, विवाद, मुकद्दमा, लड़ाई ।

**६६५५ ( कि. )** ठोकर खाना, भूलना, चूकना, आपड़ना, तुलना-ना, इकठाना, लड़ खड़ाना, जग-मगाना, हिच किचाना ।



अक्षरविशुद्धि ( सं. ) ओकर, पूर, सुल, ठेस ।

अक्षु ( वि. ) बड़ा ( सं. ) तोफानी, आवेशी, मोटाताजा ।

अक्षुपु ( कि. ) ओकर खाकर गिर पडना झुलना, लटकना ।

अक्षुविशुद्धि ( वि. ) ओकर खाकरभी दौड़ पडनेवाला, हड़बडिया ।

अक्षुष ( सं. ) लड़ाई, तकरार, झगड़ा ।

अक्षुपु-दुपु ( कि. ) लड़ना, झगड़ना, फिसादकरना, कलहकरना, विवाद करना, टंटा करना, युद्ध करना, रण करना, संग्राम करना, समर करना, मुकद्दमा लड़ना ।

अक्षुषे ( सं. ) मट, गौर, योद्धा, अच्छा लड़ाका, बहादुर, मल्ल, पहलवान ।

अक्षुपु ( कि. ) झुलना, लटकना ।

अक्षु-दुष ( सं. ) युद्ध, संग्राम, संगर, रण, अनवन, फिसाद, झगड़ा, टंटा, विवाद, संघर्ष, मुकद्दमा, मुठभेड़ ।

अक्षु वेन्ताता बेवी ( कि. ) दूसरे की लड़ाई में कैसकर स्वयम् लड़ने लगना ।

अक्षु-पे-र-श ( वि. ) झगडाह, फि सारी, विवादी, लड़नेवाला, तकरारी ।

अक्षु-यक्ष ( वि. ) लड़ने योग्य, रणवीर, रणधूर, योद्धा, रणतुर्मर्दा ।

अक्षु-दी ( सं. ) देखो अक्षु अक्षुपु ( कि. ) लड़ाना, मिदाना, जुझाना, लड़ाई कराना ।

अक्षु ( सं. ) जुनारके कामका एक प्रकारका ताम्बेका औजार ।

अक्षु ( सं. ) देखो अक्षु ।

अक्षु ( सं. ) रीति, ढंग, तर्ज, ढब, डाँचा, आदत, टेव ।

अक्षु ( कि. ) देखो अक्षु ।

अक्षु ( सं. ) देखो अक्षु ।

अक्षुपु ( कि. ) काटना, तोड़ना, छनना, बाँटेंबीनना नीचे पड़ा हुआ उठाना, बीनना, फसल काटना, पुष्पग्रहण करना, फल भोगना, खान केना, समझना ।

अक्षु-नार ( वि. ) काटनेवाला, फसल काटनेवाला, भोगनेवाला, मजदूर ।

अक्षु ( सं. ) पुरुषकी मूर्तेशिव, कृष्ण मनुष्य, ठग, धूर्त, लठ, कल, वक्क, लमार, हरामखोर ।

अक्षु ( सं. ) धूर्त, कपटी, ठग, कृष्ण, बदमाश, दुराचारी, आवसनी ।

६८ ( सं. ) बान, अन्नास, बुरी  
आदत, ठेक, चाल, ध्यान, लय,  
लगन ।

६८। ( सं. ) बेलि, बेल, बली, बहरी ।

६८।३०७ } कुटीर, मंडवा, कुंज,  
६८।३०६ } ( सं. ) बितान, पर्णकुटी, पर्ण  
६८।३०५ } शाला, लता भवन ।

६८।६ ( सं. ) फटकार, धिक्कार,  
बहाना, छल, लात, पादप्रहार ।

६८।७भा२०० ( कि. ) बुरे रास्ते  
करना, हानि करना ।

६८।७भा०० ( कि. ) पछाड़ जाना  
नुकसान उठाना ।

६८।७भा०००० ( कि. ) युक्ति पू-  
र्यक बदल जाना, कुपरिणाम होता  
देखकर संभलजाना ।

६८।७० ( कि. ) बराब करना,  
बुरी बधा करना, बिगाड़ना, हा-  
मि करना ।

६८। ( सं. ) बिरकुट, बिगड़ा,  
फटा पुराना कपड़ा, कपड़े ।

६८।७०००० ( कि. ) छूटे जाना,  
छटना, नुकसानमें पड़ना, खबर  
जानी ।

६८। ( सं. ) गांवकी सीमाका भाग,  
मुहल्ला, पुरा, बिस्ल, बाड़ा ।

६८।७० ( कि. ) ६८।७० देखो ।

६८।७० ( कि. ) देखो ६८।७० ।

६८।७ ( सं. ) अचानक अथवा रो  
गसे चक्करधाना, मूर्च्छा, चक्कर ।

६८।७ ( अ. ) लदफद, पासपास,  
निकट भेटाभेट, ऊपर नीचे ।

६८।७० ( सं. ) बूझ लिपटा हुआ ।

६८।७ ( सं. ) ठीला पदार्थ, किसी  
तरल पदार्थमें लिपटना, ( जैसा  
कोचड़ ) तस्लीन, मम ।

६८।७ ( सं. ) लपलपकी किया,  
झटबाहिर आना और अन्दर जाना  
( जैसी सांपकी जीम ) ।

६८ ( सं. ) उपाधि, पीढ़ा, संताप,  
आपत्ति, पाप, जेजाल बारबार कहकर  
सिरपचाने वाला मनुष्य, विघ्न ( अ० )  
जल्दीसे, शीघ्रतापूर्वक ।

६८।७ ( अ० ) पूर्ववत् ।

६८।७ ( सं. ) सबरुका, घुररुका,  
उल्लाहिना, उपालम्भ, ताना, ठूना  
मर्म बचन । चिकना और गाढ़ा  
पदार्थका भाग ।

६८।७ ७८।७ ( सं. ) जो झटपट  
और सहजहीमें बन जाये ।

६८।७ ( सं. ) चालमेल, गद्गद  
सद्गद चंचल, कुतीला, सावधान ।

अ५४ ( सं. ) लौ, दुग्ध, मईक,  
सपकी, सपट, पेंच, दाब, सपाटा  
( अ० ) तल्लीन मग ।

अ५४अ५४ ( सं. ) खींचातानी, पेच  
मुक्त बातचीत ।

अ५४पुं ( कि. ) सटना, मिलना,  
लगना, लिपटना, चिपकना,  
पेचमें लेना । [ बाना, फंसाना ।

अ५४पुं ( कि. ) लपेटाजाना, लल-

अ५४ ( वि. ) डीक, नरम, बि-  
जरा हुआ, ललची ( मनुष्य ) ।

अ५४पुं ( कि. ) लपेटना, चुपड़ना  
लेसना, लीपना, लेपन करना ।

अ५४क ( सं. ) धप्पड़, तमाचा,  
चपत, चपेटाका, धौल, घप, घप्पा ।

अ५४क भा२वी ( कि. ) धप्पड़ मारना,  
तमाचा मारना, घप्पा मारना ।

अ५४क भा३वी ( कि. ) धप्पड़ खाना,  
ठगेजाना, छलेखाना, हानि उठाना ।

अ५४ ( सं. ) लेपन, पोतना, बे-  
धवना ।

अ५४प ( सं. ) बाहिर जाना और  
अन्दर जाना, सपाटाबन्द, झटझट,  
शीघ्र, लपरलपर, बकबक, सिस-  
झिझ, बाबाकता, जबानी बात-  
चीत । [ धाम, बकवाद ।

अ५४अ५४ ( सं. ) बकबक, घूम-

अ५४अधि ( वि. ) व्यवहारी अधिक  
बोलनेवाला, शिक्षा, जल्दबाज,  
अविचारी ।

अ५पुं-पापुं ( कि. ) लुकाना, छु-  
पाना, दबकाना, दुबाना ।

अ५सख ( सं. ) रपटन, फिसलन,  
चिकना, लुआबदार ।

अ५सपुं ( कि. ) फिसलना, रपटना  
गोता खाना, चिसट पड़ना, कूच  
करना ।

अ५पुं ( कि. ) छुपाना, लुकांन ।

अ५अधि३सपुं ( कि. ) छुप बैठना,  
दबक जाना, चुपचाप हो रहना ।

अ५क ( सं. ) लपलप, फैलना तथा  
सिकुड़ना ।

अ५क ( वि. ) ऐसा मनुष्य जिसके  
पेटमें बात न रहती हो और बिना  
पूछे ही बक बेता हो । बकबादी,  
वाचाल, बहुत भाषण करनेवाला,  
बातूनी ।

अ५पुं ( कि. ) बैठनियाना, लेप-  
टना, पलेटना, घेष्टन करना, डकना,  
सम्मिलित करना, फाड़में लेना,  
पकड़ना । [ डके जाना, घेष्टित होना

अ५पुं ( कि. ) मिलना, लिपटाना

अपे३ ( सं. ) आच्छादन, आंटा,  
डांकन, आवरण ।

अपेक्षु ( कि. ) गाढ़ा चुपड़ना,  
लीपना, धथेड़ना, पोतना, लेसना ।

अपेक्षु ( कि. ) थिथड़ना, पुतना,  
लथेड़े जाना, लिपना ।

अपेक्ष ( सं. ) शठ, मूर्ख, एक  
प्रकारकी गाली ।

अपेक्षाम् ( सं. ) हपोलशंस, गप्पी,  
शान मूर्ख, दम्मी, जाहम्मरी ।

अपेक्ष ( सं. ) बड़ी लिंगेन्द्रिय,  
बड़ी उमरके पुरुषकी मूर्खेन्द्रिय, लंड ।

अपेक्ष ( सं. ) थप्पड़, तमाचा,  
चपत, धप ।

अपेक्षपेक्ष ( सं. ) बढाबढाकर  
वर्णन, अतिशयोक्तिपूर्वक कथन ।

अपेक्षपेक्ष करी ( कि. ) डंडी  
पना करना, मिथ्या प्रशंसा करना,  
कल्लो पत्तो करना, तीनपांच करना,  
सुशामद करना । चापलूसी करना ।

अपेक्षपेक्षनिधु ( वि. ) सुशामदी,  
चापलूस, मिथ्या प्रशंसक ।

अपेक्षपेक्ष ( अ. ) चुपकेसे,  
छुपकर, चोरीसे आँखें बचाकर ।

अपेक्षार ( वि. ) चौड़े गोटेकी कि-  
नारी वाला, लप्यीदार, गोटेयुक्त ।

अपेक्ष ( सं. ) कप्पा, पद्म, थोडा  
किनारी ।

अपेक्षार्थ ( सं. ) धूर्तता, लुच्चापन,  
गप्पाहक, लभारपन, निर्लज्जता ।

अपेक्षु ( सं. ) धूर्त, ठग, गप्पी  
दगाबाज, झूठा, उद्धत, लभार ।

अपेक्षु ( वि. ) लटकता हुआ, बि-  
खरा, खुला, विसदृता ( वक्र ) ।

अपेक्षु ( कि. ) विसदृता, लटकना ।

अपेक्ष ( सं. ) संकट, मुसीबत, पीड़ा,  
कष्ट, दुःख, साध लगे हुए मनुष्य,  
अपने काममें दूसरेका काम आजाना,  
उलझन, झंझट, बाधा, विघ्न, संकट,  
रोक, आड़, उपाधि, जैजाळ ।

अपेक्ष ( सं. ) होठ, ओंठ, ओष्ठ, लार,  
मुखका चिकना झूक ।

अपेक्षपेक्षे ( अ० ) परवाहन करके  
अच्छी तरह, उच्छृंखल रीतिसे, जो  
रजुलमसे, बळ पूर्वक, बधाशक्त ।

अपेक्षपेक्षेपु ( कि. ) खूब लभार  
लेना, बुरी तरह पीपड़ना, लोते लेना,  
खूब डाटना, धमकाना, थप्पड़  
और धक्के मारना ।

अपेक्षु ( वि. ) लटकता हुआ झू-  
लता हुआ ।

अपेक्षु ( कि. ) लटकना, टंघना,  
झूलना । [ काना, झुलाना ।

अपेक्षावर्तु ( कि. ) टांकना, लट-

अभतर्ह ( वि. ) पतला, मुर्दार,  
निर्बल, कुश, क्षीण । [ बाला ।  
अभामिथे ( वि. ) फटे चिथरों  
अभाये ( सं. ) फटावला, बिथड़ा,  
जीर्णवला, कथरा ।  
अभाउ-डी ( वि. ) मिथ्या भाषी, झूठ  
बोलनेवाला, लवार, गप्पी, ( सं. )  
अनृत, असत्य, झूठ, असत्य ।  
अभेयु ( सं. ) मुख, मुहं आनन,  
वदन, जीभ, जिह्वा, बोली, वाणी,  
वाचा । [ संवादित ।  
अभ्य ( वि. ) प्राप्त, उपाजित,  
अभ्य ( सं. ) बालबच्चे, परिजन,  
कुटुम्बके लोग, कुटुम्बी ।  
अभ्य ( सं. ) प्राप्ति, लाभ, हाथ  
लगाना, हाथमें आना ।  
अभ्य ( वि. ) प्राप्त करने योग्य,  
प्राप्तव्य, प्राप्य, प्राप्तिके योग्य ।  
अभ्यु ( सं. ) कनपटी ।  
अभ्युत्थिता ( कि. ) माठा फोड़  
करना सिरपच्छी करना ।  
अभ्युत्थिता ( कि. ) हिम्मत  
हारना, आशा भंग होना, साहस  
छोड़ना ।  
अभ्यु ( वि. ) दुराचारी, दुष्कृत,  
झूठ, असत्यवादी, बिथरी, रंजी-  
वाज, कथनी ।

अभ्य ( वि. ) लम्बा, दीर्घ, विस्तीर्ण,  
ऊँचा, बड़ा लंबा, ( सं. ) समुद्रका  
पानी नापनेका डोरीमें बाँधा हुआ  
शीशेका वजन । साबल, पानी  
नापनेका यंत्र, दीवारको सूची  
देखनेके लिये डोरीमें बाँधा हुआ  
पत्थर या किसी धातुका गोला ।  
अभ्यु ( सं. ) गधेका, गधा,  
गर्दभ, रासभ, खर, ( वि. )  
लम्बे कानवाला । [ कृति ।  
अभ्यु ( सं. ) अंकाकार, अंका-  
अभ्यु ( सं. ) दीर्घ बर्तुल, अंका-  
कृति । [ ऊँचान ।  
अभ्यु ( सं. ) लम्बाई, लम्बान,  
अभ्यु ( सं. ) विस्तार, फैलाव,  
लंबाई । [ करना, पहुंचाना ।  
अभ्यु ( कि. ) बढ़ाना, लम्बा  
अभ्यु ( कि. ) सोना, धावन क-  
रना, छेटना, लम्बीतानना, छुड़ि-  
होना, बहुत चलना ।  
अभ्यु-सिथे ( वि. ) आवश्यकतासे  
अधिकलम्बा, बहुत ऊँचा, ल-  
म्बड़ा ।  
अभ्यु ( सं. ) सीधी ऊँचाई ।  
अभ्यु ( सं. ) गणपति, गणेश,  
महादेवका लङ्का ( वि. ) मोटे  
देहका ।

६५ ( सं. ) नाश, ध्वंस, प्रलय,  
विनाश, ताल, स्वर, लीन, मग्न,  
लवलीन, संहार, अच्छेद, लय,  
लगन, एकाग्रचित्त, समाजाना ।

६५।१।१ ( वि. ) शरम, लानत,  
नामोशी, बदनामी । [ टंकती ।

६५।१।२ ( वि. ) झलता, ल-  
६५।१।२ ( सं. ) हांक, पुकार,  
डांक, बड़ावा, प्रोत्साहन वाक्य,  
हुंकार ।

६५।१।३ ( कि. ) आह्वान करना,  
किलंकारन, युद्धार्थ पुकारना ।

६५।१।४ ( कि. ) लुभाना, ल-  
काना, तरसाना, ललचाना, लोभमें  
डालना, आकर्षित करना, मोहित  
करना ।

६५।१।५ ( कि. ) लुभाना, मोहित  
होना, ललचाना, डाल-यित होना ।

६५।१।६ ( सं. ) महिळा, नारी,  
कामकळा, स्त्री, प्रवीणास्त्री, वामा-  
कामिनी ।

६५।१।७ ( सं. ) मस्तक, सिर, कपाल,  
भाग्य, प्रारब्ध, नसीब, तकरीर ।

६५।१।८ ( सं. ) विधाताके  
अंक, कर्मरेख, भाग्यरेखा ।

६५।१।९ ( वि. ) सुन्दर, नाजुक,  
कोमल, सरस, मनोहर, चंचल,  
मनभावन । शगविवेश जो प्रातः  
कालके समय गाया जाता है ।  
मौजी, लहरी ।

६५।१।१० ( सं. ) जवान, मनोहरस्त्री।  
६५।१।११ ( सं. ) चाह, इच्छा, इरादा,  
आकांक्षा ।

६५।१।१२ ( सं. ) तुष्णा, लोभ, ल-  
लच, ललौपत्तो, चादुकारी ।

६५।१।१३ ( सं. ) अंश, भाग, क्षण, नि-  
मेष, पल, ( अ० ) लेश, जराक,  
अल्प, थोड़ा, न्यून, कम, कुछेक ।

६५।१।१४ ( सं. ) वृक्षविशेषका फूल,  
इस नामसे प्रसिद्ध, लौंग, लौंगकी  
आकृतिका कानोमें पहिनेका  
आभूषण विशेष ।

६५।१।१५ ( वि. ) लौंगकी आकृतिका  
कानमें पहिनेका जेवर विशेष ।

६५।१।१६ ( सं. ) गरम खनका  
तेजमिजाज़, चपल, तीक्ष्ण मिरच ।

६५।१।१७ ( सं. ) नमक, नोन, नून,  
खारा, शार, तेज, कर्षित ( वि. )  
खारा । [ की बातें ।

६५।१।१८ ( सं. ) बकवाद, गप्प, व्यर्थ-  
६५।१।१९ ( सं. ) पूर्वपद ।

अवधवर्ण ( कि. ) गण्ये मारना  
बढ़बढ़ाना ।

अवधवर्ण ( सं. ) देखो अवधव ।

अवधेश ( अ० ) ज़राक, बोड़ा,  
अल्प, लेशमात्र, कुछक ।

अवधु ( कि. ) अकारण खूब,  
बोलते रहनेवा, बकना बढ़बढ़ाना ।

अवधु ( सं. ) लावण्यता, बोल-  
नेकी मिठास ।

अवधु ( सं. ) फाँस, वेतन,  
हक, अछाउंस, लौंस, अधिकार,  
दस्तूरी । [ अमीन ।

अवधु ( सं. ) पंच, न्यायी, मध्यस्थ  
अवधु ( सं. ) पंचायत, निर्णय,  
न्याय ।

अवधु ( सं. ) लुहार, लोहकार,  
लोहकापंदा करनेवाला एक जाति  
विशेष । [ नेका मुइला ।

अवधु ( सं. ) लोहारोंके रह-  
अवधु ( सं. ) देखो अवधु ।

अवधु ( सं. ) नवजातबालक, दूध  
पोतारवा, छोटा बड़वा या बछिया

अवधु ( सं. ) देखो अवधु ।

अवधु ( सं. ) पूर्ववत् ।

अवधु ( सं. ) मरकर, दिल्गीबाज ।

अवधु ( सं. ) शब्द, लफ्फ, अक्षर  
समूह ।

अवधु ( सं. ) सेना, फौज, अनी,  
पलटन, रिजमट, जत्ता, समुदाय  
टोळी ।

अवधु ( अ० ) अनियमित ।

अवधु ( वि. ) फौजी, सैनिक,  
फौज विषयक ( मनुष्यवस्तु इ० )

अवधु ( वि. ) चंचल, अधीर,  
अस्थिर । [ लज्जुन, लस्सुन ।

अवधु ( सं. ) लहसुन, फंदविशेष  
अवधु ( वि. ) लहसुन मिठाहुवा ।

अवधु ( सं. ) एक प्रकारका  
बहुमूल्य पत्थर ।

अवधु ( वि. ) शोभित, आसित,  
प्रकाशित, डीला, नरम, लच-  
लचा ।

अवधु ( सं. ) चिस्सा, रगड़ा ।

अवधु ( वि. ) देखो अवधु ।

अवधु ( सं. ) गधा, बिकन  
और चमकदार ।

अवधु ( कि. ) गाढा होना,  
बिकन और चमकदार होना ।

अवधु ( वि. ) पुष्कल, खूब,  
बहुत ।

अवधु ( कि. ) शोभित होना, शो-  
भना, खेळना, फिसलना, रपटना ।

अवधु ( कि. ) घोटना, भारीक  
पीसकर मिखादेना रगड़ना ।

अवधु ( सं. ) स्वाद, जायका ।

लहरी ( सं. ) लहर, तरंग, बीचि, कर्मि ।

लहपुं ( कि. ) जानना, मालूमकरना ।

लहालु ( सं. ) नफा, लाभ, सु-  
नाफा, प्राप्ति, आय, उत्पत्ति, आ-  
मद ।

लहाली ( सं. ) अच्छे शुभ कार्यके  
समय उपस्थित रहने वालोंको  
एकही प्रकारका इनाम देना ।

लहापुं ( कि. ) हिस्सा करदेना,  
बांट देना, भाग करदेना ।

लहिले ( सं. ) लेखक, नकलन  
वाँस, अनुवादक, पुस्तक लिखने-  
वाला ।

लही ( सं. ) लेही, लाई, ( आटे  
या मैदाकी बनी हुई चिपकानेके  
काम आती है ) ।

लहे ( सं. ) स्वाद, मज़ा, लज्जत ।

लहेपुं ( कि. ) लटकमें चलना,  
लचकना । [ लटक ।

लहेडा ( सं. ) लचक, अंगमंगी,

लहेर ( सं. ) झोंका ( पवनका ),  
लहर प्रदर्शक कपड़ेपर आड़ी  
टेढ़ी रेखाओंका चित्र, निशानी,  
प्रभाव, तर्क, बितर्क, आलस्य,  
जशा, कंच, तरंग, कर्मि, बीचि,

हिलोर, चिपकानेका पर्व, कपड़े  
रंगनेकी प्रक्रिया ।

लहेरिया ( सं. ) झोंकें, तेरंगें,  
हिलोरें, बल पृथ्वीकागज इत्यादि  
पर लहर समान रेखाएं ।

लहेरिधुं ( सं. ) झियोंके पहिनेका  
एक प्रकारका आभूषण ।

लहेरी ( वि. ) मनमौजी, आनन्दी,  
तरंगी, मदमस्त, नशेबाज, हकी,  
विषयां, अस्थिर, संदिग्ध ।

लहपुं ( कि. ) ध्यात पूर्वक सुनना,  
ध्यानदेना, एकाग्र चित्त करना ।

लणधुं ( कि. ) उरकंठित होना,  
लालायित होना, उमंगसे घूमते  
घूमते आना ।

लणपुं ( कि. ) झुकना, नमना,  
नीचा होना, हारना स्वाद लगाना,  
भाना । [ मोड़ ।

लल ( सं. ) लचक, बल, टेढ़ापन,

लल ( सं. ) एक प्रकारकी दाढ़ ।

ललधु ( सं. ) उपवास, व्रत,  
लहून, निराहार कालक्षेप ।

ललली ( सं. ) गाड़ीको समान  
खड़ी रखनेके लिये दोहड़ण्ड, टेकी,  
यह खड़ीके पास बंधे होते हैं  
जहां गाड़ीको खींची खड़ी करनी  
हो वहां इन्हें लगादेते हैं । डेमी ।



शब्दार्थ ( सं. ) बिना अक्षयक प्र-  
हण किये । [ वास करना ।

शब्दार्थ ( कि. ) ब्रत करना, उप-

शब्धि ( सं. ) लंघन, उपवास, ब्रत,  
रोज़ा ।

शब्धि ( सं. ) घूस, पच्चर, रिश्वत ।

शब्धि आपवी ( कि. ) घूस देना,  
रिश्वत देना, मुठ्ठी गरम करना,  
मुठ्ठी भरना ।

शब्धिभाङ्गी ( कि. ) पूर्ववत् ।

शब्धिभावी ( कि. ) घूस पच्चर  
लेना, रिश्वत लेना, हाथ मारना,  
जेब गरम करना ।

शब्धि भवशिवपी ( कि. ) रिश्वत  
देना, घूस देना, दाबना ।

शब्धि ( सं. ) दबाव, नमन, भार ।

शब्धिभाङ्गी-भाङ्गी ( वि. ) दुष्ट, न-  
मक हराम, रिश्वतखोर घूस लेने  
वाला ।

शब्धिपुं ( कि. ) दबना, झुकना,  
जमना, रिश्वत देना, घूस देना ।

शब्धिपुं-भाङ्गी ( वि. ) रिश्वत  
कने वाला घूस लेना वाला ।

शब्धि ( वि. ) कम, खोटा, न्यून ।

शब्धि ( सं. ) लंछन, बघ्न, दाग,  
कलंक निशानी, चिन्ह, ऐष खोब ।

शब्धि-भाङ्गी ( सं. ) हरकत, काह,  
रोक ।

शब्धि-शब्धि ( वि. ) कुत्ता, बोंगी,  
धूर्त, शठ, तुफानी, मस्त ।

शब्धि ( सं. ) धूर्तता, शठता,  
छल, कपट, कुत्तवाई ।

शब्धि ( सं. ) रखा हुआ खसम,  
गार, आशिक ।

शब्धि ( सं. ) लभ, फायदा ।

शब्धि ( सं. ) देखो लोहो ।

शब्धि ( सं. ) लेम्प, निराग, दीवा,  
दीपक, कन्दील, लालटेन, दीप,  
दीया ।

शब्धि ( सं. ) लंपू, घासका कांटा,  
सूखाघास, हरा छोटा गला  
हुआ घास ।

शब्धि-भाङ्गी ( सं. ) काच जमानेका  
चिकना पदार्थ, सफेदा और बेड  
तेलका मिश्रण ।

शब्धिभाङ्गी ( वि. ) जिसकी टांगे  
बड़ी हों, लम्बी टांगों वाला ।

शब्धि ( सं. ) स्मृति, स्मरण, याद,  
स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

शब्धिभाङ्गी ( सं. ) अमर्याद भाषण,  
गाली गुपता, गाली गलौज ।

शब्धिभाङ्गी ( सं. ) दीर्घ रहि,  
दूर रहि ।

आंध्र ( सं. ) लम्बा, दीर्घ, ऊँचा,  
दूरका विस्तृत, बड़ा ।

आंध्रविचार ( सं. ) भविष्यका  
विचार, दूरदृष्टि, भविष्य दृष्टि ।

आंध्रकाल ( कि. ) बहुतजीना,  
बहुत वर्ष जीना ।

आंध्र बंधन ( कि. ) मरजाना,  
जमीनपर सोजाना, ऊँची वस्तु  
लेनेके लिये पैरोंकी अंगुलियोंके  
बल ऊँचे हाथ करके खड़े होना,  
व्यापारमें बहुत हानि होना ।

आंध्रसे अधिक ( कि. ) ज्ञा-  
तिसे अधिक कार्य करना ।

आंध्रसे दुःखान्ध-भरेनही तो  
भंडारान्ध=देखा देखी साथे जोग,  
भरेनही तो व्यापारेण, बड़ेकी  
बराबरी नहीं करना ।

आंध्रभेदी ( कि. ) मरजाना ।

आंध्रछेला ( सं. ) माँत,  
मृत्यु, कड़ा । [ करना ।

आंध्रकाल भरी ( कि. ) हिम्मत

आंध्रसे ( कि. ) मरना ।

आंध्रभेदी ( कि. ) ढोल करना,  
अधिक जीना ।

आंध्र भिन्न ( कि. ) बड़ा-  
बड़ाकर कहना, आतिशयोक्ति  
कथन ।

आंध्रसे ( कि. ) दिवाका  
निकासना, मरण तुल्य होना,  
अत्यंत दुर्दशामें होना, अत्यंत  
हानिमें जाना ।

आंध्र साधने ( कि. ) दूर-  
दृष्टि रखकर इस तरहका कार्य  
करना जिससे ठीकर भी न खाना  
पड़े । मृत्यु होना ।

आंध्र ( कि. ) रिश्तत  
लेना, मदद करना, हाथ डालना,  
दस्त क्षेत्र करना, बाधा डालना ।

आंध्र ( कि. ) लंबा करना,  
पीटना, धुनना, ठोकना । [ नसीब ।

आंध्र ( कि. ) किस्मत, प्रारब्ध,  
आंध्र ( सं. ) पूर्ववत् ।

आ० ( सं. ) " लिखतम् लिखी "   
का छोटारूप ।

आंध्र-दी ( सं. ) लेही, गेहूँके आदे  
या मैदाका बनायाहुवा चिपका-  
नेका पदार्थ, ल्याही, अबलेही ।

आंध्र ( वि. ) निरुपाय, काबार  
उपायशून्य ।

आंध्र ( सं. ) फौजफांट, सैन्य ।

आंध्र ( वि. ) पुत्रहीन, निपुत्र,  
बांस ( झी ), निस्तंतान ।

आंध्र ( वि. ) योग्य लायक ।

आंध्र ( सं. ) लकड़, काष्ठ, काठ,  
बळीता, काठी, जळानेका काठ,

ईश्वर ( वि. ) लक्ष्मी, लक्ष्मी-  
कायना ।

७१७७७७ ( सं. ) लक्ष्मीदे दुकाने  
इत्यादि फरनीयर, काठकाद ।

भा.स.सा.प-डी ( सं. ) एकप्रकारकी  
मिठाई, एकप्रकार के बेसनके  
लड्डू ( कठोर )

आकाशवाणी ( स. ) लकड़ीबेचने-  
वाला, कठियारा, ईंधनबेचनेवाला ।

क्षात्रिणी (सं.) लकड़ी, छड़ी, सोटी,  
 कमड़ी, कमची, आधार, आश्रय,  
 टेका ।

आइडिसेपी (क्रि) लकड़ी उठाना,  
मारनेके लिये लकड़ी लेना,  
बुढ़ापाआना । [ कष्ट देना ।

लाकडीकेशी ( कि. ) तंग करना,  
लाकडू ( सं. ) लकड़, शहतोर,  
म्याळ, तीर, ईंधर, काठ, इमा-  
रतीलकडी । [ परबाह न करना ।

साहजसाधवा (क्रि.) नमिनना,  
साहडा सडाववा (क्रि.) श्रंटीसणी  
मिडाकर उडाई कराना ।

आहारी भोजनार्थ ( कि. ) उत्तेजना  
देना, उसकान, उकसाना, पुष्प  
कार्य करना । [ नेका तरीका ।

आकडानीतरवार ( सं. ) काम घड्या-

साक्ष्यभाँ पैसा भणवाना नथी  
खोजनेपर मिळना कठिन है।

भाइजी पाणी सिंचणु ( कि. )  
जसमय कार्य करना, जो जिसका  
काम हो उसे न देकर किसी दूसरे  
को देना ।

शास्त्र 'धातुपु' (कि.) बाधा कालना,  
चलते हुए कार्यमें अपना स्वार्थ  
साधन करना ।

वाङ्मय 'पेसपु' ( क्रि. ) खलल होना  
रोकहोना, बाधाउपस्थित होना ।

साठे भांडे' वणभांडु' ( कि. )  
दोनोंमें जूता बलवाना, दोजनोंको  
लडाना ।

साक्षिः (वि.) लक्षणयुक्त, लक्षण-  
वृत्तिसे कथित अर्थ अलंकारिक,  
स्वभाव दर्शक, सांकेतिक, बोधक  
व्यञ्जक, सूचक, ज्ञापक ।

शिक्षा ( सं. ) लाह, जल, लक, एक प्रकारका पेयका गोंद जो भाग लगानेसे पिघलकर जल उठता है इसकी चूड़ियां भी बनती हैं, जिन्हें स्त्रियां धारण करती हैं।

श्री० (सं.) पूर्ववत्, चपटी (वि.)  
संख्या विशेष, सौ हजार, (सं.)  
एक प्रकारका जीव जिसके सूखने  
पर उसमेंसे तैलरंग निकाला  
जाता है पहिले सम्बन्धी जियाँ  
मेहदीकी जगह उसीसे अपने  
हाथ पैर रंगा करती थी ।

श्रीमद्भिमानीभाष्यस ( सं ) मळा  
आदमी, सज्जन, विश्वस्त पुरुष,  
भद्रजन ।

श्रीमद्भिमानीभात ( सं ) बडीही  
अच्छीबात, नेकसलाह, लाभप्रद  
कार्य ।

श्रीमद्भाष्यजरी ( सं ) लाखों रुप-  
योंका लेनदेन करन वाला मनुष्य ।

श्रीमद्भाष्ये पक्ष श्रीमद्भाष्ये ॥ इज्जत  
जानेकी अपेक्षा धनका चलाजाना  
अच्छा अपमानसे मरण उत्तम है ।

श्रीमद्भाष्ये तुष्टया डोडीमे संधायनडी ॥  
समुद्रको एक बूंदसे नहा भराजा  
सकता ।

श्रीमद्भाष्ये-श्रीमद्भाष्ये ( वि ) उ-  
त्तम बहुमूल्य, लाभप्रद, अलभ्य ।

श्रीमद्भाष्ये तरी ( सं ) मिथ्या  
कथन, अति-शयवर्णन, ऊपरी  
भड़क, आडंबर ।

श्रीमद्भाष्ये पावन डार ( सं ) राजा  
अमीर, दानी परमात्म देव ।

श्रीमद्भाष्ये आतनी ओष्ठ आत ( अ )  
सारांशक, तात्पर्यक, गरजेकि,  
संक्षिप्तमें, सीबातोंकी एक बात,  
थोड़े शब्दोंमें ।

श्रीमद्भाष्ये श्रवा ( क्रि ) शर  
मिदा करके अनेक तरहसे सम-  
झाना ।

श्रीमद्भाष्ये ( क्रि ) डालना, गेरना,  
पटकना, मिट्टीके पात्रपर चपड़ी  
करना ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) लाखकी चूड़ी,  
झिया चूड़ियोंके आगे इसे पहि-  
नती हैं । ( वि ) लाखका, लाह-  
युक्त, चपड़ादार ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) शरीरके किसी भा-  
गपर जन्मका काल चिन्ह, दाँव,  
लाल्छन, दाग ।

श्रीमद्भाष्ये ( वि ) प्रतिष्ठित, मानी,  
इज्जतदार, आबरूवाला, न्यायां,  
नेक, सज्जन, कीमती, बहुमूल्य,  
अमूल्य ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) लाख रुपयोंका  
जमाखचे, असंख्यता, लाखोंसे  
गणना ।

श्रीमद्भाष्ये ( वि ) लाख लगाकर  
चमकदार किया हुआ बरतन,  
चपड़ी मियाहुवा बरतन ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) सुहर चपड़ी  
किया हुआ पत्र, बन्दलिफाफा ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) योग, दैवी घटना,  
युक्ति, दाँव, चोट प्रसंग, पकड़,  
दस्ता, बेंटा, हत्या, नक्क, आ-  
कड़ा, आधार, पाया, मूल ।

श्रीमद्भाष्ये ( सं ) मौका आना,  
योग आना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) दाँवमें  
आना, पैचमें आना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) अबसर खोना,  
मौका गंवाना । [ सर आना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) अनुकूल अव-  
श्रीमद्भागवत ( कि. ) मौका ताकना,  
योग इंदना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) निर्धारित  
कार्यके लिये अबसर साजना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) अनुकूल  
पड़े बेसाड़ी करना, अनुकूल  
समय प्राप्त करना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) समयकः सदुप-  
योग करना, आवे समयको हा-  
थसे नहीं जाने देना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) कि-  
सीके अधिकारमेंसे निकलना ।

श्रीमद्भागवत ( अ. ) सतत, निरन्तर,  
अविच्छिन्न, अविश्रान्त, एक म-  
रीखा जारी, चालू ।

श्रीमद्भागवत ( सं. ) खराब व्यवहार,  
अनुचित, सम्बन्ध, घुरावर्ताव ।

श्रीमद्भागवत ( सं. ) दया, कहना,  
अनुकंपा, मनोधर्म, चित्तवृत्ति,  
भाव, ज्ञान, विचार, बोध ।

श्रीमद्भागवत ( सं. ) लगी हुई कश्मल,

असली मूल्य, मोल, दाम, मूल्य,  
महसूल टेक्स, जकात कर ।

श्रीमद्भागवत ( वि. ) लागू, सम्बन्धी,  
विषयक ;

श्रीमद्भागवत ( वि. ) नाते  
रिस्तेदार, सगा सम्बन्धी, बंधु-  
जन, पारजन, कुटुम्बी, नातेदार,  
बांधव, समीप ( नातमें ) ( वि. )  
देभो श्रीमद्भागवत ।

श्रीमद्भागवत ( सं. ) बांटा, साझा, हिस्सा,  
सम्बन्धसे हक अथवा हिस्सा ।

श्रीमद्भागवत-श्रीमद्भागवत ( अ. ) फौरन,  
उसी समय, तुरन्त, जल्दी, ताब-  
दुताड़ तत्क्षण, तत्काळ, साथही  
साथ ।

श्रीमद्भागवत ( अ. ) पूर्ववत् ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) लगना, स्पर्श होना,  
छूना, भासना, जानना, मालूम  
होना, सहना, बीतना, जकरत  
होना, बहुत होना, जारी रहना,  
सुलगना, धधकना ज्ञात होना ।

श्रीमद्भागवत ( कि. ) सिरपर  
आई हुई आफत सदन करना,  
उठाना, सहना ।

श्रीमद्भागवत ( टीका ) काम हो या  
हानि हो मैं तो अपनी मनयानी  
करूँगा ।

७४६ ( वि. ) लगाहुआ, लगने योग्य, जिसका सम्पर्क हो, मिलाहुआ प्रभाव होना, असर होना, ( सं. ) हक, कर, संबंध ।

७४७ रूँधुं ( कि. ) अनुकूल होना, ठीक बैठना, लगा रहना । अनुयायी रहना ।

७४८ वृत्-५४९ ( कि. ) पीछा करना, सम्मिलित होना, उचित होना, ठीक बैठना, योग्य ठहरना ।

७४९ ७५० ११२ युक्तियुक्त कामको करनेसे कठिनभी सहल बन जाता है ।

७५१ ( वि. ) लगाहुआ, शरीरके लगाहुआ, इसके पुरुष कीसे या स्त्री पुरुषसे लगी हुई ।

७५२ ( सं. ) अक्षय्यार, अधिकार, सत्ता, दावा, हक, प्रभुत्व, सम्बन्ध, कर, टेक्स, पैठ, जकात, लगान, नाता ।

७५३ ( अ. ) बराबर, ठीक, बाहिये उतनाही ।

७५४ ( वि. ) विवश, अशक्त, निरुपाय, निराश, गरीब, पावर, दीन । [ दीनता ।

७५५ ( सं. ) विवशता, निराश्य,

७५६ ( सं. ) शेष विशेषमें ( अ-जीर्णमें ) नीमके पत्तोंकी छाछमें मिलाकर हथेली और तुलसी पर फेरी जानेवाली औषधि विशेष ।

७५७ ( सं. ) रेशमकी बड़ी आंटी, लच्छा, गुच्छा, रेशमका सूत्र समूह ।

७५८ ( सं. ) लज्जा, शरम, संकोच, शीड़ा, त्रपा धर्म, हया, अदब, मर्यादा, इज्जत, टेक, मान, आबरू ।

७५९ लागवी ( कि. ) लज्जा आना, संकोच होना, शर्म आना ।

७६० राभवी ( कि. ) अदब करना, मान रखना, संकोच रखना ।

७६१ ( वि. ) उचित, योग्य, अनुपासित, उपयुक्त, लायक ।

७६२ अर्थात् ( सं. ) संकोच और विनय, मर्यादा और शील, मान और लज्जा ।

७६३ ( वि. ) नम्र, सुशील, विनयी, लज्जाशील, शरमदार, लज्जाळु ।

७६४ ( कि. ) शरमाना, जाना, संकोच करना, नीचा दे-खना, झेंपना ।

आल ( सं. ) बाँवलोंकी जाली,  
सेककर कुलामे हुए बाँवल, बाँव-  
लोंकी धानी, लवा, बीला, मोई,  
बाँवलका लवा ।

आलम ( सं. ) देखो आलमथी ।

आलम ( वि. ) देखो आलम ।

आलमो ( सं. ) हेमो आलमथी ।

आलपु ( सं. ) पूर्ववत् ( वि. )  
हेमो आलमथी ।

आलुआली ( सं. ) हेमो आलमथी ।

आल-६ ( सं. ) प्राचीन कालमें एक  
प्रवेश विशेष सूत कातनेकी मशीन-  
का घुरा विशेष, गाड़ीका घुरा, तेल  
निकालनेकी धानीका जंजा लड़ा-  
हुवा लकड़, लकड़ी ढण्डा, सोटा,  
लठ, लहर, तरंग, हिस्सा, भाग्य ।

आलम ( अ. ) अधिक परिमाणमें  
विशेष रूपमें, जत्थेमें ।

आलानुआल ( सं. ) एक प्रकारका  
शब्दालंकार, वाक्यमें बारबार  
उसी शब्द या अक्षरकी वही  
अवस्था दूसरा अर्थ बताते हुए  
पुनरावृत्ति, बमक ।

आली ( सं. ) जहाँ जलनेका काष्ठ  
बिकताहै, लकड़ियोंको टाल,  
कबाड़ा ।

आली ( सं. ) देखो आली, बोली लकड़ी  
बहालण्डा, लठिया, लठियाँ ।

आल ( सं. ) प्यार, प्रेम, दुलार, मोह ।

आलमथी ( कि. ) खिलाना,  
मनोरंजन करना, प्रेम प्रदर्शन  
करना, दुलारना । [ विशेष ]

आल ( वि. ) बैरोंकी एक जाति,

आल-६ ( वि. ) प्यार,  
दुलारा, लाइला, प्रिय ।

आल-६ ( सं. ) नक्षेत्रधीत  
अथवा विवाह संस्कार आदिमें  
जातेरिस्तेदारोंकी तरफसे जो मिठाई  
के लिये नकद दाम जो वर कन्या  
की भेट होते हैं ।

आल-६ ( वि. ) देखो आल-६ ।

आल-६ ( वि. ) लकड़के कारण  
उन्मत्त, लाइप्यारसे बिगड़ाहुआ ।

आल-६ ( वि. ) पूर्ववत् ।

आलमथी ( कि. ) प्रेम करना,  
दुलारना, प्रीति पूर्वक खिलाना ।

आली ( सं. ) लकड़में रखीहुई,  
प्यारी, दुलारी ।

आलमथी ( वि. ) देखो आल-६ ।

आल-६ ( कि. ) प्यारकरना दुलारना ।

आल-६ ( सं. ) लकड़; मोड़क, मिछाक  
विशेष ।

शोडी ( सं. ) प्यारी, लज्जली, दुःख  
हिन, नववधू, बहू, कन्या ।

शोडीये-डीये ( वि. ) प्यारमें बिग-  
ड़ा हुआ लड़का या पुरुष ।

शोडू ( सं. ) लडू, मिठाई विशेष  
मोदक, लाम, फायदा, अंगियापर  
रेशम किनारीकी गोलाकृति ।

शोडी ( सं. ) बर, बौद, दुलहा,  
लाड़ा, प्यारा, नौसा, अनेक प्रका-  
रके सांसारिक सुखभोगनेवाला  
पुरुष ।

शोधी ( सं. ) काटनी ( फसल ),  
गीत गानेवाली स्त्रियोंको पुरस्कार  
विशेष ।

शोत ( सं. ) पदाघात, पैरबांमार,  
ठोकर, जेट, किक ।

शोतभापी ( कि. ) ठोकर सहना,  
सहन करना ।

शोतभापी ( कि. ) ठोकर मारना,  
ठगना, हानी पहुंचाना, धिक्करना

शोटी ( सं. ) कोठी, फेवटरी,  
गोदाम स्टोर, भंडार के भागार ।

शोड ( सं. ) लीद, हाथी घोडे और,  
गर्दभ आदि पशुओंका विष्टा ।

शोडुं ( कि. ) भरना, बोझना,  
भारभरना, लदना ।

शोडी ( सं. ) कर्बन्धी, भूमिपर  
जमाये हुए समान पत्थर ।

शोडुं ( कि. ) मार लादना, व-  
जन रखना, होना, उत्पन्न होना,  
तैरते हुए जलयानका पानी थोड़ा  
होनेकी जगह भूमिमें लगजाना,  
टकराना, ठहराना, हाथ लगना ।

शोत ( सं. ) धिक्कार, सम अ-  
पमान, गंरत । [ शील, समावा ।

शोपड ( सं. ) चप्पड़, चपत,

शोपडुं ( वि. ) डीला, लचपचा ।

शोपन ( सं. ) रचनाका पदच्छेद  
करके समझाना, अर्थका ज्ञान क-  
रना, रचना ।

शोपसी-असी ( सं. ) सिका हुआ  
आटा जिनमें धा और शक्कर  
मिला हुआ हो, मिष्टान्न विशेष,  
कसर, लाससी, कम चीका पनख  
दलवा, धूआ ।

शोपी ( सं. ) काच जमानेका म-  
साला विशेष, तेल और सकेदेका  
मिश्रण ।

शोपीट ( सं. ) देखो शोपड ।

शोटियुं ( सं. ) ऐसा गुनड़ा ( फोड़ा )  
जिसस गाल सूज आवे ।

शोशिशो ( सं. ) कुबूल खर्ची,  
बरबादी, अपरिमित व्यय, उड़ा-  
ऊपना ।



साक्षिवेद ( सं. ) पूर्ववत् ।

साक्षि ( सं. ) अतिव्यथी, कूजल  
ज्वर करने वाला व्याधि, द्वारवा  
सिद्धको बन्द रखनेके लिये आड़ी  
लकड़ी, रोक, आद आगल ।

साक्षि ( सं. ) देखी सावरी ।

साक्षि ( वि. ) नातुक, सुकुमार,  
कोमल ।

साक्षि ( सं. ) पत्ता विशेष ।

साक्षि ( सं. ) प्राप्ति, नफा, मुनाफा,  
फायदा, पाना मिलना, सूद ।

साक्षि आपने ( कि. ) बदला  
देना, लाम देना ।

साक्षि लेने ( कि. ) मुनाफा, उ-  
ठाना, फायदा उठाना । [लामप्रद ।

साक्षिारी ( वि. ) फायदे मन्द,

साक्षिआक्षि ( सं. ) कार्तिक शुक्ल  
पंचमी, श्रीमास पंचमी ।

साक्षि ( कि. ) फायदा होना,  
मिलना, लाभहोना, प्राप्त होना ।

साक्षिआक्षि ( सं. ) हानि-नाम, नफा  
नुकसान, फिजूल खर्चा, अप-  
व्ययता ।

साक्षिःशुभाक्षि ( सं. ) गणना करते  
समय शुभवाक्य रूपमें एकके  
लिये यह वचन प्रयोग करते हैं ।

रामा हैजी रामा है । बरकताबी  
बरकता ।

साक्षि दीने ( सं. ) एक प्रकारका  
दोरक जिसे विवाह समय लड़-  
केकी माता अपने हाथमें लेकर  
सब स्त्रियोंके आगे आगे चलती है ।  
साक्षि ( सं. ) आमकी लपट, उधरला,  
लौ, एक प्रकारका रेशमी वस्त्र,  
चाटना ।

साक्षि ( वि. ) योग्य उचित, सु-  
नासिब, पात्र, कबिल, उपयुक्त ।

घटित, तदनुसार । शक्ति संपन्न ।

साक्षि ( सं. ) योग्यता, काबि  
यत, आचेल, शक्ति, गुण ।

साक्षि वाशु ( वि. ) विनयी, नम्र,  
सुशील, सुगम सुयोग्य ।

साक्षि ( सं. ) शैली, गर्व, दंभ,  
घमण्ड, अकड़, अहंकार, आत्म-  
श्लाघा, हेकड़ी, बड़ाई ।

साक्षि ( सं. ) काठेनाई, दि-  
कृत । [कठिनतासे ।

साक्षि ( सं. ) सुदिकलने,

साक्षि ( सं. ) कतार पंक्ति, लाइन ।

साक्षि ( सं. ) शक गाड़ी, ठेला गाड़ी ।

साक्षि ( सं. ) कंठोको छापी, झां-  
कड़, जंजाल, डोला, जलवा. स-  
मुदाय, सुंः

**आरे ( म. )** पीठे, राय, संग,  
 लगाहुआ ।  
**आरे-आ ( सं. )** बचकता हुआ  
 अंगारा, अंगारा ( आगका ) ।  
**आस ( सं. )** रंगीला, बाँका, इरकी,  
 छैल, लाल रंगका पक्षी विशेष,  
 गोसाँईजीका लड़का । रत्नविशेष,  
 मूल्यवान लाल पत्थर, लालमणि,  
 ( वि. ) रक्तवर्ण, लाल रंगका ।  
**आसम् ( सं. )** लोभ, तृष्णा, चाह,  
 इच्छा, अभिलाष, लालसा, आकर्षण ।  
**आसम् ३२वीं ( कि. )** इच्छा करना,  
 आस करना, लोभ करना ।  
**आसम् आशी ( कि. )** लोभ  
 देना, लुभाना ।  
**आसम् ४२ ( वि. )** अत्यंत लाल,  
 खूबसूरत, कर्तुमेके वर्णका ।  
**आसम् ( वि. )** लोभी, लालची, पेदू ।  
**आसम् ७ ( वि. )** देखो आसम् ४२ ।  
**आसम् ( सं. )** कृष्णके बाळ रूपकी  
 बाहु निर्मित मूर्ति, बाळकृष्णकी  
 प्रतिमा ।  
**आसम् ( सं. )** प्रेमपूर्वक पालना,  
 पोसना, पालन करना, पोषण करना ।  
**आसम् १४ १५ ( कि. )** ज-  
 खाना, आय लगाना, धिक्कारना ।  
**आसम् १४ ( वि. )** गद्दिगाल,  
 रक्तवर्णका, चित्त तथा नेत्ररंजक ।

**आसम् ( सं. )** इच्छा, मनोरथ,  
 अभिलाष, तृष्णा, इच्छा, लोभ ।  
**आसा ( सं. )** एक प्रकारका पोषा,  
 पुष्प विशेष, बाँका, छैल, अलवेल ।  
**आसा ( सं. )** छैलापन, शेकी ।  
**आसा ( सं. )** देखो आसा ।  
**आसा ( सं. )** छलाई, अक्षयता ।  
**आसित्य ( सं. )** सुंदरता, मनोहरता,  
 रमणीयता ।  
**आसित्य ( सं. )** मंगी, नीच, शूद्र ।  
**आसी ( सं. )** छलाई, सुकी, रक्षिता,  
 पंटीके बीबंका लटकन ।  
**आव ( सं. )** देखो आवे । [ आव १ ।  
**आव १५ ( सं. )** नम्रता देखो ।  
**आव १५ ( सं. )** एक प्रकारकी काव्य  
 रचना, छन्दविशेष ।  
**आव १५ ( सं. )** चालू वर्षा  
 आसामीबार लेनेकी सूची ।  
**आव १५ ( सं. )** सुन्दरता, शरीरकी  
 स्वाभाविक प्रभा जिससे सुन्दरता  
 पैदा होती है, वाणीका माधुर्य  
 सफाई ।  
**आव १ ( सं. )** एक प्रकारका पक्षी ।  
**आव १ ( सं. )** कुतूहल भ्रंसना,  
 अंधयुक्त शब्दोंका उच्चारण,  
 कुतूहल गज्जन ।

आवधर ( सं. ) कौबकाय, सैम्य ।

आवधुं ( कि. ) लाना, पासलेखाना ।

बन्द करना । [ खेती ]

आवी भुवुं ( कि. ) उचितस्थानसे

आवुं ( सं. ) अच्छे अवसरपर

अपनी आतिके समस्त लोगोंको

समान कीमतकी और एकसी वस्तु

भेंट करना । हर्ष उपलक्ष्यमें

सबोंके एकसी वस्तु देना ।

आवे ( सं. ) इच्छा, बांछ, मनो-

रथ इच्छित आनंदकरी योग ।

आसे-स ( सं. ) मुर्छा, शव, लेव,

प्रेत, प्राणहीन शरीर ।

आखभुं ( कि. ) खराब होना,

नष्ट होना, पैमाल होना, बंश होना ।

आभ ( वि. ) पहिला, अम्बल,

लुक्सानमें पड़ा हुआ ।

आभस्थि ( वि. ) जो अपना कहा

परा नहीं करे, बंचल, अधीर, बे

ठिकाना ।

आह-आ ( सं. ) आग, आगि,

खोला, अंगार, बिगारी । भूख,

कुषा, कडाकेकी भूख रेशमी बख

रिषेव ।

आहृष्टि-धुं ( सं. ) वस्तुओंका

बंदबारा, बाबना, लावना ।

आहृ ( सं. ) डीक, विकम्ब ।

आहृथि ( वि. ) डीका आवकक

करने वाक्य, मुस्त ।

आहृ ( सं. ) कतार, पांति, पांति ।

आहृ-आ-आ ( सं. ) बचकता अंगार ।

आही ( सं. ) केही, स्वाई, आटे

अथवा मैदाको पानी में पकाकर

बनाया हुआ, विपक्व पदार्थ ।

आहृ-आ ( सं. ) देखो आहृ ।

आहृरी ( सं. ) सेवी, डोंग, दैम,

पाखंड ।

आण ( सं. ) लार, लाल, लाल,

मुसका चिकना बूक ।

आणभणवी-आहृ ( कि. ) लार

पड़ना, लार टपकना, मुहँ में

पानी भरना ।

आगिधुं ( वि. ) जिस के मुखसे

लार टपका करती हो । एक प्रकार

का कीड़ा । पहिने हुए कपड़े लार

सेव बिगड़ने पावें इस लिये लालक

के मले में बौधा हुआ एक कपड़े

का टुकड़ा । [ खान की लोल ।

आणी ( सं. ) कानका नीचेका भाग,

आणे ( सं. ) आगका भचकता

हुआ अंगार ।

आंड़ी ( सं. ) केही, खड़ा बकरी

आदिकी विज्ञा, भेंगन, भेंगनी,

कठोरमल ।

क्षिभडे। ( सं. ) नीम, नीमका पेड़,  
यह दो प्रकार का होता है कड़वा  
और मीठा, मीठे नीम के पत्ते कड़ा  
में ढाके जाते हैं ।

क्षिभु ( सं. ) निम्बू, नींबू एक  
प्रकारका लड्डा गुणदायक फल ।

क्षिभुडी ( सं. ) नींबूका पेड़ ।

क्षिभे७ ( सं. ) पूर्ववत् ।

क्षिभेडी-णी ( सं. ) निमोली,  
नीमवृक्ष का फल, एक प्रकार का  
तांबे का पात्र, स्वर्णाभूषण विशेष ।

क्षिभियु\* ( वि. ) लीखें निकालने  
का छोटा कंषा विशेष, जू के अंठों  
को सिके गालों में से खेंच नि-  
कालने का एक प्रकारका कंषा ।

क्षिभ ( सं. ) चिन्ह, निशान, व्या-  
करण शास्त्र वर्णित पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग  
और नपुंसकलिङ्ग, महादेवकी गोल  
मूर्ति, सूक्ष्मता, सूक्ष्मदेहत्व, पुरुष  
की मूर्त्येद्रिय, लंड, लौंडा ।

क्षिभडे६ ( सं. ) जीवात्माका सूक्ष्म  
शरीर, इस पार्थिव स्थूल शरीर से  
निकलकर जीव जिस शरीर में  
प्रविष्ट होता है वह शरीर, दश  
इंद्रिय पाँच प्राण मन और बुद्धि  
इनतत्त्वों से कल्पित जीव का सूक्ष्म  
शरीर ।

क्षिभवासना ( सं. ) सेमोगकी  
इच्छा, मैथुन करने की चाह ।

क्षिभाष्टत-यती ( सं. ) एक धार्मिक  
पंच विशेष, शिवलिंग चिन्ह धारी  
सम्प्रदाय विशेष ।

क्षिष्टियु ( वि. ) जिस के नाक से  
रात दिन रेट बहता हो ।

क्षिथेआ३ ( सं. ) शिलाछापखाना ।

क्षिथेआ३ ( सं. ) शिलापर लिख  
कर मुद्रण करने की विद्या ।

क्षिपथ ( सं. ) लीपने की रीति, वह  
जो कि लीपा हुआ हो । [ पुता ।

क्षिप्त ( वि. ) लीपा हुआ, तिरपा,

क्षिप्ता ( सं. ) इच्छा, चाह, स्नेह ।

क्षिपु\* ( क्रि. ) लेपन करना, पो-  
तना, लीपकर बिगाड़ देना ।

क्षिपि ( म. ) लेख, हस्त लेख,  
हस्ताक्षर, अक्षर, मूलाक्षर, दस्त  
खत, वर्ण चिन्ह, हुक्फ ।

क्षिपिपारा ( सं. ) लिपिका शास्त्र  
करांन वाली पुस्तक, स्पेलिंग बुक ।

क्षिप्तास ( सं. ) देखो देखो

क्षिभेडी-डे। ( सं. ) नीम, निम्बवृक्ष,  
नीमका एक जाति विशेष ।

क्षिभे२७५ ( सं. ) चैत्र शुक्ल प्रति  
पदा के दिन शालिवाहन शक के  
नवें वर्ष के प्रथम दिन नीमका रस  
पीना महात्म्य में गिना जाता है ।

विश्वामित्र ( सं. ) योग्यता, काम  
 क्रियत, तर्माज, हौसिला, बुद्धि ।  
 विश्वामित्र ( वि. ) नीलता लिये,  
 हरित वर्ण ।  
 विश्वामु ( सं. ) देखो विश्वामु  
 विश्वाम ( सं. ) नीलम, कामता पत्थर  
 विशेष । [ कपाल, पेशाना, मस्तक ।  
 विश्वाम ( सं. ) ललाट, भाल,  
 विश्वाम ( सं. ) बीज विशेष ।  
 विश्वामेषु ( सं. ) एक प्रकारका घास  
 जिसकी डलियाँ (टोकनी) बनती हैं ।  
 विश्वामे ( सं. ) जौकी यानि में  
 अग बाहर दिखता हुआ लम्बा  
 गोल चमड़ी का भाग, टना,  
 बीज विशेष । [ का पानी, माया ।  
 विश्वामाप्ति ( सं. ) हरापानी, भंग  
 विश्वामु ( सं. ) ऐसा मैदान जहाँ  
 हरीघास उगी रहता हो, हरामैदान ।  
 विश्वाम ( सं. ) नीलम, जो अधिक  
 मूल्य दे वही मोठलं सके ऐसा  
 बेचने का ढंग विशेष ।  
 विश्वामु ( सं. ) चकत्ता, बिन्दु,  
 चावकी निशानी, दाग, कुर्याविन्द ।  
 विश्वामदेर-मेदेर ( सं. ) पूर्णपुष्प,  
 पूर्ण आवन्द, महान समृद्धि, पर  
 मानन्द ।

विश्वामित्र ( सं. ) मग्नित विरोध,  
 कामातुरा जी, छिनाळ औरत,  
 मस्त जी, चिल मुली औरत ।  
 विश्वामित्र ( वि. ) मृत, मुर्दा,  
 निर्जीव, अस्वस्थ, क्षण ।  
 विश्वामिडी ( सं. ) भंग, भोग, बड़ी  
 ( वानिका )  
 विश्वामिडी ( सं. ) एक प्रकारकी  
 घास, हरीचाह ( पेयपदार्थ )  
 विश्वाम ( वि. ) गहराहरा, अत्यंत  
 हरा, आतशय हरितवर्ण ।  
 विश्वामु ( सं. ) अवगति और  
 उन्नति, ( वि. ) हरी, ( सूची  
 हुई ) कठोरवस्तु, बुरे भले होनेका  
 विश्वामिडी ( सं. ) अति बृष्टि के  
 कारण दुर्भिक्ष, पनिया काळ ।  
 विश्वामिडी-त्री ( सं. ) पृथ्वीपर हरे  
 पौधे, वृक्ष आदि, साक भाजी ।  
 हरी तरकारी ।  
 विश्वामिडी ( सं. ) हरा मेवा, ऐसे  
 फलजो सूजे नहीं, हरेफल ।  
 विश्वामिडी ( सं. ) छोटीलकीर, छेक  
 ने कीलकीर, टिक मार्क ।  
 विश्वामिडी ( सं. ) बड़ी लकीर, छेका ।  
 विश्वाम ( सं. ) सूची, अनुक्रमणिका,  
 टीप, नाव ।

धीट ( सं. ) रेंट, रीट, नाकका बसाव ।

धीपु ( सं. ) देखो क्षिप

धीपुं ( कि. ) देखो क्षिपुं

धीक ( सं. ) रेखा, बिन्दु, पगदण्डी, लकीर, हर ।

धीप ( सं. ) सिर के बाटों की छोटी जूँ, जूँ नामक जीव के अण्डे ।

धीट ( सं. ) देखो धीट

धीटी ( सं. ) लाइन, सतर, रेखा, लकीर पंक्ति, पंगत, पौंति, चरण ( काव्य ) चबूती का सांकेतिक शब्द, पाव सपसा ।

धीटी भेँवनी ( कि. ) लकीर खींचना, रह करना, हर टहरना, निश्चय करना ।

धीटीदारनी ( कि. ) पूर्ववत् ।

धीटी ( सं. ) बड़ी लकीर, लम्बी मोटी रेखा ।

धीडी-धीडी ( सं. ) मँगन, मँगनी, शुष्क विद्या, बकरी चूहे आदिकी विद्या ।

धीडीपीपर ( सं. ) लम्बी पीपल, औषधि विशेष, छोटी पीपल ।

धीडुं-धीडुं ( सं. ) विद्या, कठोर मल, कुत्ता गधे इ० का गू ।

धीड ( सं. ) देखो धाड

धीडुं ( वि. ) किया, प्राप्त किया, हासिल ।

धीधि ( सं० ) लिये, अतः, अतएव, एतदर्थ, इस लिये, इसवास्ते, इस कारण ।

धीन ( वि. ) तन्मय, सत्वर, आसक्त, हुआ हुआ, मग्न । [विशेष ।

धीधुं ( सं. ) निम्बू, नीबू, फल

धीभ-डे ( सं. ) देखो धिभडे

धीभडे धाडधुं ( कि. ) असह गति पाना ।

धीक्ष ( सं. ) काई, सिबाह, पानी की हरी हरी रपटनी कीचड़, कर्दम ।

धीक्षपरधुनी ( कि. ) पहिली लड़की को मरे एक वर्षभी नहीं हुआ हो और इसी बीच दूसरा विवाह करना ।

धीक्षवाणरी ( कि. ) धूलधानी करना, बिगाड़ डालना, खराब करना ।

धीधकंड ( सं. ) चाप पक्षी, नाक कंठ नामक पक्षी, पक्षी विशेष, विष्णु, महादेव । [बेहया ।

धीधन्य ( वि. ) निर्लज्ज, बेशर्म,

धीधनेवडे ( सं. ) निर्लज्जता, बेशर्मी । [इत्यादि ।

धीधन्य ( सं. ) हरीशक्त तरकारी

वीक्ष्य ( सं. ) बचपन, लड़कपन,  
बाल्यावस्था, शैशवकाल ।

वीक्ष ( सं. ) कीड़ा, विहार, खेल,  
कौतुक, विनोद, तमाशा, ठाठ,  
खूबों, अवतार, अवतारों के कार्य,  
विजय श्रद्धे, अनुकरण ।

वीक्षावस्तारी ( सं. ) मरगये, कत-  
महो गये, छाँला संवरण ।

वीक्षासहेर ( सं. ) देको शिखासहेर

वीक्षीपीठ ( सं. ) साक बजार,  
भाजी बाजार, वह बाजार जहाँ  
शाक भाजी बिकता है ।

वीक्षुं ( वि. ) हरा हारत, मीमा,  
गोळा, तर, ताजा, सरस, रसाला ।

वीक्षुं ३२पुं ( कि. ) नयाकरना,  
उत्थालना । [ हरा ।

वीक्षुं ३३ ( वि. ) हराकर, बहुत

वीक्षाजालतणेषु भेदरे ज्ञेयुं आळती,  
सुस्त, काहेळ, परमुखापेक्षी ।

वीक्षापाथी ( सं. ) भग, भाँग,  
माया ।

वीक्षा सुधाने विचार ( सं. ) जिसे  
लाभालाभ, धर्माधर्म मान मर्त्यादा  
आदिका ध्यान न हो ।

वीक्षीधिडी ( सं. ) इरीभंग, भाँग,  
माका, मादक पदार्थ, नशेदार  
वनस्पति ।

वीक्षी वेधक्ष ( सं. ) बलताबग्या,  
ताबा कारवार ।

वीक्षीवादी ( सं. ) बबानी, मौमना-  
वस्था, तादृश्य [ काम करना ।

वीक्षुं ३२पुं ( कि. ) अच्छ करना,

वीक्षुं ३३पक्षुं ( सं. ) शौकीन बुढावा ।

वीक्षुं पीणुं बध ३२पुं ( कि. )  
कुद होना, बड़ा भारी गुस्सा  
करना ।

वीक्षुं बाणुं ( कि. ) फायदाकरना

वीक्षे तेरखे ( सं. ) आये बैसे ही,  
निष्कलता युक्त ।

वीक्षे दुःख ( सं. ) अति दुष्टि-  
नित दुर्मिष्ट, पवित्राकाश

वीक्षुं ( वि. ) बिकना, स्वच्छ,  
साफ, चेपदार, कोमल, मोम,  
मधुर, गप्पी, आविखल ।

वीक्ष-वी ( सं. ) लाइन, रेखा,  
लकीर, सोमा, हर, हर ।

धुंजी ( सं. ) वह वज्र जिसे नापित  
झोर कारके समय गोदीमें बिलता  
है । हजामत बनवाते समय, वह  
कपडा जिसे नाई गोद में बिलता  
है ।

धुंजी ( सं. ) पीछे खेटना ।

धुंटी ( सं. ) छट, अपहरण, अप-  
हार, डकैती, डाका, चोरी ।

धुंध ( कि. ) देखो धुंध ।

धुंधिल ( स. ) डाकू, ठग, चोर  
लुटेरा ।

धुंध ( स. ) पति, स्वामी, धनी,  
ससम ( वि. ) भारी, जबर  
बलवान ।

धुंध ( स. ) पूर्ववत् ।

धुंधी ( सं. ) लौंडा, दासी, बांदा,  
सेवक ( स्त्री ) गृहकार्य के लिये  
मालती हहं ( स्त्री ) [ पिण्ड ।

धुंध ( स. ) लौंडा, गला, घोषा,

धुंध ( म. ) झब्बा, गुच्छा, झुमक  
लुम ।

धुंध ( म. ) आटेका गोला विशेष, लु

धुंध ( सं. ) गेहू या बाजरा के  
आटे का बनाया हुआ गोला  
विशेष, नोआ, आंगूठी की छाती ।

धुंध-धुंध ( सं. ) गरम हवाका सौंका  
ल, ललगजाने का बीमारी ।

धुंधरी धुंधल ( सं. ) लुजली, ग्लाब,  
रोग, विशेष । [ टीका हुक्का ।

धुंधिल ( सं. ) एक प्रकारका मि-

धुंधिल-धुंधिल ( वि. ) बिना चुपड़ा  
हुआ, रुखा, झुंझ, रुझ, चिकनाई  
रहित, शाक भाजी बिना मोहन,  
तेज कार्तिहीन मुख, धनहीन,  
इव्य शून्य ।

धुंधल ( सं. ) बल, पोंगाक, कपड़े ।

धुंधलता ( सं. ) कपड़ेलते ।

धुंधल ( सं. ) कपड़ा, बल, बसन,  
लूधड़ा, ओढनी, फरिया, चौर,  
सादी, ( स्त्रियाका ) आच्छादन वस्त्र ।

धुंधली ( सं. ) गोलोंगोली, लुन्दी ।

धुंधल ( सं. ) कोंब, भण्डार, डि-  
कशनेरी ।

धुंधल ( सं. ) बढमायी, कुकमे,  
अन्याय, बराचार दृष्टता ।

धुंधल ( सं. ) कुकमी, लुन्दी,  
पांजा, उच्छलल दृष्ट, चालाक,  
ठग, छला ।

धुंधलधुंधल ( सं. ) दुवाल, टाबेल  
तौलिया, साफा, अगोछा, अग  
दल्यादि पोंछनेका वस्त्र ।

धुंधल ( कि. ) कपड़ेसे रंगद भस्म  
कर साफ करना । ठगना, चिथना  
निकाल देना ।

धुंधल ( सं. ) तोड़ फोड़ करके छ  
टना छानासपटो, लूट खसोट ।  
धामधूमका लूट ।

धुंधल ( कि. ) बलात्कार पूर्वक  
छीनना, बल से अपहरण करना,  
जबरदस्ती से ले लेना । लूटना,  
ठगना, काँका मारना, चोरी करके  
आनंद लेना ।



शुद्धि (वि.) लूट हुआ, लूटे  
बोझ, बिना मालिकता मात्र ।

शुद्धि (सं.) लूटनेवाला, लूटेरा ठग ।

शुद्धि (सं.) इधर उधर लूटमार,  
निर्ममता पूर्वक लूट खसोट ।

शुद्धि (क्रि.) लुटाना, गैबाना,  
खोना, उठाना, दे देना, धरबाद  
करना । [ के मालमत्ता छीन लेना ।

शुद्धि (सं.) लूटमार

शुद्धि (सं.) नमक, लवण, नोन,  
निमक, खारा, क्षार, खार, उपकार,  
अहसान, अनुकम्पा ।

शुद्धि (क्रि.) राईनोन करना  
नजर इत्यादि उतारने के लिये  
चाराहे की मिठी, राई, नमक और  
मिर्चा रोगी व्यक्ति के सिर पर से  
उसार के अग्निमें डालना । ककड़ी  
का अग्र भाग जरा काटकर उस  
में गड्डे करके उस काटे हुए भाग  
से घिसकर स्राग पैदा करके उस  
का पित्त निकालना ।

शुद्धि (सं.) ककड़ी में नमक  
इत्यादि मिलाकर बनाया हुआ  
पदार्थ विशेष ।

शुद्धि (वि.) नमक हराय,  
कटु, अतुपकारी, नीच, दुष्टान ।

शुद्धि (सं.) कृतज्ञता, नमक  
हरामी ।

शुद्धि (सं.) एक प्रकार की हरी  
मार्जा, तरकारी विशेष । शाक  
विशेष । [ से नू निकलता है ।

शुद्धि (सं.) बहुआर जो दीवारों  
शुद्धि (क्रि.) दीवारों पर  
क्षार दृष्टि आना ।

शुद्धि (वि.) नष्ट, बिध्वस्त, आँखों  
की ओट, अदर्शन, बीचमें से  
काटा हुआ (अक्षर, शब्द इत्यादि)

शुद्धि (सं.) अलंकार विशेष

शुद्धि (वि.) लोभी, स्वार्थी,  
सतृष्ण, तृणायुक्त, अभिजाती,  
लोलुप, धनार्थी, इप्सु, लंपट ।

शुद्धि (सं.) शिकारी, व्याध,  
बोलिया, मृगयार्थी ।

शुद्धि (क्रि.) लुभाना, मोहित  
होना, ललचमें पड़ना, तृप्ति  
होना । [ मुमका ।

शुद्धि-शुद्धि (सं.) सच्चा, शुद्ध,

शुद्धि-शुद्धि (सं.) पूर्ववत्, ज्ञान ।  
फायदा, मुनाफा । [ लौही, बौदी ।

शुद्धि (सं.) दासी, टहुलमी ।

शुद्धि (सं.) बीज, बिन्हा, अजान ।

शुद्धि (सं.) राजपूत व्यक्ति  
विशेष की छी ।

धुधः ( सं. ) राजपूतों की एक जाति विशेष । [निर्बल ।

धुध ( वि. ) लंगड़ा, लूला, पंगु, धुधार ( सं. ) लोहका काम करने वाले लोग, लोहकार, लुहार, लोहार, जाति विशेष, पंजीविशेष ।

धुध ( सं. ) देखो धुधो । [ खाना ।  
धुध धुध ( अ० ) जल्दी जल्दी में  
धुध ( वि. ) बका, भ्रमित, भ्रान्त, डीला ।

धुध ( सं. ) गरम वायुका झोंका, प्रीष्ण ऋतुकी तप्त हवा । लू से आया हुआ उच्चर ।

धुध ( सं. ) चोरी, अपहरण, अपहार, डकैती, डांका, ।

धुधुं ( कि. ) उलट पुलट करना, गढ़वढ़ करना ।

धुध ( सं. ) देखो धुध ।

धुधी ( सं. ) देखो धुधी ।

धुधुं ( वि. ) देखो धुधुं । [ पत्तो ।

धुधुधता ( सं. ) सुशामद, लज्जो-

धुधुं ( कि. ) लटकना, टंगना, झूलना । [ खाना ।

धुधधुधुं ( कि. ) ( स्वर ) मि-

धुध ( सं. ) लटक, झुकनेकी रीति ।

धुधधुं ( कि. ) कुछ संगठना, व्यवहार करना, संगठन करना । [ धुधका ।

धुध ( सं. ) छोटा पञ्जामा ( व-

धुध ( सं. ) बड़ा पावजामा, सूचन

धुधना, पञ्जामा ।

धुध ( सं. ) गेहूं की पतली रोटी,

चपाती, फुलका, एक प्रकार की अच्छी रोटी ।

धुध ( सं. ) देखो धुध [ अगर ।

धुध ( अ० ) परन्तु, पर, किंतु.

धुध ( सं. ) लिखन, लिखित, प्रबंध

लिखतंग, रचना, लिखावट, करार

भाग्य, किस्मत, हस्ताक्षर ।

धुध ( सं. ) लिखनेवाला मनुष्य,

लिपिकर, प्रबंधकर्ता, नकल नवीक ।

धुधधुनी ( सं. ) कलम, लिखने

का साधन । [ लिखावट, लिखना ।

धुधधु ( सं. ) लिपि, लिखाई,

धुधधुधु ( सं. ) लिखनेकी विद्या,

लिपि विद्या ।

धुधधुधुधु ( सं. ) लिखनेका ढंग,

लिखनेकी रीति ।

धुधधुधुधु ( सं. ) हफ्तारामा, हस्ता-

वेक, पतिकापत्र, हस्तलेख ।

शे० अ० अ० ( सं. ) लिखा हुआ  
सुसूत, लिपिवद्ध प्रमाण ।

शे० अ० पुं-पुं ( कि. ) गिनना, मानना  
समझना, परबाह करना, हिसाब  
में लेना, लेखा करना । [ पंक्ति ।

शे० अ० ( सं. ) रेखा, सतर, लकीर,

शे० अ० वटिथे। ( सं. ) गणित, वेत्ता,  
गणक, हिसाबी, गणितज्ञ ।

शे० अ० ( सं. ) कलम, पेन ।

शे० अ० ( सं. ) गिनती, हिसाब, लेखा  
प्रमाण, लेख, लिखित ।

शे० अ० ( अ० ) हिसाबसे, रीति से,  
प्रमाणपूर्वक, अनुसार, में, पर, से,  
ओर ।

शे० अ० अ० पुं ( कि. ) हिसाब में  
आना, गिनती में आना, काम में  
आना ।

शे० अ० अ० ( सं. ) देखो शे० अ० अ०

शे० अ० ( सं. ) देखो शे० अ० अ०

शे० अ० ( सं. ) एक प्रकारका जंजीर  
युक्त धनुष जो कसरतियों की  
कसरत के काम में आता है ।

शे० अ० पुं ( कि. ) डेटना, खोना, खनन  
करना, खाराम करना, बिनाम  
लेना, छूटना, सीधे खो जाना ।

शे० अ० ( सं. ) लेना, लेने योग्य, उधार  
कर्ष ( दिया हुआ लेना ) मिली  
ढण्डे के लेखों एक प्रकारका ढाँच ।  
( वि. ) लेनेवाला ।

शे० अ० अ० ( अ० ) व्यवहार, व्यापार ।

शे० अ० अ० ( सं. ) लेनेवाला, ऋणदिया  
हुआ वापिस लेनेवाला, देने लेनेका  
व्यापार करनेवाला ।

शे० अ० अ० ( सं. ) लेनेदन, व्यवहार,  
व्यापार, ऋणानुबंध, प्रतिभाव ।

शे० अ० अ० ( सं. ) मांगनेवाला, कर्ष  
देनेवाला, साहूकार ।

शे० अ० ( सं. ) लेना, ऋणदिया हुआ  
द्रव्य पीछा लौटाना, सुख कारक  
सम्बन्ध प्रीति, गणना ।

शे० अ० ( सं. ) पोतनेवाला, मरहम,  
मरहम, चोपड़, पलस्तर ।

शे० अ० ( सं. ) दरदपर बांधनेकी  
किसी वस्तुकी लुगदी, पुलटिस ।

शे० अ० ( सं. ) लेप करना, पोतना,  
चुपड़न पलस्तर करना ।

शे० अ० पुं ( कि. ) लेपना, पोतना,  
चुपड़ना, लेपन करना, ढाँकना ।

शे० अ० ( सं. ) लघाहुआ कीचड़, लिपड़ी  
हुई कीच, ( पैरों या जूतों इ. का )

शे० अ० ( सं. ) पहिरावा, पोशाक,  
लिबास, पहिने ओढ़नेका ढाँच ।

शेखातु ( वि. ) इधरउधरसे कुट्ट-  
कर अपना कहकर बताने वाला,  
सौद धूप करनेवाला, लेकर भाग  
जानेवाला ।

शेमेख ( सं. ) मृत्युकी तय्यारी,  
पृथ्वीपर उतार लेना, जिसके प्राण  
निकलनेकी तय्यारी होती है उसे  
चारपाई परसे भूमिपर उतारना,  
जल्दी तय्यारी । [ फलेंका गुच्छा ।

शेरधुं ( सं. ) वृक्षपर लटकते हुए  
शेलाह-वह ( सं. ) कपाल, सोपड़ी,  
माया, माळ, कलान्द्र ।

शेलाह ( सं. ) पूर्ववत् ।

शेलाह ( वि. ) बहुत, अधिक, अ-  
तिशय, विशेष, अत्यंत । [ पक्षी ।

शेला ( सं. ) एक जातका नीला

शेधुह ( वि. ) बहुत, पुष्कळ, घना ।

शेधुह ( सं. ) जल्दी, उतावळ,  
शीघ्रता ।

शेधुर ( सं. ) देखो शेलाह ।

शेधे भवधुं ( वि. ) दुर्बल, निर्बल,  
बेहाल । [ विशेष ।

शेधे ( सं. ) एक प्रकारका औजार

शेवटा-टी ( सं. ) छोटी मल्लियां ।

शेवह ( सं. ) व्यवहार, सम्बन्ध,

लेन देन, दिया हुआ पण वस्तु  
करना ।

शेवहदेवह ( सं. ) देखो शेधुदेधु ।

शेवहह ( वि. ) छिनाह, व्यभि-  
चारी, कंपट, परपुरुषमामिनी ।

शेवाधभवुं-शेवाधुं ( कि. ) धर-  
माना, झुकजाना नमना ।

शेवादेवा ( सं. ) लेन देन, व्यापार,  
व्यवहार, सम्बन्ध ।

शेवाधुं ( कि. ) सेंपना, सरमाना  
लज्जित होना, अपमान होना,  
दुर्बल होना, अधिकार में खना ।

शेधुं ( कि. ) लेना, ग्रहणकरना,  
अधिकारमें करना, पकड़ना, प्राप्त  
करना, स्वीकारना, अम्दरलेना,  
मिलाना, खाना, पीना, प्राप्तन  
करना, खेचना, भाव ठहरना,  
गिनना, गणना करना, धारण क-  
रना, खना, बुलवाना, हरना,  
रहित करना, नाश करना, खरी-  
दना, पास खाना, धमकाना, छि-  
खना, नोट करना, लेजाना, बो-  
लना, उच्चारण करना, आरंभ  
करना, मिलाना । [ खाना ।

शेधुं शेधुं ( कि. ) डेरना, बच-

शेधुं शेधुं ( कि. ) अपनेपास रखना,  
संग्रह करना ।

बेधवपुं ( वि. ) से याचना कुल-  
केवावा ।

बेने गर्ध पूतने जेष्ठ आनी अक्षय-  
बीनेबी गये छम्बेबी होने रह गये  
हुन्नेबी, बेटा छेने गर्ह परंतु अस-  
ममी दे वार्ह ।

बेनेकु छःछः ने देनेकु ५२५२०००नेको  
हां हां और देनेको हतिथी ।

बेपु हेपुं ( सं. ) बेधुदेधु देखो ।

बेक्ष ( सं. ) अल्प, लघु, थोड़ा,  
स्वल्प, अल्प, लघ, मात्रा, कुछ,  
( अ. ) थोड़ाक, बिलकुलही ।

बेक्षभात्र ( अ० ) थोड़ाही, जरासाही ।

बेक्ष ( सं. ) चाटना, चटनी प्रीति,  
लय, ध्यान ।

बेदेअवपुं ( सं. ) बढ़ाना, चढाना,  
( स्वर ) । [ हवा, मंद, मंदवायु ।

बेदेडी ( सं. ) हल्की या धीमी

बेदेके ( सं. ) चाल, वंग, हरकत, गति ।

बेदेअत ( सं. ) रस, मजा, आनन्द ।

बेदेले ( सं. ) लव, पल, सण,  
निमेष, लहमा, सेकण्ड ।

बेदेधुं ( सं. ) उचित, चाही,  
पूज, देय ।

बेदेइ ( वि. ) धीमा, मंदवायु ।

बेदेवीन ( वि. ) तन्वीन, तन्मय ।

बेदेवापुं ( वि. ) अतामा, समझाना ।

बेदेपुं ( वि. ) मनमें धारणा, सच-  
झाना, जानना, धारण करना ।

बेदे ( सं. ) देखो धिद्धियो ।

बेदेडी ( सं. ) जोमदी, जोमा, एक  
जंगली जानवर विशेष ।

बेदे ( वि. ) धनधान, पैसेवाला ।

बेदे ( सं. ) हस्तकण्ठ, बलवान,  
तगड़ा, मजबूत, बलवान, बार,  
पति, असम, स्वामी, होसियार,  
बालाक ।

बेदे ( सं. ) दासी, बाकरी, मौकरनी ।

बेदे ( सं. ) दास, सेवक, गुलाम,  
मोल लिया हुआ पुरुष ।

बेदेनीये ( सं. ) जोड़ीसे उत्पन्न  
पुत्र, दासीपुत्र ।

बेदे ( सं. ) पिण्डा, मिट्टी आदिका  
पिंडा, डेल, लुगदा, बोंबा, पिं-  
डोळा, गोळा, गीले पदार्थकी बड़ी  
लुगदी । ( वि. ) डीला, नर्म ।

बेदेरी ( सं. ) ऊलका बहुमुख्य वन ।

बेदे ( सं. ) भुवन, द्वीप, मनु-  
ष्योका वास स्थान, कौम, प्रजा,  
जाति, जेग, जन, मनुष्य, खलकत  
वर्ग, मंडली, अगत, दुनिशा ।

बेदे ( सं. ) दन्तकथा, गप्पपु-  
राण, अजानी बातचर्चा, वे प्रमाण  
बात ।

श्लोकावली ( सं. ) बाजार गण्य,  
साधारण बात, अफवाह, किम्ब-  
दन्ति । [ वचं ( कवितामें ) ] ।  
श्लोकावली ( सं. ) साधारण लोगोंका  
श्लोकप्रसिद्ध ( वि. ) विख्यात, मश-  
हूर, प्रगट, जगत् प्रसिद्ध । [ प्रिय ।  
श्लोकप्रिय ( वि. ) सर्वप्रिय, जगत्  
श्लोकप्रसिद्ध ( सं. ) रुढि, रीति, रस्म,  
लोकपरंपरा ।  
श्लोकमत-वाणी ( सं. ) लोगोंके  
विचार, कहावत, मिसाल ।  
श्लोकावली ( सं. ) लोक व्यवहार,  
सासारिक बर्ताव, प्रकृत रीति ।  
श्लोकावली ( सं. ) जनतामें शर्म,  
संसारका शर्म, आवरु । [ कथा ।  
श्लोकवाचक ( सं. ) जनकथा, दंत-  
श्लोक व्यवहार ( सं. ) लोकरुढि,  
लोकचार, रीति रिवाज ।  
श्लोकावली ( सं. ) अंतर, वैचित्र्य, भेद,  
परायापना, अम्यत्व ।  
श्लोकावली ( सं. ) देखो श्लोकव्यवहार ।  
श्लोकावली ( सं. ) निंदा, बुराई,  
अपवाद ।  
श्लोकावली ( सं. ) किसीके मृत्यु समय-  
पर उसके कुटुम्बियोंके साथ शोक  
प्रदर्शित करनेके लिये जाना ।

श्लोकावली ( सं. ) मुहंसे, अफ-  
वाही । [ वाणी ।  
श्लोकावली ( वि. ) नास्तिक, अनीश्वर  
श्लोकावली ( वि. ) साधारण लोगोंके  
विचारोंसेभी परे, बहुत ऊँच, ब-  
हुत सरस, परलोक ।  
श्लोकावली ( सं. ) कल्याण, दुस्-  
खोंकी भलाई, परकल्याण, दुस्-  
खोंका उपकार । [ विशेष ।  
श्लोकावली ( सं. ) लोह, लोहा, धातु  
श्लोकावली ( सं. ) लोह निर्मित,  
लोहेका बनाहुआ । [ बोले ।  
श्लोकावली ( सं. ) स्तन, धन, कुच,  
श्लोकावली ( सं. ) अपने हाथों अपने  
बाल उलाड़ना ( जैनधर्म ) ।  
श्लोकावली ( सं. ) मोचन, उलाड़ना,  
दूरकरना, नोचना, छूट, छटना,  
आख, नेत्र, नयन, चक्षु, ज्ञान ।  
श्लोकावली ( सं. ) बेचैनी, व्याकुलता,  
चांचल्य, निद्रा, तकलीफ, कष्ट,  
क्लेश । [ चाहना, भटकना ।  
श्लोकावली ( कि. ) आतुरता पूर्वक  
श्लोकावली ( सं. ) लुगद, लुगदा, डेर,  
उलटासीधा, गद्गद, हकलना,  
तुलना । तकरार ।

बोधापुं ( कि. ) विपटन, चव-  
राना ।

बोडा ( सं. ) आटा, चून, चूर्ण,  
( वि. ) आटेके समान बारीक ।

बोडाके ( सं. ) मद्योका वर्तन वि-  
शेष ।

बोडाबु ( सं. ) एक प्रकारका कन्-  
सर पक्षी, कपोत विशेष, एक प-  
क्षीका एक जाति । [ उलटा सीधा ।

बोडापोडा ( वि. ) लकड़न, पटकर,

बोडापुं ( कि. ) लोटना, लडकना, लड-  
फना, छटपटाना, पटकना, पटकन  
खाना, गुलमचखाना, सोना, दुर्घ-  
सममें छित होना, नष्टहोना, आ-  
धीन होना ।

बोडाधे ( सं. ) बोहरा, मुसलमा-  
नोंकी एक जाति विशेष, ( वि. )  
सिरमुंडा हुआ ।

बोडी ( सं. ) पानी पीनेका छोटा  
पात्र विशेष, छोटा लोटा, छुटिया,  
चण्डी, गढ़वी । [ गढ़वा ।

बोडे ( सं. ) लोटा, पात्र विशेष,

बोड ( सं. ) मुल्ल, हिमाला, तरंग,  
कहर, लहरार ।

बोडापुं ( कि. ) लोटना ( कपास )  
कपासमेंसे रुई और बिगोले किसी  
वस्त्र विशेष द्वारा निकालना ।

बोडा ( सं. ) छोह चातुके बीमार ।

बोडा-नी सडा ( सं. ) छोहकी प-  
टरी वार सड़क, रेखे ।

बोडी ( सं. ) कड़ाई, छोहका तपा ।

बोडुं ( सं. ) लोह, लोहा, चातु  
विशेष, उस्तरा, छुर, छुरा ।

बोडा ( वि. ) निजीब, निस्तेज,  
खराब, कुस्त, मुर्दा, मूर्ख, घट,  
अक्षक, बका, निर्बल, रसहीन,  
गव, लस, मृतदेह, ऐसा मनुष्य  
जिसे उठाना कठिनहो, चार पाई,  
रखी ठठरी, संगती । शबनाम ।

बोडापोडा ( वि. ) थक करके डीछ  
पड़ा हुआ ।

बोडाडी ( सं. ) भूमत वर्षाद वर्ष  
रासमें सेककर बनाई हुई रोटी ।

बोडापुं ( कि. ) छटपटाना, लडकना ।

बोडारी ( सं. ) लंगर, "नाब वा  
जहाजको उदरलेके लिये बखल  
युक्त जंजीर ।

बोडापुं ( वि. ) निकम्मा, ब्यर्थ,  
खराब, गमाबीला, निजीब, निर्बल

बोडापुं ( कि. ) गूँघना, मोडना,  
खनना, गूँदना ।

बो१५२ ( सं. ) लोह नामक औषधि,  
एक वृक्ष विशेष और उसकी छाल,  
तेल इत्यादि मालकर सेंका हुआ  
गेहूँका आटा ।

बो१५ ( सं. ) अदृश्य, अवर्शन,  
माया, विचित्रता, अगोचर, गुप्त ।

बो१५३ ( कि. ) उल्लंघन करना,  
नसानना, अवज्ञा करना, मिटाना,  
गायब करना । [ दास्त ।

बो१५ ( सं. ) स्मरणशक्ति, याद-

बो१५४ ( सं. ) कामलौ, कमल,  
लोही ।

बो१५५ ( सं. ) सुगन्ध युक्त द्रव्य  
विशेष जो धूपके लिये बलाया जाता  
है । एक वृक्षका गोंद विशेष, औ-  
षधि विशेष ।

बो१५ ( सं. ) तृष्णा, लालच, इच्छा,  
ईप्सा, चाह, कांक्षा ।

बो१५६ ( कि. ) लुभाना, सतृष्ण  
होना, ललचावा ।

बो१५७ ( वि. ) लोभी,  
कालची इच्छुक ।

बो१५ ( सं. ) रोम, रोंगा, कंठटा,  
रोंगटा, पशु, लोम ।

बो१५८ ( वि. ) बसद् प-  
सद् युक्त, संकल्प विकल्प वाला ।

बो१५ ( सं. ) गोल चक्करमें दोनों  
हाथ फैलाकर घूमना, गोल गति ।

बो१५९ ( सं. ) क्षमका, करन फूल,  
लटकन । [ इन्द्र ।

बो१६० ( वि. ) लालची, लोभी,

बो१६१ ( सं. ) मनोहर बालवाली  
स्त्री ।

बो१६२ ( सं. ) जीम, जिम्हा, जवान ।

बो१६३-१६४ ( सं. ) बाल, कंजी,  
गेहूँके तर्जकी वाले सिरेया भुँट ।

बो१६५ ( वि. ) मम, दूबा हुआ ।

बो१६६ ( कि. ) देवी धुल्लु ।

बो१६७ ( सं. ) लोहा, धातु विशेष,  
लोह, लोह सार ।

बो१६८ ( सं. ) लोहके भेदसे  
बनी हुई औषधि, औषधि विशेष ।

बो१६९ ( सं. ) लोहको आक-  
र्षण करनेवाली धातु विशेष, अव-  
स्कांत । [ लोह वृत् ।

बो१७० ( सं. ) लोहका चूरा,

बो१७१ ( सं. ) लोहकी चाक,  
औषधि विशेष, बंगभस्म ।

बो१७२-१७३ ( वि. ) बहुत मोटा  
और बलवान मनुष्य, प्रामीष ।

बो१७४ ( कि. ) निर्मूल करना, स्वच्छ  
करना, पोंछना साफ़ा ।



बोधि पात्र-धुं ( वि. ) रक्त चि-  
चित्त, धन से उत्पन्न, ओष्ठुल्लस्य ।

बोधिधुं ( सं. ) कबाई, ओष्ठुल्ल  
बना हुआ पात्र विशेष ।

बोधि बोधाधुं ( वि. ) धनमें त-  
रोतर, धनमधून ।

बोधी ( सं. ) सचिर, शोभित,  
रक्त, ऊट्ट, लोह, धून, कुल, स-  
म्बन्ध, वंश, नाता, रिश्ता ।

बोधी ५५धुं ( कि. ) शरीरस्थ  
किसी हृन्निवसे, रक्त प्रवाह होना ।

बोधी आ५धुं ( कि. ) शरीरमें  
नया रक्त उत्पन्न होना ।

बोधीतुं त११धुं ( वि. ) धनका  
प्यासा, रक्तपात करनेके लिये  
आतुर शत्रु ।

बोधी उ१धुं ( कि. ) कोष जाना,  
कोषमें जल उठना ।

बोधी उ१धो १२ने। ( कि. ) को-  
षमें होना, गरम होना, आवेष्टमें  
जाना ।

बोधी उ१ी ७७धुं ( कि. ) दुर्जी-  
जाती रहना, पीछा पड़ना, नि-  
स्तोत्र होना । [ जन करना ।

बोधी आधुं ( कि. ) कोषमें मो-

बोधी ११धुं ५५धुं ( कि. ) कोष  
कम होना, समोष होना, गरमी  
उतारना । [ यवना ।

बोधी भरम धुं ( कि. ) कोष  
बोधी धीधुं ( कि. ) चूषना, क-  
जेजा खासाना, बिरा हरण करना,  
सठाना । [ धाकि पठना ।

बोधी ७७धुं ( कि. ) धितासे  
बोधी आ७धुं ( कि. ) अति संत-  
पित करना ।

बोधीतु ५५धी धुं ( कि. ) धून  
बिगाड़ना, कम बोरी जाना, क-  
सीना बहाकर भीतोष मिह्वत  
करना ।

बोधीने भ्रंश ओ१ धुं ( कि. )  
अत्यंत कठिन परिश्रम करके श-  
रीरको क्षान्त करवाकना ।

बोधीने भेणिधो ( सं. ) मृत्युके  
दिनोंमें भोजन करना, शोफके  
दिनोंमें भोजन करना ।

बोणिधुं ( सं. ) सिरोंके कानोंमें  
पहिननेका एक आभूषण विशेष ।

बोणे। ( सं. ) जवान, जिम्हा, जीम ।

बो१ ( सं. ) देखो बोधिधुं ।

धे१धे१ ( सं. ) राधाकी कानधी कक-  
हरीमें पडाउलिका दिहणीकाय आ-  
दमी । विदूषक, मसखरा, हर्षि-  
रक्तवाच, माँच, नक्कास, वैद्यकि ।

शै०३३ (वि.) लोक सम्बन्धी, लोक विषयक, सांसारिक, इस लोकका, इस लोकमें रहने वाला । ( सं ) कीर्ति । यश, नामवरी, दुनिया दारी, सांसारिक काम काज ।

शै०३३रीते ( अ. ) वंश परंपरा रुढिके अनुसार, लोग दिखाऊ ढंगसे, दिखावा बढी, जगत रीतिसे ।

शै०३३त ( सं. ) लानत, भिक्कार ।

श

श = वर्ष मासका ४० वां अक्षर, २९ वां व्यंजन । ( अ. ) और, तथा ।

शं० ( सं. ) कुल, परिवार, कुटुम्ब, सन्तति, सन्तान, प्रजा, औसाद, बांस, इस विशेष ।

शं०शरित ( सं. ) वशावली, कुल, पीढ़ी, पुस्त, वंशपरंपरा । [ शय ।

शं०शे ( सं. ) कुलनाश, प्रजा-

शं०श ( सं. ) वंशमें उत्पन्न हुआ, संतान, औसाद, अपस ।

शं०शत ( सं. ) कुल कीर्ति, जिससे कुल पहिचाना जावे ।

शं०शप०शर ( सं. ) कुल कमानुगत, कुल परंपरा, पीढ़ी उत्तर ।

शं०शथी ( सं. ) पीढ़ी, वंशोत्पन्न मनुष्योंकी नामावली ।

शं०शु ( सं. ) वंश विस्तार, शुक वृक्षाकार रचना ।

शं०श्री ( सं. ) वंश सम्बन्धी, कुल विषयक, मुरली, बांसरी, वेणु वाद्य विशेष, बसरी ।

शं०श ( सं. ) भार, वजन, बोझ ।

शं०शु-शरीशु ( कि. ) बांकाहोना तिरछाहोना, छिटकना, फिरजाना, हाथसेजाना, सामनेहोना, फटना, हटसे बाहिर होना ।

शं०शे ( सं. ) बिकरी, बिक्री, रोकड़ वस्तुके बिकजानेका मूल्य ।

शं०शु ( कि. ) उस्काना, उभारना, दम्पही देना, भड़काना, बढाना ।

शं०शत ( सं. ) बकीलका धन्धा ।

शं०शतनाशु ( सं. ) बकीलपत्र, मुस्त्यारनामा, बकीलकों अपना मुकद्दमा सौंपनेका अधिकारपत्र ।

शं०श ( सं. ) प्रकाश उद्गमेद, स्फुटरहः, अवकाश, खिलना ।

शं०शपु ( कि. ) जंभाई लेना, अंगदाईतोदना, बमुद्दाई लेना, मुखफादना, छटपटाना, खिलना, खुलना, प्रकाशितहोना ।

शं०शत ( सं. ) देखो शं०शत ।

शं०श ( सं. ) आधा, उम्मेद, भाव ।

पक्षी ( सं. ) एकही, प्रतिनिधि,  
दूत, अपनी ओरसे किसे काम  
करनेका अधिकार दिया गया हो  
झोंवर, पंच, गुमास्ता, एवष्ट,  
मुस्तार ।

पक्षीक्षत ( सं. ) देखो पक्षीक्षत  
आहत, एवन्दी, दलाली ।

पक्षु-म ( सं. ) समष्टि, अक्ष,  
ज्ञान, बाकीकृत, सावधानी, मति ।

पक्षुभे ( सं. ) पूर्ववत् ।

पक्षुभार ( वि. ) बुद्धिमान, चतुर,  
दक्ष, प्रवीण, सावधान, होशियार ।

पक्षुभर ( वि. ) जोरावर, बलवान,  
तोफानी, बजन, भार, बोझ डंग,  
बोझता ।

पक्षु ( वि. ) बोलनेवाला, कहने-  
वाला, व्याख्याता, केवलरार,  
कवयज्ञ । [ नेका डंग, भाषण ।

पक्षुत्व ( सं. ) वाक्चातुर्य, बोल-

पक्षु ( सं. ) युक्त, बदन, मुई,  
मोड़ा, आनन ।

पक्षुविधि ( सं. ) मुक्तकमल, क-  
मलके तुल्य मुई ।

पक्ष ( वि. ) डेडा, आढ़ा, तिरछा,  
बांछ, कूर, ( ग्राह्य )

पक्षमति ( सं. ) डेढ़ीवाल, उलटीगति

पक्षु ( सं. ) छोटा, पक्षी विशेष ।

पक्षु ( सं. ) डिडाह, बांछ, कूरता ।

पक्षु-भु ( सं. ) देहेमुहंवाला,  
गनेक, गल्पति, तोला पक्षी ।

पक्षु ( सं. ) देवी नवर, तिरछी,  
निगाह, हेवीविचार, कुदन ।

पक्षी ( वि. ) बांकी गतिवाला, वह  
विशेषकी गति विशेष, ककटविशेष  
देखनेवाला ।

पक्षु ( सं. ) अलंकार विशेष,  
कुटिलोक्ति, काकूक्ति, डेडाबचन,  
शब्दालंकार भेद ।

पक्षु ( सं. ) सीना, छाती,  
हृदय, उरस्थल, कलेजा ।

पक्षु ( वि. ) जो कहाजावेना,  
कथन योग्य, भविष्यमें जो कहा  
जावे, कथनीय विषय । [ हलाहल ।

पक्ष ( सं. ) विष, जहर, गरम,  
पक्षु ( सं. ) अत्यंत भूख, बुधा ।

पक्षु ( कि. ) प्रसंसितहोना,  
स्तुत बनना, कहाना ।

पक्ष ( सं. ) समय, काक, अवसर  
कतु, इतिपत्रक, मौका, वेला, प्र-  
संग, योग, अवतार, बद किस्मती,  
संकट, विपत्ति, फुरसत, यिद्धी  
कण्ठके केलमें एक दाद, डेर ।

पक्षु ( अ. ) किसीकी स-  
मय, आवेक्षित समयपर ।

वभतक्षर ( वि. ) समवपर, विरिष्ट  
समवर्मे, उचित असंगपर, कटुमे,  
कदाचित् ।

वभते-वभते ( अ. ) मौकेब मौके,  
समय समवपर, यथा समवे, बार  
बार ।

वभतोवभत ( अ. ) पूर्ववत् ।

वभवभु ( कि. ) प्यासे होना,  
छटपटाना, तट्टकवाना ।

वभवाह ( सं. ) जगदा, विवाद,  
बकबक, टण्टा, बोल बाल ।

वभाभु ( सं. ) तारीफ, स्तुति,  
गुण गाथा, प्रशंसा, शाबासी ।

वभाभुपुं ( कि. ) तारीफ करना,  
बशोगान करना, स्तुति करना,  
गुण गाना ।

वभाभुपुं ( वि. ) प्रशंसित, स्तुत्य ।

वभार ( सं. ) कोठार, भंडार,  
गोदाम, कोठी, दुकान, जहाँ बे-  
चनेका माल भरा हो ।

वभारक्षर ( सं. ) कोठारी, भंडारी,  
गोदामका स्वामी, स्टोरकीपर ।

वभारिभे ( सं. ) पूर्ववत् ।

वभारी ( सं. ) पूर्ववत् ।

वभारिनाभुपुं ( कि. ) बुरकरना ।

वभु ( सं. ) पक्ष, आभय, सहाय,  
( अ० ) साहनावाला, बर्बा, गरब  
हचकु ।

वभुहुं ( वि. ) सावसे अलग हुजठ  
जो संगसे पृथक होगयाहो ।

वभेरुपुं ( कि. ) बिखेरना, फैलाना  
जुदाजुदा करना ।

वभेरुपुं ( कि. ) फैलाना, बिखरना ।

वभे ( सं. ) दुर्गिह, पृथकता,  
जुदाई, दुःख, आपर्ति दुर्गिह ।

वभेपुं ( कि. ) दोष निकालना,  
भूलनताना, निदा करना, बिखारना  
जुगळी करना ।

वभेरी ( सं. ) बुसारी, पेटी, कन,  
घर. द्वावर, पानसुपारी इत्यादि  
रखनेकी छोटीसी सद्क ।

वभ ( सं. ) जगह, ठिकाना, परि-  
चय, पहिचान, जानपहिचान,  
मेलमुलकात, अतुल्ल समय,  
मौका अवसर, पक्ष, तरफ, उता,  
आभय ।

वभभुपुं ( वि. ) युक्तिपूर्वक रकाहुवा

वभवाभुपुं ( कि. ) शिफारिस होता  
काम बनना । [ समय जाना ।

वभवावभे ( कि. ) व्यवसरनावा,

वभहुं ( कि. ) बचाना, सम्भोदना ।

वभहाह ( वि. ) जंगली वन्य ।

वभ्रवानुं ( कि. ) बचाना, शब्द  
करना : [ सुख वैदान, वीरान ।

वभ्रव ( सं. ) जंगल वन, जारण,

वभ्रव ( सं. ) व्यापकता, सहा-  
यक, पक्षपाती, तरफदार ।

वभ्र ( अ० ) बिना, सिवाव,  
अतिरिक्त ।

वभ्रपाणीनामवभ्रवानुं ( कि. )  
बिना साधनके काम करना, अ-  
भुत रीतिसे काम करना ।

वभ्रभाङ्गी के.डी ( सं. ) जेल-  
खाना, करावास, बन्दीघृह ।

वभ्रवक्षी ( सं. ) जरिया, बसील,  
बड़े मनुष्योंकी संरक्षा व सहायता ।

वभ्रवाणु ( सं. ) प्रभावोत्पादक, ज-  
सर करनेवाला ।

वभ्रसभ ( सं. ) समवेष्ट होने योग्य  
स्थान, जरिया, बसील, कारण ।

वभ्रण ( सं. ) मेल, मिश्रण, वर्ण  
संकर, भ्रष्ट, पतित, कपट, छद्म ।

वभ्रानु ( कि. ) बचाना, शब्द-  
करना, ठोकना, पीटना, ध्वनित  
करना ।

वभ्रिर्धु ( वि. ) परिवित, जा-  
मकार, पहिचानवाला ( सं. ) प-  
क्षपात, तरफदारी ।

वभ्रिर्धु ( कि. ) पक्षपात  
करना, तरफदारी करना ।

वभ्रि ( वि. ) कूट ( जो ),  
कुलटा, अभिचारिणी ।

वभ्रि ( कि. ) धुनना, संलग्न  
होना, जुटना, लगना, प्रवेश करना ।

वभ्रि ( सं. ) तर्क, और ।

वभ्रि ( अ. ) प्रमृति, आवि, इ-  
त्यादि, और, बगैरह ।

वभ्रि ( सं. ) किसी एक ओरकी  
इष्ट, नगर का नावके एक ओरकी  
सीमा । [ बुराई, फंजीहत ।

वभ्रि ( सं. ) निन्दा, अपकीर्ति,

वभ्रि ( कि. ) निन्दा करना,  
फंजीहत करना ।

वभ्रि ( कि. ) विचारना, पा-  
गुर करना, जुगाली करना, ज-  
वाब करना । [ जलज ।

वभ्रि ( सं. ) विग्रह, विज्ञ, दानि ।

वभ्रि ( सं. ) झगड़ा, अनवब,  
फिसाव, खराब होनेकी सम्भारी  
होना ।

वभ्रि ( सं. ) बचाना, लौक, ची वा  
तेलमें जीरा हाँग राई इत्यादि  
मसाला डालकर पकाकर बहनें  
किसी वस्तुको डालकर पकाया ।  
अपकी, बराब, बड़ावा ।

- वधारे भूवे। ( कि. ) मपकी देना, उसकाना, उफसाना, बढ़ावा देना ।
- वधारी भावुं ( कि. ) शाक बनाना, तलकर खाना ।
- वधारथी ( सं. ) हाँग, हिंशु, जौ-बाधि विशेष । [ देना ।
- वधारथुं ( कि. ) छौंकना, बघार
- वधारिथां ( वि. ) बघारा हुआ ।
- वधैठुं ( वि. ) लाल रंगके छिलका युक्त धान, चावल ( छिलके सहित ) ।
- वधैठुं ( कि. ) बाँके होना, टेढ़े होना, तिरछे होना, मन मुटाना ।
- वधैठुं ( सं. ) बाँक, टेढ़ापन ।
- वध ( सं. ) वाक्य, वचन ।
- वधैठ-डे। ( सं. ) भय, डर, खौफ ।
- वधैठुं-वधैठुं ( सं. ) बाँका आदा, तिरछा ।
- वधैठुं ( कि. ) गुस्सा होना, सर-कना, खसकना, गिर पड़ना ।
- वधैठणुं ( कि. ) छूटना नरन होना, कमहोना ।
- वधैठुं ( कि. ) देखो वधैठुं ।
- वधैठुं ( वि. ) आदा, कुद, कु-पित, टेढ़ा । [ बेदिली होना ।
- वधैठुं ( सं. ) तकरार, फिसाद,
- वधभावे ( अ. ) बाँचने, मध्यमे, दरमियानमें ।
- वधभावे। ( सं. ) मध्य, मध्यम, आति, शक, झगडा, फसाद, उ-पद्रव । [ लेना ।
- वधैठुं ( कि. ) झपट लेना, छीन-
- वधन ( सं. ) उक्ति, कथन, वाक्य शब्द, वाणी बोल, प्रतिज्ञा, कौल, इकरार, भाषण, कथित शब्द ।
- वधनन्मावपुं ( कि. ) वचन देना, प्रतिज्ञा करना, कुरार करना ।
- वधनवधैठुं ( कि. ) बोलना, सराब शब्दबोलना ।
- वधनवधैठुं ( कि. ) वचनभंग, करना प्रतिज्ञा पूर्ण न करना वादा खिटाफो करना ।
- वधनवधैठुं ( कि. ) प्रतिज्ञा करना, प्रण करना, कौल करना ।
- वधनन्मावपुं ( कि. ) वचन देना प्रणकरना । कौल करना प्रतिज्ञा करना ।
- वधनि। ( सं. ) प्रमाण, (प्रयत्ने) ।
- वधनी ( वि. ) अपने कहेको पूरा करनेवाला, वचन पाठनेवाला, सत्यवादी, विश्वस्त ।
- वधभां ( अ. ) बाँचने, मध्यमे ।

वर्णमाला ( कि. ) देखो वर्णमाला  
 वर्णमाला-वर्णमाला ( वि. ) बी-  
 चके दूधका, मध्यम अणुका, न  
 अधिक उत्तमही और न खराबही ।  
 वर्णमाला ( वि. ) बीचका, मंशला,  
 मध्यका । [ बड़बड़ ।  
 वर्णमाला-वर्णमाला ( सं. ) बकबक,  
 वर्णमाला ( कि. ) मंगहोना, विन्न  
 आपठना, पागल होना, विच-  
 लितहोना ।  
 वर्णमाला ( वि. ) व्यभिचारी, लंपट  
 विषयी, भ्रमित, पागल, सिरी,  
 बिचलित । [ केसरी ।  
 वर्णमाला ( सं. ) शेर, सिंह, शार्दूल  
 वर्णमाला ( वि. ) पढाजाने योग्य,  
 साफ जो पढायेके, पाठ्य ।  
 वर्णमाला ( वि. ) बाका, तेंटा, तिरछा,  
 बीचका, मध्यका । [ मंशला ।  
 वर्णमाला ( वि. ) बीचका, मध्यका,  
 वर्णमाला ( अ० ) बीचमें, मध्यमें,  
 मध्यभागमें, दरमियानमें, किसी  
 चालकाममें, मैदानमें ।  
 वर्णमाला ( कि. ) हस्तक्षेप करना  
 बीचमें पड़ना । [ ठीक मध्यमें ।  
 वर्णमाला ( अ० ) बीचोंबीच,  
 वर्णमाला ( सं. ) बड़का, बत्त (गोका)  
 केरका, बच्छा, बाछा ।

वर्णमाला-वर्णमाला ( सं. ) एक प्र-  
 कारकी विषयी औषधि ।  
 वर्णमाला ( सं. ) किसी स्थानसे  
 कुछदिन रहनेके लिये आयाहुआ  
 अकेल व्यक्ति, किसीकी तरफसे  
 माल लेने या बेचनेको आयाहुआ  
 मनुष्य, आदतिया ।  
 वर्णमाला ( कि. ) बिछुड़ना, वियोग  
 होना, अलगहोना, छूटना ।  
 वर्णमाला ( वि. ) भिन्न, निराळा,  
 जुदा, बिछुड़ाहुआ, वियोगी,  
 छूटाहुआ ।  
 वर्णमाला ( सं. ) छोटीघोड़ी, घोड़ीकी  
 बच्ची, छोटी लड़की ।  
 वर्णमाला ( सं. ) छोटा घोड़ा, घोड़ीक,  
 बच्चा, बेल, जवान नादान पुरुष ।  
 वर्णमाला ( सं. ) बिछोह, जुदाई,  
 पृथक्ता, फूट, भेद, वियोग ।  
 वर्णमाला ( कि. ) अलग करना,  
 पृथक् करना, बिछोह करना,  
 छुड़ाना । [ बिछुड़ाहुआ ।  
 वर्णमाला ( वि. ) वियोगी, भिन्न,  
 वर्णमाला ( सं. ) भार, बोझ, तौल,  
 जोख, मान, गौरव, प्रभुत्व, रोच,  
 कदर ।  
 वर्णमाला ( कि. ) तौलना, देखना,  
 जीवना, जोखना ।

वचनश्री ( वि. ) भारी, बोझवाला,  
प्रतिष्ठित, प्रभाव शाली । [ वाचा ।  
वचनश्री-वचनश्री ( सं. ) वाच,  
वचनश्री ( वि. ) बोझके अनुसार,  
कुछ हलका, थोड़ा, मध्यम ।  
वचनश्री ( वि. ) कुछ सफेद  
( गेहूँ ) ।  
वचनश्री ( सं. ) एक वृक्ष तथा  
उसका फल विशेष, यह बच्चोंको  
गलेमें पहिनाया जाता है ।  
वचनश्री ( सं. ) अत्यंत चाहना,  
सहान इच्छा ।  
वचन ( सं. ) बुद्धि, विचार शक्ति,  
समस्त शक्ति, रुचि, इच्छा, लक्ष्य,  
सुकाव, दलाव, अभिप्राय, प्रवृत्ति,  
तात्पर्य ।  
वचनश्री ( वि. ) देखो वचनश्री ।  
वचनश्री ( सं. ) जागीरदार, नम्बर-  
दार, पेन्शनर, जिसे सरका-  
रकी ओरसे कुछ वृत्ति मिलती हो ।  
वचनश्री ( सं. ) जागीर, पेन्शन,  
अलावंस, इनाममें सरकारकी ओ-  
रसे मिली हुई जमीन इत्यादि ।  
वचन ( सं. ) मंत्री, प्रधान, रा-  
जाको उचित सलाह देने वाला ।  
शतरंजके खेलमें एक गोठ विशेष ।  
वचनश्री ( सं. ) मंत्रिपद ।

वचनश्री ( सं. ) पूर्ववत् ।  
वचन ( सं. ) नमाज पढ़नेके पूर्व  
हाथ मुंह पैर इत्यादि धोनेकी  
क्रिया विशेष । [ अद् ।  
वचन ( सं. ) आवि, निवास, उद्भव,  
वचन ( सं. ) चुकौता, भुगतान,  
माल गुजारी, रेवेन्यू ।  
वचनश्री ( वि. ) कठोर, कठिन,  
करी, सख्त, ( सं. ) वज्र, कुलिश ।  
वचनश्री ( वि. ) ऐसा मूर्ख  
जिसपर कुछभी प्रभाव न पड़े ।  
वचन ( सं. ) कुलिश, इन्द्रका आ-  
युध विशेष, बिजली, । हीरा  
हारक, रत्न विशेष ।  
वचनश्री ( सं. ) कठोर हृदय,  
पाषाण हृदय, दया और भयछुन्न  
हृदय । [ मूक ।  
वचनश्री ( सं. ) मजबूत दांत, चूहा,  
वचनश्री ( सं. ) बलिष्ठ और हठ  
देह, बलवान और कठोर अंग ।  
वचनश्री ( सं. ) कड़क, ( बिज-  
लीकी ) ।  
वचनश्री ( सं. ) गेंडा, एक हा-  
थीके समान छोटी सूंढवाला पशु ।  
वचनश्री ( सं. ) कठोर हृदय,  
पाषाण दिल ( वि. ) निर्दय, नि-  
र्भय, कठोर ।



१७७५ ( सं. ) गवेस, गवसि ।  
 १७७६ ( सं. ) कठोर विचार ।  
 १७७७ ( सं. ) बौर, बहापुर,  
 छार, मरु, पहलवान ।  
 १७७८ ( सं. ) विपुल, विपली ।  
 १७७९ ( सं. ) ठग, छडिगा, बां-  
 न्नेकी शक्तिवाक्य, पढनेवाला ।  
 १७८० ( कि. ) बचना, अलग  
 रहना, रक्षापाना । [ चवाना ।  
 १७८१ ( कि. ) पढवाना, ब-  
 चवाना ( कि. ) पढाजाना, बांन-  
 नाना, सर्वत्र कजोहती होना ।  
 १७८२ ( सं. ) खाली जगह,  
 रिक्त स्थान ।  
 १७८३ ( सं. ) बांन औरत, संतान  
 होना जो, बंधा, बांनदी ।  
 १७८४ ( सं. ) बरगद, बड़का वृक्ष,  
 टेक, प्रण, आरम सम्मान, धैर्य ।  
 १७८५ ( सं. ) एक वस्तु देकर दू-  
 सरी वस्तु लेनेके लिये कुछ विशेष  
 दिया हुआ द्रव्यया पदार्थ, बट्टा,  
 बदला, खोट, नुकसानी ।  
 १७८६ ( कि. ) बदल करना,  
 खोट फेर करना । बदल देना ।  
 १७८७ ( कि. ) खसकना, सटक  
 जाना, दूरजाना ।

१७८८ ( कि. ) खस खसना  
 और दूध न निचकने देना, कूद  
 जाना, ( नाव में इत्यादि दुखा-  
 क्त पशु ) ।  
 १७८९ ( कि. ) पतित होना,  
 अछ होना, धर्मच्युत होना ।  
 १७९० ( कि. ) पतित करना,  
 अछ करना, एक वर्ष या धर्मसे  
 किसी दूसरे वर्ष या धर्ममें सम्मि-  
 लित करना ।  
 १७९१ ( वि. ) अछ, पतित, च्युत ।  
 १७९२ ( सं. ) तांबेका पानीका  
 पात्र विशेष, एक प्रकारके बर्तनका  
 नाम ।  
 १७९३ ( कि. ) हो चुकना, निकल  
 जाना, दूर चलेजाना, भागकूटना,  
 पीछे हटना, आगेपीछे होकर  
 सताना । [ लिताहुआ आज्ञापत्र ।  
 १७९४ ( सं. ) समी संबंधियोंको  
 १७९५ ( सं. ) मटर, अन्न विशेष ।  
 १७९६ ( कि. ) भागकूटना,  
 निकलभागना रफूचकरहोना ।  
 १७९७ ( सं. ) घूट डालकर लिख-  
 नेकी पद्यपर लिखनेकी कल्प ।  
 १७९८ ( सं. ) अन्न विशेष ।

५८५ ( सं. ) छूट, बहा किसी कारणसे निश्चित वस्तुमेंसे कुछ कम देना, छोटे रुपये या वस्तु आदिके लिये कुछ विशेष द्रव्य लेकर उसकी पूर्ति करना, लाभ, मुनाफा नफा ।

५८५५ ( कि. ) तुड़ाना, मुनाना ( रुपया प्रभृति सिक्का ) फैलाना, छोड़ना, पीछे रखना, सरसहोना, चठना, बेचना, चूर्ण कराना, पिसवाना । [ देना, छळना ।

५८५६ ( कि. ) ठगना, घास-पटावुं ( कि. ) चूर्णहोना, पिसना, कुचलवाना ।

५८५७ ( सं. ) भ्रष्टता, जिससे पतित हो ।

५८५८ ( कि. ) पतित करना, अपने धर्म या वर्णमें मिलाना, भ्रष्टकरना ।

५८५९ ( सं. ) भ्रष्टता ।

५८६० ( अ० ) भी ।

५८६१ ( वि. ) प्रणवाला मनुष्य, अपनी टेक निवाहनेवाला, इटी, जिही, धंधा करनेवाला ।

५८६२ ( कि. ) निकलवाना, गुजरना ।

५८६३ ( सं. ) काम, धन्धा, कार्य ।

५८६४ ( सं. ) बुद्धि, बंग, होसिया समीप ।

५८६५ ( सं. ) देखो ५८६६ ।

५८६६ ( वि. ) बटोही पक्षिक पांश, मुसाफिर, राहगीर, प्रवासी ५९ ( सं. ) बट, बरगद, वृक्ष विशेष, बर, महानता और बयोवृद्धता सूचक प्रत्यय विशेष ।

५९० ( वि. ) लड़ाका झगड़ाळू, फसादी, टंटाखोर, बकबादी,

५९१ ( वि. ) पूर्ववत् ।

५९२ ( कि. ) चिढ़ाना, शिक्षाना

शिड़काना, डांटना, मलामत करना, घुड़कना, धमकाना ।

५९३ ( सं. ) दोलाया झुंडकानेता ( सेलमें ) बड़ा भांडू ।

५९४-५९५ ( सं. ) बरगद वृक्ष की जटा, बड़के पेटकी वे पत्रहानि डालियां, जो भूमिकी तरफ लटकती हैं :

५९६ ( सं. ) दादा, बापका बाप बाबा पितामह, मामाके पिता, नाना, घोड़ी, अश्व स्त्री ।

५९७ ( सं. ) चमगिधड़, एक पक्षी, विशेष जो टांगोंके बल नीचे सिरकी डालियोंमें लटका करता है और सायंकाळको सूर्यास्तके बाद उड़ा करता है बामल, बामपक्षी चामगिधड़, बड़ी चमगादर ।

वडवाजि ( सं. ) समुद्रस्थ जमि,  
प्रचंड आग, समुद्रकां आग ।  
वडवाड ( सं. ) सगदा, विवाद, फिसाद  
वडवाडियो ( सं. ) पक्षी विशेष ।  
वडवानस ( सं. ) देखो वडवाजि ।  
वडपुं ( कि. ) बिडना, नाराजि  
होना, लंछनआना, बहाजाना ।  
वडपे ( सं. ) दादा, बाबा, नाना,  
पितामह, माताका बाप, बापका  
बाप, मातामह ।  
वडससरे ( सं. ) सासूका पिता,  
नानी सुसरा, श्वशुरका पिता ।  
वडसावत्री ( सं. ) जेठसुदी पूर्णि-  
माके दिनका वह खोहार जिये  
नव विवाहित वडू पूजा करते है ।  
वडसासू ( सं. ) नानीसासू, सासूकी  
माता या श्वशुरकी माता ।  
वडव ( वि. ) मजबूत, दड, पुष्ट ।  
वडाडि ( सं. ) कीर्ति, बड़प्पन, ख्याति  
प्रशंसा, मान, इज्जत, आबरू,  
महत्त्व, प्रशंसा, उच्चता, विशालता  
अभिमान, गर्व, शेखी, घमण्ड,  
महत्ता ।  
वडाडररी ( कि. ) प्रशंसा करना,  
शेखीमारना, आत्मश्लाघाकरना ।  
वडाभई-मीडू ( सं. ) एकप्रकारका  
नमक, क्षार विशेष ।

वडावड-डी ( सं. ) लडाकडी, आगवे  
सामनेका मुद्द, जियाजिरी ।  
वडावड ( सं. ) दासपुत्री, शानीकी  
टहलनी, दासी ।  
वडावा ( सं. ) कुळमें बबोवृद्ध,  
अतिवृद्ध पुरुष, बूढ़फुल्लूढम ।  
वडिवाड ( सं. ) नानी मातामही,  
माकीमा, बापकी मा, दादी ।  
वडिपे ( सं. ) प्रतिस्पर्धी, प्रति-  
पक्षी, प्रतिद्वंदी, सामना करनेवाला  
वडिपेपारखत ( वि. ) पूर्वजोंका  
संगृहीत, बड़े लोगोंका कमावाहुवा ।  
वडी ( सं. ) मंगोडी, मुंगोडी, दाऊ  
कोपीसकर और मुखाकर बनाई  
हुई डलियां । [ बिगडजाना ।  
वडीपावडीवडीवडी ( कि. ) काम  
वडीनीति ( मं. ) टोह, पकाना खौच  
मलत्वागम, मलोत्सर्जन, जंगल,  
दिशा, ( भावक धर्ममें )  
वडील ( वि. ) पूज्य, मान्य, बखी  
वृद्ध, ज्येष्ठ, मुख्य, उन्नयमें पदमें  
उच्च, ( सं. ) अग्रज, पूर्वज, पुरुष,  
बापदादा ।  
वडीवपरपरागत ( भ० ) कुळरीति,  
वंशव्यवहार, बापदादीकी रीति ।  
वडीवोपारख ( वि. ) देखो वडिपे  
पारख

५६० ( वि. ) बड़ा, भारी, दीर्घ,  
 विस्तृत, अप्रज, बहुत, अति,  
 बयोवृद्ध, ( सं. ) उड़द या मूंगकी  
 दालको भिगोकर पीसकर तेल या  
 घृतमें तलकर बनाया हुआ पदार्थ,  
 भंगोड़ा, भजिया, पकौआ फलौरी ।  
 ५६०३२५ ( कि. ) रह करना, सु-  
 खाना ( दीपक ) दीवा करना ।  
 ५६० ( अ. ) द्वारा, मारफतसे साधन ।  
 ५६० ( वि. ) बड़ा, दीर्घ, मुख्य,  
 प्रधान, उम्रमें पदमें बड़ा, महान ।  
 ५६०३२५० ( कि. ) चिरण गुल  
 करना, दीपक बुताना, निन्दोदना ।  
 ५६०३३५०३० ( सं. ) दूर्जेमें स-  
 बसे प्रथम या मुखिया विद्यार्थी ।  
 ५६०३५० ( सं. ) बापके बापके बाप,  
 प्रपितामह, पड़दादा ।  
 ५६०३५० ( वि. ) झगड़ातू, बकबादी,  
 फसादी, बिबादी, बड़बड़ाने वाला ।  
 ५६०३५० ( वि. ) पूर्ववत् ।  
 ५६०३५०-६ ( सं. ) झगड़ा, बिबाद,  
 बकबाद, झगड़ा, भारा भारी,  
 बोला बोली ।  
 ५६०३ ( कि. ) लड़ना, झगड़ना,  
 बिबाद करना, बोलाबोल करना ।  
 ५६०३५० ( कि. ) उलझाना, व्या-  
 कुल करना ।

५६० ( सं. ) कपासका पेड़, रईका  
 वृक्ष, विनीलेका वृक्ष । ( अ. )  
 बिना, बगैर, सिवा, आतिरिक्त,  
 सिवाय, अलावह ।  
 ५६०३५० ( वि. ) निराश्रय, बे-  
 मदद, बेसहारा ( सं. ) जुलाहा,  
 कपड़ा बिनने वाला । [ जुलाहा ।  
 ५६०३२ ( सं. ) बक बनाने वाला,  
 ५६०३२ ( सं. ) जुलाहेका वेतन,  
 बक बनाने वालेका मेहनताना ।  
 ५६०३५० ( अ. ) समाप्त होनेके  
 पाहिले, बिना कमती हुए ।  
 ५६०३५० ( सं. ) वृक्षकी छाया रहे  
 उतनी जगह, वृक्षकी छायादार  
 जगह ।  
 ५६०३५० ( सं. ) धंधा, व्यापार, रो-  
 जगार, केन देन, तिजारत, वाणिज्य ।  
 ५६०३५० ( सं. ) व्यापारियोंका  
 झुंड, वनजारोंका माल भरा हुआ  
 टांका, काफिला ।  
 ५६०३५० ( वि. ) वनजारोंसे संबंध  
 रखनेवाला, जंगली, नाँव जा-  
 तिका ।  
 ५६०३५० ( सं. ) एक घूमता फिरता  
 व्यापारी जो बैलों आदि जन्म पशु  
 औपर लश्कर खटकर घूमता है ।  
 राव विशेष । आति विशेष ।

पञ्चदश ( सं. ) बुनावट, बिनमेकी  
रीति, पोत ।

पञ्चपुं ( कि. ) बटना, बिनना,  
बुनना, गुबना, सराब हिस्सा  
निकाल देना, बेचना, बुनना, तो-  
ड़ना, उठाना, बिनना, सबसे उ-  
त्तम छांटलेना, बड़ा कर कहना ।

पञ्चसप्त ( कि. ) नाशहोना, नष्ट-  
होना, पंशहोना, बरबाद होना,  
पैसाब होना, बिनटना, सराब-  
होना । [ बटना, ममहोना ।

पञ्चसप्तपुं ( कि. ) बचना, पेदे  
पञ्चसप्त ( सं. ) नाश, बिगाड़,  
क्षय, बरबादी, लय, विनाश ।

पञ्चसप्तपुं ( कि. ) बिगड़ना स-  
राब करना, बरबाद करना, नाश  
करना । [ बनेका मिहनताना ।

पञ्चसप्त ( सं. ) बुननेका वेतन, गू-  
बपु ( सं. ) बेसो पञ्चदश ।

पञ्चापुं ( कि. ) दूसरेमे लट्कार  
कराना ।

पञ्चि ( सं. ) बाणिज्य व्यापार  
करने वाले मनुष्य, बनिया, व्या-  
पारी, वैश्य ।

पञ्चि-पेश ( सं. ) चूहे कैसे मु-  
हंवाक बिल्लीसे कुछ बड़ा चौपाया-

बानवर ( इसे गुड़ अच्छा लगता  
है ) बिज्जु ।

पञ्चीनापुं ( कि. ) नाश करना,  
तोड़ मरोड़ डकना, बिम्बना  
करना । [ हिंसा, मुराद, हरादा ।

पञ्चनी ( सं. ) डच्छा, बाह, स्वा-  
पञ्च ( सं. ) बांसकी सपत्तियोंका  
समूह । [ ( जी ) ।

पञ्चा ( सं. ) बंप्पा, बांस, बांसकी  
पटोल-पीथे ( सं. ) बबूला, प-  
बनका गोल चक्कर, बावु चक्र ।

पटोल गडपुं ( कि. ) अस्तिवर  
बिग होना, पगल होना, लहरमें  
जाना ।

पट ( सं. ) शरीरमें बावुगोला जाना ।  
पटपुं ( कि. ) हरने बहिर होना,  
हाथसे जाना, बिगड़ना, फटना,  
बहना । [ सराबहोना ।

पटिपुं ( कि. ) बिगड़जाना,  
पटि ( वि. ) बिगड़ाहुआ, संपट  
दुराचारी, बिगड़ाहुआ ।

पटि ( सं. ) नपुंसक, हिजड़ा,  
नायब, जनका, झीब ।

पटि-३३ ( सं. ) जहाता, कुलीकुई  
जमीन के आसपास मिट्टीकी भीतका  
बेरा, कम्पाउण्ड ।

बंड़ी छापी ( कि. ) वर्षा ऋतुमें  
मँगनेसे बचने के लिये बीबारोंपर  
रखीहुआ घासफूस जो मिट्टीसे  
दबाहुआ होता है ।  
वत ( अ. ) जैसे, मसकन, समान  
मानिन्द, अनुरूप, मानो ।  
वतडपुं ( कि. ) नौचना, खतरना,  
कुरेदना ।  
वतन ( सं. ) देश, मातृभूमि, स्वदेश  
जन्मभूमि, बापदादाके रहनेका  
स्थान, जागीर, जायदाद ।  
वतनदार ( सं. ) जागीरदार, देष्पी ।  
वतनवाडी ( सं. ) स्थाई पंजां,  
स्थाई जामीर, जायदाद ।  
वतनी ( बि. ) देखी, स्वदेशी, एक-  
देखीय, हमवतनी ।  
वतरछुं ( सं. ) बरतना, स्लेट-पॉसिल,  
पट्टीपर लिखनेकी लेखनी ।  
वतरैड ( अ० ) बिना, बगैर, सिवाय  
अतिरिक्त, अलावह ।  
वतरैम-अ ( अ० ) पूर्ववत् ।  
वताभरै ( सं. ) मजदूर, मेहनती ।  
वताडपुं ( कि. ) सताना, कइदेना  
हुक पहुंचाना ।  
वतावपुं ( कि. ) देखो निताडपु  
लिखाना, सताना ।

वतिपात ( सं. ) (ज्योतिषशास्त्रमें)  
सत्रहवांयोग ।  
वतीपात-तिथुं ( बि. ) बदमाश, नट  
खट, उच्छृंखल, दुखदायी ।  
वती ( अ० ) बजाय, लिये, वास्ते  
स्थानमें, बदलेमें, जगहमें ।  
वतुं ( सं. ) सफाई, खौर, हजामत ।  
वंतुकरपुं ( कि. ) हजामत बनाना  
मंडना, खौर कार्य करना ।  
वते ( अ० ) झकड़, दार, जरियेसे ।  
वतेसर ( सं. ) बहुतही बढ़ाया  
हुआ । [ जस्सी ।  
वतैड ( सं. ) खाल, खुजाल, खु-  
वपुं ( अ. ) अधिक, ज्यादा,  
बढ़ती । [ घना ।  
वतुंओछुं ( बि. ) काज्यादः थोड़ा  
वतस ( सं ) बालक, लोकरा, बच्चा,  
बछड़ा, बच्छा ।  
वतसरस ( सं. ) वात्सल्य प्रेम,  
माता पिता और पुत्रका स्नेह ।  
वतसर ( सं. ) वर्ष, साल, संबत् ।  
वतसध ( बि. ) स्निग्ध, स्नेहयुक्त,  
प्रेमी ।  
वतसवता ( सं. ) ममता, स्नेह, प्रेम ।  
वद ( सं. ) कृष्णपक्ष, वदी, बुदी,  
अंधेरीरात्रिके पन्द्रहदिन ।

पंदाती ( सं. ) बाणी, बात, कहावत  
 पढन ( सं. ) मुख, मुहं, बक्त्र,  
 आनन, चेहरा, मुखड़ा, ।  
 पढन हभक्ष ( सं. ) कमळमुख,  
 मुखपंकज, मुखारविन्द ।  
 पधुं ( कि. ) बोलना, कहना,  
 उच्चारण करना, कथन करना,  
 स्वीकार करना, अंगीकार करना ।  
 पदा ( वि. ) विदा, रवाना, कूच ।  
 पदाई ( सं. ) विदाई, रवानगी,  
 आज्ञा प्राप्त करके यमन ।  
 पदाईगरी-भिरी ( सं. ) विदाहोते  
 समय दियाहुआधन, भेट ।  
 पदाई ( सं. ) वादा, बचन, वायदा  
 प्रण, प्रतिज्ञा, करार, कौल, नियत  
 समय, अवधि, मुहूर्त ।  
 पदाय ( वि. ) देखो पदाई ।  
 पदाय हरुं ( कि. ) आज्ञादेना, रवाना  
 करना, निकास देना, चलते करना ।  
 पदायधुं ( कि. ) जाना, विदाहोना ।  
 पदाई ( सं. ) देखो पदाई ।  
 पद्विता ( सं. ) आवाज, ध्वनि ।  
 पदी ( सं. ) देखो पदा ।  
 पधान ( सं. ) पालेड, कपट, ढोंग ।  
 पध ( सं. ) हिंस, हनन, विनाश,  
 फूल, भेट, बलि, प्राण हरण,  
 वृद्धि, बढ़ती, बढ़ाव ।

पधध ( सं. ) घटाबढी, कमअधिक ।  
 पधुं ( वि. ) अधिक, ज्यादा;  
 बहुत । [ करना ।  
 पधरावपुं ( कि. ) बढ़ाना, वृद्धि-  
 पधरावण ( सं. ) अंडशुद्धि, फोते  
 बढ़ना, आंडबढ़ना ।  
 पधपुं ( कि. ) बढ़ना वृद्धिपाना ।  
 अधिकहोना, आगेहोना, बढ़ाहोना;  
 ऊपर होना, बाकी रहना, शेष  
 रहना, नीळाममें दूसरेसे अधिक  
 बोली बोलना, चढ़ना, उगना,  
 लाभ होना ।  
 पधाई ( सं. ) देखो पधामथी ।  
 पधामथी ( सं. ) पधावा, वृद्धि,  
 तथा मंगलसूचक यान अथवा  
 देवी पूजा ।  
 पधामथी ( सं. ) सुबारकवादी,  
 बधाई धन्यवाद, अभिनन्दन,  
 वृद्धिस्वागत, शुभसंवाद लावेवाले-  
 को पुरस्कार ।  
 पधारतुं ( कि. ) बढ़ाना, वृद्धि  
 करना, बढ़ाकरना, अधिक करना  
 चढ़ाना । [ ज्यादा, बहुत, विपुल ।  
 पधारे ( वि. ) विशेष, अधिक,  
 पधारे ( सं. ) बढ़ावा, वृद्धि,  
 योग, पैदायश, लाभ, नफा बाकी  
 शेष, फलतु, चढती ।

“वधावधुं-नीक्षेपुं” ( कि. ) स्वागत करना, सत्कार करना, आतिथ्य करना, भक्ति अथवा प्रेमके कारण पुष्प या अक्षत फैलना ।  
 वधावे। ( सं. ) दुल्हा अथवा दुल्हनके लिये भेट ।  
 वधु ( वि. ) अधिक बढ़ा, ज्यादा; मारी, ( सं. ) दुल्हन, पत्नी, विवाहित स्त्री, बहू, बेटेकी भार्या  
 वधिरपुं ( कि. ) भोगदेना, बलिदान देना, तोड़फोड़कर या काटकर किसी देवताको भेट करना, काटना, तोड़ना, कुचलना ।  
 वध्व ( वि. ) वधाई, बधकरने योग्य, मारने योग्य ।  
 वन ( सं. ) कानन, विपिन, आरण्य, जंगल, कुंज, झरनी जल ।  
 वनक्षेत्री ( सं. ) जंगली केलेका वृक्ष ।  
 वनक्षुण्ण ( सं. ) बरकल वसन, वृक्ष के पत्तों और छालके कपड़े ।  
 वनक्षेत्री ( सं. ) जंगली बेर ( वृक्ष )  
 वनक्षेत्री ( सं. ) वनविहार, जंगली खेल ।  
 वनक्षेत्र ( सं. ) बनेला पशु, जंगली जानवर, जंगली स्त्रोत्र, वनमानुष ।  
 वनदेवता ( सं. ) जंगलका अधिष्ठाता, देव वनदेव ।

वनक्षेत्र ( सं. ) कोयल, कीचड़, पक्षी विशेष ।  
 वनपति ( सं. ) वनका स्वामी ।  
 वनपाक्ष ( सं. ) जंगलका रक्षकाला  
 वनभक्षी ( सं. ) जंगली भोगरा ।  
 वनभक्षी ( सं. ) घुटनोंतक लटकने वाली पुष्पमाला ।  
 वनभक्षी ( सं. ) श्रीकृष्ण, बलदेव के पुत्र जो द्वापरमें पैदा हुएथे ।  
 वनराज ( सं. ) जंगलमेंका कोई एक मुख्यवृक्ष, सिंह, शेर ।  
 वनवाग्धु-भोग ( सं. ) वनवाग्धु ( बड़ी ) बागल, पंजोंके बलनीचसर लटकानेहुए लटकनेवाला एक पक्षी विशेष । [ जंगलमें रहना ।  
 वनवास ( सं. ) जंगलमें निवास, वनवासी ( सं. ) जंगलमें रहनेवाला अरण्य वासी ( वि. ) स्वामी ।  
 वनविहार ( सं. ) देखो वनक्षेत्री ।  
 वनरक्षति ( सं. ) ऐसी वृद्धि अथवा पौधेजो औषधिके काम आवें । वह वृक्ष जिसपर बिना फूलके फल आते हों । [ वृक्षविद्या ।  
 वनरक्षतिविद्या ( सं. ) उद्भिन्नविद्या, वना ( अ- ) सिवाय, बिना, बगैर ।  
 वनिता ( सं. ) स्त्री, प्रेम करनेवाली स्त्री ।



पनेयर ( वि. ) देखो पनेयर ।

पनेया ( सं. ) पीड़ा, दुःख, त्रास, कष्ट । [ बैयनी, संघट ।

पनेडा ( सं. ) बबराहट, व्याकुलता,

पने ( सं. ) विनय, विवेक ।

पन्त ( वि. ) युक्त, बाका या बान् हस्तादि अर्थ सूचक प्रत्यय ।

पन्तरी ( सं. ) राक्षसी, भूतनी, डकिनी ।

पन्तकि-त्पाके ( सं. ) बेगन, भटा, रीगणा, शाकविशेष ।

पंइक ( वि. ) पूजक, उपासक ।

पंइन-नी ( सं. ) नमन, प्रणाम, स्तुति ।

पंइनुं ( कि. ) प्रणाम करना, स्तुति करना, नमन करना ।

पंइनिय ( वि. ) पूज्य, मान्य, प्रणामार्ह, तारीफके योग्य ।

पंइत ( वि. ) पूजित, प्रशंसित ।

पंइ ( सं. ) एक प्रकारका उड़ने-वाला प्राणीविशेष ।

पन्था ( सं. ) बांस की, ऐसी की जिसके सन्तान न होती हो ।

पपत ( सं. ) आपद्, विपदा, दुःख दुर्घति, विपत्ति । [ क्षौरफर्न ।

पपन ( सं. ) मुंडन, हजामत,

पपनी ( सं. ) उत्तरा, छुर, ज-स्तुरा, मुंडनसाक, क्षौरपट्ट ।

पपशुं ( कि. ) काममें जाना, प्रयोग करना, कर्म होना, कम पढ़ना ।

पपशक ( सं. ) प्रयोग, उपयोग ।

पपशे ( सं. ) आश्चर्य, विस्मय, तन्माज्जुष ।

पपु ( सं. ) शरीर, देह, काया, बदन ।

पपे-हारी ( सं. ) कुतलता, नमक-हलाली, फायदा, ईमानदारी ।

पपेहारे ( वि. ) विश्वस्त, विश्व-सनीय, कुतल, नमक हलाल, अनु-

रक्त, ईमानदार, सत्यवादी ।

पपेहारी ( सं. ) ईमान, बचन, अनुराग, प्रभुमक्ति ।

पपुहल ( सं. ) दुःख, पीड़ा, आपत्ति ।

पपे ( सं. ) वैभव, ठाठ, साहिबी, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन, सम्पदा ।

पपन ( सं. ) कम, उलटी, ऊर्ध्व, रर, कै, मुंहके द्वारा पेटकी वस्तु का बाहर होना, रोगविशेष ।

पपण ( सं. ) ( बलमें ) गंवर, आवर्त, व्यावृत्तता, गौर ।

वभासपुं ( कि. ) सोच विचारमें पढ़ना, विचारना, निर्धारित करना, दूरकी सोचना, पछताना, शोक करना, मनन करना, चिन्तन करना ।

वभेयुं ( वि. ) छादा हुआ, उमला हुआ, उलटी किया हुआ, पतित ।

वय ( सं. ) जन्मसे वर्तमान समय तकका काल, उम्र, गतआयु, पक्षीगण । बौवन, युवाकाल ।

वयम्बु ( सं. ) बचन, बैन, बोली, बाणी ।

वयधर ( वि. ) उम्रबाढा, जीवित ।

वयस्था ( सं. ) सखी, सहेली ।

वयी ( वि. ) उम्रका, समयस्क ।

वयोवस्था ( सं. ) उम्रका प्रतिष्ठा, जीवनलीला ।

वर ( सं. ) दूल्हा, बीद, दुलहा, पति, भरतार, स्वामी, आशीर्वाद, वरदान, ( वि. ) श्रेष्ठ, उत्तम, उमदा ।

वरक ( सं. ) सोने या चांदीके पतले पत्र, बर्छ, पृष्ठ, पन्ना, सफा, पेज ।

वरक-पा ( सं. ) दूल्हा दुलहिन, वरवधू, विवाहित स्त्रीपुरुष ।

वरम ( सं. ) देखो वरक-वृषराशि, वृषम, मारह राशियोंमेंसे दूसरी राशि, ( ज्योतिष शास्त्रे ) वृष, पादप, गुल्म, पेड़, दरखत ।

वरभासन ( सं. ) देखो वर्षाक्षि ।

वरणे ( अ. ) वर्षमें, सालमें, संवतमें ।

वरम ( सं. ) देखो वरक-वर्ग, समान जातिका समूह ।

वरमधु ( सं. ) चन्दा, अरगनी विलगनी, कपड़े रखने या बुलाने के लिये बांधी हुई डोरी ।

वरधेठ-२ ( सं. ) कन्या पक्षके बोहेसे लोग जो वरको बुलाने जायें, वरातको रोक रखनेवाला ।

वरधेठो ( सं. ) दूल्हाके बैठनेका घोड़ा, निकासी, सरकस, सवारी, बनोरी, बिंदोरी, फजाहत ।

वरधेठानी वाडी ( सं. ) म्यर्थ, मिथ्या, आडम्बर, चार दिनकी चांदनी ।

वरधेठो २५५ ( कि. ) फजीहत होना, दुर्दशा होना, खराबी होना ।

वरयपुं ( कि. ) घबराना, परेशान करना ।

वरयापुं ( कि. ) बोलना, कहना ।

वरयस ( सं. ) शुरूमें सिरकूटया इत्यादि कार्य ।

४२४ ( सं. ) बड़ीमारी लड़ाई,  
महान युद्ध ।

४२४ पुं ( कि. ) देखो, १२४ पुं ।

४२४ भ ( वि. ) विवाद नोच ।

४२४ शो ( सं. ) फिक, चिता,  
फकीहत, देखो ४२४ शो ।

४२४ पुं ( कि. ) नाचना, खुजाटना  
कुरेदना, खुजलाना ।

४२४ ( सं. ) हस्त तथा दीर्घ उ  
ऊ भी मात्रा, २, ३, अंकुर, बी-  
जमेंसे तत्कालका कूटाहुवा अंकुर ।

४२४ ( सं. ) जाति, वर्ण, जाति,  
जात, पदवी, गणना, लेखा,  
अक्षर, रंग, प्रथमअक्षर, पानी,  
जल ।

४२४ सं ( वि. ) दोगळा, अलग,  
अलगवर्गीका मिश्रण, मा किसीकी  
अन्य जातिकी और बाय किसी  
अन्य जातिका उनसे उत्पन्न  
संतान, जार हमसे उत्पन्न, असवर्ण  
की या पुरुषकी औलाद, हराम-  
जादा ।

४२४ भिपुं ( वि. ) दंभी, छली,  
कपटी, डोंगी, ऐवाच, छेला, रस्की ।

४२४ भी ( सं. ) टीपटाप, ऊपरी  
भट्ठक, छेलापन, आठम्बर भवका ।

४२४ ४२४ ( सं. ) जातिपात ।

४२४ ( सं. ) उबवास, अनाहार,  
जल, संकष्ट, प्रतिज्ञा, निबन्ध, प्रण  
मानना, नमस्को रस्ती ।

४२४ ( सं. ) छोटी बोरी ।

४२४ भिपुं-नीभो ( सं. ) नगर-  
रक्षक, चौकीदार, रखवाला, पहि-  
रेदार, मुसाफिरको एक जगहसे  
दूसरी जगह पहुंचानेवाला ।

४२४ पुं ( कि. ) आचरण करना,  
चलना, रहना, बर्ताव करना,  
बनना, होना, जानना, परखना,  
पहिचानना, मिलना, प्राप्त होना ।  
४२४ शो ( सं. ) ज्योतिषी, ग्रह-  
नक्षत्र, आदि बनानेवाला, ग्रह-  
चन्द्रसूर्य इत्यादिका गणित,  
अभिधमकथन ।

४२४ ४२४ पुं ( कि. ) फैलाना, प्रख्यात  
करना, रोजगार भन्ने लगाना ।  
बर्ताना ।

४२४ पुं ( कि. ) खरना, परखाना,  
बवराना, होना, फैलना ।

४२४ शो ( सं. ) ग्रहगणित ।

४२४ भो ( सं. ) देखो ४२४ शो ।

४२४ भो-भो ( सं. ) सराबरीमेंका  
जती । [ पीछेसे । ( सं. ) छुटि ।

४२४ ( ४० ) पीछे, होवानेके बाद,



वर्षाब्ध वर्ष ( सं. ) बहुतसे वर्ष,  
मुहूर्त, वर्षों, बहुत साल ।

वर्षाब्ध ( सं. ) वर्षके आरंभमें  
ज्योतिषीद्वारा कहा गया सारे  
वर्षका वर्णन, किसी व्यक्तिके  
वर्ष कैसा गुजरेगा इसके लिये  
ज्योतिषशास्त्रसे तय्यार की हुई  
एक वर्षकी जन्मपत्री ।

वर्षाब्ध ( कि. ) वर्षी होना, पानी  
बरसना, छूटि होना, ऊपरसे  
गिरना, अचानक अच्छी तरहसे  
आकर मिलजाना, कुरबान होना,  
प्रसन्न होना, अच्छी तरह देना ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) देखो वर्ष  
वर्षाब्ध । [ वित्त इत्यादि ।

वर्षाब्ध ( सं. ) वार्षिक, सालाना

वर्षाब्ध ( सं. ) वृष्टि, मेघ, बौछार,  
वर्षा, बरसात, ऊपरसे पतन ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( कि. ) खूब  
देना या खूब बिखेरना, छूटि  
करना ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( कि. ) अत्यंत आसुरतापूर्वक मार्गप्रतांश  
करना, राह देखना ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( कि. ) वृष्टि करना,  
अच्छी तरह देना ।

वर्षाब्ध ( सं. ) वार्षिक आह, मृत  
पुरुषके मृत्यु तिथिके बाद छक

एक वर्ष पर कुछ आह इत्यादि,  
मृत्युतिथि ओर हुएके नाम पर  
प्रथम वर्ष कुछ दान पुण्य इत्यादि ।

वर्षाब्ध ( सं. ) कंठमाळ नामक  
रोग, यह कंठमें चारों ओर गठ-  
नोंके रूपमें होता है गलगंड रोग ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( अ० ) प्रतिवर्ष, हर-  
साल, सदैव, सालकीसाल ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) वार्षिक भेट,  
प्रतिवर्ष प्राप्त होनेवाला हक ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) वार्षिक कर, सा-  
लाना टेक्स, वार्षिक बंधा ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( अ० ) देखो वर्षाब्ध  
वर्षाब्ध ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) एक प्रकारका रोग-  
जो गांठके रूपमें शरीरके बाहिर  
फोड़े के रूपमें रहता है, रसोळी ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) वक, समय, काळ,  
बेला, बार, टाइम ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) सुन्दर स्त्री, बंशवा  
रणी, बारनारी ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( वि. ) सुन्दर अंगवाली,  
खूबसूरत ( स्त्री )

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( कि. ) पछताना, अफ-  
सोस करना, पश्चात्ताप करना,  
ठगना ।

वर्षाब्ध वर्षाब्ध ( सं. ) भरोसे निबन्धनकरके  
निर्धारित करके, सवधाने ।

पश्चात् (अ०) भरोसा, विश्वास ।  
 पश्चात् (वि०) अधम, नीच, दीन,  
 नम्र ।  
 पश्चात् (सं.) देखो पश्चात् ।  
 पश्चात् (सं.) कौड़ी, छोटा शंख ।  
 पश्चात्-८ (सं.) भाग, हिस्सा,  
 शंख, बाँटा, लड़ाई झगड़ा ।  
 पश्चात् (क्रि०) लड़ाना, झगड़  
 पैदा कराना, तकरार कराना ।  
 पश्चात् (सं.) लड़ाका, फुसादी,  
 झगड़ालू, योद्धा ।  
 पश्चात् (सं.) एक प्रकारका  
 बूँस और उसका फूल ।  
 पश्चात् (अ०) से द्वारा, ऊँचिये ।  
 पश्चात् (सं.) एकप्रकारका उदर  
 सम्बन्धी रोग, (बच्चोंको)  
 पश्चात् (अ०) बहानेसे, मिससे  
 छलसे, कपटसे, मिथसे ।  
 पश्चात् (सं.) इच्छा, आतुरता,  
 चाह, लालसा, लिप्सा, अभिलाषा  
 अवकाश, फुरसत ।  
 पश्चात् (क्रि०) विवाहना, पसन्द  
 कराना, बरणकरना, प्रदान देना,  
 खर्च करना ।  
 पश्चात् (क्रि०) निमंत्रित होना,  
 किसी अनुष्ठान के लिये नियोजित  
 होकर जाना ।

पश्चात् (सं.) सुभर, शूकर, सूँवर,  
 कौल, विष्णुका तीसरा अवतार भी  
 बराहअवतार हुआ (पुराणोंमें)  
 पश्चात् (सं.) भाप, वाष्प, गैर ।  
 उच्चारण, बोल, दिलकी जलन ।  
 पश्चात् (सं.) बाष्पयंत्र, भाप  
 के द्वारा चलनेवाली कल ।  
 पश्चात् (क्रि०) दिलकी नि-  
 कालना, दुःखोद्धार प्रकट करना ।  
 पश्चात् (वि०) बाष्प युक्त, भाप  
 (वाफ) निकलने की जगह ।  
 पश्चात् (सं.) सौँफ, सुगन्धित  
 बीज विशेष ।  
 पश्चात् (सं.) सौँफ पर  
 शकर की चाशनी चढाकर बनाये  
 हुए गोल गोल दाने ।  
 पश्चात् (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, सर्वो-  
 त्तम, प्रधान, मुख्य ।  
 पश्चात् (सं.) दो महीनों में पकने  
 वाला एक प्रकार का धान्य (अ०)  
 फिरसे, दुबारा । [ हुआ हुआ ।  
 पश्चात् (सं.) तालाबमें खोदा  
 पश्चात् (सं.) भेड़िया, एक कुत्तेके  
 बराबर मासभोजी भयानक जंगली  
 जानवर ।  
 पश्चात् (सं.) जलका अधिपति देव,  
 पश्चिम दिशका स्वामी, जलदेव ।

१३५ ( सं. ) वरण करनेका क्रिया, ब्राह्मणको किसी अनुष्ठान पर नियोजन करना । शिक्षा, दंड, मार, फँसना, रुकना, पसंदगी ।

१३६ ( अ० ) साथ, संग, सहित ।

१३७-१३८ ( सं. ) उपनयन अथवा विवाह संस्कारके उपलक्ष्य में जातिभोजन ।

१३९ ( सं. ) सुतली, रस्सी, डोरा ।

१४० ( कि. ) काममें आना, प्रयोग होना ।

१४१ ( सं. ) भोजन, जातिभोजन, जेबनार, शुभ अशुभ कार्यमें जाति भोज, खच, खरच ।

१४२ ( सं. ) गोल आकारका पत्थर, पत्थरका बेलन, पत्थरका रुठ । [ रस्सी ।

१४३ ( सं. ) बड़ा रम्मा, भारी

१४४ ( सं. ) भ्रमर, भौरा, आले, मलिन्द जन्तुविशेष ।

१४५ ( सं. ) मक्खी, मक्खिका, भ्रमरी, भौरा, कीटविशेष ।

१४६ ( सं. ) वंश्यापना, वांश-पन, तिथी, तापतिथी ।

१४७ ( कि. ) देखी १३८० ।

१४८ ( सं. ) जाति, ज्ञाति, मंडल, वंश, समुदाय, भाग, विभाग, प्रकरण, दर्जा, क्रास ।

१४९ ( सं. ) वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो ( जैसे ६४ वर्ग और मूल ८ होता है ( ८ x ८ = ६४ गणितविषय ) ।

१५० ( सं. ) एक प्रकार का गणित, ( बीजगणितमें ) ।

१५१ ( वि. ) जातिका, वर्णका, वर्ग सम्बन्धी ।

१५२ ( वि. ) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, वीक्षित, रह कियाहुवा, मना किया हुआ ।

१५३ ( कि. ) तजना, रोकना, मना करना, छोड़ना ।

१५४ ( वि. ) देखी १५५, त्याग करनेयोग्य, त्याग्य ।

१५५ ( सं. ) जाति, ब्राह्मण जाति चार वर्ण, रंग, अक्षरमाळा, मूल-क्षर, हुरुफ, अक्षर, भेद, यश, वर्णन । [ वस्तु ।

१५६ ( सं. ) शोधन, गुणकषण, वर्धनीय ( वि. ) कचनीय, प्रसस्त, कहने योग्य काबिलतारीफ़ ।

१५७ ( सं. ) विभिन्न जातिके, माता पिताओंसे उत्पन्न । दोगला, असबर्ण, दुफानी, उरछंखल ।

वर्धमानार्ध ( सं. ) अनुप्रास, ऐसा वाक्य जिसमें एकही अक्षर छोट छोट कर आया हो । [अक्षरमाला ।

वर्धमाना ( सं. ) मूढाक्षर, भाषाकी

वर्धनिवार ( सं. ) अक्षरविचार ।  
( व्याकरणमें प्रथम पाठ ) ।

वर्धविपर्यय ( सं. ) अक्षरका आधा पीछे होजाना ।

वर्धपुं ( कि. ) वर्णन करना, कहना, बयान करना, कथन करना

वर्धुष्ट ( सं. ) वह पद्य जिस के प्रत्येक चरण में छन्द गुरु का कम एक समान रहता हो, गणवृत्त ।

वर्धुसंधि ( सं. ) अक्षर सन्धि ।

वर्धुवर्ध ( वि. ) वर्ण और अवर्ण का मिश्रण, उच्च नाच का मेल ।

वर्धुलुभक्षि ( सं. ) अकारादि वर्णक्रम पूर्वक सूची ।

वर्धुलुप्रास ( सं. ) यमक, यति, वर्ण का अनुप्रास (छन्द शास्त्र में)

वर्धुभिभ ( सं. ) ब्राह्मण, क्षात्रिय वैश्य और शूद्र वर्ण तथा, ब्राह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास आदि जाभिम ।

वर्धित ( वि. ) कथित, बयान किया हुआ । कहा हुआ ।

वर्धनिवार ( सं. ) अक्षरका उच्चारण ।

वर्धुक्ष ( सं. ) चाल, रस्म, आचरण वर्तन करने की रीति ।  
चालचलन, व्यवहार, चरित्र ।

वर्धन ( सं. ) आचार, रीति, वर्तन अस्वचार, चालढाल ।

वर्धमान ( सं. ) समाचार, खबर, समाचार पत्र, अस्वचार, ( वि. ) आधुनिक मौजूदा, विद्यमान ।

वर्धमानकाण ( सं. ) जो समय चल रहा हो, मौजूदावक ।

वर्धमानपत्र ( सं. ) समाचारपत्र, गजट, अस्वचार, म्यूज पेपर ।

वर्धपुं ( कि. ) आचरण करना, चलना, रहना, बनना, होना, जाना, परखना, देखना ।

वर्धारे ( सं. ) देखो वश्तारे ।

वर्धारेपुं ( कि. ) देखो वश्तारेपुं

वर्धारे ( सं. ) जैन साम्प्रदायिक रीति, श्रावक धर्मानुयायी साधु ।

वर्धारे ( वि. ) रहनेवाला, होनेवाला ।

वर्धारे-व ( वि. ) गोलाकार, गांठ वस्तु, मण्डल, गोला ।

वर्धारे ( वि. ) वृद्धिकर्ता, बढ़ाने वाला, अधिकता देनेवाला ।

वर्धमान ( वि. ) वर्धित, बढ़ता हुआ, सुव्यवस्था, उदित, सुख सम्पत्ति में वृद्धिगत ।



वर्ध ( सं. ) कवच, शरीर नाभ,  
लोहमयवस्त्र, वस्त्र ।

वर्ध ( वि. ) भेद्य, मुक्त, खाद्य,  
पसन्द किया हुआ, प्रवर, वर,  
शिरोमणि ।

वर्ध ( सं. ) साल, संवत्, बारह  
महीने अवधि ३६० या ३६५  
दिनों का अवधिकाल, वत्सर ।

वर्ध ( सं. ) संवत् का हाव  
एक वर्षभरका भविष्य कथन,  
( ज्योतिष शास्त्रद्वारा ) ग्रह गणित  
द्वारा वर्ष भर के शुभ दुःख की  
जन्मत्रिका ।

वर्ध-हाव-३६५ ( सं. ) वृद्धि, वा-  
रिध, वरसात, प्रसूतकाल, पानी  
बरसना, ऊपर से गिरना ।

वर्ध-साल ( सं. ) वार्षिक वेतन,  
आत्मना तनक्याह या पुरस्कार ।

वर्ध-वर्ध ( सं. ) प्रतिवर्ष, हरसाल,  
प्रति संवत्सर, वार्षिक ।

वर्ध-भा ( सं. ) वर्ष उद्योग, वर्ष  
परिभ्रम, मिथ्या प्रवृत्ति ।

वर्ध-भा-भूमी ( सं. ) भटका जमी,  
झमासटकी, झीना झपटी ।

वर्ध-वृ ( सं. ) इच्छा, वृत्ति, भावना,  
रुचि, मति, आकार, बलीता  
( जेवन्के बँठक ) साक्षी, मोह,

स्वरूप, मौक, वृत्ति, मरोड़, टेका-  
पन, झीहारमें टोटेनफंका बड़ा,  
बेलन । [ में रकी हुई जमीन ।

वर्ध-वृ-वृ ( सं. ) वृत्तोंके बढने  
वर्ध-वृ-वृ ( सं. ) वृत्ति, पुत्र, लड़का ।

वर्ध-वृ ( सं. ) यूरोप संकेके हालेव  
देशकानिवासी, बच्चा, हाथेवर्ध ।

वर्ध-वृ-वृ ( कि. ) लगरहना, संलग्न  
होना । [ हावकी चूड़ी ।

वर्ध-वृ ( सं. ) हावका कंकण, कंगन,

वर्ध-वृ ( सं. ) चाहिये उससे  
अधिक बचकता, बेचनी चुक-  
बुलाहट । [ पटी, बंचल ।

वर्ध-वृ-वृ ( वि. ) बेचनी, लड़-

वर्ध-वृ-वृ ( कि. ) बेचलता करना,  
चुलबुलाहट करना, बेचनी करना ।

वर्ध-वृ-वृ ( सं. ) देखो वबोधात ।

वर्ध-वृ-वृ ( वि. ) बंचल, चुक-  
बुला, चपल, उईव, उच्छलक ।

वर्ध ( सं. ) फकीर, ( मुवलमान )  
साधु, ईश्वरभक्त ।

वर्ध ( सं. ) पुट, तह, वर ।

वर्ध-वृ-वृ ( वि. ) लगा हुआ,  
दिया हुआ, लकनमें फंदाहुका ।

पक्षधनुं ( क्रि. ) हिलना, लगना,  
पलना, लालचमें एकबार सफलता  
पाकर बार बार उसकी इच्छा  
करना । [ खुजाळ ।

पक्षु-ण ( सं. ) खुजली, खाण,  
पक्षु-रुं ( क्रि. ) नोचना, खुजलाना,  
खोरना, कुरेदना, खुरचना ।

पक्षे ( सं. ) स्थिति, दशा, हालत,  
अवस्था, दुर्दशा, उपाय । [ दिन ।

पक्षोपावार ( अ० ) तीसरे चौथे  
पक्षोपाधि ( सं. ) मथनी, बिलोनेका  
बरतन, बिलोवनी, मंथनदण्ड,  
रबई, रई, दही आदि मथनेका  
दण्ड अथवा पात्र ।

पक्षोपात ( सं. ) बैचैनी, व्याकु-  
लता, तोषन, गड़बड़, हायहाय,  
रुदन, बिछाप ।

पक्षोपातिथुं ( वि. ) तूफानी, उप-  
द्रवी, बैचैन, व्यकुल, व्यथित ।

पक्षोपधुं ( क्रि. ) इधर उधर हि-  
लाना, मथना, दूध दही आदि  
पदार्थोंका मंथनदण्ड द्वारा मथना ।  
बिलौना ।

पक्षध ( सं. ) छाल, लक, बकला,  
बूझोकी छाल, बूझकी भीतरी छाल,  
बूझकी छालके बक ।

पक्षध ( सं. ) पति, स्वामी, नाब,  
कैत, खसम, आशिक, परकीव  
प्रतिम, ( वि. ) प्रिय, प्यारा,  
दुलारा । [ प्रिया, माझक, प्रियतमा ।

पक्षध ( सं. ) बी, भार्या, पत्नी,  
पक्षधार्थ्य ( सं. ) वल्लभ संप्र-  
दायका आदि प्रवर्तक, वल्लभ भट्ट ।

पक्षध ( वि. ) वल्लभाचार्य सम्बन्धी  
पक्षधरी ( सं. ) बेल, लता, बेलि ।

पक्षध-रि ( सं. ) दामक, बिम्बोट,  
दामकका बनाया हुआ मिट्टीका घर ।

पक्षध ( सं. ) ग्वाला, ग्वाल, गल  
पालक मनुष्य ।

पक्षध ( सं. ) देखो पक्षधरी ।

पक्षध ( सं. ) पूर्ववत्

पक्षध ( सं. ) पूर्ववत्

पक्षधुं ( वि. ) ठीका, चौड़ा खुला  
हुआ, जुदाजुबा ।

पक्षधुं आधुं ( क्रि. ) टंडः चलना  
तिरछा चलना । [ धामा ।

पक्षधुं ( क्रि. ) ठहराया, रोका,

पक्षधुं ( क्रि. ) कान में, आना,  
सर्व होना, प्रयोग होना ।

पक्षधुं ( अ० ) खुजाळ आना,  
खुज लाना । [ तुल, खुजाळ ।

पक्षध ( सं. ) साज, खुजाळद,

वशाधुं ( कि० ) ठगाना, छेड़ना ।  
 वशे ( सं० ) विशेष, ज्ञान, समझ  
 शक्ति ।

वश ( अ० ) स्वाधीन, ताबे, मो-  
 दित, आधीन, अधिकृत, अधिकार  
 युक्त, अधिकार प्रभुत्व । ( वि० )  
 ताबेदार, वश बर्ता ।

वशा ( सं० ) बंध्या, बौद्ध औरत,  
 पुत्री, ननंद ( पति की बहिन )  
 हथिनी, हस्तिनी, हाथी की मादा ।

वशात् ( अ० ) वशसे, योगसे,  
 अधीनता पूर्वक ।

वशात् ( सं० ) कीमत, मूल्य, दूनी।  
 वक्षिपर ( सं० ) सर्प, साँप, भुबंग,  
 अहि, पक्षग, उरग, विषधर,  
 विष, जहर, हवाहल ।

वशीकृषु ( सं० ) आधीन करने  
 की प्रक्रिया, वश करने के लिये  
 तंत्र, मंत्र अथवा मंत्र आदि,  
 वश में करनेका मन्त्र-प्रयोग-आदि ।

वशीः ( अ० ) विशेष, अधिक,  
 ज्यादा ।

वश्य ( वि० ) वशामूल, अधीनी भूत ।

वसदाधुं ( सं० ) मनोरथ विचार,  
 प्रस्ताव, भेद, तत्कालिक, कटे हुए  
 को समझाना, वेदनाभूति, किनासा ।

वसदाधे ( सं० ) किनासा करने  
 वाला । [ जोटा ।

वसदाधुं ( वि० ) विगड़ा हुआ,

वसति-स्ती ( सं० ) बस्ती, वास,  
 रहनेवाले लोगोंकी संख्या । बची  
 हुई जगह ।

वसतीवाडी ( सं० ) बाल बच्चे ।

वसतेव ( सं० ) अग्नि, आग, अन्नका

वसन ( सं० ) देखो व्यसन पहिरने  
 के वस्त्र, पौशाक, कपड़े लट, बास,  
 निवास ।

वसनी ( वि० ) देखो व्यसनी

वसेत ( सं० ) ऋतु विशेष, ऋतुराज  
 फाल्गुन और चैत्र व। महीना,  
 मीन और मेष राशिपर जब तक  
 सूर्य रहता है तब तकका वाक्य,  
 राग विशेष ।

वसन्त ( तत्त्व० ) ( सं० ) वार्षिक वृत्त  
 विशेष । यह छन्द तमन, अमन,  
 दो जगन और दो गुरुका होता है  
 ( विंगल शास्त्र ) [ पंचमी ।

वसंतपंचमी ( सं० ) माघ शुक्ल

वसंतपूज ( सं० ) ब्रह्मों को  
 बुझकर वसन्तका पूजन करने की  
 प्रक्रिया ।

वसन्ति ( सं. ) वसंती, सफेद  
बस्तर कर्पूरे के रंग के छीटे बाक  
कर झिंघों के जोड़ने का बस्त्र बना  
या जाता है इसे झिंघों वसन्त  
जड़ में जोड़ती हैं ।

वसन्ती ( वि. ) पीला वसन्तसम्बन्धी ।

वसन्तोत्सव ( सं. ) वसंत ऋतुका  
उत्सव, होळिकोत्सव ।

वसन्तु ( वि. ) सफ्त, कठिन,  
कठोर, कर्षा मुश्किल, खराब,  
झोटा, बांका, आढ़ाटेडा ।

वसन्त ( सं. ) सम्बन्ध, मेल, मिलाप ।

वसन्तो ( सं. ) टुकड़ा, खण्ड, भाग,  
शुद्ध, प्रबन्ध, तद्बीर ।

वसन्तो ( सं. ) बारदाना, टाट,  
बोरी, बोरा, बैल, आल ।

वसन्तो ( सं. ) अन्देश, खतरा,  
भय, अन्वेष्ट, बहम, शक ।

वसन्तो ( सं. ) भाग, जमीनका टुकड़ा ।

वसन्तु ( सं. ) शिल्पकारियोंकी  
जाति, जैसे बडई, लुहार, मोची,  
कुंभार, सुनार, नई, धोबी बस्ती  
का काम करनेवाले ।

वसन्तो ( सं. ) बराबरी, बडा-  
बडी, स्पर्धा ।

वसन्तु ( कि. ) रहना, वास करना,  
निवास करना, बसना, मनमें आना,  
दिक्में खंचना, निश्चय होना,  
ठसना, मुकाम करना ।

वसन्ती ४२वीं ( कि. ) बन्द करना,  
रोकना, ठहराना, अटकाना ।

वसन्तु ( सं. ) अत्तारके बहाँ मिक-  
नेवाली बस्तु, औषधि, दवा, जड़ी  
बूटी ।

वसन्त ( सं. ) कीमत, मूल्य, पूंजी ।

वसन्तु ( कि. ) बसाना, बस्ती  
करना, लाकर बसाना, करीब  
करना, नये स्थानपर बसाना ।

वसन्तु ( सं. ) कोल भीलों द्वारा  
ग्राम रक्षा ।

वसन्तो ( सं. ) चौकीदार, रक्षक,  
पहिरेवाला, नगर रक्षकाला ।

वसन्त ( सं. ) जागीर, आयदाद,  
उत्तराधिकारपत्र ।

वसन्तनाथु ( सं. ) मृत्युके बाद  
अपनी आयदाद जागीरका अधि-  
कारपत्र, वसीयतनामा ।

वसन्तो ( सं. ) वास, निवासस्थान,  
रहनेका स्थान ।

वसन्तो-सीधो ( सं. ) जरिया,  
खदर, मारफट, द्वार, घोष ।

पशु ( सं. ) गज, देवताधिकेय,  
धर, ध्रुव, सोम, विठम्ब, जमिळ,  
अनळ, प्रबुध और प्रभास वे  
अष्ट वस्तु नामसे प्रसिद्ध देवता हैं ।  
पैसा, धन, द्रव्य, वृक्ष, सूर्य, अग्नि  
पशुभु-डीन्पु ( कि. ) दूध देने  
से बंद होना, गाव जैसे इत्यादिका  
दूध देने से हट जाना ।

पशुधा ( सं. ) पृथ्वी, भूमि ।

पशुभति ( सं. ) पूर्ववत् ।

पशुध-सूध ( सं. ) प्राप्त, जमा,  
आमदनी, आव ।

पशुध करी ( कि. ) प्राप्त करना,  
आमदनी संग्रह करना ।

पशुध वपु ( कि. ) प्राप्त होना,  
आमदनी मिलना, ऋण आदि  
प्राप्त होना ।

पशुधारी ( सं. ) वसूल करनेवाला,  
वसूली करनेवाला, उधानेवाला ।

पशुधारी ( सं. ) आमदनी देकर  
जो धनवाकी रहे, यणितविक्षेप ।

पशुधात ( सं. ) महसूल, जमाबंदी,  
वसूली भरना, प्राप्ति ।

पशे ( सं. ) रूठे बीधा, विस्वा,  
बीस विस्वांकी, सवा पांच हाथ,  
साठे तीस गज, भूमि जापेका

परिमाणविक्षेप, जम्हाय, बटफळ,  
आवक ।

पस्त ( सं. ) देखो पस्तु ।

पस्तार ( सं. ) देखो विस्तार ।

पस्तारधु ( वि. ) बड़े कुटुम्बवाली ।

पस्तारी ( वि. ) बड़े कुनवेवाला,  
बड़ा गृहस्थ, कुटुम्बगुण ।

पस्तीपन ( सं. ) ग्राम लहर  
इत्यादिकी अनुष्मपनवा । जन-  
संख्या ।

पस्तीपानु ( वि. ) बड़े कुटुम्बवाला

पस्ती ( सं. ) वस्ती, जेन, जन,  
मनुष्य, आवासी ।

पस्तु ( सं. ) पदार्थ, द्रव्य, सामग्री,  
चीज, मूल स्वभाव, गुण, धर्म ।  
मूल उद्देश, भाव, तात्पर्य, अर्थ,  
नाटक इत्यादिका विषय ।

पस्तुगत्वा ( अ० ) वास्तविक, दर  
अस्ल, सची दृष्टिसे देखनेपर ।

पस्तुतः ( अ० ) सचमुच, दर  
अस्ल, निश्चयरूप ।

पस्तेव ( सं. ) अग्नि, आग, अनळ ।

पञ ( सं. ) वसन, कपड़ा, चौर,  
पट, पौशाक ।

पञ्चोत्तम ( सं. ) चौरहरण,  
वज्रोंकी कूट, खसोट ।

पञ्चाशत्कार ( सं. ) कपड़े लसे और जेवर, बसनाभूषण, जेवर तथा कपड़े ।

पञ्चुं ( वि. ) देखो पञ्चुं ।

पञ्चन ( सं. ) अग्नि, वह्नि, आग, अग्न, ( सं. ) बाहन, सवारी ( कि. ) लेजाना, वहन करना ।

पञ्चपातुं ( कि. ) ठगाना, छलेजाना ।

पञ्चल ( सं. ) बाह, धार, काट-छालनेकी शक्तिवाली धार, धाव, जलम, गण्डके जेतकी कटती, कटनी ( फसल या खेतकी )

पञ्चलक्ष ( सं. ) काटातराशीका धंदा, ( डाक्टरका )

पञ्चलु ( सं. ) सगड़ाकू, मांजगड़ करनेवाला, तकरी ।

पञ्चलुं ( कि. ) देखो पञ्चलुं ।

पञ्चलुं ( सं. ) खजूरका कोयल पिंखखजूरका बैल, बरिया ।

पञ्चली ( सं. ) धीभरनेका पात्र विशेष ।

पञ्चलीजे ( सं. ) देखो पञ्चलीजे ।

पञ्चलु ( सं. ) नाव, नौका, जलमान, पोत, जहाज ।

पञ्चलुं ( सं. ) सब्जक, पादुका, पावदी ।

पञ्चलुपदी ( सं. ) नाविक, मन्नाह, खलासी, जहाजोंमें मास भरकर जलमार्ग द्वारा व्यापार करनेवाला बड़ा व्यापारी ।

पञ्चलुपट्टं ( सं. ) समुद्रयात्रा, बल-यात्रा, सफर, समुद्रयान, नाव, जयवा जहाज चलानेका धन्धा ।

पञ्चलुं ( सं. ) प्रभात, मिनुसारा, मोर, सुबह, प्रातःकाल ।

पञ्चलुं ( सं. ) पूर्ववत् (छन्दमें)

पञ्चल ( सं. ) किसीकी सहायता, हुकम, मदद, धरियाव, सहायताके लिये प्रार्थना, किसीकी रक्षाके लिये भेजीहुई सेना । [ प्रेम, लाव, प्यार ।

पञ्चल ( सं. ) हेत, प्रीति, स्नेह

पञ्चलपणु ( सं. ) हेत, प्रेम, आसक्ति, माया, प्यार ।

पञ्चलुं ( वि. ) प्रिय, प्यारा, दुखारा, लावला, योग्य, उचित, रुचिकर, जिससे प्रेम उत्पन्न हो ।

पञ्चलसेरी ( सं. ) हितेच्छु, शुभ-चितक, शुभेच्छु ।

पञ्चलुं ( कि. ) ठगाना, छलेजाना छलना, फुसलाना, बहकाना, पोसना, ठगाना ।

पञ्चलपणु ( सं. ) मजदूरनी ।

वर्धित-३ ( सं ) भ्रम, मिथ्या, परिभ्रम, आयास, मजदूरी, मजदूरकाम, मजदूरी, मेहनताना, मेहनतकरनेवाला, बेलदार, बदलेमें कुछ लेकर किया हुआ काम ।

वर्धितरी ( सं ) मजदूर, मजूर, बेलदार ।

वर्धित ( सं ) प्रथा, चाल, रिवाज, व्यवहार, शिरस्ता, व्यवस्था, प्रबंध लेन, देन, संबंध, प्रसंग ।

वर्धित ( सं ) हिसाब लिखनेकी किताब, वंशावलीकी पुस्तक ।

वर्धितपुल ( सं ) दिवालीके दिन हिसाबकी नई किताबें चालूकी जाती हैं और उनका पूजन होता है ।

वर्धितपटी ( सं ) प्रथा चलानेवाला, रीति ढालनेवाला । [ बाळा भाट ।

वर्धितवंश ( सं ) वंशावली पढ़ने

वर्धितवटदार ( सं ) व्यवस्थापक, प्रबन्धक, कारभारी ।

वर्धित ( सं ) बघू, बहू, पत्नी, भार्या, औरत, झुमाई, दारा, प्रिया, कान्ता, गृहिणी, अर्धांगी, कटल, पुत्रवधू, स्तुषा, श्रीके नामके साथ ससुरालमें इशाराको प्रयोग करते हैं । [ श्री पुरुष ।

वर्धित ( सं ) पतिपत्नी, वरवधू,

वर्धित ( वि ) कथान विवाहितकी वर्धित ( सं ) बँटपरा, बाँट, विभाग, वर्गीकरण, हिस्सा भाग ।

वर्धित ( कि ) हिस्सेकरना, भागकरना, विभागकरना, अलग अलगकरना, मतभेद होना, फूट होना ।

वर्धित ( कि ) लड़ाईकरना ।

वर्धित ( कि ) भागहोना, हिस्सा होना, पृथक रहना, मित्रता छूटना, फूटहोना । [ चाल ।

वर्धित ( वि ) प्रवाहित, बहता हुआ,

वर्धितनीके अभिप्राय ( कि ) चाल कार्यमें विघ्न उपस्थित करना, खलल करना ।

वर्धितनी-से ( सं ) चाखनाम दनी या रोजगार धन्या ।

वर्धित ( कि ) दूरकरना, अलग रखदेना, भटकाना, ध्यानमें नलेना, कुछ परवाह न करना ।

वर्धित ( सं ) शक, सन्देह, सुंवाई भ्रम, आति, संसय, अन्वेष्टा, अधिश्वास, खिचक, दुष्टभाव, कुल्लपना, अन्ध विश्वास ।

वर्धित ( वि ) संकित, अधिश्वास शक्ती, तरंगी, लहरी, कचे कावैष्ण संसारी ।

पहेलुं भुं ( सं. ) अस्तसंघर्षी,  
बहुत संदेह करनेवाला व्यक्ति ।  
पहेर ( सं. ) तराशने अथवा छेद  
करनेसे निकला हुआ धूँसा, कुरावा  
धूर ।  
पहेरुं ( कि. ) कटना तराशना,  
छेदना, चीरना ( लकड़ी इत्यादि )  
पहेरु ( सं. ) आरी, करवत,  
आरा, करौत, तराशने अथवा  
चीरनेका बेलन ।  
पहेरुमि ( सं. ) चीरनेवाला,  
तराशनेवाला, आराकस, बहई ।  
पहेरा-भुं ( सं. ) तराशने या  
चीरनेका बेलन । [ फासका ।  
पहेरा ( सं. ) अन्तर, भेद, फर्क,  
पहेल ( सं. ) गायी, वाहन, सवारी ।  
पहेलुं ( वि. ) उतावला, अस्वस्थ  
( अ० ) अस्वीसे, क्षीप्रतासे, ते-  
जसि, बोदीही धैरमें, तुरन्त, सर-  
लतासे, बिना परिश्रम, सुशीसे ।  
पहेरापुं-रापुं ( कि. ) बह-  
कना, बहार निकालना, ठगाना,  
निकालना, फुसलाना । [ कमाना ।  
पहेरापुं ( कि. ) नफापाना  
पहेरापुं-वापुं ( सं. ) लड़के या  
लकड़ीसी सासू, व्यायन ।

पहेरापुं ( सं. ) बरकम्बाका बाप,  
( आपसमें )  
पहेरा ( सं. ) व्यवहार, सम्बन्ध,  
नाता, चरोपा, परिचय, समागम,  
व्यापार ।  
पहेरापि ( सं. ) साहूकार व्यापारी ।  
पहेरापि ( वि. ) साधारण, मध्यम  
जिससे व्यवहार चले ।  
पहेरा ( वि. ) साधारण, मध्यम ।  
पहेरुं ( कि. ) बहना, प्रवाहहोना  
खूना, टपकना, बहना, पूराहोना,  
इरबाहिरजाना, बहकना, फटना,  
उड़बहोना, निकलना, अमकीर  
होना, उठना, तानना, सहक  
करना निमाना ।  
पहेनि ( सं. ) अग्नि, आग, पावक ।  
पहेरुं ( कि. ) चलेजाना, जाते  
रहना, बहजाना, निकलजाना ।  
पहेल ( अ० ) चलाजा, निकलजा ।  
पहेली ( सं. ) देखो पहेली ।  
पहेली ( सं. ) बिना, बगैर ।  
पहेल ( सं. ) देखो पहेल ।  
पहेरा ( सं. ) देखो पहेरा ।  
पहेरापि ( सं. ) देखो पहेरापि ।  
पहेरापि ( सं. ) देखो पहेरापि ।  
पहेरा ( सं. ) बौहरा, मुसलमान  
व्यापारी जाति विशेष ।



पञ्च ( सं. ) बळ, बट, हॅटन, मोड़  
मरोड़, सामर्थ्य, शक्ति, ताकत,  
आँटा, बनावट, रचना, मुक्ति,  
कळा, करामात, देव, ज्ञान, फाँदा  
दाव, अनुकूलता, द्वेषकीना, डाह,  
अंदस, जलन ।

पञ्चपञ्च ( सं. ) अनुकूलता और  
प्रतिकूलता, हानिलभ ।

पञ्चो ( सं. ) मनकीशांति, सहा-  
नुभूतीकमहोना ।

पञ्चभू ( सं. ) सम्बन्ध, निश्चय,  
प्यार, भूतप्रेतसे कष्टपाना, परकीय  
की पुरुषकाप्यार, कच्चा मालिक,  
भूत प्रेत इत्यादि ।

पञ्चभू ( सं. ) अरगनी, बिलगनी,  
बंघा हुआ रस्तीका डुकड़ा जिस  
पर कपड़े लते रखे जाते हैं ।

पञ्चभु ( कि. ) लगना, बिपटना ।  
पकड़ना, रख छोड़ना, जबरदस्तीसे  
लेना, मिलना, आलिंगन करना,  
कड़ाई करना, झगड़ा करना, टंटा  
फसाद करना । राँवकी सोहबत  
होना ।

पञ्चभू ( सं. ) भूत इत्यादिके  
स्थिति होना, भूतप्रेत इत्या० ।

पञ्चभू ( कि. ) लगाना, बिप-  
टाना, मिलाना, मेट कराना ।

पञ्चभू ४४पु ( कि. ) आलिंगन  
देना, बिपट जाना । [ करना ।

पञ्चभूने भो४पु ( कि. ) आग्रह  
पञ्च ४४पु ( कि. ) उल्लङ्घना,  
इम्पट्टी देना, बडाना, बल देना ।

पञ्चभू ( सं. ) देखो पक्षभू ।

पञ्चतर ( सं. ) बहल, एबड़ ।

पञ्चतु ( अ. ) पीछे ओटते, बापिच  
होते ।

पञ्चता ५४पु ( सं. ) शांति, दुहावे  
में नरम होता हुआ कोच, जोरकी  
कमी, बर्षा होनेका चिन्ह ।

पञ्चती ३७॥ ( सं. ) बीमार मनुष्य  
को घीरे घीरे मीरोगता प्राप्त होना ।

पञ्चती ६४॥-६४॥३॥ ( सं. ) माम्भो-  
दय, अच्छी दशाका आगमन ।

पञ्चती ( अ. ) पीछे, पीछेसे, बादमें ।

पञ्च४१२ ( वि. ) ऐंठ हुआ, आँटे-  
दार, पेचदार, बटा हुआ ।

पञ्च भा४पु ( कि. ) बल देना,  
बटना, मरोड़ना, हॅटना ।

पञ्चक ( सं. ) चटपट, बेचैनी,  
अस्वस्थता । व्यग्रता ।



पंथी ( वि. ) उरन आसिका  
अच्छी किरण, बांक, बोर ।

पंथी ( सं. ) बकता, टेडापन,  
आभूषणविशेष, अंगुलियोंमें पहि-  
नेका एक जेवर विशेष, चोड़ा,  
अथ, ( वि. ) बांका, टेडा, तिरछा,  
आड़ा ।

पंथी ( सं. ) बरको देनेका दहेज ।

पंथी ( वि. ) देखो पंथी ।

पंथी-का ( सं. ) टेडापन, तिर-  
छापन, बकता, बांक ।

पंथी भोथु ( वि. ) टेडा बोलनेवाला ।

पंथी बाल ( सं. ) कुबाल, बड़-  
चल्ली । [ नाराची, असम्पुष्टता ।

पंथी नजर ( सं. ) अवकृपा,

पंथी पावडी भूषणी ( कि. ) वि-  
वाह्य निकासना, दरिद्रता दिखाना ।

पंथी ( वि. ) बक, आड़ा अवल्य,  
तिरछा, टेडा, बांका, बुरे रास्ते  
जानेवाला, कुटिल, चोरा, झंठा,  
मुकियुक्त, छेला, रंगीला, छुआ,  
अकड़ेत, अनयन, बकता, नाराची ।

पंथी-मुकुं ( वि. ) आठाटेड़ा, उछटा  
सीपा । [ बुरावर्ती करना ।

पंथी-भूषणुं ( कि. ) झूटकरना,

पंथी-तेडा ( वि. ) बिलकुल टेडा,  
बहुतही बांका ।

पंथी-नजर ( सं. ) दुर्बल, बुरेदेन ।

पंथी-नजर-भूषणुं ( कि. ) उपवास  
देखना; मोक्षपूर्वक देखना, प्रेम  
दाष्टे देखना, कुराष्टि ।

पंथी-भूषणुं ( कि. ) बुरा लगना,  
दुःख होना । [ बाला निकासना ।

पंथी पंथी भूषणी ( कि. ) वि-

पंथी भोथुं ( कि. ) झूठ बोलना,  
निन्दा करना, कटु भाषण करना ।

पंथी भो-भूषणुं ( कि. ) मुक्त मो-  
ड़ना, तिरछा देखना, गुस्से होना,  
मुंह बनाना, अप्रसन्न होना ।

पंथी-भूषणुं ( कि. ) नीचा मुकना,  
नमना, मुकना नम्रहोना ।

पंथी-पराधु-भूषणुं ( सं. ) छेन  
फकड़ ।

पंथी-वाणुं ( कि. ) नीचाकरना  
औंघा करना, उँढलना, नरम  
करना, अधिकारमें लेना ।

पंथी-वसधुं ( वि. ) अनयन, नाराज  
विराजित विषाद ।

पंथी ( वि. ) टेडा, आड़ा, बक  
तिरछा । [ बिनाअनके कह ।

पंथी-भूषणुं ( सं. ) पंथीकली,

पंथी-भू ( सं. ) कन्दरा, गुफा, नर,  
माँद, पिठ, दर, गुहा,

वाक्कि ( सं. ) पूर्ववत्, वगैरे किं.

स्थिति, बात, किस्मत ।

वाक्किन् ( सं. ) पठन, अध्ययन  
विद्याभ्यास ।

वाक्किन्पाठ ( सं. ) सबक, पाठ ।

वाक्किन्भाषा ( सं. ) पुस्तकमाला ।  
ग्रंथमाला ।

वाक्किपुं ( कि. ) पढ़ना, सिखेहुए का  
उच्चारणकरना, समझना, जानना  
अध्ययन करना, लक्षमें रखना,  
पारंगतहोना, अभ्यास करना,  
बचना, इच्छाकरना, चाहना ।

वाक्किपाठपुं कि. ) वीज्रतासे पढ़-  
जाना, सिखाहुआपूरातरहसे पढ़-  
जालन । [ पढ़ना ।

वाक्किपुं ( कि. ) ध्यान पूर्वक

वाक्किपुं ( वि. ) ठगाहुवा, छलाहुवा ।

वाक्किन् ( सं. ) इच्छा, मनोरथ,  
अमिलाश, वाञ्छा । [ भुराई ।

वाक्किपान ( सं. ) निन्दा, अपकीर्ति ।

वाक्कि ( वि. ) वन्ध्या, अप्रसूता,  
निस्संतान स्त्री ।

वाक्किपुं ( सं. ) वांछ औरत, वन्ध्या  
स्त्री, एकप्रकारकी गर्ल ।

वाक्किपाठा ( सं. ) एकका एक  
पुत्र, निस्सन्तान गृह, ( वि. )  
अत्यंत प्यारा, जकेलही ।

वाक्किपुं ( वि. ) जिसके संतान न  
होती हो, जिस कुटुंबमें बाल बच्चे  
न होते हो, फलराहित, बेफानवा,  
वाक्किपाठा ( वि. ) वंश  
बलनेके बिने पुत्रकी प्राप्ति, वंश  
तन्तु रूपमें पुत्रोत्पन्न होना ।

वाक्किपाठा ( वि. ) एकमात्र  
बहुत अधिकमूल्यका । [ प्रसाद ।

वाक्कि ( सं. ) भाग, अंश, हिस्सा,

वाक्किपुं ( कि. ) बांटना, भागकरना,  
प्रसाद देना, बेचना, हिस्से करना ।

वाक्कि ( सं. ) बांटा, हिस्सा, भाग,  
बटवारा ।

वाक्कि ( सं. ) कुंवारा, बेव्याहा,  
अविवाहित ( पुरुष ) रंजुषा ।

वाक्किपुं ( कि. ) काटना, कतरना ।

वाक्कि ( सं. ) खेतमें हलसेछ कीर  
करना, सीता, खेतमें हलद्वाराकी  
हुई रेखा ।

वाक्किपुं ( कि. ) गलेके बाँवके  
बास्ते सठिके टुकड़े करना ।

वाक्किरी ( सं. ) अन्नका एक प्रकारका  
खंडु विशेष, ईंछी, धुन, वह कीड़े  
जो रेकम तथा ऊनमें उत्पन्न  
होकर उगड़े जा जाते हैं ।

वाक्कि ( सं. ) बन्दर, कपि, मर्कट,  
बाबर, लंगूर, नील बंदर ( वि. )  
दुफानी, भुरा, दुष्ट ।

पं० १०० 'भूतपीतु' पं० १०० ( कि. )  
न करने योग्य, काम करना पड़ता  
है, कुछ सहना ।

पं० १०१ सगी करे के ( कि. )  
बचक, बदमाश, उच्छ, उच्छ-  
कल । [ विशेष ।

पं० १०२ ( सं. ) बंदरकी एक जाति  
पं० १०३ ( सं. ) उच्छता, बद-  
माशी, बांचल्य, लोफान ।

पं० १०४ ( सं. ) बंदरिया, बंदरकी  
मादा बंदरी बानरी ।

पं० १०५ ( सं. ) बन्दर, कपि, मर्कट  
बानर, बचन उठानेका यंत्र विशेष  
केन ।

पं० १०६ ( सं. ) एक लालरंगका पंख-  
वाला जंतु विशेष, हवा आनेके  
लिये छिद्र, अथवा लिङ्गी, बद-  
पिण्ड आदि वृक्षोंपर दूसरा वृक्ष  
( यह किमी पक्षीके बिछासे जोकि  
पुराने या लोफके वृक्षमें कर देता  
है उत्पन्न होता है । )

पं० १०७ ( वि. ) बैलको बढिया करते  
समय एकाध नस रह जानेसे  
जिसके अंडकोष बड़ गयेही ( बैल )

पं० १०८ ( सं. ) मतभेद, तकरार,  
लक, बहस, सन्देह, बन्धन,  
लक्ष्मण, आदि ।

पं० १०९ ( कि. ) विचार करना,  
झगडा करना, उज्जरना, बांघा  
बाझना, रोकना, अस्वीकार करना ,  
पान ( सं. ) रंग, वर्ण ।

पं० ११० ( वि. ) मुपुत्र, बाली, ब्यर्थ,  
तत्वहीन, मूर्खतायुक्त ।

पं० १११ ( सं. ) उदात्तपन, मूर्ख-  
ता, निस्सारता, असारता ।

पं० ११२ ( सं. ) वृक्षविशेष, बंसवृक्ष,  
दसफुडका माप विशेष, इंदे वगैरः  
तराशनेका औजार विशेष ।

पं० ११३ ( सं. ) बंशलोचन, औ-  
षधि विशेष ( यह नरम पदार्थ  
बांसमेंसे निकलता है )

पं० ११४ ( कि. ) कुछनहीं, नहीं ।

पं० ११५ ( सं. ) देखो पं० ११६

पं० ११७ ( सं. ) बांस, वंस, वृक्ष विशेष ।

पं० ११८ ( सं. ) रुपये भरनेकी  
लम्बी बैली ( इसेलोगप्रायः कमरमें  
बांधते हैं ) न्यौली ।

पं० ११९ ( कि. ) बांस, बूनेज  
योग्य जगह होना, ऊबड़बुहा ।

पं० १२० ( सं. ) बांसको चीरकर  
उससे कलिया पंके चढाई इसादि  
बनानेवाली जाति ।

वर्तमानवाच ( ) यह एक गायीके रूपमें प्रयोग होता है जिसका अर्थ यह होता है कि “ ईश्वर करे तू मर जावे ।

वर्तसधडी ( सं. ) वंशी, मुरली, वेणु, वांसरी, बसुरी, बंसरी ।

वर्तसे। ( सं. ) बसूत, बढईका लकड़ों छीलने के काममें आने-वाला एक औजार विशेष ।

वर्तसणी ( सं. ) देखो वर्तसधडी । और वर्तसधु ।

वर्तसी ( सं. ) हथियार विशेष, ( बांसपर छोड़ेका, फलजड़ा होता है )

वर्तसे ( अ० ) बादमें, पछि, पश्चात् अनुपस्थितिमें, गैर हाजिरीमें ।

वर्तसे। ( सं. ) शरीरका पछिका भाग, पीठ, पृष्ठ बन्ध, पीठकी खड़ी हड्डी ।

वर्तसे। वादेशवे। ( कि. ) घमण्ड होना गर्व होना, मारमारकर दुस्स्त करनेकी आवश्यकता पड़ना, मि-जाज बढ़ना ।

वर्त ( अ० ) साबाश, ठीक, वाहवाह शब्द, उचित, अच्छा, वा, किंवा

वर्त ( सं. ) बजन, हवा, वायु, समीर, वात, रोग, तरब, इच्छा ।

वर्तमानवे। ( कि. ) तरबमाना, लहरमाना, इच्छाहोना ।

वा। ( सं. ) बादी, वातरोग, बाई, एक रोग विशेष जिसमें दांतबन्द होजातेहैं मुईसे फेन गिरने लगती है और शरीर ठंडा पड़जाता है ।

वा। ( सं. ) बिबाई, पैरोंके तल्लों में एडिबोंमें, सदाके कारण दरारें होजाना, रोगविशेष ( बि० ) उईब, बेठौर ठिकानेका, बिभूत मस्तिष्कका, बेबकूफ, मूर्ख ।

वा। ( सं. ) देखो वा। ४ ।

वा। ( कि. ) फैलना एक कानसे दूसरेकानपर जाना ।

वा। ( कि. ) प्रकट होना, लहरमें जाना, दांवानाहोना ।

वा। ( कि. ) जमाव होना, ( लोगोंका ) यह वाक्य विशेष असभ्य लोगों के लिये काममें लाते हैं ।

वा। ( कि. ) मारना, मारते मारते खूब दुस्स्त करनेका, उताव डालना, मानमंग करना ।

वा। ( कि. ) परबाह न करना, नगिनना, पतन करना ।

वा। ( कि. ) हथर उधर भटकते रहना, हाथ खड़ा रहना ।

वाक्यांश (वि.) निरुपमी रहना,  
ठहर रहना।

वाक्यांश (वि.) बचराजाना।

वाक्यांश (वि.) बचराजाना  
मरनेके समान कष्ट होना।

वाक्यांश (वि.) बारीसे फूलाहुवा  
शरीर।

वाक्यांश (वि.) हतरजाना,  
मनमोही होना।

वाक्यांश (वि.) तरंगमें जाना  
मनमोहक बनाना।

वाक्यांश (वि.) अच्छी बुरी,  
नात फैलना, गुणदोष लगना  
प्रभाव होना, (संगतिका)

वाक्यांश (वि.) जो  
जरासी बातोंमें तकरार करता हो

वाक्यांश (वि.) शरीर, बचन, भाषा,  
लोक, आकार, दम, जीव, सार,  
बल, पानी।

वाक्यांश (वि.) ताबवृक्षके डण्डे  
के रेखे, जिसकी छल्लियाँ बनती हैं

वाक्यांश (वि.) कुछकुछतापुच्छ,  
कटुभा, पवन लगनेसे कटुभा  
विशेष।

वाक्यांश (वि.) वाचन पदुता  
बोझनेका तरीका, बाह्यपदुता,  
आवाजमें वादुर्ब।

वाक्यांश (वि.) जानकार, सिद्ध,  
अभिज्ञ, प्रवीण।

वाक्यांश (वि.) जाननेवाला भिन्न  
प्रवीण अभिज्ञ।

वाक्यांश (वि.) प्रवीणता, ज्ञे-  
पुण्य, जानकारी, बख्ता।

वाक्यांश (वि.) नाक।

वाक्यांश (वि.) शरीर, सज्ज, कि-  
करा, कथन, बोल, शब्दरचना,  
बचन, बोल, सूत्र, प्रयोगमान,  
कहावत, मसला। [ उत्तर।

वाक्यांश (वि.) वाक्यका

वाक्यांश (वि.) शब्दरचना में  
भूत, वाक्य में किसी प्रकारका  
अवगुण।

वाक्यांश (वि.) वाक्य-रचना-विचार (वि.)  
जिसमें वाक्य रचना अथवा वा-  
क्योंका विचार हो।

वाक्यांश (वि.) वाक्यका भाव।

वाक्यांश (वि.) वाक्यका मतलब,  
वाक्यका अर्थ।

वाक्यांश (वि.) वाक्पूरणार्थ  
शब्द, वाक्यकी सोभा सुनिके  
लिये अच्छे अच्छे शब्दों का  
प्रयोग।

वाक्यांश (वि.) सांकेतिक  
भाषा बोलनेवाली एक स्त्री, बहि-  
कविशेष।

वाभरी ( सं. ) परचूनी सामान,  
आटा, दाढ भी सफर शुद्ध नमक  
हवादि सामान, फुटकर सामान ।

वाभा ( सं. ) आपसि, आपदा,  
कम्बस्ती, दुःख, भूखों मरना,  
बुर्दिन, उछटी, कम्बदस्त, हैजा,  
कलरा ।

वाभह ( सं. ) एक प्रकारका नेत्र  
रोग, जिससे बाळ खिर आते हैं ।

वाभातुं ( वि. ) उबाड़ा, बिना  
हंदा, हवा लगता हुआ ।

वाभे ( सं. ) देखो वाभा ।

वाभू ( सं. ) वाणी, भाषा, जवान,  
वाग्दान ( सं. ) वचन, प्रदान,  
बाबा, वचन देना ।

वाभुहेवता ( सं. ) सरस्वती, सारदा ।

वाभुभक्षु ( सं. ) ताना, उलाहिना,  
उपासक, कटुवाक्य, वाणकी तरह  
जुमनेवाले वाक्य ।

वाभुबुद्ध ( सं. ) कलह, जवानी  
झड़ान, गाली गलौज, दल मैमें ।

वाभ ( सं. ) लगाम, बागडोर ।

वाभतां ( अ० ) ठीक समयपर,  
बराबर वक़्तपर । [ करता हुआ ।

वाभतुं ( वि. ) बचता हुआ, शब्द

वाभते धंठ ( सं. ), आत्मन्नापी,  
बेबीलोर, वादनी, लफंगा, मण्डी ।

वाभक्षुं ( वि. ) वायव्य देशक,  
वायवी, खिबोके पहिनेकी पोशाक  
विशेष ।

वाभशुं ( सं. ) बेजो वाभेण ।

वाभतुं ( कि. ) आवाज होना, खट्ट  
होना, ध्वनि होना, बजना, कलम  
करना, लगना ।

वाभीन ( सं. ) बृहस्पति, देवगुरु ।

वाभेशरी ( सं. ) सरस्वती देवी,  
गुरु पति, देवी विशेष ।

वाभे ( सं. ) संग, जामा, गळेंछे  
पुटनोतक पहिरनेका कपड़ा, चोगा,  
तेल सिन्दूरका लेपन । नोछ,   
पोशाक ।

वाभेण-ण ( सं. ) चमगादड़,  
पक्षी विशेष, बागल, उगाल,  
पाथुर, चबाकर फिर निकाल हुआ

वाभेणतुं ( कि. ) उगालना, पान-  
गुरु करना, खाया हुआ उगलकर  
फिर कुचलकर (चबाकर) खाना ।  
मनन करना, निम्नतन करना ।

वाभ ( सं. ) व्याघ्र, खेर, नाहर,  
सिंह, धीरमनुष्य, खूबश्वार, मर्ब-  
कर, भेड़ बकरियोंका झुंड, व्याघ्र  
प्रकृति का मनुष्य, सहिने रक्षा,  
मिरबी ।



वाध ३२९१ ( कि. ) प्रथम गर्मी  
कोको सुखगन्धित करना ।

वाध ३२९२ ( सं. ) अ-  
त्यंत आलस्य ।

वाध ३२९३ ( सं. ) बाधिन, व्याघ्री,  
बीती, सिंहनी, शेरनी, भयंकर  
स्त्री, वीर स्त्री ।

वाध ३२९४ ( सं. ) आश्विन मासके  
कृष्ण पक्षकी द्वादशी तिथि, ( इस  
दिन द्वार पर व्याघ्रका चित्र  
बनाते हैं )

वाध ३२९५ ( सं. ) एक प्रकारका  
खेल ( यह संकरोंसे खेला जाता है )

वाध ३२९६ ( सं. ) बिल्ली, मा-  
कौर, बिलार्ह, पशुविशेष, बिड़ाल ।

वाध ३२९७ ( कि. ) अ-  
त्यंत कठिन कार्य करना ।

वाध ३२९८ ( कि. ) बड़ा भारी  
काम करना, पराक्रम दिखाना ।

वाध ३२९९ ( वि. ) शूर, वीर, सा-  
हसी, बहादुर, शेरमार ।

वाध ३३०० ( सं. ) बागड़ी जातिकी  
स्त्री, कुहड़ स्त्री, ऐसी स्त्री जिसके  
छिरोके बाल बिखरे रहते हों ।

वाध ३३०१ ( सं. ) एक जंगली जाति  
विशेष, व्याधा, पारधी, पट्ट पाकि-

कोको पकड़नेका बन्धा करनेवाली  
एक संयत्नी जाति ।

वाधा ( सं. ) देवी पद्मे ।

वाधा ३३०२ ( सं. ) शेरकी जात,  
व्याघ्राम्बर, सिंहका चमड़ा ।

वाधेश ( सं. ) एक जातिका छुटेरा  
छुटेरोंकी जातिविशेष ।

वाधेश ( सं. ) राजपूतोंकी एक  
जातिविशेष ।

वाधेश्वरी ( सं. ) देवी, सिंहबाहिनी  
देवी, दुर्गा, भवानी, अम्बिका ।

वाध ( सं. ) बाधा, बाणी, बोली,  
भाषा ।

वाधक ( वि. ) बोलता, दुष्वा, वाचने-  
वाला, बोधदाता, कहनेवाला,  
बोलनेवाला । [ नेकी रीति ।

वाधन ( सं. ) पठन, कथन, वाच.

वाधनकृति ( सं. ) पढ़नेकी ता-  
कत, कहनेकी शक्ति, वाचनेका हब ।

वाधरूपति ( सं. ) वृहत्पति, देवा-  
चार्य, पुण्य वक्षत्र ।

वाधा ( सं. ) बाणी, बोली, भाषा,  
वाक्, वचन, वच, वाच, ज्ञान,  
भाषण, बोलनेकी शक्ति, वादा ।

वाधासन ( सं. ) बन्धा, मारुप  
करनेवाला ।

वाञ्छाण ( वि. ) स्पष्ट, सरल और  
झुंझर बोलनेवाला, बहु भाषी,  
बक्सी, जल्द बोलनेवाला, बहुत  
बोलनेवाला ।

वाञ्छापथुं ( सं. ) बहु भाषण,  
अधिक भाषण, बाचाळता, मुखरता,  
वाञ्छि ( वि. ) जिह्वा सम्बन्धी,  
वाणी विषयक, जवान ।

वाञ्च ( वि. ) वक्तव्य, बोलने योग्य,  
बोध्य, बोला हुआ, कहा हुआ ।

वाञ्छार्थ ( सं. ) बोलनेका खुलासा  
मतलब ।

वाञ्छ-जट ( सं. ) पर्वतसे उड़ेहुए  
बर्षाके छींटे, बौछार, फुहार ।

वाञ्छिमुं ( वि. ) बौछार रोने  
के लिये छार अथवा खिड़कीपर  
झुंकवा लगाया हुआ तरुता पतरा  
या शिला, छज्जा ।

वाञ्छिनी ( सं. ) बछड़ी, बछिया,  
बच्छी, बाछी, गऊ ( एकबार  
क्याईहूई )

वाञ्छुं ( सं. ) बच्छा, बछड़ा,  
वत्स, गायका वत्सा ।

वाञ्छिनी ( सं. ) छोटा बैल, कमउ-  
मका बैल वृषभ ।

वाञ्छुं ( सं. ) वत्स, बच्छा, वृष  
पीतहुवावत्सा ।

वाञ्छ ( सं. ) करुणा, अनुकम्पा ।  
स्नेह ।

वाञ्छु ( सं. ) ऊधोवायु, पाद, गुदा  
मार्गद्वारा, हवाका निकलना ।

वाञ्च ( सं. ) व्याधि पीड़ा, तोबाह  
उपदेश, धर्मसम्बन्धी चर्चा ।

वाञ्छापथुं ( क्रि. ) कायर होना  
थकना, कष्टमें फँसना ।

वाञ्छेमाञ्छे ( अ० ) अच्छीवशमें

वाञ्छि ( वि. ) ठीक, उचितमुना-  
सिब, लायक, योग्य कर, अनु-  
कूल, बराबर, शोभित ।

वाञ्छिपथुं ( सं. ) औपिच ।

वाञ्छुं ( क्रि. ) बजना, शब्दहोना  
ध्वनिहोना ।

वाञ्छवाञ्छी ( सं. ) बाजे बजानेवाला,  
डोल नगरे ताशे आदि बाजोको  
बजाकर उदर भरेनेवाला ।

वाञ्छि ( सं. ) बाघ, बाजा ।

वाञ्छि ( सं. ) पानी पिलाकर  
उगायेहुए गेहूँ, सीचके गेहूँ ।

वाञ्छ ( सं. ) तुरग, घोड़ा, अश्व,  
हय, बाघ, तीर, शर, अक्षेकाहक  
वृक्ष विशेष ।

वाञ्छि ( सं. ) बलवर्धक, पुष्टि-  
कारक, दीर्घ वर्धक, बाढ़ ।

वाचस्पति ( सं. ) वायु, संतर, हवन । [ संघ, वेदनी, जगत् ।  
वायु ( सं. ) वायु, वायु, वायु,  
वाचस्पति-वाचस्पति ( सं. ) तु कान्ति ।  
वाचस्पति ( सं. ) इच्छा, चाह, स्वा-  
वाचस्पति ( कि. ) इच्छाकरना, चाहना  
वाचस्पति ( वि. ) इच्छित, चाहानुआ  
अधीनस्थित ।

वाच ( सं. ) सड़क, राह, पथ, पंथ  
मार्ग, रास्ता, बत्ती, दीपक, बचारी  
हुईछाछ, चने इत्यादिका पानीमें  
छोलाहुवा चून, पाहियों के ऊपर  
लोहेका गोठ चक्कर, पटा, पाट,  
धर्मा ।

वाचस्पति ( कि. ) बिगड़ाना,  
खराबहोना, बरबादहोना, विनाश  
होना । [ विशेष ।

वाचस्पति ( सं. ) कटोरी, कौल, पात्र,  
वाचस्पति ( सं. ) मार्गव्यय, रास्ता  
खर्च, परलोकके क्रिये इसलोकमें  
किनाहुवा दानपुण्य ।

वाचस्पति ( कि. ) राह देखना,  
मार्ग प्रतीक्षा करना, इंतजारकरना ।  
वाचस्पति ( सं. ) पीसनेवाला, कोडी,  
बोटने पीसने बोटनेका पत्थर ।

वाचस्पति ( सं. ) भाग, बाँट, हिस्सा,  
विभाग ।

वाचस्पति ( वि. ) रास्ते चाहे  
वाल्म, जनमान, सपरिचित ।

वाचस्पति ( कि. ) सायंकालहोना,  
सन्ध्याकालहोना, मार्ग होना ।

वाचस्पति ( कि. ) कूटना, कस्ता  
करना ।

वाचस्पति ( वि. ) रस्तेमें रोककर  
कूटनेवाला, नयारस्ता जोबनेवाल्म  
अप्रेसर ।

वाचस्पति ( कि. ) व्यर्थही बरबाद  
होना, भ्रमजाना, चम्पत होना ।

वाचस्पति ( वि. ) मार्ग जातेहुवे  
जोगोंको मारकूटकर उनका माक  
मत्ता छीननेवाला, मुसाफिरोंका  
कुटेरा । [ इटाना, रास्ता करना ।

वाचस्पति ( कि. ) इराना पीछे

वाचस्पति ( कि. ) कूटना । कुचलना  
बाटना, पीसना, हिस्सेकरना,  
भायकरना, निदाकरना, खराब  
करना ।

वाचस्पति ( सं. ) बटुना, पावसुपाटी  
इत्यादि रकनेकी गोठ आकार-  
वाली धेखी ।

वाचस्पति ( सं. ) वात्री, मुसाफिर,  
पथिक, पंथ, वयोही, प्रवासी ।

वाङ्मय पुष्पवाही, वागीचा, आराम,  
कोटापदन । [ गोलका आधाभाव ।

वाङ्म ( सं. ) मरिचकमेसे निकलेहुए  
वाङ्म ( सं. ) पात्रविशेष ।

वाङ्म ( सं. ) देवो वडसई ।

वाङ्म ( सं. ) झुरी, सिकुइन, पाठा  
पटा, धवा, पहियेपरका लोहेका  
गोठपहा, बूनेका घर, वेढकेबल,  
( रेकार )

वाङ्म ( सं. ) मुहला, बाढ़ा, घेरा  
हाता, बोगद, गल्ली, गज्जेका केता  
गवा वेल्मेका प्रेस, चार, पाव,  
जकम, कइ, कोळा, कुमडा,  
फलविशेष ।

वाङ्मवेवेवे ( ० ) ' यवाराजा तथा  
प्रजा, ' जैसा राजा वैसी प्रजा ।

वाङ्मवमर वेवे १ मडे ( ० ) बिना  
सहायताके कार्य नहीं हो सकता,  
बेवसीला आदमी तरफ़ी नहीं  
करसकता ।

वाङ्म सांभले वाङ्मो हांटे सांभले  
( ० ) दीवारकोभी कान होते हैं ।

वाङ्म वेखाने भाव त्पारे धरीवाड  
हेने ? ( ० ) रक्षकही मक्षक बन-  
जावे तो कैसे बचे ? रक्षक खुदही  
हरामखोरी करे तो रक्षा कैसे हो ?

वाङ्मवाही ( कि. ) बिरबानम,  
चारों तरफ़ मीकहोना ।

वाङ्म ( सं. ) बटोरी, कचोली,  
प्याली, पात्र विशेष, छोटाकोटा ।

वाङ्म ( सं. ) बड़ी कटोरी, प्याल,  
कोरा, पात्र विशेष । [ प्याला ।

वाङ्म ( सं. ) बड़ाकोटा, बड़ा-  
वाङ्म ( सं. ) ब्राह्मण, विप्र, द्विज ।

वाङ्म ( सं. ) सुहारे-पिंडकजूर  
भरनेका बेला । [ लालसा ।

वाङ्मो ( सं. ) अतिसव इच्छा  
वाङ्म ( सं. ) बाटिका, बाग, पुष्प,  
गस्तकमें गुंथेहुए फूल, गुंथेहुए  
फूल, बीचमें घर और आसपास  
वृक्षमयभूमि । [ गूंथना ।

वाङ्मो ( कि. ) बालोंमें फूल  
वाङ्मो ( कि. ) बिगड़ना  
बिसरजाना, भूलबानीहोना ।

वाङ्मो ( कि. ) अच्छी  
निपज होना ।

वाङ्मो ( सं. ) ऊपरतल  
वाङ्मो ( सं. ) ऊपरतल  
वाङ्मो ( सं. ) ऊपरतल

वाङ्मो ( कि. ) अच्छी  
निपज होना ।

वाङ्मो ( सं. ) ऊपरतल  
वाङ्मो ( सं. ) ऊपरतल

वाङ्मो ( सं. ) बाटिकाके आस-  
पासकी भूमि ।

पक्षी ( सं. ) बाढ़ा, चरके पीछेका  
बुझा हुआ स्थान, कम्पाठण्ड, जिसमें  
पक्षु बांधे जाते हों, कुली हुई  
जगहवाला बड़ा भारी मकान,  
मोहला, म्वादा, म्वादी, पाखाना,  
शौचागार, उड़ी, संवास, पक्ष,  
सरफदारी, वाडाभांजु ( कि. )  
शौच जाना, पाखाने जाना,  
झाड़ जाना ।

पक्षीभित्तु ( सं. ) वह बोड़ी जगह  
जोकि काटे आदि आदि लगाकर  
बनाई गई हो वृक्ष आदिके चारों  
ओर लगाई हुई आदि ( रक्षाकोलेने )

पक्षी ( सं. ) देखो पक्षी घाव,  
धार. जन्म ।

पक्षी अक्षी ( कि. ) धार चढ़ाना,  
छान चढ़ाना, तेज करना ।

पक्षी भूक्षी ( कि. ) काटनेक लिये  
निशान करना ।

पक्षीभने। पक्षी ( सं. ) डाकटरी  
काम, चीर फाड़का धन्धा ।

पक्षीभित्तु ( सं. ) शरिकाद करने-  
वाला, डाक्टर, सर्जन ।

पक्षीभु ( कि. ) काटना, चीरना,  
हिस्सा करना, फाड़ना । [ विशेष ।

पक्षी ( सं. ) श्री भरणेका पात्र

पक्षी ( सं. ) झुत्तार, चढ़ाई, तड़क ।

पक्षी ( सं. ) बाणी, बोझी, कवन,  
बचन, बाज़रके पत्तोंके बकड़ेकर  
बनाई हुई रस्सी । मिडीके उष्ट-  
लोंको कूटकर ऐसे निकाल कर  
उसको बटकर बनाई हुई रस्सी ।

( अ० ) बिना, बगैर, ( कवितामें )

( सं. ) तगी, आवश्यकता ।

पक्षीभ ( सं. ) व्यापार, भेनदेन ।

पक्षीभ-पक्षी ( सं. ) वैश्यकी  
छाँ, बलियानी, बैनी, वैश्य ।

पक्षीभाषाक्षी ( सं. ) उलट बुलट,  
बिसगिस, घुसक पसक, डीलपोक ।

पक्षीभे। ( सं. ) बनीया, अष्टशत्रिव  
अथवा वैश्यकी मंकरजाति । व्या-  
पारी, वैश्य, तृतीयवर्ग, एक प्रका-  
रका जीव । ( वि. ) बाणीमुक्त ।

पक्षीभा अर्थ भु ( कि. ) बच  
देसकर नम्रता करने लगना,  
गरीब बन जाना ।

पक्षीभा विधा करपी ( कि. ) क-  
पट पूर्वक आड़ोटेका समझना ।  
समय देखकर अपना काम बन्द  
लेना ।

पक्षीभाना अर्थान् ज्ञेये ( वि. )  
बचकती हुई भाग, फोहराहट ।

वायु ( सं. ) वात, बोली, सम्ब, कथन, ज्ञान, आवाज, राग, वाक् शक्ति, देवी सरस्वती, प्रकट-विचार । [ भोर, भिनुसारा, प्रातः ।

वायु-वैधु ( सं. ) प्रभात, सबेरा,

वायु ( सं. ) बुनते समय आगे बोरोंको बाना कहते हैं ( और ऊँचे बोरोंको ताना कहते हैं ) ।

वायुतायु ( सं. ) कपडा बुननेके लिये आदिदेखे फैलाये हुए चागे । ताना बाना ।

वायुतश् ( सं. ) गुमास्ता, बही-खाता लिखनेवाला, क्लक नाँकर ।

वायुधु अभाधु ( कि. ) प्रथम गर्भा स्त्रीको भोजन कराना, अग-रणीकी रात्रिको रखड़ी बाँधनेके बाद नातेरिस्तेदार तथा इष्टमित्रों को बिमाना ।

वात ( सं. ) पवन, हवा, समीर, वायु । रोग, विशेष, अर्वागवात, लकुआ, हकीकत, बात, वार्ता, इतिहास, तबारीक, आख्यान, गाथा, किस्सा, कहानी, समाचार, खबर, ओकवार्ता, किम्बदन्ती, गप्प, अफवाह, विषय, सूचना, स्थिति, रीति, व्यवहार ।

वात उड़ावनी ( कि. ) थकते हुए बिकको हटाना, बात सुनाना ।

वात उड़ावनी ( कि. ) सची झंझी बात लोगोंमें फैलाना, गप्प उड़ाना ।

वात उड़ावनी ( कि. ) बोलना, कहना ।

वात उड़ावनी ( कि. ) मनके अच्छे अथवा बुरे विचार निकालनेका स्थान ।

वात आकषी ( कि. ) जिक्र होना, गप्प छूटना, अफवाह, फैलना ।

वात भावनी ( कि. ) भेद समझ जाना । मतलब जान लेना ।

वात हावनी ( कि. ) बात फैलाना, गुप्त रहस्य प्रकट होना ।

वात अनावनी ( कि. ) बात बनाना, नई बात घड़कर तय्यार करना, गढ़त करना ।

वात आरे उड़ावनी ( कि. ) छोटी बातको बड़ा कर बड़ी करना ।

वाते आरे वनी ( कि. ) चमक होना, गर्ब होना, पक्षिसे अधिक होना । [ कबूल करना ।

वात भणनी ( कि. ) स्वीकार करना,

वातभा आभु ( कि. ) किसीके साथ बातें करते समय उसमें तल्लीन हो जाना ।

वात भारी भयी ( कि. ) बात विग-  
ड़ना, काम व्यर्थ होना, बात  
विफल होना ।

वातनुं वतेसरे-वती भक्षु भरी भूषणुं  
( कि. ) बातका वतंगड करना,  
रक्तका गज करना । राईका पहाड़  
करना । [ करनेवाला, गप्पी ।

वातभई ( वि. ) बातनी, खूब बातें

वातयित ( सं. ) वार्तालाप, संभाषण ।

वातई ( सं. ) डेबी और डुरी बात ।

वातभक्षु ( सं. ) सिद्धकी, बारी, द्वार ।

वाती ( सं. ) अगरबत्ती, बत्ती ।

वाटुंडुं-तोडुं ( वि. ) वाचाल,  
गप्पी, बातनी, लफंगा ।

वातुध ( सं. ) वायुका समूह ( वि. )

बादी, वातप्रकृति ( शरीर ) ।

वातोडुं ( वि. ) देखो वाटुंडु ।

वात्सेय ( सं. ) प्रेम, स्नेह,  
पुत्रवत्, स्नेह ।

वाड ( सं. ) विशद वाक्यकलह,  
शास्त्र र्थ, संभाषण, आलाप, तर्क-

रार, झगड़ा, चर्चा, थोड़ा, बहुत  
जानकर उसपरसे अन्दाजलगाना

वाडविवाड ( सं. ) तकरार संभा-  
षण, झगड़ा, जबानी वकवक ।

वाडण ( सं. ) बादल, मेघ, घन

जोषी, झंझड़, आकाश छाया ।

वाडणभडीआवणुं ( कि. ) तूफान  
उठना, आंधीआना, बादल जुमड़ना ।

वाडणट्टीभडणुं ( कि. ) दुःख आ-  
जाना, आफत आना, अंधानक  
कोई आपात आगिरना ।

वाडणभडणुं ( कि. ) अंतर्गत  
दुःखआना, सेनाचढ़ना, बादल  
चढ़ना ।

वाडणी ( सं. ) छोटबादल, पानी  
चूसलेनेवाला एक पदार्थ, स्पंज  
समुद्र सोख ( वि. ) बादलके रंगका  
अस्मानी भूरा । [ हुवा, भशान्त ।

वाडणीओ ( वि. ) अमित, भटकता

वाडणुं ( अं. ) बादल, मेघ, घन ।

वाडी ( सं. ) सरकारमें नालिशकरने  
वाळा, मुद्दई, बाजीगर, मंत्रतंत्र-  
द्वारा खेलकरनेवाला, छद्मकामनुष्य  
झगडाऊ, किसीमत अवस्था ज्ञानका  
अनुयायी ।

वाडीभर ( सं. ) बाजीगर, मदारी  
सपेरा, सांपवाळा, ऐंद्रजालिक,  
कार्य करनेवाळा ।

वाडीधुं ( वि. ) फसादी, तकरारी  
झगडाऊ, घृषित, गर्ह ।

वाडोवाडी ( सं. ) स्पर्द्धा, बराबरी,  
देखादेखो, होड़ाहोड़ । •

वाधे ( सं. ) बाधा, बाधयन्त्र ।

वा०ध०-धुं ( सं. ) रोके हुए स्वास को ठहर ठहर कर आवाजके साथ बाहिर निकालना । हिचकी ।

वा०ध०-री ( सं. ) ताजे चमड़े की बड़ी, बड़ी, तरसा ।

वा०धुं ( क्रि. ) आगे होना बढना, रुदि पाना, उन्नत होना ।

वानु ( सं. ) बाळा और युक्त सूचक प्रत्यय । जिस शब्दके आगे यह होता है उसका अर्थ बाळा होजाता है जैसे गुण+वानु=गुणवान ।

वान ( सं. ) रंग, शरीर, देह, वर्ण, ठक्से उखड़ा हुआ चमड़ा ।

वानभी ( सं. ) नमूना, आदर्श, हष्टान्त, थोड़ीसी कोई उत्तम अथवा नई चीज ।

वानभरथ ( सं. ) तीसरा आश्रम, तीसरे आश्रममें रहनेवाला, तपस्वी । एकान्तवासी, वनवासी ।

वानर ( सं. ) बन्दर, कपि, लंगूर, मर्कट, बाँदरा, बाले मुँहका बन्दर ।

वानभ्येष्ट ( सं. ) बन्दर समान हरकत ।

वानरहृष्ट ( सं. ) बन्दर कीसी विगाह । देखरेख, जाँच, पड़ताल ।

वानधुं ( क्रि. ) बगली, बनैका ।

वाना ( सं. ) जाति, प्रकार, चीज । वस्तु । [ समझाना ।

वानां ३२वां ( क्रि. ) बहुत तरहसे

वानी ( सं. ) एक प्रकारकी उबार, धान्यविशेष, जाति प्रकार, अन्न-विशेष, मुरदेरी राख, भस्म, सूतक भस्म ।

वानु ( सं. ) शब्द, सामग्री, अन्न, शकल, ढंग, रीति, रूप, रीति-प्रकार, बात । [ निश्चित पदार्थ ।

वानो ( सं. ) एक प्रकारका सुग-वानो वा०धुं ( क्रि. ) उबटन लगा-नेका मुहूर्त । [ छर्चि, छानना ।

वान्ति ( सं. ) कय, उलटी, बमन,

वा०१२ ( सं. ) उपभोग, प्रयोग, व्यवहारमें लाना, काममें लाना, उपभोग, सेवन, खर्च ।

वा०१२पुं ( क्रि. ) काममें लेना, प्रयोग करना, खर्च करनी, सेवन करना, रोकना, कब्जा करना, उपभोग करना । [ बदलेमें ।

वा०१३ ( अ० ) पीछा, वापिस,

वा०१४ ( सं. ) बावली, बावड़ी, छी-डिबोदार कुआ ।

वा०१५ ( सं. ) बाड़ीका करबूझ ।

वा०१६ ( वि. ) सम्बन्धी, लवा ।



वाभाहं ( सं ) हवा आनेका बड़ा छेद । झरोखा, बातावन, बारी, खिड़की ।

वाभ ( मं. ) छः फुटका माप, फेदय, ( वि. ) बाबा, बाम, अधम, आढा, उल्ला, बांका, बिरोध ( सं. ) बामा, जी, औरत ।

वाभकुक्षि ( सं. ) बाईबगळ ।

वाभळुं ( वि. ) ठिगना, नाटा, छोटे कदका, बौना, छोटे शरीरका ।

वाभता-वाभताठि ( सं. ) अधमता, हठ जिह् ।

वाभन ( वि. ) ठिगना, नाटा, बौना, खर्ब, छोटे कदका ( सं. ) ठग, छुआ, छळी, विण्णुका पांचवां अवतार हसने राजा बलिको ठगा था ।

वाभन ६६६६ ( सं. ) भाद्रपद मासके शुक्ल पक्षकी द्वादशीतिथि । यह बही दिन है, जिस दिन कि वामनने राजा बलीको ठगा था ।

वाभभार्मी ( वि. ) मयमासादि सेबी, एक मतावलम्बी जो शक्ति की उपासना करता हो, नास्तिक, अवैदिक, उल्टे मार्गपर चलने-वाला, मंत्रशास्त्र विधिले देवीकी

पूजा करनेवाला, वे पांच प्रकारकी अपना जीवनोद्देश मानते हैं वे थे हैं । “ १ मर्ष २ मांसव ३ मीनव ४ मुद्रा ५ मैथुन मेवच ”

वाभलुं ( कि. ) अन्दरका वचन कम करनेके लिये बाहिर निकालना, कम करना, मिटाना, दूर करना, कहना, विचार प्रकट करना । ओछा होना, घटना, जाना ।

वाभांटाभां ( सं. ) टाकटूक, आना-कानी, पशोपेय, शक, संदेह ।

वाभा ( सं. ) जी, गौरी, लक्ष्मी, सरस्वती, श्रीमात्र ।

वाभी ( वि. ) देखो वाभभार्मी ।

वाभेह ( वि. ) सुन्दर, जवाबाली जी । [ ( ज० ) हाय !; हा ।

वाय ( सं. ) जीन, जय, विजय,

वायक ( सं. ) बाणी, सन्द्, वच, बोली ।

वायव-७ ( सं. ) धर्मसम्बन्धी व्याख्यान, उपदेश, बोध ।

वायुं ( वि. ) जिसके सामनेसे पेटमें गड़बड़हो, बारी करनेवाला, गुरु-पाक, हठी, जिद्दी ।

वायुं वपुं ( कि. ) हठीहोना, जिद्दीहोना, जो समझानेसे ब समझे ऐसा होना ।

वा०५३५३५ ( कि. ) बारीहोना,  
बाँवहोना, बुरा लगना ।

वा०५३५३५ ( अ० ) नियत समयपर,  
करारपर, प्रतिज्ञात समयपर ।

वा०५३५३५ ( सं. ) प्रतिज्ञा, करार,  
सुइत, कौल, वजन बोली, संकेत  
वादा । [ करारकरना, वादाकरना ।

वा०५३५३५३५ ( कि. ) प्रतिज्ञाकरना

वा०५३५३५३५३५ ( कि. ) प्रतिज्ञाभंग  
करना, करार पूरा न करना,

अभ्यस्तनावा०५३५३५ ( सं. ) झूठी  
प्रतिज्ञा, अतिशय लंबावादा ।

वा०५३५३५ ( सं. ) रोली फल, इत्यादि  
एकपात्रमें रखकर ब्राह्मणको देनेकी  
क्रिया, बायना, लायना, लेना ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) बायनेकादान,  
लायनादेना । [ कमी हो ।

वा०५३५३५ ( सं. ) बहवर्ष जिसमें वर्षाकी

वा०५३५३५ ( सं. ) हवा, पवन, वायु ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) जेबकूफ, मूर्ख,  
जिसका ठौर ठिकाना न हो, हवा  
पवन, वायु । [ विशेष ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) वायुविभंग, औषधि

वा०५३५३५३५३५ ( सं. ) उत्तर और  
पश्चिम दिशा के बीचका कोना

( वि. ) वायव्य कोण संबंधी ।

वा०५३५३५ ( सं. ) कौआ, काग, कगा,  
काक ।

वा०५३५३५ ( सं. ) हवाके झोंकेसे दीपक  
न बुझे इसलिये मिट्टीका घर विशेष  
लाकटेन, ( पुराने समयमें ) दीप  
मंदिर ।

वा०५३५३५ ( सं. ) हवा, पवन, समीर,  
प्राण, वायुदेव, ( शरीरमेंके पांच  
वायुं ) १ प्राण, २ व्यान, ३ अ-  
पान, ४ उदान और ५ समान,  
पांच भूतोंमेंसे एक, बाढ़ी, एक  
प्रकारका रोग ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) बालावरण, वायुमंडल

वा०५३५३५३५३५ ( सं. ) नमोविद्या,  
मिटोबोरोलोबी, आकाशोद्भव  
वस्तुविद्या ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) पक्षी, परिद, वि-  
दिया, आकाशगामी, पैछी ।

वा०५३५३५३५ ( सं. ) हनुमान, भीमसेन ।

वा०५३५३५३५३५ ( सं. ) हवाकोभी  
रोकनेवाला । [ हवाका सपाटा ।

वा०५३५३५३५३५ ( सं. ) पवनका झोंका,

वा०५३५३५३५३५ ( वि. ) हवादार, बाढ़ीवाला ।

वा०५३५३५३५३५३५ ( सं. ) हवाका वजन  
और हवापना नापनेका यंत्र, वेरी-  
मीटर ।

५१३५ ( वि. ) हवासीरका, पवन-  
मुख ।

५१३ ( सं. ) गज, तीन कुंठका  
माप, १६ गिरहका माप, दिन,  
दिवस, एक, समय, देरी, डोल,  
पानी, जल, बारि, मदद, सहा-  
यता, उपाय, उल्लाहना, फिरो-  
याद, ( अ० ) अनुसार, मुआ-  
फिक, बमोजिब, प्रमाणे ।

५१३ लमाहरी ( कि. ) देरी करना,  
बहुत बक लेना ।

५१३५ ( सं. ) हाथी, हस्ती, मातंग,  
रोकना, निषेध करना, धारण  
करना, विग्र निवारण करके सुख  
प्राप्त करना ।

५१३५ ( सं. ) बलिजाना, न्यौछा  
वर होना, बारी जाना ।

५१३ ( सं. ) अपराधीको पकड़ने  
के लिये सरकारी लिखित आज्ञा  
पत्र, वारंट ।

५१३५ ( सं. ) बात, वार्ता, कहना,  
समाचार, बातचीत [पूर्व दिवस ।

५१३५५१३ ( सं. ) त्यौहारका दिन,

५१३५५१३ ( अ० ) बारबार, फिर  
फिर बारम्बार, पुनःपुनः, सदैव,  
हरबंदी ।

५१३५ ( कि. ) रोकना, अटकना,  
मना करना, निवारण करना, बकि  
जाना, बारी जाना, न्यौछावर  
होना, दूसरेका दुःख स्वयं अपने  
ऊपर लेटना, सिरपरसे पुमाऊर  
केंक देना ।

५१३५ ( सं. ) बारिश, अधिकारी,  
उत्तराधिकारी, स्वामी, मालिक ।

५१३५५१३ ( सं. ) बसीबतनामा,  
आधिकारपत्र ।

५१३५ ( सं. ) मरनेके पश्चात् उस  
मृत व्यक्ति की जागीर जायदाद  
उसके उत्तराधिकारीको मिलना,  
वतन, जागीर, जायदाद, पूंजी,  
मिलकियत ।

५१३५५१३ ( सं. ) वेष्टा, रंड़ी,  
छिनाळ, बारनारी, तबायफ़ ।

५१३५५१३ ( सं. ) काशीनगरी,  
बनारस, यह नगर युक्त प्रदेश  
भारतमें है, सप्त पुरियोंमेंसे एक ।

५१३५५१३ ( अ० ) एकके बाद  
एक, क्रमशः, नम्बरसे, क्रमानु-  
सार, बारी बारीसे ।

५१३ ( सं. ) जल, पानी, तौब ।

५१३५५१३ ( कि. ) बलिजार्ज, बलि-  
हारी जार्ज, कुरबान होक, न्यौछा-  
वर हो जार्ज ।

वाशिष्ठि-वाशिनिधि ( सं. ) समुद्र,  
सागर, दरिया । [ विशेष, समुद्र ।  
वाशिष्ठ ( सं. ) घट, बड़ा, पात्र  
पारी ( सं. ) देखो वारी । पाली,  
केप, नम्बर, अवसर, समय,  
बदला, घोड़ा, अश्व, दुरंग, हथ ।  
वाशि ( वि. ) ठीक, उचित, मुना-  
सिब, अच्छा, योग्य, हाँ, स्वीकार ।  
वाशिष्ठी ( सं. ) शराब, मदिरा,  
दारु, पखिमदिसा । [ पुनः पुनः ।  
वाशिष्ठीम्ने ( अ० ) बारम्बार,  
वारिष्ठार ( सं. ) नम्बरवाला, जि-  
सकी पारी हो, कर संग्रह करने-  
वाला ।  
वारि वारि ( अ० ) देखो वारि-वारि ।  
वारि ( सं. ) पारी, केप, नम्बर,  
पाली, अवसर, समय, फायदा,  
दाँव, निश्चितसमय, काम, कम-  
गत होना । [ फायदाहोना ।  
वारिष्ठवे ( क्रि. ) लामहोना,  
वार्ता ( सं. ) देखो वार्ता ।  
वार्तिष्ठ ( सं. ) टीका संबंधी नियम  
विशेष, टीका, गुप्तचर, दूत सम्बा-  
ध लेखनेवाला । [ बारमासी ।  
वार्तिष्ठ ( वि. ) प्रतिवर्षक, सालाना

वाशेष् ( सं. ) वसुदेवका पुत्र  
भीकृष्ण ।  
वाश ( सं. ) एकप्रकारकी दाढ़,  
तौल विशेष, एकतोलका १ वां  
भाग, १ रति । [ नापिक ।  
वाश' ( सं. ) नार्ह, नापित, हज्जाम  
वाशपापडी ( सं. ) फली विशेष ।  
वाशभ ( सं. ) स्वामी, पति, कुंत,  
मालिक, धनी, खसम, प्यारापुरुष ।  
वाशिष्ठा ( सं. ) चोखेपर कोगीर,  
जीन, इत्यादि बांधनेकी डोरी ।  
वाशी ( सं. ) रक्षक, आश्रयदाता,  
सहायक, पक्षकर्ता, हिमायती,  
स्वामी, मालिक, सेठ, साहेब ।  
वाशीवारस ( सं. ) रक्षक सखा,  
अधिकारी, उत्तराधिकारी ।  
वाशीधिष्ठे ( सं. ) मजबूत घोड़ा,  
बहुघोड़ा जो घोड़ीपर छोटने के  
टिये रक्षागवाहो ।  
वाशुष्ठा ( सं. ) रेती, बालू, धूलिकण ।  
वाशुष्ठा' ( सं. ) रेतचरी, रेतीका  
बनाहुआ वह अंग जिससे समय  
मापन किया जाता हो ।  
वाशेष् ( सं. ) एक प्रकारकी फली,  
(इसकी आधी तरकारी बनती है)

१५५० ( सं. ) सोने जवना बाँधी  
को पतले तारकी बाँधी ( देखी के  
बदलनेके लिये ) ।

१५५ ( सं. ) बावड़ी, बावळी,  
सीखियोदारकुवा, बिबाई, प्याऊ  
रोग विशेष, सर्दीके शिनोंमे हाथ  
पैरोंका चमड़ा फटजाता है जिससे  
बड़ाही दर्द होता है ।

१५५५५५-१५५५५५५ ( सं. ) ध्वजा-  
लगानेकी लकड़ी, ध्वजदण्ड ।

१५५५ ( सं. ) संडा, ध्वजा, निशान  
करहारा, पताका । [ बिजयी होना ।

१५५५ ( सं. ) जीत होना

१५५५ ( सं. ) जीत होना  
१५५५ ( सं. ) जीत होना  
करना, बस फैलना, फलहास  
होना ।

१५५५ ( सं. ) सम्बाद, खबर, पता  
समाचार, रोग, मर्ज एकही  
तरहका रोग बहुतोंको ।

१५५५ ( सं. ) सीखियोदार छोटा  
कुवा, बावड़ी, बावळी, कूपविशेष ।

१५५५५५ ( सं. ) जेतमें जलबाने  
की नली, बीना ओरना, करना ।

१५५५५५ ( सं. ) जेतमें जल आदि  
बोनेकी क्रिया, बीनी, बोवणी,  
ओरनी, ( वि. ) आरंभ, शुरु ।

१५५५५५ ( सं. ) हवाका झोंका ।

१५५५ ( सं. ) प्रयोग, खर्च, खपत,  
रोग, मर्ज । देखो १५५५ ।

१५५५५५ ( कि. ) खर्च करना, प्रयोग  
करना, काममें खाना, खरचना ।

१५५५५५ ( कि. ) खरच  
कर खाना, उड़ा देना ।

१५५५५५ ( सं. ) नौकरीके बदले में दी  
हुई जमीन, मुआफी जमीन ।

१५५५५५ ( सं. ) आसमेंकी फूली ।

१५५५५५ ( कि. ) पिछोड़ना, झट-  
कना, पछड़ना, सूप इत्यादिसे  
फटकना ।

१५५५५५ ( कि. ) बोना, बीज बा-  
लना, रोपना, लगाना, बीज  
बखेरना । [ मजेका, वाह वाह ।

१५५५ ( सं. ) अच्छा, सरस,

१५५५५५५५-१५५५५५५५ ( सं. ) तुफान,  
आंधी, उड़णवायु, संबाद ।

१५५५५५ ( सं. ) हवा, और बादल,  
संकट, अफत ।

१५५५५५ ( कि. ) आंधी चलना, जोर  
से हवा चलना, शरीरको हवा  
लगना, चलवाना, समझाना,  
ठगना, सझना, धोकादेना, धि-  
यना, ध्याना, प्रसन्न करना, हवाके  
बजाना, फूँकने बजाना ।

वापेतर ( सं. ) कोई हुई जमीन, वह जमीन जिसमें बीज बो दिया हो बोया हुआ ।

वायुक्ष ( सं. ) वायुगोळा, पेटमें वादीका रोग विशेष ।

वास ( सं. ) रहनेका स्थान, निवास, आश्रम, मकान, घर, मोहला, बस्ती, स्थिति, ठिकाना, जगह, पौषाक, बछ, गंध, नू, महक, सौरभ, सुवास, वास, निवासी, अंश, चिन्ह, धातुके बिलोंमें बनायेहुए पदार्थकी काकबली । [ अहसा नामक वृक्ष ।

वासक ( सं. ) एकपौधा विशेष

वासकुट ( सं. ) बेस्टकोट, कब्जा, फतवी, बंड़ी, जाकट ।

वासकसंख्या ( सं. ) अष्टनायिका—ओमेंसे एक, १ प्रोषित पतिका, २ खंडिता, ३ कळहांतरिता, ४ विप्र खन्धा, ५ सरकठिता, ६ वासिकसज्जा, ७ स्वाधीनपतिका और अभिसरिका ।

वासकसंख्या ( सं. ) अष्ट नायिकाओंमेंसे एक, भोगविलासकी सामग्री तय्यार करके जो श्री अपने पतिकी राह देखती हो ।

वासधु ( सं. ) पात्र, भाण्ड, वासन, बरतन ।

वासधुसधु ( सं. ) बरतन, भाँडे, विविध भाँटिके पात्र, भाण्ड ।

वास्ना ( सं. ) इच्छा, चाह, भावना, रुचि, वास, गंध, प्रकृति ।

वासपूज ( सं. ) नये, घरमें वास करनेके पूर्व उस घरमें पूजह हवन इत्यादि किया, गृहप्रवेश ।

वासभुत ( सं. ) पूर्ववत् ।

वासर ( सं. ) दिन, दिवस, बार, दिवा, तिथि, तारीख ।

वासभुत ( सं. ) देखो वासभुत ।

वासरभक्षि ( सं. ) सूर्य, सूरज, मार्तण्ड ।

वासव ( सं. ) इन्द्र, सुरपति, देवराज ।

वासपुं ( क्रि. ) बन्द करना, ठाकना, देना, अटकाना, सुयेका बोलना, बिगाड़ना, बसाना, देना, रहना, दुर्गंध आना, बदबू आना, सड़ना, खराब होना ।

वासित ( वि. ) सुगन्धित, सुवासित ।

वासिदु ( सं. ) घरका कचरा कूड़ा, डोर डंगरका मलमूत्र । कूड़ा करकट ।

वासिहुं ३६१३पुं=वाणपुं ( कि. )

झाड़ना, बुहारना, साफ करना ।

वासी ( वि. ) रहनेवाला, निवासी,

वास करनेवाला, सड़ा हुआ, जो

ताजा न हो, कुम्हलाया हुआ ।

वासु ( सं. ) खेतका रखवाला,

खेतीका पहिरदार ।

वासुकि ( सं. ) नागराज, सर्पराज ।

वासुदेव ( सं. ) श्रीकृष्णचन्द्र, वसु-

देवका पुत्र, श्रवण नक्षत्र ।

वासुधियो ( सं. ) देखो वासु ।

वासुधी-धौपी ( सं. ) पूर्ववत् ।

वासुध ( सं. ) आंकड़ा, कौल, हुक ।

वासेल ( सं. ) एकाद वर्ष खेतको

बिना बोये इसलिये रखनाकि

उसकी मिट्टीमें ताकत आ जावे ।

वासे। ( सं. ) वास, निवास, दिन,

दिवस, मुकाम ।

वासे।टी ( सं. ) सीमामें रातभर

रहनेवाला, खेतमें रातको रहनेवाला

वास्तविक ( वि. ) यथार्थ, निश्चय,

ठीक, सत्य, वाजिबी, सरा, शुद्ध ।

वास्तव्य ( वि. ) रहनेलायक, वास

करनेयोग्य, रहनेयोग्य ।

वास्तु ( सं. ) नये घरमें रहनेके

पूर्व हवन पाठ इत्यादि, नूतन गृह

प्रवेश, घर, वास्तव्य ।

वास्तुदेवता ( सं. ) घरकी रक्षा

करनेवाला, गृहपति, गृहस्वामी ।

वास्तुधर्म-शान्ति ( सं. ) नये

घरमें प्रवेश करते समय हवन

पूजन शांतिपाठ इत्यादि कार्य ।

वास्तुविधा ( सं. ) शिल्प, नकान

बनानेका हुस्वर ।

वास्ते ( अ० ) लिये, कारण, मर्ने ।

वाह ( अ० ) वाहवा !, ओ हो ।

वाहक ( वि. ) ले जानेवाला, उठ-

कर लेजानेवाला, बहन करनेवाला ।

वाहन ( सं. ) सवारी, असवारी,

जिसमें या जिसपर चढ़कर कहीं

जावे । [ वायु ।

वाह२ ( सं. ) हवा, पवन, बयार,

वाह२पुं ( कि. ) पादना, गुदामार्गसे

हवा निकालना, अधोवायु छोड़ना,

हवादार । [ धोका देना, पोटना ।

वाह२पुं ( कि. ) ठगना, छलना,

वाह२पुं ( सं. ) नौका, जहाज, जल

यान, किस्ती, नाव, जलपोत ।

वाहाथुना दोरध ( सं. ) जहाज,

या नावकी रस्सी ।

वाहाथुपटी ( सं. ) मल्लाह, खलसी,

नाव चकनेवाला, जहाजका स्वामी ।

वाहाथुं ( सं. ) मोर, सवेरा,

घौकट, प्रातःकाल, सुबह ।

पा०१२ ( सं. ) सहायता, मदद, साहाय्य, योग ।

पा०१२ ३२वीं ( कि. ) मदद करना, सहायता देना, साथ देना योग देना ।

पा०१२ ३६पुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

पा०१४ ( सं. ) प्रेम, प्यार, स्नेह, मुहब्बत, प्रीति ।

पा०१४ ३७ ( सं. ) प्रेमी पुरुष, स्नेही ध्वारा, दुलारा, बालक, स्वामी ।

पा०१४ ३८ ( सं. ) प्यारा, दुलारा, प्रेमी, स्नेहा, हितैषी ।

पा०१४ ३९ ( सं. ) शुभचिन्तक, हितवादी, शुभेच्छु ।

पा०१४ ४० ( कि. ) देखो पा०१४ ४० ।

पा०१४ ४१ ( वि. ) बहनेवाली, प्रवाहित पा०१४ ( वि. ) देखो पा०१४ ४१ । [ प्रकट ।

पा०१४ ( वि. ) बाहिरी, बाहिरका

पा०१४ ( सं. ) बाल, केश, रोम, लोम

पा०१४ ४२ ( सं. ) एक प्रकारकी विष नाशक औषधि ।

पा०१४ ४३ ( सं. ) नाई, नापिक, हज्जाम

पा०१४ ४४ ( कि. ) साफकरना, कचरा

निकासना, झाड़ना, बुहारना, बि-

खरे हुने वालोंको बांधना,

संवारना, बलपूर्वक गाँठ बांधना,

मरोड़ना, ऐंठना, बल लगाना,

बंद करना, नीचा करना, लपेटना,

बढ़ी करना, बँकना, छुपाना, पानी जानेके लिये भारी करना, बाहिर जाता हुआ रोककर नलके द्वारा भीतर लेना, मुँह ढाँककर रोना, वापिस लौटाना, समाप्त करना, उतारना, कमजोर करना, टुटका करना, टोना-जादू-मंत्र करना, दे देना, बिगाड़ना, कराव करना, उलटा करना, बलवान तथा पुष्ट करना, शान्त करना, धैर्य देना, गोलाकार लपेटना, जवाब देना ।

पा०१४ ( अ० ) कानमें पहिरनेकी बड़ी बालियाँ, मोती, आभूषण विशेष ।

पा०१४ ४५ ( सं. ) जेवर हत्यादि साफ करनेके लिये बालोंकी सूंजी, ब्रह्म, बुरुस, बुरस ।

पा०१४ ( अ० ) फिरसे, पुनः ( सं. ) बाली कानमें पहिरनेकी बाली, रिंग, नाकमें पहिरनेकी बाली । आभूषण विशेष ।

पा०१४ ४६ ( वि. ) युक्त, सहित, पूर्ण, सम्पूर्ण आदि अर्थ प्रदर्शित करनेवाला प्रत्यय, ( सं. ) संभ्या-कालीन भोजन, व्याख्य, बयान, रैती, रेत, घूलिकन, कंकरी ।



वायुं भस्वुं ( कि. ) सार्वजनिका  
मोक्ष्य करना, व्याख्य करना ।

वाये। ( सं. ) एक प्रकारकी धुप-  
वित्त वास, वास, एक प्रकारका  
कीड़ा, जोड़े हुए मंत्रको निष्कल  
करनेका उपाय, उतार ।

विधुं ( सं. ) बीस बिस्वा, बीषा,  
२८४३ गज, भूमिका माप विशेष ।

विधेयी ( सं. ) प्रति बांधेपर सर-  
कारी कर ।

विंछी ( सं. ) विच्छि, विषय  
ज न्यु विशेष बुद्धि । [ विच्छना ।

विंभल्ले ( सं. ) पंखा, व्यवहन,

विंभल्ले। नांभवे। ( कि. ) पंखा  
करना,, हवा करना, बंधर डुराना ।

विभ्वुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

विंठुं ( कि. ) लपेटना, बेरना ।

विंटी ( सं. ) देखो बीटी ।

विंटी ( सं. ) गोल बन्धक, किसी  
वासका लपेट कर बनाना हुआ  
गोल पुलिन्दा । [ बिल ।

विंभ ( सं. ) छिद्र, छेद, सुरास,

विंभल्लुं ( सं. ) छेद करनेका औजार,  
बर्बर औजार विशेष जिससे छेद  
किया जाता है ।

विंभुं ( कि. ) छेद करना, सू-  
रास करना, छेदना, बेचना, छिद्र  
करना । चुस्केना, चाप करना,  
जसर करना ।

विंभरी। ( सं. ) छेदनेवाला, मोति-  
नोंमें सुरास करनेवाला, कान  
छेदनेवाला, बेचक ।

विंभपुं ( कि. ) छेदेजाना, छिदना  
छिद्रहीना, सुरासपड़ना ।

विंभुं ( सं. ) देखो विंभ ।

वि ( अ० ) उपसर्ग विशेष जो  
शब्दके पहिले लगाया जाता है,  
वियोग, विषय, निषय, ईषत,  
योडा अवलंबन, ज्ञान, गति,  
पालन, निग्रह, न मइना, हेतु,  
शुद्धि, परिभव, आलस्य, विज्ञान,  
अव्याप्ति, आलभ, ( विशेषकर  
यह यह, धातु और संज्ञावाचक  
शब्दोंके पूर्व प्रयुक्त होता है और  
उसके अर्थमें व्यत्यय करा जाता  
है जैसे कस=चरीदना, और विभ  
कस=बेचना इ० )

विभाभ ( सं. ) व्याज, सूद, कैतव ।

विभाणु ( वि. ) व्याजविषयक,  
सूदी ।

विभापुं ( कि. ) जनना, प्रसवकरना  
पेदा होना, जन्म देना, व्याना ।

विशद ( वि. ) भवानक, भवकर, क्रूर, मुदिकल, कठिन ।

विशराज ( वि ) अतिशय भवानक घोर भयंकर, डरावना, भयजनक भयप्रद ।

विशेष ( सं. ) शकसन्देह, श्रुभा, संसय, भ्रांति, अनिश्चय, वितर्क बहुम ।

विशेषु\* ( कि. ) खिलना, फूलना, फैलना; विकसित होना, प्रफुल्लित होना ।

विशण ( वि. ) विशृण, उद्धिन्न, व्याकुल, अधूरा, असम्पूर्ण, बेचैन चबरायाहुआ ।

विःण। ( सं ) कलाका साठवांभाग चौठ वला सेकण्ड  $\frac{1}{8}$  चढ़ी, क्षण पल, रजस्वला,

विकसित ( वि. ) प्रफुल्लित, खिल, हुआ, फूलाहुआ, खुलाहुआ ।

विकस्यर ( वि. ) चमकताहुवा, प्रकाशित, प्रकटित, विकसित ।

विकार ( सं. ) विकृति, परिवर्तन, परिवृत्ति, उलटफेर, बदलाव रोग, व्याधि, बीमारी आवेश, जोश, आकुलता, स्वभावका अन्यथा हंजाना :

विकार ( सं. ) प्रकाश, उज्ज्वल, विकारा, रहः, विजन, स्पुष्ट ।

विकारसु\* ( कि. ) खिलना, फूलना, प्रफुल्लितहोना, विकसितहोना, एक टक राटिसे देखते रहना, जोकला मुहंकरना, मुहंकाहुना ।

विकारी ( वि. ) खिलताहुआ फूलताहुआ वा, प्रफुल्लित ।

विशीर्य ( वि. ) फेंकाहुआ, बिखीर फैलाहुआ, बिखराहुआ ।

विकृत ( वि. ) विकारबुद्ध, विरूप, अस्वच्छ, मलिन, रोगी, परिवर्तित, बिचित्र ( सं. ) विकार, रोग, बिगाड़, परिवर्तन ।

विकृति ( सं. ) अन्यथाभाव, विकार, परिवर्तन, गति ।

विक्रम ( सं. ) क्रम, पैर, पांव, बल, पराक्रम, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, शौरता, प्रभुता वीर्य, शौर्य, इस नामका उज्जैन, नगरीका एक राजा आजसे लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हो गया है ।

विक्रमसंवत् ( सं. ) उज्जैनके राजा विक्रमके नामसे चला हुआ संवत् १ इस्वी सन् से ५६ वर्ष पूर्व । विक्रमीय संवत् ।

विभक्त ( सं. ) विक्रम, विकरी,  
वेचना, गाल सफाया ।

विभक्ति ( सं. ) विकार, विकृति ।

विशेष ( सं. ) व्याघात, बाधा,  
व्याकुलता, फेंकना, दूर करना,  
छेड़ना, त्यागना ।

विभ ( सं. ) विष, जहर, गरल,  
हलाहल, कालकूट, माहुर ।

विभक्तुं ( सं. ) पूर्ववत् ( कवितामें )

विभक्त ( वि. ) अयुरम, अनमेल,  
असमान, अतुल्य, बराबर नहीं ।

विभक्तुं ( कि. ) बिखरना, फैलना,  
इधर उधर होना ।

विभक्तुं ( कि. ) फैलाना, बि-  
छाना, बिखेरना ।

विभवाधु ( सं. ) कटु भाषण,  
जहरके समान भाषण ।

विभवाह ( सं. ) झगड़ा, लड़ाई,  
बाक् युद्ध, कलह, जवानी लड़ाई ।

विभक्तुं ( कि. ) कोचके आवेशमें  
आकर फाड़तोड़ बालना ।

विभिन्ना ( सं. ) ली, औरत, रांड

विधे ( अ० ) वास्त, लिये, विष-  
यमें, बाधत, कारण ।

विधेः ( कि. ) फैलाना, बिखे-  
रना, अलग करना, बिछाना ।

विभवात ( वि. ) प्रसिद्ध, कयाति-  
प्राप्त, कीर्तिमान, यशस्वी, मशहूर ।

विभवाति ( सं. ) कीर्ति, बल, प्रसिद्धि ।

विभक्त ( सं. ) तफसील, विस्तार,  
हकीकत, वर्णन । ( वि. ) सुख,

गया हुआ, बीता हुआ, व्यतीत ।

विभक्तपार ( अ० ) तफसीलके मुआ-  
फिक, विस्तारपूर्वक । पूर्णतासे ।

विभक्ते-तेषी ( अ० ) पूर्ववत् ।

विभेरे ( अ० ) इत्यादि, आदि,  
प्रभृति वगैरह, आदि लेकर ।

विभेह ( सं० ) विरोध, लड़ाई, युद्ध,  
संग्राम, संगर, द्वेष, देह, अंग,

शरीर, फैलाव, समास तथा उनके  
शब्दोंको अलग अलग करके

समझाना ( व्याकरणशास्त्र )

विधेः ( कि. ) पिचलना, पानी  
होना, द्रवीभूत होना, रस होना,

अलग होना, नरम होना, मुला-  
यम होना, पोचा होना, चबाना.

व्याकुल होना, नाउम्मेद होना,  
फोका पड़ना, उड़ जाना ( रंग )

विधेः-विभक्तुं ( कि. ) पिचलना,  
टिचलना, द्रवीभूत होना ।

विधेः ( सं. ) विग्रह, द्वेष, लड़ाई  
टंडा, झगड़ा, युद्ध ।

विधात (सं.) नाश, संहार, विधन  
अव्ययन, रुकावट, बिगाड़ ।

विधुं (सं.) बीधा, भूमि का माप  
विशेष, वसतिस्त्वा=एक बीधा ।

विध (सं.) बीधा, अटकाव, रुका-  
वट, संकट ।

विधनायक (सं.) गणेशजी, गण-  
पति, संकटका नाश करनेवाला ।

विधनकारी (सं.) पूर्ववत् ।

विध (अ०) बीचमें, मध्ये, (कविताओंमें)

विश्लेष (वि.) बुद्धिमान, चतुर,  
प्रवीण, निपुण, होशियार ।

विधरुं (क्रि.) घूमना, भ्रमण  
करना, प्रवासकरना, यात्राकरना,  
पर्यटन करना, बाहिरजाना, प्रवेश  
होना, घुसना ।

विधार (सं.) ध्यान, सोच, अनुमान,  
तत्त्व निर्णय, मानासिक अभिप्राय,  
समस्त मनन, ज्ञानसाक्षिद्वारा  
अनुभव, निश्चय, अभिप्राय, मत,  
मन, भाषय, हेतु, मनोरथ उद्देश  
विशेष, कल्पना, संकल्प, मनसूचा  
तरंग, तर्क, लक्ष्य, फिक्क, पकतावा  
पश्चात्ताप ।

विधारयथापने-२१११११-२२२२२२

पक्षेयथापने (क्रि.) सोचना, विचा-  
र ना, ध्यान देना, खयाल बीछना ।

विधारपूर्वक (अ०) ध्यानसे,  
विचारसे, सोच समझकर ।

विधारवंत-वान-शील विधारी  
(सं.) विचार करनेवाला, विवेकी,  
सवाना, यंभीर सोचने समझनेवाला ।

विधारुं (क्रि.) सोचना, विचा-  
रना, निश्चय करना, सार असार  
समझना, पूछना, मननकरना,  
ध्यानेटना ।

विधारश्रेष्ठी (सं.) विचारमाळा,  
विचारोंकासांता, खंयालोंका सिल-  
सिला ।

विधित्र (वि.) रंगबरंगा, अनेक  
रंगका, अद्भुत, अजीब, अपूर्व,  
नवीन, जो देखा नहो ।

विधी (सं.) मौज, आनंद, कलौक ।

विधे (अ०) बीचमें, मध्यमें, मध्ये ।

विधेतन (वि.) चेतनाशून्य,  
मूर्च्छित ।

विधेइ (सं.) वियोग, पार्ष्वक्य, भेद,  
अन्तर, विभाग, भाग, जुदाई ।

विधेरुं (क्रि.) वियोगहोना, वि-  
सृष्टना, जुदा होना ।

विधणुं (क्रि.) धोना, पानीसे  
साफ करना धुलकरना ।

विजया-धुवा (सं.) नूपुर, बीछरी  
पैरोंकी अगुनियोंपर पहिरनेका  
चांदीका आभूषण विशेष (लि-  
योंके लिए ।)

विजेहवुं ( कि. ) नाशहोना, नष्ट  
होना, ( आवक धर्ममें )

विजेह ( सं. ) जुदाई, वियोग ।

विजवाश ( सं. ) पंखेसे हवा  
करना, हवाकरना ।

विज्यो-अज्यो ( सं. ) पंखा, व्यजन  
बीजना, हवा करनेका साधन ।

विज्ज ( वि. ) निर्जन, शून्य,  
बीरान, एकान्त, जनहीन ।

विज्ज ( सं. ) जय, जीत, फतह,  
इसनामसे प्रसिद्ध विष्णुका एक  
द्वारपाळ ।

विज्या ( सं. ) भंग, भांग, माया,  
मादक पत्तीविशेष, पार्वति-दुर्गा ।

विज्याहन्त्री ( सं. ) दशहरा, आ-  
श्विन शुक्लाकी दशमी तिथि ।

विज्यानह ( सं. ) विजयोत्थास,  
जीतकाहर्ष, फतहकी खुशी ।

विज्यी ( वि. ) विजेता, जयशील  
यशस्वी, जयी, फतहमंड ।

विज्यी ( सं. ) आकाशमें बादलों  
के वर्णनद्वारा उत्पन्न प्रकाश  
विद्युत्, चपळा, चंचल, तडित

सौदामिनी, शक्ति, गर्मी, ताप ।

विज्यीहो ( सं. ) बाळकोश  
खेल विशेष ।

विज्यतिथि, ( वि. ) दूसरी कौमका,  
अन्य जातिका, नीच वर्ण मिम्न  
जाति । [ अज्जा ।

विज्यती ( सं. ) पूर्ववत् नवीन,

विज्यपरी ( सं. ) छुटकारा शक्ति ।

विज्यरी ( सं. ) व्यामोचन, छिनाळा,  
जादू, हाथसफाई ।

विज्यत ( वि. ) जीताहुवा, जयी,  
जयप्राप्त, फतहमात्र । [ विरह ।

विज्योभ ( सं. ) जुदाई, वियोग,

विज्योभी ( वि. ) विरही, निराज,  
पृथक, वियोगी, विद्युत्पाहुवा ।

विज्योप ( सं. ) अर्ज, प्रार्थना,  
विनय ।

विज्यान ( सं. ) शिल्प और शास्त्र  
विषयक ज्ञान, संसारमकज्ञान,

अनुभवज्ञान, केवलज्ञान ।

विज्यापना देखो विज्योपि । [ चारिणि ।

विज्या ( सं. ) छिनाळ, व्यामो-

विट ( सं. ) बीट, बिट्टा, मळ,  
हथार, गू, डेंडी । [ डोंग कैठ ।

विट्ट ( सं. ) पाखण्ड, फरेव, छठ

विट्टा ( सं. ) सिरपची, वाद विवाद,

( वि. ) पाखंडी, डोंगी, कैठ ।

विटम्भना ( सं. ) सिरबन्धी, दुःख,  
संताप, कष्टोद्वेग ।

विटप ( वि. ) सुशोभित, सुन्दर ।

विटक्ष ( सं. ) मूर्ख, बुद्धिभ्रष्ट,  
बेवकूठ, [ एक प्रकारका आमूषण ।

विटक्षा ( सं. ) कानोंमें पाहिरनेका

विटपुं ( कि. ) गोळलपेटना, घेरलेना ।

विटक्षानुं ( कि. ) घिरजाना, लपेटे  
जाना, कैदहोना, बन्दहोना ।

विटानुं ( कि. ) घेरना, लपेटना

विटाने ( सं. ) देखो विटो ।

विटम्भना ( सं. ) दुःखदायक, दुःख  
तिरस्कार, अपमान, अनुकरण ।

विटक्ष ( सं. ) प्रभु, परमेश्वर, देव  
( दक्षिण भारतमें विट्छ नामक  
अवतार हुआ है )

विटम्भुं ( कि. ) मारना, बध  
करना विदीर्णकरना, काटना,  
फाटना ।

विट् ( अ० ) विना, वगैर, सिवा ।

विटपुं ( कि. ) निकालडालना,  
साफकरना, हंडना, चुनना, पसंद  
करना, उठाना, बीनना, बहुतमेंसे  
बोझा अलग निकालना ।

विटानुदा ( सं. ) व्याकुलता,  
आकुलता, अस्वांति, बेचैनी, व्य-  
ग्रता ।

विटाम्भु ( सं. ) शोचन अजस्रसे  
कंकर इत्यादि निकालना, बीननेकी  
मजदूरी, शोचनका मिहनताना,  
चुनना, छांटना ।

विटक्ष-विट ( वि. ) अनुभूत, बीता  
हुवा, गुजरहुआ, ( सं. ) विपत्ति  
संकट, दुःख ।

विटक्षवार्ता ( सं. ) संकटावस्था ।

विटपुंवाह ( सं. ) मिथ्यावाद,  
वाक्प्रपञ्च, व्यर्थका सगडा ।

विटपुं ( सं. ) देखो विटंक्ष ।

विटथ ( वि. ) व्यर्थ, तथ्यहीन,  
निस्सार, सुप्त, किञ्चल, ।

विटनु ( सं. ) अनंग, कामदेव, कंदर्प  
नाजुक, सुन्दर, सुकुमार ।

विटक्ष ( सं. ) अनुमान, विचार,  
तर्क, व्यर्थ कल्पना, अटकल,  
क्यास, बहम, सक्, सन्देह ।

विटपुं ( कि. ) बीतना, गुजरना,  
जाना, व्यतीतहोना, अनुभवहोना  
आपड़ना ।

विटक्ष-ण ( सं. ) सप्त अधोव्येको-  
मेंसे एक, पाताळ विशेष ।

विटाम्भुं ( कि. ) दुःख देना, हैरान  
करना, शिस्ताना ।

विद्य ( सं. ) शक्ति, बल, कृत, बल, ऐश्वर्य, विभव, रस, कस, सार, जीव, माळ, पैसा ।

विद्यधात्र ( सं. ) कुबेर इत्यादि ज्ञानवी, धनपति ।

विद्वन् ( वि. ) होशियार, चतुर, दक्ष, काविल, बुद्धिमान, ( वि. ) बहुत ज्ञातुआ, बहुत सिकातुआ जो जलमुनेके असमहोगयाहो, अधजळा, कथा पक्षा ।

विद्वन्धा ( सं. ) होशियार की, चतुर नायिका, बुद्धिमान औरत ।

विद्वन् ( सं. ) ऐसामुळ जिसके अलग अलगरेशोहो ।

विद्वान् ( सं. ) देखो विद्वान् ।

विद्वान्धु ( कि. ) रवाना करना, विदाकरना, सम्मानपूर्वक वापिस भेजना, निकालना ।

विद्वान्धुरी ( सं. ) देखो विद्वान् ।

विद्वान्धु ( सं. ) फाड़ना, चीरना, काटना छेदना । [ छेदना ।

विद्वान्धु ( कि. ) फाड़ना, चीरना,

विद्वि ( वि. ) ज्ञात, जानातुआ, बूझातुआ, माळूम, प्रकट ।

विद्वन् ( वि. ) बुद्धिमान, समझदार, सयाना, चतुर, कुण्ठहोपावन, व्यासके औरससे और विविज

वीर्यकी ली अम्बिकाकी दासीके गर्भसे इसनामका एकमहान ज्ञानी पुरुष भरतवंसमें द्वापरके अंतमें था ।

विद्वन्धु ( सं. ) मसखरा, दिलगुजाज भाँट, रंगीला, राजाकेसाथ रहनेवाला हंसमुख और वाकचतुर व्यक्ति ।

विदेश ( सं. ) परदेश, अन्यदेश, भिन्नदेश, अपने देशसे पराया देश, बहजयत ।

विदेशी ( वि. ) परदेशी, अन्यदेशका बिलगती, प्रवासी ।

विदेशी ( वि. ) मायापाशसे मुक्त, सात्त्विक होकरभी ब्रह्मज्ञानी, जीवन्मुक्त, कैवल्य सुक्तिप्राप्त ।

विद्वन् ( वि. ) छिदातुआ, छिद्युत्त्व वेधातुआ क्षिप्त, छिदित ।

विद्वन्धु ( सं. ) पतिसाध की, सुसुराळमें रहनेवाली ली ।

विद्वन्धु ( वि. ) वर्तमान, मौजूद जीवित, स्थित, सन्निहित, उपस्थित, हाजिर, समझ ।

विद्वान् ( सं. ) ज्ञान, यथार्थज्ञान, शिक्षा, सिखावटी, दुस्तर, इम्फ, शास्त्र मोक्षविषयक बुद्धि, वेद चौदह अंग, १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ छंद,

६ ज्योतिष, ७ मीमांसा, ८ न्याय  
९ धर्म, १० पुराण, ११-१४  
चारोंवेद, ] चौदह विद्या [ १ मन्त्र  
ज्ञान, २ रसायन, ३ धुतिकथा,  
४ वैद्यक, ५ ज्योतिष, ६ व्याकरण  
७ धर्मविद्या, ८ जन्म तैरना,  
९ संगीत, १० नाटक, ११ घोड़े-  
की सवारी, १२ कोकशास्त्र, १३  
चोरी और १४ चातुर्वेद ।

विद्या डोर्नोना आपनी नहीं ( = )  
पढे उसकी विद्या ।

विद्याधुर ( सं. ) विद्या पढानेवाला  
आचार्य, शिक्षागुरु, अध्यापक,  
उपाध्याय, शिक्षक, पाठक, उस्ताद  
मास्तर साहेब, टीचर, आचार्य ।

विद्याधन ( सं. ) विद्यारूपी महान  
द्रव्य । [ किंवा आनंद ।

विद्यानंद ( सं. ) विद्याद्वारा प्राप्तसुख,

विद्याभ्यास ( सं. ) अध्ययन,  
शिक्षण, पठन, विद्या प्राप्तिके लिये  
अभ्यास ।

विद्यालय ( सं. ) पाठशाळा, पढने  
का स्थान, विद्यामंदिर, स्कूल,  
कालिज ।

विद्यार्थी ( सं. ) तालिमइस्लम, ओ  
विद्या प्राप्तिके लिये बलवान

हो, छात्र, पाठी, पढनेवाला,  
अभ्ययन कर्ता, सीखनेवाला,  
स्वाध्यायी, शिष्ट, स्टुडेन्ट ।

विद्यावंत-वान ( वि. ), पंडित,  
विद्वान, गुणी, शिक्षित, पठित ।

विद्यावाणा ( सं. ) देखो विद्याधन  
विभूत ( सं. ) विषळी, तदित,  
सौदामिनी, चपला, दामिली,  
शक्ति, ताप, गर्मा, विलुळी ।

विद्युक्षता ( सं. ) बिजलीका प्रकाश

विदुभ ( सं. ) मूंगा, प्रवाल, रत्नविशेष  
वृक्ष विशेष मूंगका वृक्ष, रत्नवृक्ष ।

विद्वन्मन ( सं. ) पंडित, विद्वान,  
ज्ञानी, साक्षर, दार्शनिक, फिला-  
सफर । [ इतिमयत, योग्यता ।

विद्वत्ता ( सं. ) पंडित्य, विद्वानपन

विद्वान ( वि. ) विद्यावान, पंडित  
पढा, प्राज्ञ, आत्मज्ञान युक्त ।

विद्य ( सं. ) विधि, रीति, प्रकार,  
ढंग, ढांचा, जाति. तरह ।

विद्यधु ( सं. ) देखो विंधधु ।

विधवा ( सं. ) रण्डा, रांड, पति-  
हाना ।

विधविध ( वि. ) विविध भांतिके,  
बहुत प्रकारके, तरह तरहके ।

विधाता-नी ( सं. ) आग्यनिर्माण  
करनेवाली ईश्वरीय शक्ति । छडीके  
दिन भागवतमें केवल लिखानेवाली



देवी ( ऐसा झोंगा अनुमान है )  
गजपापक, औषधि विशेष, ब्रह्मा,  
सृष्टि रचनेवाला।

विधान ( सं. ) विधि, रीति, शा-  
स्त्रोक्त रीति, उपाय, जोड़ना, काम,  
हाथीके बास्ते बनाया हुआ लट्ठ।

विधि ( सं. ) व्यवस्था विधान,  
भाग्य, प्रारब्ध, क्रम, सिद्धसिला,  
काळ, समय, नियम, विधान,  
विधिवाक्य, नियोग, विष्णु, ब्रह्मा,  
इत्यादि मन्त्राण, वैद्य, व्याकरणमें  
सूत्रविशेष, नीति, कानून, आज्ञा।

विधिपूर्वक ( अ. ) शास्त्रानुमोदित,  
शास्त्रके अनुसार, विधिके अनुसार।

विधियुक्त-वत् ( अ. ) पूर्ववत्।

विधु ( सं. ) चन्द्रमा, चांद ब्रह्मा,  
शंकर, कपूर, काफूर, पवन।

विधुभं ( सं. ) चन्द्रमण्डल, नक्षत्र।

विधुर ( वि. ) रंढवा, झीहीन-  
पुरुष, ( वि. ) वियोगी, विरही,  
विकल।

विधुरा ( वि. ) वियोगी, विरही।

विधुशं ( वि. ) व्याकुल, व्यथित,  
बबराया हुआ, भाकुल।

विधुभुम्भी ( वि. ) चन्द्रवदनी (जी)  
चन्द्रानवी, चन्द्रमुखी।

विध्वंस ( सं. ) आकारसूचक कि-  
बापहका रूप ( व्याकरण शास्त्रे )

विधुक्षय ( सं. ) अमावस्या, जिस  
दिन चन्द्रमाका क्षय हो। [तवाही]

विध्वंश ( सं. ) नाश, आपत्ति,

विनत ( वि. ) नम्र, विनयी, सुशील।

विनता ( सं. ) बनिता, ली।

विनति-नति ( सं. ) अर्ज, प्रार्थना  
आजिजी, नम्रता, विनय, निवे-  
दन, विनती, अनुनय।

विनय ( सं. ) विनती, शिष्टता,

सभ्यता, नम्रता, शिष्टाचार, विवेक

विनयुं ( कि. ) प्रार्थना करना,  
अर्जकरना, प्रार्थना करना, आजिजी  
करना, समझाना, उसकाना।

विना ( अं. ) सिंघांय, बिना, वगैर।

विनायक ( सं. ) गणेशजी, देवविशेष।

विनाश ( वि. ) ध्वंस, नाश, संहार,  
मरण, अदृशन, खराबी, बिगाड़।

विनाशक ( वि. ) नाशकारक, संहार  
करनेवाला, विनाशकर्ता।

विनाशी ( वि. ) पूर्ववत्।

निनिपात ( सं. ) पतन देखादिसे  
प्राप्तहुआ व्यसन, अपमान, तिर-  
स्कार, नाश, आकत।

विनिर्धय ( सं. ) प्रतिदान, बदलेका  
दान. अदलाबदली, अमानत,  
एक वस्तुको देकर तरस दूसरी  
वस्तुलेना, परिवर्तन, लेनदेन ।

विनिर्धाय ( सं. ) आयोग, प्रतिबंध ।

विनीत ( वि. ) नम्र, सुशील, शांत  
ठंडेस्वभावका, विनयान्वित ।

विने ( सं. ) देना विनय ।

विनोद ( सं. ) कौतुहल, तमाशा,  
झंझा, उत्सव, प्रमोद, हर्ष, आनन्द,  
खेल ।

विनोदी ( वि. ) आनन्दी, हंसमुख,  
ठट्ठाबाज, रंजीला, मजाकी, हास्य-  
जनक ।

विन्यास ( सं. ) स्थापन, रचना,  
रखना, विचारयुक्त, समूह, निश्चय ।

विपत् ( सं. ) दुःख, आपदा, दुर्दशा ।

विपत्ति ( सं. ) संकट, दुःख, आ-  
पत्ति, विपदा, कष्ट, मुसीबत ।

विपरित ( वि. ) सलटा, वाम,  
विरोधी, शत्रु, विरुद्ध, प्रतिकूल,  
गलत, झूठ, असुविधाजनक,  
अशुभ ।

विपर्यय ( सं. ) विरोध, विरुद्ध  
घटना, अभाव, नाश, प्रलय,  
तबादला, गलती, मुसीबत ।

विपर्यास ( सं. ) विपरीत, विरो-  
धिता, बहिष्कृत, भ्रांति ।

विपण ( वि. ) बलका ६० बां माग,  
विपक, काल परिमाणविशेष ।  
३ सेकण्ड ।

विपाक ( सं. ) पाचन, परिपक्वता,  
फल, परिणाम, रसान्तर, जायका,  
कठिनाता । [ वृक्षसमूह, विरान ।

विपिन ( सं. ) वन, जंगल, अरण्य,

विपुल-ण ( वि. ) बहुत, अधिक,  
अतिशय, विस्तृत, गहन, विशाल,  
अगाध, ऊँचा ।

विपुला ( सं. ) हाथी, हस्ती, मातंग ।

विप्र ( सं. ) माझण, विद्वान, विज ।

विप्रयोग ( सं. ) अलहदगी, जुदाई,  
वियोग, विरह ।

विप्रलब्धा ( सं. ) वह नायक जो  
नायिकाका संकेत न जान सका हो ।

विप्रलंब ( सं. ) ठगई, धोका,  
भुलावा, सगडा, वियोग ।

विप्रलप ( सं. ) व्यर्थ बातचीत,  
सगडा, प्रतिज्ञा भंग ।

विप्रल ( सं. ) उपद्रव, बबराहट,  
बलवा, बिगाड, झेड, दूसरे राजाके  
राज अद्विष्ट अथ [ मित्रात्र कोना ।

विप्रसुं ( वि. ) गवारिष होना

विश्व ( वि. ) निष्कल, निष्कमा,  
निरर्थक, मिथ्या ।

विश्वध ( सं. ) देव, सुर, अमर, पंडित ।

विश्वध ( सं. ) ज्ञान, विचार ।

विश्वरूप ( वि. ) बंटाहुआ, अंघी-  
कृत, जुदा, पृथक्कृत ।

विश्वरूप ( सं. ) व्याकरणमें सुप्ति-  
दादि प्रत्यय, कारकोंके चिन्ह ।

विश्वरूप ( सं. ) ऐश्वर्य, धन, मोक्ष,  
वैभव, साठ संवत्सरोंमेंसे एक का  
नाम ।

विश्व ( सं. ) किरण, शोभा, प्रकाश ।

विश्वरूप ( सं. ) सूर्य, भास्कर, रवि ।

विश्वरूप ( सं. ) हिस्सा, टुकड़ा,  
अंश, अव्यय, भाग, बाँट ।

विश्वरूप ( सं. ) प्रकाश, उज्ज्वल ।  
रसको उत्पन्न करनेवाला कारण  
रूप मूल वस्तु तथा उद्दीपन साहित्य  
( रस शास्त्रमें ), पारेचय ।

विश्वरूप ( सं. ) अर्थालंकार विशेष,  
धारणा, मानो....., शाब्द... ..,  
यदि... ( ऐसा संशयार्थक भाव ) ।

विश्वरूप ( कि. ) प्रकाशित होना,  
शोभित होना, मसहूर होना ।

विश्व ( सं. ) स्वाभि, प्रभु, ( कि. )  
सर्वव्यापक, नित्य, सर्वव्यापी ।

विश्वरूप ( सं. ) दुःख, निपत्ति, आकत ।

विश्वरूप ( सं. ) सामर्थ्य, सर्व-  
व्यापकता, नित्यता, स्वाभित्य ।

विश्वरूप ( सं. ) राक्ष, मस्म,  
साफ, बरूमस्म, पवित्र राक्ष,  
ऐश्वर्य, प्रसाद, वैभव, धन,  
शक्ति, वदप्यन, अभ्युदय, शोभा ।

विश्वरूप ( सं. ) आभूषण, जेवर,  
भूषण, शृंगार, अलंकार, शोभा ।

विश्वरूप ( वि. ) अलंकृत, सुस-  
ज्जित, आभूषण युक्त ।

विश्वरूप ( वि. ) गृहस्थी, भोगी ।

विश्वरूप ( सं. ) बहम, भ्रांति, अम  
चबराहट, व्याकुलता, सन्देह ।

विश्वरूप ( वि. ) संशयम्वित, अशुद्ध

विश्वरूप ( वि. ) निर्दक, शुद्ध,  
पवित्र, साफ, सुधरा, मररहित ।

विश्वरूप ( सं. ) बीमा कराई हुई  
चिट्ठी, बीमाकी दस्तावेज ।

विश्वरूप ( सं. ) ज्ञान, वायुमान,  
आकाशमान, वाहन, रथ, बेहूत ।  
देवयानविशेष । ( वि. ) अपमान,  
मानभंग । [ शाब्द ।

विश्वरूप ( सं. ) बीमा उतारने

विश्वरूप ( सं. ) पछतावा, पश्चात्ताप ।

विश्वरूप ( कि. ) पछताना,  
विचारना, पश्चात्ताप करना ।

- विभुभ (वि.) पराहस्य, किराहुआ  
छट्टा, विरोधी ।
- विभे ( सं. ) बीमा, इन्स्यूरन्स ।
- विभडे ( सं. ) पानीसूखाने पर  
तालाब या नदीमें छोड़ा हुआ  
कूप, कुआ ।
- विभत ( सं. ) न्यानेवाली, प्रसवकरने  
वाली, उत्पन्नकरने वाली ।
- विभाधु ( सं. ) आकाश, जल,  
अस्थान ।
- विभाधुं ( क्रि. ) उत्पन्न करना,  
न्याना, प्रसव करना, जनना ।
- विभेभ ( सं. ) विच्छेद, विरह,  
विच्छोह, विछुड़ना, जुदाई ।
- विभेभी ( सं. ) विरही, विछड़ा हुआ
- विभेभत ( वि. ) जुदा, हटाहुआ,  
बेमुहब्बत, वैराग्य, दोतराग,  
वासनाशून्य । [ विधि ।
- विभेभी ( सं. ) ब्रह्मा, ब्रह्मदेव,
- विभेभु ( सं. ) सुगंधियुक्त, सुशब्ददार
- विभत ( सं. ) विराम, निवृत्ति,  
शान्ति, त्याग, निस्पृहता ।
- विभेभुं ( क्रि. ) अटकाना, रोकना,  
विराम, करना ।
- विभे ( वि. ) कोमल, नाजुक,  
कोई, एकाधा, विरला ।
- विभेभुं ( वि. ) असाधारण, बहुतों  
में योग्य, दुर्लभ, क्वचित ।
- विभेभु ( सं. ) एक प्रकारका धातु ।
- विभे ( वि. ) रसहीन, नीरस ।
- विभे ( सं. ) विच्छेद, विभोय,  
जुदाई, विछुड़न ।
- विभेभेभ ( सं. ) किसी प्रेमीकी  
जुदाई के कारण दुःखारका होना ।
- विभेभेभ ( सं. ) युद्ध करते समययोद्धा-  
ओंका शब्द । हुंकार ( वींकी )
- विभेभेभ ( सं. ) वियोगाग्नि,  
विछुड़नेका संताप, विरहानल ।
- विभेभेभ ( सं. ) पूर्ववत् ।
- विभेभेभ ( सं. ) पतिप्रेमसे वंचिता,  
वियोगिनि, दुखी ( स्त्री ) ।
- विभेभे ( सं. ) वियोगी पुरुष,  
अपनी प्रेमिणी से विछुड़ा हुआ ।
- ( वि. ) वियोगी, विरह युक्त ।
- विभेभे ( सं. ) रागका अभाव,  
मुहब्बतकानहोना, विरक्ति, संसारमें  
आसक्तिका त्याग, ममता त्याग
- विभेभे ( सं. ) त्यागी, वैराग्य  
युक्त, राग शून्य, ममता रहित ।
- विभेभेभान ( वि. ) शोभित, प्रका-  
शित, सोहता हुआ, शोभायमान ।
- विभेभेभुं ( क्रि. ) शोभापाना,  
प्रकाशमान होना, बैटना ( सम्मान  
सूचक शब्द ) । [ शित ।
- विभेभेभे ( वि. ) शोभित, प्रका-

विशद ( सं. ) अक्षरार्थ, चतुर्थस्य  
मुख्य रूप ईश्वरका आकार ।

( वि. ) विशाल, विस्तार, विक-  
राळ, बड़ा, भारी ( सं. ) इसनामसे  
प्रासिद्ध एक प्राचीन नगर ।

विशम ( सं. ) निश्चित, विश्राम,  
शान्ति, अन्त, अवसान, समाप्ति,  
फुरसत, वाक्य पूरा होने के लिये  
लगाया हुआ एक बिन्दु विशेष  
( , ; ) प्रकरण, भाग, सर्ग, अध्याय ।

विशमपुं ( कि. ) अटकाना,  
ठहराना, रोकना, बन्द करना ।

विशुद्ध ( वि. ) विपरीत, वाम,  
प्रतिकूल, खिलाफ, उलटा ।

विश्व ( वि. ) बड़ सूरत, कुरूप,  
सौन्दर्य हान, बड़ शक्ल, परि-  
त्यक्त रूप, । [ होनेकी औषधि ।

विश्वन ( सं. ) जुलूस, दस्त

विश्व ( सं. ) वैर, शत्रुता,  
दुश्मनी, द्वेष, विरुद्धभाव, भेंटस,  
अनबन, प्रतिकार, वारण, अव-  
शेष, विपरीतता, विपर्यय, लड़ाई ।

विश्वी ( वि. ) विरोध करने  
वाला, ईर्ष्यालु, द्वेषी, शत्रु ।

विश्वेश्वर ( वि. ) अजीब, विशेष  
कृष्ण युक्त, अद्भुत, अनूप,  
आश्चर्यमय, अलौकिक ।

विश्वपुं ( कि. ) रोना, बिज्जप करना,  
रुदव करना, बिलसना, बिलाना ।

विश्वं ( सं. ) देरी, ढीठ, अधिक-  
समय ।

विश्व ( सं. ) नाश, क्षय, बर-  
बादी, प्रलय, विनाश, लय ।

विश्व ( वि. ) इन्द्रियप्रिय,  
चञ्चल, ढीठ, अवारा, लम्पेट,  
कामातुर ।

विश्व ( सं. ) देश, जन्मभूमि,  
इंग्लैण्ड, विदेश, परदेश, दूरदेश ।

विश्वी ( वि. ) अंग्रेजोंके देशका,  
दूरदेशीय, विदेशी, शेखीखोर ।

विश्व ( सं. ) रुदन, रोना, कलह,  
अन्दन, बिलाना, दुःख करना ।

विश्वी भीड़ ( सं. ) बिलायती  
औषधि विशेष, क्षार विशेष,  
सल्फेट आफ मेगनेशिया ।

विश्वपुं ( कि. ) गठना, पिचळना,  
टिचळना, नाश होना ।

विश्व ( सं. ) खेळ, क्रीड़ा, कौतुक,  
भोग, सुख, आनन्द, उपभोग  
क्रीड़ा, रंगबाजी ।

विश्वी ( वि. ) बिचयी, लैपट,  
बुराचारी, भोगी, आनन्दी ।

विश्वपुं ( सं. ) आठ ओंके  
संकेत, आधे रुपयेका संकेत शब्द ।

विशुद्ध ( वि. ) आसफ, मोहित,  
झमाया हुआ, आकर्षित ।  
विश्लेषणी ( सं. ) अवलोकन, देख-  
नेका रंग । [ दृष्टि ।  
विश्लेषन ( सं. ) अवलोकन, नजर ।  
विश्लेषण ( कि. ) देखना, जानना,  
पहिचानना, निहारना, घूरना ।  
विश्लेष्य ( सं. ) आख, नेत्र, चक्षु,  
नयन । [ रत्ना, दृष्टि डालना ।  
विश्लेष्य ( कि. ) देखना, निहा-  
विश्लेषा-विश्लेष ( अ० ) आधो-  
आध, ठीक आधा, ( संकेतार्थ )  
विपक्ष ( सं. ) बोलनेकी इच्छा,  
अभिप्राय, इच्छा, अर्थ, हरादा ।  
विवक्षित ( वि. ) इच्छित, आभे-  
प्रते, इच्छित, अनुक ।  
विवश ( सं. ) गुफा, कन्दरा, गुदा,  
पोली जगह, छिद्र, छेद, बिल ।  
विवश ( सं. ) व्याख्यान, स्पष्टी-  
करण, व्यास, व्याख्यान, टीका,  
व्याख्या । [ रंगका, भद्र ।  
विवश ( वि. ) देखो विरूप, बुरे  
विवर्तन ( सं. ) फिरना, लौटना ।  
विदर्शित ( वि. ) बढ़ाहुआ, वृद्धि-  
गत, उन्नत, समृद्ध ।  
विदग्ध ( वि. ) परतंत्र, पराधीन,  
पराधन्य, अवध, आक्षिप्त ।

विवाह ( सं. ) सगढ़ा, सकरार,  
फिसाह, बरानी, लड़ाई, वाक्युद्ध ।  
विवाही ( सं. ) सगढ़ाक, फिसाही,  
प्रातिवादी, वादी, मुद्दई ।  
विवाह ( सं. ) ब्याह, शादी, पाकि-  
ग्रहण, सगाई, लग्न, परिजय,  
मांढा, बिवाह ।  
विवाह करवे ( कि. ) सगाई करना,  
सम्बन्ध जोड़ना ( लड़का लड़कीका )  
मंगनी करना ।  
विवाह भांडवे ( कि. ) बिवाहो  
पक्षमें तय्यारिया करना ।  
विवाह तोड़वे-होकर करवे ( कि. )  
बिवाह करनेसे इन्कार करना,  
सगाई छोड़ना, सम्बन्ध त्यागना ।  
विवाहना गीत विवाहो अभवाय ( ० )  
होकर बात समयपर ही प्यारी  
मालूम होती है ।  
विवाह पड़ेला भांडवे ( कि. ) मरनेके  
पहिलेही कज खोदना ।  
विवाह भांडी खुजोने और छोली  
खुजोने=बिवाहमें और घर बनानेमें  
सोचे हुए धनसे अधिक खर्च हो  
जाता है ।  
विवाह रित्यो ने भांड बांधवे ( ० )  
फोड़ा फूटा और वैध वैदी बना  
“ दुखसी मांवरके परें गदी सिरा  
हथ मीर ” ।

विवाह विनो नेनेभाभेभाविवाह  
हुआही फिर नेगचार लेने बाळो के  
लिने सुई चडा ।

विवाह वाचन ( सं. ) विवाह शास्त्री  
के वक्तके बाजे दगैरह ।

विविध ( वि. ) नाना प्रकार,  
भौति भौसिका, अनेक तरहका ।

विवेक ( सं. ) ज्ञान, समझ शक्ति,  
विचार, निर्णयारिका, बुद्धि ।

विवेक क्षुद्धि ( सं. ) सदाचार,  
श्रेष्ठ बुद्धि, सयानापने, चातुर्भ ।

विवेक युक्त ( वि. ) विवेक, युक्ति  
युक्त, ठीक, उचित, मुनासिब ।

विवेकी ( वि. ) तत्त्ववेत्ता, जज,  
मुंसिफ, ज्ञानी, विचारशील, सभ्य,  
न्याय कर्ता, विचार कर्ता ।

विवेचन ( सं. ) विचार, जाच,  
पड़ताल, बहस, टीका, भाष्य ।

विशद ( वि. ) विस्तृत, विस्तार  
युक्त, विशाल, निर्मल ।

विश्राभ ( सं. ) निशाना ताकते  
समय अनुष घारी की अदे रहने  
की एक स्थिति विशेष, शिव,  
मिश्रुक ।

विश्राभा ( सं. ) सोच्छर्वा नक्षत्र ।

विश्रास ( सं. ) विस्तृत, बड़ा,  
चौड़ा, बृहत् विस्तीर्ण, तेजस्वी ।

विशुद्धि ( सं. ) पवित्रता, सफाई,  
अछादि राहित्य, निर्मलता ।

विशेष-ये ( अ० ) में, बाबतमें,  
सम्बंधमें, विषयपर, बारेमें ।

विशेष-विशेष ( वि. ) साक्ष, बहुत,  
मुख्य, अधिक, ज्यादा: प्रधान,  
अमुक, फळना, किमी खासगुण के  
कारण अन्योसे अधिक ।

विशेषनाम ( सं. ) नामका एक  
प्रकार ( व्याकरण शास्त्रमें ) ।

विशेष्य ( सं. ) ऐसा शब्द जो  
किसा संज्ञा [ विनेष ] की विशेष-  
यता गुण अथवा लक्षणका द्योतक  
हो ( व्याकरण शास्त्र ) ।

विशेष करीने ( अ० ) मुख्यतया,  
प्रधानतः सासकर, अधिकांशमें ।

विशेष्यः ( अ० ) पूर्ववत् ।

विशेष्य ( सं. ) वह संज्ञा जिसकी  
किसी विशेषण द्वारा विशेषता  
दिखाई जावे, ( व्याकरण शास्त्र ) ।

विश्रब्ध ( सं. ) विश्वस्त, शान्त,  
अजबूत, निश्चिन्ता, काबिल ऐत  
बार ।

विश्रांति ( सं. ) आराम, विश्राम ।

विश्राभ ( सं. ) पूर्ववत् ।

विश्राभयुं ( क्रि. ) आराम करना,  
विश्राम करना, रचना ।

विश्व ( सं. ) सृष्टि, जगत, पुनिया,  
ब्रह्माण्ड, संसार, खलक ( वि. )  
सब, सबस्त, तमाम, कुल, समग्र ।  
विश्वकर्मा ( सं. ) देवताओंका  
शिल्पी ।  
विश्ववन्दन ( सं. ) ईश्वर, पर-  
मात्मा, जगतपिता, परमपिता ।  
विश्वनाथ ( सं. ) ईश्वर, जगन्नाथ,  
जगत स्वामी ।  
विश्वेश्वर ( सं. ) विश्वका भरण-  
पोषणकर्ता, सर्वशक्तिमान ईश्वर ।  
इंद्र, विष्णु, सुरपति ।  
विश्वेश्वरी ( सं. ) पृथ्वी, भूमि ।  
विश्वेश्वर ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा ।  
विश्वेश्वर्य ( सं. ) सर्वव्यापी, ईश्वरः  
विश्वेश्वर्य ( सं. ) सर्वव्यापक,  
ईश्वर । [ रूप, ईश्वर, परमात्मा ।  
वश्याधर ( सं. ) संसारका आधार  
विश्वार्त्मा ( सं. ) विश्व की आत्मा,  
ब्रह्मा ।  
विश्वासा ( सं. ) यकीन, भरोसा,  
पत, ऐतबार, भ्रमा, अस्तिक्य ।  
विश्वासघात ( सं. ) कपट, धोका,  
ठगी, धूर्तता, भरोसा बंधाकर  
पूरा न करना । दगाबाजी ।  
विश्वासघाती ( सं. ) कपटी, दगा-  
बाज, धूर्त, ठग, नमकहराम ।

विश्वासी-सु ( वि. ) विश्वास योग्य,  
भरोसेपर रहनेवाला, विश्वस्त,  
भोला, भ्रष्टालु, कबे कानका ।  
विश्वेश्वर-भर ( सं. ) जगन्नाथ,  
ईश्वर । द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक  
जो काशी में है, द्वेष, ईर्ष्या, वैर ।  
विष ( सं. ) जहर, हल्लाहक,  
साहुर, गरल, कालकूट ।  
विषधर ( सं. ) सर्प, सांप, भुबंग ।  
विषम ( वि. ) अयुक्त, अनमेल,  
असमान, अतुल्य, बराबर नहीं,  
कठिन, कठोर, भयंकर, ऊंचा  
नीचा, अनियमित अद्वितीय,  
अलंकार विशेष । दारुण ।  
विषम ७२२ ( सं. ) एक प्रकारका  
बुझार, तेजबुझार ।  
विषम ( सं. ) इन्द्रियादिकले जाने  
गये शब्दादि, इन्द्रियाई वस्तु, भोग  
विलास, रिये, निमित्त, अर्थ,  
देश, काम, धर्म, व्यापार, इशक-  
बाजी, प्रकरण, बाबत, प्रस्ताव,  
उद्देशकारण, प्रयोजन, हेतु,  
माळ, सामान ।  
विषयानंद ( सं. ) विषयभोगका  
आनंद, इन्द्रियोद्धार प्राप्त आनंद ।  
विषयान्तर ( सं. ) अलही बात,  
चाळु कार्यसे निराकाही ।



विश्वामित्र ( सं. ) कामान्ध, कामो-  
न्मत्त, भोगेच्छामें लक्ष्मी ।

विश्वामित्र ( वि. ) विलासी, भोगी,  
संसार, कामी, लालच, कामा-  
मिलापी । [ विषयपर ।

विश्वामित्र ( अ. ) संबन्धमें, बारमें,

विश्वामित्र ( सं. ) शोक, दुःख, क्रोध,  
खेद, उदासी, वैर, द्वेष, नाउन्मेषी

विश्वामित्र ( सं. ) वह समय जबकि  
रातदिन बराबर होते हैं ।

विश्वामित्र ( सं. ) पृथ्वीके गोलके  
ऊपर ठीक बीचोंबीच कल्पित  
रेखा, वह जहाँ रातदिन बराबर  
होते हैं, भूमध्य रेखा, विषुवत् ।

विश्वामित्र ( सं. ) रोगविशेष, हैजा,  
शीतला, चेचक, महामारी ।

विश्वामित्र ( सं. ) अनुष्ठान समय, भद्रा,  
( ज्योतिषशास्त्रे ) शिष्टता ।

विश्वामित्र ( सं. ) मल, शुद्धामार्गद्वारा  
निकलनेवाला शारीरिक मल, गु,  
पाखाना, बीठ, नर्क ।

विश्वामित्र ( सं. ) व्यापक ईश्वर, पौरा-  
णिकोंके त्रिदेव मेंसे दूसरे नम्बर  
का देव जिसका काम संसार को  
पालनेका है, सत्त्वगुण स्वरूप ।

विश्वामित्र पुराण ( सं. ) अठारह  
पुराणों मेंसे एक पुराणका नाम ।

विश्वामित्र ( क्रि. ) ठंडाहोजाना,

प्रथम गर्माँझीके अग्रपरणो उत्सवके  
दिन उसकी सोलीकी समस्त  
वस्तुएं उसकी माताका अपनी  
सोलीमें देनेकी किया ।

विश्वामित्र ( सं. ) भूलने स्वभा-  
वका, भोळा, गफिल, स्मरण  
शाक्तिहीन ।

विश्वामित्र ( क्रि. ) भूलना, याद न  
रखना, विस्मरण होना ।

विश्वामित्र ( सं. ) स्वरके पीछे दो  
बिन्दु ( : ) त्याग, छोड़ना, मोक्ष ।

विश्वामित्र ( सं. ) त्याग, देना,  
छोड़ना, बिदाकरना, बरखास्त ।

विश्वामित्र ( सं. ) विस्वेका बीसवीं  
हिस्सा १/२०, बीसवा विस्वांसी,  
ईसाई, क्रिश्चियन, ईसू ख्रीस्ट के  
मतका अनुयायी, ( वि. ) विश्वस्त,  
विश्वासी ।

विश्वामित्र ( सं. ) जीव, दम, दौलत,  
माल, मूल्य, कीमत ।

विश्वामित्र ( सं. ) पड़ाव, ठहराव,  
ठहरने की जगह, आराम  
गाह, निश्चयसे मुझे को जल्दने  
अथवा यादने के लिये केजाते  
समय जिस जगह रास्ते में उता-  
रते हैं वह जगह । विश्वास,  
भरोसा, बकीन ।

विस्तार-१। ( सं. ) भूल, चूक,  
विस्तारुं ( कि. ) भूलना, यादन  
रखना ध्यान में न रखना ।

विस्तार-२। ( कि. ) पूर्ववत् ।

विस्तार-३। ( कि. ) बढ़ना, वृद्धि-  
पाना, फैलाना, विस्तारपाना,  
बढ़ाना, फैलाना, विस्तार करना ।

विस्तार-४। ( सं. ) फैलाव, वृद्धि, चौ-  
ड़ाई, विशालता, भूमिका क्षेत्रफल ।

विस्तार-५। ( कि. ) बढ़ाना, फैलाना  
लंबाकरना, अधिक करना, विस्तृत  
करना ।

विस्तीर्ण ( वि. ) बढ़ाहुआ, फैला  
हुआ, प्रसरित, विपुल, विशाल ।

विस्तृत ( वि. ) फैलाहुआ, चौड़ा,  
बहुत, प्रफुल्ल ।

विस्तेरित ( सं. ) क्षीतला, नामक  
रोग, चेचक, रक्तविकार विशेष ।

विस्त्रय ( सं. ) आश्चर्य, अचंभा,  
तभाज्जुब, अद्भुत, अजीब ।

विस्त्रय-१। ( सं. ) भूल, यादन रहना,  
बिसरना, [ निवृत्त, अचंभित ।

विस्त्रय-२। ( वि. ) चकित, आश्चर्या-  
विस्त्रय ( सं. ) विस्मरण, भूल,

विंद-१। ( सं. ) पक्षी, विविधा,  
परिन्द, नमस्कर, राग विशेष,  
पक्षेड ।

विंद-२। ( सं. ) पूर्ववत् ।

विंद-३। ( कि. ) विवरण करना,  
भूमना, इधर उधर जाना, आनंद  
करना ।

विहाय-१। ( कि. ) समाप्त होना,  
पूर्ण होना, गुजरना, बीतना ।

विहार ( सं. ) क्रीड़ा, खेल, आनन्द  
के लिये इधर उधर भूमना, मठ,  
संन्यासी के रहने का एकांत  
स्थान बौद्धोंका उपासना स्थान,  
बौद्ध मन्दिर, विशेष ।

विहारी ( सं. ) आनंदी, विहार  
करनेवाला, सिक्खड़ी, श्रीकृष्ण ।

विहीन ( वि. ) बिना, रहित,  
शून्य, बर्गर ।

विहीत ( वि. ) डांका हुआ, आ-  
च्छादित, कथित, निर्णीत, उचित ।

विहीन ( वि. ) अकेला, पीला,  
कम, हलका ।

विहीन-१। ( कि. ) अकेले रहना ।

विहीन-२। ( वि. ) बिना, बर्गर, रहित ।

विहीन-३। ( वि. ) देखो विहीन ।

विहीन-४। ( वि. ) व्याकुल, चबराचा  
हुआ, उद्धिग्न, चंचल ।

विहीनता ( सं. ) चबराहट, उद्धि-  
ग्नता, उद्धिग्नता ।

विशेष ( सं. ) मूक, मेषकूट,  
बावला ।

वी० ( वि. ) विद्यमानका संक्षिप्त रूप ।

वी० ( सं. ) जहर, विष, कालकूट,  
माहुर, गरल ।

वी० ( सं. ) बीचा, २० विस्वा,  
भूमि मापनेका परिमाणविशेष ।

वी० ( वि. ) व्यग्र, बावला ।

वी० ( कि. ) बंद होना, मुंदना,  
मिचना ।

वी० ( सं. ) बरतनका साफ  
किया हुआ पानी, धोवन । विशेष ।

वी० ( सं. ) विच्छू, जहरीला जंतु

वी० ( सं. ) बजली, विद्युत, तड़ित ।

वी० ( सं. ) अगुडी, मुद्रिका, छद्मा ।

वी० ( सं. ) नग,  
नगीना, रत्न, गुणवान ।

वी० ( सं. ) बंदल, गोल पुलिन्दा,  
छपेटा हुई गोल गठरी ।

वी० ( कि. ) साथ लिये फिरना,  
निमाना, चलाना, चकाना ।

वी० ( वि. ) जनशून्य, निर्जन,  
बीरान, ऊजड़, जंगल, ( सं. )  
पंखा, बीजना, व्यसन ।

वी० ( सं. ) बिना, बीगर, सिवान,  
अतिरिक्त, अत्यवह ।

५६

वी० ( सं. ) तंतुवाद्यविशेष, छितार,  
तम्बूर, तानपूरा, बान ।

वी० ( सं. ) वह मनुष्य जो  
बीचा का प्रेमी हो, नारद,  
सरस्वती । [ हुई बात ।

वी० ( सं. ) पड़ा हुआ दुःख, बनी

वी० ( कि. ) व्यतीत होना,  
गुजरना, जाना, होना, पूरा होना,  
सर्ब होना, दुःख पड़ना ।

वी० ( वि. ) सान्त, राजशून्य,  
( सं. ) जैन तीर्थंकर, जैनमूर्ति ।

वी० ( कि. ) व्यतीत करना,  
खोना, गुमाना, सर्ब करना, नष्ट  
करना, व्यर्थ खोना, दुःख देना ।

वी० ( सं. ) विधि, प्रकार, रीति,  
तरह, जाति ।

वी० ( सं. ) जो बीमा करावे ।

वी० ( सं. ) जोखिम, हुण्डी, एक  
प्रकारको राजकीय व्यवस्था ।  
अमुक समयमें अमुक प्रकारकी  
आफतसे नुकसान होतो इतना  
अधिक दाम देनेसे उसकी जिम्मे-  
दारी लेना, जिम्मेदारी खरीदना ।  
इन्सूरेन्स ।

वी० ( कि. ) बीमा  
करना, जोखिम लेना, हुण्डी करना ।

वीर ( सं. ) बलवान, बौद्ध,  
लड़ाका, शूर, पहलवान, बहादुर,  
भाईबन्धु, देव भूत पिशाच आदि ।  
वीर भूतवा ( कि. ) मंत्रसे भूत  
इत्यादि किसी को किसीके शरीरमें  
बुलाना ।

वीररस ( सं. ) नवरसों मेंसे एक  
रस, जिसमें वीरताका वर्णन हो ।  
वीरविद्या ( सं. ) भूत प्रेत इत्यादि  
को वश करने की विद्या ।

वीरश्री ( सं. ) वीर पुरुषका यश ।  
वीर साधवे ( कि. ) भूत इत्यादि  
वश करना ।

वीरहास ( सं. ) वीरोंकी हँकार,  
सिंह गर्जन, युद्धमें भयंकर-  
चरितकार ।

वीरघ ( सं. ) एक प्रकारकी बेलि,  
लनाविशेष, फैली हुई बेल ।

वीर ( सं. ) भाई, बन्धु, सहोदर ।

वीर ( सं. ) शुक, धातु, धात,  
बाज, रज, बल, शक्ति, कूशत,  
पुरुष शरीरका सत्व ।

वीर ( सं. ) आधे रुपये का संकेत  
बसीबत, वारिशनामा । भरती,  
बहाव, मृतलेख, जहाज उतार ।

वीर ( सं. ) पक्षी विशेष ।

वीरुं-वीरुं ( वि. ) अकेला,  
एकाकी, ठीला, धीका, शर्मिला ।  
शब्दका एक वचन ।

वीरु-स ( वि. ) बीस, २०, बिंश ।  
वीरुवसा ( वि. ) पूर्ण, पूरा,  
बीसोंबित्वा ।

वीरु ( सं. ) बीसबीसकी गणना,  
होटल, ठाबा, भेस, पैसे देने पर  
जहाँ भोजन इत्यादि सुखसामग्री  
प्राप्त होती हों, सराय, धर्मशाला ।

वीरु भायुस ( सं. ) विश्वस्त  
पुरुष, काबिल ऐतबार व्यक्ति ।

वीरु आवीरु ( वि. ) फेरफार,  
मुकटःख, हेरफेर ।

वीरु ( सं. ) प्रार्थना-नमाज के  
पहिले हाथ मुहं कान इत्यादिके  
घोनेकी क्रिया, वज्र ।

वीरु ( सं. ) अर्क, स्वत्व, सत्त्व,  
सत तत्व, सार, स्थिति, जीवन ।

वीरु ( कि. ) वरसना, दया करना  
झड़ी लगाना, प्रसन्न होना ।

वीरु ( कि. ) जाना ।

वीरु ( सं. ) भेड़िया, मांसभोजी  
खंखार, जंतुविशेष ।

वीरु ( सं. ) भीमसेन, द्वितीय  
पांडव ।

वृक्ष ( सं. ) पेड़, लकड़, पादप,  
वरुण, रुख, तरवर, झाड़ ।

वृषभ ( सं. ) बैल, साँढ, वृषभ,  
बळद, नाटा, बछड़ा ।

वृष ( सं. ) घेरा, मंडळ, मण्डला-  
कार, गोळ, चालचलन, रीति,  
बनाव, छन्द, काव्य रचना विशेष ।

वृषान्त ( सं. ) समाचार, हाळ,  
खबर, सम्वाद, बात, वार्ता,  
वर्णन, वृत्तकृत, इतिहास ।

वृत्ति ( सं. ) अंतःकरणका परिणाम  
विशेष, व्यवहार, वर्णन, चाल  
चलन, स्वभावका आवरण, भ्रंशा,  
रोजगार, आजीविका ।

वृत्त्युप्रास ( सं. ) एक प्रकारका  
अलंकार विशेष, वाक्य अथवा  
चरणमें एक अक्षरकी बहुतवार  
आवृत्ति होना, ( भिगळ )

वृथा ( अ० ) व्यर्थ, बेकाम, निष्फल  
निकम्मा, बेफायदा, निरर्थक ।

वृद्ध ( वि. ) वृद्ध, पुराना, प्राचीन,  
जीर्ण, जईफ, चतुर, निपुण, ( सं. )  
बापदादा, पूज्य पुरुष ।

वृद्धपरंपरा ( अ० ) बापदादोंके बप्पसे  
चलाआताहुआ, पीढीदरपीढी ।

वृद्धा ( सं. ) वृद्धी, दादो, बजुर्ग ( स्त्री )

वृद्धावस्था ( सं. ) बुढ़ापा, जूरा,  
जईकी, चौथी अवस्था । [ रबाण ।

वृद्धाचार ( सं. ) बड़ेबूढ़ोंकी रीति

वृद्धि ( सं. ) बढती, अभ्युदय, तरकी  
विरतार, आबादी, बढोतरी ।

वृद्धिमत ( वि. ) बढाहुआ, उन्नत  
विस्तृत, आबाद ।

वृद्ध ( सं. ) समूह, समुदाय, छुंड,  
टोला, दल, यूथ, जथा ।

वृद्धा ( सं. ) तुळसीका वृक्ष, राबिका ।

वृद्धरक्ष ( वि. ) मनोहर, सरस,  
( - ) मुखिया, नामक, अगुआ ।

वृद्धावन ( सं. ) तुळसीकावन, अ-  
पने नामसे प्रसिद्ध मधुराके समीप  
तीर्थ विशेष, ब्रज, नगर विशेष ।

वृश्चि ( सं. ) बिच्छू, बीछू, कीट  
विशेष ।

वृषय ( सं. ) फोते, अण्डकोष, पेळदे

वृषभ ( सं. ) साँढ, बैल, बळद,  
इमनामसे प्रसिद्ध एक जैनसाधु,  
राशविशेष, वृष ।

वृषलि ( वि. ) बर्भट्ट, शूद्र ।

वेङ्कटी ( सं. ) अडे, रींगने,  
फल विशेष ।

वेङ्कटी ( सं. ) बैंगनका पोथा

वेधपुं ( कि. ) वेचना, विफल करना, सबकी बोझा अधना हिस्से के अनुसार अलग कर देना ।

वेधधी ( सं. ) भाग, हिस्सा, बाँटा ।

वेध ( सं. ) बालिश, नापनेका परिमाण विशेष, विशेष, बिलस्त है हाथ, नौ अंगुल ।

वेध भेष्य सुअती नशी=बिलकुल न दिखाया, कठिनातामें फँस जाना ।

वेधपुं ( वि. ) धातुस्तमर, बहु-तही छोटा, ठिगना ।

वे ( सं. ) बध, उन्न, अवस्था, बह, रो, छेद, छिद्र, सूख, वध ।

वेध ( सं. ) वेध, वेध, वेस । [ बांध

वेधपुं ( सं. ) एक प्रकारकी औ-

वेधधारी ( वि. ) वेधधारी, रक्षांगी ।

वेधती ( सं. ) अहंतासकरके हंसने वाला, तुरंत हँस देने वाला ।

वेध ( सं. ) गति, बाटक जोर, शक्ति, धका, जोर, ताप, त्रास, तेजी प्रवाह, शीघ्रता, जड़, मूर्ख ।

वेधपुं ( कि. ) भुगतना, सहना, भोगना, स्वीकारना । [ फासल ।

वेधपुं ( सं. ) छेदी, अंतर,

वेधपुं ( सं. ) दूर, पृथक, जुदा ।

वेधपुं ( कि. ) अहंतासकरके हंसना, बुरा होना, बुरा होना, अहंतासी होना ।

वेधपुं ( कि. ) दूर रहना ।

वेधपुं ( कि. ) अलग बैठना, अलग होना, मासिक धर्मसे होना ।

वेध ( सं. ) चोटी, शिबोकी चोटी, किबाड़ में लगाया हुआ लकड़ी का खड़ा तख्ता ।

वेध ( सं. ) पानी भरनेकी गाढ़ी ।

वेधपुं ( सं. ) बंधी, बॉसरी, मुरली । [ होना ।

वेधपुं ( कि. ) प्रातःकाल

वेध ( सं. ) तजवाँज, डंग, सौँचा ।

वेध ( सं. ) तनकाह, मजुरी, भाड़ा ।

वेध ( सं. ) व्योत, उत्पन्न करना, जन्म देना, एक एक बच्चा बच्चा उत्पन्न करना, ( बोर )

वेधपुं ( सं. ) युक्ति, तजवाँज, डंग, उपाय, स्त्रीम ।

वेधपुं ( कि. ) व्योतना, नापकर कपड़े को काटना, नापना ( कपड़ा ) कुछमी काम निश्चय करना ।

वेधपुं ( कि. ) बनेजो कर माना ।

वेध ( सं. ) समझ, होशियारी, समझ

वेध ( वि. ) साता, जाननेवाला ।

वेत्ताण ( सं. ) भूतोंकी आतिविशेष ।

वेत्र ( सं. ) वेत, छड़ी, राक्षसचोब ।

वेत्रवती ( सं. ) छड़ीदार चोपदार

वेतवाळा, मकीब, हलकारा ।

वेतवती ( सं. ) बरुका वृक्ष, वेतका

पेड़, वेत्रवृक्ष, छड़ी, आहिारीके

हाथका दण्ड ।

वेत्तासन ( सं. ) वेतका बनाहुवा

आसन, बनकी बनीहुई कुर्सी ।

वेद ( सं. ) ज्ञान, ईश्वरीयज्ञान,

आर्य लोगोका मूल धर्मग्रंथ, हिंदु-

ओका आदिग्रंथ, ऋग्वेद, यजुर्वेद

सामवेद, अथर्ववेद, ( वि. ) समस्त

परिचय, ज्ञान ।

वेदना ( सं. ) पांडा, दुःख, मिहनत

कष्ट, यातना, क्लेश ।

वेदभूति ( वि. ) वेदोंका ज्ञान, ब्राह्मण

ब्रम्हज्ञ ब्राह्मण ।

वेदंत ( सं. ) ब्रह्मका प्रतिपादन

करनेवाला शास्त्रविशेष, वेदका

ज्ञानकाण्ड, उपनिषद् विशेष ।

वेदी ( सं. ) वेदिका, स्थण्डिल, हवन

स्थान विशेष ।

वेदीयो ( वि. ) वेदन, वेदिक ।

वेदीकृत ( वि. ) वेदमें कहाहुआ,

वेदविहित, वेदिक ।

वेद्य ( सं. ) छिद्र, छेद, सुरास

बल, सूचकचक्रका ग्रहण, राहु,

वाचा, वृक्ष, कंठ ।

वेद्यो ( सं. ) कानमें पहिरनेका

जलंकाम विशेष ।

वेद्यपुं ( कि. ) छेदना, भोंकना,

घुमेदना, छेदकरना, सुरासकरना,

मनमें प्रभाव करना ।

वेद्यसाग ( सं. ) खोल विषयक

बातें जाननेके लिये बनायाहुआ

म्यान

वेधी ( वि. ) छेदना, छिद्रित ।

वेन ( सं. ) वाहन, गाड़ी, याग,

पांक्ति, हार, विभव, वैभव ।

वेप, यु ( सं. ) धराहुट, कम्प ।

वेपार ( सं. ) व्यापार, लेनदेन,

धंधा रोजगार, व्यापार, बाळ

बेचकर बदलेमें लेनादेना ।

वेपारी ( सं. ) व्यापार करनेवाला ।

वेपार्थ ( सं. ) पैसा, धन, नकद

द्रव्य । [ लिया हुआ, बिकनेवाला ।

वेपतु-यःतुं ( वि. ) मूल्य देकर

वेपतुं ( कि. ) बेचना, मोलदेना,

बिकानकरना, मूल्यलेकरदेना ।

वेपड ( वि. ) बिकाऊ, बिकनेवाला

बेचनेके लिये रक्खा हुआ ।

वेष्मा ( सं. ) विक्री, विकरी,  
बिकना, विक्रय ।

वेष्माभ्युपत ( सं. ) बेनामा, बेचने-  
की दस्तावेज, वाहन, डुवाई ।

वेष्माक्षिपुं ( वि. ) बिक्रीत, बेचा  
हुआ, इनाममें प्राप्त भूमि । [ होना ।

वेष्मापुं ( क्रि. ) बिकना, विक्रय

वेष्म ( सं. ) धरमधवा, डधर  
उधर. व्यर्थही भटकना ।

वेष्म ( सं. ) निशान, दुख, दरकत ।

वेष्मणुं ( सं. ) आड, रोक, बाँध,  
पानी रोक्नेके लिये बांधी हुई आड ।

वेड ( सं. ) गेवार. बलात् परिश्रम,  
ऐसी मिहनत जिसके बदलेमें कुछ  
भी नहीं भिळे । अर्थ हाँ वष्ट  
सहना मिरपची, परिश्रम ।

वेडपुं ( क्रि. ) शिरआई आगिना  
झेलना, सदनवरना ।

वेडिया-ड ( सं. ) फलपुंन  
हुआ, बेडंग, व्यर्थ ।

वेडियो ( सं. ) बेगारी, बेगार करने  
वाला, बिना टके कौड़ी कानौकर ।

वेड-ड ( सं. ) अंगुलियोंमें गहि-  
ननेकी मोने या चौदाँकी अंगूठी,  
जोट, मुद्रिका विशेष, छद्मा,  
अंगुलीका पोरवा, आरीके दाँते,  
करीत के दाँते ।

वेडपुं ( क्रि. ) उडावेना, गमाना  
व्यर्थही खर्च करवाकना ।

वेडपुं ( क्रि. ) तोड़ना, चुनना,  
डाकना, उँढेलना ( पानी )

वेडी ( सं. ) आम इत्यादि फल  
तोड़नेका बाँस ( जिसके अग्रभाग  
पर जाली या कपड़ा इस लिये  
बांधा होता है कि फल, आदि  
पृष्ठी पर गिरकर खराब न हों  
और उस जालीमेंहीं गिरते रहें )

वेडंग ( सं. ) घोडा, अश्व, ह्व  
तुरग.

वेडुर ( वि. ) सुन्दर, शोभित ।

वेडे ( सं. ) तोड़नेवाला ( आम  
इत्यादि फलोंका )

वेडनी ( सं. ) माँका रोटी, कचोरी,  
चूचई, पूरनपूरा ।

वेडवपुं ( क्रि. ) सामना करना  
मुनाबिल्लाकरना, मिलना ।

वेडे ( सं. ) वेगुनीका तीसरा खंड  
अंगुलीका पोर, एकदाँका मोटा  
गोल टुकड़ा, ( मसोकी ) मनेरी ।

वेष् ( सं. ) प्रवाह, बहाव, वेग-  
युक्त, वचन, बयन, बांसरी, जंमा  
मुरली, वेणु, पानीकी छोटी नाली  
धोरा, छोटी नहर कपासका बृक्ष,  
दो. पूर्ण, सम, जो दोसे भाग देने  
पर पूरा हो । युग्म, पूरा, जोड़ी ।



वेध ( सं. ) वायविशेष, तम्बूरा, तानपूरा, वीन । [ दुःख ।

वेधुयुं ( सं. ) मूलेसे होनेवाला वेर ( सं. ) वेर, द्वेष, शत्रुता, अबाध ।

वेरधु ( स. ) शत्रु, दुश्मन, वैरी ।  
वेरधुवेरधु ( वि. ) इधर उधर, पड़ाहुवा, बिखराहुवा ।

वेरधिये ( सं. ) छेदनेवाला, छिद्र करनेवाला । [ बैर ।

वेरभाष ( स. ) शत्रुता, दुश्मनी,  
वेरधुं ( क्रि. ) इधरउधर पटकना बिखेरना, फैलाना, बिछाना, उड़ाना, काममेंलाना ।

वेरधिलुं ( क्रि. ) बिखरना, खलबिलाना, हँसना ।

वेरध ( स. ) विषयत्याग, विषय उदासीनता, निस्पृहता, वैराग्य ।

वेरधधु ( सं. ) बाधी, साध्वी, वैरागी, ( स्त्री ) साधुन ।

वेरधी ( सं. ) साधु, सन्त, त्यागी, जोगी, निर्लोभी ।

वेरडी ( सं. ) एकप्रकारका राग ।

वेरधु ( वि. ) जंगल, वन, निर्जन, अरण्य, वीरान, ऊजड़ । [ हुआ ।

वेरधुं ( वि. ) बिखराहुवा, फैला

वेरी ( सं. ) शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी ।

वेर ( अ० ) साधमें, संगमें ।

वेर ( सं. ) सरकारी कर विशेष, महसूल, जकात, अंतर, भेद, फर्क ।

वेध ( सं. ) बेलि, बेल, लता, कपड़ेपर बेलके ठंगकी छापा बन्नरी बाहन, सवारी, रथ, बंश, परिवार कुत्तोंके लिये एक गांवसे दूसरे गांव अन्यान्य लट्ठ रोटी इ० भेजते हैं एकलट्ठकी दूसरेके यहां दूसरेकी तीसरेके यहां और तीसरेकी पहिलेके यहां इसतरहका डेनेलेनेका सम्बन्ध ।

वेधधु ( सं. ) रोटी पूरी इत्यादि बेलनेका बेलन, बिलना, रोटी बेलनेके लिये लकड़ीका साधन ।

वेधधुधुं ( वि. ) बेलन सरीखा, ( सं. ) बेलन, बिलना, रोलर ।

वेधधुंटी ( सं. ) बेलकूटा, फूलपत्ती ।

वेधा ( सं. ) आपत्ति, विपत्ति, आफत, दुःख, धक्का, घड़ी, समय, बाणी, बोली ।

वेधातेऽपरसाध ( सं. ) उत्तर दिशाकी पवनके साथ पानीकी शक्ति ( जिससे बेली सूखजाती है )

वेधधुं ( सं. ) आधा रुपया आठआने ।

वेदी (सं.) छोटी वेल, कता, वेली ।

वेदी (सं.) वनस्पतिकी एक जाति यह जमायेपर पर फैलता है और आश्रयसे बढ़ता है ।

वेय (सं.) एक प्रकारकी वनस्पति ।

वेयथु (सं.) व्यायन, लड़केकी या लड़कीकी सास ।

वेयशमथु (सं.) नका, लाम, सस्ता, मिलना, ठगई ।

वेयशपुं (कि.) ठगेजाना, छले जाना, भुलाना, पोटेजाना ।

वेयशपुं (कि.) बहकाना ।

वेयश्वी (सं.) इधरउधर भटकना, चरमचका ।

वेयश्वी (वि.) जंगली, बदतमीज मूर्ख, सिरी, जिसे ओढने पहिरने बोलने चालनेका ढंग न हो ।

वेयश्वी (सं.) विवाह, लग्न, शादी । [ वाक् ।

वेदीश्वी (सं.) विवाह करने

वेयश्वी (सं.) आकार, परिच्छेद, सजावट, सांग, रूप, लिबास, परिधान, अलंकार, आभरण, सुहागिन स्त्रीका कपड़े लते पहिरनेका ढंग, नाटकका पात्र ।

वेयश्वी (कि.) सांगलेना रूप बना, वेय बढ़लना, वचन मंग करना ।

वेयश्वी (कि.) जैसा भेष होना चाहिये वैसा ठीक ठीक बनाकर करके बतावेना ।

वेयश्वी (कि.) बनाबटी रूप उत्तारदेना, शृंगार त्यागना ।

वेयश्वी (सं.) पटुरिया, गणिका, रंडी, बारनारी, बारांगना, छिनाळ ।

वेयश्वी (सं.) रंडीका भटुवा, उस्तादजी (रंडीके)

वेयश्वी (सं.) वेयश्वी, रंडियोंके रहनेका घर, वेयश्वीके रहनेका मुहका, चकला (रंडियोंका)

वेयश्वी (वि.) सांग धारण करने वाला, नकली, सकलबदलनेवाला ढोंगी, ठग, छुषा ।

वेयश्वी (सं.) लपेटन, बेठन, डाकन ।

वेयश्वी (सं.) चनेकी दाळका चूर्ण ।

वेयश्वी (सं.) नब, नाकमें पहिरने का स्रियोंका आभूषण बिकेव । घोडा, खचर, सिचर ।

वेयश्वी (सं.) नाककाबाली, नथ ।

वेयश्वी (सं.) वाग्दान, सगाई, विवाह, कन्यादानके लिये वचन ।

वेयश्वी (कि.) वेचना, बांटना, देना ।

वेयश्वी (सं.) प्रातःकाल, सवेरा, सुबह, प्रभात, भिनुसारा, भोर ।

वेदेश ( सं. ) अंतर, शुद्धाई,  
कासला ।

वेदेशु\* ( अ. ) बन्धीसे शीघ्रतासे ।

वेदेशशु\* ( कि. ) नफामिलना,  
कमाना, लाभप्राप्त करना ।

वेदेशाश्चै। ( सं. ) साहूकार,  
व्यापारी । [ मामूली.

वेदेशारि\* ( वि. ) साधारण, मध्यम

वेदेशु\* ( कि. ) सहनकरना, नि-  
भाना, भारउठाना, बोझासेलना,  
बहना, प्रवाह बहना, हव बाहिर  
होना, फटना । [प्रवाह, बहाव ।

वेदेशे। ( सं. ) छोटी नदी, झरना,

वेण ( सं. ) आग्रह, खेच, हठ,

वेण। ( सं. ) समय, वक्त, चर्चा,  
टक्कना, सन्धि ।

वेणाम्ने भणे ते। डेणाम्नेसमयपर  
मिले वही स्वर्ण ।

वेणाम्नेर ( अ. ) वक्तपर, समयपर,  
ऐन मौकेपर, ठीकवक्तपर ।

वेणियु\* ( सं. ) सोनेके पतळे तारका  
छन्ना-अंगूठी ।

वेणु\* ( सं. ) रेती, कण, धूलिकण ।

वे ( सं. ) वायु, पवन, हवा, वादी  
खींच । चूहे अथवा घूस बकलनेका  
फन्ना ( अ. ) निक्षेप पुच्छता इह ।

वेड ( वि. ) पालन, मूर्ख, दुरा,  
दुष्ट, निर्बल, डेहपसलीका ।

वेडु\* ( सं. ) लोक विशेष, विष्णुका

नाम । वेडु\*वासा ( सं. ) पूर्ववत्,

वेडु\*वासी ( वि. ) मृत, मराहुर्ला,  
स्वर्गाय, स्वर्गस्थ ।

वेडु\* ( सं. ) अमीरकी एकपदवी ।

वेडरी ( सं. ) सन्दोषारण, वाणी  
की चौकी स्थिति, स्पष्ट उच्चारण ।

वेडि\* ( सं. ) विचित्रता, विलक्षणता ।

वेडव\* ( सं. ) इन्द्रकी ज्योति ।

वेडव\*ति\* ( सं. ) झंझेवाला ।

वेडव\*ती ( सं. ) काली तुलसीका  
वृक्ष, माता, भेणी ।

वेडव\*तीभाण ( सं. ) नीलम, मोती,  
माणिक्य तुलराज और हीरेवांमाज ।

वेडु\* ( सं. ) एकप्रकारका हीरा,  
लाल, मूंगा, वैदूर्य ।

वेडु\* ( सं. ) बांसकावन । [ वाला ।

वेडु\*नि\* ( सं. ) मजदूर तनख्वाह

वेडु\*थी ( सं. ) बमपुरी के मार्गमें  
एकनदी इसनामकी है ऐसा लोग  
कहते हैं और पुराणोंमें भी  
लिखा है ।

वेड ( सं. ) वैद्य, हकीम, चिकित्सक  
रोगको पहिचानकर औषधि देने  
वाला, दुःखमिटानेवाला डाक्टर ।

वै० ( सं. ) वैद्यक, हिमालय, बालगङ्गा, आयुर्वेदशास्त्र ।  
 वै० ( सं. ) वीर्यधोपचार इत्यादि ।  
 वै० ( सं. ) वैद्य ( स्त्री ), इको-  
 मन, वैद्यकी की ।  
 वै० ( वि. ) वेदसम्बन्धी, वेदज्ञ ।  
 वै० ( सं. ) वैद्वि, २० वां  
 योग ( उद्योगिण शास्त्र )  
 वै० ( सं. ) रंदाणा, पतिविशेष ।  
 वै० ( सं. ) पालकी, डोली,  
 मान विशेष (इह मनुष्य उद्योगे)  
 वै० ( सं. ) ऐश्वर्य, सम्पत्ति,  
 भित्ति, अनिष्टाय, प्रताप, कीर्ति ।  
 वै० ( सं. ) ऐश्वर्ययुक्त, प्रतापी,  
 कीर्तिमान्, अर्थात् ।  
 वै० ( सं. ) ईश्वर-  
 का मृत्युसमय आना । [अनीरी ।  
 वै० ( सं. ) साहिबी, राजा,  
 वै० ( वि. ) व्याकरण संबंधी  
 ( सं. ) व्याकरण शास्त्रज्ञा ज्ञाता ।  
 वै० ( सं. ) सेवा, दंडक,  
 बन्दगी । [ वेश्यावृद्धि ।  
 वै० ( सं. ) लडाई, लड़ाई,  
 वै० ( वि. ) फीका, नीरस, रुखा  
 रस, वेदवाद, ब्रह्मवाद ।  
 वै० ( सं. ) विषयज्ञान,  
 विषयवृत्तान्त, निस्पृहा ।

वै० ( वि. ) विराट संबंधी, बड़ा  
 ( ब्रह्मण्ड )  
 वै० ( सं. ) श्रीकापन, कान्ति,  
 बवसूरी, विवर्णता ।  
 वै० ( सं. ) मासाविशेष, वैश्वके  
 बादका महिना ।  
 वै० ( सं. ) व्यासदेवका शिष्य-  
 एक मुनि, द्वापरयुगके अंतमें  
 कृष्णद्वैपायन नामसे प्रसिद्ध ३८ वें  
 व्यासके चार शिष्योंमेंसे दूसरे,  
 इन्होंने जन्मलेखको "महाभारत"  
 प्रथम सुनायाथा ।  
 वै० ( सं. ) गदहा, गधा,  
 गदम, खर, ( वि. ) मूर्ख, दूठ ।  
 वै० ( सं. ) वर्ण विशेष, तीसरा  
 वर्ण, व्यापार धंधा करनेवाली एक  
 एक जाति विशेष ।  
 वै० ( सं. ) निष्ठाके पंच महाय-  
 दोंमेंसे एक यज्ञ विशेष, भोजनके  
 पूर्व अग्निमें लक्ष्मी कुंडलाहुतिवा ।  
 वै० ( सं. ) वैश्वदेव यज्ञ  
 करनेका कुंड विशेष ।  
 वै० ( सं. ) अग्नि, आग, पायक ।  
 वै० ( वि. ) विष्णुसंबन्धी, वैष्णव  
 धर्मका अनुयायी, विष्णुसक्त संप्र-  
 दाय विशेष ।  
 वै० ( सं. ) लक्ष्मी, रत्न, कमला ।

वे। ( सं. ) पानीका बहाव, प्रवाह,

( सर्व. ) बह, अन्यपुरुष ।

वे।४१ ( सं. ) छोटी भैंस ।

वे।४२ ( सं. ) पानीका मराहुआ छो-  
टासा गड्ढा ।

वे।४३ ( कि. ) छोड़ना, त्या-  
गना, तजना, ( जैनियों )

वे।४४ ( वि. ) बिनाका, बगैरका ।

वे।४५ ( सं. ) खरीद, बेच, लेन  
देन, क्रयविक्रय, जौलिय ।

वे।४६ ( सं. ) खरीदनेवाला,  
प्राहू, पारोददार, मोल्लेनेवाला

वे।४७ ( कि. ) मर्गादना, मूल्य  
देकर लेना, बिकताहुवालेना, सं-

ग्रह करना, एकत्र करना, अपने  
सिगरेना, घरघरसे भिक्षा मांगना

( श्रावक धर्म )

वे।४८ ( सं. ) मतभेदमें मुसल-

म नोंसे अन्य किन्तु मुसलमानोंके  
धर्मको माननेवाली एक जानि

विशेष ।

वे।४९ ( सं. ) धरमयुक्ते, हथर  
उधर व्यर्थही मटकना ।

वे।५० ( सं. ) वाहवाहधरउधर पारे  
मारे फिरना, धरमधकेलाना ।

वे।५१ ( वि. ) प्रकटित, जाहिर,  
साफ देखने योग्य, खुला, उघाड़ा

( सं. ) विष्णु, त्रिदेवमेंका दूसरा  
देव । [ एकवस्तु, जन, मनुष्य ।

वे।५२ ( सं. ) मनुष्य, एकाकी,

वे।५३ ( वि. ) व्याकुल, घबराया  
हुआ, संभ्रम, उद्विग्न, विकल ।

वे।५४ ( सं. ) वाक्यके अर्थमें छुपा-  
हुआ दूसराभाव, ध्वनि, वक्तोक्ति

ताना, मजाक, कटाक्ष, ( वि. )  
अंगहीन, विकलांग ।

वे।५५ ( सं. ) अर्द्ध मात्रिक अक्षर,  
स्वरहीन अक्षर, स्वरहीन वर्ण

‘ क ’ से ‘ ह ’ तक, चिन्ह, नि-  
शान, तरकारी, शाक, अवयव,

लियोन्ट्रिय, गुप्तअंग ।

वे।५६ ( सं. ) नपुंसक, हिजड़ा,  
झीब, परुषार्थ हीन ।

वे।५७ ( सं. ) बीजना, पंखा,  
बना, वेजिना, हवा करनेका साधन ।

वे।५८ ( वि. ) अभाव, सिवाय,  
बिना, अंगर अलग । [ क्लेश ।

वे।५९ ( सं. ) दुःख, पीड़ा, कष्ट,

वे।६० ( सं. ) भ्रष्टाचार, दुरा-  
चार, न्यायमें हेतुका दोष विशेष ।

परस्त्री या परपुरुष संगम, नि-  
न्दित कार्य ।

वे।६१ ( वि. ) छिनाक,  
बेस्ता, परपुरुष मामिली स्त्री ।

अभिधारी ( सं. ) कुमारगामी  
पुरुष, विषयासक्त, लंपट, कुमारी ।

अभिधारी आप ( सं. ) रसको  
सहाय्य करनेवाला भाव, ( अलं-  
कार शास्त्रमें ३३ प्रकारके भाव  
माने हैं आळम्ब, असूया, हर्ष,  
अमर्ष, विषाद, गर्भ, स्मृति, धृति,  
मति, सुप्ति, रत्नानि, निर्वेद, श्रम,  
शोका, निद्रा, व्याधि, विबोध,  
वितर्क, क्रोडा, आवेग, मरण,  
मोह, मद, उन्माद, अविदित्य,  
अपस्मार, उग्रता, औत्सुक्य,  
आस, दैन्य, चिन्ता, चळता और  
जडता )

अभ ( सं. ) धनत्याग, खर्च, गमन,  
विनाश, क्षय, उपयोग ।

अर्थ ( अ० ) वृथा, निरर्थक,  
निवृत्ता, बिना कामका, निष्फल,  
फिजूल ।

अतीथा ( सं. ) इस नामका योग  
विशेष ( ज्योतिष शास्त्र )

अवशा ( सं. ) व्यवहार, लेन-  
देन, उपयोग, राजगार, आज्ञाविका ।

अवस्था ( सं. ) उपाय, प्रक्रिया,  
रीति, धर्मनिर्णय, प्रबन्ध, वन्दो-  
वस्त । [ मेनेजर ।

अवस्थापक ( सं. ) प्रबन्धकर्ता,

अवस्थित ( वि. ) अवल, अटल,  
निश्चय, व्यवस्थापित ।

अवहार ( सं. ) देखो वेहेवार ।

अवहारिक ( वि. ) व्यवहारविष-  
यक, सांसारिक, व्यवहारके योग्य ।

अवसत् ( सं. ) आसक्ति, अभ्यास,  
छोटी आदत, लत, टेब मुहाविरा ।

अवसनी ( वि. ) व्यसनवाला ( दुरा-  
चार ), अभ्यासी, आसी ।

अस्त ( वि. ) उलटा, विपरीत,  
बांटा हुआ, व्याकुल, घबराया हुआ,  
अस्त होना, छुपा हुआ ।

अवस्था ( सं. ) वेदका वह अंग  
विशेष जिसके द्वारा अर्थवर्धनसे  
शब्दोंको सिद्धि की जाती है ।  
पाणिनि मुनिप्रणीत अष्टाध्यायी  
प्रमुनि शास्त्र, भाषाके नियम बांधने  
और उसके अनुसार बोलने तथा  
लिखनेकी रीति ।

अवस्था ( सं. ) व्याकरणका शास्त्र ।

अवस्था ( वि. ) घबराया हुआ,  
विकर्तव्यके ज्ञानमें अज्ञान, उद्विग्न,  
स्वप्न

अवस्था ( सं. ) वर्णन, टीका, वि-  
वृति, अधिक बयान, विवरण,  
साविस्तर वर्णन ।

आभ्यास ( सं. ) वर्णन, भाषण,  
उपदेश, वक्तृता, लेखन । [ चीता ।

आभ ( सं. ) बाघ, शेर, नाहर,

आभ ( सं. ) बहाना, मिथ, छळ,  
कपट, कैतव, सूद, लाभ ।

आभ/भाडि-भेद-भेद ( सं. )  
व्याजपर रुपया ऋणदेनेवाला,  
सुदखोर, सुदखेनेवाला ।

आभ/भाड ( सं. ) रुपये पड़े रह-  
नेसे व्याज न देनेका नुकसान ।

आभ/वटंतीरे ( सं. ) व्याजबट्टा,  
शराफका धन्धा । [ करनेवाला ।

आभ/वरी ( सं. ) व्याजसेही गुजर

आभ/यु ( सं. ) अधिकव्याज,  
अन्याय व्याज, व्याज और बट्टा ।

आभ/वडी ( सं. ) साहुकारकी तरह  
व्याज निकालनेकी पोथी ।

आभ/वु ( वि. ) व्याजपर क्रिये  
हुए, सुदपरविये हुए ।

आभ/बिडी ( सं. ) व्याज रुपये  
लेनेकी सल्लोका लिखितपत्र ।

आभ ( सं. ) पारधी, बहेलिया  
शिकारी, अहेरिया ।

आभ ( सं. ) रोग, मरक, दहं,  
बामारी, दुःख कैस,

आभ/व ( वि. ) विप्र, सर्वत्र, विस्तृ-  
त, व्याप्त, सर्वत्रमें रहनेवाला ।

आभ/वु ( वि. ) फैलना, सर्वत्र  
बारजाना, व्यापना, व्याप्तहोना ।

आभ/व ( सं. ) रोकगार, काम-  
धन्धा, व्यवसाय, व्यवहार, लेन-  
देन, धर्म, मेहनत, काम ।

आभ/व ( वि. ) सम्पूर्ण, छत्त, स्वात,  
भराहुआ, फैलाहुआ । पूर्ण ।

आभ/व ( सं. ) परिश्रम, कसरत,  
शारीरिक काम, एगसरसाहज ।

आभ ( सं. ) सौंप, सर्व, नाग,  
भुजंग, व्याघ्र, शेर, चीता, सिंह ।

आभ/व ( वि. ) बियाना, प्रसव  
करना, जनना, संतान पैदा करना ।

आभ ( सं. ) विस्तार, गोठके  
मध्यकी रेखा, पागदर पुत्र, वेद-  
व्यास, पुराण पाठक, ब्राह्मण ।

आभ/व ( सं. ) शास्त्रीय ज्ञानमें  
अभिनिवेश, बोध, शक्तिज्ञान,  
संस्कार, आपन, शब्दविन्यास ।

आभ/व ( वि. ) व्युत्पत्तिवृत्त,  
पंडित, विज्ञ, जानकार, समझदार ।

आभ/व ( सं. ) सेनाकी रचना विशेष ।

आभ ( सं. ) नभ, आकाश,  
आस्मान । [ नभचर ।

आभ/व ( सं. ) पक्षी, पक्षेरू,

आभ ( सं. ) मधुराके चारों ओरका  
बेल, केवल स्वादोंके रहनेका नगर ।

मन्त्र ( कि. ) जाना, समन करना ।  
मत्त ( सं. ) पुण्यातिथिका उपवास,  
नियम, अनुष्ठान, निराहारका प्रण ।  
मत्तणी ( वि. ) मत्तवाला, उपवास-  
वाला ।

मत्तु ( सं. ) घाव, फोड़ा, क्षत,  
जखम । [ लज्जा ।

मीक्षा ( सं. ) लाज, शर्म, हया ।

मीहि ( सं. ) चौबल, धान्यमात्र ।

म्रेह ( स. ) विरह, भियोग, विछु-  
ड़नेका शोक ।

महा२ ( सं. ) मदद, महायता ।

महेल ( सं. ) महेल नामसे प्रसिद्ध  
एक बड़ी भारी समुद्री मछली ।  
गाड़ी, बाहन ।

२।

मन्त्रगुजराती वर्णमालाका इकता-  
लीसवाँ अक्षर, तीसवाँ व्यंजनवर्ण,  
इसका उच्चारण स्थान तालु होनेके  
कारण इसे तालव्य कहते हैं ।

म ( सं. ) कल्याण, मंगल, शुभ ।

म ( सं. ) संशय, सन्देह, बहम,  
भ्रांति, विकल्प, असिद्ध विचार ।

म ( के. ) भ्रांतिहोना, संश-  
यापन होजाना । [ बहमहोना ।

म ( के. ) भ्रांतिहोना,

म ( सं. ) मयकी छाप, प्रभाव,  
किसीविषयके स्मरणार्थ विजयी  
पुरुषके जन्म अथवा विजय काल  
से प्रत्येक वर्षकी गणना । एक  
जंगली लड़ाकू जाति विशेष ।

म ( सं. ) रथ, गाड़ी, छकड़ा,  
बैल गाड़ी, मारकस ।

म ( सं. ) दवानेका यंत्र ।

म ( सं. ) सुगुन, शुभ सूचक

चिन्ह, मंगलमान, पक्षी विशेष,

म ( सं. ) एक प्रकारका पक्षी,  
बाज़, चंचलबुद्धिका मनुष्य,  
लिकरा । [ पक्षी, ( वि. ) चंचल ।

म ( सं. ) बाज़ नामक

म ( कि. ) होना, सकना,  
शक्तिमान होना, यह शब्दशक्तिया-  
पदके साथ सहायक रूपमें लगाया  
जाता है ।

म ( सं. ) देखो म ( सं. )

म ( सं. ) मोर ।

म ( सं. ) गिद्ध, गीध, शकुनि  
नामक पक्षीविशेष ।

म ( अ० ) शक शाके, शाकि-  
बाहनका सम्बन्ध । जाने न जाने ।

म ( सं. ) मिष्टीका पात्राविशेष,  
मृत्तिकाका बड़ा दीपक, मल्लसा ।



शत्रु ( सं. ) दुश्मन, बैरी, बरि ।

शत्रुघ्न ( सं. ) वैर, शत्रुता, विपुता ।

शनि ( सं. ) सातवाँ ग्रह, सूर्य पुत्र, रत्न विशेष, नीलम ( वि. ) मन्द, धामा, घीरा ।

शनिवार ( सं. ) सातवाँ दिन, बार विशेष, दिनका नाम विशेष ।

शनि, शत्रु, शत्रुघ्न, शनि कृत, सत्ता, प्रभाव, असर, कस, सत्त्व, सार, जीव, दम, देवी, माता, ओगिनी, योगिनी, आधार, आश्रय, सहारा, टेका, मजबूती, योग्यता, अल्लाविशेष, भाला, बछी, त्रिशूल, इन्द्राणीविष्णवी आदि आठ शक्तियाँ; वशिष्ठ ऋषि का बड़ा लड़का ।

शक्तिमान ( वि. ) पुरुषार्थी, पराक्रमी, मनर्थ, जोरवार, धनवान ।

शक्त ( वि. ) संभव, होस, कनेलापक, सम्पादन होने योग्य ।

शक्त्यर्थ-कार्य ( वि. ) कियापद का एक रूपभेद जिसमें होने का अर्थ हो, ( व्याकरण शास्त्रे )

शक्त ( सं. ) इन्द्र, सुरपति ।

शक्त-पुत्र ( सं. ) व्यक्ति, एक मनुष्य, अमुक आदमी ।

शक्तिकी ऐसी रचना जो प्रिय मालूम हो ।

शक्त ( सं. ) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय बर्तीकार, इन्द्रिय दमन ।

शक्त-ता ( सं. ) शक्ति शान्ति, धैर्य, क्षमा । ( वि. )

शक्त ( सं. ) शान्ति

कोच, मोचन, राय विशेष ।

शक्त ( कि. ) सन्देहमें पड़ना, संकोच करना, शरमाना ।

शक्त ( सं. ) शक, सन्देह, बहस, अविज्ञा, अविश्वास, भ्रम, संशय, त्रास, डर, भय ।

शक्त ( कि. ) मंशय होना, मलया मूत्रकी हाजत होना

शक्त ( कि. ) सन्देहमें होना, शक्ति होना ।

शक्त ( सं. ) नोकदारवस्तु, दीपक की लौ के आकारकी वस्तु, छाया देवकर समय जाननेका बारह अंगुलका लम्बा हाथी दांत, पीतल, लकड़ी आदिका मुकली यंत्र विशेष । सूर्य यंत्र, ज्योतिष मापनेका साधन, सूर्यकी नोक, शिखर, चोटी, अग्रभाग, दस महापथ, संख्याविशेष ।

मन्त्रपुं ( कि. ) जाना, समन करना ।

मत ( सं. ) पुण्यतिथिका उपवास,  
नियम, अनुष्ठान, निराहारका प्रण ।

मत्तली ( वि. ) प्रतवाळा, उपवास-

हो ।

मंभो ( सं. ) घान, फोड़ा, क्षत,  
हाना, [ लज्जा ।

रहना । मन्. शर्म, हया ।

मंभरमापुं ( कि. ) दिवाला

मंभलेवे ( वि. ) मूर्ख, बुद्धिशून्य  
निरक्षर, जंगली ।

मंभोवाथ ( वि. ) कुछभी नहीं ।

मंभनाशपथ ( वि. ) जिसके पास  
कुछभी नहीं हो ।

मंभुंवे ( कि. ) दिवाला नि-  
कालना, ध्वराकर कामको अधूरा  
छोड़ना । [ शठ, बेवंगा ।

मंभभारथी ( वि. ) मूर्ख, बेवकूफ

मंभश ( सं. ) औषध विशेष ।

मंभथी ( सं. ) एक प्रकारकी  
झी, कामशास्त्र वर्णित चार  
प्रकारकी स्त्रियोंमेंसे एक प्रकारकी  
झी, ठंवी लम्बेवर्णवाली काम  
पीडिता और चिड़चिड़े स्वभावकी  
झी, लड़ाका झी, झगड़ाकू, कर  
कसा झी, निर्लज्जा झी ।

मंभ ( सं. ) जयकी छाप, प्रभाव,  
किसीविजयके स्मरणार्थ विजयी  
पुरुषके जन्म अवस्था विजय काळ  
से प्रत्येक वर्षकी गणना । एक  
जंगली लड़ाकू जाति विशेष ।

मंभट ( सं. ) रथ, गाड़ी, छकड़ा,  
बैल गाड़ी, मारकस ।

मंभे-ले ( सं. ) दवानेका यंत्र ।

न पड़े इस रीतिसे गुप्त भेद  
प्रपंच करनेवाला ( नायक ) ।

मंभ ( सं. ) सन, पाट, तृण,  
विशेष, जिसके छाळकी रस्ती  
बोरे आदि बनते हैं ।

मंभम ( सं. ) सख्त गांठ, मज-  
बूत गांठ ।

मंभुगे ( सं. ) देहो सधुगे ।

मंभुभिंटी ( सं. ) एक प्रकारका  
वृक्ष, ( इसकी छालके कपड़े भी  
बनते हैं ) ।

मंभुपुं ( कि. ) सुनाना, समझाना ।

मंभुपुं ( सं. ) सनका ( वस्त्रादि ) ।

मंभुथी ( सं. ) साठी ।

मत ( वि. ) सौ, १००, एकसौ ।

मत ( सं. ) जिसमें कोई हो ।

मत्तली ( सं. ) जलही, शीघ्रता,  
त्वर ।

मत्तवरी ( सं. ) नौकावि विशेष ।

शत्रु ( सं. ) दुश्मन, वैरी, अरि ।  
 शत्रुघ्न ( सं. ) वैर, शत्रुघ्न, विघुता ।  
 शनि ( सं. ) सातवां ग्रह, सूर्य  
 पुत्र, रत्न विशेष, नीलम ( वि. )  
 मन्द, धामा, धीरा ।  
 शनिवार ( सं. ) सातवां दिन,  
 वार विशेष, विनका नाम विशेष ।  
 शनिश्चर ( सं. ) ग्रह विशेष, शनि  
 द्वेष, जहरीला आदमी रत्नविशेष ।  
 शब्ध ( सं. ) कसम, सौमन्ध,  
 लौह, प्रतिज्ञा, प्रण वचन ।  
 शहरी ( सं. ) मछली, मच्छो, मोन ।  
 शभ ( सं. ) सुर्वा, मृतक, प्रेत,  
 लाश, मृत शरीर ।  
 शब्द ( सं. ) ध्वनि, निगाह, बोली,  
 आवाज, बोध, स्वर, वचन,  
 वाणी, अक्षरसमूह ।  
 शब्द डोश ( सं. ) अर्थ सहित  
 शब्दोंका भंडार, डिक्शनरी ।  
 शब्दयोगी+शब्द ( सं. ) अव्यय  
 रूप शब्द, दूसरे शब्दोंके सम्बन्धमें  
 अर्थका निश्चय करनेवाला ।  
 शब्दस्थाना ( सं. ) शब्द योजना,  
 लेखन पद्धति ।  
 शब्दविचार ( सं. ) वर्णमाला  
 ध्वनि विषयक विचार, कुछ  
 लेखन विद्या ।  
 ५७

शब्दोक्ति ( सं. ) शब्दोंकी ऐसी  
 रचना जो प्रिय वाक्य हो ।  
 शब्द ( सं. ) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय  
 बर्णाकार, इन्द्रिय दमन ।  
 शब्दा-तात् ( सं. ) स्थिरता,  
 शान्ति, धैर्य, क्षमा ।  
 शब्द ( सं. ) शान्ति, सांत्वन  
 कोष, मोचन ।  
 शब्दलाल ( सं. ) मरने वालेको  
 मरते समय जो लड़ूँ दिने जाते  
 हैं । पिछ ।  
 शब्द ( कि. ) मरना, शान्तहोना,  
 स्थिर होना, चुपहोना, मन्दहोना,  
 सुप्तता, अदृक्होना ।  
 शब्दभाक् ( वि. ) स्थिर, शांत ।  
 शब्दहीन ( सं. ) एक प्रकारका ह-  
 थियार जो सिंहके नख सरीखा  
 होता है । तलवार, खड्ग, अस्त्र,  
 कृपाण, गंजाफा खेलका रंग  
 विशेष ।  
 शब्दहीन शब्द ( सं. ) शिस्त  
 विशेष, होशियार, धीर, बहादुर,  
 खड्ग धारी ।  
 शभी ( सं. ) वृक्ष विशेष ।  
 शब्दयोगी ( सं. ) मिश्रित, सित्यदा ।  
 शब्द ( सं. ) सीढ़, निगा, पंख,  
 खाट ।

अ२५१ (सं.) सैज, बिछौना, चारपाई  
अ२ (सं.) बाण, तीर, सायक,  
विशेष ।

अ२थु (सं.) रक्षा, उद्धार, घर,  
मकान, आश्रय, बचाव, छत्र ।

अ२थुभूत (वि.) आश्रित, शरणार्थी ।

अ२थुं (सं.) मदद, आश्रय ।

अ२त (सं.) शर्त, ठहराव, बचन ।

अ२र (सं.) क्रतु विशेष, कृआर  
और कार्तिकका महीना ।

अ२रु (सं.) ठंड, सर्दी, रोग  
विशेष जिससे शरीर ठंडा हो जावे ।

अ२रि (सं.) तरकस, तृण, भाषा ।

अ२रुत (सं.) मीठा और सुग-  
न्धितपानी, बनाया हुआ पेय  
पदार्थ विशेष । [ एक पशु विशेष ।

अ२रु (सं.) सिंहसेभी बळवान

अ२रु (सं.) संकोच, लज, हजा,  
आबरू टेक । सुख, खुशी, आनन्द ।

अ२रुण (वि.) नम्र, लज्जाशील,  
शर्मवाळा, अदबरखनेवाला ।

अ२रुवपुं (कि.) लजित करना,  
झेंपना ।

अ२रिङ्गी (सं.) लज, शर्म, गैरत ।

अ२रु (सं.) साँडेका टुकड़ा,  
गछेकी पेरी ।

अ२रुं (वि.) बोबासा फटकारा  
अ२रुं (कि.) स्वादिष्ट, अच्छी  
धवणसकिवाळा ।

अ२रिधि (सं.) भाद दिवस,  
पितृपक्ष, कनागत ।

अ२रिध (सं.) आक्रोश, घुरा बान्ध  
कहना, बद हुआ । [ मद्य, बरुनि ।

अ२रिध (सं.) मद, मदिरा, दाक,

अ२रिधुं (सं.) मिष्टिका पात्र विशेष ।

अ२रिध (सं.) धनुष, कोदण्ड,  
चाप ।

अ२रि (सं.) मिठास, स्वाद, लज्जत ।

अ२रि (वि.) साधी, भागी, हि-  
स्सेदार । [ अंग, गात्र, डोंठ, लिस्व ।

अ२रि (सं.) देह, बदन, काब,

अ२रि अ२रुपुं (कि.) ज्वर जाता  
बुखार के चिन्ह होना ।

अ२रिवाणपुं (कि.) शरीरका  
संगठन करना ।

अ२रिभारुपुं-अ२रुपुं-अ२रिभुं-अ२रुपुं  
(कि.) अकड़ होजाना ।

अ२रिभुं (सं.) आरोग्यता,  
स्वास्थ्य, तन्मुरस्ती । [ चाद ।

अ२ (वि.) आरंभ, पारंभ, आरी

अ२रु (सं.) तेजकानका, जल्दी  
सुननेवाला ।

अक्षरे ( सं. ) ब्रह्मके समय अग्निमें  
वृत्ताहुति देनेका पात्र विशेष ध्रुव,  
याज्ञियचमस पात्र ।

अक्षरे ( सं. ) मुसलमानी कायदा ।

अक्षरे ( सं. ) मुसलमानी कानूनोंकी  
व्याख्या ।

अक्षरे ( सं. ) शकर, सांड, चीनी ।

अक्षरे ( सं. ) सुख, आनंद, खुशी,  
शान्ति ।

अक्षरे ( सं. ) रात, रात्री, निशा ।

अक्षरे ( वि. ) ताज, बचल । [ साधु ।

अक्षरे ( सं. ) जैनियोंके ६३

अक्षरे ( सं. ) वाण, कांटा, कण्टक ।

अक्षरे ( सं. ) शिळा, पत्थरकी पट्टी ।

अक्षरे ( सं. ) ठठरी, सँघाती,

मुर्दा लेजानेकी टट्टी ।

अक्षरे ( वि. ) विचित्र, बहुरंगी ।

अक्षरे ( सं. ) मरघट, स्मशान,  
मुर्दा जलाने या गाढ़नेकी जगह,  
यात्री, मुसाफिर ।

अक्षरे ( सं. ) खरगोश, खरहा, चांद  
मेंका काळ दाग ( मृगरूप )

अक्षरे ( सं. ) बाद, चन्द्रमा, मयंक ।

अक्षरे ( सं. ) हथियार, आयुध,  
तलवार, प्रभृति, जोहा, वह हथि-  
यार जो फेंका न जावे और

हाथसे पकड़े हुए ही काममें लाया  
जावे ( जो फेंका जाता है उसे  
अक्षरे कहते हैं ।

अक्षरे ( सं. ) शस्त्रचिकित्सक,  
चीराफाड़ी फोड़े फुन्सी, घाव  
आदिका इलाज करनेवाला, सर्जन  
जराई ।

अक्षरे ( सं. ) शस्त्रचिकित्सा, चीर-  
फाड़ द्वारा आरामकरनेकी क्रिया,  
सर्जरी, जराई, शस्त्र वैद्यक ।

अक्षरे ( सं. ) नगर, बड़ा गांव,  
ग्राम, पुर, पत्तन ।

अक्षरे ( सं. ) शिळा, पत्थरकी पट्टी,  
सल, सलबट, रेखा चिन्ह ।

अक्षरे ( सं. ) शलाका, चास, बांस  
आदिका पतला और लम्बा भाग  
५। ६० का सकेत, नाईकी सिखी ।

अक्षरे ( वि. ) शंकर मतके, सैव ।

अक्षरे ( क्रि. ) जाना, पाखाना रखना ।

अक्षरे ( सं. ) शाहका अपभ्रंश शब्द ।

अक्षरे ( सर्व. ) क्यों, किस ।

अक्षरे ( सं. ) भाजी, तरकारी, साग,  
भोजन करनेके समय जलपत्र  
आदिको नमक मिर्चादि मसाला  
मिलाकर पकाया हुआ पदार्थ ।

अक्षरे ( वि. ) नित्यका, नकुल ।

शक्ति-शु ( सं. ) शक्तिनी नि-  
म्नवर्णकी देवी पिशाचिनी। [बर्षमें।

शक्ति ( अ० ) शास्त्राह्वन के शक्त

शक्ति ( वि. ) देवीके उपासक,  
शक्तिकी उपासना करनेवाले।

शक्ति ( सं. ) बौद्धधर्मका संस्था-  
पक, बुद्ध शाक्यमुनि।

शक्ति ( सं. ) कुलनाम, पदवी  
गवाही, स्वीकृति, सम्मान, आ-  
वक, उचित व्यवहार, पत, गौर  
कैरी, वृक्षपर पकाहुआ आमका  
फल।

शक्ति ( सं. ) काली, कपाल, प्रकरण,  
ग्रंथका परिच्छेद, वेदमंत्र पढ़ने  
और पढ़ानेकी रीति, ( ऋग्वेदकी  
आठ शाखाएँ हैं ) टहनी प्रथमेद,  
समीप, प्रकार, रहह।

शक्ति ( सं. ) पकन योग्य  
कैरी (आम) विला सीखनेवाला।

शक्ति ( सं. ) शिष्य, शगिर्द,

शक्ति ( सं. ) चार मासेके बराबर  
पञ्चन, हथियार और औजारोंको  
धार करनेका वंश।

शक्ति ( सं. ) मिष्टीका पात्र विशेष  
शिकोरा, माळसा।

शक्ति ( सं. ) भीक्षुगणना।

शक्ति ( सं. ) होशियारी, सा-  
वधानी, सभ्यता, शिष्टाचार,  
अच्छ मन्दी।

शक्ति ( वि. ) सयाना, विवेकी,  
समझदार, शक्तिशाली=देखनेमें  
सांथी किन्तु बदमाश औरत, शक्ति-  
शाली=देखने में अधिष्ठाने शक्ति=  
चतुर मनुष्यको इशारा और मूर्खको  
मार, ( सं. ) स्वप्न सपना।

शक्ति ( वि. ) स्वार्थ साधक

शक्ति ( सं. ) शक्ति, सुखवृत्ति,  
आनंद।

शक्ति ( सं. ) शक्ति ( = ) शक्तिशाली रहना।

शक्ति ( सं. ) लग्न, विवाह, परिणय।

शक्ति ( सं. ) देखाव, शृंगारकी छटा।

शक्ति ( वि. ) शोभित, छटायुक्त।

शक्ति ( सं. ) छेलाह, फकटपय

अपकेदार पोशाक। [ किसलिये।

शक्ति ( अ० ) किसवास्त, कसों,

शक्ति ( वि. ) स्थिर अशुद्ध, अव-  
चल, चुपचाप।

शक्ति ( सं. ) फल विशेष,

गिलकी मुरईकी एक जाति विशेष।

शक्ति ( सं. ) स्थिरता, जैन, ठन्हाह

आराम, दुर्गा। [ रहनेवाला ठग।

शक्ति ( सं. ) चुपचाप बैठ।

आभान ( सं. ) सुसज्जमाना वर्षाका  
बाढावा महीना । [ बाह्याह, चन्व ।

आभास ( सं. ) मले, ठीकफिवा,  
आभासी ( सं. ) प्रसंसा, तारीफ,  
श्लाघा, बहमाही ।

आभित-भेत-ती ( वि. ) मजबूत  
पका, हद, प्रमाणसिद्ध कियाहुआ  
स्थापित, करार नकी । [ सुबूत ।

आभित-भेली ( सं. ) प्रमाण  
आभुती ( सं. ) मजबूती, पुरुषता  
हडता, टिकाऊ ।

आभ ( वि. ) काला, गहरा,  
अस्माना, रंगबाळा, ( सं. ) मेघ  
बादल, धनुष, प्रयागतीर्थस्थवट,  
कोयल, ( पक्षी विशेष ) [ वर्णहो ।

आभगवान ( वि. ) जिसका श्याम  
आभणुं ( वि. ) काका, श्याम,  
गहरा, लाकीरंग, चननीळ ।

आभणाल ( सं. ) धीकृष्ण चंद्र ।

आभित-भेले ( वि. ) जुड़ाहुआ,  
मिळाहुआ, मिश्रित, साथी, जोड़-  
दार, लगाहुआ ।

आभो ( सं. ) बिनाकूटाहुआ एक  
भ्रांतिका भण ( जिसे उपवास  
विशेष के दिन जाते हैं )

आभडी ( सं. ) एकप्रकारका औजार

जिससे लकड़ी वा छोटेमें छेद  
किया जाता है ।

आभडीथीसाशुं ( कि. ) तानेदेना,  
कठोर बचन बोलकर दिल दुखाना  
तकलीफ पहुंचाना ।

आभर ( सं. ) कवि, भाठ ।

आभी ( वि. ) सोनेवाळा, समय  
करनेवाळा । [ बेज ।

आभर ( सं. ) छिंद, छेद. सुराह,  
आभरुं ( कि. ) छिद्रकरना. छेदना  
अरीर ( वि. ) शरीर विषयक, रोग  
सम्बन्धी, ( सं. ) वैद्यकशास्त्र ।

आरीरि ( वि. ) शरीरसम्बन्धी,  
वैद्यक सम्बन्धी, जिस्मानी, दैहिक ।

आदूल ( सं. ) व्याघ्र, बाघ बघेरा ।

आदूलविशोदित ( सं. ) वार्षिकवृत्त  
विशेष ( पिंगलशास्त्रमें )

आध ( सं. ) ऊनका बनाहुआ कौ-  
मती बल जो ओछा जाताहै  
( दोशाल मिलनेके कारण दुशाला  
कहाता है ) [ सिरोपाव ।

आसदुशाबो ( सं. ) पगड़ी, दुपहा,

आभा ( सं. ) घर, भवन, स्थान ।

आभियाभ ( सं. ) गोकुमोल एक  
नदी विशेषका काल परधर जो  
विष्णु नामसे पूजा जाताहै । वि-  
ष्णुकी मूर्ति विशेष ।

शशिविवाह ( सं. ) एक राजा जो विक्रमादित्यका शत्रु और शक सम्वतका प्रवर्तक कहा जाता है ।

शशिक ( सं. ) भावक, जैनमतानुयायी, बप्पा, बालक छौना ।

शशिकी ( सं. ) एक प्रकारकी विद्या, कौचका वृक्ष ।

शशित ( वि. ) नित्य, हमेशा, सतत, निरन्तर, प्रमाण, निश्चय, विश्वास ।

शशित ( सं. ) सजा, दंड, आज्ञा, हुक्म, बोध, शास्त्र, शिक्षा ।

शशिक ( सं. ) हितोपदेशक ग्रंथ, पुस्तक, निवेश, धर्मग्रंथ ।

शशिकार्थ ( सं. ) शास्त्रोंमेंसे लिखा हुआ प्रमाण, शास्त्रानुमोदित वाद-विवाद, धर्मशास्त्रके वचनका अर्थ ।

शशिकी ( सं. ) एकाध शास्त्रका ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, शास्त्रोंका मनन करनेवाला, संस्कृतकी एक परोक्षा विशेष ( वर्तमानकालमें )

शशिकीय ( वि. ) शास्त्रविषयक, शास्त्र प्रतिपादित, शास्त्रवर्णित ।

शशिकीर्त ( वि. ) शास्त्रमें कहा हुआ ।

शशिक ( सं. ) मुसलमान राजा, बाद-शाह, शराफ, विश्वस्त पुरुष, व्यवहारमें ईमानदार, चोर (दिल्लीमें) ।

शशिकी ( सं. ) राजपुत्रां, राज-कुमारी, बादशाहकी लड़कियां, कुंवरो ।

शशिकी ( सं. ) राजपुत्र, राजकुमार ।

शशिकी ( सं. ) काळजोरा, औषधि विशेष ।

शशिकी ( वि. ) लनेवालेको रुपये दिलानेवाली (हुंडी), नियमानुसार ।

शशिकी ( सं. ) बुद्धिमाना, होशियारी, चतुरता, अहमदी । चतुर ।

शशिकी ( वि. ) समाना, होशियार,

शशिकी ( सं. ) प्रमाणिकता, साहकारी ।

शशिकी ( सं. ) स्याही, रोशनाई ।

शशिकी ( सं. ) अच्छा व्यवहार करनेवाला, अधिकरूपमें लेनेदेनेकरनेवाला

शशिकी ( सं. ) साहकारका कार्य, सचाई, विश्वस्तता, प्रमाणिकता ।

शशिकी ( सं. ) गवाह, साक्षी ।

शशिकी ( सं. ) गवाही, साक्षी, जवाबी

शशिकी ( वि. ) प्रमाणदेना, गवाही देना, साक्षी देना ।

शशिकी ( सं. ) कवि, शाबर, भाट ।

शशिकी ( सं. ) कविता, कविका कार्य, शाबरी ।

शशिकी ( सं. ) चावल आदि धान्य विशेष ।

शशिकी ( सं. ) एक जातिके चावल ।

शशिकी ( वि. ) पाठशालाके योग्य, विद्यालयके उपयुक्त ।



शिव ( सं. ) सींग, शृंग, विषाण, रणसिया, शृंगवाद्यविशेष । फली, फलविशेष, सेम ।

शिवडी ( सं. ) छोटा सींग नया निकला हुआ सींग । बंदूकका बारूद भरनेकी शृंगाकार नलिकाविशेष ।

शिवडुं ( सं. ) सींग, गोशृंगवाद्य-विशेष, रणसीगा, बारूद भरनेकी नली ।

शिवडा ( सं. ) आधी छे (=) मूर्त बतानेके लिये उपालम्भ रूपमें यह वाक्य प्रयोग किया जाता है :

शिवडा भांडवा ( कि. ) सिरजोरी करना, जबरदस्ती सिर देना, आ-बैल मुझेमार करना ।

शिवधो पठना ( सं. ) औषधि विशेष यह बड़ी जहरीली वस्तु होती है ।

शिवी ( सं. ) देखो शिवडी ।

शिवी ( सं. ) सींग निकलनेका स्थान, सींगमें पठिनानेका जेवर ।

शिविडुं ( सं. ) शृंगाटक, सिंघाड़ा, पुरुष या स्त्रीके मस्तक पर हिंगलू या रोलीका सिंघाड़ेकी शकलका चिन्ह ।

शिविडीना वेला ( सं. ) बहुकुटुम्बी ।

शिविडुं ताथुपुं ( कि. ) खांचातानी करना । ( मवाकमें )

शिवुं ( सं. ) नकुछ तुच्छ ।

शिविणपुं ( सं. ) भूरा भूयसिम ।

शिविणो ( सं. ) धीतकाळ, ठंडका

शिवस्त ( वि. ) हारमाना हुआ, परजित, परास्त ( सं. ) हार पराजय ।

शिवी ( सं. ) वह मोतियोंका झुमका, जिस लियी मस्तकपर धारण करती है, आभूषणविशेष ।

शिवी ( सं. ) मुहं, सूरत, चेहरा, दिखावा, बनावट ।

शिवी ( सं. ) शिर घोनेके काममें आनेवाली, एकवनस्पति विशेष ।

शिवी ( सं. ) मृगया, आखेट, खुराक, भक्ष्य, हरण करना, दगेसे वस्तुका लेना ( वि. ) सरस, उत्तम श्रेष्ठ ।

शिवी ( कि. ) देना, ( रुपया वगैरे ) परवाना ।

शिवी ( सं. ) शिकार करनेवाला, व्याधा, पार्श्व, मृगयाधी, ( वि. ) शिकार संबंधी, बहादुर ।

शिवी ( सं. ) सहित, साथ, युक्तनी ।

शिवी ( सं. ) नवि आतिथी भूतनी ।

शिक्षा०३ ( सं. ) निम्नजातिका भूत ।

शिक्षा०३ ( सं. ) शिक्षा पात्र विशेष ।

शिक्षा०३ ( सं. ) शिक्षा देनेवाला, शिक्षनेवाला, मास्टर, गुरु, टीचर, पाठक । [ शिक्षानेका डंग ।

शिक्षा०३ ( सं. ) शिक्षा, सीख, शिक्षा ( सं. ) बोध, नसीहत, विद्या

ज्ञान, अभ्यास, सीखना, सज्ज, दण्ड, सीख, सखाई । [ सीखना ।

शिक्षा०३ ( कि. ) नसीहतलेना

शिक्षा०३ ( कि. ) मारना, सजा देना, पीटना, दण्डविधान करना ।

शिक्षा०३ ( वि. ) सीखाहुआ, पाठित सुबराहुआ, निपुण, अभिज्ञ ।

शिक्षा०३ ( सं. ) छुडी, विदागी, शिक्षा, रजा जाते समय किसीको कुछ देना ।

शिक्षा०३ ( सं. ) एक मिष्ट अवलेह विशेष, ( दहाको मोटे कपड़ेमें कई घंटों बांधकर पानी निकालाहुआ, और उसमें शक्कर भेवा आदि डालकर मथन कियाहुवा पदार्थ ) थ्रॉलंड

शिक्षा०३ ( सं. ) मोर, मयूर, नील कंठ, पक्षी विशेष, हुपदराजाकापुत्र ।

शिक्षा०३ ( सं. ) सिर, सिरा, अन्त, नोक, चोटी, अन्तिम भाग ( उंचाई )

शिक्षा०३ ( सं. ) छन्दोभेद, पिंगल शास्त्र वर्णित छन्द विशेष ।

शिक्षा०३ ( सं. ) चेतावनी, सखाइ, सम्मति, उत्तेजना, भेत्तना ।

शिक्षा०३ ( कि. ) सिखाना, ज्ञान देना, पढ़ाना, चेताना, उत्तेजित करना ।

शिक्षा०३ ( कि. ) सीखना, पढ़ना, ज्ञान लेना, समझना, अनुभव करना ।

शिक्षा०३ ( सं. ) चोटी, सिरपरके सबसे लम्बेबाळ, चोंदी, टेम, फन, कलगी, दीपककी लौ ।

शिक्षा०३ ( कि. ) अनजान, अज्ञानी, नया सीखनेवाला, अबोध ।

शिक्षा०३ ( कि. ) पढ़ाना, सिखाना समझाना ।

शिक्षा०३ ( सं. ) सखाइ, सम्मति, शिक्षा, बोध, उपदेश, चेतावनी, सूचना ।

शिक्षा०३ ( सं. ) मोर, मयूर, पक्षीविशेष ( वि. ) चोटीबाळा, कलगीबाळा ।

शिक्षा०३ ( सं. ) समीपवृक्ष, खेजडाका वृक्ष, वृक्षविशेष ।

शिक्षा०३ ( सं. ) देशविशेष, बिस्कोटक रोग को खात करनेवाली देशी, रोगविशेष ।

शिक्षा०३ ( कि. ) अपयश मिलना, बढ़नामी उठना, फलीकृत होना ।

शिरताण (वि.) जवरी, शीघ्रता,

उत्तावळ, (सं.) वृत्तविशेष ।

शिरधल (नि.) ढीला, आळसी, मन्द ।

शिरधो (सं.) मांग सिरके बीचमें

बालोंको दो भागोंसे विभक्त करने-

पर बीचमें बनो हुई रेखा ।

शिरधारस (सं.) शिफारिश, गुण-

प्रशंसा, अनुग्रह कारण, गुणवर्धन ।

शिरिक्का (सं.) सुली पालकी बोळी ।

शिरिभर (सं.) छावनी, पड़ाव,

सेना सजिवेश, सेनाके रहनेका

स्थान । तम्बू, केम्पा ।

शिरिपण (सं.) पातिव्रत धर्म, अपने

पतिपर पूज्यबुद्धि, युक्त महान भक्ति ।

शिर्याविमा (वि.) शरभिदा, चब-

राया हुआ, व्याकुल, लज्जित ।

शिर्याण (सं.) गाँदड़, शृगळ,

जम्बुक, लडेया, स्वार ।

शिर्याण ताळे सीप अथीने कुतरे

ताळे भाभ अथी (०) अपना

फायदा सब कोई देखो ।

शिर्याणु (सं.) ठंडके मौसिममें

पकनेवाला भान्य । [ काल ।

शिर्यायो (सं.) ठंड, ज.ड़ा, शीट-

शिर (सं.) माथा, सिर, सफ़्तक,

सूँह मुँह, अप्रभाव ।

शिर व्यापतुं (कि.) चाहे जिसा

कठिन काम करनेका वचन दे देना ।

शिर कोपतुं (कि.) नमकहराम

होना, चोका करना, बदमाशी

करना ।

शिर छपर बेतुं (कि.) अपनी

जिम्मेवारी करना, भार ग्रहण

करना ।

शिरससामततो पभडियां जडातेरी

अजियेगे नरतो बसावेंगे घर ।

शिरछेड (सं.) सिरका काटना ।

शिरछत्र (सं.) पूज्य तथा बृद्ध

गुरु ।

शिरग्गेर (सं.) माथापन्थी, करने-

वाळा व्यक्ति, जबरदस्त ।

शिरग्गेरी (सं.) माथापन्थी, जबरदस्ती ।

शिरताण (सं.) सिरमौर, पूज्य

मान्य ।

शिरनाभुं (सं.) पता, (कारं

सिफाके बगैरःपर) सरनामा ।

शिरपाव (सं.) इनाम पुरस्कार

भेड, पगड़ी, दुपट्टा इत्यादि ।

शिरभंटी (सं.) भिन्ना अथवा

नगरकी रक्षाकेलिये नियुक्त सेना ।

शिरस्तेहार (सं.) अशक्तके एक

मुख्य कार्य कर्ता, (मुहारिर) मर

विशेष ।

शिस्तो (सं.) रीति, रस्म, रिवाज  
शिरा (सं.) रग, नस, रक्तवाहिनी  
नाड़ी, धमनी, नरु, नाड़ी।

शिरधुं (सं.) तक्रिया, सिरके  
नीचे लगानेका, उपधान।

शिराभधु (सं.) कळेवा, प्रातःका-  
लका भोजन, नास्ता।

शिरावधुं (क्रि.) कळेवा करना।

शिरा (सं.) मिठास, मधुरता।

शिशान (सं.) मीठा, मधुर, मिष्ट।

शिरा (सं.) शीरा, हल्ला, मोहन  
मोग, मिठाई विशेष, गुड़ कोपत-  
ला करके उबालकर तम्बाकूमें  
मिलानेके लिये बनायाहुवा पदार्थ।

शिराभधु (सं.) एकप्रकारका  
जैवर, शिरकाभाभूषण, उत्तम,  
श्रेष्ठ, पूज्य, मान्य, सिरताज,  
सर्वोत्तम।

शिक्षा (सं.) सिल, चट्टान, पत्थर।

शिक्षाधाय (सं.) पत्थरकी छाप,  
लेथोग्राफ, लिखाहुवा पत्थरपर  
उतारकर पिर कागजपर उतारले-  
नेकी क्रिया।

शिक्षाजित (सं.) शिलारस, शैलज  
शिक्षाजीत नामसे प्रसिद्ध पर्वतका  
गोंद विशेष।

शिक्षाश्म (सं.) एकप्रकारका गोंद  
जो लेप और धूपके काम आताहै।

शिक्षाक्षेप (सं.) पत्थरपर खुदा  
हुवा लेख। [शर।

शिक्षिभुम्भ (सं.) बाण, तीर, विस्मिन्न  
शिक्षेभानुं (सं.) शस्त्रागार, तोपखाना

शिक्षेभ (सं.) हाथ अथवा यंत्र-  
द्वाराकी हुई कारीगरी, हुजर, बिद्या  
गुन, वास्तकार्य, दस्तकारी। [गुनी।

शिक्षेभः (सं.) कारीगर, हुनरी,

शिक्षेभश्चात्थ (सं.) कारीगरी नि-  
खानेका ग्रंथ।

शिक्षेभश्चात्थी (सं.) शिल्पकार, शिल्प  
विद्याका पारदर्शी, दस्तकार।

शिक्षेभशास्त्र (सं.) कलाभवन, कारी  
गरीका घर, कारखाना।

शिक्षेभी (सं.) कारीगर, शिल्पकार।

शिक्षे (सं.) महादेव, शंकर, कल्याण  
करनेवाला, मंगल कर्ता।

शिवनिर्माथ (सं.) शिवमूर्तिको  
अर्पित द्रव्य, किसीके काममें न  
आने योग्य। [शिक्षा (तावेका)

शिवश्म (सं.) शिवाजीके समयका

शिवशत-त्रि (सं.) प्रत्येक मही-  
नेके चतुर्दशी तिथिकी रात्रि, फा-  
गुन महीनेके कृष्णपक्षकी चौदस।

शिव (सं.) पार्वती, गौरी, त्रिआ  
चौबाइया पौनेचार चढी, गरिब।  
शिवामे—य (अ०) बिना, बगैर,  
अतिरिक्त, अलखवह।

शिवधाम (सं.) शिवमन्दिर,  
शिवका स्थान।

शिविर (सं.) ऋतुविशेष, जाड़ा,  
पाळा, हिम, सर्दी, माघ और  
पौषका महिना, शीतकाल।

शिशु (सं.) बालक, बच्चा, सद्यो-  
प्रातबालक, बाल।

शिवन-स्तु (सं.) पुरुषकी इन्द्रिय,  
सिंह, मूत्रेन्द्रिय, उपस्थेन्द्रिय।

शिष्ये (सं.) शिष्य, शार्गिर्द, चेला।

शिष्ट (वि.) सदाचारी, प्रतिष्ठित,  
शिक्षित, पठित, शरीफ, बुद्धिमान।

शिष्टा (सं.) शिष्टता, सुव्यवहार।

शिष्टाचार (सं.) आदर, सत्कार,  
सुव्यवहार। [ उचित।

शिव (वि.) योग्य, लावक, ठीक,

शिवसातभ (सं.) शीतला सप्तमी,  
सावन महिनकी सुधी या बुदी  
सप्तमीको जिसदिन लोग ठंडा  
भोजन करते हैं।

शी (सर्व०) क्या, कैसी।

शीकर (सं.) बौछार, पानीकी  
बारीक धार या फुलारा।

शीकुं—शीकुं (सं.) छीका, रस्सी  
या तारका बनाहुआ फन्दासा,  
( जिसपर बर्तन बगैर रखते हैं )

शीथ (सं.) शिफा, नवीकृत, सजा,  
नोकदार लोहेका सरिया, बोरेमेंसे  
अन्न निकालनेका पोला लोहेका  
दुकड़ा, परखी, सिक्का, धर्मावेसेव  
खालका पंथ।

शीथाम (सं.) गार्हा।

शीथ (वि.) तेज, तीव्र, जल्द,  
( अ० ) जल्दीसे, शीघ्रता पूर्वक।

शीथविता (सं.) तुरंत बनाया काम्य।

शीथवि (सं.) आशुद्वि, जल्दी  
छन्दबनानेवाला।

शीथभेस (सं.) गंजा, गजिकीदम

शीथुं (वि.) पूरना, मूदना, बंद  
करना, डाटना।

शीत (वि.) ठंडा, सर्द, शीतल,

( सं. ) राधेहुएचा बलोकें पृथ्वीपर  
गिरेहुए दाने, ठंड, सर्दी।

शीतकटिभ (सं.) पृथ्वीकी वह  
रेखा जहांपर बहुत सर्दी पड़तीहो।

शीतकाथ (सं.) हेमन्तऋतु, जाड़ा,  
सर्दीका मौसम।

शीतल (वि.) ठंडा, सर्द।

शीथयो (सं.) कंठे बगैर: लयेका  
साधन।

शी६ (क्रि. वि.) कहाँ ?

शी६ने (अ.) क्यों, किसवास्ते ।

शी६ण (सं.) नरियळ, श्रीकळ ।

शी६र्ष (सं.) सिर, माया, मस्तक ।

शी६ (सं.) स्वभाव, आदत्त, प्रकृति, चालचलन, आचरण, अच्छी आदत्त, खुशमिजाज ।

शी६शी-सी (सं.) छोटीबोतल, तेल, अर्क वगैरः भरनेका काचका पात्र ।

शी६शीने६टा६ (=) तुरंतही परिणाम ।

शी६शी-से। (सं.) बोतल, दवा इत्यादि भरनेका काचकापात्र विशेष ।

शी६णी (सं.) शीतळ, रोग निगेष बेचक, विरुफोटक ।

शी६ुं-णे। (सं.) छाँड़, साया, छायाँ, ठंडक, (वि.) ठंडा, बासी शीतळतायुक्त, शिथिल, सुस्त, मन्द

शुं (सर्व०) क्या, क्यों, किसलिये, (वि.) समानता सूचक प्रत्यय, (अ०) साथ, से । [ अदरक ।

शुं६ (सं.) सौँठ, शूँठी, सूखी

शुं६ (सं.) सूँड, हाथीकाकर ।

शुं६भुं६ (अ०) चुपचाप, गुप्तगुप्त ।

शुं६पुं (क्रि.) जाना, चलना ।

शु६ (सं.) तोता, सुग्गा, पक्षी विशेष, व्यासजीका पुत्र शुक्रदेव ।

शु६शनी (सं.) बय, कल्याण ।

शु६थ (सं.) माझभोकी जाति विशेष, (वि.) सफेद, श्वेत ।

शु६ (सं.) इसनामसे प्राप्त एक ग्रह, देव्याचार्य, प्रताप । [ जुम्मा ।

शु६११२ (सं.) सप्ताहका छठा दिन

शु६११२थे०-११३थे० (क्रि.) लाभ होना, भाग्योदयहोना, (शुक्रवार) सुसलमान लोगोंका पवित्र दिन माना जाता है, कहते हैं इसीदिन आदमका जन्महुवाथा, ज्योतिष-शास्त्रमेंभी शुक्रको शुभमानाहै, अमेरिकादेशमेंभी शुक्रवार भाग्य-शालीदिन माना जाताहै, रकाउलेंडमें भी बहूदिन अव्यंत शुभमाना गया है, इन्हींकारणोंसे उक्तवाक्य की रचना हुई है ।

शु६थार्थ (सं.) दैत्योंके गुरु, काष्ठा आदमी, एकाक्ष (के लिये व्यं-गोक्ति) [ विशेष ।

शु६। (सं.) तोता, सुग्गा, पक्षी

शु६ (सं.) शुक्रपक्ष, चाँदनी रात ।

शु६ि (वि.) पवित्र, शुद्ध, निर्मल

शुद्ध ( सं. ) छमर, समाचार सुधि  
( वि. ) साफ, सुधरा, पवित्र, स्वच्छ  
करा, निर्दोष भान, सुधि, होश,  
चेत ।

शुद्धत ( सं. ) जनानखाना ।

शुद्धि ( सं. ) पवित्रता, शोधन, सफाई  
शुचिता, सुधि, चेत, भान, होश ।

शुद्धिभाषी ( क्रि. ) होशवाना,  
चेत होना, मूर्च्छाभंग होना ।

शुद्धिपत्र ( सं. ) प्रघर्षा गलतियोंका  
सूचक पत्र, शोधन पत्र ।

शुद्धशुद्ध ( सं. ) होश हवास, खबर  
सुरत, चेतन्मता और ज्ञान ।

शुद्धाक्ष ( सं. ) सुनसान, जहाँ  
कुछभी नही और कुछभी शब्द न  
हो ऐसी जगह, शून्य स्थान, सुना

शुद्धी ( सं. ) कुर्ती, कुतिया ।

शुद्धशत ( सं. ) मुसलमानोंके आ-  
ठवें महिनेकी अठारहवीं तारीखके  
दिनका उत्सव । [ निर्मल ।

शुद्ध ( वि. ) सफेद, श्वेत, साफ,

शुद्ध ( वि. ) मंगल, कल्याण, अच्छा  
भला, भष्ट, सुन्दर ।

शुद्धेशु ( वि. ) कल्याणकर्ता, अच्छी  
इच्छा करनेवाला, हितवादी ।

शुद्धार ( सं. ) सँकड़ा, गिनती,  
गणना, अंदाज, अनुमान, अटकल

विचार, कृत । [ सहारे ।

शुद्धारे ( अ० ) आसरे, भरोसे,

शुद्ध ( वि. ) प्रारंभ, आरंभ ।

शुद्ध ( वि. ) सूखा, रसहीन, नेरस  
बकाहुआ, निरर्थक, बेबुनियाद ।

शुद्ध ( सं. ) सुधर, बाराह, बराह,  
उपकारमानना, आभार मानना,  
सुकर, अच्छा, भाग्य ।

शुद्ध ( सं. ) चतुर्थवर्ण, अन्तिमवर्ण-  
पादज, निम्नजाति ।

शुद्ध-न ( सं. ) खाली, रिक्त,  
असम्पूर्ण, असमस्त, बिन्दु, सिफर  
( वि. ) रीता, शरीरके किसीभाग,  
को लकवा मारनेपर निर्जीव  
अंगको दशा ।

शुद्धवादी ( सं. ) बौद्ध विशेष,  
नास्तिक, अनीश्वर वादी, जैनी ।

शुद्धाक्ष ( वि. ) शठ, मूर्ख, निर्दय  
घातकी, प्रभावशून्य ।

शूर-२१ ( सं. ) बौद्धा, लड़ाका,  
वीर, उत्साही, बलवान; बहादुर ।

( वि. ) हिम्मतवाला, साहसिक  
गुस्सेवाला, ( सं. ) गुस्सा, आवेश,  
बहादुरी, हिम्मत । [ बहादुरी ।

शूरपक्ष ( सं. ) वीरता, शूरता,

शूरवीर ( वि. ) बहादुर, हिम्मत-  
वाला ।

सुरासीरपधुं (सं.) बहापुरी, हिम्मत ।

सुरातन (सं.) पूर्ववत् ।

सुध-णी (सं.) बड़ाकांटा, लोहेका एक प्रकारका कांटा, अन्न विशेष, कील, वह रोग जिससे पेटमें सुई के चुमनेकासा दर्द होता है, दर्द ।

सूणी (सं.) देहांत दण्ड देने लिये लोहेके बड़े कीलेवाला तरुता, फांसी

सूणीओबडावुं (कि.) सूर्यु रंड देना, फांसी लटकाना ।

सूभक्षा (सं.) जंजीर, सांकल, बेडी, सिकरी, लोह रणजू ।

सूभ (सं.) सांग, विषाण, सिसार चौड़ी ।

सूंगार (सं.) सजावट, शोभा, पोशाक, जेवर, अलंकार, अपुरुषका प्रेम, प्यार, प्रथमरस ।

सूंगाररस (सं.) काम्य के नौ रसों मेंसे एक रस विशेष, प्रथमरस ।

सूंगारी (वि.) सुंगार प्रेमी, हरेक बाजीमें निमग्न, सुंगारशास्त्रमें कुशल ।

सूभाध (सं.) गीबड़, जम्बुक, स्वार, लड़ेया ।

शे (अ०) किसलिये, क्यों ?

शेडो (सं.) सौ, सौकी संख्या, शताब्दि, सही । [जाली ।

शेडी (सं.) बैलके मुखपर बाँधनेकी

शे (अ०) किसवास्ते, किस किने, क्यों ।

शे (सं.) सिकार, लेक, सिक- ताव, अग्निद्वारा खंगके किसी भागको सेकना ।

शेपुं (कि.) सेकना, पकाना, आगपर सेकना, मूनना, भाग देना, सताना ।

शेपे। पापु पधु भं गतो नथी (०) निकटतम निर्वन्, बेहद कमजोर ।

शेभ नाभपुं (कि.) खताना, दिक् जलाना, दुःख देते रहना ।

शेभ (सं.) मुसलमानोंका फि- रका विशेष, अर्बी लोगोंका सरदार ।

शेभर्ध (सं.) सेली, घनपण्ड, गर्व, दंभ ।

शेभभल्ली-सल्ली (सं.) ऊठप टांग, तर्क करनेवाला, मनके लड़ बनानेवाला, पागल सा ।

शेभसंस्थिता निवार (सं.) कमी न हो सकें ऐसे बड़े बड़े इरादे ।

शेभहार (सं.) क्लार्कविशेष, मुह- रिर (कमासदारका) ।

शेभर (सं.) फूलोंकी माला जो मुकुट पर चारण की जाती है, भूषणविशेष, सिरपर पहिनेका हार ।



शेष्ठी (सं.) ठठवाठ, डोंग, पाखंड, घमण्ड, गर्व, ईम, भड़क ।

शेष्ठीभोर ( वि. ) घमण्डी, गर्वी, डोंगां, आत्मश्लाघा, डोंगी ।

शेष्ठी ( सं. ) शय्या, सोमेका बिछौना, पलंग, चारपाई, छाट, पर्यङ्क ।

शेठ ( सं. ) स्वामी, मालिक, पति, महाशय, धनिक, रुपये पेसेवाला, गृहस्थ, श्रीमन्त, साहूकार, धनाढ्य ।

शेठार्थ ( सं. ) सेठजीका पद, सत्ता, सेठपना, बड़पन ।

शेठिये। ( सं. ) पैसेवाला साहूकार । गृहस्थ, अगुआ, नेता, लीडर, बहबैल जिसका सिर सफेदहो ।

शेठे। ( सं. ) खेतके पास छोड़ीहुई थोड़ीसी जगह, सीमा, मार्ग, रस्ता ।

शेष्ठी ( वि. ) सयाना, चतुर, समझदार ।

शेष्ठी ( अ० ) किसकारण, किससे ।

शेतरंज ( सं. ) शतरंज, खेल विशेष, बर्तास मोटी, बादशाह बजीर, ऊंट घोड़ा, हाथी पैदल नामसे पुकारी जाती हैं और उनसे खेला जानेवाला खेल विशेष ।

शेतरंज ( सं. ) दरी, कई रंगोंमें रंगाहुआ बिछानेका मोटा बस्त्र विशेष, सतरंजी, शतरंजी ।

शेतरंज भीनाभरी ( कि. ) खूब निकाललेमा, ( नौचकर बाकुरेकर )

शेतान ( सं. ) अघोर दुष्ट कर्म करनेवाला ईश्वरकादूत ( मुसलमानोंके धर्ममें ) राक्षस, भयंकर पुरुष, भूत, जिन्द, पिशाच, दुष्ट पुरुष, ( वि. ) बदमाश, ऊधम, छप्पा ।

शेतर ( सं. ) वृक्ष विशेष और उसके फल, सहवृत्त, ( इसवृक्षके पत्तोंको खाकर रेशमके कीड़े रेशम बनाते हैं )

शेन ( सं. ) शयन, निद्रा, सोना ।

शेनवाटवा ( कि. ) सोजाना, नींदलेना ।

शेर ( सं. ) सिंह, ब्याघ्र, बघेरा, बाघ, तौल विशेष, मणका चाली-सवां भाग, ( इसका कोई निश्चित परिमाण नहीं कहाँ ४० तोलेका, कहाँ २८ तोलेका कहाँ ६० तोलेका, और कहाँ कहाँ १०० तोले तककाभी शेर होता है )

शेरबुजुं ( कि. ) सिरजोरी करना ।

शेरबोलीबुजुं ( कि. ) आनन्दमें ममहोना, खुशीमें होना ।

शेस्सुडभादीहोपते। ( ८८ ) यदी बल हाता, यदि हिम्मत होती ।

- शेडी ( सं. ) बच्चा, ईश, साँठा, हसुदण्ड, भीठागना, पौड़ा ।  
 शेरेडा ( सं. ) मार्ग, रास्ता, पथ, पगवण्डी, पैरोसे बनाहुवा मार्ग ।  
 शेरीयुं ( सं. ) एकदोर बज्जनका ।  
 शेरी ( सं. ) सकर्डीगली, मोहला, ग्वादी । [ सुगवित गौद ।  
 शेरीलोथान ( सं. ) एक प्रकारका  
 शेरी ( सं. ) अजी, प्रार्थनापत्र, हुण्डीकी सकार ।  
 शेरी ( सं. ) चकमक पत्थर द्वारा, आग पैदा करनेको डोरी—सुतली ।  
 शेरी ( सं. ) वस्त्र विशेष ।  
 शेरी ( सं. ) गायको दुहते समय उसके पिछले पैरोंको बाँधी जाने-वाली रस्ती ।  
 शेरी ( सं. ) जमींदारकी तरफसे गाँवोंकी बसुली लेनेवाला व्यक्ति ।  
 शेरी ( सं. ) अमृत, आखिर, फल, परिणाम, नतीजा ।  
 शेरी ( सं. ) श्रीसाधु जैनधर्ममें, हंडिया पंथकी, जी ।  
 शेरी ( सं. ) जैनसाधु, मुहंनवे साधु एक प्रकारका मोसाई, सेवक ।  
 शेरी ( सं. ) बंजी, पानीमेंकी काई, वैवाल, जलोत्पन्नद्रव्य विशेष जम्बाल, सिवार, बलमल ।  
 शेरी ( वि. ) अवशिष्ट, बाकी, बचा हुआ सपोंका राजा अनन्त, नाथ  
 शेरी ( सं. ) मृत्युसमय, अन्त समय । [ ( विष्णु )  
 शेरी ( सं. ) सर्पपर सेनेवाले  
 शेरी ( सं. ) रोक, अटकान, बन्धेज ।  
 शेरी ( सं. ) पारसियोंका छठा महिना, ( १ फवरदीन, २ अरदी, ३ हशत, ४ खुरदाद, ५ तीर, ६ अमरदाद, ७ शहरेवर, ८ मेहर, ९ आर्वा, १० आदर, ११ दे, १२ नेहमन और १३ सफशरमंद ।  
 शेरी ( सं. ) गुप्त सलाह करनेवाला ।  
 शेरी ( सं. ) जबरदस्त, बलवान ।  
 शेरी ( सं. ) जबरदस्ती, शक्ति ताकत, बल, पुरुषार्थ ।  
 शेरी ( सं. ) सम्राट, चक्रवर्ती राजा, राजाधिराज, राजराजेन्द्र ।  
 शेरी ( सं. ) नगर, बड़ागाँव, पत्तन पुर, बड़ीबस्ती । [ सम्बन्धी ।  
 शेरी ( वि. ) नागरिक, सहर  
 शेरी ( सं. ) अन्नकापरिमाण, माप विशेष, ( काठियावाड़में ) सिकड़ा ।  
 शेरी ( सं. ) सद्यो, शताब्दि, सैका  
 शेरी ( सं. ) पर्वत, पहाड़, गिरी, जिलाधीन, शैलज ।  
 शेरी ( सं. ) श्रीकृष्ण, गिरिधर ।

शे० ( सं. ) संकेत, निबन्ध, रीति,  
परिपाटी, रिवाज, ढंग, तरह,  
व्याकरण सूत्रका, संक्षिप्त वर्णन ।

शे०-वी ( सं. ) शिवभक्त, शिव-  
सम्बन्धी ।

शे०-पु ( कि. ) जाना, मरजाना ।

शे० ( वि. ) सौ, शतक १०० एक  
सौ, ( स. ) सुई, मुई, सूची,  
झूची, ( अ० ) कैसा, किसप्रकारका

शे० ( सं. ) दुःख, कष्ट, मानसिक  
वेदना, शोक, विन्ता, खेद, पश्चा-  
त्ताप, पछतावा, ह्रेश, संतार,  
मनोव्यथा, विव्यप ।

शे०-१२ ( वि. ) दुःखदायी, कष्ट-  
प्रद, खिन्न, शोकातुर ।

शे०-पु ( सं. ) शोकसमय पहिने  
के वस्त्र, शोकसूचक वस्त्र ( वि. )  
शोकनीय, शोकातुर, शोकनिषयक ।

शे०-५ ( सं. ) अपने पतिकी  
दूसरी पत्नी, सौत, सौतन, सौक ।

शे०-७ ( सं. ) इच्छा, चाह, शौक,  
आनन्द, स्वादिष्ट ।

शे०-११-१२ ( वि. ) शौकीन,  
आनन्दी, इच्छुक, मौजी ।

शे०-१३ ( सं. ) खेद, दुःख, किन्न,  
विता, पछतावा, विचार ।

शे०-१४ ( वि. ) विचारणाव, चिन्त-  
नीय, कानिष्ठ अफसोस । [ छोड़ ।

शे०-१५ ( सं. ) रक्त, खून, रुधिर,

शे०-१६ ( सं. ) खोज, अनुसंधान,  
छुद्धि, कृष्ण परिष्कार, सफाई,  
अन्वेषण, तजवीज, तलाश,  
निरीक्षण, दूँडमाळ ।

शे०-१७ ( वि. ) खोजी, अन्वेषक,  
पता लगानेवाला, छुद्ध करनेवाला ।

शे०-१८ ( सं. ) दूत, चर, संदेश-  
वाहक, अनुसन्धान कर्ता ।

शे०-१९ ( सं. ) सफाई, गळतिवोका  
छुद्ध करना, फजकी अदावगी ।  
परीक्षा, खोज, दूँड, तलाश ।

शे०-२० ( कि. ) शुद्ध करना,  
दूँडना, तलाश करना, खोजना,  
परीक्षा करना, अनुसन्धान करना ।  
भैल कचरा साफ करना, जाँचना ।

शे०-२१ ( सं. ) दूँडमाळ, जाँच  
पड़ताळ ।

शे०-२२ ( वि. ) शुद्ध, पवित्र, दूँडा  
हुआ, सुधारा हुआ, साफ ।

शे०-२३ ( सं. ) एक प्रकारकी ओषधि ।

शे०-२४ ( वि. ) सुन्दर, अच्छा,  
मनोहर, शुभ, मंगल, नयना-  
भिराम, मर ।

शोभयुं ( कि. ) शोभापाना, अच्छा  
मालूम होना, मनोहर लगना ।

शोभयु ( वि. ) लायक, योग्य,  
उचित, अनुकूल, ठीक ।

शोभा ( सं. ) सुन्दरता, प्रभा,  
व्यमक, कान्ति, दीप्ति, छवि, मनो-  
हरता । मान, लज्जा, प्रतिष्ठा,  
खूबी, ठाठ, गुण, सम्बन्धिता, खूब  
सूरती । [ चारु, शोभित, मनोहर ।

शोभायमान ( वि. ) सुन्दर, भव्य,

शीर ( सं. ) हल्का, गुल गपाड़ा ।  
कोळाहळ, होहळा ।

शीरभंडार ( सं. ) गडबड, धांधल,  
कचकच, हायतोश, कोळाहळ ।

शीथ ( सं. ) तृषा, प्यास, निपासा,  
मुरझाना, सूखापन, रुष्टता ।

शीथल्यु ( सं. ) सोझना, चूसना,  
सुझाव ।

शीथयुं ( कि. ) चूसना, भीतर  
खींचना, शोधन करना, रस  
खींचना । [ जाना, सूखना, चुकना ।

शोभायुं ( कि. ) सूकना, सार चला

शोभ्य ( सं. ) शुचिता, पवित्रता,  
स्वच्छता, शुद्धता, सफाई, पा-  
खाना, विद्या ।

शोभयुं ( कि. ) पालने जाना,  
मलोत्सर्ग करना, मलपरित्याग  
करना ।

शौरि ( सं. ) ब्रह्मा, ईश्वर ।

शौर्य ( सं. ) बहादुरी, पराक्रम,  
शूरता, छाती, प्रताप, साहस,  
वैर्य, सामर्थ्य, शक्ति, वीरता ।

शौर्यान् ( वि. ) साहसी, हिम्मत-  
वाला, बहादुर, धृष्ट, वीर, शूरता-  
युक्त ।

शमशान ( सं. ) मुर्दघाट, मरघट,  
मसान, मुर्दा जलानेकी जगह,  
कबरस्तान, मुर्दा दफनानेकी  
जगह ।

शमशानैशम्य ( सं. ) कुछ देरके  
लिये संसारसे विरक्तता, क्षणिक  
नैराश्य ।

श्याम ( सं. ) कृष्ण, पति, वर  
( वि. ) काला, कृष्णवर्ण, गहरा  
आस्मान्नी रंगवाला ।

श्यामश्याम् ( सं. ) सारा सफेद  
ओर पूँछ तथा काले कानवाला,  
घोड़ा, सुन्दर घोड़ा ।

श्यामश्याम् ( सं. ) कृष्णवर्ण न-  
अक रंगका एक भेद विशेष ।

२५।भिवर्धु ( वि. ) काळे रंगका,  
काला, कुम्भ वर्ष ।

श्यामः ( सं. ) सोलह वर्षके कम  
उमकी ली, पोषण बयस्का ली ।

२५।७७ (सं) सात्या, पत्नीका भाई ।

२५।५८ ( सं. ) साहूकारी ।

श्वेती (सं.) मादाबाज, पक्षीविशेष ।

અહીં ( સં. ) મરોસા, વિશ્વાસ,

यकीन, आदरपूर्वक प्रेम, सम्मान,

आस्तिक्य बुद्धि, आस्था, भक्ति,

ऐतबार । [श्रद्धावान, भावनायुक्त ।

अ. १७ (वि.) अ. १७, विश्वस्त,

अथ ( सं. ) परिश्रम, मेहनत,

उद्योग, यत्न, ध्यान, दुःख, तप

वृष्ट, वदना, तकलीफ, प्रयास ।  
अभिज्ञ ( कि ) इत्यादिना तत्त्वज्ञान

आभत ( वि. ) वकाहभा, व्याथत,  
थान्त भाका भाका ।

अन्ति, यका मादा ।

सुनता। बा<sup>१</sup>सुनी नधय ।

अथर्व ( जि. ) चत्वारः ३।४४

मरना, उंद मंद-धीरे धीरे

निकलना ।

अथ ( वि. ) सतनेयोगः कर्णप्रिय ।

श्री० ( सं. ) श्रद्धापर्वक क्रिया

हुआ कर्म, श्रद्धापूर्वक पितरोंकी

सेवा, सुश्रूषा तथा भोजनदिवाग

उनकी तृप्ति ।

**भाई शरारतें न। पढ़े भाई = दोनों में से  
एक बात कर । कुछ भी कर ।**

आ॥ ( मं ) शाप, बददुआ, याज्ञो,  
अशुभ चिंतन, अनिष्ट चिंतन ।

भाषण (क्रि.) श्राव देना, बह  
दशा देना, कोसना, बरा जीभना :

श्रीव. ( सं. ) बौद्धसाधु, येनी

संरक्षित, जैन धर्मानुयायी, कौजा,  
काक, कागा, पक्षीविशेष ।

श्रीवधु ( सं. ) हिन्दुसम्यक्ता  
दम्बा महीना ( जो कार्तिके

वर्ष मानते हैं) हिन्दू सम्प्रदाय  
५ वा महीना। जो चैत्रमे वर्ष

गणना करते हैं।  
1. पञ्च भादरपे पहेले। (क्रि.)

खूब आसू गिरते हुए रोना ।

एकादशी, पैंगिमा अथवा किस-

द्वितीय अध्याय नक्षत्र हो उसदिन  
किया जानेवाला एक वैदिक कृत्य।

विक्र। (स.) अनधर्म पासन्ने  
वाली छो, सरावगिन ।

( स. ) सम्प्रति, वन, दीवत्, भोम, सुन्दरता, कश्मी, शृंगार.

यतिभा, धर्म, अर्थकाम और मोक्ष  
मनुष्य, कसक, सत्यवती, सत्य-

प्राणी, वन, प्रतिष्ठावाचक शब्द,  
हिमा शीतं विष्णुः

॥ इति, काठ, वित्त ॥

श्रीक्षर ( वि. ) उत्तम, श्रेष्ठ ।  
 श्रीभू ( सं. ) चन्दन, गन्ध, सिखंड ।  
 श्रीभक्त्यात्मनः ३२५। ( कि. )  
 आरंभ करना, शुरुआत करना,  
 बाल करना, आगे बढ़ना ।  
 श्रीभर, श्रीभति ( सं. ) विष्णु ।  
 श्रीभक्त ( सं. ) संन्यासी, त्यागी,  
 बानप्रस्थी, यति, जितेन्द्रिय ।  
 श्रीभूम ( सं. ) वृक्षविशेष, पारि-  
 जातक ।  
 श्रीक्षी ( सं. ) नारियळ, नारिकेल ।  
 श्रीक्षी आधु ( कि. ) छुट्टी देना,  
 बिदा करना, रवाना करना ।  
 श्रीभंत ( सं. ) देखो श्रीभंत ( वि. )  
 पैसेवाला, धनी, मालदार, मान्य ।  
 श्रीभंताई ( सं. ) बड़ाई, कीर्ति,  
 वैभवं । [ भाग्यशाली ।  
 श्रीभान ( वि. ) यशस्वी, धनसम्पन्न  
 श्रीभुभ ( सं. ) कीर्तिवान-यशस्वी  
 सुख ।  
 श्रीरंभ ( सं. ) विष्णु ।  
 श्रीराम ( सं. ) रागविशेष ।  
 श्रीराम श्रीराम ( सं. ) सुदुर्लभ  
 केजाते समय लोग हमे मिलकर  
 बोलते हैं । रामनाम सत्य है ।  
 श्रीवत्स ( सं. ) विष्णु, विष्णुकी  
 छातीपरका चिन्ह विशेष ।

श्रीहस्ते ( अ० ) छुटके हाथों, स्वयम् ।  
 शुभ ( वि. ) सुनाहुआ, कर्णवत्,  
 कर्णयोवर, कर्णात्, सीखाहुआ ।  
 श्रुति ( सं. ) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय,  
 वेद । [ कठोर ।  
 श्रुतिकटु ( वि. ) कर्णकटु, सुननेमें  
 श्रेष्ठी ( सं. ) पंक्ति, पाति, कतार,  
 लकीर, हार, समूह, छाइन ।  
 श्रेष्ठी ( सं. ) आगे बढ़ना ।  
 श्रेय ( सं. ) मंगल, कल्याण, शुभ,  
 सौभाग्य, मुक्ति ।  
 श्रेयस्कर ( वि. ) शुभ, मंगलकर ।  
 श्रेष्ठ ( वि. ) उत्तम, प्रधान, बड़ा,  
 माननीय, सर्वोत्तम, अत्युत्तम ।  
 श्रेष्ठी ( सं. ) बड़ा, प्रसिद्ध व्यापारी ।  
 श्रेष्ठि-श्री ( सं. ) नितंब, चूतड़,  
 कमर, कुल्हा ।  
 श्रेता ( सं. ) सुननेवाला, समझने-  
 वाला । ध्यान देनेवाला ।  
 श्रेत्र ( सं. ) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय ।  
 श्रेत्री ( सं. ) वेदोक्त धर्म पाळने-  
 वाला ब्राह्मण, वेदस, वेदपाठी  
 ब्राह्मण ।  
 श्रेत ( सं. ) वेदोक्तकर्म, वेदविहित  
 कार्य, ( वि. ) वेदार्थ सम्ग्रन्धी ।  
 श्रेष्ठ ( वि. ) दिव्यार्थी, मिनाहुआ  
 जुड़ हुआ ।

श्लेष ( सं. ) ऐसा शब्द जिसके दो या इससे अधिक अर्थ हो ऐसी रचना, अलंकार, विशेष ।

श्लेषः ( सं. ) पद्य, कावेनिर्मित चार पदोंवाला वाक्य विशेष, छन्द, अनुष्टुप्छन्द, यत् । [ बंधाहुना ।

श्लेषः ( वि. ) छन्दोबद्ध, पद्यमें

श्लेष ( सं. ) नांदाळ, डोम, भंगी, जेहेतर नाच पुरुष ।

श्वशुर ( सं. ) परनी, पिता, समुर, समुरा, पतिका पिता ।

श्वशुरपक्ष ( सं. ) सासरा, समुराळ ।

श्वश्रु ( सं. ) सासू, पति या परनीकी माता, सास ।

श्वान ( सं. ) कुता, कुकर कूकरा ।

श्वाननिद्रा ( सं. ) अल्प निद्रा, कुत्तेकीसी चमक नींद ।

श्वस ( सं. ) सांस, प्राण, वायु, दम, सांसकारोग, दमा ।

श्वसश्वासवे। ( कि. ) मृत्युके निकट पहुंचना ।

श्वसशोडीनांशवे। ( कि. ) बकाना अथमरा करना, मरणतुरंत करना

श्वसशुभनांशवे। ( कि. ) दुःखदेना प्राणखाना, दिळदुखाना ।

श्वसोन्मथस ( सं. ) सांसलेना, और छोड़ना, दम ।

श्वेत ( वि. ) श्वेत, शुक्लवर्ण, पदक गौरा, पकाहुका, पक्क ।

श्वेतांबर ( सं. ) जैनसामुजोंकी एक जाति—( ये लोग श्वेत=सफेद अम्बर=काज पहिनते हैं )

५

५० श्वजनका इकतीसवां वर्ण, यह वर्ण मूर्धन्व है, गुजराती वर्णमालाका बबालीसवां अक्षर ।

५१ ( वि. ) छः, ६, संख्या विशेष

५१:३ ( सं. ) तंत्रशास्त्र प्रसिद्ध छः कार्य, शान्ति, बलीकरण, स्तंभन, विधेय उच्चाटण और मारण, प्राज्ञाओंके छः कर्म, पढ़ना, पढ़ाना, यजन, याजन, दान, और प्रतिग्रह, हठयोगके छः कर्म धौति, वस्ति, नेति, नोःति, प्राटक, और आसन ।

५१:४ ( सं. ) छकोन, एकमात्रिका तंत्र, बज्र, छःकोनेकी आकृति ।

५१:५ ( वि. ) छत्तीस ३६ ।

५१:६ ( वि. ) छःपैरवात्म, ( सं. ) जुंमफली, टीबी, मच्छर, भ्रमर, छप्पड़, ( विंगलशास्त्र वर्णित छन्द विशेष )

५१:७ ( सं. ) छन्दविशेष, भ्रमरी ।

पञ्चम (सं.) सःशास्त्र, आर्योक्तः

धर्म, यथा, सांख्य, योग, न्याय,

वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त ।

प६ (वि.) छ, छ, संख्या विशेष ।

प७ (सं.) छ गुण-यथाधर्म,

ऐश्वर्य, यज्ञ, धी, ज्ञान और वैरा-

ग्य । राजनीतिके छ गुण, यथा-

संधि, विग्रह, यान, आसनद्विधा-

भाव और सामाश्रय ।

प८ (सं.) छ ऋतुएँ, छ तरह

के मौसिम, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा,

शरत्, हिम और शिशिर ।

प९ (सं.) छ, अंग, दो हाथ

दो पैर मस्तक और कटि । वेदोंके

छ अंग, शिक्षा, कल्प, व्याकरण

निरुक्त और छन्द शास्त्र । (वि.)

छ भागवाळा ।

प१० (सं.) देखो प८

प११ (सं.) कार्तिक स्वामी,

कार्तिकेय, (वि.) वक्तवदन, छ

मुखवाल ।

प१२ (सं.) छ : प्रकारके रस,

मीठा, खारा, खट्टा, कड़वा, तीखा

और तूट ।

प१३ (सं.) छ : शत्रु, काम,

क्रोध, क्रोध, मोह, मद और

अस्मर ।

पे० १०१ (सं.) तरबूज, फल विशेष,

मतीरा । [ ऐश्वर्य ।

पे० १०२ (सं.) छ : प्रकारका

पुष्पवृत्ति (सं.) छ : तरहकी

विकृति, (जैनग्रंथोंमें) दही, दूध,

घी, तेल, गुड़ और गकर ये छ :

विकृतियाँ जनी मानते हैं । छ :

विकार ।

पे० १०३ (पुं.) हिजड़ा, नामर्द,

पुंसत्वहीन, नपुंसक, बाल ।

पे० १०४ (वि.) पूर्ववत्

पे० १०५ (सं.) छ : महिना ।

पे० १०६ (सं.) छठा भाग, ६, छवा

हिस्सा ।

पे० १०७ (वि.) साठ, ६०, संख्याविशेष ।

पे० १०८ (वि.) सोलह, १६ संख्या

विशेष, न्यायशास्त्रवर्णित १६ पदार्थ,

यथा, प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयो-

जन, दृष्टान्त, सिद्धांत, अवयव,

तर्क, निषेध, वाद, जल्प, विर्तवी,

हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रह-

स्थान ।

पे० १०९ (सं.) पूजाके सोलह,

उपचार, आवाहन, आसन, पाद,

अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र,

यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप,

नैवेद्य, दक्षिणा, प्रदक्षिणा, और

मंत्रपुष्पांजलि ।



शेखरशतक ( सं. ) शीघ्र संस्कार  
गर्भावधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन,  
जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण,  
अक्षप्राशन चूडाकर्म, कर्ण वेध,  
उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन,  
विवाह, धानप्रस्थ संन्यास, और  
अंत्येष्टि ।

स

सम्बन्धसंवां व्यंजनवर्ण, इसका  
उच्चारण स्थान दन्त है । गुजराती  
वर्णमालाका ४३ वां अक्षर ।

संक्षिप्त ( वि. ) न्यून, अल्प,  
घोड़ा, घटाया हुआ, कम किया  
हुआ । [ सारणीग ।

संक्षे ( सं. ) न्यूनता, अल्पता,  
संज्ञा ( सं. ) नाम, आख्या, अभि-  
धान धेय, सुखितनता

संधारण ( क्रि. ) संहारण करना,  
नाश करना, संहार करना, नष्ट  
करना ।

संयम ( सं. ) बंधन, इन्द्रियादि  
निग्रह, रोक, अवरोध, नियम ।

संयमन ( सं. ) संयम, नेम, नियम  
व्रत, इन्द्रिय निग्रह ।

संयुक्त ( वि. ) सम्बन्धयुक्त, मिल  
हुआ, सटा हुआ, जुड़ा हुआ, संबो-  
धात्मक ।

संयुक्त ( वि. ) संबोगप्राप्त, मिल हुआ ।

संयोज ( सं. ) भेद, मिश्रण,  
सम्बन्ध विशेष, अवाप्तकी प्राप्ति,  
मेलन, जोड़ना, सम्मिश्रण, जीपुक्तों  
का विलस संबोग, ऐक्य, भेद ।

संयोजीकृषु ( सं. ) मिलाना, मि-  
श्रण करना, जोड़ना ।

संयोजीभण ( सं. ) वह जादी जो  
दो समुदायों को मिलाती हो ।

संयोजीभूमी ( सं. ) वह सड़की  
जमीन जो दोबदे प्रदेशों को मिला-  
ती हो । [ संयुक्त ।

संयोजित ( वि. ) जोड़ा हुआ,

संरक्ष्य ( सं. ) पाठन, रक्षा,  
बचाव, आश्रय, आभार, ओट,  
छांइ । [ हुआ ।

संरक्षित ( वि. ) रक्षित, बचाया

संलभ ( वि. ) संयुक्त, बोगप्राप्त,  
घटित, भिन्न हुआ, लगा हुआ ।

संवत् ( सं. ) साल, वर्ष, सन्,  
विक्रमीय वर्ष ।

संवत्सर ( सं. ) वर्ष, संवत् बरस  
ये ६० हैं, प्रभव, विभव, शुक्र,  
प्रमोद, प्रजापति अंसिर, श्रीमुख,  
भाव, धान, ईश्वर, बहु धान्य,  
प्रयाची, विक्रम, वृष, विप्रभानु,  
शुभानु, तारण, पौष, जम्भव,

सर्वचित, सर्वधारि, विरोधी, विकृति, कर, नन्दन, विजय, जय मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्ब, विलम्ब विकारी, शार्ङ्गरी, प्लव, शुभकृत, सोमन, क्रोधी, विशावसु, परामय लवंग, किलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिंगल, काळयुक्त, सिद्धांश, रौद्र, दुर्माति, दुर्दुभि, रुधिरादगारी, रक्षाक्ष, क्रोधन, जार क्षय ।

संवरण ( कि. ) ढकना, आच्छादित करना, समेटना, आवरण करना । [ वृद्धिगत ।

संवर्द्धित ( वि. ) बढाहुआ, वर्द्धित संवृद्धि ( सं. ) बाहुल्यता, पुष्कलता, आबावी । [ चित, संभाषण ।

संवाद ( सं. ) सन्देश, चर्चा, बात-संशय ( सं. ) सन्देह, चिन्ता, भय, शक, अनिर्णय, वहम, अन्देश ।

संशयार्थक ( वि. ) वहमी, शकी ।

संशुद्धि ( वि. ) स्वच्छता, पवित्रता ।

संश्रय ( सं. ) आश्रय, सहारा, आधार, टेका । [ आधारयुक्त ।

संश्रित-श्रुत ( वि. ) प्रष्टिवाला,

संशोधन ( सं. ) परिमार्जन, प्रक्षासन, शुद्धिकरण, सफाई ।

संसर्ग ( सं. ) स्पर्शा, संयोग, जुड़ना, निकट सम्बन्ध, संगत, मैत्री ।

संसर्ग ( वि. ) व्यवहार रखने-वाला, मित्र, सार्वा, सम्बन्धी ।

संसार ( सं. ) जगत्, जय, गमना-गमनस्थान, मिथ्यासे उत्पन्न वा-सना, वह अदृष्ट जो देहको आरंभ करनेमें हेतु है, विश्व, दुनिया, पृथ्वी, आलम, मनुष्यसृष्टि, दुनियादारी, जीपुत्रादि, जन्ममरण-आदि, एहस्य, आवागमन ।

संसार भांडवे । ( कि. ) विवाह करना, माया जालमें फँसना ।

संसार तरवे । ( कि. ) सांसारिक कार्योंको अच्छी तरह चलाना और ईश्वरको जानना ।

संसारसागरभा ३५५ ( कि. ) पापी होना, भवसागरमें डूबना, सांसारिक, भ्रमजालमें फँसे रहना ।

संसार तरवे । ( कि. ) सुखदुःख का अनुभव होना ।

सांसारिक ( वि. ) लौकिक, ऐहिक, सांसारिक, संसार सम्बन्धी ।

संज्ञा ( वि. ) बरबारी, सहस्रों,  
संसार सम्बन्धी, संसारका ।

संज्ञा ( सं. ) वह ' किमार्कम्  
जिसके करनेसे मनुष्य दुःख होकर  
उत्तर पाता है, धर्मविधि, अनुभव  
बन्ध आत्माका गुण विशेष, साक्षा  
भ्याससे उत्पन्न ज्ञान, धर्माधानादि  
विद्या समूह, प्रतिबन्ध विनियोग  
वस्तुओं अभिषेक, संकट, दुःख,  
कष्ट, शुद्धता ।

संज्ञा ( वि. ) पवित्र, पावन, श्रेष्ठ ।

संज्ञा ( सं. ) आदिभाषा, व्याकरणादि  
संस्कार प्राप्त आर्यभाषा, निर्वाण  
भाषा, पाणिन्यादिकृत व्याकरण के  
सूत्रद्वारा निष्पन्न शुद्धसन्द ( वि. )  
संस्कारप्राप्त, पकाहुवा, शोधित,  
साफ कियाहुवा ।

संज्ञा ( सं. ) मंडल, समाज,  
व्यक्ति, अंत, आखिर ।

संज्ञा ( सं. ) पासका प्रदेश,  
राज्य, मुल्क, राजधानी ।

संज्ञा ( वि. ) स्थापित करनेवाला  
कायम करनेवाला ।

संज्ञा ( सं. ) स्थापन, कायम  
करना, जमाना, बैठाना ।

संज्ञापित ( वि. ) बैठवाहुवा,  
कायम कियाहुवा स्थापित ।

संज्ञा ( सं. ) नाव, प्रलय, विमल  
अमृत, ज्ञान, उत्प्रेक्ष, वधाव, संघट,  
जवा, कतू ।

संज्ञा ( वि. ) नासकरना, कतू  
करना, बर्बाद करना, मिटाना ।

संज्ञा ( सं. ) साम्य, निकटता,  
संसर्ग, कर्मकाण्ड प्रतिपादक वेद-  
का एक भाग विशेष, सूत्रों श्लोक  
का कमपूर्वक एकीकरण, वेदकी  
श्रुतियोंके शब्दोंको सन्धि के  
नियमानुसार मिलानेका नाम,  
वेदकीशाखा, वैदिक प्रकरण,  
किसी विषयका संग्रह ।

संज्ञा ( वि. ) जैना हुआ, ताना  
हुआ, आक्रान्त, एकत्रित ।

स ( अ. ) साथ, सह, ( वि. )  
अच्छा, उत्तम, ठीक, ( सं. ) स्व,  
सुद्धा, अपना ।

संज्ञा ( सं. ) बरजी, दर्जी, कपड़ा  
छीनेवाला, कबूल, मंजूर, स्वीकार,  
( वि. ) तरहका, डंगका, तर्जका,  
अनुरूप । [ मित्र ।

संज्ञा ( सं. ) सखी, ( स्त्री )

संज्ञा ( वि. ) समी, सव, सारा,  
सम्पत्त, सर्व, सम्पूर्ण, समस्त ।

संज्ञा ( वि. ) खींचने बांधना,  
जकड़ना, कसना ।

संकेत ( सं. ) कालविशेष, ( गार्गीमें )  
 बाकुन, बाली, शब्द, वाणी।  
 संकेतकन्दरीयां ( सं. ) कन्दविशेष,  
 मीठा जमीकन्दविशेष, शकरकंदी।  
 संकेतश्च ( वि. ) अवयवयुक्त।  
 संकेतश्च ( वि. ) दयालु, करुणायुक्त।  
 संकेतः ( सं. ) हुंड़ी स्वरकार की  
 उसके दामोंका ठहराव, सिकराई।  
 संकेतभी ( वि. ) भाग्यवान, भाग्य-  
 शास्त्री, सुकर्मा। [ हो, कियायुक्त।  
 संकेतः ( वि. ) जिस क्रियाके कर्म  
 संकेत ( वि. ) सारा, समस्त,  
 समूचा, पूरा, सब, सम्पूर्ण।  
 संकेतः ( सं. ) एक प्रकारका ऊनी  
 पतला कपड़ा।  
 संकेतगुणसम्पन्न ( वि. ) सर्वगुणागार  
 गुणराशि, गुणनिधि।  
 संकेतः ( वि. ) इच्छायुक्त, कामना  
 सहित, फलदान। [ रस्म।  
 संकेत ( सं. ) ढंग, रीति, तर्ज,  
 संकेतः ५४५। ( कि. ) मान रहना,  
 टेक रहना, इज्जत रहना।  
 संकेतः ५७५। ( कि. ) विवेक होना,  
 ज्ञान होना, चतुर्दा आना।  
 संकेतः ( सं. ) तारको सीधा रखने  
 के लिये तानेके अन्दर डाली हुई  
 लकड़ीकी चीपट।

संकेतश्च ( वि. ) कारवयुक्त, कामना  
 सहित।  
 संकेतः ( सं. ) बहुतही सवेरे, तड़के,  
 जल्दी, अत्यन्त भिनुसारे, सुकाळ,  
 अच्छा समय।  
 संकेत ( अ. ) एकवार।  
 संकेतः ( वि. ) बहुतही नाजुक,  
 सुकुमार, अत्यंत कोमल।  
 संकेतः ( सं. ) उत्तेजना, उत्साहना।  
 संकेतः ( सं. ) मिश्रका पात्र विशेष।  
 संकेतः ( सं. ) गुस्सेवाला, कोपी।  
 संकेतः ( वि. ) नया, और उम्दा,  
 सरस, मजेदार, अच्छे सिक्केका,  
 लोहेकी एक जाति।  
 संकेतः ( सं. ) खांड, चीनी, चर्करा।  
 संकेतः ५१२ ( सं. ) शकर खानेवाला।  
 संकेतः २२१। ( सं. ) खरबूजा, पल्ल  
 विशेष खरबूज।  
 संकेतः ५१०। ( सं. ) आटेकी मीठी  
 चाखूनी जो ची या तेळमें पकतीहै।  
 संकेतः ( वि. ) दड, काठिन, कठोर  
 मजबूत। [ चेहरा, शक्ल।  
 संकेतः ( सं. ) सिका, मुहर, छार,  
 सभ ( सं. ) सुख, आनंद।  
 संकेतः ( वि. ) सयाना, समझदार।  
 संकेतः ( वि. ) काठिन, कठोर, दड,  
 मजबूत, मुरिकल, मराहुवा, निर्दोष  
 बालिम, करी।

संज्ञा ( सं. ) कठिनार्द्र, कठोरता,  
जुलूस, दृढता ।

संज्ञा ( सं. ) स्नेही, साथी, दोस्त,  
मित्र, बन्धु, संगी ।

संज्ञावत् ( सं. ) उदारता ।

संज्ञी ( सं. ) सहेली, संगिनी,  
वयस्या, आळी, मित्र, ( स्त्री )  
( वि. ) उदार दानशाल ।

संज्ञीनेलास ( सं. ) उदार पुरुष,  
भलाआदमी ।

संज्ञीभाव ( सं. ) श्री रूपसे कृष्ण  
उपासना; औरतपना ।

संज्ञुन ( सं. ) वागी, भाषण, शकुन  
विजय, अर्ज, स्वीकृति । [ दोस्ती ।

संज्ञ ( सं. ) भाईबंदी, मित्रता,

संज्ञे ( सं. ) भाईबन्द. मित्र,  
दोस्त, स्नेही ।

संज्ञे ( सं. ) ब्रियोंके बगलमें खो-  
सनेका साड़ी या लघुदेका पल्ला ।

संज्ञ ( सं. ) दीपककी गर्मा, अग्नि ।

संज्ञ ( सं. ) पता, खबर, चिन्ह,  
पैर, खोज, गंध ।

संज्ञी ( सं. ) सिधड़ी, बरोसी,  
आग रखनेका पात्र विशेष ।

संज्ञीसंगभाव ( वि. ) आग  
सुलगाना ।

संज्ञ ( सं. ) गेहूँका आटा पूर्ण ।

संज्ञ ( सं. ) छन्दशास्त्र वर्णित  
गण विशेष, दो लघु और एक गुरु  
अक्षर, ॥ ५, पीछा, पोठ ॥ नाता ।

संज्ञ ( सं. ) सगाई, सम्बन्ध,

संज्ञ ( सं. ) हठमें लगी हुई कौल  
विशेष ।

संज्ञ ( सं. ) दो बेल या दो  
घाड़ों की छायादार गाड़ी विशेष ।

संज्ञाभिज्ञा ( सं. ) देवी-  
स्थापिनी एकादशी, भादवा सुवी

११ डौल म्यारस, रथयात्रा  
एकादशी, जलमूलनी एकादशी ।

संज्ञ ( सं. ) अनुकृता, अवकाश,  
समय, फुरसत, अवसर, स्थान ।

संज्ञ ( वि. ) जहरयुक्त, जहरीला,  
( सं. ) इसनामका सूर्यवंशी राजा ।

संज्ञ ( सं. ) मौका, अवसर ।

संज्ञ ( वि. ) गर्भयुक्त, गामिन ।  
पेटसे, ( सं. ) सहोदर भाईबहिन  
विगेरः एकमाजाये ।

संज्ञ ( वि. ) सम्बन्धी, नातेदार ।

संज्ञ ( सं. ) सम्बन्ध, प्रतिसम्बन्ध,  
विवाह, विवाहका पूर्व सम्बन्ध ।

संज्ञ ( सं. ) अल्प वयस्क, बालक,  
कमउम्रका आदमी, नादान ।

संज्ञ ( वि. ) सहोदर, एक उदरसे  
पैदाहुए कुटुंबी, नातेरिस्तदार ।

( सं. ) एक स्वनके सम्बन्धमेंसे  
कोईभी । [ नातेरिस्तदार ।

संज्ञसागपुं ( कि. ) मित्र संबंधी

संज्ञ ( वि. ) गुणसहित, गुणविशिष्ट

संज्ञभक्ति ( सं. ) आकार बगैरे

गुणवाले ईश्वरकी भक्ति ।

संज्ञोपासना ( सं. ) ईश्वरको साकार  
मानकर उसकी उपासना ।

संज्ञात्र ( वि. ) एकही गोत्रका,

सम्बन्धी, कुटुंबी, एकही वंशमें  
उत्पन्न ।

संज्ञ ( वि. ) घना, सान्द्र, निविड़

मिलाहुआ, खूबसटाहुआ ।

संज्ञ ( वि. ) सारा, समस्त, संपूर्ण

संज्ञ ( सं. ) कष्ट, विघ्न, दुःख,

खींच, विपाति, आपद, मोड़ ।

संज्ञाभक्ष ( वि. ) जगहकी कोताई ।

संज्ञावपुं ( कि. ) मिचना, दबना

जगहकी तंगीमें होना ।

संज्ञ ( सं. ) वर्षोंका नियम वि-

रुद्ध मिलान, मिश्रण, इसनामसे

प्रसिद्ध एक अर्थात्कार ।

संज्ञ ( सं. ) खींच, तान, बलराम

शेषनाम ।

संज्ञरी ( सं. ) नई बिगड़ीहुई कन्या

वृथिता लक्ष्मी ।

संज्ञान ( सं. ) एकीकरण,

संग्रहण, इकट्ठा करना, जोड़ना,

जोड़ ।

संज्ञ ( सं. ) इच्छा, इरादा,

क्याल, मानसिक कर्म, चाह,

अभिलाष, मनसूबा, इरादा, मनका

उद्देश ।

संज्ञापिज्ञ ( सं. ) मनकी अ-

स्थिर दशा, चितका ठांवा डोलपण ।

संज्ञ ( वि. ) समान, समान,

तुल्य, तदूप, समीप ।

संज्ञ ( वि. ) मिलाहुआ, मिश्रण

सकटा, तेग, संकेत, निबिड़, घन ।

संज्ञ ( सं. ) स्तुति, बक्षान,

प्रशंसा देवगुण वर्णन ।

संज्ञित ( वि. ) संज्ञित, पाँडे

हटाहुआ, सिकुड़ाहुआ, मुसीबा-

हुआ, लज्जित, सुप्त, ओछा जेडा ।

संज्ञ ( वि. ) इशारा, चिन्ह,

घोतेन, बायदा, सैन, इक्षित ।

संज्ञान ( वि. ) इशारेके

लिये, चिन्हरूप ।

संज्ञान ( वि. ) निर्दिष्टस्थान,

इशायकी हुई जगह, गुप्तस्थान ।

संज्ञ ( कि. ) ढाकना, बंदकरना,

रोकना, एकत्र करना ।

संज्ञा ( सं. ) काज, कज्ज, सिद्ध  
सहम, शिखर, मय, पाँछे हठना,  
लोछाई, भीड़, सफाई ।

संज्ञान ( सं. ) सिद्धिगनेकी क्रिया,  
कमकरनेकी क्रिया ।

संज्ञातुं ( कि. ) सकुचाना, कम  
होना, चिरजाना, शरमाना,  
बदजाना । [ करना ।

संज्ञायुं ( कि. ) मूंदना, इकट्ठा-  
संज्ञायुं ( कि. ) जागृत करवा,  
भड़काना, उकसाना, उत्तेजित  
करना ।

संज्ञानिवेगणरहेयुं ( कि. ) ल-  
वाई करके खुद अलग होजाना ।  
आग लगाके दूर भागजाना ।

संज्ञाश्री ( सं. ) उत्तेजना ।

संज्ञाश्री ( सं. ) प्रहोंका एक राशिमे  
दूसरी राशिमें गमन, परिवर्तन ।

संज्ञात ( सं. ) उत्तरायण, सूर्य  
जिसदिन मकर राशिमें प्रवेश  
करता है, उत्तलष्ट, साहुकारी ।

संज्ञाति ( सं. ) मेळ, प्रहोंका एक  
राशिसे दूसरी राशिपर जाना ।

संज्ञाति ( सं. ) पानी छानने के  
बाद कपडेमें रहाहुआ कचराकुड़ा  
बीब इत्यादि ।

संज्ञायुं ( कि. ) संकित होना,  
करना । [ संभ, काज, संका ।

संज्ञावे ( सं. ) बरूरत, हाजत,

संज्ञा ( वि. ) जोगिना जासके ।

संज्ञित ( वि. ) कमकिवाहुना,  
मुस्तसर गृहांत, कम, थोड़ा ।

संज्ञाप ( सं. ) थोड़ा, अत्र, छोटाई ।

संज्ञा ( सं. ) गिनती, गणना,  
अंक, जोड़, परिणाम, ( वि. )  
अंक सूचक, ( सं. ) घृणा नफरत ।

संज्ञायाम्यक ( वि. ) सख्या सूचक,  
संख्यागिनतीबतानेवाला । [ विशेषण ।

संज्ञाविशेषयु ( सं. ) संख्यारूप

संज्ञा ( सं. ) साथ, संयोग, मेळ,  
स्पर्श, मित्रता, प्रेम, लगाव, संस्पर्श  
समागम, चेप, संभोग, ( स्त्रीसे )  
योग, भेट । [ भोग करना ।

संज्ञावे ( कि. ) मेळकरना, सं-

संज्ञावे ( कि. ) दोस्तीछोड़ना,  
साथ छोड़ना ।

संज्ञा ( सं. ) मिश्रण, मेळ, भेळ ।

संज्ञा ( सं. ) दोस्ती, सहेबत,  
संगति, मेम, मिल, प, मेळ, भेधुक  
मुलाकात, ( वि. ) साहसती ।

संज्ञा ( सं. ) बज्रहृदय, पाहन  
हृदय, पत्थर के समान कठोर  
दिल, कठोर, निर्दय ।

संभ्रम ( सं. ) दो या इससे अधिक का मेळ मिलाप, सन्धि, भीड़, टट्ट, भेंट, प्रेमपूर्वक मिलन ।

संभ्रात-भ ( सं. ) साथ, संग, सोहबत, मेळ, मार्गमें एक दूसरेका साथ ।

संभ्राती ( सं. ) सोहबती, साथी, मित्र, संगकरनेवाला, स्नेही ।

संभ्रीत ( सं. ) बहुतसे मनुष्योंका मिलकर गायन, गानाबजाना और नाचना, “ गीतंदाद्यं तथानृत्यं त्रयं संगीतं मुच्यते ” ( वि. ) पत्थर समान कठोर, मजबूत, लठ्ठ, जोरावर ।

संगे ( अ० ) साथमें, संगमें ।

संगेनरभर ( सं. ) पत्थर विशेष, सफेद अतिका पत्थर विशेष ।

संभ्रं ( सं. ) इच्छा करना, संचय, समूह, समुदाय, एकत्रित ।

संभ्रंशु-धरंशु ( सं. ) अतिसार नामक रोग, दस्तोंका रोग ।

संभ्रंस्थान ( सं. ) जिस जगह देश देशके पदार्थोंका संग्रह हो, संग्रहालय, प्रदर्शनीका स्थान, कोष स्टोर ।

संभ्राम ( सं. ) बुद्ध, लडाई ।

संघ ( सं. ) जम्हा, टोळा, समुदाय जमाव, समूह, यात्रा करनेवालोंका टोळा, काफिला ।

संघादवे ( कि. ) आगे होकर लोगोंको यात्राके लिये लेजाना ।

संघट ( वि. ) भीड़में आमाहुवा, मिलाहुवा, मजबूत, दब ।

संभरं ( कि. ) इकट्ठाकरना, संग्रह करना, यत्न पूर्वक रखना, दाखिल करना, आदर पूर्वक रखना ।

संघर ( सं. ) फस्त खुलवाना, खून निकलवाना, ( रोग विनाशार्थ )

संघवी ( सं. ) संघका सुखिया, संघ निकालने वाला ।

संघाडे ( सं. ) चर्च, खराब, संघ, जैन मतानुसार साधुका आज्ञा के मुताबिक जलनेवाला साधु तथा साधुका समुदाय ।

संघात ( सं. ) समूह, जत्था, साथ ।

संघातभेद ( कि. ) अच्छी संगति करना ।

संघातनीमारी सासरेमछ ने २६३ आशी ६७१२३ ( = ) व्यर्थका परि-भ्रम करना ।

संघाथी ( वि. ) साथी, संगी, सोहबती ।

संघाथे-ते ( अ० ) साथमें, संगमें ।



सम्बन्धित ( वि. ) सम्बन्ध, स्थावर,  
और जंगम सहित ।

सम्बन्धितरेतुं ( कि. ) विनाकिरी  
विश्रवाधाके काम पूरा पढ़ना ।

सम्बन्धितरेतुं ( कि. ) आरपार  
उत्तर जाना, प्रवेश होना, सम्बन्ध  
फैलजाना ।

सम्बि ( सं. ) इंद्राणी, इन्द्रकी स्त्री ।

सम्बिष ( सं. ) प्रधान, मंत्री, वर्ज, र  
अमाल्य, सलाहकार ।

सम्बेदन ( वि. ) चेतना युक्त, साव-  
धान, जागृत, ज्ञानवान ( सं. ) जीव ।

सम्बैध ( सं. ) वस्त्रसहित, कपड़ोंके  
स. य. [ नहाना ।

सम्बैधनान ( सं. ) वस्त्र सहित

सम्बैठ ( अ० ) आवाद, प्रमाणिकता  
पक्का, दृढ़ ।

सम्बैठुं ( वि. ) समस्त, सारा,  
पूरा, सब, तमाम, सम्पूर्ण ( अ० )  
बिलकुल । [ चलनवाला ।

सम्बैधित-त्र ( वि. ) अच्छे चाल

सम्बैधितानंद ( सं. ) नित्य ज्ञान स्वरूप  
और सुखमय व्रद्ध । [ दृढ़, संत्यं ।

सम्बु ( वि. ) सच्चा, खरा, पक्का,

सम्ब ( वि. ) तैयार, काटिबद्ध;  
उद्यत ।

सम्ब ( वि. ) सावधान, जागृत;  
होशियार, सचेत ।

सम्ब ( वि. ) मजबूत, दृढ़, भारी,  
पासपास, निकट, ठठबैठ न सके  
ऐसा, मरीहुआ, पक्का, पारपड़ने  
लायक ।

सम्बन्धित ( सं. ) सहितमार ।

सम्बन्धितपुं ( कि. ) मजबूत पकड़ना ।

सम्बन्धितपुं ( कि. ) मर जाना,  
दबजाना ।

सम्बन्धितपुं ( कि. ) धमकाना ।

सम्बन्धिता ( सं. ) अलमसा, सज्जनता  
सुजनता ।

सम्बन्धित ( सं. ) पूर्ववत् ।

सम्बन्धित ( सं. ) सखी, आळी, प्यारी,  
प्रिया, कान्ता, भायली ।

सम्बन्धित ( कि. ) सजना; हथिया  
बन्द होना, शृंगार करना, धार  
करना, शान पर चढ़ाना, तैयार  
होना ।

सम्बन्धित ( वि. ) अलस्युक्त, गीटा, आळी

सम्बन्धित ( सं. ) अश्रुयुक्त नेत्र,  
पानीसे डबडबाई हुई आँखें ।

सम्ब ( सं. ) शिक्षा, शासन, दण्ड,  
नसीहत ।

सम्बन्धित ( सं. ) तप्यारी । [ कुशेत्पन्न ।

सम्बन्धित ( वि. ) कुलीन, उच्च

संज्ञाति-टीव ( वि. ) अपनी जाति-  
वाक्य, समान जातिकी ।  
संज्ञापी ( सं. ) तन्दुरुस्ती,  
आरोग्यता । [ इत, हिदाबत ।  
संज्ञा-शाय ( सं. ) शिक्षा, नसी-  
संज्ञापी ( सं. ) अस्तुरा, उस्तुरा,  
छुरा ।  
संज्ञावपु ( कि. ) सज्जित करना,  
गुंवार करना, अलंकृत करना,  
धार करना । [ काबिल ।  
संज्ञावार ( वि. ) योग्य, लायक,  
संज्ञित ( वि. ) सज्जित, सजा  
हुआ, अलंकृत, सज्जन ।  
संज्ञाव ( वि. ) जीवित जीवयुक्त, प्राणी ।  
संज्ञावन ( सं. ) पुनर्जीवन, ( पि. )  
जीववाला, पुनर्जीवित ।  
संज्ञावनपाथी ( सं. ) ऐसा जल  
जिसका कभी अंत न आवे ।  
संज्ञावन ४२पु ( कि. ) जीवित  
करना, जिन्दा करना ।  
संज्ञावन औपधी ( सं. ) ऐसी बूटी  
जो काटने परभी जीवित रहे ।  
संज्ञावाशायथु ( सं. ) निर्जीव वस्तुमें  
सजीव वस्तुके गुणोंकी कल्पना  
करना, चैतन्यत्व रूपक ।  
संज्ञावपी ( सं. ) संजीवनी विद्याविशेष ।

संज्ञावता ( वि. ) संयुक्त निष्ठा हुआ ।  
संज्ञोड ( वि. ) जोड़ासाहित,  
( जी पुरुष ) ।  
संज्ञोडु ( सं. ) पतिपत्नी, जीपुरुष ।  
संज्ञा-निष्ठा ( वि. ) सजा हुआ,  
कठिबद, उद्यत ।  
संज्ञान ( वि. ) सम्म, कुलीन,  
खानदानी, सुषद, सदाचारी ( सं. )  
कुलवान पुरुष, सदाचारी पुरुष,  
प्रियजन । गुंवार ।  
संज्ञानता-ध ( सं. ) साधुता,  
कुलीनता, शिष्टता, सम्मता ।  
संज्ञा ( सं. ) सेज, पलंग, पर्यंक,  
सट्टा, मृत पुरुषके नामपर उसकी  
मृत्युके तेरहवें दिन खाट बिछीने  
आदिका दान विशेष ।  
संज्ञ ( सं. ) प्रबन्ध, युक्ति, तज-  
बीज, सांवा, डिजाइन ।  
संज्ञथ ( सं. ) संग्रह, ढेर, इकट्ठा,  
एकत्रित, स्टॉक, बड़ी संस्था ।  
संज्ञरपु ( कि. ) मातृ प्रवेश होना,  
रस छोड़ना, ऊपर रखना, छो-  
चना, मकानके कबेलु-खपरे ठीक  
करना, भ्रमण करना ।  
संज्ञा ( सं. ) एक कारकाकार ४

संज्ञा ( सं. ) रास्ता, तंगमार्ग,  
हथर उथर फिरना, घुसकर कै-  
सना, प्रवेश, गमन, भ्रमण,  
पर्यटन ।

संज्ञा २ पुं ( कि. ) बालना, डँकेलना,  
थरक कबेदू सपरे ठीक करना ।

संज्ञा ३ शि ( सं. ) दूती, दलालिन,  
कुटनी, सन्देश हरण करनेवाली ।

संज्ञा ४ ( वि. ) चंचल, क्षणिक,  
क्षणभंगुर, अस्थिर, भ्रान्त,  
गतेशील ।

संज्ञित ( वि. ) संगृहीत, एकत्रित  
इकट्ठा किया हुआ, बटोरा हुआ ( सं. )  
पूर्वजन्ममें भोगनेसे बचा हुआ कर्म ।

संज्ञे ( सं. ) सांचा, यंत्र ।

संज्ञा ५ ( सं. ) क्षार विशेष, यह  
पापहोमें और दाढ़ बगैरमें बाल  
जाता है ।

संज्ञम ( सं. ) दीक्षा, वैराग्य, बोध ।

संज्ञ-काल ( सं. ) सांझ, संध्या-  
काल, सार्यकाल । [ मगजी ( बड़ी ) ]

संज्ञप-य ( सं. ) संज्ञाफ, झूठ,

संज्ञभी ( सं. ) एक जातिका साधु ।

संज्ञवनी ( सं. ) एक प्रकारकी  
औषधि ।

संज्ञेभ ( सं. ) संधि, दैवयोग,  
दैवी शक्तता, होमहार, भावी,  
इसिकाक, भेक, भिन्नप, योग,  
संयोग ।

संज्ञेभी ( सं. ) चरबारी साधु,  
गृहस्थ साधु, साधुओंकी जाति-  
विशेष ।

संज्ञेरी ( सं. ) एक प्रकारका मे-  
हूँका निष्ठ पदार्थ, मीठी मठड़ी ।

सठ ( सं. ) सेठ, गंज, समूह, एक  
वस्तुमें एक समाजके ऐसा समूह ।  
( अ० ) झटपट, देखतेही देखते ।

सठ ३ पुं ( कि. ) चल देना, डरक  
जाना, अदृश्य होना, निकल जाना ।

सठ ४ पुं ( कि. ) भाग जाना,  
निकल जाना ।

सठ ५ पुं ( कि. ) मारना, ठेकना,  
पीटना, ( सूईसे ) होरे बालना,  
चोरना । [ ऐसी गांठ, छोटी चुड़िया ]

सठ ६ पुं ( सं. ) झट झुल जावे

सठ ७ ( सं. ) लकड़ीविशेष ।

सठ ८ पुं ( अ० ) गड़बड़ सड़बड़,  
उलट झुलट, हथौठधर, जहाँ  
तहाँ, गड़बड़ थोड़ाका ।

सठ ९ ( वि. ) निश्चित, ठीक ।

सठ १० ( कि. ) भिड़ना, भागना ।

स३३३ ( सं. ) कोढ़े, हुंटर वगैरः की  
धारका सम्बन्ध ।

स३३३३ ( अ० ) झट, एकदम ।

स३३३ ( वि. ) टीकासहित, व्याख्या-  
युक्त, अवसहित ।

स३३३ ( सं. ) सहा करनेवाला ।

स३३३ ( अ० ) फौरन, तुरन्त,  
एकके बाद एक, नीचे ऊपरी ।

स३३ ( सं. ) पायदेका चन्धा, एक  
प्रकारका जुआ । चोरी, बदमाशी  
द्वारा हरण । [ शिबिल ।

स३३ ( वि. ) डोला, नरम, पोचा,

स३ ( अ० ) झटपटसे, ( वि. )  
स्थिर, अवल ठहरा हुआ, बन्द  
( सं. ) देखो स३ ।

स३३ ( सं. ) मार्ग रास्ता, सीधा  
बनाया हुआ पथ, रोड । ( वि. )  
स्थिर, स्तम्भित, निस्तब्ध ।

स३३ ( सं. ) पतके पदार्थको खाते  
वृक्षका शब्द, सुरङ्का, सबङ्का ।

स३३३ ( वि. ) बार्द, बार्दका  
संबन्ध, ( व्यापारियोंमें )

स३३३ ( सं. ) अपनी बातको  
पुराग्रह पूर्वक न छोड़नेवाला ।

स३३ ( कि. ) गलना, सड़ना,  
खराब होना, गीली वस्तुका क्षय  
होना ।

स३३३ ( कि. ) उबलना, उकलना ।

स३३३ ( अ० ) जल्दीसे, सपाटेसे ।

स३३३-३ ( वि. ) सङ्कट, १०,  
संख्याविशेष । [ सट, शीघ्र ।

स३३ ( अ० ) जल्दीसे, फौरन,

स३३३ ( अ० ) झटपट केकर ।

स३३ ( सं. ) बाहुककी भावाज,  
पवन के चलनेका शब्द ।

स३३ ( सं. ) बिगाड़ा, बिगड़नेका  
कारण, अड़ोसी पड़ोसी, परोस ।

स३ ( सं. ) पाळ, बादवान,  
( जहाजका ) ( वि. ) जड़,

स्थिर, चुप । [ गति विशेष, दुःख ।

स३३ ( सं. ) नाकके आसकी

स३३ ( सं. ) घूँघट, पटभोट,  
छेदा, औरतोंके मुखकी आँख

उनकी ही साँसे ।

स३३३ ( कि. ) भ्रूंगारकरना,  
अलंकार पहिनना, घोषितहोना ।

स३३३ ( सं. ) भ्रूंगार, गहना,  
भ्रूंगार सोलह है, मञ्जन, सिन्दूर,

अंगशुषि, दिव्यवस्त्र, महावर,  
केयविष्मास, ठोड़ीपर तिल, माथे

पर बिन्दी, मेहदी अरगजालेपन,  
भूषण, सुगन्ध, मुखराग,

दंतपत्र, अथराग और काजल ।

संशुभारु ( कि ) सजाना, शो-  
मित करना, बेबर कपड़े पहिनना  
संशुभे ( सं. ) बीजांकुर, अंकुर ।  
संशुभ ( सं. ) सुरंग, विवर,  
( वि. ) अंकुरयुक्त । [ सन सनाहट ।  
संशुसंशु ( सं. ) सनसन सार,  
संशुसंशुपुं ( कि. ) सनसनाना,  
सन सन शब्द करना ।  
संशुसंशुह ( सं. ) सनमनाहट,  
तेजी कीगति का सूचक शब्द ।  
संशुभारु ( कि. ) घोड़ा या बैल  
को चखानेके लिये रस्सीको खी-  
चना डीछीदेना प्रभृति । इशारा  
करना, संकेतकरना, सैनकरना ।  
संशुभारे ( सं. ) इंगित, इशारा,  
सैन, संकेत, चिन्ह ।  
संशुभुं ( वि. ) सनकाबनाहुआ  
बख, पाटबख, सानया कपड़ा ।  
( वि. ) सावधान, चतुर,  
होशियार ।  
संशुभि ( सं. ) माता, मा, जननी ।  
संशुभिने ( सं. ) पिता, बाप, जनक ।  
संशुभ ( सं. ) पाकाना, शीन  
कूप, टही, शीबगृह ।  
संशु ( वि. ) सार, भसनी, वास्त-  
विक, अचछा, पूज्य, भेष्ट, उत्तम,

शुद्ध । ( सं. ) सारय, सचार्थसार, रस ।  
संत्यक्तपुं ( कि. ) सती होनेके  
लिय झोको सतचटना ।  
संत्युक्त ( सं. ) कृतमुक्त, प्रथममुक्त ।  
संत्य ( अ० ) निरन्तर, हमेशा,  
सदाकाळ, सदैव, सर्वदा ।  
संत्य ( सं. ) जुलम, त्रास, परा-  
काष्ठा, सितम ।  
संत्यभुज्जरी ( कि. ) जुलमकरना  
संत्यभी ( सं. ) बीजक, चाळान,  
हनव्हाइस ।  
संत्य ( सं. ) झकड़, रेल, लहलह ।  
संत्य ( सं. ) भितार, बीन बाज-  
विशेष, तारबाज ।  
संत्यारे ( सं. ) प्रह, नमीब मास्य ।  
संत्यपुं ( कि. ) सजाना, कट  
देना, चिड़ाना, क्षिप्ताना ।  
संत्ये ( सं. ) सत्यवादी, प्रमाणिक ।  
सती ( सं. ) पतिव्रता, साध्वी,  
पतिको देवसमान माननेवाली स्त्री,  
गायत्री, पार्वती, दक्षप्रजापतिस्त्री  
पुत्री ।  
सतीपुं ( कि. ) सती होना, अपने  
पतिके मरणपर उसने सावही एक  
जिताने जीवितही जलना ।

सद ( वि. ) सचा, सत्य, प्रकट,  
वाहिर, मौजूद । [ बे पहिचान ।

सतोसतीडि ( वि. ) बे ठौर ठिकानेका

सत्कर्म्म ( सं. ) अच्छा काम, उत्तम  
काम, पुण्यकार्य ।

सत्कार ( सं. ) पूजा, सम्मान, आदर  
आगत-स्वागत विवेक ।

सत्कार्य ( कि. ) मानकरना, इज्जत  
करना, स्वागतकरना ।

सत्कामक्षेप ( सं. ) अच्छे कामके  
करनेमें अपना समय गंवाना ।

सत्कर्म ( सं. ) अच्छे काम, सदा-  
चरण, आदर, सम्मान, आतिथ्य ।

सत्तम ( वि. ) अतिउत्तम, अतिसय  
श्रेष्ठ, उम्दा ।

सत्तर ( वि. ) सत्रह, १७ संख्या  
विशेष, उत्तम, ठीक, उचित,  
इच्छानुसार, सत्तम ।

सत्तमशुभा ( कि. ) भागजाना,  
छूटवाना, छू होना ।

सत्ता ( सं. ) अस्तित्व, परक्रम,  
विवचमानता, बल, हकीमी अधि-  
कार, अमल, दन, पैसा ।

सत्ताभाषणी ( कि. ) ताकतवाना  
अधिकार मिलना ।

सत्ताभाषणी ( कि. ) अधिकारदेना ।

सत्ताभाषणी ( कि. ) अधिकार मिलना ।  
सत्ताभाषणी ( कि. ) हुक्म चलाना ।

सत्ताष्ट ( वि. ) सत्तानवे, १७,  
संख्याविशेष, तीनका संकेत,  
बीचमेंसे डीला न हो ऐसा, सस्त,  
तनाहुवा, तंग ।

सत्ताष्टपाया ( वि. ) बेतंगा ।

सत्ताधारी-धीका ( वि. ) अधिकारी  
राजा, बलवान । [ ५७ सत्ताधन ।

सत्ताधन ( सं. ) संख्या विशेष,

सत्तावीस ( वि. ) सत्ताईस, २७ ।

सत्ते ( अ. ) सातवें दिन ।

सत्ते ( सं. ) ताशके पत्तेमेंसे ७  
बिन्दु युक्त किसीभी रंगका पत्ता ।

सत्त्व ( सं. ) मायाके तीन गुणोंमेंसे  
एक गुण विशेष, वह गुण विशेष,  
जिससे शांति, समा, दया, सत्य-  
ज्ञान और नीतिकी वृद्धि होतीहै  
सुखका हेतु प्रकाशक ज्ञान ।

सत्त्वयुथु ( सं. ) सार्वत्रिक गुण,  
प्रकृतिका एक गुण विशेष ।

सत्त्व ( सं. ) सचा, यथार्थ, ठीक,  
निश्चय, मिथ्यानहीं, असल खरा,  
ईश्वर, सत्यग ।

सत्त्वती ( सं. ) सत्ताई, सत्ताधन ।

सत्त्वयुग ( सं. ) प्रथम युग; कृतयुग,

सत्रह लाख ७ दाई हजार वर्षका  
प्रथम काल ( सृष्टि आरंभसे ) :

सत्त्वशैल ( सं. ) ऊपरी सातको-  
कोमें सबसे ऊपरका लोक,  
ब्रह्म लोक । [ ईमानदार, विश्वास ]  
सत्त्वशाली ( वि. ) सबबोलने वाला,  
आत्मशील ( वि. ) जिसकी आदत  
हो हमेशा सत्य भाषण करनेका हो ।  
सत्त्ववर्धन ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा ।  
सत्त्वानाश ( म. ) नाश, विनाश,  
बरबाद । [ बादी, दुर्दिन ।  
सत्त्वानाशनीपाटी ( सं. ) बर-  
सत्त्वार्थ ( वि. ) लरा, सचा, ठाँक ।  
सत्त्वार्थी ( वि. ) संख्या विशेष,  
सत्तासी ८० ।  
सत्त्वार्थीयु\* ( वि. ) सत्तासीके मा-  
लसे सम्बन्ध रखनेवाला ।  
सत्त्व ( सं. ) यज्ञ, देव, स्तुतिमान,  
दान, सदादान, सदावर्त्त । [ सुबा ।  
सत्त्व\* ( सं. ) बड़े राज्यका कोई  
सत्त्वज्ञानी ( सं. ) अन्न दान कर-  
नेका स्थान, सदावर्त्त बटनेकी  
जगह ।  
सत्त्व ( अ० ) अल्पांस, शीघ्रतासे ।  
सत्त्व\* ( सं. ) साधु समागम,  
अच्छी संगति, सुसंगति ।  
सत्त्व\* ( सं. ) अच्छी सोहबत ।  
सत्त्व\* ( वि. ) अच्छे संगवाला ।

सत्त्वपथ ( अ० ) इधरउधर  
बिखराहुआ, डलटपुलट, तिसर  
बितर ।  
सत्त्व\* ( सं. ) इधर उधर फैल-  
नेकी स्थिति, सेनाका बंध ।  
सत्त्व\* ( सं. ) शान्ति, अमन ।  
सत्त्व\* भेशरी ( कि. ) बर-  
राहट होना । [ प्राकीटोळे, काफ़का ।  
सत्त्व\* ( सं. ) साथ, संग, आ-  
सह ( वि. ) " सत् " का रूप  
विशेष । दूसरे शब्दों के साथ  
प्रायः मिलने पर तै-द हो जाता  
है=जैसे सत्त्वगति=सद्गति ।  
सत्त्व\* ( कि. ) मानना, स्वीकार  
करना, कबूलकरना ।  
सत्त्व ( सं. ) गृह, घर, मकान, मंदिर,  
वामस्थान, धाम, भवन, केतन ।  
सत्त्व ( वि. ) दयायुक्त, कृपालु,  
मृदुक, कारुणिक । [ बड़ा, खास ।  
सत्त्व ( वि. ) मुहय, ऊँचा, सबसे  
सत्त्व\* ( सं. ) पहिली भे-  
षाका देवी अमलदार ।  
सत्त्व\* ( सं. ) आम  
मुफ्तारी, आम इजाजत, छूट ।  
सत्त्व\* ( सं. ) छावनीका  
बाजार, कौड़ी बाजार ।

सद्विहङ्ग (वि.) पूर्वोक्त, उक्त, अर्थ  
लिखित, मजकूर । [वक्तृ विशेष ।  
सद्वै (सं.) छोटी बाहोंका एक  
सङ्घ (कि.) अजुकूट आना,  
सहना, माफक आना ।  
सद्वि (वि.) मोटा, दलदार, दल  
सहित, सेनासहित ।  
सदा (अ०) हमेशा, निरन्तर,  
नित्य, रोज, सतत, सर्वदा ।  
सदाशिव (अ०) पूर्ववत् ।  
सदाशिव (सं.) शुद्ध आचरण,  
नेक चालचलन । [ईश्वर ।  
सदानन्द (सं.) सर्वदा आनन्द,  
सदानन्त (सं.) संजन नाम्नी  
चिड़िया, पक्षी विशेष ।  
सदाशिव (अ०) सा स्तन, परा, सदा ।  
सदाशिव (अ०) महजहीमे,  
अकारण, गुंही ।  
सदाशिव (अ०) सब, सारा,  
सम्पूर्ण, हमेशा, नित्य, रोज ।  
सदाशिव (सं.) अनायास, भू-  
खोंको अन्नदान-स्थान ।  
सदाशिव (सं.) शंकर, महादेव ।  
सदा सर्वदा (वि.) हमेशा, नित्य,  
रोजमरह, जबतक ।  
सदी (सं.) सौ वर्षका समय,  
शताब्द, सैकड़ा, शतसंवत्सरी ।

सदीक्षा (अ०) समयपर, वक्तपर,  
वितने समयमें होना चाहिये  
उतनेही समयमें ।

सदैव (अ०) सदा, सर्वदा,  
हमेशा, निरन्तर, नित्य, रोज ।

सदैवित (वि.) देखो सदैव ।

सद्विभक्ति (सं.) मोक्ष, उद्धार,  
निस्तार, त्राण, उत्तमगति,  
छुटकारा ।

सद्युक्त (सं.) अच्छागुण ।

सद्युक्तसम्पन्न (वि.) सद्युक्ती ।

सद्युक्ती (वि.) अच्छे गुणोंसे युक्त ।

सद्विधर्म (सं.) अष्ट धर्म, सत्य  
धर्म नीतियुक्त मार्ग, सदाचार ।

सद्युक्ति (सं.) सुन्दर वृत्ति,  
अच्छी अह ।

सद्विभाव (सं.) अच्छी इच्छा,  
अच्छा भाव । [मकान, जगह ।

सद्य (सं.) घर, गृह, निवासस्थान,

सद्य (अ०) झट, तत्क्षण, सपदि,  
फौरन, तुरन्त उसी वक्त ।

सद्वर्तन (सं.) अच्छा बर्ताव ।

सद्वर्तु (सं.) अच्छी चीज़ ।

सद्वर्तना (सं.) अच्छी, इच्छा ।

सद्वर्त (वि.) बलवान, शक्तिसम्पन्न,  
धनाढ्य । [होना, ठीकहोना ।

सद्वर्तु (कि.) सुधरना, बनना ।



संज्ञा ( सं. ) जीवात्माका मूल-  
स्वात्म, स्वर्गलोका ।

संज्ञाभिधि ( वि. ) एक वर्ष पाछे  
वाली ( सं. ) पत्नी, माया, औरत ।

संज्ञाभि ( वि. ) एक धर्मका, ज्ञाने  
धर्मका माननेवाला ।

संज्ञा ( सं. ) सुहागिन, सुभगा,  
पतिपुत्र ( स्त्री ) ।

संज्ञावपु ( कि. ) जाना, बिदा होना,  
रवाना होना, सुधारना ।

संज्ञावपु ( कि. ) जाना, कूच करना,  
सटकना, बिदाहोना ।

सन ( सं. ) वर्ष, साल. संवत्,  
( यह हिजरी और ईस्वी संवत् के  
लिखे लगाया जात है )

सनद ( सं. ) फरमान, पत्र, हुक्म,  
परवाना, अस्तिपारनामा । आधि-  
कारपत्र ।

सन्दी ( वि. ) जिसे सनद मिली  
हो सनदवाला, या सनद संबंधी ।

सनभना ( सं. ) शोक, बिता,  
उदासी, व्याकुलता, बे चैनी ।

सनस ( सं. ) हठका, लोम, लालच  
बाह, स्पृहा ।

सनभाबनी ( सं. ) बुहारी, झाड़ू ।

सनातन ( वि. ) नित्य अनादि,  
सदाका, प्राचीन, निश्चल ।

सनात ( सं. ) स्वामित्व, जिसका  
साधिकार, आशय पुत्र ।

सनात ( वि. ) नादमुक्त, सन्धवाला ।

सनात ( अ. ) पासमें, नजदीक ।

सनात ( सं. ) स्वान, मरनेवाले  
के नामपर नहाना, नहान ।

सनात भांडपा ( कि. ) घुरी हाकल  
होना ।

सनात सुतक आधु ( कि. )  
सम्बन्ध होना, लेनेदेन होना ।

सनात पाण्डी आधु ( कि. )  
भारी हानिमें आजाना ।

सनातना सभासा ( सं. ) अष्टम,  
समाचार, घुरी खबर ।

सनानिधु ( वि. ) किसीके मरनेकी  
खबर मानेवाला ।

सनिपात ( सं. ) मिलना, नीचे  
गिरना, एक ऊपर जिसमें वातापित  
और कफारमक नीनों दोष बिगड़  
कर एकत्र होजाते हैं, त्रिदोष,  
नास ।

सनी ( सं. ) शाने, ग्रहविशेष ।

सनेक ( अ. ) शनिवारके दिन ।

सनेडा ( सं. ) स्नेह, प्यार, प्रेम,  
प्रीति ।

संत ( सं. ) साधु, सज्जन, उत्तम  
मनुष्य, धार्मिक, धर्मी, त्यागी ।

संतत (अ०) हमेशा, नित्य, सदा  
संतति (सं.) विस्तार, घीलाह,  
शोत्रवृद्धि, बाल बढ़ने ।

संतर् (सं.) नारंगीकी आतिका  
एक फलविशेष, सन्तरा ।

संतस (सं.) नीच कार्य कर  
नेका विचार, परामर्श, सलाह ।

संताकुडी-कुड्ड-कुड्डो (सं.)  
बालकोंका खेल विशेष ।

संताधो (कि.) पूर्ववत् ।

संतापु (कि.) छुपाना, ढाकना,  
गुप्त रखना, छुपाना ।

संतान (सं.) वंश, संतति, अपत्य,  
विस्तार, बालवधे ।

संतानिक (सं.) मलाई, दूधकी थर ।

संताप (सं.) कष्ट, पीड़ा, दुःख,  
तकलीफ, क्लेश, गुस्सा, पछतावा ।

संतापु (कि.) दुःख देना,  
चिढ़ाना, खिझाना, बराकुठ करना ।

संतापु (कि.) छुपना, छुपाना,  
ढक्कना, घुसना, चुप रहना ।

संतुष्ट (वि.) प्रसन्न, तृप्त, शांत,  
संतोषप्राप्त, खुश ।

संतोष (सं.) संतोष, तृप्ति, खुशी ।

संतोषपु (कि.) प्रसन्नकरना,  
तृप्त करना, तसदी करना ।

संतोषो (सं.) बारदाने सहित  
वजन या तौल ।

संतोषारक (वि.) संतोष देने-  
वाला, संशय हटानेवाला, मनमाना

संतोषपूर्वक (अ०) संतोषसहित,  
प्रसन्नतापूर्वक, राजाखुशीसे ।

संतोषवृत्ति (सं.) तृप्ति, चित्त  
समाधान ।

संतोषपु (कि.) राजी करना,  
प्रसन्न करना, खुश करना ।

संशय (सं.) सत्य समय निकट जान-  
कर शरीर इन्द्रिय आदिारमे ममता  
त्यागनेके संकल्पपूर्वक, शयन करना,  
संस्तार व्रत ।

संशयु (कि.) दुरुमाना, चिर-  
जाना, विवाह होना, फंस जाना ।

संदर्भ (सं.) रचना, ग्रन्थन,  
गुणना, प्रबन्ध, ग्रांथ प्रकाशन,  
सारवचन । [ कब, वृत्तान्त ।

संदेहो (सं.) समाचार, सम्वाद,  
संदीपन (सं.) उन्नेजन, प्रज्ज्वलन,  
सुलगना, वृद्धि ।

संदु (सं.) पेनी, तिजोरी, मं-  
जूषा, डब्बा, पिठारा, टिपारा ।

संदेह (सं.) शक, संशय, शंका,  
श्रम, दुविधा, अनिश्चित ज्ञान ।

संज्ञा ( सं. ) मेळ, अन्वेषण, हुंठ, खोज, पताकगाना, अनुसंधान योग, समय, मौका, विद्याना, ज्ञाताकन, अनुकूल ।

संज्ञानी ( सं. ) मौका देखनेवाला, हुंठनेवाला, खोजी । [ जोड़नेवाला ।

संज्ञाशे ( सं. ) फूटेहुवे पात्रको संज्ञा ( सं. ) मेळ, संयोग, मिलाप, दरार, अक्षरोंका मेळ, ( व्याकरण शास्त्र ) अनुकूल समय, अवसर ।

संज्ञिनी ( सं. ) सन्निधात, रोग विशेष शरीरके जोड़ोंमें बाहीकी बमारी ।

संज्ञिविभक्त ( सं. ) लड़ाई और सलाह, युद्ध और शांति ।

संज्ञिविभक्ति ( सं. ) जिसका लड़ाई और सन्निधकारनेका काम हो वह, एलची, प्रतिनिधि, दरबार बक़ील । [ संपूर्ण ।

संज्ञु ( वि. ) सब, सारा, समूचा

संज्ञुकथु ( सं. ) जुगली, यहांकी बात वहां, और वहांकी यहां करना ।

संज्ञि ( सं. ) सर्वत्र, सब जगहोंपर ( सं. ) सन्देश, संशय, शक ।

संज्ञा ( सं. ) सर्वास्तका समय सर्वाद्यका वक्त, साबंकाळ, दिनका अंत, रात दिनका अंत, रात

दिनके संधिसमय, सन्ध्या बंदन, सन्ध्या समय की जनेवाली द्विजोकी ईश्वरोपासना ।

संज्ञाकाण ( सं. ) सायंकाळ, विराग, बत्तीका समय ।

संज्ञाचन्दन ( सं. ) सन्धिसमयकी प्रभुवन्दना, सन्ध्यापासना ।

संज्ञाक ( सं. ) फौजी पौषाक, सैनिक वक्ता, कबच, बसतर, बर्मजिरह । [ सामने, निकट ।

संज्ञिध ( अ० ) पास, नजदीक,

संज्ञिधान ( सं. ) सामीप्य, निकटता, ( अ. ) पूर्ववत् ।

संन्यस्त ( सं. ) संन्यासी होना, संन्यास आश्रमस्थित, संसार त्याग, काम्यकर्मोंका त्याग, चतुर्थाश्रम ।

संन्यास ( सं. ) पूर्ववत् ।

संन्यासी ( सं. ) संन्यासयुक्त, चौथे आश्रमवाला पुरुष, परित्राट ।

संन्मान ( सं. ) आदर, सरकार, इज्जत, सम्मान ।

संन्मार्ग ( सं. ) अच्छामार्ग, सुरक्षित मार्ग, न्यायानुमेदित पथ ।

संन्मित्र ( सं. ) सच्चा दोस्त, पक्का साथी, उत्तम मित्र ।

संन्भु ( अ० ) मुहं व मुहं रूपक, मुहं आये, सामने, पासमें, समय, प्रत्युत्तरमें, जवाबमें ।

सन्ध्या (कि.) सामने आना ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सम्बन्ध, लगाई,  
 लगपन, नाता । [ महीना ।  
 सन्ध्या ( सं. ) अंग्रेजी नवा  
 सन्ध्या ( कि. ) बन्द करना, रो-  
 कना, अटकना ।  
 सन्ध्या ( कि. ) फंसाना, पकड़-  
 ना, फन्देमें लेना, दाँवमें लेना  
 धमकाना, धराना ।  
 सन्ध्या ( कि ) दाँवमें आना,  
 फंसना, हेरान होना, पिटना ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सौम्य, कसम, सौह,  
 सौगन, शपथ ।  
 सन्ध्या ( सं. ) स्वप्न, निद्राके समय  
 विचारमें आई हुई बातें, सपना ।  
 सन्ध्या ( वि ) हर्षका, खुशिया,  
 प्रसन्नताका ( दिन ) ।  
 सन्ध्या ( कि. ) तय्यार होना ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सौक्य, सौत, पति  
 की दूसरी स्त्री, सपत्नी ।  
 सन्ध्या ( वि. ) सब, सारा, स-  
 म्पूर्ण, सर्वस्व, अनुकूल ।  
 सन्ध्या ( वि. ) परिवारसहित,  
 सहकुटुम्ब, बालबच्चोंसहित ।  
 सन्ध्या ( अ० ) झटपट ।  
 सन्ध्या ( वि. ) सीधा, बपटे आका-  
 रका ( जिसमें ऊँचाई निचाई न हो )

सन्ध्या, ठीक, सारा । ( सं. )  
 बिना एहीके जूते, स्लीपर, चप्पल ।  
 सन्ध्या ( अ० ) जोरसे, बेग-  
 पूर्णक, झपाटेदार ।  
 सन्ध्या ( वि. ) बाँस या बरुंकी  
 चीप-झपट्टी ।  
 सन्ध्या ( सं. ) किसी वस्तुके ऊप-  
 रका झपटा भाग ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सपाटा, झपाटा,  
 झटपट, फटकार, मार, जोर, दौड़,  
 चालाकी । [ रना, धमकाना ।  
 सन्ध्या ( अ० ) नाचबोली ( कि. ) मा-  
 सन्ध्या ( सं. ) अहसान, अनुग्रह,  
 कृपा, उपकार, आभार ।  
 सन्ध्या ( अ० ) ठीक, ठीक, बराबर ।  
 सन्ध्या ( अ० ) सारा, समस्त,  
 पूरा, तमाम, सब, सम्पूर्ण ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सिपुई सौपना,  
 हवाले करना, अधिकारमें देना ।  
 सन्ध्या ( सं. ) अच्छा पुत्र, सुपुत्र ।  
 सन्ध्या ( वि. ) बबल, श्वेत, सफ़ेद ।  
 सन्ध्या ( वि. ) सातकी संख्या, ७ ।  
 सन्ध्या ( सं. ) सात वैदिक  
 महात्मा पुरुष-कश्यप, अत्रि, गरु-  
 द्वाज, विश्वामित्र, गौतम, ऋषि  
 और वसिष्ठ । आकाशस्थ सात तारे

सप्तद्वीप ( सं. ) सातद्वीप-बम्बु, कुश, वृक्ष, सास्मकी, कैला, साक और पुष्कर । [ आकृति, ( गोट )

सप्तद्वीप ( सं. ) सातकोने दार

सप्तधातु ( सं. ) शरीरस्थ सात धातु यथा-रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, और शुक्र । पार्थिव धातु-यथा, सोना, चांदी, शंखा, तांबा, कासी, लोहा और रंग ।

सप्तमी ( सं. ) ( व्याकरणमें विभक्ति ) सप्तमी, तिथिविशेष, सातें, सातम, सातवीं ।

सप्तशती ( सं. ) ( गणितमें ) सप्तराशिक ।

सप्तस्वर ( सं. ) सातस्वर, यथा, - पञ्चम, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद इनके आद्य अक्षर सा री, ग, म, प, ध, नी ।

सप्ताह ( सं. ) हफ्ता, समस्त बारोंकी एक गणना, सात दिनकी अवधि, भाष्यरत नाम्नी पुस्तकका सात दिनमें पठन ।

सप्त ( वि. ) अंचता, कबता, तंग लगा हुआ ।

सप्त ( क० ) प्रेमपूर्वक, प्यारसे ।

सप्त ( सं. ) सकीर, सतर, पांत, पंक्ति, कोसम ।

सप्त ( सं. ) यात्रा, प्रवास, मुसाफिरी, नाव चलायेका पंथा ।

मुसकमानोंका दूरा महीना ।

सप्त भारती ( कि. ) समुद्र किनारे फिरने, टहलने जाना ।

सप्त भु ( कि. ) ( समुद्र ) यात्रा करना ।

सप्तभन ( सं. ) एक प्रकारका फल ।

सप्तरी ( वि. ) प्रवासी, यात्री ( जलका ) ( सं. ) खलासी, नाव चलानेवाला, ( वि. ) बड़ा, उदार, खर्चीला, मुक्त इस्त । [ प्रमाणरूप ।

सप्त ( वि. ) फलयुक्त, सिद्ध,

सप्त ( वि. ) साफ, स्वच्छ ।

सप्तार्ध ( सं. ) स्वच्छता, पवित्रता, उत्तमता, सुघड़ता, चालाकी, छटा ।

सप्तार्ध भारती ( कि. ) बड़ाई हांकना, तारीफ मारना, सफाईकी बातें मारना ।

सप्तार्धार ( वि. ) सफाईवाला, साफ ।

सप्तार्ध ( वि. ) एकदम, अचानक ।

सशीत ( सं. ) बालकोंका खेलविशेष, खोभिदुनामक खेल ।

शरीर ( सं. ) घरकी हृदके पासकी आसपासकी जमीन, दो चरोंको अलग अलग दिखानेवाली ऊंची दीवार ।

शरीरदार ( सं. ) एक घरसे लगी हुई दूसरी जमीन का दावारका मालिक । [ पेज ।

संभुं ( सं. ) पृष्ठ, बर्क, सफा, पत्र, सैत ( वि. ) धवल, श्वेत, उज्ज्वल ।

सैती ( सं. ) चपलता, सफेदी, निर्मळता, श्वेतता । [ चूर्णविशेष ।

सैतो ( सं. ) सफेदा, सफेद रंगका सभ ( सं. ) मुर्दा, लाश, गव, मृत-शरीर, ( वि. ) सारा, समस्त, तमाम, कुल ।

सभक ( सं. ) पाठ, शिक्षा, अध्याय । सभक ( सं. ) डरापानी, भंग भगका पानी । [ बुद्धि वृद्ध ।

सभने ( सं. ) एक प्रकारका कुश-सभके ( सं. ) तरल पदार्थके चूसनेका शब्द ।

सभके भारवे ( कि. ) भव खाना ।

सभकुं ( कि. ) पतले पदार्थको पांचों अंगुलियोंमें लेकर चूसना ।

सभक ( सं. ) पतले पदार्थको खानेका शब्दविशेष ।

सभानुं ( कि. ) पतले काष्ठ पदार्थको मुखमें रखकर चूसना ।

सभुं ( वि. ) मजबूत, दृढ़ ।

सभ ( सं. ) हेतु, कारण, उद्देश । ( अ० ) इस वास्ते, इसीके, अतएव । [ निकालना ।

सभ ३६वे ( कि. ) बहाना,

सभर ( सं. ) सत्र, संतोष, तसली ।

सभरस ( सं. ) नमक, लवण, नोन, रामरस, क्षारविशेष ।

सभ-सभुं ( वि. ) बलवान, ताकतवर, मजबूत, सगुण ।

सभी ( सं. ) छवि, कान्ति, शोभा, चित्र, तस्वीर ।

सभुं ( सं. ) सुबुद्धि, उत्तम बुद्धि, ( अ० ) बुद्धिद्वारा, अकृषे ।

सभुर-री ( सं. ) सत्र, धैर्य, संतोष ।

सभुर ( अ० ) आइ, रोक, अटक ।

सभुरी ५६वी ( कि. ) संतोष करना ।

सभुरीने ५६वे ६५२ भाष्य ( अ० ) धैर्यका फल सदा उत्तम होत है ।

सभर ( वि. ) मरपूर ।

सभर ( अ० ) मरपूर, सब, बिल्कुल ।

सभा ( सं. ) मंडली, समाज,

बहुतसे लोगोंका जमाव, विद्व-

समुदाय, सम्मेलन, भीड़,

पंचायत ।

समासः ( सं. ) मंडळांका एक  
मनुष्य, सम्भव, समामें बैठनेवाला,  
समाका मेम्बर ।

समाज ( वि. ) भागवशाली, प्रारब्धी ।

समाधक्ष-पति ( सं. ) समाका  
मुख्य, समाका स्वामी, प्रेसीडेन्ट ।

समभर ( वि. ) भरपूर, पैसेवाला,  
ताकतवाला, गर्भवती बोड़ी ।

सभ्य ( वि. ) सभ्यकेयोग्य, नाग-  
रिक, भद्र, भला, सभावा मेम्बर,  
शिष्ट, नम्र, विनयी ।

सभ्यता ( सं. ) विवेक, ज्ञान, नाग-  
रिकता, शिष्टता, नम्रता, भलमंसी,  
शराफत, कुर्बानता, योग्यता ।

सभ ( सं. ) संग साध सूचक उप-  
सर्ग, कुंहर, अरुणा, अत्यंत, उयादः  
( वि. ) सरीखा, समान, अनुसार,  
बराबर, चौरस, सपाट, पूर्ण  
संख्यावाला, निष्कषपाती ( सं. )  
कसम, सौगंध, सपथ ।

सभ्यापवा ( कि. ) कसम देना ।

सभेना ( कि. ) पूववत् । नही ।

सभ्यापानथी ( कि. ) बिलकुल

सभ्यापूर्व ( सं. ) अपूर्णाक  
की एक जाति, ( गणितमें )

समर्थ ( सं. ) पीतलका दीपक,  
पीतलोत, पीतलकी दीपक ।

समझणी ( वि. ) एकही समझकर,  
समझलीन ।

समक्ष ( अ० ) स्वरूप, सामने, पास  
नजदीक, मुहं सामने ।

समभ ( वि. ) तमाम, सारा, सब ।

सम्योत्तर ( वि. ) जिसके चारों  
कोने समान हों ।

समष्टि ( वि. ) समान छिद्रवाला ।

समक्षित ( सं. ) धर्मका सच्चा मार्ग ।

समर्थ ( सं. ) अक्र, बुद्धि, समझ,  
टीका, व्याख्या, कारण, ज्ञान,  
सोधक बुद्धि ।

समभनाधरभागावृत्त ( कि. ) उग्र  
पाना, बाजिंग होना, ( सं. ) स-  
लाह सयानापन ।

समभर्तृ ( वि. ) समझदार, स्थाना  
होसियार, चतुर, बाजिंग ।

समभर्तृ ( वि. ) पूर्ववत् ।

समभर्तृ ( कि. ) समझना, बाजिफ  
होना, मनमें तुलना, विचारकरना,  
सलाह होना, मिलना, अंदरही  
अंदर समाधान होना ।

समभर्तृ ( कि. ) समझाना, बुझाना, सु-  
लाह करना, ठंडाकरना शान्त करना,  
ठगना, पोडना, मनमें उतारना ।

समभर्तृ ( वि. ) समझदार,  
सयाना, होसियार, चतुर ।

समश्रुत-टी ( सं. ) समझीटा,  
सखाह, संधि, ऐक्य, सुकह,  
समाधान, निपटारा, विरोधकांति,  
टीका, व्याख्या ।

समडी ( सं. ) एक जातिका पक्षी ।

समडे ( सं. ) समझीका नर पक्षी  
शर्मा वृक्ष ।

समश्रु ( सं. ) जितना समासके  
उतना, अधिक गर्म जलको कुछ  
ठण्डा जल बाळकर आवश्यकतानु-  
सार ठंडा करनेके लिये कीसल  
जल ।

समश्रु ( सं. ) सपना, स्वप्न ।

समश्रु-भाश्रु ( सं. ) सुनारका एक  
औजार विशेष । [ समान ।

समतल ( सं. ) चौरस, सपाट,

समतलशृङ्ग ( सं. ) पूर्ववत् ।

समता ( सं. ) बराबरी, समानता,  
साति, मनपर अंकुश ।

समतोष ( वि. ) समान वजनदार,  
बराबर, वजनमें समान ।

समदर्शी ( वि. ) बेलाग, पक्षपात-  
शून्य, समान दृष्टिवाला ।

समदुःखी ( वि. ) समान दुःखवाला,

समदृष्टि ( सं. ) समान दृष्टि, एक  
नज़र । [ रंगका चमड़ा ।

समडे ( सं. ) ताजा और बिना

समधात ( वि. ) ऐसी औषधि जो  
न गर्म हो और न ठंडी हो, नार्किक ।

सभन ( सं. ) सम्मन, सरदारकी  
आरसे हाजिर हानेके लिये बुलावेका  
कागज । [ लता विशेष ।

सभंहरसोभ ( सं. ) एक प्रकारकी  
सभंभ ( सं. ) सम्बन्ध, नाता,  
योग । [ सगा, ( भ० ) विषयक, लिये ।

सबंधी ( सं. ) सम्बंधी, रिश्तेदार,

समभाश्रु-भोश्रु ( सं. ) चौरस ।

समभाश्रु-त्रिश्रु ( सं. ) ऐसा त्रि-  
कोण जो तीनों ओरसे समान है ।

समभाभ ( सं. ) बराबर हिस्सा,  
समान भाग ।

समभाव ( सं. ) समान प्रेम, एकही  
भावना, समता, साम्य, तुल्यता,  
समानताबुद्धि ।

समभ ( सं. ) वक्क, काल, बेला,  
जवसर, ऋतु, मौसिम, योग,  
प्रसंग, अवकाश ।

समभ वर्तवो ( कि. ) समय देसना,  
बात समझना ।

समभ वर्तें सावधान ( कि. ) सम-  
यानुसार वर्तव करना ।

समभ भर्शा अवे ( कि. ) वक्क  
पूरा होजाना ।

समभसमभता ( सं. ) समवचानुगुणी,  
सममानुसार वर्तव तथा भावण ।



अथर्वसुसार ( अ० ) प्रसंगानुसार,  
कणिके सुजायिक ।

अभर ( सं. ) युद्ध, जंगल, रण,  
कामदेव पंचाक्षर, सात संख्याका  
एक संकेत, ( कि. ) वाहक,  
स्मरणकर । [ स्मृतिवाद ।

अभरथु ( सं. ) स्मरण, सुधि, चेत,  
अभरथु ( सं. ) माला, तसबीह ।

अभरथ ( वि. ) समर्थ, सामर्थ्य-  
युक्त, बलवान ।

अभरथु ( सं. ) समर्पण, सौग,  
त्याग, अर्पण, दान ।

अभरथु ( वि. ) स्नान करके  
अपने हाथसेही ओखन बनाकर  
खानेवाला ।

अभरथुं ( कि. ) स्मरण करना, याद  
करना, सुधि लेना, सुचरना ठीक  
होना, दुरुस्त होना ।

अभरथु ( सं. ) युद्धक्षेत्र, लड़ाई  
का मैदान, रण-भूमि, मैदानभंग ।

अभरथुं ( कि. ) ठीक कराना,  
दुरुस्त कराना, सुधारना ।

अभरथुं ( कि. ) ठीक होना,  
सुधारना । [ छोटा, अरु, बौद्ध ।

अभरी ( सं. ) संक्षेप, सार, ( वि. )

अभर ( वि. ) ककिनाय, बोगम,  
कणिसम्पन्न, धनवान्, बलवान् ।

अभरथु ( वि. ) समर्पणदीक्षा  
लेनेवाला, जिसने बलवान् मरुके  
पुष्टि मार्गके अनुसार समर्पणकी  
दीक्षा की हो ।

अभरथुं ( कि. ) अर्पण करना,  
भक्तिपूर्वक भेंट करना, देना, पूजन  
करना, समर्पण करना ।

अभरथ ( सं. ) सुसलमानी डंगकी  
टोपी विशेष ।

अभरथी ( वि. ) समान उद्भववाला,  
समवयस्क, जोड़ीदार, बराबरीका ।

अभरथ ( सं. ) संग्रह, समूह, सम्बंध ।  
अभरथ ( वि. ) समान खानेवाला ।

अभरथ ( वि. ) कमजोरी,  
कैचानीचा । [ कंच नीच ।

अभरथता ( सं. ) ग्युनाधिक्य,  
अभरथुं ( कि. ) समाया, बराबर

भराना, ठीक बैठना, समाजाना ।

अभरथ ( सं. ) तलवार, खड्ग,  
कृपाण ।

अभरथ भद्र ( सं. ) योद्धा, वीर,  
इस नामसे एक पदविशेष ।

अभरथ ( सं. ) विराट, समूह,  
सम्बन्धन, सम्बन्ध्याप्ति, समस्तपन ।

अथर्वसुसार ( सं. ) धर्म, विवेक ।

समसानीयुं ( वि. ) सुदँके साथ  
 श्मशानतक अनेवाला, अग्निसंस्कार  
 में शामिल होनेवाला, श्मशान  
 सम्बन्धी, मसानका ।

समस्त ( वि. ) सारा, सब, तयाम,  
 कुल, सम्पूर्ण, बिलकुल ।

समरथा ( सं. ) संकेत, इशारा,  
 मिथानीचिन्ह, श्लोकके एक पादसे  
 दोष तीन पादोंकी पूर्ति, किसी  
 छन्दका एक अन्तिम पाद । संकेत  
 कथन ।

समाश्रम ( सं. ) संगति, मिलन,  
 सोहबत, साथ, पहिचान, सम्मि-  
 लन, आगमन, संभाषण ।

समाचार ( सं. ) खबर, संवाद,  
 संदेश, वृत्त ।

समाज ( सं. ) मंडली, समा,  
 जातीय संस्था, समूह, समुदाय,  
 मीटिंग ।

समाधु ( सं. ) जितना समाने  
 उतना ( वि. ) समान, बराबरीका ।

समाधुं ( वि. ) पूर्ववत् ।

समाधुी ( सं. ) सुनारका एक  
 औजारविशेष, सुहानी ( औजार )

समाधुी ( सं. ) पूर्ववत् ।

समाध ( सं. ) साधुसंघके अध्यक्ष  
 संस्कारके स्थानपर बना हुआ कव-  
 तरा या छत्री । मठ ।

समाधान ( सं. ) उत्तर, संकाश  
 निराकरण, निपटारा, शांति ।

समाधानी ( सं. ) शान्ति, निवृत्ति,  
 संकाशकी निराकृति, चैन, तसल्ली,  
 सुखी ।

समाधि ( सं. ) ध्यान, योगकी  
 क्रियाविशेष, मनःसंयोग । योगका  
 आठवां अंग । [ ध्यानकस्थित ]

समाधिरथ ( वि. ) समाधिकी वेशभूषा,

समान ( वि. ) तुल्य, एकसा,  
 सरीखा, बराबर, सब, सीधा,  
 सपाट, जैसा ।

समानता ( सं. ) बराबरी, तुल्यता ।

समानप्रकृति ( सं. ) जिसकी सदा  
 एक सरीखा हालत रहती हो ।

समानवृत्ति ( सं. ) पूर्ववत् । [ शब्द ]

समानार्थ ( वि. ) एकही अर्थके

समान्तर ( वि. ) समान दूरपर ।

समाप्त ( वि. ) होजुका, पूर्ण,  
 सिद्ध, आखिर, अग्त, खत्म, अच्छे  
 प्रकार प्राप्तहुवा ।

समापक ( सं. ) अपने दृष्ट देखकर  
 स्मरण ( कौनो छोटीमें हो चले )  
 तक भजन करते बैठते हैं वह )

सभाष ( सं. ) अपने इष्टियका स्मरण ( जैनी लोगोंमें दोषहीतक भजन करने बैठते हैं ) वह ।

सभाष ( सं. ) शुरुआत, अठवाठ से कार्यारंभ, धूमधाम ।

सभाष ( सं. ) पटेला, ( खेतीमें ) आधरा, आभय, सहाय ।

सभाष ( कि. ) सुधारना, दुस्त करना, संनाजना, काटछीलकर तय्यार करना ( रसोईकेलिये ) ठीकठक करना, अवश्यकतानुसार हेरफेर करना, शृंगार करना, काटना, सराशना, मारना ।

सभाष ( कि. ) समालना, बचाना रक्षाकरना, अनुसन्धान करना, जांचना, देखभाल करना ।

सभाष ( सं. ) जगह, काकीस्थान, समान लयक स्थान ।

सभाष ( कि. ) समाना, पुसाना, जगह करना, प्रवेश कराना, दबाना नरम करना, शांत करना, शमन करना, मनकी मनमें रहना ।

सभाष ( कि. ) माना, जगहहोना, घुसना, प्रविष्ट होना, गुस्ता नरम होना, हिलमिलके रहना ।

सभाष ( सं. ) पैसार, मिलान, प्रवेश, जगह, स्थान, द्वार ।

सभाष ( सं. ) समानेकी जगह, काकी स्थान, समुदायमें रहती हुई लीके कछोंको दूर करके उसका वास करना, व्याकरणकी एक प्रक्रिया, पदोंका योग, अलग अलग अर्थ के दो शब्दोंका मिलकर एक अर्थवाची शब्दका बनना ।

सभाष-त ( वि. ) प्यारसे रहना, संयुक्त मिलित, मिलाहुआ, कैसा हुआ ।

सभाष ( सं. ) समुच्चय, एकठा करना, यक्षेप । [ वेद ।

सभा ( सं. ) जनीवृक्ष, जेबड़ेका

सभाष ( सं. ) जो बराबर हो उसे बराबर करना बीज गणितकी वह क्रिया जिसकेद्वारा अज्ञात संख्य जानी जाती है ।

सभाष ( अ० ) पास, निकट, नजदीक, नगीब । [ इवा ।

सभाष ( सं. ) पयन, वायु, मरुत,

सभाष ( सं. ) पूर्ववत् ।

सभाषीणे ( अ० ) बिना हरकत के बिना आंच या गर्मके ।

सभाष-सांभ-सांभ ( सं. ) लक्ष्मणसमय, दीपक जलनेके समय, दिनान्त ।

सभा ( वि. ) सारा, पूरा, अक्षत खरा, बरोबर, ठीक, दुस्त, सम्पूर्ण, तन्दुस्त, स्वस्थ, सरीखा समान, बरोबरका ।

समुं० १७ ( कि. ) दुस्त करना, सुधारना, साबित करना, पूर्ण करना ।

समुं० १८ ( सं. ) जरा, एक वित्त, समुदाय, समाहार, परस्पर निरूपेण बहुतसे शब्दोंका एकत्र होना

समुं० १९ ( सं. ) समूह, झुंड, सब, इकट्ठा, भीड़, सप्र., ढेर ।

समुं० २० ( सं. ) सागर, उदाधि, पयोधि ।

समुं० २१ ( सं. ) समुद्रतट, दरियाका किनारा ।

समुं० २२ ( सं. ) दो बड़े समुद्रोंको मिलानेवाला छेटा और पतला जलमार्ग ।

समुं० २३ ( सं. ) एक प्रकारकी वनस्पति, फल विगेष, यह औषधियों में काम आता है [ज्ञात समुद्रकेन ।

समुं० २४ ( सं. ) समुद्रके जलके

समुं० २५ ( सं. ) समुद्रतट, अच्छा समय ।

समुं० २६ ( वि. ) सारा, सब, तमाम, ( अ० ) कुलमी, जरा, थोड़ाही नहीं ।

समुं० २७ ( सं. ) दल, बूध, समुदाय ढेर, थोक भीड़, संग्रह ।

समुं० २८ ( वि. ) वर्धित, अगुदायित, अगार, धनवाला, सौभाग्यवान् ।

समुं० २९ ( सं. ) अगुदय, मंगल, संपत्ति, शक्ति, उत्कर्ष ।

समुं० ३० ( अ० ) वक्तपर, मौसिमपर, समयपर ।

समुं० ३१ ( कि. ) एकत्रित करना, समेटना, इकट्ठा करना, बटोरना, संकलन करना, संग्रह करना ।

समुं० ३२ ( अ० ) सहित, युक्त, साथ

समुं० ३३ ( सं. ) देखो समर्थ ।

समुं० ३४ ( सं. ) किसीभी धर्मके अनुष्ठानों का सम्मेलन, धर्म के अनुष्ठानोंके इकट्ठे होनेका दिन, पर्वदिन

समुं० ३५ ( सं. ) समय, वक्त, काल, ऋतु, मौसिम, दाव, लाय, संबंध ।

समुं० ३६ ( कि. ) दिननायक है, वक्त खराब है । [प्रसंग आना ।

समुं० ३७ ( कि. ) मौकाआना

समुं० ३८ ( कि. ) अवसर देखना, मौका ताकना ।

समुं० ३९ ( वि. ) तेम ५३ ( अ० ) जो वक्तपर बनजावे, वही ठीक ।

समुं० ४० ( सं. ) साथ रहनेसे मिलने योग्य सुख और शान्ति । [साथही ।

समुं० ४१ ( वि. ) एकही नार, सब

समुं० ४२ ( सं. ) समानता,

संश्लेषः-श्लेषः ( वि. ) सरीसृप,  
समान, तुल्य, बराबरीका ।

संश्लेषः ( सं. ) समानता, बरा  
बरी, तुल्यता ।

संश्लेषः ( अ० ) सामने, सम्मुख,  
समक्ष, आगे, दृष्टिके सामने ।

संश्लेषः ( सं. ) सामक, सेक, बैल  
के कंधेपरके जुएके दोनों छेदोंमें  
जो दोनों सिरोंपर होते हैं, डालने  
की दो मेंछें ।

संश्लेषः ( सं. ) ऐक्य, एका, संघ,  
हिलमिलकर कामका करना ।

संश्लेषः ( सं. ) सम्पत्ति, धन, धौलत,  
वैभव, सुभाग, समृद्धि, वैभव ।

संश्लेषः ( सं. ) पूर्ववत् ।

संश्लेषः ( वि. ) परिपूर्ण, धनाढ्य,  
पूरा, सिद्ध, युक्त, सहित ।

संश्लेषः ( अ० ) मिलजुलकर,  
हिलमिलकर ।

संश्लेषः ( सं. ) साथ, सम्बन्ध,  
लगाव, संस्पर्श, मिलाव, संयोग ।

संश्लेषः ( सं. ) निरूपण, कथन,  
समाप्ति, निष्पादन, संगठन, प्राप्ति,  
काम, निर्माण ।

संश्लेषः ( कि. ) संपादन करना,  
निर्माण करना, बनाना, काम  
निकासना ।

संश्लेषः ( वि. ) एकमत, एकदिशः ।

संश्लेषः ( सं. ) बन्ना, बधिया, गले,  
हरास्थान, टोकरी, बकस, बैसा  
एक नीचे बैसाई एक ऊपर जिनके  
रखनेसे बीचमें पीठ रहती हो ।

( वि. ) जोड़ा हुआ । [ पूरा ।

संश्लेषः ( वि. ) समस्त, परिपूर्ण,

संप्रदान ( सं. ) अनुशीकारक,  
( व्याकरणमें ) सम्बन्ध रूपपेदान ।

संप्रदान ( सं. ) रस्म, रीति, आवाज,  
चल, धर्मपथ, मत, पंथ, बंधे,  
जाति ।

संश्लेषः ( सं. ) लगाव, नाता,  
संयुक्त, रिता, बधुत्व, सगाई ।

संश्लेषः ( अव. ) विषयक, सम्बन्ध  
रखनेवाला, नातेदार नतेत ।

संश्लेषः ( सं. ) परस्पर  
संश्लेष रखनेवाले ( व्याकरणमें )

संश्लेषः ( सं. ) कारक विशेष,  
संयोजक, हाक, पुकार, जो,  
ओ, हे, रे आदिशब्द संबंधक  
शब्द ।

संश्लेषः ( कि. ) कहना, बुझाना,  
पुकारना, आवाज देना, भेक, अन्त  
प्रमाण ।

संश्लेषः ( सं. ) योग्यता, होने योग्य  
होनाकार, भविष्यक, संभावना ।

संभवपुं ( कि. ) होना, बनना,  
छद्मभात होना ।

संभवित ( वि. ) शक्य बचनेयोग्य ।

संभवावपुं ( कि. ) संभालना,  
जताना, जहिर करना ।

संभार ( सं. ) मसाला, सामान,  
सामग्री, रसद ।

संभारधुं ( सं. ) नाम रक्खनेके  
उपलक्ष्यमें दिया हुआ पुरस्कार,  
बिससे स्मरण रहे ।

संभ १पुं ( कि. ) याद करना  
स्मरण करना, याद कराना, कहना ।

संभारपुं ( वि. ) मसालेदार, सा-  
मग्री सहित ।

संभावना ( सं. ) संभव, दुविधा,  
संदेह, अनिश्चित, इस नामका एक  
अलंकार, ( साहित्यमें ) ।

संभावित ( वि. ) प्रतिष्ठित, लामक,  
योग्य, इज्जतदार ।

संभावधुं ( सं. ) बातचीत, पर-  
स्पर भाषण, बोलचाल ।

संभाण ( सं. ) देखरेख, रक्षा,  
चौकसी, तलाश, अनुसंधान,  
आश्रय, सहारा, आसरा ।

संभाणपुं ( कि. ) रक्षा करना,  
छलनपालन करना ।

संभे ( विं. ) सब, सारा, समाप्त ।

संभोज ( सं. ) स्त्रीप्रसंग, मैथुन,  
आनन्द, इस्तेमाक ।

संभोजी ( वि. ) भोगनेवाला, वि-  
लासी, इस्तेमाल करनेवाला ।

संभ्रम ( सं. ) आदर, सम्मान,  
घबराहट, भय, डर, घ्रास, घ्राति,  
व्यकुलता ।

संभ्रत ( वि. ) अनुमत, स्वीकृत,  
ईप्सित, अभिमत, अनुमोदित,  
संमति, सलाह, राजीनामा, इच्छा,  
स्वीकार । [ परामर्श, स्वीकृत ।

संभ्रति ( सं. ) सलाह, मन्त्रणा,  
संभ्रद् ( सं. ) लड़ाई, झगडा,  
टंटा, कसब, घमसान लड़ाई,  
मारकाट ।

संभ्रान्ती ( सं. ) झाड़ू, कुंची,  
बुहारी । [ रुररु, मुखेके सामने ।

संभ्रुधुं ( वि. ) सामने, सन्मुख,

संभ्रु ( अ० ), अच्छी प्रकारसे,  
बाबर । ( वि. ) अच्छा, उत्तम,  
श्रेष्ठ ।

संयम ( सं. ) निग्रह, प्रत्याख्यान ।

सय ( वि. ) सौ, शत, १०० ।

सय ( सं. ) ताल, तालाव, तडाग,

डोरा, घागा, मस्तक, सिर, माथा,

शेयर, डिस्का, भाग, आँक ( वि. )

जारी, मुख्य, ( अ० ) अनुसार,  
प्रमाणसे ।

संस्कृत ( वि. ) नायकका ऊपरी  
पद, नायकके उच्च कर्मचारी ।

संस्कृत ( सं. ) सूत्रसे ऊपर काम  
करनेवाला, कलेक्टर ।

संस्कृत ( कि. ) जीतना, फतह  
करना, अधिकारमें करना, कब्जेमें  
करना ।

संस्कृत ( सं. ) सुगन्धित द्रव्य  
बेचनेवाला, गन्धी, इत्रफरोश ।

संस्कृत ( सं. ) वृक्षविशेष, लक्ष्मि-  
शेका गद्दा, माली ।

संस्कृत ( सं. ) नाव, लगाम, नेकल ।

संस्कृत ( वि. ) सरकनेवाला, फि-  
सलनेवाला, रपटनेवाला ।

संस्कृत ( सं. ) गोल, कुंडल, वृत्त ।

संस्कृत ( कि. ) सरकना, हिलना,  
हटना, बसकना, जाना, घुसना ।

संस्कृत ( सं. ) बनोरी, बाना, जु-  
लूस, घुड़दौड़का खेल ।

संस्कृत ( वि. ) देखो संस्कृत ।

संस्कृत ( सं. ) राजा, शासक, पति,  
स्वामी, मालिक रखी हुई स्त्री ।

संस्कृती ( वि. ) सरकारसे संबंधी,  
राज्य सम्बंधी, प्रकट ।

संस्कृती रस्ता ( सं. ) आमरस्ता,  
सब लोगोंके जाने जानेका मार्ग ।

संस्कृती भाषा ( सं. ) अमलदार,  
राज्यसे सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति ।

संस्कृती इशारे अंकुश ( कि. )  
दावा करना, नालिश करना, कच-  
हरी दरबारमें जाना जाना ।

संस्कृति ( कि. ) सरकाना, चोड़ा  
सा आगे बढ़ाना, धीरेसे हिलना ।

संस्कृति ( सं. ) सरकना, अत्यंत लघु  
पदार्थ जो फल आदिको सड़ाकर  
बनाया जाता है ।

संस्कृत ( सं. ) सर्वत्र फैलनेके  
लिये निकाली हुई सरक धी आकाश ।

संस्कृति ( कि. ) मिलान करना,  
मुकबिल करना ।

संस्कृति ( सं. ) मुकबिला, मिलान ।

संस्कृति ( वि. ) ममान, बराबर,  
सराखा, मिलताजुलता, एकसा,  
एकरूप, सदृश्य, योग्य लायकी ।

संस्कृति ( वि. ) बिलकुल, मि-  
लताजुलता, बराबरीका ।

संस्कृति ( सं. ) स्वर्ग, वैकुण्ठ, ऊर्ध्वलोक ।

संस्कृति ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

संस्कृति-धस ( सं. ) बनोरी, बाना,  
जलूस, प्रवेशव ।

संस्कृति अंकुश ( कि. ) फजीहत  
होना, चर्चा होना, जलूस  
निकलना ।

संज्ञ ( सं. ) मुख्य नायिक, बड़ा खलासी, जहाजका कप्तान । अंकुरित दाल तथा अन्न । [ रचना ।  
 संज्ञा-१ ( सं. ) सृजन, निर्माण,  
 संज्ञा-२ ( सं. ) पैदा करनेवाला, निर्माता, सृष्टिकर्ता, विधाता ।  
 संज्ञा-३ ( कि. ) उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्मदेना ।  
 संज्ञा-४ ( कि. ) पैदा करना, बनाना, उत्पन्न करना ।  
 संज्ञेरी ( सं. ) जबरदस्तों, नल-त्कार, जुलूम, ज़ोर, तोफान, गिर-पत्नी, सामने होना ।  
 संज्ञा ( सं. ) सामग्री, सामान, सरकारकी ओरसे दी गई इनाम, जमीन, बाढ़न, वस्त्रादि ।  
 संज्ञा ( कि. ) डोरीसे बांधनी लपट्टी, वा कमथी बर्गरः बांधना  
 संज्ञा ( सं. ) अन्न विशेष गिरगट ।  
 संज्ञा ( सं. ) सहनाई, मुलसे बजानेका वाद्य ।  
 संज्ञ ( सं. ) देखो संज्ञ याद, स्मरण, ध्यान, नजर, चित्त, दृष्टि, होड़, बोली, करार, कौल ।  
 संज्ञा ( सं. ) सुरति, ध्यान, स्मरण ।  
 संज्ञा ( सं. ) अगुआ, लीडर, नेता, मुख्य, सेनानायक, जागीरदार, अमीर, धनिक ।

संज्ञारी ( सं. ) अगुआपन, लीडर शिप, अमीरी, मुख्यता, नेतृत्व ।  
 संज्ञ ( वि. ) कृपाळु, दयाळु, काशीक ।  
 संज्ञीन ( वि. ) मुख्य, सरताज, शिरोमणि, ( सं. ) मुखया, स्वामी ।  
 संज्ञा ( सं. ) चिट्ठीपरपता, धानामा । [ ईषन ।  
 संज्ञ ( सं. ) जलानेकी लकड़ी,  
 संज्ञ ( सं. ) एक प्रकारकी आषाधि ।  
 संज्ञा ( सं. ) इनाम, बख्शीस, पुरस्कार, उपहार, शिरोपाव ।  
 संज्ञ ( सं. ) मुख्यपर्व, पंचोंमें मान्य व्यक्ति ।  
 संज्ञा ( सं. ) स्तुति, प्रशंसा, कीर्तिस्तवन पदया वेतनवृद्धि ।  
 संज्ञा ( वि. ) नामांकित, प्रसिद्ध पदवी प्राप्त ।  
 संज्ञ ( वि. ) सामान, बरालर, सदश, तुल्य, पूरम्पूर ।  
 संज्ञा ( सं. ) आदर, सत्कार, मान, सेवा बन्दगी ।  
 संज्ञा ( सं. ) छोटाकीड़ा, छुट्ट, कृमि, चुरवे, गुहामार्गसे निकलने-वाला छोटासा कीड़ा ।



अश्व ( सं. ) बृक्ष विशेष, यह बृक्ष  
छोटा ऊँचा जाता है ।

अश्वत्थि ( सं. ) बोड़ी बोड़ी बल  
वृष्टि, फुहार, हुलार ।

अश्वत्थ ( सं. ) पूर्ववत्-तारत क  
समान पर्व विशेष, कुंज ।

अश्वत्थ ( सं. ) इक्षीसका, नक्षत्र,  
अथवा नक्षत्र विशेष, इस नामसे  
प्रसिद्ध ब्रह्मण बालक जो अपने  
अंधे माता पिताका मक था और  
अतमें महाराजा दशरथके बाण-  
द्वारा भूलसे मारागया, कावाडया  
ग्राहण, साध, गुप्त है, अलजन्तु  
विशेष । [ आमत ।

अश्वत्थ ( वि. ) भटकता हुआ

अश्वत्थ ( सं. ) सर्वस्व, सबकुछ,  
मव, समस्त, तमाम, कुल ।

अश्वत्थ ( सं. ) वर्षाकालकी फुहार ।

अश्वत्थ ( सं. ) हानिकारका हि-  
साब, बचत का हिसाब, जमा  
खर्चका कागज, वार्षिक हिसाब ।

अश्वत्थ ( अ० ) अन्तमें, आखिरकार ।

अश्वत्थ ( सं. ) जोड़ योग, बहुतसी  
रक्तमोका एकी करण ।

अश्वत्थ ( वि. ) खसला, सरकना,  
गिरना, टपकना, सफल होना, सी-  
कना, ( वि. ) जो अच्छी तरह समझ  
सके, सीख, समझनेसे भावण ।

अश्वत्थ ( वि. ) सव, समस्त, सारे,  
तमाम, ( सं. ) भूमिका माप,  
खेतोंका माप, सर्वे भूकरनेवाला ।

अश्वत्थ ( सं. ) नापनेवाला, सर्वे-

अश्वत्थ ( सं. ) ध्रुव, हवनमें चौं  
छोड़नेका चम्मच, यज्ञीय चमस,  
खुब सुननेवाला, तेज कानवाला,  
व्यक्ति, उदार, पात्रविशेष, सराई,  
मालवा ।

अश्वत्थ ( वि. ) उत्तम, भेड़, उम्मा,  
अमूल, रक्तयुक्त, सुन्दर । ( सं. )

अश्वत्थ, एक विपश्चिन्नेवाला द्रव्य ।  
एक प्रकारका वृक्षविशेष ।

अश्वत्थ ( सं. ) मुख्य समाचार ।

अश्वत्थ ( अ० ) झटसे निकल  
जानेवाला, ( सं. ) बच्चोंका एक  
खेल विशेष । [ सरसों ।

अश्वत्थ ( सं. ) एक प्रकारका धान्य,

अश्वत्थ ( सं. ) चढाचढी, बरा-  
बरी । खींचातानी ।

अश्वत्थ ( सं. ) अटल अटल  
थरका सामान ।

अश्वत्थ ( सं. ) देखो अश्वत्थ ।

अश्वत्थ ( सं. ) सरसोंका तेल,  
कैतुआ, मिठोका, वर्षा ऋतुमें  
मिट्टीमें उत्पन्न होनेवाले सोप  
सर्वेसे जानवर ।

अश्लील ( सं. ) कानि पानेके लिये  
आटा दाल ची नमक बगैरः सा-  
मान । सांधा, रसद ।

अश्लु ( अ० ) नऊदीक, पासमें,  
( वि. ) इच्छित, मनचाहा, ( वि )  
सरस, बनिया ।

अश्लुभे ( सं. ) सूबासे बड़ा, एक  
सरकारी उच्च कर्मचारी ।

अश्वती ( सं. ) बाणी, भारती,  
राग देवता, शागदा, बागीश्वरी,  
भावा, मन्नाकी पुत्री ।

अश्वतीपूजन ( सं. ) ग्रंथपूजन,  
पुस्तकपूजन, शरदापूजन ।

अश्वतीसदन ( सं. ) पाठशाला,  
विद्यालय, स्कूल मदरसा ।

अश्व ( वि. ) सांधा सादा, सहज,  
उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्क-  
पट, लज्जन्य, शक्ति, पतल ।

अश्वरीते ( अ० ) सहजहीमें, सा  
धारणतया, सरल रीतिसे ।

अश्वरभाव ( सं. ) अच्छा स्वभाव,  
बुरा मित्र, सांधे स्वभाववाला ।

अश्वरतो ( सं. ) सुगम मार्ग,  
सही राह । [ उदारता ।

अश्वता ( सं. ) सिघाई, सादगी,

अश्ल ( सं. ) अतिमसीमा, राखकी,  
हद, सीमा ।

अश्ली ( सं. ) कपास वृक्षके बँटल,  
खाजर ।

अश ( सं. ) मोहला, पौर, धर्म-  
शाला, ग्राम, घर, सराय, मोहाल ।  
अनु, समयकाल, प्रवाह, जलकी  
धारा ।

अश्लभ ( सं. ) फाँस, लकड़ी या बाँसकी )

अश्ल-स ( सं. ) किसी पदार्थके  
सूँघने या खानेसे जीम या नाकमें  
होनेवाला असर ।

अश्ल ( अ० ) सीधे रास्ते ।

अश्ल-पाठ-अश्ल ( कि. ) रास्ते  
लगाना, चलता करना ।

अश्ल-अश्ल ( कि. ) रास्ते लगाना,  
चलत बनना ।

अश्ल ( सं. ) शान, सान, अल  
सज्जोपर बाढ करनेका गोळ परध-  
रका यंत्रविशेष, सिकल ।

अश्ल-अश्ल ( कि. ) धार  
चढ़ाना, बाढ करना ।

अश्ल-अश्ल ( कि. ) दुरुआत  
कर देना, पार पड़ना । [ सिकलीगर ।

अश्लिषे ( सं. ) धार चढ़ानेवाला

अश्लिषे ( अ० ) आविसे अततक,  
अवस्थिति, आशय ।

अश्लिषे ( सं. ) आदके दिन ।

अश्लि ( सं. ) साइकार, सरांक,  
हुंड़ी कपडा पैसा बगैरका व्यापारी ।

अक्षरी ( सं. ) साहूकारी, कसौती । ( वि. ) व्यापार सम्बन्धी, ब्रा- वर, ठीक ।	अक्षरार्थ ( वि. ) सीधा, अचल, सब लोगोंके बेगम, प्रगट ।
अक्षर ( सं. ) दारू, मंदिरा, बावलि ।	अक्षरार्थ ( सं. ) प्रगट, जाहिर, संस्कृत, सब लोगोंके लिये ।
अक्षरार्थ ( सं. ) चाव ।	सीधा जाना हुआ, कुल ।
अक्षर ( अ० ) ठेठ ।	अक्षर ( सं. ) शलाका, ज्वारबाक- रेके सिरे-मुठे ।
अक्षरार्थ ( सं. ) सराई, मिष्टिका वर्षिक सृग्मय पात्रविशेष ।	अक्षरार्थ ( वि. ) ओकार ।
अक्षरार्थ ( वि. ) धातु करना । वर्मासे निद्र करना, बीधनेसे बे- धना । अंजना, आंखमें लगवाना । बालना, प-कना ( अक्षु ) ।	अक्षु ( वि. ) सराहिटवाला, ( सं. ) संभेपर रक्षाज नेपाळ गोक चित्रित लकड़ीका टुकड़ा ।
अक्षरार्थ ( वि. ) अंजाना, ज्ञानी होना, आनन्द पाना ।	अक्ष ( सं. ) वृक्ष विशेष, ( अ० ) शुरू आरंभ, प्रारंभ ।
अक्षरार्थ-री ( अ० ) अंदाजन, लग- भग, प्रायः । ( सं. ) एषरेज, औसत, अन्धाज़, अनुमान ।	अक्ष ( सं. ) सुरूप, सुन्दरवेष, स्वरूप, शकल, सुरत, ( वि. ) एकही सुरतका, मिलती जुलती शकल, समान, सरीखा ।
अक्षरार्थ ( सं. ) प्रशंसा, तारीफ, सराहना ।	अक्षरार्थ ( सं. ) समानता, सादृश्य बराबरी, बारप्रकारकी मुक्तिमेंसे एक मुक्ति विशेष ।
अक्षरार्थ ( वि. ) प्रशंसके योग्य, स्तुत्य, श्लाघ्य, मनोहर, सु-मेयित ।	अक्षरार्थ ( अ. ) अक्षमकुल, प्रकट रीतिसे, सरे मैदान । [ सूचाही ।
अक्षरार्थ ( सं. ) साथी, मददगार, सहायक ।	अक्षरार्थ ( अ० ) एक सरीखा अक्ष ( अ० ) देखो अक्ष ।
अक्षरार्थ ( सं. ) नदी, झोटा, सोता ।	अक्षरार्थ ( सं. ) सुगन्धित द्रव्य बेचने वाला, गन्धी ।
अक्षरार्थ ( सं. ) देखो अक्षर ।	अक्षरार्थ ( सं. ) कमल, पद्म, पंकज ।

सरोज ( कि. ) पशु भाष न जाने  
इसवास्ते दो पशुओंको एक दूसरे  
के गलेसे एकही रस्सेसे बांधना ।  
सरोज ( सं. ) ऊपर बाजरेके पीचे  
का बंटल-नकट ।  
सरोतरी ( वि. ) बाज़िबी, उचित,  
न्यायानुमोदित ।  
सरोदो ( सं. ) स्वरोदय, जाके  
श्रासकी गतिको देखकर भूत  
भविष्य जाननेकी बिद्या, दोनो  
मथनोंमें समान सांस रखनेकी  
साधना, एक प्रकारका तार वाद्य  
विशेष, सारंगी, सरोता, सुपारी  
काटनेका औज़ार विशेष ।  
सरोह ( सं. ) देखो सरोज । तदाग ।  
सरोपर ( सं. ) ताल, सर, तलाब,  
सरोध ( वि. ) क्रुद्ध, कुपित, गुस्ते  
वाला, कोधी । [प्रथमाग, रचना ।  
सर्भ ( सं. ) सृष्टि उत्पत्ति, अप्पाय,  
सर्भ ( सं. ) सांप, भुजंग, अहि,  
( अ० ) जन्दीसे, शत्रुतापूर्वक ।  
सर्भुं ( कि. ) दौड़जाना, सांपकी  
तरह झटपट निकल जाना ।  
सर्व ( वि. ) सब, सारा, समस्त,  
संपूर्ण ।  
सर्वश ( वि. ) सर्वश्रेष्ठ, ( सं. )  
ईश्वर ज्ञानी ।

सर्वज्ञता ( सं. ) सबकुछज्ञान, ईश्वर-  
रत्न, ज्ञानीपन ।  
सर्वशी ( सं. ) आसकी क्रिया विशेष ।  
सर्वतोभद्र ( सं. ) सबकी प्रधान  
वेदी, मण्डल विशेष, एक प्रकारकी  
सैन्य रचना ।  
सर्वत्र ( अ० ) सबजगह, सारोबोर ।  
सर्वथा ( अ० ) सबप्रकार, सब-  
तरहसे ।  
सर्वज्ञ ( अ० ) इमेश, नित्य, राज ।  
सर्वनाभ ( सं. ) कुष्ठशब्द किनका  
प्रयोग अन्यशब्दोंके अर्थोंमें किया  
जासके ।  
सर्वप्रिय ( वि. ) सबकाप्यारा ।  
सर्वभक्ष ( वि. ) सबकुछ खाजनि-  
वाला, ( सं. ) कौआ, बकरा,  
आम्रि ।  
सर्वभाल्य ( वि. ) सबोंका मानाहुका ।  
सर्वरी ( सं. ) रात्रि, रात, निशा, रात ।  
सर्वोपाय ( वि. ) सब जगहका  
रहनेवाला, घटघट बासी ।  
सर्वस्व ( सं. ) अपना सबकुछ ।  
सर्वस्वात्मन ( सं. ) ईश्वर, प्रभु,  
परमात्मा ।  
सर्वाम ( सं. ) सारा अंग, सबसरीर ।  
सर्वोदीत ( वि. ) सबसे अन्न,  
म्बारा ।

सर्वाङ्गभूते ( सं. ) सर्व सम्पत्तिसे  
सर्वोको अनुमतिद्वारा ।

सर्वेक्ष ( सं. ) जगदीश ईश्वर ।

सर्वो ( सं. ) ब्रह्मविष्णुमहेश्वर, इत्यनेन  
मृत छोड़नेका पात्र विशेष धुवा ।

सर्वोद्भूत ( वि. ) सबसे अच्छा,  
क्योंतम ।

सख ( सं. ) बिल्ला, चौरस पत्थर ।

सखक्षु-भक्षु ( वि. ) सुलक्षण  
युक्त, सवाना, अच्छे लक्षणवाला,  
चतुर ।

सखंभ ( वि. ) साथहीसाथ, सब ।

सखण्ण ( वि. ) लज्जायुक्त, मर्यादा  
युक्त, शर्मवाला ।

सखतनत ( सं. ) राज्य, शासन ।

सखपी ( सं. ) एकजातिकी मछली ।

सखपी-ई ( सं. ) हम, मादक  
पदार्थ, गांजा, केरा, चक्कर, समय ।

सखडे ( सं. ) शिखर, पत्थर  
घटनेवाला, शिल्पी ( पत्थरका )

सखाडी ( सं. ) मोची और चमारों  
का बड़ पत्थर जिसपर वे जूतीको  
रखकर सीते हैं, धार करनेका  
पत्थर ।

सखाडुं ( सं. ) शिला, पत्थर, पा-  
थाय, चमारोंके औजारोंपर बाढ़  
करनेका पत्थर ।

सखाम ( सं. ) इच्छत, मान, प्रणाम  
अभिवादन ।

सखामत ( वि. ) हेम, आरोग्य,  
कुशल कायम, बरकरार, स्थित ।

सखामती ( सं. ) शांति, सजामी  
भावर सत्कार सूचक तोप या  
बन्दूकोंका सन्ध ।

सखामी ( सं. ) तोप या बन्दूक  
चलाकर नगी तलवारसे अच्छा  
धजा बगैरसे सत्कार सूचक संकेत,  
जागीरकी आमदनीमेंसे थोड़ासा  
हिस्सा सरकारको देना ।

सखाई ( सं. ) मैत्रणा, सम्मति,  
शांत, मेळ, मत, दोस्ती, सम्बन्ध  
शिक्षा, मसलहत ।

सखिता ( सं. ) देखो सखिता ।

सखिध ( सं. ) पानी, जल, तोंब ।

सखु ( सं. ) सलाब, मेळ, संज,  
दोस्ती, चाल, आचरण, भलमन्ती  
ज्याबहार ।

सखुभाध ( सं. ) अच्छी रीति, रिवाज ।

सखुधुं ( वि. ) सलौना, रसयुक्त,  
मनोरंजक, मनोहर, कांतिमय,  
सुकुमार ।

सखुडुं ( वि. ) एककी दूसरेको कह  
कर लड़ाई भगड़ा करानेवाला ।

सखेधुं ( सं. ) देखो सखुधुं ।

संज्ञा ( सं. ) स्लेट, पट्टी, पत्थरकी पट्टी ( लिखनेकी ) प्रस्तर पट्टिका  
 संज्ञाकृता ( सं. ) एक प्रकारकी मुक्ति ।  
 संज्ञा ( सं. ) शोक, विवाह के समय बरक-याका आपसमें बोलनेके शोक बद्धवचन ।  
 संज्ञा ( सं. ) वहन, शक, सन्देश, अंदेशा, अधैर्य ।  
 संज्ञा ( वि. ) देखो सन्ध्या वामकंधेपर यज्ञोपवीत धारण ।  
 संज्ञा ( सं. ) देखो संज्ञे, पुलिसका बिना कानूनका साफा ।  
 संज्ञा ( सं. ) सगर्ह, सम्बन्ध, नातेदारी । [ सहित ।  
 संज्ञा-सन्ध्या ( वि. ) बच्चावाली, बच्चे संज्ञा ( वि. ) एकवर्णका, एकरंगका, सराया, एकजाति ।  
 संज्ञा ( वि. ) कुलकुल हिलना, पासपासके पौधोंको उखड़ना ।  
 संज्ञा ( वि. ) सीधा, सुधा, सुलटा, उचित, चाहिये जैसा, मनमाना ।  
 संज्ञा ( वि. ) सफलता मिलना, मनचाहाकाम होना ।  
 संज्ञा ( वि. ) पूजा, पूजे ( वि. ) विधिपूर्वक पूजन किया होगा ।  
 संज्ञा ( वि. ) ठीक, अनुकूल ।

संज्ञा ( सं. ) एक प्रकारके जीव जो आचारमें या वापकोंमें होता है ( वि. ) अकस्मात्, एक और चतुर्थांश, ११, १३ ।  
 संज्ञा ( सं. ) कपट, प्रपञ्च ।  
 संज्ञा ( सं. ) सबाया, अधिक ।  
 संज्ञा ( सं. ) तावेका सिक्काविशेष ।  
 संज्ञा ( सं. ) पूर्व त ।  
 संज्ञा ( सं. ) अच्छा, आरोग्यता, तन्दुरुस्ती, जानबरोकी मस्ती ।  
 संज्ञा ( वि. ) मस्तीमें आना, काम पीड़ित होना ।  
 संज्ञा ( सं. ) स्वाद, मजा, जायक, लज्जत ।  
 संज्ञा ( वि. ) स्वाद, मजेदार, जायकेमन्द, लज्जतदार ।  
 संज्ञा ( वि. ) रसवाला, स्वादयुक्त ।  
 संज्ञा ( सं. ) परोपकार, धर्म, पुण्य ।  
 संज्ञा ( सं. ) सवेया ( पट्टी पहाड़ा )  
 संज्ञा ( वि. ) सबाया, अधिक ज्यादा ।  
 संज्ञा ( सं. ) सबेरा, प्रातःकाल, ओर, ( सं. ) बुद्धमवार, सबायी करनेवाला, चढ़वा, चढ़वा ।  
 संज्ञा ( सं. ) यान, वहन, कूच, सुकाम, प्रसोधन, जुलूस, आना जाना ( किसी मान्य पुरुषका )  
 संज्ञा ( अ० ) जल्दी, सबेरेही समयानुकूल, समयपर ।

संवाच ( सं. ) प्रसन्न, जवाबकी भांग,  
अर्थ प्रार्थना ।

संवाच करवे-वां ( कि. ) मा-  
गना, अर्थ करना । [ बातचीत ।

संवाचनवाण ( सं. ) प्रशोत्तर  
संवाचनी-भुं ( वि. ) मूल्यवान्,  
कीमती, बेमकीमती, अधिक  
मूल्यवाला ।

संवाचनि-ह ( सं. ) प्रशस्ति-ह, ? ।

संपुं ( कि. ) गाभिन होना, गर्भ  
युक्त होना, पकड़ाना, जैन होना ।

संवाचणुं-धुं ( सं. ) झुमेच्छा, आशा-  
वाँद, भिष्टभाषण, आज्ञा नम्रता ।

संवाचो ( सं. ) सौ और पच्चीस  
एकसौ पच्चीस १२५ ।

सवि ( वि. ) सब, सारा, तमाम ।

सविता ( सं. ) सूर्य, सृज, रवि,  
उत्तरज करनेवाला ।

सविताध ( सं. ) प्रकाश, तेज, शौर्य ।

सविस्तार ( वि. ) विस्तार पूर्वक ।

रुवे ( अ० ) जगहपर, स्थानमें,  
आमप्रद, ( वि. ) अच्छा, उत्तम  
श्रेष्ठ ।

सवेपधुं ( कि. ) उचित जगहपर  
होना, चुप बैठना, चाँदे जैसा होना

सवेरा ( अ० ) समयपर जल्दी ।

सवेरी ( वि. ) विरहारवाला ।

सवेनी बिडी ( सं. ) एकका सवा  
दूँगा इस प्रकारका प्रतिज्ञा पत्र ।

सवेनी धंधे ( सं. ) एक देकर  
सवा लेनेका धंधा । [ उलटा ।

संभ ( वि. ) बाँया, बाम, बिरुद्ध,

संभसायी ( सं. ) बाँये हावसे  
बाण मारनेवाला, अर्जुन ।

संभयसंभयरेपुं ( कि. ) तक्र-  
लीक देना, सताना ।

संभृत ( वि. ) मजबूत, ताकतवर ।

संभृतुं ( कि. ) उबलना, खिलना ।

संभृती ( सं. ) एक रोग, जिसके  
कारण गठेमें सांसका आगे जानेका  
रोग होता है ( बच्चोंको ) अधिक  
मिठाई खानेसे होता है ।

संभृतुं ( वि. ) सस्ता, अल्प मू-  
ल्यका, स्वल्प मूल्य ।

संभर ( सं. ) श्वसुर, सुसरा, पतिवा  
पतिनका पिता । [ बापका ।

संभृं ( सं. ) खरगोश, खरहा,

संभृं ( कि. ) सुखना, पचकना ।

संभृं ( सं. ) एक प्रकारका जल-  
चर प्राणी । [ समेत ।

संभ ( अ० ) साम, सहित, संग,

संभ ( सं. ) आम्र, आम्र, रसाक ।

सहकार-री ( वि. ) मददगार, सहायक, सहयोगी, आसिस्टेन्ट ।  
 सहभवन ( सं. ) साथजाना, सती-हाना । [ मित्र, संगी, साथी ।  
 सहचर ( सं. ) साथसाथ चलनेवाला,  
 सहचरी ( सं. ) दासी, सखी, मार्ग-ज्ञी ।  
 सहज ( वि. ) साथ पैदाहुआ, जो जन्मसे साथ रहाहो, स्वाभाविक, कुदरती, सहज, सरल, आसान, ( भ० ) थोड़ा, बिनाकारण, झट, थोड़ीसी देरमें, स्वाभाविक रीतिसे  
 सहजसाधन ( भ० ) सहजहोमैं जराजरासी बातमें ।  
 सहजगन्ध ( सं. ) स्वामीनारायण मत के आदि प्रवर्तक, ब्रह्म, स्वाभाविक आनन्द । [ धैर्य ।  
 सहन ( सं. ) क्षमा सहिष्णुता,  
 सहनता ( सं. ) धैर्य, धीरज ।  
 सहनशील ( वि. ) सहनेवाला, सहिष्णु, शांत, धीर ।  
 सहपाठी ( सं. ) साथ पढ़नेवाला, एक जमातमें पढ़नेवाला । [ होना ।  
 सहस्रांशु ( क्रि. ) आनन्दपाना, खुशी  
 सहस्रार्थान ( भ० ) साथमें, संगमें ।  
 सहवास ( सं. ) एकत्रस्थिति, स्नेह, परिवच, अभ्यास, मुहाबिरा ।

सहस्र ( भ० ) विचारकियेनिना, अकस्मात्, झटपट, अकाण्ड, अतर्कित, अधीरतापूर्वक ।  
 सहस्र ( वि. ) हजार, संख्याविशेष ।  
 सहस्राक्ष ( सं. ) हम्ब, सूरपति ।  
 सहस्रांशु ( सं. ) अंशुमाळी, सूर्य ।  
 सहस्रानन ( सं. ) शेष, नामविशेष ।  
 सहस्रांशु ( सं. ) सहपाठी ।  
 सहाय ( सं. ) मदद, सहारा, आश्रय, कृपा, महरबानी, सहायक, साथी, मददगार ।  
 सहायता ( सं. ) मदद, सहाय, आश्रय ।  
 सहायी ( वि. ) सहायक, मददगार ।  
 सहारे ( सं. ) मदद, सहारा, आश्रय ।  
 सहित ( भ० ) साथ, युक्त, समेत, संग ।  
 सहिष्णु ( सं. ) सखी, आली, संगिनी ।  
 सहिष्णु ( सं. ) भागीपना, साथीपन ।  
 सहिष्णु ( वि. ) बहुतही मन्द, सहनशील ।  
 सहिष्णु ( वि. ) सहन करनेवाला, क्षमानान, सहनशील, शांत ।  
 सही ( भ० ) स्वीकार, मंजूर, ठीक, सिद्ध, शुद्ध, निश्चय ( सं. ) स्वाही, रोशनाई, बसि, सखी, आली, मित्र ( स्त्री )



सहीसंवापत ( अ० ) निना तुक-  
सान के, बैसाका तैसा, ज्यों  
का त्यों ।

सहु ( अ० ) सब, सभी, प्रत्येक ।

सहेरे ( सं. ) सेहग, पचवी,  
मंदारि मौर ।

सहेस ( सं. ) मौज, मजा, सैल-  
सपाटे, पर्यटन, भ्रमन, वायुसेवन ।

सहेस भारवी ( कि. ) मनमाना  
घूमना, फिरना ।

सहेसधा ( सं. ) मौज, आनन्दका  
स्थल, घूमने फिरनेकी जगह ।

सहेसधु ( वि. ) सैानी, आनन्दी,  
मौजी ।

सहेसु ( वि. ) सरल, सीधा, सूधा ।

सहेसु ( कि. ) सहना, भुगतना,  
भोगना, सहन करना ।

सहोहर ( वि. ) सहज, सगा, एक  
मातासे उत्पन्न ( सं. ) भाई, बहिन ।

सहा ( वि. ) सहनेयोग्य, सहाक ।  
जो सहा जा सके । सहनीय ।

सण ( स. ) चायुक या बैत के  
मारका बिन्दु, कागजपर मोद  
करकी हुई निशानी । बल, सक,  
सकवट । [ रेखा होना ।

सण ५५वे ( कि. ) निशानी होना,

सण ५५वे ( कि. ) हाकिया  
छेदना, मार्गिन छोड़ना । [ दर्द ।

सणक ( सं. ) शूल, दर्द, पसुज्विका

सणडी ( सं. ) छोटी शकका, सलाई ।

सणडी करवी ( कि. ) उसकाना,  
उत्तेजना देना, छेदना, मजाक  
करना । [ इच्छा होना ।

सणपी ( कि. ) खानेके लिये

सणपुं ( कि. ) इधर उधर हिलना ।

सणपुं ( कि. ) जल्दी चक्कना,  
दौड़ना । [ औजार, जेरी जेली ।

सणपुं ( सं. ) काटे बगैर उठानेका

सणपे ( सं. ) दुःख, श्वास, चक्क,  
दर्द, इच्छा, मन ।

सणपुं ( कि. ) जलना, सुलगना,  
भड़कना, छलाई शुरू होना ।

सणपापुं ( कि. ) सुलगाना, भड़-  
काना, जलाना, प्रज्ज्वलित करना,  
अग लगाना, मनमुटाव करना ।

ससंग ( वि. ) पास, मिलाहुआ,  
सटाहुआ, नयीच, मिठाहुआ ।

सससण ( वि. ) समविषय ।

सणपण ( अ० ) बैचन ।

सणपणपुं ( कि. ) बैचन होना,  
ज्मकुक होना, चबरावा ।

संज्ञा ( कि. ) सङ्गना, सुलना,  
कराव होना पुनना, दुषारु पशु-  
ओंको बहुत दिनतक नहीं दुहनेसे  
बनों में गांठ बंधजाना ।

संज्ञि ( सं. ) छद्, सलाका डंका,  
दण्डा, बन्दकका यज्ञ ।

संज्ञी ( सं. ) छोटीसालाका, सल्लाह  
संज्ञी आपसी ( कि. ) उत्तेजना  
देना, उकसाना ।

संज्ञी करवी ( कि. ) अंगुली करना,  
छेद छाद करना, उकसाना ।

संज्ञी संज्ञो ( सं. ) युक्ति प्रयुक्ति  
संज्ञी संज्ञो करवे ( कि. ) प्रेरणा  
करना, उकसाकर ऊँचा करना ।

संज्ञेभ-भभ ( सं. ) जुकाम के  
कारण नाक टपकना, जुकाम ।

संज्ञेभु ( सं. ) देखो संज्ञी ।

संज्ञेभुः करपु ( कि. ) छेदछाद  
करना ।

संज्ञो ( सं. ) सुलनेका रोग, पुनने  
बीधने अथवा सलनेका आरंभ,  
अव्यवस्था, फूट, अनयन ।

संज्ञि ( सं. ) प्रभु, भगवान्, स्वामी,  
मुसलमानोंका फकीर ।

संज्ञिभैला ( सं. ) ताज़ियाँके  
दिनोंमें पागल फकीर का वेष ।

सांक्षि ( सं. ) कुसल, कन्याव,  
छेम, भेट, आलिगन ।

सांक्षि छेले ( कि. ) खबर पूछनेना,  
राजी खुशी पूछना ।

सांक्षि ( सं. ) मुसबित, संकट,  
रुह ।

सांक्षि ( वि. ) सकड़ा, कमचौड़ा,  
सकरा, संकीर्ण, ओछा, थोड़ा ।

सांक्षि आपसी ( कि. ) संकटमें  
फँसना, मुसीबतमें मुन्तिला होना ।

सांक्षि सांक्षि सभास करवे ( कि. )  
बोहेसेस्थानमें गुज़र करना ।

सांक्षि संज्ञ ( सं. ) निकटका  
सम्बन्ध, पासका नाता [देखना ।

सांक्षि ( कि. ) न पना, मापना,  
सांक्षि ( सं. ) शृंखला, सिकली,  
संकळ, नापनेका १०० फुटका  
परिमाण विशेष जंजीर ।

सांक्षि भाखवी ( कि. ) बीचमें  
गड़बड़ पैदा करना, सरकशा  
पैदा करना । [ संकलन करना ।

सांक्षिपु ( कि. ) जोड़ना, मिलाना

सांक्षिपु ( सं. ) अनुकषणिका,  
सूची पत्र ।

सांक्षि ( सं. ) पतली और बारीक  
सांकळ, जंजीर, बड़ीभी चेन ।

संज्ञा ( सं. ) सोने या चांदीका आभूषण विशेष, लंकछा । [संज्ञा]	संज्ञा ( सं. ) वस्त्र, लोहा, किसी-किसी के हाथके वस्तु ।
संज्ञा ( सं. ) तौल या माप का अभिप्राय ( कि. ) सहन करना, बर्तना करना, नापना, मापना ।	संज्ञा ( सं. ) सांझ, संध्याकाळ, सूर्यास्त का समय ।
संज्ञा ( सं. ) नाप तौल ।	संज्ञा ( कि. ) रात होना, चिराम् बरतोंका समय होना ।
संज्ञा ( सं. ) एकका संकेत ( व्यापारमें )	संज्ञा ( कि. ) जानबूझकर देर करना । समय बिताना ।
संज्ञा ( सं. ) बछी, सेल, भाला, एक प्रकारका अस्त्र, शक्ति, एकका सांकेतिक शब्द, ( वि. ) सारा सब, पूरम्पूर ।	संज्ञा ( अ० ) दीपक जलने के वक्त, सूर्यास्त समय ।
संज्ञा ( सं. ) सेंगरी, मोगरी, एक वृक्ष विशेष की फलियां ।	संज्ञा ( सं. ) सांझ समय गाने के गीत विशेष ।
संज्ञा ( सं. ) बटखोंको पहिराने का जेवर विशेष । [साथ लगा रहे ।	संज्ञा ( सं. ) खाद्य पदार्थ विशेष ।
संज्ञा ( कि. ) ऐसा बांधना जो	संज्ञा ( सं. ) ईशु बंद, ईस, गला, सांठा, ज्वार मक्का आदिका बंठल ।
संज्ञा ( सं. ) गंदा, गंदा, छोटीसी छटिया ।	संज्ञा ( सं. ) दागाहुवा बैल, बिना बाधिया किगाहुवा बैल, मस्त बैल, जाकि, कंट, निरकुश व्यक्ति ।
संज्ञा ( सं. ) मंदिरमें ठाकुरजी के आगे पूरा हुआ रंग मंडप, रक्की डुरी के पासका भाग विशेष ।	संज्ञा ( सं. ) ऊंटनी, ऊंची जाति का ऊंट । [ जाना, तेज जाना ।
संज्ञा ( वि. ) पूर्ण सब, सारा ।	संज्ञा ( कि. ) जल्दीजाना, सीप
संज्ञा ( कि. ) जाना, बिदाहोना संचित करना, इकठ्ठा करना ।	संज्ञा ( सं. ) देखो संज्ञा ।
संज्ञा ( कि. ) संवत् करना, इकठ्ठा होना, एकत्र करना ।	संज्ञा-संज्ञा ( सं. ) संती, संज्ञा, किसी वस्तु को उठानेका वज्र विशेष ।

सांति ( सं. ) रसोईका सामान,  
सीधा रसद, ( वि. ) शरीरसे  
नाडुक, तैयार, तत्पर, उद्यत ।  
सांतपुं ( कि. ) सताना, कष्टदेना,  
छुपाना, ऊपर रखना, पूरे होना ।  
सांतपुं ( कि. ) घों या लेखमें  
सेकना, तळना, भूनना ।  
सांती-तीक्ष्ण ( सं. ) हठ, एक हठसे  
शुत सकनेवाली जमीन । [ टंकस ।  
सांतीवेरे ( वि. ) हठगीले कर  
सांतिधी ( सं. ) लड़कोंका एक खेल  
विशेष । [ जर्मनका ठेका ।  
सांथि ( सं. ) जमीनका भाड़ा,  
सांथिपुं ( कि. ) भाड़ेपर जमीन  
जोतने के लिये देना ।  
सांथिवे ( सं. ) बाजरे के आटे से  
बनाई हुई एक प्रकारकी मिठाई ।  
सांथीडे ( सं. ) बारह महीनेके लिये  
रखा हुआ नौकर । [ कड़कन ।  
सांथि ( सं. ) संधि, चीर, फांट,  
सांथि ( सं. ) जोड़, सीबन ।  
सांथिपुं ( कि. ) जोड़ना, मारना,  
बिपकाना, सामिल करना, पैन्ड  
लगाना, बेचली लगाना ।  
सांधे ( सं. ) चीर, फाट, खान्ध,  
शरीरका जोड़ । [ सं. ।  
सांधि सांधि जुठो ( = ) बिलकुलही

सांधि आने ( कि. ) इच्छा पूर्ण  
होना ।  
सांधे ( सं. ) सम्पुट ।  
सांधेपुं ( कि. ) प्राप्त होना, मिलना,  
हाथ आना, जन्म देना ।  
सांधे ( वि. ) तैयार, उद्यत, मौजूद ।  
सांधे ( सं. ) जुएके दोनों ओरके  
छिद्रोंमें लगनेवाले बड़े सेल ।  
सांधेपुं ( सं. ) मूसल, मूसळी, मू-  
सर, । धान्य धर्गरः कूटने वा ) ।  
सांकरपुं ( कि. ) विकरे हुएको  
इकट्ठा करना, सभाळना ।  
सांभणपुं ( कि. ) सुनना, श्रवण  
करना, ध्यान देना, मानना, कथ-  
नानुसार करना ।  
सांसपुं ( सं. ) गुप्त सलाह, उन्मजना ।  
सांसत ( सं. ) डीला, माग ।  
सांसपुं ( सं. ) मन्द, डीला, शान्त ।  
सांसता ( सं. ) वैर्य, धीरज, सांसि ।  
सांसा ( सं. ) फिक, चिता, तंगी,  
शंख, सक ।  
सांसा पड्या ( कि. ) तंग हाव  
होना, दुर्दशामें पडना ।  
सांसारिक ( वि. ) संसारका, दुनिया-  
दारीका, संसार व्यवहार संबंधी ।  
सांसा ( सं. ) देखो सांसा संख्य ।

संज्ञा ( अ० ) सीधा, सूया ।  
 सा ( अ० ) वह, उसकी ।  
 साक्षी-ही ( सं० ) साक्षीकी पतली  
 शाखाएं, पतली बल्लियाँ । [ चीनी ।  
 साक्षर ( सं० ) सफर, शर्करा, खोड  
 साक्षर धीरसरी ( कि० ) मीठा बो-  
 लकर मन प्रसन्न करना, मिष्ट  
 भाषण सुशामद करना । [ करना ।  
 साक्षर वादपी ( कि० ) सुशामद  
 साक्षरसुसाक्ष कालु ( कि० ) बिल-  
 कुल अन्यायी होना, सख्त होना,  
 बारीक परीक्षा करना ।  
 साक्षरपुं ( कि० ) बुलाना, आवाज  
 देना, हलामचना । [ सुदु मधुर ।  
 साक्षरीया ( वि० ) सफर, सगीखा,  
 साक्षर ( वि० ) पठित विद्वान,  
 शिक्षित । [ आँखों के आगे, प्रकर ।  
 साक्षात् ( अ० ) प्रत्यक्ष, सामने,  
 साक्षी ( सं० ) आँखों देखनेवाला,  
 गवाह, गवाही, शहादत ।  
 साक्षिकरथी ( कि० ) गवाह के रूपमें  
 अपने हस्ताक्षर करना ।  
 साक्षीभाषणी-धुरणी ( कि० ) शहा-  
 दत देना, गवाही देना, गवाही  
 देना, स्वीकार करना ।  
 साक्षिदा ( सं० ) गवाह, साक्षी ।

साध ( सं० ) साक्षी, गवाही, साक्ष,  
 टेक, इत्यत्र ।  
 साध-भिद्रुं ( सं० ) साक्षा, साक्ष,  
 उगाळ, वृक्षपर पकाहुआ फल,  
 आमपर या घरमें पकी हुई कठोर  
 कैंटी ।  
 साध्नी ( सं० ) प्रमाणरूप छाँटीसी  
 कविता, गजल या पदके बीचमेंके  
 दाँहे ।  
 साधो ( सं० ) लड़ाई, झगड़ा, फसाद  
 साधो करणे ( कि० ) चिन्ता चिन्ता-  
 कर लड़ाई करना ।  
 साध ( सं० ) एक प्रकारका वृक्ष,  
 विशेष जिसकी लकड़ियाँ घर बना  
 नेके काममें आती हैं, फाँस वीरें ।  
 साधर ( सं० ) समुद्र, उदधि,  
 दरिया ।  
 साधरन्ध ( सं० ) लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ।  
 साधवान ( सं० ) सागीन वृक्ष विशेष  
 साधपुं ( सं० ) सम्बन्ध, नाता,  
 रिश्ता, सगाई ।  
 सागोण ( सं० ) छानाहुवा घूना ।  
 सांकेतिक ( वि० ) इशारेवाला, संकेत  
 सूचक । [ दर्शन शास्त्र ।  
 सांध्य ( सं० ) कपिलमुनि प्रणीत  
 साध ( सं० ) सत्य, खरा, सच्चा ।  
 साधभाष्य ( वि० ) सचमुच, सत्य सत्य ।

साधवट ( सं ) सत्यता, सच्चाई, प्रमाणिकता । [ सचय करना ।  
साधवधु-धु ( सं ) संभाळ, यत्न  
साधवधु ( कि ) रक्षाकरना, संवय  
करना, संभाळना, बन्दकरना ( द्वार )  
साधवधु ( सं ) देखो साधवट ।

साधु ( वि ) खरा, सच्चा, मूल्य,  
ईमानदार, विश्वस्त, प्रामाणिक,  
बकादार, मक ( सं ) सत्य ।

साधे ( अ० ) ठीक, सच, बाजिबी  
रीतिसे । [ ठीक ।

साधेसाधु ( अ० ) जैसा हो तैसा  
साधु ( सं ) खरा सोटा,  
उचित अनुचित ।

साधुलुहा ३२५ ( कि ) इधरकी  
उधर कहना, कानभरना, सचको  
झूठ और झूटको सत्य बनाना ।

साधुलोधु ( वि ) सत्यवादी, सच  
बोलनेवाला, खरी कहनेवाला ।

साध ( सं ) सामग्री, सजानेका  
सामान, शृंगार, वस्त्राभूषण, साहित्य  
साध ( वि ) शृंगार कियाहुआ,  
सज्जित ।

साधन ( सं ) प्रतिष्ठित तथा सम्भव  
मनुष्योंका समुदाय जो जुक्स के  
जाने अज्ञे चकता है ।

साधु ( सं ) पंचायती, कार्यवा  
खेगोंका किसी बातका निपटारा  
करने के लिये सम्मेलन ।

साधु ( कि ) बिसहर साफ  
करना, मोजना, साफकरना,  
शोभा देना ।

साधसरंजम ( सं ) सामान,  
सामग्री, साजबाज, तैयारी ।

साधुदे ( सं ) नाचनेवालों के  
पाँछे बजानेवाला, सारंगी तबले  
आदि वाद्यका बजंत्री ।

साधुधु ( सं ) हार विशेष ।

साधु ( वि ) सारा, संपूर्ण, अक्षत  
अखंडित, स्वरथ, सँदुरुस्त ।

साधुताधु सधु ( वि ) निराले और  
पुष्ट, बड़ाका, पट्टा, पूरा, सच ।

साध ( सं ) सहायता, मदद,  
आश्रय ।

साध ( सं ) पाँटकी इड़ा, रीढ़ ।

साधके ( सं ) चानुक, हंटर,  
लकड़ीया चानुककी मार ।

साधभर ( सं ) वह मत्त जो हाथी  
से कुस्ती लड़ते समय हाथी को  
आत्म मारकर बिगाटा है ।

साधभारी ( सं ) हाथीकी लड़ाई,  
हाथी और मक्ककी कुस्ती ।

साक्षु (कि.) क्षीयत करना, मूल्य ठहराना ।

साडी (सं.) सवारी गाड़ी का वह भाग जिसमें मनुष्य बैठते हैं ।

साडीअंभरा-डीअंभरा (सं.) कान भरना, उलटा सीधा समझाना ।

साडीन (सं.) एक प्रकारका रेशमी वस्त्र ।

साडुं (सं.) बदला, सालकी कीमत में खपना न देकर कोई वस्तु देना, परिवर्तन, कन्याके बदले में कन्या लेना, मूल्य ठहराना, ऐवज एकसमंज, करार, वादा, बोली, वचन ।

साडुंतेभडुं (सं.) जिसकी कन्या ली हो उसे कन्या देना या अपने स्वयंकी अववा मित्रकी कन्या दिलाना-इसविषयका करार ।

साडे (अ.) बदलेमें, ऐवजमें ।

साडाभत (सं.) बदला, या करारकी वस्तावेज ।

साडु (सं.) बंबक, टग, छुआ ।

साडी (सं.) गाड़ीका वह मार्ग जिसमें घोस-बजन भरा जाता है ।

धोया हुआ भी, भी मिलाबुवा आटा ।

साड (वि.) साठ ६० संख्या विशेष, (सं.) बड़ातुल्य ।

साडी (सं.) साठ वर्षकी वय, बुढ़ापा, साठ दिनमें पैदा होनेवाली

एक प्रकारकी ज्वार (अब)

साडी बाडडा समाडसं (कि.) ल-  
वाई पैदा करनेका डंग रचना ।

साडीस-नीस (वि.) ३७, सैं तीस, संख्या विशेष ।

साडीसो (सं.) औरतोंके पहिरने का छुड़ा, वस्त्र विशेष ।

साडी (वि.) आधा आधिक मताने वाला प्रत्यय शब्द, सादे सादे ।

साडातधु पडीतुं शब्द (सं.) अधिक-  
सुख ।

साडातधुपाय (वि.) सा-  
का, बेडेया, आस्थि-  
का ।

साडापार भेवडी भुवुं (कि.)  
भागजाना, छूहोना, रफूहोना,  
सटकजाना ।

साडासातनो डेरो (सं.) बर्दाभारी  
आपत्ति, कठिन दुःख ।

साडासात भुवुनी संभगावणी (कि.)  
बहुतही भरी गाड़ी देना ।

साडासातपार (वि.) बहुत बेर  
कई समय, बारम्बार ।

साडासाती आरणी (कि.) बड़ी,  
भारी आकत आना, आपत्तिआना ।

साडी ( स. ) सारी, कियों के पाहिरनेकी धोती, छूषड़ा, फरिया ।

साडीभपतालीस ( वि. ) अनिश्चित संख्या हो तब यह वाक्य कह देते हैं ।

साडी भुवेतेरनेअंठ ( सं. ) पत्र पर साठे चौदहतर ( ७४॥ ) का अंक उन्हीं पत्रोंपर लिखा जाता है जिन्हें उसका प्राप्त करनेवाला हो पड़े, भित्तीड के युद्धमें जहांक हिन्दु मुसलमानोंका युद्ध हुआ तब मृत बरों के यज्ञोपवीतका वजन ७४॥ मण उनराथा तबमे यह मरुया लिखी जाती है, कुछ विद्वानोंका कथनहै कि यह ७४॥ का अंक " श्री " का बिगड़ा रूप है ।

साडीत्रधुपासणीतुं ( वि. ) अस्थिर चित्तवाळा, आधापागल भिरी ।

साडीभार ( सं. ) पराह, चिंता, दूरकार ।

साडीसाती ( सं. ) साठे सात वर्ष रहनेवाली शनि ( ग्रह ) की दशा ।

साडु-डु ( सं. ) पत्नीकी बहिनका पति ।

साधुडं ( सं. ) खप्पर, मिट्टीका पात्र विशेष ।

साधुपधु ( सं. ) मकानपना, स्थानापन, विवेक, ज्ञान, समझ, चतुरता ।

साधुसे ( स. ) बिमडा, चमीडा, मुरकक, कठिनाई, दिक्कत ।

साधुसाभां आगुं ( कि. ) आकन में आना ।

साधु ( सं. ) स्वप्न, सपना, निद्रास्थानके विचार, रुबाव, उड, छेद काठनाई, मोठा ( वि. ) चतुर, सयाना, स्थाना, समझदार ।

साग ( वि. ) सात सख्या विशेष ७७ सात नाभानेनाभे ( वि. ) बहुतही बढ़माश, उड़ण्ड ।

सागभणनेभाणीतुं ( कि. ) खूब सोचना, तुलना करके अच्छा ग्रहण करना, और बुरा त्याग देना ।

साग भाउथी नभरकर करवा ( कि. ) दूर रहना, अलग रहना ।

सातधर भधुवा ( कि. ) घरघर भटकते हुए फिरना, व्यर्थ घूमना ।

सातताड उंथे ( वि. ) अधिक लम्बा, ऊंचाईमें बड़ा ।

सातपाधुधवी ( कि. ) दिकर्नक्य विमूढहोना, आपत्तिमें पड़ना, असमञ्जसमें फँसना ।



सात पासनी चिंता ( कि. )

बहुत तरहकी चिंता है ।

सात ऐडीना सोपान उबझाववा  
( कि. ) सात पीढीकी निंदा  
करना ।

सात सोधता तेर तूटवा ( कि. )  
आमदनीसे खर्च अधिक होना,  
आय व्ययका मेल नहीं मिलना ।

सातभु ने सवासेरुं ( वि. )  
बहुतही कठोर छाती, बज्रमुख्य  
हृदय, बहुतही होशियार ।

सातमे आरमाने अठपुं—अधु—५-  
होयपुं ( कि. ) बहुतही घमंड  
करना, अति पर पहुँचना ।

सातमे थोडे ( अ० ) एक कोनेमें,  
कोई न जान सके या देख सके  
ऐसे स्थानमें ।

सातमे थोडे ( अ० ) बिल्कुल  
एकान्तमें, अत्यन्त गुप्त जगहमें ।

सातमे पताणे ( अ० ) बहुतही  
नीचे, ऐसी जगहमें जहाँ पताही  
न लगे ।

साते धोडे साथे बहान ( = ) ये  
सब काम एकही साथ हो ।

साते थोडे वसने ( कि. ) ईश्वर  
करे और कुटुम्ब बडे, छुडे हो ।

सातसात ( सं. ) सातका अंक,  
७, कुछभी नहीं, भ्रूषानी, पूर्ण,  
असंक्रान्त । [ सात भाग हो ।

सातपट्टी ( सं. ) ऐसी खाई जिसके  
सातपट्टी ( सं. ) जिसकी शत तहें  
हों, सात पड़वाली ( रोटी )

सातपडे ( सं. ) पैरकी या हाथकी  
अंगुलीपरका सूजन, ज्वरो, घिनही ।

सातभ—तेभ ( सं. ) सप्तमी, तिथि  
विशेष, पक्षका सातवां दिन ।

सातभुं ( वि. ) सातवां, सप्तम ।

सातरा ( वि. ) शृंगार करके तय्यार  
किया हुआ । ( सं. ) पृथ्वीपर  
बिछौना ।

सातरा पाडवा ( कि. ) पतंगको  
आस्मानसे नीचे उतारते समय  
धागेको दूर दूर इस लिये फैलाना  
कि वह चरखी पर लपेटते समय  
उलझ न जावे ।

सातवे ( सं. ) सत्तू, सिके हुए  
अन्नका आटा । सतुआ ।

साता ( सं. ) आराम, करार, सुख,  
संतोष, शान्ति ।

सातावनवी ( कि. ) आराम होना,  
शान्ति होना, सुख होना ।

साति ( वि. ) सत्वगुणयुक्त, सत्व  
गुणविशिष्ट, साधु, विवेकी ।

साध ( सं. ) संघ, संगति, यैत्री,  
सोहवत ( अ० ) साथमें, संगमें ।  
साधरिषे। ( सं. ) चाहे जिस समय  
चाहे जहाँ बैठकर परचूरण सामान  
बेचनेवाला ।

साधरी ( सं. ) नदी किनारे आप-  
थियोंके टोपर वस्त्र डालकर रखा  
हुआ मग्दुनका सामान ।

साधरी ( सं. ) सोनेके लिये बि-  
छाई हुई धातु । मृत शरीरका  
सुलानेके लिये लीपी हुई जमीन ।  
बौका । कुशासन, डामकी चटाई ।

साधरे भुवाधु ( कि. ) मार  
डालना ।

साधरे डरे। ( कि. ) संहार  
करना, मुर्दा करना ।

साधिये। ( सं. ) साधिया, शुभ-  
स्वक चिन्हविशेष ।

साधी ( सं. ) संगी, दोस्त, सहा-  
यक । गादीवान, सारथी, नौकर,  
हाली, बारह महीनेके लिये रखा  
हुआ नौकर । ( अ० ) किस कारण,  
किस लिये, क्यों ।

साधे ( अ० ) साथमें, संगमें, संगतिमें ।

साधे ( अ० ) इकट्ठा, साथही

१५ ।

साध(सं.)आवाज,संवाद, ध्वनि, स्वर ।

साध डरे। ( कि. ) बिलाना, जोरसे  
आवाज मारना, डकक करना ।

साध डरे। ( कि. ) जोरसे बोलना ।

साध डरे। ( कि. ) जवाब देना ।

साध पाडरे। ( कि. ) बिंदोरा फि-  
राना, डुबोरा पिटाना, मुनादी  
कराना, डौबी पिटाना ।

साध भेसरे। ( कि. ) आवाज मन्द  
होना, गवा बैठ जाना, स्वर मंज  
होना ।

साध ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

साधभर ( सं. ) चर्मादा लकड़  
के लिये बड़ धन को घास के तोंग  
इकट्ठा करके मरकारी देखरेक  
द्वारा खर्च करने को दे देते हैं ।

साधडी ( सं. ) देखो साध(कवितामें)  
( सं. ) चटाई साधरी, धान  
अथवा लकड़के पत्तोंका बनाहुआ  
आसन-बिछौना ।

साध ( सं. ) फटी दूदी चटाई ।

साधडी ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

साध ( वि. ) आदर सहित, धान-  
पूर्वक, सम्मान युक्त, प्रकट, पूज्य  
आपहुंकाहुआ, गर्भवती स्त्री की  
इच्छा पूर्ति ।

साध ( सं. ) साधनी, साधक ।

साधु ( वि. ) साधु, अकृतिम,  
प्राकृतिक, सरल, साधारण ।

साधुत्व ( सं. ) समानता, बराबरी ।

साधु ( वि. ) साधु, सज्जन, संत,  
( सं. ) स्वाधीन, स्वतंत्र ।

साधक ( वि. ) साधन करनेवाला  
अनुष्ठान करनेवाला, अभ्यासी,  
( सं. ) सहायक, मददगार भक्त ।

साधन ( सं. ) उपाय, बल, उद्योग  
वेष्टा, अभ्यास, अनुष्ठान, शुक्ति,  
औजार विशेष ।

साधनी ( सं. ) औजार, विशेष ।

साधना ( सं. ) साधन अनुष्ठान,  
तपस्या, निद्रा करना, अभ्यास  
करना, आदत डालना, साधन  
करना ।

साधनिका ( सं. ) पदच्छेद ( व्याकरण )

साधर्म्य ( सं. ) समानता, एक  
संज्ञा । [ वर्तनी ]

साधनी ( सं. ) साधनी, सौभाग्य-  
साधन ( कि. ) साधन करना, मनमें  
सोचाहुआ काम करना, मतलब  
निकालना, बशमें करना ।

साधार्थ्य ( वि. ) सामान्य, सहज  
सरल, आम, मामूली, जनसामान्य ।

साधार्थ्यभाष ( सं. ) धर्मोपाख्याता ।

साधार्थ्यधर्म ( सं. ) ऐसा धर्म जो  
बहुतसे मनुष्योंके अनुकूल हो ।

साधार्थ्यपक्ष ( सं. ) मध्यम पक्ष ।

साधित ( वि. ) साधाहुआ साधन  
किना हुआ, सिद्ध, बनाहुआ ।

साधु ( सं. ) संत, सज्जन, परोप-  
कारी व्यक्ति, महाजन, विवेकि, व  
रकर ईश्वर स्मरण करनेवाला  
ज्ञानी विरागी, सत्यवादी, ( वि. )  
धर्मी, विश्वस्त, शुद्ध निर्मल ।

साधुसभा ( सं. ) सज्जन पुरुषों  
की, संगति, संतोंका मेळमेल ।

साधुसन्त ( सं. ) भक्त तथा ज्ञानी  
व्यक्ति ।

साध्य ( वि. ) जो साधन किया जा  
सके, साधन करने योग्य, बशमें  
करने लायक, पारपढ़ने लायक ।

साध्वी ( सं. ) साधुवृत्तिवाली स्त्री,  
पतिव्रता सती ।

सान ( सं. ) संकेत, इशारा, चिन्ह,  
एवज, छटा, गहने रखना, सैन,  
समस्या, आँकड़ा इशारा, समझ,  
हुँद, अह, धरोहर ।

सान्नायणी ( कि. ) अहमाणा ।

सान ( सं. ) छोटी रकबी, मिट्टी-  
की बाली-पात्र विशेष ।

साप ( वि. ) आनन्द सहित,  
अरुहादयुक्त, दर्शान्वित, हृष्ट ( अ. )  
आनन्दमें हर्षमें ।

सापदार्थ्य ( स. ) खुशीके साथ  
तहाउलूब, हर्षके साथ अचंभा ।

सापशुष ( सं. ) चेत, मान, दोष ।

सापी ( सं. ) कोलहू धानी में तेल  
निकालते समय उसका कचरा या  
भूसी, खली, खल, खर ।

सानुकुल ( वि. ) मददगार, अनुकूल  
प्रसन्न, खुश ।

सानुनय ( वि. ) गरीब । [ अक्षर ]

सानुस्वार ( वि. ) अनुस्वार युक्त

सान्त्वन ( सं. ) ढाढस, धैर्य, स-  
मझाना, सुझाना । [ व्याकरण ]

सान्वय ( वि. ) सान्वय सहित

सानिध ( सं. ) समक्ष समीप,  
पास, निकटता, सामीप्य, उपस्थित ।

साप ( सं. ) सर्प, आहि, गुजंग,

व्याल, नाग, सांप, ( वि. ) नमक

हराम, दुष्ट, जहरीला, कोची,  
काढा ।

सापनी क्षाण्णी ( सं. ) सर्पको  
केचुड़, सापके शरीरकी खोली ।

सापछे के धो छे ? (=) बिना जाने

किसी कठिन काममें हाथ नहीं

बालना चाहिये अर्थात् थोतक बाक्य ।

सापना धोना अक्षान्ना ( कि. )

बहुत प्रकार से समझाना, शिक्षा  
देना ।

सापनोभारे ( सं. ) भयप्रद, खान,  
या पात्र, अविश्वस्त, रांड अथवा  
कन्या काळ बीती हुई तरुण स्त्री,  
अत्यंत जहरीला, देशी ।

सापके धो ने निकले ते भर  
( कि. ) भाग्य परीक्षा करना ।

सापना पग साप गच्छे ( अ० )  
चोरकी गति चोरही जाने, " खग  
जाने खगहीकी भाषा "

सापनेधेर साप परेछे ( वि. )  
सापके सांप मेहेमान, दोनों एक  
सरीछे ।

सापनो छरडे होरीथी भीजे  
( अ० ) दूधकाजला छालकोभी  
फूटदेकर पीता है ।

सापधू ( सं. ) सारिणी, नागिन ।

सापभाभूणी ( सं. ) एक जीवधारी  
विशेष ।

सापेभ्यः छल्लंदर ( अ० ) " मई गति  
साप छल्लंदर करी " सांप जब  
छल्लंदरको खा लेता है तो उसकी  
बड़ीही दुर्बला है क्योंकि खाता है  
तो मरता है और वापस निकलता  
है तो अंधा होजाता है, इधर  
गढ़वा और उधर जाव सो हुआ ।

सापेक्ष ( सं. ) सापिन्, सामिन्, सर्पिणी, पशु मयवा मनुष्यके सरीर पर बिम्ब विशेष । [ अर्थात् दुष्टा ।

सापेक्षणी ( वि. ) बहुतही चालाक

सापेक्षिण ( सं. ) सांपका बच्चा, सपव्य, छोटा सांर ।

साध ( वि. ) स्वच्छ, पवित्र, निर्मल शुद्ध, ठीक, सूचा, सीधा, सपाट निष्कपट, प्रगट, स्पष्ट ( अ० ) विलकुल, रगड़कर ।

साक्षी ( सं. ) मांग वनेरः छाननेका वल चित्रम के नीचे लगनेका कपड़ा ( पीते समय )

साक्षीभारणी ( हि. ) तारीफ मारना, देखी करना, घमंडी बनना ।

सामहुं ( वि. ) सारा, समस्त, सम्पूर्ण, जराजरा, बिलकुल, तमाम ।

साभर ( सं. ) सांभर, पशु विशेष ।

साभरसिंभु-सिंभु ( सं. ) बारह सिंहा नामक पशुका श्रेण ।

साभरी ( सं. ) बारा सिंहा ( मादा ) पशु विशेष । [ वल विशेष ।

साभरिणी ( सं. ) अर्थात् महीन

सामित ( वि. ) प्रमाणित, सबूत दियाहुवा ।

साधु ( सं. ) साधुन, साधू, विद्वान-हट तथा मेल साठ करनेका पदार्थ विशेष ।

साधुनोसभाग्रणे ( वि. ) साधक तक, सौंदर्य दिखानेवाला ।

साधुभोगी ( सं. ) साधुनका गोंडा एक प्रकारकी मिठाई, ठिगने कदका मोटा तात्रा आदमी ।

साधुबोभा ( सं. ) साधुशाना, साधुशाना, वृक्षका रस, विशेष जिसे चलानियों में छानकर गोल गोल दाने बना लिये जाते हैं ।

साधुन ( वि. ) पूरा पूर्ण, अक्षन ।

साभेरी ( सं. ) ( वैदिक ) वर के जुळूस में सुमजिस्त बालक ।

साभ ( सं. ) वेद विशेष, सामवेद, पति, स्वामि ( काव्य में ) किसी काठको वस्तुको फटनेसे बचाने के लिये लोह बगैरः धातुकी बनाकर लगाई हुई बगड़ी स्वाम ।

साभभी ( सं. ) सामान, चीज, वस्तु, उपकरण, असबाब, साहित्य ।

साभहुं ( अ० ) एकही बार, सह, सारा, साथही, इकट्ठा ।

साभतम्ब ( सं. ) करद राजा, मंडराजा, अर्थात् बलवान योद्धा, सरदार, सेनानी ।

- साधन (सं.) सामान, सामग्री, सटपट, माल, रखीहुई ची। [सामना।
- साधने। (सं.) सड़ाई, विरुद्धता।
- साधंत (सं.) देखो साभद (वि.) पासका, पचोसका, निकटस्थ।
- साभर (सं.) एक प्रकारका वृक्ष।
- साभरथ (सं.) शक्ति, बळ, पराक्रम योग्यता, ताकत, कूबलत।
- साभवेदी (वि.) सामवेदका ज्ञाता।
- साभसाभु (वि.) आपने सामने, एक दूसरे के मुखके आगे।
- साभशु (वि.) श्यामळ, काळेरंगका
- साभणियो (सं.) कृष्ण। [रसीद।
- साभाइसकत (सं.) पट्टेच, चिट्ठी
- साभान (सं.) चीज वस्तु, सामान, सामग्री, साहित्य, अविकाहिता, पत्नी, मायका।
- साभाननांभवे। (क्रि.) घोंडेपर काठी बगेरे कसना।
- साभात (सं.) साधारण।
- साभान्यनाभ (सं.) विशेष नामसे उलटानाम, (भ्याकरणमें) [गणिका।
- साभान्या (सं.) बेइया, रंजी,
- साभाधायभ (सं.) अविपंचमी, उत्सव दिवस विशेष, भाद्रपद शुक्ल ५।
- साभाचणियो (सं.) सन्तु, दुस्मन,
- साभवाणे। (वि.) विरुद्ध पक्षका, (सं.) सन्तु, दुस्मन अरि।
- साभासाभी (अ०) आमने सामने रुबरु, (सं.) शत्रुता, दुस्मनी।
- साभाभीभाषणु (क्रि.) कहना।
- साभीध (वि.) सामिल, मिलाहुवा, जुड़ाहुआ, मिश्रित, अभिष।
- साभुंभे (अ०) सामने, दृष्टि आगे, मुंहके आगे, कबरु, उलटा, प्रत्युत्तरमें, जबाब में, (वि.) उलटा।
- साभुंधणु (क्रि.) मारनेके लिये तैयार होना, जबाब देना। [होना।
- साभुपणु (क्रि.) विरुद्ध पक्षमें
- साभुणु (क्रि.) बुलावेजाना।
- साभुंभाषणु (क्रि.) बुलानेके लिये सामने आना, स्वागतार्थ आना।
- साभुद्र (वि.) समुद्र सम्बन्धी, समुद्री, दरियाई।
- साभुधुनी (सं.) दो बड़े समुद्रोंके जोड़नेवाली खाड़ी।
- साभुश्रि (सं.) हाथ देखनेकी विद्या, शरीरके चिन्ह अथवा रेखा देखकर जीवन के भूत भविष्य कार्योंको कहनेकी विद्या, (वि.) समुद्र सम्बन्धी।

साभे (अ०) सामने, स्वरु, विरुद्ध  
पक्षमें, आँखों आगे ।  
साभेक्ष (वि.) देखो साभीक्ष ( सं. )  
संलग्न, दोमेखें जो बेलोंक जुएके दोनों  
तिरोंपर छिद्रोंमें लगती हैं )  
साभेक्षु ( सं. ) मूसर, अन्नादि  
कूटनेका साधनविशेष ।  
साभेक्षु ( सं. ) अगवान्नी, किसी को  
गाँते बजाते जाकर आगेसे ले  
आना, आतिथ्य, स्वागत ।  
साभे ( सं. ) चान्द्रविशेष ।  
साभेऽप्यार ( सं. ) मित्र भाषण-  
द्वारा शांति ।  
साभ्राण्य ( सं. ) राज्य, चक्रवर्ती  
राज्य, सल्तनत ।  
साभित ( अ० ) आधुनिक, वर्तमान  
समयका, मौजूब, तय्यार ।  
सांभ ( सं. ) पार्वतीसहित शंकर ।  
सांभ्य ( सं. ) समानता, समावस्था,  
सदृश्य, बकसाँपन ।  
साभंभ्रातर ( सं. ) साँझ, मुबह ।  
सांभ्य ( सं. ) बाण, सज्ज, ( वि. )  
सहायक, मददगार ।  
सांभ्यकाण ( सं. ) संघासमय, सां-  
झका वक्त । [मिहरबाव, मेहरबान ।  
सांभ्यगान ( सं. ) साहिब, साहेब,

साभर ( सं. ) सराव बगीरःका कर,  
डेक्स, कबि, शायर, समुद्र. सिंधु,  
हरिबा ।  
साभरी ( सं. ) कविता, काव्यविद्या ।  
साभुण्य ( सं. ) मुष्किका सेह  
विशेष ।  
साभे ( सं. ) मदद, आश्रय, सहारा ।  
साभ ( सं. ) रस, कस, सत्व, अंश,  
तत्व, बन्तुका उत्तम भाग । मूळ,  
उद्देश, मुख्य शिक्षा, सारांश, काम,  
कल, कृपा, मदद, छिद्र ( वि. )  
अच्छा ( कवितामें ) ( सं. ) सार  
संभाळ ।  
साभक ( वि. ) रेचक ।  
साभंभ ( सं. ) रागविशेष, हरिण,  
मृग, हाथी, सिंह, हंस, चातक,  
मोर. कोकिल, बिच्छू, भ्रमर,  
कमळ, पक्ष, धनुष, संक, सारंगी,  
मय, केस, चंदन, कपूर, स्वर्ण,  
रत्न, पृथ्वी, प्रकाश, रात्रि विविध  
रंग, कामदेव, साँप, वृक्ष, जल ।  
साभंभपायु ( सं. ) विष्णु ।  
साभंभी ( सं. ) एक प्रकारका तंतु-  
बाव । इस नामसे प्रसिद्ध स्वरवाद्य ।  
साभंभीबाणे ( सं. ) सारंगी बजाने-  
वाला ।  
साभरी ( सं. ) छिद्र करनेका बह-  
ईका मौजार, बरमा, सार ।

सारथ ( सं. ) नदीके बहनेकी तरह बहनेवाला कुत्ता । कुएँमेंसे आई हुई नहर ।

सारथुभाई ( सं. ) अंत्रवृद्धिरोग ।

सारथुभाईनो पेटो ( सं. ) अंत्र-वृद्धिरोगको दबानेके लिये कमरमें बांधा हुआ पट्टा ।

सारथी ( सं. ) गध हाँकनेवाला, गाड़ीवान, कोचवान रखवाह ।

सारथुडण ( सं. ) एक प्रकारका बत्तीस तारवाला बाजा ।

सारथ ( सं. ) धनधान्य वगैरः शिकारी दुत्ता ।

सारथ ( सं. ) अच्छी नमीन, उत्तम भूमि । [ हाँकनेवाला ।

सारथान ( सं. ) ऊँटबाळा, ऊँट

सारथु ( कि. ) श्राद्धकरना, तर्पण करना, डोरीसे बरमाको घुमाकर छेद करना, छिद्रकरना, दुःखदेना, धागापिरोना, पहिरना, शृंगा करना, टपकाना, डालना, पूर्ण करना, काम बजाना, धाँजना, लगाना, जुपकना ।

सारथ ( सं. ) बलवर पक्षी विशेष ।

साशं ( सं. ) एक प्रकारके शूद्र जा-तिके लोग ।

साशंवाणां ( सं. ) शुभ, मांगल्य, अष्ट, उत्तम ।

साशंश ( सं. ) तत्पदार्थ, अभिप्राय, भावार्थ, मतलब, नतीजा, परिणाम सारभाग ।

साशय ( सं. ) भलाई, सज्जनता,

साशसाश ( सं. ) मलाबुग, खे डा, गरा ।

साशसाशी ( सं. ) मंत्रा, दोस्ती ।

सारिका ( सं. ) मैना पक्षी विशेष ।

सारीमभ ( सं. ) सरगम ।

सारीभंभ-पेठे ( अ० ) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, आरोग्य बहुत, विफल, ध्यानसे । [ सम्पूर्ण, तमाम ।

सारी-३-२१ ( वि. ) सब, समस्त,

सारीना ( सं. ) औषधि, दवा, मेधक ।

साई ( वि. ) सुन्दर, अच्छा, शो-भित, उत्तम, मनोहर, लाभदायक, सुखदायक जैसाका तैसा । सुबह, शुभचिन्तक, उदार, पक्का, ठिकाऊ, ईमानदार, भला, सूझा, शान्त, साधारण । ( अ० ) लिये, वास्ते, कारण ।

साई कर्पुं ( कि. ) रोग मिटाना, भल्य करना, ब्यां करना ।

साई कर्पुं ( कि. ) निरोगी होना, स्वस्थ होना ।



साधन ( सं. ) चावलके आटेके पावक ।

साधन ( सं. ) वार्षिक रिपोर्ट । साल भरका सिंहावलोकन ।

साधन ( वि. ) अर्थसहित, टीकासहित ।

साधन ( सं. ) अर्थसहित, अर्थ-युक्त, सफल, कृतार्थ । सब लोगोंका ।

साधनिक ( वि. ) व्योमकोपयोगी,

सार्वभौम ( सं. ) राजा, महाराजा, चक्रवर्तीराजा, शहनशाह ।

साधन ( सं. ) व्याघ्र, बाघ, बघेर ।

साधन ( सं. ) वर्ष, बत्सर, बरस । ( सं. ) हरकत, फिट बैठनेवाला जोड़, गिल्लीदंडका खेल । देखो साधन ।

साधनगिरी ( सं. ) सालगिरह, वर्ष-ठि, जन्मादेवस ।

साधनशुद्ध ( सं. ) गतवर्ष, गुजरा हुआ वर्ष, पिछलावर्ष ।

साधन ( सं. ) एक प्रकारका पुष्टिकारक कन्द, सालममिर्था ।

साधनपाठ आपवो ( कि. ) मारना, कूटना, ठोकनापीटना ।

साधनभिन्नी ( सं. ) देखो साधन ।

साधनपुं ( कि. ) खटकना, छेड़ना, सूरजकरना, संभोग करना ।

साधन ( अ० ) वर्षाजुलूस, सालके बाद साल । [ प्रतिवर्ष, वार्षिक ।

साधनारी ( सं. ) हर सालका, साधनी ( सं. ) बड़ई, तक्षक, खाती ।

साधन ( कि. ) खटकना, चुनना, दुःख होना ।

साधन ( वि. ) मला, मीठा, निष्कपट, शान्त, विवेकी, विश्वस्त ।

साधनसंज्ञा ( सं. ) गुप्त परामर्श, पोछादा-सलह ।

साधनसाध ( सं. ) मलमनसाई, विवेक, विश्वस्तता ।

साधनताला ( सं. ) आजिजी, कुशामह ।

साधनपुं ( वि. ) वेढंगडै, लना, भला, अनसमझ, भोला ।

साधन ( सं. ) बैलगाड़ीके दोनों ओर गाड़ीमें रखी हुई वस्तुएं न गिरनेके लिये खड़े किए हुए डंडे ।

साधनपाथु-युं ( सं. ) वार्षिकदफन, कर या चम्दा ।

साधन ( सं. ) मुक्ति विशेष, सलोकता ।

साधन ( सं. ) सिनोके बलविशेष, खारी, साड़ी ।

साधन पहेरावो ( कि. ) नामई होना, जमाना होना, नपुंसक बनना ।

साधन ( अ० ) सब, बिलकुल, संपूर्ण ।

साधन ( सं. ) धातक, सरावनी, जरी ।

- सावधू ( वि. ) एक पितासे किन्तु अलग अलग मातासे उत्पन्न भाई बहिन । [ धान, जागृत, संचत ]
- सावयेत ( वि. ) होखियार, साव-  
सावयेती ( सं. ) होखियारी, साव-  
धानी जागृति, चेतावनी ।
- सावण ( सं. ) बाघ, मूख, बुद्धि-  
हीन, ( वि. ) जंगली, वन्य ।
- सावध ( वि. ) सावधान, होखियार ।
- सावधान ( वि. ) पूर्ववत् ( सं. )  
विवाह संस्कारमें समय पाणिग्रहण  
के समय वह शब्द बोलेते हैं ।
- सावशुी ( सं. ) झाड़ू, बुहारी, ब्रता ।
- सावशुी हेरवपी ( कि. ) बूकधानो  
करना, बरबाद करना ।
- सावशुी ( सं. ) बड़ी झाड़ू बड़ी  
बुहारी, बुहाग ।
- सावशु ( सं. ) सामरा, जसुरालय ।
- सावधु ( सं. ) मिष्टका पात्रविशेष ।
- सावित्री ( सं. ) सूखी किरनें,  
ब्रह्माकी जी, गायत्री ।
- साधु ( कि. ) पकड़ना, ग्रहण करना ।
- साधर्थ ( अ० ) अचेमस सजा-  
उज्ज्वल ।
- साध्यां ( सं. ) प्रणाम, आठ जंघों  
द्वारा प्रणाम । ( वि. ) आठों  
जंघोंद्वारा ।
- साध ( सं. ) साध, सति, ब्रह्म,  
जीव, प्राण, हवा ।
- सासशसो ( सं. ) लड़कियों समु-  
दाय में जनेके समय ब्रह्माभूषण  
की भेट । [ मनुष्य, इगुरपक्ष ।
- सासरवेड-ध ( सं. ) ससुरालके  
साससिमां ( सं. ) पूर्ववत् ।
- सासरी-३ ( सं. ) ससुराल, पतिवा  
पत्नीके मातापिताका स्थान ।
- सासु ( सं. ) पतिवा पत्नीकी माता ।
- सासुडी ( सं. ) पूर्ववत् ।
- सासोट ( अ० ) हाँपता हुआ, जि-  
सका दम भरा हुआ हो, सपाटेबंद  
बैठता हुआ । दम फूटा हुआ ।
- सासुलिक ( वि. ) स्वामाधिक, प्राकृ-  
तिक, कुदृती, नेचरल । ओ बिना  
प्रवासके प्राप्त हो सके ।
- सास ( सं. ) उद्योग, उत्साह,  
बौरता, कार्य-उत्प्रेरता, धार्मिक ।
- सासस ( वि. ) साहसी, साहस  
करनेवाला, बहादुर, हिम्मतवाला,  
अविचारी, उद्योगी, निर्भीक,  
जिह्वर ।
- सासय-य ( सं. ) सहायता, उप-  
कार, सहाय, मदद, पुष्टि ।
- सासधु ( कि. ) पकड़ना, ग्रहण  
करना ।

साहित्य ( सं. ) उपकरण, सा-  
मान, सामग्री, विद्याविशेष, काव्य  
अलंकार आदि ।

साही ( सं. ) स्याही, रोशनार्ह,  
मसि, पानीमें घुला हुआ काला रंग ।

साहु ( वि. ) साधु, प्रामाणिक,  
सीधा, ( व्यवहारमें ) ।

साहुकार ( सं. ) व्यवहारी, साधु  
पुरुष, रुपये पैसों लेनदेन करने-  
वाला, शर्काफ ।

साहुकारी ( सं. ) सच्चाई, प्रामाणि-  
कता, साहूकारों धंधा, शर्काफ,  
( वि. ) साहूकार सम्बन्धी,  
धाजिवा, खरा ।

साहुड़ी ( सं. ) एक प्रकारका पशु ।

साहेत ( अ. ) तुरंतही, तुरन्त-  
बीचमें,

साहेद-दी ( सं. ) गवाहों, साक्षी ।

साह्य ( सं. ) स्वामी, मालिक  
धर्मा, पाति, महागव, सद्गुरुस्थ,  
पदोत्सुक प्रत्यय, आजकल अंग्रेज  
जातिके लोगोंके लिये भी यह  
शब्द प्रयोग होता है, महेरबान ।

साहेबी ( सं. ) बैभव, प्रभुता,  
सज्जनता, दयालुता । [बडिया ।

साहेमभानी ( वि. ) अच्छा और  
साहेम ( सं. ) धनी, स्वामी, मालिक ।

साहेर ( सं. ) कवि, छावर, घामर ।

साहेली ( सं. ) सखी, भाभी, भावली,  
चमेली की जातिका एक पौधा ।

साहेम ( सं. ) सहायता, मदद, पुष्टि ।

साह ( वि. ) मददगार ।

साहता ( सं. ) मदद, सहायता, पुष्टि ।

साण ( सं. ) कपड़ा बुनने का  
हाथसे या पैर से चलाने का यंत्र,  
लूम, हेण्डलूम । जुलाहोंके बिने  
का यंत्र । [ जुलाहा, कोरी ।

साणवी ( सं. ) कपड़ा बुनने वाला

साणवेणी ( सं. ) सालेकी आरत ।

साणिधु ( सं. ) छिलके युक्त बाँबल ।

साणी ( सं. ) पत्नीकी बहिन, साली ।

साणु ( सं. ) साढा, पत्तिकाभाई

इसशब्दको गाळी गळोजे समय

में काममें लाते हैं ।

साणो ( सं. ) पत्नीका भाई, साला ।

सिंभ ( सं. ) फलो, दानेदार लम्बे

पतले फल । [सिंग ।

सिंभडी ( सं. ) छोटा सिंग, भूंग,

सिंभडु ( सं. ) पूर्ववत्, बड़ासिंग ।

सिंभार ( सं. ) एक प्रकारकी मछली ।

सिंभोटी ( सं. ) सिंगपीछे कर देखो

सिंभोटी । [ निकालनेका रस्सा ।

सिंभधियु ( सं. ) कुएँमेंसे पानी

सिंभु ( कि. ) पानी छिलना,

सीबना, सिंचनकरना, पानी देना ।

सिंहाख्ये ( सं. ) एक प्रकारका पक्षी, बाज, स्वेन ।

सिंहरी ( सं. ) शुच्छ ।

सिंहशेख ( सं. ) संधानमक, संधन क्षार, लवण विशेष ।

सिंह ( सं. ) शेर, शार्दूल, सिंघ, बौद्धा, लडाका, शर, बहादुर, राशि विशेष । [ जीत ।

सिंह के सिंथाण ( सं. ) हारहुई या

सिंहकटी ( वि. ) सिंह सरीसृप पतली कमर, कुबोदर ।

सिंहशी ( सं. ) शेरनी, सिंहकीमादा ।

सिंहस्थ ( सं. ) सिंह राशिका बृहस्पति, यह योग बारह वर्षमें एक बार आता है । [ समान ध्वनि

सिंहनाद ( सं. ) सिंह गर्जना, शेरके

सिंहपक्षी ( वि. ) पहिले चरण के अंतिम अक्षरोंसे आरंभ होनेवाला दूसरा चरणहो ऐसा श्लोक ।

सिंहासन ( सं. ) ऐसा आसन जिसके आसपास दोनों ओर सिंहकी मूर्तियां बनी हों, राज गद्दी ।

सिंहिनी ( सं. ) शेरनी, सिंहनी ।

सिंहिसुत ( सं. ) शेर सिंह, राहु ।

सिंहिता ( सं. ) रैती, धूळी ।

सिंहिर ( वि. ) विजयी, जयौ फतह मंद, आत्मा, ( सं. ) इस नामका एक मुसलमान राजा हो गया है, ( वि. ) लुब्धा, बदमाश ।

सिंह ( सं. ) नेहरा, सूरत, शक, मुहं, दिस्साव, डौल, रौनक, तेज ।

सिंहिभर ( सं. ) हथियार साफ करनेवाला, औजार और हथियारोंपर धार चढ़ानेवाला ।

सिंहिरपुं ( वि. ) स्वीकार करना, मंजूर करना, कबूल करना ।

सिंहिरार ( वि. ) सुन्दर, दिखानेमें खूबसूरत, मनोहर ।

सिंहिरांध ( वि. ) ऐसी वस्तु जिसको बन्द करके ऊपर छाप लगाई गई हो, अमानत, धरोहर काममें नहीं लाया हुआ । अट्टता ।

सिंहिरार ( सं. ) राजाके खज्जका चिन्ह, छाप ।

सिंहि ( सं. ) छाप, मुहर, रुपया पैसा, शकल, सूरत, नेहरा, जयचिन्ह, डंका, धौसा, खेलनेका पत्थरका पासा विशेष ।

सिंहाख्ये ( सं. ) बाज, स्वेन, एक जातिका पक्षी ।

सिन्धु-अपुं ( कि. ) सीजना, गर्भाणि ढीला होना, बफाना, रंधना, उबलना, पारपट्टना, सिद्ध होना, दुखी होना ।

सिन्धुपुं-अपुं ( कि. ) सिजाना, उबालना, रंधना, पारपट्टकना, शान्तकरना, ठंडाकरना ।

सिटी-टी ( सं. ), सीटी, चीत्कार शब्द विशेष गजिकी दम ।

सिडी ( सं. ) सीडी, नसेनी, निध्रेणी पेड़े, सीडियां । [ ठंडा, शीतल ।

सित ( वि. ) सफेद, बबल, श्वेत.

सिताक्षणी ( सं. ) सीताफल, शरीफा फलविशेष । [ वृक्षविशेष ।

सिताक्षणी ( सं. ) सीताफलका पेड़

सितारो ( सं. ) मंड, तारा, योग, नर्पात्र भाग्य ।

सितारो पांक्षरो ( कि. ) भाग्य, अनुकूल ह, दिने अच्छे हैं, योग उत्तम है ।

सिताक्षी ( वि. ) सताक्षी, ८७, संख्या विशेष, ( संवत् १६८७ में बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ाया, उस-परसे ) भूके मरते हुयेको जब अन्न मिलजावे तब कहते हैं ।

सितोर ( वि. ) सत्तर, ७०, संख्या विशेष ।

सितोतेर ( वि. ) सत्तर, सतह-त्तर, ७७, संख्या विशेष ।

सिद्धापुं ( कि. ) दुखी होना ।

सिद्ध ( वि. ) सिद्धिप्राप्त, पूरा, साधित किया हुआ, पक, बना हुआ तैयार, निश्चित, साधु विशेष, अनुभव प्राप्त पुरुष, मंत्र इत्यादिक साधक, योगी, जादुगर, बौद्ध २९ वां भाग ।

सिद्धकरपुं ( कि. ) साधितकरना ।

सिद्धता ( सं. ) साधिता, प्रमाण ।

सिद्धसाधक ( सं. ) कष्ट से किसी कामको करनेवाले दो मनुष्य, एक सिद्ध और दूसरा साधन करनेवाला ।

सिद्धाष्टि ( सं. ) बद्धपन, सिद्धता, प्रामाणिकता ।

सिद्धांत ( सं. ) दृढनिश्चय, निष्पन्न अर्थ, ठहराव, प्रमेय, अनुमान ।

सिद्धांती ( वि. ) मीमांसक, विचारक, बाद विवादसे सिद्ध किया हुआ मत ।

सिद्धि ( सं. ) मंत्र प्रसादि, जय, फतह, अद्भुत समर्थ्य, दुर्गा, योग विशेष, निष्पत्ति, मोक्ष, वृद्धि, सिद्धि आठ है यथा " अग्निमा, महिमा चैव लघिमा प्राप्तिरेव च । प्राकाम्यं च तथेशिदं वसिष्ठं तथापरम् । छुटकाय ।

सिद्धांशु ( सं. ) प्रारंभिक पाठ,  
अक्षराभ्यास, प्रथमपाठ । [ होना ।

सिधपुं ( कि. ) पूरा होना, सिद्ध-  
सिधवे ( सं. ) बैलगाड़ी के पीछे  
लगानेवाटेका । [ जाना, विदा होना ।

सिद्धारपुं-धापुं ( कि. ) जाना, दूर,  
सिद्धी ( सं. ) हवशी, नगिरो, ऐबी-  
सीनियन ।

सिद्धरी ( सं. ) रस्सी, गुच्छ, झुमका ।  
सिद्धरिधा ( वि. ) सिन्दूरके रंग-  
वाला, सिन्दूरवाला ।

सिद्धुरी ( सं. ) विधवा स्त्रियों के  
पहिननेका सिन्दूर रंगका बख  
( वि. ) सिन्दूरी रंगका ।

सिद्धूर ( सं. ) उपधातु विशेष,  
सिन्दूर नामसे प्रसिद्ध एक रंग,  
एक जातिका राग ।

सिद्धूरैरेपुं ( कि. ) धूँझमें मिल ना  
नष्ट करना, बरबाद करना ।

सिद्धूर्ध्वी ( सं. ) भैरवी नामक  
रागिनीका एक भेद विशेष ।

सिद्धप ( सं. ) नमक विशेष, से-  
बानोन, सेंचवखार ।

सिन्धु ( सं. ) समुद्र, सागर, दरिया; इस  
नामसे प्रसिद्ध नदी, एक रागविशेष  
जो बुद्ध के समय गाया जाता है ।

सिन्धु ( वि. ) समुद्री, दरिवाही,  
समुद्र सम्बन्धी ।

सिन्धु ( सं. ) राग विशेष ।

सिधपुं ( कि. ) सींचना, पानी  
उँढेलना, पानी देना । [ सिंचाई ।

सिधपु ( सं. ) पानी सींचनेका कार्य

सिपाही ( सं. ) सिपाही, सैनिक,  
रक्षाके लिये नियुक्त किया हुआ  
व्यक्ति, चौकीदार, थोढ़ा ।

सिपाहीगिरी ( सं. ) सैनिक कार्य,  
फौजों धरा, सिपाहीका काम ।

सिपात ( सं. ) संन्यासी, श्रीपाद ।

सिद्धत ( सं. ) गुण, युक्ति, दिकमत,  
करामात, स्तुति, तारीफ, छटा,  
आदत । [ विचित्र ।

सिद्धलु ( वि. ) दंग बौल रहित,

सिद्धाण्डादुर ( वि. ) छातावाला,  
हिम्मतवाला, बहादुर, सीताजोर ।

सिद्धारस ( सं. ) गुणवर्धन, प्रशंसा,  
अनुग्रहकारण, शिफारिश ।

सिन्धुन्दी ( सं. ) मुख्य राजाको  
आवश्यकता आपहुनेपर करद  
राजाओंका सेना बगैर देना, करद  
राज्योंमें उन्हीं सामन्तों के खर्च  
से रबीहुई सेना ।

सिभाषा ( सं. ) वृक्षविशेष, सेमक नामसे प्रसिद्ध वृक्ष ।

सिभाडे ( सं. ) गांवसे लगी हुई भूमिका अंत, ग्राम सीमा, अंत, आखीर, हद्द, सीमा ।

सिभिठ ( सं. ) एक प्रकारकी बहुत ही थिकनी कृत्रिम मिट्टी । [ जम्बुक ।

[ सिभाग ( सं. ) गीदड़, स्थार लड़ैया

सिर ( सं. ) मस्तक, माथा. नोक, दिग्जर, शृंग, सिरा ।

सिरनेरी ( सं. ) जबरदस्ती, नापा फौड़, सिरपचा, बलात्कार ।

सिरताग ( सं. ) मुकुट, मस्तक धारण करनेका आभूषण ।

सिरपेय ( सं. ) पक्षीकपर बांध-नेका मोतीआदि बहुमूल्य पदार्थसे जड़ाहुआ पटक ।

सिरभंड़ी ( सं. ) देखो सिभंड़ी

सिरस ( सं. ) एक प्रकारका चर्मरोग ।

सिरस्तेदार ( सं. ) कचहरीका मुख्य कर्क, कोर्टका हेड कर्क । [ धन्वा ।

सिरस्तेदारी ( सं. ) सिरस्तेदारका

सिरस्ते ( सं. ) रिवाज, चाल चलाआता काम, रस्म, नियम, सदाकी रीति ।

सिरैधि ( सं. ) लम्बे गले तथा मोटे पेटका पात्रविशेष ।

सिख ( सं. ) सेष, रकम, बाकी ।

सिराग ( सं. ) बत्ती, विराग, दोपक ।

सिखड़ी ( वि. ) बाकी रहा हुआ, सेष, बचा हुआ, अवशिष्ट ।

सिखसिखभंड ( अ० ) सिखसिखे-वार, अनुक्रमपूर्वक, क्रमानुसार ।

सिखार्ध ( सं. ) सीनेकी मध्दूरी ।

सिखान्त्रित ( सं. ) सिखान्त्रित, पत्थरका मद या मार । [ सैनिक ।

सिखेदार ( सं. ) घुड़सवार, अश्वारोही

सिखामध्दूरी ( सं. ) देखो सिखार्ध ।

सिखवपुं ( कि. ) सीना, सूई और धागेसे कपड़े के टुकड़े जोड़ना ।

सिखध्दूरी ( सं. ) सीनेकी रीति, मिलाह, सियाहुआ ।

सिखपुं ( कि. ) सीना, टांकाभारना, डारेडालना, सीमना, ( बल )

सिखाये-य ( अ० ) अनिरिक्त, अलखह, बिना, बगैर ।

सिसभ ( सं. ) शोषण, काष्ठविशेष ।

सिसभनेपुं ( वि. ) पक्षा मजबूत और बजनदार । [ कल्ले रंगकी ।

सिसभनीपुतणी ( वि. ) बिलकुल

सिसोटी ( सं. ) एक प्रकारका वृक्ष ।

सिसोटी ( सं. ) सीढ़ी, ध्वनिविशेष ।

सिसोटीआपणी ( कि. ) चिताना, इशारा करना सावधानकरना ।

सिसोणीयुं ( सं. ) एक जाबवर के शरीरपर के काँटे, लकड़े इल ।	सीपतुंभोती ( सं. ) बड़िया मोती, बहुमूल्य मोती ।
सिद्धाविद्धा ( वि. ) शर्मिन्दा, साज्जत ।	सीमा ( सं. ) हद्द, सीमा, अंत ।
सीक ( सं. ) चोक, शलाका, तिनका मांस नेकनेकी लोहेको छड़, ( वि. ) बोंमार, अस्वस्थ, ठण ।	सीमडोळ ( अ० ) बिलकुल, तमाम सब ।
सीकु ( सं. ) छीका, बरतन, रंग । लटकानेका साधन । [ चुकाना ।	सीमंत ( सं. ) संस्कार विशेष, अग्रणां, गर्भावस्थाका संस्कार विशेष ।
सीडपुं ( कि० ) बन्दकरना, देहालना, सीडी ( सं. ) पैडे सीबी, नमेनी ।	सीमाडो ( सं. ) देखो सीमा । [ चिन्ह, सीमासुत्र ( म. ) ग्राम, सीमाका सीयभ ( वि. ) हलकी जातिका, निम्न दर्जेका, हलका गोमरे दर्जेका
सीडी छेस्ते पभथीओथी ( अ० ) छुस्ते आखारतक, आदिसे अतक ।	सीरी ( सं. ) मिट स, मथुरता, लज्जत । [ पात्र विशेष ।
सीत ( सं. ) हलकी फाल, ( वि. ) देखो सीत ।	सीरी ( सं. ) छोटी बातल, काच
सीतकर ( सं. ) ठंडसे चप होनेका शब्द, कप कंपक आवाज ।	सीसु ( सं. ) धातु विशेष, सीसा ।
सीहापुं ( कि. ) दुखी होना ।	सीसा ( सं. ) बड़ी शाशा, बातल ।
सीही-धी ( सं. ) हवशी, शिद्दी, नीम्रे ।	सीमाभां डितारपुं ( कि. ) बजमे करना, अधिकारमें करना, आबोन करना ।
सीधुं ( वि. ) सीधी, सुधा, प्रमाणिक राधकर खानेके लिये अन्न ।	सीणी ( सं. ) सीतळा, देवी विशेष ।
सीधुओपपुं ( कि. ) मरना, कूटना पीटना, ओकना ।	सीथुं ( वि. ) ठंडा, ( सं. ) छाँह, सामा ।
सीधुसामान ( सं. ) भोजन बना-मेका सामान, सामग्री ( भोजनकी )	सुं ( अ० ) “ अच्छा ” अर्थकी इडि करनेवाला प्रत्यय, उत्तमता बोधक । [ में बाल बनवाना ।
सीती ( सं. ) छाती, सीना ।	सुंआयुं-वायुं ( सं. ) मृत्युसूचक
सीप ( सं. ) सीप, जिसमें मोती होते हैं सीपी ।	



सुंभर-णी ( सं. ) बास लवणा  
गेहूं के बँठलका पतला भाग ।  
सुंभरु ( कि. ) बासलेना, गंधलेना  
सुंधना, श्वास लेना । [ अदरक ।  
सुंठ ( सं. ) सौंठ, गुंठी, सूखीहुई  
सुंठुंठनी ( कि. ) कान भग्ना,  
भड़काना, उकसाना, उत्तेजित  
करना ।  
सुंठेना स्वाद भुंथाउवे ( कि. )  
आटे दालका भाव बताना, मारना ।  
सुंठ- ( सं. ) सुंठ, हाथोका नाक  
शुठ, हाथोका हाथ । [ सीटोकरा ।  
सुंठनी ( सं. ) झोटी डलिया, छोटी ।  
सुंठवे ( सं. ) टला, छबड़ा,  
बढ़ी भारी डलिया, डाल ।  
सुंथिभु ( सं. ) कपड़े या घासका  
गोठ कुंडल ।  
सुंठियु ( सं. ) हलकी जातिकी  
ज्वार, खराब किस्मकी ज्वारी  
( अन्न )  
सुंठियेकि ( सं. ) सुंदर चउस  
पानी खींचनेका चमड़े वगैरका  
सुंदर साधन ।  
सुंठर ( बि. ) खूबसूरत बनोहर ।  
सुंठरीते ( अ० ) अच्छी प्रकार  
से मझी आंतिष ।

सुंठरि ( सं. ) खूबसूरत स्त्री, पत्नि ।  
सुंभणी ( सं. ) एक प्रकारकी सूखी  
ठिकठिया ( खाद्य पदार्थ )  
सुंभणी ( सं. ) गेहूं के आटेकी तली  
हुई शुष्क पूरी ( खाद्य पदार्थ ) ।  
सुंभणुं ( बि. ) नरम, मुलायम,  
कोमल, ( सं. ) जन्म सूतक, वृद्धि  
सूतक, स्थावर ।  
सुं ( अ० ) उत्तमता सूचक प्रत्यय ।  
सुंभिधी ( सं. ) दाई, बच्चोंके  
उत्पन्न होते समय जाकर उसके  
पैदा करनेमें सहायता करनेवाली स्त्री ।  
सुंभन ( सं. ) शकुन, शुभचिन्ह ।  
सुंभनडा ( बि. ) लम्बा और दुबला ।  
सुंभधी ( सं. ) सूकना, शुष्कहोना ।  
सुंभधुं ( सं. ) सारी वर्षा ऋतुमें  
जल न बरसने पर सूखा सूखा ।  
सुंभवुं ( कि. ) सुखाना, शुष्क  
करना, यमी पहुँचाना ।  
सुंभुं ( कि. ) सूखना, शुष्कहोना,  
सुंभन ( सं. ) पतवार, डांड, नाव  
चलानेका दण्ड, चाबी, कुंजी ।  
सुंभनी ( सं. ) पतवार चलानेवाला  
डांड लेनवाला व्यक्ति ।  
सुंभपुं ( कि. ) सूखना, शुष्कहोना,  
इवाचाना, गीलापच इटना, दुर्बल  
होना, कमजोर होना. सुरक्षा,  
कुम्हलना ।

सुभाष ( सं. ) सुभिक्ष, अचञ्चल  
की विपुलता, अधिकता ।  
सुशीर्षि ( सं. ) अच्छो, स्वाति, रज्जत ।  
सुभुभार ( वि. ) अत्यंत नाजुक,  
आतंशक कोमल ।  
सुभाभण ( वि. ) अत्यंत कोमल ।  
सुभृत् ( सं. ) पुण्य, उत्तम कार्य,  
धर्म, सद्दर्शन, ( वि. ) पुण्यजनक,  
अच्छा, उत्तम ।  
सुभृत् ( सं. ) शुक्रवार, जुम्मा ।  
सुभृत् ( सं. ) तमाख, तम्बाकू ।  
( वि. ) खाली, खोटा निश्चय,  
व्यर्थ, जिसके पास पैसा न हो ।  
सुभ ( सं. ) अराम, बल, शांति,  
इन्द्रियोंकी तृप्ति, स्वस्थता, चैन,  
सन्ताप, हर्ष, आनंद, मौज, शोक ।  
सुभृत्-भृत्-री ( वि. ) सुख  
देनेवाला, आनंदप्रद, सुखद ।  
सुभयेन ( सं. ) शांति, चैन ।  
सुभृत् ( सं. ) चन्दन, शोखंड ।  
सुभृत् ( सं. ) हलवाई, मिठाई  
बनानवाला । [ हुआ अन्न ।  
सुभृत् ( सं. ) मिठाई, बिना रोषा  
सुभृत् भृत् ( क्रि. ) पिटाई करना ।  
सुभृत् ( सं. ) बलोंमें बाझनेकी  
तकिया चमड़े आदिकी ।

सुभृत्-भृत् ( वि. ) सुख  
देनेवाला ।  
सुभृत् ( सं. ) शय्या, सेज, परंग ।  
सुभृत् ( सं. ) शब्द, उच्चारण, बचन ।  
सुभृत् ( सं. ) एक प्रकारकी  
पालकी यानविशेष । [ ए६, सुभृत् ।  
सुभृत् ( सं. ) तीन नाइबोंमेंसे  
सुभृत् ( सं. ) शोभा ।  
सुभृत्-भृत् ( वि. ) बहुतही सुखका  
देनेवाला, अत्यंत सुखी ।  
सुभृत् ( वि. ) आरोग्य, तन्दुरुस्त,  
क्षेम, सुखा, ( अ० ) सुखमें ।  
सुभृत् ( सं. ) गेहूंका मोटा आटा ।  
सुभृत् ( सं. ) बडिया चावल ।  
सुभृत् ( सं. ) ऐसा शब्द  
जिसपर सोनेसे सुख हो । भोग-  
विलासके लिये परंग ।  
सुभृत् ( सं. ) शांति, चैन, सुख,  
सन्तोष, धैर्य ।  
सुभृत् ( सं. ) तन्दुरुस्ती,  
आरोग्यता, सुखकी दशा ।  
सुभृत् ( सं. ) सुखका भोग,  
आनन्द भोग ।  
सुभृत् ( वि. ) सुखी, सुख प्राप्त ।  
सुभृत् भृत् ( क्रि. ) सोना, पौकना,  
जब करना ।  
सुभृत् ( वि. ) सुखी, आनन्दसुख ।

मुष्पी ( वि. ) सुख करनेवाला,  
आनंदी, अच्छी रसमें ।

मुष्पी ( सं. ) सुसब्द, अच्छी गंध,  
महंके, सुवास, सोमन ।

मुष्पीधर ( वि. ) सुसब्दवाला,  
अच्छी वासवाला ।

मुष्पी ( वि. ) सहज, संरक्त, सुकर,  
अल्प परिश्रमसे करनेयोग्य, सहज,  
अनुकूल । [ क्या नामक पक्षी ।

मुष्पी ( सं. ) एक प्रकारका पक्षी ।

मुष्पीना भाषा ( सं. ) उलझा हुआ,  
नंतु पदार्थ या बात वगैरः ।

मुष्पी ( सं. ) बयाका चौंसठ, ( वि. )  
बालाक, चतुर ।

मुष्पी ( सं. ) बया, पक्षी ( नर ) ।

मुष्पीधु ( वि. ) चिन्मौना, घृणा  
पैदा करनेवाला, सुगठ ।

मुष्पीधु ( कि. ) नफरत पैदा होना,  
घृणा होना, सुग आना ।

मुष्पी ( वि. ) जिसे छट घृणा  
पैदा होती हो ।

मुष्पी ( वि. ) सुन्दर, मनोहर,  
सुबौल, स्वच्छ, चतुर, विवेकी ।  
चतुर, सम्म ।

मुष्पी ( सं. ) स्वच्छता, सफाई, चातुर्य,  
मनोहरता । [ दुर्ग का वर्णन ।

मुष्पी ( सं. ) अच्छा चरित्र, बहा-

मुष्पीधु ( कि. ) बतलाना, सूचित  
करना, इशारा करना ।

मुष्पी ( सं. ) साधुजन, भक्त मा-  
नस, सदाचारी, परोपकारी ।

मुष्पीता ( सं. ) भलाई, साधुता,  
परोपकारिता, भक्तमंसी ।

मुष्पीनी ( सं. ) रजाई, सौर, रुई  
मरकर ओढनेके लिये बनाया हुआ  
बख । [ सूजन आना ।

मुष्पीधु ( कि. ) सूजना, फूलना,

मुष्पी ( सं. ) यश, सुन्दरयश, कीर्ति ।

मुष्पीधु ( वि. ) चतुर, होशियार,  
प्रवीण, दक्ष जानकार ।

मुष्पी ( वि. ) अच्छी जातिका, कुलीन,  
भक्त, वरवर्ण । [ तही सूजना ।

मुष्पी धांधला धु ( कि. ) बहु-

मुष्पी-मुष्पी ( कि. ) दिखाई,  
पढ़ना, दिखना, नजर आना, हाट  
आना । मनमें भास होना ।

मुष्पीधु ( कि. ) दिखाना, सुसाना ।

मुष्पीणीस ( वि. ) सैतालीस, ४७,  
संख्याविशेष ।

मुष्पी ( सं. ) संवत् १८४७ में  
घोर दुर्भिक्ष पड़ा था इस लिये

महंजीके समय सूचनार्थ यह  
शब्दका प्रयोग करते हैं । दुर्भिक्ष-

सम, दुष्काळ ।

सुधु ( कि. ) ज्वारके खेतमेंसे  
ज्वारके बूँदको जड़से काटना ।

सुडी-सुडी ( सं. ) सरौता, सरौती,  
सुपारी काटनेका यंत्र विषय ।

सुडी-सुडी ( सं. ) तोता, मुग्गा  
शुक, पक्षीविशेष । ( सं. ) बड़ा  
सरौता, कैरी कड़ा ।

सुधु ( कि. ) सुनना, श्रवण करना  
फूलना, सूजना, मोजन आना ।

सुधावधु ( सं. ) सुनाई, सुनवाई,  
पेकी ।

सुधावधु ( कि. ) जतलाना, सुनाना ।

सुत ( सं. ) बेटा, पुत्र, लड़का,  
ननय । सारथी, गाड़ीवान, कोच-  
वान । शत्रियद्वारा ब्राह्मणिके गर्भमें  
उत्पन्न बालक ।

सुतनु ( वि. ) नाजुक, कोमल, सुंदर  
शरीरवाला, पतला । ( सं. )  
सुन्दर स्त्री ।

सुत-सुत ( सं. ) प्रसव और मर-  
णकी अशुद्धि, अशौच ।

सुतर ( सं. ) बोर, सूत, सूत,  
घागा, तागा ।

सुतरने तांतके अधायेधु ( वि. )  
निरंतर स्नेहका भूँका, तावेदार,  
शरण गया हुआ ।

सुतर-३ ( वि. ) सहज, सरल, सुगम ।

सुतर-२ ( वि. ) रुईका बना  
हुआ, कपासका बना हुआ, मूँती ।

सुतर-३ ( सं. ) एक प्रकारकी  
मिठाई ।

सुतर-४ ( सं. ) एक तरहके चावल

सुतरिथे ( सं. ) सबका व्यापारी ।

सुत ( वि. ) सप्त पातालोंमेंसे  
ताँवर पाताल । संकलन करना ।

सुत ( कि. ) जाड़ना, बाधना,

सुतणी ( सं. ) सुतली, डोरी, सूत  
या मन्त्रा रस्सा (पतली जूतीमें  
रखनेक सुखतके ।

सुत ( सं. ) बेटा, पुत्रा, तनया,  
दुहिता, लड़का, आत्मजा ।

सुतार ( सं. ) बर्द्ध, तक्षक, खाती ।

सुतार-३ ( सं. ) लकड़ी घड़नेका  
काम, काष्ठशिल्प । [ सम्बन्धी ।

सुतारी ( वि. ) बर्द्धका खातीका, तक्षक ।

सुतारा ( सं. ) इन्द्र, सुरपति ।

सुताडिथे ( सं. ) एक प्रकारका  
मोटा चास ।

सुदर्शन ( सं. ) विष्णुका चक्रायुध,  
सुन्दरदर्शन, अच्छा दिखावा :  
खसूरती ।

सुधभ ( अ० ) सकामत, डेम,  
अच्छी परिस्थितिमें ।

सुधाभा ( सं. ) कृष्णका एक दारिद्र्य  
ब्राह्मण सहपाठी मित्र ।

सुधाभापुरी ( वि. ) गरीबग्राम, जहाँ  
कुछभी नहीं मिलसके ऐसा नगर ।

सुधाभानी जूथडी ( सं. ) गरीब  
आदमीका मकान, रूखाफूटा घर ।

सुधाभानी तांडुल ( सं. ) तुच्छभट,  
न कुठ नजराना ।

सुधिन ( सं. ) अच्छादिन, रयाहार,  
पर्वदिवस, उत्तमदिन, उत्सवादिन ।

सुधी ( वि. ) शुक्राशु, चादनीरात ।

सुध ( वि. ) मजबूत, कठोर समस्त,  
कड़ा, गटल । [ वृक्ष, होमरवाम ।

सुध-सुध ( सं. ) सनस, चेत, जान ।

सुध-सुध डी जनी ( कि. ) होश  
नहीं रहना, बेसुध होना, इतचेत  
होना ।

सुधरतुं ( कि. ) शुद्धहोना ठीकहोना,  
सुधरना, दुस्तहोना ।

सुधरार्ध ( सं. ) सुधार, अच्छीदशा ।

सुधा ( सं. ) अमृत, अमी, पीयूष,  
रस, गंगा, हरि, मधु, हरीतकी ।

सुधाकर ( सं. ) चन्द्रमा, चांद ।

सुधारक ( सं. ) सुधार करनेवाला,  
रिफार्मर, सुधारनेवाला ।

सुधारतुं ( कि. ) सुधारना, ठीक  
करना, ठान देना, तराखना,  
( आकामाजी ) ।

सुधारस ( सं. ) अमृत, सुधा, पीयूष ।

सुधारवाणुं ( वि. ) सुधौरा हुआ,  
न रेशनोंके अनुसार बननेवाला ।

सुधारै ( सं. ) सुधौर ।

सुधी ( सं. ) पंडित, अच्छी बुद्धि-  
वाला व्यक्ति, ( वि. ) साँच, सूधा,  
'लरा, ठीक ।

सुधीर ( वि. ) दृढ़, बड़ाहाँ, बहादुर ।

सुधा ( अ० ) साधने, संगम, सहित ।

सुनकर ( सं. ) देखो शुनकर ।

सुनत-ता ( सं. ) सुजत, सुसल-  
मान बननेका एक संस्कार लिंगे-  
द्विके अग्र भागकी थोड़ी मोच ।

सुनसुन ( अ० ) दिग्भूत, बेसुध,  
मूर्च्छित, सुनसान ।

सुनी-नी ( सं. ) सुसलमानोंके दो  
धर्मोंमेंसे एक, यावनी पंचविशेष ।

सुनेरी ( वि. ) सुनहरी, सोनेके  
रंगकी ।

सुंदर ( वि. ) खूबसूरत, अच्छा,  
सुरूप, रूपवान मनहर ।

सुंदरी ( सं. ) सुरूपा, रूपवती की ।

सुधी ( सं. ) छोटासूय, छोटाकाय ।

सूर्य, रूप, नावोंके पहिले परका  
तरावा, या ओहिका पतरा, महत्त्व ।

सुपडे ( सं. ) सूप, सूर्प, छाज,  
अथ फटकनेका साधन, पानी वंछे-  
लनेका सूप सरीखा पात्रविशेष ।

सुपडे आवपुं ( कि. ) अतुमती  
होना, रजसाव होना, कपटो होना ।

सुपडे ने टोपले ठभरापुं ( कि. )  
जमाव होना, भट्ट होना ।

सुपती ( सं. ) परस्पर फोड़नेका हथौड़ा ।

सुपन ( सं. ) स्वप्न, सपना, द्वाव ।

सुपात्र ( वि. ) मोस्य, लायक, कु-  
लान, यज्ञान, उत्तमजन, खानदानी ।

सुपुत्र ( सं. ) अच्छापुत्र, सुपूत,  
सपूत । [ हवाल करना, दना ।

सुपुरत ( सं. ) सिपुर्द, सौपना,

सुप्त ( वि. ) सुताहुआ, सोताहुआ,  
ऊँचताहुआ । [ इच्छा, प्रवीणता ।

सुपुद्धि ( सं. ) अच्छो बुद्धि, अच्छी

सुभेदारी ( सं. ) परगनेका हाकिम,  
फौजमेंका एक पद ।

सुभेदारी ( सं. ) सुवेदारीका काम ।

सुभे ( सं. ) परगनेका हाकिम, सुबा ।

सुभेधि ( सं. ) सद्ज्ञान, अच्छी  
सलाह, सहजहीमें समझा सके  
ऐसा ज्ञान ।

सुभभ ( वि. ) भाग्यशाली, शुभाकिस्मत ।

सुभभा ( वि. ) सौभाग्यवती, सचवा ।

सुभट ( सं. ) बोझा, लडाका, वार ।

सुभाज्य ( सं. ) अच्छा भाग, अच्छी  
तकदीर अच्छा नसीब ।

सुभाषित ( वि. ) अच्छा वाणीका  
सुन्दर भावोंमें वर्णित ।

सुभति ( सं. ) सुखान्द, भलमन्सी,  
अच्छा बुद्धि, अच्छी अह । [ प्रसून ।

सुभन ( सं. ) पुष्प, फूल, कुसुम,

सुभनक्षेपा ( सं. ) फूलोंको सेज ।

सुभसाभ ( वि. ) चुपचाप, मौन,  
गुमसुम, सुनसान ।

सुभाऱ ( सं. ) आसरा, अडसट्टा,  
अटकल, अन्दाज, अनुमान गणना  
रंग, नशा, माप, तौल ।

सुभाऱे ( अ० ) अन्दाजसे, अनुमानतः ।

सुंभ ( वि. ) कदर्य, कंजूस, चुप,  
गूगा, सूक, कृपण ।

सुभाष्टी ( सं. ) दारि, दायन, बचा  
पंदा करानेवाली स्त्री ।

सुर ( सं. ) देव, देवता, अजर,  
स्वर, आवाज़, राग, ध्वनि ।

सुरभी ( सं. ) अस्त्री, रक्तिमा, तेज  
चमक, शोभा, प्रभाव, तेज़ी ।

सुरभ ( सं. ) परस्पर फोड़ने के लिये  
अथवा शत्रुविनाश के लिये पृथ्वीके  
भीतर गड्ढा खोदकर बारूद भरके  
उड़ा देनेकी क्रिया जमीनके भीतर  
का मार्ग, सेव ।

सुरापट (सं.) आवाज निकालनेकी रीति, स्वरको टीपमें जानेका ढंग ।

सुरीनर देव, और मनुष्य । [मोहक ।

सुरेभ (वि.) सुन्दर, मनोहर,

सुरप (वि.) खूबसूरत, रूपवान ।

सुरेश (सं.) देवराज, इन्द्र. सुरपति ।

सुरेभार (सं.) एक प्रकारका छार ।

सुलटावपु (किं.) सूधाकरा, चित-करना, सुलझाना ।

सुलटु (वि.) सूधा, सीधा, चित, ठीक चाहिये जैसा ।

सुलतान (सं.) बादशाह ।

सुलतानी (वि.) बादशाही ।

सुलभ (वि.) सहज, सुगम, आसान सहल, जो बिना कष्टके प्राप्त हो सके ।

सुलक्षित (वि.) मनोहर, बहुतही सुंदर ।

सुलभ (सं.) स्राव, छिद्र, सिक्के में अथवा आभूषणमें परीक्षार्थ कियाहुआ छिद्र ।

सुलक्षण्य (सं.) शुभलक्षण, शुभचिन्ह ।

सुलुह-भ (सं.) समताता, सुलह, मेळ भिलाप, प्रेम, मिलनसारी ।

सुलेह (सं.) शांति. सुलह, सन्धि ।

सुलेहाधिकारी (सं.) सन्धिकराने के लिये मध्यस्त पंच, जस्टिस आफ् बोपीस ।

सुपर (सं.) सुभर, झुकर, सुवर, बाराह, पशुविशेष ।

सुपथु (सं.) सोना, कनक, हेमकंगन, स्वर्ण, धातु विशेष (वि.) वरवर्ण, अच्छे रंगका ।

सुवाधु (सं.) आराम, चैन, तबियतका परिवर्तन, तबियत सुधरना ।

सुवा (सं.) एक प्रकारकी फलियाँ ये औषधि के काममें आती हैं । सुगन्धित वनस्पति विशेष, सुआ ।

सुवांग (सं.) वेण, सांग, स्वांग, पोशक, पहिनावा । (वि.) निजका, खुदका ।

सुवाहभ (सं.) उत्तम भाषण, अच्छी, भोली, सुवचन ।

सुवारोग (सं.) स्त्रीको प्रसवके दिनोंमें होजानेवाला एक रोग विशेष ।

सुवावड (सं.) बालक उत्पन्न होने के समयमें बादका समय ।

सुवावडी (सं.) जन्मा, ऐसी स्त्री जिसने कुछ दिन पूर्वही बालक प्रसव किया हो ।

सुवासु (सं.) सुगन्धि, उत्तम वास ।

सुवासित (वि.) अच्छी गन्ध-वाला, सुगन्धदार, सुगन्धयुक्त ।

सुरभ ( सं. ) अच्छे रंगका घोड़ा ।

सुरभी ( वि. ) शोभित, उत्तम रंगका, विविध रंगका ।

सुरभ ( सं. ) सूर्य, सूरज, रावि, भानु ।

सुरभ अती कृपासे होवे। ( कि. ) अच्छे दिनोंका आगमन । माग्य चेतना ।

सुरभ अदो छे ( कि. ) दिन अच्छे हैं, माग्य चमकता हुआ है ।

सुरभ तपे छे ( कि. ) बड़े माग्य हैं । दिन अच्छे हैं ।

सुरभ भाये आवे। ( कि. ) अच्छी दशाको प्राप्त होना ।

सुरभय ( सं. ) एक पुष्प विशेष जो प्रातःकाल खुलता है और जिस ओर सूर्य होता है उसी तरफ मुई किये रहता है ।

सुरभयुष्म ( सं. ) पुष्पविशेष, जिसमें सूर्यका चिन्ह हो ।

सुरभ पंशि ( वि. ) सूर्यके वंशका राज्य, ( सूर्यवंश और चंद्रवंशके किसी प्राचीन समय में बड़े भारी प्रतापी राजा हो गये हैं । )

सुरभु ( सं. ) एक प्रकारका कंद ।

सुरभुनारवाधेवा ( कि. ) अच्छा अच्छा खानेका मन होना ।

सुरत ( सं. ) सुरत, शुक, चेदेरा, मुखाकृति, स्मृति, याद, मैथुन, स्त्री पुरुषका संभोग, सुकृत, अच्छी मौसिम ।

सुरत ( सं. ) कल्पवृक्ष, देववृक्ष ।

सुरता ( सं. ) स्मृति, याद, ध्यान, खयाल । [ मोह ।

सुरति ( सं. ) प्यार, स्नेह, प्रेम,

सुरती ( वि. ) सुरत शुकका, दिखावटी । [ श्रुति ।

सुरतीसगाध ( सं. ) मुख देखेकी

सुरतीभाध ( कि. ) नाममात्रका माई है ।

सुरदास ( सं. ) अंधा, नेत्रहीन, अंध ।

सुरदुभ ( सं. ) सुरतर, कल्पवृक्ष ।

सुरधन ( सं. ) पूर्वज, अग्रज, पुरुष ।

सुरपति ( सं. ) इन्द्र, देवराज ।

सुरधेनु ( सं. ) देवताओंकी गऊ, कामधेनु, कामदुधा ।

सुरधु ( सं. ) एक प्रकारका ताल, विशेष ( गायनमें )

सुरभी ( सं. ) देखो सुरधेनु ।

सुरभो ( सं. ) सुरमा एक प्रकारकी धातु, नेत्राजन, आंखोंका अंजन ।

सुरवाध-वा ( सं. ) पजामा सूचना ।

खसना, पायजामा, पतखन ।



सुसुरी ( सं. ) गंगा नामसे प्रसिद्ध नदी ।

सुसुदी ( सं. ) स्वर्ग, देवलोक ।

सुरा ( सं. ) दारु मदिरा, शराब ।

सुराभ ( सं. ) छिद्र, छेज, बेज, सुराज ।

सुरांगना ( सं. ) अप्सरा, देवांगना, देवताओंकी स्त्री, परी ।

सुरपात्र ( सं. ) मद्यपात्र, शराब पानेका बर्तन । [ खोरी ।

सुरापान ( सं. ) मद्यपान, शराब

सुरारि ( सं. ) राक्षस, दानव, दैत्य ।

सुवाग्निनी ( सं. ) सुहागिन, सधवा पतिव्रता ।

सुपुं ( कि. ) सोना पड़रहना, ऊंचना लेटना, निद्रा लेना ।

सुशिक्षित ( वि. ) अच्छी शिक्षा पायाहुवा, पठिन, साक्षर ।

सुशील ( वि. ) उत्तम स्वभाववाला, साधु, सुस्वभाव ।

सुशोभित ( वि. ) सुन्दर, बहुसही शोभा युक्त, अच्छे दिखावका ।

सुशुभा ( सं. ) सेवा, चाकरी, आदर, सत्कार ।

सुशुप्ति ( सं. ) अवस्था विशेष, चारनिद्रा, खरटेकीनींद, गहरीनींद ।

सुशुम्ना ( सं. ) देखो सुभ्रमशु ।

सुसवाट-टी ( सं. ) सुसुखद, कुं-कार, फुत्कार ।

सुसवाट-टी ( सं. ) एक प्रकारका मगर, जठजन्तु विशेष ।

सुस्त ( वि. ) आलसी, बीमा, मंदा काहिल, ठंडा । [ आलस्य ।

सुस्ती ( सं. ) आलस, काहिली,

सुस्नातु ( वि. ) नहाधोकर, स्नान करके ।

सुस्वर ( वि. ) अच्छी अवाज, मीठा स्वर, मीठी ध्वनि ।

सुहागिणी ( वि. ) प्यारी, लाडिली, मान्य, सधवा । [ पाना, बैन होना ।

सुहापुं ( कि. ) सुहाना, शोभा

सुहृद ( सं. ) दोस्त, मित्र, सखा, भाईबन्धु ( वि. ) परमप्रिय, परन स्नेही ।

सुहृदजन ( वि. ) भावयुक्त, अच्छे हृदयवाला ( सं. ) शुभाशितकामेष्ट ।

सुग ( सं. ) शूल, दर्द ।

सुगन्धत ( सं. ) लम्बे पेने दांत ।

सुकर ( सं. ) शकर, सुअर, बाराह ।

सुकुं ( वि. ) जलहीन, शुष्क, सूखा दुबला, कृष, पतला ।

सुको ( सं. ) पीनेकी तम्बाकू, तमाखू, सुको फूंकवो ।

सुकोपुंकेवे ( कि. ) तमाखूपीना, विलमपीना ।

सुसंत ( सं. ) सुन्दरकधन, वेदमें यथास्वाप्त मंत्रोंका समुदाय ।

( वि. ) अच्छी तरह कहा हुआ, अच्छा ।

सूक्ष्म ( सं. ) उत्तम भाषण ।

सूक्ष्म ( वि. ) थोड़ा, अल्प, बारीक, तीक्ष्ण । पतला, छोटा ।

सूक्ष्मदर्शी ( वि. ) छोटी वस्तु जिससे बड़ी दृष्टि आंखों ऐसा बंत्र-साधन ।

सूक्ष्मदर्शी ( वि. ) बहुतही बारीकीसे देखनेवाला, तेज नजरवाला ।

सूक्ष्मदेह ( सं. ) जीवात्माका दूसरा शरीर ( वेदान्तमें जीवात्माके चार देह माने हैं १ स्थूल, २ सूक्ष्म, ३ कारण, ४ महाकारण ।

सुभ ( सं. ) घृणा, नफरत, कंपकपी ।

सुभ ( वि. ) बोधक बतानेवाला, जतानेवाला ।

सुभ ( सं. ) बनाना, चेताना, विज्ञापन, इत्तला, इशारा, चिन्ह, संकेत, खबर देना ।

सुभित ( वि. ) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ, विज्ञप्त, कहा हुआ ।

सुभी ( सं. ) फेहरिस्त, ( वि. ) सूचना करनेवाला, दर्शक बनानेवाला

सुभीपत्र ( सं. ) फेहरिस्त, प्रस्तावना, यादके लिखा हुआ कागज ।

सुभ ( सं. ) समझ, दृष्टि, निरख, परख । [ अज्ञाति, अज्ञात ।

सूतक ( सं. ) प्रसव, और मरणकी सूतकी ( वि. ) जिस सूतकी अज्ञाति हो, अपवित्र । [ ज्याई हुई की ।

सूतिका ( सं. ) जन्मा, प्रसूतिवाली,

सूत्र ( सं. ) डोरा, सूत, धागा, तंतु, नियम, पद्धति, मत, कला, ( वि. ) सुधा, सीधा, ठीक ।

सूत्रधार ( सं. ) नाटकका मुख्य कार्यकर्ता, बड़ई, तक्षक, खास्ती ।

सूई-टी ( सं. ) सुदी, शुरू पक्ष, उभियाला पक्षवादा ।

सुध ( सं. ) सुधि, सुष, खबर, होश, समझ, चेत ।

सुध आपत्ती ( वि. ) चेतहीना, होश आना, सुधि आना ।

सुधी ( सं. ) तक, पर्यंत, तलक ।

सुधु ( वि. ) सीधा, सुधा, फैला हुआ, बिछा हुआ ।

सुनभू ( वि. ) मूर्च्छित, बेहोश, बेखबर, अचेत ।

सुनु ( वि. ) शून्य, निर्जन, एकांत, जहाँ कोईभी नहो, सुनसान ।

सुनु ( सं. ) ऊनके बख ।

सुभ ( वि. ) कृपण, कंजूस ।

सूर ( सं. ) स्वर्ग, वायव्यदिशाओं का  
स्वर, आवाज़. ज्वर, शत्रु ।  
सूर्य, सूर, सूरज, सूर्य ।

सूरि ( सं. ) विद्वान्, पंडित, धर्मगुरु,  
केनसाधु । [ ( गीत ) ।

सूरिशु ( वि. ) शौर्य्य बढ़ानेवाला,  
सूरी ( सं. ) सती, साध्वी, पतिके  
साथ प्राणकी बली देनेवाली स्त्री ।

सूरी ( सं. ) बहादुर, शूर, वीरपुरुष ।

सूर्य ( सं. ) सूरज, भात, आफताब ।

सूर्यकान्त ( सं. ) एक प्रकारका  
चमकता हुआ पत्थर, स्फटिकमाणि ।

सूर्यभक्षु ( सं. ) सूरजका ग्रहण,  
सूर्य और पृथ्वीके मध्यमें चंद्रमाके  
आजने से सूर्य बिम्बका जितना  
भाग छाया पड़कर काला होजाता  
है वह ।

सूर्यपूट ( सं. ) ऐसी औषधि जो  
सूर्यकी धूपमें रखकर तैयार की  
जाती हो ।

सूर्यभक्षि ( सं. ) एक प्रकारका पत्थर ।

सूर्यचंडण ( सं. ) सूर्यबिम्ब, सूरज  
के आसपास फिरनेवाले ग्रह ।

सूर्यवंश ( सं. ) सूर्यसे ब्रह्महृच्छं  
कुल, इक्ष्वाकु वंश ।

सूर्यशत ( सं. ) सूर्यका अस्तावक  
चमक, सूरजका क्षुब्ध ।

सूर्योद्भव ( सं. ) सूरजका उदय ।

सूर्यपु ( वि. ) सूर्यपूजना ।

सूर्यपु ( वि. ) उत्पन्न करना, पैदा  
करना, जन्म देना ।

सूर्यि ( सं. ) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव,  
संचारकी रचना ।

सूर्यिभ ( सं. ) प्रकृतिकाक्रम,  
कुबरतकी चाल, दुनियाका रीति  
रिवाज ।

सूर्यिनियंता ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा ।

सूर्यिस्थना ( सं. ) जनरचना ।

सूर्यिसौन्दर्य ( सं. ) सूर्यिलीला,  
प्रकृतिकी सोमा ।

से ( वि. ) सो, सत, ( अ० ) क्यों,  
किसलिखे, किसकारण ?

से'डे ( अ० ) सौ ऊपर, शताधिक ।

से'डे ( सं. ) सैकड़ा ।

से'तके ( वि. ) पुष्कल, बना, अधिक ।

से'तसे ( सं. ) कांटेवठाने के लिये  
दुर्गकी लकड़ी विशेष, जेठी, जेरी ।

से'ती-थी ( सं. ) मांग, बाजोंमें  
बनाई हुई रेखा विशेष ।

से'तो-थे ( सं. ) पूर्ववत् ।

से ( सं. ) सहनसक्ति, आश्रय,  
अभ्यास, रिवाज, चाल ।

शेखरी ( सं. ) एक किसका वृक्ष ।

सेखन ( सं. ) सिखाई जानी वेना,  
सिखन, सीखना ।

सेख ( सं. ) बिल्वना, कट्या, सोने  
के लिये पलंग बगैरह, रुदन,  
रोना, विलाप, ( अ० ) सहज  
में, साधारण नया ( बि. ) थोड़ासा  
जरासा । [ अंग, थोड़ासाभाग ।

सेखर ( सं. ) भाप, बाष्प, बाफ,  
सेखरत ( अ० ) गहजमें ।

सेखियुं ( वि. ) किनारी रहित  
घोसी, पंचा, बिना कोरकी पोती ।

सेखुं ( सं. ) असर, प्रभाव, हाव,  
गात्र, बदन ।

सेखे ( अ० ) सहजमें बिनापरिश्रमके ।

सेकुली ( वि. ) जो चोरीकरे ।

सेह ( सं. ) पक्ष, जोर, बल ।

सेडा-डे ( सं. ) सीमा, हद्द, सीब,  
पगदण्डी, रास्ता ।

सेख ( सं. ) सन, जूट, ( वि. )  
सज्जन, सद्गुणी, ख्याना, चतुर ।

सेखी ( सं. ) सहनता ।

सेत ( सं. ) पुक, सेतु ।

सेतरंज ( सं. ) देखो सेतरंज ।

सेतु ( सं. ) बांध, पुक, पाक ।

सेतान ( सं. ) कैतान, बदमाश, दुष्ट ।

सेखन भेखियुं ( वि. ) तोखनी,  
उईव ।

सेतुर ( सं. ) देखो सेतुर ।

सेन ( सं. ) फौज, सेन्य, स्वान । ;

सेना ( सं. ) फौज, सेन्य ।

सेनाभासभेख ( सं. ) गावकबाद  
राजाओंका एक खिताब ।

सेनानी ( सं. ) सेनापति, सेनाध्यक्ष ।

सेनापति ( सं. ) पूर्ववत् ।

सेनुं ( अ० ) किसलिये, किस कार-  
णसे, कैसा किस तरहका ।

सेनो ( सं. ) एक प्रकारका सूती वस्त्र ।

सेख-अ ( सं. ) सेव नामसे प्रसिद्ध फल ।

सेर ( सं. ) खैर, हवाबोरी, चहल-  
कहमी, मौजमजा । बचनाविसेष,  
रूठ मण, शिरा, नस, नाड़ी, बह  
बोरा जिसमें मोती बगैरः पिसीये  
गये हों ।

सेरडी ( सं. ) देखो सेरडी ।

सेरडे ( सं. ) आनेजानेसे बना  
हुआ मार्ग, पगदण्डी, बहुतठंका  
या बहुत गर्म पानीसे कलेजेमें कंठसे  
जो माखम होता है वह ।

सेरभाध ( सं. ) एक प्रकारकी लूनी ।

सेरखुं ( वि. ) सरकाया, खोखला ।

सेरवे ( सं. ) लोरवा, मांसको

कबाजकर बनाया हुआ रस ।

शेख ( सं. ) शेर जल सवाये  
 हुआ साध ।  
 शेखी ( सं. ) सफ़ाई नली, मोहका ।  
 शेखीखाना ( सं. ) एक खासिका  
 गोंद । एक प्रकारका खुसबूदार गोंद ।  
 शेख ( सं. ) मौज़ मजा, आनन्द ।  
 शिख, खपटा पत्थर । ( अ० )  
 सहक, आसान, सहज ।  
 शेखशेखी ( सं. ) न छो पागलही  
 और न चतुरही ऐसी भी ।  
 शेखु-ई ( सं. ) पुष्पविशेष ।  
 शेखाधी ( सं. ) छेक, सलानी ।  
 शेखारी ( सं. ) खियोंके पहिननेका  
 बनाविशेष ।  
 शेखासाही ( सं. ) खियोंके पहिन-  
 नेका लालपीली धारियोंका बनावि-  
 विशेष ।  
 शेखी ( सं. ) राख, भस्म, ( मुर्बकी )  
 शेखा सं. ) हूय, निकालते समय  
 गऊके पिछले पैरोंमें बांधनेकी  
 रस्सी, रवाना ।  
 शेव ( सं. ) देखो शेव और सेवा ।  
 शेव ( सं. ) गौहर, चाकर, मक,  
 रास, सेवा करनेवाला मनुष्य ।  
 शेवख ( सं. ) सेवा करनेकी रीति ।  
 शेव ( सं. ) देखो शेव ।

शेखी ( सं. ) जैन धर्मोपलब्धि  
 की ( मुर्बखे साधु ) ।  
 शेखी ( सं. ) जैन मतानुयायी  
 साधु जो सिरपर बाल बढाते हैं ।  
 जाहूगर, बाजीगर ।  
 शेखी ( सं. ) एक प्रकारका पुष्प ।  
 शेख ( सं. ) उपबोधमें लेना, क-  
 ममें लाना, प्रयोग, उपयोग ।  
 सेवा, चाकरी, अंडोंपर पंख फैल-  
 कर बैठना ( पक्षियोंमें )  
 शेवतई ( सं. ) सुपारीकी एक किस्म ।  
 शेवर्धन ( सं. ) ऊंची जातिकी सुपारी ।  
 शेवना ( सं. ) स्वामभक्तियुक्त  
 सेवा, ईमानदारीसे दूरसन्ध्याकरी ।  
 शेवणु ( कि. ) सेवा करना, टहल  
 करना, सेवन करना, काममें लेना,  
 अंडोंपर पंख फैलाकर बैठकर गमी  
 पहुंचाना ।  
 सेवा ( सं. ) गौकरी, चाकरी, टहल ।  
 कातिर, स्नेहके लिये काम करना ।  
 शेवाण ( सं. ) देखो शेवाण ।  
 शेवु ( कि. ) सहन करना, सेवन  
 करना, पचाना, बहुत देरतक  
 ठहरना, अनुकूल होना ।  
 शेवे-वे ( सं. ) सिमई, सिबई,  
 मैदाके डनामे हुए लम्बे लम्बे  
 तारसे । एक प्रकारका खाद्य  
 पदार्थ । शेव, सेवनका बना हुआ  
 एक या बीसों तमक हुआ पदार्थ ।

सेवा ( वि. ) सेवा करनेयोग्य ।  
 सेवासेवा ( सं. ) सेठ और गुमास्ता ।  
 सेसधूस ( सं. ) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां सिरमें पहिनती हैं ।  
 सेसवा ( सं. ) भिगोकर तेल या घांसे भूने हुए नमक मिच मिचे करने ।  
 सेह ( सं. ) सहनशक्ति, आदत, रीति, नियम, रिवाज, अटकाव, रोक ।  
 सेहेन ( वि. ) सरल, सहल, थोड़ा, अच्छा, जरा, सुगम । खून, रक्त, सेज, इत्यादि ।  
 सेहेनशाह ( सं. ) बादशाह, सम्राट, चक्रवर्ती राजा, बड़ा राजा ।  
 सेहेय ( सं. ) मीठा, आनन्द, सैक, ( वि. ) आसान, सुगम, सरल ।  
 सेहेधाधुरी ( सं. ) सैलानी, मौजी, आनन्दी, सुमकर ।  
 सेहैला ( सं. ) मुसलमान, फकीर ।  
 सै ( सं. ) दर्जी, सिंह, मज, सहेली सली, आली ।  
 सैम ( सं. ) सैकड़ा, सदी, शताब्दि ।  
 सैमिधु ( सं. ) बाठकोंका एक केन्द्र बिन्दु, ज्यों ज्यों किंचि स्पर्श हो उलझती जानेवाली भाँठ ।

सैम्य ( सं. ) छप्परके बलियोंके बालों का पकिया बांधनेकी, कोरी, पंच ।  
 सैमु ( वि. ) छप्परकी छपकियेवा बांधना ।  
 सैनिक ( वि. ) सेना सम्बन्धी, फौजी, ( सं. ) सिपाही, बोक, फौजका आदमी । [ लश्कर ।  
 सैन्य ( सं. ) सेना, फौज, दल, सैन्यदण ( सं. ) बड़ी भारी फौज ।  
 सैन्यधिपति ( सं. ) देखो सेनापति ।  
 सैन्यव ( सं. ) एक प्रकारका क्षार, संधानमक, बोझ, अश्व, हथ ।  
 सैय ( सं. ) क्षीतकारोग, बेचककी बिमारी, विस्फोटक ।  
 सैयद ( सं. ) मोहम्मद नामके प्रसिद्ध पैगम्बर के वंशज, मुसलमानों के चार फिरकी मेंसे एक ।  
 सैयरी ( सं. ) सली, सहेली, आली ।  
 सैयरी ( सं. ) भागी, हिस्सेदार, पांतीदार, ( वि. ) मिठाहुआ, मिश्रित आम, साधारण ।  
 सैय ( सं. ) स्वांग, नवरूप चारण, लाली मपका, वेश, सांग ।  
 सैयवारी ( सं. ) सुकाक, ऐसा समय जिसमें बस्तुएं सस्तीमिलें ।  
 सैयु ( वि. ) सस्ता, थोड़े मूल्यकी अधिकमाक, सहान ।

सोम्यु'भे'भु'वु' ( कि. ) सुसाम्य  
पाहना, आग्रहकी इच्छा करना ।

सोम्यु ( कि. ) तय्यार होना, तिरा  
होना, जाना ।

सोताण्यु' ( कि. ) बोका बहुत  
तठना भूखना ( पी या तेरने ) ।

सो'प्य ( सं. ) एक युगम्वित पदार्थ ।

सो'प्यु' ( कि. ) मिकना, हाथजाना  
पैदा होना, जन्महोना ।

सो'प्यु ( सं. ) सिपुर्दनी, हवाले  
करना, समर्पण करना ।

सो'प्यु' ( कि. ) सिपुर्दकरना, हवाले  
करना, देना, सौंपना, समर्पण  
करना ।

सो'सह' ( अ० ) आरपार, इधरसे  
उधर, एक सिरेसे दूसरे सिरेतक ।

सो'सह' नी'कण्यु' ( कि. ) आरपार  
निकलजाना ।

सो'ह ( सं. ) चेत, होश, भान,  
सुधि, बुद्धि, समझ, ज्ञान ।

सो ( वि. ) सत, सौ, एकसौ ।

सो'ना'सा'ह'र'व' ( कि. ) तुकसान  
तठना, हानि तठना ।

सो'भ्यु' र'नी' त'व'ह' ओ'स्यु' ( कि. )  
निश्चित होकर तान बूँदी सोना,  
सुखचैनसे रहना ।

सो'व'र'पु'र'व'वा' ( कि. ) हर आसना,  
अंतधाना, आसिरी जाना ।

सो'व'र'पु'र'व'वा'पे'मे'वे' ( वि. ) बड़ाही  
बदमाश, अतिसय तुच्छा ।

सो'व'भ'त' मा'णी'ने' पा'प्यु'पी'तु' ( कि. )  
बहुतही समाजकर मायधानीसे  
बर्तीव करना ।

सो'स'मा'नु'स'यु' ( स. ) अत्यंत प्यारा  
नातेदार । [ अंधेर, अंधार्चुव ।

सो'म'प्यु'ते'ले' अ'ध'र' ( वि. ) बहुतही  
सो'ह'ह'ह' सा'सु'ना' तो' ओ'ह'ह'ह' अ-  
ह'ने' ( - ) सौ सुनारकी एक जोहा-  
रकी, चलती फिरती छाद, आज  
तुम्हारा तो कल हमारा ।

सो'ता'श' रा'भ'ह'ह'ह'ने' ओ'ह'भा'र' उ'ह'ह'  
( - ) तुम्हारी सारीहा और मेरी  
एक नाही ।

सो' इ'वाने' ओ'ह' ह'वा' ( - ) स्वच्छ  
हवा सब औषधियोंसे भेष्ट है ।

सो'ह' ( स. ) दरजो, दर्जी, कपड़े  
सीनेवाला, प्रबन्ध, बंदोबस्त ।

सो'ह'पा'प्यु' ( सं. ) पाई वह जो जो बच्चे  
पैदा करानेवाली होती है, दायन ।

मे'ह'पे' ( सं. ) मोटी सुई, बड़ीसुई,  
जुआ, सूरा सुइया ।

सो'ह' अ'-स'डी' सं. ) सौत, एक बत्तकी  
सो'ह'सौ'का' आपसमें जाता, बत्ति  
की दूसरी ली ।

शेअरी-अरी ( सं. ) देखो शेअरुं  
 शेअरुं-अरुं ( सं. ) पासा, सार,  
 शेअरुंके लिये काठका या हाथीदी-  
 तका चौपड़खं रंगविरंगा सांचा,  
 बकमक पत्थरसे आग बनाकर  
 मुलगाई जानेवाली बोरी ।  
 शेअरीलारवी ( कि. ) कायदाठाना,  
 जयप्राप्त करना ।  
 शेअरीभारवी ( कि. ) रूबेवतः  
 शेअरीवागवी ( कि. ) निशानः  
 लगना, जय होना, इच्छा पूर्ण  
 होना ।  
 शेअन ( सं. ) कसम, सपथ, सौगन्ध ।  
 शेआत ( सं. ) भेट, इनाम, पुरस्कार  
 बरस्वमि ।  
 शेअय ( सं. ) शोक चिता, फिक,  
 दुःख, तपास, शोध, जांच,  
 अनुसंधान ।  
 शेअ ( सं. ) लक्षण, चाल, वर्त्ताव ।  
 शेअियुं ( वि. ) अच्छे लक्षणयुक्त ।  
 शेअरुं ( वि. ) अच्छा, साफ, स्वच्छ ।  
 शेअने ( सं. ) सोअन, अंगका  
 फूलना । [ शाखा, छड़ी ।  
 शेअरी ( सं. ) भेट, वृक्षकी पतली  
 शेअरुं ( अ० ) अकेला, छडा,  
 एकाकी ।  
 शेअरी ( सं. ) डंडा, दण्ड, मोटी  
 लकड़ी, लाठी ।

शेअ ( सं. ) तरक, चार, चक,  
 रूई रवाई, सौर, सौर, चूषट,  
 छेदा, काजके लिये शिथोके मुहपर  
 साड़ी, सुगन्ध, सुवास, सुसवो ।  
 शेअताश्रीनेसुपुं ( कि. ) कर्म  
 तानकर सोना, आळसी होकर  
 पड़े रहना । [ हांककर सोना ।  
 शेअवाणीनेसुपुं ( कि. ) मुल  
 शेअभां अरापु ( कि. ) आभयने  
 जाना, धरमजाना ।  
 शेअ प्रभाषे साधरी ( सं. ) सौंदके  
 अनुस रूई बिछौना । [ महक ।  
 शेअम ( सं. ) सुगन्ध, सुवास,  
 शेअवधु ( सं. ) सोद-रजाईके नीचे  
 लगानेका मुलायम कपडा ।  
 शेअपुं ( कि. ) सुगन्धभाना, सुस-  
 दूआना ।  
 शेअियुं ( सं. ) शिथो के पहिने  
 की साड़ी, छटकताहुवा भाग ।  
 शेअे ( अ० ) पास, नजदीक, समीप  
 अनुसार, मुआफिक ।  
 शेअे ( सं. ) सहायक मददगार ।  
 शेअु ( सं. ) काँठ, मेख, फावर ।  
 शेअुं ( सं. ) स्वप्न, सपना, सुपना  
 शेअत-पुं ( अ० ) साथ, सहित,  
 समेत ।



सोनाई ( सं. ) कुचापन, सोहचापन  
बदमाशी ।

सोनाई ( सं. ) सौदा करनेवाला,  
व्यापारी, करीब फरोक करनेवाला,  
ऊँचे समानका बेपारी ।

सोनाईजिरी ( सं. ) ऊँचेमालका व्या-  
पार, सौदागरका धन्धा, व्यापार  
( वि. ) सौदागर सम्बंधी, व्यापार  
विषयक ।

सोनाई ( वि. ) बदमाश, लुच्चा, हगाडी ।

सोनाई ( सं. ) व्यापार, लेनदेन,  
सौदा, व्यवहार, सामान ।

सोनाईसोधि ( सं. ) कुँडभाऊ, खाज,  
तन्त्र, अनुसन्धान ।

सोनाईपाणी ( सं. ) जिसको छूलनेसे  
स्नान करना पड़े उस पर स्वर्णसे  
छुवाकर छुाँदके लिये दिये हुए  
पानाँके छीटे ।

सोनाई ( सं. ) एक प्रकारका  
गेरू, एक तरहकी लाल मिट्टी ।

सोनाईभी-भुभी ( सं. ) एक इंसके  
पत्ते विशेष जिन्हें खानेसे जुलाब  
लग जाती है ।

सोनाई ( सं. ) सुनार, स्वर्णकार,  
सोने चाँदीका बंदर बनानेवाला ।

सोनाईधु ( सं. ) सुनारकी भाषा ।

सोनाई ( सं. ) हैको सोनाई ।

सोनाई ( सं. ) काँच, स्वर्ण, सुवर्ण,  
सोना, बहुमूल्य धातु विशेष ।

सोनाईभोईरनेपुं ( कि. ) अच्छा, सासा ।

सोनाईनाईजिमाईरवा ( कि. ) खूब  
घन पैदाकरना ।

सोनाईनीज्ज पाणीभाँभाँपी ( कि. )  
अपकृत्यद्वारा प्राणत्यागना, आत्म  
हत्या करना । [ समझी ]

सोनाईनीतई-पण ( सं. ) बहुमूल्य  
सोनेरीकापट्टो ( स. ) बहुतही ध्या-  
नमें रखने योग्य नियम ।

सोनाईनीलंकापुटापी ( कि. ) बहु-  
मूल्य वस्तुका चलाजाना ।

सोनाईनीकेणीमे ( वि. ) बहुतही  
महंगा और उत्तम ।

सोनाईनीभरसाईभरसवे ( कि. )  
असंख्य धनका आगमन ।

सोनाईनीसुरज्जमे ( कि. ) बहु-  
मूल्य सुख दिवस प्राप्त होना ।

सोनाईनीदांत पसवा ( कि. ) घन  
दाँतका खूब उपयोग करना ।

सोनाईपी मुनिवर्मण ( - ) इंसको  
देखकर सबका मन चलावमान  
होता है ।

सोमनामसंज्ञासूचिका (—) ठकेकी  
बुझिया और उसकी मुँहमुखाईका  
रूपवा ।

सोनाने स्थाभतावणजे नहि(-) सां-  
क्यो भाँचनही, सत्यतो सत्यही है ।

सोनेरी ( वि. ) सुनहरी, सुनहल,  
सोने के रंगका ।

सोनेरीझां ( सं. ) एक प्रकार के  
केले—( फल विशेष )

सोनेया ( सं. ) सोनेका सिक्का, निष्क ।

सोपान ( सं. ) सीढ़ी, निसेनी, नछेनी  
निश्रिणी, पैदी, चढ़ाव ।

सोपानी ( सं. ) झुपारी, पूगी फल ।

सोः ( सं. ) साँस, दम, हाफनी,  
शरीरका फूटना ।

सोःवा ( सं. ) शोषवायु, रोग-  
विशेष, जिससे शरीर फूट जाता है ।

सोमत् ( सं. ) सोमवत्, संगति,  
संग, सहवास, जीपुरुषका मेल ।

सोमती ( सं. ) साणी, दोस्त,  
बोड़ीदार ।

सोम ( सं. ) विवाह हो जुड़ने  
बाद बरबधूके देवताओंके भावे  
बिठाकर गाने जानेवाले गीत ।

सोमाम ( सं. ) सुहाग, अहिवाल ।

सोमामवती—वती ( सं. ) सुहा-  
गिन, सखवा, पतिपुष्पा की ।

सोमामपमयी ( सं. ) कमरपमयी,  
कार्तिक सुहायपमयी ।

सोम ( सं. ) चन्द्र, सोमवार, चंद्र-  
वार, सोमकला । ( वि. ) शांत,  
छाँतक ।

सोमनाभा ( सं. ) सोमनागमें  
पूर्णाहुतिका स्थान । शांति हुई ।  
झगड़ा निपटा ।

सोमनाम—म ( सं. ) यज्ञविशेष  
जिसमें सोमरस होमा जाता है ।

सोमनाम ( सं. ) ऐसा राजा जिसने  
राजसूययज्ञ किया हो ।

सोमभ ( सं. ) एक जातिका धार ।

सोमवती ( सं. ) वह अमावस्या  
तिथि जिस दिन सोमवार हो ।

सोमवतीने सुभरवार(अ०)कृष्णही ।

सोमवल्ली ( सं. ) कथाविशेष,  
सोमकला ।

सोमवार ( सं. ) चन्द्रवार, वारविशेष ।

सोम ( सं. ) सुई, सूई, सूची, वह,  
( कवितामें ) सब, सारा, समस्त ।

सोमपुत्री(सं.)प्रगिनी विशेष, सोहिनी ।

सोमभ ( वि. ) तीसरा, तृतीय भेनी ।

सोमधुं ( वि. ) बहलका सहाहुला ।

सोमो ( सं. ) बड़ी सुई, सुना, सुइया ।

सोमंभी ( सं. ) एक प्रकारकी वन-  
स्पति, जिसके रंगसे साधूजोके  
अपने वस्त्र रंगते हैं ।

सोऽह ( सं. ) कठिनावाक्य एक प्रांत, रायिनी विशेष ।

सोऽहो ( सं. ) छन्द विशेष, दोहोको उलटा करने से लोटा बन जाता है, कठिनावाक्यमें यानेकी रायिनी विशेष ।

सोऽरी-ती ( सं. ) काटरी, चिट्ठी बाकना ।

सोऽभ ( सं. ) गन्ध, वास, खौरभ ।  
कहाव ।

सोऽभ ( सं. ) पूर्ववत् । [ शान्ति होना ।

सोऽवधुं ( कि. ) धेन पड़ना ।

सोऽधुं ( कि. ) दांतसे फाड़ खाना, ऊपर ऊपरसे मोटा क्लिक्का इटाना ।  
काफ करना, समेटना ।

सोऽधुं ( कि. ) नाकियां देना, कोसना ।

सोऽधुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

सोऽधुं ( कि. ) बनदी छुल जाये ऐसा करना, बलीटना ।

सोऽसोऽ ( सं. ) हाहा, गुलनपादा, लोरगुल, देहनाक, बूंदनाक ।

सोऽधुं ( सं. ) बाढ़ जानेसे बितादुर होना, चबराहट, व्याकुलता ।

सोऽधुं ( कि. ) कोमित करना ।

सोऽरी ( सं. ) छोकरा, कड़का, पुन, लोरा, पैदा ।

सोऽरी ( सं. ) चुचि, होठ, बेग, मान । ज्वारके बूझोंको सुझवेके लिये कड़ेही रहने देना । छोकरा, कड़का, पेटी, पुत्री ।

सोऽ ( अ० ) समयमें, वक्तमें ।

सोऽसा ( अ० ) जैसे हो तैसे, अधिकतर, विशेषतर ।

सोऽसाधुं ( सं. ) सुहागिन, सधवा, सौमन्वधरी, पतिव्रता स्त्री ।

सोऽधुं ( कि. ) रूपमें अच्छा बालकर हिलाना, फटकना, पिछोरना ।

सोऽस ( सं. ) तृषा, प्यास, पिकास ।

सोऽसाह-ग ( सं. ) मगर, मच्छ, ग्राह, मकर ।

सोऽसाधुं ( कि. ) सूखना, शुष्क, होना, कुर होना, दुबला होना ।

सोऽधुं ( कि. ) चूसना, सोसना, केचलेना, घुसाना ।

सोऽधी ( सं. ) सोमा, कांति, [ सौन्दर्य ।

सोऽधुं ( वि. ) स्वप्न, लपना, क्वाव ।

सोऽधुं ( सं. ) वेदान्ती पुस्तकें द्वारा वासके केने और छोड़वेकी व्यवस्था मान ।

सोऽधुं ( वि. ) बच्छा, स्वच्छ, अक, आनन्द, सौम, सोलहद ।



स्तोत्र ( सं. ) स्तव, स्तुति, सराहना  
 वद, वदना, वदना, वदना प्रकरण ।  
 स्तोत्र ( सं. ) मुकाम, रेकनाही  
 ठहरा कर चढावे उतारनेकी जगह ।  
 स्तोत्र ( सं. ) पयोधर, चूली, धन,  
 गोवा, मादाकी छातिवा । आंचळ,  
 बोवे । [ लेकर, बूझनेकी क्रिया ।  
 स्तोत्रान ( सं. ) मुखमें धन-चूली  
 स्तोत्र ( वि. ) कुंठित, हकावका,  
 रुका हुआ, चुप, शांत ।  
 स्तोत्रस्थ ( सं. ) लभा, धम्मा,  
 अटकाव, रुकाव ।  
 स्तोत्र ( सं. ) रोक, आड, रोकना,  
 दबादेना, कामशास्त्रकी क्रिया  
 विशेष । [ गुणपाठ, स्तोत्र ।  
 स्तोत्र ( सं. ) गुणवर्णन, स्तुति,  
 स्तोत्र ( क्रि. ) स्तुति करना प्र-  
 शंसा करना, गुण गाना, तारीफ  
 करना । [ सराहना, भजन, तारीफ ।  
 स्तुति ( सं. ) बखान, स्तव, प्रशंसा  
 स्तुतिपाठ ( सं. ) भाट, चारण,  
 मागध, बन्दी, सूत, कापडी,  
 करपक । [ तारीफ के लयक ।  
 स्तुतिपान ( वि. ) स्तुतिकरनेयोग्य  
 स्तुति ( वि. ) प्रशंसाके योग्य, प्रशं-  
 सित, कथित तारीफ, स्तवनीय ।

स्तोत्र ( सं. ) स्तव, स्तुति, सराहना,  
 देवकी प्रशंसाका ग्रंथ ।  
 स्तोत्र ( सं. ) स्तुति मैत्रोंका समु-  
 दाय, प्रशंसा, स्तुति ।  
 श्री ( सं. ) नारी, लुगाई, औरत,  
 भार्या, पत्नी, मादा ।  
 श्रीदेवी ( सं. ) फूलमेंके तंतु विशेष ।  
 श्रीचरित्र ( सं. ) स्त्री जातिकी  
 चतुराई, क्रियाका छलकपट ।  
 श्रीधन ( सं. ) ऐसा धन जिसपर  
 स्त्री का ही अधिकार हो । औरत ।  
 श्रीवृत्ति-त ( सं. ) नारी, जाति,  
 श्रीपुत्र ( सं. ) नरनारी, पतिपत्नी,  
 बरवधु, मर्द औरत, लोगलुगाई ।  
 श्रीधर्म ( सं. ) स्त्रीका धर्म, पति-  
 सेवा ऋतुधर्म, मानिकधर्म, रजो  
 दर्शन ।  
 श्रीश्रुत ( वि. ) स्त्रीके वशीभूत ।  
 श्रीपुत्रधर्म ( सं. ) पतिपत्नीका  
 फर्ज । [ स्त्रीका भक्त, विलासी, स्त्रीमा ।  
 श्रीश्रुत ( सं. ) विषयी, स्त्रीजा-  
 श्रीश्रुत ( सं. ) नारी जाति ( ब्याक-  
 रणमें ) [ दोष ।  
 श्रीश्रुत ( सं. ) स्त्रीवधका भारी  
 श्रीश्रुत ( सं. ) जबरदस्ती औरत  
 को मगालेजाना, बलपूर्वक स्त्रीका  
 ठेजाना ।

स्थ ( वि ) वाग्वेषासा, रक्षणेवासा  
ठहरनेवासा, राखेवासा ।

स्थ ( सं. ) जगह, स्थान, पद ।

स्थानांतर ( सं. ) दूसरी जगह  
अन्यस्थान । कुदकी रास्ता, भूमार्ग ।

स्थानार्थ ( सं. ) जमीनका रस्ता ।

स्थानिर ( सं. ) योगी बाबा, मिळारी ।

स्थान्यु ( सं. ) बंभा, स्तंभ, बाम,  
ढेका । ( वि. ) स्थिर, निश्चल,  
अचल ।

स्थान ( सं. ) ठौर, ठाम, ठिकाना,  
घर, जगह, भविष्य, पद, दरजा,  
प्रसंग, अवसर, निवासस्थान,  
बैठक ।

स्थानक ( सं. ) देखो स्थान ।

स्थानग्रन्थ ( सं. ) पदग्रन्थ, जगहसे  
नीचा । [ स्थानीय ।

स्थानिक ( सं. ) घरवा, जगहका,

स्थापक ( वि. ) स्थापना करनेवाला,  
नियुक्त करनेवाला, मुकर्रर करने-  
वाला, बिठावेवाला, थिद करने-  
वाला ।

स्थापना ( सं. ) प्रतिष्ठा, स्थिति ।

स्थापयु ( कि. ) मुकर्रर करना,  
स्थापित करना, साधित करना ।

स्थापित ( वि. ) प्रतिष्ठा किना  
हुआ, रखा गया ।

स्थानी ( वि. ) बहुत समयसेक ठहर-  
नेवाला, ठिकाना, पुस्ता, मजदूर ।

स्थानर ( वि. ) अचल, नहीं चले-  
वाला । [ ठहराव ।

स्थिति ( सं. ) स्थान, ठिकाना,

स्थितिरस्थापक ( वि. ) अपनी प-  
हिली स्थितिसे कायम रखनेवाला ।

स्थिर ( वि. ) देखो स्थानर ।

स्थिरता ( सं. ) अचलता, ठहरी  
हुई हालत, शांति, धैर्य ।

स्थूल ( वि. ) मोटा, पथिर, लौहिक,  
बड़ा, फूल हुआ, बड़ा ।

स्थूलदेह ( सं. ) शरीरशरीर, स्थूल-  
काय, यह नाशमानशरीर, मोटा  
बदन । [ मोटे विचार ।

स्थूलद्रष्टि ( सं. ) साधारण विचार,

स्नान ( सं. ) स्नान किना हुआ,  
नहाया हुआ । [ अवगाहन ।

स्नान ( सं. ) नहाया, नहाय,

स्नायु ( सं. ) रग, रफवाहिनी  
गाड़ी, नद्य । [ जोरत ।

स्नुषा ( सं. ) बहू, पुत्रवधू, बेटेकी

स्नेह ( सं. ) सनेह, प्रेम, प्यार,  
अनुराग, वात्सल्य, चिन्माई,

चिन्माई ।

स्नेहक ( सं. ) मित्रताका भावा-

**स्नेहाश्रु** ( सं. ) प्रेम्मे कारण  
 विधात । [ कृपाश्रु ।  
**स्नेहाई** ( सं. ) प्रेम्मे भीमा हुआ,  
**स्नेहाण** ( वि. ) प्रेमी, कृपातु,  
 दयातु, स्नेह युक्त ।  
**स्नेही** ( सं. ) मित्र, दोस्त, भाईबन्धु ।  
**स्पर्धा** ( सं. ) रङ्ग, बराबरी, हिंस,  
 बाह, जलन, दूसरेकी उन्नतिसे  
 दुखी होना । [ आलिप्त्य ।  
**स्पर्श** ( सं. ) छूना, छुहावट, प्रहण,  
**स्पर्श कण** ( सं. ) प्रहणकी गड़आत ।  
**स्पर्शकरी** ( कि. ) छूना ।  
**स्पर्शान्द्रिय** ( सं. ) चमरा, त्वगिन्द्रिय,  
 त्वचा, ताम, आल ।  
**स्पर्श** ( वि. ) साफ, प्रकाश, सहज,  
 व्यक्त, जाहिर, प्रकट ।  
**स्पर्शवत्ता** ( सं. ) बे लाग लपेटकी  
 कहनेवाला, साफ साफ कहनेवाला  
**स्पर्शकरी** ( सं. ) जुलासा, बर्चन ।  
**स्पृहा** ( सं. ) इच्छा, अभिलाष,  
 लसहिस, तृष्णा, गरज, दरकार ।  
**स्पृहा** ( सं. ) विल्लोरपत्तर, स्पृच्छ  
 पाषाण विशेष, काच, मणि विशेष ।  
**स्पृष्ट** ( वि. ) स्पष्टिक सम्बन्धी ।  
**स्तु** ( वि. ) छिटा, फूँटा हुआ,  
 प्रकट, प्रवक्त, जलन, चुका हुआ ।

**स्तु** ( सं. ) जान्योहन, कल्प,  
 फटकना, ईशकवलन, अंकुर फूटना,  
 अचानक बाद आना ।  
**स्तु** ( कि. ) अंकुर फूटना, प्रकट  
 होना, स्मरण आना, पुरना ।  
**स्म** ( सं. ) कामदेव, भंग ।  
**स्म** ( सं. ) सुष, चेत, स्मृति,  
 याद, मनन, यादगरी ।  
**स्मृ** ( सं. ) छोटीसी माला,  
 ईश्वरभजन करनेकी काष्ठादिमाला ।  
**स्मृ** ( वि. ) यादकरनेके लिये  
 बातें लिखलेनेकी किताब, नोटबुक  
 बादी, बायरी [ स्मरण रखने योग्य ।  
**स्मृ** ( सं. ) यादकरने योग्य  
**स्मृ** ( कि. ) स्मरण करना,  
 याद करना ।  
**स्मृ** ( सं. ) दाढ़ी, दाढ़ी ।  
**स्मृ** ( वि. ) यादकरनेवाला,  
 सूचित करनेवाला, जतानेवाला ।  
**स्मृ** ( वि. ) स्मृतियोंकी आज्ञाके  
 अनुसार चलनेवाला, स्मृति-  
 सम्बन्धी ।  
**स्थित** ( वि. ) आबर्चयुक्त, हैरान,  
 खिला हुआ, मुसुकान, मद्दहास ।  
**स्थिति** ( सं. ) स्मरण, याद, अनु  
 आदि रचित धर्मनियम ।

२५-३५ ( सं. ) दण्ड, बाण विभेद ।

आव ( सं. ) उपकना, चूना, जल-  
झाव, मासिकधर्म, रजो दशन ।

२५-३६ ( सं. ) पट्टी, पत्थरकी पट्टी ।

२५ ( वि. ) आत्मीय, अपना, खुद ।

२५-३७ ( वि. ) अपनी कल्पनाका ।

२५-३८ ( वि. ) खुदका, निजका,  
अपना । [ स्त्री, परी, भार्या ।

२५-३९ ( सं. ) अपनी विवाहिता

२५-४० ( वि. ) साफ, शुद्ध, पवित्र,  
निर्मल, सज्जल, निश्कलंक ।

२५-४१ ( सं. ) सफाई, पवित्रता,  
शुद्धि ।

२५-४२ ( सं. ) स्वेच्छानुसार,  
स्वाधीन, मनमौजी, यथेच्छाचारी ।

२५-४३ ( वि. ) हठीला, जिद्दी,  
स्वतंत्र । [ बन्धु, मित्र, कुटुम्बी ।

२५-४४ ( सं. ) अपनेलोग, नतैत,

२५-४५ ( सं. ) अपनी जाति,  
निजजातिका ।

२५-४६ ( अ० ) अपनेसे, स्वभावतः,  
स्वाभाविक, खुद, जन्मसेही ।

२५-४७ ( वि. ) सर्वभू, अकृत्रिम  
स्वतंत्र, स्ववश, वन्मसिद्ध ।

२५-४८ ( वि. ) स्वाधीन, निरंकुश ।

स्ववश, खुदमुखवार ।

२५-४९ ( सं. ) जन्मभूमि, अपनादेश ।

२५-५० ( वि. ) देशनिमान,  
अपने देशका जन्म चाहनेवाला ।

२५-५१ ( सं. ) देशभक्त ।

२५-५२ ( सं. ) अपने देशका  
गर्व । [ देशीय ।

२५-५३ ( वि. ) अपने देशका निज

२५-५४ ( सं. ) अपना धर्म, कुल-  
रीति, अपनाफर्म, सासियत ।

२५-५५ ( सं. ) माया, पितृगणकी  
पत्नी, आत्मकी स्त्री । [ ठिकाना ।

२५-५६ ( सं. ) स्वर्ग, अपना

२५-५७ ( वि. ) मरना ।

२५-५८ ( सं. ) अपना, स्वाव, नींदमें  
विचार । [ स्वप्नस्वप्नमें दिखता है ।

२५-५९ ( सं. ) जो कुछभी दृश्य

२५-६० ( वि. ) मिथ्या, स्वप्नत-  
मान, कम ठिकाळ ।

२५-६१ ( सं. ) बहास्विति त्रिसर्ग  
स्वप्न आरहाहो ।

२५-६२ ( सं. ) प्रकृति, टेव, बान,  
आदत, धर्म, गुण, प्रकृति,  
सासियत ।

२५-६३ ( वि. ) स्वाभाविक,  
स्वाभावसिद्ध, स्वतःसिद्ध, कुदरती ।

२५-६४ ( सं. ) मातृभाषा, जन्म  
भाषा ।



२५५ ( सं. ) स्वयं, वतन ।

२५५ ( अ० ) सुद, अपनी इच्छासे  
आप, आपनेहैं । [ उत्पत्ति ।

२५५ ( सं. ) स्वयम्भू, स्वतः

२५५ ( सं. ) अपनेवास्ते अपने  
हाथों बनाईहुई रहोई ।

२५५ ( सं. ) अपने तेजसे  
प्रकाशित, खुदप्रकाश ।

२५५ ( सं. ) ब्रह्मा, विष्णु, शिव,  
अबोलिज, स्वयम् जात, ( वि. )  
स्वयम् उत्पन्न, स्वतःसिद्ध ।

२५५ ( सं. ) सभामें कन्याका  
अपने किये बरबुनना, आपही  
बरना, एक प्रकारका विवाह. जो  
स्वेच्छानुसार किया जाता है ।

२५५ ( सं. ) जो खुद आपही  
आप चल सके ( यंत्र ) ।

२५५ ( सं. ) अबाज, भनी, शब्द,  
घोष, बाणी, बोली, नाद, अक-  
रोरी १६ अक्षर, सांख, खास,  
कंठ, गंठ, आकाश, गगन, स्वर्ग,  
देवलोक । [ हिंकाजित, बचाव ।

२५५ ( सं. ) आत्मरक्षा, खुदकी

२५५ ( सं. ) खुदमुक्तारी,  
स्वच्छन्दता, होमरुत, स्वतंत्र  
चलन, अपने हाथों अपना प्रबंध ।

२५५ ( वि. ) उच्चारण विधि,  
अधिक उच्च स्वर, उदात्तादिप्रव ।

२५५ ( सं. ) प्रकृतस्वरूप, आकार  
आकृति, बौद्ध, कल, चेहरा, मुद्रा ।

२५५ ( वि. ) स्वसूरीत, रूपवान  
सुसोभित ।

२५५ ( सं. ) नाकद्वारा सांसलेकद  
शुभाशुभ जाननेकी विद्या ।

२५५ ( सं. ) देवलोक, इंद्रलोक,  
अंतरिक्ष, दिव्य लोक, पुण्यलोक,  
सुखधाम ।

२५५ ( सं. ) स्वर्ग  
सुखभोगनेका समय नगदीकहीहै ।

२५५ ( सं. ) मरजाना ।

२५५ ( सं. ) अकण्ड  
कीर्ति प्राप्तकरना ।

२५५ ( सं. ) आकाशगंगा,  
सुरनदी, देवपथ, स्वच्छ आकाशके  
बीचकी सफेदी ।

२५५ ( सं. ) मरण, मृत्यु, मौत ।

२५५ ( सं. ) मरना,  
देहान्त होना ।

२५५ ( वि. ) स्वर्गमें रहने-  
वाला, परलोकवासी ।

२५५ ( वि. ) पारलौकिक, आ-  
कस्मिक, स्वर्गस्थवासी ।

स्व०५ ( वि. ) अलंत छोटा, बोहा,  
न्यून, बहुताही कम ।

स्व०६ ( वि. ) अपने आधीन,  
स्वतंत्र, स्वाधीन, निरंकुश ।

स्व०७ ( सं. ) ससुर, पतिगा, पत्नीका  
पिता । सुसुरा, ससुर ।

स्व०८ ( सं. ) बहिन, भगिनी ।

स्व०९ ( स. ) कल्याण मंगल,  
भलाई, तथास्तु, क्षेम, आशीष,  
अंगीकार, वचन ।

स्व०१० ( सं. ) छाया, संगी ।

स्व०११ ( स. ) आनन्दमंगल,  
क्षेमकुशल, भरिचत । आबाही  
( अ० ) सुखपूर्वक, सुखीदशामे,  
सहीसलामतीसे ।

स्व०१२ ( सं. ) किसी यज्ञ  
अथवा संस्कारके पहिले मधल-  
वायक वेद मंत्रोंका पाठ, शुभ  
वचन । आशिर्वचन ।

स्व०१३ ( वि. ) पत्नीके आरम्भमें  
शुभ वाक्य ( बराबरनालेको )

स्व०१४ ( वि. ) अपने आपमें स्थित,  
सावधान, तन्दुरुस्त, नीरोग ।

स्व०१५ ( सं. ) शांति, स्थिरता,  
सावधानी, तन्दुरुस्ती, जैराम्ना ।

स्व०१६ ( सं. ) अपनी जगह,  
अपना घर, खास मुकाम ।

स्व०१७ ( सं. ) मकल, अनुसरण,  
आकृति, सांग ।

स्व०१८-ता ( सं. ) आबर, सत्कार,  
सम्मान, हावभाव, मान, अभि-  
नन्दन, इज्जत । छन्दविशेष ।

स्व०१९ ( स. ) इस नामसे प्रसिद्ध  
नक्षत्र, सूर्यपति ।

स्व०२०-गुणव ( सं. ) अपना अनु-  
भव, खुदका तजुर्बा । आत्महर्षव ।

स्व०२१ ( सं. ) मजा, सवाद, रस,  
चाट, रुज्जत, ज्ञायक, अभिवधि ।

स्व०२२-लेवे ( कि. ) आसना, सम-  
झना, अनुभवकरना ।

स्व०२३-अवे ( कि. ) मजाचखना ।

स्व०२४-अवे ( कि. ) मारना,  
पीटना । [ दार, कानकर ।

स्व०२५ ( वि. ) स्वादयुक्त, रुज्जत-

स्व०२६ ( वि. ) स्वादी, स्वाद  
करनेवाला, अच्छा अच्छा खाने  
वाला ।

स्व०२७ ( वि. ) स्वतंत्र, स्वच्छन्द,  
अपराधीन, आत्मवश ।

स्व०२८-अर्थ ( कि. ) सौपना,  
देहासना ।

स्व०२९-लेवे ( कि. ) अपने अधिक-  
कारमें करना ।

स्वाधीनपतिता ( सं. ) वह स्त्री जो अपने पति की अपने अधिकार में रहती है ।

स्वाभिधान ( वि. ) आत्मसिमान, अपने गुण गौरव का ध्यान । [ वर ।

स्वाभि ( सं. ) स्वामि, पति, माकि, स्वामिनी ( सं. ) सेठानी, मालकिन ।

स्वाभिता-धृ-त्व ( सं. ) प्रभुरव, स्वामित्व । [ बेहमानी, राजहोह ।

स्वाभिद्रोह ( सं. ) नमक हरामी, स्वामी ( सं. ) पाल, वर, माकिह, राजा, देव, गुरु, साधु, मुनि ।

स्वार ( सं. ) सवार चढ़ैया ।

स्वारथ-र्थ ( सं. ) अपना अर्थ, अभिनाथ, अपना काम, मतलब, आत्महित, लोभ ।

स्वारी ( सं. ) देखो सवारी ।

स्वारथिपुं-स्वार्थी ( वि. ) मतलबी, स्वार्थी, आपापंथी, लुद्धर्मी ।

स्वाहा ( सं. ) देवताओं को हाथ देने का मंत्र, भस्म, साक, राख, जल जाना, अग्नि की स्त्री । चौपट् ।

स्वाहा हरपुं ( कि. ) खाजाना, हकूम करवाना, बकारवाना, नष्ट करना । [ बरबाद होना ।

स्वाहा धर्ष अपुं ( कि. ) जलवाना ।

स्वीकार ( सं. ) मंजूर, कबूल, अंगीकार, इनकार, मानना ।

स्वीकारपुं ( कि. ) मंजूर करना, कबूल करना, मानना, अंगीकार करना ।

स्वीय ( वि. ) खुदका, निजका, अपना, निजी, निज सम्बन्धी ।

स्वीया ( सं. ) अगनों स्त्री, भार्या, पत्नि ।

स्वेच्छ ( अ० ) अपने इरादे के मुताबिक, अपनी इच्छानुसार । ( वि. ) जो अपना इच्छों के अनुसार हो ।

( सं. ) अपनी इच्छा, खुदकी मर्जी ।

स्वेच्छास्वार ( सं. ) जिह्, इठ, अपनी इच्छा के अनुसार आचरण ।

स्वेच्छास्वारी ( वि. ) हठीला, जिही, स्वच्छन्दी, बिना किसीकी सलाह के काम करनेवाली ।

स्वेच्छास्वारपुं ( सं. ) जो इच्छा के अनुसार होजावे ।

स्वेष्ट ( सं. ) पसीना, पसेब, उष्णता के कारण शरीर से जो पानी निकलता है, अमबिन्दु ।

स्वेष्ट ( वि. ) पसीने से उत्पन्न हुआ, चूँ, पसीने से उत्पन्न कीट ।

स्वेर ( वि. ) निरंकुश, उच्छर्कल,  
उरण, भटकाहुआ । सम्पट,  
बुराचारी । [ व्यभिचारिणी ।  
स्वेरणी ( स. ) स्वेच्छान्धारिणी स्त्री,  
स्वेधार्मिनी ( वि. ) सुदका कमाया  
हुआ, अपने हाथों पैदा किया हुआ ।

६.

६- तेतासवां व्यंजन, गुजराता वर्ण  
माळाका चवालीसवां अक्षर, कण्ठ-  
स्थानसे उच्चारण होनेके कारण  
इसको कृष्ण कहते हैं ।

६ ( अ० ) हा, अर्थसूचक, आभ्यर्थ  
सूचक अक्षर ।

६ ( सं. ) अपने नामसे प्रसिद्ध  
एक पक्षी, ( कहते हैं यह पक्षी  
केवल मान सरोवरमें ही रहता है )  
बहुलकी जातिका पक्षीविशेष,  
जीव, आरमा, प्राण ।

६ ( सं. ) हंसकी तरह  
सुंदर बाल चकनेवाली स्त्री, मन्त्राणी ।

६ ( सं. ) हंस पक्षीकी  
मादा ।

६ ( अ० ) आभ्यर्थसूचक अक्षर ।

६ ( सं. ) अधिकार, दावा, सत्ता,  
शक्ति, आज्ञा, शक्ति, दस्तूर, ( अ० )  
वाणिजी, खरा, सत्ता ।

६ ( कि ) सरजाला ।

६ ( सं. ) परमारमा, खवा,  
इस विश्वास स्वामी ।

६ ( वि. ) अधिकारी, दावा-  
दार, वाणिजी, खरा, सत्ता ।

६ ( अ० ) विनाकारण,  
अकारण, नाह, नेपरवाहीसे  
सामोखवाह ।

६ ( सं. ) दस्तूर, दलाली, कमीशन, फीस ।

६ ( सं. ) "ह", ह अक्षरका  
उच्चारण, अक्षरपन ।

६ ( कि. ) चकना, सुरुकरना,  
होकरना ।

६ ( सं. ) निमंत्रण देनेवाला,  
न्यौता देनेवाला, हंडा देनेवाला ।

६ ( कि. ) भगवाना, भिक्खुना,  
होकरना ।

६ ( सं. ) समाचार, प्रसंग,  
खबर, बात, हाल, बखान ।

६ ( सं. ) वैद्य, औषधोपचार,  
करनेवाला, चिकित्सक, वैद्य, डाक्टर  
मुसलमान वैद्य ।

६ ( सं. ) वैद्यका श्रंषा, चिकित्स-  
का, डाक्टर, वैद्य, औषधि ।

६ ( सं. ) राज्य, शक्तिमी  
अमल, सत्ता, अधिकार ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) हुकूमचक्राना,  
आज्ञा करना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (अ०) डीलमडल्ला,  
भंभोड़ाहुआ, डगमग ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) दस्त और कय,  
बलटी, और दस्त, कालरेकी  
बीमारी, हैजा ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) अपना स्वार्थ साधन  
के लिये कटिबद्ध रहना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) ध्यानधरना,  
साकना, धैर्य छूटना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) विनामात्रा के  
अक्षर, मोड़ी अक्षर ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) मलोत्सर्ग करना,  
दस्तजाना, टहोफिरना, पाखाना  
जाना, पुरीष त्यागना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) घबराहट, व्याकुलता ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) बहुतही  
व्याकुलता, बड़ी बेचैनी (भयसे)

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) विद्या, मळ, पुरीष,  
पाखाना, गु, बीठ, गोबर ।

अभ्युपगम्यवर्ण-पद (कि.) भयसे अ-  
त्यंत भयभीत होजाना, गुप्तगात  
कहरेना ।

अभ्युपगम्यवर्ण-मथु (सं.) हांकनेकी  
मजदूरी, हांकनेके बहनेकी मजदूरी ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) अहंकार, गर्व, घमण्ड ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) हांकना, नाव  
चलाना, चलता करना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) बाकू होना, चलत  
होना, बेरना, निकालदेना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) स्वच्छेड करना,  
साफ करना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) कचरा, मळ, बेल ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) मौख, अवसर, बख,  
समय, कतु, मौसिम, धूमधाम  
मदबद्ध, तूफान ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) ऐसानैकर जो काम  
तकके लिये रखागया हो, मौसिमी ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) धूमधाम, मदबद्ध,  
मस्ती, तूफान, हुलड, दंगा, कतु,  
मौसिम, अवसर, मौका । [हिलना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) डगमगाना,

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) डगमग, बांवाहील,  
अस्थिर, उचरपचर ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) इधर उधर,  
हिलना, डुलाना, अव्यवस्थित  
करना, हिलना ।

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) पूर्ववत् ।

अभ्युपगम्यवर्ण (सं.) मकाकी यात्रा, (मका  
मुसलमानोंका तीर्थस्थान है ।)

अभ्युपगम्यवर्ण (कि.) पचाहुक, मकाहुआ ।

- ६७२३२५ ( कि. ) पचना, हज्ज करना सहन करना, सहना, सहना ।
- ६७२३३५ ( कि. ) पचना, जीर्ण होना, गठना ।
- ६७२३४५ ( सं. ) पावन किया, हाजमा, भोजनका पचना ।
- ६७२३५५ ( सं. ) उष्णपद संशोधक शब्द श्रमंत, श्रम्यमान ।
- ६७२३६५ ( कि. ) बड़े आदमियों की मंडली बुलाना । एक योग-विद्या विशेष ।
- ६७२३७५ ( सं. ) नाई, नापिक, सवास, हजामत बनानेवाला ।
- ६७२३८५ ( कि. ) सिर मूँढने का धंधा करना ।
- ६७२३९५ ( कि. ) पूर्ववत् ।
- ६७२४०५ ( सं. ) नाइन, नाईकी औरत । [ हजामा ।
- ६७२४१५ ( सं. ) नाई, नापिक, औरत ।
- ६७२४२५ ( कि. ) ठोकपीटकर दुरस्त करना, मद् उतारना ।
- ६७२४३५ ( सं. ) इसी, १०००, सहस्र, संख्या विशेष । [ चना ।
- ६७२४४५ ( वि. ) बहुत, अधिक, ६७२४५५ ( सं. ) कई शक्तिमान, ईश्वर ।
- ६७२४६५ ( वि. ) हजामाका, बहुत सी पकुरियोंका फूल ।
- ६७२४७५ ( अ० ) आजतक, अभीतक, अबतक । [ मकबरा ।
- ६७२४८५ ( सं. ) कर, गेज़ा, मगार, ६७२४९५ ( अ० ) अभाववि, अभीतक अबतक, अभीतक ।
- ६७२५०५ ( सं. ) मगर आगे कबक होना कुछ स्वयम् । [ बाके नीकर ।
- ६७२५१५ ( सं. ) इज्जत रखने ६७२५२५ ( अ० ) सरक, दूर, अलगहो ।
- ६७२५३५ ( सं. ) सटका, डर, भय, दुःख । [ करना, हठकरना ।
- ६७२५४५ ( कि. ) दुराग्रहकरना, जिद्द ६७२५५५ ( कि. ) जिद्द करना, हठ करना ।
- ६७२५६५ ( कि. ) पूर्ववत्, ६७२५७५ ( सं. ) जिद्द होना, हठी होना ।
- ६७२५८५ ( सं. ) देह कष्टके योगकी एक किता, ध्यान धारणाद्वारा योग साधन, विलक्षण निरोधार्थ प्राणायामादियोग ।
- ६७२५९५ ( कि. ) हठना, पीछे सरकना, हारना, निर्बल होना, छोड़ना, किरना, मुईकीसाना ।

श्रीशब्द ( सं. ) हठ, धिक्, अक्, मगराई, आग्रह, बलात्कार ।

श्रीशब्द ( वि. ) जिही, आदिबल, हठी, आग्रही, हठधर्मी ।

श्रीशब्द-नभान ( सं. ) बहुतही जिही आग्रही, अग्रही आग्रही ।

श्रीशब्द ( सं. ) आग्रह, बलात्कार, धिक् ।

श्रीशब्द-भवा ( सं. ) भक्तने का शेष, शेषविशेष जिसमें काटने को शेषता है, शेषविशेष ।

श्रीशब्द-शब्द ( कि. ) शिष्ट शिष्ट और अष्ट स्वभावका बनना ।

श्रीशब्द-भुं ( वि. ) पागल, भक्तशुद्धा, शिष्टनेवाला शिष्टने-वाला ।

श्रीशब्द ( वि. ) उन्मत्त, हठका, पागल कुत्ते या गीदसे काटने-पर हो जानेवाली दशासे प्रसन्न मनुष्य ।

श्रीशब्द-नी श्रिताण ( सं. ) एक प्रकार का पीले रंगका रस, हस्तक । बाजार तथा काम काज रस ।

श्रीशब्द-भरणी ( कि. ) लिखा हुआ काट देना नष्ट करना, बर्बाद करना । [ रक्षा हुना, अनागत, ]

श्रीशब्द-२ ( सं. ) अनागत के रूपमें

श्रीशब्द ( सं. ) ठड़ी, खोबी, शिष्टक, शब्दी ।

श्रीशब्द ( सं. ) निष्कम्पा, मुक्तिका ।

श्रीशब्द ( सं. ) शपट, शरपट, केट, शपाटा, फटकर ।

श्रीशब्द-भुं ( कि. ) बराबराना, ब्या-कुल होयाना, निराश होना ।

श्रीशब्द-ण ( सं. ) एक प्रकारकी चांदीकी साँझ ।

श्रीशब्द-भुं ( कि. ) धक्कामारना, जोरसे धकेलना, हटाना ।

श्रीशब्द ( सं. ) धक्का ।

श्रीशब्द ( अ० ) कुत्ता भगानेके लिये यह वाक्य प्रयोग करते हैं । ( सं. ) प्रतिभात । तिरस्कारपूर्वक बुर करना । [ बिलकुल, साफ, स्पष्ट ।

श्रीशब्द ( अ० ) युस्त, तक्ष्मन, श्रीशब्द ( कि. ) गुस्सेमें बोलना, बहबहाना । [ गर्जना, गंज, मेळ ।

श्रीशब्द ( सं. ) प्रतिष्पन्नि, प्रति-श्रीशब्द ( सं. ) गलेका डेटुआ ।

श्रीशब्द ( सं. ) मदबद्ध, शैवधूप, मगबद्ध, ( वि. ) बराबर, समान ।

श्रीशब्द-२ ( सं. ) शैवधूप, मग शैव, शर उधर जल्दी जल्दी आना जाना ।

श्रीशब्द-३ ( सं. ) मगशैव ।

हमिमापटीकरवी ( कि. ) लक्ष्य  
मस्ती करना, दुस्खल मचाना ।

हुड ( अ० ) देखो हुड हुड ।

हुड्डाट ( सं. ) पेटमें वायुद्वारा  
गडबड ।

हुड्डा ( अ० ) एकदम सपाटेसे ।

हुड्डा ( सं. ) पावोस, परास पटोस,  
बैलगाड़ी का अग्र भाग विदोष  
जहाँ हुआ बंधता है ।

हुड्डेभल्लु ( सं. ) हाँ, या ना,  
खरा खोटा कहना ।

हुड्डु ( कि. ) नाश करना, नष्ट  
करना, बरबाद करना, भागना,  
प्राण लेना ।

हुड्डेभल्लु ( सं. ) देखो हुड्डेभल्लु ।

हुड्डेभल्लु ( सं. ) दिन दिनाना ।  
( चौड़े चौकीका शब्द )

हुड्डेभल्लु ( सं. ) दिन दिनाना, हुड्डेभल्लु ।

हुड्डु ( सं. ) गाड़ी चलाने वालेके  
बैठनेकी पट्टी, कोचवानकी बैठक ।

हुड्डा ( अ० ) डोरको भगाने के  
लिये यह शब्द काममें आते हैं ।  
हुड्डा । [ हुड्डा ।

हुड्डा ( वि. ) माराहुआ, बध किया

हुड्डेभल्लु ( वि. ) अमागा कामकरना ।

हुड्डाभा ( वि. ) भाग्यहीन बच्चा  
किलत ।

हुड्डाभा ( सं. ) दुर्भाग्य, दुर्दैव कर्म,  
नशीब ।

हुड्डु ( कि. ) नाश करना, मारना,  
बध करना, नष्ट करना ।

हुड्डु ( अ० ) या ।

हुड्डु नहुड्डु बधल्लु ( कि. ) मर  
जाना, पैदा होकर स्वप्न होजाना,  
छोप होना, अंतर्धान होना गायब  
होना ।

हुड्डा ( सं. ) बध, घात, मार,  
हिंसा, खून, हल्ला, बधका पाप ।

हुड्डा पटोरी ( कि. ) व्यर्थकी  
हल्लात अपने सिरलेना [लगाना ।

हुड्डा भोटवी ( कि. ) बधका पाप

हुड्डा ( सं. ) पापी, खूनी, घातक ।

हुड्डेभल्लु ( सं. ) भुजबन्ध, बाजूबन्द,  
एक प्रकारका जेवर ।

हुड्डा ( सं. ) जो एक आदमीके  
बगलमें रहे, ऐसा जानवर जो एक  
आदमीके द्वाराही दुहा जावे (दूध) ।

हुड्डा ( सं. ) लोखर, कलकांटा,  
झोखर, आयुध, अस्त्र, सस्त्र साधन ।

हुड्डा भोटु ( अ० ) पक्ष  
जवरहस्त है, आचार बलवान है ।

हुड्डा भाधिया ( कि. ) लड़नेके लिये  
तय्यार होना, शस्त्र ग्रहण करना ।



अभिधर उभयवां ( कि. ) मारनेके  
लिये अभिधर उठना ।

अभिधर सञ्जवां ( कि. ) बुद्धके  
लिये तय्यार होना ।

अभिधरअधि ( वि. ) अल शस्त्रोंसे  
सुसज्जन, संशक्त ।

अधु-धु'अ०) हस्त, द्वारा, मारफत,  
अधेक्षी ( सं. ) हस्ततन्त्र, हाथका  
बोचका स्थान, करतल, हाथका  
अंगुली औ० कलाईके बोचका  
चपटा भाग ।

अधेक्षीभां पृथ्वी आवणी ( कि. )  
बड़ा भाग संकट आपड़ना, चोर  
आपनिमें पड़ना ।

अधेक्षीभां स्वर्ग अतावबु ( कि. )  
कालव दिखाना, बदलना उठना ।

अधेक्षीभां क्षीरा अताववा ( कि. )  
बड़ी बड़ी आशायें रेंधाना जो  
कभी पूरी नहीं । उठना, पोड़ना ।

अधेक्षी ( सं. ) हाथकी निपुणता,  
हथौड़ी, चतुराई, निपुणता, बनावट ।

अधेक्षी ( सं. ) हथौड़ी, मोथरी ।

अधेक्षी ( सं. ) हथौड़ा, चन, बड़ा  
मालोंक ।

अधेक्षीने अधिधर अधिधर अधिधर ( सं. )  
आधुनिकपूर्वक किसी कार्यमें लग  
जाना ।

अध-इ ( सं. ) सीमा, सीम, जगदि,  
आखिर, अंत, मर्यादा । ( अ० )  
पराकाष्ठा, बहुतही ।

अध-अ ( सं. ) ज्ञानाकानी, संवेद, धक ।

अधुमान ( सं. ) मासति, रामबूत,  
बन्द । [ उपवास करते हैं ।

अधुमान अधिधर छोटे छोटे ( - ) चूहे

अन्ता ( वि. ) मारनेवाला, मूर्ती,  
घातक, हत्यारा ।

अपतो-इतो ( सं. ) सप्ताह, हफ्ता,  
ठहराहुआ समय, किरत, अंश  
लंड रूपये, इत्या पैसा देतेछ  
ठहराया हुआ समय । [ उचित ।

अपरे ( अ० ) बराबर, ठीक, सही,

अधुस ( सं. ) एक प्रकारका कलमी  
आम । [ हौलदिल ।

अध-अ ( सं. ) दलहत, चमक,

अध-अ ( कि. ) चमकना, चौंकना,  
दहसत जाना ।

अध-अ ( कि. ) भयसे चमकजाना ।

अध-अ ( कि. ) चमकाना, च-  
राना, चौंकाना, अचानक भय-  
सादन करना ।

अध-अ ( वि. ) मजबूत ।

अध-अ ( सं. ) एकोसीभिकर,  
शिखी, नीमो, मूर, खंजी ।

६०५ ( सं. ) छुट्टाई न छूटे  
ऐसी मूठ ।

६०५ ( सं. ) हनुषीकी औरत ।

६०५ ( सं. ) आवाज, ध्वनि,  
शब्द ।

६०५ ( सं. ) एक अग्रणी नामक  
संस्कारके समय स्त्रियोंका गोक  
कुंडलके रूपमें खदे होकर गीत  
गाना ।

६०५ ( सं. ) अहंकार, गर्व, मगरूरी ।

६०५-६ ( अ० ) वर्तमान सम-  
यमें, इसवक्त, सांत, अभी, हालमें ।

६०५ ( सं. ) स्नानागार, नहा-  
नेकी जगह ।

६०५ ( सं. ) इमामदस्ता,  
कूटनेके क्रिये कोहेकी ऊसलमूसल ।

६०५ ( सं. ) बोझा उठनेवाला,  
ध्वनि, भारवाही, मजदूर, इम्माल ।

६०५ ( सं. ) पूंजी, मूल धन,  
दीकत, द्रव्य, धन, भंडार, धनोष्ठी,  
रूपोंके भरसेकी बैली ।

६०५ ( सं. ) जामिनगिरी, एवम् ।

६०५ ( सं. ) जामिन जमानतदार,  
हाकरनेवाला । [ विशेष ।

६०५ ( सं. ) कल्याण रायका भेद

६०५ ( सं. ) गर्भ, स्वाभ, हसक,  
पक्ष, चपरास ।

६०५-६०५ ( अ० ) हमेशा, निज,  
रोज, सदा, निरन्तर, सर्वदा ।

६०५ ( सं. ) अशिराम, हमेशा  
होसो, नित्यता, अविच्छेद, नाव-  
च्छादिकाकर, चिरस्थानित्व ।

६०५-६०५ ( अ० ) देखो ६०५ ।

६०५ ( सं. ) अक्ष, घोड़ा, दुरग, बाजी ।

६०५ ( सं. ) बोहेकोछोकना,  
छेदना ।

६०५ ( सं. ) बोहेके बंधनेका  
स्थान, तबेला, बोहोका ठान ।

६०५ ( वि. ) जीवित, जानदार ।

६०५ ( सं. ) जीवन, जिम्मेदारी ।

६०५ ( सं. ) महादेव, संकर, ( वि. )  
हरण करनेवाला, जे जानेवाला,  
प्रत्येक ।

६०५ ( वि. ) कोईनी एक, प्रत्येक ।

६०५ ( वि. ) हरकोई ।

६०५ ( सं. ) हर्ष, आनंद, उल्लास,  
प्रसन्नता, खुशी, सम्योष ।

६०५ ( सं. ) अत्यामन्दके  
क्रिये पायल होना ।

६०५ ( वि. ) हर्षके क्रिये  
पायल बना हुआ ।

६०५ ( सं. ) हर्षोन्माद, प्रस-  
न्नताका पायल ।

६२५५-भाषा (वि.) प्रत्यक्ष होना,  
सुप्त होना, मुदित होना ।  
६२५६-स (अ०) कमी, किसी  
दिन, किसी कारण, किसीभी तरह ।  
६२५७ (अ०) बारम्बार, सदा,  
सर्वदा, हमेशा, यदीवदी ।  
६२५८ (वि.) पासका, नजदीकका,  
समीपा, सम्बन्धी, युक्त ।  
६२५९ (सं.) हर, एक प्रकारका  
फल, हरीतकी, अमृता ।  
६२६० (सं.) पूर्ववत् ।  
६२६१ (सं.) मृग, हरिण, साबर,  
कुण्डलार, दूर करना, लेजाना,  
चोरी ।  
६२६२ (सं.) हरिणी, मृगी ।  
६२६३ (सं.) हरिण, काळ और  
बड़ा ठोस का मुखिया मृग ।  
६२६४ (सं.) सदा रहकर  
गायनमें कथा कहनेवाला ।  
६२६५ (अ०) रातदिन, सवोरोन  
अहर्निधि, बारम्बार, हमेशा ।  
६२६६ (सं.) अक्षर, हुक्क, शब्द,  
बोळ, उच्चारण, वर्ण ।  
६२६७ (सं.) बारम्बार आवा-  
यमन, हेरफेर, हेरफेरी जीटपकट ।  
६२६८ (वि.) बरना, चौकना,  
चबरा जाना, चबराणा ।

६२६९ (वि.) चबराणा,  
झाकुळ करना । [ मरोदना ।  
६२७० (वि.) चबराणा,  
६२७१ (वि.) चळता फिरता,  
तन्मुस्तीमें आवाहुआ घूमता  
टहकता ।  
६२७२ (वि.) हल्दीक स्वादवाला  
६२७३ (अ०) प्रतिदिन रोखमरोह ।  
६२७४ (अ०) हरचवी हमेशा ।  
६२७५ (सं.) बाद स्मरण ।  
६२७६ (सं.) प्रतिवर्ष, हरसाळ ।  
६२७७ (वि.) सुस्त, काहेळ ।  
६२७८ (वि.) हर, लाजा, हरण करना,  
छिना लेना, छीनना, चोरना,  
चटाना हारना, परास्त होना,  
धर उधर फिरना ।  
६२७९ (वि.) घूमना फिरना  
चक्कर काटना, टहकना, हवा  
चोरी करना ।  
६२८० (सं.) ज्वररोग, गुदरोग  
विशेष बवासीर, मस्येका रोग ।  
६२८१ (सं.) बवासीर मेंसे  
बून टपकना ।  
६२८२ (अ०) देखो ६२८३ ।  
६२८४ (सं.) शत्रुपर  
आक्रमण करते समय तथा त्याग  
करते समय हिन्दु लोग इह  
वाक्यका उच्चारण करते हैं ।

६२६ ( सं. ) प्रत्येक हुनर,  
हरेक कारीगरी ।

६२७ ( सं. ) बोहे बाँधनेका  
रस्सा, बेर नामक वृक्षका काँटा ।

६२८ ( वि. ) निलामद्वारा बिना  
हुआ, मोंगके साथ बिका हुआ ।

६२९ ( सं. ) नक़्क़ाम, तल उप  
रकी मांग ।

६३० ( वि. ) अठारह, अठारह १८ ।

६३१ ( वि. ) हराबा, भटकता  
हुआ, परास्ताकिया, मचलाइया,  
अडिय, हठी, गिरकुस ।

६३२ ( वि. ) धर्म और नीति-  
विरुद्ध अन्यायका, खोटा ना  
मुनासब ।

६३३ ( वि. ) नमक हराम,  
अपने फजों ( फरायज ) को नहीं  
जाननेवाला, कुतमी दुष्ट ।

६३४ ( सं. ) कुतमता, नमक  
हरामी, दुष्टता, छुट्काराई, ठगी ।

६३५ ( सं. ) मुपत कासानेकी  
देव ।

६३६ ( वि. ) वर्षाकर,  
हॉके गर्मसे उतरण, जिसके  
कापका कुछ पत्ता नहीं । बारन ।

६३७ ( वि. ) उत्पाती, दुकानी,  
बदमाश, चूर्त, छुट्काराई, हराबाक ।

( सं. ) हराबाकरी, छुट्काराई ।

६३८ ( अ. ) जहर, ठाँक,  
निबब ।

६३९ ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा,  
प्रभु । विष्णु, ईश, साँप, मेढक,  
सिंह, घोड़ा, सूर्य चन्द्रमा,  
सुग्गा, तोता, बानर, यमराज,  
ईस, अग्नि, कपूर, बरुण, मोर,  
ब्रम्हा, शिव, हारंग, इन्द्रका,  
पोदा, किरण, गदम ।

६४० ( सं. ) नीले और पीले  
रंगका बोझ ।

६४१ ( सं. ) बेगल पान्त ।

६४२ ( सं. ) शिब, इस नामका  
एक यक्ष ।

६४३ ( सं. ) छन्दविशेष,  
अठ्ठाईस मात्राका सामिक छन्द  
विशेष ।

६४४ ( सं. ) केसर, एक  
प्रकारका चन्दन, बाँदका जवाब ।

६४५ ( सं. ) हरिमक, भगत ।

६४६ ( सं. ) बेको हरण, शिव,  
विष्णु, ईश, सकेद और पीठारंग ।

६४७ ( सं. ) मृगलोचवि,  
एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य ।

हरित ( वि. ) हरा, हरा और पीला मिला हुआ । हरित, हरी, हिरा, सिंह, सूर्यका घोड़ा ।

हरिताली ( सं. ) ध्रुव, आकाशरेखा ।

हरिद्रा ( सं. ) हल्दी, हरदी ।

हरिद्रु ( सं. ) दारुहल्दी, जीपाधि विशेष ।

हरिनीमनी-नेत्र ( वि. ) मृगलोचनि ।

हरिनेत्र ( सं. ) सफेद कमल ।

हरिहरायधु ( वि. ) प्रभुप्रीत्यर्थ, ईश्वर के नामपर ।

हरिपथ ( सं. ) मूली, शाकविशेष ।

हरिप्रिय ( सं. ) शिव, कदम्बवृक्ष, बाही प्रकृतिका आदर्भा, राख, पोला मंग । ( वृक्ष विशेष ) ।

हरिप्रिया ( सं. ) तुलसी, लक्ष्मी, पृथ्वी, ( वि. ) हारिको ग्यारी ।

हरिषा ( सं. ) आम, आम, रसाक, ( कुम्हार गधोंको हाँकते समय यह शब्द करता है )

हरिषाणी ( सं. ) नवपल्लवता, राजा बनस्पतिकी शोभा, हराहा ।

हरिषाणु ( वि. ) हरा हरित वर्ण ।

हरिषाणी ( वि. ) चन्द्रमुखी, सुंदर सुंदराली ।

हरिवन्धना ( सं. ) देवी हरिप्रिया ।

हरिसेना ( सं. ) ईश्वर भक्ति ।

हरिऋष ( सं. ) भाजी शाक ( जैन धर्मावलम्बियोंका शब्द )

हरिह ( सं. ) शत्रु, दुश्मन, प्रतिपक्षी, प्रतिवादी, वादी, प्रति-स्पर्दी, ईर्ष्याकु ।

हरिह ( सं. ) शत्रुता, दुश्मनी, स्पर्दा, ईर्ष्या ।

हरिहरीने ( अ० ) इधर, या उधर ।

हरि ( अ० ) यहाँ यहाँ । ( वि. )

हरा, नाका, गीळा, ( बनस्पति )

हरि ( अ० ) इधर उधर, आस पास कबक ।

हरि ( वि. ) प्रत्येक, हरकोई, कोई भी एक ।

हरि-हरि ( सं. ) किसीका पीछा करना, रोका, गड़बड़ी ।

हरि-रा ( सं. ) फलविशेष ।

हरिरे ( सं. ) वृक्षविशेष ।

हरिरे ( वि. ) सेनाका पिछला भाग, फौजके पीछेकी टुकड़ी । जमाक, पहिले, आगेसे, एक्कास हार, पैछि ।

हरि ( सं. ) हरनेवाला, लेनेवाला, नाश करनेवाला, दूरकरनेवाला, चोर ।

- ६५ ( सं. ) हरा सज्ज, ताया ।  
 ६५५ ( टि. ) हर्षोन्मत्त, हर्ष-  
 पाणल । [ आनन्द का विचार ।  
 ६५५२ ( सं. ) आनन्द ही  
 ६५५३ ( सं. ) आनन्दजन्य,  
 जयघोष, जयजयकार, आनन्द-  
 सूचक शब्द ।  
 ६५५४ ( वि. ) प्रसन्न मुदित,  
 आनन्दित आनन्दप्रिय ।  
 ६५५५ ( सं. ) आवाज, कंठ, सार्व, सुर ।  
 ६५५६ ( वि. ) नीचा, हलका ।  
 ६५५७ ( सं. ) हलकापना, निचाई  
 कथुता । [ घोर शब्द ।  
 ६५५८ ( सं. ) बड़ी आवाज,  
 ६५५९ ( वि. ) जोरसे बोलना,  
 हांकना, फटकारना, नाराज  
 होना चलाना ।  
 ६५६० ( सं. ) दूत, सम्पादक, वाहक,  
 जासूर, कासिद ।  
 ६५६१ ( वि. ) वजनमें थोड़ा  
 हलका, फुलका, सहज लघु,  
 सुगम, सुत्र, दुष्क, छोटा, जल्प  
 नीचा उद्यम, कमजात, पाजी,  
 पीका ।  
 ६५६२ ( वि. ) मारना,  
 पीटना । बमकाना, शत्रु-  
 कम करना ।  
 ६५६३ ( वि. ) फूलके समान  
 हलका । [ कमीना भावनी, ।  
 ६५६४ ( सं. ) नीचवृत्ति,  
 ६५६५ ( सं. ) नीचवृत्ति, नमीचौर  
 मारा जाय ।  
 ६५६६ ( वि. ) हलका कमहोना ।  
 ६५६७ ( सं. ) थोड़ा काम,  
 नीच कार्य ।  
 ६५६८ ( वि. ) लंका, बड़ा हुआ, वृद्धिगत ।  
 ६५६९ ( वि. ) छटपटाना, तड़-  
 फटाना, तलफना, उत्तेजित होना ।  
 ६५७० ( सं. ) होहन्ना, शोरगुल,  
 चबराहटमें शब्दविशेष ।  
 ६५७१ ( सं. ) एक प्रकारकी मछली ।  
 ६५७२ ( सं. ) मिठाई बेचनेवाला,  
 मिठिया ।  
 ६५७३ ( सं. ) शाकसे कमकीम-  
 तका कनीयक ( जो ओठनेके का  
 ममें आता है ।  
 ६५७४ ( वि. ) हलका, कमबजनदार ।  
 ६५७५ ( सं. ) एक प्रकारकी मिठाई,  
 रजुका, मोहनभोग, सीरा, सौरा ।  
 ६५७६ ( सं. ) चादू, काठका, चमका ।  
 ६५७७ ( सं. ) चढाई, आक्रमण ।  
 ६५७८ ( सं. ) चादूके कियोंके किये  
 सम्बोधन, सखी, सहिन, जाखी,  
 पूछी ।

६५१६ (वि.) हैरान, दुखी, व्यथित ।  
 ६५१७ (सं.) परिअम, मायाफोड़,  
 दुःख, खीच, तंगी ।  
 ६५१८ (सं.) खेल जोतना ।  
 ६५१९ (सं.) खेल जोतनेकी मज-  
 दूरीके पैसे ।  
 ६५२० (वि.) बाजिर, उचित,  
 योग्य, धर्म और नीतिके अनुसार,  
 कृतज्ञता (अ०) नियमानुसार,  
 जरा, विधिपूर्वक मारा हुआ ।  
 ६५२१ (वि.) मारना, बच  
 करना । [अपव ।  
 ६५२२ (सं.) भंगी, बेहतर,  
 ६५२३ (सं.) स्वामिभाक्ति, अनु-  
 राग, आसक्ति, प्रेम ।  
 ६५२४ (वि.) हिलाना, डुलाना,  
 कंपाना, डगमगाना, भुलाना,  
 बाधित करना, उत्तेजित करना ।  
 ६५२५ (वि.) जीवन विषयक वा-  
 तोंसे अनभिज्ञता, धीमा, मन्द,  
 सुस्त । [सकड़ीका चमका ।  
 ६५२६ (सं.) बाद ।  
 ६५२७ (सं.) वैभव, ठाठपाठ, बूध,  
 झुंड । [धन शब्दविशेष ।  
 ६५२८ (अ०) मित्रके लिये शम्भो-

६५२९ (सं.) आक्रमण, यात्रा,  
 हमला, चढ़ाई, धक्काबुक्का,  
 बचा, कामकाज ।  
 ६५३० (सं.) हृष्यकर्म, देव और  
 पितृकार्यके लिये बलि । युक्ति प्र-  
 युक्ति, दावपेच ।  
 ६५३१ (वि.) अहता, जिसे किसीने  
 भी काममें नहीं ठिंसा हो ।  
 ६५३२ (सं.) चकते फिरते आनन्द  
 करना, सहक, सरक । [इसीलिय ।  
 ६५३३ (अ०) अनी, इसीलिय,  
 ६५३४ (सं.) होम, अभिमें भृतादि  
 पदार्थोंकी आहुति ।  
 ६५३५ (सं.) होमके काममें  
 अनिवासी सामग्रीकी पुष्टिया ।  
 ६५३६ (सं.) तुष्णा, हविस, कोभ,  
 कामभिलाष, प्रबल इच्छा ।  
 ६५३७-६५३८ (सं.) देखो ६५३८ ।  
 ६५३९ (सं.) सामान रखनेके लिये  
 दीवारमें लगाया हुआ तख्ता,  
 आलमारी । प्रसवके दिनोंमें प्रसू-  
 ताके लिज्जनेका पदार्थविशेष ।  
 ६५४० (अ०) अनी, इसीसमय, अथा-  
 ६५४१ (सं.) पवन, वायु, मकत,  
 ठंडक, शीतलता, आकाश, आस्वाद्य ।

ॐवाभावी-लेवी ( कि. ) इटलिया,  
घूमना, फिरना, चहलकदमी करना,  
हवाखाना ।

ॐवाइर ॐरवी ( कि. ) तन्दुरस्तो  
ठक करनेके लिये जहां अच्छी  
हवाहो वहां जाकर रहना ।

ॐवाभा डडी ॐपुं ( कि. ) गायब  
होना, अदृश्य होना, व्यर्थजाना ।

ॐवाभाभायकाभरवा ( कि. ) मिथ्या  
प्रवास करना ।

ॐवाभाभापुं ( कि. ) पूर्ववत् ।

ॐवाभा हिंमकाभावा ( कि. ) निरा-  
धार रहना, बेसहारे लटकते  
रहना ।

ॐवाई क्रिस्ता आंधवा ( कि. ) शेष  
चिह्नोंके से विचार करना, मनके  
कलहजनाना, झगाली पुलाव बनाना ।

ॐवाभधूवी ( कि. ) अफवाह फैलना  
किम्बदन्ती फैलना ।

ॐवाभ ( सं. ) एक प्रकारकी, आतिश-  
बाजी, जो आकाशमें उड़ती है ।

ॐवाभ ( वि. ) क्षीतलता, सदा, ठंड ।

ॐवाभुं ( सं. ) दूध देनेवाले पशुके  
बनोका वह भाग जिसमें दूध  
अपग होता है, औंठी ।

ॐवाभे ( सं. ) पशुओं के पानी  
पानेके लिये चूनेका बनायाहुआ  
पका गद्दा, सेल, होज, होदी ।

ॐवाभेभुं-भुं ( वि. ) क्षीतलता  
युक्त, सदा, टंडगारा [गति, इकीकृत

ॐवाभ ( सं. ) हालत, दशा, स्थिति,

ॐवाभेभर ( सं. ) पुलीस अथवा  
सेनाके नौकरोंका पद विशेष ।

ॐवाभेभरी ( सं. ) हवालदारकाकाम ।

ॐवाभे ( सं. ) सत्ता, अस्तित्वार,  
करजा, रक्षा, पाठन, देखरेख,  
आटा छानने के लिये कपड़ेकी  
चलनी, तस्वीर उतराव ।

ॐवाभेभेपुं ( कि. ) कच्चेमें लेना ।

ॐवाभेभेपुं ( कि. ) सौंपना देना ।

ॐवाभेभेपुं ( कि. ) अधिकारमेंहोना ।

ॐवाभेभापवे ( कि. ) जमानत देना ।

ॐवि ( अ० ) अथ, इससमय, यहाँसे  
( कवितामें ) [ बलि देने योग्य ।

ॐविभ्य ( वि. ) भोग चढावे योग्य

ॐविभ्याल ( सं. ) देवालय, ऐसे अथ  
जो देव और पितृकार्यमें काममें  
लाये जासके । मृग, लीक, जी,  
चावल, उड़द, इत्यादि ।

ॐविभ ( सं. ) बी, घृत, हवनमें  
काढने योग्य द्रव्य



६५ (अ०) होना, गुबरना ।

६६ (अ०) लव, किरसे, उसके या इसके बाद, इन दिनों, इस समय ।

६७ (सं.) हरदी, हरिद्रा, हरद ।

६८ (अ०) आजसे, अबसे, इसके बाद, आबन्दा ।

६९ (वि) चबरासानुआ, व्याकुल ।

७० (वि) कैवा बदायकान, अष्टासिका-वाठा मकान, बैष्णव लोगों का मंदिर । [ बाह नहीं ।

७१ (अ०) होगा, कुलनर्ही, पर-

७२ (अ०) बारम्बार, घड़ी घड़ी, ठहरठहरकर, हरेक काममें ।

७३ (सं.) हंसगो की रीति, मन्दमन्द हंसी, मुस्काना, मुस्कराना ।

७४ (अ०) अस्त-अस्तान-अस्तान (सं.) दस्त, खत, हस्ताक्षर ।

७५ (सं.) बाह, र्हा, र्हा, वैर ।

७६ (वि.) र्हाकु, देखकर कुठनेवाला ।

७७ (वि.) जो सदा प्रसन्न रहे, खुशमिजाज, हंसमुख ।

७८ (वि.) हंसना, खुशीमन्द, करना, मुस्काना, दाँत निकालना, हँसना, मजाक करना, मसकरी करना, मसकरी करना,

(सं.) हास्य, हंसी, मजाक, ठठ्ठा ।

७९ (सं.) कम चीके बने लड़ू ।

८० (सं.) हंसमुखम्बुचि ।

८१ (सं.) ठग, उठाईगारा ।

८२ (सं.) दुसालेकी चाँद, मुखसे ऐसे सुन्दर वचन बोलना जो सुननेमें प्रियहो किन्तु मर्म-स्पर्शीहो । [नेवाला ।

८३ (वि.) जो हंसावे, हंसा-

८४ (सं.) हंसी, मसकरी,

दिल्लगी, मजाक, ठठ्ठा । [करना ।

८५ (वि.) हंसाना, प्रसन्न

८६ (सं.) हंसी, हास्य, उपहास, कृष्णहस ।

८७ (वि.) मला, सीधा, निष्क-पट, शान्त, भीमा, मन्द ।

८८ (सं.) हाथ, कर, पाणि, तेरहवा नक्षत्र [ मार्कट, ज़रिये ।

८९ (अ०) हस्ते, द्वारा,

९० (वि.) हाथका बनाया हुआ, मनुष्यकृत, कृत्रिम अश-

कृतिक । [ चतुराई, होशियारी ।

९१ (सं.) हाथवालाकी,

९२ (सं.) हाथद्वारा किया हुआ काम ( यंत्रद्वारा नहीं ) ।

६२तम ( वि. ) अधिकारमें गया हुआ, हाथमें पहुंचा हुआ ।  
 ६२तम ( सं. ) लिखते समयकी मूल ।  
 ६२तम ( सं. ) विवाहके संस्कारके समय बरबधूका हाथ मिलावना ।  
 ६२ताभरधुतवा ( वि. ) हस्ता-  
 करद्वारा दिया हुआ ।  
 ६२ताभण ( सं. ) हाथमें रखा हुआ  
 आमलेका फल । हाथमें रखा हुआ,  
 सब तरफसे दिखता हुआ ।  
 ६२ति ( सं. ) हाथी, हाथीदांत ।  
 ६२तिनी ( सं. ) हाथीनी, हाथी,  
 ( मादी ) स्त्रियों के चार भेदोंमेंसे  
 एक विशेष ।  
 ६२तिन ( सं. ) शहर, गांव, इत्यादि  
 के द्वारके पास तय्यार किया हुआ  
 बड़ा मिथुका ढेर ।  
 ६२तिनापुर ( सं. ) दिल्ली, देहली  
 नामसे प्रसिद्ध भारतीय शहर ।  
 ६२तिभ ( सं. ) गजमद, हाथी के  
 गंडस्थलसे चूनेवाला रस ।  
 ६२ति ( सं. ) हाथी, गज, कुंभर,  
 वारण, उपरिधति, मौजूदगी ।  
 ६२तु ( वि. ) हंसता हुआ, मुस्क-  
 राता हुआ, प्रसन्न, मुवित ।  
 ६२ते ( अ० ) हाथद्वारा, हाथसे,  
 हाथोंमें ।

६३ ( सं. ) हक, अधिकार, केही,  
 हर, वायक, जमीन खोदनेका वैभ  
 विशेष ।  
 ६३धुं ( कि. ) झूलना, हिलना ।  
 ६३ध-२ ( सं. ) हस्ती, हरिण,  
 हरद । [ चक्रक ।  
 ६३भण ( अ० ) उत्तेजित अवस्थामें  
 ६३ध ( सं. ) केती, कृषिकार्य ।  
 ६३धुं ( कि. ) मिळनसारहोना,  
 मिळजाना, दोस्ती होना, फलना,  
 ( वि. ) धारा, धीमा, मन्दा,  
 हलका, नरम, पोथ, मुलायम ।  
 ६३धे ( अ० ) धीरेसे, अहिस्तेमीसे  
 समकेसाव, समतोष पूर्वक ।  
 ६३धेरीने ( अ० ) बहुतही धीरेसे  
 अहिस्तासे, विनयपूर्वक, नम्रता-  
 द्वारा, बहुतही नम्र हाथसे ।  
 ६३ध ( सं. ) भयंकर विष, जहर  
 गरक, विष, मादुर, महाविष ।  
 ६३धुं ( सं. ) छोटहक ।  
 ६३ध-६३ध-६३ध ( अ० ) धीरेधीरे  
 अहिस्तेसे, धैर्यसे ।  
 ६३धत ( सं. ) भूमिको पहिलीही  
 वर्षामें जोतना ।  
 ६३ ( अ० ) हाँ, ठीक, सही,  
 अच्छा, ऐसा ! ऐसाक्या ? हा ।  
 ६३ ( अ० ) बस, हुआ, रहने दो ।

ॐ ( सं. ) आवाज, सम्वासक,  
आमंत्रण, बुझवा । [आवाज देना]

श्रीभारपी ( कि. ) बुलाना,

कांक्षी ( सं. ) हॉकनेकी रीति ।

६३॥२ ( सं. ) बलानेवाला,  
होकरनेवाला, बाइबर ।

कि ( कि ) हँकना, खजना,  
दूर करना, हुस्कार करना,  
घकेलना यथ्ये मारना, अति-  
शयोक्ति करना ।

४६६ ( सं. ) सारणी, गार्गीदान,  
कोचवान, गार्गी हॉकुनेवाला ।

६।११ (सं.) मात्र, शरीरकी शक्ति,  
गति, हिम्मत, आशा ।

६।अममडीनया ( कि ) आशा  
अथवाहिम्मतकृत्याना । [छेदना ।

हॉलभरवा ( कि. ) हिम्मत

ॐ ( अ० ) अच्छी बात है,  
जी हाँ, ठीक है साहब ।

बाँझी ( सं ) छोटी हाँडी मटकी ।

अधुं ( स. ) मटका, हॉली,  
मिष्टिका यात्राविशेष ।

६६१ (सं.) इंगी, ताम्बे वा  
प्रातलका कायका दीपक प्रवेश,  
मटकता हुवा वषिक ।

अभिधायो ( स. ) वर्तन करनेवाला  
नौकर ।

६३। (सं.) हंसा, तांबीजा, पीतल  
बड़ा बर्तन, चरी, देण, आटे  
चौर: का बनाया हुआ एक  
प्रकारका साध पदार्थ मुख्यतः।

६.३३ ( कि ) कोठिमेंसे बच  
बगैरे: निकालते के लिये उसको  
नीचेके भागमें रखा हुआ छिद्र ।

६१—शु ( सं. ) हॉपनी, जार्ज  
का जल्दी जल्दी आवागमन,  
केप, स्फुरण ।

काष्ठ (वि.) व्याकुल, व्यग्र,  
जिसका सौम जल्दी जल्दी नष्ट  
रहा हो ।

सांख्य—सांख्यं ( वि. ) पूर्वतः ।

६।१५ ( वि. ) हाफना जल्दी  
जल्दी सांस छोड़ना बी० लेना  
बबराना ।

हान्धी ( सं. ) देखो हान्डी ।

ॐ ( सं. ) देसो ॐ ।

कान्हा कुमारी करे छे—(—)परमें खाले  
तकडो नही है, चूहे मत करते हैं।

हान्धां जपेरी ह्दवीश ( ) मादेका  
वर खाली कराक्या ।

होना है। (कि) अज्ञान करना,  
अज्ञान पैदा करना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ( कि. ) सिर  
उडा देना, माया फोड घालना ।

होस (वे.) सोस, आस, दस,  
इथका, आद, हनिस ।

६।३ इति न्या। ( कि ) चररा  
 धाना, सांस भूख ज न। ।

हॉर्मोन्स ( सं. ) हृदय की बढ़कन ।

कांसडी ( सं. ) गलेमें पहिनेका  
एक आभूषणविशेष । गलेको नी-  
चेको हुन्डी । जोडेर गलेमें पहि-  
नेका सामान विशेष ।

होसिध (सं.) नफा, फल, फायदा, कर,  
महसूल, देवस, परिणाम, नतीजा।

६।सिखे। ( सं. ) कुदाळी, मिठी  
खोदनेका एक साधन ।

कांतिबाध ( सं. ) ऊंची किस्मके  
अच्छे तफेद और मोटे गेहूं ।

सिंधी ( सं. ) कोर, किनारे,  
कागजका बड़ भाग जो मोड़कर  
छोड़ दिया जाता है और उसपर  
केस लिखा जाता, हाथिया, मार्जिन

हंसी ( सं. ) हंसी, उपहास, वि-  
हंगी, कजीहत, मसखरी, चेष्टा ।

कांशी ( सं. ) वेसो कांसध ।

६। (अ०) देखो ६।

६४ ( सं. ) होवा वनों के डराने के  
लिये एकसम्य विशेष :

६।३ ( सं. ) सुन्द, व्यावर्ग, हर्ष,  
अग्नि, प्रसाप, वृत्ताकारम् ।

६।६भास्वी ( क्रि. ) आषाढ हेतु  
सुखाना । [ धर्मकान्त ।

हाउटेण्डावी ( कि. ) डरबलाना,

हाहाभावही ( कि. ) वरमानना,  
भयमानना । [ कारमे होना ।

हलवागुपी ( कि. ) करते अधि.

६। देवी ( कि. ) कराना, मारनेकी  
धमकी देना, भयबताना ।

६।६८९ ( कि. ) धमकाना, डराना ।

**कविपुं** ( कि. ) खूब पुकार कर  
बोखना, बिहाना, जोरसे उत्तर देना ।

61029-61030 (क्रि.) देखो 61029<sup>1</sup>

६१३७-३७ ( सं. ) नवाब, सुबा,  
राजा, शासक, अफसर ।

६।४भी(सं.)हाकिमकी सलाहकमल ।

61021-3021 ( सं. ) मोटा अनाम  
जे रक्षी ध्वनि, हस्त ।

अवत ( सं. ) अवत, आवतकता,  
पावनेकी अवत । [अवत होना ।

डा. ज. त. धामणी (क्रि.) पासाणेकी

अनंतभट्टी (फि.) आहत पदना ।

६।१०२ ( वि. ) मौखिक, उपस्थित,  
रुग्ण, समक्ष, वास, नक्षत्रीय,  
विद्यमान, तैयार, हाजिर।

**आनन्दवाणी ( सं. )** साधना, समयवाणी, जन्म अर्थात् देनेवाला व्यक्ति । [ देनेकी होसिवारी ।  
**आनन्दवाणी ( सं. )** तरफाल उत्तर  
**आनन्दवाणी ( सं. )** अपराधीके सामने उपस्थित करनेके लिये तैयार जमानत देनेवाला । [क्रिया विशेष ।  
**आनन्द ( सं. )** आदु मंत्रकी एक  
**आनन्द ( वि. )** उपस्थित, प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, साक्षात् ।  
**आनरी ( सं. )** हाजिर होना, उपस्थिति, मौजूदगी, हाजिर और और हाजिर जाननेका रजिस्टर, कलेक्टा, अस्पोजन, प्रागःकालीन भोजन ।  
**आनरीलेवी ( कि. )** लबर लेना, मारने की अथवा नुकसान पहुंचानेकी तज्जवीज करना ।  
**आनरीपत्र ( सं. )** हाजिर है या नहीं इसबातका सूचक रजिस्टर ।  
**आनरीलेवी ( कि. )** खोजना, ढूंढना ।  
**आनरीभरना ( कि. )** हाजिर होना या रहना, हाजिरी रजिस्टरमें लिखना ।  
**आनपु ( कि. )** अवरहना, लगारहना ।  
**आनियो ( सं. )** प्रत्येक बातमें "जीहूजू" कहनेवाला, कृशमयी, आपसत ।

**आ ( अ० )** देखो आ ।  
**आआआआ ( कि. )** हरेक बातमें हां हां करना, सहमति करना ।  
**आ ( सं. )** दुकान, बाजार, भेद, हट, लेनदेनकी जगह, चौक ।  
**आआआ ( कि. )** दुकान लगना ।  
**आआ ( सं. )** सुवर्ण, सोना, हेम, कंवन ।  
**आआआ ( कि. )** गजरेना करना, हुंकार सिहनाह करना ।  
**आआ ( सं. )** छोटी दुकान, मंथारिया, दीवारमें का ताक जिसको किवाड़ बगैरः लगेहों ।  
**आ ( अ० )** बास्ते लिये ।  
**आ ( सं. )** हड्डी, अस्थि, हड्द, जिगर, शरीरके भीतरकी कठोरवस्तु ( अ० ) बहुतही, अतिसय ।  
**आआआ ( कि. )** बहकजाना, अस्ती रुा प्रकट होना ।  
**आआआआ ( कि. )** शरीरसे अशक्त करना, मारमारना बहुत दुःखदेना ।  
**आआआ ( सं. )** ऐसा जबर जो शरीरमें अममयाहो, हडज्वर ।  
**आआआ ( कि. )** सूखना कृशहोना दुर्बल होना ।  
**आआआ ( कि. )** तन्दुरस्त होना ।  
**आआआ ( सं. )** देखो आआआ ।

- ६४४१ ( सं. ) छोटी हड्डी ।  
 ६४४२ ( सं. ) देखो ६४३ ।  
 ६४४३ ( सं. ) मारमार के दुस्त करना, मारमार करना ।  
 ६४४४ ( सं. ) मारमार के दुस्त होना, दुस्त होना ।  
 ६४४५ ( सं. ) इतना मारना कि खून निकल आवे ।  
 ६४४६ ( सं. ) मेर बाद अस्थियोंकी योग्य क्रिया न हो ऐसा प्रयत्न करना ।  
 ६४४७ ( सं. ) शरीरका मंगलन करना (व्यायाम बगैर से) ।  
 ६४४८ ( सं. ) दुःख देना ।  
 ६४४९ ( सं. ) आलसी, सुस्त ।  
 ६४५० ( सं. ) पूर्ववत् ।  
 ६४५१ ( सं. ) अस्थिपंजर, रक्तमांसरहित शरीर ।  
 ६४५२ ( सं. ) तिरस्कार, फटकार ।  
 ६४५३ ( सं. ) पूर्ववत् ।  
 ६४५४ ( सं. ) पक्षी शत्रुता, सक्त दुश्मनी ।  
 ६४५५ ( सं. ) टूटे हुए अस्थि भागको ंक करमेवात्म दैव ।

- ६४५६ ( सं. ) दोहोको बराने आना ।  
 ६४५७ ( सं. ) लकड़ोंका एक प्रकारका खेल ।  
 ६४५८ ( सं. ) हाट सम्बन्धी, आस्थिविषयक, हाटका ।  
 ६४५९ ( सं. ) एक प्रकारका वर्षाश्रुतमें उत्पन्न होनेवाला वृक्ष ।  
 ६४६० ( सं. ) कौआ, काग, काक, वायस ।  
 ६४६१ ( सं. ) देखो ६४६२, मजबूत, दृढ़, पुष्ट, हठीला, परिश्रमी, शारीरिक कष्ट सहनेवाला ।  
 ६४६२ ( सं. ) हानि, नुकसान ।  
 ६४६३ ( सं. ) कर, हस्त, पाणि, कंधेसे लगाकर अंगुलियों तक शरीर से अलग लटकते हुए भाग ।  
 ६४६४ ( सं. ) अर्ध, मापविशेष, कोहनीसे अंगुलीके अग्र भाग तक की लंबाई । बाजू, भुजा, पक्ष, तरफ, ओर, सत्ता, अधिकार, शक्ति, बुद्धि, चातुर्य, मदद, सम्बन्ध, साथी, सहायक, कृपा, दया, रहम, महरबानी । दाँव, पाणिग्रहण, विवाह, सगाई, (अ०) बंध, स्वयम्, आप ।  
 ६४६५ ( सं. ) मदद देना, सहायता करना ।

शब्द-कोश (कि.) अधिकार लेटना ।

शब्द-कोश (कि.) पतनेका  
इतनाम करना ।

शब्द-कोश (कि.) हस्त  
खत कर देना, हस्ताक्षर करना ।

शब्द-कोश (कि.) कलंक लेना ।

शब्द-कोश (कि.) आशा छोड़ देना ।

शब्द-कोश (कि.) अधिकारमें  
करना ।

शब्द-कोश (कि.) मारनेके  
इच्छुक होना । [ कि.जूल खर्च ।

शब्द-कोश (कि.) मुक्त हस्त,

शब्द-कोश (कि.) कलंक लेना,  
होना ।

शब्द-कोश (कि.) पश्चात्ताप करना ।

शब्द-कोश (कि.) भूलों मरना ।

शब्द-कोश (कि.) पवित्र,  
शुद्ध होना ।

शब्द-कोश (कि.) पकताना ।

शब्द-कोश (कि.) निराधार होना,  
हिम्मत हार जाना ।

शब्द-कोश (कि.) समा जाहना,  
मन्त्रा प्रदर्शित करना ।

शब्द-कोश (कि.) साकल्य देना,  
बाहुबलकी परीक्षा करना ।

शब्द-कोश (कि.) भविष्य  
कहाना । [ निराह करना ।

शब्द-कोश (कि.) मद करना,

शब्द-कोश (कि.) पूर्व अनुभव होना ।

शब्द-कोश (कि.) वृत्त देना,  
निवृत्त देना ।

शब्द-कोश (कि.) निरास होना ।

शब्द-कोश (कि.) रजस्वला  
होना । [ रास होना ।

शब्द-कोश-कोश (कि.) नि-

शब्द-कोश (कि.) बलदिल्लना ।

शब्द-कोश (कि.) मांगना ।

शब्द-कोश (कि.) कलाहली, मुख्य  
आधार । [ तंग आना ।

शब्द-कोश (कि.) कर्षिते

शब्द-कोश (कि.) पीडा कीचर्चा  
निबन्ध करना ।

शब्द-कोश (सं.) सुदकाकामा

शब्द-कोश (कि.) निराह-]  
करना ।

शब्द-कोश (कि.) भारी करके  
ले जाना ।

शब्द-कोश (कि.) कामको रोक देना ।

शब्द-कोश (कि.) तेरना, पैरना ।

शब्द-कोश (कि.) चोरी करना ।

आथभाषेभुक्ते ( कि. ) आसीर्वां  
देना ।

आथभाभवे ( कि. ) पहुँचना ।

आथहास्यांभेवा ( कि. ) महा कठिन  
दशमें आना ।

आथनुंपोषुं ( वि. ) उड़ाऊ, झाँक ।

आथेवागोभेजपवे ( कि. ) पाणि-  
ग्रहण करना ।

आथपोलेो तो नभपोलेो (—) दाम  
कर काम बाँची करे सनाम, जर  
बाँहे सोकर । [ करना वैसा भरना ।

आथना उभां हुंवावाभां (—) जैसा  
आथउछिंतुं ( वि. ) हाथउधार,  
घोड़ी दूर के लिये ऋण ।

आथउडी ( सं. ) हथकड़ी ।

आथछूी ( सं. ) हास्तिनी, हायिनी,  
हाथी ( मादा ) [ का रोग ।

आथथेछुं ( सं. ) आतिसार, दस्तों-

आथपोजियुं ( सं. ) कड़ाईपर  
पाहिननेका आभूषण विशेष ।

आथरस ( सं. ) हस्तक्रिया, हतकस ।

आथा ( सं. ) कुंकुमादि मंगल रङ्ग  
में सानकर हाथके छापे ( चिन्ह )

आथथे ( सं. ) हस्त नामक मछल,  
बेल घोड़ोंके बाळ साफ करने के  
छेपे हाथमें पाहिननेका बैली ।

आथी ( सं. ) हस्ती, वारन, गज,  
कुंजर ।

आथीभुषण ( सं. ) धनवान होना ।

आथीनोपम ( सं. ) ऐसा मनुष्य  
जिसके पाँछे बहुतसे लोगोंका  
उदर पोषण होता हो ।

आथीनोभार आथीन उपाडे ( अ० )  
खानदान तो खानदानही ।

आथीपाछण भलुआ कुत्तरा आसे छे  
(—) सूरजपर धूळ कँकने से  
उल्टी उसीपर गिरती है ।

आथी इन्पारेनसोभे ( अ० ) पुत्री  
रसुरालमेंही सोमा पाता है ।

आथीनाभोआभणथीपुषेलेवे ( कि. )  
अति दुष्टकर काम करना ।

आथीनाइंतु—अण भकाइनीकेल्या-वे  
नीकेल्या (—) बोला हुआ बचन  
बाहिर होयवा ।

आथीना हांत आववानागुदा ने-  
गताववाना गुदा (—) कहनेका  
कुछऔर तथा करनेका कुछ  
और ही ।

आथेथी ( सं. ) हथेली, करतल ।

आथेवाभो ( सं. ) लग्न विवाह,  
पाणि ग्रहण संस्कार । [ बँदा ।

आथे ( सं. ) दस्ता, मूठ, हेंडल ।







५।१०। (क-) कर्मयोगी सुखते समुप  
योगी जायकाला शरण्य ।

१५ (सं.) नवरो, चौकल भाव,  
हविभाव, हृच्छ, मृंगारवेष्ट,  
आकाश।

कावभाव (सं.) नहरा, लउका, जदा,  
चेष्ट, बाक्य, चोचला, दुकार ।

६।५। (वि.) असन्तोषी, आशातुर,  
असिलोभो ।

६।१२। (सं.) बुझाएको बाटोको भूल।

ॐ (५०) अथ, अमी, इससमय ।

क०-३५ ( सं. ) किसी बातसे सतोष होनेपर वह सब्द काममें लाया जाता है । [ ठूठा, हास्य ।

काशी-काश्मिर(सं.) दिल्ली, मज्जाक,

६।२५।२६ (वि.) जो हंसा करो, उपहासास्पद । [ त्यादक ।

६।२५७४५३ ( वि. ) विनोदी, हास्यो।

॥२॥ ( सं. ) नवरसमेंसे एक  
रस विशेष ।

होम्सप्रधान (वि.) जिसमें हास्य  
रसकी प्रधानताहो, वो हुंसावे।

संस्कृत-सं. ) हंसमुक्त, सुशक्ति,  
(वि.) आनन्दी, हंसते द्वे मुहं वाक्य।

कैरस्थविनेत्रं ( सं. ) मञ्जाक, दिव्या  
दृष्टास, विद्यास ।

७४६१२. (सं.) हावहाम की व्यापि,  
शोक सूक्त सम्प्र ।

६।६। (घ.) कोलहल, होहला,  
धुवधाम ।

श्री ( सं. ) पुरुष, मर्द, हलवाहा।

हिमा ( अ० ) यहाँ, इसकागह :

हिंज ( सं. ) हींग, एक वृक्षका  
गोंदविशेष, हींग, सम्बद्धद्रव्य, वासना।

हिंभडे। हलके दर्जेका हौंग ।

द्विअणो-५ ( सं. ) हिंगुर, शिमरीफ,  
सिन्दूर ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ( सं. ) हिमरु भरेनको  
विष्णु ( वि. ) हिमरुके रंगका ।

दिआम (सं.) देखो ६'ग्राम ।

हिमोक्ष ( सं ) एक प्रकारका कठ,  
हिमोट ।

हिन्दी: ( सं. ) सोका, छोटा,  
मनका, सुकते हुएको घन्का,  
हिंजाला, मूला । [ सोका खाना ।

हिथपु' ( कि. ) सुलना, लटकना,

द्वितीयं ( कि. ) मल्लाना ।

द्वितीयं ( क्रि. १ ) सुंजना ।

६१५ ( सं ) घूमना, फिरना,  
भटकना, कदम रखाना, जाना,  
चलना ।

[६३] ( सं. ) रागविशेष ।

डि.अ.भा.पा.४ ( सं. ) सूत्रे-दिनोत्ते-  
द्वार पल्लव । पटना ६

हिंसा (सं.) झूठा, हिंसा, पलना।

हिंसा (वि.) हिंसा करनेवाला, पापी, कसाई, बापक, खली, घाती।

हिंसपु (कि.) प्रसन्न होना, खुशी होना।

हिंसा (सं.) मारना, बध, घात, नुकसान, निरपराधीका बध करना।

हिंसापु (सं.) दिनदिनाहट, गर्जना। [अक्षक।

हिंसारी (वि.) मांस भोजी, मांस छि (सं.) हिचकी, दम, पसु-लीका दर्द, चीख, सांस।

हिंसत (सं.) युक्ति, करामात, रचना, योजना, कल, कारीगरी, यंत्र, तद्दीर, इलाज, उपाय, बुद्धि।

हिंसती (वि.) हिंसतवाला, कर-मती, मुक्तिवाला, योजना, योजना।

हिंसापु (सं.) हला, कोलाहल।

हिंसापु (सं.) बात, वाक्ता, कहानी, हिंसा, इतिहास। [ठंड।

हिंसापु (सं.) वर्षा के कारण अत्यंत

हिंसापु (सं.) अव्यक्त, लब्ध प्रति-ध्वनि, हृदय के बाह्यकला शब्द।

हिंसापु (वि.) भवभीत, नामद, हिंसा।

हिंसा (सं.) देखो हिंसा।

हिंसा (सं.) वर्षा, वर्षा, जलना, जल, वेहिमस, भवभीत व्यक्ति।

हिंसापु (कि.) कुतना, केहरना मनहीमनमें स्वर्ण करना।

हिंसरी (सं.) मुसलमानी सम्मत (इस्वी सनसे १२२ वर्ष बाद)

हिंसुभाई (वि.) जो कुलभी नहीं पैदा करता हो।

हिंसुपु (सं.) हिंसु, अपयश, अपमान, लज्जा, शर्म, बदनामी।

हिंसुवर (सं.) पालिसे छोटा पति, छोटा कंध, अयोध्या वर।

हिंसुवर् (सं.) बेमेल जोड़ा। [करना।

हिंसुपु (कि.) विद्या, ना, निष्ठा-

हित (सं.) उपकार, भलाई, लाभ फायदा, कल्याण, स्वार्थ, योग्य मतलब, बाजिगी।

हितकर (वि.) हितकरनेवाला, उपकारी, गुण-कारि, लाभदा-यक, सुखद।

हितकर (सं.) अशुभचितक, दुःख होना यह समझ कर उचित

सिखा नहीं देनेवाला। [आने के वास्ते

हिंसा (अ०) फायदे के हिंसा।

हिं ( वि. ) मित्र, हितकारी,  
हितेषु, शुभचित्तक, स्नेही, क-  
ल्याणेषु । [ हितैषी ।  
हितेषु-हितैषी ( वि. ) शुभचित्तक,  
हितोपदेष्ट ( सं. ) शुभसिखा, अच्छा  
उपदेश, उत्तमपरामर्श ।  
हिन्दवाणी ( सं. ) हिन्दूजी ।  
हिन्दी ( वि. ) हिन्दुसम्बन्धी,  
भारतीय, हिन्दी नागरीभाषा ।  
हिन्दी ( वि. ) पूर्ववत् ।  
हिन्दु ( सं. ) वैदिक धर्मके मानने  
वाला भारतवासी ।  
हिन्दुस्तानी-स्थानी ( सं. ) उत्तर  
भारतका निवासी, भारतीय मनुष्य  
उर्दूभाषा, ( वि. ) भारत सम्बन्धी ।  
हिभ ( सं. ) सात, पाठा, उपार,  
ओष, चन्द्रन, मोती, ताजामकलन,  
हेम, स्वर्ण । [ कर्पूर ।  
हिभकर ( सं. ) चान्द, चन्द्रमा,  
हिभक-७ ( सं. ) छोटीहरें, हरें,  
हरांतकी ।  
हिभक७२३ ( सं. ) पूर्ववत् ।  
हिभक ( सं. ) एक प्रकारका रेशमके  
रंगका कपड़ा ।  
हिभाभत ( सं. ) मक्क, सहायता,  
आचार, शिफारिस, पक्ष ।

हिभाभती ( सं. ) सहायक, मदद-  
गार, पक्षपाती ।  
हिभाभुं ( वि. ) ठंडसे बला हुआ  
( वृक्ष ) शीघ्र, ठंडसे म्रियित ।  
हिभापुं ( कि. ) अत्यंत ठंडसे बल  
जाना, सूखना, शीघ्र होना, मनही-  
ननमें जलना ।  
हिभापु ( वि. ) अतिसब ठंडा,  
हिमालय पर्वत सम्बन्धी ।  
हिभापुं ( सं. ) चौद, चन्द्र, राशि ।  
हिभत ( सं. ) देखो काम ।  
हिभतवान ( वि. ) कूर, बहादुर,  
साहसी, पक्की छातीका । [ ( वल ) ।  
हिरेशरी ( सं. ) रेशमी किनेरदार  
हिरण्य ( सं. ) सोना, स्वर्ण, कनक,  
कंचन । [ ईश्वर ।  
हिरण्यमर्ल ( सं. ) ब्रम्हा, प्रजापति,  
हिरण्य ( सं. ) हिरण्य छोटासा  
टुकड़ा ।  
हिरादंही ( सं. ) हिरे सरसि माणि-  
चौकी माका ।  
हिरादंही-धी ( सं. ) चातुसेकर,  
रंगके काममें जानेवाला स्त्रार  
विशेष ।  
हिराभम ( वि. ) रेशमी ।  
हिराभेण ( सं. ) एक प्रकारका गोंद ।  
हिरादभन ( सं. ) एक प्रकारकी  
बीचधि ।

- हिंसाध (सं.) एक प्रकारका पक्षी ।  
 हिंसावेष्ट (वि.) होसियार चालाक ।  
 हिंसाध (सं.) हालचाल, रीति  
 रिवाज कामकाज आनाजाना ।  
 हिंसपु (कि.) हिलना, इधर उधर  
 आना जाना सरकना चकित होना ।  
 हिंसाध (सं.) मौजू, आनन्द,  
 उत्साह । [ बक्का ।  
 हिंसा (सं.) हानि, नुकसान ।  
 हिंसपु (कि.) प्रसन्न होना,  
 रिसना, खुश होना, आतुर होना ।  
 हिंसाध (सं.) अंक वगैरः गिनने  
 की विद्या, गणित, लेन देन कित्ता  
 पटो जमाखर्च, जाता, खुलासा,  
 जवाब, भाव, दर, जोखिम,  
 गणना, गिनती, भेद, अन्दाज,  
 धोखना, आजमायश, खयाल,  
 आशय ।  
 हिंसाधप्रापवाधपु (कि.) मरजाना ।  
 हिंसाधप्रापवाध (कि.) महत्त्व न  
 समझना । [ बाटना ।  
 हिंसाधप्रापवाध (कि.) धमकाना,  
 हिंसापठिताध (सं.) लेन देनका  
 जमाखर्च ।

- हिंसाधी (सं.) सुसज्जमान लोगोंको  
 बर्ष विशेष, ( इस वर्षके १५४  
 दिन आठ सैंटे ४८ मिनिट और  
 चौतीस सेकण्ड होते हैं ) (वि.)  
 गणित सम्बन्धी, गणित विद्यामें  
 प्रवीण, खा, ठीक ।  
 हिंसाध—१३ ( सं. ) हिन  
 हिनाट, गर्जना । [ साधी ।  
 हिंसाध (सं.) मायी, पतीदार  
 हिंसा (सं.) भाग, पांता, बांटा ।  
 अंश ।  
 हीक (सं.) देखो [ समक )  
 हीक (सं.) हिचकिचीं ( मरते  
 हीट (सं.) रेसम । देखो हीर ।  
 हीधु—(वि.) अपम, नीच, हान,  
 रहित, दान, रक्क, कम, छोटा  
 हुआ, तुच्छ, ओछा पात्र,  
 कमजात । [ छुदता ।  
 हीधुपधु—धुं (सं.) नीचता,  
 हीधुपत—पत (सं.) हलकापना,  
 हीनता । [ अमाया ।  
 हीधुभाभी—७५ ( वि. ) कमनशीब  
 हीधु ( वि. ) नीच, हलका, क्षुद्र,  
 तुच्छ, नीरस । [ चादा ।  
 हीनता (सं.) न्यूनता, चट्टी, कमी,  
 हीनवादी (सं.) मूक कूँपा ।

श्रीश ( सं. ) शिव, एक प्रकारकी जीवधि ।

श्रीश ( सं. ) एक प्रकारका पक्षी ।

श्रीर ( सं. ) रेशम, तेजकांति, शोभा, सख, मानी, गुण, खासि-यत्, शक्ति, रहस्य, दया, प्यार, प्रेम, हिम्मत ।

श्रीश्वर ( सं. ) मूल्यवान् वक्ता ।

श्रीरन्धीर ( सं. ) पानी, जल, हिम्मत । साहस ।

श्रीशभण ( सं. ) रेशमी [होशियार ।

श्रीशवेध ( वि. ) चतुर, चालाक ।

श्रीश ( सं. ) शीरक, शीरा, रत्न-विशेष, प्यारी वस्तु, सबसे उत्तम वस्तु ।

श्रीश चटाववे ( कि. ) रुपये लेकर कन्या देवना । कन्याविक्रय करना ।

श्रीशे ( सं. ) धका, धक्का, झटका, हानि नुकसान ।

श्री ( अ० ) प्रथमपुरुष सर्वनाम, मैं, तुव, हाँ, शीघ्रतापूर्वक सम्ब. ।

श्रीशु ( कि. ) तद्वपना, छटपटाना, वस्ती से पूरा करना ।

श्रीशर-श्री ( सं. ) पुकार, बकार, गर्जन ।

श्रीश्री ( वि. ) तूफानी, बाधंकी, अशुभ ।

श्रीशु ( सं. ) चासका कुन्वा ।

श्रीश्वे ( सं. ) खेपका, बड़ी कलिया बलाई

श्रीश्वभण ( सं. ) छूट, बिल-हुंजी पर ग्याज बहरः ।

श्रीश्री ( सं. ) रुपयोंकी चिट्ठी, बिल ।

श्रीश्री पाश्वी ( कि. ) हुंजीके पैसे देने-लेने का समय होना ।

श्रीश्री स्वीशस्वी ( कि. ) हुंजीके पैसे देना, हुंजी सिकारना ।

श्रीश्रीतुं भोभुं ( सं. ) हुंजीके सिकारने के बादका कागज़ ।

श्रीशे ( अ० ) सब भिलाकर, कुलजोड़ ।

श्रीशु ( सं. ) हारी, मिष्टीके पात्रोंके गोल पेदेके नीचे चासरस्त्री इत्यादि बनाकर लगाया हुआ कुंडल सा जिससे वह लटकने न पावे ।

श्रीशु-पद-श्री ( सं. ) आत्मकाया, अहंकार, आत्मस्तुति, अपनी प्रशंसा ।

श्रीश ( सं. ) गर्मी, उदायता, मदद ।

श्रीशुभुं ( वि. ) कुछ कुछ गर्म, कुनकुना ।

श्रीशुभुं ( वि. ) गर्म, जो गर्मी पहुँचावे ।

श्रीश ( वि. ) इतिस, इच्छा, लाकसा ।

श्रीशुभुंशुभुं ( सं. ) सलबता, ऊबल और मूसल ।

श्रीश्री ( वि. ) इच्छा, मंगलपुन ( बैल )

श्रीशे ( अ० ) होशियारीमें, सावधानीसे, नैतन्व्यतासे ।

कुंभ ( कि. ) हुआ, बना ।

कुंभो ( कि ) हुआ ।

कुंभ ( सं. ) आज्ञा, इजाजत, शासन, सत्ता, फैसला, कानून, नियम ।  
ताशके पत्तोंमें सबसे बड़ा पत्ता ।

कुंभ करवे ( कि. ) आज्ञा करना ।

कुंभ मानवे-कुंभ उठावे ( कि )  
आज्ञानुसार चलना ।

कुंभनामो ( सं. ) आज्ञापत्र, फैसला ।

कुंभत ( सं. ) सत्ता, आधिपत्य,  
प्रभुत्व ।

कुंभो-डी ( सं. ) तम्बाकू पीनेका  
पानी चिलम अग्निका नर्तदार  
यंत्र विशेष । हुक्का ।

कुंभत ( सं. ) तकरार, फिसाद,  
लड़ाई, हठ, झिड़, आग्रह ।

कुंभतपोर-कुंभती ( वि. ) जिद्दी,  
फसादी, हठी ।

कुंभरुडो ( सं. ) देखो कुंभरुडो,  
खटौच, खरौट ।

कुंभतावपुं ( कि. ) हुस्कारना, फट  
कारना, धमका देना न कुछ  
गिनना ।

कुंभो ( सं. ) दिहानी, मज्जाक ।

कुंभो ( सं. ) वे पक्षी जो दूध बाँच-  
कर खेतमेंका अन्न खानेको दूध  
पकवते हैं ।

कुंभकुंभ ( सं. ) मेढोंकी लड़ाई,  
मेढोंकी मुठमेढ ।

कुंभपुं ( कि. ) कुंभता ( खरी )

कुंभ ( वि. ) होमाहुआ, हवनमें  
आग हुआ, बलि दिया हुआ ।

कुंभर्भ ( सं. ) होम, हवन, ब्रह्म ।

कुंभद्रव्य ( सं. ) हवनमें-अग्निमें  
कालवेकी वस्तुएँ । वे वस्तु जो  
होमी जावें ।

कुंभकुंभ ( सं. ) अग्नि, वह्नि, वैश्वानर ।

कुंभकुंभी ( सं. ) होली, होलीमें  
आग लगावेके लिये जलम सुलगई  
हुई अग्नि । [ क्षीपुरुष ।

कुंभोने कुंभी ( सं. ) पतिपत्नी,

कुंभर-भर ( सं. ) कारीगरी, कला,  
करामात, युक्ति, इच्छा, तजवीज,  
उपाय, इस्म, तदबीर, विद्या ।

कुंभरी-भारी ( वि. ) चतुर, निपुण  
दक्ष, प्रवीण, कारीगर ।

कुंभो ( सं. ) श्रीधमकाळ, प्रोद्यम-  
जतु, गर्मीका मौसिम ।

कुंभ ( वि. ) गर्म उष्ण ।

कुंभो-भो ( सं. ) उस्टी, कम,  
कमल, खरि, खसक ।

कुंभेक्षण-इण ( वि. ) हवई,  
मिलता, जुलता, बराबर ।



कुम्भो ( सं. ) चढ़ाई, आक्रमण,  
हमला, पाया ।

कुम्भायु ( सं. ) एक प्रकारका पक्षी  
विशेष । [ प्रतिष्ठा ।

कुम्भत ( सं. ) आचर, इज्जत,

कुम्भो-कुम्भे ( सं. ) दुरा, आनन्द  
सुखक शब्द, व्यववहार दुर्दसा ।

कुम्भु ( सं. ) उत्पात, भव, उप-  
द्रव उत्थापन ।

कुम्भ-कुम्भ ( सं. ) ऊषम, लूफान,  
बंण, उपद्रव, क्षातिमंथ ।

कुम्भो-कुम्भो ( वि. ) स्वामिश्रोही,  
राजश्रोही, उपद्रवी, लूफनी लूफनी ।

कुम्भशयु ( कि. ) बालकको गोदमें  
लेकर हिंसना-सेखना ।

कुम्भु ( कि. ) बन्द होना, फल  
आनेसे रुकना । [ हुलराना ।

कुम्भभु ( सं. ) प्यारमें खुशीसे

कुम्भावु ( कि. ) देखो कुम्भशयु ।

कुम्भावु ( कि. ) समझाना, सम्मति  
देना । [ हर्ष ।

कुम्भास ( सं. ) उत्साह, आनन्द,

कुम्भ ( वि. ) अविचारी, अवि-  
वेकी, विनाविचारे बीचमें बाँधने  
वाला ।

कुम्भार ( वि. ) देखो कुम्भार ।

कुम्भ ( सं. ) चढ़ाई, रुग्,  
दिखावा, कान्ति, शोभा, हुस्व ।

कुम्भस ( अ० ) बस्तीसे, सीमासे ।

कुम्भ ( सं. ) घल, आंकड़ा, हुक्का,  
बन्दरकी आवाज ।

कुम्भु ( कि. ) हुक्करना, शब्द  
विशेष करना बन्दरका बोलना ।

कुम्भ ( सं. ) बानरी बोली ।

कुम्भ ( सं. ) अम्बरा, परी ।

कुम्भ ( अ० ) दिष्ट, भुत्, छिद्,  
तिरस्कार, सुखक वाक्य विशेष ।

कुम्भ ( सं. ) छाती, टह, बक्ष,  
अंतःकरण, कलेजा, जिगर, मन,  
पेट, रक्षाशय, गुह्यार्थ ।

कुम्भ भिज्जु ( कि. ) दवा आना,  
चित्तपर प्रभाव होना ।

कुम्भभु ( सं. ) हृदयकी कमल ।

कुम्भभु ( वि. ) हृदयको विद्ध  
करने वाला, मर्मभेदक ।

कुम्भशु ( वि. ) निर्दय, क्रूर,  
पापण हृदयी, मूल । [ कंत ।

कुम्भेश ( सं. ) स्वामी, नाथ, पति,

कुम्भेश ( सं. ) पति, भार्या, प्रिया ।

कुम्भेश ( सं. ) सब इन्द्रियोंके  
प्रवर्तक विष्णु ।

७५५ ( वि. ) मोटा ताका,  
प्रसन्न, और शरीरसे भी स्वस्थ ।  
हें ( अ० ) ऐ विस्मयार्थ सूचक  
शब्द ।

हेंडु ( कि. ) संगीमें जाना ।

हेंडार ( सं. ) अहंकार गर्व अभिमान

हेंडारी ( वि. ) घमंडी, गर्विष्ठ,  
अहंकारी ।

हेंडु ( कि. ) जाना, चलना ।

हे ( अ० ) विवेकसूचक सम्बंधन  
शब्द, रे, अरे, ( सं. ) बैर, हिम्मत ।

हेन ( सं. ) हेतु, प्रेम, स्नेह, प्यार ।  
शीतलता, ठंडाई ।

हेड ( अ० ) नीचे, तले नीचेका भाग ।

हेडलाथु ( सं. ) अधो भाग ।

हेडण-ध-डु ( अ० ) देखो हेड ।

हेडलु ( सं. ) नीचेवाली जगह,  
हलका, नीचा, निम्न ।

हेडे ( अ० ) तले, नीचे, उतरता  
हुआ, नीरख ।

हेड ( सं. ) कडा, पैर फंसानेका  
लकड़ीका साधन, काठ, कुंदीखाना,  
जेर । बैलोंका झुंड ( विस्तीर्ण जिये )

हेडरी ( सं. ) मृत्यु समयके अंतिम  
मांस । मोरका खास ।

हेडभा ( सं. ) ऊंची और मोटी  
ताका जी, राखसी जो पांडु पुत्र  
भीमसेनकी पत्नी हुई थी ।

हेडिये ( सं. ) बैलोंके टांढमेंका बच्छा,  
( वि. ) बैलोंके झुंडवाला ।

हेडी ( सं. ) बैचलेके बैलोंका झुंड ।  
( वि. ) बराबर, सरीखा, समान ।

हेडा ( सं. ) प्यार, स्नेह, माया, प्रेम ।

हेधु ( सं. ) बिछौना, गद्दा, लोहाक,  
गद्दा ।

हेत ( सं. ) प्रीति, प्रेम, स्नेह, प्यार ।

हेतडु ( सं. ) गाढ़ा, बैलगाड़ी ।

हेतप्रीत ( सं. ) प्यार, मोहकत्व,  
कृपा, मेहरबान ।

हेतस्वी ( वि. ) हितैरक्त, झुमेच्छु ।

हेताण ( वि. ) दवाकु, कृपाकु, प्रेमी ।

हेतु ( सं. ) सबब, कारण, नियम,  
उद्देश, इच्छा, मनोरथ, मतलब,  
अर्थ ।

हेतिसरी-स्वरी ( वि. ) हितैच्छु,  
हित चिंतक, कल्याण चाहने  
वाला ।

हेडल ( सं. ) बुढ़सवारोंकी फौज,  
जखसेना ।

हेड ( सं. ) घर, भव, प्रास ।

हेडभा ( वि. ) घरना, भव-  
भीत होना ।

देभ ( सं. ) लोना, स्वयं, काँचन,  
नामकेसर, बर्फ, हिम ।

देभक ( वि. ) देवकूक, मूर्क, सठ,  
अज्ञान, नासमझ, डर, भय ।

देभकर ( सं. ) पर्वतविशेष ।

देभभेभ ( सं. ) दुर्बलानंद, खहीसखमत ।

देभकुंड ( वि. ) बर्फ और मोगरेके  
समान सकेद ।

देभन्त ( सं. ) हिमकटु, सर्वादा  
मौसिम ।

देभक ( सं. ) भेदू, भेदिया, जासूस,  
गुप्त दूत, नौकर ।

देभ्यु ( सं. ) ऐगण, लोहेका चौखंडा  
मोटा डुकड़ा जो किसी वस्तुको  
खरकर हथोड़े से कूटनेके काममें  
आता है ।

देभ्या ( सं. ) चोरवृत्त, गुप्त अव-  
लोकन, निरीक्षण, दूँवना, देखना ।

देभेइ ( सं. ) अवलंबदल, लौट-  
पलट, अन्तर, फर्क, विरुद्धता ।

( वि. ) बदलबुआ, लौटाफेरा ।

देभ्यु ( कि. ) मुहूर्त कराना ।

देभ्यु ( कि. ) छुपके देखना, गुप्त-  
तुष्टि रक्खना ।

देभल ( वि. ) दुखी, पीड़ित, अन्ध-  
राधा हुआ, अन्ध, आकुलबुल ।

देभनभति ( सं. ) पीडा, दुःख,  
कष्ट, मुकसान, हाजि ।

देभ्यु ( कि. ) प्यारसे देखना ।

देभ्यु ( कि. ) जंगलमें जाना ।

देभियां ( सं. ) गुप्त रीतिसे देखना,  
सोख, फटकारा ।

देभ ( सं. ) दूँव आळ, तलाश, गुप्त  
रीतिसे देखना, साँप, भेदू, भेदिया ।

देभ ( सं. ) भेदू, भेदिया, छुपी  
बातोंका ज्ञाता ।

देभेइरे ( सं. ) आनाजाना, आवा-  
गमन, देखने के द्वारादेसे चक्कर ।

देभ ( सं. ) बोझा, भार, खीके  
पाधपर पानी के पात्र । बेचने के  
लिये गाडीमें भरा हुआ घास,  
मजदूरी, हमाली, कबिताके अंतमें ।

देभेइरी ( सं. ) मजदूर, बोझा उठाने  
वाळा, हमाल, भारवाही ।

देभना ( सं. ) तिरस्कार, अवज्ञा,  
अनादर ।

देभपेटा ( सं. ) व्यवस्था चक्कर,  
मजदूरी, मेहनत, परिश्रम ।

देभ्यु ( कि. ) हितमित्र के रहना,  
मित्रजाना, मित्रजुकर रहना ।

देभ ( सं. ) दुख, विषय, मोक्ष ।

देभभा ( अ. ) एक सगमें, फोरवू,  
तत्काल ।

देवाही ( सं. ) सुसज्जमान ओगोंका  
३५४ दिनका वर्षविशेष ।

देसि ( सं. ) सूर्य, सूरज, राशि ।

देवी ( सं. ) शरी, लगातार बज्जुहि,  
सहेली, सखी, आळो । राख, असम  
( सुर्वेकी ), बगल, सजपळ,  
गीतविशेष । [ भका, झटपट ।

देवो ( सं. ) झपाटा, बचका, हानि,  
देवो ( सं. ) गाड़ी के बैठने वालोंको  
गाड़ी के किसी मोड़ में या परवरसे  
उकगनेका भका ।

देवा ( सं. ) अभ्यास, मुहाविरा,  
देव, आदत, प्रेफिटम, महवास ।  
देवातन ( सं. ) सौभाग्य, अहि बात,  
सुहाग ।

देवान ( सं. ) पशु, डोर, जानवर ।  
देवा निमत ( सं. ) पशुता, मूर्खता,  
असभ्यता, अज्ञानता ।

देवाध ( सं. ) हाल, वर्णन, आरुमान,  
कथा, प्रबंध, अवस्था, स्थिति,  
हालत । [ लत ।

देण ( सं. ) आदत, देव, अभ्यास  
देऊ ( सं. ) देनो देव ।

देविपे—दे ( सं. ) मृगशिर,  
बसत्रके तारे, हिरणी नामसे अरुंध  
कः तारे ।

देवापु ( सं. ) झटपट ।

देवापे ( सं. ) दुःखसे हृदयको  
वेदना ।

देवापु ( कि. ) पस्तहिम्मत होना ।

देवात ( सं. ) देवो, देवात ।

देवापी ( सं. ) देवो देवापी ।

देवातो ( सं. ) अत्यंत शोक,  
हरवका फटना ( वि. ) भीतो,  
छातीको तोड़ने वाला, अत्यंत  
फटिन । [ विल समाधान ।

देवा धारधु ( सं. ) संतोष, तृप्ति,

देवा शू ( सं. ) पुण्ड, खू,  
हृदय फट जाने इतना ( रोना ) ।

देवा कुं ( वि. ) मूर्ख, भेवक,  
पागल, वादीशून्य, अंध ।

देवारभी ( सं. ) रातीतक चुनी  
हुई दिवार ।

देवारधु ( वि. ) दिलका मैला,  
मनमें आँट रखनेवाला घृणा, घृणा ।

देवासु ( वि. ) मूर्ख, मूढ़, भूलने  
स्वभावका ।

देपु ( सं. ) छाती, दिल, हृदय,  
हिया, मन, अंतःकरण, स्मरण-  
शक्ति, वावदादत, हिम्मत, धैर्य,  
साहस, आंतरिक गुण विला ।

देवानी देवो ( सं. ) आंतरिक विलापी  
भावना ।

देवधु ५५५ (कि.) जिससे कुछ भी न छोड़े और न कुछ स्मरण रहे। मूर्ख।

देवधु मेधु (सं.) दिल्फा मैठा, दिल्फा पता न लगाने देने वाला।

देवधु काश (सं.) बहुतही प्यारा।

देवधु अंगारा छुवा (कि.) कलेजा जलना, छाती जलना।

देवधु अन्धी जाती उ (—) बहुतही बेर है (मनमें)।

देवधु जोभलो होवे। (कि.) मनकी बात किसीपर प्रकट न होने देना। [रखना।

देवधु खप्पी राधु (कि.) राव देवधु काय भूषो होय तो भरे।

उठ निभे (—) पेटमें कुछ कपटही नहीं है।

देवधु सधरी डोढ आंधी उ (—) रातदिन हृदय जलता रहता है।

देवधु अण्ड अरती नथी (—) साहस नहीं होता।

देवधु आली अरु (कि.) मन के उद्गारों को प्रकटकरके हृदयको सातकारना।

देवधु आली आवु (कि.) की भरआवा। रोने की इच्छा हो आना।

देवधु आखवु (कि.) जो कोई रात रातदिन दिक्में खटकता हो उसे अपने प्रेमीसे कहकर कलेजा ठंडाकरना।

देवधु पखु (कि.) आदल, होना, टेक पड़ना।

देवधु कुटी अणु (कि.) कम अन्न होना, अचेत होना, बेसुच होना।

देवधु धरु (कि.) ध्यान देना, लक्ष्य करना।

देवधु दाध राधवे। (कि.) धैर्य रखना, धाम्नि धारण करना।

देवधु तेनु डोढे (अ०) जेसा दिलमें वैसाही मुहमें।

देवधु दाणु (कि.) छातीसे लगाना।

देवधु (सं.) इच्छा, उत्साह, हविस, चाह।

देवधु सातोरी मं. (अ०) बदानवी, प्रतिस्पर्धा।

देवधु (वि.) इच्छुक, उत्साही, उमंगी।

देवधु (अ०) अकअ, ठीक, बस, हुआ, ओ, अरे, रे, ए।

देवधु (सं.) भोजनोपरान्त, तृप्ति-सूचक उच्चार।

देवधु अरु (कि.) हथकरवा, अनधिकार वस्तुको पता आना।

होशियार ( सं. ) बलवानके लिये  
मार्गसूचक वंश, मत्स्यवंश,  
दिशासूचकवंश ।

होशियार ( सं. ) हाँ, हुं, हुंकार,  
सुनने या समझने की स्वीकृतिका  
सूचक । स्वीकृति, सम्मति, हुंकार ।

होशियार करवे ( कि. ) धमकाना,  
डाटना ।

होशियार ( सं. ) मोटी आवाज, चिल्लाना ।

होशियार ( सं. ) हुंकार, वेचो होशियार ।

होशियार ( सं. ) हाँ, टंका, पानी  
भरनेका कुँड, हौद, हौदी, खेळ,  
खेळी ।

होशियार ( सं. ) लगना, प्रवेश,  
बध्ना, तमाचा, चाँटा । पेटक  
और गाँवके लोगोंके बीचका वा-  
र्षिक हिसाब ।

होशियार ( सं. ) उठारामि, उदर, पेट ।

होशियार ( सं. ) ओंठ, ओष्ठ, पेट ।

होशियार करवे ( कि. ) बलवदना ।

होशियार ने होशियार ( अ० ) धीरे-  
धीरे, आदिस्तेसे, होठही होठोंमें ।

होशियार ( सं. ) शर्त, पण, बचन, दाँव,  
पेच ।

होशियार ( कि. ) शर्त बचना ।

होशियार ( कि. ) शर्त होना ।

होशियार ( सं. ) छोटी नाव, बोंगी ।

होशियार ( कि. ) गन्ध आना, गन्ध  
गन्ध सुगंध आना, महँकना, :  
ओठना ।

होशियार ( सं. ) लियोंके ओठनका  
बलविशेष ।

होशियार ( सं. ) नाव, बोंगी, बौका ।

होशियार ( सं. ) उकान, आच्छादन ।

होशियार ( सं. ) इसवर्ष, वर्तमानसाल ।

होशियार ( सं. ) यज्ञमें ऋग्वेदके मंत्र  
बोखने वाला, हवनमें मुख्य  
ब्राह्मण । होम करनेवाला ।

होशियार ( सं. ) ओहदेवाळा, अधि-  
कारी पदवीप्राप्त ।

होशियार ( सं. ) ओहदा, पद, पदवी,  
सत्ता, अमल, अधिकार, हुकूमत ।

होशियार ( वि. ) हौदा, जंबाटी, हाथी  
के ऊपर की बैठक । [ सिक्का ।

होशियार ( सं. ) एक प्रकारका सोनेका

होशियार ( सं. ) होनहार, अविष्णु,  
होनेवाला । [ होनहार ।

होशियार ( सं. ) बनाव, अविष्णु,

होशियार ( सं. ) भव, उर, त्रास, खौफ ।

होशियार ( सं. ) फजौहत, आदिपतक

होम (सं.) इवन, वर, मंत्रपूर्वक  
अग्निमें आहुति देना। देववह,  
आहुति, बलिदान।

होमकुंड (सं.) इवन करनेका  
गड्ढा, यज्ञकुंड, बलिदानका कुंड।

होमशाला (सं.) यज्ञशाला, इवन  
करनेका स्थान।

होमपुं (कि.) अर्पण करना,  
इवन करना, बलिदान करना,  
जलाना।

होमापु (क) होमना, जलाना।

होम (अ०) वेपरवाही में होंका  
प्रयोग। होगा, और, चन्दाही है,  
यकता है।

होम होम (अ०) हाथहाथ।

होमपु (कि.) जुनी होना,  
शांत होना।

होमपुं (कि.) बिकता हुआ लेना  
हुसी होना, सोरना, छमेटना  
छीकना।

होम (सं.) एक घंटा, लग्न, हाई  
चढ़ीका समय, भविष्य, रेखा-  
चिह्न।

होमशाला (सं.) दुक, त्रास, कष्ट,  
पीड़ा, व्याकुलता। [ विशेष।

होम (सं.) होली दिनोंका वाक्क

होम (सं.) जमीन में गड्ढा  
खोदकर बनाया हुआ चूल्हा,  
भस्, ढर।

होमपु (सं.) देणे होमपु, अग्नि  
का पुस्तना।

होमपु (कि.) पुस्ताना, पुक करना,  
नाम करना शांत करना, ठंडा  
करना समझाना, सान्त्वन देना।

होमपु (वि.) कूप के पास की  
ढाड़ जमीन जिसमें बैठ पानी  
खींचत समय कलते हैं। गान  
गों।

होम (म) पलो विशेष, फाट्ना  
(माहा) पुदकभिया।

होम (वि) इवय, धन्य, रहे  
दिलवाळा, भमित चित्तवाळा।

होम (सं.) पुदकळ, फरकता,  
मोदी, कमेदी, पली विशेष। ग्ले  
के अन्धरका छोटा चूल्हा कन्हा।

होम (सं.) यज्ञवह, हल्का होहला।

होमपु (सं.) यज्ञराहट में इधर  
उधर दीडना, बैल पढ़ना,  
सांति होना।

होम (कि.) होना, बनना।

होम (कि.) हाँ बेलक, हकीकतमें,  
वास्तवमें।





क्षीर ( व० ) लक्ष्मीका वीर्यमंत्र,  
साके क्षीरोंका मूलमंत्र ।  
क्षीर ( सं. ) पी, पृत, धाउव ।

क्ष

क्ष ( सं. ) गुजराती वर्णमाळाका ४५  
वाँ अक्षर, यह अक्षर गुजराती  
भाषाकी प्राचीन पुस्तकोंमें ' ल '   
अक्षरकी जगह काममें लाया गया  
है, इस अक्षरसे आरंभ होनेवाला  
एक भी शब्द नहीं है ।

क्ष

क्ष ( सं. ) गुजराती वर्णमाळाका  
४६ वाँ अक्षर । यह संयुक्ताक्षर  
है । यह क और ख के संयोग से  
बना है । [ का बहुवचनमांस ।  
क्षक्ष ( सं. ) पल, लहमा, सेकण्ड  
क्षक्षुक्ति ( वि. ) अस्थिरबुद्धि,  
जिसके विचारोंमें स्थिरता नहो ।  
क्षक्षुभ्र ( वि. ) क्षुब्धमें नाश  
होनेवाला, नाशवान, अस्थिर ।  
क्षक्षुभ्र ( व० ) पक्षुभ्र, बोली  
सी हैर ।  
क्षक्षु ( वि. ) दमभरका, एक  
संज्ञका, अस्वादी, अविराज ।

क्षक्षु ( वि. ) देखो क्षक्षुक्ति ।  
क्षक्षे क्षक्षे ( व० ) पक्ष पक्षमें,  
बारम्बार ।

क्षत ( सं. ) घाव, जखम, मज,  
चोट । ( वि. ) घावल, फाटा  
हुआ, तोड़ा हुआ, कसमी ।

क्षति ( सं. ) हानि, नुकसान ।

क्षतोद्भ ( सं. ) एक प्रकारका रोग  
जो पेटमें होता है ।

क्षभाषि ( सं. ) क्षत्रियाकी क्षत्रिय ( जो )

क्षत्रावणी ( सं. ) देखो क्षत्रीवट ।

क्षत्रीवट ( सं. ) क्षात्रधर्म, क्षात्र  
जानिका स्वाभिमान ।

क्षत्रिय ( सं. ) द्वितीय वर्णका पुरुष,  
योद्धा, क्षत्री ।

क्षक्षु ( सं. ) उपवास, जप ।

क्षक्ष ( सं. ) रात्रि, रात, निशा ।

क्षक्ष ( वि. ) क्षातिसम्पन्न, काविल ।

क्षक्ष ( सं. ) सख, बरदास्त, मु-  
आफो । सहनशीलता, शांति, यय,  
तितिक्षा, माफी, पृथ्वी, देवे,  
रात्रि, रात, कृपा, दया ।

क्षक्षान ( वि. ) मुखाक करनेयोग्य,  
कम्य, क्षमायोग्य ।

क्षक्षान ( सं. ) मुखाक करनेवाला,  
वैर्ष्यावा, दयाल, कृपाल, सहन-  
शील, क्षमा ।

क्षम्यन्त ( वि. ) पूर्ववत् ।  
 क्षमाक्षम्य ( सं. ) पंचाय नमस्कार ।  
 क्षमाशील ( वि. ) जो क्षमा स्वभाव  
 वाळा हो, बरदास्त करनेवाळा ।  
 क्षय ( सं. ) हानि, नाश, सङ्घर्ष,  
 कम होना, बिराबट, अन्त,  
 प्रलय, राज्यहत्या, रोगविशेष,  
 सवत्सरका नाम विशेष ।  
 क्षयतिथि ( सं. ) दूटी हुई तिथि  
 मासिक तथा वार्षिक ।  
 क्षयपृथ्वी ( सं. ) चटावटी ।  
 क्षयी ( वि. ) रोगविष, राक्षरोग ।  
 क्षयोपशम ( सं. ) नाश, अन्त,  
 हानि ।  
 क्षर ( वि. ) नाशवान् चटनेवाळा ।  
 क्षत्र ( वि. ) क्षत्रिय सम्बन्धीक्षत्रि-  
 य वर्ण विषयक, क्षत्रिय जातिका ।  
 क्षत्रार्थ ( सं. ) क्षत्रियोंका काम,  
 ( प्रजाको रक्षा, दान, वृत्त  
 करना, वेदोंका स्वाध्याय, शंख  
 दमन ) ।  
 क्षार ( सं. ) कार, नमक, क्लृप्त,  
 नोन, राख, भस्म, आक ।  
 क्षारश्च ( सं. ) रंजद्रास सत्व  
 खीचना, स्वर्ण कैरः चातुष्ठी  
 मल । ।

क्षारश्चि ( सं. ) समुद्र के पासकी  
 भूमि, कारयुक्त भूमि ।  
 क्षाल ( वि. ) धोनेवाला, स्वच्छ  
 करनेवाळा । [ छिड़कना ।  
 क्षालन ( सं. ) धोना, साफ करना,  
 क्षिति ( सं. ) भूमि, पृथ्वी, हानि,  
 नुकसान, प्रलयकाळ ।  
 क्षितिज ( सं. ) दृष्टि, मर्यादा,  
 पृथ्वीके चित्रकी एक सिरेसे दूसरे  
 सिरेतककी रेखा । दिग्मंत, आका-  
 श और भूमि मिलते दिखते हैं,  
 रेखा । [ नरनाम, भूप ।  
 क्षितिपाल ( सं. ) राजा, भूपाल,  
 क्षितिधर ( सं. ) क्षेत्रनाम, पृथ्वीको  
 धारण करनेवाळा कूर्म ।  
 क्षितिभंडण ( सं. ) पृथ्वीका गोळा,  
 भूगोळ - [ केंका हुआ ।  
 क्षिप्त ( वि. ) त्यागा हुआ,  
 क्षिप्त ( वि. ) तुरत बस्ती छोड़, ।  
 क्षिप्ता ( सं. ) क्षीर, दूधपाक किचड़ी,  
 एक नदीका नाम ।  
 क्षीण ( वि. ) पतला, दुबला,  
 कमजोर, गरीब, शक्तिहीन कम  
 वास्तुक, खर्च किया हुआ,  
 मृत, छत ।  
 क्षीणता ( सं. ) आकस्मिक, कमजोरी  
 निर्विकला, दुर्बलता, दुर्दिव्यता ।

क्षीर ( सं. ) दूध, दुग्ध, दध, दूधरस, घामो, जल ।

क्षीरशैल ( सं. ) शिवोंके पहिलमेका एक रेशमी बहुमूल्य वस्त्र ।

क्षुद्र ( वि. ) छोटा कमीला कूर, गरीब, तुच्छ, ईर्ष्युस नाचील, निर्दय ।

क्षुद्रधंदाणी ( सं. ) देवो क्षुद्रधंदि ।

क्षुद्रधंदि ( सं. ) छोटे सुघरोवाली तागड़ी, ईंदोरा, काटेछूत्र ।

क्षुद्रता ( सं. ) इलकापन, नीचता, कमीनापन, अधमता, ओछापन ।

क्षुधा ( सं. ) भूख, कास पचार्थ, तुमुला, अचेष्टा, जेभ, आकांक्षा नाकसा, उत्कंठा ।

क्षुधित ( वि. ) भूखा, तुमुधित ।

क्षुधा ( सं. ) भूखा, तुमुधित ।

क्षुर ( सं. ) क्षुरा, अस्तुरा, छस्तरा, छुर, सुम, क्षुरी ।

क्षुब्ध ( वि. ) बोधा, जरा हस्का, नीच, तुच्छ, निर्वाह, अधम, क्षुद्र ।

क्षेत्र ( सं. ) जमीन, भूमि, खेत, तीर्थस्थान, पवित्र जगह, शरीर, देह, जी, इन्द्रिय समूह, मन, घर, वादा उर्वरा, भूमि, बाँधी ।

क्षेत्रम् ( सं. ) बारह प्रकारके पुत्रोंमें के एक, मिथीय द्वारा उत्पन्न संतान ।

क्षेत्र ( सं. ) ज्ञाता, ज्ञानी, ज्ञातक, जीव, ( वि. ) सवाना, नसुर, होशिबार, किमान ।

क्षेत्रपति ( सं. ) कुचक, किमान जमीनका नासिक, जीव ।

क्षेत्रपाल ( सं. ) पृथ्वीकी रक्षा करनेवाला, रक्षवाला देवदेवीविशेष ।

क्षेत्रज्ञ ( सं. ) क्षेत्रका परिमाण, क्षेत्रकी कंवाई चौड़ाईको गुना करनेसे जो गुणन फल आता है ।

रक्षा किसीमी व्यापारसे फलप्राप्ति ।

क्षेत्रज्ञ ( वि. ) पुण्य भूमिमें रहनेवाला

क्षेप ( सं. ) प्रेषण, व्यर्थ सोचा, पैकना, अपमान, निन्दा, बेरी, लांचना ।

क्षेपक ( सं. ) प्रक्षिप्त वाक्य, प्रत्य- कर्ताके अतिरिक्त किसी अन्य के सकल बहावा हुआ भाग ।

क्षेपण ( सं. ) निन्दा स्थाप प्रेषण, बिताना गुजरना । अपवाद ।

क्षेपणी ( सं. ) मछली पकड़नेका जाल । नौकादण्ड ।

क्षेप ( सं. ) कुशाळ, राजी खुशी, खैरो आशियत, रक्षा, मुक्ति, बुद्धिवाद, नक्षत्र, आशयगाह कल्याण ।

श्लोक ( वि. ) कल्याण कर्ता  
जानंद कर्ता, सुखी करवावा ।

श्लोकी ( सं. ) पृथ्वी, भूमि  
अक्षौहिणी ।

श्लोभ ( सं. ) व्याकुलता, उद्वेग ।  
कम्प, घबराहट, कांपना, भड़काव ।

श्लोभित ( वि. ) क्रुद्ध, व्याकुल,  
क्षुभित । [ आना ।

श्लोभयु ( कि. ) क्रुद्ध होना, गुस्सेमें

श्लोभ ( सं. ) हजामत, मुंडन, बाल  
बनवाना ।

श्लोरी ( सं. ) छुरा, उस्तरा, अस्तरा ।

श्लोभा ( सं. ) पृथ्वी, भूमि, एक की  
। श्लोभा ।

३

३ ( सं. ) गुजराती वर्ण माला का  
४० वां अक्षर । यह संयुक्ताक्षर  
है । यह त और र के मिलनेसे  
बना है । त+र=त्र ।

नोट—

इस अक्षर के अक्षर " त " में  
देखिये वहाँ लिखे गये हैं ।

३

३ ( सं. ) गुजराती वर्णमाला का  
४० वां अक्षर, । यह भी संयुक्ता-  
क्षर है । यह त और र के संयोग  
से बना है । ( वि. ) ज्ञाता, ज्ञानी,  
जानकार, ( सं. ) जाननेवाला,  
वेदान्ता, ज्ञानदेव, चंद्र, चुर, त्रह,  
पंडित ।

श्रुति ( सं. ) समस्त शक्ति, ज्ञान,  
बुद्धि, अक्षर, स्तुति जानना, सम-  
झना, अपमान करना, प्रतिज्ञा  
करना, अंगीकार करना स्वीकार  
करना, हुक्म करना, आज्ञा करना ।

श्रुति ( वि. ) समझा हुआ- जाना  
हुआ ज्ञान प्राप्त, देखी श्रुति ।

श्रुतयौवन-भुग्धा ( सं. ) जिसको  
नव यौवन आता है ऐसा जानी  
हुई स्त्री, ( काव्य शास्त्रमें ) ।

श्रुतार्थ ( वि. ) समझने योग्य  
जाननेके लायक, ज्ञान प्राप्त  
करने योग्य ।

श्रुतशिक्षा ( सं. ) शास्त्रवेत्ता ।

श्रुती ( वि. ) जानकार, समझकार,  
बुद्धिमान, चतुर, दक्ष, ज्ञानी ।

श्रुति ( सं. ) ज्ञात, ज्ञप्ति, ज्ञान,  
वर्ष ज्ञानोन्नय, एकवर्षी, विश्वपूरी ।

शान ( सं. ) जावना, बुद्धि, समझ, जानकारी, माहिती, शिक्षा, विद्या ।	शानभार्ज ( सं. ) ज्ञानका रस्ता, बुद्धिमार्ग ।
शानभोग ( सं. ) बुद्धिप्रकाश, समझ ।	शानभाषा—भा ( सं. ) अनेक विषयके अनेक ज्ञान । ज्ञान विषयक पुस्तक ।
शानकांड ( सं. ) वेदके कांडों में से एक कांड, ( कर्म कांड, उपासना काण्ड, और, ज्ञान कांड ), ब्रह्म-ज्ञान, प्रत्येक वेदका भाग ।	शानभेभ ( सं. ) ब्रह्मप्रसादके लिये ज्ञान के अर्थकी एकविध ।
शानधन ( सं. ) ज्ञानका भरपूर जानने नरा हुआ ।	शानधर्म ( सं. ) प्रत्यक्ष साधन सन्निकर्षणका एक भेद ।
शानधर्म ( सं. ) विचार चक्र, धर्म-नेत्र नहीं किन्तु ज्ञान नेत्र, बुद्धि ।	शानधर्म ( सं. ) ज्ञानतंतु, ज्ञान का सिलसिला ।
शानतंतु ( सं. ) बुद्धितंतु, मास्तक म की वह नस जो बुद्धिसे संबंध रखती है ।	शानधर्म ( सं. ) जिन लक्षा विशेषके खानसे ज्ञानबुद्धि हो, सोमरस, भोगकी लोग माँगके ज्ञानवर्धक से हैं ।
शानधर्म ( सं. ) ज्ञानरूपी दर्पण ।	शानधर्म ( सं. ) ज्ञानी बुद्धिमत् ।
शानधीप—ध ( सं. ) बुद्धिका प्रकाश ज्ञानका अभिप्राय ।	शानविज्ञान ( सं. ) ईश्वर तथा पंचतत्त्व विषयक ज्ञान वह लौकिक और पारलौकिक ज्ञान । धर्माधर्म का ज्ञान । सृष्टिके पदार्थोंका धर्म मन्बन्धी सामान्य और विशेष ज्ञान ।
शानधीप ( सं. ) ज्ञानकी दृष्टि, समदृष्टि, बुद्धिपूर्वक अवलोकन ।	शानाभिधाप—धी ( सं. ) ज्ञानकी दृष्टि, फिलानफी, ज्ञानकी दृष्टि वाळा ।
शानधर्म ( सं. ) ११से दूसरा धर्म दूसरेसे तीसरा इस प्रकार तर्कद्वारा निश्चित ज्ञान ।	शानधी ( सं. ) देवता, जाननेवाला, तत्त्वज्ञानी, ज्योतिषी, समस्तार । विवेकी, चतुर, योगी । ज्ञेय ।
शानप्रसाद ( सं. ) ज्ञान फैलाने वाला बुद्धिके विकास देनेवाला ।	
शानधर्म ( सं. ) ज्ञानबुद्धि, ज्ञानवाला, ( सं. ) ईश्वर, परमात्मा ।	

अनीष्ट ( सं. ) हानी पुष्पोंमें  
अनेन्द्रिय ( सं. ) जिन इंद्रियों द्वारा  
पदार्थका बोध होता है, आँख,  
कान, नाक, जीभ, और त्वचा ।

अनोक्त ( सं. ) ज्ञानका विकास,  
शुद्धिका उदय-वृद्धि । [समुपदेश ।

अनोपदेश ( सं. ) ज्ञानका उपदेश,

अनोपस्थान ( सं. ) वेदविहित  
उपासना, वैदिक उपासना ।

अप ( वि. ) बतानेवाला, ज्ञानी,  
बोधक, गुरु, शिक्षक, ज्ञान  
देनेवाला, ( सं. ) अनुशासन,  
विधान ।

अप ( सं. ) शिक्षा, बोधन, ज्ञानाना,  
बताना अलक्षणा ।

अप ( वि. ) जानने योग्य ज्ञातव्य ।

“ रहो देश अमिमानमें नित्य फूलो ।

सदा आर्य गौरव बढाओ बढाओ ।

हिन्दी तुम्हारी अहै मातृ—भाषा ।

हसे राष्ट्र—भाषा बनाओ यनाओ ।

( शबरात्रि )

इति शम्

## वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला



लेखकः—राज्यरत्न आत्मारामजी व्याख्यानवाचस्पति

एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदाः.

अपने ढंग की अपूर्व वैज्ञानिक सचित्र पुस्तकें

**सृष्टिविज्ञानः**—यह आर्यजगत् में प्रसिद्ध पुस्तक आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् राज्यरत्न श्री. आत्मारामजी ( अमृतसरी ) एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ोदा ने लिखी है। इसमें वैदिक प्रमाणों से वेह दर्शाया गया है कि सृष्टि उत्पत्तिसम्बन्धी जो वर्णन पुरुषसूक्त में दिया गया है वही यथार्थ और वैज्ञानिक है। ग्रन्थ छः अध्यायों में विभक्त है। इसमें कारविन मत आलोचना तथा सत्यसनातनवैदिक मिद्धान्तों का मंडन है, वेदउत्पत्ति, ईश्वरमत्ता, जीवसत्ता आदिअमैयुनि ऐसे ऐसे अनेक विषयों पर जो आशंकाएं की जाती थीं उनके उत्तर बुद्धि तथा प्रमाण के अतिरिक्त पश्चिमी विज्ञानदृष्टि से भी दिये गये हैं। एक नास्तिक भी इसे पढ़कर आश्चर्य हो सकता है, विकासवाद का बुद्धिबुद्धि मंडन है, विकासवाद जिसका प्रचार नास्तिकता के रूप में भारत में भी प्रचलित होता जाता है, इस अर्वादिक् लहर को रोकने के अर्थ यह पुस्तक रचकर ईश्वरवाद का सुदृढ़ मंडन किया गया है। यह पुस्तक उत्तम कागज पर छपी है और लगभग ३०० पृष्ठों की है इसमें पुरातत्त्व सम्बन्धी तीन चित्र भी दिये हैं। यह पुस्तक अपने ढंग की पहिली है। मूल्य केवल दो रुपये।

समालोचनाओं का सार

सरस्वती लेखकों ने बड़ी खोज और बड़ा धन दिया है यह पुस्तक अवश्य पढ़ने योग्य है।

माहर्षि रिव्यु " यह चारविन के विकासवाद की निराला पूर्ण आवेचना है। ग्रन्थकार ने बहुतसी अंग्रेजी पुस्तकों की तथा हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य की सहायता ली है। उद्धृत वाक्य प्रकरणानुक्रम हैं और ग्रन्थकार की सुक्तिर् प्रायः बहुत प्रबल है। निःसन्देह पुस्तक पढ़ने योग्य है। "

आर्य मित्र " प्रत्येक सत्यान्वेषी को इसे = वर्य जारी कर पढ़ना चाहिए। "

" भास्कर इत पुस्तक के प्रकाशन से आर्य समाज के साहित्य में एक बहुत उपयोगी पुस्तक का समावेश हुआ है। "

वेद प्रकाश " पुस्तक बहुत अच्छी, वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली है। ललिता " पुस्तक मनन करने योग्य है। "

आर्यगजट " यह वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये बड़े मार्के की किताब है यह आर्य भाषा में अपनी किस्म की पहिली किताब है, जिस के पढ़ने से वैदिक सिद्धान्तों के दुश्मन भी दोस्त बन सकते हैं। "

विद्यार्थी " यह पुस्तक अने उंगली अक्षितवि रची है। इसमें वैज्ञानिक रीति पर वैदिक प्रमाणों और प्रबल सुक्तियों से यह सिद्ध किया है कि मनुष्यजाति का पिता मनुष्य था बन्दर नहीं। बड़े परिश्रम से पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानों के मतों को उद्धृतकर उन पर बड़ी गंभीरता से विचार किया गया है। जिनके हृदयमें वेदों की कुछ भी प्रतिष्ठा बाकी है, उनके लिये यह पुस्तक बड़े कामकी है। "

MODERN REVIEW This is an elaborate criticism of Darwin's theory of evolution. The author has taken the help of many English books



as also of our own ancient Sanskrit literature. There are some very apt quotations and the author's reasonings are often very convincing. The book certainly requires perusal.

प्रकाश ( उर्दू ) “ सृष्टिविज्ञान आर्य भाषा में यह किताब मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी व महाशय एच. ए. बुदानी ने लिखी है। यह किताब उन चन्द किताबों में से एक है जो १६वीं साहित्य की शोभा हो सकती है। यह वेद के पुरुषसूक्त के आदिसृष्टि तथा वेदात्पत्ति सम्बन्धी मंत्रों की वैज्ञानिक व्याख्या है। किताब निहायत मेहनत व योग्यता से लिखी गई है और कविल सुलभकान के लिये खुद बखुद दिल से तारीफ निकलती है। हम ज़बरदस्त सिफारिश करेंगे कि प्रत्येक आर्य पुरुष इस पुस्तक की एक प्रति खरीद करे। किताब की छपाई कागज़, ज़ाहिरा सूरत निहायत खूबसूरत है।

मर्यादा “ हिन्दी में यह अपने ढंग की नई पुस्तक है। इसमें लेखकों ने सुप्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान काराबिन के विकासवाद का ज़हनन करके सृष्टिसंबंधी वैदिक अवधान्त को प्रतिपादन किया है। पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये ”

## सृष्टिविज्ञान पर विद्वानों की सम्मतियाँ

श्री. नारायणस्वामीजी भू. पू. श्री नारायणप्रसादजी मुख्याधिष्ठा। पुरुकुल वृन्दावन “ सृष्टिविज्ञान ” नामक पुस्तक लिखकर श्रीमान् मास्टर आत्मारामजी ने आर्यभाषा के साहित्य का बड़ा उपकार किया है। पुस्तक में काराबिन के विकासवाद का प्रतिपाद सभी मनन करने योग्य तर्कों से करते हुए पुरुषसूक्त के मंत्रों की उत्तम व्याख्या मास्टरजी ने की है। पुस्तक संग्रह करने योग्य है। ”

रायबहादुर रायसाहेब डाकुवसजी भवन रिटायर्ड डि-  
स्ट्रिक्ट जज साहौर आनरेरी मैजिस्ट्रेट डेरा इस्माइलखान  
" I find it full of instruction and varied informa-  
tion. It is a book for the English educated well  
versed in ' Hindi. '

रायसाहेब डाक्टर श्यामस्वरूपजी बरेली—“ सृष्टिविज्ञान  
बादलील पुस्तक है, डारविन मत-समीक्षा अच्छी तरह होगई है समाज  
को बहुत लाभ हुआ ।

श्री. नरदनाथ केदारनाथ दीक्षित बी. ए. M. C. P.  
विद्याधिकारी बड़ोदा राज्य बड़ोदा—

“ It aims at giving a scientific exposition of  
the Purushasukta in easy, chaste Hindi. Your  
interpretation of the Vedic texts bearing on the  
subject of creation and evolution will be read by  
all with pleasure and profit. I have not the slight-  
est hesitation in saying that your attempt at han-  
dling such a weighty and noble subject has been  
highly successful, your manner of presenting  
your point of view is at once winning and convin-  
cing, I wish every success to your publication.

श्री रघुनन्दन शर्माजी रचियता 'मक्षरविज्ञान' कानपुर

“सृष्टिविज्ञान ” पुस्तक मिला, क्या कहना है, पुस्तक जिस श्वेदश-  
क्ति से लिखी गई है उस बात को बड़ी जानते हैं जिसको ऐसे दिक्कों से  
प्रेम है, आपने इस पुस्तक द्वारा वैदिक संसार का जो उपकार किया है

इस बात को भी बड़ी जाय सफ़र है जिसकी बेदों से प्रेम है, बेदोंकी जिन्दगी ही आर्यों की जिन्दगी है, बेदों की जिन्दगी अपौरुषेयता है। अपौरुषेयता की जिन्दगी विकासवाद का खण्डन है। आपने बड़ी किया है जो अखण्ड आवश्यक सामग्री और उचित था। पुस्तक में एक भी जरूरी विषय नहीं छूटा और ऐसा भी विषय नहीं लिखा गया जिस में कुछ प्रमाण भी साफ़ी न हो।”

श्री मागीरधमसाह दक्षित मुख्यध्यापक जर्मल स्कूल कोटा राज्य कोटा-“ आपकी ‘साष्टिविज्ञान’ पढ़ी अत्युत्तम निकली है”

श्रीयुत मुण्शी नारायण कृष्णजी गुजरांशाला:-

“साष्टिविज्ञान मैंने अब तक आखीर तक पढ़ा। बाक़े यह पुस्तक क्या नाम तथा गुण और वैदिक धर्मियों के लिए अपूर्व रत्न है। इसका एक एक लेख मर्कटों चन्चलवाद के योग्य है”।

श्रीजोषदेवक श्री स्वामी विन्धेभरानंदजी सरस्वती “आपकी पुस्तक प्रत्येक आर्य विद्वान् के पढ़ने तथा मनन करने योग्य है। भारविम मत के उन विचारों से जो वैदिक धर्म के विरोध में हैं। आपने बड़ा परिश्रम कर के उनकी उत्तम समालोचना की है”

श्री डाक्टर कल्याणदास जे. देसाई बी. ए. एल. एम. एन्ड. एस. किजीशन तथा सर्वज्ञ मंत्री आर्यविद्या समा बम्बई। “इस पुस्तक के प्रकाशित करने से आपने आर्यसमाज के खीळित लिटरेचर के बहाने में क्या भारी प्रशंसा की काम किया है। प्रत्येक आस्तिक को यह पुस्तक देखनी चाहिये।”

वैदिक विज्ञान ग्रन्थशाला की द्वितीय संचित पुस्तक शरीरविज्ञान अर्थात् शरीर संबंधी बर्जुव अन्धाव २५ के मंत्रों का स्वाध्याय इसमें दर्शाया गया है कि सत्यविद्याका अग्नि मूल वेद में है और भारतवर्षि १७

ही इसके आदि प्रकारक हुए हैं जिनमें के पञ्चभूत तथा वातपित्त कफ के सिद्धांत की सत्यता दिखाकर यूगोप सामन्त के मन्त्रियों की अमान्य ठहराया है । पठनीय उत्तम छपी पुस्तक का मूल्य १००)

THE STAR " The masterly way in which the author seems to have handled the subject shows his wide reading and sincere love of the ancient literature of the country. The book is interesting and valuable. It is moreover an acquisition to the Hindi literature. "

विद्यार्थी—“ पुस्तक सब के देखने योग्य है ”

ललिता—“ आर्यों की चिकित्सा तथा शस्त्रकर्म सम्बन्धी उन्नति के विषय में बहुतसी मर्यादात्मक बातें लिखी हैं । पुस्तक पढ़ने योग्य है । ”

प्रताप—“ पुस्तक उपयोगी है । ”

आर्य्यगङ्गा " शरीर विज्ञान " यह एक किताब का नाम है जो श्री पंडित आत्मारामजी एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ौदा ने तत्कालीन श्री श्री मद्रास अरुण शर्मा अरुण शर्मा आदि भाषा में प्रकाशित की है । यह पुस्तक "हले बलप्रति के नाम से उर्दू में छपी थी । शरीरविज्ञान में जो नया दीवाचा पंडित आत्मारामजी ने लिखा है वह बहुत अद्भुत है इसमें साबित किया गया है कि जिसमें के मुतालिक जो बाककिशत दुनिया को अवगत हुई है या होगी उसका मूलवेद भगवान है ज्ञान के किताब में यजुर्वेद अध्याय २५ के पहले तीन मंत्रों की बड़ी खूबी से व्याख्या की गई है जिससे जाहिर होता है कि एनाटोमी और फिजियोलॉजी के समान असल उनके अन्दर पाये जाते हैं और बीजकानूनी अस्मान्नी बनावट और नाड़ियों वगैरह का हाल वह सब वेद से जाहिर होता है ।

इन ग्रन्थों में वे सातवें मंत्र के मुक्तिकं एक तस्वीर भी किताब में दी गई है जो हस्तानी जिसकी अन्दरूनी दुनिया का बख्शी हाल अहिर करती है।

किताब बहुत दिलचस्प और मुफीद है इसने पाहिने पंडितजी ने साहित्यज्ञान किताब लिखकर आर्य व हिंदु जनता पर बड़ा एहसान किया था और अब इस किताब के दुबारा छापाने में और बढ़कर काम किया है जिसके मुताबिक वेदों की अव्यक्त का सिद्धांत दिल पर बैठ जाता है। कथित सात आना है।”

आत्मस्थान विज्ञान मू० १ वैदिक विज्ञान प्रश्नमाला की तृतीय पुस्तक है।

प्रश्नमाला:—लेखक राजवरुण आत्मारामजी,

अर्थात् वैदिक स्तुति, प्रार्थना और उपासना की फिलोसोफी। यह प्रसिद्ध पुस्तक है जिसका उर्दू, गुजराती तथा बंगाली में अनुवाद हो चुका है इसमें अनेक गंकाओं के उत्तर ही नहीं दिये गये किन्तु वैदिक उपासना की पुष्टि में ज्ञान देश के तत्त्वज्ञानों पाह्वागोरस, अफलातून के सिद्धान्तों का सार देते हुये वर्तमान काल के विद्वानों के प्रमाण भी दिये हैं। जो संख्या करना चाहते हैं उनको संख्या की भीमांसा जानने के लिये यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये। बड़वा कागज के १०६ पृष्ठों पर मनोहर टाइप में छपी हुई पुस्तक का मूल्य बारह आने।

आर्यमित्र—“आर्यसमाज के उक्त विद्वान् ने यह पुस्तक प्रथमवार विक्रयार्थ १९५३ में छपाई की। उसी पुस्तक को श्री वातिप्रियजी ने संशोधन कर दुबारा छपाने के योग्य कर दिया है। पुस्तक की उपरोक्त अंश के भी शुद्धता की ओर भी ध्यान दे।

ब्रह्मवैवर्त या सन्ध्या प्रार्थना स्तुति और उपासना का महत्व दार्शनिक रीति से अच्छे प्रकार सिद्ध किया है। इसके की बात है कि मास्टरजी की पुस्तकें जब फिर 'अथर्व वेदवेत्तः' द्वारा संशोधित संस्करणों में प्रकाशित होने लगी हैं।”

**आर्यसेवक—**“ ब्रह्मवैवर्त—इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण हमारे सामने उपस्थित है। आर्यों की स्तुति प्रार्थनाउपासना को वैदिक सिद्धांतानुसार दर्शाने में रचयिता ने विशेष परिश्रम किया है। यूरोप देशवासियों फिलॉसफों के सिद्धांत और वैदिक फिलॉसफी की भेदता दर्शाने में किसी प्रकार की कमी नहीं की है। प्रत्येक आर्य ब्रह्मवैवर्त को उचित है, इस पुस्तक को अवश्य मंगा कर तदनुसार कर्तव्य पाठ्य करे, मूल्य केवल ॥१॥”

**भारतवेत्तः—**“ ब्रह्मवैवर्त इस परमोपकारी पुस्तक में ब्रह्मवैवर्त अर्थात् ईश्वर की स्तुति प्रार्थना का संक्षिप्त अच्छी रीति पर किया है इसमें यूरोप के विद्वानों की सम्मतिवां अधिकता के साथ उद्धृत की गई हैं जिनसे आत्मिक के शिक्षित समुदाय का मन ईश्वरभक्ति की ओर अधिक आकृष्ट हो सकता है।”

**वेदप्रकाश—**“ मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी आर्य समाज के मुख्यक मनुष्यक का लिका है, यह पुस्तक सुंदर सुश्रुतों में उपा प्राप्त हुआ, सब देशों सब जातियों के ईश्वराराधन की वर्षा बिखाकर आर्यों के ब्रह्मवैवर्त की उत्तमता इसमें दिखाई है।”

**मास्कर—**“ ब्रह्मवैवर्त—यह पुस्तक भीवृत आत्माराम (अमृतसरी) एण्डकेवल इन्स्पेक्टर बंदीदा की रची हुई है। इस पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण बिकने, दशक कागज पर मनोहर रंग में प्रस्तुत किया है इसमें वैदिक ब्रह्मवैवर्त की व्याख्या बड़ी किन्तु समझोचना की गई है

और अनेक विदेशियों की सम्मति से भी उसका भेष्टत्व प्रतिपादन किया है। अद्याविकावृत्तों के पुस्तक पढ़ने योग्य है।

**संस्कार सम्प्रदाय**—आर्य जगत् में प्रसिद्ध पुस्तक तृतीयवार छपकर तय्यार है। पृ० सं० ८५० मू० ३॥]

## श्री सयाजी साहित्यमाला.

१ तुलनात्मक धर्मविचार अनुवादक राज्य रत्न व्याख्यानवाचस्पति आत्मारामजी इन्स्पेक्टर बंदोदा मु. १] अंग्रेजी तथा यूरोप की भिन्न भिन्न भाषाओं में विविध देशों की भाषा, धर्म भाषना, संसार चटना, पुराणकथा इत्यादि के अनेक ग्रन्थ तुलनात्मक परीक्षा करने वाले हैं परंतु केह है की हमारी भाषाओंमें ऐसी तुलनात्मक पुस्तकों का एकदम अभाव ही है। अतः हमारा इस ओर प्रयत्न करना नवीन साहित्य सम्प्राप्य करना है तथा यह प्रथम प्रयास ही है। इस तुलनात्मक ढंग पर लिखी गई पुस्तक में यज्ञ, जादु, पितृपूजा, भावी जीवन, इंद्रवाद, बौद्ध-धर्म, ऐकेश्वरवाद, पर विवेचन किया गया है तथा अनुवादक महोदय ने अपनी भूमिका में विद्वत्पूर्ण विचार प्रकट किए हैं जिससे कि प्रत्येक मनुष्य को विदेशीय विचारों के साथ साथ अपने धर्म विचार क्या है यह सहज में माळूम हो जाता है। सुन्दर साबित्पुस्तक का मूल्य १)

**आर्यमित्र** “ इर्ष की बात है की इस समय हिन्दी साहित्य में भी तुलनात्मक पुस्तकें निकलने लगी हैं। हम अनुवादक के इस प्रयत्न को सर्वथा सराहनीय समझते हैं। इस पुस्तक में यज्ञ, जादु, पितृपूजा, भावी जीवन, इंद्रवाद, बौद्धधर्म तथा ऐकेश्वरवाद पर विवेचन किया गया है। इस पुस्तक से प्रत्येक मनुष्य को विदेशीय विचारों के साथ २ अपने धर्म विचार भी सहज में ही माळूम हो जाते हैं। पुस्तक सब राखियों के

अच्छी है. जिल्द बंधो हुई है तथा छापाभी अच्छा है इससे पुस्तक की उपादेयता और बढ़ जाती है ।

माडर्नरिव्यू " The cause of useful literature in Hindi is being furthered by the Gaekwar of Baroda who has inspired zeal for the uplift of vernacular literature. Both the translation and get up of the book under notice are praiseworthy. This book is a valuable addition to Hindi religious literature. "

माधुरी—“विषय नाम से ही स्पष्ट है । यह कपेरोटिव रिलीजन पुस्तक का बहिया अनुवाद है । इसमें प्रायः संसार के सभी धर्मों के विचारोंकी संक्षिप्त रूप से तुलना की गई है । पुस्तक उपादेय और पढ़ने योग्य है । आशा है इसका भी यथोचित आदर होगा । कागज़ उत्तम निकना, छवाई सफाई और जिल्द मडिया । ”

२ “ अवतार रहस्य, ”—अर्थात् भारतीय तथा यूरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समीक्षा मू० ॥१॥ यह एक दूसरी गवेषणात्मक अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है । अनुवादक श्री शांतिप्रिय आत्मरामजी । इसमें निम्नलिखित विषय हैं । भाषाशास्त्र की उत्पत्ति, आर्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, कूट प्रश्न और उसका समाधान, शुक्लज्वन तथा तज्ज्वनत अनुमान, हिन्दू तथा पारसियों के पृथकों का सार्वभौम वस्तुवेभाग, यूरोप की पूर्वकालीन तथा वेदकालीन कथायें, विश्वोत्पत्ति खैष्पितर, वरुण, इन्द्र, अग्नि, सूर्य, सोम, उषस, यम, वायु, अश्विनी, हिन्दूओं के पुराण, पुराणोंक विश्वोत्पत्ति, देवताओं की उत्पत्ति, ब्रह्मा, वरुण इन्द्र, अग्नि, सूर्य, विष्णु, मरुत्य, कूर्प, वराह, नृसिंह, वामन,



परशुराम, राम रामायण तथा इन्द्रियव, कुम्भ, बुद्ध, कलिक, चन्द्र, तथा, यम, वायु, अश्विनौ, प्रकीर्ण उपसंहार विषयान्वित, सुंदर छपी पुस्तक का मूल्य ॥८॥) बिना बिल्ल ॥३॥)

Modern Review "The work is interesting and the introduction by the translator illuminating.

३ "समुद्रगुप्त"—भारतीय सम्राट् समुद्रगुप्त के इतिहास का वर्णन मू ॥८॥) अनुवादक श्री रविशंकर छाया बी. ए. एस. टी. सी. जी.

माधुरी—'कागज, चिकना और छपाई उत्तम। इस पुस्तक का विषय ऐतिहासिक है। इसमें आर्यों के प्राचीन देण भारत के प्राचीन इतिहास के साधन, प्रारम्भ के वंश आदि विषयों का वर्णन करके गुप्तवंश के अन्तर्गत महाराज समुद्रगुप्त से सम्बन्ध रखनेवाली प्रायः सभी बातों का समावेश बड़ी योग्यता से किया गया है। तीन चित्रभी हैं। जिनसे पुस्तक की उपादेयता बढ़ गई है। यह सदाश्री साहित्यमाला की हिन्दी में पांचवी पुस्तक है। हर्ष की बात है यह पुस्तकमाला ऐसी ही उत्तमोत्तम पुस्तकें निकाल कर हिन्दी का बड़ा उपकार कर रहा है। हिन्दीप्रेमियों और पुस्तकालयों को इस उपादेय पुस्तक की एक एक प्रति अवश्य भंगकर रखनी चाहिये।

Modern Review.

"This is another publication of the above mentioned series and contains the description of the gupta emperor besides a detailed historical perspective. The several appendices which are reproductions and illustrations of inscriptions, coins & pillars etc are useful in forming an idea of the times described.

४ नीतिविवेचन अनुवादक श्री कांतिकान्त एम. ए. हैं। इसमें छः प्रकरण हैं, जो नीतिशास्त्र की भिन्न भिन्न पद्धतियों तथा सामान्य स्वयं, पाश्चात्य नीतिशास्त्र, हिन्दू धर्म, नार्बोक, कैव, बौद्ध नीति, भैतिक जीवन, आज्ञापालन, दवाकुटा उद्यम, साहस इत्यादि महत्वपूर्ण विषयों से पूर्व १०० पृष्ठ की पुस्तक है मू० १।) तथा १।५)

सरस्वती—“श्रीमान् महाराजा गावकबाद ने साहित्य-सेवा के निमित्त दो लाख रुपये प्रदान किये हैं। उसके ब्याज से ‘श्री सयाजी साहित्यमाला’ के द्वारा अनेक विषयों के ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं। शुशी की बात है इस ग्रन्थमाला में हिन्दी की भी उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं इस पुस्तक में हमारे छात्रों द्वारा बताये गये कबे तथा नीति के साथ पाश्चात्य देशों के नियमों का तुलनात्मक विचार किया गया है। इसमें आर्यनीति, जैननीति, पाश्चात्यनीति भैतिकजीवन, आदि विषयों पर अच्छी विवेचना की गई है। पुस्तक अच्छे ढंग से लिखी गई है। अच्छी विवेचना की गई है। छपाई और सफाई उत्तम है”

### श्री सयाजी बाल ज्ञानमाला

५ “कोश की कथा”—ले० श्री शान्तिप्रिय आश्वमारामजी, सवित्र वैज्ञानिक पुस्तक कोष cell का पूर्ण परिचय देती है। जीवकोष क्या क्या कार्य शुरु से अन्ततक करता है, यह इस पुस्तक में भली प्रकार दर्शाया है। आजतक हिन्दी भाषामें इस प्रकारका कोई भी पुस्तक नहीं यह पहिली ही पुस्तक है। पुस्तक बड़ी उपयोगी है मूल्य ॥) मार्कन रिबु की सम्मति इस प्रकार है

**Kosh ki Katha** “The munificence and far sightedness of maharaja Sayajirao Gaekwar of Baroda have instituted a very most useful and fascinating work in the shape of a series of juvenile

booklets called the Sayaji Bal gnanu Mala. The booklet under notice is the story of the cell told most plainly. The illustrations will add to the utility of the work, and the glossary of technical terms is most helpful. The get up gives credit to the publishers. "

श्रीमत् पुरोहित हरिनारायणजी सम्भा बां. ए. विद्याभूषण वयपुर कोषकी कथा की वढ़ाई से मेरा विद्याकोष बड़ा है मेरा खयाल है की इस सम्बन्ध में पुस्तक कोष कोई चेष्टा नहीं हुई ।

आर्यमित्र "कोषकी कथा यह एक सुयोग्य लेखक की पुस्तक का अनुवाद है इस पुस्तक में यह दर्शाने का यत्न किया गया है की cell और कोष एक ही बात है प्राणिशास्त्र के विषय पर हिन्दी भाषा में ऐसी सरल पुस्तक निकलना अच्छी बात है यह पुस्तक प्राणिशास्त्र के छात्रों के लिये बड़ा सहायक होगी यूरोप के विद्वानों के विचारों का समावेश भी इसमें किया गया है । छपाई तथा कागज अच्छा है । मु० ॥ )

ज्योति—“ कोषकी कथा ” प्राणविद्या में सेल cell शब्द कई बार प्रयोग होता है । आजकल के वैज्ञानिकों के मत में किसी भी जीवित वस्तु में उसका सब से सूक्ष्म भाग सेल अर्थात् कोष है । इन्हीं अगणित कोषों के मेल से जीव जन्तु बनसकते हैं । इस पुस्तक में इसी कोषकी कथा दी गई है । कोष क्या है यह किस प्रकार जीवित शरीर में अपनी क्रिया करता है और किस प्रकार शरीर की भिन्न अवस्थाओं पर अपना प्रभाव डालता है और उनसे प्रभावित होता है यह बातें मनोरंजक भाषा में वर्णन की गई हैं, पुस्तक का विषय वैज्ञानिक है । यह हिन्दी भाषा के सौभाग्य की बात है कि अब इस में विज्ञान

सम्बन्धी पुस्तकों का निकलना भी आरंभ हो गया है । इस ओर ध्यान देने के लिए प्रकाशक हमारे धन्यवाद के पात्र हैं । ”

**सौरभ**—“ कोशों के क्रमिक विकास का नाम ही संसार है, इस पुस्तक में इस कोश की कथा का ही मरल भाषा में मनोरंजक वर्णन है । पुस्तक उपोदेय है, एकबार अवश्य पढ़ें । ”

**द श्री हर्ष**—अनुवादक श्री आनन्दाप्रियजी बी. ए. एल एल बी. इसमें निम्नलिखित विषय हैं । हर्ष के पूर्वज, पुण्यभूति प्रभाकर वर्धन, मीनारिषंश हर्षका जन्मकाण्ड, प्रभाकर की मृत्यु, प्रह्वमा, राज्य वर्धन की मृत्यु हर्ष का दिग्विजय निमित्त कुंच, राज्यधर्म की लोक हर्ष का राज्याभिषेक उन के दया धर्म का कार्य तथा मृत्यु हर्ष के समय के राजे आदि । यह पुस्तकें बड़ोदा और इन्दौर तथा मध्य प्रदेश और बरार के विद्याधिकारियों के द्वारा पाठशालाओं में इनाम तथा पुस्तकालयों के लिए मंजूर की गई हैं ।

( Modern Review ).

**Sri Harsha** This is another publication of the above named series. The history of the Emperor Harshavardhana is presented in this nicely got up little book. The autograph signature of the emperor and the two appendices which give Madhuvana and the Bansakhara inscriptions have enhanced the charm and utility of the work. Thus the book will be found useful not only by a little advanced students but also the general public. ”

**आर्यमित्र-**“ श्री हर्ष इस छोटी सी पुस्तक के पढ़ने से मात्रम हो जाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मात्त्रम हो जाती हैं। पुस्तकालयों के लिए लिखी गई है पर इस से सभी लाभ उठा सकते हैं। कागज़ तथा छपाई अच्छी है। मू० ॥ ) ”

**श्रीसुत पुरोहित हरिनारायणजी शर्मा** बी. ए. विद्याभूषण जयपुर से लिखते हैं:-“ श्री हर्ष को पढ़कर अतीव हर्ष हुआ। यह पुस्तक में बड़े नाम की पोवां हुई है। इस प्रकार की किताबों से हमारा ज़क़रत पूरी होगी। ”

**ज्योति-**“ हर्ष वर्धन भारत का अन्तिम आर्यसम्राट हुआ है, आखिर जोषन, प्रत्तर प्रताप तथा समृद्धिशाली राज्य का वर्धन कविनाथ ने अपने आहर्ष नामक काव्य में बड़ी आज़रिबनी और मधुर भाषा में किया है यह पुस्तक बाण की संस्कृत पुस्तक और चीनी यात्री हुएनत्संग के विवरण तथा इसी प्रकार इधर उधर फैली हुई अन्य सामग्रियों के आधार पर लिखी गई है। पुस्तक के पाठ से एक बार हर्ष के समय का चित्र चित्रों के सामने खिंच आता है। पुस्तक का विषय ऐतिहासिक है और अनुपमान पूर्वक लिखा गई है। इसके पाठ से हिन्दी भाषा जानने वालों को उस समय के इतिहास का बड़ा अच्छा ज्ञान हो सकता है। ”

**हिन्दी जेकरस-**“ इस पुस्तक में महाराज और महाकवि श्री हर्ष का जीवन वृत्त है और ऐतिहासिक दृष्टि से लिखे जाने के कारण पुस्तक का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। इससे उस समय के इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है और लेखक के अनुकरणीय अध्ययन का पता चलता है इतिहास प्रेमियों के लिये पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। विषयक्रम व्यवस्थित और लेख शैली उत्कृष्ट है हम लेखक के इस प्रयास का हृदय से सराहना करते हैं ”

**माधुरी**—“ श्री हर्ष काव्य उत्तम कर्णार्थ तर्कार्थ मनोहर, समग्रजी लिखी श्रीहर्ष चरित पुस्तक और हिन्दुशास्त्र तथा अन्य ऐतिहासिकों की एतत्सर्वंकी संवेचना के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें १००० कवि श्रीहर्ष का कृतांत सारस्वर सप्रमाण वर्णित है। पुस्तक बालकों के लिए लिखी जाने पर भी बहुतसी बड़ों के काम की है। ”

**सौरभ**—“ पुस्तक ऐतिहासिक तथ्यों से पूर्ण और सुवाच्य है इसकी वर्णन शैली उत्तम और सारगर्भित है। इसमें महाराज श्री हर्ष का जीवन कृतांत है जो कि प्रत्येक भारतवासी के पढ़ने लायक है। पुस्तक सुन्दरतः बालकों के लिए लिखी गई है परन्तु इससे अनेक युवा और बुद्ध भी लाभ उठा सकते हैं। ”

सब प्रकार की हिन्दीसाहित्य की उत्तमोत्तम पुस्तकें मिलनेका पता,  
जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा.

## UNIQUE PUBLICATIONS.

HOW TO GROW RICHES	0- 8-0
Openings for youngmen	1- 0-0
Industrial Encyclopoedia	1- 8-0
Choice Expressions	0- 2-0
Everybody his own Doctor	0-10-0
Students Noble path	0- 2-0
Mail Order Business	0- 8-0
Jaideva Bros BARODA.	

સ્વતંત્ર લખાણોથી પંકાયણું અને મુંબઈ તેમજ  
દરેક શહેરે શહેર બહાળો ફેલાવો  
પામેલું પત્ર.

# “ ધી મોડલ. ”

જે આખા હિંદુસ્તાનનું પહેલું અઠવાડિક છે  
અને દર સવારે સાંજે તાજા સમાચારો તથા ખરપુર  
વિવિધ લખાણો સાથે નિયમીત બહાર પડે છે.

વાર્ષિક લવાજમા—મુંબઈ રૂ. ૫) દેશાવર  
રૂ. ૬) પરદેશ રૂ. ૯).

બહેરખર્ચ તેમજ વધુ વિગતો નીચલે સરનામે  
લખ્યે યા મળે મળી શકશે.

એચ. ફરદુનજી.

અધિપતિ,

૮૨ મેડા સ્ટ્રીટ, કોલ,

મુંબઈ.

**लक्ष्य, प्रचार, प्रभाव, सर्वोपयोगिता, आदि सभी  
दृष्टियों से सर्व श्रेष्ठ राष्ट्रवादी  
हिन्दी दैनिक ।**

**‘आज’**

संसार भरके ताजेसे ताजे और विस्तृत विश्व तथा विश्वसनीय समा-  
चारों, विज्ञान बहुल संवाददाताओं द्वारा भेजी हुई जर्मनी, जापान,  
अमरीका आदिकी चिट्ठियों, सामयिक समस्याओं, अन्तर्राष्ट्रीय पहेलियों  
और कूट नीतिकी चालोंको समझानेवाले लेखों, व्यापारव्यवसाय उद्योग  
पंथोंके विशेष उपयोगी समाचारों तथा सम्मार्श्यों, वरिष्ठा सामयिक  
कहानियों, कविताओं हास्यविनोद, साहित्य, विज्ञान, स्वास्थ्य, धर्मनीति,  
समाजनीति आदि आदि सभी लक्ष्योपयोगी विषयोंकी चर्चा तथा  
निष्पक्ष आलोचनाओं, निर्भीक किन्तु संसार सन्वादीकीय लेखों, टिप्पणियों  
तथा समय-समय पर चित्रों से समन्वित और एक मात्र राष्ट्रहितकी दृष्टिसे  
प्रकाशित विज्ञापन दाताओं के लिए उसे अट्ठासाधन ।

**बड़े आकार के आठ पृष्ठ.**

वार्षिक मूल्य बारह रुपये; एक प्रतिका मूल्य दो पैसा ।

**व्यवस्थापक ‘आज’,**

**ज्ञान मण्डल, काशी ।**



## वैदिक धर्म प्रचारमाला

इस ग्रन्थमाला में सस्ते मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं जो कि सा. के पढ़ने योग्य हैं।

१ मजहबे इस्लामपर एक नज़ा =)

२ कवि पूजा की वैदिक विधि =)

३ शैतवधीनुं रांभ =)

प्रति स्थानः—

महेन्द्र प्रताप कंपनी—बडोदा.

## Printer's and Stationer's Annual and Directory of Asia.

A General Review of The Year's Industry and Commerce. Of Interest to the Printers, Stationers and the Allied Traders of Asia.

Articles of interest to the particular trades. useful information and reference tables calendar of important events. complete diary and an exhaustive directory are the main features. This reference book being the best of its kind in the East finds a permanent place on every businessman's desk.

*Further particulars from the Publishers*

**CAMA, NORTON & COMPANY,**

Post Box 888 Bombay. (India).

**ADVERTISERS' BEST MEDIA.**

# THE ADVERTISER BARODA.

## ADVERTISE AND INCREASE YOUR BUSINESS.

THE Advantages of PUBLICITY in Commercial Business are now universally recognised as the essential of all successful enterprise. Without it a Proprietor of a b. & c. firm can never expect to leave a prosperous concern and amass a large fortune. The late Sir Alfred Hind M. P. was one of those who belonged to that enterprising generation of business men who first grasped the potentialities of the modern Press as a means of bringing their wares to the notice of the general public. He not only had foresight but good sound practical imagination and possessed the gift of insight into the popular mind to such a degree that he was able to realise the next need before it occurred to anybody else. In India merchants are handicapped by the limited number of suitable mediums which are available for advertising and they have necessarily to exercise great care in deciding which publications will give the most publicity. But why worry over this when The ADVERTISING CALENDAR & The ADVERTISER BARODA offer the the Best mediums it is possible to get. Both have very large circulations and the advertising rates are very moderate.

For terms apply Advt. Manager, Jai Deva Bros.  
BARODA.

विज्ञापन दाताओं के लिए हिन्दी, गुजराती, मराठी, English  
भाषाओं में विज्ञापन देनेका सर्वोत्तम साधन है गुजराती गुजराती विज्ञापन.  
मैनेजर विज्ञापक बड़ोदा.

विज्ञापक बड़ोदा.

